ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यां नमः ॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्यो नमः ॥ ॥ श्लोकः ॥ शंकरं शंकराचार्यं व्यासं नारायणात्मकं । सरस्वतीं च ब्रह्माणं प्रणमामि पुनःपुनः ॥ १ ॥ प्रकाशितब्रह्मतत्त्वं प्रकृष्टगुणशालिनं ॥ प्रणवस्योपदेष्टारं प्रणमाम्यनिशं गुरुं ॥ २ ॥ श्रीकृष्णचरणद्वंद्वं प्रणिपत्य पुनःपुनः ॥ प्रायः प्रत्यक्षरं कुर्वे गीतागूढार्थदीपिकां ॥ ३ ॥ अर्थ यह । श्रीशंकररूप जो श्रीशंकराचार्य हैं तिनोंकूं तथा नारायणरूप जो व्यासकर्ता हैं तिनोंकूं तथा सरस्वतीदेवीकूं तथा ता सरस्वतीके भर्त्ता ब्रह्माकूं मैं वारंवार नमस्कार करताहूं इति ॥ १ ॥ और जिन श्रीगुरुवोंनैं हमारे हृदयविषे ब्रह्मतत्त्व प्रकाश करा है । तथा जे गुरु विवेकवैराग्यादिक उत्तम गुणोंकरिकै युक्त हैं । तथा जे गुरु हम अधिकारी जनोंके प्रति प्रणवमंत्रका उपदेश करणेहारे हैं । ऐसे श्रीगुरुवोंकूं मैं वारंवार नमस्कार करताहूं इति ॥ २ ॥ और या गीताशास्त्रका कर्त्ता जो श्रीकृष्णभगवान् है ता श्रीकृष्णभगवान्के दोनों चरणकमलोंकूं वारंवार प्रणाम करिकै मैं मुमुक्षु जनोंके प्रति श्रीगीताजीके प्रतिअक्षरोंका अर्थ निश्चय करावणेवासतै श्रीशंकराचार्यकृत भाष्य तथा स्वामीशंकरानंदकृत टीका तथा स्वामीमधुसूदनकृत टीका तथा नीलकंठपंडितकृत टीका या चारोंके अभिप्रायकूं लैके यह गीतागूढार्थदीपिका नामा टीका करताहूं ॥ ३ ॥ तहां इस लोकविषे महान् तप, बल, तेज, शक्तिकरिकै संपन्न तथा सर्व विद्यावोंका समुद्र तथा संपूर्ण सर्वज्ञोंका भूषणरूप तथा साक्षात् नारायणरूप तथा परम कृपालु ऐसे जो श्रीव्यासभगवान् हैं । सो व्यासभगवान् आगे उत्पन्न होणेहारे अधिकारी जनोंके बुद्धिकी मंदताकूं देखिकरिकै तिन अधिकारी जनोंके प्रति धर्मादिक सर्व पुरुषार्थकी प्राप्ति करणेवासतै ता पुरुषार्थकी प्राप्तिके साधनोंकूं कथन करणेहारे वेदराशिका ऋग्, यजुष्, साम और अथर्वण या भेदकरिकै चारि प्रकारका विभाग करता भया । तथा तिन ऋगादिक चारि वेदोंविषे स्थित जो ऐतरेयादिक अनेक शाखा हैं । तिन शाखावोंविषे एक एक शाखाकूं अपणे पैल वैशंपायनादिक शिष्यप्रशिष्यादिद्वारा वधावता भया । इस प्रकार तिन ऋगादिक वेदोंके प्रवृत्त हुएभी तिन वेदोंका अर्थ परम सूक्ष्म है तथा अत्यंत गूढ है तथा अत्यंत दुर्विज्ञेय है । यातैं ता वेदअर्थके जानणेविषे जिन अधिकारी पुरुषोंकी बुद्धि समर्थ नहीं है । ऐसे अधिकारी पुरुषोंऊपरि अनुग्रह करिकै सो श्रीव्यासभगवान् तिन अधिकारी पुरुषोंकेप्रति धर्मादिक सर्व पुरुषार्थोंकी प्राप्ति करणेवासतै तिन धर्मादिक सर्व पुरुषार्थोंके साधनोंकूं कथन करणेहारी तथा शतसहस्र १००००० श्लोकोंकरिकै युक्त एक भारत नामा संहिताकूं रचता भया । और जैसे सर्व नक्षत्रमालाके मध्यविषे चंद्रमंडल स्थित होवैहै । तैसे ता भारत नामा संहिताके मध्यविषे सो श्रीव्यासभगवान् केवल मुमुक्षु जनोंके प्रति कार्यप्रपंचसहित अनादि अविद्याकी निवृत्तिद्वारा विदेहकैवल्यरूप फलकी प्राप्तिवासतै जीवब्रह्मके अभेदकूं प्रतिपादन करणेहारी तथा श्रीकृष्णभगवान् अर्जुनका संवाद-

रूप तथा अद्वैतरूप अमृतकी वर्षा करणेहारी तथा सप्तशत ७०० श्लोकरूप गीताउपनिषद् नामा ब्रह्मविद्या स्थापन करता भया । ता गीतारूप ब्रह्मविद्याका अज्ञानसहित सर्व प्रपंचका अभावरूप तथा सत् चित् आनंदस्वरूप तथा जीवतैं अभिन्न अद्वितीय ब्रह्मरूप मोक्षही परम प्रयोजन है । तिसी अद्वितीय ब्रह्मरूप मोक्षकूं शास्त्रोंविषे विष्णुका परमपद कहे हैं । और तिसी अद्वितीय ब्रह्मरूप मोक्षकी प्राप्तिवासतै सृष्टिके आदिकालविषे सर्वज्ञ ईश्वरनैं कर्म, उपासना, और ज्ञान या तीन कांडोंकरिकै युक्त ऋगादिक वेद उत्पन्न करे हैं । और यह अष्टादश अध्यायरूप भगवद्गीताभी ऋगादि वेदरूप है । यातैं यह भगवद्गीताभी षट्षट् अध्यायरूप तीन षट्कोंकरिकै यथाक्रमतैं कर्म, उपासना और ज्ञान या तीन कांडरूप है । तहां षट् अध्यायरूप प्रथम षट्कविषे तौ कर्मनिष्ठा कथन करी है । और षट् अध्यायरूप द्वितीय षट्कविषे तौ भगवद्भक्तिनिष्ठारूप उपासना कथन करी है और षट् अध्यायरूप तृतीय षट्कविषे तौ ज्ञाननिष्ठा कथन करी है । तहां मध्यके षट्कविषे स्थित जो भगवद्भक्तिनिष्ठा है सा भगवद्भक्तिनिष्ठा कर्मनिष्ठाकी प्राप्तिविषे प्रतिबंधक जो पापरूप विघ्न हैं तिन सर्व विघ्नोंकूं नाश करणेहारी है । यातैं सा भगवद्भक्तिनिष्ठा कर्मनिष्ठाविषे तथा ज्ञाननिष्ठाविषे दोनोंविषे अनुगत है । या कारणतैंही सा भगवद्भक्तिनिष्ठा कर्ममिश्रा, शुद्धा और ज्ञानमिश्रा या भेदकरिकै तीन प्रकारकी होवै है । तहां या गीताके प्रथम षट्कविषे स्थित सा भगवद्भक्तिनिष्ठा कर्ममिश्रा कही जावै है । और द्वितीय षट्कविषे स्थित सा भगवद्भक्तिनिष्ठा शुद्धा कही जावै है । और तृतीय षट्कविषे स्थित सा भगवद्भक्तिनिष्ठा ज्ञानमिश्रा कही जावै है । तहां कर्मनिष्ठाकरिकै मिली हुई भगवद्भक्तिनिष्ठाका नाम कर्ममिश्रा है । और ज्ञाननिष्ठाकरिकै मिली हुई भगवद्भक्तिनिष्ठाका नाम ज्ञानमिश्रा है । और केवल भगवद्भक्तिनिष्ठाका नाम शुद्धा है । इस प्रकार यह भगवद्गीता ऋगादिक वेदोंकी न्यांई तीन कांडरूप है । तहां या गीताके प्रथम षट्करूप कर्मकांडविषे कर्मोंके तथा तिन कर्मोंके त्यागके निरूपणरूप मार्गकरिकै अनेक प्रकारकी युक्तियोंसैं त्वंपदका अर्थरूप कूटस्थ शुद्ध आत्माका निरूपण करा है । और द्वितीय षट्करूप उपासनाकांडविषे भगवद्भक्तिनिष्ठाके वर्णनरूप मार्गकरिकै तत्पदार्थरूप परमात्मा देवका निरूपण करा है । तृतीय षट्करूप ज्ञानकांडविषे [illegible] शोधित तत्त्वंपदार्थोंका अभेदरूप महावाक्योंका अर्थ निरूपण करा है । इस प्रकारसैं तीन षट्करूप तीन कांडोंका परस्पर संबंध संभवै है । और पूर्व पूर्व अध्यायके अर्थका उत्तर उत्तर अध्यायके अर्थसाथि जिस जिस प्रकारका संबंध संभवै है । सो सो संबंध तिस तिस अध्यायके निरूपणकालविषे कथन करैंगे । अब या अष्टादश अध्यायरूप भगवद्गीताविषे जो जो मोक्षके साधन विस्तारकरिकै निरूपण करे हैं तिन सर्व साधनोंका प्रथम संक्षेपतैं निरूपण करे हैं । यह अधिकारी पुरुष प्रथम स्वर्गादिक फलकी प्राप्ति करणेहारे काम्यकर्मोंका परित्याग करिकै तथा नरकादिक दुःखोंकी प्राप्ति करणेहारे

हिंसादिक निषिद्ध कर्मोंका परित्याग करिकै फलकी इच्छातैं रहित केवल निष्काम कर्मोंकूं करै । तिन निष्काम कर्मोंविषेभी परमेश्वरके नामोंका जप तथा स्तुति आदिक परधर्मेरूप हैं । ता निष्काम कर्मोंकरिकै तथा परमेश्वरके जप स्तुति आदिकोंकरिकै या अधिकारी पुरुषका चित्त प्रतिबंधकरूप सर्व पापोंतैं रहितहोइकै विचार करणेयोग्य होवै है । तिसतैं अनंतर या अधिकारी पुरुषविषे नित्य अनित्य वस्तुका विवेक उत्पन्न होवै है । तिस विवेकतैं अनंतर इस लोकके विषयसुखोंविषे तथा स्वर्गादिक लोकोंके विषयसुखोंविषे दोषदृष्टिपूर्वक वशीकार नामा वैराग्य उत्पन्न होवै है । तिस वैराग्यकी प्राप्तितैं अनंतर शम, दम, श्रद्धा, समाधान, उपरति और तितिक्षा या षट्संपत्तिकी प्राप्तिकरिकै सर्वका परित्यागरूप संन्यास प्राप्त होवै है । ता संन्यासतैं अनंतर या अधिकारी पुरुषकूं मोक्षके प्राप्तिकी इच्छारूप मुमुक्षुता प्राप्त होवै है । ता मुमुक्षुताकी प्राप्तितैं अनंतर यह अधिकारी पुरुष श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ गुरुके समीप जावै है । तिसतैं अनंतर यह अधिकारी पुरुष ता ब्रह्मवेत्ता गुरुके मुखतैं वेदांतशास्त्रका श्रवण करे है । तथा ता श्रवण करे हुए अर्थका मनन करे है । ता श्रवणमननविषेही सर्व उत्तरमीमांसाशास्त्रका उपयोग है । ता श्रवणमननकी परिपक्वतातैं अनंतर यह अधिकारी पुरुष निदिध्यासनकूं प्राप्त होवै है । ता निदिध्यासनविषेही संपूर्ण योगशास्त्रका उपयोग है । तहां श्रवणकरिकै वेदांतशास्त्ररूप प्रमाणगत असंभावनाकी निवृत्ति होवै है । और मननकरिकै आत्मारूप प्रमेयगत असंभावनाकी निवृत्ति होवै है । और निदिध्यासनकरिकै देहादिकोंविषे आत्मत्वबुद्धिरूप विपरीतभावनाकी निवृत्ति होवै है । तिसतैं अनंतर ता असंभावनादिक दोषोंतैं रहित चित्तविषे गुरूपदिष्ट महावाक्यतैं ब्रह्मात्माका साक्षात्कार उत्पन्न होवै है । ता ब्रह्मात्मसाक्षात्कारके उत्पन्न हुए या अधिकारी पुरुषके अविद्याकी निवृत्ति होवै है । ता आवरणशक्तिप्रधान अविद्याके निवृत्त हुएतैं अनंतर या अधिकारी पुरुषके भ्रम तथा संशय निवृत्त होवै हैं । तथा भावी जन्मोंकी प्राप्ति करणेहारे सर्व संचितकर्म नाशकूं प्राप्त होवै हैं । और ता आत्मसाक्षात्कारके प्रभावतैं आगामी कर्मोंकी उत्पत्तिही होवै नहीं । परंतु प्रारब्धकर्मरूप विक्षेपके वशतैं या अधिकारी पुरुषकी वासना निवृत्त होवै नहीं । जिस कारणतैं सा वासना सर्वतैं बलवान् है । ऐसी बलवान् वासनाभी संयमरूप उपायकरिकै निवृत्त होवै है । तहां धारणा, ध्यान और समाधि या भेदकरिकै सो संयम तीन प्रकारका होवै है । ता संयमकी प्राप्तिवासतैंही प्रथम यम, नियम, आसन, प्राणायाम और प्रत्याहार या पांचोंका उपयोग होवै है । और या अधिकारी पुरुषकूं ईश्वरके प्रणिधानतैं सा समाधि शीघ्रही प्राप्त होवै है । ता समाधिकरिकै या अधिकारी पुरुषका मनोनाश होवै है । तथा वासनाक्षय होवै है । और तत्त्वज्ञान, मनोनाश और वासनाक्षय या तीनोंका एककालविषे अभ्यास कीयेतैं या अधिकारी पुरुषकूं जीवन्मुक्तिकी प्राप्ति होवै है । इसी जीवन्मुक्तिकी प्राप्तिवासतै श्रुतिविषे विद्वत्संन्यासका कथन करा

है। और पूर्व सविकल्पसमाधिकरिकै निरोधकूं प्राप्त भया जो चित्त है ता निरुद्धचित्तविषे तीन भूमिकावाली निर्विकल्पसमाधि उत्पन्न होवै है। तहां प्रथम भूमिकाविषे तौ यह विद्वान् पुरुष अपणी इच्छातैं उत्थानकूं प्राप्त होवै है। और द्वितीयभूमिकाविषे सो विद्वान् पुरुष दूसरे किसीकरिकै बोधन करा हुआ उत्थानकूं प्राप्त होवै है। और तृतीय भूमिकाविषे सो विद्वान् पुरुष अपणी इच्छाकरिकै तथा किसी दूसरेकरिकै उत्थानकूं प्राप्त होवै नहीं। किंतु सर्व कालविषे ताकी ब्रह्माकारवृत्ति रहे है। ऐसे निर्विकल्पसमाधिवान् पुरुषकूंही शास्त्रविषे ब्राह्मण कहे हैं। तथा ब्रह्मविद्वरिष्ठ कहे हैं। तथा गुणातीत कहे हैं। तथा स्थितप्रज्ञ कहे हैं। तथा विष्णुभक्त कहे हैं। तथा अतिवर्णाश्रमी कहे हैं। तथा जीवन्मुक्त कहे हैं। तथा आत्मरति कहे हैं। ऐसा जीवन्मुक्त पुरुष कृतकृत्यभावकूं प्राप्त भया है। यातैं शास्त्रभी ता जीवन्मुक्त पुरुषतैं निवृत्त होवै है। तात्पर्य यह। ता जीवन्मुक्त पुरुषऊपरि शास्त्रका कोईभी विधिनिषेध नहीं है। किंवा "यस्य देवे परा भक्तिर्यथा देवे तथा गुरौ॥ तस्यैते कथिता ह्यर्थाः प्रकाशंते महात्मनः" ॥ अर्थ यह। जिस अधिकारी पुरुषकी परमात्मा देवविषे परम भक्ति है। और जैसी परमात्मा देवविषे परम भक्ति है। तैसीही गुरुविषे परम भक्ति है। तिस अधिकारी पुरुषके बुद्धिविषेही यह शास्त्रप्रतिपादित अर्थ प्रकाशमान होवै है इति॥ या श्रुतिप्रमाणतैं शरीरमनवाणीकृत भगवद्भक्तिका सर्व अवस्थावोंविषे उपयोग सिद्ध होवै है। तहां पूर्व पूर्व भूमिकाविषे करी हुई सा भगवद्भक्ति उत्तर उत्तर भूमिकाकी प्राप्ति करेहै। ता भगवद्भक्तितैं विना विघ्नोंकी बाहुल्यतातैं फलकी प्राप्ति होणी अत्यंत दुर्लभ है। यह वार्त्ता "पूर्वाभ्यासेन तनैव ह्रियते ह्यवशोपि सः। अनेकजन्मसंसिद्धः" इत्यादिक भगवान्के वचनोंतैंही सिद्ध होवै है। किंवा। पूर्व पूर्व जन्मोंविषे उत्पन्न भये जो संस्कार हैं। ते संस्कार अचिंत्यशक्तिवाले हैं। तिन पूर्वसंस्कारोंके प्रभावतैं जो कोई पुरुष आकाशफलपातकी न्यांई पूर्वही कृतकृत्यभावकूं प्राप्त होवै है। तिस पुरुषके वासतैभी शास्त्रका आरंभ करा जावै नहीं। जिस वासतै पूर्वसिद्धिसाधनोंके अभ्यासतैं भगवत्कृपा अत्यंत दुर्विज्ञेय है। इस प्रकार पूर्वभूमिकाके सिद्ध हूएभी उत्तर उत्तर भूमिकाके प्राप्तिवासतै यह अधिकारी पुरुष भगवद्भक्तिकूं अवश्यकरिकै करै। ता भगवद्भक्तितैं विना सा उत्तरभूमिका सिद्ध होवै नहीं। किंवा। जैसे पूर्व अवस्थाविषे ता भगवद्भक्तिके फलकी कल्पना होवे है। तैसे जीवन्मुक्तिदशाविषे ता भगवद्भक्तिके फलकी कल्पना होवै नहीं। किंतु ता जीवन्मुक्त विद्वान् पुरुषविषे जैसे अद्वेष्टृत्व, अदंभित्व आदिक धर्म स्वभावभूत होइकै रहे हैं। तैसे सा भगवद्भक्तिभी स्वभावभूत होइकै रहे है। यह वार्त्ता "तेषां ज्ञानी नित्ययुक्त एकभक्तिर्विशिष्यते" इत्यादिक वचनोंकरिकै श्रीभगवान्नैं प्रतिपादन करी है। या कारणतैं सो जीवन्मुक्त विद्वान् पुरुषही मुख्य प्रेमभक्त कह्या जावै है। इत्यादिक सर्व मोक्षके साधन श्रीकृष्णभगवान्नैं या गीताशास्त्रविषे कथन करे हैं। तिन मोक्षके साधनोंकूं देखिकरिकै श्रीमच्छंकराचार्यनैं तथा स्वामीशंकरानं-

दनैं तथा स्वामीमधुसूदननैं तथा नीलकंठपंडितनैं बहुत उत्साहपूर्वक या गीताशास्त्रऊपरि संस्कृत टीका करी हैं। तिन संस्कृत टीकावोंतैं यद्यपि व्याकरणादिक साधनसंपन्न मुमुक्षु जनोंकूं या गीताशास्त्रके अर्थका बोध होइ सके है । तथापि तिन संस्कृत टीकावोंतैं व्याकरणादिक साधनोंतैं रहित केवल भाषाके पठन करणेहारे मुमुक्षु जनोंकूं या गीताशास्त्रके अर्थका बोध होइ सके नहीं । यातैं तिन मुमुक्षु जनोंके प्रति या गीताशास्त्रके अर्थका बोध करावणेवासतै हम तिन संस्कृत टीकावोंके अभिप्रायकूं लैके यह गीतागूढार्थदीपिका नामा प्राकृत टीकाका आरंभ करे हैं इति । तहां निष्काम कर्मोंका जो अनुष्ठान है तिसकूंही शास्त्रविषे मोक्षका मूलरूपकरिकै कथन करा है। और शोकमोहादिक पापरूप असुरता मोक्षकी प्राप्तिविषे प्रतिबंधक हैं । काहेतैं तिन शोकमोहादिक असुरोंकी प्राप्तितैंही यह पुरुष अपणे वर्णाश्रमके धर्मतैं भ्रष्ट होवै है तथा शास्त्रनिषिद्ध कर्मविषे प्रवृत्त होवै है तथा फलकी इच्छापूर्वक अहंकारसहित नानाप्रकारकी क्रियाकूं करै है । इस प्रकार शोकमोहादिक पापरूप असुरोंकरिकै नित्यही युक्त हुआ यह पुरुष मोक्षरूप पुरुषार्थकूं न प्राप्त होइकै जन्ममरणादिक अनेक दुःखोंकूं प्राप्त होवै है। सो दुःख स्वभावतैंही सर्व प्राणियोंके द्वेषका विषय है । यातैं ता दुःखकी निवृत्तिवासतै ता दुःखके साधनरूप शोकमोहादिक अवश्यकरिकै त्याग करणे योग्य हैं । और या अनादि संसारविषे अनेक जन्मोंकरिकै ते शोकमोहादिक दुःखके कारण दृढताकूं प्राप्त हुए हैं। यातैं तिन शोकमोहादिकोंका त्याग करणा अत्यंत कठिन है । और तिन शोकमोहादिकोंकी निवृत्तितैं विना मोक्षकी प्राप्ति होवै नहीं । यातैं ते हमारे शोकमोहादिक किस उपाय करिकै नाशकूं प्राप्त होवैंगे। इस प्रकारकी उत्कट इच्छावान् जो मुमुक्षु जन है । ताके बोध करणेवासतै श्रीकृष्णभगवान् या गीताशास्त्रकूं कथन करता भया है । ता गीताशास्त्रविषे "अशोच्यानन्वशोचस्त्वं" इत्यादिक श्लोकोंकरिकै शोकमोहादिक असुरोंकी निवृत्तिके उपायका उपदेश करिकै अपणे वर्णाश्रमके धर्मोंके अनुष्ठानतैं तुम मोक्षरूप पुरुषार्थकूं प्राप्त होवौ या प्रकारका जो भगवान्का उपदेश है । सो उपदेश सर्व मुमुक्षु जनोंके प्रति साधारण है । केवल एक अर्जुनके प्रति सो उपदेश नहीं है ॥ शंका— श्रीकृष्णभगवान्का जो कदाचित् सर्व मुमुक्षु जनोंके प्रति साधारणही उपदेश होवै। तौ या गीताशास्त्रविषे श्रीकृष्णभगवान्का तथा अर्जुनका संवादरूप आख्यायिका किसवासतै रखी है ॥ समाधान— जैसे उपनिषदोंका उपदेश सर्व मुमुक्षु जनोंके प्रति साधारण हुआभी तिन उपनिषदोंविषे जो जनकयाज्ञवल्क्यादिकोंका संवादरूप आख्यायिका हैं । ते आख्यायिका तिस तिस उपनिषद्रूप ब्रह्मविद्याके स्तुतिवासतै हैं । तैसे या गीताशास्त्रविषे जो श्रीकृष्णभगवान् अर्जुनका संवादरूप आख्यायिका है । सा आख्यायिकाभी या गीतारूप ब्रह्मविद्याकी स्तुतिवासतै है । ता स्तुतिका यह प्रकार है । सर्व लोकविषे प्रसिद्ध है महान् भाव जिसका ऐसा जो अर्जुन है ।

सो अर्जुन राज्य, गुरु, पुत्र, मित्र आदिक पदार्थोंविषे मैं इनोंका हूं यह मेरे हैं या प्रकारकी बुद्धिकरिकै स्नेहकूं प्राप्त होता भया। ता स्नेहकरिकै उत्पन्न भया जो शोक, मोह ता शोकमोहकरिकै नष्ट होइ गया है विवेकविज्ञान जिसका ऐसा सो अर्जुन पूर्वस्वभावतैंही क्षत्रियोंके धर्मरूप युद्धविषे प्रवृत्त हुआभी ता शोकमोहके प्रभावतैं ता धर्मयुद्धतैं उपराम होता भया। तथा संन्यासीयोंका धर्मरूप जो भिक्षावृत्तितैं जीवन है ते भिक्षाजीवनादिक धर्म यद्यपि क्षत्रिय राजावोंकूं शास्त्रकरिकै निषिद्ध हैं। तथापि सो अर्जुन ता शोकमोहके वशतैं ता भिक्षाजीवनरूप परधर्मके करणेवासतै प्रवृत्त होता भया। इस प्रकार सो अर्जुन ता शोकमोहके वशतैं महान् अनर्थविषे मगन होता भया। ऐसा अर्जुन श्रीकृष्णभगवान्‌के उपदेशतैं या गीतारूप ब्रह्मविद्याकूं प्राप्त होइकै ता शोकमोहतैं रहित होइकै पुनः अपणे युद्धरूप धर्मविषे प्रवृत्त होता भया। ताकरिकै सो अर्जुन कृतकृत्यभावकूं प्राप्त होता भया। ऐसे महान् प्रयोजनकी प्राप्ति करणेहारी यह गीतारूप ब्रह्मविद्या है। यातैं यह गीतारूप ब्रह्मविद्या अत्यंत श्रेष्ठ है। या प्रकार या गीतारूप ब्रह्मविद्याकी स्तुति करणेवासतै श्रीकृष्णभगवान् अर्जुनका संवादरूप आख्यायिका या गीताशास्त्रविषे स्थित है। यातैं अर्जुनशब्दकरिकै या गीताशास्त्रके उपदेशका अधिकारी मात्र कथन करा है। या कारणतैंही युद्धरूप स्वधर्मविषे पूर्व अर्जुनकी प्रवृत्ति हुएभी ता युद्धरूप स्वधर्मतैं निवृत्तिका कारणरूप शोक मोह "कथं भीष्ममहं संख्ये" इत्यादिक वचनोंकरिकै अर्जुननैं दिखाये हैं। या प्रकार आगे कथन करैंगे। तहां युद्धरूप स्वधर्मविषे विवेकतैं विनाही अर्जुनकी किस निमित्ततैं प्रवृत्ति भई है या प्रकारकी जिज्ञासाके हुए "दृष्ट्वा तु पांडवानीकं" इत्यादिक वचनकरिकै परसैनाकी चेष्टाही ता प्रवृत्तिविषे निमित्त कथन करा है। तिस अर्थकी सिद्धिवासतै "धर्मक्षेत्रे" इत्यादि श्लोककरिकै धृतराष्ट्रका प्रश्न संजयके प्रति है। और "धृतराष्ट्र उवाच" यह वैशंपायनका वचन जन्मेजयके प्रति है। तहां पूर्व पांडवोंके जयके अनेक प्रकारके कारणोंकूं श्रवण करिकै अपणे पुत्रोंके राज्यतैं भ्रष्टपणेतैं भयभीत हुआ सो धृतराष्ट्र अपणे पुत्रोंके जयकी इच्छा करता हुआ या प्रकार संजयसैं पूछता भया।

(मू० श्लो०) धृतराष्ट्र उवाच ॥ धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः ॥ मामकाः पांडवाश्चैव किमकुर्वत संजय ॥ १ ॥ (पदच्छेदः) धर्मक्षेत्रे। कुरुक्षेत्रे। समवेताः। युयुत्सवः। मामकाः। पांडवाः। च। एव। किम्। अकुर्वत। संजय ॥ १ ॥ (पदार्थः) हे संजय। धर्मक्षेत्ररूप कुरुक्षेत्रविषे एकठे हुए तथा युद्धकी इच्छा करते हुए मेरे पुत्र तथा पांडुराजाके पुत्र क्या करते भये ॥ १ ॥

टीका । जैसे उत्तम भूमिरूप क्षेत्र व्रीहि यवादिक अन्नके उत्पत्तिका तथा वृद्धिका कारण होवै है । तैसे पूर्व अविद्यमान धर्मके उत्पत्तिका जो कारण होवै । तथा पूर्व विद्यमान धर्मके वृद्धिका जो कारण होवै । अथवा धर्मके क्षयतैं जो रक्षा करणेहारा होवै । ताका नाम धर्मक्षेत्र है । और कुरुदेशके अंतर जो स्थित होवै ताका नाम कुरुक्षेत्र है । इस प्रकार निवासमात्र करणेकरिकै धर्मकी तथा धर्मके फलकी प्राप्ति करणेहारा जो धर्मक्षेत्ररूप कुरुक्षेत्र है ॥ सो श्रुति स्मृति आदिक सर्व शास्त्रोंविषे प्रसिद्ध है । तहां श्रुति ॥ "यदनु कुरुक्षेत्रं देवानां देवयजनं सर्वेषां भूतानां ब्रह्मसदनं इति " । अर्थ यह । जो कुरुक्षेत्र सर्व देवतावोंका देवयजनरूप है । तथा सर्व भूतप्राणीयोंकूं ब्रह्मरूप मोक्षके प्राप्तिका स्थानरूप है इति ॥ यह श्रुति जाबालउपनिषद्विषे बृहस्पतिनैं याज्ञवल्क्यके प्रति कथन करी है । और " कुरुक्षेत्रं देवयजनं" यह श्रुति शतपथब्राह्मणविषे कथन करी है । इत्यादिक श्रुतिस्मृतिप्रमाणकरिकै सिद्ध जो कुरुक्षेत्र है । ता धर्मक्षेत्ररूप कुरुक्षेत्रविषे युद्धकी इच्छा करिकै एकट्ठे हूए जो दुर्योधनादिक मेरे पुत्र हैं । तथा युधिष्ठिरादिक पांडव हैं । ते सर्व क्या कार्य करते भये । शंका । (युयुत्सवः) या विशेषणकरिकै धृतराष्ट्रनैं अपणे पुत्रोंविषे तथा पांडवोंविषे युद्ध करणेकी इच्छा कथन करी । और या लोकविषे यह नियम है । जिस पुरुषकूं जिस कार्य करणेकी पूर्व इच्छा होवै है । सो पुरुष तिस इच्छाके अनुसार तिसी कार्यविषे प्रवृत्त होवै है । अन्य कार्यविषे प्रवृत्त होवै नहीं । यातैं ता पूर्व युद्धकी इच्छाके अनुसार तिन दुर्योधनादिकोंकी युद्धरूप कार्यविषेही प्रवृत्ति होवैंगी । अन्य किसी कार्यविषे तिनोंकी प्रवृत्ति होवैंगी नहीं । यातैं तिनोंका परस्पर किस प्रकारका युद्ध होता भया या प्रकारका प्रश्नही ता धृतराष्ट्रकूं करणेयोग्य था । ता प्रश्नका परित्याग करिकै मेरे पुत्र तथा पांडव क्या कार्य करते भये यह जो धृतराष्ट्रनैं प्रश्न करा है सो असंगत है । समाधान । ता धृतराष्ट्रके प्रश्नका यह अभिप्राय है । ते हमारे दुर्योधनादिक पुत्र तथा युधिष्ठिरादिक पांडव पूर्व उत्पन्न हूई युद्धकी इच्छाके अनुसार युद्धकूंही करते भये । अथवा किसी निमित्त करिकै ता युद्धकी इच्छाके निवृत्त हूए कोई दूसराही कार्य करते भये । तहां युद्धकी इच्छाके निवृत्तिविषे दो प्रकारका कारण संभवै है ॥ एक तौ दृष्टभय दूसरा अदृष्टभय । तहां भीष्म अर्जुनादिक महान शूरवीरोंके दर्शनतैं उत्पन्न भया जो भय है । सो दृष्टभयरूप युद्धके निवृत्तिका कारण प्रसिद्धही है ॥ यातैं सो दृष्टभयरूप निमित्त ता धृतराष्ट्रनैं कथन करा नहीं । और दूसरे अदृष्टभयरूप कारणके कथन करणेवासतै ता धृतराष्ट्रनैं कुरुक्षेत्रका धर्मक्षेत्र यह विशेषणदीया है । ऐसे धर्मक्षेत्ररूप कुरुक्षेत्रविषे प्राप्त हूए जो युधिष्ठिरादिक पांडव हैं । ते पांडव पूर्वही धर्मात्मा होणेतैं जो कदाचित् दोनों पक्षोंविषे होणेहारे हिंसाजन्य अधर्मतैं भयभीत होइकै ता युद्धतैं निवृत्त होइ जावैंगे । तौ हमारे दुर्योधनादिक पुत्र अवश्यकरिकै राज्यकूं प्राप्त होवैंगे । अथवा पूर्व स्वभावतैंही पापात्मा जो हमारे दु-

र्योधनादिक पुत्र हैं । तिन हमारे पुत्रोंका ता धर्मक्षेत्ररूप कुरुक्षेत्रके प्रभावतैं जो कदाचित् अंतःकरण शुद्ध हूआ होवैगा । ता चित्तकी शुद्धिकरिकै प-श्चात्तापकूं प्राप्त हूए ते हमारे पुत्र पूर्व कपटकरिकै लिये हूए राज्यकूं जो कदाचित् तिन पांडवोंके तांई देदेवैंगे । तौ ते हमारे पुत्र युद्धतैं विनाही नाशकूं प्राप्त हूए । इस प्रकार अपणे पुत्रोंकूं राज्यकी प्राप्तिविषे तथा पांडवोंकूं राज्यकी अप्राप्तिविषे अत्यंत दृढ उपायकूं नहीं देखाता हूआ जो धृतराष्ट्र है । ता धृ-तराष्ट्रका सो महान उद्वेगही ता प्रश्नका बीज है । तहां (हे संजय) या संबोधनकरिकै ता धृतराष्ट्रनैं यह अर्थ बोधन करा ॥ रागद्वेषादिक दोषोंकूं जो भली प्रकारकरिकै जय करे है ताका नाम संजय है । ऐसे रागद्वेषतैं रहित आप हो । यातैं पक्षपाततैं रहित होइकै आप हमारे प्रति सर्व वृत्तांत कथन करो । इहां यद्यपि (मामकाः किमकुर्वत) या प्रकारके वचनमात्रकरिकैही ता धृतराष्ट्रके प्रश्नकी सिद्धि होइ सकै है । काहेतैं ते युधिष्ठिरादिक पांडवभी ता धृत-राष्ट्रकेही संबंधी हैं । यातैं (पांडवाः) यह कहणा व्यर्थ है । तथापि (पांडवाः) या शब्दके भिन्न कहणेकरिकै ता धृतराष्ट्रनैं तिन पांडवोंविषे ममत्वका अभाव दिखाइकै तिन पांडवोंविषे अपणे द्रोहकूं सूचन करा इति ॥ १ ॥ ॥ हे जनमेजय । इस प्रकार कृपारूप नेत्रोंतैं रहित तथा लोकप्रसिद्ध ने-त्रोंतैं रहित तथा अपणे पुत्रोंके स्नेहमात्रकरिकै युक्त ऐसा जो धृतराष्ट्र है ता धृतराष्ट्रके प्रश्नकूं श्रवण करिकै तथा ता धृतराष्ट्रके अभिप्रायकूं जाणिकरिकै सो धर्मात्मा संजय ता धृतराष्ट्रके प्रति यह वचन कहता भया ॥

(मू. श्लो.) संजय उवाच । दृष्ट्वा तु पांडवानीकं व्यूढं दुर्योधनस्तदा । आचार्यमुपसंगम्य राजा वचनमब्रवीत् ॥ २ ॥ (पदच्छेदः) दृष्ट्वा । तु । पांडवानीकं । व्यूढं । दुर्योधनः । तदा । आचार्यं । उपसंगम्य । राजा । वचनं । अब्रवीत ॥ २ ॥ (पदार्थः) हे धृतराष्ट्र ता संग्रामके आरंभकालविषे राजा दुर्योधन व्यूहरचनायुक्त पांडवोंकी सेनाकूं देखिकरिकै द्रोणाचार्यके समीप जाइकै या प्रकारका वचन कहता भया ॥ २ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

टीका । तहां युधिष्ठिरादिक पांडवोंविषे भीष्मादिक वीर पुरुषोंतैं दृष्टभयकी संभावनामात्रभी होवै नहीं । और बांधवोंकी हिंसाजन्य पापरूप अदृष्टतैं जो अर्जुनकूं भय प्राप्त हूआ था । सो केवल भ्रांतिकरिकै हूआ था । सो अर्जुनका अदृष्टभयभी श्रीभगवान्नैं ब्रह्मविद्याके उपदेशतैं निवृत्त करा । या प्रकार पांडवोंकी उत्कृष्टता बोधन करणेवासतै संजयनैं (दृष्ट्वा तु) यह तुशब्द कथन करा है । तहां हमारे दुर्योधनादिक पुत्र धर्मक्षेत्ररूप कुरुक्षेत्रके प्रभावतैं शु-

भबुद्धिवाले होइकै पांडवोंके तांई राज्य समर्पण करैंगे या प्रकारकी शंकाकरिकै तूं गिलानिकूं मत प्राप्त होउ या प्रकार ता धृतराष्ट्रके संतोष करावणेवा-सतै सो संजय प्रथम ता दुर्योधनके दुष्ट स्वभावका वर्णन करे है। (दृष्ट्वेति) हे धृतराष्ट्र धृष्टद्युम्नादिक शूरवीर पुरुषोंनैं व्यूहरचना करिकै स्थापन करी जो पांडवोंकी सैना है। ता सैनाकूं सो दुर्योधन राजा अपणे नेत्रोंसैं प्रत्यक्ष देखिकरिकै धनुर्विद्याके संप्रदायकी प्रवृत्ति करणेहारे द्रोणाचार्यके समीप आ-पही जाइकै यह वक्ष्यमाण वचन कहता भया। ता द्रोणाचार्यकूं अपणे समीप बुलाइकै सो वचन नहीं कहता भया। तहां सो दुर्योधन राजा ता द्रोणाचार्यके समीप आपही जाता भया या कहणेकरिकै ता दुर्योधनविषे पांडवोंकी सैनाके दर्शनतैं उत्पन्न भया भय सूचन करा। तहां सो दुर्योधन यद्यपि भयकरिकै अप-णी रक्षावासतैं ता द्रोणाचार्यके समीप जाता भया। तथापि सो दुर्योधन राजनीतिविषे बहुत कुशल है। यातैं आचार्यके समीप शिष्यनैं आपही चलिके जाणा या प्रकार आचार्यकी महानताके व्याजकरिकै अपणे भयकूं गुह्य राखता भया। या प्रकारके अर्थके बोधन करणेवासतै संजयनैं दुर्योधनका राजा यह विशेषण दीया है। यद्यपि द्रोणाचार्यके प्रति सो राजा दुर्योधन कहता भया इतनैं कहणेमात्रकरिकैही निर्वाह होइ सकै है। वचन या पदके कहणेका कछु प्रयोजन नहीं है। तथापि वचन या पदके कहणेकरिकै ता वाक्यविषे संक्षिप्तत्व, बहु अर्थप्रतिपादकत्व इत्यादिक अनेक गुणवत्त्व कथन करा। अथवा सो दुर्योधन राजा केवल वचनमात्रही कहता भया। किंचित्मात्रभी अर्थ नहीं कहता भया। यह अर्थ वचनपदकरिकै सूचन करा इति ॥ २ ॥ तहां जिस प्रकारका वचन ता दुर्योधननैं द्रोणाचार्यके समीप जाइकै कथन करा था। ता वचनका (पश्यैतां) इसतैं आदि लेके (तस्य संजनयन् हर्षं) इसतैं पूर्वग्रंथकरिकै विस्तारतैं निरूपण करे हैं। तहां या द्रोणाचार्यके अत्यंत प्रिय शिष्य जो पांडव हैं। तिन पांडवोंविषे या द्रोणाचार्यका अत्यंत स्नेह है। यातैं यह द्रोणाचार्य हमारे पक्षविषे स्थित होइकै तिन पांडवोंके साथि युद्ध नहीं करैगा। या प्रकारकी संभावना अपणे मनविषे करिकै सो दुर्योधन राजा तिन पांडवोंऊपरि ता द्रोणाचार्यका क्रोध उत्पन्न करणेवासतै ता द्रोणाचार्यके समीप तिन पांडवोंकी अविज्ञाकूं कथन करता हूआ या प्रकारका वचन कहता भया ॥

(मू. श्लो.) पश्यैतां पांडुपुत्राणामाचार्य महतीं चमूं। व्यूढां द्रुपदपुत्रेण तव शिष्येण धीमता ॥ ३ ॥ (पदच्छेदः) ॥ पश्य। एतां। पांडुपुत्राणां। आचार्य। महतीं। चमूं। व्यूढां। द्रुपदपुत्रेण। तव। शिष्येण। धीमता ॥ ३ ॥ (पदार्थः) हे आचार्य पांडुरा-जाके पुत्रोंकी ईस महान सैनाकूं तूं देख जा सैना तुमारे बुद्धिमान शिष्य द्रुपदपुत्रनैं व्यूहरचनायुक्त करी है ॥ ३ ॥

टीका। हे आचार्य आपसरीखे महान् भाव पुरुषोंकीभी अविज्ञाकरिकै तथा भयतैं रहित होइकै अत्यंत समीप स्थित जो यह पांडवोंकी सैना है। सा

सैना अनेक अक्षौहिणी संख्यावाली होणेतैं महान् है । या कारणतैंही सा सैना निवृत्त करणेकूं अशक्य है । ऐसी पांडवोंकी सैनाकूं आप नेत्रोंकरिकै प्रत्यक्ष देखो । मैं आपका शिष्य हूं । यातैं मैं केवल आपके आगे प्रार्थना करताहूं । कोई आपकूं आज्ञा नहीं करता । ता हमारी प्रार्थनाकूं अंगीकार करिकै जबी आप ता पांडवोंकी सैनाकूं देखोंगे । तबी तिन पांडवोंके अविज्ञानकूं आपही निश्चय करौंगे । शंका । तिन पांडवोंनैं करी जो हमारी अविज्ञा है । सा अविज्ञा निवृत्त करणेकूं अशक्य है । यातैं सा अविज्ञा हमारेकूं सहारणीही उचित है । या प्रकारकी द्रोणाचार्यकी शंकाके हूए ॥ तिस अविज्ञाके निवृत्त करणेका उपाय आपकूं अत्यंत सुगम है या प्रकारका उत्तर सो दुर्योधन ता द्रोणाचार्यके प्रति कथन करे है (व्यूढां तव शिष्येण इति) हे आचार्य । तुमारेतैं धनुर्विद्या सिख्या हूआ जो द्रुपद राजाका पुत्र धृष्टद्युम्न नामा तुमारा बुद्धिमान् शिष्य है । ता द्रुपदपुत्रनैं यह पांडवोंकी सैना शकटाकार तथा पद्मादि आकार करी हूई है । और शिष्यकी अपेक्षाकरिकै गुरुविषे अधिकताही होवै है । यह वार्त्ता सर्व लोकशास्त्रविषे सिद्ध है । यातैं आपकूं तिनोंकी अविज्ञाके निवृत्त करणेका उपाय अत्यंत सुगम है । इहां धृष्टद्युम्ननैं सा पांडवोंकी सैना व्यूहरचनायुक्त करी है या प्रकारका वचन नहीं कथन करिकै द्रुपदपुत्रनैं सा सैना व्यूहरचनायुक्त करी है या प्रकारका वचन जो दुर्योधननैं कथन करा है । सो द्रोणाचार्यके प्रति द्रुपद राजाका पूर्वला वैर सूचन करिकै क्रोधकी उत्पत्ति करणेवासतै सो वचन कथन करा है । और ता द्रुपदपुत्रका बुद्धिमान् यह जो विशेषण दुर्योधननैं कथन करा है । सो ता द्रुपदपुत्रकी आपनैं उपेक्षा कदाचित्भी नहीं करणी या प्रकार ताकी उपेक्षाके अभावका बोधन करणेवासतै दीया है । यातैं हे आचार्य दूसरे सर्व कार्योंका परित्याग करिकै आप शीघ्रही चलिकै ता सैनाकूं देखो । अथवा या श्लोकके पदोंकी इस प्रकार योजना करणी (पांडुपुत्राणां) या पदका (आचार्य) या पदके साथि तथा (चमूं) या पदके साथि संबंध करणा । इस प्रकार तिन पदोंकी योजना करणेतैं यह अर्थ सिद्ध होवै है । हे पांडुपुत्रोंके आचार्य तिन पांडवोंकी सैनाकूं तूं देख । तिन पांडवोंविषेही तुमारा अत्यंत स्नेह है यातैं तिन पांडवोंकाही तूं आचार्य हैं । हमारा तूं आचार्य नहीं हैं । और तुमारे शिष्य द्रुपदपुत्रनैं यह सैना व्यूहरचनायुक्त करी है । या कहणेकरिकै ता दुर्योधननैं यह अर्थ सूचन करा । तुमारे नाश करणेवासतै उत्पन्न हूआभी यह द्रुपदपुत्र । तुमनैंही इसकूं धनुर्विद्या पढाई । यातैं यह तुमारी मूढताही हमारे अनर्थका कारण है । और सो द्रुपदपुत्र बुद्धिमान् है या कहणेकरिकै ता दुर्योधननैं यह अर्थ सूचन करा ॥ इस द्रुपदपुत्रनैं अपणे शत्रुवोंतैंही तिन शत्रुवोंके मारणेका उपायरूप धनुर्विद्या ग्रहण करी है । या कारणतैं यह द्रुपदपुत्र अत्यंत बुद्धिमान् है । हे आचार्य ऐसे अपणे शिष्योंकी सैनाकूं देखिकरिकै आपकूंही आनंद होवैगा । जिस कारणतैं आप भ्रांतियुक्त हो ।

भ्रांतितैं रहित दूसरे किसीकूं ता सैनाके दर्शनतैं आनंद होवैगा नहीं। जिसकूं यह पांडवोंकी सैना मैं दिखावों। यातैं आपही चलिकै तिन पांडवोंकी सैनाकूं देखो। इस प्रकार ता द्रोणाचार्यकूं पांडवोंकी सैना दिखावता हूआ सो दुर्योधन ता आचार्यविषे अपणे गूढद्वेषकूं बोधन करता भया। इतनैं कहणेकरिकै संजयनैं ता धृतराष्ट्रके प्रति यह अर्थ बोधन करा। धर्मक्षेत्रविषे प्राप्त होइकैभी जिन तुमारे दुर्योधनादिक पुत्रोंकूं अपणे आचार्यविषेभी ऐसी द्वेषबुद्धि हूई है। ते दुर्योधनादिक ता धर्मक्षेत्रके प्रभावतैं पश्चात्तापकूं प्राप्त होइकै तिन पांडवोंकूं युद्ध करेतैं विनाही राज्य देदेवैंगे या प्रकारकी संभावना तुमनैं कदाचित्भी नहीं करणी इति ॥ ३ ॥ ॥ शंका ॥ सर्व शूरवीरोंविषे अप्रसिद्ध ऐसा जो द्रुपदपुत्र है। ता एक द्रुपदपुत्रकरिकै व्यूहरचनायुक्त करी हूई जो यह पांडवोंकी सैना है ता पांडवोंकी सैनाकूं हम सर्वोंविषे कोई एक साधारण शूरवीरभी जय करि लेवैंगा। तुम तिन पांडवोंकी सैनातैं किस वासतै भय करतेहो। ऐसी द्रोणाचार्यकी शंकाके हूए। सो दुर्योधन राजा (अत्र शूराः) इत्यादिक तीन श्लोकोंकरिकै तिन पांडवोंकी सैनाविषे स्थित शूरवीरोंके नाम वर्णन करेहै ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

(मू. श्लो.) अत्र शूरा महेष्वासा भीमार्जुनसमा युधि। युयुधानो विराटश्च द्रुपदश्च महारथः ॥ ४ ॥ धृष्टकेतुश्चेकितानः काशिराजश्च वीर्यवान्। पुरुजित्कुंतिभोजश्च शैब्यश्च नरपुंगवः ॥ ५ ॥ युधामन्युश्च विक्रांत उत्तमौजाश्च वीर्यवान्। सौभद्रो द्रौपदेयाश्च सर्व एव महारथाः ॥ ६ ॥ (पदच्छेदः) अत्र। शूराः। महेष्वासाः। भीमार्जुनसमाः। युधि। युयुधानः। विराटः। च। द्रुपदः। च। महारथः ॥ ४ ॥ धृष्टकेतुः। चेकितानः। काशिराजः। च। वीर्यवान्। पुरुजित्। कुंतिभोजः। च। शैब्यः। च। नरपुंगवः ॥ ५ ॥ युधामन्युः। च। विक्रांतः। उत्तमौजाः। च। वीर्यवान्। सौभद्रः। द्रौपदेयाः। च। सर्वे। एव। महारथाः ॥ ६ ॥ (पदार्थः) इस पांडवोंकी सैनाविषे युद्धविषे भीमअर्जुनके समान तथा महान् धनुषोंवाले ऐसे शूरवीर बहुत विद्यमान हैं तिनोंके यह नाम हैं महारथीरूप युयुधान नामा राजा तथा विराट नामा राजा तथा द्रुपद नामा राजा ॥ ४ ॥ तथा विशेष पराक्रमवाला धृष्टकेतु नामा राजा तथा चेकितान नामा राजा तथा काशिराजा तथा सर्व मनुष्योंविषे श्रेष्ठ पुरुजित् नामा राजा तथा कुंतिभोज नामा राजा तथा शैब्य नामा राजा ॥ ५ ॥ तथा विशेष पराक्रमवाला युधामन्यु नामा राजा तथा वीर्यवाला उत्तमौजा नामा राजा तथा सौभद्र नामा राजा तथा द्रौपदीके पंच पुत्र यह सर्वही महारथी हैं ॥ ६ ॥ ॥ ॥

टीका। हे आचार्य या पांडवोंकी सैनाविषे केवल एक धृष्टद्युम्न नामा द्रुपदपुत्रही शूरवीर नहीं है जिसकरिकै या पांडवोंके सैनाकी हम उपेक्षा करि देवैं। किंतु या पांडवोंकी सैनाविषे दूसरेभी बहुत शूरवीर हैं। यातैं तिनोंके जय करणेवासतै हमारेकूं अवश्यकरिकै प्रयत्न करणा चाहीये। तिनोंकी उपेक्षा करणी योग्य नहीं है। अब तिन शूरवीरोंके विशेषणोंका कथन करे हैं (महेष्वासाः इति) इषु नाम बाणोंका है। ते बाणरूप इषु चलाइयें जिनोंकरिकै तिनोंका नाम इष्वासाः है। ऐसे धनुष् हैं। ते धनुषरूप इष्वासाः महान् हैं जिन शूरवीरोंके तिन शूरवीरोंका नाम महेष्वासाः है। तात्पर्य यह। ते शूरवीर बाणोंकरिकै दूरसैंही परसैनाके भगावणेविषे कुशल हैं इति। शंका। ते शूरवीर महान् धनुषोंवाले तौ हैं परंतु तिनोंविषे युद्ध करणेकी कुशलता नहीं होवैगी। ऐसी द्रोणाचार्यकी शंकाके हूए सो दुर्योधन राजा उत्तर कहे है (भीमार्जुनसमा युधि इति) हे आचार्य सर्व लोकविषे प्रसिद्ध है पराक्रम जिनोंका ऐसे जो भीम अर्जुन हैं। ता भीम अर्जुनके समानही जिन शूरवीरोंका युद्धविषे पराक्रम है। शंका। ऐसे पराक्रमवाले कौन कौन शूरवीर हैं। ऐसी द्रोणाचार्यकी शंकाके हूए सो दुर्योधन राजा ता द्रोणाचार्यकेप्रति तिन शूरवीरोंके नामोंका कथन करे है। (युयुधान इति) अतिशयकरिकै जो युद्धकूं करे है ताका नाम युयुधान है ऐसा सात्यकि नामा राजा है। और शत्रुवोंकूं जो विशेषकरिकै भ्रमण करावै है ताका नाम विराट है। और द्रु नाम वृक्षका है। पद नाम चिन्हका है। ता वृक्षका है ध्वजाविषे चिह्न जिसके ताका नाम द्रुपद है। यह तीनों महारथी हैं॥ ४ ॥ और शत्रुवोंकूं भयकी प्राप्ति करणेहारेका नाम धृष्ट है। केतु नाम ध्वजाका है। भयका कारण है ध्वजा जिसकी ताका नाम धृष्टकेतु है। और चिकितान नामा राजाका जो पुत्र होवै ताका नाम चेकितान है। और काशीका जो राजा होवै ताका नाम काशिराज है। ते तीनों राजे वीर्यवान् हैं। तेजबलकरिकै युक्त शत्रुवोंकूंभी जो विविध प्रकारतैं भगाइ देवै ताका नाम वीर है। तिस वीर पुरुषका जो कर्म होवै ताका नाम वीर्य है। सो वीर्य जिसविषे वर्त्तमान होवै ताका नाम वीर्यवान् है। और पुरु नाम बहुतोंका है। तिन बहुत शूरोंकूं जो जय करे है ताका नाम पुरुजित् है। और कुंतीके पिताका नाम कुंतीभोज है। और शिबि नामा राजाके कुलविषे जो उत्पन्न होवै ताका नाम शैब्य है। ते तीनों राजे नरपुंगव हैं। सर्व नरोंविषे जो श्रेष्ठ होवै ताका नाम नरपुंगव है ॥ ५ ॥ और युधा नाम युद्धका है और मन्यु नाम क्रोधका है। युद्धविषे है क्रोधका वेग जिसका ताका नाम युधामन्यु है। यह युधामन्यु पंचाल देशका राजा है। सो युधामन्यु विक्रांत है। विशेषकरिकै जाकेविषे पराक्रम रहे हैं ताका नाम विक्रांत है। और ओजस् नाम बलका है। उत्तम है ओजस् जिसका ताका नाम उत्तमौजाः है। सो उत्तमौजाः नामा राजाभी पंचालदेशका राजा है॥ कैसा है सो उत्तमौजाः नामा राजा वीर्यवान् है। अथवा वीर्यवान् नरपुंगव विक्रांत यह तीनोंविशेषण

॥ ६ ॥

॥ ६ ॥

युयुधानादिक सर्व राजोंके जानणे । और सुभद्राका जो पुत्र होवै ताका नाम सौभद्र है ऐसा अभिमन्यु है और द्रौपदीके जो प्रतिविंध्यादिक पंच पुत्र हैं। तिनोंका नाम द्रौपदेय है । और (द्रौपदेयाश्च) या पदविषे स्थित जो चकार है ता चकारकरिकै पूर्व उक्त राजावोंतैं भिन्न पांड्य राजा घटोत्कच आदिक सर्व राजोंका ग्रहण करणा । और युधिष्ठिरादिक पंचपांडव अत्यंत प्रसिद्ध हैं । यातैं दुर्योधननैं तिन पंचपांडवोंकी गिणती करी नहीं । अथवा (भीमार्जुनसमा युधि) या वचनकरिकै ता दुर्योधननैं युयुधानादिक सर्व शूरवीरोंविषे भीम अर्जुनकी उपमा दई है । यातैं भीमार्जुन यह पद पांचों पांडवोंका उपलक्षक है। इस प्रकार युयुधान राजातैं आदि लैके द्रौपदीके पंच पुत्रोंपर्यंत कथन करे जो सप्तदश राजे । तिनोंतैं भिन्न दूसरेभी तिनोंके संबंधी शूरवीर बहुत हैं । ते सर्व शूरवीर महारथी हैं । रथी अथवा अर्धरथी इनोंविषे कोई है नहीं । इहां (महारथाः) या शब्दकरिकै अतिरथीकाभी ग्रहण करणा । तहां महारथी, अतिरथी, रथी, अर्धरथी या चारोंका शास्त्रविषे या प्रकारका लक्षण कथन करा है । तहां श्लोक । "एको दशसहस्राणि योधयेद्यस्तु धन्विनाम् । शस्त्रशास्त्रप्रवीणश्च महारथ इति स्मृतः । अमितान्योधयेद्यस्तु संप्रोक्तोऽतिरथस्तु सः । रथस्त्वेकेन यो योद्धा तन्न्यूनोऽर्धरथः स्मृतः" । अर्थ यह । जो पुरुष एकलाही धनुष्वाले दशसहस्र शूरवीरोंके साथि युद्ध करे है तथा शस्त्रशास्त्रविषे अत्यंत कुशल होवै है ता पुरुषकूं महारथी कहे हैं । और जो पुरुष एकलाही असंख्यात शूरवीरोंके साथि युद्ध करे है तथा शस्त्रशास्त्रविषे अत्यंत कुशल होवै है ता पुरुषकूं अतिरथी कहे हैं । और जो पुरुष एक शूरवीरके साथिही युद्ध करे है ताकूं रथी कहे हैं । और जो पुरुष ता रथीतैंभी न्यून बलवाला होवै है ताकूं अर्धरथी कहे हैं इति ॥ ६ ॥ ❀ शंका । हे दुर्योधन इन पांडवोंकी सैनाविषे महान् शूरवीरोंकूं देखिकै जो कदाचित् तुमारेकूं भय होता होवै तौ इन पांडवोंके साथि शत्रुपणेका परित्याग करिकै तुम मित्रता करो या प्रकारके द्रोणाचार्यके अभिप्रायकी आशंका करिकै सो दुर्योधन ता द्रोणाचार्यके प्रति अपणी सैनाविषे स्थित शूरवीरोंके नामोंका वर्णन करे है ।

(मू. श्लो.) अस्माकं तु विशिष्टा ये तान्निबोध द्विजोत्तम । नायका मम सैन्यस्य संज्ञार्थं तान्ब्रवीमि ते ॥ ७ ॥ (पदच्छेदः) अस्माकं । तु । विशिष्टाः । ये । तान् । निबोध । द्विजोत्तम । नायकाः । मम । सैन्यस्य । संज्ञार्थं । तान् । ब्रवीमि । ते ॥ ७ ॥

(पदार्थः) हे सर्व ब्राह्मणोंविषे श्रेष्ठ आचार्य हम सर्वोंके मध्यविषे जे श्रेष्ठ योद्धा हैं तिनें योद्धावोंकूं आप निश्चय करो मेरी सैनाके जे प्रधान नायक हैं तिनोंविषे यत्किंचित नायकोंकूं नामतैं उच्चारण करिकै मैं तुमारे ताई कथन करताहूं ॥ ७ ॥

टीका। हे आचार्य । हमारी सैनाविषे जे योद्धा विद्या, बल, पौरुष, कुल, शील इत्यादिक गुणोंकरिकै श्रेष्ठ हैं । तथा जे योद्धा हमारी सैनाकूं तिस तिस

स्थानविषे लेजाणेहारे मुख्य नायक हैं। ते सर्व योद्धा यद्यपि असंख्यात हैं। तथापि तिन सर्व योद्धावोंविषे यत्किंचित योद्धावोंकूं नामतैं उच्चारण करिकै तिनोंतैं भिन्न सर्व योद्धावोंके लखावणेवासतै मैं आपके प्रति कथन करताहूं। ते सर्व योद्धा आपकूं पूर्वही ज्ञात हैं। यातैं किसी अज्ञात योद्धावोंके जनावणेवासतै मैं आपके प्रति तिन योद्धावोंके नाम कथन करता नहीं। किंतु पूर्वही ज्ञात योद्धावोंके स्मरण करणेवासतै मैं तिनोंके नामोंकूं कथन करताहूं। इहां (अस्माकं तु) या पदविषे स्थित जो तुशब्द है। ता तुशब्दकरिकै ता दुर्योधननैं अंतर उत्पन्न हूए भयका बाहिर नहीं प्रगट करणा या प्रकारकी अपणी ढीठता बोधन करी। और (हे द्विजोत्तम) या विशेषणके कहणेकरिकै सो दुर्योधन ता द्रोणाचार्यकी स्तुति करता हूआ अपणे युद्धरूप कार्यविषे ता द्रोणाचार्यकी प्रवृत्तिकूं संपादन करता भया। औ ता द्रोणाचार्यके द्वेषपक्षविषे तौ सो दुर्योधन (हे द्विजोत्तम) या विशेषणकरिकै यह अर्थ बोधन करता भया। तूं ब्राह्मण होणेतैं युद्धविषे कुशल हैं नहीं यातैं जो कदाचित् तूं हमारेतैं विमुख होइकै पांडवोंके पक्षविषेभी जावैगा। तौभी भीष्मादिक श्रेष्ठ क्षत्रिय हमारे पक्षविषे विद्यमान हैं। यातैं तुमारेतैं विना हमारी किंचितमात्रभी हानि होवैगी नहीं। और (संज्ञार्थं तान्ब्रवीमि ते) या कहणेकरिकै ता दुर्योधननैं यह अर्थ सूचन करा। अपणे प्रिय शिष्य पांडवोंकी सैनाकूं देखिकै हर्षकरिकै व्याकुल हूआ है मन जिसका ऐसा जो तूं हैं। तिस तुमारेकूं अपणे भीष्मादिक शूर पुरुषोंकी विस्मृति मत होवै। या कारणतैं अपणी सैनाके भीष्मादिक शूरपुरुषोंकी स्मृति करावणेवासतै मैं यत्किंचित् तिन शूरवीरोंके नाम तुमारेप्रति कथन करताहूं इति ॥ ७ ॥ ❁ अब सो दुर्योधन राजा ता द्रोणाचार्यके समीप अपणी सैनाविषे स्थित शूरवीरोंकी गिणति करे है।

(मू. श्लो.) भवान् भीष्मश्च कर्णश्च कृपश्च समितिंजयः॥ अश्वत्थामा विकर्णश्च सौमदत्तिर्जयद्रथः॥८॥ (पदच्छेदः) भवान्। भीष्मः। च। कर्णः। च। कृपः। च। समितिंजयः। अश्वत्थामा। विकर्णः। च। सौमदत्तिः। जयद्रथः॥८॥ (पदार्थः) आप द्रोणाचार्य तथा भीष्मपितामह तथा कर्ण तथा संग्रामकूं जय करणेहारा कृपाचार्य तथा अश्वत्थामा तथा विकर्ण तथा सौमदत्ति तथा जयद्रथ॥८॥

टीका। हे आचार्य हमारी सैनाविषे प्रथम तौ आप महान् शूरवीर हो। तथा भीष्मपितामह है। तथा कर्ण है। तथा संग्रामकूं जय करणेहारा कृपाचार्य है। शंका। द्रोणाचार्यका पुत्र जो अश्वत्थामा है तिसकी कर्णतैं अनंतर गिणती करणेतैं द्रोणाचार्यकूं मनविषे क्रोध हूआ होवैगा। या प्रकार ता द्रोणाचार्यके क्रोधकी शंका करिकै ता क्रोधकी निवृत्ति करणेवासतै सो दुर्योधन यह अश्वत्थामादिक चारि तौ हमारी सैनाविषे सर्व शूरवीरोंतैं श्रेष्ठ नायक हैं या प्रकारके

अभिप्रायतैं तिन चारोंकी गिणती करे है (अश्वत्थामा इति) हे आचार्य आपका पुत्र जो अश्वत्थामा है तथा हमारा छोटा भ्राता जो विकर्ण है। तथा सोमदत्त राजाका पुत्र जो सौमदत्ति है। जाकूं भूरिश्रवा कहे हैं। तथा सिंधुदेशका राजा जो जयद्रथ है। यह चारों महान शूरवीर हैं। इहां जैसे दुर्योधननैं भीष्मादिकोंकी अपेक्षा करिकै द्रोणाचार्यकी जो प्रथम गिणती करी है। सो ता द्रोणाचार्यकी प्रसन्नता करणेवासतै करी है। तैसे विकर्णादिकोंकी अपेक्षा करिकै जो द्रोणाचार्यके पुत्र अश्वत्थामाकी प्रथम गिणती करी है। सोभी ता द्रोणाचार्यकी प्रसन्नता करणेवासतै करी है। या लोकविषे अपणी उत्कृष्टताकूं तथा अपणे पुत्रकी उत्कृष्टताकूं श्रवण करिकै सर्व लोक प्रसन्न होवै हैं। इहां (जयद्रथः) या पदके स्थानविषे किसी पुस्तकमें (तथैव च) यह पाठभी होवै है इति ॥ ८ ॥ ❀ शंका। हे दुर्योधन तुमारी सैनाविषे क्या इतनैंही शूरवीर हैं। ऐसी द्रोणाचार्यकी शंकाके हूए। सो दुर्योधन हमारी सैनाविषे दूसरेभी बहुत शूरवीर हैं। या प्रकारका उत्तर कथन करे है।

(मू. श्लो.) अन्ये च बहवः शूरा मदर्थे त्यक्तजीविताः। नानाशस्त्रप्रहरणाः सर्वे युद्धविशारदाः ॥९॥ (पदच्छेदः) अन्ये। च। बहवः। शूराः। मदर्थे। त्यक्तजीविताः। नानाशस्त्रप्रहरणाः। सर्वे। युद्धविशारदाः ॥ ९ ॥ (पदार्थः) हे आचार्य हमारी सैनाविषे पूर्व उक्त शूरवीरोंतैं दूसरे भी बहुत शूरवीर हैं कैसे हैं ते शूरवीर मेरे जयरूप प्रयोजनवासते अपणे जीवनेकी आशाकूंभी जिनोंनैं परित्याग करी है तथा नानाप्रकारके शस्त्र हैं युद्धके साधन जिनोंके तथा ते सर्व शूरवीर युद्धविषे बहुत कुशल हैं ॥९॥

टीका। हे आचार्य केवल पूर्व उक्त भीष्मादिकही हमारी सैनाविषे नहीं हैं। किंतु तिन भीष्मादिकोंतैं भिन्न दूसरेभी शल्य, कृतवर्मा, भगदत्त इत्यादिक बहुत शूरवीर हैं। कैसे हैं ते शूरवीर। अपणे प्राणोंका परित्याग करिकैभी या दुर्योधनका जय हम संपादन करैंगे या प्रकारके निश्चय करिकै युक्त हैं। तथा शूल, चक्र, गदा, खड्ग इत्यादिक नानाप्रकारके शस्त्र हैं युद्धके साधन जिनोंके या कारणतैंही ते सर्व शूरवीर युद्धविषे बहुत कुशल हैं। इहां (शूराः) इत्यादिक विशेषणोंकरिकै ता दुर्योधननैं अपणी सैनाविषे पांडवोंकी सैनातैं बाहुल्यता कथन करी। तथा अपणेविषे ता सैनाकी अनन्य भक्ति कथन करी। तथा अपणी सैनाकी शौर्यता तथा युद्धविषे अत्यंत उद्यम तथा अत्यंत कुशलता कथन करी। ऐसी हमारी सैना इन पांडवोंकी सैनातैं अधिक बलवान है इति ॥ ९ ॥ ❀ शंका। हे दुर्योधन जैसे तुमारी सैनाविषे शस्त्रअस्त्रविद्याविषे कुशल भीष्मादिक अनेक शूरवीर हैं। तैसे पांडवोंकी सैनाविषेभी शस्त्रअ-

स्त्रविद्याविषे कुशल अनेक शूरवीर हैं । यातैं ते दोनों सैना समानही हैं । ऐसी द्रोणाचार्यकी शंकाके हूए । सो दुर्योधन राजा दूसरे प्रकारतैंभी तिन पांडवोंकी सैनातैं अपणी सैनाविषे अधिकता वर्णन करे है ।

(मू. श्लो.) अपर्याप्तं तदस्माकं बलं भीष्माभिरक्षितं । पर्याप्तं त्विदमेतेषां बलं भीमाभिरक्षितं ॥ १० ॥ (पदच्छेदः) अपर्याप्तं । तत् । अस्माकं । बलं । भीष्माभिरक्षितं । पर्याप्तं । तु । इदं । एतेषां । बलं । भीमाभिरक्षितं ॥ १० ॥ (पदार्थः) हे आचार्य हमारी सो सैना अनंत है तथा भीष्मकरिकै सर्व ओरतैं रक्षण करी है और याँ पांडवोंकी यह सैना तौ न्यून है तथा भीमकरिकै रक्षण करी है ॥ १० ॥

टीका । हे आचार्य यह हमारी सैना एकादश अक्षौहिणी संख्यावाली है । तथा सर्व लोकविषे प्रसिद्ध है महिमा जिसकी तथा अत्यंत सूक्ष्म है बुद्धि जिसकी ऐसा जो भीष्म है ता भीष्मकरिकै सा हमारी सैना सर्व ओरतैं रक्षण करी है । यातैं सा हमारी सैना तिन पांडवोंकी सैनातैं प्रबल है । और यह पांडवोंकी सैना तौ सप्त अक्षौहिणी संख्यावाली होणेतैं हमारी सैनातैं न्यून है । तथा अत्यंत चपलबुद्धिवाले दुर्बल भीमसेनकरिकै सर्व ओरतैं रक्षण करी हूई है । यातैं यह पांडवोंकी सैना हमारी सैनातैं अत्यंत दुर्बल है । अथवा । अपर्याप्तं तत् अस्माकं बलं भीष्माभिरक्षितं पर्याप्तं तु इदं एतेषां बलं भीमाभिरक्षितं । या दशमे श्लोकके पदोंकी या प्रकारतैं योजना करणी । सो पांडवोंकी सैना हमारे पराजय करणेवासतै समर्थ नहीं है । जिसवासतै सा पांडवोंकी सैना भीष्माभिरक्षित है । क्या महान पराक्रमवाला तथा सूक्ष्मबुद्धिवाला जो भीष्म है । सो भीष्मपितामह हमोंनैं स्थापन करा है जिस पांडवोंकी सैनाके निवृत्त करणेवासतैं । या कारणतैं सा पांडवोंकी सैना भीष्माभिरक्षित है । और यहँ हमारी सैना तौ इन पांडवोंके पराजय करणेविषे समर्थ है । जिस कारणतैं यह हमारी सैना भीमाभिरक्षित है । क्या अत्यंत दुर्बल हृदय जिसका तथा अत्यंत स्थूल है बुद्धि जिसकी ऐसा सो भीमसेन है । सो भीमसेन इनोंनैं स्थापन करा है जिस हमारी सैनाके निवृत्त करणेवासतै । या कारणतैं यह हमारी सैना भीमाभिरक्षित है । यातैं ऐसी दुर्बल पांडवोंकी सैनातैं हमारेकूं किंचित्मात्रभी भय है नहीं । इहां प्रथम व्याख्यानविषे भीष्मेण अभिरक्षितं भीष्माभिरक्षितं तथा भीमेन अभिरक्षितं भीमाभिरक्षितं या तृतीयातत्पुरुषसमासकरिकै भीष्माभिरक्षितं यह दुर्योधनकी सैनाका विशेषण है । और भीमाभिरक्षितं यह पांडवोंकी सैनाका विशेषण है । और दूसरे व्याख्यानविषे तौ भीष्मः अभिरक्षितो यस्मै तत् भीष्माभिरक्षितं तथा भीमः अभिरक्षितो यस्मै तत् भीमाभिरक्षितं या प्रकारके बहुव्रीहिसमासकरिकै भीष्माभिरक्षितं यह पांडवोंकी सैनाका विशेषण है । और भीमा-

भिरक्षितं यह दुर्योधनकी सैनाका विशेषण है इति ॥ १० ॥ ❀ शंका। हे दुर्योधन या पांडवोंके सैनाकी अपेक्षा करिकै अपणी सैनाकूं प्रबल जानिकै जो तूं भयतै रहित है। तौ किसवासतै तूं बहुत कल्पना करता है। ऐसी आशंकाके हूए। सो दुर्योधन राजा कहे है।

(मू. श्लो.) अयनेषु च सर्वेषु यथाभागमवस्थिताः। भीष्ममेवाभिरक्षंतु भवंतः सर्व एव हि ॥ ११ ॥ (पदच्छेदः) अयनेषु। च। सर्वेषु। यथाभागं। अवस्थिताः। भीष्मं। एवं। अभिरक्षंतु। भवंतः। सर्वे। एव हि ॥ ११ ॥ (पदार्थः) जिस कारणतैं द्रोणाचार्यादिक तुम सर्व योद्धा व्यूहरचनायुक्त सैनाके सर्व प्रवेशमार्गोंविषे अपणे अपणे स्थानविषे स्थित हूए या भीष्मपितामहकूं ही सर्व ओरतैं रक्षण करो ॥ ११ ॥

टीका। (अयनेषु च) या पदविषे स्थित जो चकार है। सो चकार पूर्व कर्त्तव्यकी अपेक्षा करिकै कर्त्तव्यविशेषका बोधक है। युद्धके प्रारंभकालविषे योद्धा पुरुषोंके यथायोग्य युद्धभूमिविषे पूर्वउत्तरादिक दिशावोंके विभाग करिकै जो स्थितिके स्थान नियम करे जावै हैं तिन स्थानोंका नाम अयन है। और सर्व सैनाका पति तौ ता सर्व सैनाकूं अपणे आश्रित करिकै ता सर्व सैनाके मध्यविषे स्थित होवै है। सो इस हमारी सैनाका पति भीष्मपितामह है। सो भीष्मपितामह युद्धके अत्यंत अभिनिवेशतैं अपणे सन्मुखदेशकी तरफ तथा अपणे पृष्ठदेशकी तरफ तथा अपणे वामभागदक्षिणभागकी तरफ देखता नहीं। यातैं द्रोणाचार्यादिक तुम सर्व योद्धा अपणे भिन्न भिन्न रणभूमिनकूं परित्याग करिकै अपणे अपणे यथायोग्य स्थानविषे स्थित हुए या भीष्मपितामहकाही सर्व ओरतैं रक्षण करो। जिसकरिकै कोई परसैनाका शत्रु किसी मार्गद्वारा आइकै या भीष्मपितामहका हनन नहीं करै। इस प्रकार सावधान होइकै रक्षण करो। जवी तुम सर्व योद्धा या भीष्मपितामहका रक्षण करौगे। तबी ता भीष्मपितामहकी कृपातैं हम सर्वोंका रक्षण होवैगा इति ॥ ११ ॥ ❀ । शंका। हे संजय या प्रकारके वचन जबी ता दुर्योधन राजानैं कथन करे। तिसतैं अनंतर ते भीष्मादिक योद्धा क्या कार्य करते भये। या प्रकारकी ता धृतराष्ट्रकी शंकाके हुए। कोई हमारी स्तुति करो अथवा कोई हमारी निंदा करो इस दुर्योधन राजाके वासतै यह हमारा देह अवश्यकरिकै पतन होवैगा या प्रकारके अभिप्रायकरिकै सो भीष्मपितामह ता दुर्योधनके चित्तविषे हर्ष उत्पन्न करता हुआ सिंहनादकूं तथा शंखके शब्दकूं करता भया या प्रकारका उत्तर सो संजय ता धृतराष्ट्रकेप्रति कथन करे है।

(मू. श्लो.) तस्य संजनयन्हर्षं कुरुवृद्धः पितामहः । सिंहनादं विनद्योच्चैः शंखं दध्मौ प्रतापवान् ॥ १२ ॥ (पदच्छेदः) तस्य । संजनयन् । हर्षं । कुरुवृद्धः । पितामहः । सिंहनादं । विनद्य । उच्चैः । शंखं । दध्मौ । प्रतापवान् ॥ १२ ॥ (पदार्थः) हे धृतराष्ट्र महान् प्रतापवाला तथा कुरुवंशविषे वृद्ध ऐसा भीष्मपितामह तिस दुर्योधन राजाके हर्षकूं उत्पन्न करता हूआ सिंहनादकूं करिकै उच्चै स्वरतैं शंखकूं बजावता भया ॥ १२ ॥

टीका । हे धृतराष्ट्र । पांडवोंकी सैनाकूं देखिकरिकै उत्पन्न हूआ है भय जिसकूं । तथा ता भयकी निवृत्ति करणेवासतै कपटकरिकै ता द्रोणाचार्यके शरणकूं प्राप्त हूआ । तथा इस कालविषेभी यह दुर्योधन हमारे साथि कपट करे है या प्रकारके असंतोषतैं वाणीमात्रकरिकैभी जिसका आचार्यनैं आदर नहीं करा । तथा ता द्रोणाचार्यकी उपेक्षाकूं जानिकै (अयनेषु च सर्वेषु) इत्यादिक वचनोंकरिकै भीष्मपितामहकी स्तुति करी है जिसनैं । ऐसा जो दुर्योधन राजा है । ता दुर्योधनके भयकी निवृत्ति करणेहारा तथा ता दुर्योधन राजाके जयका सूचन करणेहारा ऐसा जो बुद्धिविषे स्थित उल्हासरूप हर्ष है ता हर्षकूं उत्पन्न करता हूआ सो भीष्मपितामह महान् सिंहनादकूं करिकै ऊचै स्वरतैं शंखकूं बजावता भया । इहां संजयनैं भीष्मके कुरुवृद्ध, पितामह, प्रतापवान् यह तीन विशेषण दीये हैं । तहां (कुरुवृद्धः) या प्रथम विशेषणकरिकै तौ ता भीष्मविषे द्रोणाचार्यके तथा दुर्योधन राजाके अभिप्रायका ज्ञान सूचन करा । जिसवासतै लोकविषे वृद्ध पुरुषोंविषेही पुत्रादिकोंके अभिप्रायका ज्ञान होवै है । और (पितामहः) या द्वितीय विशेषणकरिकै जैसे द्रोणाचार्यनैं या दुर्योधनादिकोंकी उपेक्षा करी है । तैसे हमारेकूं इनोंकी उपेक्षा करणी योग्य नहीं है या प्रकारका अभिप्राय सूचन करा । और तीसरे (प्रतापवान्) या विशेषणकरिकै यह अर्थ सूचन करा । ऊचै स्वरतैं सिंहनादपूर्वक जो भीष्मनैं शंखकूं बजाया है । सो भीष्मके शंखका शब्द पांडवोंके सैनाकूं अवश्यकरिकै भयकी प्राप्ति करैगा इति ॥ १२ ॥ ❀ अब ता सैनापति भीष्मकी प्रवृत्तितैं अनंतर जिस प्रकार सर्व योद्धावोंकी प्रवृत्ति होती भई ताकूं संजय निरूपण करे है ।

(मू. श्लो.) ततः शंखाश्च भेर्यश्च पणवानकगोमुखाः । सहसैवाभ्यहन्यंत स शब्दस्तुमुलोभवत् ॥ १३ ॥ (पदच्छेदः) ततः । शंखाः । च । भेर्यः । च । पणवानकगोमुखाः । सहसा । एव । अभ्यहन्यंत । सः । शब्दः । तुमुलः । अभवत् ॥ १३ ॥ (पदार्थः) हे

धृतराष्ट्र तो सैनापति भीष्मकी प्रवृत्तितैं अनंतर ता दुर्योधनकी सैनाविषे अनेक शंख तथा अनेक भेरी तथा अनेक पणव तथा अनेक अनक तथा अनेक गोमुख शीघ्रं ही बजंते भये सो शंखादिकोंका शब्द महान् होता भया ॥ १३ ॥ ॥

टीका । हे धृतराष्ट्र ता सैनापति भीष्मके शंखके शब्दकूं श्रवण करिकै उत्पन्न हूआ है युद्ध करणेका उत्साह जिनोंविषे ऐसे जो द्रोणाचार्यादिक योद्धा हैं । ते सर्व योद्धा अपणे अपणे शंखोंकूं शीघ्रही बजावते भये । तथा दूसरे सैनाचर पुरुष भेरी, पणव, अनक, गोमुख इत्यादिक वादित्रोंकूं शीघ्रही बजावते भये । तिन शंख भेरी आदिकोंका सो ध्वनिरूप शब्द महान् होता भया । ता महान् शब्दकूं श्रवणकरिकैभी तिन पांडवोंकूं किंचित्मात्रभी क्षोभ नहीं होता भया । इहां पणव नाम मृदंगका है । अनक नाम नगारेका है । गोमुख नाम रणसिंहाका है इति ॥१३॥ ❀ ॥ इस प्रकार दुर्योधन राजाकी सैनाके प्रवृत्तिकूं कथन करिकै अब पांडवोंकी सैनाके प्रवृत्तिकूं सो संजय कथन करे है ।

(मू. श्लो.) ततः श्वेतैर्हयैर्युक्ते महति स्यंदने स्थितौ । माधवः पांडवश्चैव दिव्यौ शंखौ प्रदध्मतुः ॥ १४ ॥ (पदच्छेदः) ततः । श्वेतैः । हयैः । युक्ते । महति । स्यंदने । स्थितौ । माधवः । पांडवः । च । एव । दिव्यौ । शंखौ । प्रदध्मतुः ॥ १४ ॥ (पदार्थः) हे धृतराष्ट्र भीष्मादिकोंके शंखादिकोंके शब्द श्रवणतैं अनंतर श्वेतवर्णवाले अश्वोंकरिकै युक्त तथा महान् ऐसे रथविषे स्थित जो श्रीकृष्णभगवान् है तथा अर्जुन है ते दोनों दिव्य शंखोंकूं बजावते भये ॥ १४ ॥ ॥ ॥

टीका । या श्लोकके अक्षरोंका अर्थ स्पष्टही है । ताका भावार्थ यह है । यद्यपि पांडवोंकी सैनाविषे अर्जुनकी न्याई तथा भगवान्की न्याई दूसरेभी सर्व योद्धा अपणे अपणे रथोंविषेही स्थित थे । यातैं केवल अर्जुनका तथा कृष्णभगवान्काही रथस्थत्वरूपविशेषण संभवै नहीं । तथापि (ततः श्वेतैर्हयैर्युक्ते) इत्यादिक विशेषणयुक्त रथविषे जो अर्जुनकी तथा भगवान्की स्थिति कथन करी है । सो दूसरे रथोंतैं ता अर्जुनके रथकी उत्कृष्टता बोधन करणेवास्तै कथन करी है । यातैं अग्नि देवतानैं अर्जुनके तांई दीया जो रथ है । सो रथ किसीभी शत्रुकरिकै चलायमान होइ सकै नहीं । ऐसे महान् रथविषे स्थित जो अर्जुन तथा कृष्ण भगवान् है । ते दोनों किसीभी शत्रुकरिकै जीत्ये जावै नहीं इति ॥ १४ ॥ ❀ ॥ अब सो अर्जुन तथा श्रीभगवान् जिन शंखोंकूं बजावते भये हैं तिन शंखोंके नाम तथा भीमादिकोंके शंखोंके नाम दो श्लोकोंकरिकै वर्णन करे है ।

(मू. श्लो.) पाञ्चजन्यं हृषीकेशो देवदत्तं धनंजयः। पौंड्रं दध्मौ महाशंखं भीमकर्मा वृकोदरः ॥ १५ ॥ (पदच्छेदः) पांचजन्यं। हृषीकेशः। देवदत्तं। धनंजयः। पौंड्रं। दध्मौ। महाशंखं। भीमकर्मा वृकोदरः ॥ १५ ॥ (पदार्थः) श्रीकृष्णभगवान् पांचजन्य नामा शंखकूं बजावता भया तथा अर्जुन देवदत्त नामा शंखकूं बजावता भया और लोकोंकूं भयकी प्राप्ति करणेहारे हैं कर्म जिसके तथा वृकंकी न्यांई है उदर जिसका ऐसा भीमसेन पौंड्र नामा महाशंखकूं बजावता भया ॥ १५ ॥

टीका। पंचजनतैं जो उत्पन्न होवै ताकूं पांचजन्य कहे हैं। ता पांचजन्य नामा शंखकूं हृषीकेश बजावता भया। और देवतावोंनैं दीया हुआ जो शंख है ताका नाम देवदत्त है। ता देवदत्त नामा शंखकूं धनंजय बजावता भया। इहां संजयनैं श्रीकृष्णभगवान्कूं जो हृषीकेश नाम करिकै कथन करा है। ताका यह अभिप्राय है। हृषीकेश या नामविषे हृषीक और ईश यह दो पद हैं। तहां हृषीक नाम इंद्रियोंका है। ईश नाम प्रेरकका है। ते दोनों पद मिलिकै सर्व इंद्रियोंकूं अपणे अपणे कार्यविषे प्रवृत्त करणेहारे अंतर्यामी ईश्वरकूं कथन करे हैं। ऐसा सर्वका अंतर्यामी कृष्णभगवान् जिन पांडवोंकी सहायताविषे है। तिन पांडवोंकूं तुमारे दुर्योधनादिक पुत्र जय करि सकैंगे नहीं और ता संजयनैं अर्जुनकूं जो धनंजय नामकरिकै कथन करा है। ताका यह अभिप्राय है। सर्व दिशावोंके जयकालविषे सर्व राजावोंकूं जीतिकरिकै अर्जुन धनकूं लेआवता भया है। या कारणतैं ता अर्जुनकूं धनंजय कहे हैं। ऐसा महान् पराक्रमवाला अर्जुन तुमारे पुत्रोंतैं जीत्या जावैगा नहीं। और ता संजयनैं भीमसेनका जो वृकोदर यह विशेषण दीया है। ताका यह अभिप्राय है। वृककी न्यांई ता भीमसेनविषे बहुत अन्नके पचावणेकी सामर्थ्य है। यातैं सो भीमसेन अत्यंत बलवान् है इति ॥ १५ ॥

(मू. श्लो.) अनंतविजयं राजा कुंतीपुत्रो युधिष्ठिरः। नकुलः सहदेवश्च सुघोषमणिपुष्पकौ ॥ १६ ॥ (पदच्छेदः) अनंतविजयं। राजा। कुंतीपुत्रः। युधिष्ठिरः। नकुलः। सहदेवः। च। सुघोषमणिपुष्पकौ ॥ १६ ॥ (पदार्थः) कुंतीका पुत्र राजा युधिष्ठिर अनंतविजय नामा शंखकूं बजावता भया और नकुल तथा सहदेव यह दोनों यथाक्रमतैं सुघोष और मणिपुष्पक या दोनों शंखोंकूं बजावते भये ॥ १६ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

टीका। नाशतैं रहित विजय प्राप्त होवै जिसतैं ताका नाम अनंतविजय है। ऐसे अनंतविजय नामा शंखकूं कुंतीका पुत्र राजा युधिष्ठिर बजावता भया।

इहां कुंतीमातानैं महान् तप करिकै धर्मराजाका आराधन करा था । ता धर्मराजातैं कुंतीकूं युधिष्ठिर पुत्रकी प्राप्ति भईथी । यातैं यह युधिष्ठिर राजा महाबलवान् है । या प्रकार ता युधिष्ठिरके प्रभावका बोधन करणेवासतैं संजयनैं ता युधिष्ठिरका कुंतीपुत्र यह विशेषण दीया है । और सो युधिष्ठिर राजसूययज्ञका कर्ता है । यातैं राजाशब्दकी मुख्य अर्थता इस युधिष्ठिरविषेही घटे है । या प्रकारके अर्थका बोधन करणेवासतै संजयनैं ता युधिष्ठिरका राजा यह विशेषण दीया है । और युद्धविषे जयरूप फलका भागी हुआ जो स्थित होवै ताकूं युधिष्ठिर कहे हैं । ता युधिष्ठिरपदकरिकै संजयनैं यह अर्थ सूचन करा । या संग्रामविषे जयरूप फलका भागी हुआ यह युधिष्ठिरही स्थित होवैगा । ताके प्रतिपक्षी दुर्योधनादिक ता जयरूप फलके भागी हुए या संग्रामविषे स्थित होवैंगे नहीं इति । इहां दो श्लोकोंकरिकै पांचजन्य, देवदत्त, पौंड्र, अनंतविजय, सुघोष, मणिपुष्पक यह षट् शंखोंके नाम कथन करै । ता करिकै संजयनैं यह अर्थ बोधन करा । या पांडवोंकी सैनाविषे अपणे अपणे नामोंकरिकै प्रसिद्ध इतनै शंख हैं । और दुर्योधन राजाकी सैनाविषे तौ अपणे नामकरिकै प्रसिद्ध एकभी शंख नहीं है । यातैं यह पांडवोंकी सैना तुमारे दुर्योधनादिक पुत्रोंकी सैनातैं अत्यंत प्रबल है इति ॥ १६ ॥ ❀ ॥ अब धृतराष्ट्रकूं जो अपणे पुत्रोंके जयकी आशा है । ता आशाके निवृत्त करणेवासतै सो संजय ता पांडवोंके पक्षविषे वर्त्तमान दूसरे राजावोंकी एकसंमतिकूं दो श्लोकोंकरिकै कथन करे है ।

(मू. श्लो.) काश्यश्च परमेष्वासः शिखंडी च महारथः ॥ धृष्टद्युम्नो विराटश्च सात्यकिश्चापराजितः ॥ १७ ॥ द्रुपदो द्रौपदेयाश्च सर्वशः पृथिवीपते ॥ सौभद्रश्च महाबाहुः शंखान् दध्मुः पृथक् पृथक् ॥ १८ ॥ (पदच्छेदः) काश्यः । च । परमेष्वासः । शिखंडी । च । महारथः । धृष्टद्युम्नः । विराटः । च । सात्यकिः । च । अपराजितः । ॥ १७ ॥ द्रुपदः । द्रौपदेयाः । सर्वशः । च । पृथिवीपते । सौभद्रः । च । महाबाहुः । शंखान् । दध्मुः । पृथक् पृथक् ॥ १८ ॥ (पदार्थः) हे पृथिवीका पति धृतराष्ट्र महान् धनुषवाला जो काशीका राजा है तथा महारथी जो शिखंडी है तथा धृष्टद्युम्न जो है तथा विराट राजा जो है तथा शत्रुवोंकरिकै नहीं जीत्या हुआ जो सात्यकि राजा है ॥ १७ ॥ तथा द्रुपद राजा जो है तथा द्रौपदीके जो पंच पुत्र हैं तथा महान् बाहुवाला जो सुभद्राका पुत्र है यह सर्व योद्धा भिन्न भिन्न अपणे अपणे शंखोंकूं बजावते भये ॥ १८ ॥ ॥ ॥

टीका । हे धृतराष्ट्र श्रीकृष्णभगवान्सहित अर्जुनादिक पंच पांडवोंकी प्रवृत्तिकूं देखिकरिकै तिन पांडवोंके पक्षपाति काशीराजा तथा शिखंडी तथा धृष्टद्युम्न तथा विराट राजा तथा सात्यकि राजा तथा द्रुपदराजा तथा द्रौपदीके प्रतिविंध्यादिक पंच पुत्र तथा सुभद्राका पुत्र अभिमन्यु यह सर्व योद्धा भिन्न भिन्न अपणे अपणे शंखोंकूं बजावते भये। इहां मुखविषे स्थित श्मश्रुरूप वालोंतैं रहितपणेका नाम शिखंड है। सो शिखंड जिसविषे होवै ताका नाम शिखंडी है । सो शिखंडी पंचाल देशका राजा है। और धृष्टद्युम्न या नामविषे धृष्ट और द्युम्न यह दो पद हैं। तहां शत्रुवोंकूं पीडा करणेहारेका नाम धृष्ट है। द्युम्न नाम बलका है । शत्रुवोंकूं पीडा करणेहारा है बल जिसका ताकूं धृष्टद्युम्न कहे हैं । और सत्यक नामा राजाका जो पुत्र होवै ताका नाम सात्यकि है । और जानुपर्यंत जिसकी बाहु विशाल होवैं ताकूं महाबाहु कहे हैं । तहां (परमेष्वासः) यह विशेषण काशीराजाका है । और (महारथः) यह विशेषण शिखंडी राजाका है । और (अपराजितः) यह विशेषण सात्यकि राजाका है । और (महाबाहुः) यह विशेषण सुभद्राके पुत्रका है । अथवा परमेष्वासः महारथः अपराजितः महाबाहुः यह चारों विशेषण काशीराजातैं आदि लैके सर्व राजावोंके जानणे इति॥ १८ ॥ ❀ ॥ ता अर्जुनादिक पांडवोंके शंखोंके शब्दकूं श्रवण करिकै तिन दुर्योधनादिकोंकी किस प्रकारकी स्थिति होती भई या प्रकारकी धृतराष्ट्रकी शंकाके हुए संजय कहे है ।

(मू. श्लो.) स घोषो धार्तराष्ट्राणां हृदयानि व्यदारयत् । नभश्च पृथिवीं चैव तुमुलो व्यनुनादयन् ॥ १९ ॥ (पदच्छेदः) सः । घोषः । धार्तराष्ट्राणां हृदयानि । व्यदारयत् । नभः । च । पृथिवीं । च । एव । तुमुलः । व्यनुनादयन् ॥ १९ ॥ (पदार्थः) सो महान् शंखोंका शब्द आकाशकूं तथा पृथिवीकूं अपणे प्रतिध्वनिरूप शब्दकरिकै पूर्ण करता हुआ धृतराष्ट्रके पुत्रपौत्रादिक संबंधीयोंके हृदयोंकूं विदारण करता भया ॥ १९ ॥ ॥ ॥ ॥

टीका । हे धृतराष्ट्र तुमारे दुर्योधनादिकोंकी सैनाविषेभी सो शंखादिकोंका शब्द यद्यपि महान् होता भया । तथापि सो शंखादिकोंका शब्द तिन पांडवोंकूं किंचित्मात्रभी क्षोभकी प्राप्ति नहीं करता भया । और पांडवोंकी सैनाविषे स्थित जो पांचजन्य, देवदत्त, पौंड्र इत्यादिक शंख हैं । तिन शंखोंके बजावणेतैं उत्पन्न भया जो ध्वनिरूप शब्द है । सो ध्वनिरूप महान् शब्द अपणी प्रतिध्वनिरूप शब्दकरिकै आकाशकूं तथा पृथिवीकूं तथा पूर्वादिक दिशावोंकूं तथा पर्वतकी गुहावोंकूं पूर्ण करता हुआ तुमारे संबंधी दुर्योधनादिकोंके तथा सैनापति भीष्मादिकोंके हृदयोंकूं भेदन करता भया । तात्पर्य

यह । जैसे शस्त्रकरिकै हृदयदेशके भेदन कीयेतैं पीडा होवै है । तिसी प्रकारकी पीडाकूं सो शब्द उत्पन्न करता भया । इहां (पृथिवीं चैव) या मूलश्लोकके पदविषे स्थित जो चकार है । ता चकारकरिकै पूर्वादिक सर्व दिशावोंका तथा पर्वतकी गुहावोंका ग्रहण करा है । (एव) यह शब्द श्लोकके पादपूर्णतावासतै है इति ॥ १९ ॥ ❀ ॥ पूर्वश्लोकविषे धृतराष्ट्रके पुत्रपौत्रादिक संबंधीयोंविषे भयकी प्राप्ति कथन करी । अब पांडवोंविषे तिन दुर्योधनादिकोंतैं विपरीत निर्भयताका निरूपण करे है ।

(मू. श्लो.) अथ व्यवस्थितान्दृष्ट्वा धार्त्तराष्ट्रान् कपिध्वजः । प्रवृत्ते शस्त्रसंपाते धनुरुद्यम्य पांडवः ॥ २० ॥ हृषीकेशं तदा वाक्यमिदमाह महीपते ॥ (पदच्छेदः)॥ अथ । व्यवस्थितान् । दृष्ट्वा । धार्त्तराष्ट्रान् । कपिध्वजः । प्रवृत्ते । शस्त्रसंपाते । धनुः । उद्यम्य । पांडवः ॥ २० ॥ हृषीकेशं । तदा । वाक्यं । इदं । आह । महीपते । (पदार्थः) हे पृथिवीके पति धृतराष्ट्र ता भयकी उत्पत्तितैं अनंतरभी युद्धके उद्यमकरिकै स्थित धृतराष्ट्रके संबंधीयोंकूं देखिकरिकै तिस कालविषे शस्त्रप्रहारके प्रवर्त्तमान हुए कपिध्वज अर्जुन गांडीव नामा धनुषकूं हाथविषे उठाइके श्रीकृष्णभगवान्के प्रति यह वक्ष्यमाण वचन कहता भया ॥ २० ॥

टीका । हे धृतराष्ट्र पांडवोंके शंखोंके महान् शब्दोंकूं श्रवण करिकै तुमारे दुर्योधनादिकोंके चित्तविषे उत्पन्न भया जो भय है । ता भयकरिकै यद्यपि तिन दुर्योधनादिकोंकूं ता युद्धतैं भागणाही प्राप्त भया था । तथापि ते दुर्योधनादिक अपणे ढीठ स्वभावतैं ता युद्धतैं नहीं भागते भये । उलटा युद्धके उद्यमकरिकै युक्त हुए ता रणभूमिविषेही स्थित होते भये । ऐसे दुर्योधनादिकोंकूं नेत्रोंसैं देखिकरिकै ता कालविषे सो कपिध्वज अर्जुन युद्ध करणेवासतै गांडीव नामा धनुषकूं अपणे हस्तविषे उठाइके अपणे सारथी हृषीकेशभगवान्के प्रति या प्रकारका वचन कहता भया । इहां सर्व लोकविषे प्रसिद्ध है पराक्रम जिसका ऐसा जो हनुमान् है ताकूं कपि कहे हैं । सो हनुमान् कपि है ध्वजाविषे जिसके ताकूं कपिध्वज कहे हैं । ता कपिध्वज विशेषणके कहणेकरिकै संजयनैं यह अर्थ बोधन करा । जिस हनुमान्की सहायताकरिकै श्रीरामचंद्रनैं रावणादिक सर्व असुरोंकूं हनन करा है । ऐसा हनुमान् जिस अर्जुनकी ध्वजाविषे स्थित है । तिस अर्जुनकूं किसीभी योद्धातैं भय होवैगा नहीं और नेत्रादिक सर्व इंद्रियोंका प्रवर्तक होणेतैं सर्व अंतःकरणकी वृत्तियोंका जो ज्ञाता होवै ताकूं हृषीकेश कहे हैं । ऐसे अंतर्यामी श्रीकृष्णभगवान्केप्रति सो अर्जुन या प्रकारका वचन कहता

भया । ता कृष्णभगवान्‌की संमतितैं विना सो अर्जुन तिस कालविषे स्वतंत्र होइकै किंचित्‌मात्रभी कार्यकूं नहीं करता भया । इहां (हे महीपते) या संबोधनकरिकै संजयनैं धृतराष्ट्रके प्रति यह अर्थ सूचन करा । यह अर्जुनादिक पांडव जिस कार्यका आरंभ करते हैं । सो प्रथम विचार करिकैही करते हैं । विचारतैं विना किसी कार्यविषेभी प्रवृत्त होते नहीं । यातैं यह पांडव राजनीतिविषे तथा धर्मविषे अत्यंत कुशल हैं । और तुमोंनैं जो इन पांडवोंका राज्य लीया है । सो विचार कीयेतैं विनाही लीया है । यातैं तुमारेविषे राजनीति तथा धर्म दोनों नहीं हैं । यातैं तुमारा कदाचित्‌भी जय होणेहारा नहीं है । किंतु नीतिधर्मवाले इन पांडवोंकाही जय होवैगा इति ॥ २० ॥ ❀ ॥ अब अढाई श्लोककरिकै ता अर्जुनके वचनका निरूपण करे हैं ।

(मू० श्लो०) अर्जुन उवाच ॥ सेनयोरुभयोर्मध्ये रथं स्थापय मेऽच्युत ॥ २१ ॥ (पदच्छेदः) सेनयोः । उभयोः । मध्ये । रथं । स्थापय । मे । अच्युत ॥ २१ ॥ (पदार्थः) हे अच्युत दोनों सेनावोंके मध्यभागविषे मेरे रथकूं स्थापन करो ॥ २१ ॥ ॥

टीका । हे श्रीकृष्णभगवान् यह जो हमारी सैना है । तथा हमारे प्रतिपक्षी दुर्योधनादिकोंकी जो यह सैना है । तिन दोनों सैनावोंके मध्यदेशविषे या हमारे रथकूं आपस्थित करो । या प्रकारकी आज्ञा सो अर्जुन श्रीभगवान्‌केप्रति करता भया । इतनैं कहणेकरिकै यह अर्थ सूचन करा । परमेश्वरके जो अनन्य भक्त हैं । तिन भक्तोंकूं या लोकविषे कोईभी कार्य दुर्घट नहीं है । जिस कारणतैं साक्षात् परमेश्वरभी तिन भक्तोंकी आज्ञाकूं अंगीकार करे है । यातैं इन पांडवोंका निश्चयकरिकै जय होवैगा इति ॥ शंका ॥ हे अर्जुन, या दोनों सैनावोंके मध्यविषे जो मैं तुमारे रथकूं स्थापन करौंगा । तौ यह दुर्योधनादिक शत्रु हमारेकूं रथतैं नीचै गिडाइ देवैंगे । या प्रकारकी श्रीकृष्णभगवान्‌की शंकाके हुए । अर्जुन कहे है (अच्युत इति) हे भगवन् सर्व देशविषे तथा सर्व कालविषे तथा सर्व वस्तुविषे जो नाशकूं नहीं प्राप्त होवै है ताकूं अच्युत कहे हैं । ऐसे अच्युत आप हो । ऐसे आपकूं कौन पुरुष नीचै गिडावनेमैं समर्थ है । किंतु ऐसा कोईभी पुरुष समर्थ नहीं है । इहां (हे अच्युत) या संबोधनकरिकै अर्जुननैं श्रीकृष्णभगवान्‌विषे । निर्विकारता बोधन करी । और निर्विकारविषे क्रोधादिक विकार संभवै नहीं । यातैं मेरे रथकूं आप स्थापन करो या प्रकारकी आज्ञा करणेकरिकै श्रीभगवान्‌विषे संभावना करा जो अर्जुनऊपरि क्रोध है ता क्रोधकूंभी अच्युत या संबोधनकरिकै अर्जुननैं निवृत्त करा इति॥ २१ ॥ ❀ ॥ शंका । हे अर्जुन या दोनों सैनावोंके मध्यविषे तौ मैं तुमारे रथकूं ले जाताहूं । परंतु तहां रथके ले जाणेकरिकै तुमारा कौन प्रयोजन सिद्ध होवैगा । सो अपणा प्रयोजन तूं हमारेप्रति कथन कर ।

जिस वासतै प्रयोजनतैं विना मंद पुरुषोंकीभी प्रवृत्ति होवै नहीं । तौ बुद्धिमान् पुरुषोंकी प्रयोजनतैं विना किस प्रकार प्रवृत्ति होवैगी। किंतु नहीं होवैगी । ऐसी श्रीकृष्णभगवान्‌की शंकाके हुए । अर्जुन ताका प्रयोजन कथन करे है ।

(मू. श्लो.) यावदेतान्निरीक्षेहं योद्धुकामानवस्थितान् । कैर्मया सह योद्धव्यमस्मिन् रणसमुद्यमे ॥ २२ ॥ (पदच्छेदः) यावत् । एतान् । निरीक्षे । अहं । योद्धुकामान् । अवस्थितान् । कैः । मया । सह । योद्धव्यं । अस्मिन् । रणसमुद्यमे ॥ २२ ॥ (पदार्थः) हे भगवन् जितनै देशविषे स्थित होइकै मैं अर्जुन युद्धकी कामनावाले तथा रणभूमिविषे स्थित इन भीष्मादिक योद्धावोंकूं भली प्रकार देखौं तितनै देशविषे हमारे रथकूं ले जाइकै स्थित करो ॥ इस युद्धरूप व्यापारविषे मैं नैं किनोंके साथि युद्ध करणा योग्य है ॥ २२ ॥

टीका । हे भगवन् हमारे साथि युद्ध करणेकी है कामना जिनोंकूं ऐसे जो युद्धभूमिविषे स्थित यह भीष्मद्रोणादिक वीर पुरुष हैं । तिन भीष्मद्रोणादिक सर्व योद्धावोंकूं जितनै देशविषे जाइकै मैं देखणेविषे समर्थ होवौं । तितनै देशविषे या हमारे रथकूं आप स्थित करो । अथवा (यावत्) यह पद कालका वाचक है । क्या जितनै कालपर्यंत इन भीष्मादिक सर्व योद्धावोंकूं मैं भली प्रकारसैं देखौं । तितनै कालपर्यंत या हमारे रथकूं दोनों सैनावोंके मध्यविषे आप स्थित करो इति । इहां (योद्धुकामान्) या विशेषणकरिकै अर्जुननैं यह अर्थ सूचन करा । यह भीष्मद्रोणादिक केवल युद्धकीही कामनावाले हैं । यातैं हमारे साथि कदाचित्‌भी यह मित्रभाव करैंगे नहीं । और (अवस्थितान्) या विशेषणकरिकै अर्जुननैं यह अर्थ सूचन करा । हमारे भयकरिकै यह भीष्मद्रोणादिक या रणभूमितैं कदाचित्‌भी चलायमान नहीं होवैंगे इति । शंका । हे अर्जुन तूं तौ युद्धके करणेहारा है । कोई युद्धके देखणेहारा तूं नहीं है । यातैं भीष्मद्रोणादिक योद्धावोंके देखणेकरिकै तुमारा कौन प्रयोजन सिद्ध होवैगा । ऐसी भगवान्‌की शंकाके हुए । सो अर्जुन तिनोंके देखणेका प्रयोजन कथन करे है । (कैर्मयासह योद्धव्यं इति) इहां (सह) या पदका (कैः मया) या दोनों पदोंके साथि संबंध संभवै है । ताकरिकै यह अर्थ सिद्ध होवै है । बांधवोंकाही परस्पर युद्धका उद्यम हुआ है जिसविषे ऐसी जो यह रणभूमि है । तिसविषे स्थित जो यह हमारे प्रतिपक्षी भीष्मद्रोणादिक हैं । तिनोंविषे किस योद्धाके साथि हमारेकूं युद्ध करणा योग्य है । तथा तिन भीष्मद्रोणादिक सर्व

योद्धावोंविषे किस योद्धाकूं हमारे साथि युद्ध करणा योग्य है। या प्रकारका एक महान् कौतुक है। ता कौतुकका ज्ञानही या दोनों सैनावोंके मध्यविषे रथ स्थित करणेका प्रयोजन है इति ॥ २२ ॥ ❀ ॥ शंका। हे अर्जुन यह भीष्मद्रोणादिक बांधवही युद्धके संकल्पका परित्याग करिकै तुम दोनोंका परस्पर मित्रभाव करावैंगे। तूं युद्धका संकल्प किसवासतै करता है। ऐसी श्रीकृष्णभगवान्की शंकाके हुए सो अर्जुन कहे है।

(मू. श्लो.) योत्स्यमानानवेक्षेहं य एतेऽत्र समागताः। धार्तराष्ट्रस्य दुर्बुद्धेर्युद्धे प्रियचिकीर्षवः ॥ २३ ॥ (पदच्छेदः) योत्स्यमानान्। अवेक्षे। अहं। ये। एते। अत्र। समागताः। धार्तराष्ट्रस्य। दुर्बुद्धेः। युद्धे। प्रियचिकीर्षवः ॥ २३ ॥ (पदार्थः) दुर्बुद्धिवाले धृतराष्ट्रके पुत्र दुर्योधनके युद्धविषे प्रियकी इच्छा करते हुए जे यह भीष्मद्रोणादिक यां कुरुक्षेत्रभूमिविषे प्राप्त हुए हैं तिन युद्धकी कामनावाले भीष्मद्रोणादिक योद्धावोंकूं मैं अर्जुन भली प्रकार देखौं ॥ २३ ॥

टीका। हे भगवन् अपणी रक्षा करणेहारे उपायका अज्ञानरूप जो दुर्बुद्धि है। ता दुर्बुद्धिकरिकै युक्त जो यह धृतराष्ट्रका पुत्र दुर्योधन है। ता दुर्योधनके केवल युद्धकरिकैही प्रियकी इच्छा करते हुए जो यह भीष्मद्रोणादिक योद्धा या धर्मक्षेत्ररूप कुरुक्षेत्रविषे प्राप्त हुए हैं। तिन युद्धकी इच्छावान् भीष्मद्रोणादिकोंकूं जैसे मैं भली प्रकारतैं देखौं। तैसे मेरे रथकूं आप स्थित करो। इहां (युद्धे प्रियचिकीर्षवः) या विशेषणके कहणेकरिकै अर्जुननैं यह अर्थ सूचन करा। यह भीष्मद्रोणादिक वृद्ध पुरुषभी केवल युद्धकरिकैही या दुर्योधनके हितकी इच्छा करते हैं। ता दुर्योधनके दुर्बुद्धि आदिकोंकी निवृत्ति करिकै या दुर्योधनके हितकी इच्छा करते नहीं। ऐसे भीष्मद्रोणादिकोंनैं हम दोनोंकी मित्रता क्या करावणी है इति। और (योत्स्यमानान्) या विशेषणके कहणेकरिकै अर्जुननैं यह अर्थ सूचन करा। या भीष्मद्रोणादिकोंकूं केवल हमारे साथि युद्ध करणेकीही इच्छा है। कोई हमारे साथि मित्रभाव करणेकी इनोंकूं इच्छा है नहीं। यातैं इनोंके साथि युद्ध करणेवासतै हमारेकूं प्रथम इनोंका देखणा उचित है इति ॥ २३ ॥ ❀ ॥ शंका। इस प्रकार अर्जुनकरिकै प्रेरणा करा हुआ सो श्रीकृष्णभगवान् अहिंसारूप परम धर्मकूं आश्रयण करिकै ता अर्जुनकूं अवश्यकरिकै ता युद्धतैं निवृत्त करैगा। या प्रकारके धृतराष्ट्रके अभिप्रायकी शंका करिकै। ता शंकाके निवृत्त करणेकी इच्छावान् सो संजय ता धृतराष्ट्रके प्रति या प्रकारका वचन कहता भया। या प्रकारका वचन वैशंपायन जनमेजयके प्रति कथन करे है।

(मू. श्लो.) संजय उवाच ॥ एवमुक्तो हृषीकेशो गुडाकेशेन भारत । सेनयोरुभयोर्मध्ये स्थापयित्वा रथोत्तमं ॥ २४ ॥ भीष्मद्रोणप्रमुखतः सर्वेषां च महीक्षितां । उवाच पार्थ पश्यैतान् समवेतान्कुरूनिति ॥ २५ ॥ (पदच्छेदः) एवं । उक्तः । हृषीकेशः । गुडाकेशेन । भारत । सेनयोः । उभयोः । मध्ये । स्थापयित्वा । रथोत्तमं ॥ २४ ॥ भीष्मद्रोणप्रमुखतः । सर्वेषां च । महीक्षितां । उवाच । पार्थ । पश्य । एतान् । समवेतान् । कुरून् । इति ॥ २५ ॥ (पदार्थः) हे धृतराष्ट्र इसे प्रकार गुडाकेश अर्जुनकरिकै कह्या हुआ हृषीकेश भगवान् दोनों सैनावोंके मध्यदेशविषे भीष्मद्रोण दोनोंके सन्मुख तथा सर्व राजावोंके सन्मुख तौ उत्तम रथकूं स्थापन करिकै हे पार्थ ईन एकठे हुए कौरवोंकूं तूं देखें यां प्रकारका वचन कहता भया ॥ २४ ॥ २५ ॥

टीका । हे (भारत) यह धृतराष्ट्रका संबोधन है । ता संबोधनकरिकै संजयनैं यह अर्थ सूचन करा । तुमारी भरतराजाके वंशविषे उत्पत्ति हुई है । ता अपणे भरतवंशकी मर्यादाकूं विचार करिकैभी तुमारेकूं अपणे संबंधियोंका द्रोह परित्याग करणेयोग्य है इति । इहां अर्जुनकूं गुडाकेश नामकरिकै कथन करा । ता गुडाकेश शब्दका यह अर्थ है । गुडाकायाः ईशः गुडाकेशः । अर्थ यह । गुडाका नाम निद्राका है ता निद्राका जो ईश होवै क्या जिसनैं निद्राकूं अपणे वशवर्ती करी होवै ताका नाम गुडाकेश है इति । अथवा गुडावत् केशाः यस्य स गुडाकेशः । अर्थ यह । "अंगुष्ठतर्जनीयोगो गुडा नाम्नी तु मुद्रिका" । या शास्त्रके वचनतैं हस्तके अंगुष्ठका जो तर्जनी अंगुलीके साथि संबंध है ताका नाम गुडामुद्रिका है । ता गुडामुद्रिकाके परिमाण हैं अग्र केश जिसके ताका नाम गुडाकेश है । इति । अथवा गुडं अकति व्याप्नोतीति गुडाकः शिवः स शिवः ईशो यस्य स गुडाकेशः । अर्थ यह । "गुडो गोलेक्षुपाकयोः" या कोशके वचनतैं गुडशब्द गोलका वाचक है । तथा लोकप्रसिद्ध गुडका वाचक है । तहां जैसे अग्निकरिकै तप्ये हुए लोहपिंडकूं सो अग्नि अंतरबाहिर व्यापक करिकै रहे है । तैसे या ब्रह्मांडरूप गोलकूं अंतरबाहिर व्याप्त करिकै जो स्थित होवै ताका नाम गुडाक है । ऐसा शिवभगवान् है । तहां श्रुतिः ॥ "विश्वस्यैकं परिवेष्टितारं ज्ञात्वा शिवं" ॥ अर्थ यह । सर्व विश्वकूं व्याप्त करणेहारा जो एक शिव है । ता शिवकूं अपणा आत्मारूप जानिकै यह पुरुष मोक्षकूं प्राप्त होवै है । ऐसा गुडाक नामा शिव है ईश जिसका ताका नाम गुडाकेश है इति । अथवा गुडवन्मधुरस्सन् भक्तान् अकति प्राप्नोतीति गुडाकः शिवः । स शिवः ईशो यस्य स गुडाकेशः ॥ अर्थ यह । जैसे यह लोकप्रसिद्ध गुड मधुर होवै है । तैसे मधुर हुआ

जो भक्तजनोंकूं प्राप्त होवै । ताका नाम गुडाक है । ऐसा शिवभगवान् है । तहां श्रुतिः । "स्वादुष्किलायंमधुमानुतायं इति" ऐसा शिवभगवान् है ईश जिसका ताका नाम गुडाकेश है इति । और हृषीक नाम इंद्रियोंका है । तिन सर्व इंद्रियोंकूं जो अपणे अपणे कार्यविषे प्रवृत्त करै ताका नाम हृषीकेश है । ऐसे हृषीकेशभगवान्के प्रति जबी ता गुडाकेश अर्जुननैं दोनों सैनाके मध्यविषे रथके स्थापन करणेकी आज्ञा करी । तबी सो कृष्णभगवान् यह अर्जुन हमारा भृत्य होइकै मैं स्वामीकूं नीचकर्मरूप सारथीपणेविषे प्रेरणा करता है या प्रकारका दोष आरोपण करिकै ता अर्जुनऊपरि क्रोध नहीं करता भया । जिस वासतै सो कृष्णभगवान् सर्वदा भक्तजनोंके अधीन रहे है । तथा ता अर्जुनकूं युद्धतैं निवृत्तभी नहीं करता भया । किंतु ता अर्जुनके वचनकूं मानिके तिन दोनों सैनावोंके मध्यदेशविषे भीष्मद्रोण दोनोंके सन्मुख तथा सर्व राजावोंके सन्मुख ता अर्जुनके उत्तम रथकूं स्थापन करता भया । इहां यद्यपि सर्व राजावोंके सन्मुख ता रथकूं स्थापन करता भया इतनै मात्र कहणेकरिकैही भीष्मद्रोणादिक सर्व राजावोंका ग्रहण होइ सकै है यातैं भीष्मद्रोणका पृथक् कहणा अनुचित है । तथापि सर्व राजावोंविषे ता भीष्मद्रोणकी अत्यंत प्रधानता बोधन करणेवासतै तिन दोनोंका पृथक् ग्रहण करा है । तहां रथकूं स्थापन करता भया इतनै कहणेकरिकैही यद्यपि निर्वाह होइ सकै है । तथापि दूसरे सर्व रथोंतैं ता रथविषे उत्कृष्टता बोधन करणेवासतै ता रथका उत्तम यह विशेषण दीया है । ता रथकी उत्कृष्टताविषे यह हेतु है । एक तौ सो रथ अग्निदेवतानैं दीया है । और दूसरा साक्षात् श्रीकृष्णभगवान् ता रथके चलावणेहारा सारथी है । और तीसरा साक्षात् अर्जुन जिस रथविषे स्थित है । और चतुर्थ हनुमान् जिस रथकी ध्वजाविषे स्थित है । इतनै हेतुवोंकरिकै ता रथविषे सर्व रथोंतैं उत्कृष्टता है । ऐसे उत्तम रथकूं दोनों सैनावोंके मध्यविषे स्थापन करिकै सर्वके अंतर गुह्य अभिप्रायकूं जानणेहारा सो श्रीकृष्णभगवान् या अर्जुनकूं इन संबंधियोंके दर्शनतैं शोकमोहकी प्राप्ति भई है या प्रकार जानिकै उपहाससहित ता अर्जुनके प्रति या प्रकारका वचन कहता भया । हे पार्थ कुरुवंशविषे है उत्पत्ति जिनोंकी ऐसे जो यह भीष्मादिक एकठे हुए हैं । तिनोंकूं तूं भलीप्रकारतैं देख । इहां (हे पार्थ) या प्रकारके संबोधनकरिकै भगवान्नैं यह अर्थ सूचन करा । पृथा नामा माताका जो पुत्र होवै ताका नाम पार्थ है । सा पृथा अपणे स्त्रीस्वभावतैं सर्वदा शोकमोहकरिकै युक्त है । ता पृथाका तूं पुत्र है । यातैं तुमारेविषेभी सो शोकमोह प्राप्त भया है । या प्रकार अर्जुनके उपहासकूं पार्थ या शब्दकरिकै सूचन करता हुआ श्रीभगवान् अपणेविषे हृषीकेश शब्दका अर्थरूप अंतर्यामीपणा बोधन करता भया इति । अथवा (हे पार्थ) या संबोधनकरिकै भगवान्नैं अर्जुनके प्रति यह अर्थ सूचन करा । हमारे पिताकी भगिनी जो पृथा है । तिस

पृथाका तूं पुत्र है । यातैं तूं हमारा संबंधी है। यातैं यह कृष्णभगवान् हमारे सारथीपणेकूं छोडिकै दुर्योधनके पक्षविषे स्थित होवैगा या प्रकारकी चिंता तुमनैं कदाचित्भी नहीं करणी । किंतु हमारे सारथीपणेविषे तूं निश्चित होइकै इन भीष्मद्रोणादिकोंकूं निःशंक होइकै देख । इहां इन भीष्मद्रोणादिकोंकूं तूं देख या वचनपर्यंत जो भगवान्का कहणा है । ताका यह अभिप्राय है । मैं तुमारे सारथीपणेविषे अत्यंत सावधान हूं । और तूं तौ अबीही शोकमोहके वशतैं रथीपणेका परित्याग करा चाहता है । यातैं या सैनाके दर्शनकरिकै तुमारा कौन प्रयोजन सिद्ध भया । या प्रकार ता अर्जुनकूं धैर्यकी प्राप्ति करणेवासतै सो वचन भगवान्नैं कथन करा है । अन्यथा सो भगवान् दोनों सैनावोंके मध्यविषे रथकूं स्थापन करता भया इतनाही वचन कहणा योग्य था इति ॥ २४ ॥ २५ ॥ ॥ शंका । ता दोनों सैनावोंके मध्यविषे स्थित होइकै सो अर्जुन क्या देखता भया । या प्रकारकी धृतराष्ट्रकी शंकाके हुए सो संजय कहे है ।

(मू. श्लो.) तत्रापश्यत्स्थितान्पार्थः पितॄनथपितामहान् । आचार्यान्मातुलान्भ्रातॄन् पुत्रान्पौत्रान्सखींस्तथा ॥ २६ ॥ श्वशुरान्सुहृदश्चैव सेनयोरुभयोरपि । (पदच्छेदः) ॥ तत्र । अपश्यत् । स्थितान् । पार्थः । पितॄन् । अथ । पितामहान् । आचार्यान् । मातुलान् । भ्रातॄन् । पुत्रान् । पौत्रान् । सखीन् । तथा ॥ २६ ॥ श्वशुरान् । सुहृदः । च । एव । सेनयोः । उभयोः । अपि । (पदार्थः) या सैनाकूं देखो ऐसी भगवान्की आज्ञाके हुए सो अर्जुन दोनों सैनावोंविषे स्थित पितृव्योंकूं तथा पितामहोंकूं तथा आचार्योंकूं तथा मातुलोंकूं तथा भ्रातावोंकूं तथा पुत्रोंकूं तथा पौत्रोंकूं तथा सखावोंकूं ॥ २६ ॥ तथा श्वशुरोंकूं तथा सुहृदोंकूं ही देखता भया ।

टीका । हे धृतराष्ट्र ता कृष्णभगवान्नैं युद्धके आरंभ करावणेवासतै जबी ता अर्जुनके प्रति सैना देखणेकी आज्ञा करी । तबी सो अर्जुन दोनों सैनावोंविषे स्थित जो योद्धा हैं तिनोंकूं देखता भया । तहां परसैनाविषे सो अर्जुन अपणे भूरिश्रवादिक पितृव्योंकूं देखता भया । तथा भीष्म सोमदत्त आदिक पितामहोंकूं देखता भया । तथा द्रोण कृप आदिक आचार्योंकूं देखता भया । तथा शल्य शकुनि आदिक मातुलोंकूं देखता भया । तथा दुर्योधन आदिक भ्रातावोंकूं देखता भया । तथा लक्ष्मण आदिक पुत्रोंकूं देखता भया । तथा तिन लक्ष्मणादिक पुत्रोंके पुत्रोंकूं देखता भया । तथा अपणे स-

मान अवस्थावाले अश्वत्थामा जयद्रथ आदिक सखावोंकूं देखता भया। तथा कृतवर्मा भगदत्त आदिक सुहृदोंकूं देखता भया। इहां (सुहृदः) या शब्दकरिकै दूसरेभी जितनैकी उपकार करणेहारे मातामहादिक हैं तिन सर्वोंका ग्रहण करणा। इस प्रकार जैसे परसैनाविषे सो अर्जुन अपणे पितृव्यादिक संबंधीयोंकूं देखता भया। तैसे अपणी सैनाविषेभी तिन पितृव्यादिक संबंधियोंकूंही देखता भया। इहां अपणे पिताके भ्राताका नाम पितृव्य है। और अपणी माताके भ्राताका नाम मातुल है। माताके पिताका नाम मातामह है इति ॥ २६ ॥ ❀ ॥ इस प्रकार सर्व संबंधियोंके दर्शन हुएतैं अनंतर यह संबंधियोंकी हिंसा महान् अधर्मरूप है या प्रकारकी मोहरूप विपरीतबुद्धिकरिकै नष्ट हुआ है विवेक जिसका तथा यह युद्धविषे स्थित हिंसा शास्त्रविहित होणेतैं धर्मरूप है या प्रकारके यथार्थ ज्ञानका प्रतिबंध करणेहारा तथा ममताबुद्धि है कारण जिसका ऐसा जो शोकमोहरूप चित्तका वैक्लव्य है ताकरिकै निवृत्त होइ गया है विवेक जिसका ऐसा जो अर्जुन है। ता अर्जुनकूं पूर्व आरंभ करे हुए युद्धरूप स्वधर्मतैं उपराम होणेकी इच्छा महान् अनर्थके देणेहारी उत्पन्न होती भई। या अर्थकूं अब निरूपण करे हैं।

(मू. श्लो.) तान्समीक्ष्य स कौंतेयः सर्वान्बंधूनवस्थितान् ॥ २७ ॥ कृपया परयाविष्टो विषीदन्निदमब्रवीत्। (पदच्छेदः) तान्। समीक्ष्य। सः। कौंतेयः। सर्वान्। बंधून्। अवस्थितान् ॥ २७ ॥ कृपया। परया। आविष्टः। विषीदन्। इदं। अब्रवीत्। (पदार्थः) सो कुंतीका पुत्र अर्जुन तौ युद्धभूमिविषे स्थित तिनै सर्व बांधवोंकूं भली प्रकार देखिकरिकै ॥ २७ ॥ परम कृपा करिकै व्याप्त हुआ विषादकूं प्राप्त हुआ या प्रकारका वचन कहता भया ॥

टीका। हे धृतराष्ट्र तिन सर्व बांधवोंकूं देखिकरिकै स्वतःसिद्ध कृपाकरिकै व्याप्त हुआ सो अर्जुन उपतापरूप विषादकूं प्राप्त हुआ या प्रकारका वचन श्रीभगवान्के प्रति कहता भया। इहां ता अर्जुनविषे स्वतःसिद्ध कृपाके बोधन करणेवासतै ता कृपाका परा यह विशेषण दीया है। अथवा। (कृपया परयाविष्टः) या वचनविषे कृपया अपरया आविष्टः या प्रकारका पदच्छेद करणा। या पक्षविषे ता वचनका ऐसा अर्थ करणा। अपणी सैनाविषे तौ ता अर्जुनकी पूर्वभी कृपा होती भई। और तिस कालविषे तौ ता अर्जुनकी कौरवोंकी सैनाविषेभी अपरा नामा दूसरी कृपा होती भई। इहां (विषीदन्निदमब्रवीत्) या वचनकरिकै विषाद वचन उच्चारण या दोनोंविषे समानकालपणा कथन करा। ताकरिकै ता वचनउच्चारणकालविषे गद्गदकंठता

तथा अश्रुपात इत्यादिक विषादके कार्योंकी स्थिति बोधन करी। काहेतैं या लोकविषे विषादवान् पुरुषके वचनविषे यह वार्त्ता प्रसिद्ध देखणेविषे आवै है। और (कौंतेयः) या पदका अभिप्राय तौ पूर्व श्लोकविषे कहे हुए पार्थपदके अभिप्रायकी न्यांई जानि लैणा। कुंतीकूंही पृथा नामकरिकै कथन करे हैं इति॥ २७॥ ❀ ॥ अब श्रीकृष्णभगवान्केप्रति सो अर्जुनका वचन (अर्जुन उवाच) इसतैं आदि लैके (एवमुक्त्वार्जुनः संख्ये) इस वाक्यतैं पूर्व ग्रंथकरिकै संजय कथन करे है। तहां स्वधर्मविषे प्रवृत्तिका कारणरूप जो तत्त्वज्ञान है। ता तत्त्वज्ञानका प्रतिबंधक जो अपणे शरीरविषे तथा परशरीरविषे यह मेरे हैं या प्रकारका आत्मीयत्व अभिमान है। ता अभिमानकरिकै युक्त तथा केवल अनात्मपदार्थोंकूं जानणेहारा तथा इस युद्धकरिकै हमारा तथा इन बांधवोंका अवश्य नाश होवैगा या प्रकार देखणेहारा ऐसा जो अर्जुन है। ता अर्जुनकूं महान् शोक प्राप्त होता भया। ता अर्जुनके शोककूं ता शोककरिकै व्याप्त लिंगोंके कथनपूर्वक तीन श्लोकोंकरिकै निरूपण करे हैं।

(मू. श्लो.) अर्जुन उवाच। दृष्ट्वेमं स्वजनं कृष्ण युयुत्सुं समुपस्थितं ॥ २८॥ सीदंति मम गात्राणि मुखं च परिशुष्यति। वेपथुश्च शरीरे मे रोमहर्षश्च जायते ॥ २९॥ (पदच्छेदः) दृष्ट्वा। इमं। स्वजनं। कृष्ण। युयुत्सुं। समुपस्थितं ॥ २८॥ सीदंति। मम। गात्राणि। मुखं। च। परिशुष्यति। वेपथुः। च। शरीरे। मे। रोमहर्षः। च। जायते ॥ २९॥ (पदार्थः) हे कृष्ण। या रणभूमिविषे प्राप्त हुए तथा युद्धकी इच्छावाले इन बांधवोंकूं देखिकरिकै हमारे हस्तपादादिक अंग व्यथाकूं प्राप्त होवै हैं तथा मेरा मुखभी सूकता जावे है तथा हमारे शरीरविषे कंप उत्पन्न होवे है तथा हमारे रोमांच खडे होवै हैं॥ २८॥ २९॥

टीका। हे श्रीकृष्णभगवन् युद्धकी इच्छाकरिकै या रणभूमिविषे प्राप्त भये जो यह भीष्मादिक हमारे बांधव हैं। तिनोंकूं देखिकरिकै हमारे चित्तविषे उत्पन्न भया जो शोक है। ता शोककरिकै यह हमारे हस्तपादादिक अंग बहुत व्यथाकूं प्राप्त होवै हैं। तथा यह हमारा मुखभी सूकता जावै है। तथा यह हमारे शरीरविषे कंप उत्पन्न होवै है। तथा हमारे रोमांच खडे होवै हैं। इहां यद्यपि (मुखं च शुष्यति) इतनै कहणेकरिकैही निर्वाह होइ सकै है। तथापि श्रमादिक निमित्तोंतैं जो मुखका शोषण होवै है। तिसकी अपेक्षाकरिकै शोकजन्य मुखके शोषणविषे अधिकता कथन करणेवास्तै (परिशुष्यति) इहां परि या शब्दका कथन करा है इति॥ २८॥ २९॥ ❀ ॥ किं च।

(मू. श्लो.) गांडीवं स्रंसते हस्तात् त्वक्चैव परिदह्यते । न च शक्नोम्यवस्थातुं भ्रमतीव च मे मनः ॥ ३० ॥ निमित्तानि च पश्यामि विपरीतानि केशव ॥ (पदच्छेदः) गांडीवं । स्रंसते । हस्तात् । त्वक् । च । एव । परिदह्यते । न । च । शक्नोमि । अवस्थातुं । भ्रमति । इव । च । मे । मनः ॥ ३० ॥ निमित्तानि । च । पश्यामि । विपरीतानि । केशव । (पदार्थः) हे केशव मेरे हस्ततैं गांडीव धनुष नीचै पडि जावै है तथा मेरी त्वचा दाहकूं प्राप्त होवै है तथा मेरा मनभी भ्रमण करे है यातैं अपणे शरीरके स्थित करणेकूंभी मैं नहीं समर्थ होवौं हूं ॥ ३० ॥ तथा मैं विपरीत निमित्तोंकूंभी देखतौ हूं ॥ ॥

टीका । हे भगवन् ता शोककरिकै यह गांडीव धनुषभी हमारे हस्ततैं नीचै पडि जाता है । तथा हमारी त्वचाभी अत्यंत दाहकूं प्राप्त होवै है । इह हमारा धनुष नीचै पडि जावै है । या वचनके कहणेकरिकै अर्जुननैं अपणा अधैर्यरूप दौर्बल्यता बोधन करी । और मेरी त्वचा दाहकूं प्राप्त होवै है या वचनके कहणेकरिकै अर्जुननैं अपणे अंतरका संताप सूचन करा । और इस कालविषे मैं अपणे शरीरके स्थित करणेविषेभी समर्थ नहीं हूं । इतनै कहणेकरिकै अर्जुननैं अपणे मूर्च्छा अवस्थाकूं सूचन करा । जिस कारणतैं मूर्च्छा अवस्थाविषेही यह पुरुष अपणे शरीरके स्थित करणेविषे समर्थ नहीं होवै है । अब ता मूर्च्छा अवस्थाकी प्राप्तिविषे हेतु कहे है । (भ्रमतीव च मे मन इति) यह मेरा मन भ्रमण करता पुरुषकी न्यांई भ्रमण करे है । सो भ्रमण करता पुरुषकी सादृश्यतारूप जो मनका कोई विकारविशेष है । जिसकूं (इव) या शब्दकरिकै कथन करा है । सोईही विकारविशेष मूर्च्छाकी पूर्व अवस्था होवै है । (न च शक्नोमि) या वचनविषे स्थित जो चकार है । सो हेतुका वाचक है । ताका यह अर्थ है । जिसवासतै हमारा मन ता मूर्च्छाके पूर्व अवस्थाकूं प्राप्त भया है । इसवासतै मैं या अपणे शरीरकूं अबी स्थित करणेविषे समर्थ नहीं हूं । अब ता शरीरके स्थित करणेकी असामर्थ्यविषे दूसराभी निमित्त कथन करे हैं । (निमित्तानीति) हे भगवन् थोडेही कालविषे दुःखकी प्राप्तिकूं सूचन करणेहारे जो वाम नेत्रका स्फुरणादिक विपरीत निमित्त हैं । तिनोंकूंभी मैं अनुभव करता हूं । इस कारणतैंभी मैं स्थित होणेकूं समर्थ नहीं होता । इहां अठावीसवे श्लोकविषे (दृष्ट्वेमं स्वजनं कृष्ण) या वचनविषे स्थित जो (कृष्ण) यह संबोधन है । ताकरिकै अर्जुननैं यह अर्थ सूचन करा । मैं अर्जुन अनात्मवेत्ता होणेतैं दुःखी हूं । या कारणतैं मैं शोकजन्य क्लेशकूं अनुभव करता हूं । और "कृषिर्भूवाचकः शब्दो णश्च निर्वृतिवाचकः । तयोरैक्यं परं ब्रह्म कृष्ण इत्यभिधीयते" ॥ अर्थ यह । कृष्धातु सत्ता-

वाचक है। और णप्रत्यय आनंदका वाचक है ता सत्ता और आनंद दोनोंका एकताभावरूप परब्रह्म कृष्ण या नामकरिकै कह्या जावै है इति। या शास्त्रके वचनतैं आप सत् आनंदरूप होणेतैं शोकमोहादिक विकारोंतैं रहित हो। तात्पर्य यह। अपणे बांधवोंका दर्शन जैसे हमारेकूं भया है तैसे आपकूंभी तिन बांधवोंका दर्शन भया है। परंतु हमारे न्यांई आपकूं शोकमोहादिक विकार प्राप्त हुए नहीं। यह आपविषे महान् विशेषता है। यातैं आपकी न्यांई हमारेकूंभी शोकतैं रहित करो। यह सर्व अर्थ ता अर्जुननैं (हे कृष्ण) या संबोधनकरिकै सूचन करा। तहां तुमारे शोकके निवृत्त करणेका हमारेविषे सामर्थ्य नहीं है। ऐसी भगवान्की शंकाके निवृत्त करणेवासतै सो अर्जुन (हे केशव) या संबोधनकरिकै ता भगवान्विषे अपणे शोक निवृत्त करणेका सामर्थ्य सूचन करता भया। तहां केशौ वाति अनुकंप्यतया गच्छतीति केशवः। अर्थ यह। जगतकूं उत्पन्न करणेहारे ब्रह्माका नाम क है। और जगतके संहार करणेहारे रुद्रका नाम ईश है। तिन दोनोंकूं अपणे अनुग्रहका पात्र जानिकरिकै जो प्राप्त होवै ताका नाम केशव है। ऐसे अपकूं हमारे शोकके निवृत्त करणेविषे किंचितमात्रभी प्रयत्न नहीं है। अथवा (कृष्ण) या संबोधनकरिकै अर्जुननैं श्रीभगवान्विषे भक्तजनोंके दुःखका निवर्त्तकपणा बोधन करा। और (केशव) या संबोधनकरिकै केशी आदिक दुष्ट दैत्योंकी निवृत्तिकरिकै सर्वदा भक्तजनोंकी प्रतिपालकता सूचन करी। ऐसा आपका स्वभाव है। यातैं हमारेकूंभी शोककी निवृत्तिकरिकै अवश्य पालन करौगे इति॥३०॥ तहां समीचीन प्रवृत्तिका कारणरूप जो तत्त्वज्ञान है। ता तत्त्वज्ञानका प्रतिबंधक जो शोक है ता शोकका पूर्व मुखशोषणादिक लिंगोंद्वारा तीन श्लोकोंकरिकै निरूपण करा। अब ता शोककरिकै जन्य जो विपरीत प्रवृत्तिका कारणरूप विपरीत बुद्धि है ता विपरीत बुद्धिका निरूपण करे हैं।

(मू. श्लो.) नच श्रेयोनुपश्यामि हत्वा स्वजनमाहवे ॥३१॥ (पदच्छेदः) नचं। श्रेयः। अनुपश्यामि। हत्वा। स्वजनं। आहवे ॥३१॥
(पदार्थः) इस युद्धविषे अपणे बांधवोंकूं हनन करिकै मैं अपणे श्रेयकूं नहीं देखता हूं ॥ ३१ ॥

टीका। हे भगवन् इस युद्धविषे इन भीष्मादिक बांधवोंके मारणेकरिकै मैं अपणे श्रेयकूं देखता नहीं। इहां पुरुषार्थका नाम श्रेय है। और यह पुरुष जिस पदार्थके प्राप्तिकी प्रार्थना करे है। ता पदार्थका नाम पुरुषार्थ है। सो पुरुषार्थरूप श्रेय दो प्रकारका होवै है। एक तौ दृष्टश्रेय होवै है और दूसरा अदृष्टश्रेय होवै है। तहां इस लोकके जो राज्यादिक सुख हैं तिनोंका नाम दृष्टश्रेय है। और स्वर्गादिक सुखोंका नाम अदृष्टश्रेय है। ता दोनों प्रकारके श्रेयोंकी प्राप्ति इन बांधवोंके मारणेकरिकै मैं देखता नहीं ॥ शंका ॥ हे अर्जुन इस युद्धविषे स्वजनोंके मारणेकरिकै श्रेयकी प्राप्ति तौ होवै है। परंतु सा

श्रेयरूप फलकी प्राप्ति बहुत विचार कीयेतैं अनंतर प्रतीत होवै है। थोडे विचार कीयेतैं प्रतीत होवै नहीं। ऐसी भगवान्‌की शंकाके निवृत्त करणेवासतै अर्जुननैं (अनुपश्यामि) या वचनविषे (अनु) यह शब्द कथन करा है। ता अनुशब्दका पश्चात् यह अर्थ होवै है। और पूर्ववृत्तांतकी अपेक्षा करिकैही पश्चात् कह्या जावै है। यातैं यह अर्थ सिद्ध होवै है। बहुत विचार कीयेतैं पश्चात्‌भी मैं बांधवोंके मारणेकरिकै अपणे श्रेयकूं देखता नहीं। और (स्वजनं) या कहणेकरिकै अर्जुननैं यह अर्थ सूचन करा। जो अपणे संबंधी नहीं हैं तिनोंका युद्धविषे हनन करिकैभी मैं अपणे श्रेयकूं देखता नहीं । काहेतैं शास्त्रविषे यह कह्या है। श्लोक ॥ "द्वाविमौ पुरुषौ लोके सूर्यमंडलवर्त्तिनौ। परिव्राट् योगयुक्तश्च रणे चाभिमुखो हतः" ॥ अर्थ यह। इस लोकविषे दो प्रकारके पुरुषही सूर्यमंडलविषे स्थित होवै हैं। एक तौ योगकरिकै युक्त संन्यासी और दूसरा युद्धविषे सन्मुख हुआ जो पुरुष मरणकूं प्राप्त हुआ है इति। इत्यादिक शास्त्रके वचनकरिकै युद्धविषे मृत्युकूं प्राप्त हुए योद्धाकूंही स्वर्गादिक श्रेयकी प्राप्ति कथन करी है। हनन करता पुरुषकूं किंचित्‌मात्रभी श्रेयकी प्राप्ति शास्त्रनैं कथन करी नहीं। यातैं अपणे अस्वजनोंके मारणेकरिकैभी जबी श्रेयकी प्राप्ति नहीं होवै है। तबी अपणे स्वजनोंके मारणेकरिकै ता श्रेयकी प्राप्ति कैसे होवैगी। किंतु नहीं होवैगी। यह सर्व अर्थ अर्जुननैं (स्वजनं) या शब्दकरिकै सूचन करा। और सिद्धसाधनरूप दोषकी निवृत्ति करणेवासतै अर्जुननैं (आहवे) यह पद कथन करा है। काहेतैं (आहवे) यह युद्धका वाचक पद जो नहीं कहते। तौ युद्धतैं विना बांधवोंकी हिंसा करिकै श्रेयकी प्राप्ति कोईभी शास्त्रवेत्ता पुरुष अंगीकार करता नहीं। तिसी अर्थकूं अर्जुननैंभी सिद्ध करा। यातैं सिद्ध अर्थका साधनरूप सिद्धसाधनदोष अर्जुनकूं प्राप्त होता। ता दोषकी निवृत्ति करणेवासतै अर्जुननैं (आहवे) यह पद कथन करा है। तात्पर्य यह । युद्धतैं विना संबंधीयोंके मारणेकरिकै श्रेयकी प्राप्तिकूं कोईभी पुरुष अंगीकार करता नहीं । और मैं तौ युद्धविषेभी संबंधीयोंके मारणेकरिकै श्रेयकी प्राप्ति देखता नहीं इति ॥ ३१ ॥ ❀ ॥ ॥ शंका ॥ हे अर्जुन युद्धविषे अपणे स्वजनोंके मारणेकरिकै स्वर्गादिकरूप अदृष्टप्रयोजनकी प्राप्ति तौ मत होवै। परंतु युद्धविषे तिन स्वजनोंके मारणेकरिकै तुमारेकूं विजय, राज्य, विषयसुख या दृष्टप्रयोजनकी प्राप्ति तौ निर्विवाद है। ऐसी भगवान्‌की शंकाके हुए अर्जुन कहे है।

(मू. श्लो.) न कांक्षे विजयं कृष्ण न च राज्यं सुखानि च। किं नो राज्येन गोविंद किं भोगैर्जीवितेन वा ॥ ३२ ॥ (पदच्छेदः) न[३]। कांक्षे[४]। विजयं[२]। कृष्ण[१]। न[५]। च[७]। राज्यं[६]। सुखानि[८]। च[१०]। किं[१३]। नः[११]। राज्येन[१२]। गोविंद[१३]। किं[१५]। भोगैः[१४]। जी-

वितेनं[१७]। वा[१८] ॥३२॥ (पदार्थः) हे कृष्ण मैं विजयकूं[२] नहीं[३] चाहता[४] तथा[५] राज्यकूंभी[६] नहीं[७] चाहता तथा[८] सुखोंकूंभी[९] नहीं चाहता हे[१०]
गोविंद[११] हमारेकूं[१२] इस राज्यकरिकै[१३] क्या फल होवैगा तथा विषयसुखोंकरिकै[१४] क्या[१५] फल होवैगा तथा[१६] विजयकरिकै[१७] क्या फल होवैगा
किंतु तिनोंकी प्राप्तिकरिकै किंचित्मात्रभी फल नहीं होवैगा ॥ ३२ ॥ ॥ ॥

टीका। हे कृष्णभगवान् अपणे बांधवोंकी हिंसा करिकै प्राप्त होणेहारा जो विजय है। तिस विजयके प्राप्तिकी मैं इच्छा करता नहीं। तथा ता विजयतैं पश्चात् प्राप्त होणेहारा जो राज्य है। ता राज्यके प्राप्तिकीभी मैं इच्छा करता नहीं। तथा ता राज्यकी प्राप्तितैं पश्चात् प्राप्त होणेहारे जो विषयजन्य सुख हैं। तिन विषयसुखोंके प्राप्तिकीभी मैं इच्छा करता नहीं। इतनै कहणेकरिकै अर्जुननैं यह अर्थ सूचन करा। या लोकविषे तिस तिस फलकी इच्छावान् पुरुषही तिस तिस फलकी प्राप्तिके उपायविषे प्रवृत्त होवै है। फलकी इच्छातैं रहित पुरुष ता फलके उपायविषे प्रवृत्त होवै नहीं। जैसे भोजनरूप फलके प्राप्तिकी इच्छावान् पुरुषही ता भोजनरूप फलकी प्राप्तिके उपायरूप अन्नपाकविषे प्रवृत्त होवै है। भोजनकी इच्छातैं रहित पुरुष ता अन्नके पकावणे-विषे प्रवृत्त होवै नहीं। तैसे विजय, राज्य, विषयसुख इन फलोंके प्राप्तिकी जिस पुरुषकूं इच्छा होवै। सो पुरुष तिन विजयादिक फलोंकी प्राप्तिके उपाय-रूप युद्धविषे प्रवृत्त होवै। और हमारेकूं तौ तिन विजयराज्यादिक फलोंके प्राप्तिकी इच्छा है नहीं। यातैं इस युद्धरूप उपायविषे हमारी प्रवृत्ति संभवै नहीं। शंका। हे अर्जुन अन्य दुर्योधनादिकोंके इच्छाका विषयरूप जो यह विजय, राज्य, सुख आदिक हैं। तिनोंविषे तुमारेकूं इच्छाका अभाव किस वासतै हुआ है। ऐसी भगवान्की शंकाके हुए अर्जुन कहे है (किं नो राज्येनेति) हे गोविंद धर्म अधर्मके स्वरूपकूं नहीं जानणेहारे जो यह दुर्योधनादिक हैं। तिनोंकूं इन राज्यसुखादिकोंविषे इच्छा होवो। परंतु धर्म अधर्मके स्वरूपकूं जानणेहारे जो हम हैं। तिन हमारेकूं या प्रसिद्ध राज्यकरिकै तथा वि-षयसुखोंकरिकै तथा जीवनका साधनरूप विजयकरिकै किस प्रयोजनकी प्राप्ति होवैगी। किंतु तिन राज्यादिकोंकरिकै हमारा किंचित्मात्रभी प्रयोजन सिद्ध नहीं होवैगा। तात्पर्य यह। विजय, राज्य, भोग इन तीनोंकी प्राप्तितैं विनाही वनविषे निवास करणेहारे जो हम हैं। तिन हमारा तिस संतोषकरिकैही या ज-गत्विषे कीर्त्तिपूर्वक जीवन होवैगा। यातैं इन राज्यादिकोंके प्राप्तिकी हमारेकूं इच्छा है नहीं। इहां (हे गोविंद) या संबोधनकरिकै अर्जुननैं यह अर्थ सूचन करा। गो नाम इंद्रियोंका है। तिन इंद्रियोंकूं अधिष्ठानरूपकरिकै जो नित्यही प्राप्त होवै। ताका नाम गोविंद है। ऐसे अंतर्यामी स्वरूप आप हमारे इस लोकके

राज्यादिक फलोंतैं वैराग्यकूं भली प्रकार जाणते हो इति ॥ ३२ ॥ ॥ शंका ॥ हे अर्जुन धर्मशास्त्रविषे यह वचन कह्या है ॥ श्लोक ॥ " वृद्धौ च मातापितरौ भार्या साध्वी सुतः शिशुः । अप्यकार्यशतं कृत्वा भर्त्तव्या मनुरब्रवीत् " । अर्थ यह । अपणे वृद्ध जो मातापिता हैं । तथा पतिव्रता जो स्त्री है । तथा बाल्य अवस्थावाले जो पुत्र हैं । यह सर्व बांधव इस पुरुषनैं न करणेयोग्य अनेक कार्योंकूं करिकैभी भरणपोषण करणेयोग्य हैं । यह वार्ता मनुभगवान् कहता भया है इति । इत्यादिक शास्त्रोंके वचनतैं वृद्ध मातापितादिक संबंधीयोंके भरणपोषणवासतै करा हुआभी अधर्म या पुरुषके दोषवासतै होवै नहीं । यातैं जो कदाचित् तुमारेकूं इन राज्यसुखादिकोंतैं वैराग्यभी होवै । तौभी इन अपणे संबंधीयोंके राज्यसुखादिकोंवासतै तुमारेकूं इस युद्धविषे प्रवृत्त होणा चाहीये । ऐसी भगवान्की शंकाके हुए अर्जुन कहे है । ॥ ॥ ॥

(मू० श्लो०) येषामर्थे कांक्षितं नो राज्यं भोगाः सुखानि च । त इमेवस्थिता युद्धे प्राणांस्त्यक्त्वा धनानि च ॥ ३३ ॥ (पदच्छेदः) । येषां । अर्थे । कांक्षितं । नः । राज्यं । भोगाः । सुखानि । च । ते । इमे । अवस्थिताः । युद्धे । प्राणान् । त्यक्त्वा । धनानि । च ॥ ३३ ॥ (पदार्थः) हे भगवन् हमारेकूं जिन बांधवोंके वासतै राज्य तथा विषय तथा सुख अपेक्षित हैं ते यह बांधव अपणे प्राणोंकी आशाकूं तथा धनकी आशाकूं त्याग करिकै इस युद्धविषे स्थित हुए हैं ॥ ३३ ॥ ॥ ॥

टीका । हे भगवन् एकाकी पुरुषकूं तौ यह राज्यादिक अपेक्षित होवै नहीं । और जिन बांधवोंके वासतै हमारेकूं यह राज्य अपेक्षित है । तथा सुखके साधनरूप विषय अपेक्षित हैं । तथा विषयजन्य सुख अपेक्षित हैं । ते यह हमारे बांधव अपणे प्राणोंकी आशाकूं छोडिकरिकै तथा धनकी आशाकूं छोडिकरिकै मरणेवासतै इस युद्धभूमिविषे स्थित हुए हैं । यातैं अपणे स्वार्थवासतै तथा अपणे संबंधीयोंके स्वार्थवासतै इस युद्धरूप कार्यविषे हमारी प्रवृत्ति संभवती नहीं । इहां पूर्वश्लोकविषे यद्यपि भोगशब्दकरिकै विषयजन्य सुखका ग्रहण करा था । तथापि इस श्लोकविषे भोगोंतैं सुखकूं भिन्न ग्रहण करा है । यातैं इहां भोगशब्दकी लक्षणावृत्तिकरिकै सुखके साधनरूप स्पर्शादिक विषयोंका ग्रहण करणा । और (प्राणांस्त्यक्त्वा धनानि च) या वचनविषे प्राणोंका त्याग तथा धनका त्याग कथन करा है । सो जीवत अवस्थाविषे प्राणोंका त्याग तथा धनका त्याग संभवता नहीं । यातैं प्राणशब्दकी लक्षणावृत्तिकरिकै प्राणकी आशाका ग्रहण करणा । और धनशब्दकी लक्षणावृत्तिकरिकै धनकी आशाका ग्रहण करणा । तिन प्राणादिकोंके आशाका परित्याग जीवत अवस्थाविषे

भी संभव होइ सकै है । तहां अपणे प्राणोंके त्याग हुएभी अपणे बांधवोंके सुखवासतै धनकी आशा संभव होइ सकै है । या शंकाकी निवृत्ति करणेवासतै प्राणोंतैं भिन्न धनका ग्रहण करा है इति ॥ ३३ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हे अर्जुन जिन बांधवोंके सुखवासतै तुमारेकूं यह राज्यादिक अपेक्षित है । ते तुमारे बांधव इस युद्धविषे आए नहीं । ऐसी भगवान्‌की शंकाके निवृत्त करणेवासतै सो अर्जुन तिन बांधवोंका विशेषकरिकैं वर्णन करे है ।

(मू० श्लो०) आचार्याः पितरः पुत्रास्तथैव च पितामहाः ॥ मातुलाः श्वशुराः पौत्राः श्यालाः संबंधिनस्तथा ॥ ३४ ॥ (पदच्छेदः) आचार्याः । पितरः । पुत्राः । तथा । एव । च । पितामहाः । मातुलाः । श्वशुराः । पौत्राः । श्यालाः । संबंधिनः । तथा ॥ ३४ ॥ (पदार्थः) हे भगवान् इस युद्धभूमिविषे कोई तौ हमारे आचार्य हैं तथा कोई पितर हैं तथा कोई पुत्र हैं तथा कोई पितामह हैं तथा कोई मातुल हैं तथा कोई श्वशुर हैं तथा कोई पौत्र हैं तथा कोई श्याले हैं तथा कोई संबंधी हैं ॥ ३४ ॥

टीका । इस श्लोकका अर्थ स्पष्टही है । ताका अभिप्राय यह है । इस युद्धभूमिविषे जितने कि योद्धा एकठे हुए हैं । ते सर्व योद्धा हमारे संबंधीही हैं । तिन संबंधीयोंतैं भिन्न कोई है नहीं । ते सर्व संबंधी तौ अबी मरणेकूं तयार हुए हैं । यातैं किस संबंधीके राज्यसुखादिकोंवासतै मैं इस युद्धविषे प्रवृत्त होवौं इति ॥ ३४ ॥ ❀ ॥ शंका । हे अर्जुन जो कदाचित् कृपाकरिकै तूं इन भीष्मद्रोणादिकोंकूं नहीं हनन करैगा । तौभी यह भीष्मद्रोणादिक राज्यके लोभकरिकै तुमारेकूं अवश्य हनन करैंगे । यातैं तुमही इन भीष्मद्रोणादिकोंकूं हनन करिकै राज्यकूं भोगो । ऐसी भगवान्‌की शंकाके हुए अर्जुन कहे है ।

(मू. श्लो.) एतान्न हंतुमिच्छामि घ्नतोपि मधुसूदन । अपि त्रैलोक्यराज्यस्य हेतोः किंनु महीकृते ॥ ३५ ॥ (पदच्छेदः) एतान् । न । हंतुं । इच्छामि । घ्नतः । अपि । मधुसूदन । अपि । त्रैलोक्यराज्यस्य । हेतोः । किंनु । महीकृते ॥ ३५ ॥ (पदार्थः) हे मधुसूदन मेरेकूं हनन करते हुए भी इन आचार्यादिकोंकूं मैं तीनं लोकके राज्यकी प्राप्तिवासतै भी हनन करणेकूं नहीं इच्छा करता तौ इस पृथिवीमात्रके राज्यकी प्राप्तिवासतै मैं इनोंके हननकी इच्छा कैसे करौंगा ॥ ३५ ॥

टीका । हे मधुसूदन भगवान् तीक्ष्ण शस्त्रोंकरिकै हमारेकूं हनन करणेहारेभी जो यह पूर्व उक्त आचार्यादिक हैं । तिनोंके हनन करणेकी इच्छामात्रभी मैं नहीं करता । तौ तिन आचार्यादिकोंकूं मैं तीक्ष्ण शस्त्रोंकरिकै किस प्रकार हनन करौंगा । किंतु नहीं हनन करौंगा । किंवा तिन आचार्यादिकोंके

हनन करणेकरिकै जो कदाचित् हमारेकूं भूमि, स्वर्ग और पाताल या तीन लोकोंके राज्यकीभी प्राप्ति होइ जावै। तौभी मैं इन आचार्यादिकोंके हननकी इच्छा करता नहीं। तौ इस पृथिवीमात्रके राज्यकी प्राप्तिवासतै मैं इन आचार्यादिकोंकूं नहीं हनन करौंगा याकेविषे क्या कहणा है। इहां (हे मधुसूदन) या संबोधनकरिकै अर्जुननैं श्रीभगवान्विषे वैदिक मार्गका प्रवर्त्तकपणा सूचन करा। ऐसे वैदिक मार्गके प्रवर्त्तक होइकै आप हमारेकूं आचार्यादिकोंके हननविषे किसवासतै प्रवृत्त करते हो इति ॥ ३५ ॥ ॥ शंका ॥ हे अर्जुन आचार्यादिकोंके मारणेविषे जो तूं दोष मानता है। तौ तिन आचार्य आदिकोंकूं छोडिकै दूसरे धृतराष्ट्रके दुर्योधनादिक पुत्रोंकूं तुम हनन करो। काहेतैं इन दुर्योधनादिकोंनैं तुमारेकूं लाक्षागृहविषे दाहादिकोंकरिकै बहुत प्रकारके दारुण दुःखोंकी प्राप्ति करी है। यातैं तिन दुर्योधनादिकोंके हनन करणेविषे तुमारी प्रीति संभवै है। ऐसी भगवान्की शंकाके हुए अर्जुन कहे है।

(मू. श्लो.) निहत्य धार्तराष्ट्रान्नः का प्रीतिः स्याज्जनार्दन। पापमेवाश्रयेदस्मान् हत्वैतानाततायिनः ॥ ३६ ॥ (पदच्छेदः) निहत्य। धार्तराष्ट्रान्। नः। का। प्रीतिः। स्यात्। जनार्दन। पापं। एव। आश्रयेत्। अस्मान्। हत्वा। एतान्। आततायिनः ॥ ३६ ॥ (पदार्थः) हे जनार्दन इन दुर्योधनादिकोंकूं हनन करिकै हमारेकूं कौन प्रीति होवैगी किंतु कोइभी प्रीति नहीं होवैगी उलटा ईन आततायियोंकूं हनन करिकै हमारेकूं पापही आश्रयण करैगा ॥ ३६ ॥

टीका। हे जनार्दन धृतराष्ट्रके पुत्र जो यह दुर्योधनादिक हैं। ते हमारे भ्राता हैं। तिन भ्रातावोंकूं हनन करिकै हमारेकूं कौन सुख होवैगा। किंतु तिनोंके हनन करिकै हमारेकूं किंचित् मात्रभी सुखकी प्राप्ति नहीं होवैगी। तात्पर्य यह। मूढ जनोंके प्रीतिका विषय जो क्षणमात्रवर्त्ति सुखाभास है। ता सुखाभासके लोभकरिकै बहुत कालपर्यंत नरकके प्राप्तिका हेतुरूप यह बांधवोंकी हिंसा हमारेकूं करणेयोग्य नहीं है। इहां जो सुखरूपतातैं रहित होवै तथा सुखकी न्यांई प्रतीत होवै ताकूं सुखाभास कहे हैं। ऐसे विषयजन्य सुख हैं इति। और (हे जनार्दन) या संबोधनकरिकै। अर्जुननैं यह अर्थ सूचन करा। हे भगवन् यह दुर्योधनादिक जो कदाचित् मारणेही योग्य होवैं। तौभी आपही इनोंकूं हनन करो। जिस कारणतैं प्रलयकालविषे सर्व जनोंके हननकरिकैभी आपकूं किंचित्मात्रभी पापका स्पर्श होता नहीं इति। शंका। हे अर्जुन शास्त्रविषे यह वचन कह्या है। श्लोक। "अग्निदो गरदश्चैव श-

स्त्रपाणिर्धनापहः ॥ क्षेत्रदारापहारी च षडेते आततायिनः " । अर्थ यह । अग्निके देणेहारा तथा विषके देणेहारा तथा शस्त्र जिसके हाथविषे है तथा परधनके हरण करणेहारा तथा पराए क्षेत्रके हरण करणेहारा तथा परस्त्रीके हरण करणेहारा यह षट् आततायी कहे जावै हैं इति । और इन दुर्योधनादिकोंविषे तौ सो षट् प्रकारकाही आततायीपणा है । और दूसरे शास्त्रविषे यह कह्या है । श्लोक । " आततायिनमायांतं हन्यादेवाविचारयन् ॥ नाततायिवधे दोषो हंतुर्भवति कश्चन । अर्थ यह । अकस्मात्तैं आया हुआ जो आततायी पुरुष है । तिस आततायी पुरुषकूं यह बुद्धिमान् पुरुष तिसी कालविषेही हनन करै । ताके हनन करणेविषे किंचितमात्रभी विचार नहीं करै । जिस कारणतैं तिस आततायी पुरुषके हनन करणेविषे ता हनन करणेहारे पुरुषकूं किंचित्मात्रभी दोष होवै नहीं इति । या शास्त्रके वचनतैं आततायीके मारणेकरिकै दोषाभाव प्रतीत होवै है । यातैं यह दुर्योधनादिक आततायी तुमारेकूं अवश्य हनन करणे योग्य हैं । ऐसी भगवान्की शंकाके हुए अर्जुन कहे है । (पापमेवेति) इन दुर्योधनादिक आततायीयोंकूंभी हनन करिकै स्थित हुए हमारेकूं पाप अवश्य आश्रयण करैगा । अथवा । इनोंके हनन करिकै हमारेकूं केवल पापही आश्रयण करैगा । दूसरा कोई दृष्टप्रयोजन तथा अदृष्टप्रयोजन प्राप्त होवैगा नहीं । 'और आततायिनं हन्यात्' यह पूर्व उक्त वचन यद्यपि आततायी पुरुषोंके हननका विधान करे है । तथापि सो वचन अर्थशास्त्रका है । धर्मशास्त्रका सो वचन है नहीं । ता अर्थशास्त्रतैं धर्मशास्त्र बलवान् होवै है । और धर्मशास्त्र तौ प्राणिमात्रकी हिंसा करणेका निषेध करे है । सो धर्मशास्त्र यह है । " स एव पापिष्ठतमो यः कुर्यात्कुलनाशनं इति " ॥ " न हिंस्यात्सर्वाभूतानि इति " ॥ अर्थ यह । जो पुरुष अपणे कुलका नाश करे है । सोईही पुरुष अत्यंत पापिष्ठ जानणा । और यह बुद्धिमान् पुरुष सर्व भूतप्राणियोंकी हिंसा नहीं करै इति । यह धर्मशास्त्र पूर्व उक्त अर्थशास्त्रतैं बलवान् है । यातैं इन बांधवोंका हनन करणा हमारेकूं होग्य नहीं है । अथवा (पापमेवाश्रयेत्) इत्यादिक अर्द्ध श्लोकका या प्रकारतैं दूसरा व्याख्यान करणा । शंका । हे अर्जुन दुर्योधनादिकोंके हनन करणेविषे यद्यपि तुमारेकूं प्रीति नहीं है । तथापि तुमारेकूं हनन करणेविषे इन दुर्योधनादिकोंकूं प्रीति है । यातैं यह दुर्योधनादिक तुमारेकूं अवश्यकरिकै हनन करैंगे । ऐसी भगवान्की शंकाके हुए अर्जुन कहे है (पापमेवेति) पापं । एव । आश्रयेत् । अस्मान् । हत्वा । एतान् । आततायिनः ॥ अर्थ यह । हमारेकूं हननकरिकै स्थित हुए इन दुर्योधनादिक आततायीयोंकूं केवल पापही आश्रयण करैगा । दूसरा कोई सुख इनोंकूं प्राप्त नहीं होवैगा । तात्पर्य यह । यह दुर्योधनादिक पूर्व तौ आततायी हैंही । और नहीं युद्ध करणेहारे हमारेकूं हनन करिकै अबीभी यह दुर्योधनादिकही पापी होवैंगे । इसविषे हमारेकूं कोई पापका संबंध है नहीं । यातैं हमारेकूं किंचि-

त्मात्रभी हानीकी प्राप्ति नहीं इति ॥ ३६ ॥ ❀ तहां अन्य प्राणियोंकी हिंसा करणेविषे कोई फल है नहीं । उलटी अनर्थकीही प्राप्ति होवै है । यातैं किसीभी प्राणीकी हिंसा करणे योग्य नहीं है । यह वार्त्ता (न च श्रेयोनुपश्यामि) इस वचनतैं आदि लैके अबपर्यंत अर्जुननैं कथन करी । अब ता वार्त्ताकी समाप्ति करै है ।

(मू. श्लो.) तस्मान्नार्हा वयं हंतुं धार्तराष्ट्रान्स्वबांधवान् । स्वजनं हि कथं हत्वा सुखिनः स्याम माधव ॥३७॥ (पदच्छेदः) तस्मात् । न । अर्हाः । वयं । हंतुं । धार्तराष्ट्रान् । स्वबांधवान् । स्वजनं । हि । कथं । हत्वा । सुखिनः । स्याम । माधव ॥ ३७ ॥ (पदार्थः) हे माधव तिस कारणतैं हम अपणे बांधव धृतराष्ट्रके दुर्योधनादिक पुत्रोंकूं हनन करणेकूं नहीं योग्य हैं जिस कारणतैं अपणे बांधवोंकूं हनन करिकै हम कैसे सुखी होवैंगे किंतु नहीं सुखी होवैंगे ॥ ३७ ॥

टीका । इहां (तस्मात्) या तत् शब्दकरिकै पूर्व कथन करा जो बांधवोंकी हिंसा करणेविषे अदृष्टरूप फलका अभाव तथा अनर्थकी प्राप्ति तिन दोनोंका ग्रहण करणा ॥ ताकरिकै यह अर्थ सिद्ध होवै है । जिस कारणतैं बांधवोंकी हिंसा करिकै स्वर्गादिरूप अदृष्टफलकी प्राप्ति होवै नहीं । उलटी महान् अनर्थकी प्राप्ति होवै है । तिस कारणतैं हम अपणे दुर्योधनादिक बांधवोंके हनन करणेकी इच्छा करते नहीं । शंका । हे अर्जुन बांधवोंके हनन करिकै स्वर्गादिरूप अदृष्टसुखकी प्राप्ति मत होवो । तथापि इस लोकका दृष्टसुख तौ तुमारेकूं अवश्यकरिकै प्राप्त होवैगा । ऐसी भगवान्की शंकाकरिकै अर्जुन कहे है (स्वजनंहीति) हे माधव अपणे संबंधीयोंके सुखवासतैही श्रेष्ठ पुरुषोंकी प्रवृत्ति होवै है । यातैं अपणे संबंधीयोंकूंही हनन करिकै हम किस प्रकार सुखकूं प्राप्त होवैंगे । किंतु उलटे दुःखकूंही प्राप्त होवैंगे । इहां (हे माधव) या संबोधनकरिकै अर्जुननैं यह अर्थ सूचन करा । मा नाम लक्ष्मीका है । धव नाम पतिका है । लक्ष्मीका जो पति होवै ताका नाम माधव है । ऐसा लक्ष्मीका पति होइकै आप हमारेकूं लक्ष्मीतैं रहित बांधवोंकी हिंसारूप निंदित कर्मविषे प्रवृत्त करणे योग्य नहीं हो इति ॥ ३७ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हे अर्जुन युद्धविषे अपणे बांधवोंकी हिंसा करिकै जो कदाचित् किसी दृष्टअदृष्टसुखकी प्राप्ति नहीं होती होवै । उलटी दोषकीही प्राप्ति होती होवै । तौ इन भीष्मादिक महान् पुरुषोंकी ता कुलके क्षय करणेविषे तथा स्वजनोंकी हिंसा करणेविषे किसवातै प्रवृत्ति होती है । ऐसी भगवान्की शंकाके हुए अर्जुन कहे है ।

(मू. श्लो.) यद्यप्येते न पश्यंति लोभोपहतचेतसः । कुलक्षयकृतं दोषं मित्रद्रोहे च पातकं ॥ ३८ ॥ (पदच्छेदः) यद्यपि । एते । न । पश्यंति । लोभोपहतचेतसः । कुलक्षयकृतं । दोषं । मित्रद्रोहे । च । पातकं ॥ ३८ ॥ (पदार्थः) हे भगवन् लोभग्रस्तचित्तवाले यह भीष्मादिक यद्यपि कुलके नाशकृत दोषकूं तथा मित्रोंके द्रोहविषे पातककूं नहीं देखते तथापि हम ताकूं देखते हैं ॥ ३८ ॥

टीका । हे भगवन् प्राप्त हुए पदार्थके त्यागकूं नहीं सहारणेका नाम लोभ है । ता लोभकरिकै इन भीष्मादिकोंका चित्त ग्रस्त होइ रह्या है । या कारणतैं यह भीष्मादिक कुलके नाश करणेकरिकै प्राप्त होणेहारे दोषकूं तथा अपणे मित्रोंके साथि द्रोह करणेकरिकै प्राप्त होणेहारे पातककूं यद्यपि विचार करिकै देखते नहीं । तथापि हम ता दोषकूं तथा पातककूं भली प्रकार जाणते हैं । यातैं इन भीष्मादिकोंकी तौं यद्यपि युद्धविषे प्रवृत्ति संभवै है । तथापि ता युद्धविषे हमारी प्रवृत्ति संभवती नहीं । इतनै कहणेकरिकै अर्जुननैं या शंकाकी निवृत्ति करी । सा शंका यह है । हे अर्जुन यह भीष्मादिक जो शिष्ट पुरुष हैं । तिनोंकी अपणे बांधवोंके हननविषे प्रवृत्ति देखणेमैं आवै है । और जो जो शिष्ट पुरुषोंका आचार होवै है । सो सो वेदमूलकही होवै है । जैसे श्राद्धादिक कर्मोंविषे प्रवृत्तिरूप शिष्ट पुरुषोंका आचार वेदमूलक होवै है । और ता शिष्ट पुरुषोंके आचारके अनुसारही दूसरे पुरुषोंकी प्रवृत्ति होवै है । यातैं भीष्मादिक शिष्ट पुरुषोंकी अपणे बांधवोंके हननविषे प्रवृत्तिकूं देखिकरिकै तुमारेकूंभी तिसीविषे प्रवृत्त होणा चाहीये । या भगवान्के शंकाकी अर्जुननैं (लोभोपहतचेतसः) या विशेषणके कहणेकरिकै निवृत्ति करी । काहेतैं जिस शिष्ट पुरुषोंके आचारविषे लोभादिक दोष कारण नहीं होवैं । किंतु केवल धर्मबुद्धिही कारण होवै । तिसी आचारविषे वेदमूलकता कल्पना करी जावै है । और सोइही शिष्ट पुरुषोंका आचार इतर जीवोंकूं अंगीकार करणे योग्य होवै है । और जिस शिष्ट पुरुषके आचारविषे केवल लोभादिक दोषही कारण होवै । ता शिष्ट पुरुषके आचारविषे वेदमूलकता कल्पना करी जावै नहीं । और सो लोभादिपूर्वक शिष्ट पुरुषोंका आचार इतर पुरुषोंकूं अंगीकार करणे योग्यभी नहीं है । और इन भीष्मादिकोंका जो बांधवोंके हनन करणेविषे प्रवृत्तिरूप आचार है । ताके विषेभी केवल लोभादिक दोषही कारण हैं । यातैं सो इन भीष्मादिकोंका आचार वेदमूलक नहीं है । ऐसे इन भीष्मादिकोंके लोभमूलक आचारकूं ग्रहण करिकै हम बांधवोंके हनन करणेविषे कैसे प्रवृत्त

होवैंगे। किंतु हम ताकेविषे कदाचित्भी नहीं प्रवृत्त होवैंगे इति ॥ ३८ ॥ ❀ ॥ शंका। हे अर्जुन यद्यपि यह भीष्मादिक लोभतैं युद्धविषे प्रवृत्त हुए हैं। तथापि धर्मशास्त्रविषे यह कह्या है। "आहूतो न निवर्तेत द्यूतादपि रणादपि" इति। "विजितं क्षत्रियस्य इति"। अर्थ यह। क्षत्रिय राजाकूं जो कोई पुरुष जूवा खेलणेवासतै तथा युद्ध करणेवासतै आइकै बुलावे। तौ सो क्षत्रिय ता जूवातैं तथा युद्धतैं निवृत्त नहीं होवै। किंतु ता पुरुषके साथि जूवा तथा युद्ध अवश्यकरिकै करै। और युद्ध करिकै एकठा करा हुआ जो धन है। सो धनही क्षत्रियका धर्म्य धन है इति। इत्यादिक धर्मशास्त्रके वचनोंकरिकै क्षत्रिय राजाका युद्धधर्म सिद्ध होवै है। तथा युद्ध करिकै एकठा करा हुआ धनही धर्म्य धन सिद्ध होवै है। और तुमारेकूं इन भीष्मादिकोंनैं युद्ध करणेवासतै बुलाया है। यातैं तुमारेकूं इस युद्धविषे अवश्य प्रवृत्त होणा चाहीये। ऐसी भगवान्की शंकाके हुए अर्जुन कहे है।

(मू. श्लो.) कथं न ज्ञेयमस्माभिः पापादस्मान्निवर्त्तितुं॥ कुलक्षयकृतं दोषं प्रपश्यद्भिर्जनार्दन॥ ३९ ॥ (पदच्छेदः) कथं। न। ज्ञेयं। अस्माभिः। पापात्। अस्मात्। निवर्त्तितुं। कुलक्षयकृतं। दोषं। प्रपश्यद्भिः। जनार्दन ॥ ३९ ॥ (पदार्थः) हे जनार्दन कुलके नाशकृत दोषकूं जानणेहारे हमोनैं पापके हेतुरूप इस युद्धतैं निवृत्त होणेवासतै कैसे नहीं विचार करणा योग्य है किंतु अवश्य विचार करणा योग्य है ॥ ३९ ॥

टीका। हे जनार्दन अपणे कुलके नाश करणेतैं उत्पन्न होणेहारा जो दोष है। ता दोषकूं भली प्रकारतैं जानणेहारे जो हम हैं तिन हमोनैं पापकी प्राप्ति करणेहारे इस युद्धतैं निवृत्त होणेवासतै क्या नहीं विचार करणा योग्य है। किंतु ता युद्धतैं निवृत्त होणेवासतै हमारेकूं अवश्य विचार करणा योग्य है। और "किमकार्यं दुरात्मनां"। अर्थ यह। दुरात्मा पुरुषोंकूं कौन कार्य करणे योग्य नहीं है। किंतु दुरात्मा पुरुषोंकूं सर्व करणेयोग्य है। या न्यायकूं अंगीकार करिकै यह दुर्योधनादिक जैसे राज्यके लोभकरिकै अपणे कुलका नाश करे हैं। तथा अपणे मित्रोंके साथि द्रोह करे हैं। तैसे हमारेकूं करणा योग्य नहीं है। और "आहूतो न निवर्त्तेत" यह जो धर्मशास्त्रका वचन आपनैं पूर्व कह्या था। सो वचन केवल लोभमूलक है। यातैं सो वचन "स एव पापिष्ठतमो यः कुर्यात्कुलनाशनं" या वचनकरिकै बाधित है। यातैं ता लोभमूलक वचनकूं अंगीकार करिकै हमारी युद्धविषे प्रवृत्ति संभवै नहीं। इहां यह तात्पर्य है। जिस पुरुषकूं जिस कार्यविषे यह कार्य हमारे श्रेयका साधन है या प्रकारका ज्ञान होवै है। सो पुरुषही तिस कार्यविषे प्रवृत्त

होवै है। यातैं यह जान्या जावै है। श्रेयसाधनताज्ञानही पुरुषोंका प्रवर्त्तक है। और जिसके साथि कदाचित्भी अश्रेयका संबंध नहीं होवै ताका नाम श्रेय है। जो ऐसा नहीं अंगीकार करीये तौ। शत्रुके मारणे वासतै करा जो श्येनयज्ञ है ता श्येनयज्ञकूंभी धर्मरूपता होणी चाहिये। काहेतैं शत्रुके मरणरूप श्रेयकी साधनता ता श्येनयज्ञविषेभी है। परंतु सो शत्रुका मरणरूप श्रेय अश्रेयका असंबंधी नहीं है। किंतु श्येनयज्ञकरिकै शत्रुकूं मारणेहारे पुरुषकूं नरकरूप अश्रेयकी प्राप्ति होवै है। यातैं सो शत्रुका मरणरूप श्रेय नरकरूप अश्रेयके संबंधवालाही है। यातैं ता श्येनयज्ञविषे धर्मरूपता संभवै नहीं। यह वार्त्ता अन्य शास्त्रविषेभी कही है। तहां श्लोक। "फलतोपि च यत्कर्म नानर्थेनानुबध्यते। केवलप्रीतिहेतुत्वात् तद्धर्म इति कथ्यते"। अर्थ यह। जो कर्म अपणे फलकी प्राप्तितैंभी अनर्थके साथि संबंधवाला नहीं होवै किंतु केवल सुखकाही हेतु होवै ता कर्मकूं धर्म या नामकरिकै कथन करे हैं इति। यातैं जैसे श्येनयज्ञ यद्यपि "श्येनेनाभिचरन् यजेत" इत्यादिक शास्त्रकरिकै विधान करा है। तथापि ता श्येनका शत्रुका मरणरूप फल नरकरूप अश्रेयके संबंधवाला है। यातैं श्रेष्ठ पुरुषोंकी ता श्येनयज्ञविषे प्रवृत्ति होवै नहीं। तैसे यह युद्धभी "आहूतो न निवर्त्तेत" इत्यादिक शास्त्रके वचनोंकरिकै यद्यपि विधान करा है। तथापि ता युद्धके विजयराज्यादिक फल "स एव पापिष्ठतमो यः कुर्यात्कुलनाशनं" इत्यादिक वचनोंकरिकै कथन करा जो कुलके नाशतैं पाप है ता पापरूप अश्रेयके संबंधवालेही हैं। यातैं ते विजयराज्यादिक फल श्रेयरूप नहीं हैं। ऐसे विजयराज्यादिकोंकी प्राप्तिवासतै हमारेकूं इस युद्धविषे प्रवृत्त होणा योग्य नहीं है इति॥ ३९॥ ❀ ॥ तहां युद्धके फलरूप जो विजयराज्यादिक हैं। ते अश्रेयरूप होणेतैं हमारी इच्छाके विषय नहीं हैं। यातैं तिन विजयराज्यादिकोंकी प्राप्तिवासतै हमारेकूं इस युद्धविषे प्रवृत्त होणा योग्य नहीं है। यह अर्थ पूर्व श्लोकविषे कथन करा। अब तिसी अर्थकूं पुनः दृढ करणेवासतै सो अर्जुन तिन विजयराज्यादिकोंविषे अनर्थका संबंधीपणा कथन करिकै अश्रेयरूपता वर्णन करे है पंच श्लोकोंकरिकै।

(मू. श्लो.) कुलक्षये प्रणश्यंति कुलधर्माः सनातनाः। धर्मे नष्टे कुलं कृत्स्नमधर्मोभिभवत्युत ॥ ४० ॥ (पदच्छेदः) कुलक्षये। प्रणश्यंति। कुलधर्माः। सनातनाः। धर्मे। नष्टे। कुलं। कृत्स्नं। अधर्मः। अभिभवति। उत ॥ ४० ॥ (पदार्थः) हे भगवन् कुलके नाश हुए परंपरासैं प्राप्त कुलके सर्व धर्म नाशकूं प्राप्त होवैं हैं। और धर्मके नाश हुए बाकी रहे सर्वही कुलकूं अधर्म अपणे वश करि लेवै है ॥ ४० ॥

टीका । अपणे वंशपरंपराकरिकै प्राप्त तथा अपणे कुलके अनुसार तथा जातिके अनुसार करणेयोग्य ऐसे जो अग्निहोत्रादिक धर्म हैं । तिन धर्मोंकी प्रवृत्ति करणेहारे जो वृद्ध पुरुष हैं । तिन वृद्ध पुरुषोंका जबी नाश होवै है । तबी तिन कर्त्ता पुरुषोंके अभाव होणेतैं ते अग्निहोत्रादिक सर्व कुलके धर्म नाशकूं प्राप्त होवै हैं । और तिन वृद्ध पुरुषोंके नाशकरिकै तिन सर्व धर्मोंके नाश हुएतैं अनंतर शिक्षा करणेहारे वृद्ध पुरुषोंके अभावतैं बाकी रहे हुए स्त्रीबालकादिरूप कुलकूं अनाचाररूप अधर्म अपणे वश करि लेवै है इति ॥ ४० ॥ किंच ।

(मू. श्लो.) अधर्माभिभवात्कृष्ण प्रदुष्यंति कुलस्त्रियः । स्त्रीषु दुष्टासु वार्ष्णेय जायते वर्णसंकरः ॥ ४१ ॥ (पदच्छेदः) अधर्माभिभवात् । कृष्ण । प्रदुष्यंति । कुलस्त्रियः । स्त्रीषु । दुष्टासु । वार्ष्णेय । जायते । वर्णसंकरः ॥ ४१ ॥ (पदार्थः) हे कृष्ण ता अधर्मके वशपणेतैं कुलीन सर्व स्त्रीयां व्यभिचारिणी होवै हैं हे वार्ष्णेय तिन व्यभिचारिणी स्त्रीयोंविषे वर्णसंकरपुत्र उत्पन्न होवै हैं ॥ ४१ ॥

टीका । हे कृष्ण ता अधर्मकी वृद्धितैं अनंतर । हमारे पतियोंनैं धर्मका उल्लंघन करिकै जो कुलका नाश करा है । तौ हमारेकूं पतिव्रताधर्मका उल्लंघन करिकै व्यभिचार करणेविषे कौन दोष होवैगा । या प्रकारकी कुतर्ककरिकै युक्त हुईयां ते कुलकी स्त्रीयां व्यभिचारकर्मविषे प्रवृत्त होवै हैं । अथवा धर्मशास्त्रविषे पतिके धर्म अधर्मका फल स्त्रीकूंभी कथन करा है । यातैं कुलके नाश करणेकरिकै पापकूं प्राप्त हुए जो पति हैं । तिन पतित पतियोंके संबंधतैं तिन स्त्रीयोंकी व्यभिचारकर्मविषे प्रवृत्ति होवै है । तिन व्यभिचारिणी स्त्रीयोंविषे ऊंच जातिवाले पुरुषोंके संबंधतैं अथवा नीच जातिवाले पुरुषोंके संबंधतैं वर्णसंकरपुत्र उत्पन्न होवै हैं इति ॥ ४१ ॥ ❀ ॥ किंच ।

(मू. श्लो.) संकरो नरकायैव कुलघ्नानां कुलस्य च । पतंति पितरो ह्येषां लुप्तपिंडोदकक्रियाः ॥ ४२ ॥ (पदच्छेदः) संकरः । नरकाय । एव । कुलघ्नानां । कुलस्य । च । पतंति । पितरः । हि । एषां । लुप्तपिंडोदकक्रियाः ॥ ४२ ॥ (पदार्थः) किंच कुलका संकर कुलके नाश करणेहारे पुरुषोंके नरकवासतैंही होवै है तथा इन कुलके नाश करणेहारे पुरुषोंके पितरभी पिंडजलक्रियातैं रहित हुए नरकविषे पडै हैं ॥ ४२ ॥

टीका । हे भगवन् कुलविषे उत्पन्न भया जो वर्णसंकर है । सो वर्णसंकर कुलके नाश करणेहारे पुरुषोंकूं नरककी प्राप्तिवासतैंही होवैहै । किंवा । सो व-

र्णसंकर केवल कुलके नाश करणेहारे पुरुषोंके नरकवासतै नहीं होवै है । किंतु ता वर्णसंकरकरिकै तिनोंके पितरोंकूंभी नरककी प्राप्ति होवै है । या अर्थकूं कहे हैं । (पतंतीति) अपणे पितरोंवासतै पिंडक्रियाके करणेहारे तथा जलक्रियाके करणेहारे जो पुत्र हैं । ते पुत्र पीछे रहे नहीं । यातैं निवृत्त होइ गई है पिंडक्रिया तथा जलक्रिया जिनोंकी ऐसे जो कुलके नाश करणेहारे पुरुषोंके पितर हैं । ते पितर नरककी प्राप्तिवासतै स्वर्गतैं नीचै पडै हैं । इहां यद्यपि इतिहासपुराणादिकोंविषे यह वार्त्ता कथन करी है । एक कालविषे परशुराम सर्व क्षत्रियोंकूं हनन करता भया । तिसतैं अनंतर तिन क्षत्रियोंकी स्त्रीयां ब्राह्मणोंतैं पुत्रोंकूं उत्पन्न करतीयां भईयां । जो कदाचित् अन्य पुरुषतैं उत्पन्न हुए पुत्रकी दीई हुई पिंडक्रिया तथा जलक्रिया पिताकूं नहीं प्राप्त होती होवै । तौ ते क्षत्रिय राजावोंकी स्त्रीयां ब्राह्मणोंतैं पुत्रोंकूं किसवासतै उत्पन्न करतीयां भईयां हैं । यातैं यह जान्या जावै है । जैसे स्त्रीरूप क्षेत्रविषे वीर्यरूप बीजकी प्राप्ति करणेहारे बीजपति पुरुषकूं ता पुत्रके दीये हुए पिंडादिक प्राप्त होवै हैं । तैसे ता स्त्रीरूप क्षेत्रके पति पुरुषकूंभी ता पुत्रक दीये हुए पिंडादिक प्राप्त होवै हैं । तथापि श्रुतिविषे बीजपति पुरुषकूंही ता पुत्रके दीये हुए पिंडादिकोंकी प्राप्ति कथन करी है । क्षेत्रपति पुरुषकूं ता पुत्रके दीये हुए पिंडादिकोंकी प्राप्ति कथन करी नहीं । तहां श्रुति । "न शेषो अग्ने अन्यजातमस्ति" ॥ अर्थ यह । हे अग्नि अपणी स्त्रीविषे अन्य पुरुषतैं उत्पन्न हुआ जो पुत्र है सो पुत्र होवै नहीं इति । किंवा । यह वार्त्ता यास्कमुनिनैंभी कथन करी है । "अन्योदर्यो मनसापि न मंतव्यो ममायं पुत्रः इति" । अर्थ यह । अपणी स्त्रीविषे अन्य पुरुषतैं उत्पन्न भया जो पुत्र है । ता पुत्रकूं या क्षेत्रपति पितानैं यह हमाराही पुत्र है या प्रकार मनकरिकैभी नहीं जानणा इति । किंवा । श्रुतिविषे अपणे वर्त्तमान पिताका संशयभी कथन करा है । तहां श्रुति । "ये यजामहे इति योहमस्मिससन्यजे इति" । अर्थ यह । जे हम हैं । ते हम यजन करते हैं । हम ब्राह्मण हैं अथवा अब्राह्मण हैं यह वार्त्ता हम जानते नहीं । काहेतें लोकप्रसिद्ध वर्त्तमान जो यह पिता है । सो पिता इसी पितातैं मैं उत्पन्न भया हूं अथवा किसी अन्य पितातैं मैं उत्पन्न भया हूं या प्रकारके संशयकरिकै ग्रस्त है । यातैं यहही हमारा पिता है या प्रकारका निश्चय संभवै नहीं । यातैं जे हम हैं ते हम यजन करते हैं इति । इत्यादिक श्रुतिवचनोंकरिकै बीजपति पिताकूंही पिंडादिकोंकी प्राप्ति सिद्ध होवै है । क्षेत्रपति पिताकूं पिंडादिकोंकी प्राप्ति सिद्ध होवै नहीं । और स्त्रीरूप क्षेत्रविषे अन्य पुरुषतैं पुत्रकी उत्पत्तिकूं कथन करणेहारे जो स्मृति आदिक शास्त्रोंके वचन हैं । तिन वचनोंका इस लोकविषे वंशके स्थापन करणेविषे तात्पर्य है । कोई क्षेत्रपति पुरुषकूं ता पुत्रके दीये हुए पिंडादिकोंकी प्राप्तिविषे तिन वचनोंका तात्पर्य नहीं है । यातैं वर्णसंकरपुत्रोंके उत्पन्न हुए ते कुलना-

श करणेहारे पुरुषोंके पितर पिंडादिक क्रियातैं रहित होइकै अवश्य नरकविषे पडै हैं। यह यद्यपितैं आदि लैके सर्व अर्थ (पतंति पितरोहि एषां) या वचनविषे स्थित हि या शब्दकरिकै अर्जुननैं सूचन करा इति ॥ ४२ ॥ ॥ किंच।

(मू. श्लो.) दोषैरेतैः कुलघ्नानां वर्णसंकरकारकैः। उत्साद्यंते जातिधर्माः कुलधर्माश्च शाश्वताः ॥ ४३ ॥ (पदच्छेदः) दोषैः। एतैः। कुलघ्नाना। वर्णसंकरकारकैः। उत्साद्यंते। जातिधर्माः। कुलधर्माः। च। शाश्वताः ॥ ४३ ॥ (पदार्थः) हे भगवन् कुलके हनन करणेहारे पुरुषोंके वर्णसंकरके करणेहारे इन दोषोंनैं परंपरातैं प्राप्त जातिके धर्म तथा कुलके धर्म नाश करीते हैं ॥ ४३ ॥

टीका। हे भगवन् जे पुरुष यह कार्य हमारेकूं करणेयोग्य है तथा यह कार्य हमारेकूं नहीं करणे योग्य है या प्रकारके विचारका परित्याग करिकै कामक्रोधलोभादिकोंके वश हुए कुलधर्मोंके प्रवर्त्तक पुरुषोंका हनन करते हैं। तिन पुरुषोंका नाम कुलघ्न है। तिन कुलघ्न पुरुषोंके वर्णसंकरकी उत्पत्ति करणेहारे जो पूर्व उक्त दोष हैं। तिन दोषोंनैं श्रुतिस्मृतिमूलक तथा परंपरातैं प्राप्त जो क्षत्रियत्वादिक जातिप्रयुक्त धर्म हैं तथा कुलके जो असाधारण धर्म हैं ते सर्व धर्म नाश करीते हैं इति ॥ ४३ ॥ ॥ किंच ॥

(मू. श्लो.) उत्सन्नकुलधर्माणां मनुष्याणां जनार्दन। नरके नियतं वासो भवतीत्यनुशुश्रुम ॥ ४४ ॥ (पदच्छेदः) उत्सन्नकुलधर्माणां। मनुष्याणां। जनार्दन। नरके। अनियतं। वासः। भवति। इति। अनुशुश्रुम ॥ ४४ ॥ (पदार्थः) हे जनार्दन नष्ट करे हैं कुल जाति आदिकोंके धर्म जिनोंनैं ऐसे मनुष्योंका नरकविषे अवधितैं रहित निवास होवै है इस प्रकार हम आचार्योंके मुखतैं श्रवण करते भये हैं ॥ ४४ ॥

टीका। हे जनार्दन जे पुरुष लोभके वश होइकै अपणे कुलका हनन करिकै अपणे कुलके धर्मोंकूं तथा जातिके धर्मोंकूं नष्ट करे हैं। तिन पुरुषोंका युगमन्वंतरादिक अवधितैं रहित रौरवादिक नरकोंविषे निवास होवै है। यह वार्त्ता हम केवल अपणी बुद्धिकी कल्पनातैं नहीं कहते। किंतु पूर्व आचार्योंके मुखतैं तथा महान् ऋषियोंके मुखतैं यह वार्त्ता हम श्रवण करते भये हैं। तहां श्लोक ॥" प्रायश्चित्तमकुर्वाणाः पापेष्वभिरता नराः।

अपश्चात्तापिनः पापान् निरयान् यांति दारुणान् " ॥ अर्थ यह । जे पुरुष पापोंविषे प्रीतिवाले हैं । तथा ता पापकी निवृत्तिवासतै प्रायश्चित्तकूं करते नहीं । तथा पश्चात्तापकूंभी नहीं करते । ते पुरुष ता पापके वशतैं दारुण नरकोंकूं प्राप्त होवै हैं इति । इत्यादिक अनेक वचन पापी पुरुषोंकूं नरककी प्राप्ति कथन करे हैं । इहां (नरके नियतं) या वचनविषे ककारके उत्तर अकारका लोप मानिकै अनियतं ऐसा पदच्छेद करा है । ता अनियतपदका पूर्व अर्थ कथन करा । और जो अकारका लोप तहां न अंगीकार करीये । तौ नियतं या प्रकारका पदच्छेद करणा । ता नियतपदका अवश्यकरिकै यह अर्थ करणा । क्या ऐसे मनुष्योंकूं नरकविषे अवश्यकरिकै निवास होवै है इति ॥ ४४ ॥ ❋ ॥ तहां अपणे बांधवोंकी हिंसाविषे है परिअवसान जिसका ऐसा जो युद्ध करणेका निश्चय है । सो निश्चयभी सर्व प्रकारतैं अत्यंत पापिष्ठ है । तौ यह युद्धरूप कर्म अत्यंत पापिष्ठ है याकेविषे क्या कहणा है । या अर्थके कहणेवासतै ता युद्धके निश्चय करणेकरिकै अपणेकूं धिक्कार करता हुआ सो अर्जुन कहे है ।

(मू. श्लो.) अहो बत महत्पापं कर्तुं व्यवसिता वयं । यद्राज्यसुखलोभेन हंतुं स्वजनमुद्यताः ॥ ४५ ॥ (पदच्छेदः) अहो । बत । महत्पापं । कर्तुं । व्यवसिताः । वयं । यत् । राज्यसुखलोभेन । हंतुं । स्वजनं । उद्यताः ॥ ४५ ॥ (पदार्थः) बडा आश्चर्य है बडा खेद है जो हम महान् पापकूं करणे वासतै निश्चयवाले हुए हैं जो हम राज्यसुखके लोभकरिकै अपणे बांधवोंकूं हननं करणेवासतै उद्यमवाले हुए हैं सोईही महान् पाप है ॥ ४५ ॥

टीका । हे भगवन् यह हमारेकूं बडा आश्चर्य होता है तथा बडा खेद होता है । जो हम विचारवान् होइकेभी इस महान् पापके करणेवासतै प्रयत्नवाले हुए हैं । सो कौन पाप है जिसके करणेवासतै तुम प्रयत्नवाले हुए हो । ऐसी भगवान्की शंकाकरिकै अर्जुन कहे है । (यदिति) राज्यकी प्राप्तिकरिकै प्राप्त होणेहारा जो क्षणभंगुर विषयसुख है । ता विषयसुखविषे जो लंपटतारूप लोभ है । ता लोभकरिकै जो हम अपणे भ्रातापुत्रादिक बांधवोंकूं तीक्ष्ण शस्त्रोंकरिकै हनन करणेवासतै उद्यमवाले हुए हैं । सोईही महान् पाप है इसतैं परे दूसरा कोई पाप है नहीं । तात्पर्य यह । जो तुमारी ऐसी बुद्धि है तौ युद्धका अभिनिवेश करिकै तूं इहां किसवासतै आया है या प्रकारका वचन आपनैं कहणा नहीं । काहेतैं विचारतैं विनाही कार्यकूं करणेहारा जो मैं हूं । तिस हमनैं यह बहुत उद्धतपणा करा है इति ॥ ४५ ॥ ❋ ॥ शंका ॥ हे अर्जुन तुमारेकूं यद्यपि युद्धादिकोंतैं वैराग्य हुआ है

तथापि भीमसेनादिकोंकूं ता युद्ध करणेकी बहुत उत्कट इच्छा है। यातैं बांधवोंका नाश तौ अवश्यकरिकै होवैगा। पुनः तुमारेकूं क्या कार्य करणे योग्य है। ऐसी भगवान्‌की शंकाकरिकै अर्जुन कहे है।

(मू. श्लो.) यदि मामप्रतीकारमशस्त्रं शस्त्रपाणयः। धार्तराष्ट्रा रणेहन्युस्तन्मे क्षेमतरं भवेत् ॥ ४६ ॥ (पदच्छेदः) यदि। मां। अप्रतीकारं। अशस्त्रं। शस्त्रपाणयः। धार्तराष्ट्राः। रणे। हन्युः। तत्। मे। क्षेमतरं। भवेत् ॥ ४६ ॥ (पदार्थः) जबी प्रतीकारतैं रहित तथा शस्त्रोंतैं रहित हमारेकूं यह शस्त्रोंवाले धृतराष्ट्रके पुत्रादिक इस युद्धभूमिविषे हनन करैंगे सो हनन हमारा अत्यंत क्षेमरूप होवैगा ॥ ४६ ॥

टीका। हे भगवन् अपणे प्राणोंकी रक्षावासतै करे हुएकी जो प्रतिक्रिया है ताका नाम प्रतीकार है। जैसे अपणे प्राणोंकी रक्षा करणेवासतै। ताडन करणेहारे पुरुषकूं जो ताडन करणा है ताका नाम प्रतीकार है। ता प्रतीकारतैं रहितका नाम अप्रतीकार है। अथवा। इन बांधवोंकूं मैं हनन करौंगा या प्रकारके निश्चयमात्रकरिकै प्राप्त भया जो पाप है। ता पापकी निवृत्ति करणेहारा जो शरीरके नाशतैं विना अन्य प्रायश्चित्त है ता प्रायश्चित्तका नाम प्रतीकार है। ता प्रतीकारतैं जो रहित होवै ताका नाम अप्रतीकार है। ऐसा अप्रतीकार जो मैं हूं। या कारणतैंही मैं शस्त्रोंतैं रहित हूं। ऐसे प्रतीकारतैं रहित तथा शस्त्रोंतैं रहित मेरेकूं जो कदाचित् शस्त्र हैं हाथविषे जिनोंके ऐसे यह धृतराष्ट्रके दुर्योधनादिक पुत्र इस युद्धभूमिविषे हनन करैंगे। तौ सो हमारा हनन हमारा अत्यंत हितरूप होवैगा। काहेतैं "अहिंसा परमो धर्मः" इत्यादिक वचनोंकरिकै कथन करा जो सर्व भूतप्राणीयोंकी अहिंसारूप धर्म है। सो अहिंसारूप धर्म अपणे प्राणोंतैंभी उत्कृष्ट है। काहेतैं इन प्राणोंके धारणतैं अनेक प्रकारके पापकी उत्पत्ति होवै है। और ता अहिंसाधर्मतैं कोई पाप उत्पन्न होवै नहीं। उलटा महान् पुण्य उत्पन्न होवै है। यातैं इस जीवनकी अपेक्षाकरिकै सो हमारा मरणही अत्यंत हितरूप है। और अपणे बांधवोंके मारणेके संकल्पकरिकै उत्पन्न भया जो पाप है। ता पापकी निवृत्ति करणेहारा दूसरा कोई प्रायश्चित्त है नहीं। किंतु यह हमारा मरणही ता पापके निवृत्तिका प्रायश्चित्त है। या कारणतैंभी यह हमारा मरणही हमारा अत्यंत हितरूप है। इहां किसी पुस्तकविषे (तन्मे प्रियतरं भवेत्) या प्रकारका पाठभी होवै है। ता पाठकाभी यह पूर्व उक्त अर्थही जानि लेना। अथवा। (तन्मे क्षेमतरं भवेत्) या वचनका इस प्र-

कारका अर्थ करणा । सो मरण हमारेकूं क्षेमकी प्राप्तिवासतैही होवैगा । काहेतैं शास्त्रविषे क्षेमका यह स्वरूप कथन करा है । "अप्राप्तप्रापणं योगः क्षेमस्तु स्थितरक्षणं" । अर्थ यह । अप्राप्त वस्तुकी जो प्राप्ति है ताका नाम योग है । और पूर्वस्थित वस्तुका जो रक्षण है ताका नाम क्षेम है इति । और क्षेमतैंभी जो अधिक क्षेम होवै ताका नाम क्षेमतर है । सो इहां प्रसंगविषे यह क्षेमतर है । अपणे कुलके नाश करणेतैं उत्पन्न होणेहारा जो दोष है । तथा ता दोषकरिकै प्राप्त होणेहारी जो नरककी प्राप्ति है । तथा इस लोकविषे प्राप्त होणेहारी जो अपकीर्ति है । इत्यादिक सर्व अनर्थोंकी निवृत्तिपूर्वक जो पूर्व कृत पुण्यकर्मोंके नाशका अभाव है सोईही क्षेमतर है । सो क्षेमतर हमारेकूं इस मरणतैंही प्राप्त होवैगा । यातैं इन बांधवोंके साथि युद्ध करणेतैं हमारा मरणही श्रेष्ठ है इति ॥ ४६ ॥ ॥ ❀ ॥ तिसतैं अनंतर क्या वृत्तांत होता भया ऐसी धृतराष्ट्रकी शंकाकरिकै संजय कहे है।

(मू. श्लो.) संजय उवाच । एवमुक्त्वार्ज्जुनः संख्ये रथोपस्थ उपाविशत् । विसृज्य सशरं चापं शोकसंविग्नमानसः ॥ ४७ ॥
इति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्ज्जुनसंवादे अर्ज्जुनविषादो नाम प्रथमोऽध्यायः समाप्तः ॥ १ ॥
(पदच्छेदः) एवं । उक्त्वा । अर्ज्जुनः । संख्ये । रथोपस्थे । उपाविशत् । विसृज्य । सशरं । चापं । शोकसंविग्नमानसः ॥४७॥
(पदार्थः) हे धृतराष्ट्र शोककरिकै पीडित है मन जिसका ऐसा अर्ज्जुन संग्रामविषे इस प्रकारका वचन कहिकरिकै शरसहित धनुषकूं परित्याग करिकै रथके ऊपरि बैठता भया ॥ ४७ ॥

टीका । हे धृतराष्ट्र अपणे बांधवोंके विनाशरूप निमित्ततैं उत्पन्न भया जो शोक है । ता शोककरिकै पीडित है मन जिसका ऐसा सो अर्जुन ता संग्रामविषे कृष्णभगवान्‌केप्राति ता पूर्व उक्त वचनकूं कहिकरिकै तथा शरसहित धनुषका परित्याग करिकै ता रथके ऊपरि स्थित होता भया इति ॥ ४७ ॥ इति श्रीपरमहंसपरिव्राजकाचार्यश्रीमत्स्वामिउद्धवानंदगिरिपूज्यपादशिष्येण स्वामिचिद्घनानंदगिरिणा विरचितायां प्राकृतटीकायां गीतागूढार्थदीपिकाख्यायां प्रथमोऽध्यायः समाप्तः ॥ १ ॥ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्यो नमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यां नमः ॥ ॥ ॥

इति श्रीस्वामीचिद्घनानंदगिरिकृतभाषाभगवद्गीताटीकायां प्रथमोऽध्यायः समाप्तः ॥ १ ॥

ॐ श्रीगणेशाय नमः । श्रीगुरुभ्यो नमः । श्रीशंकराचार्येभ्यो नमः । श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यां नमः । अथ द्वितीयाध्यायप्रारंभः । तहां सर्व प्राणीयोंकी अहिंसा तथा भिक्षा अन्नका भोजन यहही हमारा परम धर्म है । या प्रकारकी बुद्धिकरिकै अर्जुनकी युद्धतैं विमुखताकूं श्रवण करिकै अपणे दुर्योधनादिक पुत्रोंके राज्यकी अचलताकूं निश्चय करिकै स्वस्थ हुआ है चित्त जिसका ऐसा जो धृतराष्ट्र है ता धृतराष्ट्रकी हर्षकरिकै उत्पन्न भई जो (तिसतैं अनंतर क्या वृत्तांत होता भया या प्रकारकी) आकांक्षा है । ता आकांक्षाके निवृत्त करणेकी इच्छावान् सो संजय ता धृतराष्ट्रके प्रति या प्रकारका वचन कहता भया । यह वार्त्ता वैशंपायन जनमेजयके प्रति कहे है ।

(मू. श्लो.) संजय उवाच । तं तथा कृपयाविष्टमश्रुपूर्णाकुलेक्षणं । विषीदंतमिदं वाक्यमुवाच मधुसूदनः ॥ १ ॥ (पदच्छेदः) तं । तथा । कृपया । आविष्टं । अश्रुपूर्णाकुलेक्षणं । विषीदंतं । ईदं । वाक्यं । उवाच । मधुसूदनः ॥ १ ॥ (पदार्थः) हे धृतराष्ट्र पूर्व उक्त कृपानैं व्याप्त करा हुआ तथा अश्रुकरिकै पूर्ण तथा आकुल हैं नेत्र जिसके तथा विषादकूं प्राप्त हुआ ऐसा जो अर्जुन है ताके प्रति श्रीकृष्णभगवान् यह वक्ष्यमाण वचन कहता भया ॥ १ ॥

टीका । यह भीष्म दुर्योधनादिक हमारे संबंधी हैं या प्रकारका व्यामोह है कारण जिसविषे ऐसा जो स्नेहविशेष है । ता स्नेहका नाम कृपा है । ता कृपानैं व्याप्त करा हुआ जो अर्जुन है । इहां (कृपयाविष्टं) इतनै कहणेकरिकै अर्जुनविषे व्याप्तिरूप क्रियाका कर्मपणा कथन करा । और ता स्नेहरूप कृपाविषे ता व्याप्तिरूप क्रियाका कर्त्तापणा कथन करा । ता कहणेकरिकै । ता कृपाविषे आगंतुकपणा निवृत्त करा । ऐसी स्वभावसिद्ध कृपानैं सो अर्जुन व्याप्त करा है । या कारणतैंही सो अर्जुन विषादकूं प्राप्त हुआ है । तहां स्नेहके विषयरूप जो अपणे बांधव हैं । तिन बांधवोंके नाशकी शंका है कारण जिसका ऐसा जो शोकरूप चित्तका व्याकुलीभाव है ताका नाम विषाद है । इहां (विषीदंतं) या शब्दकरिकै ता विषादविषे प्राप्तिरूप क्रियाका कर्मपणा कथन करा । और अर्जुनविषे ता प्राप्तिरूप क्रियाका कर्त्तापणा कथन करा । ता कहणेकरिकै तिस विषादविषे आगंतुकपणा सूचन करा । कदाचित् उत्पन्न होणेहारे पदार्थकूं आगंतुक कहे है । ऐसे आगंतुक विषादके वशतैं अश्रुरूप जलकरिकै पूर्ण हुए हैं नेत्र जिसके तथा वस्तुके दर्शनकी असामर्थ्यतारूप आकुलताकरिकै युक्त हैं नेत्र जिसके ऐसा जो अर्जुन है । ता अर्जुनके प्रति सो मधुसूदनभगवान् अनेक प्रकारकी

युक्तियोंसहित यह वक्ष्यमाण वचन कहता भया । ता अर्जुनकी सो भगवान् उपेक्षा नहीं करता भया । इहां संजयनैं कृष्णभगवान्का जो (मधुसूदनः) यह नाम कथन करा है । ताकरिकै संजयनैं धृतराष्ट्रके प्रति यह अर्थ सूचन करा । "मध्वाख्यं असुरं सूदयतीति मधुसूदनः" । अर्थ यह । मधुनामा असुरकूं जो नाश करै है ताकूं मधुसूदन कहे हैं । ऐसा दुष्टोंके संहार करणेहारा कृष्णभगवान् अपणे स्वभावके अनुसार ता अर्जुनके प्रतिभी तुमारे दुर्योधनादिक दुष्ट पुत्रोंके हनन करणेकाही उपदेश करैगा । अथवा अपणे मधुसूदन नामके सार्थक करणेवासतै सो कृष्णभगवान् अर्जुनकूं निमित्तमात्र करिकै आपही तुमारे दुष्ट पुत्रोंकूं हनन करैगा । यातैं तुमनैं अपणे पुत्रोंके जयकी आशा कदाचित्भी नहीं करणी इति ॥ १ ॥ ❀ ॥ अब ता कृष्णभगवान्के वचनका दो श्लोकोंकरिकै कथन करे हैं ।

(मू. श्लो.) श्रीभगवानुवाच । कुतस्त्वा कश्मलमिदं विषमे समुपस्थितं । अनार्यजुष्टमस्वर्ग्यमकीर्त्तिकरमर्जुन ॥ २ ॥ (पदच्छेदः) कुतः । त्वां । कश्मलं । इदं । विषमे । समुपस्थितं । अनार्यजुष्टं । अस्वर्ग्यं । अकीर्तिकरं । अर्जुन ॥ २ ॥ (पदार्थः) हे अर्जुन इस भययुक्त स्थानविषे तुमारेकूं यहै कश्मल किस हेतुतैं प्राप्त भया है कैसा है सो कश्मल श्रेष्ठ पुरुषोंकरिकै असेवित है तथा स्वर्गका विरोधी है तथा अकीर्ति करणेहारा है ॥ २ ॥

टीका । (श्रीभगवानुवाच) या वचनविषे स्थित जो भगवान्पद है । ता भगवान्पदका शास्त्रविषे यह अर्थ कथन करा है । श्लोक । "ऐश्वर्यस्य समग्रस्य धर्मस्य यशसः श्रियः । वैराग्यस्याथ मोक्षस्य षण्णां भग इतींगना" । अर्थ यह । संपूर्ण जो ऐश्वर्य है १ तथा संपूर्ण जो धर्म है २ तथा संपूर्ण जो यश है ३ तथा संपूर्ण जो श्री है ४ तथा संपूर्ण जो वैराग्य है ५ तथा संपूर्ण जो ज्ञान है ६ या षटोंका नाम भग है इति । ते ऐश्वर्यादिक षट्भग प्रतिबंधतैं रहित नित्यही जिसविषे रहैं । ताका नाम भगवान् है । अथवा भगवान्शब्दका यह अर्थ है । श्लोक । "उत्पत्तिं च विनाशं च भूतानामागतिं गतिं । वेत्ति विद्यामविद्यां च स वाच्यो भगवानिति" । अर्थ यह । जो सर्वज्ञ पुरुष सर्व भूतोंके उत्पत्तिकूं तथा ता उत्पत्तिके कारणकूं जानै है । तथा तिन सर्व भूतोंके नाशकूं तथा ता नाशके कारणकूं जानै है । तथा जो सर्वज्ञ पुरुष सर्व भूतोंके संपदारूप आगतिकूं तथा सर्व भूतोंके आपदारूप गतिकूं जानै है तथा जो सर्वज्ञ पुरुष विद्याकूं तथा अविद्याकूं जानै है । सो सर्वज्ञ पुरुष भगवान् या नामकरिकै कहणेयोग्य है इति । ऐसा

श्रीकृष्णभगवान् अर्जुनके प्रति या प्रकारका वचन कहता भया। हे अर्जुन स्नेहरूप कृपा तथा पूर्व उक्त विषाद तथा अश्रुपात यह तीनों हैं कारण जिसके तथा शिष्ट पुरुषोंकरिकै निंदित होणेतैं अत्यंत मलिन है स्वरूप जिसका ऐसा जो यह युद्धरूप स्वधर्मतैं निवृत्तिरूप कश्मल है। सो कश्मल इस युद्धभूमिविषे सर्व क्षत्रियोंतैं श्रेष्ठ तुमारेकूं किस हेतुतैं प्राप्त भया है। तात्पर्य यह। सो युद्धरूप स्वधर्मतैं निवृत्तिरूप कश्मल तुमारेकूं मोक्षकी इच्छारूप हेतुतैं प्राप्त भया है। अथवा स्वर्गकी इच्छारूप हेतुतैं प्राप्त भया है। अथवा कीर्त्तिकी इच्छारूप हेतुतैं प्राप्त भया है इति। अब या तीनों हेतुवोंकूं यथाक्रमतैं अनार्यजुष्टं, अस्वर्ग्यं, अकीर्त्तिकरं या तीन विशेषणोंकरिकै श्रीभगवान् निषेध करै है। (अनार्यजुष्टं) इत्यादिक अर्धश्लोककरिकै। हे अर्जुन अपणे वर्णआश्रमके धर्मोंकरिकै अंतःकरणकी शुद्धिद्वारा मोक्षकी इच्छा करणेहारे जो अशुद्ध अंतःकरणवाले मुमुक्षु जन हैं। ऐसे मुमुक्षु जनोंनैं तौ यह स्वधर्मतैं निवृत्तिरूप कश्मल कदाचित्‌भी सेवन करणेयोग्य नहीं है। और सर्व कर्मोंके संन्यासका अधिकारी तौ शुद्ध अंतःकरणवालाही होवै है। यह वार्त्ता आगे कथन करैंगे। यातैं मोक्षकी इच्छारूप हेतुतैं ता कश्मलकी प्राप्ति संभवै नहीं। और यह स्वधर्मतैं निवृत्तिरूप कश्मल स्वर्गकी प्राप्ति करणेहारे धर्मका विरोधी है। यातैं स्वर्गकी इच्छावान् पुरुषनैंभी सो कश्मल सेवन करणेयोग्य नहीं है। और सो कश्मल इस लोकविषे कीर्त्तिका अभाव करणेहारा है। अथवा अपकीर्त्ति करणेहारा है यातैं इस लोकके कीर्त्तिकी इच्छावान् पुरुषोंनैंभी सो कश्मल सेवन करणेयोग्य नहीं है। यातैं यह अर्थ सिद्ध भया। मोक्षकी इच्छावान् पुरुषोंनैं तथा स्वर्गकी इच्छावान् पुरुषोंनैं तथा कीर्त्तिकी इच्छावान् पुरुषोंनैं यह स्वधर्मतैं निवृत्तिरूप कश्मल सर्वथा परित्याग करणेयोग्य है। और तूं तौ मोक्षकी तथा स्वर्गकी तथा कीर्त्तिकी इच्छावान् हुआभी इस कश्मलकूं सेवन करता है। यातैं यह तुमारा बहुत अनुचित व्यवहार है इति॥ २॥ ॥ ❀॥ शंका। हे भगवन्। अपणे बांधवोंकी सेनाके देखणेकरिकै उत्पन्न भया जो अधैर्य है। ता अधैर्यके वशतैं धनुष्मात्रकूंभी धारण करणेविषे असमर्थ जो मैं हूं। तिस हमारेकूं अबी क्या करणेयोग्य है। ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् कहे हैं।

(मू. श्लो.) क्लैब्यं मास्मगमः पार्थ नैतत्त्वय्युपपद्यते। क्षुद्रं हृदयदौर्बल्यं त्यक्त्वोत्तिष्ठ परंतप ॥ ३ ॥ (पदच्छेदः) क्लैब्यं। मास्मगमः। पार्थ। न। एतत्। त्वयि। उपपद्यते। क्षुद्रं। हृदयदौर्बल्यं। त्यक्त्वा। उत्तिष्ठ। परंतप ॥३॥ (पदार्थः) हे पृथाके पुत्र तूं क्लीबभावकूं मत प्राप्त होउ तैं अर्जुनविषे यह क्लीबभाव नहीं बनि सकता है परंतप या क्षुद्र हृदयके दौर्बल्यकूं परित्याग करिकै तूं युद्धवासते उठि खडा होउ ॥ ३ ॥

टीका । हे पृथाके पुत्र ओज तेज आदिकोंका भंगरूप जो अधैर्य है । ता अधैर्यरूप जो क्लीबभाव है । ता क्लीबभावकूं तूं मत प्राप्त होउ । इहां (हे पार्थ) या संबोधनकरिकै भगवान्नैं अर्जुनकेप्रति यह अर्थ सूचन करा । पृथामातानैं देवताका आराधन करिकै ता देवताके प्रसादतैं तुमारेकूं पाया था । यातैं तुमारेविषे बलकी अधिकता अत्यंत प्रसिद्ध है । ऐसा पृथाका पुत्र तूं इस क्लीबभावके योग्य नहीं है । अब अर्जुनपणेकरिकैभी ता क्लीबभावकी अयोग्यता निरूपण करे हैं । (नैतदिति) साक्षात् महेश्वरके साथिभी युद्ध करणेहारा तथा सर्व लोकविषे प्रसिद्ध महान् प्रभाववाला ऐसा जो तूं अर्जुन है । तिस तुमारेविषे यह अधैर्यरूप क्लीबभाव कदाचित्भी बनता नहीं । शंका । हे भगवन् । (न च शक्नोम्यवस्थातुं भ्रमतीव च मे मनः) अर्थ यह । मेरा मन भ्रमण करता है यातैं मैं अपणे शरीरके स्थित करणेविषेभी समर्थ नहीं हूं । यह अपणा वृत्तांत पूर्वही मैनैं आपके प्रति कथन करा था । यातैं अबी हमारेकूं आप वारंवार किस वासतै कहते हो । ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् कहे हैं (क्षुद्रं इति) हे अर्जुन जिसकूं हृदयका दौर्बल्य कहे हैं ऐसा जो मनका भ्रमणादिरूप अधैर्य है । सो अधैर्य स्वाश्रयपुरुषके क्षुद्रपणेका कारण होणेतैं क्षुद्ररूप है अथवा सो भ्रमणादिरूप अधैर्य सुगमही निवृत्त करा जावै है । यातैं क्षुद्ररूप है । ऐसे क्षुद्र अधैर्यकूं विचारके बलतैं शीघ्रही परित्याग करिकै इस स्वधर्मरूप युद्धके करणेवासतै तुम सावधान होवो । इहां (हे परंतप) या अर्जुनके संबोधन कहणेकरिकै भगवान्नैं अर्जुनके प्रति यह अर्थ सूचन करा । " परं शत्रुं तापयतीति परंतपः " ॥ अर्थ यह । अपणे शत्रुवोंकूं जो संतापकी प्राप्ति करै ताका नाम परंतप है । ऐसा परंतप होइकैभी अत्यंत क्षुद्र अधैर्यरूप शत्रुका नाश नहीं करणा यह बहुत आश्चर्यकी वार्त्ता है । यातैं अपणे परंतप नामके सार्थक करणेवासतै तुमारेकूं ता अधैर्यरूप शत्रुका नाश अवश्य करणे योग्य है इति ॥ ३ ॥ ❀ ॥ शंका । हे भगवन् इस युद्धका जो मैं परित्याग करता हूं । सो कोई शोकमोहादिकोंके वशतैं नहीं करता हूं । किंतु इस युद्धविषे धर्मरूपता है नहीं उलटा अधर्मरूपता है । या कारणतैं मैं इस युद्धका परित्याग करता हूं । या प्रकारके अर्जुनके अभिप्रायकूं संजय कथन करे है ।

(मू. श्लो.) अर्जुन उवाच ॥ कथं भीष्ममहं संख्ये द्रोणं च मधुसूदन । इषुभिः प्रतियोत्स्यामि पूजार्हावरिसूदन ॥४॥ (पदच्छेद) कथं । भीष्मं । अहं । संख्ये । द्रोणं । च । मधुसूदन । इषुभिः । प्रतियोत्स्यामि । पूजार्हौ । अरिसूदन ॥ ४ ॥ (पदार्थः) हे मधुसूदन हे अरिसूदन इस रणभूमिविषे मैं अर्जुन पूजाकेयोग्य भीष्मकूं तथा द्रोणकूं बाणोंकरिकै किस प्रकार हनन करौंगा किंतु नहीं हनन करौंगा ॥ ४ ॥

टीका। हे भगवन् हमारे कुलविषे वृद्ध तथा गुणोंकरिकै वृद्ध जो यह भीष्मपितामह है । तथा धनुर्विद्याका गुरु जो यह द्रोणाचार्य है। यह दोनों अपणे पिताकी न्यांई पुष्प चंदन अक्षतादिकोंकरिकै पूजन करणेयोग्य हैं । ऐसे भीष्मद्रोणादिक वृद्धोंके साथि क्रीडास्थानविषे आनंदकी प्राप्तिवा-सतै लीलायुद्ध करणाभी हमारेकूं उचित नहीं है। तौ इस रणभूमिविषे तीक्ष्ण शस्त्रोंकरिकै तिन भीष्मद्रोणादिकोंका हनन करणा हमारेकूं किस प्र-कार उचित होवैगा । किंतु तिन भीष्मादिकोंका हनन करणा हमारेकूं उचित नहीं है । इहां यह तात्पर्य है। यह दुर्योधनादिक भीष्मपितामहकूं तथा द्रोणाचार्यकूं छोडिकरिकै तौ हमारे साथि युद्ध करैंगे नहीं। किंतु भीष्मद्रोणकूं सन्मुख करिकैही हमारे साथि युद्ध करैंगे। तहां भीष्म द्रोणा-चार्यके साथि युद्ध करणा धर्म तौ है नहीं। काहेतैं वेदकरिकै विधान करा हुआ जो फलवान् अर्थ है ताका नाम धर्म है। या प्रकारका धर्मका लक्षण जैसे भीष्मद्रोणादिकोंके पूजनविषे घटे है। तैसे तिनोंके साथि युद्ध करणेविषे सो लक्षण घटता नहीं। यातैं सो युद्ध धर्मरूप नहीं है। शंका। हे अ-र्जुन जैसे वृद्धपुरुषोंके साथि युद्ध करणेका शास्त्रविषे विधान नहीं करा है। यातैं ता युद्धविषे धर्मरूपता नहीं संभवती। तैसे ता युद्धका शास्त्रविषे निषेधभी तौ नहीं करा है। यातैं ता युद्धविषे अधर्मरूपताभी नहीं संभवती। शास्त्रकरिकै निषिद्धही अधर्म होवै है। समाधान । हे भगवन् शास्त्रविषे यह कह्या है। श्लोक । "गुरुं हुंकृत्य तुंकृत्य विप्रान्निर्जित्य वादतः। श्मशाने जायते वृक्षः कंकगृध्रोपसेवितः।" अर्थ यह। जो पुरुष अपणे गुरुके प्रति हुंकारशब्द कहे है। तथा तुंकारशब्द कहे है। तथा साधुब्राह्मणोंकूं विवादतैं जय करे है। सो पुरुष मरिकरिकै श्मशानभूमिविषे कंक गृध्र आदिक पक्षीयोंकरिकै सेवित वृक्षशरीरकूं प्राप्त होवै है इति। इत्यादिक शास्त्रोंके वचनोंनैं शब्दमात्रकरिकैभी गुरुका द्रोह निषेध करा है । जबी शब्दमात्र-करिकै गुरुका द्रोहभी अधर्मरूप हुआ। तबी तिन भीष्मद्रोणादिक गुरुवोंके साथि तीक्ष्ण शस्त्रोंकरिकै युद्ध करणा अधर्मरूप है। याके विषे क्या क-हणा है। इहां (हे मधुसूदन हे अरिसूदन) यह दो संबोधन भगवान्के जो अर्जुननैं कहे हैं। तिन दोनोंका अर्थ एकही है । काहेतैं मधुनामा असुरकूं जो हनन करे है ताकूं मधुसूदन कहे हैं । और शत्रुरूप अरियोंकूं जो हनन करे है ताकूं अरिसूदन कहे हैं। यातैं एकवार कहे हुए अर्थ-का पुनः कथन करणेविषे यद्यपि अर्जुनकूं पुनरुक्तिदोषकी प्राप्ति होवै है। तथापि सो अर्जुन तिस कालविषे शोककरिकै व्याकुल था। यातैं ता अर्जु-नकूं पूर्व उत्तर अर्थका स्मरण रह्या नहीं। यातैं पुनरुक्तिदोषकी प्राप्ति होवै नहीं। स्वस्थचित्तवाले पुरुषविषेही सो पुनरुक्तिदोष दिया जावै है। अथवा मधुसूदन अरिसूदन या दो संबोधनोंकरिकै अर्जुननैं भगवानके प्रति यह अर्थ सूचन करा। हे भगवन् आपभी तौ मधु असुरादिक शत्रुवोंकूंही हनन करतेहो । अपणे मि-

त्रोंकूं हनन करते नहीं। यातैं पूजाके योग्य भीष्मद्रोणादिक गुरुवोंकूं तुम हनन करो या प्रकारका वचन कहणा तुमारेकूं उचित नहीं है इति ॥ ४ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हे अर्जुन भीष्मपितामह, द्रोणाचार्य, कृपाचार्य इत्यादिकोंविषे जो पूज्यता है । सा पूज्यता गुरुपणेकरिकै है । ता गुरुपणेतैं विना तिकेंनी पूज्यताविषे दुसरा कोई कारण है नहीं । सो गुरुपणा यद्यपि पूर्वकालविषे तिन भीष्मद्रोणादिकोंविषे रह्या था । तथापि इस कालविषे तिन भीष्मद्रोणादिकोंकूं गुरुरूपकरिकै अंगीकार करणा तुमारेकूं उचित नहीं है । काहेतैं धर्मशास्त्रविषे यह कह्या है । श्लोक । "गुरोरप्यवलिप्तस्य कार्याकार्यमजानतः । उत्पथं प्रतिपन्नस्य परित्यागो विधीयते" अर्थ यह । जो गुरु अहंकारादिक दोषोंकरिकै उन्मत्तभावकूं प्राप्त भया है । तथा जो गुरु शास्त्रविहित करणेयोग्य अर्थकूं तथा शास्त्रनिषिद्ध अकरणेयोग्य अर्थकूं जाणता नहीं । तथा जो गुरु शास्त्रनिषिद्ध मार्गविषे प्रवृत्त होवै है ऐसे गुरुका शिष्यनैं परित्यागही करणा इति । यह सर्व लक्षण इन भीष्मद्रोणाचार्यादिकोंविषे घटे हैं । काहेतैं यह भीष्मद्रोणादिक युद्धके गर्वकरिकै महान् उन्मत्तभावकूं प्राप्त हुए हैं । और इन भीष्मद्रोणादिकोंनैं कपट करिकै राज्यका ग्रहण करा है । तथा अपणे शिष्योंके साथि द्रोह करा है । यातैं यह भीष्मद्रोणादिक कार्यअकार्यके ज्ञानतैंभी रहित हैं । या कारणतैंही शास्त्रनिषिद्ध मार्गविषे वर्त्तणेहारे हैं । ऐसे भीष्मद्रोणादिकोंका हनन करणाही श्रेष्ठ है । ऐसी भगवान्की शंकाके हुए अर्जुन कहे है ।

(मू. श्लो.) गुरूनहत्वा हि महानुभावान् श्रेयो भोक्तुं भैक्ष्यमपीह लोके । हत्वार्थकामांस्तु गुरूनिहैव भुंजीय भोगान् रुधिरप्रदिग्धान् ॥ ५ ॥ (पदच्छेदः) ॥ गुरून् । अहत्वा । हि । महानुभावान् । श्रेयः । भोक्तुं । भैक्ष्यं । अपि । इह । लोके । हत्वा । अर्थकामान् । तु । गुरून् । इह । एव । भुंजीय । भोगान् । रुधिरप्रदिग्धान् ॥ ५ ॥ (पदार्थः) हे भगवन् जिस कारणतैं महानुभाव गुरुवोंकूं नहनन करिकै इस लोकविषे भिक्षाअन्नकूं भोजन करणा भी श्रेष्ठ है इन अर्थकामवाले भी गुरुवोंकूं हनन करिकै मैं इस लोकविषे ही रुधिरलिप्त विषयोंकूं भोगोंगा ॥ ५ ॥

टीका । हे भगवन् भीष्मद्रोणाचार्यादिक गुरुवोंकूं न हनन करिकै हमारा परलोक तौ अवश्यकरिकै सिद्ध होवैगा । और इस लोकविषे तौ तिन भीष्मद्रोणादिक गुरुवोंकूं नहनन करिकै राज्यतैं रहित हुए हम राजावोंकूं शास्त्रनिषिद्ध भिक्षाअन्नभी भोजन करणेकूं अत्यंत श्रेष्ठ है । परंतु तिन

भीष्मद्रोणादिक गुरुवोंकूं हनन करिकै हमारेकूं यह राज्यभी श्रेष्ठ नहीं है। काहेतैं शास्त्रविषे यह कह्या है। श्लोक। "अकृत्वा परसंतापमगत्वा खलमंदिरं। अक्लेशयित्वा चात्मानं यदल्पमपि तद्बहु"। अर्थ यह। दुसरे प्राणियोंकूं संतापकी प्राप्ति न करिकै तथा वेदविरुद्ध नास्तिकोंके मंदिरकूं न जाइकरिकै तथा अपणे आत्माकूं क्लेशकी प्राप्ति नहीं करिकै इस पुरुषकूं जो अल्प पदार्थकीभी प्राप्ति होवै। सा अल्प पदार्थकी प्राप्तिभी इस पुरुषनैं बहुत करिकै मानणी इति। यातैं इन भीष्मद्रोणादिकोंके मारणेकरिकै प्राप्त होणेहारा जो राज्य है। ता राज्यतैं हम इन भीष्मादिकोंकूं न मारिकै या भिक्षाअन्नकूंही बहुतकरिकै मानते हैं। यह सर्व अर्थ अर्जुननैं (हि) या शब्दकरिकै सूचन करा। शंका। हे अर्जुन "गुरोरप्यवलिप्तस्य" या पूर्व उक्त वचनकरिकै इन भीष्मद्रोणादिकोंविषे गुरुपणेका अभाव हम कथन करि आये हैं। यातैं वारंवार तूं इनोंविषे गुरुबुद्धि किसवासतै करता है। ऐसी भगवान्‌की शंकाके हुए सो अर्जुन कहे है। (महानुभावानिति) हे भगवन् श्रवण, अध्ययन, तप, आचार इत्यादिक श्रेष्ठ गुणोंकरिकै महान् है प्रभाव जिनोंका ऐसे जो यह भीष्मद्रोणादिक हैं। जिन भीष्मादिकोंनैं कालकामादिकभी अपणे वश करे हैं। ऐसे महान् पुण्यवाले भीष्मादिकोंकूं पूर्व उक्त क्षुद्र पापकर्मका स्पर्शमात्रभी होवै नहीं यातैं यत्किंचित् अनुचित कर्मकूं देखिकरिकै ऐसे महानुभाव पुरुषोंविषे गुरुत्वबुद्धिका परित्याग करणा हमारेकूं योग्य नहीं है। अथवा (हिमहानुभावान्) यह एकही पद है। ताका यह अर्थ करणा। "हिमं जाड्यमपहंतीति हिमहा आदित्यो अग्निर्वा तस्येव अनुभावः सामर्थ्यं येषां ते हिमहानुभावाः तान्"। अर्थ यह। जडतारूप जो हिम है। ता हिमकूं जो नाश करै ताका नाम हिमहा है। ऐसा सूर्य भगवान् है अथवा अग्नि है। ता सूर्यभगवान्‌के तथा अग्निके समान है सामर्थ्य जिनोंका तिनोंका नाम हिमहानुभाव है। ऐसे अति तेजस्वी भीष्मद्रोणादिकोंकूं ते पूर्व उक्त क्षुद्र पाप दोषकी प्राप्ति करै नहीं। यह वार्त्ता अन्य शास्त्रविषेभी कथन करी है। श्लोक। "धर्मव्यतिकरो दृष्ट ईश्वराणां च साहसं। तेजीयसां न दोषाय वन्हेः सर्वभुजो यथा"। अर्थ यह। ईश्वर पुरुषोंका शीघ्रही धर्ममर्यादाका उल्लंघन देखणेविषे आवता है। सो धर्ममर्यादाका उल्लंघन तिन तेजस्वी पुरुषोंकूं दोषकी प्राप्तिवासतै होवै नहीं। जैसे शुद्ध अशुद्ध सर्व पदार्थोंकूं भक्षण करणेहारा जो अग्नि है। तिस अग्निकूं सो अशुद्ध वस्तुका भक्षण दोषकी प्राप्तिवासतै होवै नहीं इति। तैसे इन भीष्मद्रोणादिक तेजस्वी पुरुषोंकूं ते पूर्वउक्त अनुचित कर्मदोषकी प्राप्तिवासतै होवै नहीं॥ शंका। हे अर्जुन यह भीष्मद्रोणादिक जबी अपणे अर्थके लोभकरिकै इस युद्धविषे प्रवृत्त होवैंगे। तबी वेचा है अपणा आत्मा जिनोंनैं ऐसे इन भीष्मद्रोणादिकोंविषे सो पूर्व उक्त महात्म्य किस प्रकार संभवैगा। यह वार्त्ता भीष्मपितामहनैं आपही युधिष्ठिरके प्रति कथन करी है। तहां

श्लोक । " अर्थस्य पुरुषो दासो दासस्त्वर्थो न कस्यचित् । इति सत्यं महाराज बद्धोस्म्यर्थेन कौरवैः " । अर्थ यह । हे महाराज युधिष्ठिर यह पुरुष अपणे अर्थकाही दास होवै है । और सो अर्थ किसीभी पुरुषका दास होता नहीं । यह जो वार्त्ता शास्त्रविषे कही है । सा वार्त्ता सत्य है । या कारणतैंही मैं अपणे अर्थके लोभकरिकै इन कौरवोंके साथि बांध्या हुआ हूं इति । यातैं अर्थके लोभवाले इन भीष्मद्रोणादिकोंविषे सो पूर्व उक्त महात्म्य संभवता नहीं । ऐसी भगवान्की शंकाके हुए सो अर्जुन कहे है (हत्वेति) हे भगवन्, ते भीष्मद्रोणादिक यद्यपि अर्थकी कामनावाले हैं । तथापि ते भीष्मद्रोणादिक हमारी अपेक्षाकरिकै तौ गुरुही हैं यह अर्थ अर्जुननैं पुनः गुरुशब्दके कथनकरिकै सूचन करा । ऐसे अर्थकामनावालेभी गुरुवोंकूं हनन करिकै मैं केवल विषयोंकूंहीं भोगौंगा । ता गुरुवोंके मारणेकरिकै मैं मोक्षकूं तौ प्राप्त होवौंगा नहीं । ते विषयभोगभी केवल इस लोकविषेही हमारेकूं प्राप्त होवैंगे । परलोकविषे ते विषयभोग हमारेकूं प्राप्त होवैंगे नहीं । इस लोकविषेभी श्रेष्ठ पुरुषोंकरिकै अनिंदित ते विषयभोग हमारेकूं प्राप्त नहीं होवैंगे । किंतु अयशरूपी रुधिरकरिकै व्याप्त होणेतैं अत्यंत निंदित ते विषयभोग हमारेकूं प्राप्त होवैंगे । तात्पर्य यह । इन भीष्मद्रोणादिक गुरुवोंके मारणेकरिकै जबी इस लोकविषेभी हमारेकूं इस प्रकारका दुःख होवैगा । तबी परलोकके दुःखका मैं क्या वर्णन करौं । अथवा (अर्थकामान्) यह विषयरूप भोगोंका विशेषण जानना । ता पक्षविषे यह अर्थ करना । इन भीष्मद्रोणादिक गुरुवोंकूं हनन करिकै मैं केवल अर्थकामरूप विषयोंकूंही भोगौंगा । परंतु तिनोंके मारणेकरिकै हमारेकूं कोई धर्मकी तथा मोक्षकी प्राप्ति होवैगी नहीं इति ॥ ५ ॥ ❀ ॥ शंका । हे अर्जुन भिक्षाअन्नका भोजन करणा क्षत्रियोंकूं शास्त्रकरिकै निषिद्ध है । और युद्ध करणा तौ क्षत्रियोंकूं शास्त्रकरिकै विधान करा है । यातैं स्वधर्म होणेतैं युद्धही तुमारेकूं श्रेयकी प्राप्ति करणेहारा है । ऐसी भगवान्की शंकाके हुए अर्जुन कहे है ।

(मू. श्लो.) न चैतद्विद्मः कतरन्नो गरीयो यद्वा जयेम यदि वा नो जयेयुः । यानेव हत्वा न जिजीविषामस्तेवस्थिताः प्रमुखे धार्तराष्ट्राः ॥६॥ (पदच्छेदः) ॥ नच । एतत् । विद्मः । कतरत् । नः । गरीयः । यद्वा । जयेम । यदिवा । नः । जयेयुः । यान् । एव । हत्वा । न । जिजीविषामः । ते । अवस्थिताः । प्रमुखे । धार्तराष्ट्राः ॥ ६ ॥ (पदार्थः) हे भगवन् हमारेकूं भिक्षा और युद्ध इन दोनोंके मध्यविषे कौन धर्म श्रेष्ठ है इस वार्त्ताकूं हम नहीं जानते हैं और युद्धविषे प्रवृत्त हुएभी क्याँ हम जीतेंगे

[९]अथवा [१०]हमारेकूं यह कौरव [११]जीतेंगे किंवा [१२]जिनै भीष्मादिक बांधवोंकूं [१३]हनन करिकै हम [१४]जीवनेकीभी इच्छा [१५]नहीं करते हैं
[१६]ते [१७]भीष्मद्रोणादिक [१८]बांधवही [१९]हमारे सन्मुख [२०]स्थित हुए हैं ॥ ६ ॥

टीका । हे भगवन् भिक्षाअन्नका भोजन तथा युद्ध या दोनों धर्मोंविषे हमारेकूं कौन धर्म श्रेष्ठ है । क्या हिंसातैं रहित होणेतैं भिक्षाका अन्नही श्रेष्ठ है । अथवा स्वधर्म होणेतैं युद्धही श्रेष्ठ है । या वार्त्ताकूं हम जानि सकते नहीं । शंका । हे अर्जुन भिक्षाअन्नका भोजन तथा युद्ध या दोनों धर्मोंविषे स्वधर्म होणेतैं युद्धही तुमारेकूं श्रेष्ठ है । ऐसी भगवान्‌की शंकाके हुए अर्जुन कहे है । (यद्वेति) हे भगवन् जो कदाचित् हम युद्धविषे प्रवृत्तभी होवैं । तौभी हमही इन भीष्मद्रोणादिकोंकूं जय करैंगे अथवा यह भीष्मद्रोणादिकही हमारेकूं जय करैंगे । इस वार्त्ताकूंभी हम जाणते नहीं । जो कदाचित् यह भीष्मद्रोणादिकही हमारेकूं जीतैंगे । तौ अंतविषे हमारेकूं भिक्षा मागिकैही भोजन करणा पडैगा । अथवा हमारा मरण होवैगा । इन दोनों वार्त्तावोंविषे एक वार्त्ता तौ अवश्यकरिकै होवैगी । यातैं ता युद्धतैं प्रथमही भिक्षा मागिके भोजन करणा हमारेकूं श्रेष्ठ है । शंका । हे अर्जुन हमारा जय होवैगा । अथवा इन भीष्मद्रोणादिकोंका जय होवैगा या प्रकारका संशय तूं किसवासतै करता है । मैं कृष्णभगवान् तुमारी सहायताविषे हूं यातैं तुमाराही निश्चयकरिकै जय होवैगा । ऐसी भगवान्‌की शंकाके हुए अर्जुन कहे है (यानेवेति) हे भगवन् जो कदाचित् आपकी सहायताकरिकै हमारा जयभी होवै । तौभी सो जय अंततैं हमारा पराजयही है । काहेतैं जिन भीष्मद्रोणादिक बांधवोंकूं हनन करिकै हम अपणे जीवनमात्रकीभी इच्छा नहीं करते । तौ तिनोंकूं हननकरिकै हम विषयभोगोंकी इच्छा कैसे करैंगे किंतु नहीं करैंगे । ते भीष्मद्रोणादिकही हम युद्धविषे मरैंगे या प्रकारका निश्चय करिकै हमारे सन्मुख स्थित हुए हैं । ऐसे प्रिय बांधवोंकूं नाश करिकै जो जय होणा है । सो जयभी पराजयरूपही है । यातैं भिक्षाअन्नके भोजनतैं इस युद्धविषे श्रेष्ठता नहीं है इति । इहां किसी टीकाकारनैं (न चैतद्विद्मः कतरन्नो गरीयो) या प्रथम पादका यह अर्थ कथन करा है । हमारे मध्यविषे कौन सैना अधिक है या वार्त्ताकूं हम जानते नहीं । सो यह अर्थ संभवता नहीं । काहेतैं इस श्लोकतैं आगले श्लोकविषे (पृच्छामि त्वां धर्मसंमूढचेताः) या वचनकरिकै अर्जुननैं धर्मविषेही संशय दिखाया है । ता वचनके अनुसार इस श्लोकविषेभी भिक्षाअन्न और युद्ध या दोनों धर्मोंविषेही अर्जुनका संशय संभवै है । सैनाकी अधिकताविषे संशय संभवै नहीं । किंवा (न चैतद्विद्मः) या वचनकरिकै जो सैनाके अधिकताका सं-

शय अंगीकार करीये। तौ ता सैनाके अधिकताके संशयकरिकैही जयका संशय सिद्ध होइ सकै है। यातैं (यद्वा जयेम यदि वा नो जयेयुः) या द्वितीयपादकरिकै कथन करा जो जयका संशय है सो व्यर्थ होवैगा। या कारणतैं प्रथम व्याख्यानही बहुत टीकाकारोंकूं संमत है इति ॥ ६ ॥ ❀ ॥ इहां पूर्वग्रंथकरिकै संसारके दोषोंका निरूपण करा। ताकरिकै अधिकारी पुरुषके विशेषण कथन करे। तहां (न च श्रेयोनुपश्यामि हत्वा स्वजनमाहवे) ३१ इस वचनविषे रणविषे मरणकूं प्राप्त हुए शूरवीरकूं योगयुक्त संन्यासीयोंके समान योगक्षेमकी प्राप्ति कथन करी। ता कहणेकरिकै "अन्यत् श्रेयोऽन्यदुतैव प्रेयः" या कठवल्लीश्रुतिकरिकै सिद्ध मोक्षरूप श्रेयका कथन करा ता मोक्षरूप श्रेयतैं इतर पदार्थोंविषे अर्थतैं अश्रेयरूपता कथन करी। ता कहणेकरिकै नित्यअनित्य वस्तुका विवेक दिखाया। और (न कांक्षे विजयं कृष्ण) ३२ इस श्लोककरिकै इस लोकके विषयजन्य सुखतैं वैराग्य दिखाया। और (अपि त्रैलोक्यराजस्य हेतोः) ३५ या वचनकरिकै स्वर्गादिक लोकोंके विषयजन्य सुखतैं वैराग्य दिखाया। और (नरके नियतं वासो भवति) ४४ या वचनकरिकै या स्थूल शरीरतैं भिन्न करिकै आत्माका स्वरूप दिखाया। और (किं नो राज्येन गोविंद) ३२ या वचनकरिकै मनका निग्रहरूप शम दिखाया। और (किं भोगैर्जीवितेन वा) ३२ या वचनकरिकै इंद्रियोंका निग्रहरूप दम दिखाया। और (यद्यप्येते न पश्यंति) ३८ या वचनकरिकै निर्लोभता दिखाई। और (तन्मे क्षेमतरं भवेत्) ४६ या वचनकरिकै तितिक्षा दिखाई। इस प्रकार या गीताशास्त्रके प्रथम अध्यायका अर्थ संन्यासके साधनोंका सूचन करे है। और इस द्वितीय अध्यायविषे तौ (श्रेयो भोक्तुं भैक्ष्यमपीह लोके) ५ या वचनकरिकै भिक्षाअन्नके भोजनकरिकै उपलक्षित संन्यासका निरूपण करा। अब ब्रह्मसाक्षात्कारकी प्राप्तिवासतै श्रुतिनैं कथन करा जो ब्रह्मवेत्ता गुरुके समीप शिष्यका गमन है ताका निरूपण करे हैं। काहेतैं जिस पुरुषनैं संसारके सर्व दोषोंकूं जान्या है। तथा जो पुरुष इस लोकके तथा परलोकके विषयजन्य सुखोंतैं अत्यंत वैराग्यकूं प्राप्त भया है। तिसतैं अनंतर जो पुरुष विधिपूर्वक ब्रह्मवेत्ता गुरुके शरणकूं प्राप्त भया है। ऐसे साधनसंपन्न पुरुषकूंही ब्रह्मविद्याके ग्रहण करणेका अधिकार है। तहां पूर्वग्रंथविषे भीष्मद्रोणादिकोंके संकटके वशतैं "व्युत्थायाऽथ भिक्षाचर्यं चरंति" या श्रुतिकरिकै सिद्ध भिक्षाचर्याविषे अर्जुनकी अभिलाषा दिखाई। अब विधिपूर्वक ब्रह्मवेत्ता गुरुके समीप अर्जुनका गमनभी तिन भीष्मद्रोणादिकोंके संकटके व्याजकरिकैही निरूपण करे है।

(मू. श्लो.) कार्पण्यदोषोपहतस्वभावः पृच्छामि त्वां धर्मसंमूढचेताः। यच्छ्रेयः स्यान्निश्चितं ब्रूहि तन्मे शिष्यस्तेहं शाधि मां त्वां प्रपन्नं ॥ ७ ॥ (पदच्छेदः) कार्पण्यदोषोपहतस्वभावः। पृच्छामि। त्वां। धर्मसंमूढचेताः। यत्। श्रेयः। स्यात्। निश्चितं।

ब्रूहि । तत् । मे । शिष्यः । ते । अहं । शाधि । मां । त्वां । प्रपन्नं ॥ ७ ॥ (पदार्थः) हे भगवन् कार्पण्यदोषकरिकै तिरस्कारकूं प्राप्त हुआ है स्वभाव जिसका तथा धर्मविषयक संशयकरिकै व्याप्त हुआ है चित्त जिसका ऐसा मैं अर्जुन तुमारेप्रति श्रेय पूछता हूं यातैं जो निश्चित श्रेय होवै सो हमारेप्रति कथन करो मैं तुमारा शिष्य हूं यातैं तुमारे शरणकूं प्राप्त हुए हमारेकूं आप शिक्षा करो ॥ ७ ॥

टीका । इस लोकविषे जो पुरुष यत्किंचित् धनके हानिकूंभी नहीं सहारि सकै है ता पुरुषकूं कृपण कहे हैं । ता कृपण पुरुषके समान होणेतैं मोक्षरूप पुरुषार्थकी प्राप्तितैं रहित सर्व अनात्मवेत्ता अज्ञानी पुरुष कृपण हैं । तहां श्रुति । " यो वा एतदक्षरं गार्ग्यविदित्वाऽस्माल्लोकात्प्रैति स कृपणः " । अर्थ यह । हे गार्गि, अधिकारी मनुष्यशरीरकूं प्राप्त होइकै जो पुरुष इस अक्षर आत्माकूं न जानिकरिकै इस लोकतैं जावै है । सो अज्ञानी पुरुष कृपणही है इति । तहां स्मृति । " कृपणोऽजितेंद्रियः " । अर्थ यह । जिस पुरुषनैं अपणे इंद्रियोंकूं नहीं जीत्या है । सो पुरुष कृपणही है इति । इत्यादिक श्रुतिस्मृतियोंके प्रमाणतैं अज्ञानी पुरुषोंविषेही कृपणरूपता सिद्ध होवै है । ऐसे कृपण पुरुषोंविषे रहणेहारा जो देहादिक अनात्मपदार्थोंका अध्यास है । ता अध्यासका नाम कार्पण्य है । ता कार्पण्यकरिकै उत्पन्न भया जो इस जन्मविषे यहही हमारे बांधव हैं तिनोंके नाश हुए हम जीविकरिकै क्या करैंगे या प्रकारका अभिनिवेशरूप ममतालक्षणदोष है । ता दोषकरिकै तिरस्कारकूं प्राप्त हुआ है युद्धका उद्यमरूप स्वभाव जिसका ऐसा जो मैं अर्जुन हूं । तथा धर्मविषे निर्णय करणेहारे प्रमाणके अदर्शनतैं क्या इन भीष्मद्रोणादिकोंका हनन करणाही हमारा धर्म है अथवा इन भीष्मादिकोंका पालन करणा हमारा धर्म है तथा क्या पृथिवीका परिपालन करणा हमारा धर्म है अथवा पूर्व प्राप्त वनविषे निवासही हमारा धर्म है इत्यादिक अनेक संशयोंकरिकै व्याप्त है चित्त जिसका ऐसा जो मैं अर्जुन हूं । सो मैं अर्जुन तुमारेप्रति अपणा श्रेय पूछता हूं । यातैं जो परमपुरुषार्थरूप श्रेय एकांतिकरूप तथा आत्यंतिकरूप निश्चयकरिकै होवै । सो श्रेय आप हमारे प्रति कथन करो । तहां स्वसाधनोंतैं अनंतर अवश्यभावीपणेका नाम एकांतिकपणा है । और एकवार उत्पन्न हुएका पुनः कदाचित्भी नाश नहीं होणा याका नाम आत्यंतिकपणा है । जैसे लोकविषे औषधके किये हुए कदाचित् रोगकी निवृत्ति नहींभी होवै है । और जो कदाचित् ता औषधकरिकै रोगकी निवृत्ति होवैभी है । तौभी पुनः रोगकी उत्पत्ति करिकै सा रोगकी निवृत्ति नाश होइ जावै है । इस प्रकार यागके कीये हुएभी किसी प्रतिबंधके वशतैं स्वर्गकी प्राप्ति नहींभी होवै है । और ता यागक-

रिकै प्राप्त हुआभी स्वर्ग दुःखकरिकै मिश्रितही होवै है । तथा नाशकूं प्राप्त होवै है । यातैं रोगकी निवृत्तिविषे तथा स्वर्गकी प्राप्तिविषे सो एकांतिकपणा तथा आत्यंतिकपणा संभवता नहीं । और ब्रह्मात्मसाक्षात्कारतैं अनंतर सो परमपुरुषार्थरूप श्रेय अवश्यकरिकै प्राप्त होवै है । यातैं ता श्रेयविषे एकांतिकपणाभी है । और एकवार प्राप्त हुआ सो श्रेय कदाचित्भी नाशकूं प्राप्त होवै नहीं । यातैं ता श्रेयविषे आत्यंतिकपणाभी है ऐसे श्रेयका हमारेप्रति उपदेश करो । शंका । हे अर्जुन श्रुतिविषे यह कह्या है । " नापुत्रायाशिष्याय वै पुनः " । अर्थ यह । जो पुरुष पुत्रभावतैं तथा शिष्यभावतैं रहित होवै । ता पुरुषके प्रति ब्रह्मविद्याका उपदेश नहीं करणा इति । और तूं तौ हमारा सखा है । हमारा शिष्य तूं है नहीं । यातैं तुमारेप्रति मैं कैसे श्रेयका उपदेश करौं । ऐसी भगवान्की शंकाके हुए अर्जुन कहे है (शिष्यस्तेहमिति) हे भगवन् आपकी शिक्षाके योग्य होणेतैं मैं आपका शिष्यही हूं । मैं आपका सखा नहीं हूं । काहेतैं समानज्ञानवाले पुरुषोंकाही परस्पर सखाभाव होवै है न्यून अधिक ज्ञानवाले पुरुषोंका परस्पर सखाभाव होवै नहीं । और मैं तुमारी अपेक्षाकरिकै अत्यंत न्यूनज्ञानवाला हूं । यातैं मैं आपका सखा नहीं हूं । किंतु शिष्य हूं । यातैं तुमारे शरणकूं प्राप्त हुआ जो मैं हूं । तिस मैं शिष्यकूं आप कृपा करिकै श्रेयका उपदेश करो । शिष्यभावतैं रहितपणेकी शंकाकरिकै आप हमारी उपेक्षा मत करौ । इतनैकरिकै ब्रह्मवेत्ता गुरुके समीप शिष्यके गमनकूं बोधन करणेहारी इन दोनों श्रुतियोंका अर्थ निरूपण करा । ते दोनों श्रुति यह हैं । " तद्विज्ञानार्थं स गुरुमेवाभिगच्छेत्समित्पाणिः श्रोत्रियं ब्रह्मनिष्ठं इति भृगुर्वै वारुणिर्वरुणं पितरमुपससार अधीहि भगवो ब्रह्मेति " ॥ अर्थ यह । ब्रह्मसाक्षात्कारकी प्राप्तिवासतै यह अधिकारी पुरुष अपणे हस्तोंविषे समिदादिक भेटाकूं लेकरिकै श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ गुरुके समीप जावै इति । और वरुणका पुत्र भृगुऋषि ब्रह्मज्ञानकी प्राप्तिवासतै अपणे वरुणपिताके समीप जाता भया तहां जाइकै हे भगवन् हमारेप्रति ब्रह्मका उपदेश करौ या प्रकारका प्रश्न करता भया इति । यह वरुणभृगुका संवाद आत्मपुराणके दशम अध्यायविषे हम विस्तारतैं निरूपण करि आये हैं । इति ॥ ७ ॥ ❀ ॥ शंका । हे अर्जुन तूं सर्व शास्त्रोंका वेत्ता पंडित है यातैं तूं आपही श्रेयका विचार कर । तूं हमारा शिष्य किसवासतै होता है ऐसी भगवान्की शंकाके हुए अर्जुन कहे है ।

(मू. श्लो.) नहि प्रपश्यामि ममापनुद्याद्यच्छोकमुच्छोषणमिंद्रियाणां । अवाप्य भूमावसपत्नमृद्धं राज्यं सुराणामपि चाधिपत्यं

॥ ८ ॥ (पदच्छेदः) नहि । प्रपश्यामि । मम । अपनुद्यात् । यत् । शोकं । उच्छोषणं । इंद्रियाणां । अवाप्य । भूमौ । असं-

पत्नमृद्धं । राज्यं । सुराणां । अपि । च । आधिपत्यं ॥ ८ ॥ (पदार्थः) हे भगवन् जो श्रेय हमारे इंद्रियोंके संताप करणेहारे शोककूं निवृत्त करै तिस श्रेयकूं मैं नहीं देखता हूं इस भूमिविषे शत्रुवोंतैं रहित तथा धनधान्यकरिकै युक्त राज्यकूं प्राप्त होइकै तथा देवतावोंके अधिपतिपणेकूं भी प्राप्त होइकै मैं ता श्रेयकूं नहीं देखता हूं ॥ ८ ॥

टीका । हे भगवन् जो श्रेय प्राप्त होइकै हमारे शोककूं निवृत्त करै । ता श्रेयकूं मैं जानता नहीं । या कारणतैं हमारे प्रति आप ता श्रेयका उपदेश करो । इतनै कहणेकरिकै अर्जुननैं या श्रुतिका अर्थ सूचन करा "सोहंभगवः शोचामि तं मां भगवाञ्छोकस्य पारं तारयतु इति" । अर्थ यह । हे भगवन् सनत्कुमार आत्मवेत्ता पुरुष शोककूं तरे है । यह वार्त्ता हमनैं आपसरीखे विद्वान् पुरुषोंके मुखतैं श्रवण करी है । और मैं नारद तौ शोककूं प्राप्त होता हूं । यातैं मैं आत्मवेत्ता नहीं हूं । ऐसे मैं नारदकूं आप शोकके पारकूं प्राप्त करौ । तात्पर्य यह । ब्रह्मविद्याका उपदेश करिकै हमारे शोककूं आप नाश करो इति । यह सनत्कुमारनारदका संवाद आत्मपुराणके त्रयोदशे अध्यायविषे हम विस्तारतैं निरूपण करि आये हैं । शंका । हे अर्जुन ता शोकके नहीं निवृत्त हुएभी तुमारी क्या हानि है । ऐसी भगवान्की शंकाकरिकै अर्जुन ता शोकका विशेषण कहे है (इंद्रियाणामुच्छोषणमिति) हे भगवन् सो शोक सर्व कालविषे हमारे इंद्रियोंकूं संतापकी प्राप्ति करणेहारा है । ऐसे शोकके विद्यमान हुए हमारी महान् हानि है । यातैं ता शोककी निवृत्ति अवश्य करी चाहिये । शंका । हे अर्जुन जो तूं इस युद्धविषे प्रवृत्त होवैगा । तौ तुमारे शोककी निवृत्ति अवश्य करिकै होवैगी । तहां इस युद्धविषे जो तुमारा जय होवैगा । तौ राज्यकी प्राप्तिकरिकै तुमारे शोककी निवृत्ति होवैगी और जो तूं युद्धविषे मृत्युकूं प्राप्त होवैगा । तौ स्वर्गकी प्राप्तिकरिकै तुमारे शोककी निवृत्ति होवैगी । यातैं इस युद्धकूं छोडिकै शोकके निवृत्तिवासतै तूं दूसरा उपाय किसवासतै खोजता है । ऐसी भगवान्की शंकाके हुए अर्जुन कहे है । (अवाप्य भूमाविति) हे भगवन् या भूमिविषे शत्रुवोंतैं रहित तथा धनधान्यादिक पदार्थोंकरिकै युक्त ऐसे राज्यकूं प्राप्त होइकै तथा इंद्रतैं आदि लैके हिरण्यगर्भपर्यंत सर्व देवतावोंके ऐश्वर्यकूं प्राप्त होइकै जो कदाचित् मैं स्थित होवौं । तौभी जो श्रेय हमारे शोककूं निवृत्तकरणेहारा है । ता श्रेयकूं मैं देखता नहीं । यातैं सो शोकके निवृत्तकरणेहारा श्रेय इस युद्धतैं कोई भिन्नही है । तात्पर्य यह । इस लोकके विषयभोगोंविषे तथा स्वर्गादिक लोकोंके विषयभोगोंविषे श्रुतिप्रमाणकरिकै तथा युक्तिरूप अनुमानप्रमाणकरिकै अनित्यताही सिद्ध होवै है ।

यातैं तिन अनित्य भोगोंतैं शोककी निवृत्ति संभवै नहीं। उलटा ते भोग तीन कालविषे या पुरुषकूं शोककीही प्राप्ति करे हैं। तहां न प्राप्त हुए ते भोग अपणी इच्छाकरिकै या पुरुषकूं शोककी प्राप्ति करे हैं। और प्राप्तिकालविषे ते भोग पराधीनताकरिकै तथा नाशके भयकरिकै या पुरुषकूं शोककी प्राप्ति करे हैं। और अपणे नाशकालविषे ते भोग वियोगकरिकै या पुरुषकूं शोककी प्राप्ति करे हैं। ऐसे शोकके करणेहारे अनित्य भोगोंकरिकै शोककी निवृत्ति संभवै नहीं। तहां श्रुति। "तद्यथेह कर्मजितो लोकः क्षीयते एवमेवामुत्रपुण्यजितो लोकः क्षीयते इति"। अर्थ यह। जैसे कर्मकरिकै प्राप्त होणेतैं इस लोकके पदार्थ नाशकूं प्राप्त होवै हैं। तैसे पुण्यकर्मोंकरिकै प्राप्त होणेतैं स्वर्गादिक लोकोंके पदार्थभी नाशकूं प्राप्त होवै हैं इति। या श्रुतिकरिकै सर्व भोगोंविषे अनित्यताही सिद्ध होवै है। और इस लोकके तथा परलोकके सर्व पदार्थ अनित्य होणेकूं योग्य हैं। कार्य होणेतैं जो जो कार्य होवै है सो सो अनित्यही होवै है। जैसे प्रसिद्ध घटादिक पदार्थ हैं। या प्रकारके अनुमानरूप युक्तिकरिकैभी तिन सर्व भोगोंविषे अनित्यताही सिद्ध होवै है। और इस लोकके पदार्थोंका नाश तौ सर्व लोकोंकूं प्रत्यक्षही प्रतीत होवै है। ऐसे अनित्य पदार्थोंकी प्राप्तिकरिकै शोककी निवृत्ति संभवै नहीं। यातैं शोककी निवृत्तिवास्तैं हमारेकूं युद्ध करणा योग्य नहीं है। इतनैकरिकै इस लोक परलोकके भोगोंका वैराग्य अधिकारीका विशेषणरूप करिकै वर्णन करा इति ॥ ८ ॥ ❁ ॥ हे संजय इस प्रकारके वचनोंकूं कहिकरिकै सो अर्जुन क्या करता भया। ऐसी धृतराष्ट्रकी आकांक्षाके हुए संजय कहे है।

(मू. श्लो.) संजय उवाच। एवमुक्त्वा हृषीकेशं गुडाकेशः परंतपः। न योत्स्य इति गोविंदमुक्त्वा तूष्णीं बभूवह ॥ ९ ॥
(पदच्छेदः) एवं। उक्त्वा। हृषीकेशं। गुडाकेशः। परंतपः। न। योत्स्ये। इति। गोविंदं। उक्त्वा। तूष्णीं। बभूव। ह ॥ ९ ॥
(पदार्थः) हे धृतराष्ट्र शत्रुवोंकूं संताप करणेहारा तथा निद्राकूं जीतणेहारा अर्जुन हृषीकेश भगवान्के प्रति इस प्रकारके वचन कहिकरिकै अंतविषे मैं नहीं युद्ध करौंगा या प्रकारका वचन ता गोविंदके प्रति कथन करिकै तूष्णीभावकूं प्राप्त होता भया ॥ ९ ॥

टीका। गुडाका नाम निद्राका है ता निद्राकूं जो अपणे वश करे है। ताकूं गुडाकेश कहे हैं। दूसरे गुडाकेश शब्दके अर्थ प्रथम अध्यायविषे कथन करि आये हैं। ऐसे निद्रारूप आलस्यतैं रहित तथा अपणे शत्रुवोंकूं संतापकी प्राप्ति करणेहारा जो अर्जुन है। सो अर्जुन हृषीक नामा इंद्रियोंके प्र-

वर्त्तक अंतर्यामी कृष्णभगवान्के प्रति ते पूर्व उक्त वचन कहिकरिकै अंतविषे मैं इन भीष्मद्रोणादिकोंके साथि कदाचित्भी युद्ध नहीं करौंगा या प्रकारका वचन ता गोविंदके प्रति कहिकरिकै तूष्णीभावकूं प्राप्त होता भया । इहां गोविंद शब्दका या प्रकारका अर्थ शास्त्रविषे कथन करा है । गोभिर्वेदांतवाक्यैरेव विंदते लभ्यते इति गोविंदः । अर्थ यह । गोशब्द " तत्त्वमसि, अहं ब्रह्मास्मि " इत्यादिक वेदांतवाक्योंका वाचक है । तिन वेदांतवाक्योंकरिकैही जो प्राप्त होवै ताकूं गोविंद कहे हैं । अथवा " गांवेद लक्षणां वाणीं विंदतीति गोविंदः " । अर्थ यह । ऋग्, यजुष्, साम, अथर्वण या चारि वेदरूप वाणीकूं जो भली प्रकारतैं जानै है ताकूं गोविंद कहे हैं । इतनै कहणेकरिकै सर्व वेदोंके उपादानकारणत्वरूपकरिकै कृष्णभगवान्विषे सर्वज्ञता सूचन करी । और इस श्लोकके आदिविषे (एवमुक्त्वा) या वचनकरिकै सो अर्जुन (कथं भीष्ममहं संख्ये) इत्यादिक वचनोंकरिकै युद्धके स्वरूपकी अयोग्यता कथन करता भया । और तिसतैं अनंतर (न योत्स्ये) या वचनकरिकै सो अर्जुन ता युद्धके फलके अभावकूं कथन करता भया । तिसतैं अनंतर सो अर्जुन तूष्णीभावकूं प्राप्त होता भया । तात्पर्य यह । युद्ध करणेवासतै अर्जुननैं जो पूर्व नेत्रादिक बाह्य इंद्रियोंका दर्शनादिरूप व्यापार करा था । ता सर्व व्यापारकी निवृत्तिकरिकै निर्व्यापार होता भया । यहही अर्जुनका तूष्णीभाव जानणा । केवल वाणीमात्रका निरोध तूष्णीभाव नहीं जानणा । इहां (बभूवह) या वचनविषे स्थित जो हशब्द है । ता हशब्दकरिकै यह अर्थ सूचन करा । स्वभावतैंही आलस्यतैं रहित तथा सर्व शत्रुवोंकूं संताप करणेहारा जो अर्जुन है । तिस अर्जुनविषे आगंतुक आलस्य तथा शत्रुवोंका अतापकत्व कदाचित्भी नहीं रहि सकैगा इति । और सर्वज्ञताकूं सूचन करणेहारा जो गोविंदपद है । तथा सर्वशक्तिसंपन्नताकूं सूचन करणेहारा जो हृषीकेश पद है । ता दोनों पदोंकरिकै ता कृष्णभगवान्विषे अर्जुनके शोकमोहकी निवृत्ति करणेमैं आयासका अभाव सूचन करा । तात्पर्य यह । सर्व शक्तिसंपन्न सर्वज्ञ कृष्णभगवानकूं अत्यंत अल्प शोकमोहकी निवृत्ति करणेविषे क्या परिश्रम होवै है इति ॥ ९ ॥ ॥ तहां युद्धकी उपेक्षावान् अर्जुनकी भगवान्नैंभी उपेक्षाही करी होवैगी या प्रकारकी जो धृतराष्ट्रकी दुराशा है । ता दुराशाके निवृत्त करणेवासतै सो संजय ता धृतराष्ट्रके प्रति युद्धविषे अर्जुनकी उपेक्षा देखिकरिकैभी सो कृष्णभगवान् ता अर्जुनकी उपेक्षा नहीं करता भया या प्रकारका वचन कहे है ।

(मू. श्लो.) तमुवाच हृषीकेशः प्रहसन्निव भारत । सेनयोरुभयोर्मध्ये विषीदंतमिदं वचः ॥ १० ॥ (पदच्छेदः) तं उवाच ।

हृषीकेशः । प्रहसन् । इव । भारत । सेनयोः । उभयोः । मध्ये । विषीदंतं । इदं । वचः ॥ १० ॥ (पदार्थः) हे धृतराष्ट्र सो कृष्णभगवान् दोनों सेनावोंके मध्यविषे विषादकूं प्राप्त हुए तिस अर्जुनके प्रति प्रहास करते हुएकी न्यांई यह वक्ष्यमाण वचन कहता भया ॥ १० ॥

टीका । हे भरतवंशविषे उत्पन्न हुआ धृतराष्ट्र पूर्वयुद्धका उद्यम करिकै दोनों सेनावोंके मध्यविषे आइकै ता उद्यमके विरोधी मोहरूप विषादकूं प्राप्त भया जो अर्जुन है । ता अर्जुनका सो अनुचित आचरण प्रगट करिकै लज्जारूप समुद्रविषे डुबावते हुएकी न्यांई सो अंतर्यामी भगवान् ता अर्जुनके प्रति परम गंभीर है अर्थ जिसका तथा अनुचित आचरणकूं प्रकाश करणेहारा जो अशोच्यान् इत्यादिक वक्ष्यमाण वचन है ता वचनकूं कहता भया । इहां (प्रसहन् इव) या वचनविषे स्थित जो (इव) यह शब्द है । ताका यह अभिप्राय है । अन्य पुरुषका अनुचित आचरण प्रगट करिकै ताके लज्जाकूं उत्पन्न करणा याका नाम प्रहास है । और सा लज्जा दुःखरूपही होवै है यातैं जो पुरुष जिस पुरुषके द्वेषका विषय होवै है । सो पुरुषही तिस पुरुषके प्रहासका मुख्य विषय होवै है । और अर्जुन तौ भगवान्के द्वेषका विषय है नहीं । किंतु सो अर्जुन भगवान्के कृपाका विषय है और अर्जुनके अनुचित आचरणका जो प्रकाश करणा है । सोभी ता अर्जुनके लज्जाके उत्पत्तिका हेतु नहीं है । किंतु सो अनुचित आचरणका प्रकाश ता अर्जुनके विवेकके उत्पत्तिका हेतु है । यातैं अर्जुनविषे सो प्रहास गौण है मुख्य नहीं । तात्पर्य यह । जैसे कोई पुरुष अपणे शत्रुके लज्जाकी उत्पत्ति करणेवासतै ताके अनुचित आचरणका प्रकाश करे है । तैसे सो श्रीकृष्णभगवान्भी अर्जुनके विवेककी उत्पत्ति करणेवासतै ता अर्जुनके अनुचित आचरणकूं प्रकाश करता भया । और लज्जाकी उत्पत्ति तौ अनुचित आचरणके प्रकाशतैं अनंतर अवश्यही होवै है । यातैं सा लज्जाकी उत्पत्ति होवो अथवा नहीं होवो । परंतु ता लज्जाकी उत्पत्ति करणेविषे भगवान्का तात्पर्य नहीं है । केवल विवेककी उत्पत्तिविषेही भगवान्का तात्पर्य है । या सर्व अर्थका इवशब्दकरिकै सूचन करा । और (सेनयोरुभयोर्मध्ये विषीदंतं) यह जो अर्जुनका विशेषण कह्या है । ताका यह अभिप्राय है । युद्धके आरंभतैं पूर्वही अपणे गृहविषे स्थित हुआ तूं जो कदाचित् युद्धकी उपेक्षा करता । तौ यह तुमारा अनुचित आचरण नहीं कह्या जाता । परंतु तूं तौ महान् उत्साहपूर्वक इस युद्धभूमिविषे आइकै इस युद्धकी उपेक्षा करता भया है । यातैं यह तुमारा बहुत अनुचित आचरण

कह्या जावै है इति । यह वार्त्ता अशोच्यान् इत्यादिक वचनोंविषे आगे स्पष्ट होवैगी इति ॥ १० ॥ ❁ ॥ तहां अर्जुनकी युद्धरूप स्वधर्मविषे पूर्वस्वभावतैं उत्पन्न हुईभी प्रवृत्ति दो प्रकारके मोहकरिकै तथा ता मोहजन्य शोककरिकै प्रतिबद्ध होती भई । यातैं पुनः ता युद्धरूप स्वधर्मविषे अर्जुनकी प्रवृत्ति करावणेवासतै ता अर्जुनका सो दो प्रकारका मोह अवश्यकरिकै दूर करणेकूं योग्य है । तहां सर्व संसारधर्मोंतैं रहित स्वप्रकाश परमानंदस्वरूप आत्माविषे स्थूल सूक्ष्म दोनों शरीर तथा तिन दोनों शरीरोंका कारण रूप अविद्या या तीनों उपाधियोंके अविवेककरिकै जो मिथ्यारूप संसारविषे सत्यत्व तथा आत्मधर्मत्व आदिक प्रतीति है । सो प्रथम मोह है । सो मोह सर्व प्राणीमात्रविषे रहे है । यातैं सो मोह साधारण है । और युद्धरूप स्वधर्मविषे हिंसादिकोंकी बाहुल्यताकरिकै जो अधर्मत्वकी प्रतीति है । सो दूसरा मोह है । यह दूसरा मोह करुणादिक दोषकारिकै केवल अर्जुनकूंही प्राप्त भया है । यातैं दूसरा मोह असाधारण है । तहां स्थूल सूक्ष्म कारण या तीन उपाधियोंके विवेककरिकै प्राप्त भया जो शुद्ध आत्मस्वरूपका बोध है । सो बोध प्रथम मोहका निवर्त्तक है । यातैं सो बोध सर्व प्राणीमात्रकूं साधारण है। और युद्धविषे यद्यपि हिंसादिक होवै हैं । तथापि सो युद्ध क्षत्रिय राजावोंका स्वधर्म है। यातैं ता युद्धविषे अधर्मरूपता नहीं है । या प्रकारका जो बोध है । सो बोध दूसरे मोहका निवर्त्तक है । यह दूसरा बोध केवल अर्जुनके प्रतिही है । यातैं यह दूसरा बोध असाधारण है । इस प्रकार दो प्रकारके बोधकरिकै जबी दो प्रकारके मोहकी निवृत्ति होवै है । तबी ता मोहरूप कारणके निवृत्त हुएतैं अनंतर ताके शोकरूप कार्यकी आपही निवृत्ति होइ जावै है । ता शोककी निवृत्तिविषे किसी दूसरे साधनकी अपेक्षा होवै नहीं । या प्रकारके अभिप्रायकरिकै सो श्रीकृष्णभगवान् ता दोनों प्रकारके मोहका कथन करता हुआ ता अर्जुनके प्रति कहे हैं ।

(मू. श्लो.) श्रीभगवानुवाच । अशोच्यानन्वशोचस्त्वं प्रज्ञावादांश्च भाषसे । गतासूनगतासूंश्च नानुशोचंति पंडिताः ॥ ११ ॥
(पदच्छेदः) अशोच्यान् । अन्वशोचः । त्वं । प्रज्ञावादान् । च । भाषसे । गतासून् । अगतासून् । च । न । अनुशोचंति । पंडिताः ॥ ११ ॥ (पदार्थः) हे अर्जुन शोक करणेके अयोग्य भीष्मद्रोणादिकोंकूं तूं शोक करता है । तथा । बुद्धिमान् पुरुषोंकरिकै नहीं कहणे योग्य वचनोंकूं तूं कथन करता है। और पंडित पुरुष तौ प्राणोंतैं रहित बांधवोंकूं तथा प्राणयुक्त बांधवोंकूं नहीं शोक करते ॥ ११ ॥

टीका । हे अर्जुन आत्मदृष्टिकरिकै तथा शरीरदृष्टिकरिकै शोक करणेके नहीं योग्य जो यह भीष्मद्रोणादिक हैं तिनोंका तूं पंडित होइकैभी शोक करता है । ते भीष्मद्रोणादिक हमारे निमित्त मृत्युकूं प्राप्त होते हैं। तिन भीष्मद्रोणादिकोंतैं विना मैं राज्यसुखादिकोंकूं क्या करौंगा या प्रकारका शोक (दृष्ट्वेमं स्वजनं कृष्ण) इत्यादिक वचनोंकरिकै तूं करता भया है । सो शोक करणा तुमारेकूं उचित नहीं है । काहेतैं शोक करणेके अयोग्य पदार्थोंविषे शोच्यत्वबुद्धिरूप भ्रम पशु पक्षी आदिक सर्व प्राणीमात्रविषे साधारण है । और तूं तौ अत्यंत पंडित होइकैभी तिस भ्रमकूं प्राप्त भया है । यातैं तुमारेकूं यह भ्रम होणा अत्यंत अनुचित है । और (कुतस्त्वा कश्मलमिदं) इत्यादिक मेरे वचनोंकरिकै तुमारेकूं यह हमनैं बहुत अनुचित करा है या प्रकारके विचारकी प्राप्ति होणी चाहीती थी और तूं आपभी बुद्धिमान् है । ऐसा बुद्धिमान हुआभी तूं बुद्धिमान् पुरुषोंकरिकै नहीं कहणे योग्य (कथं भीष्ममहं संख्ये) इत्यादिक वचनोंकूं कथन करता है । परंतु लज्जाकरिकै तूष्णीभावकूं तूं प्राप्त होता नहीं । इसतैं परे दूसरा क्या अनुचित व्यवहार होवै है । यातैं युद्धतैं निवृत्तिरूप अधर्मविषे जो धर्मत्वबुद्धिरूप भ्रांति है । तथा युद्धरूप धर्मविषे जो अधर्मत्वबुद्धिरूप भ्रांति है । सा असाधारण भ्रांति तैं अत्यंत पंडितकूं उचित नहीं है । अथवा (प्रज्ञावादांश्च भाषसे) या वचनका यह अर्थ करणा । देहतैं भिन्न करिकै आत्माकूं जाणणेहारे जो प्रज्ञावान् पुरुष हैं । तिन प्रज्ञावान् पुरुषोंके (नरके नियतं वासः पतंति पितरो ह्येषां) इत्यादिक वचनमात्रोंकूंही तूं कथन करता है । परंतु तिन प्रज्ञावान् पुरुषोंकी न्यांई तिन वचनोंके यथार्थ तात्पर्यकूं तूं जाणता नहीं । जो तूं शास्त्रके वचनोंका यथार्थ तात्पर्य जाणता । तौ तूं शोकमोहकूं प्राप्त नहीं होता । शंका । हे भगवन् वसिष्ठादिक जो महान् पुरुष हुए हैं । तिनोंनैंभी अपणे पुत्रादिक बांधवोंके मरणेकरिकै महान् शोक करा है । यातैं अपणे बांधवोंके मरणेविषे शोक करणा अनुचित नहीं है । किंतु शिष्टाचारकरिकै प्राप्त होणेतैं सो शोक करणा उचित है । ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए भगवान् कहे हैं । (गतासूनिति) हे अर्जुन विचारकरिकै उत्पन्न भया है आत्माके वास्तव स्वरूपका ज्ञान जिनोंकूं ऐसे जो पंडित हैं । ते पंडित पुरुष प्राणोंतैं रहित बांधवोंके शरीरोंका तथा प्राणयुक्त बांधवोंके शरीरोंका शोक करते नहीं । तात्पर्य यह । मृत्युकूं प्राप्त हुए यह हमारे बांधव सर्व पदार्थोंका परित्याग करिकै जाते भये हैं । ते हमारे बांधव अबी क्या करते होवैंगे तथा किस स्थानविषे स्थित होवैंगे । और यह जीवते हुए हमारे बांधव तिन मरे हुए संबंधीयोंके वियोगकरिकै कैसे जीवैंगे । या प्रकारके व्यामोहकूं ते पंडित पुरुष प्राप्त होते नहीं। काहेतैं तिन ब्रह्मवेत्ता पंडित पुरुषोंकूं समाधिकालविषे तौ तिन बांधवोंकी प्रतीतिही नहीं होवै है । और समाधितैं उत्थानकालविषे यद्यपि तिन ब्रह्मवेत्ता पुरुषोंकूं बांधवोंकी प्रतीति

होवै है। तथापि ते ब्रह्मवेत्ता पुरुष ता व्युत्थानकालविषे तिन बांधवोंकूं मिथ्यारूपकरिकै निश्चय करे हैं। और जैसे रज्जुरूप अधिष्ठानके साक्षात्कारकरिकै सर्पभ्रमके निवृत्त हुएतैं अनंतर ता सर्पभ्रमजन्य भयकंपादिक आपही निवृत्त होइ जावै हैं। और जैसे पित्तदोषयुक्त रसनइंद्रियवाले पुरुषकूं कदाचित् गुडविषे तिक्त रसकी प्रतीति हुएभी ता गुडविषे मधुररसके निश्चयकूं बलवान् होणेतैं तिक्त रसकी इच्छाकरिकै ता पुरुषकी गुडविषे प्रवृत्ति होवै नहीं। तैसे शोकके अविषय पदार्थोंविषे जो शोचत्वबुद्धिरूप भ्रम है। सो भ्रमभी अधिष्ठान आत्माके अज्ञानकरिकै करा हुआ है। जबी अधिष्ठान आत्माके साक्षात्कारकरिकै ता अज्ञानकी निवृत्ति होवै है। तबी ता अज्ञानका कार्यरूप शोचत्वभ्रम आपही निवृत्त होइ जावै है। और वसिष्ठादिक महान् पुरुषोंनैं प्रारब्धकर्मकी प्रबलतातैं जो शोकमोहादिक करे हैं। ते शोकमोहादिक शिष्टाचाररूपकरिकै ग्रहण करे जावैं नहीं। काहेतैं शिष्ट पुरुषोंनैं धर्मबुद्धिकरिकै अनुष्ठान करा जो अलौकिक व्यवहार है। सोईही शिष्टाचार कह्या जावै है। यह शिष्टाचारका लक्षण तिन वसिष्ठादिकोंके शोकमोहादिकोंविषे घटता नहीं। काहेतैं ते शोकमोहादिक पशुपक्षी आदिक सर्व प्राणीयोंविषे स्वभावतैंही प्राप्त हैं। यातैं तिनोंविषे अलौकिकरूपता संभवै नहीं और तिन वसिष्ठादिकोंनैं कोई धर्मबुद्धिकरिकै शोकमोहादिक करे नहीं। यातैं तिन शोकमोहादिकोंविषे शिष्टाचाररूपता संभवै नहीं। और या प्रकारके शिष्टाचारके लक्षणका परित्याग करिकै जो सामान्यतैं शिष्ट पुरुषोंके व्यवहारमात्रकूंही प्रमाण मानिये। तौ शिष्ट पुरुषोंकी जो मलमूत्रादिकोंका परित्यागरूप स्वाभाविक चेष्टा है। सा स्वाभाविक चेष्टाभी शिष्टाचाररूपकरिकै ग्रहण करी चाहिये। और ता स्वाभाविक चेष्टाकूं कोईभी बुद्धिमान् पुरुष शिष्टाचाररूपकरिकै ग्रहण करता नहीं। यातैं वसिष्ठादिकोंके शोकमोहकूं देखिकरिकै तुमारेकूं शोकमोह करणा योग्य नहीं है इति ॥ ११ ॥ ❀ अब (नत्वेवाहं) इत्यादिक ओगणीश १९ श्लोकोंकरिकै (अशोच्यानन्वशोचस्त्वं) इस वचनका अर्थ विस्तारतैं निरूपण करे हैं। और तिसतैं अनंतर (स्वधर्ममपि चावेक्ष्य) इत्यादिक अष्ट श्लोकोंकरिकै (प्रज्ञावादांश्च भाषसे) इस वचनका अर्थ विस्तारतैं निरूपण करेंगे। काहेतैं साधारण असाधारण यह पूर्व उक्त दो प्रकारका मोह भिन्न भिन्न प्रयत्नकरिकैही निवृत्त होवै है। एक प्रयत्नकरिकै निवृत्त होवै नहीं। तहां स्थूल शरीरतैं आत्माका भेद सिद्ध करणेवासतै प्रथम आत्माविषे नित्यत्व सिद्ध करे हैं।

(मू. श्लो.) नत्वेवाहं जातु नासं न त्वं नेमे जनाधिपाः। न चैव न भविष्यामः सर्वे वयमतःपरं ॥ १२ ॥ (पदच्छेदः)

न। तु। एव। अहं। जातु। न। आसं। न। त्वं। न। इमे। जनाधिपाः। न। च। एव न। भविष्यामः। सर्वे। वयं। अतः। परं ॥ १२ ॥

(पदार्थः) हे अर्जुन मैं कृष्णभगवान् इसतैं पूर्व कदाचित्भी नहीं होता भया हूं यहं नहीं कह्या जावै है तथा तूं अर्जुन इसतैं पूर्व कदाचित्भी नहीं होता भया है यहभी नहीं कह्या जावै है तथा यहं सर्व राजे इसतैं पूर्व कदाचित्भी नहीं होते भये हैं यहभी नहीं कह्या जावै है किंतु मैं तूं यह सर्व राजे पूर्व होतेही भये हैं तथा इसतैं आगे हम सर्व नहीं होवैंगे यहभी नहीं कह्या जावै है किंतु हम सर्व आगेभी होवैंगे ॥ १२ ॥

टीका। हे अर्जुन जैसे सर्व जगत्का कारण मैं कृष्णभगवान् इसतैं पूर्व कदाचित्भी नहीं होता भया हूं यह कह्या जावै नहीं। किंतु इसतैं पूर्वभी मैं होता भया हूं। तैसे तूं अर्जुन तथा यह भीष्मद्रोणादिक सर्व राजे इसतैं पूर्व कदाचित्भी नहीं होते भये हैं। यह कह्या जावै नहीं। किंतु तूं अर्जुन तथा यह भीष्मद्रोणादिक सर्व राजे इसतैं पूर्वभी होते भये हैं। इतनै कहणेकरिकै आत्माविषे प्रागभावका अप्रतियोगीपणा दिखाया। और मैं कृष्णभगवान् तथा तूं अर्जुन तथा यह भीष्मद्रोणादिक सर्व राजे इसतैं आगे कदाचित्भी नहीं होवैंगे यह कह्या जावै नहीं। किंतु इसतैं आगेभी हम सर्व होवैंगेही। इतनै कहणेकरिकै आत्माविषे प्रध्वंसाभावका अप्रतियोगीपणा दिखाया। या कहणेतैं यह अर्थ सिद्ध भया। भूतकालविषे तथा भविष्यत् कालविषे तथा वर्त्तमानकालविषे जो विद्यमान होवै है। ताकूं नित्य कहे हैं। यह नित्यका लक्षण आत्माविषेही घटे है। या स्थूल देहविषे घटता नहीं। यातैं यह आत्माही नित्य है। नित्य होणेतैं यह आत्मा स्थूल शरीरतैं विलक्षणही सिद्ध होवै है। इसी विलक्षणताकूं (नत्वेवाहं) या वचनविषे स्थित तु या शब्दकरिकै सूचन करा है इति ॥ १२ ॥ ❀ ॥ शंका। हे भगवन् चेतनता धर्मकरिकै विशिष्ट जो यह स्थूल देह है। सो स्थूल देहही आत्मा है या प्रकार चार्वाक नास्तिक माने हैं। या स्थूल देहकूं आत्मा मानणेमैं तिनोंके मतविषे मैं स्थूल हूं मैं गौर हूं मैं चलता हूं इत्यादिक ज्ञानोंकी प्रामाण्यताभी बाधतैं रहित सिद्ध होवै है। या देहतैं जो आत्माकूं भिन्न मानिये। तौ यह सर्व ज्ञान अप्रमारूप होवैंगे। यातैं या स्थूल देहतैं आत्मा भिन्न नहीं है। किंतु स्थूलत्व गौरत्व आदिक धर्मोंवाला यह स्थूल देहही आत्मा है। किंवा या स्थूल शरीरतैं जो आत्माकूं भिन्नभी अंगीकार करिये। तौभी ता आत्माविषे जन्ममरणका अभाव संभवै नहीं। काहेतैं देवदत्त नामा पुरुष जन्मकूं प्राप्त भया है तथा देवदत्त नामा पुरुष मरणकूं प्राप्त भया है या प्रकारकी प्रतीति सर्व जनोंकूं होवै है। यातैं देहके जन्मसाथि आत्माकाभी जन्म संभवै है। तथा देहके मरणसाथि आत्माकाभी मरण संभवै है। ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् कहै हैं।

(मू. श्लो.) देहिनोस्मिन्यथा देहे कौमारं यौवनं जरा । तथा देहांतरप्राप्तिर्धीरस्तत्र न मुह्यति ॥ १३ ॥ (पदच्छेदः) देहिनः । अस्मिन् । यथा । देहे । कौमारं । यौवनं । जरा । तथा । देहांतरप्राप्तिः । धीरः । तत्र । न । मुह्यति ॥१३॥ (पदार्थः) हे अर्जुन जैसे देही आत्माकूं इस देहविषे कौमार यौवन जरा यह तीन अवस्था प्राप्त होवे हैं तैसे दूसरे देहकीभी प्राप्ति होवे है तिसविषे धीर पुरुष नहीं मोहकूं प्राप्त होवे हैं ॥ १३ ॥

टीका । भूत, भविष्यत, वर्त्तमान या तीन कालोंविषे स्थित जितनै की जगतमंडलवर्त्ति देह हैं । ते सर्व देह जिसके होवैं ताकूं देही कहे हैं । सो एकही देही आत्मा विभु होणेतैं सर्व देहोंके साथि संबंधवाला है । यातैं ता एक चेतन आत्माकरिकैही सर्व शरीरोंविषे नाना प्रकारकी चेष्टा सिद्ध होइ सकै हैं । देहदेहविषे आत्माके भेद मानणेमैं किंचित्मात्रभी प्रमाण नहीं है । या अर्थके सूचन करणेवासतैही (देहिनः) या पदविषे एकवचनका कथन करा है । और पूर्वश्लोकविषे जो (सर्वे वयं) यह बहुवचन कथन करा था । ता बहुवचनका शरीरोंके भेदविषे तात्पर्य है । कोई आत्माके भेदविषे ता बहुवचनका तात्पर्य नहीं है । यातैं पूर्वउत्तर वचनोंका विरोध होवै नहीं । ऐसे एक देही आत्माके जैसे इस वर्त्तमान स्थूलदेहविषे बाल्य अवस्था यौवन अवस्था वृद्ध अवस्था यह परस्पर विरुद्ध तीन अवस्था होवै हैं । तिन बाल्यादिक तीन अवस्थावोंके भेदकरिकै ता देही आत्माका भेद होवै नहीं । काहेतैं जो मैं पूर्व बाल्य अवस्थाविषे अपणे मातापिताकूं अनुभव करता भया हूं । सोईही मैं अबी वृद्ध अवस्थाविषे अपणे पुत्रपौत्रादिकोंका अनुभव करता हूं । या प्रत्यभिज्ञाज्ञानके बलतैं बाल्य अवस्थाके आत्माका तथा वृद्ध अवस्थाके आत्माका अभेदही सिद्ध होवै है । और बाल्य अवस्थाके शरीरका तथा वृद्ध अवस्थाके शरीरका भेद तौ सर्वकूं प्रत्यक्षही प्रतीत होवै है । यातैं देहके भेदकरिकै आत्माका भेद होवै नहीं । इसी प्रकार जन्मादिक विकारोंतैं रहित आत्माकूं इस शरीरतैं अत्यंत विलक्षण शरीरकी प्राप्ति स्वप्नविषे तथा योगके प्रभावजन्य ऐश्वर्यविषे होवै है । तहां तिस तिस देहोंके भेदकी प्रतीति हुएभी सोईही मैं हूं या प्रकारके प्रत्यभिज्ञाज्ञानके बलतैं आत्माकी एकताही सिद्ध होवै है । जो कदाचित् यह स्थूल देहही आत्मा होवै । तौ बाल्ययौवनादिक अवस्थावोंके भेदकरिकै देहके भेद सिद्ध हुए सोई मैं हूं या प्रकारका प्रत्यभिज्ञाज्ञान नहीं होणा चाहिये । काहेतैं अन्यविषे रहे हुए संस्कार अन्य पुरुषके प्रत्यभिज्ञाज्ञानके कारण होवैं नहीं । किंतु एक अधिकरणविषे वर्त्तमान हुए संस्कारोंका तथा प्रत्यभिज्ञाज्ञानका

परस्पर कारणकार्यभाव होवै है। किंवा। बाल्य, यौवन, वृद्ध या तीन अवस्थावोंके भेद हुएभी तिन अवस्थारूप धर्मोंका आश्रय जो देह है। सो देह बाल्य अवस्थातैं लैके वृद्ध अवस्थापर्यंत एकही रहे है। ता देहकी एकताकूंही सो प्रत्यभिज्ञाज्ञान विषय करे है। आत्माके एकताकूं सो प्रत्यभिज्ञाज्ञान विषय करै नहीं। या प्रकारका वचन जो सो चार्वाकादिक है। सो संभवै नहीं। काहेतैं स्वप्नविषे जाग्रतके देहतैं भिन्नही देह होवै है। और योगके प्रभावतैं योगी पुरुष अनेक देहोंकूं रचे है। तहां धर्मीरूप देहोंकाही भेद है। यातैं तहां सोईही मैं हूं या प्रकारका प्रत्यभिज्ञाज्ञान नहीं होणा चाहिये। और सोईही मैं हूं या प्रकारका प्रत्यभिज्ञाज्ञान तौ स्वप्नद्रष्टा पुरुषकूं तथा योगी पुरुषकूंभी होवै है। यातैं देहोंकी एकताकूं सो प्रत्यभिज्ञाज्ञान विषय करै नहीं। इसी अभिप्रायकरिकै बाल्यादिक अवस्था तथा स्वप्नद्रष्टा योगी पुरुषके देह यह दो प्रकारके दृष्टांत दिये हैं। यातैं जैसे मरुमरीचिकादिकोंविषे जलादिकोंकी बुद्धि भ्रांतिरूप होवै है। तैसे मैं स्थूल हूं मैं गौर हूं मैं चलता हूं इत्यादिक बुद्धियांभी भ्रांतिरूपही हैं। काहेतैं अधिष्ठान वस्तुके ज्ञानतैं तिन दोनों बुद्धियोंका बाध होइ जावै है। जिसका अधिष्ठानके ज्ञानकरिकै बाध होवै है। सो भ्रांतिही होवै है। यह वार्त्ता (न जायते) इत्यादिक वचनोंविषे आगे स्पष्ट होवैगी। इतनै कहणेकरिकै देहतैं भिन्न हुआभी आत्मा ता देहके उत्पन्न हुए ता देहके साथि उत्पन्न होवै है तथा देहके नाश हुए ता देहके साथि नाश होवै है यह वादीका पक्षभी खंडन हुआ जानणा। काहेतैं ता पक्षविषे यद्यपि बाल्य यौवनादिक अवस्थावोंके भेद हुएभी सोईही मैं हूं या प्रकारका प्रत्यभिज्ञाज्ञानधर्मीरूप देहकी एकताकूं लैके संभव होइ सकै है। तथापि जिसस्वप्नविषे तथा योगजन्य ऐश्वर्यविषे धर्मीरूप देहोंकाही भेद होवै है। तिस स्थलविषे सोईही मैं हूं प्रकारका प्रत्यभिज्ञाज्ञान ता वादीके मतविषे नहीं संभवैगा। और तहांभी सो प्रत्यभिज्ञाज्ञान तौ होवै है। यातैं देहके उत्पत्तिनाशके साथि आत्माका उत्पत्तिनाश मानणा अत्यंत विरुद्ध है। अथवा। (देहिनोस्मिन्) या श्लोकका यह दूसरा अर्थ करणा। जैसे जन्मादिक विकारोंतैं रहित एकही आत्माकूं कौमारादिक तीन अवस्थावोंकी प्राप्ति होवै है। तैसे इस देहतैं प्राणोंके उत्क्रमणतैं अनंतर दूसरे देहकी प्राप्ति होवै है। तहां जैसे बाल्यादिक अवस्थावोंकी प्राप्तिकालविषे सोईही मैं हूं या प्रकारका प्रत्यभिज्ञाज्ञान होवै है। तैसे मरणतैं अनंतर दूसरे देहके प्राप्त हुए सोईही मैं हूं या प्रकारका प्रत्यभिज्ञाज्ञान होवै नहीं। यातैं सोईही मैं हूं या प्रकारके प्रत्यभिज्ञाज्ञानकरिकै यद्यपि तहां पूर्वउत्तर देहोंविषे आत्माकी एकता सिद्ध होवै नहीं। तथापि युक्तिकरिकै तहां आत्माकी एकता सिद्ध होइ सकै है। सा युक्ति यह है। माताके उदरतैं बाहिर निकस्या हुआ जो बालक है तिस बालककूं इसी कालविषे हर्ष, शोक, भय आदिकोंकी प्राप्ति होवै है। तिन हर्षशोकादिकोंकी प्राप्तिविषे

दूसरा तौ कोई कारण संभवता नहीं। किंतु केवल पूर्वजन्मके संस्कारही तिन हर्षशोकादिकोंके कारण हैं। जो कदाचित् पूर्वजन्मके संस्कार नहीं अंगीकार करीयें। तौ माताके उदरतैं बाहिर निकस्या जो बालक है। ता बालककी उसी कालविषे माताके स्तन्यपानादिकोंविषे प्रवृत्ति होवै है। सा नहीं होणी चाहीये। काहेतैं चेतन प्राणीयोंकी जा जा प्रवृत्ति होवै है सा सा प्रवृत्ति यह बस्तु हमारे इष्टका साधन है या प्रकारके इष्टसाधनताज्ञानकरिकै जन्य होवै है। इष्टसाधनताज्ञानतैं विना कोईभी प्रवृत्ति होवै नहीं। यातैं बालककी जो माताके स्तन्यपानविषे प्रथम प्रवृत्ति है ता प्रवृत्तितैं पूर्व यह स्तन्यपान हमारे इष्टका साधन है या प्रकारका इष्टसाधनताज्ञान ता बालककूं अवश्य मान्या चाहीये। और ता जन्मकालविषे ता बालककूं सो इष्टसाधनताज्ञान अनुभवरूप तौ संभवता नहीं। किंतु सो इष्टसाधनताज्ञान स्मृतिरूप मानणा होवैगा। और जो जो स्मृतिरूप ज्ञान होवै है। सो सो पूर्व अनुभवजन्य संस्कारोंतैंही होवै है। संस्कारोंतैं विना स्मृतिज्ञान होवै नहीं। यातैं ता बालककूं पूर्वजन्मोंविषे यह माताका स्तन्यपान हमारे क्षुधाकी निवृत्तिरूप इष्टका साधन है या प्रकारका अनुभव बहुतवार हुआ है। ता अनुभवजन्य संस्कारोंतैंही ता बालककूं जन्मकालविषे सो स्मरणरूप इष्टसाधनताज्ञान होवै है। यह अंगीकार करणा होवैगा। और ते संस्कारभी अनुद्बुद्ध हुए स्मृतिज्ञानकूं उत्पन्न करै नहीं। किंतु उद्बुद्ध हुएही ते संस्कार स्मृतिज्ञानकूं उत्पन्न करे है। जो अनुद्बुद्ध संस्कारोंतैंभी वस्तुकी स्मृति होती होवै। तौ सर्व कालविषे ता वस्तुकी स्मृति होणी चाहीये। यातैं जन्मकालविषे ता बालकके पूर्वजन्मके संस्कारोंका उद्बोधन करणेहारा पुण्यपापरूप अदृष्टतैं विना दूसरा कोई संभवता नहीं। किंतु जिन पूर्वजन्मोंके पुण्यपापरूप अदृष्टोंनैं यह वर्त्तमान शरीर दिया है। ते पुण्यपापरूप अदृष्टही ता जन्मकालविषे पूर्वजन्मके संस्कारोंकूं उद्बुद्ध करे हैं। और ते पूर्वजन्मके संस्कार तथा पुण्यपापरूप अदृष्ट आत्मारूप आश्रयतैं विना स्वतंत्र रहैं नहीं। यातैं पूर्वजन्मविषे आत्माकी विद्यमानता अंगीकार करी चाहीये। या प्रकारकी युक्तिकरिकैही पूर्व उत्तर शरीरविषे आत्माकी एकता सिद्ध होवै है इति। अथवा। (देहिनोस्मिन्) या श्लोकका यह तीसरा अर्थ करणा। जैसे तैं एकही देह आत्माका क्रमतैं देहके बाल्यादिक अवस्थावोंकी उत्पत्ति विनाश हुएभी नित्य होणेतैं भेद नहीं होवै है। तैसे विभु होणेतैं एकही आत्माकूं एकही कालविषे सर्व देहोंकी प्राप्ति होवै है। तहां आत्माकूं जो देहादिकोंकी न्यांई मध्यम परिमाणवाला मानियें तौ आत्माविषे देहादिकोंकी न्यांई अनित्यता प्राप्त होवैगी। और आत्माकूं जो अणुपरिमाणवाला मानियें तौ सर्व शरीरविषे व्यापक सुखदुःखकी प्रतीति नहीं होणी चाहीये। तिन दोनों दोषोंकी निवृत्ति करणेवासतै आत्माकूं विभु मान्या चाहीये। और सर्व शरीरोंविषे ‘ अहंअस्मि अहंअस्मि ’ या प्रकारकी एकाकार प्रतीति देखणेविषे आवै

है। यातैं सर्व शरीरोंविषे तूं एकही आत्मा व्यापक है। इस प्रकार सर्व शरीरोंविषे आत्माकी एकताके सिद्ध हुएभी यह भीष्मद्रोणादिक वध्य हैं और मैं अर्जुन इनोंका घातक हूं या प्रकारकी भेद कल्पनाकूं करिकै जो तूं मोहकूं प्राप्त भया है। ताकेविषे तुमारा अविद्वानपणाही हेतु है। और जो विद्वान पुरुष सर्व शरीरोंविषे आत्माकी एकताकूं जानै हैं। ते विद्वान धीर पुरुष ताकेविषे मोहकूं प्राप्त होवै नहीं। काहेतैं मैं इनोंका हनन करणेहारा हूं और हमारेकरिकै यह हनन होवैंगे या प्रकारका भेददर्शन ता विद्वान पुरुषकूं होता नहीं। या कहणेकरिकै भगवान्नैं यह अनुमान सूचन करा। वादीयोंके विवादका विषयरूप जो यह भीष्मद्रोणादिक सर्व देह हैं। ते सर्व देह एक भोक्ता आत्मावाले हैं देहत्व धर्मवाले होणेतैं तुमारे बाल्ययौवनादिक देहोंकी न्यांई इति। तहां श्रुतिभी कहे हैं। "एको देवः सर्वभूतेषु गूढः सर्वव्यापी सर्वभूतांतरात्मा इति" अर्थ यह। एकही आत्मादेव सर्वभूतप्राणीयोंविषे व्यापक है। तथा काष्ठोंविषे अग्निकी न्यांई गुह्य है। तथा सर्व भूतप्राणीयोंका अंतरआत्मा है इति। इतनै कहणेकरिकै आत्माविषे नित्यपणा तथा विभुपणा सिद्ध करा। ताकरिकै इतनै मत खंडन करे। तहां चार्वाक नास्तिक तौ या स्थूल देहकूंही आत्मा माने हैं। और तिन चार्वाकोंके एकदेशीयोंविषे कोईक तौ इंद्रियोंकूंही आत्मा माने हैं। और कोईक मनकूंही आत्मा माने हैं। और कोईक प्राणोंकूंही आत्मा माने हैं। और सौगत तौ क्षणिक विज्ञानकूंही आत्मा माने हैं। और दिगंबर तौ देहतैं भिन्न तथा स्थिर स्वभाववाला तथा देहके समान परिमाणवाला आत्माकूं माने हैं। और मध्यम परिमाणवालेविषे नित्यता संभवै नहीं यातैं नित्य तथा अणुपरिमाणवाला आत्मा है या प्रकार दिगंबरोंके एकदेशी माने हैं। सिद्धांतमैं आत्माकूं नित्य तथा विभु मानणेविषे ते सर्व मत खंडन होइ जावै हैं इति॥ १३ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हे भगवन् आत्मा नित्य है तथा विभु है या अर्थविषे तौ हम विवाद करते नहीं। परंतु सर्व देहोंविषे आत्मा एक है या अर्थकूं हम नहीं सहारि सकते हैं। काहेतैं बुद्धि, सुख, दुःख, इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, धर्म, अधर्म, संस्कार या नव गुणोंवाला नित्य विभु आत्मा होवै है। सो आत्मा शरीरशरीरविषे भिन्न भिन्न होवै है। या प्रकार वैशेषिक अंगीकार करे हैं। इसीही पक्षकूं दूसरे तार्किक, मीमांसक आदिकभी अंगीकार करे हैं। और आत्माकूं निर्गुण मानणेहारे सांख्यशास्त्रवाले तौ आत्मा सुखदुःखादिक गुणोंवाला है या अर्थविषे यद्यपि विवाद करे हैं। तथापि शरीरशरीरविषे आत्मा भिन्न भिन्न है या अर्थविषे ते सांख्यशास्त्रवालेभी विवाद करते नहीं। जो कदाचित् सर्व शरीरोंविषे एकही आत्मा अंगीकार करीयें तौ एक शरीरविषे सुखकी प्राप्ति हुए सर्व शरीरोंविषे सुखकी प्राप्ति होणी चाहीये। तथा एक शरीरविषे दुःखकी प्राप्ति हुए सर्व शरीरोंविषे दुःखकी प्राप्ति होणी चाहीये। और

एक शरीरविषे सुखदुःखकी प्राप्ति हुए सर्व शरीरोंविषे सुखदुःखकी प्राप्ति देखणेविषे आवती नहीं । यातैं शरीरशरीरविषे भिन्न भिन्न आत्मा मान्या चाहीये । इस प्रकार आत्माके भेद सिद्ध हुए भीष्मद्रोणादिकोंतैं भिन्न मैं आत्मा यद्यपि नित्य हूं तथा विभु हूं तथापि मैं आत्मा सुखदुःखादिक गुणों-वाला हूं । यातैं तिन भीष्मद्रोणादिक बांधवोंके देहके नाश हुए हमारेविषे सुखका वियोग तथा दुःखका संबंध अवश्यकरिकै होवैगा । यातैं हमारेकूं शोक मोह करणा अनुचित नहीं है । किंतु उचित है । इस प्रकारके अर्जुनके अभिप्रायकी शंकाकरिकै सो श्रीभगवान् लिंगदेहके विवेक करणेवासतै कहे हैं ।

(मू. श्लो.) मात्रास्पर्शास्तु कौंतेय शीतोष्णसुखदुःखदाः । आगमापायिनोनित्यास्तांस्तितिक्षस्व भारत ॥ १४ ॥ (पदच्छेदः) मात्रास्पर्शाः । तु । कौंतेय । शीतोष्णसुखदुःखदाः । आगमापायिनः । अनित्याः । तान् । तितिक्षस्व । भारत ॥ १४ ॥ (पदार्थः) हे कुंतीके पुत्र हे भरतवंशविषे उत्पन्न हुआ अर्जुन अनियतस्वभाववाले जो इंद्रियोंके विषयोंके साथि संबंध हैं ते उत्पत्तिनाशवान् अंतःकरणकूंही शीतउष्णकी प्राप्तिद्वारा सुखदुःखकी प्राप्ति करणेहारे हैं तिनोंकूं तूं सहन कर ॥ १४ ॥

टीका । जिनोंकरिकै विषय जाने जावै हैं तिनोंका नाम मात्रा है । ऐसे नेत्रादिक इंद्रिय हैं । नेत्रादिक इंद्रियोंकरिकैही रूपादिक विषय जाने जावै हैं । तिन नेत्रादिक इंद्रियोंके जो रूपादिक विषयोंके साथि यथायोग्य संबंध हैं । तिनोंका नाम मात्रास्पर्श है । अथवा । नेत्रादिक इंद्रियोंकरिकै जन्य जो तिस तिस विषयाकार अंतःकरणका परिणामरूप वृत्तियां हैं तिनोंका नाम मात्रास्पर्श है । अथवा । कौषीतकिउपनिषद्विषे वागादिक दश इंद्रियों-कूं प्रज्ञामात्रा कहा है । और नामादिक दश विषयोंकूं भूतमात्रा कहा है । तिन वागादिक दश इंद्रियोंका तथा नामादिक दश विषयोंका इहां मात्राश-ब्दकरिकै ग्रहण करणा । तिन इंद्रियविषयरूप मात्रावोंके जो परस्पर विषयविषयीभावसंबंध हैं । तिनोंका नाम मात्रास्पर्श है । अथवा । मात्रा यह तृ-तीयाविभक्त्यंत प्रमाताका वाचक भिन्न पद जानणा । ता प्रमाताके साथि जो विषय इंद्रियोंके संबंध हैं तिनोंका नाम मात्रास्पर्श है । और आगम नाम उत्पत्तिका है । और अपाय नाम नाशका है । सो आगम तथा अपाय जिसका होवै ताका नाम आगमापायी है । ऐसे आगमापायी अंतःकरण-कूंही ते मात्रास्पर्श शीतउष्णादिकोंकी प्राप्तिद्वारा सुखदुःखकी प्राप्ति करे हैं । सर्वत्र व्यापक नित्य आत्माकूं ते मात्रास्पर्श सुखदुःखकी प्राप्ति करैं नहीं । काहेतैं सो नित्य आत्मा निर्गुण है तथा निर्विकार है । तहां श्रुति । "साक्षी चेता केवलो निर्गुणश्च" । अर्थ यह । यह आत्मादेव सर्वका साक्षी है

तथा चेतन है तथा अद्वितीय है तथा निर्गुण है तथा निष्क्रिय है इति। ऐसे निर्विकार नित्य आत्माकूं अनित्य अंतःकरणके सुखदुःखादिक धर्मोंकी आश्रयता संभवै नहीं। काहेतैं धर्म और धर्मी या दोनोंका अभेदही होवै है। अभेदतैं विना दूसरा कोई तिनोंका संबंध संभवता नहीं। सो नित्यअ-नित्यका अभेद कहणा अत्यंत विरुद्ध है यातैं ते सुखदुःखादिक आत्माके धर्म नहीं हैं। और सुखदुःखादिरूप साक्ष्य पदार्थोंविषे साक्षी आत्माका धर्मपणा कदाचित्भी संभवै नहीं। यातैं यह अर्थ सिद्ध भया। सुखदुःखादिक धर्मोंका आश्रय केवल अंतःकरणही है। आत्मा तिन सुखदुःखादिक धर्मोंका आश्रय नहीं है। सो अंतःकरण शरीरशरीरविषे भिन्न भिन्न है। ता अंतःकरणके भेदकूं अंगीकार करिकैही कोई सुखी है कोई दुःखी है इ-त्यादिक व्यवस्था संभव होइ सकै है। यातैं सुखदुःखादिकोंकी व्यवस्थाके अनुपपत्तितैं शरीरशरीरविषे आत्माका भेद मानणा अत्यंत असंगत है। किंवा सर्व जगत्का प्रकाश करणेहारा तथा जन्मादिक विकारोंतैं रहित जो आत्मा है। सो आत्मा सत्रूप करिकै तथा स्फुरणरूपकरिकै सर्व पदा-र्थोंविषे अनुगत हुआ प्रतीत होवै है। यातैं ता सत्तास्फुरणरूप आत्माके भेदविषे कोईभी प्रमाण नहीं है। उलटा " एकोदेवेः सर्वभूतेषु गूढः " इ-त्यादिक अनेक श्रुतियां आत्माके अभेदविषेही प्रमाण हैं। किंवा। सुखदुःखादिकोंकी उत्पत्तिविषे अंतःकरणकूं कारणता है। यह वार्त्ता नैयायिकोंकूं-तथा सिद्धांतीकूं दोनोंकूं अंगीकार है। तहां नैयायिक तौ मनरूप अंतःकरणकूं सुखदुःखादिक धर्मोंका निमित्तकारण माने हैं। और आत्माकूं सुखदुः-खादिकोंका समवायिकारण माने हैं। और सिद्धांतविषे अंतःकरणकूंही सुखदुःखादिकोंका उपादानकारण मान्या है। तहां " साक्षी चेता केवलो निर्गु-णश्च " इत्यादिक श्रुतियोंनैं आत्माकूं निर्गुण कह्या है। यातैं निर्गुण आत्माविषे गुणकी समवायिकारणता कहणी श्रुतितैं विरुद्ध है। और अंतःकर-णतैं विना दूसरे किसी पदार्थविषे सुखदुःखादिकोंकी समवायिकारणता संभवै नहीं। और निमित्तकारणताकी अपेक्षा करिकै समवायिकारणता श्रेष्ठभी होवै है। यातैं नैयायिकोंनैंभी अंतःकरणकूंही सुखदुःखादिकोंका समवायिकारण मान्या चाहीये। किंवा। केवल युक्तिकरिकैही अंतःकरणविषे सुख-दुःखादिक धर्मोंकी उपादानकरणता सिद्ध नहीं है। किंतु श्रुतिप्रमाणकरिकैभी सिद्ध है। तहां श्रुति। " कामः संकल्पो विचिकित्सा श्रद्धा अश्रद्धा धृ-तिरधृतिर्ह्रीर्धीर्भीरित्येतत्सर्वं मन एवेति "। अर्थ यह। इच्छा, संकल्प, संशय, श्रद्धा, अश्रद्धा, धैर्य, अधैर्य, लज्जा, वृत्तिज्ञान, भय यह सर्व मनरूपही हैं इति। यह श्रुति कामादिक विकारोंका मनके साथि अभेद कथन करती हुई मनकूं तिन कामादिक विकारोंका उपादानकारणत्व कथन करै है। ता श्रुतिविषे कामादिक विकार सुखदुःखादिक धर्मोंकेभी उपलक्षक हैं। और आत्माकूं तौ स्वप्रकाशज्ञान आनंदरूपताकरिकै अनेक श्रुतियोंनैं कथन करा

है। यातैं आत्माकूं तिन सुखदुःखादिक धर्मोंकी आश्रयता संभवै नहीं। यातैं नैयायिकादिकोनैं जो आत्माविषे विकारीपणा तथा भेद अंगीकार करा है। सो केवल भ्रांतिकरिकै अंगीकार करा है। हे अर्जुन आगमापायी होणेतैं तथा दृश्य होणेतैं नित्य द्रष्टा आत्मातैं भिन्न जो यह अंतःकरण है ता अंतःकरणविषे सुखदुःखकी उत्पत्ति करणेहारे जो मात्रास्पर्श हैं। ते मात्रास्पर्श नियतस्वभाववाले नहीं हैं। किंतु अनियतस्वभाववाले हैं। काहेतैं एक कालविषे सुखकूं उत्पन्न करणेहारे जो शीतउष्णादिक हैं। तेही शीतउष्णादिक अन्य कालविषे दुःखकूंही उत्पन्न करे हैं। इसी प्रकार किसी कालविषे दुःखकूं उत्पन्न करणेहारे जो शीतउष्णादिक हैं। तेही शीतउष्णादिक अन्यकालविषे सुखकूंही उत्पन्न करे हैं। यातैं ते मात्रास्पर्श अनियतस्वभाववाले हैं। इहां शीतउष्णका ग्रहण आध्यात्मिक, आधिभौतिक, आधिदैविक या तीन प्रकारके सुखदुःखके ग्रहणकाभी उपलक्षक है तहां ज्वरादिक व्याधियोंकरिकै अंतःकरणविषे उत्पन्न भया जो दुःख है ताकूं आध्यात्मिक दुःख कहे हैं। और सिंहसर्पादिक भूतोंकरिकै उत्पन्न भया जो दुःख है ताकूं आधिभौतिक दुःख कहे हैं। और जल अग्नि ग्रहादिकोंकरिकै उत्पन्न भया जो दुःख है ताकूं आधिदैविक दुःख कहे हैं। इस प्रकार सुखकेभी तीन भेद जानि लेणे। यातैं हे अर्जुन अत्यंत अस्थिर स्वभाववाले तथा तैं निर्विकार आत्मातैं भिन्न विकारी अंतःकरणकूं सुखदुःखकी प्राप्ति करणेहारे ऐसे जो भीष्मद्रोणादिकोंके संयोगवियोगरूप मात्रास्पर्श हैं। तिन मात्रास्पर्शोंकूं तूं सहन कर। तात्पर्य यह। यह मात्रास्पर्श मैं अविकारी आत्माकी किंचित्मात्रभी हानि करते नहीं या प्रकारके विवेककरिकै तूं तिन मात्रास्पर्शोंकी उपेक्षा कर। दुःखादिक धर्मवाले अंतःकरणके तादात्म्य अध्यास करिकै तूं अपणे आत्माकूं दुःखी मत मान। यहही तिन मात्रास्पर्शोंका सहन है। इहां (हे कौंतेय हे भारत) या दोनों संबोधनोंकरिकै श्रीभगवान्नैं अर्जुनके प्रति यह अर्थ सूचन करा। मातृकुल तथा पितृकुल या दोनों कुलोंकरिकै अत्यंत शुद्ध जो तूं अर्जुन है तिस तुमारेकूं या प्रकारका अज्ञान उचित नहीं है इति। और किसी टीकाविषे (आगमापायिनः) यह विशेषण मात्रास्पर्शोंकाही कथन करा है। आगमापायी होणेतैं ते मात्रास्पर्श अनित्य हैं या प्रकार ताका अर्थ करा है। परंतु इस व्याख्यानविषे (शीतोष्णसुखदुःखदाः) या वचनकरिकै कथन करी जो सुखदुःखकी प्राप्ति सा सुखदुःखकी प्राप्ति ते मात्रास्पर्श किसकूं करे हैं या प्रकारकी जिज्ञासाके हुए अंतःकरणकूं सुखदुःखकी प्राप्ति करे हैं या प्रकारके अर्थतैं अंतःकरणका ग्रहण होवै है। और पूर्व व्याख्यानविषे (आगमापायिनः) यह शब्द अंतःकरणकाही वाचक है। यातैं ता शब्दतैंही अंतःकरणकी प्राप्ति है इति ॥ १४ ॥ ॥ शंका हे भगवन् अंतःकरणकूं जो सुखदुःखका आश्रय अंगीकार करौगे। तौ तिस अंतःकरणकूंही कर्त्ताभोक्तापणेकी प्राप्तिकरिकै चेतनरूपता अंगीकार क-

रणी होवैगी। ता अंतःकरणकूंही जबी चेतनरूपता सिद्ध हुई तबी ता अंतःकरणतैं भिन्न तथा ता अंतःकरणकूं प्रकाश करणेहारे भोक्ता आत्माविषे कोई प्रमाण है नहीं। यातैं केवल नाममात्रविषे विवाद सिद्ध होवैगा। तिन नामोंके अर्थविषे कोई विवाद होवैगा नहीं। किसी वादीनैं तिसकूं अंतःकरण नामकरिकै कथन करा। किसी वादीनैं तिसकूं आत्मा नामकरिकै कथन करा। और ता अंतःकरणतैं भिन्न जो चेतन आत्मा अंगीकार करौगे। तौ वेदांतसिद्धांतविषे अंगीकार करी जो बंधमोक्ष दोनोंकी समानाधिकरणता है सा सिद्ध नहीं होवैगी। किंतु ता बंधमोक्षका भिन्न भिन्न अधिकरण सिद्ध होवैगा। तहां सुखदुःखका आश्रय होणेतैं अंतःकरण तौ बंधका अधिकरण होवैगा। और ता अंतःकरण तैं भिन्न आत्मा मोक्षका अधिकरण होवैगा। ऐसी अर्जुनकी शंकाके निवृत्त करणेवासतै श्रीभगवान् कहे हैं।

(मू. श्लो.) यं हि न व्यथयंत्येते पुरुषं पुरुषर्षभ। समदुःखसुखं धीरं सोऽमृतत्वाय कल्पते ॥ १५ ॥ (पदच्छेदः) ॥ यं। हि। न। व्यथयंति। एते। पुरुषं पुरुषर्षभ। समदुःखसुखं। धीरं। सः। अमृतत्वाय। कल्पते ॥ १५ ॥ (पदार्थः) हे पुरुषोंविषे श्रेष्ठ अर्जुन समान हैं दुःखसुख जिसकूं ऐसे जिस धीरे पुरुषकूं यह मात्रास्पर्श जिस काणरतें नहीं व्यथा करते तिस कारणतैं सो धीर पुरुष मोक्षकी प्राप्तिवासतै योग्य होवैहै ॥ १५ ॥

टीका। हे अर्जुन "अत्रायं पुरुषः स्वयंज्योतिर्भवति"। अर्थ यह। स्वप्न अवस्थाविषे सूर्यादिक ज्योतियोंके अभाव हुए यह आत्मा पुरुषही स्वयंज्योति है इति। या श्रुतिप्रमाणतैं स्वप्रकाशरूपकरिकै सिद्ध जो चेतन आत्मा है। सो चेतन आत्मा अपणे परिपूर्ण रूपकरिकै सर्व शरीररूप पुरियोंविषे निवास करे है। या कारणतैं श्रुतिभगवती ता चेतन आत्माकूं पुरुष या नामकरिकै कथन करे है। अथवा। अष्ट पुरोंविषे जो निवास करे है ताका नाम पुरुष है। ते अष्ट पुर यह हैं। श्लोक। "कर्मेंद्रियाणि खलु पंच तथा पराणि ज्ञानेंद्रियाणि मन आदि चतुष्टयं च ॥ प्राणादि पंचकमथो वियदादिकं च कामश्च कर्म च तमः पुनरष्टमी पूरिति"। अर्थ यह। वाकादिक पंच कर्मइंद्रिय १ तथा श्रोत्रादिक पंच ज्ञानइंद्रिय २ तथा मनआदिक अंतःकरणचारि ३ तथा प्राणादिक पंचप्राण ४ तथा आकाशादिक पंच भूत ५ तथा काम ६ तथा कर्म ७ तथा तम ८ या अष्टोंका नाम पुर है। इहां तम शब्दकरिकै कारणअज्ञान ग्रहण करणा इति। तहां श्रुति। "स वायं पुरुषः सर्वासु पूर्षु परिवाशयः"। अर्थ यह। यह चेतन आत्मा शरीरादिरूप सर्व पुरियोंविषे नि-

वास करता हुआ पुरुषसंज्ञाकूं प्राप्त होवै है इति। ऐसे स्वयंज्योति आत्माकूं अनात्म अंतःकरणके धर्मरूपकरिकै तथा दृश्यरूपकरिकै यह दुःखसुख समान नहीं हैं। या कारणतैं ता आत्माकूं समदुःखसुख कहे हैं। इहां दुखःसुखका ग्रहण पूर्व उक्त अंतःकरणके कामसंकल्पादिक सर्व धर्मोंका उपलक्षक है। तहां श्रुति। "एष नित्यो महिमा ब्राह्मणस्य न वर्धते कर्मणा नो कनीयान्"। अर्थ यह। ब्रह्मरूप ब्राह्मणका यह नित्य महिमा है। जो पुण्यकर्मकरिकै सुखरूप वृद्धिकूं नहीं प्राप्त होवै है। और पापकर्मकरिकै दुःखरूप कनिष्ठताकूं नहीं प्राप्त होवै है इति। या श्रुतिनैं आत्माविषे सुखदुःख दोनों धर्मोंका निषेध करा है। ताकरिकै कामसंकल्पादिक सर्व धर्मोंका निषेधभी जानि लेणा। और सो स्वयंज्योति आत्मा अपणे चिदाभासद्वारा बुद्धिके साथि तादात्म्य अध्यासकूं प्राप्त होइकै ता बुद्धिकूं शुभ अशुभ कार्यविषे प्रेरणा करे है। यातैं ता बुद्धिके प्रेरक साक्षी आत्माकूं धीर या नामकरिकै कथन करे हैं। "धियमीरयतीति धीरः इति"। तहां श्रुति। "सधीः स्वप्नो भूत्वेमं लोकमतिक्रामति"। अर्थ यह। बुद्धिरूप उपाधिवाला यह आत्मादेव स्वप्नकूं प्राप्त होइकै इस जाग्रत्का परित्याग करै है इति। इतनै कहणेकरिकै आत्माविषे बंधकी प्रसक्ति दिखाई। जिस अधिकरणविषे जो वस्तु स्वभावतैं होवै नहीं तिस अधिकरणविषे तिस वस्तुका आरोप करणा याका नाम प्रसक्ति है। यह वार्त्ता दूसरे शास्त्रविषेभी कथन करी है। तहां श्लोक। "यतो मानानि सिद्ध्यंति जाग्रदादित्रयं तथा। भावाभावविभागश्च स ब्रह्मास्मीति बोध्यते"। अर्थ यह। जिस स्वयंज्योति आत्मातैं प्रत्यक्षादिक सर्व प्रमाण सिद्ध होवै हैं। तथा जाग्रदादिक तीन अवस्था सिद्ध होवै हैं। तथा यह भावपदार्थ है यह अभाव है इत्यादिक भेद सिद्ध होवै है। सो साक्षी आत्माही "ब्रह्मास्मि" इत्यादिक महावाक्योंनैं बोधन करीता है इति। ऐसे सम दुःखसुख धीरपुरुषकूं पूर्व उक्त सुखदुःखके देणेहारे मात्रास्पर्श जिस कारणतैं वास्तवतैं व्यथाकी प्राप्ति करते नहीं। काहेतैं सो स्वयंज्योति पुरुष सर्व विकारोंका प्रकाशक होणेतैं तिन विकारोंके योग्य नहीं है। तहां श्रुति। "सूर्यो यथा सर्वलोकस्य चक्षुर्न लिप्यते चाक्षुषैर्बाह्यदोषैः। एकस्तथा सर्वभूतांतरात्मा न लिप्यते लोकदुःखेन बाह्य इति"। अर्थ यह। जैसे सर्व लोकोंका चक्षु जो सूर्यभगवान् है। सो सूर्यभगवान् चक्षुके विषय बाह्य दोषोंकरिकै लिपायमान होवै नहीं। तैसे एक अद्वितीयरूप सर्व भूतोंका अंतरआत्मा बाह्य लोक दुःखोंकरिकै लिपायमान होवै नहीं इति। इस कारणतैं सो धीर पुरुष अपणे स्वरूपभूत ब्रह्मात्माके एकताज्ञानकरिकै सर्व दुःखोंके उपादानकारणरूप अज्ञानकी निवृत्तिपूर्वक अद्वितीय स्वप्रकाश परमानंदरूप मोक्षकी प्राप्तिवासतै योग्य होवै है। जो कदाचित् यह स्वयंज्योति आत्मा आरोपित बंधका आश्रय नहीं होवै। किंतु स्वाभाविक बंधका आश्रय होवै। तौ धर्मीकी निवृत्तितैं विना स्वाभाविक धर्मोंकी निवृत्ति

होवै नहीं । जैसे अग्निरूप धर्मीकी निवृत्तितैं विना ताके उष्णादिक स्वाभाविक धर्मोंकी निवृत्ति होवै नहीं । तैसे आत्मारूप धर्मीकी निवृत्तितैं विना ता स्वाभाविक बंधरूप धर्मकी कदाचित्‌भी निवृत्ति नहीं होवैगी । और आत्मा तौ नित्य है । यातैं ता आत्माकी कदाचित्‌भी निवृत्ति संभवै नहीं । यातैं आत्मा कदाचित्‌भी मुक्त नहीं होवैगा । यह वार्त्ता अन्य शास्त्रविषेभी कथन करी है । तहां श्लोक । "आत्मा कर्त्रादिरूपश्चेन्मा कांक्षीस्तर्हि मुक्ततां । नहि स्वभावो भावानां व्यावर्तेतौष्ण्यवद्रवेः" । अर्थ यह । आत्मा जो कदाचित् स्वभावतैंही कर्तृत्वभोक्तृत्वादिरूप बंधवाला होवै तौ हे शिष्य तूं मुक्तपणेकी इच्छा मत कर । काहेतैं भावपदार्थोंका जो स्वाभाविक धर्म होवै है । सो धर्म ता भावपदार्थरूप धर्मीकी निवृत्तितैं विना कदाचित्‌भी निवृत्त होवै नहीं । जैसे सूर्यका स्वाभाविक धर्म जो उष्णता है । सो उष्णतारूप धर्म सूर्यरूप धर्मीकी निवृत्तितैं विना निवृत्त होवै नहीं इति । किंवा । आत्माविषे स्वाभाविक बंधके अंगीकार किये किसीकूंभी मोक्षकी प्राप्ति नहीं होवैगी । सो यह वार्त्ता "विमुक्तश्च विमुच्यते ज्ञानादेव तु कैवल्यं" इत्यादिक ज्ञानतैं मोक्षकी प्राप्तिकूं कथन करणेहारी अनेक श्रुतियोंतैंभी विरुद्ध है । शंका । आत्माविषे जो कदाचित् स्वाभाविक बंध हम अंगीकार करैं । तौ यह पूर्व उक्त दोष हमारेकूं प्राप्त होवै । परंतु ता आत्माविषे सो बंध हम स्वाभाविक अंगीकार करते नहीं । किंतु ता आत्माविषे बुद्धि आदिक उपाधिकृत बंध है । तहां श्रुति । "आत्मेंद्रियमनोयुक्तं भोक्तेत्याहुर्मनीषिणः" । अर्थ यह । इंद्रियमनरूप उपाधिकरिकै युक्त आत्मा भोक्ता होवै है या प्रकार बुद्धिमान् पुरुष कथन करे हैं इति । इस प्रकार आत्माविषे उपाधिकृत बंधके अंगीकार किये हुए आत्मारूप धर्मीके विद्यमान हुएभी ता औपाधिक बंधकी निवृत्तिकरिकै मुक्तिकी प्राप्ति होई सकै है । समाधान । हे वादी या तुमारे कहणेकरिकै यह अर्थ सिद्ध होवै है । जो वस्तु अपणे धर्मोंकूं अन्य वस्तुविषे स्थितरूप करिकै प्रतीत करावै है ता वस्तुका नाम उपाधि है । जैसे रक्त वर्णवाला जपाकुसुम अपणे रक्त वर्णकूं समीपवर्त्ति स्फटिकमणिविषे स्थितरूपकरिकै प्रतीत करावै है । यातैं ता जपाकुसुमकूं उपाधि कहे हैं । तैसे यह बुद्धि आदिकभी अपणे सुखदुःखादिक धर्मोंकूं आत्माविषे स्थितरूप करिकै प्रतीत करावै हैं । यातैं यह बुद्धि आदिकभी उपाधि हैं । और जो धर्म उपाधिकृत होवै है । सो धर्म असत्यही होवै है । जैसे जपाकुसुमरूप उपाधिकृत जो स्फटिमणिविषे रक्तता है सा रक्तता असत्यही है । तैसे बुद्धि आदिक उपाधिकृत जो आत्माविषे कर्तृत्वभोक्तृत्वादिक बंध है सो बंधभी असत्यही होवैगा । इस प्रकार बंधविषे औपाधिकता मानिकरिकै असत्यरूपताकूं अंगीकार करणेहारा तूं वादी हमारे सिद्धांतरूप मार्गविषेही प्राप्त भया है । यातैं तूं हमारे अनुकूल हैं प्रतिकूल नहीं । यातैं यह अर्थ सिद्ध भया । वास्तवतैं कर्तृत्वभोक्तृत्वादिक सर्व संसारधर्मोंके संबंधतैं रहित आत्मा-

विषेभी अंतःकरणादिक उपाधिके वशतैं जो तिन संसारधर्मोंके संबंधकी प्रतीति है यहही आत्माविषे बंध है। और अपणे वास्तव स्वरूपके ज्ञानकरिकै जबी अपणे स्वरूपके अज्ञानकी निवृत्ति होवै है तथा ता अज्ञानके कार्यरूप बुद्धि आदिक उपाधियोंकी निवृत्ति होवै है तथा ता उपाधिकृत सर्व भ्रमकी निवृत्ति होवै है । तबी सर्व दृश्यप्रपंचके संबंधतैं रहित होणेतैं शुद्धरूप तथा स्वप्रकाश परमानंदरूपताकरिकै सर्वत्र परिपूर्णरूप जो आत्मा है ता आत्मादेवका स्वतःही कैवल्यरूप मोक्ष होवै है। यातैं बंध मोक्ष या दोनोंका भिन्न भिन्न अधिकरण नहीं है । किंतु एकही आत्मा दोनोंका अधिकरण है । या कहणेतैं अंतःकरण आत्मा या प्रकारके नाममात्रविषेही विवाद है। तिन दोनों नामोंका अर्थ एकही है। यह जो पूर्ववादीनैं कहा था सोभी खंडन हुआ जानणा। काहेतैं प्रकाश्य और प्रकाशक या दोनोंकी एकता संभवै नहीं । जैसे प्रकाश्य जो घटादिक पदार्थ हैं तथा प्रकाशक जो दीपकादिक हैं तिन दोनोंकी एकता संभवै नहीं। तैसे प्रकाश्यरूप जो अंतःकरणादिक हैं तथा प्रकाशक जो साक्षी आत्मा है तिन दोनोंकीभी एकता संभवै नहीं। किंतु प्रकाश्य पदार्थ प्रकाशकतैं भिन्नही होवै है। जो कदाचित् एकही पदार्थकूं प्रकाश्यरूप तथा प्रकाशकरूप मानियें। तौ एकही पदार्थविषे प्रकाशरूप क्रियाका कर्त्तापणा तथा कर्मपणा प्राप्त होवैगा । सो अत्यंत विरुद्ध है। एकही वस्तुविषे एक क्रियानिरूपित कर्त्तापणा तथा कर्मपणा कहांभी देखणेविषे आवता नहीं। शंका। एकही वस्तुविषे जो प्रकाश्यता तथा प्रकाशकता नहीं होवै तौ आत्माविषेभी सा प्रकाश्यता तथा प्रकाशकता कैसे संभवैगी। समाधान । स्वयंज्योति आत्माविषे हम केवल प्रकाशकताही अंगीकार करते हैं । घटादिक पदार्थोंकी न्यांई आत्माविषे प्रकाश्यता हम अंगीकार करते नहीं। और आत्माविषे जो अंतःकरणादिकोंका प्रकाशकपणा ह सो स्वप्रकाशज्ञानरूपतातैं भिन्न नहीं है । किंतु सो प्रकाशकपणा स्वप्रकाश ज्ञानरूपताही है। ऐसा प्रकाशकपणा आत्मातैं भिन्न अंतःकरणादिकोंविषे संभवता नहीं । शंका । बुद्धिकी वृत्तियोंतैं भिन्न दूसरा कोई ज्ञान है नहीं। यातैं बुद्धिकी वृत्तियांही ज्ञानरूप हैं । समाधान । ज्ञान सर्व देशविषे तथा सर्व कालविषे अनुगत है तथा भेद करणेहारे धर्मोंतैं रहित है। यातैं सो ज्ञान विभु है तथा नित्य है तथा एक है। और बुद्धिका परिणामरूप वृत्तियां तौ परिच्छिन्न हैं तथा अनित्य हैं तथा अनेक हैं। ऐसे विभु नित्य एक ज्ञानकूं परिच्छिन्न अनित्य अनेक वृत्तिरूपता संभवै नहीं। शंका। ज्ञानकूं जो नित्य तथा एक अंगीकार करौगे । तौ हमारेविषे पूर्वला घटज्ञान नाश हुआ है और अबी पटज्ञान उत्पन्न भया है या प्रकारकी प्रतीति ज्ञानके उत्पत्तिनाशकूं तथा भेदकूं विषय करणेहारी असंगत होवैगी। समाधान। सा प्रतीति ज्ञानके उत्पत्तिनाशकूं विषय करती नहीं । किंतु ता साक्षीआत्मारूप ज्ञानका जो

घटादिक विषयोंके साथि वृत्तिद्वारा संबंध है ता संबंधके उत्पत्तिनाशादिकोंकूं सा प्रतीति विषय करे है । जो ऐसा नहीं अंगीकार करियें तौ तिस तिस ज्ञानकी उत्पत्ति तथा नाश तथा भेद आदिकोंकी कल्पना करणेविषे अत्यंत गौरवदोषकी प्राप्ति होवैगी। यातैं सो साक्षी आत्मारूप ज्ञान नित्य है तथा विभु है तथा एक अद्वितीयरूप है । तहां श्रुति । "नहि द्रष्टुर्दृष्टेर्विपरिलोपो विद्यतेऽविनाशित्वात् आकाशवत्सर्वगतश्च नित्यः महद्भूतमनंतमपारं विज्ञानघन एव तदेव ब्रह्म पूर्वमनपरमनंतरमबाह्यमयमात्मा ब्रह्मसर्वानुभूरिति" । अर्थ यह । द्रष्टा आत्माका स्वरूपभूत जो ज्ञानरूप दृष्टि सा दृष्टि नाशतैं रहित है यातैं ता दृष्टिका किसीभी अवस्थाविषे अभाव होवै नहीं । और यह ज्ञानस्वरूप आत्मा आकाशकी न्यांई सर्वत्र व्यापक है तथा नित्य है । और यह ज्ञानस्वरूप आत्मा महान्‌रूप है । तथा अनंत है तथा अपार है तथा विज्ञानघन है । और यह ज्ञानस्वरूप ब्रह्म कारणतैं रहित है तथा कार्यतैं रहित तथा अंतरपणेतैं रहित है तथा बाह्यपणेतैं रहित है यह ज्ञानस्वरूप आत्मा ब्रह्मरूप है इति । इत्यादिक अनेक श्रुतियां आत्माकूं विभु नित्य स्वप्रकाश ज्ञानरूपकरिकै कथन करे हैं । इतनै कहणेकरिकै अविद्यारूप कारणउपाधितैंभी आत्माका भेद सिद्ध हुआ । यातैं यह अर्थ सिद्ध भया । स्थूलसूक्ष्मकारणरूप असत्य उपाधियोंकरिकै करा हुआ जो आत्माविषे बंधभ्रम है। ता बंधभ्रमकी जबी आत्माके ज्ञानकरिकै निवृत्ति होवै है । तबी या स्वयंज्योति पुरुषकूं मोक्षकी प्राप्ति होवै है । या हमारे सिद्धांतविषे पूर्व उक्त किंचित्‌मात्रभी दोषकी प्राप्ति होवै नहीं । इहां (हे पुरुषर्षभ) या संबोधनकरिकै भगवान्‌नैं अर्जुनके प्रति यह अर्थ सूचन करा । स्वप्रकाशचैतन्यरूपताकरिकै जो तुमारेविषे पुरुषपणा है तथा परमानंदरूपताकरिकै जो तुमारेविषे सर्व द्वैतप्रपंचकी अपेक्षाकरिकै श्रेष्ठतारूप ऋषभपणा है । ता अपणे पुरुषपणेकूं तथा ऋषभपणेकूं नहीं जानता हुआही तूं शोककूं प्राप्त हुआ है । यातैं ता शोकके निवृत्तिका कोई दूसरा उपाय है नहीं । किंतु ता अपणे स्वरूपके ज्ञानतैंही तुमारे शोककी निवृत्ति होवैगी । तहां श्रुति । "तरति शोकमात्मवित्" । अर्थ यह । आत्मवेत्ता पुरुष शोकतैं रहित होवै है इति । या श्लोकविषे (पुरुषं) इस एकवचनकरिकै सांख्यशास्त्रके मतका खंडन करा । काहेतैं ते सांख्यशास्त्रवाले अनेक पुरुषोंकूं अंगीकार करे हैं इति ॥ १५ ॥ ❀ ॥ शंका । हे भगवन् यद्यपि चेतन आत्मा पुरुष एकहीं है । तथापि ता पुरुषविषे सत्यरूप जड पदार्थोंका जो द्रष्टापणारूप संसार है । सो संसार असत्य नहीं है । किंतु सो संसार सत्य है । ता संसारके सत्य हुए शीतउष्णादिक सुखदुःखके कारणोंके विद्यमान हुए ता सुखदुःखका भोगभी अवश्यकरिकै होवैगा । और सत्य वस्तुकी ज्ञानतैं निवृत्ति होवै नहीं । जो सत्य वस्तुकीभी ज्ञानतैं निवृत्ति होवै तौ सत्य आत्माकीभी ज्ञानतैं निवृत्ति होणी चाहिये । यातैं पूर्व कथन करी हुई मात्रा-

स्पर्शोंकी तितिक्षा कैसे संभवैगी। तथा यह पुरुष मोक्षकी प्राप्तिवासतै कैसे योग्य होवैगा। समाधान। हे अर्जुन जैसे शुक्तिविषे कल्पित जो रजत है ता रजतकी शुक्तिरूप अधिष्ठानके ज्ञानतैं निवृत्ति होवै है। तैसे या सर्व द्वैतप्रपंचकूं आत्माविषे कल्पित होणेतैं ता अधिष्ठान आत्माके ज्ञानकरिकै ता कल्पित प्रपंचकी निवृत्ति बनि सकै है। शंका। हे भगवन् जैसे आत्माकी प्रतीति होवै है। तैसे अनात्म प्रपंचकीभी प्रतीति होवै है। यातैं आत्मा अनात्मा दोनोंकी तुल्यप्रतीतिके हुए आत्माकी न्यांई अनात्मजगत्भी सत्य किस वासतै नहीं होवै। तथा अनात्मजगत्की न्यांई आत्माभी असत्य किस वासतै नहीं होवै। ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीकृष्णभगवान् तिन दोनोंविषे विशेषता वर्णन करे हैं।

(मू. श्लो.) नासतो विद्यते भावो नाभावो विद्यते सतः। उभयोरपि दृष्टोंतस्त्वनयोस्तत्त्वदर्शिभिः॥ १६॥ (पदच्छेदः) न। असतः। विद्यते। भावः। न। अभावः। विद्यते। सतः। उभयोः। अपि। दृष्टः। अंतः। तु। अनयोः। तत्त्वदर्शिभिः॥ १६॥ (पदार्थः) हे अर्जुन असत्वस्तुकी सत्ता नहीं संभवै है तथा सत्वस्तुका अभाव नहीं संभवै है इनै सत असत् दोनोंकी भी मर्यादा तत्त्वदर्शि पुरुषोंनैं देखी है॥ १६॥

टीका। कालकृत परिच्छेद देशकृत परिच्छेद वस्तुकृत परिच्छेद या तीन प्रकारके परिच्छेदोंवाला जो पदार्थ होवै है। सो पदार्थ असत् कह्या जावै है। ऐसे घटादिक अनात्म पदार्थ हैं। तहां प्रागभावका तथा प्रध्वंसाभावका जो प्रतियोगीपणा है ताका नाम कालपरिच्छेद है। जैसे घटकी उत्पत्तितैं पूर्व ता घटका मृत्तिकाविषे प्रागभाव रहे है ता प्रागभावका प्रतियोगीपणा ता घटविषे है। और ता घटके नाशतैं अनंतर ता घटका प्रध्वंसाभाव ता घटके कपालोंविषे रहे है और ता प्रध्वंसाभावका प्रतियोगीपणा ता घटविषे है। यातैं सो घट कालकृत परिच्छेदवाला है। घटके नाश हुएतैं अनंतर जो ठीकरे रहे हैं तिनोंका नाम कपाल है। और अत्यंताभावका जो प्रतियोगीपणा है ताका नाम देशपरिच्छेद है। जैसे जिस देशविषे घट रहे है ता देशकूं छोडिकै अन्य सर्व देशविषे ता घटका अत्यंताभाव रहे है। ता अत्यंताभावका प्रतियोगीपणा ता घटविषे रहे है। यातैं सो घट देशकृत परिच्छेदवाला है। तहां वेदांतसिद्धांतविषे यद्यपि जो पदार्थ कालकृत परिच्छेदवाला होवै है सो पदार्थ नियमकरिकै देशकृत परिच्छेदवालाभी होवै है। यातैं कालकृत परिच्छेदके ग्रहण करणेकरिकैही देशकृत परिच्छेदकाभी ग्रहण होइ सकै है। ता देशकृत परिच्छेदका भिन्न ग्रहण करणा संभवै नहीं। तथापि नैयायिक पृथिवी,

जल, तेज, वायु या चारोंके परमाणुवोंकूं तथा मनकूं मूर्त्तद्रव्य माने हैं तथा नित्य माने हैं । यातैं ते नैयायिक तिन परमाणुवोंविषे तथा मनविषे केवल देशकृत परिच्छेदही अंगीकार करै हैं। कालकृत परिच्छेद अंगीकार करै नहीं। या कारणतैं इहां कालकृत परिच्छेदतैं देशकृत परिच्छेद भिन्न ग्रहण करा है। और सजातीय भेद विजातीय भेद स्वगत भेद या तीन प्रकारके भेदोंका नाम वस्तुकृत परिच्छेद है। जैसे एक वृक्षका दूसरे वृक्षतैं जो भेद हैं ता भेदकूं सजातीयभेद कहे हैं। और तिसी वृक्षका पाषाणादिकोंतैं जो भेद है ता भेदकूं विजातीयभेद कहे हैं। और तिसी वृक्षका अपणे पत्रपुष्पफलादिकोंतैं जो भेद है ता भेदकूं स्वगतभेद कहे हैं। अथवा जीवईश्वरका भेद १ जीवजगत्का भेद २ जीवोंका परस्पर भेद ३ ईश्वरजगत्का भेद ४ जगत्का परस्पर भेद ५ या पंच प्रकारके भेदका नाम वस्तु-परिच्छेद है। यद्यपि वेदांतसिद्धांतविषे जो पदार्थ कालकृत परिच्छेदवाला तथा देशकृत परिच्छेदवाला होवै है। सो पदार्थ नियमकरिकै वस्तुपरिच्छेदवालाभी हो-वै है। यातैं कालकृत देशकृत परिच्छेदके ग्रहण कियेतैं वस्तुकृत परिच्छेदकाभी ग्रहण होइ सकै है। ता वस्तुकृत परिच्छेदका भिन्न ग्रहण करणा उचित नहीं है। तथापि नैयायिकोंके मतविषे आकाश काल दिशा यह तीनों नित्य हैं तथा विभु हैं। यातैं तिन आकाशादिकोंविषे ते नैयायिक कालकृत परिच्छेद तथा देशकृत परिच्छेद मानते नहीं। परंतु तिन आकाशादिकोंविषे ते नैयायिक वस्तुकृतपरिच्छेद तौ अंगीकार करे हैं। या कारणतैं कालकृत परिच्छेद देशकृत परिच्छेद या दोनों परिच्छेदोंतैं वस्तुकृत परिच्छेदकूं भिन्न ग्रहण करा है। इस प्रकारके तीन परिच्छेदोंवाला होणेतैं असत्‌रूप जो शीतउष्णादिक सर्व प्रपंच है। ता असत् प्रपं-चका सत्तारूप भाव संभवै नहीं। इहां सत्ताशब्दकरिकै तीन परिच्छेदोंतैं रहिततारूप पारमार्थिकपणेका ग्रहण करणा। जैसे घटत्व और घटत्वका अभाव यह दोनों धर्म परस्पर विरोधि होणेतैं एक अधिकरणविषे कदाचित्‌भी रहते नहीं। तैसे परिच्छिन्नत्वरूप असत्व तथा अपरिच्छिन्नत्वरूप सत्त्व यह दोनों धर्मभी परस्पर विरोधी होणेतैं एक अधिकरणविषे कदाचित्‌भी रहैं नहीं। तात्पर्य यह। अनात्मरूप जितना की दृश्य प्रपंच है। सो दृश्य प्रपंच सर्वत्र अनुगत है नहीं। यातैं किसी कालविषे तथा किसी देशविषे तथा किसी वस्तुविषे ता दृश्य प्रपंचका अनिषेध होवै नहीं। किंतु ता दृश्य प्रपंचका सर्व देशकालवस्तुविषे निषेधही होवै है। जैसे घटका अपणी उत्पत्तितैं पूर्वकालविषे तथा नाशतैं उत्तरकालविषे तथा अपणे अधि-करणकूं छोडिकै अन्य सर्व देशविषे तथा पटादिक वस्तुवोंविषे 'घटो नास्ति' या प्रकारका निषेधही होवै है। और जो सत् वस्तु है सो सर्वत्र अनुगत है। यातैं ता सत् वस्तुका किसी कालविषे तथा किसी देशविषे तथा किसी वस्तुविषे कदाचित्‌भी निषेध होवै नहीं। यातैं जैसे एकही रज्जुविषे प्रतीत भये जो सर्प, दंड, जलधारा, माला आदिक हैं। तिन कल्पित सर्पादिकोंविषे सा रज्जु तौ 'अयं सर्पः, अयं दंडः' या

प्रकार इदंरूपकरिकै अनुगत हुई प्रतीत होवै है । यातैं सा रज्जु तिन कल्पित सर्पदंडादिकोंविषे अनुगत है। और ता सर्पकी प्रतीतिविषे दंडकी प्रतीति होवै नहीं । और ता दंडकी प्रतीतिविषे सर्पकी प्रतीति होवै नहीं। यातैं ते कल्पित सर्पदंडादिक परस्पर व्यभिचारी होणेतैं अनुगत नहीं हैं । या कारणतैंही ते अननुगत सर्पदंडादिक ता अनुगत रज्जुविषे कल्पित हैं । तैसे 'सन् घटः, सन् पटः' या प्रकार सर्व पदार्थोंविषे सत् वस्तु तौ अनुगत होइकै प्रतीत होवै है । यातैं सो सत् वस्तु सर्वत्र अनुगत है। और घट पट नहीं है तथा पट घट नहीं है। या प्रकार घटपटादिक पदार्थ परस्पर व्यभिचारी होणेतैं अननुगत हैं । या कारणतैं यह अननुगत घटपटादिक प्रपंच ता अनुगत सत् वस्तुविषे कल्पित है । शंका । हे भगवन् अनुगत-पणेतैं रहित व्यभिचारी वस्तुकूं जो कल्पित मानौंगे । तौ सत् वस्तुभी कल्पित होवैगा । काहेतैं सो सत् वस्तुभी शशशृंग वंध्यापुत्रादिक तुच्छ पदार्थोंतैं व्यावृत्त होणेतैं व्यभिचारीही है । ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् कहे हैं । (नाभावो विद्यते सतः इति) हे अर्जुन सत् अधिकरणविषे रहणेहारा जो भेद है ता भेदके प्रतियोगीपणेका नामही वस्तुपरिच्छेद है । जैसे घटरूप सत् वस्तुविषे रहणेहारा जो पटका भेद है ता भेदका प्रतियोगीपणा ता पटविषे है। यहही ता पटविषे वस्तुपरिच्छेद है । और शशशृंग वंध्यापुत्रादिक असत् पदार्थोंविषे सत्‌रूपता है नहीं । यातैं तिन शशशृंगादिक असत् पदार्थोंतैं सत् वस्तुका भेद अंगीकार किये हुएभी ता सत् वस्तुविषे वस्तुपरिच्छेदकी प्राप्ति होवै नहीं । और स्वप्रकाश नित्यविभुरूप एकही सत् वस्तु सर्वत्र व्यापक है । यातैं ता सत् वस्तुविषे किसीभी सत् व्यक्तिका भेद संभवै नहीं । काहेतैं 'घटः सन्, पटः सन्' इत्यादिक प्रतीति सर्व लोकोंकूं होवै है । यातैं सत् वस्तुविषे घटादिक पदार्थोंविषे रहणेहारे भेदका प्रतियोगीपणा संभवता नहीं । ऐसे देशकालवस्तुपरिच्छेदतैं रहित सत् वस्तुका देशकालवस्तुकृत परिच्छिन्नत्वरूप अभाव संभवै नहीं । काहेतैं जैसे घटत्व और घटत्वका अभाव यह दोनों धर्म परस्पर विरोधी होणेतैं एक अधिकरणविषे रहते नहीं । तैसे परिच्छिन्नत्व अपरिच्छिन्नत्व यह दोनों धर्मभी परस्पर विरोधी होणेतैं एक अधिकरणविषे रहैं नहीं । शंका । जिसविषे देशकालवस्तुपरिच्छेदका निषेध करते हो। ऐसी कोई सत् वस्तु है नहीं। किंतु सत्ता नामा एक परा जाति है। सा सत्ताजाति द्रव्य, गुण, कर्म या तीन पदार्थोंविषे तौ समवायसंबंधकरिकै रहे है । और तिन द्रव्यादिकोंविषे रहणेहारे जो सामान्य, विशेष, समवाय यह तीन पदार्थ हैं तिनोंविषे सा सत्ताजाति सामानाधिकरण्यसंबंधकरिकै रहे है । या कारणतैंही तिन द्रव्यादिक षट् पदार्थोंविषे 'द्रव्यं सन्, गुणः सन्' इत्यादिक सत् व्यवहार होवै है ।यातैं उत्पत्तितैं पूर्ववर्त्तमानप्रागभावके प्रतियोगी होणेतैं असत्‌रूप जो घटादिक हैं तिन असत् घटादिकोंकाही कुलाल दंड चक्रादिक कारणोंके व्यापारतैं सत्त्व होवै है । और तिन सत्‌रूप घटादिकोंकाही

मृत्तिकादिक कारणोंके नाशतैं अभावभी होवै है । यातैं असत् पदार्थका भाव नहीं होवै है और सत् वस्तुका अभाव नहीं होवै है या प्रकारका आपका वचन संभवता नहीं । ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् कहे हैं (उभयोरपीति) हे अर्जुन सत् वस्तुका तथा असत् वस्तुका जो अंत है । क्या जो सत् वस्तु होवै है सो सर्व कालविषे सत्‌ही होवै है कदाचित्‌भी असत् होवै नहीं और जो असत् वस्तु होवै है सो सर्व कालविषे असत्‌ही होवै है कदाचित्‌भी सत् होवै नहीं । या प्रकारकी नियमरूप जो मर्यादा है । सो मर्यादारूप अंत वस्तुके यथार्थ स्वरूपकूं जानणेहारे ब्रह्मवेत्ता पुरुषोंनैंही विचारपूर्वक श्रुतिस्मृतियुक्तियोंकरिकै निश्चय करा है । कुतार्किक नैयायिकादिकोंनैं सो मर्यादारूप अंत निश्चय करा नहीं । इहां श्रुतिस्मृतिप्रमाणतैं विरुद्ध तर्कका नाम कुतर्क है । तिन कुतर्कोंकूं कथन करणेहारे वादीयोंकूं कुतार्किक कहे हैं । ऐसे कुतार्किक पुरुषोंविषे सो पूर्व उक्त विपरीतभ्रम संभव होइ सकै है । इहां श्लोकविषे (अंतस्तु) या वचनविषे स्थित जो तु यह शब्द है । ता तुशब्दका निश्चयरूप अवधारण अर्थ है । तिस तुशब्दका (अंतः) या पदके साथि जो अन्वय करियें । तौ यह अर्थ सिद्ध होवै है । सत् वस्तु सत्‌ही होवै है और असत् वस्तु असत्‌ही होवै है या प्रकार ता सत् असत्‌का नियमही तत्त्वदर्शी पुरुषोंनैं देख्या है । ता सत् असत् वस्तुका अनियम देख्या नहीं इति । और तिस तुशब्दका (तत्त्वदर्शिभिः) या पदके साथि जो अन्वय करियें । तौ यह अर्थ सिद्ध होवै है । तत्त्वदर्शि पुरुषोंनैंही ता सत् असत् वस्तुका नियम देख्या है । अतत्त्वदर्शि पुरुषोंनैं सो नियम देख्या नहीं इति । तहां श्रुति । " सदेवसौम्येदमग्रआसीदेकमेवाद्वितीयमिति ऐतदात्म्यमिदं सर्वं तत्सत्यं स आत्मा तत्त्वमसि श्वेतकेतो इति " । अर्थ यह । हे प्रियदर्शन यह दृश्यमान प्रपंच अपणी उत्पत्तितैं पूर्व सत् वस्तुरूपही होता भया है । सो सत् वस्तु एक अद्वितीयरूपही होता भया इति । या प्रकार छांदोग्यउपनिषदके षष्ठे अध्यायके आदिविषे कथन करिकै ताके अंतविषे यह कह्या है । यह सर्व जगत् आत्मास्वरूपही है सो आत्माहीसत्यरूप है । हे श्वेतकेतु सो सत् वस्तु आत्मा तूं हैं इति । यह श्रुति सजातीय, विजातीय, स्वगत भेदतैं रहित एक अद्वितीय वस्तुकूंही कथन करे है । और " वाचरंभणं विकारो नामधेयं मृत्तिकेत्येव सत्यं " । अर्थ यह । घटशरावादिक विकार केवल वाणीमात्र होणेतैं मिथ्या हैं । तिन घटशरावादिक विकारोंका कारणरूप मृत्तिकाही सत्य है इति । यह श्रुति । परस्पर व्यभिचारीरूप घटशरावादिक विकारोंविषे मिथ्यापणेकूंही कथन करे है । तथा " अन्नेन सौम्यशुंगेनापो मूलमन्विच्छ अद्भिः सौम्यशुंगेन तेजोमूलमन्विच्छ तेजसा सौम्यशुंगेन सन्मूलमन्विच्छ सन्मूलाः सौम्येमाः सर्वाः प्रजाः सदायतनाः सत्प्रतिष्ठा इति " । अर्थ यह । हे प्रियदर्शन श्वेतकेतु या पृथिवीरूप कार्यकरिकै तूं जलरूप कारणकूं निश्चय कर । तथा

जलरूप कार्यकरिकै तूं तेजरूप कारणकूं निश्चय कर । तथा ता तेजरूप कार्यकरिकै तूं सत्वस्तुरूप कारणकूं निश्चय कर । हे श्वेतकेतु यह सर्व प्रजा ता सत्वस्तुतैंही उत्पन्न होवै है । तथा ता सत् वस्तुविषेही स्थित होवै है तथा ता सत् वस्तुविषेही लयकूं प्राप्त होवै है इति । यह श्रुति ता सत् वस्तुविषेही पृथिवी आदिक सर्व विकारोंका कल्पितपणा कथन करे है । " सदेव सौम्येदमग्रआसीत् " इत्यादिक सर्व श्रुतियोंका अर्थ आत्मपुराणके द्वादशे अध्यायविषे हम विस्तारतैं कथन करि आये हैं । किंवा । ' द्रव्यं सन्, गुणः सन् ' इत्यादिक प्रतीतियोंका विषय जो सत्ता है सा सत्ता पराजातिरूप है या प्रकारका वचन जो नैयायिकोंनैं कथन करा है । सो तिनोंका कहणा अत्यंत असंगत है । काहेतैं सन् सन् यह सत्ताकूं विषय करणेहारी प्रतीति द्रव्यादिक सर्व पदार्थमात्रविषे समान होवै है । केवल द्रव्य, गुण, कर्म या तीन पदार्थोंविषे सा प्रतीति होवै नहीं । यातैं सन् सन् या प्रकारकी प्रतीतिकरिकै द्रव्य गुणकर्ममात्रविषे रहणेहारी सत्ताजातिकी कल्पना होइ सकै नहीं । और एकरूप प्रतीति एकरूप विषयकरिकैही सिद्ध होवै है । ता एकरूप प्रतीतिविषे संबंधका भेद तथा स्वरूपका भेद कल्पना करणा अनुचित है । जैसे अनेक घटोंविषे ' अयं घटः, अयं घटः ' या प्रकारकी जो एकरूप प्रतीति है सा एकरूप प्रतीति घटत्वरूप एकरूप विषय करिकैही सिद्ध होइ सकै है । यातैं घटव्यक्तियोंविषे ता घटत्वधर्मके संबंधका भेद कल्पना करणा अनुचित है । तैसे सन् सन् यह एकरूपप्रतीति द्रव्य, गुण, कर्म या तीन पदार्थोंविषे तौ समवायसंबंधविशिष्ट सत्ताकूं विषय करे है और सामान्य, विशेष, समवाय या तीन पदार्थोंविषे सामानाधिकरण्यसंबंधविशिष्ट सत्ताकूं विषय करे है या प्रकार संबंधका भेद कल्पना करणा उचित नहीं है । और विषयकी एकरूपताके अभाव हुएभी जो कदाचित् प्रतीतिकी एकरूपता अंगीकार करौगे । तौ तुमारे मतविषे किसीभी जातिकी सिद्धि नहीं होवैगी । यातैं यह अर्थ सिद्ध भया । नैयायिकोंनैं अंगीकार करी जो सत्ताजाति है । सा सत्ताजाति ' घटः सन्, पटः सन् ' इत्यादिक सत् व्यवहारोंका साधक नहीं है । किंतु ज्ञात अज्ञात अवस्थाकूं प्रकाश करणेहारा तथा स्वतः स्फुरणरूप एकहीं सत् वस्तु अपणे तादात्म्य अध्यासकरिकै सर्व पदार्थोंविषे सन् सन् या प्रकारके सत् व्यवहारका साधक होवै है । किंवा । ' सन् घटः, सन् पटः ' इत्यादिक प्रतीतियां घटपटादिक व्यक्तियोंविषे सत्ताव्यक्तिके अभेदमात्रकूं विषय करे हैं । तिन घटपटादिक व्यक्तियोंविषे सत्ताजातिके समवायिपणेकूं ते प्रतीतियां विषय करै नहीं । काहेतैं अभेदकूं विषय करणेहारी जो प्रतीति है ता प्रतीतिका भेद घटित समवायसंबंधकरिकै निर्वाह होइ सकै नहीं । इस प्रकार ' द्रव्यं सन्, गुणः सन् ' इत्यादिक प्रतीतियोंकरिकै ता एक सत् वस्तुका द्रव्यादिक सर्व पदार्थोंके साथि अभेद सिद्ध हुए ता एक सत् वस्तुके साथि अभिन्न होणेतैं तिन द्रव्यगु-

णादिक पदार्थोंका परस्परभी भेद सिद्ध होवै नहीं। तिन द्रव्यादिकोंके भेदके असिद्ध हुए तिन द्रव्यगुणादिक धर्मीयोंविषे सत्ताजातिरूप धर्मभी कल्पना करा जावै नहीं। यातैं सत् वस्तुरूप धर्मीविषे द्रव्यगुणादिक पदार्थोंका अभेदही अंगीकार करणेयोग्य है। सो जड चेतनका अभेद वास्तवतैं तौ संभवै नहीं। किंतु आध्यासिकअभेदही संभवै है। किंवा। नैयायिकोंनैं विभुरूप कालपदार्थका सर्व पदार्थोंके साथि संबंध अंगीकार करा है। ता कालके संबंधकूं ग्रहण करिकैही, 'घटः सन्, पटः सन्' इत्यादिक सर्व व्यवहार संभव होइ सकै है। ता कालसंबंधतैं भिन्न सत्ताजातिरूप पदार्थके मानणेविषे कोई प्रमाण है नहीं। यातैं यह अर्थ सिद्ध भया। जैसे किसी देशविषे तथा किसी कालविषे अघटरूप जो पटादिक पदार्थ हैं। तिन पटादिक पदार्थोंकूं अन्य देशविषे तथा अन्य कालविषे घटरूपता होवै नहीं। और जैसे किसी देशविषे तथा किसी कालविषे घटरूपकरिकै स्थित जो घट है। ता घटकी अन्य देशविषे तथा अन्य कालविषे अघटरूपता साक्षात् इंद्रकरिकैभी सिद्ध होइ सकै नहीं। तैसे किसी देशविषे तथा किसी कालविषे असत्रूपकरिकै विद्यमान जो पदार्थ है ता असत् पदार्थका अन्य देशविषे तथा अन्य कालविषे सत्त्व सिद्ध होइ सकै नहीं। तैसे किसी देशविषे तथा किसी कालविषे सत्रूपकरिकै विद्यमान जो पदार्थ है ता सत् पदार्थका अन्य देशविषे तथा अन्य कालविषे असत्त्व सिद्ध होइ सकै नहीं। यातैं सत्, असत् दोनोंका नियतरूपही अंगीकार करणेकूं योग्य है। यातैं एकही सत् वस्तु मायाकल्पित असत्की निवृत्ति करिकै मोक्षरूप अमृतकी प्राप्तिके योग्य होवै है। तथा सत् वस्तुमात्रकी दृष्टिकरिकै पूर्व उक्त तितिक्षाभी संभव होइ सकै है इति ॥ १६ ॥ ❀ ॥ शंका। हे भगवन् पूर्व कथन करा जो देशकालवस्तुपरिच्छेदतैं रहित सत् वस्तु है सो सत् वस्तु ज्ञानरूप स्फुरणतैं भिन्न है अथवा अभिन्न है। तहां प्रथम भेदपक्ष तौ संभवै नहीं। काहेतैं ता सत् वस्तुकूं जो ज्ञानरूप स्फुरणतैं भिन्न अंगीकार करौगे। तौ सो सत् वस्तु भेदरूप वस्तुपरिच्छेदवाला होवैगा। ता परिच्छिन्नताकी प्राप्तिरूप दोषकी निवृत्ति वासतै सो सत् वस्तु ज्ञानरूप स्फुरणतैं अभिन्न है यह दूसरा पक्ष अंगीकार करणा होवैगा। और जैसे 'अयं सर्पः' या प्रतीतिकरिकै रज्जुविषे जो सर्पका अभेद प्रतीत होवै है सो अभेद वास्तवतैं है नहीं किंतु सो अभेद आध्यासिक है। तैसे ता सत् वस्तुविषे ज्ञानरूप स्फुरणका जो आध्यासिक अभेद अंगीकार करौंगे तौ ता ज्ञानरूप स्फुरणतैं वास्तवतैं भिन्न हुआ सो सत् वस्तु घटादिक पदार्थोंकी न्यांई जड होवैगा। यातैं ता जडता दोषकी निवृत्ति वासतै ता सत् वस्तुविषे ज्ञानरूप स्फुरणका वास्तव अभेद अंगीकार करणा होवैगा। ता वास्तव अभेदके अंगीकार किये हुएभी ता सत् वस्तुविषे पुनः देशकालवस्तुपरिच्छेदकी प्राप्ति होवैगी। काहेतैं हमारेविषे पूर्वला घटका ज्ञान नाश हुआ है अबी पटका ज्ञान उत्पन्न भया है। या प्रकारकी प्रतीति सर्व लोकोंकूं होवै है। ता प्र-

तीतितैं ज्ञानरूप स्फुरणका उत्पत्ति तथा नाश सिद्ध होवै है । और 'अहं। घटं जानामि' अर्थ यह मैं घटकूं जानता हूं या प्रकारकी प्रतीतिभी सर्व लोकोंकूं होवै है । या प्रतीतितैं अहंशब्दके अर्थविषे ता ज्ञानरूप स्फुरणकी आश्रयता सिद्ध होवै है । और घटविषे ता ज्ञानरूप स्फुरणकी विषयता सिद्ध होवै है । यातैं सो ज्ञानरूप स्फुरण देशकालवस्तुपरिच्छेदवालाही सिद्ध होवै है । ऐसे परिच्छिन्न ज्ञानरूप स्फुरणतैं जबी ता सत् वस्तुका वास्तवतैं अभेद हुआ । तबी ता सत् वस्तुविषेभी सो देशकालवस्तुपरिच्छेद प्राप्त होवैगा यातैं सो सत् वस्तु देशकालवस्तुपरिच्छेदतैं रहित है यह आपका वचन संभवता नहीं । ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् कहे हैं ।

(मू. श्लो.) अविनाशि तु तद्विद्धि येन सर्वमिदं ततं । विनाशमव्ययस्यास्य न कश्चित्कर्तुमर्हति ॥ १७ ॥ (पदच्छेदः) अविनाशि । तु । तत् । विद्धि । येन । सर्वं । इदं । ततं । विनाशं । अव्ययस्य अस्य । न । कश्चित् । कर्तुं । अर्हति ॥ १७ ॥ (पदार्थः) हे अर्जुन जिसें सतरूप स्फुरणनैं यह सर्व दृश्यप्रपंच व्याप्त करा है । तिसें सतरूप स्फुरणकूं तूं परिच्छेदरूप विनाशतैं रहित ही जान जिस कारणतैं इसें अपरिच्छिन्न सतरूप स्फुरणका परिच्छिन्नतारूप विनाशकूं कोईभी करणेकूं नहीं समर्थ है ॥१७॥

टीका । देशकृत परिच्छेद, कालकृत परिच्छेद, वस्तुकृत परिच्छेद या तीन प्रकारके परिच्छेदोंका नाम विनाश है । सो विनाश जिसकूं प्राप्त होवै है ताका नाम विनाशि है ऐसे परिच्छिन्न पदार्थ हैं । तिन विनाशि पदार्थोंतैं जो विलक्षण होवै ताका नाम अविनाशि है क्या तीन प्रकारके परिच्छेदतैं रहित वस्तुका नाम अविनाशि है । हे अर्जुन ता सत वस्तुरूप स्फुरणकूं तूं इस प्रकारका अविनाशि जान । कैसा है सो सत् वस्तुरूप स्फुरण । जिस एक अद्वितीय नित्य विभुरूप स्फुरणनैं स्वतः सत्तास्फूर्त्तितैं रहित यह सर्व दृश्य प्रपंच व्याप्त करा है । जैसे रज्जुरूप अधिष्ठाननैं अपणे इदमअंशकरिकै कल्पित सर्प, दंड, जलधारादिक व्याप्त करीते हैं । तैसे जिस सत् वस्तुरूप स्फुरणनैं अपणी सत्तास्फूर्तिके अध्यासकरिकै यह सर्व दृश्यप्रपंच व्याप्त करा है । ऐसे सत् वस्तुरूप स्फुरणकूं तूं परिच्छिन्नतारूप विनाशतैं रहितही जान । काहेतैं परिच्छेदरूप नाशतैं रहित तथा सर्वदा अपरोक्षरूप ऐसा जो सर्वत्र व्यापक सतरूप स्फुरण है ता सत् वस्तुरूप स्फुरणके परिच्छिन्नतारूप विनाशकूं कोई आश्रय अथवा कोई विषय अथवा कोई इंद्रिय अर्थका संबंधरूप हेतु करणेविषे समर्थ होवै नहीं । काहेतैं कल्पित वस्तु अकल्पित वस्तुके परिच्छेदकूं करि सकै नहीं । जैसे रज्जुविषे कल्पित सर्प दंडादिक अकल्पित रज्जुके

परिच्छेदकूं करि सकै नहीं तैसे सत् वस्तुरूप स्फुरणविषे कल्पित जो विषय इंद्रियादिक हैं ते विषय इंद्रियादिक ता अकल्पित स्फुरणके परिच्छेदकूं करि सकै नहीं और जो वादी ता सत् वस्तुरूप स्फुरणविषे परिच्छिन्नपणेका आरोप अंगीकार करै सो औपाधिक परिच्छिन्नपणा हमारेकूंभी अंगीकार है। परंतु ता स्फुरणविषे वास्तवतैं परिच्छिन्नपणा है नहीं। किंवा। 'अहं घटं जानामि'। अर्थ यह। मैं घटकूं जानता हूं या ज्ञानविषे अहंकार तौ आश्रयरूपकरिकै प्रतीत होवै है। और घट विषयरूपकरिकै प्रतीत होवै है। और उत्पत्तिनाशवाली कोई अंतःकरणकी वृत्ति तौ सर्वत्र व्यापक सत्‌रूप स्फुरणके अभिव्यंजकतारूपकरिकै प्रतीत होवै है। ता अभिव्यंजकवृत्तिरूप उपाधिके उत्पत्तिनाशकरिकैही ता वृत्ति उपहित सत्‌रूप स्फुरणविषे उत्पत्ति नाश प्रतीत होवै है। वास्तवतैं ता सत्‌रूप स्फुरणका उत्पत्तिनाश होवै नहीं। अथवा। आत्मा मनका संयोग ज्ञानका कारण होवै है यह नैयायिकोंनैंभी अंगीकार करा है। ता संयोगरूप उपाधिके उत्पत्तिनाशकरिकैही ता संयोगउपहित सत्‌रूप स्फुरणविषे सो उत्पत्तिनाश प्रतीत होवै है। वास्तवतैं ता स्फुरणका उत्पत्तिनाश होवै नहीं। जैसे मीमांसकोंके मतविषे स्वभावतैं उत्पत्तिनाशतैं रहित जो वर्णात्मक शब्द है। ता शब्दविषे ध्वनिरूप उपाधिके उत्पत्तिनाशका आरोप होवै है। और जैसे नैयायिकोंके मतविषे वास्तवतैं उत्पत्तिनाशतैं रहित जो आकाश है ता आकाशविषे घटरूप उपाधिके उत्पत्तिनाशका आरोप होवै है। तैसे वेदांतसिद्धांतविषेभी वास्तवतैं उत्पत्तिनाशतैं रहित जो ज्ञानरूप स्फुरण है ता स्फुरणविषे अंतःकरणकी वृत्तिरूप उपाधिके उत्पत्तिनाशका आरोप होवै है। अथवा आत्मामनका संयोगरूप उपाधिके उत्पत्तिनाशका ता स्फुरणविषे आरोप होवै है। वास्तवतैं ता सत्‌वस्तुरूप स्फुरणका उत्पत्ति नाश होवै नहीं। और यद्यपि ता सत्‌वस्तुरूप स्फुरणविषे यह अहंकार कल्पित है। यातैं ता कल्पित अहंकारविषे ता स्फुरणकी आश्रयता संभवै नहीं। तथापि ता अहंकारकी वृत्तिके साथि ता स्फुरणका तादात्म्य अध्यास है। या कारणतैं ता वृत्तिके आश्रयरूप अहंकारके आश्रित हुआ सो स्फुरण प्रतीत होवै है। वास्तवतैं सो अहंकार ता स्फुरणका आश्रय नहीं है। काहेतैं सुषुप्ति अवस्थाविषे ता अहंकारके अभाव हुएभी ता अहंकारके सूक्ष्म वासनायुक्त अज्ञानकूं प्रकाश करणेहारा चैतन्य स्वतःही स्फुरण होवै है। जो कदाचित् सुषुप्ति अवस्थाविषे सो चैतन्य स्वतः स्फुरणरूप नहीं होवै। तौ इतनै कालपर्यंत मैं किंचित्मात्रभी नहीं जानता भया या प्रकारका अज्ञानविषयक स्मरण जो सुषुप्तितैं उठे हुए पुरुषकूं होवै है सो नहीं होणा चाहिये। और या प्रकारका स्मरण तौ सर्व पुरुषोंकूं होवै है। यातैं यह जान्या जावै है। सुषुप्ति अवस्थाविषे अज्ञानकूं प्रकाश करणेहारा चैतन्य स्वतः स्फुरणरूप है ता स्फुरणरूप अनुभवकरिकैही जाग्रत अवस्थाविषे सो अज्ञानविषयक स्मरण होवै है। किंवा। केवल जाग्रत् अवस्थाके स्मरणकी अनुपपत्तितैंही सुषुप्ति अवस्थाविषे

चैतन्यरूप स्फुरणकी सिद्धि नहीं होवै है । किंतु साक्षात् श्रुतिप्रमाणकरिकैभी ता ज्ञानरूप स्फुरणकी सिद्धि होवै है । तहां श्रुति । "यद्वैतन्न पश्यति पश्यन्वैतद्द्रष्टव्यं न पश्यति नहि द्रष्टुर्दृष्टेर्विपरिलोपो विद्यतेऽविनाशित्वात्" । अर्थ यह । सुषुप्ति अवस्थाविषे यह आत्मादेव द्वैतप्रपंचकूं जो नहीं देखता है सो अपणे चैतन्यरूप स्फुरणके अभाव हुएतैं नहीं देखता है यह वार्त्ता कही जावै नहीं । किंतु ता सुषुप्ति अवस्थाविषे यह आत्मादेव अपणे चैतन्यरूप स्फुरणकरिकै देखता हुआभी तहां द्वैतप्रपंचका अभाव होणेतैं ता द्वैतप्रपंचकूं देखता नहीं । काहेतैं ता द्रष्टा आत्माका स्वरूपभूत जो स्फुरणरूप दृष्टि है सा दृष्टि नाशतैं रहित है यातैं ता स्फुरणरूप दृष्टिका किसीभी अवस्थाविषे अभाव होवै नहीं इति । यह श्रुति सुषुप्तिअवस्थाविषे स्वप्रकाशरूप स्फुरणके सद्भावकूं तथा नित्यताकूं कथन करे है । किंवा । जैसे अहंकारादिक ता ज्ञानरूप स्फुरणविषे कल्पित हे । तैसे घटादिक विषयोंके अज्ञात अवस्थाकूं प्रकाश करणेहारा जो सत् वस्तुरूप स्फुरण है ता स्फुरणविषे ते घटादिक विषयभी कल्पित हैं । काहेतैं जो घट हमनैं पूर्व नहीं जान्या था सोईही घट अबी हमनैं जान्या है । या प्रकारके अनुभवकरिकैही सा घटकी अज्ञात अवस्था सिद्ध होवै है । और जो ज्ञान अज्ञात वस्तुका प्रकाश करे है सो ज्ञानही प्रमाज्ञान होवै है । या प्रकार अज्ञात अर्थका ज्ञापकत्वरूप प्रमाज्ञानका लक्षण सर्व शास्त्रवाले अंगीकार करे हैं । या कारणतैंही नैयायिकोंनैं 'यथार्थानुभवः प्रमा' या प्रमाके लक्षणविषे पूर्वज्ञात अर्थकूं विषय करणेहारी स्मृतिके निवारण करणेवासतै अनुभव यह पद कथन करा है । तहां घटादिक विषयोंविषे जो अज्ञातपणा है सो अज्ञातपणा नेत्रादिक इंद्रियोंकरिकै जान्या जावै नहीं । काहेतैं ता अज्ञातपणेके जानणेविषे नेत्रादिक इंद्रियोंका सामर्थ्य है नहीं । और सो घटादिकोंका अज्ञातपणा अनुमानप्रमाणकरिकैभी जान्या जावै नहीं । काहेतैं जैसे पर्वतविषे स्थित अग्निके जनावणेहारा धूमरूप लिंग होवै है । तैसे ता अज्ञातपणेके जनावणेहारा कोई लिंग है नहीं । तहां जो वादी ता अज्ञातपणेकी सिद्धिवासतै या प्रकारका अनुमान करै । यह घट पूर्व अज्ञात था इदानीं कालविषे ज्ञात होणेतैं । सो या प्रकारके अनुमानकरिकैभी सो घटका अज्ञातपणा सिद्ध होवै नहीं । काहेतैं जहां एकही घटविषे व्यवधानतैं रहित 'अयं घटः, अयं घटः' या प्रकारके अनेक ज्ञान होवै हैं । तहां प्रथम ज्ञानकूं छोडिकै द्वितीय तृतीय आदिक ज्ञानोंका विषय जो घट है ता घटविषे इदानीं कालविषे ज्ञातपणारूप हेतु तौ रहे है । परंतु पूर्व अज्ञातपणारूप साध्य रहै नहीं । काहेतैं ता स्थलविषे पूर्वपूर्व ज्ञानकरिकै ज्ञात घटकूंही उत्तर उत्तर ज्ञान विषय करे हैं । यातैं साध्यके अभाववाले घटविषे रहणेहारा सो हेतु व्यभिचारी है । ता व्यभिचारी हेतुतैं पूर्व अज्ञातत्वरूप साध्यकी सिद्धि होइ सकै नहीं । किंवा । इदानीं ज्ञातत्वरूप हेतुका पूर्व अज्ञातत्वरूप साध्यतैं भेद सिद्ध होवै नहीं ।

काहेतैं जो पूर्व अज्ञात हुआ इदानीं कालविषे ज्ञात होवै है ताकूंही इदानीं कालविषे ज्ञात कहे हैं। और जो हेतु अपणे साध्यतैं अभिन्न होवै है। सो हेतु सिद्धसाधनतादोषवाला होवै है। या कारणतैंभी ता दुष्ट हेतुतैं अज्ञातत्वरूप साध्यकी सिद्धि होवै नहीं। किंवा। घटादिकोंकी अज्ञात अवस्थाके ज्ञानतैं विना तिन घटादिकोंविषे स्वविषयक प्रत्यक्षज्ञानके प्रति कारणता ग्रहण करी जावै नहीं। काहेतैं जिस वस्तुविषे जिस कार्यतैं नियमकरिकै पूर्ववर्त्तिपणेका ज्ञान होवै है। तिसी वस्तुविषे ता कार्यकी कारणता ग्रहण करी जावै है। जैसे मृत्तिकाविषे घटरूप कार्यतैं पूर्ववर्त्तिपणेके ज्ञान हुएतैं अनंतरही ता मृत्तिकाविषे घटके कारणताका ज्ञान होवै है। पूर्ववर्त्तिपणेके ज्ञानतैं विना कारणताका ज्ञान होवै नहीं। यातैं ता घटके प्रत्यक्षज्ञानतैं पूर्व ता घटके अज्ञात अवस्थाका ज्ञान अवश्य अंगीकार करा चाहिये। किंवा। ता घटके अज्ञात अवस्थाका ज्ञान जो नहीं होता होवै। तौ मैं घटकूं नहीं जानता हूं या प्रकारके सर्व लोकोंके अनुभवका विरोध होवैगा। यातैं यह अर्थ सिद्ध भया। अज्ञातरूप स्फुरण अपणे स्वयंज्योतिरूपकरिकै प्रकाशमान हुआ अपणेविषे कल्पित घटादिक पदार्थोंकूंभी प्रकाश करे है। यातैं ता अज्ञातरूप स्फुरणविषेही तिन घटादिक पदार्थोंका कल्पितपणा सिद्ध होवै है। जो कदाचित् सो अज्ञातरूप स्फुरण तिन घटादिक पदार्थोंकूं प्रकाश नहीं करता होवै। तौ तिन घटादिक पदार्थोंकूं स्वभावतैं जड होणेतैं तिन घटादिकोंका अज्ञातपणा तथा ता अज्ञातपणेका ज्ञान दोनों नहीं सिद्ध होवैंगे। और ता सत् वस्तुरूप स्फुरणविषे जो अज्ञातपणा है सो अपणेविषे कल्पित अज्ञानकरिकैही है। यह वार्त्ता (अज्ञानेनावृतं ज्ञानं तेन मुह्यंति जंतवः) या वचनकरिकै श्रीभगवान् आपही आगे कहैंगे। इतनै कहणेकरिकै ता सत् वस्तुरूप स्फुरणविषे विभुपणा सिद्ध करा। तहां श्रुति। "महद्भूतमनंतमपारं विज्ञानघन एवेति सत्यं ज्ञानमनंतं ब्रह्म इति"। अर्थ यह। सो सत् वस्तुरूप स्फुरण महान्‌रूप है तथा अनंत है तथा अपार है तथा विज्ञानघन है तथा सत्य है तथा ज्ञानरूप है तथा अनंत है इति। यह श्रुति ता सत् वस्तुरूप स्फुरणविषे महत्पणा तथा अनंतपणा कथन करे है। तहां ता ज्ञानरूप स्फुरणविषे कल्पित जो यह सर्व जगत्है ता सर्व जगत्‌के साथि ता स्फुरणका जो कल्पित तादात्म्यसंबंध है यहही ता स्फुरणविषे महत्पणा है। और देशकालवस्तुपरिच्छेदतैं जो रहितपणा है यहही ता स्फुरणविषे अनंतपणा है। इतनै कहणेकरिकै शून्यवादीयोंका मतभी खंडन करा। काहेतैं अधिष्ठानवस्तुतैं विना कोईभी भ्रम होवै नहीं। तथा अधिष्ठानतैं विना ता भ्रमका बाधभी होवै नहीं। और शून्यवादीयोंके मतविषे कोई सत् वस्तु अधिष्ठानतैं है नहीं। यातैं तिनोंका मत असंगत है। तहां श्रुति। "पुरुषान्न परं किंचित्सा काष्ठा सा परागतिः"। अर्थ यह। स्वयंज्योतिरूप पुरुषतैं परे कोईभी वस्तु है नहीं। किंतु

सो स्वयंज्योतिपुरुषही या सर्व जगत्का अवधिरूप है तथा परा गतिरूप है इति । यह श्रुति सर्व जगत्के बाधका अवधिरूपकरिकै ता स्वयं-ज्योति पुरुषका कथन करे है । यह वार्त्ता भगवान् भाष्यकारोंनैंभी कथन करी है । " सर्वं विनश्यद्वस्तुजातं पुरुषांतं विनश्यति पुरुषो विनाशहेत्वभावान्न विनश्यति " । अर्थ यह । या स्थूल प्रपंचतैं आदिलैके अव्याकृतपर्यंत जितनै की नाशवान् वस्तु हैं ते सर्व वस्तु चैतन्यरूप पुरुषपर्यंत नाशकूं प्राप्त होवै हैं । और तिस पुरुषके नाश करणेहारा कोई कारण है नहीं । यातैं सो पुरुष नाशकूं प्राप्त होवै नहीं इति । इतनै कहणेकरिकै क्षणिक विज्ञानवादीयोंका मतभी खंडन करा । काहेतैं जो कदाचित् आत्मा क्षणिक होवै । तौ जो मैं बाल्य अवस्थाविषे अपणे मातापिताकूं अनुभव करता भया सोईही मैं अबी वृद्ध अवस्थाविषे ता मातापिताकूं स्मरण करता हूं या प्रकारका प्रत्यभिज्ञाज्ञान सर्व प्राणीयोंकूं होवै है सो नहीं होणा चाहिये । काहेतैं जो पुरुष जिस वस्तुकूं देखे है सोईही पुरुष कालांतरविषे तिस वस्तुकूं स्मरण करे है । अन्य पुरुषकरिकै देखी हुई वस्तुका अन्य पुरुषकूं स्मरण होवै नहीं । यातैं सो आत्मा क्षणिक नहीं । यातैं यह अर्थ सिद्ध भया । सर्वत्र व्यापक तथा एक अद्वितीयरूप जो स्वप्रकाश स्फुरणरूप सत् वस्तु है सो स्फुरणरूप सत् वस्तु पूर्व उक्त देशकालादिक सर्व परिच्छेदतैं रहित है । यातैं ता सत् वस्तुका अभाव कदाचित्भी नहीं होवै है । यह जो श्रीभगवान्नैं कह्या है सो यथार्थ कह्या है इति ॥ १७ ॥ ❀ ॥ शंका । पूर्व आपनैं स्फुरणरूप सत् वस्तुकूं अविनाशी कह्या । सो संभवता नहीं । काहेतैं जैसे पान, काथा, चूना, सुपारी, या चारोंका समुदायरूप जो तांबूल है तिस तांबूलविषे रक्तता उत्पन्न होवै है । तैसे पृथिवी, जल, तेज, वायु या चारि भूतोंका समुदायरूप जो यह स्थूल शरीर है ता स्थूल शरीरविषे एक चैतन्यताधर्म उत्पन्न होवै है । यातैं सो चैतन्यरूप स्फुरण या स्थूल शरीरकाही धर्म है । और यह स्थूल शरीर तौ क्षणक्षणविषे नाशकूं प्राप्त होवै है । यातैं ता शरीररूप धर्मीके नाश हुए । ता ज्ञानरूप स्फुरणकाभी अवश्यकरिकै नाश होवै गा । या प्रकारकी भूतचैतन्यवादीयोंकी शंकाके हुए तिन भूतचैतन्यवादीयोंके खंडन करणेवासतै श्रीभगवान् (नासतो विद्यते भावो) या पूर्व कहे हुए वचनका अर्थ अबी विस्तारतैं निरूपण करे हैं ।

(मू. श्लो.) अंतवंत इमे देहा नित्यस्योक्ताः शरीरिणः । अनाशिनोऽप्रमेयस्य तस्माद्युध्यस्व भारत ॥१८॥ (पदच्छेदः) अंतवंतः । इमे । देहाः । नित्यस्य । उक्ताः । शरीरिणः । अनाशिनः अप्रमेयस्य तस्मात् । युध्यस्व । भारत ॥ १८ ॥ (पदार्थः) हे भारत

नित्य तथा शरीररूप उपाधिवाला तथा नाशतैं रहित तथा प्रमेयभावतैं रहित ऐसा जो स्फुरणरूप आत्मा है ता एक आ-त्माकेही यह नाशवाँन् सर्व देह कथन करे हैं तिसं कारणतैं तूं युद्ध कर ॥ १८ ॥

टीका । वृद्धिक्षयवाले होणेतैं शरीर नामकरिकै प्रसिद्ध तथा नाशरूप अंतवाले जो यह प्रत्यक्ष देह हैं । इहां (देहाः) या बहुवचनकरिकै स्थूल सूक्ष्म कारणरूप जितने की विराट् सूत्र अव्याकृत नामा समष्टि व्यष्टि शरीर हैं तिन सर्व शरीरोंका ग्रहण करणा । और नित्य तथा विनाशतैं रहित तथा आध्यासिकसंबंधकरिकै शरीरवाला ऐसा जो स्वप्रकाश स्फुरणरूप आत्मा है । ता एकही आत्माके ते स्थूल सूक्ष्म कारणरूप सर्व शरीर दृश्यरूप हैं तथा भोगरूप हैं । यातैं श्रुतिभगवतीनैं तथा ब्रह्मवेत्ता पुरुषोंनैं ते सर्व देह दृश्यत्वरूपकरिकै तथा भोग्यत्वरूपकरिकै ता एकही आत्माके संबंधी कथन करे हैं । तहां तैत्तिरीयक श्रुतिविषे अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय, आनंदमय या पंच कोशोंकी कल्पना करिकै तिन सर्व कोशोंका अधिष्ठानरूप तथा अकल्पित पुच्छप्रतिष्ठारूप ब्रह्म कथन करा है । तहां पंचीकृत पंचमहाभूत जो हैं तथा तिन पंचमहाभूतोंका कार्यरूप जो सर्व मूर्तपदार्थोंका समुदायरूप विराट् है । सो अन्नमयकोश है । यह स्थूल समष्टि है । और ता स्थूल समष्टिका कारणरूप जो अपंचीकृत पंचमहाभूत हैं तथा तिन अपंचीकृत भूतोंका कार्यरूप जो सर्व अमूर्त्तपदार्थोंका समुदायरूप सूत्रनामा हिरण्यगर्भ है सो सूक्ष्म समष्टि है । तहां "त्रयं वा इदं नामरूपं कर्मेति" या बृहदारण्यक उपनिषद्की श्रुतिनैं ता सूक्ष्म समष्टिकूं नाम, रूप, कर्म यह तीन रूप कह्या है । तहां सो सूक्ष्म समष्टि अपणेविषे स्थित कर्मरूपताकरिकै जबी क्रियाशक्तिमात्रकूं ग्रहण करे है तबी प्राणमय संज्ञाकूं प्राप्त होवै है । और सो सूक्ष्म समष्टि अपणेविषे स्थित नामरूपताकरिकै जबी ज्ञानशक्तिमात्रकूं ग्रहण करे है तबी मनोमय संज्ञाकूं प्राप्त होवै है । और सो सूक्ष्म समष्टि अपणेविषे स्थितरूप स्वरूपताकरिकै तिस क्रियानाम दोनोंका आश्रय होणेतैं जबी कर्तृत्वमात्रकूं ग्रहण करै है तबी विज्ञानमय संज्ञाकूं प्राप्त होवै है । या प्रकार सो एकही हिरण्यगर्भ नामा लिंगशरीररूप कोश प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय यह तीन कोशरूप होवै है । और ता हिरण्यगर्भरूप लिंगशरीरकाभी कारणरूप तथा सर्व प्रपंचके वासनारूप संस्कारोंका आश्रयरूप ऐसा जो अव्याकृत नामा मायाउपहितचैतन्य आत्मा है सो आनंदमयकोश है । ते अन्नमयादिक सर्व एकही आत्माके शरीर श्रुतिनैं कहे हैं । तहां श्रुति । "तस्यैष एव शारीर आत्मा यः पूर्वस्येति" । अर्थ यह । पूर्व अन्नमयकोशका जो सत्यज्ञान अनंतरूप शारीर आत्मा कथन करा है ।

तिस प्राणमयकोशकाभी सोईही शारीरआत्मा है। शरीरविषे जो विद्यमान होवै ताका नाम शारीर है इति। या प्रकारका श्रुतिवचन मनोमय, विज्ञानमय, आनंदमय या तीन कोशोंविषेभी जानि लेणा। यह पंचकोशोंकी प्रक्रिया आतमपुराणके दशम अध्यायविषे हम विस्तारतैं कथन करि आये हैं। अथवा (अंतवंत इमे देहाः) या श्लोकके पदोंकी या प्रकारतैं योजना करणी। तीन लोकविषे वर्त्तमान सर्व प्राणीयोंके संबंधी जो स्थावरजंगमरूप देह हैं ते सर्व देह एकही स्वयंज्योति आत्माके श्रुतिनैं कथन करे हैं। तहां श्रुति। "एको देवः सर्वभूतेषु गूढः सर्वव्यापी सर्वभूतांतरात्मा। कर्माध्यक्षः सर्वभूताधिवासः साक्षी चेता केवलो निर्गुणश्च"। अर्थ यह। एक अद्वितीय आत्मादेव सर्व शरीरोंविषे गूढ होइकै स्थित है तथा सर्वव्यापी है तथा सर्व भूतोंका अंतरआत्मा है तथा पुण्यपापरूप कर्मोंका फलप्रदाता है। तथा सर्व भूतोंका अधिष्ठान है तथा बुद्धि आदिक सर्व संघातका साक्षी है तथा चैतन्यरूप है तथा अद्वितीयरूप है तथा निर्गुण है तथा निष्क्रिय है इति। यह श्रुति स्थावरजंगमरूप सर्व शरीरोंके संबंधवाले एक नित्य विभु आत्माकूं कथन करे है। शंका। हे भगवन् जितनैपर्यंत यह काल रहे है तितनैपर्यंत स्थायि होणा याका नाम नित्यपणा है। सो यह नित्यपणा कालके साथि आत्माका नाश अंगीकार किये हुएभी अविद्यादिकोंकी न्यांई ता आत्माविषे संभव होइ सकै है। ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् कहे हैं। (अनाशिनः इति) हे अर्जुन देशकालवस्तुपरिच्छेदवाले जो अविद्यादिक हैं। ते अविद्यादिक अधिष्ठान आत्माविषे कल्पित होणेतैं यद्यपि अनित्य हैं। तथापि तिन अविद्यादिकोंविषे सो यावत्काल स्थायित्वरूप गौण नित्यपणा प्रतीत होवै है। तीन कालविषे अबाध्यत्वरूप मुख्य नित्यत्व तिन अविद्यादिकोंविषे है नहीं। और देशकालवस्तुपरिच्छेदतैं रहित होणेतैं अकल्पित जो आत्मा है ता आत्माके नाशका कोई कारण है नहीं। यातैं ता आत्माविषे मुख्यही कूटस्थरूप नित्यत्व है। अविद्यादिकोंकी न्यांई परिणामिरूप नित्यत्व तथा यावत्कालस्थायित्वरूप नित्यत्व ता आत्माविषे है नहीं। शंका। ऐसे सर्व देहोंके संबंधवाले चैतन्य आत्माविषे कोई प्रमाण है अथवा नहीं है। तहां ता चैतन्य आत्माविषे कोई प्रमाण नहीं है यह द्वितीय पक्ष तौ संभवै नहीं। काहेतैं जो वस्तु किसी प्रमाणजन्य ज्ञानका विषय नहीं होवै है। सो वस्तु असत्यही होवै है। जैसे वंध्यापुत्र तथा शशशृंग किसी प्रमाणजन्य ज्ञानके विषय नहीं हैं यातैं असत्यही हैं। तैसे प्रमाणजन्य ज्ञानका अविषय होणेतैं सो चैतन्य आत्माभी असत्यही होवैगा। तथा ता आत्माके साक्षात्कारवासतै जो शास्त्रका आरंभ है सोभी व्यर्थही होवैगा। इत्यादिक सर्व दोषोंकी निवृत्ति करणेवासतै ता देही आत्माविषे कोई प्रमाण है यह प्रथम पक्ष अवश्यकरिकै अंगीकार करणा होवैगा। किंवा। 'शास्त्रयोनित्वात्' या सूत्रके व्याख्यानविषे भगवान् भाष्यकारोंनैंभी

ता आत्माकी सिद्धिविषे एक उपनिषत्‌रूप शास्त्रही प्रमाण कह्या है। तथा "तं त्वौपनिषदं पुरुषं पृच्छामि" या श्रुतिनैंभी ता आत्माकी सिद्धिविषे उपनिषद्‌रूप प्रमाण कथन करा है। यातैं प्रमाणका विषय होणेतैं ता चैतन्यरूप आत्माविषे सो भेदरूप वस्तुपरिच्छेद अवश्यकरिकै प्राप्त होवैगा। ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् कहे हैं। (अप्रमेयस्येति) हे अर्जुन जैसे घटपटादिक सर्व पदार्थोंकूं प्रकाश करणेहारा जो सूर्य भगवान् है ता सूर्यभगवान्‌कूं अपणे प्रकाशवासतै घटादिक पदार्थोंकी अपेक्षा होवै नहीं। तैसे प्रमाणप्रमेयादिक सर्व जगत्‌कूं प्रकाश करणेहारा जो स्वप्रकाश चैतन्यरूप आत्मा है ता चैतन्य आत्माकूं अपणे प्रकाश करणेवासतै प्रमाणादिकोंकी अपेक्षा होवै नहीं। या कारणतैं सो आत्मादेव अप्रमेय है। तहां श्रुति। "एकधैवानुद्रष्टव्यमेतदप्रमेयं ध्रुवमप्रमेयं न तत्र सूर्यो भाति न चंद्रतारकं नेमाविद्युतो भांति कुतोयमग्निः तमेव भातमनुभाति सर्वं तस्य भासा सर्वमिदं विभाति येनेदं सर्वं विजानाति तं केन विजानीयात् विज्ञातारमरे केन विजानीयात्"। अर्थ यह। यह चैतन्यआत्मा एक प्रकारकरिकैही देखणे योग्य है तथा यह आत्मादेव अप्रमेय है तथा कूटस्थ है तथा अप्रमेय है। और ता स्वयंज्योति आत्माविषे सूर्यभी प्रकाश करै नहीं तथा चंद्रमा तारागणभी प्रकाश करै नहीं तथा विद्युत्‌भी प्रकाश करै नहीं तथा यह अग्निभी प्रकाश करै नहीं और ता स्वयंज्योति आत्माके प्रकाशकूं आश्रयणकरिकैही पश्चात् यह सूर्यचंद्रमादिक सर्व पदार्थ प्रतीत होवै हैं। तथा ता आत्मादेवके स्वयंज्योतिप्रकाशकरिकैही यह सूर्यचंद्रमादिक सर्व जगत् प्रकाशमान होवै है। और जिस स्वयंज्योति आत्माकरिकै यह लोक या सर्व पदार्थोंकूं जाने हैं। तिस सर्वके द्रष्टा विज्ञाता आत्माकूं यह जीव किस प्रमाणकरिकै जानि सकैगा। किंतु किसीभी प्रमाणकरिकै जानि सकै नहीं इति। ऐसे स्वयंज्योति आत्माकूं अपणे प्रकाशवासतै किसीभी प्रमाणकी अपेक्षा है नहीं। किंतु अपणेविषे कल्पित जो अज्ञान है तथा ता अज्ञानका कार्य है ता कार्यसहित अज्ञानकी निवृत्तिवासतै ता स्वयंज्योति आत्माकूं कल्पित वृत्तिविशेषकी अपेक्षा है। काहेतैं जैसा यक्ष होवै तैसाही तिसका बलि होवै है। या शास्त्रके न्यायतैं कल्पित वस्तुका कल्पित वस्तुही विरोधी सिद्ध होवै है। यातैं कल्पित अंतःकरणकी वृत्तिकरिकै कल्पित कार्यसहित अज्ञानकी निवृत्ति संभवै है। और कल्पित सर्व प्रपंचकी निवृत्ति करणेहारी सा अंतःकरणकी वृत्तिविशेष केवल तत्त्वमसि आदिक वाक्यमात्रतैंही उत्पन्न होवै है। प्रत्यक्षादिक प्रमाणोंकरिकै उत्पन्न होवै नहीं। यातैं ता वृत्तिविशेषकी उत्पत्तिवासतै शास्त्रका आरंभभी सफल है। और सो चैतन्यस्वरूप आत्मादेव सर्व कालविषे स्वतःही प्रकाशमान है तथा सर्व कल्पनाका अधिष्ठान है तथा सर्व दृश्यप्रपंचका प्रकाशक है। ऐसे स्वप्रकाश अधिष्ठान आत्माविषे वंध्यापुत्र शशशृंगादिकोंकी न्यांई असत्यरूपता संभवै

नहीं । और "एकमेवाद्वितीयं सत्यं ज्ञानमनंतं ब्रह्म" इत्यादिक शास्त्र अद्वितीय ब्रह्मतैं भिन्न सर्व जगत्‌विषे कल्पितपणेकूं कथन करता हुआ अपणेविषेभी कल्पितरूपताकूं बोधन करे है । जो कदाचित् सो शास्त्र अपणेविषे कल्पितपणेकूं नहीं बोधन करैगा । तौ सो शास्त्र सद्वितीयब्रह्मकूं अद्वितीयरूपकरिकै बोधन करता हुआ आपही अप्रमाणरूप होवैगा । और कल्पित वस्तु अकल्पित वस्तुके परिच्छेदकूं करै नहीं यह वार्त्ता पूर्व कथन करि आये हैं । यातैं ता स्वप्रकाश आत्माविषे भेदरूप वस्तुपरिच्छेदकीभी प्राप्ति होवै नहीं । किंवा । सर्व कालविषे आत्माकी स्वप्रकाशता केवल श्रुतिप्रमाणकरिकैही सिद्ध नहीं है । किंतु भगवान् भाष्यकारोंनैं युक्तितैंभी सा आत्माकी स्वप्रकाशता सिद्ध करी है । सा युक्ति यह है । जिस पुरुषकूं जिस वस्तुविषे संशय, विपर्यय, व्यतिरेकप्रमा या तीनोंविषे एकभी नहीं होवै है । तिस पुरुषकूं तिस वस्तुविषे तिन संशयादिकोंका विरोधी ज्ञान अवश्यकरिकै होवै है । या प्रकारका नियम सर्वत्र देखणेविषे आवै है । जैसे जिस पुरुषकूं जिस घटविषे घट है अथवा नहीं है या प्रकारका संशय तथा घट नहीं है या प्रकारका विपर्यय तथा घट नहीं है या प्रकारकी व्यतिरेकप्रमा या तीनोंविषे एकभी नहीं होवै है । तिस पुरुषकूं तहां तिन संशयादिक तीनोंका विरोधी 'घटो अस्ति' या प्रकारका ज्ञान अवश्यकरिकै होवै है । जो कदाचित् सो विरोधी ज्ञान तहां नहीं होवै । तौ तिन संशयादिक तीनोंविषे कोई एक अवश्य होणा चाहिये । और आत्माविषे तौ किसीभी पुरुषकूं मैं हूं अथवा नहीं हूं या प्रकारका संशय तथा मैं नहीं हूं या प्रकारका विपर्यय तथा मैं नहीं हूं या प्रकारकी व्यतिरेकप्रमा या तीनोंविषे एकभी होवै नहीं । यातैं तिन सर्व पुरुषोंकूं सर्वकालविषे तिन संशयादिकोंका विरोधी आत्माके वास्तवस्वरूपका ज्ञान अवश्य कहणा होवैगा । जो कदाचित् सो आत्माके स्वरूपका ज्ञान नहीं होवै तौ तिन संशयादिक तीनोंविषे कोई एक अवश्य करिकै होणा चाहिये । और आत्माविषे ते संशयादिक होते नहीं । यातैं सो आत्मा सर्वकालविषे स्वप्रकाशरूप है इति । किंवा । वेदांतसिद्धांतविषे सो स्वप्रकाशज्ञान आत्माके आश्रित रहै नहीं । किंतु ता स्वप्रकाशज्ञानरूपही आत्मा है । जो कदाचित् आत्माकूं ता ज्ञानका आश्रय मानियें । तौ जो वस्तु जिस ज्ञानका आश्रयरूप कर्त्ता होवै है सोईही वस्तु तिस ज्ञानका विषयरूप कर्म होवै नहीं । किंतु ज्ञानका कर्त्ता तथा कर्म भिन्न भिन्न होवै है । यातैं ता ज्ञानकरिकै आत्माकी सिद्धि नहीं होवैगी । किंवा । आत्माकूं जो ज्ञानतैं भिन्न मानियें । तौ जो जो पदार्थ ज्ञानतैं भिन्न होवै है सो सो पदार्थ जडही होवै है । जैसे ज्ञानतैं भिन्न होणेतैं घटादिक पदार्थ जडरूप हैं । तैसे ज्ञानतैं भिन्न होणेतैं आत्माभी जडरूप होवैगा । और जो जो पदार्थ जड होवै है सो सो पदार्थ कल्पित होवै है । जैसे जड होणेतैं घटादिक पदार्थ कल्पित हैं । तैसे जड होणेतैं आत्माभी कल्पित होवैगा ।

आत्माके कल्पित हुए शून्यवादकी प्राप्ति होवैगी। यातैं आत्मा ज्ञानतैं भिन्न नहीं है। किंतु आत्मा स्वप्रकाशज्ञानस्वरूपही है। ऐसा स्वप्रकाश-ज्ञानस्वरूप हुआभी यह आत्मा अविद्यारूप उपाधिके संबंधतैं साक्षी कह्या जावै है। और वृत्तिमत् अंतःकरणरूप उपाधिके संबंधतैं प्रमाता कह्या जावै है। तिसी प्रमाताके यह चक्षु आदिक इंद्रिय करण होवै हैं। और सोईही प्रमाता तिन चक्षु आदिक इंद्रियोंद्वारा अंतःकरणके वृत्तिरूप परिणामके साथि बाह्य घटादिक पदार्थोंकूं व्याप्य करिकै तिन घटादिकोंके आकार होवै है। तिस अंतःकरणके एकही वृत्तिरूप परिणामविषे घटावच्छिन्न चैतन्य तथा अंतःकरणावच्छिन्न चैतन्य दोनों एकताभावकूं प्राप्त होवै हैं। जैसे गृहविषे घटके प्राप्त हुए ता गृहाकाशकी तथा घटाकाशकी एकता होवै है। तैसे वृत्तिरूप उपाधिके तथा घटरूप उपाधिके एकदेशविषे स्थित हुए ता वृत्तिउपहित चेतनकी तथा घटउपहित चेतनकी एकता होवै है। तिसतैं अनंतर सो घटावच्छिन्न चैतन्य प्रमाताचैतन्यके अभेदतैं अपणे अज्ञानकूं नाश करता हुआ अपरोक्ष होवै है। और अपणा उपाधिरूप जो घट है ता घटकूं अपणे तादात्म्य अध्यासतैं सो चैतन्य प्रकाश करे है। और अत्यंत स्वच्छ जो अंतःकरणकी परिणामरूप वृत्ति है ता वृत्तिकूं ता वृत्तिउपहित चैतन्य प्रकाश करे है। इस प्रकार अंतःकरण, वृत्ति, घट या तीनोंकी अपरोक्षता होवै है। 'अहं जानामि घटं' यह तीनोंके अपरोक्षताका आकार है। इस प्रकार अंतरबाहिर स्थित सर्व अनात्मपदार्थोंकूं प्रकाश करणेहारा चैतन्य यद्यपि एकरूप है। तथापि घटादिक बाह्य पदार्थोंके प्रकाश करणेविषे ता चैतन्यकूं अंतःकरणके वृत्तिकी अपेक्षा रहे है। या कारणतैंही ता चैतन्यविषे प्रमातापणा है। और अंतःकरणके तथा ता अंतःकरणकी वृत्तियोंके प्रकाश करणेविषे ता चैतन्यकूं किसी वृत्तिकी अपेक्षा है नहीं। या कारणतैंही ता चैतन्यविषे साक्षीरूपता है। जो कदाचित् सो चैतन्य अंतःकरणके वृत्तिकूं घटादिकोंकी न्यांई दूसरी वृत्तिकी अपेक्षाकरिकै प्रकाश करैगा। तौ ता दूसरी वृत्तिकूं तीसरी वृत्तिकी अपेक्षाकरिकै प्रकाश करैगा। ता तीसरी वृत्तिकूं चतुर्थ वृत्तिकरिकै प्रकाश करैगा। या प्रकार वृत्तियोंकी धारा माननेविषे अनवस्थादोषकी प्राप्ति होवैगी। यातैं सो साक्षी आत्मा अपणे स्वरूपतैंही अंतःकरणकूं तथा ताके वृत्तियोंकूं प्रकाश करे है। तिनोंके प्रकाशविषे वृत्तिकी अपेक्षा करै नहीं। यातैं यह अर्थ सिद्ध भया। जिस कारणतैं पूर्व उक्त श्रुतियुक्तियोंकरिकै यह स्वप्रकाश स्फुरणरूप आत्मा सर्वदा नित्य है तथा सर्वत्र व्यापक है तथा जन्ममरणरूप संसारतैं रहित है तथा सर्व पदार्थोंका प्रकाशक है तथा सर्वदा एकरूप है। तिस कारणतैं ऐसे अविनाशी आत्माके नाशकी शंका करिकै अपणे युद्धरूप धर्मविषे पूर्व प्रवृत्त हुए तुमारेकूं तिस युद्धतैं उपराम होणा योग्य नहीं है। या प्रकारका वचन श्रीभगवान् अर्जुनके प्रति कहे हैं। (तस्माद्युध्यस्व भारत इति) तात्पर्य यह।

स्वप्रकाशज्ञानरूप आत्मा तौ कदाचित्भी नाश होवै नहीं । और यह भीष्मद्रोणादिक शरीर तौ मिथ्यारूप हैं तथा अनित्य हैं । यातैं ते शरीर आपही नष्ट हुए जैसे हैं। ऐसे अनित्य शरीरोंके हननतैं निवृत्त होइकै तूं अपणे स्वधर्मकूं नाश मत कर इति । इहां (युध्यस्व) या वचनकरिकै भगवान्नैं अर्जुनके प्रति युद्धरूप कर्मका विधान नहीं करा । किंतु ता वचनकरिकै भगवान्नैं पूर्व प्राप्त युद्धका अनुवाद मात्र करा है । काहेतैं आत्मज्ञानके उपदेशप्रसंगमैं ता युद्धरूप धर्मकी विधि संभवै नहीं । किंतु भगवान्के उपदेशतैं विनाही सो अर्जुन पूर्व युद्धविषे प्रवृत्त हुआ था । परंतु शोकमोहके वशतैं सो अर्जुन ता युद्धतैं निवृत्त होता भया । सो शोकमोह भगवान्के उपदेशजन्य ज्ञानतैं निवृत्त होता भया । यातैं 'अपवादाऽपवादे उत्सर्गस्य स्थितिः' या न्यायकरिकै (युध्यस्व) यह भगवान्का वचन अनुवादरूपही है विधिरूप नहीं । इहां पूर्व प्राप्त युद्धका शोक मोह अपवाद है । और ता शोकमोहका विचारजन्य ज्ञान अपवाद है । ता शोकमोहरूप अपवादके विचारजन्य ज्ञानरूप अपवादके विद्यमान हुए तहां पूर्व प्राप्त युद्धरूप उत्सर्गकीही स्थिति होवै है । जैसे भोजन करणेविषे प्रवृत्त हुआ क्षुधावान् पुरुष किसी अशुद्धि आदिकोंकी शंकाकरिकै ता भोजनतैं निवृत्त होइ जावै । और कोई धर्मात्मा पुरुष ताके शंकाकी निवृत्ति करिकै ता पुरुषके प्रति तूं भोजन कर या प्रकारका वचन कहै । इहां तूं भोजन कर या प्रकारका वचन विधिरूप नहीं है । किंतु पूर्व प्राप्त भोजनका अनुवादरूप है । पूर्व अप्राप्त अर्थके बोधन करणेहारा वचनही विधिरूप होवै है । और कोईक ग्रंथकार तौ (युध्यस्व) या वचनकूं विधिरूप मानिकै मोक्षकी प्राप्तिविषे ज्ञान कर्म दोनोंका समुच्चय अंगीकार करे हैं । सो तिनोंका कहणा असंगत है । काहेतैं (युध्यस्व) या वचनतैं मोक्षकी प्राप्ति ज्ञान कर्म दोनोंके समुच्चयतैं होवै है यह अर्थ प्रतीत होवै नहीं । और ज्ञान कर्मका समुच्चय आगे विस्तारतैं खंडन करैंगे इति ॥ १८ ॥ ❀ ॥ शंका । हे भगवन् (अशोच्यानन्वशोचस्त्वं) इत्यादिक वचनोंकरिकै भीष्मद्रोणादिक बांधवोंके नाशजन्य शोकके निवृत्त हुएभी तिन भीष्मद्रोणादिकोंके नाश करणेतैं उत्पन्न होणेहारा जो पाप है ता पापके निवृत्त करणेका कोई उपाय है नहीं । और जो आप यह कहो जहां शोक नहीं होवै है तहां पापभी नहीं होवै है। सो यह नियम संभवता नहीं । काहेतैं किसी पुरुषनैं अपणे शत्रु ब्राह्मणका हनन करा । तहां ता शत्रु ब्राह्मणके हनन करणेविषे ता पुरुषकूं शोक तौ होवै नहीं । यातैं ता पुरुषकूं ता ब्रह्महत्याजन्य पापभी नहीं होणा चाहिये । और शोकके नहीं हुएभी ता पुरुषकूं पाप तौ अवश्यकरिकै होवै है । यातैं भीष्मद्रोणादिकोंकूं हनन कर्त्ता जो मैं अर्जुन हूं तथा तिनोंके हनन करणेविषे हमारेकूं प्रेरणा करणेहारे जो आप हो तिन हम दोनोंकूंही ता बांधवोंकी हिंसातैं पाप अवश्यकरिकै होवैगा । यातैं तूं युद्ध कर यह जो वचन पूर्व आपनैं कथन करा

है सो असंगत है। ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् कठवल्लीउपनिषद्‌के मंत्रकरिकै ता शंकाकी निवृत्ति करे हैं।

(मू. श्लो.) य एनं वेत्ति हंतारं यश्चैनं मन्यते हतं। उभौ तौ न विजानीतो नायं हंति न हन्यते ॥ १९ ॥ (पदच्छेदः) यः। एनं। वेत्ति। हंतारं। यः। च। एनं। मन्यते। हतं। उभौ। तौ। न। विजानीतः। न। अयं। हंति। न। हन्यते ॥ १९ ॥ (पदार्थः) हे अर्जुन जो पुरुष इस आत्माकूं हननकर्त्ता जाने है तथा जो पुरुष इस आत्माकूं हनन हुआ माने है ते दोनों पुरुष आत्माकूं नहीं जानते हैं काहेतैं यह आत्मा किसीकूंभी नहीं हनन करे है तथा आपभी नहीं हननकूं प्राप्त होवै है ॥ १९ ॥

टीका। हे अर्जुन पूर्व हमनैं कथन करा जो अविनाशी अप्रमेयरूप देही आत्मा है। ता आत्माकूं जो पुरुष मैं इस वस्तुका हनन करणेहारा हूं या प्रकार हननरूप क्रियाका कर्त्ता जाने है। और जो पुरुष इस आत्मादेवकूं देहके हनन करिकै मैं हनन हुआ हूं या प्रकार हननक्रियाका कर्मरूप जाने है। ते दोनों पुरुष देहाभिमानि होणेतैं कर्त्ताकर्मभावतैं रहित अविकारी आत्माकूं शास्त्रप्रमाणतैं देहादिकोंतैं भिन्न करिकै जानते नहीं। क्यूं नहीं जानते जिस कारणतैं यह आत्मादेव किसीभी प्राणीकूं हनन करता नहीं। तथा आपभी किसी करिकै हनन होता नहीं। ऐसे हनन क्रियाके कर्त्ताकर्मभावतैं रहित आत्मादेवकूं जे मूढ पुरुष ता हननक्रियाका कर्त्तारूप तथा कर्मरूप माने हैं। ते मूढ पुरुष आत्माके वास्तव स्वरूपकूं जानते नहीं। इहां यद्यपि (य एनं वेत्ति हंतारं हतं वा) इतनै वचनमात्र कहणेकरिकैही ता पूर्व उक्त अर्थकी सिद्धि होइ सकै है। यातैं (य एनं वेत्ति हंतारं यश्चैनं मन्यते हतं) यह दोवार पदोंकी आवृत्ति करणी निष्फल है। तथापि सा पदोंकी आवृत्ति वाक्यके अलंकारवासतै है इति। अथवा। (य एनं वेत्ति हंतारं) या वचनकरिकै नैयायिकोंका कथन करा है। काहेतैं ते नैयायिक आत्माकूंही हननादिक क्रियावोंका कर्त्ता माने हैं। और (यश्चैनं मन्यते हतं) या वचनकरिकै चार्वाकोंका कथन करा है। काहेतैं ते चार्वाकादिक शरीरादिरूप आत्माकूं नाशवान् माने हैं। ते नैयायिक तथा चार्वाक दोनों आत्माके वास्तव स्वरूपकूं जानते नहीं। या प्रकार तिन वादियोंके भेद जनावणेवासतै सा दोवार पदोंकी आवृत्ति करी है इति। अथवा। जे पुरुष आत्माकूं हननक्रियाका कर्त्ता जाने हैं। ते पुरुष अत्यंत शूरवीर हैं। और जे पुरुष ता आत्माकूं हननक्रियाका कर्म माने हैं। ते

पुरुष अत्यंत कायर हैं। या प्रकारके भेद जनावणेवासतै सा दोवार पदोंकी आवृत्ति करी है इति। इहां (य एनं वेत्ति हंतारं यश्चैनं मन्यते हतं) या श्लोकके पूर्वार्द्धविषे "हंता चेन्मन्यते हंतुं हतश्चेन्मन्यते हतं" या कठवल्ली श्रुतिके पूर्वार्द्धका अर्थ निरूपण करा । श्रुतिका तथा श्लोकका उत्तरार्द्ध एक सरीखाही है इति ॥ १९ ॥ ❋ ॥ शंका। हे भगवन् यह आत्मादेव ता हननरूप क्रियाका कर्त्तारूप तथा कर्मरूप किस कारणतैं नहीं होवै है । ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए । यह आत्मादेव जन्मादिक सर्व विकारोंतैं रहित है यातैं ता हननरूप क्रियाका कर्त्तारूप तथा कर्मरूप होवै नहीं या प्रकारके उत्तरकूं श्रीभगवान् ता कठवल्ली उपनिषद्के द्वितीय मंत्र करिकै कथन करे हैं।

(मू. श्लो.) न जायते म्रियते वा कदाचिन्नायं भूत्वा भविता वा न भूयः। अजो नित्यः शाश्वतोयं पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे ॥ २० ॥ (पदच्छेदः) न । जायते । म्रियते । वा । कदाचित् । न । अयं । भूत्वा । भविता । वा । न । भूयः । अजः । नित्यः । शाश्वतः । अयं । पुराणः । न । हन्यते । हन्यमाने । शरीरे ॥ २० ॥ (पदार्थः) हे अर्जुन यह आत्मादेव नहीं जन्मे है तथा नहीं मरे है तथा यह आत्मा कदाचित्भी पूर्व नहीं होइकरिकै पुनः उत्पत्तिमान् नहीं होवै है जिस कारणतैं यह आत्मादेव अज है तथा अनित्य है तथा शाश्वत है तथा पुराण है ऐसा आत्मा शरीरके हनने हुएभी नहीं हनने होवै है ॥ २० ॥

टीका। जन्म, अस्ति, वृद्धि, विपरिणाम, अपक्षय, विनाश यह षट् भावविकार शास्त्रविषे कथन करे हैं । तिन षट् विकारोंविषे आद्यके जन्मरूप विकारका तथा अंतके नाशरूप विकारका श्रीभगवान् खंडन करे हैं (न जायते म्रियते वेति) हे अर्जुन यह आत्मादेव जन्मकूं प्राप्त होवै नहीं। काहेतैं यह आत्मादेव किसीभी कालविषे पूर्व नहीं होइकै पश्चात् उत्पत्तिवाला होता नहीं । जो पदार्थ पूर्व नहीं होइकै पश्चात् होवै है। सो पदार्थही उत्पत्तिरूप विक्रियाकूं प्राप्त होवै है। जैसे घटादिक पदार्थ पूर्व नहीं होइकै पश्चात् होवै हैं। यातैं ते घटादिक पदार्थ उत्पत्तिरूप विकारवालेभी हैं। और यह आत्मादेव तौ पूर्वकालविषेभी विद्यमान है। यातैं यह आत्मादेव उत्पत्तिरूप विकारकूं प्राप्त होवै नहीं । या कारणतैं यह आत्मादेव अज है और यह आत्मादेव मरणरूप विकारकूंभी प्राप्त होवै नहीं। काहेतैं यह आत्मादेव पूर्वकालविषे विद्यमान होइकै कदाचित्भी उत्तरकालविषे अविद्य-

मान होवै नहीं। जो पदार्थ पूर्वकालविषे विद्यमान होइकै उत्तरकालविषे नहीं विद्यमान होवै है। सो पदार्थही मरणरूप विकारकूं प्राप्त होवै है। जैसे घटादिक पदार्थ पूर्वकालविषे विद्यमान होइकै उत्तर कालविषे अविद्यमान होवै हैं। यातैं ते घटादिक पदार्थ नाशरूप विकारकूंभी प्राप्त होवै हैं। और यह आत्मादेव तौ ता उत्तर कालविषेभी विद्यमान है। यातैं यह आत्मादेव मरणरूप विकारकूं प्राप्त होवै नहीं । या कारणतैं यह आत्मादेव नित्य है क्या विनाश होणेके योग्य नहीं है। इहां (न जायते म्रियते वा) या वचनकरिकै आत्माके जन्ममरणके अभावकी प्रतिज्ञा करी । और (कदाचिन्नायं भूत्वा भविता वा न भूयः) या वचनविषे स्थित पदोंकी दो प्रकारतैं योजनाकरिकै ता प्रतिज्ञाका उपपादन करा और (अजो नित्यः) या वचनकरिकै ता प्रतिज्ञाका उपसंहार करा। इहां जन्मादिक षट् विकारोंविषे जन्मरूप जो आदिका विकार है तथा मरणरूप जो अंतका विकार है तिन दोनों विकारोंके निषेधकरिकै यद्यपि तिन दोनों विकारोंके मध्यवर्त्ति तथा तिन दोनों विकारोंके व्याप्त जो चारि विकार हैं। तिनोंका निषेध होइ सकै है। तथापि इहां नहीं कथन करे जो गमन आगमनादिक विकार हैं तिन सर्व विकारोंके निषेधके जनावणेवासतै श्रीभगवान् अपक्षय, वृद्धि, या दोनों विकारोंका शाश्वत पुराण या दोनों शब्दोंकरिकै निषेध करे है (शाश्वत इति) तहां यह आत्मादेव कूटस्थतारूप नित्यतावाला है। यातैं या आत्मादेवका स्वरूपतैं अपक्षय होवै नहीं। और यह आत्मादेव निर्गुण है। यातैं या आत्मादेवका गुणतैंभी अपक्षय होवै नहीं। या कारणतैं यह आत्मादेव शाश्वत है। जो वस्तु अपक्षय अपचयतैं रहित होके सर्व कालविषे विद्यमान होवै है ता वस्तुका नाम शाश्वत है । ऐसा यह आत्मादेवही है। शंका। हे भगवन् यह आत्मादेव अपक्षयकूं तौ मत प्राप्त होवै तौभी वृद्धिकूं किसवासतै नहीं प्रात होवै । ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए भगवान् कहे हैं (पुराण इति) हे अर्जुन यह आत्मादेव इसतैं पूर्वभी नवीनही था। कोई इस लोकविषे यह आत्मादेव नवीन अवस्थाकूं प्राप्त भया नहीं। यातैं यह आत्मादेव पुराण है। तात्पर्य यह । सर्व कालविषे यह आत्मादेव एकरूप है इति । और या लोकविषे जो पदार्थ किसी उपचयरूप नवीन अवस्थाकूं प्राप्त होवै है। सो पदार्थही वृद्धिकूं प्राप्त होवै है। जैसे शरीरादिक पदार्थ हैं। और यह आत्मादेव तौ सर्व कालविषे एकरूपही हैं। यातैं यह आत्मादेव अपचयकूं तथा उपचयकूं प्राप्त होवै नहीं । या कारणतैं यह आत्मादेव वृद्धिकूं प्राप्त होवै नहीं। इहां ज्वरादिक रोगोंकरिकै जो शरीरके अवयवोंकी क्षीणता है ताका नाम अपचय है। और अन्नादिकोंके भक्षणकरिकै जो शरीरके अवयवोंकी वृद्धि है ताका नाम उपचय है। इहां अस्ति, विपरिणाम यह दोनों विकार जन्म नाश या दोनों विकारोंके अंतरभूत हैं। यातैं तिन दोनों विकारोंका पृथक् निषेध करा नहीं। ता ज-

न्ममरणके निषेधकरिकै अस्ति विपरिणाम या दोनोंका निषेधभी जानि लेणा । हे अर्जुन जिस कारणतैं यह आत्मादेव जन्मादिक सर्व विकारोंतैं रहित है । तिस कारणतैं शस्त्रादिक उपायोंकरिकै या शरीरके हनन हुएभी ता शरीरके कल्पित संबंधवाला हुआभी यह आत्मादेव किसीभी उपायकरिकै हननकूं प्राप्त होवै नहीं । जैसे घटरूप उपाधिके नाश हुएभी आकाशका नाश होवै नहीं । तैसे देहादिक उपाधियोंके नाश हुएभी आत्माका नाश होवै नहीं । तहां श्रुति । " अविनाशी वाऽरेऽयमात्मा " । अर्थ यह । हे मैत्रेयी यह आत्मादेव विनाशतैं रहित है इति ॥ २० ॥ ❀ ॥

पूर्व (य एनं वेत्ति हंतारं) या श्लोकविषे (नायं हंति न हन्यते) या वचनकरिकै आत्मा नहीं तौ किसीकूं हनन करता है और नहीं किसीकरिकै हत होता है या प्रकारकी प्रतिज्ञा करी थी । तहां आत्मा किसीकरिकैभी हनन नहीं होता है । या प्रतिज्ञाका तौ पूर्व श्लोकविषे विस्तारतैं उपपादन करा । अब आत्मा किसीकूंभी हनन नहीं करता है या प्रतिज्ञाका उपपादन करता हुआ श्रीभगवान् पूर्व प्रसंगका उपसंहार करे है ।

(मू. श्लो.) वेदाविनाशिनं नित्यं य एनमजमव्ययम् । कथं स पुरुषः पार्थ कं घातयति हंति कम् ॥ २१ ॥ (पदच्छेदः) वेद । अविनाशिनं । नित्यं । यः । एनं । अजं । अव्ययं । कथं । सः । पुरुषः । पार्थ । कं । घातयति । हंति । कं ॥ २१ ॥ (पदार्थः) हे पार्थ जो पुरुष इस आत्मादेवकूं अविनाशीरूप नित्यरूप अजरूप अव्ययरूप जाने है सो पुरुष किसकूं हनन करे है तथा किस प्रकारकरिकै हनन करे है और सो पुरुष किसकूं हनन करावै है तथा किस प्रकारकरिकै हनन करावै है किंतु सो पुरुष न किसीकूं हनन करे है तथा न किसीका हनन करावै है ॥ २१ ॥

टीका । विनाश होणेका नहीं है स्वभाव जिसका ताकूं अविनाशी कहे हैं । ऐसा विनाशरूप अंतविकारतैं रहित जो आत्मा है ताके अविनाशीपणेविषे हेतु कहे हैं (अव्ययं इति) नहीं विद्यमान है अवयवोंका अपचयरूप तथा गुणोंका अपचयरूप व्यय जिसविषे ताका नाम अव्यय है । या लोकविषे पटादिक पदार्थोंका तंतु आदिक अवयवोंके अपचयकरिकै तथा रूपादिक गुणोंके अपचयकरिकै विनाश देखणेविषे आवै है । और यह आत्मादेव तौ निरवयव होणेतैं अवयवोंके अपचयतैं रहित है तथा निर्गुण होणेतैं गुणोंके अपचयतैं रहित है । यातैं या आत्मादेवका कदाचित्भी विनाश संभवै नहीं । या कहणेतैं यह अनुमान सिद्ध भया । आत्मा अविनाशी होणेकूं योग्य है । अव्यय होणेतैं जो पदार्थ अविनाशी नहीं होवै है सो पदार्थ अव्ययभी नहीं होवै है जैसे पटादिक पदार्थ हैं इति । शंका । हे भगवन् आत्मा विनाशी होणेकूं योग्य है जन्य होणेतैं घटादिकोंकी न्यांई । या प्रकार

जन्यत्व हेतुकरिकै आत्माविषे विनाशीपणेका अनुमानभी होइ सकै है। ऐसी अर्जुनकी शंकाके निवृत्त करणेवासतै श्रीभगवान् आत्माविषे ता जन्यत्वहेतुकी असिद्धि कथन करे हैं। (अजं इति) जो कदाचित्भी जन्मकूं नहीं प्राप्त होवै ताका नाम अज है। ऐसा जन्मरूप आद्यविकारतैं रहित आत्मा है। ता अजपणेविषे हेतु कहे हैं। (नित्यं इति) जो सर्वकालविषे विद्यमान होवै ताका नाम नित्य है। और या लोकविषे जो पदार्थ पूर्व नहीं विद्यमान होवै है ता पदार्थकाही जन्म देखणेविषे आवै है। जैसे घटपटादिक पदार्थ अपणी उत्पत्तितैं पूर्व नहीं विद्यमान हुएही पश्चात् जन्मकूं प्राप्त होवै हैं। और यह आत्मादेव तौ सर्व कालविषे विद्यमान है। यातैं या आत्मादेवका कदाचित्भी जन्म संभवै नहीं। या कहणेकरिकै यह अनुमान सिद्ध भया। आत्मा जन्मतैं रहित होणेकूं योग्य है। नित्य होणेतैं जो पदार्थ जन्मतैं रहित नहीं होवै है सो पदार्थ नित्यभी नहीं होवै है जैसे घटादिक पदार्थ हैं इति। अथवा। अविनाशी या पदकरिकै बाधतैं रहित सत्यवस्तुका ग्रहण करणा। और नित्य या शब्दकरिकै सर्वत्र व्यापक वस्तुका ग्रहण करणा। ताकेविषे हेतु कहे हैं। (अजं अव्ययं इति) इहां जन्मतैं रहित वस्तुका नाम अज है। और नाशतैं रहित वस्तुका नाम अव्यय है। और या लोकविषे जो पदार्थ उत्पत्तिमान् होवै है तथा नाशवान् होवै है सो पदार्थ सत्यरूप तथा सर्वत्र व्यापक होवै नहीं। जैसे उत्पत्तिनाशवान् घटादिक पदार्थ सत्यरूप नहीं हैं तथा सर्वत्र व्यापकभी नहीं हैं। और यह आत्मादेव तौ उत्पत्तिनाशतैं रहित है। यातैं यह आत्मादेव सत्यरूप है तथा सर्वत्र व्यापक है। या कहणेकरिकै यह अनुमान सिद्ध भया। आत्मा अविनाशी तथा नित्य होणेकूं योग्य है अज तथा अव्यय होणेतैं जो पदार्थ अविनाशी तथा नित्य नहीं होवै है सो पदार्थ अज तथा अव्ययभी नहीं होवै है जैसे घटादिक पदार्थ हैं इति। इस प्रकार अविनाशीरूप तथा नित्यरूप तथा अजरूप तथा अव्ययरूप जो यह आत्मादेव है। ता आत्मादेवकूं जो पुरुष गुरुशास्त्रके उपदेशतैं मैं जन्मादिक सर्व विकारोंतैं रहित हूं तथा बुद्धि आदिक सर्व पदार्थोंका प्रकाशक हूं तथा सर्व द्वैतप्रपंचतैं रहित हूं तथा परमानंदबोधरूप हूं या प्रकार साक्षात्कार करे है। सो विद्वान् पुरुष किसकूं हनन करे है तथा किस प्रकारकरिकै हनन करे है। किंतु सो विद्वान् पुरुष किसीकूंभी हनन करता नहीं। तथा किसी प्रकारकरिकैभी हनन करता नहीं। और सो विद्वान् पुरुष किसकूं हनन करावै है। तथा किस प्रकारकरिकै हनन करावै है। किंतु सो विद्वान् पुरुष किसकूंभी हनन करावता नहीं। तथा किसी प्रकारकरिकैभी हनन करावता नहीं। काहेतैं जन्मादिक सर्व विकारोंतैं रहित तथा कर्त्तापणेतैं रहित जो विद्वान् पुरुष है ता विद्वान् पुरुषकूं ता हननरूप क्रियाविषे साक्षात्कर्त्तापणा तथा प्रयोजककर्त्तापणा संभवै नहीं। तहां श्रुति। "आत्मानं चेद्विजानीयादयमस्मीति पूरुषः। किमि-

च्छन्कस्य कामाय शरीरमनुसंज्वरेत् "। अर्थ यह। यह विद्वान् पुरुष जबी परिपूर्ण अद्वितीय ब्रह्म मैं हूं या प्रकार आत्माकूं जाने है। तबी यह विद्वान् पुरुष किस वस्तुकी इच्छा करता हुआ किसके प्रयोजनवासतै या शरीरकूं संताप करैगा। किंतु नहीं करैगा इति। यह श्रुति शुद्ध आत्माके जानणेहारे विद्वान् पुरुषविषे कर्तृत्व भोक्तृत्व आदिक संसारके अभावकूं बोधन करे है। तात्पर्य यह। शुद्ध आत्माके ज्ञानकरिकै या विद्वान् पुरुषके अज्ञानकी निवृत्ति होवै है। ता अज्ञानके निवृत्त हुए अहं मम अध्यासकी निवृत्ति होवै है। ता अध्यासके निवृत्त हुए रागद्वेषादिकोंकी निवृत्ति होवै है। ता रागद्वेषादिकोंके निवृत्त हुए कर्तृत्व भोक्तृत्व आदिकोंकी निवृत्ति होवै है। इस प्रकार आत्माका ज्ञानही सर्व अनर्थोंके निवृत्तिका कारण है। इहां इस श्लोकविषे श्रीभगवान्का यह अभिप्राय है। वास्तवतैं विचारकरिकै देखीयें तौ यह आत्मादेव सर्व विकारोंतैं रहित है यातैं कोईभी किसी कार्यकूं करता नहीं तथा करावता नहीं। तथापि यह मूढ पुरुष अज्ञानके वशतैं स्वप्नकी न्यांई अपणे आत्माविषे कर्तृत्वादिक धर्म माने है। यह वार्ता (उभौ तौ न विजानीतः) या गीताके वचनकरिकै पूर्व कथन करि आये हैं। तहां श्रुतिभी। "ध्यायतीव लेलायतीव "। यह अर्थ। वास्तवतैं सर्व विकारोंतैं रहित यह आत्मादेव बुद्धिरूप उपाधि जबी ध्यान करे है तबी ध्यान करताकी न्यांई प्रतीत होवै है और बुद्धिरूप उपाधि जबी चलायमान होवै है तबी चलायमान हुएकी न्यांई प्रतीत होवै है इति। इसी कारणतैं सर्व शास्त्र अविद्वान् अधिकारीके वासतैही कथन करे हैं विद्वान् पुरुषके वासतै कोईभी शास्त्र है नहीं। काहेतैं सो विद्वान् पुरुष तौ आत्मज्ञानकरिकै अज्ञानरूप मूलसहित अध्यासके निवृत्त हुए आत्माविषे कर्तृत्वादिक मानता नहीं। जैसे स्थाणुके वास्तव स्वरूपकूं जानणेहारा पुरुष ता स्थाणुविषे चौरपणा मानता नहीं। तैसे आत्माके अकर्तृत्वादिक वास्तव स्वरूपकूं जानणेहारा सो विद्वान् पुरुष ता आत्माविषे कर्त्तापणा मानता नहीं। यातैं यह सिद्ध भया। सर्व विकारोंतैं रहित होणेतैं तथा अद्वितीयरूप होणेतैं सो विद्वान् पुरुष हननादिक क्रियाकूं न करता है न करावता है। तहां श्रुति " आनंदं ब्रह्मणो विद्वान् नबिभेति कुतश्चनेति "। अर्थ यह। ब्रह्मके स्वरूपभूत आनंदकूं जानणेहारा विद्वान् पुरुष किसीतैंभी भयकूं प्राप्त होवै नहीं इति। इहां भयका निषेध सर्व विकारोंके निषेधका उपलक्षक है। इस प्रकार वास्तवतैं आत्माविषे कर्तृत्वादिकोंके अभाव हुएभी सो अर्जुन अपणेविषे ता हननरूप क्रियाका कर्त्तापणा आरोपण करिकै तथा श्रीभगवान्विषे ता हननरूप क्रियाका प्रयोजककर्त्तापणा आरोपण करिकै अपणेविषे तथा भगवान्विषे ता हिंसाजन्य दोषकी शंका करता भया। और श्रीभगवान्भी ता अर्जुनके अभिप्रायकूं जानिकरिकै ता अर्जुनविषे हननरूप क्रियाके कर्त्तापणेका निषेध करता भया। और अपणेविषे ता हननरूप क्रियाके प्रयोजककर्त्तापणेका निषेध करता

भया । तहां जो पुरुष आप तौ तिस क्रियाकूं करै नहीं और तिस क्रियाविषे दूसरेकूं प्रेरणा करे है ता पुरुषकूं प्रयोजककर्त्ता कहे हैं । तात्पर्य यह । यह आत्मादेव वास्तवतैं सर्व विकारोंतैं रहित है । यातैं अपणेविषे ता हननरूप क्रियाका कर्त्तापणा आरोपण करिकै तथा हमारेविषे ता हननरूप क्रियाका प्रयोजककर्त्तापणा आरोपण करिकै तुमनैं पापके प्राप्तिकी शंका कदाचित्भी नहीं करणी इति । इहां श्रीभगवान्नैं आत्माविषे अविक्रियता दिखाइके कर्तृत्वका निषेध करा । तिसतैं यह जान्या जावै है । श्रीभगवान्का सर्व कर्मोंके निषेधविषे तात्पर्य है । केवल हननरूप क्रियाके निषेधविषे तात्पर्य नहीं है । यातैं मूलश्लोकविषे जो केवल हननक्रियाका निषेध करा है सो निषेध सर्व कर्मोंके निषेधका उपलक्षक है । पूर्व प्रसंगविषे हननरूप क्रियाही प्राप्त है । या कारणतैं भगवान्नैं ता हननरूप क्रियाका निषेध करा है । परंतु ता हननरूप क्रियाके निषेध करिकै सर्व कर्मोंका निषेधही भगवान्कूं संमत है । काहेतैं अविक्रियत्वरूप हेतु आत्माविषे जैसें हननरूप क्रियाका निषेध करे है । तैसे दूसरे सर्व कर्मोंकाभी निषेध करे है । केवल हननरूप क्रियाका निषेध करै नहीं । या कारणतैंही (तस्य कार्यं न विद्यते) या वचनकरिकै श्रीभगवान् आपही सर्व कर्मोंका निषेध आगे कथन करैगा । या कहणेकरिकै या प्रकारकी मूढ जनोंकी शंकाकाभी खंडन हुआ जानणा । सा शंका यह है । (कं घातयति हंति कं) या वचनकरिकै भगवान्नैं केवल हननरूप क्रियाका निषेध करा है दूसरे कर्मोंका निषेध करा नहीं । यातैं ता हननरूप कर्मतैं भिन्न दूसरे कर्म तौ भगवान्कूंभी कर्त्तव्यतारूपकरिकै अंगीकार हैं इति । सो यह वादीकी शंका संभवै नहीं । काहेतैं (तस्माद्युध्यस्व भारत) या वचनकरिकै हननरूप कर्मका तौ भगवान्नैं आपही विधान करा है । यातैं (कं घातयति हंति कं) या वचनका आत्मा वास्तवतैं हननक्रियाका कर्त्ता नहीं है यह अर्थही अंगीकार करणा होवैगा । सो आत्माविषे वास्तवतैं कर्त्तापणेका अभाव जैसे हननरूप क्रियाविषे है तैसे दूसरे कर्मोंविषेभी समान है इति ॥ २१ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हे भगवन् पूर्व उक्त श्रुतियुक्तियोंकरिकै यद्यपि आत्माविषे तौ अविनाशीपणाही सिद्ध होवै है । तथापि या स्थूल शरीरोंविषे सो अविनाशीपणा है नहीं । किंतु यह शरीर नाशवान् है । और तिन शरीरोंके नाश करणेका साधन यह युद्ध है । यातैं अनेक पुण्यकर्मोंके साधनरूप जो यह भीष्मद्रोणादिकोंके शरीर हैं तिन शरीरोंका युद्ध करिकै नाश करणा हमारेकूं कैसे उचित होवैगा । किंतु तिन भीष्मद्रोणादिकोंके शरीरका नाश करणा हमारेकूं उचित नहीं है । ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् उत्तर कहे हैं ।

(मू. श्लो.) वासांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि । तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि संयाति नवानि देही ॥ २२ ॥ (पदच्छेदः) वासांसि ॥ जीर्णानि । यथा । विहाय । नवानि । गृह्णाति । नरः । अपराणि । तथा । शरीराणि । विहाय । जीर्णानि । अन्यानि । संयाति । नवानि । देही ॥ २२ ॥ (पदार्थः) हे अर्जुन जैसे यह पुरुष जीर्ण वस्त्रोंकूं परित्याग करिकै दूसरे नवीन वस्त्रोंकूं ग्रहण करे है तैसे यह देहीभी इन जीर्ण शरीरोंकूं परित्याग करिकै दूसरे नवीन शरीरोंकूं प्राप्त होवै है ॥ २२ ॥

टीका। हे अर्जुन जैसे विक्रियातैं रहित हुआही यह पुरुष पूर्वले निकृष्ट जीर्ण वस्त्रोंका परित्याग करिकै दूसरे उत्कृष्ट नवीन वस्त्रोंका ग्रहण करे है । तैसे उत्तम धर्मोंकूं करणेहारे यह भीष्मद्रोणादिक देहीभी अवस्थाकरिकै तथा तपकरिकै कृश हुए या भीष्मादिक नामोंवाले शरीरोंका परित्याग करिकै पूर्व संपादन करे हुए पुण्यकर्मोंके फल भोगणेवासतै सर्वतैं उत्कृष्ट देवतादिक शरीरोंकूं प्राप्त होवै हैं। तहां श्रुति । "अन्यन्नवतरं कल्याणतरं रूपं कुरुते पित्र्यं वा गांधर्वं वा दैवं वा प्राजापत्यं वा ब्राह्मं वा इति"। अर्थ यह। यह जीवात्मा पूर्वले शरीरका परित्याग करिकै पुण्यकर्मोंके वशतैं पितृलोकविषे अथवा गंधर्वलोकविषे अथवा देवलोकविषे अथवा प्रजापतिलोकविषे अथवा ब्रह्मलोकविषे दूसरे उत्कृष्ट देवताशरीरकूं प्राप्त होवै है इति। इतनै कहणेकरिकै यह अर्थ सिद्ध भया। जीवतकालपर्यंत करा जो धर्मका अनुष्ठान ता अनुष्ठानजन्य क्लेशकरिकै अत्यंत कृश शरीरवाले हुए जो यह भीष्मद्रोणादिक हैं। ते भीष्मद्रोणादिक इस वर्त्तमान शरीरके नाशतैं विना ता धर्मानुष्ठानके फल भोगणेविषे समर्थ होइ सकैं नहीं। किंतु तिन स्वर्गादिक सुखोंकी प्राप्तिविषे प्रतिबंधक जो यह वर्त्तमान शरीर हैं तिन वर्त्तमान शरीरोंके नाशतैं अनंतरही ते भीष्मद्रोणादिक तिन स्वर्गादिक सुखोंके भोगणेविषे समर्थ होवैंगे। यातैं धर्मयुद्धकरिकै जबी तूं इन भीष्मद्रोणादिकोंके वर्त्तमान शरीरोंकूं नाश करैगा । तबी यह भीष्मद्रोणादिक या जीर्ण शरीररूप प्रतिबंधतैं रहित होइकै स्वर्गादिक लोकोंविषे दिव्य शरीरकूं प्राप्त होइकै नानाप्रकारके सुखोंकूं प्राप्त होवैंगे। सो यह तिन भीष्मद्रोणादिकोंऊपरि तुमारा महान् उपकार है। यातैं तिन भीष्मद्रोणादिकोंका महान् उपकार करणेहारा जो यह युद्ध है ता युद्धविषे तिन भीष्मद्रोणादिकोंका अपकारत्वबुद्धिरूप भ्रमकूं तूं मत कर इति। या प्रकारका भगवान्का अभिप्राय (अपराणि अन्यानि संयाति) या तीन पदोंके कहणेतैं जान्या जावै है। और किसी टीकाविषे तौ

या श्लोकका यह अभिप्राय वर्णन करा है। जैसे यह देवदत्तादि नामवाला पुरुष पूर्वले जीर्ण वस्त्रोंका परित्याग करिकै दूसरे नवीन वस्त्रोंका ग्रहण करैहै। तैसे यह देही आत्माभी पूर्वले जीर्ण शरीरोंका परित्याग करिकै दूसरे नवीन शरीरोंकूं प्राप्त होवै है। तहां जैसे आगमन तथा निर्गमन तथा नामरूपादिकोंकी विचित्रता तथा शिथिलता इत्यादिक सर्व विकार तिन वस्त्रोंविषेही होवै हैं। ता पुरुषविषे ते विकार होवैं नहीं। तैसे उत्पत्तिनाशादिक सर्व विकार या शरीरोंविषेही होवै हैं। निरवयव आत्माविषे ते उत्पत्तिनाशादिक विकार होवैं नहीं। इतनै कहणेकरिकै आत्माविषे देहइंद्रियादिकोंतैं भिन्नपणा तथा सर्व विकारोंतैं रहितपणा तथा नित्यपणा सूचन करा इति ॥ २२ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हे भगवन् जैसे अग्निकरिकै गृहके दाह हुए ता गृहविषे स्थित पुरुषकाभी दाह होइ जावै है। तैसे या स्थूल देहके नाश हुए ता देहके भीतर स्थित आत्माकाभी नाश होवैंगा। ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् उत्तर कहे हैं।

(मू. श्लो.) नैनं छिंदंति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः। न चैनं क्लेदयंत्यापो न शोषयति मारुतः॥ २३ ॥ (पदच्छेदः) न। एनं। छिंदंति। शस्त्राणि। न। एनं। दहति। पावकः। न। च। एनं। क्लेदयंति। आपः। न। शोषयति। मारुतः॥ २३ ॥ (पदार्थः) हे अर्जुन इस आत्माकूं खड्गादिक शस्त्रभी नहीं छेदन करे हैं तथा इस आत्माकूं अग्निभी नहीं दाह करे है तथा इस आत्माकूं जलभी नहीं गालै सके है तथा इस आत्माकूं वायुभी नहीं शोषण करै है ॥ २३ ॥

टीका। हे अर्जुन जैसे खड्गादिक तीक्ष्ण शस्त्र या स्थूल शरीरकूं छेदन करे हैं। तैसे इस आत्माकूं ते तीक्ष्ण शस्त्रभी छेदन करि सकते नहीं। और जैसे अत्यंत प्रज्वलित अग्नि या शरीरकूं भस्म करे है। तैसे सो प्रज्वलित अग्नि या आत्माकूं भस्म करि सकै नहीं। और जैसे अत्यंत वेगवाला जल या शरीरकूं गीला करिकै ताके अवयवोंकी शिथिलतारूप क्लेदन करे है। तैसे सो अत्यंत वेगवाला जलभी या आत्माकूं क्लेदन करि सकै नहीं। और जैसे अत्यंत प्रबल वायु या शरीरादिकोंका नीरसतारूप शोषण करे है। तैसे सो अत्यंत प्रबल वायुभी या आत्माकूं शोषण करि सकै नहीं। इहां यद्यपि जितनैकी नाश करणेहारे पदार्थ हैं तिन सर्व पदार्थोंका आत्माविषे निषेध वांछित है। यातैं केवल शस्त्रादिकोंकाही निषेध करणा उचित नहीं है। तथापि युद्धके समयविषे ते शस्त्रादिकही प्राप्त हैं। यातैं भगवान्नैं तिन शस्त्रादिकोंकाही निषेध करा है। सो शस्त्रादिकोंका निषेध नाश करणेहारे सर्व पदार्थोंके निषेधका उप-

लक्षक है। अथवा । या लोकविषे पृथिवी, जल, अग्नि, वायु या चारोंविषेही नाशकी कारणता देखनेमैं आवै है । आकाशविषे किसीभी पदार्थके नाशकी कारणता देखणेविषे आवती नहीं । यातैं इहां पृथिवी, जल, तेज, वायु, या चारि भूतोंकाही कथन करा है।आकाशका कथन करा नहीं। और या लोकविषे जितनै की नाशके कारण हैं ते सर्व पृथिवी आदिक चारि भूतोंके अंतरभूतही हैं । यातैं पृथिवी आदिक चारि भूतोंके निषेध करिकै नाश करणेहारे सर्व पदार्थोंका निषेध सिद्ध होइ सकै है । तहां खड्गादिक शस्त्र पृथिवीविशेषका विकाररूप होणेतैं पृथिवीरूपही हैं इति ॥ २३ ॥ ॐ ॥ शंका । हे भगवन् आत्माकूं शस्त्रादिक नाश नहीं करि सकते या प्रकारकी प्रतिज्ञामात्रकरिकै अर्थकी सिद्धि होवै नहीं । किंतु किसी हेतुतैंही अर्थकी सिद्धि होवै है । यातैं आत्माकूं ते शस्त्रादिक नाश नहीं करि सकते या प्रतिज्ञाविषे कौन हेतु है । ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् तिन शस्त्रादिकोंकूं आत्माके नाश करणेकी असामर्थ्यताविषे तथा आत्माकूं तिन शस्त्रादिजन्य नाशकी अयोग्यताविषे हेतु कहे हैं।

(मू. श्लो.) अच्छेद्योयमदाह्योयमक्लेद्यो शोष्य एव च। नित्यः सर्वगतः स्थाणुरचलोयं सनातनः ॥ २४ ॥ (पदच्छेदः) अच्छेद्यः । अयं । अदाह्यः । अयं । अक्लेद्यः । अशोष्यः । एव । च । नित्यः । सर्वगतः । स्थाणुः । अचलः । अयं । सनातनः ॥ २४ ॥ (पदार्थः) हे अर्जुन यह आत्मा अच्छेद्य है तथा यह आत्मा अदाह्य है तथा अक्लेद्य है तथा अशोष्य है तथा यह आत्मा नित्य है तथा सर्वगत है तथा स्थाणु है तथा अचल है तथा सनातन है ॥ २४ ॥

टीका । हे अर्जुन जिस कारणतैं यह आत्मा छेदन करणेकूं अशक्य है तिस कारणतैं या आत्माकूं खड्गादिक शस्त्र छेदन करि सकते नहीं । और जिस कारणतैं यह आत्मा दाह करणेकूं अशक्य है तिस कारणतैं या आत्माकूं अग्नि दाह करि सकता नहीं । और जिस कारणतैं यह आत्मा क्लेदन करणेकूं अशक्य है तिस कारणतैं या आत्माकूं जल क्लेदन करि सकता नहीं । और जिस कारणतैं यह आत्मा शोषण करणेकूं अशक्य है तिस कारणतैं या आत्माकूं वायु शोषण करि सकता नहीं । इस प्रकार यथाक्रमतैं अच्छेद्यादिक चारि हेतुवोंकी पूर्व श्लोकउक्त प्रतिज्ञाविषे योजना करणी । इहां (एव च) या वचनविषे स्थित जो एव यह शब्द है । सो एवशब्द अच्छेद्यत्वादिक चारोंके साथि संबंधकूं प्राप्त हुआ आत्माविषे छेद्यत्वादिक धर्मोंकी व्यावृत्ति करे है। क्या आत्मा अच्छेद्यही है नतु छेद्य है इस प्रकार अदाह्यत्वादिक धर्मोंविषेभी जानि लेणा । और च यह शब्द तिन अच्छे-

घत्वादिक चारोंके समुच्चय करावणेवासतै है । शंका । हे भगवन् जिन अच्छेद्यत्वादिक हेतुवोंके बलतैं आत्माविषे शस्त्रादिकृत छेदनादिकोंका अभाव सिद्ध करते हो । ते अच्छेद्यत्वादिक हेतु आत्माविषे रहते नहीं । यातैं तिन अच्छेद्यत्वादिक हेतुवोंकरिकै आत्माविषे छेदनादिकोंका अभाव किस प्रकार सिद्ध होवैगा । ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् तिन अच्छेद्यत्वादिक हेतुवोंकी सिद्धि करणेवासतै श्लोकके उत्तरार्धकरिकै हेतुका कथन करे है। (नित्यः इति) हे अर्जुन जो पदार्थ पूर्व अपर भाववाला होवै है। सो पदार्थ अनित्य होवै है। जैसे घटादिक पदार्थ पूर्व अपर भाववाले हैं यातैं अनित्य हैं । और यह आत्मादेव तौ पूर्व अपर भावतैं रहित है यातैं नित्य है । नित्य होणेतैंही यह आत्मादेव उत्पत्तितैं रहित है । और जो पदार्थ सर्वत्र व्यापक नहीं होवै है । सो पदार्थ अनित्यही होवै है । जैसे घटादिक पदार्थ सर्वत्र व्यापक नहीं हैं यातैं अनित्यही हैं । तैसे यह आत्मादेवभी जो कदाचित् सर्वत्र व्यापक नहीं होवैगा तौ अनित्यही होवैगा । यद्यपि नैयायिकोंनैं पृथिवी आदिकोंके परमाणुवोंकूं अव्यापक मानिकैभी नित्यही मान्या है । यातैं जो अव्यापक होवै है सो अनित्यही होवै है या प्रकारका नियम संभवै नहीं । तथापि वेदांतसिद्धांतविषे ते नित्य परमाणु अंगीकार नहीं है । यातैं ता नियमका भंग होवै नहीं । और यह आत्मादेव तौ अस्तिभातिप्रियरूपकरिकै सर्वत्र व्यापक है । या कारणतैं यह आत्मादेव नित्य है । या कहणेकरिकै यह अनुमान सिद्ध भया । यह आत्मा नित्य होणेकूं योग्य है सर्वत्र व्यापक होणेतैं जो पदार्थ नित्य नहीं होवै है सो पदार्थ सर्वत्र व्यापकभी नहीं होवै है। जैसे घटादिक पदार्थ हैं इति । सर्वत्र व्यापक होणेतैं यह आत्मादेव प्राप्तिका विषयभी नहीं है । और या लोकविषे जो जो पदार्थ विकारी होवै है । सो सो पदार्थ सर्वत्र व्यापक होवै नहीं । जैसे घटादिक पदार्थ विकारी हैं यातैं सर्वत्र व्यापकभी नहीं हैं । तैसे यह आत्मादेवभी जो कदाचित् विकारी होवैगा तौ सर्वत्र व्यापक नहीं होवैगा । और यह आत्मादेव तौ स्थाणु है क्या अविकारी है । या कारणतैं यह आत्मादेव सर्वत्र व्यापक है । या कहणेतैं यह अनुमान सिद्ध भया। यह आत्मा सर्वत्र व्यापक होणेकूं योग्य है । अविकारी होणेतैं जो जो पदार्थ सर्वत्र व्यापक नहीं होवै है सो सो पदार्थ अविकारीभी नहीं होवै है जैसे घटादिक पदार्थ हैं इति । इतनैकरिकै आत्माविषे विकार्यत्वका निषेध करा । और या लोकविषे जो जो पदार्थ चलनरूप क्रियावाला होवै है सो सो पदार्थ विकारीही होवै है । जैसे घटादिक पदार्थ चलनरूप क्रियावाले हैं यातैं विकारी हैं । तैसे यह आत्मादेवभी जो कदाचित् चलनरूप क्रियावाला होवैगा तौ विकारीही होवैगा । और यह आत्मादेव तौ ता चलनरूप क्रियातैं रहित अचल है । या कारणतैं यह आत्मादेव विकारीभी नहीं है । या कहणेकरिकै यह अनुमान सिद्ध भया । यह आत्मा अविकारी होणेकूं योग्य है

अचल होणेतैं जो जो पदार्थ अविकारी नहीं होवै है सो सो पदार्थ अचलभी नहीं होवै है जैसे घटादिक पदार्थ हैं इति । इतनै कहणेकरिकै आत्माविषे संस्कार्यत्वका निषेध करा । इहां पूर्व अवस्थाका परित्याग करिकै जो दूसरी अवस्थाकी प्राप्ति है ताका नाम विक्रिया है । और अवस्थाके एक हुएभी जो चलनमात्र है ताका नाम क्रिया है । यातैं अविक्रियत्वरूप साध्यकी तथा अचलत्वरूप हेतुकी एकता सिद्ध होवै नहीं । जिस कारणतैं यह आत्मादेव नित्य सर्वगत स्थाणु अचलरूप है । तिस कारणतैं यह आत्मादेव सनातन है क्या सर्वदा एकरूप है किसीभी क्रियाका कर्मरूप नहीं है । तात्पर्य यह । जो पदार्थ क्रियाजन्य फलवाला होवै है ता पदार्थका नाम कर्म है । सो क्रियाजन्य फल उत्पत्ति, प्राप्ति, विकृति, संस्कृति या भेदकरिकै चारि प्रकारका होवै है ता चारि प्रकारके फलके योगतैं यथाक्रमतैं सो कर्मभी उत्पाद्य, प्राप्य, विकार्य, संस्कार्य या भेदतैं चारि प्रकारका होवै है । तहां यह आत्मादेव नित्य है यातैं उत्पाद्यरूप कर्मभी नहीं है । अनित्य घटादिकही उत्पाद्यरूप होवै हैं । और यह आत्मादेव सर्वत्र व्यापक है यातैं प्राप्यरूप कर्मभी नहीं है परिच्छिन्न ग्रामादिकही प्राप्यरूप होवै हैं । और यह आत्मादेव स्थाणुरूप है यातैं विकार्यरूप कर्मभी नहीं है । स्थाणुभावतैं रहित विक्रियावाले क्षीरादिकही विकार्यरूप होवै हैं । और यह आत्मादेव चलनरूप क्रियातैं रहित अचल है यातैं संस्कार्यरूप कर्मभी नहीं है । क्रियावाले दर्पणादिक पदार्थही संस्कार्यरूप होवै हैं इति । तहां श्रुति । " आकाशवत्सर्वगतश्च नित्यः वृक्ष इव स्तब्धो दिवि तिष्ठत्येकः निष्कलं निष्क्रियं शांतं इति " । अर्थ यह । यह आत्मादेव आकाशकी न्यांई सर्वत्र व्यापक है तथा नित्य है तथा महान् वृक्षकी न्यांई अचल हुआ स्थित है तथा अपणे स्वप्रकाशस्वरूपविषे स्थित है तथा एक अद्वितीयरूप है तथा निरवयव है तथा क्रियातैं रहित है तथा शांतस्वरूप है इति । इत्यादिक श्रुतियां या आत्मादेवकूं नित्य, सर्वगत, स्थाणु, अचलरूपकरिकै कथन करे हैं । तथा " यः पृथिव्यां तिष्ठन् पृथिव्या अंतरो योऽप्सु तिष्ठन्नद्भ्योंतरो यस्तेजसि तिष्ठंस्तेजसोंतरो यो वायौ तिष्ठन्वायोरंतरः इति " । अर्थ यह । जो आत्मादेव पृथिवीविषे स्थित हुआ ता पृथिवीतैंभी अंतर है । तथा जो आत्मादेव जलोंविषे स्थित हुआ तिन जलोंतैंभी अंतर है । तथा जो आत्मादेव अग्निरूप तेजविषे स्थित हुआ ता तेजतैंभी अंतर है । तथा जो आत्मादेव वायुविषे स्थित हुआ ता वायुतैंभी अंतर है इति । इत्यादिक श्रुतियां सर्वत्र व्यापक आत्माकूं सर्वका अंतर्यामिरूपकरिकै कथन करतीयां हुइयां ता आत्माविषे शस्त्रादिकृत छेदनादिकोंकी अविषयता कथन करे हैं । तात्पर्य यह । जो पदार्थ तिन शस्त्रादिकोंके अंतर नहीं स्थित होवै है । तिस पदार्थकूंही ते शस्त्रादिक छेदनादिक करे हैं । और यह आत्मादेव तौ तिन शस्त्रादिक जड पदार्थोंकूं सत्तास्फूर्ति देणेहारा होणेतैं तिन शस्त्रादिकोंकाभी प्रे-

रक अंतर्यामि है । यातैं इस आत्मादेवकूं ते शस्त्रादिक किस प्रकार छेदनादिक करैंगे । किंतु नहीं करैंगे इति । इस अर्थविषे " येन सूर्यस्तपति तेजसे-द्धः " इत्यादिक श्रुतियांभी प्रमाणरूप जानि लेणीयां । इस अर्थकूं या गीताके सप्तम अध्यायविषे श्रीभगवान् आपही प्रगट करैंगे इति ॥ २४ ॥ ❀ ॥ किंवा । इस आत्माविषे छेद्यत्व दाह्यत्व आदिकोंकूं विषय करणेहारा कोई प्रमाणभी है नहीं । या कराणतैंभी इस आत्माविषे तिन छेद्यत्व दाह्यत्व आदिकोंका अभाव है । या प्रकारके अर्थकूं अव्यक्तोयं इत्यादिक अर्ध श्लोककरिकै श्रीभगवान् कथन करे हैं ।

(मू. श्लो.) अव्यक्तोयमचिंत्योयमविकार्योयमुच्यते । तस्मादेवं विदित्वैनं नानुशोचितुमर्हसि ॥२५॥ (पदच्छेदः) अव्यक्तः । अयं । अचिंत्यः । अयं । अविकार्यः । अयं । उच्यते । तस्मात् । एवं । विदित्वा । एनं । न । अनुशोचितुं । अर्हसि ॥२५॥ (पदार्थः) हे अर्जुन वेदभगवान्नैं यह आत्मा अव्यक्त कह्या है तथा यह आत्मा अचिंत्य कह्या है तथा यह आत्मा अविकार्य कह्या है तिस कारणतैं तूं इस आत्माकूं इस प्रकारका जानिकरिकै शोक करणेकूं नहीं योग्य है ॥ २५ ॥

टीका । जो पदार्थ नेत्रादिक इंद्रियजन्य ज्ञानका विषय होवै है सो पदार्थ प्रत्यक्ष कह्या जावै है । प्रत्यक्ष होणेतैं सो पदार्थ व्यक्त कह्या जावै है । जैसे रूपादिक गुणोंवाले घटादिक पदार्थ हैं । और यह आत्मादेव तौ रूपादिक गुणोंतैं रहित होणेतैं नेत्रादिक इंद्रियजन्य ज्ञानका विषय है नहीं । या कारणतैं यह आत्मादेव अप्रत्यक्ष है । अप्रत्यक्ष होणेतैं यह आत्मादेव अव्यक्त कह्या जावै है । या कारणतैं प्रत्यक्षप्रमाण ता आत्माके छेद्यत्वादिकोंकूं ग्रहण करि सकै नहीं । शंका । हे भगवन् आत्माविषे प्रत्यक्षप्रमाणके अप्रवृत्त हुएभी अनुमानप्रमाण प्रवृत्त होवैगा । ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् उत्तर कहे हैं (अचिंत्योयं इति) जो पदार्थ अनुमानप्रमाणजन्य ज्ञानका विषय होवै है । सो पदार्थ चिंत्य कह्याजावै है । जैसे पर्वतादिकोंविषे स्थित अग्नि आदिक पदार्थ अनुमानजन्य ज्ञानके विषय होणेतैं चिंत्य कहे जावै हैं । और यह आत्मादेव तौ तिन अग्नि आदिक अनुमेय पदार्थोंतैं विलक्षण है क्या अनुमानजन्य ज्ञानका विषय नहीं है । यातैं यह आत्मादेव अचिंत्य कह्या जावै है । तात्पर्य यह । जो पदार्थ किसीभी स्थानविषे प्रत्यक्ष होवै है । तिस पदार्थकाही अन्य स्थानविषे अनुमान होवै है । सर्वथा अप्रत्यक्ष पदार्थका अनुमान होवै नहीं । जैसे गृहादिक स्थानोंविषे प्रत्यक्ष जो अग्नि है ता अग्निकी धूमविषे व्याप्ति निश्चयकरिकै यह पुरुष पर्वतविषे धूमकूं देखिकरिकै यह पर्वत अग्निवाला है या प्रकारका अनुमान करे है ।

और जो पदार्थ किसीभी स्थानविषे प्रत्यक्ष नहीं होवै है ता पदार्थके व्याप्तिका ज्ञानही संभवता नहीं । यातैं ता पदार्थका अनुमानभी होवै नहीं । और या आत्माका तौ नेत्रादिक इंद्रियोंकरिकै प्रत्यक्ष होवै नहीं । यातैं अनुमान प्रमाणकरिकैभी ता आत्माके छेद्यत्वादिकोंका ग्रहण होइ सकै नहीं इति । शंका । हे भगवन् जो पदार्थ किसीभी स्थलविषे प्रत्यक्ष होवै है । ता पदार्थकाही अन्य स्थलविषे अनुमान होवै है । सर्वथा अप्रत्यक्ष पदार्थका अनुमान होवै नहीं । यह जो आपनैं नियम कह्या सो संभवता नहीं । काहेतैं नेत्रादिक इंद्रियोंका तथा धर्म अधर्मका किसीभी स्थलविषे प्रत्यक्ष होता नहीं । परंतु तिनोंविषेभी अनुमानकी विषयता तौ देखणेमैं आवती है । ता अनुमानका यह प्रकार है । रूपादिकोंकी प्रतीति करणकरिकै साध्य होणेकूं योग्य है क्रिया होणेतैं जा जा क्रिया होवै है। सा सा करणकरिकै साध्य होवै है। जैसे छेदनरूप क्रिया कुठाररूप करणकरिकै साध्य है इति । या प्रकारके अनुमानतैं रूपादिकोंकी प्रतीतियोंका करणरूपकरिकै नेत्रादिक इंद्रियोंकी सिद्धि होवै है । तथा यह पुरुष धर्मवान् है सुखी होणेतैं । तथा यह पुरुष अधर्मवान् है दुःखी होणेतैं इति । या अनुमानतैं धर्मअधर्मकी सिद्धि होवै है। तैसे सर्वथा अप्रत्यक्ष आत्माविषेभी अनुमानकी विषयता बनि सकै है । ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् उत्तर कहे हैं (अविकार्योयं इति) हे अर्जुन नानाप्रकारकी विक्रियावाले जो इंद्रियादिक पदार्थ हैं । ते इंद्रियादिक पदार्थही अपणे कार्यकी अन्यथा अनुपपत्तिकरिकै कल्प्यमान हुए अर्थापत्तिप्रमाणका तथा अनुमानप्रमाणका विषय होवै हैं। और यह आत्मादेव तौ सर्व विक्रियातैं रहित है । या कारणतैं यह आत्मादेव अर्थापत्तिप्रमाणका तथा अनुमाणप्रमाणका विषय होवै नहीं । और अनुमानकी न्यांई लौकिकशब्दभी प्रत्यक्षादि प्रमाणपूर्वकही होवै है । यातैं ता प्रत्यक्षप्रमाणके निषेध हुए ता लौकिक शब्दकाभी अर्थतैंही निषेध सिद्ध होवै है इति । शंका । हे भगवन् प्रत्यक्ष, अनुमान, अर्थापत्ति, लौकिकशब्द यह चारों प्रमाण ता आत्माविषे छेद्यत्व दाह्यत्व आदिकोंकूं मत ग्रहण करैं । तथापि वेदप्रमाण तिन छेद्यत्वादिकोंकूं ग्रहण करैगा । ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् उत्तर कहे हैं । (उच्यते इति) हे अर्जुन वेदभगवान्नैं तौ यह आत्मादेव अच्छेद्य अव्यक्तरूपकरिकै प्रतिपादन करीता है । यातैं लक्षणावृत्तिकरिकै निर्विकार आत्माकूं प्रतिपादन करणेहारा सो वेदभगवान् ता आत्माके छेद्यत्वादिक धर्मोंकूं कैसे प्रतिपादन करैगा किंतु नहीं प्रतिपादन करैगा । यातैं आत्माविषे छेद्यत्व दाह्यत्व आदिक धर्मोंकूं विषय करणेहारा कोईभी प्रमाण है नहीं । या कारणतैं यह आत्मादेव अच्छेद्य अदाह्यरूप है इति । इहां (नैनं छिंदंति शस्त्राणि) इस श्लोककरिकै शस्त्र अग्नि आदिकोंविषे आत्माके नाश करणेका असामर्थ्य कथन करा । और (अच्छेद्योयमदाह्योयं) इस श्लोककरिकै ता आत्माविषे छेदन-

दाहादिरूप क्रियाके कर्मपणेकी अयोग्यता निरूपण करी । और (अव्यक्तोयमचिंत्योयं) या अर्ध श्लोककरिकै ता आत्माविषे छेद्यत्वादिकोंकूं ग्रहण करणेहारे प्रमाणोंका अभाव कथन करा । या कारणतैं इहां पुनरुक्तिदोषकी प्राप्ति होवै नहीं। और (वेदाविनाशिनं नित्यं) इत्यादिक श्लोकोंविषे भगवान् भाष्यकारोंनैं अर्थतैं तथा शब्दतैं पुनरुक्तिदोषकी निवृत्ति करी नहीं । ताकेविषे भाष्यकारोंका यह अभिप्राय है । यह आत्मादेव अत्यंत दुर्बोध है । यातैं श्रीकृष्णभगवान् वारंवार प्रसंगकूं पाइकै तिसी आत्मादेवकूं शब्दांतरकरिकै निरूपण करे हैं । काहेतैं या अधिकारी पुरुषोंके संसारकी निवृत्ति करणेवासतै यह आत्मवस्तु किसी प्रकारकरिकैभी जो इन अधिकारी पुरुषोंके बुद्धिविषे आरूढ होवै तौ श्रेष्ठ है इति । यातैं दुर्विज्ञेय आत्मवस्तुके पुनःपुनः कथन करणेविषे पुनरुक्तिदोषकी प्राप्ति होवै नहीं । लोकप्रसिद्ध वस्तुके पुनःपुनः कथन करणेविषेही पुनरुक्तिदोषकी प्राप्ति होवै है इति । इहां किसी टीकाविषे अव्यक्त, अचिंत्य, अविकार्य या तीनों पदोंका या प्रकारका अर्थ कथन करा है । प्रत्यक्षप्रमाणका विषय जो यह स्थूल शरीर है ताका नाम व्यक्त है । ता स्थूल शरीरतैं यह प्रत्यक् आत्मा भिन्न है । यातैं यह प्रत्यक् आत्मा अव्यक्त कह्या जावै है । और रूपादिकोंके प्रकाशरूप कार्यकरिकै अनुमान करणेयोग्य जो चक्षु आदिकोंका समुदायरूप लिंगशरीर है ता लिंगशरीरका नाम चिंत्य है । ता लिंगशरीरतैंभी यह आत्मादेव भिन्न है । यातैं यह आत्मादेव अचिंत्य कह्या जावै है । और स्थूलसूक्ष्मरूप कार्यभावकरिकै स्थित होणेयोग्य जो त्रिगुणात्मक मूलाज्ञानरूप कारणशरीर है । जो अज्ञानरूप कारणशरीर केवल साक्षीकरिकैही गम्य है । ता कारणशरीरका नाम विकार्य है । ता कारणशरीरतैंभी यह आत्मा भिन्न है । यातैं यह आत्मादेव अविकार्य कह्या जावै है । इस प्रकार गुरुशास्त्रनैं अधिकारी पुरुषके प्रति स्थूलसूक्ष्मकारणशरीरके निषेधमुखकरिकै यह आत्मादेव उपदेश करीता है । कोई गोशृंगग्राहिका न्यायकरिकै इस प्रकारका यह आत्मा है या प्रकार विधिमुखकरिकै कथन करीता नहीं । तहां किसीनैं पूछा हमारी गौ कौन है आगेतैं किसी पुरुषनैं ता गौकूं शृंगतैं पकडिकरिकै यह तुमारी गौ है या प्रकार गौ दिखाई । याका नाम गोशृंगग्राहिका न्याय है इति । इस प्रकार पूर्व उक्त अनेक प्रकारकी युक्तियोंकरिकै आत्माकी नित्यता तथा निर्विकारताके सिद्ध हुए तुमारेकूं शोक करणा उचित नहीं है या प्रकारका उपसंहार श्रीभगवान् करे हैं (तस्मादेवं) इत्यादिक अर्ध श्लोककरिकै । हे अर्जुन यह जो पूर्व हमनैं तुमारेप्रति नित्य निर्विकार आत्माका स्वरूप कथन करा है । ता आत्माके स्वरूपका साक्षात्कारही शोकके कारणरूप अज्ञानका निवर्त्तक है । ऐसे आत्मसाक्षात्कारके प्राप्त हुए तुमारेकूं सो शोक करणा उचित नहीं है। कारणके निवृत्त हुए ताके कार्यकीभी अवश्यकरिकै निवृत्ति होवै है। तात्पर्य यह । ऐसे

निर्विकार नित्य आत्माकूं न जाणिकरिकै जो तूं पूर्व शोक करता भया है सो तुमारेकूं युक्त था। परंतु अबी हमारे उपदेशतैं आत्माके वास्तव स्वरूपकूं जानिकरिकै तुमारेकूं शोक करणा उचित नहीं है। तहां श्रुति। " तरति शोकमात्मवित् "। अर्थ यह। आत्माके वास्तव स्वरूपकूं जानणेहारा विद्वान् पुरुष सर्व शोकोंतैं रहित होवै है इति ॥ २५ ॥ तहां पूर्वप्रसंगविषे आत्मा जन्ममरणादिक विकारोंतैं रहित है या कारणतैं तूं शोक करणेकूं योग्य नहीं है। यह वार्त्ता भगवान्‌नैं अर्जुनकेप्रति कथन करी। अब ता आत्माविषे जन्ममरणादिक विकारोंकूं अंगीकार करिकैभी तूं शोक करणेकूं योग्य नहीं है या अर्थकूं श्रीभगवान् दो श्लोकोंकरिकै प्रतिपादन करे हैं। तहां आत्मा विज्ञानस्वरूप है तथा क्षणक्षणविषे विनाशकूं प्राप्त होवै है या प्रकारका आत्मा सौगत माने हैं इति। और यह स्थूल देहही आत्मा है। सो स्थूल देहरूप आत्मा स्थिर हुआभी क्षणक्षणविषे परिणामकूं प्राप्त होवै है तथा जन्मकूं प्राप्त होवै है तथा नाशकूं प्राप्त होवै है तथा प्रत्यक्षप्रमाणकरिकै सिद्ध है। या प्रकारका आत्मा लोकायतिक माने हैं इति। और आत्मा देहतैं भिन्न हुआभी देहके साथिही जन्मे है तथा देहके साथिही नाश होवै है। या प्रकारका आत्मा कोईक दूसरे माने हैं इति। और सृष्टिके आदिकालविषे जैसे आकाशकी उत्पत्ति होवै है। तैसे आत्माकीभी उत्पत्ति होवै है। और देहोंके भेद हुएभी सो आत्मा कल्पपर्यंत स्थिर रहे है। इस कल्पके अंतविषे सो आत्मा नाशकूं प्राप्त होवै है। या प्रकारका आत्मा कोई दूसरे माने हैं इति। और आत्मा नित्य है सो नित्यही आत्मा जन्मकूं तथा मरणकूं प्राप्त होवै है। या प्रकारका आत्मा तार्किक माने हैं। तिन तार्किकोंका यह अभिप्राय है। अपूर्व देहइंद्रियादिकोंके संबंधका नाम जन्म है। और पूर्व देहइंद्रियादिकोंके संबंधकी निवृत्तिका नाम मरण है। यह जन्ममरण दोनों धर्मअधर्मकरिकै जन्य हैं। यातैं ता धर्मअधर्मका आधाररूप जो नित्य वस्तु है ता नित्य वस्तुकेही यह जन्ममरण मुख्य हैं। और शरीरादिक अनित्य वस्तुविषे जो धर्म अधर्मकी आधारता मानियें तौ ता आश्रयके नाशतैं ता धर्मअधर्मकाभी नाश होवैगा। यातैं करे हुए कर्मोंकी फलके भोगतैं विनाही निवृत्तिरूप कृतहानिदोष तथा नकरे हुए कर्मोंका फलभोगरूप अकृताभ्यागमदोष या दोनों दोषोंकी प्राप्ति होवैगी। यातैं अनित्य वस्तुविषे ता धर्मअधर्मकी आधारता संभवै नहीं। यातैं शरीरादिक अनित्य वस्तुके ते जन्ममरण मुख्य नहीं हैं किंतु गौण हैं। या प्रकारका आत्मा तार्किक माने हैं। और कोईक शास्त्रवाले तौ यह माने हैं। जैसे श्रोत्ररूप नित्य आकाशका कर्णशष्कुलीरूप उपाधिके जन्मतैं जन्म होवै है। और ता कर्णशष्कुलीरूप उपाधिके नाशतैं नाश होवै है। ते जन्ममरण दोनों औपाधिक होणेतैं अमुख्य हैं। तैसे नित्य आत्माकाभी देहरूप उपाधिके जन्मतैं जन्म होवै है। तथा देहरूप उपाधिके मरणतैं मरण होवै है। ते जन्ममरणरूप दोनों

औपाधिक होणेतैं अमुख्य हैं मुख्य नहीं इति । इस प्रकार कोईक वादी आत्माकूं अनित्य माने हैं । और कोईक वादी ता आत्माकूं नित्य माने हैं । तहां आत्मा अनित्य है या पक्षविषेभी श्रीभगवान् आत्माके शोकका निषेध करे हैं ।

(मू. श्लो.) अथ चैनं नित्यजातं नित्यं वा मन्यसे मृतं । तथापि त्वं महाबाहो नैवं शोचितुमर्हसि ॥ २६ ॥ (पदच्छेदः) अथ । च । एनं । नित्यजातं । नित्यं । वा । मन्यसे । मृतं । तथापि । त्वं । महाबाहो । न । एवं । शो चितुं । अर्हसि ॥ २६ ॥ (पदार्थः) अनित्यपक्षविषे भी जो तूं इस आत्माकूं नित्यही जन्म्या हुआ तथा नित्यही मरा हुआ मानता होवैं तथापि हे महाबाहो अर्जुन तूं इस प्रकारका शोक करणेकूं नहीं योग्य हैं ॥ २६ ॥

टीका । हे अर्जुन यह आत्मादेव अत्यंत दुर्बोध है । यातैं वारंवार ता आत्माके श्रवण हुएभी ता आत्माके निश्चय करणेकी असामर्थ्यतातैं पूर्व कथन करे हुए हमारे पक्षका नहीं अंगीकार करिकै जो तूं किसी दूसरे पक्षका अंगीकार करता होवै । ता दूसरे पक्षविषेभी आत्मा अनित्य है या अनित्य पक्षकूं आश्रयण करिकै जो तूं इस आत्मादेवकूं नित्यही जन्म्या हुआ तथा नित्यही मरा हुआ मानता होवैं । तहां विज्ञानरूप आत्मा क्षणिक है या क्षणिक पक्षविषे तौ नित्य या शब्दका प्रतिक्षण यह अर्थ करना । क्या आत्माकूं क्षणक्षणविषे जो तूं जन्म्या हुआ तथा मरा हुआ मानता होवैं इति । और ता क्षणिक पक्षतैं भिन्न दूसरे पक्षोंविषे तौ ता नित्यशब्दका आवश्यक होणेतैं नियत यह अर्थ करणा । क्या यह देवदत्त नामा पुरुष जन्म्या है । तथा यह देवदत्तनामा पुरुष मरा है या प्रकारकी लौकिक प्रतीतिके वशतैं नियमकरिकै जो तूं आत्माका जन्ममरण कल्पना करता होवैं । तथापि हे महाबाहो अर्जुन (अहो बत महत्पापं कर्त्तुं व्यवसिता वयं) या प्रकारके शोक करणेकूं तूं योग्य नहीं हैं । काहेतैं जैसे भीष्मद्रोणादिक आत्मा नित्यही जन्ममरणवाले हैं । तैसे तूं आपभी नित्यही जन्ममरणवाला है । इहां (हे महाबाहो) या संबोधनकरिकै श्रीभगवान्नैं अर्जुनका उपहास सूचन करा । जैसे या लोकविषे जो कोई पुरुष किसी निकृष्ट कर्मकूं करे है । तिस कालविषे ता पुरुषके मातापितादिक वृद्ध पुरुष ता पुरुषके प्रति तूं हमारे कुलविषे बहुत सुपुत्र उत्पन्न हुआ है या प्रकारका वचन कहे हैं । सो वचन ता पुरुषके उपहासकूंही सूचन करे है । तैसे अत्यंत बहिर्मुख पुरुषोंनैं अंगीकार करा जो आत्माका अनित्यपणा है । ता अनित्यपणेकूं सो अर्जुन अंगीकार करता भया । ता कालविषे श्रीभगवान्नैं (हे महाबाहो) यह

अर्जुनका संबोधन दिया है । यातैं (हे महाबाहो) या संबोधनकरिकै भगवान्नैं अर्जुनका उपहास सूचन करा है इति । अथवा (हे महाबाहो) या संबोधनके कहणेकरिकै श्रीभगवान्नैं अर्जुन ऊपरि अपणी कृपा सूचन करी । क्या सर्व पुरुषोंविषे श्रेष्ठ जो तूं अर्जुन है तिस तुमारेविषे आत्मा अनित्य है या प्रकारकी कुदृष्टि संभवती नहीं इति । तहां विज्ञानरूप आत्मा क्षणिक है इस पक्षविषे तथा यह स्थूल देहही आत्मा है या पक्षविषे तथा देहके साथिही आत्मा जन्ममरणकूं प्राप्त होवै है या पक्षविषे दूसरे जन्मका तौ अभावही है। यातैं इन तीनों पक्षोंविषे पापका भय संभवता नहीं । और पापके भय करिकैही तूं शोककूं करता है । इन तीनों पक्षोंविषेभी आत्मा क्षणिक है या पक्षविषे तौ दृष्टदुःखभी संभवै नहीं । काहेतैं जिस बांधवोंके नाशके दर्शनतैं सो दृष्टदुःख होवै है । सो बांधवोंके नाशका दर्शन ता क्षणिक आत्माविषे संभवताही नहीं । यह क्षणिक पक्षविषे दूसरे पक्षोंतैं अधिकता है । और ता क्षणिक पक्षतैं भिन्न दूसरे पक्षोंविषे तौ दृष्टदुःख तथा ता दृष्टदुःखजन्य शोक संभव होइ सकै है । या अर्थके जनावणेवासतैही श्रीभगवान्नैं (एवं) यह शब्द कथन करा है । क्या ता पक्षविषे दृष्टदुःखजन्य शोकके संभव हुएभी अदृष्टदुःखजन्य शोक करणा सर्व प्रकारतैं तुमारेकूं उचित नहीं है इति ॥ २६ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हे भगवन् पूर्व उक्त तीन पक्षोंविषे यद्यपि शोक करणा उचित नहीं है । तथापि जिस पक्षविषे सृष्टिके आदिकालतैं लैके प्रलयपर्यंत आत्मा स्थिर रहे है । तथा जिस तार्किकके पक्षविषे आत्मा सर्वदा नित्य है । तिन दोनों पक्षोंविषे दृष्टदुःख तथा अदृष्टदुःख यह दोनों प्रकारका दुःख संभवै है । यातैं ता दृष्टअदृष्टदुःखके भयकरिकै मैं शोक करता हूं । ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् द्वितीय श्लोककरिकै ताका उत्तर कहे हैं।

(मू. श्लो.) जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च। तस्मादपरिहार्येऽर्थे न त्वं शोचितुमर्हसि ॥ २७ ॥ (पदच्छेदः) ॥ जातस्य । हि । ध्रुवः । मृत्युः । ध्रुवं । जन्म । मृतस्य । च । तस्मात् । अपरिहार्ये । अर्थे । न । त्वं । शोचितुं । अर्हसि ॥ २७ ॥

(पदार्थः) हे अर्जुन जिस कारणतैं जन्मकूं प्राप्त हुए आत्माका अवश्यकरिकै मृत्यु होवै है तथा मरणकूं प्राप्त हुएका अवश्यकरिकै जन्म होवै है तिस कारणतैं निवृत्त करणेकूं अशक्य जन्ममरणरूप अर्थविषे तूं शोक करणेकूं नहीं योग्य है ॥ २७ ॥

टीका । पूर्वजन्मोंविषे करे जो पुण्यपापरूप कर्म हैं । तिन कर्मोंके वशतैं प्राप्त भया है शरीरइंद्रियादिकोंका संबंधरूप जन्म जिसकूं ऐसा जो स्थि-

रस्वभाववाला यह आत्मा है । ता आत्माका तिन प्रारब्धकर्मोंके नाशतैं अनंतर तिन देहइंद्रियादिकोंके संबंधकी निवृत्तिरूप मरण अवश्यकरिकै होवै है । काहेतैं या लोकविषे जिन जिन पदार्थोंका कर्मके वशतैं संयोग होवै है । तिन तिन पदार्थोंका अंतविषे अवश्यकरिकै वियोग होवै है । और जिस आत्माका सो मरण होवै है । तिस आत्माका पूर्व शरीरविषे करे हुए पुण्यपापकर्मोंके फल भोगणेवासतै अवश्यकरिकै जन्म होवै है । इहां यद्यपि मृत्युकूं प्राप्त हुएका अवश्यकरिकै जन्म होवै है या प्रकारके नियमका जीवन्मुक्त पुरुषविषे व्यभिचार होवै है । काहेतैं जीवन्मुक्त पुरुषका मृत्यु तौ होवै है । परंतु ता जीवनन्मुक्त पुरुषका पुनः जन्म होवै नहीं । तथापि संचितकर्मवाले पुरुषका मरणतैं अनंतर अवश्यकरिकै जन्म होवै है । या अर्थविषे श्रीभगवान्का तात्पर्य है । जीवन्मुक्त पुरुषके ज्ञानरूप अग्निकरिकै सर्व संचित कर्म भस्म होइ जावै हैं । यातैं ता जीवन्मुक्त पुरुषकूं मरणतैं अनंतर पुनः जन्मकी प्राप्ति होवै नहीं इति । तिस कारणतैं निवृत्त करणेकूं अशक्य ऐसा जो यह जन्ममरणरूप अर्थ है ता अर्थविषे तूं विद्वान् शोक करणेकूं योग्य नहीं है । यह वार्त्ता श्रीभगवान् (ऋतेपि त्वान्न भविष्यंति सर्वे) या वचनकरिकै आगे कथन करैंगे । तात्पर्य यह । जो कदाचित् तुमनैं युद्ध करिकै नहीं हनन करे हुए यह भीष्मद्रोणादिक जीवतेही रहैं । तौ तिन भीष्मद्रोणादिकोंके साथि युद्ध करणेविषे तुमारेकूं शोक करणा उचित होवै । परंतु यह भीष्मद्रोणादिक तौ तुमारे युद्धतैं विना आपही कर्मके क्षयतैं मृत्युकूं प्राप्त होवैंगे । तिन भीष्मद्रोणादिकोंके मृत्युके निवृत्त करणेविषे तुमारा सामर्थ्य है नहीं । यातैं तुमारेकूं दृष्टदुःखजन्य शोक करणा उचित नहीं है इति । इस प्रकार अदृष्टदुःखजन्य शोककी शंकाविषेभी (तस्मादपरिहार्येर्थे न त्वं शोचितुमर्हसि) यहही उत्तर जानि लेणा । इहां इस लोकविषे बांधवोंके मरणजन्य जो दुःख है ताका नाम दृष्टदुःख है और परलोकविषे पापकर्मजन्य जो दुःख है ताका नाम अदृष्टदुःख है । तहां अदृष्टदुःखजन्य शोकपक्षविषे (अपरिहार्येर्थे) या वचनका यह अर्थ करणा । जैसे ब्राह्मणकूं अग्निहोत्रादिक कर्म नियमसैं करणे योग्य हैं । तैसे क्षत्रिय राजाकूं युद्धरूप कर्मभी नियमतैं करणे योग्य हैं । और जैसे ज्योतिष्टोमादिक यज्ञोंविषे पशुवोंकी हिंसा करणेतैं दोष होवै नहीं । तैसे युद्धविषेभी बांधवादिकोंकी हिंसा करणेतैं दोष होवै नहीं । तहां गौतमस्मृति ॥ "न दोषो हिंसायामाहवे इति" । अर्थ यह । युद्धविषे हिंसाके करणेतैं दोष होवै नहीं इति । यह सर्व वार्त्ता (स्वधर्ममपिचावेक्ष्य) इस श्लोकविषे आगे स्पष्ट होवैगी । यातैं जैसे वेदनैं विधान करे जो अग्निहोत्रादिक कर्म हैं । तिन विहित कर्मोंके न करणेतैं ब्राह्मणकूं प्रत्यवायकी प्राप्ति होवै है । या कारणतैं ते अग्निहोत्रादिक कर्म परित्याग करणेकूं अशक्य हैं । तैसे वेदविहित होणेतैं परित्याग करणेकूं अशक्य जो यह युद्धरूप अर्थ है । ता युद्धरूप अर्थविषे तूं

अदृष्टदुःखके भयकरिकै शोक करणेकूं योग्य नहीं है इति । किंवा । अग्निहोत्रादिक नित्यकर्मोंकी न्यांई जो कदाचित् युद्धकूं नित्यकर्मरूप नहीं अंगीकार करियें । किंतु ता युद्धकूं केवल काम्यकर्मरूपही अंगीकार करियें । तहां याज्ञवल्क्यस्मृति ॥ "य आहवेषु युद्ध्यंते भूम्यर्थमपराङ्मुखाः । अक्रूरैरायुधैर्यांति ते स्वर्गं योगिनो यथा" । अर्थ यह । जे योद्धा पुरुष भूमिके राजकी प्राप्तिवासतै युद्धविषे कपटतैं रहित शस्त्रोंकरिकै युद्ध करे हैं । तथा ता युद्धतैं विमुख होते नहीं । ते योद्धा पुरुष योगी पुरुषोंकी न्यांई स्वर्गकूं प्राप्त होवै हैं इति । या वचनकरिकै युद्धविषे काम्यकर्मरूपता प्रतीत होवै है । तथा (हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गं जित्वा वा भोक्ष्यसे महीं) या भगवान्‌के वचनतैंभी ता युद्धविषे काम्यकर्मरूपताही प्रतीत होवै है । तथापि प्रारंभ करा हुआ काम्यकर्मभी अवश्यकरिकै समाप्त करणेयोग्य होवै है । यातैं सो प्रारंभ करा हुआ काम्यकर्मभी नित्यकर्मके तुल्यही होवै है । और यह युद्धरूप कर्मभी पूर्व तुमनैं प्रारंभ करा है । यातैं इस युद्धविषे काम्यकर्मरूपताके अंगीकार किये हुएभी नित्यकर्मकी न्यांई यह युद्धरूप कर्म तुमारेकूं परित्याग करणेकूं अशक्य है इति । अथवा । (अथ चैनं नित्यजातं) यह श्लोक तथा (जातस्य हि ध्रुवो मृत्युः) यह श्लोक यह दोनों श्लोक आत्माके नित्यत्वपक्षविषेही हैं । आत्माके अनित्यत्वपक्षविषे ते दोनों श्लोक नहीं हैं । काहेतैं परम आस्तिक जो अर्जुन है । ता अर्जुनविषे वेदबाह्य नास्तिकोंके मतका अंगीकार करणा संभवता नहीं । या पक्षविषे ता श्लोकके अक्षरोंकी या प्रकारतैं योजना करणी । जो वस्तु वास्तवतैं नित्य हुआही देहइंद्रियादिकोंके संबंधके वशतैं जन्म्ये हुएकी न्यांई प्रतीत होवै ताका नाम नित्यजात है । ऐसे वास्तवतैं नित्य हुए आत्माकूंभी जो तूं जन्म्या हुआ मानै । तथा वास्तवतैं नित्य हुए आत्माकूंभी जो तूं मरा हुआ मानै । तौभी तूं शोक करणेकूं योग्य नहीं है इति । इस प्रकारकी प्रतिज्ञा प्रथम श्लोकविषे करिकै ता प्रतिज्ञाकी सिद्धि करणेवासतै द्वितीय श्लोककरिकै हेतु कहे हैं । (जातस्य हि इति) यद्यपि नित्यवस्तुका जन्ममरण संभवै नहीं । तथापि उपाधिके जन्ममरणतैं ता नित्यवस्तुविषेभी जन्ममरणका व्यवहार पूर्व कथन करि आये हैं । दूसरा सर्व अर्थ स्पष्टही है इति ॥ ३७ ॥ ❀ ॥ तहां पूर्व प्रसंगविषे सर्व प्रकारतैं आत्माके अशोच्यत्वका निरूपण करा । अब आत्माकूं शोकका अविषय हुएभी भूतोंका समुदायरूप इन भीष्मद्रोणादिक शरीरोंका उद्देश करिकै मैं शोक करता हूं या प्रकारकी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् ता शंकाकी निवृत्ति करे हैं ।

(मू. श्लो.) अव्यक्तादीनि भूतानि व्यक्तमध्यानि भारत । अव्यक्तनिधनान्येव तत्र का परिदेवना ॥ २८ ॥ (पदच्छेदः)

अव्यक्तादीनि । भूतानि । व्यक्तमध्यानि । भारत । अव्यक्तनिधनानि । एव । तत्र । का । परिदेवना ॥ २८ ॥ (पदार्थः)
हे भारत यह शरीर आदिकालविषे अव्यक्त हैं तथा मध्यकालविषे व्यक्त हैं तथा मरणकालविषेभी अव्यक्तही हैं ऐसे शरीरोंविषे दुःखजन्य प्रलाप क्या करणा है ॥ २८ ॥

टीका । हे भारत पृथिवी आदिक पंच भूतोंका समुदायरूप जो यह भीष्मद्रोणादिक नामवाले स्थूल शरीर हैं। ते यह शरीर अपणी उत्पत्तितैं पूर्व प्रतीत होवैं नहीं । और यह शरीर जन्मतैं अनंतर तथा मरणतैं पूर्व मध्यकालविषे प्रतीत होवैं हैं । और मरणतैं अनंतरभी यह शरीर प्रतीत होवैं नहीं । यातैं यह शरीर आदिकालविषे तथा अंतकालविषे तौ अव्यक्त हैं तथा मध्यकालविषे व्यक्त हैं । नहीं प्रतीत होणेका नाम अव्यक्त है और प्रतीत होणेका नाम व्यक्त है । जैसे स्वप्नके पदार्थ तथा इंद्रजालके पदार्थ तथा रज्जुसर्पादिक अपणी प्रतीतिके समानकालविषेही स्थित होवै हैं । अपणी प्रतीतितैं पूर्वउत्तरकालविषे स्थित होवैं नहीं । तैसे यह शरीरभी केवल मध्यकालविषेही प्रतीत होवैं हैं । पूर्वउत्तरकालविषे प्रतीत होवैं नहीं । और "आदावंतेच यन्नास्ति वर्त्तमानेपि तत्तथा" । अर्थ यह । जो पदार्थ आदिकालविषे तथा अंतकालविषे नहीं होवै है। सो पदार्थ मध्यकालविषेभी नहीं होवै है । जैसे स्वप्नादिकोंके पदार्थ आदिअंतकालविषे नहीं हैं । यातैं मध्यकालविषेभी नहीं हैं । तैसे यह शरीरभी आदिकालविषे तथा अंतकालविषे हैं नहीं । यातैं मध्यकालविषेभी नहीं हैं । ऐसे मिथ्यारूप अत्यंत तुच्छ शरीरोंविषे दुःखजन्य प्रलाप करणा तुमारेकूं उचित नहीं है । जैसे स्वप्नविषे अपणे बांधवोंकूं तथा धनकूं प्राप्त होइकै जाग्रत अवस्थाविषे तिन बांधव धनादिकोंके नाशकरिकै कोई मूढ पुरुषभी शोक करता नहीं । तैसे या अनित्य भीष्मद्रोणादिक शरीरोंका उद्देश करिकै तुमारेकूं शोक करणा योग्य नहीं है इति । अथवा । भूतशब्दकरिकै आकाशादिक पंचमहाभूतोंका ग्रहणकरणा । ता पक्षविषे या श्लोकके पदोंकी इस प्रकार योजना करणी । अव्याकृत नामा जो अविद्या उपहित चैतन्य है ताका नाम अव्यक्त है । सो अव्यक्त है पूर्व अवस्था जिन आकाशादिक भूतोंकी तिन आकाशादिक भूतोंका नाम अव्यक्तादि है । तथा नामरूपकरिकै प्रगटरूप है स्थिति अवस्था जिन आकाशादिक भूतोंकी तिन आकाशादिक भूतोंका नाम व्यक्तमध्य है। और जैसे घटशरावादिक कार्योंका मृत्तिकारूप उपादानकारणविषे लय होवै है । तैसे अव्यक्तरूप अपणे कारणविषे निधन क्या प्रलय है जिन आकाशादिक भूतोंका तिन आकाशादिक भूतोंका नाम अव्यक्त निधन है । तहां श्रुति । "तद्धेदंतर्ह्यव्याकृतमासी-

तन्नामरूपाभ्यामेव व्याक्रियत इति ”। अर्थ यह। यह आकाशादिक प्रपंच अपणी उत्पत्तितैं पूर्व अव्याकृतरूप होता भया । सो अव्याकृतरूप प्रपंच सृष्टिकालविषे नामरूपकरिकै प्रगट होता भया इति। इत्यादिक श्रुति मायाउपहित चैतन्यरूप अव्यक्तकूंही आकाशादिक सर्व प्रपंचका उपादानरूप तथा आधाररूप कथन करे हैं। और या उपादानरूप अव्यक्तकूं या आकाशादिक प्रपंचके लयकी स्थानरूपता तो अर्थतैंही सिद्ध होवै है । काहेतैं कार्यका अपणे उपादानकारणविषेही लय देखणेमैं आवै है। उपादानकारणकूं छोडिकै किसी अन्य पदार्थविषे कार्यका लय होवै नहीं । यातैं यह अर्थ सिद्ध भया । अज्ञानकरिकै कल्पित होणेतैं अत्यंत तुच्छ जो यह आकाशादिक पंचभूत हैं । तिन भूतोंका उद्देश करिकैभी जबी तुमारेकूं शोक करणा उचित नहीं भया । तबी तिन आकाशादिक भूतोंका कार्यरूप जो यह भीष्मद्रोणादिक शरीर हैं तिन शरीरोंका उद्देशकरिकै शोक करणा उचित नहीं है याकेविषे क्या कहणा है इति । अथवा । आकाशादिक पंचभूत तथा तिनोंके कार्य शरीरादिक अपणे अव्यक्त-रूपकरिकै सर्वदा विद्यमान हैं । किसीभी कालविषे तिनोंका नाश होवै नहीं । यातैं तिनोंके उद्देशकरिकै प्रलाप करणा तुमारेकूं उचित नहीं है। इहां।(हे भारत) या संबोधनकरिकै भगवान्नैं अर्जुनके प्रति यह अर्थ सूचन करा। तूं शुद्धवंशविषे उत्पन्न हुआ हैं। यातैं तूं शास्त्रके अर्थकूं नि-श्चय करणे योग्य हैं। ता शास्त्रके अर्थकूं तूं क्यूं नहीं निश्चय करता इति ॥ २८ ॥ ❀ ॥ शंका। हे भगवन् या लोकविषे शास्त्रके अर्थकूं जानणेहारे बहुत विद्वान् पुरुषभी शोक करते हुए देखणेविषे आवते हैं। यातैं तूं विद्वान् होइकै शोक किसवासतै करता हैं या प्रकारका उपालंभ वारंवार हमारेकूं आप किसवासतै देते हो। किंवा शास्त्रविषे यह कह्या है। “ वक्तुरेव हि तज्जाड्यं श्रोता यत्र न बुध्यते ” अर्थ यह। जहां श्रोता बो-धकूं नहीं प्राप्त होवै तहां वक्ताकीही जडता जानणी इति। यातैं तुमारे वचनके अर्थका नहीं बोध होणाभी हमारेकूं दोष नहीं है । समाधान। हे अ-र्जुन जैसे तुमारेकूं आत्माके अज्ञानतैंही शोक हुआ है। तैसे अन्यभी विद्वानोंकूं जो शोक होवै है सोभी आत्माके अज्ञानतैंही होवै है । और जैसे अन्य पुरुषोंकूं आत्माके प्रतिपादक शास्त्रोंके अर्थका जो नहीं बोध हुआ है सो अपणे अंतःकरणके दोषतैं नहीं हुआ है । कोई वक्ता पुरुषके दोषतैं नहीं। तैसे तुमारेकूं जो हमारे वचनके अर्थका बोध नहीं भया है। सोभी अपणे अंतःकरणके दोषतैं नहीं भया है। याकेविषे कोई हमारा दोष नहीं है । यातैं तुमारे पूर्व उक्त दोनों दोष संभवते नहीं। या प्रकारके अभिप्राय करिकै श्रीभगवान् आत्माके दुर्विज्ञेयताकूं निरूपण करे हैं।

(मू. श्लो.) आश्चर्यवत्पश्यति कश्चिदेनमाश्चर्यवद्वदति तथैव चान्यः आश्चर्यवच्चैनमन्यः शृणोति श्रुत्वाप्येनं वेद न चैव कश्चित् ॥ २९ ॥ (पदच्छेदः) आश्चर्यवत् । पश्यति । कश्चित् । एनं । आश्चर्यवत् । वदति । तथा । एवं । च । अन्यः । आश्चर्यवत् । च । एनं । अन्यः । शृणोति । श्रुत्वा । अपि । एनं । वेद । न । च । एव । कश्चित् ॥ २९ ॥ (पदार्थः) हे अर्जुन कोईक पुरुष इस आत्माकूं आश्चर्यवत् देखता है तथा अन्य कोई पुरुष इस आत्माकूं आश्चर्यवत्‌ही कथन करे है तथा अन्य कोई पुरुष इस आत्माकूं आश्चर्यवत् श्रवण करे है तथा कोईक पुरुष इस आत्माकूं श्रवणकरिकैभी नहीं जाने है ॥ २९ ॥

टीका । (एनं) या पदकरिकै कथन करा जो आत्मारूप कर्म है । तथा (पश्यति) या पदकरिकै कथन करी जो दर्शनरूप क्रिया है । तथा (कश्चित्) या पदकरिकै कथन करा जो अधिकारी पुरुषरूप कर्त्ता है । या तीनोंकाही (आश्चर्यवत्) यह विशेषण है । तहां प्रथम आत्मारूप कर्मविषे आश्चर्यवत्‌रूपता निरूपण करे हैं । हे अर्जुन यह आत्मादेव आश्चर्यवत् है क्या अद्भुत पदार्थके समान है । तथा अविद्याकरिकै कल्पित नानाप्रकारके विरुद्धधर्मवाला हुआ प्रतीत होवै है । या कारणतैं यह आत्मादेव वास्तवतैं सर्वदा विद्यमान हुआभी अविद्यमान हुएकी न्यांई प्रतीत होवै है । तथा यह आत्मादेव वास्तवतैं स्वप्रकाशचैतन्यरूप हुआभी जडकी न्यांई प्रतीत होवै है । तथा यह आत्मादेव वास्तवतैं आनंदरूप हुआभी दुःखी हुएकी न्यांई प्रतीत होवै है । तथा यह आत्मादेव वास्तवतैं सर्व विकारोंतैं रहित हुआभी विकारवान्‌की न्यांई प्रतीत होवै है । तथा यह आत्मादेव वास्तवतैं नित्य हुआभी अनित्यकी न्यांई प्रतीत होवै है । तथा यह आत्मादेव वास्तवतैं प्रकाशमान् हुआभी अप्रकाशमान्‌की न्यांई प्रतीत होवै है । तथा यह आत्मादेव वास्तवतैं ब्रह्मतैं अभिन्न हुआभी भिन्न हुएकी न्यांई प्रतीत होवै है । तथा यह आत्मादेव वास्तवतैं सर्वदा मुक्त हुआभी बद्ध हुएकी न्यांई प्रतीत होवै है । तथा यह आत्मादेव वास्तवतैं अद्वितीयरूप हुआभी सद्वितीयकी न्यांई प्रतीत होवै है । इसतैं आदिलैके अनेक प्रकारकी आश्चर्यवत् रूपता आत्माविषे है । ऐसे आश्चर्यवत् आत्माकूं शमदमादिक साधनसंपन्न तथा अंत्यशरीरवाला कोईक पुरुषही गुरुशास्त्रके उपदेशतैं अविद्यारचित सर्व द्वैतप्रपंचका निषेध करिकै परमात्माके स्वरूपमात्रकूं विषय करणेहारी तथा महावाक्यरूप वेदांतकरिकै जन्य तथा सर्व पुण्यकर्मोंकी फलरूप ऐसी अंतःकरणकी वृत्तिविषे साक्षात्कार करे है । अब दर्शनरूप क्रियाविषे आश्चर्यवत्‌रूपता निरूपण करे हैं । (पश्यति) या शब्दका अ-

र्थरूप जो आत्माकी दर्शनरूप क्रिया है। सा दर्शनरूप क्रियाभी आश्चर्यवत् है। काहेतैं जो अंतःकरणका वृत्तिरूप ज्ञान स्वरूपतैं मिथ्यारूप हुआभी सत्य आत्माका अभिव्यंजक है। तथा जो ज्ञान अविद्याका कार्यरूप हुआभी ता अविद्याकूं नाश करे है। तथा जो ज्ञान अविद्यारूप कारणकूं नाश करता हुआ ता अविद्याका कार्य होणेतैं अपणेकूंभी नाश करे है। इसतैं आदिलैके अनेक प्रकारकी आश्चर्यवत्‌रूपता ता ज्ञानरूप दर्शनविषे है इति। अब ता दर्शनरूप क्रियाके विद्वान्‌रूप कर्त्ताविषे आश्चर्यवत्‌रूपता निरूपण करे हैं। (कश्चित्) या शब्दकरिकै कथन करा जो आत्मसाक्षात्कारवान् पुरुष है। सो विद्वान् पुरुषभी आश्चर्यवत् है। काहेतैं यह विद्वान् पुरुष आत्मसाक्षात्कारकरिकै अविद्यातैं तथा अविद्याके कार्यतैं रहित हुआभी प्रारब्धकर्मकी प्रबलतातैं अज्ञानी पुरुषकी न्याईं व्यवहार करे है। तथा यह विद्वान् पुरुष सर्वदा समाधिविषे स्थित हुआभी व्युत्थानकूं प्राप्त होवै है। तथा यह विद्वान् पुरुष व्युत्थानकूं प्राप्त हुआभी पुनः समाधिकूं अनुभव करे है। इसतैं आदिलैके अनेक प्रकारकी आश्चर्यवत्‌रूपता ता विद्वान् पुरुषविषे है इति। यातैं यह अर्थ सिद्ध भया। जो आत्मा तथा जिस आत्माका ज्ञान तथा जिस आत्माके जानणेहारा पुरुष यह तीनों आश्चर्यरूप हैं। तिस परम दुर्विज्ञेय आत्माकूं तूं विनाही प्रयत्नतैं किस प्रकार जानि सकैगा। किंतु प्रयत्नतैं विना ता आत्माका जानणा अत्यंत कठिन है इति। इस प्रकार उपदेश करणेहारे ब्रह्मवेत्ता पुरुषके अभावतैंभी आत्मा दुर्विज्ञेय है। काहेतैं जो विद्वान् पुरुष आप आत्माकूं अपरोक्ष जाने है। सो विद्वान् पुरुषही दूसरे अधिकारी पुरुषके प्रति तिस आत्माका उपदेश करि सकै है। और जो पुरुष आपही आत्माकूं नहीं जानता। सो अज्ञानी पुरुष दूसरे किसीके प्रति आत्माका उपदेश करि सकै नहीं। और जो विद्वान् पुरुष आत्माकूं अपरोक्ष जाने है। सो विद्वान् पुरुष विशेषकरिकै तौ समाधियुक्तही होवै है। यातैं सो समाधिविषे जुड्या हुआ ब्रह्मवेत्ता पुरुष दूसरे अधिकारी पुरुषोंके प्रति किस प्रकार आत्माका उपदेश करैगा। किंतु नहीं करैगा। जिस कारणतैं चित्तकी बाह्यवृत्तितैं विना उपदेश करणा संभवता नहीं। और जिस ब्रह्मवेत्ता पुरुषका चित्त ता समाधितैं व्युत्थानकूं प्राप्त हुआ है। सो ब्रह्मवेत्ता पुरुष यद्यपि अधिकारी जनोंके प्रति आत्माके उपदेश करणेविषे समर्थ है। तथापि सो ब्रह्मवेत्ता पुरुष दूसरे अधिकारी पुरुषोंकूं जानणा कठिन है। और जो जो कदाचित् यह अधिकारी पुरुष जिसी किसी प्रकारकरिकै ता ब्रह्मवेत्ता पुरुषकूं जानैभी तौभी सो ब्रह्मवेत्ता पुरुष लाभ पूजा ख्याति आदिक प्रयोजनकी अपेक्षा करै नहीं। यातैं सो ब्रह्मवेत्ता पुरुष ता अधिकारी पुरुषके प्रति आत्माका उपदेश नहीं करैगा। और सो ब्रह्मवेत्ता पुरुष जो कदाचित् जिसी प्रकारतैं कृपामात्रकरिकै ता अधिकारी पुरुषके प्रति आत्माका उपदेश करैभी। तौभी ऐसा कृपालु ब्रह्मवेत्ता पुरुष ईश्वरकी न्याईं

अंत्यत दुर्लभ है। या प्रकारके अभिप्रायकरिकै श्रीभगवान् अर्जुनके प्रति कहे हैं। (आश्चर्यवद्वदति तथैव चान्यः इति) हे अर्जुन इस आत्मादेवकूं अन्य पुरुष आश्चर्यवत् कथन करे है। इहां (अन्यः) या शब्दकरिकै सर्व अज्ञानी जनोंतैं विलक्षण पुरुषका ग्रहण करणा। कोई आत्माके देखणेहारे पुरुषतैं भिन्न पुरुषका ग्रहण नहीं करणा। काहेतैं जो पुरुष जिस वस्तुकूं जाने है। सो पुरुषही तिस वस्तुका कथन करे है। तिस वस्तुके ज्ञानतैं विना तिस वस्तुका कथन संभवै नहीं। यातैं आत्माके जानणेहारे पुरुषतैं भिन्न पुरुषका जो अन्य शब्दकरिकै ग्रहण करियें तौ वदतोव्याघातदोषकी प्राप्ति होवैगी इति। इहांभी (एनं) या शब्दकरिकै कथन करा जो आत्मारूप कर्म है। तथा (वदति) या शब्दकरिकै कथन करी जो वदनरूप क्रिया है। तथा (अन्यः) या शब्दकरिकै कथन करा जो ता वदनरूप क्रियाका कर्त्ता है। या तीनोंकाही आश्चर्यवत् यह विशेषण जानणा। तहां आत्मारूप कर्मविषे तथा विद्वान् पुरुषरूप कर्त्ताविषे आश्चर्यवत्रूपता इसी श्लोकविषे पूर्व कथन करि आये हैं। सो इहांभी जानि लेणी। अब वदनरूप क्रियाविषे आश्चर्यवत्रूपता निरूपण करे हैं। हे अर्जुन सर्व शब्दोंका अवाच्य जो आत्मा देव है। ता आत्मादेवका जो कथन है सो कथनभी आश्चर्यवत् है। तहां श्रुति। "यतो वाचो निवर्त्तंते अप्राप्य मनसा सह"। अर्थ यह। मनसहित वाणीभी जिस आत्माकूं न प्राप्त होइकै जिस आत्मातैं निवृत्त होइ आवै है इति। तात्पर्य यह। अविद्या अंतःकारणादिकविशिष्ट अर्थविषे है शक्ति जिनोंकी तथा भागत्यागलक्षणाकरिकै कल्पित है संबंध जिनोंका ऐसे जो तत् त्वं आदिक शब्द हैं। तिन शब्दोंकरिकै सर्व धर्मोंतैं रहित शुद्ध आत्माका जो निर्विकल्पक साक्षात्काररूप प्रतिपादन है सो अत्यंत आश्चर्यरूप है। जिस कारणतैं लोकविषे किसी जातिगुणादिक धर्मोंकूं अंगीकार करिकैही शब्द अपणे अर्थकूं बोधन करै है। जातिगुणादिक धर्मोंतैं विना किसीभी अर्थकूं शब्द बोधन करता नहीं इति। अथवा। सुषुप्त पुरुषके उठावणेहारे वचनकी न्यांई इन तत्त्वमसि आदिक वाक्योंनैं शक्तिरूप संबंधतैं विनाही तथा लक्षणारूप संबंधतैं विनाही तथा अन्य किसी संबंधतैं विनाही जो शुद्ध आत्माका प्रतिपादन करीता है सो अंत्यत आश्चर्यवत् है। जिस कारणतैं शब्दका सामर्थ्य किसी पुरुषतैंभी चिंतन करा जावै नहीं। शंका। शक्तिलक्षणादिक संबंधतैं विनाही सो शब्द जो कदाचित् अपणे अर्थका बोधन करता होवै। तौ तिस शब्दतैं किसी दूसरे पदार्थकाभी बोध होणा चाहिये। ता शब्दके संबंधका अभाव सर्व पदार्थोंविषे तुल्यही है। समाधान। यह दोष लक्षणाअंगीकारपक्षविषेभी तुल्यही है। काहेतैं शक्यअर्थके संबंधका नाम लक्षणा है। सा शक्यसंबंधरूप लक्षणाभी अनेक पदार्थोंविषे रहे है। यातैं तिन सर्व पदार्थोंका बोध होणा चाहिये। जैसे गंगाविषे ग्राम है या वचनविषे स्थित जो गंगापद है। ता गंगापदकी तीरविषे लक्षणा होवै है।

तहां गंगापदका शक्य अर्थ जो जलका प्रवाह है। ता जलके प्रवाहका जैसे तीरके साथि संयोगसंबंध है तैसै ता जलविषे रहणेहारे मत्स्य नौकादिक अनेक पदार्थोंके साथि संयोगसंबंध है। शंका। यद्यपि शक्य अर्थका संबंध अनेक पदार्थोंके साथि होवै है। तथापि जिस अर्थके बोध करावणेविषे वक्ता पुरुषका तात्पर्य होवै है। तिसीही अर्थका ता शब्दतैं बोध होवै है। तिसतैं अन्य अर्थका बोध होवै नहीं। समाधान। सो वक्ता पुरुषका तात्पर्यभी सर्व श्रोतापुरुषोंके प्रति तुल्यही है। यातैं तिन सर्व श्रोता पुरुषोंकूं ता वक्ताके तात्पर्यतैं तिसी अर्थका बोध होणा चाहिये। सो ऐसा देखणेविषे आवता नहीं। शंका। तिन सर्व श्रोता पुरुषोंविषे कोई एक श्रोताही ता वक्ता पुरुषके तात्पर्यविशेषकूं निश्चय करे है। ते सर्व श्रोता पुरुष तिस तात्पर्यकूं निश्चय करि सकै नहीं। समाधान। या तुमारे कहणेतैं यह अर्थ सिद्ध होवै है। ता श्रोता पुरुषविषे स्थित जो कोई निर्दोषत्वरूप विशेष धर्म है। सो धर्मही ता वक्ता पुरुषके तात्पर्यका निश्चय करावणेहारा है इति। सो तात्पर्यका निश्चायक निर्दोषत्वरूप विशेष धर्म हमारे मतविषेभी किसीतैं निवृत्त करा जावै नहीं। यातैं जिस शुद्ध अंतःकरणवाले अधिकारी पुरुषकूं वक्ताके तात्पर्य निश्चयपूर्वक भागत्यागलक्षणाकरिकै तत्त्वमसि आदिक महावाक्यके अर्थका बोध तुमोंनैं अंगीकार करीता है। तिसी शुद्ध अंतःकरणवाले अधिकारी पुरुषकूंही 'तत्त्वमसि' आदिक शब्दविशेष शक्तिलक्षणादिरूप संबंधतैं विनाही अखंड चैतन्यवस्तुका साक्षात्कार उत्पन्न करे हैं। यातैं इस हमारे शक्तिलक्षणादिक संबंधके अनंगीकारपक्षविषे किंचित्मात्रभी दोषकी प्राप्ति होवै नहीं। उलटा इस हमारे पक्षविषे "यतो वाचो निवर्त्तंते" या श्रुतिका अर्थभी संकोचतैं विनाही सिद्ध होवै है। और लक्षणाअंगीकारपक्षविषे तौ या श्रुतिका जिस आत्माकूं शक्तिवृत्तिकरिकै वचन बोधन नहीं करे हैं या प्रकारका संकोच करणा होवै है इति। यहही भगवान्का अभिप्राय वार्त्तिककार सुरेश्वराचार्यनैंभी "अगृहीत्वैव संबंधमभिधानाभिधेययोः। हित्वा निद्रां प्रबुध्यंते सुषुप्तेर्बोधिताः परैः"। इत्यादिक श्लोकोंकरिकै वर्णन करा है। तिन श्लोकोंका यह अभिप्राय है। शब्दकी अचिंत्यशक्ति होवै है। यातैं जैसे सुषुप्तिकूं प्राप्त हुए पुरुषोंकूं ता कालविषे शब्द अर्थ या दोनोंके शक्तिलक्षणादिक संबंधोंका ज्ञान है नहीं। तथापि ते सुषुप्त पुरुष अन्य पुरुषोंनैं हे देवदत्त इत्यादिक शब्दोंकरिकै बोधन करे हुए ता सुषुप्तितैं जाग्रतकूं प्राप्त होवै हैं। तैसे यह शुद्ध अंतःकरणवाले अधिकारी पुरुषभी शक्तिलक्षणादिक संबंधके ज्ञानतैं विनाही तत्त्वमसि आदिक वाक्योंतैं अद्वितीयब्रह्मकूं साक्षात्कार करे हैं। इसतैं आदिलैके अनेक प्रकारकी आश्चर्यवत्रूपता ता वदनरूप क्रियाविषे है इति। यातैं यह अर्थ सिद्ध भया। वचनका विषय आत्मा तथा ता वचनका वक्ता विद्वान् पुरुष तथा सा वचनरूप क्रिया यह तीनों अत्यंत आश्चर्यरूप हैं। या कारणतैं सो आत्मादेव

अत्यंत दुर्विज्ञेय है इति । अब श्रोता पुरुषकी दुर्लभताकूं कथन करिकैभी ता आत्माकी दुर्विज्ञेयता निरूपण करे हैं (आश्चर्यवच्चैनमन्यः शृणोति श्रुत्वाप्येनं वेद इति) हे अर्जुन आत्माकूं साक्षात्कार करणेहारा तथा आत्माका कथन करणेहारा जो मुक्त पुरुष है । ता मुक्त पुरुषतैं भिन्न जो मुमुक्षु जन है । सो मुमुक्षु जन समित्पाणि होइकै विधिपूर्वक ब्रह्मवेत्ता गुरुके समीप जाइकै जो इस आत्माकूं श्रवण करे है क्या सर्व वेदांतवाक्योंके तात्पर्यका विषयरूपकरिकै निश्चय करे है । सोभी अत्यंत आश्चर्यवत् है । और ता ब्रह्मवेत्ता गुरुके मुखतैं आत्माका श्रवण करिकैभी मनननिदिध्यासनकी परिपक्कताकरिकै जो आत्माका साक्षात्कार करणा है सोभी आश्चर्यवत् है । सो साक्षात्कारकी आश्चर्यरूपता (आश्चर्यवत्पश्यति कश्चिदेनं) या वचनकरिकै पूर्व कथन करि आये हैं । और पूर्वकी न्यांई इहांभी श्रवणका विषय आत्मा तथा श्रवणरूप क्रिया तथा श्रवणकर्त्ता पुरुष या तीनोंकाही आश्चर्यवत् यह विशेषण जानणा । तहां आत्माविषे तथा श्रवणरूप क्रियाविषे तौ पूर्व उक्त आश्चर्यवत्रूपताही जानि लेणी । और श्रवणकर्त्ता पुरुषविषे तौ यह आश्चर्यरूपता है । पूर्व अनेक जन्मोंविषे अनुष्ठान करे जो पुण्यकर्म हैं । तिन पुण्यकर्मोंकरिकै निवृत्त होइ गया है पापरूप मल जिसके मनका । तथा गुरुशास्त्रके वचनोंविषे अत्यंत है श्रद्धा जिसकी । ऐसे उत्तम अधिकारी पुरुषोंकी जो इस लोकविषे दुर्लभता है । सा दुर्लभताही ता श्रोता पुरुषविषे आश्चर्यरूपता है । यह वार्त्ता श्रीभगवान् आपही (मनुष्याणां सहस्रेषु कश्चिद्यतति सिद्धये। यततामपि सिद्धानां कश्चिन्मां वेत्ति तत्त्वतः इति"। या श्लोकविषे आगे कथन करैंगे । तहां श्रुतिभी । "श्रवणायापि बहुभिर्यो न लभ्यः शृण्वंतोपि बहवोयं न विदुः आश्चर्यो वक्ता कुशलोऽस्य लब्धा आश्चर्यो ज्ञाता कुशलानुशिष्टः इति" । अर्थ यह । यह आत्मादेव बहुत पुरुषोंकूं तौ श्रवणवासतैभी नहीं प्राप्त होता । और बहुत पुरुष तौ श्रवण करते हुएभी इस आत्माकूं जानि सकते नहीं । और इस आत्मादेवका वक्ता पुरुषभी बहुत आश्चर्यरूप है । और इस आत्मादेवकूं प्राप्त होणेहारा पुरुषभी बहुत कुशल है । और ब्रह्मवेत्ता कुशल गुरुकरिकै उपदेश करा हुआ इस आत्माके जानणेहारा विद्वान् पुरुषभी आश्चर्यरूप है इति । शंका । हे भगवन् जो अधिकारी पुरुष ब्रह्मवेत्ता गुरुके मुखतैं वेदांतशास्त्रका श्रवणमनननिदिध्यासन करैगा । सो अधिकारी पुरुष ता आत्माकूं अवश्यकरिकै साक्षात्कार करैगा । याके विषे क्या आश्चर्य है । ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् उत्तर कहे हैं (न चैव कश्चित् इति) या वचनविषे स्थित जो चकार है सो चकार पूर्ववचनविषे स्थित (एनं वेद) या दोनों पदोंके अनुषंगवासतै है । पूर्ववचनविषे स्थित पदका उत्तरवचनविषे संबंध करणेका नाम अनुषंग है। यातैं यह अर्थ सिद्ध भया । कोईक पुरुष ब्रह्मवेत्ता गुरुके मुखतैं श्रवणादिकोंकूं करता हुआभी किसी प्रतिबंधके वशतैं इस आत्माकूं जानि सकता

नहीं । जबी श्रवणादिकोंकूं करता हुआभी कोईक पुरुष इस आत्माकूं नहीं जानि सकै है । तबी श्रवणादिकोंकूं नहीं करणेहारे पुरुष इस आत्माकूं नहीं जाने हैं याके विषे क्या कहणा है । यह वार्त्ता वार्त्तिककार भगवान्‌नैंभी कथन करी है । तहां श्लोक । " कुतस्तज्ज्ञानमिति चेत्तद्धि बंधपरिक्षयात् । असावपि च भूतो वा भावी वा वर्त्ततेऽथवा इति " । अर्थ यह । सो आत्माका ज्ञान किसतैं प्राप्त होवै है ऐसी शिष्यकी शंकाके हुए सो आत्माका ज्ञान प्रतिबंधके नाशतैं प्राप्त होवै है । सो प्रतिबंधभी भूतप्रतिबंध भावीप्रतिबंध वर्त्तमानप्रतिबंध यह तीन प्रकारका होवै है । तहां श्रवणादि कालविषे पूर्वदृष्ट अनात्म पदार्थोंका वारंवार स्मरण होणा याका नाम भूतप्रतिबंध है । और जन्मादिकोंकी प्राप्ति करणेहारा जो कोई प्रबल अदृष्टविशेष है ताका नाम भावि-प्रतिबंध है । और विषयासक्ति, मंदबुद्धि, कुतर्क, विपरीत अर्थविषे दुराग्रह यह चारि प्रकारका वर्त्तमानप्रतिबंध है इति । या तीनों प्रतिबंधोंविषे एक प्रति-बंधभी जिस अधिकारी पुरुषविषे है । सो अधिकारी पुरुष श्रवणादिकोंकूं करता हुआभी आत्माकूं जानि सकै नहीं । जैसे वामदेवकूं भावी प्रतिबंधके वशतैं श्रवणादिकोंकरिकै तिस जन्मविषे ज्ञान हुआ नहीं । किंतु दूसरे जन्मविषे माताके उदरमैं ता प्रतिबंधके नाश हुएतैं ता वामदेवकूं आत्मज्ञानकी प्राप्ति हुई है । यह वार्त्ता आत्मपुराणके प्रथम अध्यायविषे हम विस्तारतैं कथन करि आये हैं । और " ज्ञानमुत्पद्यते पुंसां क्षयात्पापस्य कर्मणः " या स्मृतिनैं पापकर्मरूप प्रतिबंधके नाशतैं अनंतरही या अधिकारी पुरुषोंकूं ज्ञानकी प्राप्ति कथन करी है । और तिन सर्व प्रतिबंधोंका नाश होणा अत्यंत दुर्लभ है । या कारणतैं यह आत्मादेव दुर्विज्ञेय है इति । इहां (श्रुत्वाप्येनं वेद न चैव कश्चित्) या वचनका जो यह पूर्व उक्त अर्थ नहीं करियें । किंतु इस आत्मादेवकूं श्रवणकरिकैभी कोईभी पुरुष जानि सकता नहीं या प्रकारका जो अर्थ करियें । " तौ आश्चर्यो ज्ञाता कुशलानुशिष्टः " । या श्रुतिके साथि या गीताके वचनकी एकवाक्यता सिद्ध नहीं होवैगी । तथा " यततामपि सिद्धानां कश्चिन्मां वेत्ति तत्त्वतः " या भगवान्‌के वचनकाभी विरोध होवैगा इति अथवा । (न चैव कश्चित्) या अंत्यके वचनका " कश्चित् एनं न पश्यति कश्चित् एनं न वदति कश्चित् एनं न शृणोति कश्चित् श्रुत्वापि एनं न वेद " या प्रकार सर्वत्र संबंध करणा । ताकरिकै यह पंच प्रकार सिद्ध होवै हैं । कोईक पुरुष इस आत्मादेवकूं केवल जानेही है कथन करि सकै नहीं ॥ १ ॥ और कोईक पुरुष तौ इस आत्मादेवकूं जानैभी है तथा कथनभी करे है ॥ २ ॥ और कोईक पुरुष तौ वचनकूं श्रवणभी करे है तथा ता वचनके अर्थकूंभी जाने है ॥ ३ ॥ और कोईक पुरुष वचनकूं श्रवणकरिकैभी ताके अर्थकूं जानता नहीं ॥ ४ ॥ और कोई पुरुष तौ दर्शन कथन श्रवण इन सर्वतैं बहिर्भूत होवै है ॥ ५ ॥ तहां अविद्वान्‌पक्षविषे असंभावनाविपरीतभावनाकरिकै प्रतिबद्ध होणेतैंही ता दर्शनवेदनश्रवण-

विषे आश्चर्यरूपता है । दूसरा सर्व अर्थ स्पष्ट है इति । और किसी टीकाविषे तौ (आश्चर्यवत्पश्यति) या श्लोकका यह अर्थ करा है । पूर्व श्लोकविषे कथन करा जो भूतभौतिक प्रपंच है । ता प्रपंचकूं कोईक ब्रह्मवेत्ता पुरुष आश्चर्यवत् देखे हैं । तात्पर्य यह । स्वप्नऐंद्रजालिक पदार्थोंके तुल्य देखे है इति । और अन्य विद्वान् पुरुष इस प्रपंचकूं आश्चर्यवत् कथन करे है । तात्पर्य यह । सत्असत्तैं विलक्षण या प्रपंचकूं लोक अप्रसिद्ध अनिर्वचनीयरूपकरिकै कथन करे है इति । और अन्य पुरुष इस प्रपंचकूं आश्चर्यवत् श्रवण करे है । तात्पर्य यह । अनात्मरूपकरिकै प्रसिद्ध जो यह प्रपंच है ता प्रपंचविषे ' इमे लोका इमे देवा इमे वेदा इदं सर्व यदयमात्मा ' इत्यादिक श्रुतिकरिकै जो प्रत्यक्‌आत्मरूपताका श्रवण है सोभी आश्चर्यरूप है इति । और कोईक पुरुष तौ इस प्रपंचका श्रवणकरिकै तथा स्वप्नादिक दृष्टांतोंतैं कथन करिकै तथा साक्षात्कारकरिकैभी वास्तवतैं जानता नहीं इति ॥ २९ ॥
पूर्वश्लोकोंविषे कथन करा जो सर्व प्राणीयोंके प्रति साधारण भ्रमकी निवृत्तिका साधनरूप विचार ता विचारकी अबी समाप्ति करे हैं ।

(मू. श्लो.) देही नित्यमवध्योयं देहे सर्वस्य भारत । तस्मात्सर्वाणि भूतानि न त्वं शोचितुमर्हसि ॥ ३० ॥ (पदच्छेदः) देही । नित्यं । अवध्यः । अयं । देहे । सर्वस्य । भारत । तस्मात् । सर्वाणि । भूतानि । न । त्वं । शोचितुं । अर्हसि ॥ ३० ॥ (पदार्थः) हे भारत सर्व प्राणीयोंके देहके नाश हुएभी यह देही आत्मा नाश होवै नहीं यह वार्त्ता जिस कारणतैं नियत है तिस कारणतैं तूं अर्जुन इन सर्व भूतोंका शोक करणेकूं नहीं योग्य हैं ॥ ३० ॥

टीका । हे अर्जुन ब्रह्मातैं आदिलैके चीटीपर्यंत जितने की प्राणी हैं । तिन सर्व प्राणीयोंके देहके नाश हुएभी यह लिंगदेहरूप उपाधिवाला आत्मा नाशकूं प्राप्त होवै नहीं । जैसे घटरूप उपाधियोंके नाश हुएभी तिन घटोंविषे स्थित आकाश नाश होवै नहीं । तैसे तिन देहोंके नाश हुएभी यह आत्मादेव नाश होवै नहीं । जिस कारणतैं यह वार्त्ता नियमपूर्वक है । तिस कारणतैं भीष्मद्रोणादिक भावकूं प्राप्त हुए जो यह स्थूलसूक्ष्मरूप आकाशादिक सर्व भूत हैं तिन भूतोंके उद्देशकरिकै तूं शोक करणेकूं योग्य नहीं हैं । तात्पर्य यह । इस स्थूल शरीरका तौ अवश्यकरिकै नाश होवैगा । ता नाशके निवृत्त करणेविषे कोईभी समर्थ नहीं है । या कारणतैं इस स्थूल शरीरका शोक करणा तुमारेकूं उचित नहीं है । और सूक्ष्म लिंगदेह तौ आत्माकी न्यांई शस्त्रादिकोंकरिकै नाश होता नहीं । यातैं ता लिंगदेहकाभी शोक करणा तुमारेकूं उचित नहीं है । यातैं स्थूलदेह, लिंगदेह तथा आत्मा

या तीनोंका शोक करणा संभवता नहीं इति ॥ ३० ॥ ❀ ॥ इस प्रकार स्थूलशरीर तथा सूक्ष्मशरीर तथा तिन दोनों शरीरोंका कारणरूप अविद्या या तीन उपाधियोंके अविवेककरिकै मिथ्यारूप संसारविषे सत्यत्व तथा आत्मधर्मत्व आदिकोंकी प्रतीतिरूप तथा सर्व प्राणीयोंका साधारण जो अर्जुनका भ्रम है । ता अर्जुनके भ्रमकी निवृत्ति करणेवासतै श्रीभगवान् ता अर्जुनके प्रति स्थूल सूक्ष्म कारण या तीन उपाधियोंतैं भिन्नकरिकै आत्माका स्वरूप कथन करता भया । अबी युद्धरूप स्वधर्मविषे हिंसादिकोंकी बाहुल्यताकरिकै अधर्मत्वबुद्धिरूप तथा करुणादिक दोषोंकरिकै जन्य ऐसा जो अर्जुनका असाधारण भ्रम है । ता असाधारण भ्रमके निवृत्त करणेवासतै श्रीभगवान् ता अर्जुनकेप्रति ता हिंसाप्रधान युद्धविषेभी स्वधर्मताकरिकै अधर्मपणेका अभाव कथन करै हैं ।

(मू. श्लो.) स्वधर्ममपि चावेक्ष्य न विकंपितुमर्हसि । धर्म्याद्धि युद्धाच्छ्रेयोन्यत् क्षत्रियस्य न विद्यते ॥ ३१ ॥ (पदच्छेदः) स्वधर्मं । अपि । च । अवेक्ष्य । न । विकंपितुं । अर्हसि । धर्म्यात् । हि । युद्धात् । श्रेयः । अन्यत् । क्षत्रियस्य । न । विद्यते ॥ ३१ ॥ (पदार्थः) हे अर्जुन अपणे क्षत्रियके धर्मकूं देखिकरिकै भी तूं युद्धतैं चलायमान होणेकूं नहीं योग्य हैं जिसँ कारणतैं क्षत्रिय राजाकूं धर्मरूप युद्धतैं दूसरा श्रेयका साधन नहीं विद्यमान है ॥ ३१ ॥

टीका । हे अर्जुन पूर्व उक्त रीतिसैं केवल परमार्थतत्त्वका विचार करिकैही तूं युद्धतैं निवृत्त होणेकूं योग्य नहीं हैं । किंतु क्षत्रिय राजावोंका जो युद्धतैं पीछे नहीं हठणा या प्रकारका अपराङ्मुखत्व धर्म है । ता अपराङ्मुखत्वरूप स्वधर्मकूं शास्त्रतैं विचार करिकैभी तूं ता स्वधर्मरूप युद्धतैं अधर्मत्वकी भ्रांतिकरिकै निवृत्त होणेकूं योग्य नहीं हैं । यातैं (यद्यप्येते न पश्यंति) इस वचनतैं आदिलैके (नरके नियतं वासो भवति) इस वचनपर्यंत तिन सर्व वचनोंकरिकै जो तुमनैं युद्धविषे पापकी कारणता कथन करी थी । तथा (कथं भीष्ममहं संख्ये) इत्यादिक वचनोंकरिकै जो तुमनैं युद्धविषे गुरुवोंके वध करणेका तथा ब्राह्मणोंके वध करणेका निषेध करा था । सो यह सर्व वार्त्ता तुमनैं धर्मशास्त्रके अविचारतैं कथन करी थी । काहेतैं जिस कारणतैं अपराङ्मुखत्वरूप धर्मसहित जो युद्ध है ता युद्धतैं क्षत्रिय राजाकूं दूसरा कोई श्रेयका साधन है नहीं । किंतु यह युद्धही पृथिवीके जयद्वारा प्रजाका रक्षण तथा ब्राह्मणोंकी शुश्रूषा इत्यादिक क्षत्रियोंके धर्मका निर्वाह करणेहारा है । यातैं क्षत्रिय राजावोंकूं सर्व धर्मोंतैं सो यु-

युद्धही श्रेष्ठ धर्म है इति । यह वार्त्ता पाराशरऋषिनैंभी कही है । तहां श्लोक । " क्षत्रियो हि प्रजा रक्षन् शस्त्रपाणिः प्रदंडवान् । निर्जित्य परसैन्यानि क्षितिं धर्मेण पालयेत् " । अर्थ यह । क्षत्रिय राजा अपणे प्रजाका रक्षण करै । तथा शस्त्रोंकूं हस्तविषे धारण करै । तथा दुष्ट जनोंकूं दंड देवै । तथा अन्य शत्रुवोंके सैन्योंकूं जीतिकरिकै धर्मकरिकै पृथिवीका पालन करै इति । यह वार्त्ता मनुभगवान्नैंभी कही है । तहां श्लोकद्वयं । " समोत्तमाधमै राजा चाहूतः पालयन् प्रजाः । न निवर्तेत संग्रामात् क्षात्रं धर्ममनुस्मरन् ॥ १ ॥ संग्रामेष्वनिवर्तित्वं प्रजानां चैव पालनं । शुश्रूषा ब्राह्मणानां च राज्ञः श्रेयस्करं परं ॥ २ ॥ " अर्थ यह । अपणे प्रजावोंका पालन करता हुआ यह क्षत्रिय राजा अपणे समान जातिवाले क्षत्रियोंनैं तथा उत्तम जातिवाले ब्राह्मणोंनैं तथा अधम जातिवाले वैश्यादिकोंनैं संग्राम करणेवासतै बुलाया हुआ अपणे क्षत्रियके धर्मकूं स्मरण करता हुआ ता संग्रामतैं निवृत्त नहीं होवै ॥ १ ॥ और संग्रामतैं निवृत्त नहीं होणा तथा प्रजाका पालन करणा तथा ब्राह्मणोंकी शुश्रूषा करणी यह तीनों धर्म राजाके परम श्रेयके करणेहारे हैं ॥ २ ॥ इत्यादिक स्मृतिवचनोंतैं क्षत्रिय राजाका युद्धही श्रेष्ठ धर्म सिद्ध होवै है । इहां यद्यपि युद्धतैं भिन्न दूसरेभी अनेक धर्म क्षत्रियके श्रेयके साधनरूप हैं । यातैं युद्धतैं भिन्न दूसरा कोई धर्म क्षत्रियके श्रेयका साधन नहीं है । या प्रकारका कहणा संभवता नहीं । तथापि क्षत्रिय राजाके सर्व धर्मोंविषे ता युद्धरूप धर्मकी श्रेष्ठता कहणेवासतै श्रीभगवान्नैं सो वचन कथन करा है । कोई दूसरे धर्मोंके निषेध करणेवासतै सो वचन भगवान्नैं नहीं कह्या । इतनैं कहणेकरिकै युद्धतैंभी अत्यंत श्रेष्ठ कोई दूसरा धर्म है यातैं ता धर्मके करणेवासतै युद्धतैं निवृत्ति संभव होइ सकै है या प्रकारके शंकाकीभी निवृत्ति करी । तथा (न च श्रेयोनुपश्यामि हत्वा स्वजनमाहवे) या प्रकारके अर्जुनके वचनकाभी खंडन करा इति ॥ ३१ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हे भगवन् यद्यपि क्षत्रिय राजाका धर्म होणेतैं सो युद्ध अवश्यकरिकै हमारेकूं करणे योग्य है । तथापि भीष्मद्रोणादिक गुरुवोंके साथि सो युद्ध करणा हमारेकूं उचित नहीं है । जिस कारणतैं अपणे गुरुवोंके साथि युद्ध करणा अत्यंत निंदित कर्म है । ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् उत्तर कहे हैं ।

(मू. श्लो.) यदृच्छया चोपपन्नं स्वर्गद्वारमपावृतं । सुखिनः क्षत्रियाः पार्थ लभंते युद्धमीदृशं ॥ ३२ ॥ (पदच्छेदः) यदृच्छया । च । उपपन्नं । स्वर्गद्वारं । अपावृतं । सुखिनः । क्षत्रियाः । पार्थ । लभंते । युद्धं । ईदृशं ॥ ३२ ॥ (पदार्थः) हे पार्थ प्रयत्नतैं

विना ही[३] प्राप्त हुआ तथा प्रतिबंधतैं रहित स्वर्गका साधनरूप इस प्रकारके युद्धकूं जे क्षत्रिय राजे प्राप्त होवै हैं ते क्षत्रिय सुखकूंही प्राप्त होवै हैं ॥ ३२ ॥

टीका। हे पृथाके पुत्र अर्जुन तुम हमारेसाथि युद्ध करो या प्रकारकी प्रार्थनारूप प्रयत्नतैं विनाही प्राप्त भया जो यह युद्ध है। कैसा है यह युद्ध। भीष्मद्रोणादिक वीरपुरुष प्रतिपक्षी होइकै जिस युद्धके करणे हारे हैं। तथा जो युद्ध कीर्त्ति, राज्यकी प्राप्ति इत्यादिक दृष्टफलोंका साधन है। ऐसे युद्धकूं जे क्षत्रिय राजे प्राप्त होवै हैं। ते क्षत्रिय राजे परम सुखकूंही प्राप्त होवै हैं। काहेतैं ता युद्धकरिकै जो कदाचित् जय होवै है। तौ विनाही प्रयत्नतैं इस लोकविषे यशकी तथा राज्यकी प्राप्ति होवै है। और जो कदाचित् ता युद्धतैं पराजय होवै है। तौ अत्यंत शीघ्रही स्वर्गकी प्राप्ति होवै है। याही अर्थकूं श्रीभगवान् कथन करे हैं (स्वर्गद्वारमपावृतं इति) कैसा है यह युद्ध। प्रतिबंधतैं रहित स्वर्गके प्राप्तिका साधनरूप है क्या व्यवधानतैं विनाही स्वर्गकी प्राप्ति करणेहारा है। यद्यपि ज्योतिष्टोमादिक यज्ञभी स्वर्गकी प्राप्ति करणेहारे हैं। तथापि ते ज्योतिष्टोमादिक यज्ञ स्वर्गरूपफलकी प्राप्तिविषे इस वर्त्तमान शरीरके नाशकी तथा प्रतिबंधके अभावकी अपेक्षा करे हैं। यातैं ते ज्योतिष्टोमादिक यज्ञ चिरकालके पीछेही ता स्वर्गरूप फलकी प्राप्ति करे हैं। युद्धकी न्यांई शीघ्रही स्वर्गकी प्राप्ति करै नहीं। इहां (स्वर्गद्वारमपावृतं) इस वचनकरिकै भगवान्नैं जैसे श्येनयज्ञके करणेतैं प्रत्यवाय होवै है तैसे युद्धके करणेतैंभी प्रत्यवाय होवैगा या प्रकारकी अर्जुनकी शंका निवृत्त करी। तहां 'श्येनेनाभिचरन् यजेत' इत्यादिक वचनोंकरिकै यद्यपि ते श्येनयज्ञादिक विधान करे हैं। तथापि ते श्येनयज्ञादिक अपणे फलके दोषकरिकै दुष्ट हैं। काहेतैं तिन श्येनयज्ञादिकोंका फलरूप जो शत्रुका मरण है। सो शत्रुका मरणरूप फल 'न हिंस्यात्सर्वाभूतानि ब्राह्मणं न हन्यात्' इत्यादिक शास्त्रकरिकै निषिद्ध है यातैं सो शत्रुका हननरूप फल प्रत्यवायका जनक है। और ता श्येनयज्ञके फलविषे कोई विधिवचनभी है नहीं। यातैं विधियुक्त अर्थविषे निषेधका अवकाश होवै नहीं या प्रकारके न्यायकीभी तहां प्राप्ति होवै नहीं। और युद्धका फल जो स्वर्ग है। सो स्वर्ग किसी शास्त्रकरिकै निषिद्ध है नहीं। किंतु सो स्वर्ग शास्त्रकरिकै विहित है। यह वार्त्ता मनुभगवाननैंभी कथन करी है। तहां श्लोक। "आहवेषु मिथोन्योनं जिघांसंतो महीक्षितः। युद्ध्यमानाः परं शक्त्या स्वर्गं यांत्यपराङ्मुखाः"। अर्थ यह। युद्धविषे परस्पर हनन करणेकी इच्छावाले जे क्षत्रिय राजे हैं। ते क्षत्रिय राजे यथाशक्तिपरिमाण परस्पर युद्ध क-

रते हुए तथा ता युद्धतैं पीछे मुख नहीं करते हुये स्वर्गकूं प्राप्त होवै हैं इति । किंवा । जैसे 'अग्नीषोमीयं पशुमालभेत' या वचनतैं विधान करी जो यज्ञविषे पशुकी हिंसा । ता हिंसाकूं 'न हिंस्यात्सर्वाभूतानि' यह निषेध स्पर्श करि सकै नहीं । तैसे यह युद्धभी शास्त्रकरिकै विधान करा है । यातैं ता युद्धकूंभी सो निषेध स्पर्श करि सकै नहीं । तात्पर्य यह । 'न हिंस्यात्सर्वाभूतानि' यह तौ सामान्यशास्त्र है । और 'अग्नीषोमीयं पशुमालभेत' यह विशेषशास्त्र है । तहां सामान्यशास्त्रकी अपेक्षा करिकै विशेषशास्त्र बलवान् होवै है । यातैं ता विशेषशास्त्रकरिकै सामान्यशास्त्रका संकोच करा जावै है । यातैं शास्त्रविहित युद्ध यज्ञादिकोंतैं भिन्न स्थलविषे किसीभी प्राणीकी हिंसा करणी नहीं या प्रकार ता सामान्यशास्त्रका संकोच करणा संभवै है । जो कदाचित् 'न हिंस्यात्सर्वाभूतानि' या सामान्यशास्त्रके अर्थका इस प्रकारका संकोच नहीं करियें । तौ 'अग्नीषोमीयं पशुमालभेत' इत्यादिक सर्व वचन व्यर्थ होवैंगे । यातैं यह अर्थ सिद्ध भया । जैसे अग्निषोमीय पशुकी हिंसा शास्त्रविहित होणेतैं प्रत्यवायका जनक होवै नहीं । तैसे युद्धविषे स्थित हिंसाभी शास्त्रविहित होणेतैं प्रत्यवायका जनक होवै नहीं इति । और युद्धविषेभी भीष्मद्रोणादिक गुरुवोंके हननकरिकै जो दोष कथन करा था सोभी संभवै नहीं । काहेतैं यह भीष्मद्रोणादिक यद्यपि तुमारे गुरु हैं । तथापि ते भीष्मद्रोणादिक आततायि हैं । यातैं तिनोंके हनन करणेतैं दोष होवै नहीं । यह वार्त्ता मनु भगवान्नैंभी कथन करी है । तहां श्लोक । "गुरुं वा बालवृद्धौ वा ब्राह्मणं वा बहुश्रुतं । आततायिनमायांतं हन्यादेवाविचारयन् । नाततायिवधे दोषो हंतुर्भवति कश्चन" । अर्थ यह । अपणा गुरु होवै अथवा बालक होवै अथवा वृद्ध होवै अथवा शास्त्रवेत्ता ब्राह्मण होवै परंतु आततायि होवै । सो आततायि पुरुष जिस कालविषे अपणे सन्मुख प्राप्त होवै । तिसी कालविषे यह बुद्धिमान् पुरुष विचारतैं विनाही ता आततायि पुरुषकूं हनन करै । ता आततायिके हनन करणेतैं इस पुरुषकूं दोषकी प्राप्ति होवै नहीं इति । आततायिका लक्षण प्रथम अध्यायविषे कथन करि आये हैं । यातैं इन भीष्मद्रोणादिकोंके हननकरिकै तुमारेकूं किंचित्मात्रभी दोषकी प्राप्ति होवैगी नहीं । इहां (सुखिनः क्षत्रियाः) या वचनकरिकै युद्धकर्त्ता पुरुषकूं सुखकी प्राप्ति कथन करी । ताकरिकै (स्वजनं हि कथं हत्वा सुखिनः स्याम माधव) अर्थ यह । अपणे बांधवोंकूं मारिकै मैं सुखकूं नहीं प्राप्त होवौंगा या अर्जुनके वचनका खंडन करा इति ॥ ३२ ॥ ❀ ॥ शंका । हे भगवन् जिस पुरुषकूं जिस कर्मके फलकी इच्छा होवै है । सो पुरुषही तिस फलकी प्राप्तिवासतै तिस कर्मविषे प्रवृत्त होवै है । फलकी इच्छातैं विना किसीकीभी प्रवृत्ति होवै नहीं । यह वार्त्ता सर्व लोकविषे प्रसिद्ध है । और हमारेकूं ता युद्धके फलकी इच्छा है नहीं । या कारणतैंही (न कांक्षे विजयं

कृष्ण अपि त्रैलोक्यराज्यस्य) या प्रकारका वचन पूर्व हम कथन करि आये हैं। यातैं फलकी इच्छातैं रहित हमारेकूं सो युद्ध करणा उचित नहीं है। ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए। श्रीभगवान् ता अर्जुनके प्रति ता युद्धके नहीं करणेकरिकै दोषकी प्राप्तिका कथन करे हैं।

(मू. श्लो.) अथ चेत्त्वमिमं धर्म्यं संग्रामं न करिष्यसि। ततः स्वधर्मं कीर्तिं च हित्वा पापमवाप्स्यसि ॥ ३३ ॥ (पदच्छेदः)
अथ। चेत्। त्वं। इमं। धर्म्यं। संग्रामं। न। करिष्यसि। ततः। स्वधर्मं। कीर्तिं। च। हित्वा। पापं। अवाप्स्यसि ॥३३॥
(पदार्थः) हे अर्जुन जो कदाचित् तूं इस धर्मरूप संग्रामकूं नहीं करैगा तौ तिस संग्रामके नहीं करणेतैं तूं अपणे धर्मकूं तथा कीर्तिकूं परित्याग करिकै पापकूं प्राप्त होवैगा ॥ ३३ ॥

टीका। पूर्व युद्धकी कर्त्तव्यता कथन करी। ता युद्धकी कर्त्तव्यतारूप प्रथम पक्षकी अपेक्षा करिकै युद्धकूं नहीं करणा यह दूसरा पक्ष है। ता दूसरे पक्षके बोधन करणेवासतै इस श्लोकके आदिविषे (अथ) यह शब्द कथन करा है। तहां भीष्मद्रोणादिक वीर पुरुष हैं प्रतियोगी जिसके ऐसा जो यह संग्राम है। सो युद्धरूप संग्राम हिंसादिक दोषोंतैं रहित है यातैं धर्म्यरूप है। अथवा श्रेष्ठ पुरुषोंके धर्मतैं अविरुद्ध है यातैं धर्म्यरूप है। ते श्रेष्ठ पुरुषोंके धर्म मनुभगवान्नैं यह कहे हैं। यह क्षत्रिय राजा रणभूमिविषे युद्ध करता हुआ कपटतैं रहित आयुधोंकरिकै शत्रुवोंकूं हनन करै। तथा रथतैं विना समान पृथिवीविषे स्थित शत्रुकूंभी नहीं हनन करै। तथा नपुंसक शत्रुकूंभी नहीं हनन करै। तथा जो शत्रु मैं तुमारा हूं या प्रकारका वचन कहै तिसकूंभी नहीं हनन करै। तथा जो शत्रु निद्राविषे सोया होवै। तथा जो शत्रु वस्त्रोंतैं रहित नग्न होवै। तथा जो शत्रु आयुधोंतैं रहित होवै। तथा जो दूसरेके साथि केवल युद्ध देखणेवासतै आया होवै। तथा जो परीक्षा करणेहारा होवै। तथा जो रोगी होवै तथा जो पुरुष भययुक्त होवै। तथा जो पुरुष युद्धतैं पीछे भागा होवै। इत्यादिक शत्रु पुरुषोंकूं यह योद्धा पुरुष हनन करै नहीं। इत्यादिक श्रेष्ठ पुरुषोंके धर्मोंका उल्लंघन करिकै जो पुरुष युद्ध करे है। सो पुरुष ता युद्धके स्वर्गादिक फलकूं प्राप्त होवै नहीं। किंतु सो पुरुष केवल पापकूंही प्राप्त होवै है। और तूं अर्जुन तौ दुर्योधनादिक शत्रुवोंनैं युद्ध करणेवासतै बुलाया हुआभी जो सत्धर्मकरिकै युक्त इस युद्धरूप संग्रामकूं नहीं करैगा। क्या धर्मतैं अथवा लोकतैं भयभीत हुआ जो तूं इस युद्धतैं पीछे फिरैगा। तौ " निर्जित्य परसैन्यानि क्षितिं धर्मेण पालयेत् " इत्यादिक शास्त्रकरिकै विधान करे हुए युद्धके नहीं कर-

णेतैं अपणे धर्मका त्याग करिकै क्या अपणे धर्मका नहीं अनुष्ठान करिकै तथा यह अर्जुन साक्षात् महादेवादिक ईश्वरोंके साथिभी युद्ध करता भया है यातैं यह अर्जुन महान् पराक्रमवाला है या प्रकारकी अपणी कीर्त्तिका परित्याग करिकै " न निवर्तेत संग्रामात् " इत्यादिक शास्त्रकरिकै निषिद्ध जो संग्रामतैं निवृत्तिरूप आचरण है ता निषिद्ध आचरणजन्य पापकूंही तूं केवल प्राप्त होवैगा। किसी धर्मकूं अथवा किसी कीर्त्तिकूं तूं प्राप्त होवैगा नहीं इति। अथवा (स्वधर्मं हित्वा पापमवाप्स्यसि) या वचनका यह दूसरा अर्थ करणा पूर्व अनेक जन्मोंविषे तुमनैं एकठे करे जो पुण्यरूप धर्म हैं तिन धर्मोंका परित्याग करिकै तूं केवल राजकृत पापकूंही प्राप्त होवैगा। तात्पर्य यह। जो कदाचित् तूं इस युद्धतैं पीछे फिरैगा। तौभी यह दुर्योधनादिक दुष्ट अवश्यकरिकै तुमारा हनन करैंगे। और इस युद्धतैं पीछे हठिकरिकै जो तूं इन दुर्योधनादिकोंके हस्ततैं मरैगा। तौ बहुत जन्मोंविषे एकठे करे हुए अपणे पुण्यकर्मोंका परित्याग करिकै इन दुर्योधनादिकोंनैं करे हुए पापकर्मोंकूंही तूं प्राप्त होवैगा। सो ऐसा करणा तुमारेकूं उचित नहीं है। यह वार्त्ता मनुभगवान्नैंभी कथन करी है। तहां श्लोक। " यस्तु भीतः परावृत्तः संग्रामे हन्यते परैः। भर्तुर्यद्दुष्कृतं किंचित् तत्सर्वं प्रतिपद्यते ॥ १ ॥ यच्चास्य सुकृतं किंचिदमुत्रार्थमुपार्जितं। भर्ता तत्सर्वमादत्ते परावृत्त हतस्य तु " ॥ २ ॥ अर्थ यह। संग्रामविषे भयभीत होइकै पीछै हट्या हुआ जो पुरुष शत्रुपुरुषोंनैं हनन करीता है। सो पुरुष हनन करणेहारे पुरुषके सर्व पापोंकूं प्राप्त होवै है ॥ १ ॥ और युद्धतैं पीछै फिरिकै हननकूं प्राप्त हुए तिस पुरुषनैं स्वर्गादिकोंकी प्राप्तिवासतै जितनै की पुण्यकर्म करे थे। ते सर्व पुण्यकर्म सो हनन करणेहारा पुरुष लै जावै है ॥ २ ॥ यह वार्त्ता याज्ञवल्क्यमुनिनैंभी कही है। " राजा सुकृतमादत्ते हतानां विपलायिनां "। अर्थ यह। युद्धतैं पीछै फिरिकै हननकूं प्राप्त हुए जो योद्धा हैं। तिन योद्धा पुरुषोंके सर्व पुण्यकर्मोंकूं सो हनन करणेहारा राजा लै जावै है इति। इतनै कहणेकरिकै पूर्व अर्जुननैं जो (पापमेवाश्रयेदस्मान्हत्वैतानाततायिनः। एतान्न हंतुमिच्छामि घ्नतोपि मधुसूदन) या प्रकारके वचन कहे थे। तिन सर्व वचनोंका खंडन करा इति ॥ ३३ ॥ ❁ ॥ इस प्रकार पूर्व श्लोकविषे युद्धके परित्याग करणेकरिकै अर्जुनकूं कीर्त्तिरूप इष्टकी तथा धर्मरूप इष्टकी अप्राप्ति कथन करी। तथा पापरूप अनिष्टकी प्राप्ति कथन करी। तहां पापरूप अनिष्ट तौ बहुत कालतैं पिछै परलोकविषे दुःखरूप फलकी प्राप्ति करे है। और शिष्ट पुरुषोंनैं करी जो निंदा है सो निंदारूप अनिष्ट तौ अबीही दुःखरूप फलकी प्राप्ति करे है। तथा बुद्धिमान् पुरुषोंनैं सो निंदाजन्य दुःख सहन करणेकूंभी अशक्य है। यह वार्त्ता श्रीभगवान् अर्जुनके प्रति कथन करे हैं।

(मू. श्लो.) अकीर्तिं चापि भूतानि कथयिष्यंति तेव्ययां । संभावितस्य चाकीर्तिर्मरणादतिरिच्यते ॥ ३४ ॥ (पदच्छेदः) अकीर्तिं । च । अपि । भूतानि । कथयिष्यंति । ते । अव्ययां । संभावितस्य । च । अकीर्तिः । मरणात् । अतिरिच्यते ॥३४॥ (पदार्थः) हे अर्जुन तथा देव ऋषि मनुष्य तुमारी दीर्घकालपर्यंत अकीर्तिकूं भी कथन करैंगे और गुणवान् पुरुषकी अकीर्ति मरणतैंभी अधिक है ॥ ३४ ॥

टीका । हे अर्जुन जो तूं इस युद्धतैं निवृत्त होवैगा । तौ देवता ऋषि मनुष्य इसतैं आदिलैके जितनै की भूतप्राणी हैं ते सर्व प्राणी परस्पर कथाप्रसंगविषे यह अर्जुन धर्मात्मा नहीं है तथा शूरवीरभी नहीं है या प्रकारकी तुमारी अकीर्त्तिकूं दीर्घकालपर्यंत कथन करैंगे । इहां (च अपि) यह दोनों पद पूर्व कथन करे हुए कीर्त्तिके नाशका तथा धर्मके नाशका समुच्चय करावणेवासतै हैं । ताकरिकै यह अर्थ सिद्ध होवै है इस युद्धतैं निवृत्त होणेकरिकै तूं कीर्त्ति धर्म दोनोंका परित्याग करिकै केवल पापकूंही प्राप्त नहीं होवैगा । किंतु अकीर्त्तिकूंभी तूं प्राप्त होवैगा । तथा केवल तूंही ता अकीर्त्तिकूं प्राप्त नहीं होवैगा । किंतु दूसरे देव ऋषि मनुष्यादिक प्राणीभी तुमारी अकीर्त्तिकूं कथन करैंगे इति । शंका । हे भगवन् युद्धविषे अपणे मरणेका संदेह रहे है । यातैं ता मरणके निवृत्त करणेवासतै अपणी अकीर्त्तिभी सहारणेकूं योग्य है । जिस कारणतैं अपणे आत्माकी रक्षा करणी अत्यंत अपेक्षित है । यह वार्त्ता महाभारतके शांतिपर्वविषेभी कथन करी है । तहां श्लोक । " साम्ना दानेन भेदेन समस्तैरुत वा पृथक् । विजेतुं प्रयतेतारीन् न युध्येत कदाचन ॥ १ ॥ अनित्यो विजयो यस्मात् दृश्यते युद्ध्यमानयोः । पराजयश्च संग्रामे तस्माद्युद्धं विवर्जयेत् ॥ २ ॥ त्रयाणामप्युपायानां पूर्वोक्तानामसंभवे । तथा युध्येत संयत्तो विजयेत रिपून्यथा ॥३॥ अर्थ यह । साम, दान, भेद या तीन उपायोंकरिकै अथवा एक एक उपायकरिकै यह बुद्धिमान् पुरुष अपणे शत्रुवोंके जय करणे वासतै प्रयत्न करै ॥ १ ॥ जिस कारणतैं युद्ध करणेहारे पुरुषोंका संग्रामविषे नियमतैं जय देखणेविषे आवता नहीं । किंतु बहुत स्थलविषे पराजयही देखणेमें आवता है । तिस कारणतैं यह बुद्धिमान् पुरुष युद्धकूं नहीं करै ॥ २ ॥ और पूर्व कथन करे जो साम, दान, भेद यह तीन उपाय । तिन तीनों उपायोंका जहां असंभव होवै । तहां यह पुरुष ऐसा सावधान होइकै युद्ध करै जिसकरिकै अपणे शत्रुवोंकूं जय करि लेवै ॥ ३ ॥ यातैं मरणतैं भयकूं प्राप्त हुए पुरुषकूं अकीर्त्तिजन्य दुःख क्या करैगा । ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् ता शंकाकी निवृत्ति करे हैं

(संभावितस्य इति) हे अर्जुन यह पुरुष अत्यंत धर्मात्मा है तथा अत्यंत शूरवीर है इत्यादिक अनेक गुणोंकरिकै जिस पुरुषकूं लोकोंनैं श्रेष्ठ मान्या है। तिस पुरुषका नाम संभावित है। ऐसे संभावित पुरुषकी जो लोकविषे अकीर्त्ति है। सा अकीर्त्ति मरणतैंभी अधिक है। यातैं तिस अकीर्त्तितैं ता संभावित पुरुषका मरणही श्रेष्ठ है। और तूं अर्जुनभी धर्मनिष्ठाकरिकै तथा महादेवादिक ईश्वरोंके साथि युद्ध करिकै लोकविषे बहुत संभावित है। यातैं तूं अकीर्त्तिजन्य दुःखकूं नहीं सहन करि सकैगा। और पूर्व कथन करा जो शांतिपर्वका वचन है। सो वचन तौ अर्थशास्त्ररूप है। यातैं 'न निवर्तेत संग्रामात्' इत्यादिक धर्मशास्त्रतैं सो वचन दुर्बल है इति ॥ ३४ ॥ ❀ । शंका। हे भगवन् या लोकविषे शत्रुमित्रभावतैं रहित जे उदासीन पुरुष हैं। ते उदासीन पुरुष हमारेकूं युद्धतैं विमुख हुआ देखिकै हमारी निंदा करैंगे सो करते रहैं। परंतु यह भीष्मद्रोणादिक जो महारथी पुरुष हैं। ते भीष्मद्रोणादिक पुरुष हमारेकूं युद्धतैं निवृत्त हुआ देखिकै यह अर्जुन बहुत करुणायुक्त है या प्रकार हमारी स्तुतिही करैंगे। ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् उत्तर कहे हैं ॥

(मू. श्लो.) भयाद्रणादुपरतं मंस्यंते त्वां महारथाः। येषां च त्वं बहुमतो भूत्वा यास्यसि लाघवं ॥ ३५ ॥ (पदच्छेदः) भयातैं। रणातैं। उपरतं। मंस्यंते। त्वां। महारथाः। येषां। च। त्वं। बहुमतः। भूत्वा। यास्यसि। लाघवं। ३५ ॥ (पदार्थः) हे अर्जुन यह भीष्मद्रोणादिक महारथी तुमारेकूं भयतैं रणतैं उपराम हुआ मानैंगे तथा जिन भीष्मादिकोंकूं तूं बहुत गुणयुक्त होता भया ऐसा होइकै तिन भीष्मादिकोंकेही लाघवताकूं प्राप्त होवैगा ॥ ३५ ॥

टीका। हे अर्जुन जो तूं युद्धकूं नहीं करैगा। तौ यह भीष्मद्रोणादिक महारथी यह अर्जुन कर्णादिक शूरवीरोंकी भयतैं इस युद्धतैं निवृत्त हुआ है कोई दयाकरिकै युद्धतैं निवृत्त नहीं भया है या प्रकार तुमारेकूं मानैंगे। शंका। हे भगवन् ते भीष्मद्रोणादिक पूर्व हमारेकूं धर्म पराक्रम धैर्य इत्यादिक गुणोंकरिकै श्रेष्ठ मानते हैं। यातैं अबी ते भीष्मद्रोणादिक हमारेकूं कर्णादिक शूरवीरोंकी भय करिकै युद्धतैं निवृत्त हुआ कैसे मानैंगे। ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् उत्तर कहे हैं (येषां त्वं बहुमतः इति) हे अर्जुन जिन भीष्मद्रोणादिकोंनैं पूर्व तुमारेकूं यह अर्जुन धर्म, पराक्रम, धैर्य इत्यादिक अनेक गुणोंकरिकै युक्त है या प्रकार मान्या है। ते भीष्मद्रोणादिक महारथीही अबी तुमारेकूं कर्णादिकोंकी भयकरिकै युद्धतैं उपराम

हुआ मानैंगे । यातैं जिन भीष्मद्रोणादिकोंनैं पूर्व तुमारेकूं श्रेष्ठ करिकै मान्या था । अबी इस युद्धतैं निवृत्त होइकै तूं तिन भीष्मद्रोणादिकोंकेही अनादररूप लाघवकूं प्राप्त होवैगा इति ॥ ३५ ॥ ❀ । शंका । हे भगवन् हमारेकूं युद्धतैं निवृत्त हुआ देखिकै यह भीष्मद्रोणादिक महारथी हमारेकूं श्रेष्ठ मत मानैं । परंतु हमारी युद्धतैं निवृत्ति होणी हमारे दुर्योधनादिक शत्रुवोंकूं बहुत अनुकूल है । यातैं ते दुर्योधनादिक शत्रु तौ हमारेकूं युद्धतैं निवृत्त हुआ देखिकै श्रेष्ठ करिकै मानैंगे । ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् उत्तर कहे हैं ।

(मू. श्लो.) अवाच्यवादांश्च बहून्वदिष्यंति तवाहिताः ॥ निंदंतस्तवसामर्थ्यं ततोदुःखतरं नुकिं ॥ ३६ ॥ (पदच्छेदः) अवाँच्यवादान् । च । बहून् । वदिष्यंति । तव । अहिताः । निंदंतः । तव । सामर्थ्यं । ततः । दुःखतरं । नुकिं । (पदार्थः) हे अर्जुन तुमारे दुर्योधनादिक शत्रुभी तुमारे सामर्थ्यकूं निंदते हुए नहीं कँहणेयोग्य अनेक प्रकारके वचनोंकूं कथन करैंगे तिसतैं परे अधिक दुःख क्या है ॥ ३६ ॥

टीका । हे अर्जुन जबी तूं इस युद्धतैं निवृत्त होवैगा । तबी सर्व लोकविषे प्रसिद्ध जो तुमारा सामर्थ्य है ता सामर्थ्यकी निंदा करते हुए यह दुर्योधन कर्ण विकर्णादिक तुमारे शत्रुभी नहीं कथन करणेकूं योग्य जो अनेक प्रकारके धिक्कारशब्द हैं तिन शब्दोंकूं कथन करैंगे । शंका । हे भगवन् भीष्मद्रोणादिकोंके नाश होणेकरिकै उत्पन्न होणेहारा जो अत्यंत कष्टरूप दुःख है ता दुःखकूं नहीं सहन करता हुआ इस युद्धतैं निवृत्त हुआ मैं अर्जुन तिन शत्रुवोंनैं करी हुई जो हमारे सामर्थ्यकी निंदा है ता निंदाजन्य दुःखकूं सहारि सकौंगा ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् उत्तर कहे हैं । (ततो दुःखतरं नुकिं इति) हे अर्जुन लोकनिंदातैं प्राप्त भया जो दुःख है ता दुःखतैं कौन अधिक दुःख है । किंतु ता निंदाजन्य दुःखतैं अधिक कोईभी दुःख नहीं है । यातैं ता निंदाजन्य दुःखकूं तूं नहीं सहारि सकैगा इति ॥ ३६ ॥ ❀ । शंका । हे भगवन् जो मैं इस युद्धविषे भीष्मद्रोणादिक गुरुवोंकूं हनन करौंगा । तौ मध्यस्थ पुरुष हमारी निंदा करैंगे । और जो मैं इस युद्धतैं निवृत्त होवौंगा । तौ यह दुर्योधनादिक शत्रु हमारी निंदा करैंगे । यातैं इस युद्धके करणेपक्षविषे तथा इस युद्धके नहीं करणेपक्षविषे ता निंदाजन्य दुःखकी प्राप्ति तुल्यही है । ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् जयपक्षविषे तथा पराजयपक्षविषे तुमारेकूं निश्चयकरिकै लाभकीही प्राप्ति है यातैं युद्ध करणेवास्तैही तुमारेकूं उठ्या चाहिये या प्रकारका वचन अर्जुनके प्रति कथन करे हैं ।

(मू. श्लो.) हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गं जित्वा वा भोक्ष्यसे महीं । तस्मादुत्तिष्ठ कौंतेय युद्धाय कृतनिश्चयः ॥ ३७ ॥ (पदच्छेदः) हतः । वा । प्राप्स्यसि । स्वर्गं । जित्वा । वा । भोक्ष्यसे । महीं । तस्मात् । उत्तिष्ठ । कौंतेय । युद्धाय । कृतनिश्चयः ॥ ३७ ॥ (पदार्थः) हे कुंतीके पुत्र अर्जुन जो कदाचित् तूं युद्धविषे मृत होवैगा तो स्वर्गकूं प्राप्त होवैगा अथवा इन शत्रुवोंकूं जीतिके तूं इस पृथिवीकूं भोगैगा तिसं कारणतैं निश्चययुक्त होइके तूं इस युद्धवासते उठि खडा होउ ॥ ३७ ॥

टीका । हे अर्जुन इस युद्धविषे जो कदाचित् तूं इन दुर्योधनादिक शत्रुवोंतैं मृत्युकूं प्राप्त होवैगा । तौ तूं अवश्यकरिकै स्वर्गकूं प्राप्त होवैगा । और जो कदाचित् तूं इन दुर्योधनादिक शत्रुवोंकूं जीतैगा । तौ तूं शत्रुरूप कंटकोंतैं रहित इस पृथिवीके राज्यकूं भोगैगा । जिस कारणतैं पराजयपक्षविषे तथा जयपक्षविषे या दोनों पक्षविषे तुमारेकूं लाभकीही प्राप्ति है । तिस कारणतैं के तौ मैं इन दुर्योधनादिक शत्रुवोंकूं जीतौंगा के तौ मैं मृत्युकूं प्राप्त होवौंगा या प्रकारका दृढ निश्चय करिकै तूं इस युद्ध करणेवासतै उठि खडा होउ । इतने कहणेकरिकै अर्जुनके (न चैतद्विद्मः कतरन्नो गरीयः) इत्यादिक सर्व वचनोंका खंडन करा इति ॥ ३७ ॥ ❀ । शंका । हे भगवन् जो कदाचित् मैं स्वर्गकी प्राप्तिवासतै इस युद्धकूं करौंगा । तौ ज्योतिष्टोमादिक यज्ञोंकी न्यांई इस युद्धकूं नित्य कर्मरूपता नहीं संभवैगी । किंतु काम्यकर्मरूपता होवैगी । और जो कदाचित् मैं इस पृथिवीके राज्यकी प्राप्तिवासतै इस युद्धकूं करौंगा । तौ ता युद्धके विधान करणेहारे शास्त्रकूं अर्थशास्त्ररूपता प्राप्त होवैगी । ताकरिकै तिस शास्त्रविषे धर्मशास्त्रकी अपेक्षाकरिकै दुर्बलता सिद्ध होवैगी । यातैं काम्यकर्मरूप युद्धके न करणेकरिकै हमारेकूं कैसे पाप होवैगा किंतु नहीं होवैगा । तथा राज्यरूप दृष्ट अर्थकी प्राप्ति करणेहारे तिन गुरुब्राह्मणोंके हननरूप युद्धविषे कैसे धर्मरूपता होवैगी किंतु नहीं होवैगी । यातैं (अथ चेत्त्वमिमं धर्म्यं) या पूर्व श्लोकका अर्थ असंगत है । ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् उत्तर कहे हैं ।

(मू. श्लो.) सुखदुःखे समे कृत्वा लाभालाभौ जयाजयौ । ततो युद्धाय युज्यस्व नैवं पापमवाप्स्यसि ॥३८॥ (पदच्छेदः) सुखदुःखे । समे । कृत्वा । लाभालाभौ । जयाजयौ । ततः । युद्धाय । युज्यस्व । न । एवं । पापं । अवाप्स्यसि ॥ ३८ ॥ (पदार्थः) हे अर्जुन सुखदुःख दोनोंकूं तथा लाभअलाभ दोनोंकूं तथा जयअजय दोनोंकूं समान करिकै तिसतैं अनंतर तूं युद्ध करणेवासतै त्यार होउ इस प्रकार युद्ध करता हुआ तूं पापकूं नहीं प्राप्त होवैगा ॥ ३८ ॥

टीका। इष्ट अनिष्ट पदार्थोंकी प्राप्तिविषे जो रागद्वेषतैं रहित होणा है याका नाम समताभाव है। तहां सुखविषे तथा ता सुखके कारणरूप लाभविषे तथा ता लाभके कारणरूप जयविषे रागकूं न करिकै। इस प्रकार दुःखविषे तथा ता दुःखके कारणरूप अलाभविषे तथा ता अलाभके कारणरूप अजयविषे द्वेषकूं न करिकै। तूं इस युद्ध करणेवासत त्यार होउ। इस प्रकार सुखकी कामनाका परित्याग करिकै तथा दुःखके निवृत्तिकी कामनाका परित्याग करिकै केवल स्वधर्मबुद्धिकरिकै जो तूं इस युद्धकूं करैगा तौ इन गुरुब्राह्मणोंके हननजन्य पापकूं तथा नित्यकर्मके नहीं करणेजन्य पापकूं तूं प्राप्त होवैगा नहीं। और जो पुरुष इस लोकके फलकी अथवा परलोकके फलकी कामनाकरिकै युद्धकूं करै है। सो पुरुष गुरुब्राह्मणादिकोंके नाशजन्य पापकूं अवश्य प्राप्त होवै है। और जो पुरुष ता युद्धकूं नहीं करै है। सो पुरुष ता नित्यकर्मके न करणेजन्य पापकूं प्राप्त होवै है। यातैं फलकी इच्छातैं विना केवल स्वधर्म जानिकै युद्धके करणेतैं यह पुरुष ता दोनों प्रकारके पापकूं प्राप्त होवै नहीं। और (हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गं जित्वा वा भोक्ष्यसे महीं) या वचनकरिकै जो हमनैं पूर्व युद्धके फलका कथन करा है। सो आनुषंगिक फलका कथन करा है। यातैं ता पूर्व वचनकाभी विरोध होवै नहीं। यह वार्त्ता आपस्तंबऋषिनैंभी कथन करी है। "तद्यथाऽऽम्रे फलार्थे निर्मिते छाया गंध इत्यनूत्पद्येते एवं धर्मं चर्यमाणमर्था अनूत्पद्यंते नोचेदनूत्पद्यंते न धर्महानिर्भवतीति"। अर्थ यह। जैसे इस लोकविषे आम्रफलोंकी प्राप्तिवासतै लगाया हुआ जो आम्रका वृक्ष है। ता वृक्षकी छाया तथा सुगंध अवश्य करिकै प्राप्त होवै है। तहां छाया सुगंधकी प्राप्ति ता वृक्षका आनुषंगिक फल है। तैसे यह धर्म हमारेकूं अवश्य करणेयोग्य है। या प्रकार स्वधर्मबुद्धिकरिकै करा हुआ जो धर्म है। ता धर्मकरिकै राज्यस्वर्गादिक अर्थभी अवश्यकरिकै प्राप्त होवै हैं। परंतु ते राज्यस्वर्गादिक पदार्थ ता धर्मका आनुषंगिक फलरूप हैं। जो कदाचित् ते राज्यस्वर्गादिक अर्थ नहींभी प्राप्त होवैं। तौभी ता करे हुए धर्मकी हानि होवै नहीं इति। यातैं युद्धकूं विधान करणेहारा शास्त्र अर्थशास्त्ररूप नहीं है। किंतु धर्मशास्त्ररूप है। इतनै कहणेकरिकै श्रीभगवान्नैं (पापमेवाश्रयेदस्मान्) इत्यादिक अर्जुनके वचनोंका खंडन करा इति ॥ ३८ ॥ ❀ ॥ शंका। हे भगवन् स्वधर्मबुद्धिकरिकै युद्ध करणेहारे पुरुषकूं जो आपनैं पापका अभाव कह्या सो सत्य है। तथापि हमारेप्रति युद्ध करणेका उपदेश करणा आपकूं उचित नहीं है। काहेतैं पूर्व आपनैं (य एनं वेत्ति हंतारं कथं स पुरुषः पार्थ कं घातयति हंति कं) इत्यादिक वचनोंकरिकै विद्वान् पुरुषविषे सर्व कर्मोंका निषेध कथन करा है। और अकर्त्ता अभोक्ता शुद्धस्वरूप मैं हूं तथा इस युद्धकूं करिकै मैं ताके फलकूं भोगौंगा या प्रकारका ज्ञानभी संभवता नहीं। जिस कारणतैं अकर्तृत्वबुद्धिका तथा कर्तृत्वबुद्धिका परस्पर

विरोध है । एक अधिकरणविषे एक कालमैं ते दोनों बुद्धि होवैं नहीं । और जैसे प्रकाश तथा अंधकार या दोनोंका समुच्चय होवै नहीं । तैसे ज्ञान तथा कर्म या दोनोंकाभी समुच्चय होवै नहीं । यह अर्जुनका अभिप्राय (ज्यायसीचेत्) या श्लोकविषे आगे स्पष्ट होवैगा । यातैं एकही मैं अर्जुनके प्रति ज्ञानका उपदेश तथा कर्मका उपदेश संभवता नहीं । ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए । श्रीभगवान् विद्वत् अवस्थाके तथा अविद्वत् अवस्थाके भेद-करिकै एकही पुरुषके प्रति ज्ञानका उपदेश तथा कर्मका उपदेश संभव होइ सकै है या प्रकारका उत्तर कहे हैं ।

(मू. श्लो) एषा तेभिहिता सांख्ये बुद्धिर्योगे त्विमां शृणु । बुद्ध्या युक्तो यया पार्थ कर्मबंधं प्रहास्यसि ॥ ३९ ॥ (पदच्छेदः) एषा । ते । अभिहिता । सांख्ये । बुद्धिः । योगे । तु । इमां । शृणु । बुद्ध्या । युक्तः । यया । पार्थ । कर्मबंधं । प्रहास्यसि ॥ ३९ ॥ (पदार्थः) हे अर्जुन हमनैं तुमारे तांई यह पूर्व उक्त बुद्धि ब्रह्मविषे कथन करी अबी कर्मयोगविषे इस वक्ष्यमाण बुद्धिकूं तूं श्रवण कर जिसैं बुद्धिकरिकै युक्त हुआ तूं कर्मबंधकूं परित्याग करैगा ॥ ३९ ॥

टीका । देहादिक सर्व उपाधियोंतैं भिन्न करिकै परमात्माका वास्तव स्वरूप प्रतिपादन करियें जिसकरिकै ताका नाम संख्य है ऐसा उपनिषद्रूप शास्त्र है । ता उपनिषद्करिकै जो वस्तु प्रतिपादन करियें ता वस्तुका नाम सांख्य है ऐसा जीवका वास्तव स्वरूप परमात्मा देव है । ऐसे सांख्य नामा परमात्मादेवविषे (नत्वेवाहं जातु नासं) इस श्लोकतैं आदिलैके (स्वधर्ममपि चावेक्ष्य) इस श्लोकेतैं पूर्व एकविंशति २१ श्लोकोंकरिकै ज्ञानरूप बुद्धि हमनैं तुमारेप्रति कथन करी । कैसी है सा बुद्धि जन्ममरणादिक सर्व अनर्थोंके निवृत्तिका कारण है । ऐसी आत्मज्ञानरूप बुद्धि जिस अधिकारी पुरुषकूं प्राप्त भई है । तिन विद्वान् पुरुषके प्रति कदाचितभी हमनैं कर्मोंकी कर्त्तव्यता कथन करी नहीं । काहेतैं (तस्य कार्यं न विद्यते) या वचनकरिकै तिस विद्वान् पुरुषविषे सर्व कर्मोंके कर्त्तव्यताका अभाव आगे हमनैं कथन करणा है । जो कदाचित् अबी तौ मैं ता विद्वान् पुरुषविषे कर्मोंकी कर्त्तव्यताका कथन करौं । और आगे ता विद्वान् पुरुषविषे सर्व कर्मोंकी कर्त्तव्यताका अभाव कथन करौं । तौ हमारे पूर्व उत्तर वचनोंका विरोध होवैगा । यातैं विद्वान् पुरुषविषे कर्मोंकी कर्त्तव्यतामैं हमारा तात्पर्य नहीं है । किंतु हमारा यह तात्पर्य है । इस प्रकार आत्माके उपदेश किये हुएभी जो कदाचित् अपणे चित्तके दोषतैं तुमारेकूं सा ब्रह्मात्माकारबुद्धि नहीं उत्पन्न होवै तौ ता चित्तके दोषकी निवृ-

त्तिकरिकै आत्मसाक्षात्कारकी प्राप्तिवासतै तुमारेकूं निष्कामकर्मयोगही अनुष्ठान करणे योग्य है । तिस कर्मयोगविषे करणे योग्य जो (सुखदुःखे समे कृत्वा) या श्लोकविषे कथन करी हुई फलकी इच्छाका त्यागरूप बुद्धि है । ता बुद्धिकूं अबी मैं विस्तारकरिकै कथन करता हूं । तूं तिस बुद्धिकूं श्रवण कर । इहां (योगे तु) या वचनविषे स्थित जो तु यह शब्द है । सो तुशब्द पूर्व कथन करी हुई ज्ञानरूप बुद्धिविषे कर्मयोगविषयत्वके अभावकूं सूचन करे है । यातैं यह अर्थ सिद्ध भया । जिस अधिकारी पुरुषका अंतःकरण शुद्ध हुआ है । ता अधिकारी पुरुषके प्रति तौ आत्मज्ञानकाही उपदेश करणा योग्य है । और जिस पुरुषका अंतःकरण शुद्ध नहीं भया है । ता पुरुषके प्रति तौ कर्मकाही उपदेश करणा योग्य है । यातैं ज्ञान तथा कर्म या दोनोंके समुच्चयकी शंकाकरिकै विरोधकी प्राप्ति होवै नहीं इति । अब फलका कथन करिकै ता कर्मयोगविषयक बुद्धिकी स्तुति करे हैं (बुद्ध्या यया इति) जिस व्यवसायात्मक बुद्धिकरिकै तिन निष्काम कर्मोंविषे जुड्या हुआ तूं कर्मजन्य अंतःकरणकी अशुद्धिरूप बंधकूं परित्याग करैगा । इहां यह तात्पर्य है । पापकर्मजन्य जो अंतःकरणकी अशुद्धिरूप ज्ञानका प्रतिबंध है । सो प्रतिबंध तौ धर्मरूप कर्मकरिकैही निवृत्त होवै है । दूसरे किसी उपायकरिकै सो प्रतिबंध निवृत्त होवै नहीं । तहां श्रुति । "धर्मेण पापमपनुदति" । अर्थ यह । यह अधिकारी पुरुष निष्कामकर्मरूप धर्मकरिकै पापकूं निवृत्त करे है इति । और श्रवणमननादिरूप जो विचार है । सो विचार तौ पापकर्मरूप प्रतिबंधतैं रहित पुरुषके असंभावना विपरीतभावनारूप प्रतिबंधकूं निवृत्त करे है । यातैं पापकर्मरूप प्रतिबंधकी निवृत्ति करणेवासतै सो श्रवणादिरूप विचार उपदेश करा जावै नहीं । और इदानीं कालविषे तुमारा अंतःकरण अत्यंत मलिन है । यातैं अबी तुमनैं बहिरंगसाधनरूप कर्मही करणेयोग्य है । इस कालविषे तुमारेमैं श्रवणादिकोंकी योग्यताभी उत्पन्न भई नहीं । तौ ज्ञानकी योग्यता तुमारेविषे किस प्रकार होवैगी । किंतु इस कालविषे ज्ञानकी योग्यता तुमारेमैं है नहीं । यहही वार्त्ता (कर्मण्येवाधिकारस्ते) या श्लोकविषे आगे कथन करैंगे । इतनै कहणेकरिकै सांख्यबुद्धिके श्रवणादिरूप अंतरंगसाधनोंकूं छोडिकै भगवान्नैं अर्जुनके प्रति कर्मरूप बहिरंगसाधन किसवासतै उपदेश करीते हैं या प्रकारकी शंकाकाभी खंडन करा इति ॥ ३९ ॥ ❁ ॥ शंका । हे भगवन् । "तमेतं वेदानुवचनेन ब्राह्मणा विविदिषंति यज्ञेन दानेन तपसा नाशकेन इति" । या श्रुतिनैं विविदिषाकी प्राप्तिवासतै तथा ज्ञानकी प्राप्तिवासतै यज्ञ दान तपादिक कर्मोंका विधान करा है । तहां यज्ञदानादिक कर्मोंकरिकै साक्षात् तौ विविदिषाकी तथा ज्ञानकी प्राप्ति होवै नहीं । किंतु अंतःकरणकी शुद्धिद्वारा ता विविदिषाकी तथा ज्ञानकी प्राप्ति होवै है । या कारणतैं आपनैं हमारे प्रति कर्मोंका अनुष्ठान विधान करीता है । और श्रुतिनैं तौ कर्मके फलकूं ना-

शवान् कह्या है। तहां श्रुति। "तद्यथेह कर्मजितो लोकः क्षीयते एवमेवामुत्र पुण्यजितो लोकः क्षीयते"। अर्थ यह। जैसे इस लोकविषे कर्मकरिकै जन्य होणेतैं यह गृहादिक पदार्थ नाशकूं प्राप्त होवै हैं। तैसे परलोकविषे पुण्यकर्मकरिकै जन्य होणेतैं स्वर्गादिक पदार्थभी नाशकूं प्राप्त होवै हैं इति। किंवा। जैसे स्वर्गकी प्राप्तिवासतै करे हुए ज्योतिष्टोमादिक यज्ञ हैं। ते यज्ञ काम्यकर्मरूपही होवै हैं। तैसे ज्ञानकी प्राप्तिवासतै अथवा ज्ञानकी इच्छारूप विविदिषाकी प्राप्तिवासतै करे हुए जो यज्ञदानादिक कर्म हैं। ते कर्मभी काम्यकर्मरूपही होवैंगे। और जो जो काम्यकर्म होवै हैं। सो सो सर्व अंगोंकी संपूर्णतापूर्वक अनुष्ठान करा हुआही फलका हेतु होवै है। किंचित् अंगकी वैगुण्यताकरिकै सो काम्यकर्म फलकी प्राप्ति करै नहीं। यातैं यत्किंचित् अंगोंकी न्यूनअधिकताकरिकै तिन यज्ञदानादिक कर्मोंविषे वैगुण्यदोषकी प्राप्तिभी संभवै है। और "यज्ञेन दानेन" या श्रुतिनैं विधान करे जो यज्ञदानादिक कर्म हैं। ते सर्व कर्म एक पुरुषनैं अपणे शत वर्ष आयुषकी समाप्तिपर्यंतभी करणेकूं अशक्य हैं। यातैं (कर्मबंधं प्रहास्यसि) या वचनकरिकै आपनैं कथन करा जो कर्मयोगका फल है। ता फलके प्राप्तिकी आशा हमारेकूं होती नहीं। ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् उत्तर कहे हैं।

(मू. श्लो.) नेहाभिक्रमनाशोस्ति प्रत्यवायो न विद्यते। स्वल्पमप्यस्य धर्मस्य त्रायते महतो भयात् ॥ ४० ॥ (पदच्छेदः) न[३]। इह[१]। अभिक्रमनाशः[२]। अस्ति[४]। प्रत्यवायः[५]। न[६]। विद्यते[७]। स्वल्पं[९]। अपि[१०]। अस्य। धर्मस्य[८]। त्रायते[१४]। महतः[१२]। भयात्[१३] ॥ ४० ॥ (पदार्थः) हे अर्जुन इस[१] निष्कामकर्मयोगविषे कर्मके[२] फलका नाश नहीं[३] होवे[४] है तथा प्रत्यवायभी[५] नहीं[६] होवै[७] है तथा इस निष्कामधर्मका[८] यत्किंचित्[९] धर्म भी[१०][११] इस पुरुषकूं महान्[१२] भयतैं[१३] रक्षा[१४] करै है ॥ ४० ॥

टीका। यज्ञदानादिक कर्मोंनैं जिस फलका प्रारंभ करीता है ता फलका नाम अभिक्रम है। तहां 'तद्यथेह' या श्रुतिवचनकरिकै कथन करा जो ता फलका नाश है। सो फलका नाश इस निष्काम कर्मरूप योगविषे कदाचित्भी होवै नहीं। काहेतैं 'तद्यथेह कर्मजितो' या श्रुतिनैं तौ कर्मकरिकै प्राप्त लोकका नाश कथन करा है। तहां लोकशब्द केवल भोग्यपदार्थोंकाही वाचक है। और निष्कामकर्मरूप योगका फलरूप जो चित्तकी शुद्धि है। सा चित्तकी शुद्धि पापोंका क्षयरूप है। यातैं ता चित्तकी शुद्धिरूप फलविषे ता लोकशब्दकी अर्थरूपता है नहीं। या कारणतैं ता चित्तशुद्धिरूप

फलका स्वर्गादिकोंकी न्यांई क्षय संभवै नहीं। किंवा। तत्त्वसाक्षात्कारपर्यंत रहणेहारी जो विविदिषा है । सा विविदिषाही तिन यज्ञदानादिक कर्मोंका फलरूप है । और सो तत्त्वसाक्षात्कार व्यवधानतैं विनाही अज्ञानकी निवृत्तिरूप फलका जनक है । जैसे सूर्यादिकोंका प्रकाश व्यवधानतैं विनाही अंधकारकी निवृत्ति करे है । यातैं सो तत्त्वसाक्षात्कार अज्ञानकी निवृत्तिरूप फलकूं न उत्पन्न करिकै नाश होवै नहीं । किंतु अज्ञानकी निवृत्तिरूप फलकूं उत्पन्न करिकैही सो तत्त्वसाक्षात्कार नाश होवे है। जैसे सूर्यादिकोंका प्रकाश अंधकारकूं नाश करिकैही निवृत्त होवै है। या प्रकारके अभिप्रायकरिकैही श्रीभगवान्नैं (नेहाभिक्रमनाशोस्ति) या प्रकारका वचन कह्या है। यह वार्त्ता अन्य शास्त्रविषेभी कथन करी है। तहां श्लोक । " तद्यथेहेति या निंदा सा फले नतु कर्मणि । फलेच्छां तु परित्यज्य कृतं कर्म विशुद्धिकृत् " । अर्थ यह । ' तद्यथेह कर्मजितो लोकः क्षीयते ' या श्रुतिवचननैं कथन करी जो निंदा है। सा निंदा स्वर्गादिक फलविषयकही है । कोई यज्ञदानादिक कर्मविषयक सा निंदा नहीं है । जिस कारणतैं फलकी इच्छाका परित्याग करिकै करे हुए ते यज्ञदानादिक कर्म या अधिकारी पुरुषके अंतःकरणकी शुद्धि करणेहारे हैं इति । तथा तिन यज्ञदानादिक कर्मोंके अंगोंकी न्यूनअधिकतारूप वैगुण्यकरिकै करा हुआ जो तिन कर्मोंका वैगुण्यरूप प्रत्यवाय है । सो प्रत्यवायभी इस निष्कामकर्मरूप योगविषे है नहीं । काहेतैं ' तमेतं वेदानुवचनेन ' या श्रुतिनैं यज्ञदानादिक नित्यकर्मोंकाही प्रतिबंधक पापोंकी निवृत्तिद्वारा विविदिषाविषे उपयोग कथन करा है । तिन नित्यकर्मोंविषे सर्व अंगोंकी संपूर्णताका नियम होवै नहीं । और ' तमेतं वेदानुवचनेन ' या श्रुतिनैं यज्ञदानादिक काम्यकर्मोंकाभी ता विविदिषाविषे उपयोग कथन करा है । या पक्षके अंगीकार किये हुएभी फलकी इच्छातैं रहित होणेतैं तिन यज्ञदानादिक काम्यकर्मोंकूंभी नित्यकर्मकीही तुल्यता है । काहेतैं काम्यकर्मरूप जो अग्निहोत्र है । तथा नित्यकर्मरूप जो अग्निहोत्र है । तिन दोनों अग्निहोत्रोंविषे स्वरूपतैं तौ कोई विशेषता है नहीं । किंतु जो अग्निहोत्र स्वर्गादिक फलकी इच्छापूर्वक करा जावै है । ता अग्निहोत्रविषे काम्यकर्मरूपताका व्यवहार होवै है। और जो अग्निहोत्र स्वर्गादिक फलकी इच्छातैं विना करा जावै है। ता अग्निहोत्रविषे नित्यकर्मरूपताका व्यवहार होवै है। इस प्रकार स्वर्गादिक फलकी इच्छाकरिकै तथा ता इच्छाके अभावकरिकैही ता अग्निहोत्रविषे काम्यकर्मरूपता तथा नित्यकर्मरूपता सिद्ध होवै है। यातैं यह अर्थ सिद्ध भया । स्वर्गादिक फलकी प्राप्तिवासतै करे हुए जो यज्ञदानादिक कर्म हैं। तिन सकाम कर्मोंविषे तौ यथाविधिपूर्वक सर्व अंगोंकी पूर्णता करणेकाही नियम है । जो कदाचित् यह सकाम पुरुष यथाविधिपूर्वक तिन कर्मोंके सर्व अंगोंकी पूर्णता नहीं करैगा। तौ ते यज्ञदानादिक कर्म वैगुण्यभावकूं प्राप्त हुए ता फ-

लकी प्राप्ति नहीं करेंगे। और फलकी इच्छातैं रहित होइकै केवल अंतःकरणकी शुद्धिवासतै करे हुए जो यज्ञदानादिक कर्म हैं। तिन यज्ञदानादिक निष्काम कर्मोंकी तौ यजमानरूप कर्त्तातैं भिन्न प्रतिनिधि आदिकोंकरिकैभी समाप्ति होइ सकै है। यातैं तिन निष्काम कर्मोंविषे अंगोंका वैगुण्यजन्य प्रत्यवाय होवै नहीं। इहां यजमान पुरुष किसी रोगादिक निमित्ततैं जिस कर्मके करणेविषे समर्थ नहीं होवै। तिस कर्मकूं जिस ब्राह्मणद्वारा समाप्त करावै है। ता ब्राह्मणका नाम प्रतिनिधि है इति। किंवा। 'तमेतं वेदानुवचनेन' या श्रुतिनैं विधान करे जो अंतःकरणकी शुद्धिवासतै यज्ञदानादिक धर्म हैं। ता धर्मके मध्यविषे संख्याकरिकै अथवा अंगोंकरिकै अत्यंत स्वल्प जो धर्म भगवत्के आराधनवासतै अनुष्ठान करा है। सो स्वल्प धर्मभी या अधिकारी पुरुषकूं जन्ममरणरूप संसारके महान् भयतैं रक्षा करे है। यह वार्त्ता स्मृतिविषेभी कथन करी है। तहां श्लोक। "सर्वपापप्रसक्तोपि ध्यायन्निमिषमच्युतं। भूयस्तपस्वी भवति पंक्तिपावनपावनः"। अर्थ यह। सर्व पापकर्मोंविषे प्रीतिवाला हुआभी यह पुरुष अनन्य होइकै एक निमेषमात्रभी अच्युतपरमात्मादेवका ध्यान करता हुआ ता ध्यानके प्रभावतैं पुनः तपस्वी होवै है। तथा पंक्तिके पवित्र करणेहारे पुरुषोंकाभी पवित्र करणेहारा होवै है इति। और 'तमेतं वेदानुवचनेन' या श्रुतिवचनविषे सर्व कर्मोंके समुच्चयका विधान करणेहारा कोई वचन है नहीं। यातैं अंतःकरणके अशुद्धिकी न्यून अधिकताकरिकै तिन यज्ञदानादिक कर्मोंके अनुष्ठानकी न्यून अधिकताभी संभव होइ सकै है। यातैं (कर्मबंधं प्रहास्यसि) यह हमारा वचन यथार्थ है इति ॥ ४० ॥ ❀ ॥ अब इस पूर्वश्लोकविषे कथन करे हुए अर्थके स्पष्ट करणेवासतै 'तमेतं वेदानुवचनेन' या श्रुतिनैं विधान करे जो यज्ञदानादिक कर्म हैं तिन कर्मोंविषे एक अर्थता निरूपण करे हैं।

(मू. श्लो.) व्यवसायात्मिका बुद्धिरेकेह कुरुनंदन। बहुशाखा ह्यनंताश्च बुद्धयो व्यवसायिनां ॥ ४१ ॥ (पदच्छेदः) व्यवसायात्मिका। बुद्धिः। एका। इह। कुरुनंदन। बहुशाखाः। हि। अनंताः। च। बुद्धयः। अव्यवसायिनां ॥ ४१ ॥ (पदार्थः) हे अर्जुन इस श्रेयके मार्गविषे आत्मतत्त्वका निश्चयरूप बुद्धि एकही विवक्षित है और सकाम पुरुषोंकी बुद्धियां तौ बहुत शाखावाली हैं तथा अनंत हैं ॥ ४१ ॥

टीका। हे अर्जुन इस मोक्षरूप श्रेयके मार्गविषे अथवा 'तमेतं वेदानुवचनेन' इस श्रुतिवचनविषे ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, संन्यास या चारि आ-

श्रमोंकूं आत्मतत्त्वकी निश्चयरूप बुद्धि एकही सिद्ध करणेकूं विवक्षित है। काहेतैं वेदानुवचनेन, यज्ञेन, दानेन, तपसा, अनाशकेन या पदोंके अंतविषे स्थित जो तृतीयाविभक्ति है। ता तृतीयाविभक्तिनैं तिन वेदानुवचनादिकोंविषे परस्पर निरपेक्षसाधनरूपता बोधन करीती है। तहां गुंरुके मुखतैं वेदोंके अध्ययन करणेका नाम वेदानुवचन है। सो वेदोंका अध्ययन ब्रह्मचारीके सर्व धर्मोंविषे प्रधान धर्म है । यातैं ता वेदानुवचनकरिकै ब्रह्मचारीके सर्व धर्मोंका ग्रहण करणा तथा यज्ञ, दान यह दोनों गृहस्थके सर्व धर्मोंविषे प्रधान धर्म हैं । यातैं ता यज्ञदानकरिकै गृहस्थके सर्व धर्मोंका ग्रहण करणा। और कृच्छ्रचांद्रायणका नाम तप है। सो तप वानप्रस्थके सर्व धर्मोंविषे प्रधान धर्म है। यातैं ता तपकरिकै वानप्रस्थके सर्व धर्मोंका ग्रहण करणा। तहां मृत्युका कारण जो अनशनव्रत है ताकी निवृत्ति करणेवासतै तिस तपका अनाशक यह विशेषण दिया है। इस प्रकार सर्व भूतप्राणीयोंकूं अभयदान तथा प्रणवादिक मंत्रोंका जप इत्यादिक संन्यासीके धर्मभी जानि लेणे इति । और भगवान् भाष्यकारोंनैं तौ या श्लोकका यह व्याख्यान करा है। सांख्यविषयक तथा योगविषयक जो बुद्धि है। सा बुद्धि एकही फलका जनक होणेतैं एक है। और सा बुद्धि निर्दोषवेदवाक्योंतैं जन्य होणेतैं व्यवसायात्मिका। है क्या सर्व विपरीतबुद्धियोंका बाधक है। और अव्यवसायी अज्ञानी पुरुषोंकी जो बहुत शाखावाली अनंत बुद्धियां हैं । ते सर्व बुद्धियां विपरीत होणेतैं ता व्यवसायात्मिक बुद्धिकरिकै बाध्य हैं इति । और किसी टीकाविषे तौ यह अर्थ करा है । परमेश्वरके आराधनकरिकैही मैं इस संसारसमुद्रकूं तरौंगा या प्रकारकी निश्चयरूपा एकनिष्ठा बुद्धिही इस कर्मयोगविषे होवै है इति। सर्व प्रकारतैं ज्ञानकांडके अनुसारकरिकै (स्वल्पमप्यस्य धर्मस्य त्रायते महतो भयात्) या वचनका अर्थ भली प्रकारतैं सिद्ध होवै है। और कर्मकांडविषे तौ तिस तिस स्वर्गादिक फलकी कामनावाले अव्यवसायी पुरुषोंकी बुद्धियां तौ बहुत शाखावाली होवै हैं। क्या कामनावोंके अनेक भेदतैं ते बुद्धियांभी अनेक भेदवाली होवै हैं। तथा कर्मफल गुणफल आदिकोंकूं विषय करणेहारी उपशाखावोंके भेदतैं ते बुद्धियां अनंत होवै हैं इति । तहां (अनंता हि) या वचनविषे स्थित जो हि यह शब्द है । सो हिशब्द तिन सकाम पुरुषोंके बुद्धियोंविषे अनंतरूपताकी प्रसिद्धि बोधन करणेवासते है । यातैं यह अर्थ सिद्ध भया । अंतःकरणकी शुद्धि करणेवासतै जो निष्काम कर्म हैं । तिन निष्काम कर्मोंविषे सकाम कर्मोंकी अपेक्षाकरिकै महान् विलक्षणता है इति ॥ ४१ ॥ ❁ ॥ शंका । हे भगवन् जैसे निष्काम अधिकारी पुरुषोंकूं सा व्यवसायात्मिका बुद्धि प्राप्त होवै है। तैसे सकाम पुरुषोंकूं सा व्यवसायात्मिका बुद्धि क्यूं नहीं प्राप्त होती । किंतु तिन सकाम पुरुषोंकूंभी सा व्यवसायात्मिका बुद्धि प्राप्त होणी चाहिये । जिस कारणतैं शास्त्ररूप प्रमाण तौ तिन दोनोंकूं तुल्यही प्राप्त है। ऐसी

अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् प्रतिबंधके वशतैं तिन सकाम पुरुषोंकूं सा व्यवसायात्मिका बुद्धि नहीं प्राप्त होवै है या प्रकारका उत्तर तीन श्लोकोंकरिकै कथन करे हैं ।

(मू. श्लो.) यामिमां पुष्पितां वाचं प्रवदंत्यविपश्चितः । वेदवादरताः पार्थ नान्यदस्तीति वादिनः ॥ ४२ ॥ कामात्मानः स्वर्गपरा जन्मकर्मफलप्रदां । क्रियाविशेषबहुलां भोगैश्वर्यगतिं प्रति ॥४३॥ भोगैश्वर्यप्रसक्तानां तयापहृतचेतसां ॥ व्यवसायात्मिका बुद्धिः समाधौ न विधीयते ॥ ४४ ॥ (पदच्छेदः) यां । इमां । पुष्पितां । वाचं । प्रवदंति । अविपश्चितः । वेदवादरताः । पार्थ । न । अन्यत् । अस्ति । इति । वादिनः । ४२ । कामात्मानः । स्वर्गपराः । जन्मकर्मफलप्रदां । क्रियांविशेषबहुलां । भोगैश्वर्यगतिंप्रति । । ४३ । भोगैश्वर्यप्रसक्तानां । तया । अपहृतचेतसां । व्यवसायात्मिका । बुद्धिः । समाधौ । न । विधीयते ॥ ४४ ॥ (पदार्थः) हे अर्जुन ते विचारहीन पुरुष जिस प्रसिद्ध कर्मकांडरूप वाणीकूं कथन करे हैं कैसी है सा वाणी अविचारतैं रमणीक है तथा जन्मकर्मफलके देणेहारी है तथा भोगऐश्वर्यके प्राप्तिवासतै अग्निहोत्रादिक कर्मोंकूं विस्तारतें प्रतिपादन करणेहारी है ऐसी वाणीकूं कहणेहारे ते विचारहीन पुरुष कैसे हैं वेदके अर्थवादोंविषे प्रीतिमान् हैं तथा कर्मके फलतें भिन्न कोई ज्ञानका फल नहीं है याप्रकार कथन करणेहारे हैं तथा कामरूप हैं तथा स्वर्गही है उत्कृष्ट जिनोंकूं तथा भोगऐश्वर्यविषे है आसक्ति जिनोंकी तथा तां वाणीकरिकै आच्छादित हुआ है चित्त जिनोंका ऐसे बहिर्मुख पुरुषोंके अंतःकरणविषे सा व्यवसायात्मिका बुद्धि नहीं होवै है ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥

टीका । हे अर्जुन "स्वाध्यायोऽध्येतव्यः" । अर्थ यह । या अधिकारी पुरुषनैं वेद अध्ययन करणा इति । या अध्ययनविधितैं प्राप्त होणेकरिकै अत्यंत प्रसिद्ध जो यह कर्मकांडरूप वाणी है । कैसी है सा वाणी । जैसे निर्गंध पुष्पोंकरिकै युक्त पलाशका वृक्ष दूरसैं रमणीक लागे है । तैसे जा वाणी अविचारतैंही रमणीक लागे है । काहेतैं ता वाणीकरिकै केवल स्वर्गादिक फलोंका तथा यज्ञादिक साधनोंका तथा तिन दोनोंके परस्पर संबंधकाही ज्ञान होवै है । कोइ निरतिशय आनंदरूप फलकी प्राप्ति होवै नहीं । शंका । हे भगवन् ता कर्मकांडरूप वाणीतैं निरतिशयानंदरूप फलकी प्राप्ति नहीं होती याकेविषे क्या

कारण है। ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् कहे हैं (जन्मकर्मफलप्रदां इति) अपूर्व शरीरइंद्रियादिकोंका संबंधरूप जो जन्म है। तथा ता जन्मके अधीन तिस तिस वर्णआश्रमके अभिमानजन्य जो अग्निहोत्रादिक कर्म हैं। तथा तिन कर्मोंके अधीन जो पुत्रपशुस्वर्गादिरूप नाशवान् फल है। ता जन्मकर्मफल तीनोंकूंही घटीयंत्रकी न्यांई विच्छेदतैं रहित यह कर्मकांडरूप वाणी प्राप्त करे है इति। शंका। हे भगवन् सा वाणी तिन जन्मादिकोंकीही प्राप्ति करे है। यह वार्त्ता कैसे जानी जावै। ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् कहे हैं। (भोगैश्वर्यगतिं प्रति क्रियाविशेषबहुलां इति) अमृतका पान तथा उर्वशी आदिक अप्सरावोंके साथि विहार तथा पारिजातवृक्षका सुगंध इत्यादिक पदार्थोंकी प्राप्तिजन्य जो भोग है। तथा ता भोगका कारणरूप जो देवतादिकोंका स्वामीपणारूप ऐश्वर्य है। ता भोग ऐश्वर्य दोनोंकी प्राप्तिके प्रति साधनभूत जो अग्निहोत्र, दर्शपौर्णमास, ज्योतिष्टोम इत्यादिक क्रियाविशेष हैं। तिन क्रियाविशेषोंकरिकै जा वाणी बहुत विस्तारकूं प्राप्त होइ रही है। क्या भोग ऐश्वर्य या दोनोंके साधनभूत क्रियाविशेषोंकूं जा वाणी अत्यंत विस्तारतैं प्रतिपादन करणेहारी है। सो कर्मकांडविषे ज्ञानकांडकी अपेक्षाकरिकै अत्यंत विस्तारपणा सर्वत्र प्रसिद्धही है। ऐसी कर्मकांडरूप वाणीकूं परमार्थरूप स्वर्गादिक फलपरता अंगीकार करे हैं। शंका। हे भगवन् ता कर्मकांडरूप वाणीकूं स्वर्गादिरूप फलपरता कौन अंगीकार करे हैं। ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् कहे हैं (अविपश्चितः इति) जे पुरुष विचारजन्य तात्पर्यज्ञानतैं रहित हैं। ते पुरुषही ता वाणीकूं स्वर्गादिरूप फलपरता माने हैं। या कारणतैंही ते सकाम पुरुष वेदविषे स्थित जो "अक्षयं ह वै चातुर्मास्ययाजिनः सुकृतं भवति"। अर्थ यह। चातुर्मास्ययज्ञके करणेहारे पुरुषकूं अक्षय सुकृत होवै है इत्यादिक अर्थवाद हैं ते अर्थवाद यथार्थही हैं या प्रकारका मिथ्या विश्वास करिकै संतोषकूं प्राप्त हुए हैं। या कारणतैंही ते सकाम पुरुष या प्रकारके वचन कहे हैं। कर्मकांडकी अपेक्षाकरिकै कोई ज्ञानकांड भिन्न नहीं है। किंतु सो ज्ञानकांड कर्मकांडकाही शेषरूप है। तहां ज्ञानकांडविषे स्थित जो तत्पदार्थके बोधक वचन हैं। ते वचन तौ देवताके स्वरूपकूं बोधन करे हैं। और त्वंपदार्थके बोधक जो वचन हैं। ते वचन तौ कर्मकर्त्ता यजमानके स्वरूपकूं बोधन करे हैं। और तत्त्वंपदार्थके अभेदकूं बोधन करणेहारे जो वचन हैं। ते वचन तौ कर्मकर्त्ता पुरुष साक्षात् ईश्वररूप है या प्रकार ता कर्मकर्त्ता पुरुषकी स्तुति करे हैं। इस प्रकार संपूर्ण वेद कर्मपरही हैं। और कर्मका फलरूप जो स्वर्गादिक हैं। तिन स्वर्गादिकोंकी अपेक्षाकरिकै दूसरा कोई ज्ञानका निरतिशय आनंदरूप फल है नहीं। इस प्रकार ते सकाम पुरुष अनेक प्रकारकी कल्पना करिकै सर्व प्रकारतैं ज्ञानकांडतैं विरुद्ध अर्थकेही कहणेहारे हैं। शंका। हे भगवन् ते बहिर्मुख सकाम पुरुष निरतिशय आनंदरूप मोक्ष-

विषे किसवासतै द्वेष करे हैं। ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए। श्रीभगवान् कहे हैं (कामात्मानः इति) हे अर्जुन कामनावोंके विषयरूप जो अनेक प्रकारके विषय हैं। तिन विषयोंकरिकै जिनोंका चित्त सर्वदा व्याकुल होइ रह्या है। या कारणतैं ते काममय पुरुष साक्षात् मोक्षविषेभी द्वेष करे हैं। शंका। हे भगवन् ते सकाम पुरुष जैसे दूसरे विषयोंकी कामना करे हैं। तैसे निरतिशय आनंदरूप मोक्षकी कामना किसवासतै नहीं करते। ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् कहे हैं (स्वर्गपराः इति) हे अर्जुन उर्वशी, नंदनवन, अमृत इत्यादिक विषयोंकरिकै युक्त जो स्वर्ग है। सो स्वर्गही है सर्वतैं उत्कृष्ट जिनोंकूं। ता स्वर्गतैं भिन्न दूसरा कोई पुरुषार्थ है नहीं। इस प्रकार मानणेहारे भ्रांत पुरुषोंविषे विवेकवैराग्यादिक साधनोंका अभाव है। यातैं ते भ्रांत पुरुष मोक्षकी कथामात्रकूंभी सहारि नहीं सकते। तौ तिन मूढ पुरुषोंविषे मोक्षकी इच्छा कहांतैं होणी है इति। इस प्रकार पूर्व उक्त भोग ऐश्वर्य दोनोंविषे क्षयपणा सातिशयता इत्यादिक दोषोंके अदर्शनकरिकै अत्यंत आसक्त हुआ है अंतःकरण जिनोंका। तथा ता कर्मकांडरूप वाणीकरिकै आच्छादित होइ गया है विवेकज्ञान जिनोंका। तथा 'अक्षय्यं ह वै' इत्यादिक अर्थवादवचन केवल स्तुतिपर हैं। प्रमाणांतरकरिकै अबाधित जो तात्पर्यका विषयभूत अर्थ है ता अर्थविषेही वेदोंकूं प्रमाणरूपता है या प्रकारके प्रसिद्ध अर्थकूंभी जे पुरुष जानणेविषे समर्थ नहीं हैं। ऐसे सकाम पुरुषोंके समाधि नामा अंतःकरणविषे सा व्यवसायात्मिका बुद्धि नहीं होवै है। अथवा समाधि या शब्दकरिकै परमात्माका ग्रहण करणा। ता परमात्माविषयक सा व्यवसायात्मिका बुद्धि तिन पुरुषोंकी होवै नहीं इति। "समाधीयतेऽस्मिन् सर्वं स समाधिः" या प्रकारकी व्युत्पत्ति करिकै अंतःकरणविषे तथा परमात्माविषे ता समाधिशब्दकी अर्थरूपता संभव होइ सकै है। और किसी टीकाकारनैं तौ समाधिशब्दका यह अर्थ करा है। मैं ब्रह्मरूप हूं या प्रकारके स्थितिका नाम समाधि है। ता समाधिके निमित्त तिन पुरुषोंकी सा व्यवसायात्मिका बुद्धि नहीं उत्पन्न होवै है इति। इहां यह अभिप्राय है। यद्यपि स्वर्गादिक फलकी प्राप्ति करणेहारे जो काम्य अग्निहोत्रादिक हैं। ते अग्निहोत्रादिक कर्म अंतःकरणकी शुद्धिवासतै करणेयोग्य अग्निहोत्रादिकोंतैं विलक्षण नहीं हैं। तथापि स्वर्गादिक फलकी इच्छारूप दोषके वशतैं ते काम्य अग्निहोत्रादिक कर्म अंतःकरणके शुद्धिकूं संपादन करै नहीं। यद्यपि भोगोंके अनुकूल जो अंतःकरणकी शुद्धि है। सा अंतःकरणकी शुद्धि तिन सकाम कर्मोंतैंभी होइ सकै है। तथापि सा अंतःकरणकी शुद्धि आत्मज्ञानके उपयोगी है नहीं। इसी अर्थके बोधन करणेवासतै श्रीभगवान्नैं (भोगैश्वर्यप्रसक्तानां) यह वचन पुनः कथन करा है। और फलकी इच्छातैं विना करे हुए जो अग्निहोत्रादिक कर्म हैं। ते निष्काम कर्म तौ आत्मज्ञानके उपयोगी अंतःकरणके शुद्धिकूंही

संपादन करे हैं । यातैं निष्काम विपश्चित पुरुषोंके फलविषे तथा सकाम अविपश्चित पुरुषोंके फलविषे महान् विलक्षणता सिद्ध होवै है । इसी वार्त्ताकूं आगे विस्तारकरिकै निरूपण करैंगे इति ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ❀ ॥ शंका । हे भगवन् तिन सकाम पुरुषोंकूं अपणे अंतःकरणके दोषतैं सा व्यवसायात्मिका बुद्धि मत प्राप्त होवै । परंतु ता व्यवसायात्मिका बुद्धिकरिकै अग्निहोत्रादिक कर्मोंकूं करणेहारे जो निष्काम पुरुष हैं । तिन निष्काम पुरुषोंकूं तिन अग्निहोत्रादिक कर्मोंके स्वभावतैं स्वर्गादिक फलकी प्राप्ति अवश्य होवैगी । यातैं आत्मज्ञानका प्रतिबंध सकाम निष्काम दोनोंविषे समा-नही है । ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् उत्तर कहे हैं ।

(मू. श्लो.) त्रैगुण्यविषया वेदा निस्त्रैगुण्यो भवार्जुन । निर्द्वंद्वो नित्यसत्वस्थो निर्योगक्षेम आत्मवान् ॥ ४५ ॥ (पदच्छेदः) त्रैगुण्यविषयाः । वेदाः । निस्त्रैगुण्यः । भव । अर्जुन । निर्द्वंद्वः । नित्यसत्वस्थः । निर्योगक्षेमः । आत्मवान् ॥ ४५ ॥ (पदार्थः) हे अर्जुन यह कर्मकांडरूप वेद त्रैगुण्यकूं विषय करणेहारे हैं तूं तिस त्रैगुण्यतैं रहित होउ तथा द्वंद्वधर्मोंतैं रहित होउ तथा नित्य सत्वविषे स्थित होउ तथा योगक्षेमतैं रहित होउ तथा आत्मवान् होउ ॥ ४५ ॥

टीका । सत्त्व, रज, तम या तीन गुणोंका जो कार्य होवै ताका नाम त्रैगुण्य है । ऐसा यह काममूलक संसार है । सो काममूलक संसार है प्रकाश्यतारूपकरिकै विषय जिनोंका तिनोंका नाम त्रैगुण्यविषया है । ऐसे यह कर्मकांडरूप वेद हैं । क्या जो पुरुष जिस फलके प्राप्तिकी कामनावाला है तिस पुरुषके प्रति यह वेद तिसी फलका बोधन करणेहारे हैं । तात्पर्य यह । जो पुरुष जिस फलकी इच्छा करिकै जिस कर्मका अनुष्ठान करे है । तिस पुरुषकूं सो कर्म तिसी फलकी प्राप्ति करे है । तिस तिस फलकी कामनातैं विना कोईभी कर्म तिस तिस फलकी प्राप्ति करै नहीं । यातैं अन्वयव्यतिरेककरिकै या पुरुषकी कामनाही फलकी प्राप्तिविषे कारण है । यातैं हे अर्जुन तूं निस्त्रैगुण्य होउ । क्या स्वर्गादिक फलकी कामनातैं रहित होउ । ता फलकी कामनातैं रहित तुमारेकूं संसारकी प्राप्ति होवैगी नहीं । इतनै कहणेकरिकै निष्काम पुरुषोंकूंभी अग्निहोत्रादिक कर्मोंके स्वभावतैं-ही स्वर्गादिक संसारकी प्राप्ति होवैगी ऐसी अर्जुनकी शंकाका खंडन करा इति । शंका । हे भगवन् शीत उष्णादिकोंकी निवृत्ति करणेवासतै वस्त्रादिक पदार्थोंकी अपेक्षा अवश्य संभवै है । ता अपेक्षाके विद्यमान हुए निष्कामता कैसे होवैगी । ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए । श्रीभगवान् कहे हैं (निर्द्व-

द्वः इति) इहां (निस्त्रैगुण्यो भव) या वचनविषे स्थित जो भव यह शब्द है । ता भवशब्दका उत्तरपदोंविषे सर्वत्र संबंध करणा । हे अर्जुन (मात्रास्पर्शास्तु) या श्लोकविषे पूर्व कथन करी जो युक्ति है । ता युक्तिकरिकै शीत उष्ण, सुख दुःख, मान अपमान, शत्रु मित्र इत्यादिक सर्व द्वंद्वधर्मोंतैं तूं रहित होउ । क्या तिन सर्व द्वंद्वधर्मोंके सहनस्वभाववाला तूं होउ इति । शंका । हे भगवन् नहीं सकारणे योग्य जो दुःख है । सो दुःख किस प्रकार सहारा जावैगा । ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् कहे हैं (नित्यसत्वस्थः इति) नित्य क्या अचल ऐसा जो धैर्यनामा सत्व है ता सत्वविषे जो स्थित होवै ताका नाम नित्यसत्वस्थ है । ऐसा नित्यसत्वस्थ तूं होउ । तात्पर्य यह । जिस पुरुषका सो सत्व, रज, तम दोनोंकरिकै तिरस्कारकूं प्राप्त होवै है । सो पुरुष शीतउष्णादिजन्य पीडाकरिकै मैं अबी मरौंगा या प्रकारका अपणेकूं मानता हुआ स्वधर्मतैं विमुख होवै है । तूं अर्जुन तौ ता रज, तम दोनोंका तिरस्कार करिकै केवल ता सत्वधर्मकूं आश्रयण कर इति । शंका । हे भगवन् शीतउष्णादिकोंके सहन किये हुएभी क्षुधा तृषाकी निवृत्ति करणेवासतै पूर्व नहीं प्राप्त हुए अन्नादिक पदार्थोंके प्राप्तिवासतै तथा पूर्व प्राप्त हुए अन्नादिक पदार्थोंके रक्षण करणेवासतै अवश्य प्रयत्न करणा होवैगा । ता प्रयत्नके विद्यमान हुए सो नित्य सत्वस्थपणा कैसे होवैगा । किंतु नहीं होवैगा । ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् कहे हैं (निर्योगक्षेमः इति) हे अर्जुन पूर्व अप्राप्त वस्तुकी जो प्राप्ति है ताका नाम योग है । और पूर्व प्राप्त वस्तुका जो रक्षण है ताका नाम क्षेम है । ता योग क्षेम दोनोंतैं तूं रहित होउ । क्या चित्तके विक्षेपका हेतु जो पदार्थोंका परिग्रह है ता परिग्रहतैं तूं रहित होउ । शंका । हे भगवन् ता योगक्षेमतैं जो मैं रहित होवौंगा । तौ मैं किस प्रकार जीवौंगा । किंतु हमारा जीवन नहीं होवैगा । ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् तूं अपणे जीवनकी चिंता मत कर । सर्वका अंतर्यामी परमेश्वरही तुमारे योगक्षेमादिकोंका निर्वाह करैगा या प्रकारका उत्तर कहे हैं । (आत्मवान् इति । आत्मा क्या परमात्मा ध्येयतारूपकरिकै तथा योगक्षेमादिकोंका निर्वाहकरतारूपकरिकै विद्यमान है जिस पुरुषका ताका नाम आत्मवान् है । ऐसा आत्मवान् तूं होउ । क्या सर्व कामनावोंका परित्याग करिकै परमेश्वरका आराधन करणेहारा जो मैं हूं तिस हमारे देहकी यात्रामात्रवासतै अपेक्षित जो अन्नवस्त्रादिक पदार्थ हैं तिन सर्व पदार्थोंकूं सो अंतर्यामी ईश्वरही संपादन करैगा या प्रकारका निश्चय करिकै तूं निश्चित होउ इति । अथवा आत्मवान् होउ क्या अप्रमत्त होउ इति ॥ ४५ ॥ ❀ ॥ शंका । हे भगवन् स्वर्गादिक फलविषयक सर्व कामनावोंका परित्याग करिकै कर्मोंकूं करता हुआ मैं अर्जुन तिस तिस कर्मकरिकै प्राप्त होणेयोग्य जो स्वर्गादिक आनंद हैं तिन सर्व आनंदोंतैं रहित होवौंगा । जिस कारणतैं कामनातैं विना तिन

स्वर्गादिक आनंदोंकी प्राप्ति होती नहीं। यह वार्त्ता पूर्व आप कथन करि आये हो । ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् ब्रह्मानंदके प्राप्त हुएतैं सर्व आनंद प्राप्त होवै हैं या प्रकारका उत्तर कहे हैं ।

(मू. श्लो.) यावानर्थ उदपाने सर्वतः संप्लुतोदके । तावान्सर्वेषु वेदेषु ब्राह्मणस्य विजानतः ॥ ४६ ॥ (पदच्छेदः) यावान् । अर्थः । उदपाने । सर्वतः । संप्लुतोदके । तावान् । सर्वेषु । वेदेषु । ब्राह्मणस्य । विजानतः ॥ ४६ ॥ (पदार्थः) हे अर्जुन जैसे अल्प जलवाले स्थानोंविषे जितना की स्नानपानादिरूप प्रयोजन सिद्ध होवै हैं सर्व ओरतें महान् जलवाले तलावविषे ते स्नानपानादिक सर्वही प्रयोजन सिद्ध होवै हैं तैसे सर्व वेदउक्त काम्यकर्मोंविषे जितने की हिरण्यगर्भके लोकपर्यंत आनंद प्राप्त होवै हैं तितने सर्व आनंद ब्रह्मसाक्षात्कारवान् ब्रह्मवेत्ता पुरुषकूं होवै हैं ॥ ४६ ॥

टीका । हे अर्जुन जैसे पर्वततैं निकसे हुए जो अनेक जलके झरणे हैं ते सर्व जलके झरणे किसी नीची भूमिविषे जाइकै एकठे होवै हैं । ताकी तलाव संज्ञा होवै है । तहां एक एक झरणेके जलतैं यथाक्रमतैं सिद्ध होणेहारे जो स्नान, पान, वस्त्रप्रक्षालन आदिक प्रयोजन हैं । ते स्नानपानादिक सर्व प्रयोजन तिन झरणोंके जलोंके समूहरूप महान् तलावविषे सिद्ध होवै हैं । काहेतैं तिन सर्व झरणोंके जलोंका तिस तलावविषेही अंतर्भाव है । तैसे वेदोंविषे कथन करे हुए जितनै की अग्निहोत्र, ज्योतिष्टोम, अश्वमेध आदिक काम्य कर्म हैं । तिन अग्निहोत्रादिक काम्य कर्मोंकरिकै इस सकाम पुरुषकूं क्रमतैं प्राप्त होणेहारे जो स्वर्गलोकतैं आदिलैके ब्रह्मलोकपर्यंत विषयजन्य आनंद हैं । ते सर्व आनंद इस ब्रह्मसाक्षात्कारवान् ब्रह्मवेत्ता पुरुषकूं एकही कालविषे प्राप्त होवै हैं । काहेतैं भूमिलोकतैं आदिलैके ब्रह्मलोकपर्यंत जितनै की विषयजन्य क्षुद्र आनंद हैं । ते सर्व आनंद ब्रह्मानंदके अंशरूप हैं । यातैं ते सर्व क्षुद्र आनंद ता ब्रह्मानंदके अंतर्भूतही हैं । तहां श्रुति । " एतस्यैवानंदस्यान्यानि भूतानि मात्रामुपजीवंति " । अर्थ यह । ब्रह्मातैं आदिलैके सर्व प्राणिमात्र इस ब्रह्मानंदके अंशमात्रकूं अंगीकारकरिकै आनंदपूर्वक जीवते हैं इति । यद्यपि एक अद्वितीय ब्रह्मानंदविषे अंशअंशीभाव संभवता नहीं । तथापि जैसे एकही आकाशविषे घटादिक उपाधियोंके वशतैं अंशअंशीभावव्यवहार होवै है । तैसे एकही ब्रह्मानंदविषे अविद्याकृत अंतःकरणादिक उपाधियोंके वशतैं अंशअंशीभावव्यवहार होवै है । वास्तवतैं सो अंशअंशीभाव है नहीं । यातैं यह अर्थ

सिद्ध भया। निष्काम कर्मोंकरिकै जबी तुमारा अंतःकरण शुद्ध होवैगा। तबी तुमारेकूं आत्मज्ञानकी प्राप्ति होवैगी। ता आत्मज्ञानकरिकै तुमारेकूं ब्रह्मानंदकी प्राप्ति होवैगी। ता ब्रह्मानंदविषेही हिरण्यगर्भादिक सर्व आनंदोंका अंतर्भाव है। यातैं ता ब्रह्मानंदकी प्राप्तिकरिकै तुमारेकूं तिन सर्व आनंदोंकी प्राप्ति होवैगी। यातैं तिन विषयजन्य क्षुद्र आनंदोंकी प्राप्तिवासतै तुमारेकूं तिन काम्य कर्मोंके करणेका कछु प्रयोजन नहीं है। यातैं ता ब्रह्मानंदकी प्राप्ति करणेहारे आत्मज्ञानकी प्राप्तिवासतै तूं निष्काम कर्मोंकूं कर इति। और किसी टीकाकारनैं तौ इस श्लोकके पदोंकी इस प्रकार योजना करिकै यह अर्थ करा है। (यावान्। अर्थः। उदपाने। सर्वतः। संप्लुतोदके। तावान्। सर्वेषु। वेदेषु। ब्राह्मणस्य। विजानतः इति) जैसे सर्व ओरतैं महान् जलवाले महान् तलावविषे इस पुरुषके स्नानपानादिक सर्व प्रयोजन एक घटमात्र जलकरिकैही सिद्ध होवै हैं। कोई ता महान् तलावके सर्व जलके खरच करणेतैं ते स्नानपानादिक सर्व प्रयोजन सिद्ध होवै नहीं। इस प्रकार शुद्ध चित्तवाले मुमुक्षु जनका सो सर्व प्रयोजन सर्व वेदोंविषे उपनिषद्रूप वेदके एकदेशके श्रवणमात्रकरिकैही सिद्ध होवै है। तिन मुमुक्षु जनोंकूं ता अपणे प्रयोजनकी सिद्धिवासतै कोई सर्व वेदोंके अर्थके अनुष्ठानकी अपेक्षा रहै नहीं। जिस कारणतैं एक जन्मकरिकै सर्व वेदोंके अर्थका अनुष्ठान करणा संभवता नहीं इति। या दोनों व्याख्यानोंविषे प्रथम व्याख्यान बहुत टीकाकारोंकूं संमत है। और यह दूसरा व्याख्यान किसी एक टीकाकारनैं करा है। परंतु ता प्रथम व्याख्यानविषे श्लोकके पूर्वार्धविषे 'अनेकस्मिन् यथा तथा भवति' या चारि पदोंका अध्याहार करणा होवै है। और श्लोकके उत्तरार्द्धविषे स्थित दार्ष्टांतिक भागविषे पूर्वार्धतैं यावान् तावान् या दोनों पदोंका अनुषंग करणा होवै है। सो पदोंका अध्याहार तथा अनुषंग इस दूसरे व्याख्यानविषे करणा होवै नहीं। तहां पूर्व अश्रुत पदका जो वाक्यविषे संबंध करणा है याका नाम अध्याहार है। और पूर्व वाक्यविषे स्थित पदका उत्तरवाक्यविषे संबंध करणा याका नाम अनुषंग है इति ॥ ४६ ॥ ❀ ॥ शंका। हे भगवन् ते निष्काम कर्म स्वतंत्र होइकै तौ ता ब्रह्मानंदकी प्राप्ति करते नहीं। किंतु अंतःकरणकी शुद्धिद्वारा आत्मज्ञानका संपादन करिकैही ते निष्काम कर्म ता ब्रह्मानंदनकी प्राप्ति करे हैं। यातैं जिस आत्मज्ञानकरिकै साक्षातही ब्रह्मानंदकी प्राप्ति होवै है। सो आत्मज्ञानही हमारेकूं प्रथम संपादन करणे योग्य है। ता आत्मज्ञानकूं छोडिकै बहुत प्रयत्न करिकै सिद्ध होणेहारे तथा बहिरंग साधनरूप ऐसे निष्काम कर्मोंके करणेका कछु प्रयोजन नहीं है। ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् अबी तुमारेकूं तिन निष्काम कर्मोंविषेही अधिकार है या प्रकारका उत्तर कहे हैं।

(मू. श्लो.) कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन । मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते संगोऽस्त्वकर्मणि ॥ ४७ ॥ (पदच्छेदः) कर्मणि । एव अधिकारः । ते । मा । फलेषु । कदाचन । मा । कर्मफलहेतुः । भूः । मा । ते । संगः । अस्तु । अकर्मणि ॥ ४७ ॥

(पदार्थः) हे अर्जुन तुमारा कर्मविषेही अधिकार होवो कर्मके फलोंविषे कदाचित्‌भी तुमारा अधिकार मत होवो तूं कर्मोंके फलका उत्पादक मत होउ तथा कर्मके नहीं करणेविषे तुमारी प्रीति मत होवे ॥ ४७ ॥

टीका । हे अर्जुन आत्मज्ञानकी उत्पत्तिके अयोग्य अशुद्ध अंतःकरणवाला जो तूं हैं । तिस तुमारेकूं अबी अंतःकरणकी शुद्धि करणेहारे निष्काम कर्मोंविषेही अधिकार होवो । क्या हमारेकूं अबी यह निष्काम कर्मही करणेयोग्य हैं या प्रकारका बोध होवो । ज्ञाननिष्ठारूप वेदांतवाक्योंके विचारविषे सो कर्त्तव्यताका बोध अबी तुमारेकूं मत होवो । इस प्रकार कर्मोंके करणेहारे तुमारेकूं तिन कर्मोंके स्वर्गादिक फलोंविषे तिन कर्मोंके अनुष्ठानतैं पूर्वकालविषे तथा तिन कर्मोंके अनुष्ठानके उत्तरकालविषे तथा तिन कर्मोंके अनुष्ठानकालविषे कदाचित्‌भी अधिकार मत होवै । क्या इन कर्मोंके स्वर्गादिक फल हमनैं भोगणे हैं या प्रकारका बोध कदाचित्‌भी तुमारेकूं मत होवै । शंका । हे भगवन् हमनैं इस कर्मके स्वर्गादिक फलकूं भोगणा है या प्रकारकी बुद्धिके अभाव हुएभी ते कर्म अपणे सामर्थ्यतैंही स्वर्गादिक फलोंकी प्राप्ति करैंगे ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् फलकी कामनातैं विना ते कर्म ता फलकी प्राप्ति नहीं करे हैं या प्रकारका उत्तर कहे हैं (मा कर्मफलहेतुर्भूः इति) हे अर्जुन फलकी कामनाकरिकै तिन कर्मोंकूं करता हुआ यह पुरुष तिन फलोंका उत्पादक होवै है । और तूं अर्जुन तौ ता फलकी कामनातैं रहित होइकै ता कर्मके फलका उत्पादक मत होउ । जिस कारणतैं निष्काम पुरुषोंनैं भगवत् अर्पणबुद्धिकरिकै करे हुए कर्म स्वर्गादिक फलकी प्राप्ति करते नहीं । यह वार्त्ता पूर्व कथन करी आये हैं इति । शंका । हे भगवन् जो कदाचित् ते कर्म अपणे सामर्थ्यतैं फलकी प्राप्ति नहीं करते होवैं । तौ ऐसे निष्फल कर्मोंके करणेकाही क्या प्रयोजन है । ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् कहे हैं (मा ते संगोस्त्वकर्मणि इति) जो कदाचित् स्वर्गादिक फलके प्राप्तिकी इच्छा नहीं होवै तौ दुःखरूप कर्मोंके करणेकाही क्या प्रयोजन है या प्रकारकी तिन कर्मोंके न करणेविषे तुमारी प्रीति मत होवै इति ॥ ४७ ॥ ❀ ॥ अब इस पूर्व कथन करे हुए अर्थकाही विस्तारतैं निरूपण करे हैं ।

(मू. श्लो.) योगस्थः कुरु कर्माणि संगं त्यक्त्वा धनंजय। सिद्ध्यसिद्ध्योः समो भूत्वा समत्वं योग उच्यते ॥ ४८ ॥ (पदच्छेदः) योगस्थः । कुरु । कर्माणि । संगं । त्यक्त्वा । धनंजय । सिद्ध्यसिद्ध्योः । समः । भूत्वा । समत्वं । योगः । उच्यते ॥ ४८ ॥ (पदार्थः) हे अर्जुन तूं योगविषे स्थित हुआ फलकी इच्छाकूं परित्याग करिकै तथा फलकी प्राप्ति अप्राप्ति दोनोंविषे हर्षविषादतैं रहित होईकै कर्मोंकूं कर सो हर्षविषादतैं रहितपणाही योग कह्या जावै है ॥ ४८ ॥

टीका। हे अर्जुन तूं योगविषे स्थित होइकै स्वर्गादिक फलकी इच्छारूप संगका परित्याग करिकै तथा मैं इस कर्मका कर्त्ता हूं या प्रकारके कर्तृत्व अभिनिवेशका परित्याग करिकै कर्मोंकूं कर। अब ता संगके त्यागका उपाय कथन करे हैं (सिद्ध्यसिद्ध्योः समो भूत्वा इति) हे अर्जुन तिन वेदउक्त कर्मोंके स्वर्गादिक फलकी प्राप्तिविषे तूं हर्षका परित्याग करिकै तथा तिन स्वर्गादिक फलोंकी अप्राप्तिविषे विषादका परित्याग करिकै केवल ईश्वरआराधनबुद्धिकरिकै तिन कर्मोंकूं कर। शंका। हे भगवन् पूर्व आपनैं योगशब्दकरिकै कर्मोंका कथन करा था । और अबी आपनैं योगविषे स्थित होइकै तूं कर्मोंकूं कर या प्रकारका वचन कह्या है। यातैं आपके पूर्वउत्तर वचनोंका अभिप्राय मैं जानि सकता नहीं । ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् उत्तर कहे हैं (समत्वं योग उच्यते) हे अर्जुन कर्मोंके फलकी प्राप्तिविषे तथा कर्मोंके फलकी अप्राप्तिविषे जो हर्षविषादतैं रहितपणारूप समत्व है। सो समत्वही इहां (योगस्थः कुरु कर्माणि) या वचनविषे स्थित योगशब्दकरिकै कथन करा है। ता योगशब्दकरिकै कोई कर्मोंका कथन करा नहीं। यातैं पूर्वउत्तर वचनोंका विरोध होवे नहीं इति। तहां पूर्व (सुखदुःखे समे कृत्वा) या श्लोकविषे जय अजय दोनोंकी समता करिकै केवल युद्धमात्रकी कर्त्तव्यता कथन करी थी। जिस कारणतैं पूर्वप्रसंगविषे युद्धकीही कर्त्तव्यता प्राप्त थी। और इहां तौ दृष्टअदृष्टरूप सर्व फलोंका परित्याग करिकै अपणे वर्णआश्रमके सर्व कर्मोंकी कर्त्तव्यता कथन करी है । यातैं पूर्वउत्तर वचनोंविषे पुनरुक्तिदोषकी प्राप्ति होवै नहीं इति ॥ ४८ ॥ ❀ ॥ शंका। हे भगवन् क्या केवल कर्मोंका अनुष्ठानही पुरुषार्थरूप है । जिस कारणतैं सर्वकालविषे निष्काम कर्मोंकूंही पुरुषनैं करणा या प्रकारका उपदेश वारंवार आपनैं करीता है । किंवा। "प्रयोजनमनुद्दिश्य मंदोपि न प्रवर्तते"। अर्थ यह। किंचित् फलरूप प्रयोजनकूं न उद्देशकरिकै मूढ पुरुषभी किसी कार्यविषे प्रवृत्त होवै नहीं इति। इस लोकप्रसिद्ध न्यायतैंभी तिन निष्काम कर्मोंविषे प्रवृत्ति संभवै नहीं।

यातैं फलकी कामनातैं विना निष्फल कर्मोंके करणेतैं फलकी कामनाकरिकै कर्मोंका अनुष्ठान करणाही श्रेष्ठ है । ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् उत्तर कहे हैं ।

(मू. श्लो.) दूरेण ह्यवरं कर्म बुद्धियोगाद्धनंजय । बुद्धौ शरणमन्विच्छ कृपणाः फलहेतवः ॥ ४९ ॥ (पदच्छेदः) दूरेण । हि । अवरं । कर्म । बुद्धियोगात् । धनंजय । बुद्धौ । शरणं । अन्विच्छ । कृपणाः । फलहेतवः ॥ ४९ ॥ (पदार्थः) हे अर्जुन जिसे कारणतैं निष्काम कर्मतैं सो सकाम कर्म अत्यंत दूरताकरिकै अधम है तिस कारणतैं परमात्मबुद्धिनिमित्त निष्काम कर्मयोगके करणेकूं तूं इच्छा कर जे पुरुष फलकी कामनावाले हैं ते पुरुष कृपण हैं ॥ ४९ ॥

टीका । हे अर्जुन जिस कारणतैं आत्मज्ञानरूप बुद्धिका साधनरूप जो निष्काम कर्मयोग है ताका नाम बुद्धियोग है । ता बुद्धियोगतैं सो जन्ममरणका हेतुरूप सकाम कर्म अत्यंत दूरताकरिकै अधम है । अथवा परमात्माविषयक जो बुद्धिरूप योग है ताका नाम बुद्धियोग है । ता बुद्धियोगतैं यह संपूर्ण कर्म अधम है । तिस कारणतैं सर्व अनर्थोंकी निवृत्ति करणेहारी जो परमात्माविषयक बुद्धि है । ता बुद्धिकी प्रातिवासतै प्रतिबंधक पापकर्मोंकी निवृत्तिद्वारा जो निष्काम कर्मयोग है ताके करणेकी तूं इच्छा कर इति । हे अर्जुन स्वर्गादिक फलकी कामनावाले जे पुरुष तिन सकाम कर्मोंकूं करे हैं । ते पुरुष कृपण हैं । क्या ते सकाम पुरुष सर्वदा जन्ममरणादिरूप घटीयंत्रके भ्रमणकरिकै नाना प्रकारकी दीन दशावोंकूं प्राप्त होवै हैं । तहां श्रुति । "यो वा एतदक्षरं गार्ग्यविदित्वाऽस्माल्लोकात्प्रैति स कृपणः" । अर्थ यह । हे गार्गि इस भारतखंडविषे अधिकारी मनुष्यशरीरकूं पाइकै जो पुरुष इस अक्षर परमात्मादेवकूं न जानिकरिकै इस मनुष्यलोकतैं जावै है । सो पुरुष कृपणही जानणा इति । हे अर्जुन ऐसे अधिकारी मनुष्यशरीरकूं पाइकै तूंभी ऐसा कृपण मत होउ । किंतु जन्ममरणादिक सर्व अनर्थोंकी निवृत्ति करणेहारा जो आत्मज्ञान है । ता आत्मज्ञानकूं अंतःकरणकी शुद्धिद्वारा उत्पन्न करणेहारा जो निष्कामकर्मरूप योग है । ता निष्काम कर्मयोगकूंही तूं कर । इहां (कृपणाः) या पदके कहणेकरिकै श्रीभगवान्नैं अर्जुनके प्रति यह अर्थ सूचन करा । जैसे इस लोकविषे कोईक कृपण पुरुष अनेक प्रकारके दुःखोंकूं सहन करिकै तथा नानाप्रकारके छल कपटकरिकै धनकूं एकठा करे हैं । ते कृपण पुरुष इस लोकके यत्किंचित् विषयजन्य सुखके लोभकरिकै ता धनका दान करते नहीं । या कार-

णतैं ते कृपण पुरुष ता धनके दानादिकोंकरिकै जन्य महान् सुखकूं अनुभव करि सकते नहीं। किंतु ता धनके एकठे करणेविषे करे जो पापकर्म हैं। तिन पापकर्मोंके नरकादिक दुःखोंकूंही ते कृपण पुरुष अनुभव करे हैं। यातैं ते कृपण पुरुष अपणी हानि आपही करे हैं। तैसे यह सकाम पुरुषभी महान् दुःखोंकूं सहन करिकै तिन कर्मोंकूं करे हैं। परंतु स्वर्ग, धन, पुत्र, पशु इत्यादिक अल्प फलोंके लोभकरिकै ते सकाम पुरुष तिन कर्मोंकरिकै मोक्षरूप परमानंदकूं प्राप्त होवै नहीं। किंतु अनेक दुःखोंकरिकै मिले हुए तिन स्वर्गादिक तुच्छ फलोंकूंही प्राप्त होवै हैं। या कारणतैं ते सकाम पुरुष अपणी हानि आपही करे हैं। ऐसे सकास पुरुषोंकी दौर्भाग्यताका तथा मूढताका बुद्धिमान् पुरुषोंकूं बहुत शोक होवै है। यह सर्व अर्थ श्रीभगवान्नैं कृपणपदकरिकै सूचन करा इति ॥ ४९ ॥ ॥ इस प्रकार ता बुद्धियोगके अभाव हुए दोषका निरूपण करा। अब ता बुद्धियोगके विद्यमान हुए गुणका निरूपण करे हैं।

(मू. श्लो.) बुद्धियुक्तो जहातीह उभे सुकृतदुष्कृते। तस्माद्योगाय युज्यस्व योगः कर्मसु कौशलं ॥ ५० ॥ (पदच्छेदः) बुद्धियुक्तः। जहाति। इह। उभे। सुकृतदुष्कृते। तस्मात्। योगाय। युज्यस्व। योगः। कर्मसु। कौशलं ॥ ५० ॥ (पदार्थः) हे अर्जुन जिस कारणतैं ईन कर्मोंविषे समत्वबुद्धियुक्त पुरुष पुण्य पाप दोनोंकूं परित्याग करे है तिस कारणतैं ता समत्वबुद्धिरूप योगके वासतै तूं उद्यमवाला होउ जिस कारणतैं सो योगही तिन कर्मोंविषे कुशलपणा है ॥ ५० ॥

टीका। हे अर्जुन शास्त्रनैं विधान करे जो अग्निहोत्रादिक कर्म हैं। तिन कर्मोंके फलकी प्राप्तिविषे तथा फलकी अप्राप्तिविषे हर्षविषादतैं रहिततारूप समत्वबुद्धिकरिकै युक्त जो अधिकारी पुरुष है। सो अधिकारी पुरुष जिस कारणतैं पुण्यपाप दोनोंकूं अंतःकरणकी शुद्धि ज्ञानकी प्राप्तिद्वारा परित्याग करे है। तिस कारणतैं ता समत्वबुद्धिरूप योगकी प्राप्तिवासतै तूं दृढ उद्यमवाला होउ। जिस कारणतैं सो समत्वबुद्धिरूप योगही तिन कर्मोंविषे प्रवर्त्तमान पुरुषका कुशलपणा है। तात्पर्य यह। वास्तवतैं बंधके हेतुरूप जो कर्म हैं। तिन कर्मोंकाभी जो समत्वबुद्धिरूप योग मोक्षविषे उपयोग सिद्ध करे है। यहही ता समत्वबुद्धिरूप योगविषे महान् कुशलता है इति। इतनै कहणेकरिकै भगवान्नैं अर्जुनके प्रति यह अर्थ सूचन करा। समत्वबुद्धिकरिकै युक्त जो कर्मयोग है। सो कर्मयोग आप कर्मरूप हुआभी अपणे सजातीय दुष्ट कर्मोंका नाश करे है। यातैं सो कर्मयोग महान् कुशल

है । और तूं अर्जुन तौ चेतनरूप हुआभी अपणे सजातीय दुर्योधनादिक दुष्टोंका नाश करता नहीं । यातैं तूं कुशल नहीं हैं इति । अथवा इस श्लोकका यह दूसरा अर्थ करणा । बुद्धियुक्तः । जहाति । इह । उभे । सुकृतदुष्कृते । तस्मात् योगाय । युज्यस्व । योगः । कर्मसु । कौशलं इति । इनं समत्वबुद्धियुक्त कर्मोंके कीये हुए अंतःकरणकी शुद्धिद्वारा परमात्मसाक्षात्कारकरिकै युक्त हुआ यह पुरुष जिस कारणतैं पुण्यपाप दोनोंकूं परित्याग करे है तिस कारणतैं तूं समत्वबुद्धियुक्त कर्मयोगकी प्राप्तिवासतै उद्यमवाला होउ जिस कारणतैं सर्व कर्मोंके मध्यविषे सो समत्वबुद्धियुक्त कर्मयोग दुष्ट कर्मोंके निवृत्त करणेविषे बहुत चतुर है इति ॥ ५० ॥ ❁ ॥ शंका । हे भगवन् इस अधिकारी पुरुषकूं पापकर्मकी निवृत्ति तौ अपेक्षित है । परंतु पुण्यकर्मोंकी निवृत्ति अपेक्षित है नहीं । जो पुण्यकर्मोंकीभी निवृत्ति होवैगी । तौ पुरुषार्थकीही हानि होवैगी । ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् स्वर्गादिक तुच्छ फलके त्याग कियेतैं परम पुरुषार्थकी प्राप्तिरूप फलका कथन करे हैं ।

(मू. श्लो.) कर्मजं बुद्धियुक्ता हि फलं त्यक्त्वा मनीषिणः ॥ जन्मबंधविनिर्मुक्ताः पदं गच्छंत्यनामयं ॥ ५१ ॥ (पदच्छेदः) कर्मजं । बुद्धियुक्ताः । हि । फलं । त्यक्त्वा । मनीषिणः । जन्मबंधविनिर्मुक्ताः । पदं । गच्छंति । अनामयं ॥ ५१ ॥ (पदार्थः) हे अर्जुन जिस कारणतैं ते समत्वबुद्धियुक्त पुरुष कर्मजन्य फलकूं त्यागिकरिकै आत्मसाक्षात्कारवाले होवै हैं तथा जन्मरूप बंधतैं रहित हुए अविद्यादिक रोगोंतैं रहित मोक्षरूप पदकूं प्राप्त होवै हैं तिस कारणतैं तूंभी ऐसा होउ ॥ ५१ ॥

टीका । हे अर्जुन ता समत्वबुद्धिवाले पुरुष अग्निहोत्रादिक कर्मोंकरिकै जन्य स्वर्गादिरूप फलकूं परित्याग करिकै केवल ईश्वरके आराधनवासतै तिन कर्मोंकूं करते हुए अंतःकरणकी शुद्धिद्वारा तत्त्वमसि आदिक वाक्यजन्य आत्माकारबुद्धिरूप मनीषावाले होवै हैं । इस प्रकार आत्मज्ञानरूप मनीषाकूं प्राप्त होइकै ते अधिकारी पुरुष जन्मरूप बंधतैं अत्यंत मुक्त हुए कार्यसहित अविद्यारूप रोगतैं रहित तथा सर्व भयतैं रहित जो परम आनंदस्वरूप ब्रह्मरूप मोक्ष है ता मोक्षरूप पुरुषार्थकूं अभेदकरिकै प्राप्त होवै हैं इति । इहां श्रीभगवान्का यह अभिप्राय है । जिस कारणतैं फलकी कामनाका परित्याग करिकै ता समत्वबुद्धिकरिकै अपणे वर्णआश्रमके कर्मोंका अनुष्ठान करणेहारे पुरुष तिंन निष्काम कर्मोंके प्रभावतैं शुद्ध अंतःकरणवाले होवै हैं । ता अंतःकरणकी शुद्धितैं अनंतर ते अधिकारी पुरुष तत्त्वमसि आदिक प्रमाणोंतैं उत्पन्न हुए आत्मज्ञानके प्रभावतैं कार्यसहित अविद्यातैं रहित हुए सर्व अनर्थकी

निवृत्तिपूर्वक परमानंदकी प्राप्तिरूप मोक्षकूं प्राप्त होवै हैं। जिस मोक्षकूं शास्त्रविषे विष्णुका परमपदरूपकरिकै कथन करा है। तिस कारणतैं तूं अर्जुनभी (यच्छ्रेयः स्यान्निश्चितं ब्रूहि तन्मे) इस पूर्व उक्त वचनतैं मोक्षरूप श्रेयकी इच्छावाला प्रतीत होता है। यातैं तुंभी ता मोक्षकी प्राप्तिवासतै इस प्रकारके निष्काम कर्मयोगकूं कर इति ॥ ५१ ॥ ❁ ॥ शंका ॥ हे भगवन् इस प्रकार निष्कामकर्मोंके अनुष्ठान करते हुए किस कालविषे हमारे अंतःकरणकी शुद्धि होवैगी। ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् ताकेविषे कालके नियमका अभाव कथन करे हैं।

(मू. श्लो.) यदा ते मोहकलिलं बुद्धिर्व्यतितरिष्यति। तदा गंतासि निर्वेदं श्रोतव्यस्य श्रुतस्य च ॥ ५२ ॥ (पदच्छेदः) यदा। ते। मोहकलिलं। बुद्धिः। व्यतितरिष्यति। तदा। गंता। असि। निर्वेदं। श्रोतव्यस्य। श्रुतस्य। च॥ ५२॥ (पदार्थः) हे अर्जुन जिस कालविषे तुमारी अंतःकरणें अविवेकरूप कालुष्यकूं परित्याग करैगा तिस कालविषे श्रवण करणेयोग्य कर्मफलके तथा श्रवण करे हुए कर्मफलके वैराग्यकूं प्राप्तिवाला तूं होवैगा ॥ ५२ ॥

टीका। हे अर्जुन तिन निष्काम कर्मोंके करते हुए इतनै कालतैं पीछे अंतःकरणकी शुद्धि होवै है या प्रकारके कालका नियम इहां नहीं है। किंतु तिन निष्काम कर्मोंके करते हुए जिस कालविषे तुमारा अंतःकरण यह मैं हूं यह मेरे हैं इत्यादिक अहंममअभिमानरूप अविवेकरूप कालुष्यकूं परित्याग करैगा क्या रजोगुण तमोगुणरूप मलकूं परित्याग करिकै केवल शुद्ध सत्त्वभावकूं प्राप्त होवैगा। तिस कालविषे अबी श्रवण करणेयोग्य अग्निहोत्रादिक कर्मोंके स्वर्गादिक फलोंके वैराग्यकूं तथा पूर्व श्रवण करे हुए कर्मोंके स्वर्गादिक फलोंके वैराग्यकूं तूं प्राप्त होवैगा। क्या तिन स्वर्गादिक फलोंकूं मिथ्यारूप जानिकै तिनोंके प्राप्तिकी तृष्णातैं तूं रहित होवैगा। तहां श्रुति। "परीक्ष्य लोकान्कर्मचितान् ब्राह्मणो निर्वेदमायात्"। अर्थ यह। ब्रह्मके प्राप्तिकी इच्छावान् अधिकारी पुरुष कर्मोंकरिकै रचित स्वर्गादिक लोकोंकूं अनित्य दुःखरूप जानिकै तिनोंतैं वैराग्यकूं प्राप्त होवै है इति। इहां भगवान्का यह तात्पर्य है। अशुद्ध अंतःकरणविषे वैराग्य होवै नहीं। किंतु शुद्ध अंतःकरणविषेही सो वैराग्य होवै है। यातैं जिस कालविषे तुमारेकूं इस लोकके विषयसुखोंविषे तथा स्वर्गादिक लोकोंके विषयसुखोंविषे दोषदृष्टिपूर्वक तीव्र वैराग्यकी प्राप्ति होवै। तिसी कालविषे ता वैराग्यरूप फलकरिकै तुमनैं अपणे अंतःकरणकी शुद्धि जानणी। जबपर्यंत तिन विषयोंतैं वैराग्य नहीं भया। तबपर्यंत तुमनैं अपणे

अंतःकरणकूं मलिनही जानणा इति ॥ ५२ ॥ ❀ ॥ शंका । हे भगवन् तिन निष्काम कर्मोंके अनुष्ठानतैं अंतःकरणकी शुद्धिकरिकै उत्पन्न हुआ है वैराग्य जिसकूं ऐसा जो कोईक अधिकारी पुरुष है । तिस अधिकारी पुरुषकूं किस कालविषे आत्मज्ञानकी प्राप्ति होवै है । ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् कहे हैं ।

(मू. श्लो.) श्रुतिविप्रतिपन्ना ते यदा स्थास्यति निश्चला । समाधावचला बुद्धिस्तदा योगमवाप्स्यसि ॥ ५३ ॥ (पदच्छेदः) श्रुतिविप्रतिपन्ना । ते । यदा । स्थास्यति । निश्चला । समाधौ । अचला । बुद्धिः । तदा । योगं । अवाप्स्यसि ॥५३॥ (पदार्थः) हे अर्जुन पूर्व नाना फलोंके श्रवण करिकै संशयकूं प्राप्त हुई तुमारी बुद्धि जिस कालविषे परमात्मादेवविषे निश्चल हुई तथा अचल हुई स्थित होवैगी तिस कालविषे तूं जीवब्रह्मके अभेदज्ञानकूं प्राप्त होवैगा ॥ ५३ ॥

टीका । हे अर्जुन नहीं विचार करा है वास्तव तात्पर्य जिनोंका ऐसे जो स्वर्गादिक नाना प्रकारके फलोंके श्रवण हैं । तिन श्रवणोंकरिकै प्राप्त हुए जो नाना प्रकारके संशयविपरीतभावना हैं । तिन संशयविपरीतभावनावोंकरिकै पूर्व विक्षेपकूं प्राप्त हुई जो तुमारी बुद्धि है सा तुमारी बुद्धि जिस कालविषे अंतःकरणकी शुद्धितैं प्राप्त हुए विवेकजन्य पदार्थोंविषे दोषदर्शन करिकै ता विक्षेपका परित्याग करिकै अंतरपरमात्मादेवविषे निश्चल हुई क्या जाग्रत स्वप्नदर्शनरूप विक्षेपतैं रहित हुई । तथा ता परमात्मादेवविषे अचल हुई क्या सुषुप्ति, मूर्च्छा, स्तब्धभाव इत्यादिक लयरूप चलनतैं रहित हुई स्थित होवैगी क्या लयविक्षेपरूप दोनोंका परित्याग करिकै जबी ता परमात्मादेवविषे एकाग्रभावकूं प्राप्त होवैगी । अथवा । (निश्चला अचला) या दोनों पदोंका यह अर्थ करणा (निश्चला) क्या असंभावना विपरीतभावनातैं रहित हुई । तथा (अचला) क्या दीर्घकाल, आदर, निरंतर, सत्कार इन चारोंके सेवन करिकै विजातीय वृत्तियोंकरिकै नहीं दूषित हुई ऐसी सा बुद्धि जिस कालविषे वायुतैं रहित दीपककी न्यांई ता परमात्मादेवविषे स्थित होवैगी । तिसी कालविषे तत्त्वमसि आदिक वाक्योंतैं जन्य जीवब्रह्मके अभेदसाक्षात्काररूप योगकूं तूं प्राप्त होवैगा । तिस ज्ञानकालविषे दूसरा कोई कर्त्तव्य है नहीं । यातैं तिस कालविषे तूं कृतकृत्य होवैगा । तथा स्थितप्रज्ञ होवैगा इति ॥ ५३ ॥ ❀ ॥ तहां इस प्रकारके अवसरकूं प्राप्त होइकै सो अर्जुन जीवन्मुक्त पुरुषके जे लक्षण हैं तेही लक्षण मुमुक्षु जनोंके मोक्षका उपायरूप हैं या प्रकार मानता हुआ ता स्थितप्रज्ञके लक्षणके जानणेवासतै या प्रकारका प्रश्न करे है ।

(मू. श्लो.) अर्जुन उवाच ॥ स्थितप्रज्ञस्य का भाषा समाधिस्थस्य केशव । स्थितधीः किं प्रभाषेत किमासीत व्रजेत किं ॥ ५४ ॥
(पदच्छेदः) स्थितप्रज्ञस्य । का । भाषा । समाधिस्थस्य । केशव । स्थितधीः । किं । प्रभाषेत । किं । आसीत । व्रजेत । किं
॥ ५४ ॥ (पदार्थः) हे केशव समाधिविषे स्थित स्थितप्रज्ञ पुरुषका लक्षण क्या है तथा समाधितैं उठ्या हुआ सो स्थितप्रज्ञ किस
प्रकार भाषण करे है तथा किस प्रकार बाह्य इंद्रियोंका निग्रह करे है तथा किस प्रकार विषयोंकूं प्राप्त होवै है ॥ ५४ ॥

टीका । निश्चल हुई है मैं ब्रह्मरूप हूं या प्रकारकी प्रज्ञा जिसकी ताका नाम स्थितप्रज्ञ है । सो स्थितप्रज्ञ पुरुष दो प्रकारकी अवस्थावाला होवै है । एक तौ समाधिविषे स्थित होवै है । और दूसरा ता समाधितैं उत्थान हुए चित्तवाला होवै है । या कारणतैंही ता स्थितप्रज्ञ पुरुषका समाधिस्थ यह विशेषण कथन करा है । ऐसे समाधिविषे स्थित स्थितप्रज्ञ पुरुषका कौन लक्षण है । क्या सो समाधिविषे स्थित स्थितप्रज्ञ पुरुष किस लक्षणकरिकै दूसरे पुरुषोंनैं जानीता है । इति प्रथम प्रश्नः ॥ १ ॥ और ता समाधितैं व्युत्थानकूं प्राप्त हुआ है चित्त जिसका ऐसी दूसरी अवस्थावाला सो स्थितप्रज्ञ पुरुष अपणी स्तुतिविषे तथा निंदाविषे हर्षपूर्वक तथा द्वेषपूर्वक वचनकूं किस प्रकार कथन करे है । इति द्वितीय प्रश्नः ॥ २ ॥ और ता समाधितैं उत्थानकूं प्राप्त हुए चित्तके निग्रह करणेवासतै सो स्थितप्रज्ञ पुरुष नेत्रादिक बाह्य इंद्रियोंके निग्रहकूं किस प्रकार करे है । इति तृतीय प्रश्नः ॥ ३ ॥ और तिन बाह्य इंद्रियोंके निग्रहके अभावकालविषे सो स्थितप्रज्ञ पुरुष किस प्रकार विषयोंकूं प्राप्त होवै है । इति चतुर्थ प्रश्नः ॥ ४ ॥ तात्पर्य यह । ता व्युत्थानचित्तवाले स्थितप्रज्ञ पुरुषके भाषण, आसन, व्रजन यह तीनों अज्ञानी पुरुषोंके भाषणादिकोंतैं किस प्रकारके विलक्षण हैं इति । इस प्रकार अर्जुनके चारि प्रश्न सिद्ध होवै हैं । तहां समाधिविषे स्थित स्थितप्रज्ञविषे तौ प्रथम एक प्रश्न है । और समाधितैं उत्थानचित्तवाले स्थितप्रज्ञविषे तीन प्रश्न हैं । तहां (हे केशव) या संबोधनके कहणेकरिकै अर्जुननैं यह अर्थ सूचन करा । सर्वका अंतर्यामी होणेतैं आपही इस रहस्य अर्थके कहणेविषे समर्थ हो इति ॥ ५४ ॥ ❁ ॥ अब श्रीभगवान् इन चारि प्रश्नोंके यथाक्रमतैं उत्तरोंकूं इस द्वितीय अध्यायकी समाप्तिपर्यंत कथन करे हैं । तहां एक श्लोककरिकै प्रथम प्रश्नका उत्तर कहे हैं ।

(मू. श्लो.) श्रीभगवानुवाच ॥ प्रजहाति यदा कामान् सर्वान्पार्थ मनोगतान् । आत्मन्येवात्मना तुष्टः स्थितप्रज्ञस्तदोच्यते ॥ ५५ ॥

(पदच्छेदः) प्रजहाति । यदा । कामान् । सर्वान् । पार्थ । मनोगतान् । आत्मनि । एव । आत्मना । तुष्टः । स्थितप्रज्ञः । तदा । उच्यते ॥ ५५ ॥ (पदार्थः) हे अर्जुन जिस कालविषे सो समाधिस्थ पुरुष अपणे मनविषे स्थित सर्व कामोंकूं परित्याग करे है तथा आत्माविषे आत्माकरिकै ही तुष्ट होवै है तिसै कालविषे सो समाधिस्थ पुरुष स्थितप्रज्ञ कह्या जावै है ॥ ५५ ॥

टीका । हे अर्जुन कामसंकल्प आदिक जो मनकी वृत्तियां विशेष हैं । जिन कामसंकल्पादिक वृत्तियोंकूं अन्य शास्त्रविषे प्रमाण, विपर्यय, विकल्प, निद्रा, स्मृति या भेदकरिकै पंच प्रकारका कथन करा है । तिन कामसंकल्पादिक सर्व वृत्तियोंकूं जिस कालविषे यह विद्वान् पुरुष कारणके बाधकरिकै परित्याग करे है । क्या जिस कालविषे तिन कामसंकल्पादिक सर्व वृत्तियोंतैं रहित होवै है । तिस कालविषे सो समाधिस्थ विद्वान् पुरुष स्थितप्रज्ञ कह्या जावै है । अब तिन कामसंकल्पादिकोंविषे अनात्मवस्तुकी धर्मरूपता कथन करिकै परित्याग करणेकी योग्यता निरूपण करे हैं (मनोगतान् इति) हे अर्जुन ते कामसंकल्पादिक सर्व धर्म मनकेही हैं । आत्माके धर्म हैं नहीं । जो कदाचित् ते कामसंकल्पादिक आत्माकेही स्वाभाविक धर्म होवैं । तौ जैसे अग्निका स्वाभाविक धर्म जो उष्णता है । सो उष्णताधर्म अग्निके विद्यमान हुए कदाचित्भी निवृत्त होवै नहीं । तैसे आत्माके विद्यमान हुए ते कामसंकल्पादिक धर्म कदाचित्भी निवृत्त होवैंगे नहीं । यातैं ते कामसंकल्पादिक आत्माके धर्म नहीं हैं । किंतु मनकेही धर्म हैं । यातैं ता कारणरूप मनके परित्यागकरिकै ते कामसंकल्पादिक धर्म परित्याग करणेकूं शक्य हैं । ते कामसंकल्पादिक मनकेही धर्म हैं । या अर्थविषे " कामः संकल्पो विचिकित्सा " इत्यादिक श्रुतिही प्रमाणरूप हैं । इतनै कहणेकरिकै बुद्धि, सुख, दुःख, इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, धर्म, अधर्म इन अष्टोंकूं आत्माका धर्म मानणेहारे नैयायिकोंका मतभी खंडन करा इति । शंका । हे भगवन् ता समाधिस्थ स्थितप्रज्ञ विद्वान्का मुख प्रसन्न हुआ प्रतीत होवै है । और सा मुखकी प्रसन्नता अंतरके संतोषतैं विना होवै नहीं । यातैं ता मुखकी प्रसन्नतारूप हेतुतैं ता स्थितप्रज्ञ पुरुषका संतोषविषे अनुमान करा जावै है । सो संतोषविशेष सर्व वृत्तियोंके परित्याग किये हुए किस प्रकार संभवैगा । ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् कहे हैं । (आत्मान्येवात्मनातुष्टः इति) हे अर्जुन सो विद्वान् पुरुष परमानंदस्वरूप आत्माविषेही परमपुरुषार्थकी प्राप्तितैं तृप्तिकूं प्राप्त हुआ है । कोई अनात्मतुच्छ पदार्थोंविषे सो विद्वान् पुरुष तृप्तिकूं प्राप्त हुआ नहीं । ता परमानंदस्वरूपआत्माविषेभी स्वप्रकाशचैतन्यरूपकरिकै भासमान आत्माकरिकैही तृप्तिकूं प्राप्त हुआ है । कोई मनकी वृत्तिविशेषकरिकै तृप्तिकूं प्राप्त हुआ नहीं । यातैं ता स्थितप्रज्ञ पुरुषविषे मनकी वृत्तितैंविनाभी सो संतोषविशेष

संभव होइ सकै है । तहां श्रुति । " यदा सर्वे प्रमुच्यंते कामायेस्य हृदि श्रिताः अथ मर्त्योऽमृतो भवत्यत्र ब्रह्म समश्नुते " । अर्थ यह । इस पुरुषके मनविषे स्थित जे कामसंकल्पादिक हैं । ते सर्व कामसंकल्पादिक जिस कालविषे निःशेषतैं निवृत्त होवै हैं । तिस कालविषे यह जीव अमृतभावकूं प्राप्त होवै है । तथा इसी शरीरविषे आनंदस्वरूप ब्रह्मकूं अनुभव करे है इति । यातैं यह अर्थ सिद्ध भया । सो समाधिविषे स्थित स्थितप्रज्ञ पुरुष इस प्रकारके लक्षणवाचक शब्दोंकरिकै कथन करा जावै है यह प्रथम प्रश्नका उत्तर सिद्ध हुआ इति ॥ ५५ ॥ ❀ ॥ अब समाधितैं उत्थानकूं प्राप्त हुए स्थितप्रज्ञके भाषण, आसन, गमन या तीनोंविषे मूढ पुरुषोंके भाषणादिकोंतैं विलक्षणताकूं कथन करता हुआ श्रीभगवान् (किं प्रभाषेत) या द्वितीय प्रश्नके उत्तरकूं दो श्लोकोंकरिकै कथन करे हैं ।

(मू. श्लो.) दुःखेष्वनुद्विग्नमनाः सुखेषु विगतस्पृहः । वीतरागभयक्रोधः स्थितधीर्मुनिरुच्यते ॥ ५६ ॥ (पदच्छेदः) दुःखेषु । अनुद्विग्नमनाः । सुखेषु । विगतस्पृहः । वीतरागभयक्रोधः । स्थितधीः । मुनिः । उच्यते ॥ ५६ ॥ (पदार्थः) हे अर्जुन दुःखोंविषे नहीं उद्वेगकूं प्राप्त हुआ है मन जिसका तथा विषयसुखोंविषे निवृत्त हुई है स्पृहा जिसकी तथा निवृत्त हुए हैं रागभयक्रोध जिसके ऐसा मननशील पुरुष स्थितप्रज्ञ कह्या जावै है ॥ ५६ ॥

टीका । आध्यात्मिक दुःख आधिभौतिक दुःख, आधिदैविक दुःख, यह तीन प्रकारके दुःख होवै हैं । तहां शोकमोहादिक आधियोंकरिकै जन्य जो दुःख हैं तथा ज्वरशूलादिक व्याधियोंकरिकै जन्य जो दुःख हैं तिन दुःखोंकूं आध्यात्मिक दुःख कहे हैं । और व्याघ्रसर्पादिकोंकरिकै जन्य जो दुःख हैं तिन दुःखोंकूं आधिभौतिक दुःख कहे हैं । और अति वायु अति वृष्टि अग्नि आदिकोंकरिकै जन्य जो दुःख हैं तिन दुःखोंकूं आधिदैविक दुःख कहे हैं । ते सर्व दुःख रजोगुणका परिणामरूप तथा संतापरूप अंतःकरणकी वृत्तिविशेषरूप होवै हैं । तथा पापकर्मरूप प्रारब्धकरिकै प्राप्त होवै हैं । ऐसे दुःखोंके प्राप्तिविषे तिन दुखोंके निवृत्त करणेकी असामर्थ्यताकरिकै नहीं प्राप्त हुआ है उद्वेगकूं मन जिसका ताका नाम अनुद्विग्नमना है । और जे अविवेकी पुरुष हैं । तिन अविवेकी पुरुषोंकूं तौ ता दुःखकी प्राप्तिकालविषे या प्रकारका उद्वेग होवै है । मैं बहुत पापात्मा हूं ऐसे दारुण दुःखोंकूं भोगणेहारे मैं दुरात्माकूं धिक्कार है । ऐसे मेरे दुःखकूं कौन निवृत्त करैगा इति । इस प्रकारकी अनुतापरूप जो भ्रांति

है ता भ्रांतिरूप जो तमोगुणका परिणामरूप अंतःकरणकी वृत्तिविशेष है ताका नाम उद्वेग है । सो उद्वेग तिन अविवेकी पुरुषोंकूं दुःखरूप फलकी प्राप्तिकालविषे जैसे होवै है । तैसे जो कदाचित् सो उद्वेग तिन अविवेकी पुरुषोंकूं पापकर्मोंके करणकालविषे होता । तौ तिन पापकर्मोंके प्रवृत्तिका प्रतिबंधक होणेतैं सो उद्वेग सफल होता । परंतु तिन पापकर्मोंके करणकालविषे तिन अविवेकी पुरुषोंकूं सो उद्वेग होता नहीं । और तिन पापकर्मोंके दुःखरूप फलके भोगकालविषे उत्पन्न हुआभी सो उद्वेग जैसे गृहकूं अग्निके लागे हुए ता अग्निके शांति करणेवासतै कूपका खोदणा निष्फल होवै है । तैसे निष्फलही होवै है । काहेतैं तिन पापरूप कारणके विद्यमान हुए सो दुःखरूप कार्य अवश्यकरिकै उत्पन्न होवै है । ता कालविषे उद्वेगमात्रकरिकै ता दुःखकी निवृत्ति होइ सकै नहीं । और ता दुःखके पापरूप कारणके विद्यमान हुएभी हमारेकूं किसवासतै दुःख उत्पन्न होवै है । या प्रकारका जो अविवेक है सो अविवेक भ्रमरूप है । यातैं सो भ्रमरूप अविवेक ता स्थितप्रज्ञ पुरुषविषे संभवता नहीं । और ता विद्वान् पुरुषका शरीरभी पुण्यपापकर्मोंकरिकै रचित है । यातैं ते प्रारब्ध पापकर्म ता विद्वान् पुरुषकूं केवल दुःखमात्रकीही प्राप्ति करे हैं । परंतु ता दुःखकी प्राप्तिके उत्तरकालविषे ता अविवेकरूप भ्रमकी प्राप्ति करै नहीं । शंका । हे भगवन् दुःखकी प्राप्तितैं उत्तरकालविषे उत्पन्न भया जो अविवेकरूप भ्रम है । सो अविवेकरूप भ्रमभी दूसरे दुःखका कारण होवै है । यातैं सो अविवेकरूप भ्रमभी दूसरे प्रारब्धकर्मोंकरिकैही प्राप्त होवै है । यातैं विद्वान् पुरुषकूंभी ता प्रारब्धकर्मके वशतैं सो अविवेकरूप भ्रम अवश्य होवैगा । समाधान । हे अर्जुन ता भ्रमका उपादानकारण जो अज्ञान है। सो अज्ञान ता स्थितप्रज्ञ पुरुषका नाश होइ गया है । यातैं ता स्थितप्रज्ञ पुरुषविषे सो अविवेकरूप भ्रम संभवता नहीं। तथा ता विद्वान् पुरुषविषे ता भ्रमजन्य दुःखकी प्राप्ति करणेहारे प्रारब्धकर्मभी हैं नहीं। और जिसी किसी प्रकारतैं ता विद्वान् पुरुषके देहकी यात्रामात्रका निर्वाह करणेहारा जो प्रारब्धकर्मोंका फल है । ता फलका भोग भ्रमके अभाव हुएभी बाधितानुवृत्तिकरिकै ता विद्वान् पुरुषविषे संभव होइ सकै है । यह वार्त्ता आगे विस्तारकरिकै कथन करैंगे इति । किंवा सो विद्वान् पुरुष जैसे दुःखोंकी प्राप्तिविषे उद्वेगतैं रहित होवै है । तैसे सुखोंकी प्राप्तिविषे स्पृहातैंभी रहित होवै है । तहां सत्वगुणका परिणामरूप जो अंतःकरणकी प्रीतिरूप वृत्तिविशेष है । ताका नाम सुख है । सो सुखभी दुःखकी न्यांई आध्यात्मिक सुख, आधिभौतिक सुख, आधिदैविक सुख, या भेदकरिकै तीन प्रकारका होवै है । तहां प्रिय वस्तुके ध्यानकरिकै तथा पांडित्यादिकोंके अभिमानकरिकै जन्य जो सुख है ता सुखकूं आध्यात्मिक सुख कहे हैं । और स्त्री पुत्र मित्रादिकोंकरिकै जन्य जो सुख है ता सुखकूं आधिभौतिक सुख कहे हैं ।

और मंद मंद पवन, वृष्टि आदिकोंकरिकै जन्य जो सुख है ता सुखकूं आधिदैविक सुख कहे हैं । अथवा इसी गीताशास्त्रके अष्टादशाध्यायविषे कथन करी रीतिसैं सात्विक, राजस, तामस या भेदतैं सो सुख तीन प्रकारका होवै है । अथवा अन्य शास्त्र उक्त रीतिसैं वैषयिक, आभिमानिक, मानोरथिक, आभ्यासिक या भेदकरिकै सो सुख चारि प्रकारका होवै है । तहां विषयके संबंधतैं जो सुख उत्पन्न होवै है ताकूं वैषयिक सुख कहे हैं । और राज्यपांडित्यादिकोंके अभिमानकरिकै जो सुख उत्पन्न होवै है ताकूं आभिमानिक सुख कहे हैं । और प्रिय विषयोंके ध्यान करणेतैं जो सुख उत्पन्न होवै है ताकूं मानोरथिक कहे हैं । और सूर्यभगवान्‌के नमस्कारादिकोंकरिकै जो सुख उत्पन्न होवै है ताकूं आभ्यासिक सुख कहे हैं । या प्रकार अनेक प्रकारके सुखोंके जनावणेवासतै श्रीभगवान्‌नैं (सुखेषु) यह बहुवचन कथन करा है । ते सर्व सुख पुण्यकर्मरूप प्रारब्धतैं प्राप्त होवै हैं । तिन सर्व सुखोंविषे सो विद्वान् पुरुष स्पृहातैं रहित होवै है । तहां तिस तिस सुखके अनुभवकालविषे तिस तिस सुखके सजातीय दूसरे सुखकी प्राप्ति करणेहारा जो धर्म है ता धर्मका नहीं अनुष्ठान करिकै तिस तिस सुखके प्राप्तिकी आकांक्षारूप जो तामसी अंतःकरणकी वृत्तिविशेष है ताका नाम स्पृहा है । सा स्पृहा भ्रांतिरूप है । ऐसी भ्रांतिरूप स्पृहा अविवेकी पुरुषोंविषेही उत्पन्न होवै है । विवेकी पुरुषोंविषे सा भ्रांतिरूप स्पृहा उत्पन्न होवै नहीं । यातैं यह अर्थ सिद्ध भया । जैसे पापकर्मरूप कारणके विद्यमान हुएभी दुःखरूप कार्य हमारेकूं मत प्राप्त होवै या प्रकारकी व्यर्थ आकांक्षारूप उद्वेग विवेकी पुरुषविषे संभवता नहीं । तैसे पुण्यकर्मरूप कारणके नहीं विद्यमान हुएभी सुखरूप कार्य हमारेकूं प्राप्त होवै या प्रकारकी व्यर्थ आकांक्षारूप जो स्पृहा है । जिस स्पृहाकूं तृष्णा कहे हैं सा तृष्णारूप स्पृहाभी ता विवेकी पुरुषविषे संभवै नहीं । और प्रारब्ध पुण्यकर्म तौ ता विद्वान् पुरुषकूं केवल सुखमात्रकीही प्राप्ति करे हैं । कोई ता भ्रांतिरूप स्पृहाकी प्राप्ति करै नहीं इति । अथवा । हर्षरूप जो अंतःकरणकी वृत्तिविशेष है ताका नाम स्पृहा है । तहां जिस हमारेकूं ऐसा उत्कृष्ट सुख प्राप्त भया है सो मैं धन्य धन्य हूं । तीन लोकोंविषे हमारेसमान सुखवाला कोईभी प्राणी नहीं है । किसीभी उपायकरिकै यह हमारा सुख नाशकूं नहीं प्राप्त होवै । इत्यादिरूप जो उत्फुल्लतारूप अंतःकरणकी तामसी वृत्तिविशेष है ताका नाम हर्ष है । सा हर्षरूप स्पृहाभी भ्रांतिरूपही है । यहही स्पृहाशब्दका अर्थ श्रीभगवान् (न प्रहृष्येत् प्रियं प्राप्य नोद्विजेत्प्राप्य चाप्रियं) या श्लोकविषे आगे कथन करैंगे । सो हर्षरूप भ्रांतिभी ता विद्वान् पुरुषविषे संभवे नहीं । पुनः कैसा है सो विद्वान् पुरुष निवृत्त होइ गये हैं राग भय क्रोध जिसके । तहां यह विषय बहुत सुंदर है या प्रकारके शोभनबुद्धिरूप अध्यासकरिकै जन्य जो रंजनरूप अंतःकरणकी वृत्तिविशेष है जिसकूं अ-

त्यंत अभिनिवेश कहे हैं ताका नाम राग है। और ता रागका विषय जो पदार्थ है ता पदार्थके नाश करणेहारे किसी कारणके प्राप्त हुए ता कारणके निवृत्त करणेविषे अपणेकूं असमर्थ मानणेहारे पुरुषकी जो दीनतारूप अंतःकरणकी वृत्तिविशेष है ताका नाम भय है। और ता रागके विषयरूप प्रिय वस्तुके नाश करणेहारे किसी कारणके प्राप्त हुए ता कारणके निवृत्त करणेविषे अपणेकूं असमर्थ मानणेहारे पुरुषकी जो प्रज्वलनरूप अंतःकरणकी वृत्तिविशेष है ताका नाम क्रोध है। ते राग, भय, क्रोध तीनों भ्रमरूपही हैं। ऐसे भ्रमरूप राग, भय, क्रोध तीनों निवृत्त होइ गये हैं जिसतैं ताका नाम वीतरागभयक्रोध है। इस प्रकारका मननशील संन्यासी स्थितप्रज्ञ कह्या जावै है। यातैं यह अर्थ सिद्ध भया। इस प्रकारका स्थितप्रज्ञ पुरुष अपणे अंतर अनुभवकूं प्रगट करीकै अपणे शिष्योंके प्रति शिक्षा करणेवासतै उद्वेगतैं रहितपणेकूं तथा स्पृहातैं रहितपणेकूं तथा रागभयक्रोधतैं रहितपणेकूं कथन करणेहारे जो वचन हैं तिन वचनोंकूंही कथन करे है। क्या हमारे न्यांई दूसराभी मुमुक्षु दुःखोंविषे उद्वेग नहीं करै तथा सुखोंविषे स्पृहा नहीं करै तथा रागभयक्रोधतैं रहित होवै इति ॥ ५६ ॥ ❀ ॥ किंच ॥

(मू.श्लो.) यः सर्वत्रानभिस्नेहस्तत्तत्प्राप्य शुभाशुभं। नाभिनंदति न द्वेष्टि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥ ५७ ॥ (पदच्छेदः) यः। सर्वत्र। अनभिस्नेहः। तत्। तत्। प्राप्य। शुभाशुभं। न। अभिनंदति। न। द्वेष्टि। तस्य। प्रज्ञा। प्रतिष्ठिता ॥ ५७ ॥ (पदार्थः) हे अर्जुन जो विद्वान् पुरुष देहादिक सर्व पदार्थोंविषे स्नेहतैं रहित है तथा तिसै तिसै प्रिय अप्रिय विषयकूं प्राप्त होइकै नहीं प्रशंसा करै है नहीं द्वेष करै है तिस विद्वान् पुरुषकी प्रज्ञा स्थिर होवै है ॥ ५७ ॥

टीका। जो विद्वान् मुनि अपणे देहजीवनादिक सर्व पदार्थोंविषे अनभिस्नेह है। इहां जिसके विद्यमान हुए अन्य वस्तुकी हानि तथा वृद्धि अपणेविषे आरोपण करी जावै ऐसी जो ता अन्य वस्तुविषयक अंतःकरणकी तामसी वृत्तिविशेष है जिसकूं प्रेम कहे हैं। ताका नाम स्नेह है ता स्नेहके वशतैंही यह लोक अपणे स्त्री पुत्र धनादिक पदार्थोंकी हानिवृद्धिकूं अपणेविषे मानै हैं। ता स्नेहतैं सर्व प्रकारतैं जो रहित होवै ताका नाम अनभिस्नेह है। ऐसा अनभिस्नेह विद्वान् पुरुषभी परमानंदस्वरूप आत्मादेवविषे तौ सर्व प्रकारतैं स्नेहवाला होवै। काहेतैं देहादिक अनात्मपदार्थोंके स्नेहका जो परित्याग है सो अंतरआत्माके स्नेहवासतैंही है। आत्माके स्नेहतैं विना बाह्य पदार्थोंके स्नेहका परित्याग करणा निष्फल है इति। और जो विद्वान् पु-

रुष पुण्यकर्मरूप प्रारब्धनैं प्राप्त करे जो सुखके कारणरूप विषय हैं। तिन प्रिय विषयोंकूं प्राप्त होइकै हर्षविशेषपूर्वक तिन विषयोंकी प्रशंसा नहीं करे है। और पापकर्मरूप प्रारब्धनैं प्राप्त करे जो दुःखके कारणरूप विषय हैं तिन अप्रिय विषयोंकूं प्राप्त होइकै सो विद्वान् पुरुष असूयापूर्वक तिन अप्रिय विषयोंकी निंदा नहीं करे है। तात्पर्य यह। अज्ञानी पुरुषोंके सुखके हेतुरूप जो अपणे स्त्रीपुत्रादिक पदार्थ हैं ते पदार्थ तिन अज्ञानी पुरुषोंके प्रति शुभ विषय हैं। तिन शुभ विषयोंके गुण कथन करणेविषे प्रवृत्त करणेहारी जो तिन अज्ञानी पुरुषोंके अंतःकरणकी भ्रांतिरूप तामसी वृत्तिविशेष है ताका नाम अभिनंदन है। तहां तिन स्त्रीपुत्रादिक पदार्थोंके गुणोंका कथन अन्य पुरुषोंके प्रीतिवासतै है नहीं। यातैं व्यर्थही है। इस प्रकार अन्य पुरुषके जो विद्याप्रतिष्ठादिक गुण हैं। ते विद्यादिक गुण ईर्षाकी उत्पत्तिद्वारा तिन अज्ञानी पुरुषोंके दुःखकेही कारण हैं। यातैं ते अन्य पुरुषके विद्यादिक गुण तिन अज्ञानी पुरुषोंके प्रति अशुभ विषय हैं। तिन अशुभ विषयोंकी निंदादिकोंविषे प्रवृत्त करणेहारी जो तिस अज्ञानी पुरुषके अंतःकरणकी भ्रांतिरूप वृत्तिविशेष है ताका नाम द्वेष है। सो द्वेषभी तमोगुणकाही परिणाम है। और ता अज्ञानी पुरुषनैं करी जो निंदा है सा निंदा ता अन्य पुरुषके विद्यादिक उत्कृष्टताकूं निवारण करि सकै नहीं। यातैं सा निंदा व्यर्थही है। यातैं सो अभिनंदन तथा द्वेष दोनों भ्रांतिरूप हैं तथा तमोगुणका परिणाम हैं। ऐसा अभिनंदन तथा द्वेष दोनों ता भ्रांतितैं रहित तथा शुद्ध अंतःकरणवाले स्थितप्रज्ञ पुरुषविषे कैसे संभवैंगे। किंतु नहीं संभवैंगे। और ते द्वेषादिक तामसी वृत्तिही अंतःकरणकूं चलायमान करणेहारी हैं। तिन द्वेषादिकोंके अभाव हुए ता स्नेहतैं रहित तथा हर्ष-विषादतैं रहित विद्वान् मुनिकी सा आत्मतत्त्वविषयक प्रज्ञा प्रतिष्ठितही होवै है क्या मोक्षरूप फलविषे पर्यवसानवाली होवै है। सोइही मुनि स्थि-तप्रज्ञ कह्या जावै है। इस प्रकार दूसराभी मुमुक्षु सर्व पदार्थोंविषे स्नेहतैं रहित होवै। तथा प्रिय विषयोंकूं प्राप्त होइकै तिनोंकी प्रशंसा नहीं करै। तथा अप्रिय विषयोंकूं प्राप्त होइकै तिनोंकी निंदा नहीं करै। यातैं यह अर्थ सिद्ध भया। जैसे अज्ञानी पुरुष शुभ अशुभ पदार्थोंकी प्राप्तिकालविषे प्रशंसारूप वचनोंकूं तथा निंदारूप वचनोंकूं कथन करे है। तैसे सो विद्वान् पुरुष ता शुभ अशुभ पदार्थोंकी प्राप्तिकालविषे प्रशंसारूप वचनोंकूं तथा निंदारूप वचनोंकूं कथन करता नहीं। किंतु ता शुभ अशुभ दोनोंकी प्राप्तिविषे सो विद्वान् पुरुष उदासीनही रहे है इति ॥ ५७ ॥ ❀ ॥ अब (किमासीत) या तृतीय प्रश्नके उत्तरकूं श्रीभगवान् षट् श्लोकोंकरिकै कथन करे हैं। तहां प्रारब्धकर्मके वशतैं समाधितैं उत्थानकरिकै विक्षेपकूं

प्राप्त भये जो इंद्रिय हैं। तिन इंद्रियोंकूं पुनः अंतर्मुख करिकै समाधिवासतैही ता स्थितप्रज्ञ पुरुषकी स्थिति होवै है या अर्थके निरूपण करणेवासतै श्रीभगवान् कहे हैं।

(मू.श्लो.) यदा संहरते चायं कूर्मोंगानीव सर्वशः। इंद्रियाणींद्रियार्थेभ्यस्तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥ ५८ ॥ (पदच्छेदः) यदा। संहरते। च। अयं। कूर्मः। अंगानि। इव। सर्वशः। इंद्रियाणि। इंद्रियार्थेभ्यः। तस्य। प्रज्ञा। प्रतिष्ठिता ॥ ५८ ॥ (पदार्थः) हे अर्जुन जैसे कूर्म अपणे शिरपादादिक अंगोंकूं संकोच करे है तैसे यह विद्वान् पुरुष जिस कालविषे अपणे सर्व इंद्रियोंकूं शब्दादिक विषयोंतैं पुनः संकोच करे है तिस कालविषे तिस विद्वान् पुरुषकी प्रज्ञा स्थित होवै है ॥ ५८ ॥

टीका। हे अर्जुन जैसे कूर्म दूसरेके भयतैं अपणे शिरपादादिक सर्व अंगोंकूं अपणे शरीरविषेही संकोच करि लेवै है। तैसे समाधितैं उत्थानकूं प्राप्त हुआ यह विद्वान् पुरुष जिस कालविषे रागादिक दोषोंकी प्राप्तिके भयतैं तथा समाधिके विघ्नोंके भयतैं अपणे श्रोत्रादिक सर्व इंद्रियोंकूं शब्दादिक सर्व विषयोंतैं पुनः संकोच करि लेवै है। तिस कालविषे तिस विद्वान् पुरुषकी सा प्रज्ञा प्रतिष्ठित होवै है। तहां पूर्वले दो श्लोकोंकरिकै समाधितैं व्युत्थानदशाविषेभी ता विद्वान् पुरुषविषे सर्व तामस वृत्तियोंका अभाव कथन करा। और अबी इस श्लोककरिकै पुनः समाधिअवस्थाविषे तिन सकल वृत्तियोंका अभाव कथन करा है। इतनी पूर्वतैं इहां विलक्षणता है इति ॥ ५८ ॥ ❁ ॥ शंका ॥ हे भगवन् शब्दादिक विषयोंतैं जो श्रोत्रादिक इंद्रियोंकी निवृत्ति है। सा निवृत्ति जो कदाचित् स्थितप्रज्ञताका हेतु होवै तौ रोगादिक निमित्तके वशतैं मूढ पुरुषोंके श्रोत्रादिक इंद्रियोंकीभी शब्दादिक विषयोंतैं निवृत्ति देखणेविषे आवे है। यातैं ते रोगादिकोंवाले सर्व मूढ पुरुष स्थितप्रज्ञ होणे चाहीयें। ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् कहे हैं।

(मू.श्लो.) विषया विनिवर्तंते निराहारस्य देहिनः। रसवर्जं रसोप्यस्य परं दृष्ट्वा निवर्तते ॥ ५९ ॥ (पदच्छेदः) विषयाः। विनिवर्तंते। निराहारस्य। देहिनः। रसवर्जं। रसः। अपि। अस्य। परं। दृष्ट्वा। निवर्तते ॥ ५९ ॥ (पदार्थः) हे अर्जुन इंद्रियोंकरिकै विषयोंके ग्रहण करणेविषे असमर्थ रोगी पुरुषके शब्दादिक विषय निवृत्त होइ जावै हैं परंतु तिनै विषयोंका राग निवृत्त होवै नहीं और इस स्थितप्रज्ञ पुरुषका तौ परब्रह्मकूं साक्षात्कार करिकै सो राग भी निवृत्त होइ जावै है ॥ ५९ ॥

टीका। श्रोत्रादिक इंद्रियोंकरिकै शब्दादिक विषयोंके ग्रहण करणेविषे असमर्थ ऐसा जो देहाभिमानवाला रोगी मूढ पुरुष है । अथवा काष्ठकी न्यांई सर्व इंद्रियोंकी चेष्टातैं रहित जो तपस्वी है। तिन रोगी आदिक मूढ पुरुषोंकेभी ते शब्दादिक विषय निवृत्त होइ जावै हैं। परंतु तिन अज्ञानी पुरुषोंका तिन शब्दादिक विषयोंका राग निवृत्त होवै नहीं। किंतु सो विषयोंका राग तिस कालविषेभी तिन अज्ञानी पुरुषोंकूं बन्या रहे है। और इस स्थितप्रज्ञ विद्वान् पुरुषका तौ परमानंदस्वरूप ब्रह्म मैं हूं या प्रकारके साक्षात्कारकरिकै ते शब्दादिक विषय तथा तिन विषयोंका राग दोनों निवृत्त होइ जावै हैं। यह वार्त्ता (यावानर्थ उदपाने) या श्लोकविषे पूर्व कथन करि आये हैं। यातैं रागसहित विषयोंकी निवृत्तिही ता स्थितप्रज्ञका लक्षण है। ता लक्षणकी रोगादिग्रस्त मूढ पुरुषविषे अतिव्याप्ति होवै नहीं। यातैं यह अर्थ सिद्ध भया। जिस कारणतैं परमात्मादेवके यथार्थ साक्षात्कारतैं विना रागसहित विषयोंकी निवृत्ति होवै नहीं। तिस कारणतैं यह अधिकारी पुरुष तिन रागसहित विषयोंके निवृत्त करणेहारी यथार्थज्ञानरूप जो प्रज्ञा है ता प्रज्ञाकी स्थिरताकूं अवश्यकरिकै संपादन करै इति ॥ ५९ ॥ ❀ ॥ तहां तिस प्रज्ञाकी स्थिरताविषे बाह्य इंद्रियोंका निग्रह तथा अंतर मनका निग्रह यह दोनों असाधारण कारण हैं। तिन दोनोंके अभाव हुए ता प्रज्ञाका नाश देखणेविषे आवे है । इस अर्थके कहणेवासतै प्रथम बाह्य इंद्रियोंके नहीं निग्रह करणेविषे दोषका वर्णन करे हैं।

(मू.श्लो.) यततो ह्यपि कौंतेय पुरुषस्य विपश्चितः। इंद्रियाणि प्रमाथीनि हरंति प्रसभं मनः ॥ ६० ॥ (पदच्छेदः) यततः[२] । हि । अपि[१] । कौंतेय[१] । पुरुषस्य[४] । विपश्चितः[३] । इंद्रियाणि[६] । प्रमाथीनि[७] । हरंति[१०] । प्रसभं[८] । मनः[९] ॥ ६० ॥ (पदार्थः) हे कुंतीके पुत्र अर्जुन यत्न[२] करणेहारे विवेकी[३] पुरुषके[४] मनकूं[९] भी[५] यह अत्यंत[७] बलवान् श्रोत्रादिक[६] इंद्रिय बलात्कारतैं[८] विकारकूं[१०] प्राप्त करे हैं ॥ ६० ॥

टीका। हे अर्जुन वारंवार शब्दादिक विषयोंविषे दोषदर्शनरूप यत्नकूं करणेहारा जो अत्यंत विवेकी पुरुष है। ता विवेकी पुरुषके क्षणमात्र निर्विकार कीये हुए मनकूंभी यह श्रोत्रादिक इंद्रिय नाना प्रकारके विकारोंकी प्राप्ति करे हैं। शंका। हे भगवन् ता विकारका विरोधी जो विवेक है ता विवेकके विद्यमान हुए तिस विवेकी पुरुषके मनकूं ते इंद्रिय विकारकी प्राप्ति नहीं करि सकैंगे । ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् तिन इंद्रियोंका प्रभाव कथन करे हैं (प्रमाथीनि इति) हे अर्जुन यह श्रोत्रादिक इंद्रिय अत्यंत बलवान् हैं । यातैं यह इंद्रिय ता विवेकके पराभव करणेविषे स-

र्थ हैं । यातैं ता विचारवान् पुरुषरूप स्वामीके देखते हुए तथा ता विवेकरूप रक्षकके विद्यमान हुएभी तिन सर्वोंका पराभव करिकै यह श्रोत्रादिक इंद्रिय ता विवेकजन्य प्रज्ञाविषे प्राप्त हुए मनकूं ता प्रज्ञातैं निवृत्त करिकै अपणे शब्दादिक विषयोंविषेही बलात्कारतैं प्राप्त करे हैं । इहां (यततो हि) या वचनविषे स्थित जोहि यह शब्द है ताहि शब्दकरिकै भगवान्नैं यह लोकप्रसिद्धि बोधन करी । यह वार्ता लोकविषेभी प्रसिद्ध है । जैसे कोई बलवान् शत्रु धनी पुरुषोंकूं तथा ता धनके रक्षक पुरुषोंकूं तिरस्कार करिकै तिनोंके देखते हुएही बलात्कारसैं तिनोंके धनादिक पदार्थ ले जावै है । तैसे यह श्रोत्रादिक इंद्रियभी शब्दादिक विषयोंके समीपताकूं प्राप्त होइकै तिन विवेकादिकोंका पराभव करिकै बलात्कारसैं मनकूं तिन विषयोंविषे ले जावै हैं इति ॥ ६० ॥ ❀ ॥ शंका । हे भगवन् ते श्रोत्रादिक इंद्रिय जो ऐसे बलवान् हैं । तौ तिन इंद्रियोंका निरोध हमारेसैं कैसे होइ सकैगा । ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् तिन इंद्रियोंके निरोधका उपाय कथन करे हैं ।

(मू. श्लो.) तानि सर्वाणि संयम्य युक्त आसीत मत्परः । वशे हि यस्येंद्रियाणि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥ ६१ ॥ (पदच्छेदः) तानि । सर्वाणि । संयम्य । युक्तः । आसीत । मत्परः । वशे । हि । यस्य । इंद्रियाणि । तस्य । प्रज्ञा । प्रतिष्ठिता ॥ ६१ ॥ (पदार्थः) हे अर्जुन हमारा अन्य भक्त तिनै सर्व इंद्रियोंकूं वशिकरिकै निगृहीतमनवाला हुआ स्थित होवे जिस पुरुषके यह इंद्रिय वशिवर्त्ति हैं तिस पुरुषकी सा प्रज्ञा स्थिर होवे है ॥ ६१ ॥

टीका । ज्ञानके साधनरूप जो श्रोत्रादिक पंच ज्ञानइंद्रिय हैं । तथा क्रियाके साधनरूप जो वागादिक पंच कर्मइंद्रिय हैं । तिन सर्व इंद्रियोंकूं अपणे वशि करिकै क्या शब्दादिक विषयोंतैं तिन इंद्रियोंका निरोध करिकै यह विवेकी पुरुष मनके निग्रहवाला हुआ स्थित होवै क्या बाह्य अंतर सर्व व्यापारोंतैं रहित हुआ स्थित होवे । शंका । हे भगवन् पूर्व आपनैं तिन इंद्रियोंकूं महान् बलवान् कह्या था । ऐसे बलवान् इंद्रियोंकूं अपणे वशि करणा कैसे संभवैगा । ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् कहे हैं (मत्परः इति) हे अर्जुन सर्व प्राणीमात्रका आत्मारूप जो मैं वासुदेव हूं । सो मैं वासुदेवही सर्वतैं उत्कृष्ट हूं जिस पुरुषकूं ता पुरुषका नाम मत्पर है । ऐसा मेरा अनन्य भक्तही तिन इंद्रियोंकूं अपणे वशि करे है । तहां श्लोक । " न वासुदेवभक्तानामशुभं विद्यते क्वचित् " । अर्थ यह । सर्व प्राणीमात्रका आत्मारूप जो वासुदेव है । ता वासुदेवके अनन्य भक्तोंकूं कि-

सीभी कार्यविषे अशुभकी प्राप्ति होवै नहीं । किंतु सर्व कार्य ताके निर्विघ्न समाप्त होवै हैं इति । यह वार्त्ता लोकविषेभी प्रसिद्ध है । जैसे इस पुरुषनैं जबपर्यंत किसी बलवान् महाराजाका आश्रय नहीं लीया है । तबपर्यंतही तिस पुरुषकूं अन्य शत्रु दुःखकी प्राप्ति करे हैं । और यह पुरुष जबी ता बलवान् महाराजाके आश्रयकूं प्राप्त होवै है । तबी यह पुरुष अबी महाराजाके आश्रयकूं प्राप्त भया है या प्रकार मानिकरिकै ते शत्रु आपही तिस पुरुषके वशि होइ जावै हैं । तैसे यह अधिकारी पुरुषभी जबपर्यंत सर्वांतर्यामी ईश्वरके शरणकूं प्राप्त नहीं भया है । तबपर्यंतही यह श्रोत्रादिक इंद्रिय ता अधिकारी पुरुषकूं बहिर्मुख करे हैं । और यह अधिकारी पुरुष जबी ता अंतर्यामी ईश्वरके शरणकूं प्राप्त होवै है । तबी यह अधिकारी पुरुष अबी अंतर्यामी ईश्वरके शरणकूं प्राप्त भया है या प्रकार मानिकरिकै ते इंद्रिय आपही ता अधिकारी पुरुषके वशिभावकूं प्राप्त होवै हैं । यह सर्व अर्थ (वशे हि) या वचनविषे स्थित हि या शब्दकरिकै भगवान्नैं सूचन करा । ऐसे भगवद्भक्तिके महान् प्रभावकूं आगे विस्तार करिकै निरूपण करैंगे । अब श्रीभगवान् तिन इंद्रियोंके वशि करनेका फल कथन करे हैं । (वशे हि इति) हे अर्जुन जिस विद्वान् पुरुषके ते श्रोत्रादिक इंद्रिय वशि होवै हैं । तिसी विद्वान् पुरुषकी सा शास्त्रजन्य प्रज्ञा स्थिरताकूं प्राप्त होवै है । यातैं (किमासीत) या तृतीय प्रश्नका यह उत्तर सिद्ध भया । सो विद्वान् पुरुष श्रोत्रादिक सर्व इंद्रियोंकूं अपणे वशि करिकै स्थित होवै है इति ॥ ६१ ॥ ❀ ॥ शंका । हे भगवन् मनविषे जो अनर्थकी कारणता है सो बाह्य इंद्रियोंकी प्रवृत्तिद्वाराही है । स्वभावतैं मनविषे अनर्थकी कारणता है नहीं । यातैं जिस पुरुषनैं श्रोत्रादिक बाह्य इंद्रियोंका निग्रह करा है तिस पुरुषकूं दांतोंतैं रहित करे हुए सर्पकी न्यांई मनके नहीं निग्रह किये हुएभी किसी अनर्थकी प्राप्ति होवै नहीं । किंतु बाह्य प्रवृत्तिके अभावकरिकैही सो पुरुष कृतकृत्य होवै है । यातैं पूर्व श्लोकविषे (युक्त आसीत) या वचनकरिकै आपनैं कथन करा जो मनका निग्रह है सो व्यर्थही कथन करा है ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् सर्व इंद्रियोंके निग्रहवान् पुरुषकूंभी मनके नहीं निग्रह किये हुए सर्व अनर्थोंकी प्राप्ति दो श्लोकोंकरिकै कथन करे हैं ।

(मू. श्लो.) ध्यायतो विषयान्पुंसः संगस्तेषूपजायते । संगात्संजायते कामः कामात्क्रोधोभिजायते ॥ ६२ ॥ क्रोधाद्भवति संमोहः संमोहात्स्मृतिविभ्रमः । स्मृतिभ्रंशाद्बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति ॥ ६३ ॥ (पदच्छेदः) ध्यायतः । विषयान् । पुंसः । सं-

गः । तेषु । उपजायते । संगात् । संजायते । कामः । कामात् । क्रोधः । अभिजायते ॥ ६२ ॥ क्रोधात् । भवति । संमोहः । संमोहात् । स्मृतिविभ्रमः । स्मृतिभ्रंशात् । बुद्धिनाशः । बुद्धिनाशात् । प्रणश्यति ॥ ६३ ॥ (पदार्थः) हे अर्जुन शब्दादिक विषयोंकूं मनकरिकै ध्यान करते हुए पुरुषका तिनें विषयोंविषे संगं उत्पन्न होवे है ता संगतें काम उत्पन्न होवे है तां काम-तें क्रोध उत्पन्न होवे है ॥ ६२ ॥ तां क्रोधतें संमोह होवे है तां संमोहतें स्मृतिका विभ्रंश होवे है ता स्मृतिके भ्रंशतें बुद्धि-का नाश होवे है तां बुद्धिके नाशतें नाशकूं प्राप्त होवे है ॥ ६३ ॥

टीका । हे अर्जुन जो पुरुष अपणे श्रोत्रादिक बाह्य इंद्रियोंकूं शब्दादिक विषयोंतैं निरोध करिकैभी मनकरिकै वारंवार तिन शब्दादिक विषयोंका चिंतन करे है । तिस पुरुषका तिन विषयोंविषे अवश्यकरिकै संग उत्पन्न होवै है । इहां यह विषय हमारे सुखके साधन हैं या प्रकारका शोभनअ-ध्यासरूप जो प्रीतिविशेष है ताका नाम संग है। और ता सुखसाधनताज्ञानरूप संगतैं तिस पुरुषका तिन विषयोंविषे काम उत्पन्न होवै है। इहां यह विषय हमारेकूं कब प्राप्त होवैगा या प्रकारकी तृष्णाविशेषका नाम काम है । और किसी अन्य पुरुषकरिकै हननकूं प्राप्त हुआ जो सो तृष्णारूप काम है । तिस कामतैं ता हनन करणेहारे अन्य पुरुषविषयक अभिज्वलनरूप क्रोध उत्पन्न होवै है । और ता अभिज्वलनरूप क्रोधतैं कार्यअकार्यके विवेकका अभावरूप संमोह उत्पन्न होवै है। और ता संमोहतैं गुरुशास्त्रकरिकै उपदिष्ट अर्थका अनुसंधानरूप स्मृतिका विभ्रंश होवै है। और ता स्मृतिके विभ्रंशतैं अद्वितीय आत्माकार मनकी वृत्तिरूप बुद्धिका नाश होवै है । तात्पर्य यह । विपरीतभावनाकी वृद्धिरूप दोषकरिकै प्रतिबंध होणेतैं ता बुद्धिकी उत्पत्तिही नहीं होवै है । तथा उत्पन्न हुई ता बुद्धिका फलकी प्राप्ति करणेविषे अयोग्यताकरिकै विलय होइ जावै है । यहही ता बुद्धिका नाश है इति । और ता बुद्धिके नाशतैं सो पुरुष नाशकूं प्राप्त होवै है क्या सर्व पुरुषार्थके अयोग्य होवै है । काहेतैं इस लोकविषेभी जो पुरुष पु-रुषार्थके अयोग्य होवै है । सो पुरुष यह मरा हुआ है या प्रकारके लोकोंके व्यवहारका विषय होवै है । तैसे सर्व पुरुषार्थके अयोग्य हुआ यह पु-रुष मृत हुआही जानणा । यातैं यह अर्थ सिद्ध भया । जो पुरुष मनके निग्रहकूं न करिकै केवल बाह्य इंद्रियोंकाही निग्रह करे है । तिस पुरु-षकूंभी जबी महान् अनर्थकी प्राप्ति होवै है । तबी मन इंद्रिय दोनोंके निग्रहतैं रहित पुरुषकूं महान् अनर्थकी प्राप्ति होवै है याकेविषे क्या कहणा

है । यातैं यह अधिकारी पुरुष महान् प्रयत्नकरिकैभी ता मनका निग्रह करै । ता मनके निग्रहतैं विना केवल बाह्य इंद्रियोंके निग्रहमात्रकरिकै सा स्थितप्रज्ञता प्राप्त होवै नहीं इति ॥ ६३ ॥ ❀ ॥ तहां पूर्व श्लोकविषे बाह्य इंद्रियोंके निग्रह किये हुएभी मनके नहीं निग्रह किये हुए दोषकी प्राप्ति कथन करी। अब मनके निग्रह किये हुए बाह्य इंद्रियोंके नहीं निग्रह हुएभी ता दोषकी प्राप्ति होवै नहीं या अर्थकूं कथन करता हुआ श्रीभगवान् (किं व्रजेत) या चतुर्थ प्रश्नके उत्तरकूं अष्ट श्लोकोंकरिकै कथन करे हैं ।

(मू.श्लो.) रागद्वेषवियुक्तैस्तु विषयानिंद्रियैश्चरन् । आत्मवश्यैर्विधेयात्मा प्रसादमधिगच्छति ॥ ६४ ॥ (पदच्छेदः) रागद्वेषवियुक्तैः । तु । विषयान् । इंद्रियैः । चरन् । आत्मवश्यैः । विधेयात्मा । प्रसादं । अधिगच्छति ॥ ६४ ॥ (पदार्थः) हे अर्जुन मनके निग्रहवाला पुरुष तौ रागद्वेषतैं रहित तथा मनके अधीन ऐसे इंद्रियोंकरिकै विषयोंकूं ग्रहण करता हुआभी चित्तके स्वच्छताकूंही प्राप्त होवै है ॥ ६४ ॥

टीका । जिस पुरुषनैं मनका निग्रह नहीं करा है । सो पुरुष बाह्य श्रोत्रादिक इंद्रियोंका निग्रह करिकैभी रागद्वेषयुक्त मनकरिकै शब्दादिक विषयोंका चिंतन करता हुआ जैसे पुरुषार्थतैं भ्रष्ट होवै है । तैसे मनके निग्रहवाला पुरुष ता पुरुषार्थतैं भ्रष्ट होवै नहीं । या प्रकारकी विलक्षणता बोधन करणे वासतै श्रीभगवान्नैं (रागद्वेषवियुक्तैस्तु) या वचनविषे स्थित तु यह शब्द कथन करा है । हे अर्जुन जिस पुरुषनैं अपणे मनका निग्रह करा है । सो पुरुष तौ ता वशीकृत मनके अधीन वर्तणेहारे तथा रागद्वेषतैं रहित ऐसे श्रोत्रादिक इंदियोंकरिकै शास्त्रविहित शब्दादिक विषयोंकूं ग्रहण करता हुआभी प्रसादकूंही प्राप्त होवै है। इहां परमात्माके साक्षात्कारकी योग्यतारूप जो चित्तकी स्वच्छता है ताका नाम प्रसाद है । जे इंद्रिय रागद्वेषकरिकै युक्त होवै हैं । ते इंद्रियही दोषके कारण होवै हैं । और यह विद्वान् पुरुष जबी मनकूं अपणे वशि करे है । तबी रागद्वेष दोनों निवृत्त होइ जावै हैं । और तिस रागद्वेषके अभाव हुए ता रागद्वेषके अधीन इंद्रियोंकी प्रवृत्ति होवै नहीं । और प्रारब्धकर्मोंके विद्यमान हुए तिन शब्दादिक विषयोंकी प्रतीति निवृत्त करी जावै नहीं । यातैं शास्त्रविहित शब्दादिक विषयोंकी प्रतीति मात्र ता विद्वान् पुरुषकूं दोषकी प्राप्ति करै नहीं । इतनै कहणेकरिकै या शंकाकीभी निवृत्ति करी । तिन शब्दादिक विषयोंका स्मरणमात्रभी जबी अनर्थका कारण है तबी तिन शब्दादिक विषयोंका

भोग तौ महान् अनर्थका कारण होवैगा । यातैं अपणे प्राणोंकी रक्षा करणे वासतै तिन शब्दादिक विषयोंकूं भोगता हुआ सो विद्वान् पुरुष ता अनर्थकूं क्युं नहीं प्राप्त होवैगा । किंतु सो विद्वान् पुरुषभी अवश्यकरिकै अनर्थकूं प्राप्त होवैगा इति । शंका । यातैं (किं व्रजेत) या चतुर्थ प्रश्न-का यह उत्तर सिद्ध भया । रागद्वेषतैं रहित तथा अपणे वशवर्ति ऐसे श्रोत्रादिक इंद्रियोंकरिकै सो विद्वान् पुरुष शास्त्रविहित शब्दादिक विषयोंकूं प्राप्त होवै है इति ॥ ६४ ॥ ❀ ॥ तहां पूर्व श्लोकविषे सो मनके निग्रहवाला पुरुष प्रसादकूं प्राप्त होवै है । यह वार्ता कथन करी । तहां ता चित्तकी स्वच्छतारूप प्रसादके प्राप्त हुए कौन फल प्राप्त होवै है ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् ता प्रसादके फलका कथन करे हैं ।

(मू. श्लो.) प्रसादे सर्वदुःखानां हानिरस्योपजायते । प्रसन्नचेतसो ह्याशु बुद्धिः पर्यवतिष्ठते ॥ ६५ ॥ (पदच्छेदः) प्रसादे । सर्वदुःखानां । हानिः । अस्य । उपजायते । प्रसन्नचेतसः । हि । आशु । बुद्धिः । पर्यवतिष्ठते ॥ ६५ ॥ (पदार्थः) हे अर्जुन ता प्रसादके प्राप्त हुए इस विद्वान् संन्यासीके सर्व दुःखोंका नाश होवै है जिस कारणतें ता स्वच्छचित्तवाले संन्यासीकी बुद्धि शीघ्रही स्थिर होवै है ॥ ६५ ॥

टीका । ता चित्तकी स्वच्छतारूप प्रसादके प्राप्त हुए इस विद्वान् संन्यासीके अज्ञानजन्य आध्यात्मिक, आधिभौतिक, आधिदैविक सर्व दुःखोंका नाश होवै है । जिस कारणतैं ता स्वच्छचित्तवाले संन्यासीकी ब्रह्म आत्मा या दोनोंके अभेदकूं विषय करणेहारी बुद्धि शीघ्रही स्थिर होवै है । काहेतैं अ-संभावना तथा विपरीतभावना यह दोनोंही ता बुद्धिकी स्थिरताविषे प्रतिबंधक होवै हैं । ते असंभावना विपरीतभावना दोनों ता विद्वान् पुरुषविषे हैं नहीं । यातैं प्रतिबंधतैं रहित हुई सा बुद्धि शीघ्रही स्थिरभावकूं प्राप्त होवै है । इहां यद्यपि चित्तकी स्वच्छतारूप प्रसादके प्राप्त हुएभी साक्षात् आ-ध्यात्मिकादिक दुःखोंकी निवृत्ति होवै नहीं । किंतु परंपराकरिकै तिन दुःखोंकी निवृत्ति होवै है । तहां चित्तके प्रसादतैं बुद्धिकी स्थिरता होवै है । ता बुद्धिकी स्थिरतातैं ता बुद्धिके विरोधी अज्ञानकी निवृत्ति होवै है । तिस अज्ञानकी निवृत्तितैं ता अज्ञानके कार्यरूप सकल दुःखोंकी हानि होवै है । इस प्रकारकी परंपराकरिकै तिन दुःखोंकी निवृत्ति होवै है । यातैं चित्तके प्रसाद हुए सर्व दुःखोंका नाश कथन करणा संभवता नहीं । तथापि ता चित्तके प्रसादकी प्राप्तिवासतै प्रयत्नकी अधिकता बोधन करणेवासतै ता चित्तके प्रसादविषे सर्व दुःखोंके नाशकी कारणता कथन करी है । यातैं किं-

चित्मात्रभी विरोधकी प्राप्ति होवै नहीं इति ॥ ६५ ॥ ❀ ॥ तहां पूर्व श्लोकविषे अन्वयमुखकरिकै कथन करा जो अर्थ है तिसी अर्थकूं अब व्यतिरेकमुखकरिकै दृढ करे हैं ।

(मू. श्लो.) नास्ति बुद्धिरयुक्तस्य न चायुक्तस्य भावना । न चाभावयतः शांतिरशांतस्य कुतः सुखं ॥ ६६ ॥ (पदच्छेदः) न । अस्ति । बुद्धिः । अयुक्तस्य । न । च । अयुक्तस्य । भावना । न च । अभावयतः । शांतिः । अशांतस्य । कुतः । सुखं ॥ ६६ ॥ (पदार्थः) हे अर्जुन चित्तके जयतैं रहित पुरुषकूं बुद्धि नहीं उत्पन्न होवै है तथा ता अयुक्त पुरुषकूं भावना नहीं उत्पन्न होवै है तथा ता भावनातैं रहित पुरुषकूं शांति नहीं उत्पन्न होवै है तौ शांतिरहित पुरुषकूं सुख कहांतैं होवै ॥ ६६ ॥

टीका । जिस पुरुषनैं अपणे चित्तकूं नहीं वशि करा है ता पुरुषका नाम अयुक्त है । ऐसे अयुक्त पुरुषकूं श्रवणमननरूप वेदांतविचारकरिकै जन्य आत्मविषयक बुद्धि उत्पन्न होवै नहीं । और ता बुद्धिके अभाव हुए तिस अयुक्त पुरुषकूं विजातीय वृत्तियोंके व्यवधानतैं रहित सजातीय वृत्तियोंका प्रवाहरूप निदिध्यासनरूप भावना उत्पन्न होवै नहीं । और ता निदिध्यासनरूप भावनातैं रहित पुरुषकूं कार्यसहित अविद्याके निवृत्त करणेहारी तथा तत्त्वमसि आदिक वेदांतवाक्योंतैं जन्य तथा जीवब्रह्मके अभेदकूं विषय करणेहारी साक्षात्काररूप शांति नहीं उत्पन्न होवै है । और ता आत्म-साक्षात्काररूप शांतितैं रहित पुरुषकूं मोक्षानंदरूप सुख प्राप्त होवै नहीं इति ॥ ६६ ॥ ❀ ॥ शंका । हे भगवन् ता अयुक्त पुरुषविषे सा बुद्धि किस कारणतैं नहीं उत्पन्न होती । ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् ता बुद्धिकी न उत्पत्तिविषे कारण कथन करे हैं ।

(मू. श्लो.) इंद्रियाणां हि चरतां यन्मनोनुविधीयते । तदस्य हरति प्रज्ञां वायुर्नावमिवांभसि ॥ ६७ ॥ (पदच्छेदः) इंद्रियाणां । हि । चरतां । यत् । मनः । अनुविधीयते । तत् । अस्य । हरंति । प्रज्ञां । वायुः । नावं । इव । अंभसि ॥ ६७ ॥ (पदार्थः) हे अर्जुन जिस कारणतैं अपणे अपणे विषयोंविषे प्रवर्त्तमान इंद्रियोंके मध्यविषे जिस एक इंद्रियकूंभी लक्ष्य करिकै यह मन प्रवर्त्त होवै है सो एक इंद्रियभी इस साधक पुरुषकी प्रज्ञाकूं हरण करे है जैसे जलविषे स्थित नौकाकूं प्रतिकूल वायु हरण करे है ॥ ६७ ॥

टीका । अपणे अपणे शब्दादिक विषयोंविषे प्रवर्त्तमान ऐसे जो नहीं वश करे हुए श्रोत्रादिक इंद्रिय हैं । तिन श्रोत्रादिक इंद्रियोंके मध्यविषे जिस एक

इंद्रियके अनुसारी हुआभी यह मन प्रवृत्त होवै है। सो मन सकृत एक इंद्रियभी इस साधक पुरुषकी अथवा तिस मनकी शास्त्रजन्य आत्मविषयक प्रज्ञाकूं निवृत्त करि देवै है। जैसे जलविषे स्थित नौकाकूं प्रतिकूल वायु पाषाणादिकोंविषे ले जाइकै नाश करि देवै है। तैसे सो एक इंद्रियभी या अधिकारी पुरुषके प्रज्ञाकूं बहिर्मुखताकरिकै नाश करि देवै है। तात्पर्य यह। राग द्वेषयुक्त मनकी सहायताकूं लैके अपणे विषयविषे प्रवृत्त हुआ एक इंद्रियभी जबी इस अधिकारी पुरुषकी ता प्रज्ञाकूं नाश करे है। तबी ते सर्व इंद्रिय इस अधिकारी पुरुषके प्रज्ञाकूं नाश करे हैं याकेविषे क्या कहणा है। तहां प्रतिकूल वायुकूं जलविषेही नौकाके हरण करणेका सामर्थ्य है पृथिवीविषे स्थित नौकाके हरण करणेका सामर्थ्य है नहीं। इस अर्थके सूचन करणेवासतै दृष्टांतविषे (अंभसि) यह पद कथन करा है। इस प्रकार दार्ष्टांतिकविषे जलके समान जो मनकी चंचलता है ता चंचलताके विद्यमान हुएही ता इंद्रियकूं तिस प्रज्ञाहरण करणेका सामर्थ्य होवै है। और पृथिवीके समान जो मनकी स्थिरता है। ता स्थिरताके विद्यमान हुए ता इंद्रियकूं तिस प्रज्ञाके हरण करणेका सामर्थ्य होवै नहीं इति। इहां अन्य टीकावोंविषे (यत् तत्) या दोनों शब्दोतैं मनका ग्रहण करिकै यह अर्थ करा है। विषयोंविषे प्रवृत्त इंद्रियोंकूं लक्ष्यकरिकै जो मन तिन इंद्रियोंके अनुसारी वर्ते है। सो मन इस पुरुषके प्रज्ञाकूं हरण करे है इति ॥ ६७ ॥

(मू॰श्लो॰) तस्माद्यस्य महाबाहो निगृहीतानि सर्वशः। इंद्रियाणींद्रियार्थेभ्यस्तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥ ६८ ॥ (पदच्छेदः) तस्मात्। यस्य। महाबाहो। निगृहीतानि। सर्वशः। इंद्रियाणि। इंद्रियार्थेभ्यः। तस्य। प्रज्ञा। प्रतिष्ठिता ॥ ६८ ॥ (पदार्थः) तिस कारणतैं हे महान् बाहुवाला अर्जुन जिस पुरुषके ते सर्व इंद्रियें अपणे शब्दादिक विषयोंतैं निवृत्त हुए हैं तिस पुरुषकीही सा प्रज्ञा स्थिर होवै है ॥ ६८ ॥

टीका। हे महान् बाहुवाले अर्जुन जिस कारणतैं बहिर्मुख हुए यह इंद्रिय इस पुरुषकी प्रज्ञाकूं नाश करे हैं। तिस कारणतैं जिस पुरुषके यह मनसहित श्रोत्रादिक सर्व इंद्रिय अपणे अपणे शब्दादिक विषयोंतैं निग्रहकूं प्राप्त हुए हैं। तिस तत्त्ववेत्तारूप सिद्ध पुरुषकीही अथवा मुमुक्षुरूप सा-

धक पुरुषकीही सा आत्मविषयक प्रज्ञा स्थिर होवै है। इंद्रियोंके निग्रहतैंरहित पुरुषकी सा प्रज्ञा स्थिर होवै नहीं। इहां (हे महाबाहो) या संबोधनकरिकै श्रीभगवान्‌नैं यह अर्थ सूचन करा। तूं अर्जुन सर्व बाह्य शत्रुवोंके निवारण करणेविषे समर्थ है। यातैं अंतर इंद्रियरूप शत्रुवोंके निवृत्त करणेविषेभी तूं समर्थ है इति। तहां मनसहित इंद्रियोंका संयम तत्त्ववेत्ता स्थितप्रज्ञ पुरुषका तौ लक्षणरूप है। और मुमुक्षु जनके प्रति सो मनसहित इंद्रियोंका संयम ता प्रज्ञाकी प्राप्तिका साधनरूप है। या कारणतैंही (तस्य) या शब्दकरिकै तत्त्ववेत्ताका तथा मुमुक्षुका दोनोंका ग्रहण करा है। यातैं मुमुक्षु जननैं अपणे प्रज्ञाकी स्थिरता करणेवासतै अत्यंत प्रयत्नपूर्वक तिन इंद्रियोंका संयम करणा इति ॥ ६८ ॥ ❀ ॥ अब ता स्थितप्रज्ञके सर्व इंद्रियोंका संयम स्वतःही सिद्ध है इस अर्थकूं श्रीभगवान् कथन करे हैं।

(मू. श्लो.) या निशा सर्वभूतानां तस्यां जागर्ति संयमी। यस्यां जाग्रति भूतानि सा निशा पश्यतो मुनेः ॥ ६९ ॥

(पदच्छेदः) या। निशा। सर्वभूतानां। तस्यां। जागर्ति। संयमी। यस्यां। जाग्रति। भूतानि। सा। निशा। पश्यतः। मुनेः ॥ ६९ ॥ (पदार्थः) हे अर्जुन जा साक्षात्काररूप प्रज्ञा सर्व अज्ञानी जनोंकी रात्रि है ता प्रज्ञारूप रात्रिविषे इंद्रियोंके संयमवाला पुरुष जागता है और जिस अविद्यारूप निद्राविषे यह सर्व अज्ञानी पुरुष जागते हैं सा अविद्या साक्षात्कारवान् स्थितप्रज्ञकी रात्रि है ॥ ६९ ॥

टीका। वेदांतवाक्योंकरिकै जन्य जो मैं ब्रह्मरूप हूं या प्रकारकी साक्षात्काररूप प्रज्ञा है। सा प्रज्ञा अज्ञानी पुरुषोंके प्रति अप्रकाशरूप है। यातैं सा आत्मसाक्षात्काररूप प्रज्ञा तिन अज्ञानी पुरुषोंकेप्रति लोकप्रसिद्ध रात्रिकी न्यांई रात्रिरूप है। ता ब्रह्मविद्यारूप सर्व अज्ञानी जनोंकी रात्रिविषे मनसहित इंद्रियोंके संयमवाला स्थितप्रज्ञ पुरुष अज्ञानरूप निद्रातैं जागृत हुआ सावधान वर्त्तै है। और जिस द्वैतदर्शनरूप अविद्यारूप निद्राविषे सोये हुए यह अज्ञानी पुरुष स्वप्नकी न्यांई नानाप्रकारके व्यवहारोंकूं करे हैं। सा अविद्या आत्मसाक्षात्कारवान् स्थितप्रज्ञकी लोकप्रसिद्ध रात्रिकी न्यांई रात्रिरूप है। तात्पर्य यह। जबपर्यंत यह पुरुष निद्रातैं जागृत नहीं होता तबपर्यंतही नानाप्रकारके स्वप्नका दर्शन होवै है। ता निद्रातैं जागृत हु-

एतैं अनंतर स्वप्नोंका दर्शन होवै नहीं। काहेतैं बाधपर्यंतही भ्रमकी विद्यमानता होवै है। बाधके उत्तर कालविषे सो भ्रम रहै नहीं। जैसे यह सर्प नहीं है किंतु रज्जु है या प्रकारके बाधपर्यंतही ता सर्पभ्रमकी स्थिति होवै है। ता बाधके हुए सो सर्पभ्रम रहै नहीं। तैसे या अधिकारी पुरुषकूं जबपर्यंत तत्त्वज्ञानकी प्राप्ति नहीं भई। तबपर्यंतही यह संसारभ्रम रहे है। और तत्त्वज्ञानके प्राप्त हुए सो संसारभ्रम निवृत्त होइ जावै है। यातैं ता ज्ञानकालविषे ता विद्वान् पुरुषका ता भ्रमजन्य कोईभी व्यवहार होवै नहीं। इति। यह वार्त्ता वार्तिक ग्रंथके कर्त्ता सुरेश्वराचार्यनैंभी कथन करी है। तहां श्लोकत्रयं। "कारकव्यवहारे हि शुद्धं वस्तु न वीक्ष्यते। शुद्धे वस्तुनि सिद्धे च कारकव्यावृतिस्तथा॥ १॥ काकोलूकनिशेवायं संसारोऽज्ञात्मवेदिनोः। या निशा सर्वभूतानामित्यवोचत्स्वयं हरिः॥२॥ बुद्धतत्त्वस्य लोकोयं जडोन्मत्तपिशाचवत्। बुद्धतत्त्वोपि लोकस्य जडोन्मत्तपिशाचवत्॥ ३॥ अर्थ यह। कर्त्ता करण इत्यादिक कारकोंके व्यवहार हुए शुद्ध आत्मवस्तु देखी जावै नहीं। और ता शुद्ध आत्मवस्तुके सिद्ध हुए तिन सर्व कारकोंकी निवृत्ति होइ जावै है इति॥१॥ किंवा जैसे काकपक्षीकी जो यह लोकप्रसिद्ध रात्रि है सा रात्रि उलूकपक्षीकी है नहीं किंतु उलूकपक्षी ता लोकप्रसिद्ध रात्रिविषे नानाप्रकारके खानपानादिक व्यवहार करे है। और ता उलूकपक्षीकी जो यह लोकप्रसिद्ध दिनरूप रात्रि है। सो दिन ता काकपक्षीकी रात्रि नहीं है। किंतु ता दिनविषे सो काक नानाप्रकारके खानपानादिक व्यवहार करे है। तैसेही अज्ञानी पुरुषकूं तथा आत्मवेत्ता पुरुषकूं यह संसार है। यह वार्ता (या निशा सर्वभूतानां) या वचनकरिकै श्रीकृष्णभगवान् आपही कहता भया है इति॥ २॥ किंवा जिस पुरुषनैं अपणे वास्तव स्वरूपकूं जान्या है। तिस विद्वान् पुरुषकूं यह सर्व लोक जड उन्मत्त पिशाचकी न्यांईं प्रतीत होवै हैं। और तिन सर्व लोकोंकूंभी सो विद्वान् पुरुष जड उन्मत्त पिशाचकी न्यांईं प्रतीत होवै है इति॥ ३॥ यातैं यह अर्थ सिद्ध भया। जिस पुरुषकूं जिस वस्तुका विपरीत दर्शन होवै है। तिस पुरुषकूं तिस वस्तुका सम्यक्दर्शन होवै नहीं। काहेतैं सो वस्तुका विपरीतदर्शन ता वस्तुके सम्यक् दर्शनके अभावकरिकैही जन्य होवै है। और जिस पुरुषकूं जिस वस्तुका सम्यक्दर्शन होवै है। तिस पुरुषकूं तिस वस्तुका विपरीतदर्शन होवै नहीं। काहेतैं ता विपरीतदर्शनका कारणरूप जो ता वस्तुका अदर्शन है। सो वस्तुका अदर्शन ता वस्तुके सम्यक्दर्शनकरिकै निवृत्त होइ जावै है। जैसे जिस पुरुषकूं रज्जुविषे यह सर्प है या प्रकारका विपरीतदर्शन हुआ है। तिस पुरुषकूं तिस कालविषे यह रज्जु है या प्रकारका सम्यक्दर्शन होवै नहीं। और जिस पुरुषकूं यह रज्जु है या प्रकारका सम्यक्दर्शन हुआ है तिस पुरुषकूं तिस कालविषे यह सर्प है। या प्रकारका विपरीतदर्शन होवै नहीं। तैसे आत्माके वास्तव स्वरूपकूं जानणेहारे विद्वान् पुरुषकूं प्रपंच-

विषयक विपरीतदर्शन होवै नहीं । और प्रपंचविषयक विपरीतदर्शनवाले अज्ञानी पुरुषोंकूं आत्माका सम्यक्‌दर्शन होवै नहीं । तहां श्रुति । " यत्र वा अन्यदिव स्यात्तत्रान्योऽन्यत्पश्येत इति । यत्रत्वस्य सर्वमात्वैवाभूत्तत्केन कं पश्येत् इति " । अर्थ यह । जिस अविद्याकालविषे यह अद्वितीय आत्मा द्वैतकी न्याई होवै है । तिस अविद्याकालविषे यह पुरुष अपणेकूं अन्य मानिकै अपणेतैं भिन्न अन्य पदार्थोंकूं देखे है इति । और जिस विद्याकालविषे इस विद्वान् पुरुषकूं यह सर्व जगत् अपणा आत्मारूपही होता भया है । तिस विद्याकालविषे यह विद्वान् पुरुष किस कारणकरिकै किस पदार्थकूं अपणेतैं भिन्न देखे । किंतु सो विद्वान् पुरुष अपणेतैं भिन्न किसी पदार्थकूंभी देखता नहीं इति । यह दोनों श्रुतियां यथाक्रमतैं अविद्याकी व्यवस्थाकूं तथा विद्याकी व्यवस्थाकूं कथन करे हैं । यातैं तत्त्वदर्शी विद्वान् पुरुषविषे अविद्याकृत क्रियाकारकादिक व्यवहार कदाचित्‌भी संभवै नहीं । यातैं ता स्थितप्रज्ञ विद्वान् पुरुषका सो इंद्रियोंका संयम स्वभावतैंही सिद्ध है । मुमुक्षुकी न्याईं कोई प्रयत्नसाध्य नहीं है इति ॥ ६९ ॥ तहां ता स्थितप्रज्ञ विद्वान् पुरुषका इंद्रियोंका संयम जैसे स्वभावतैंही सिद्ध है । तैसे ता स्थितप्रज्ञ विद्वान् पुरुषके सर्व विक्षेपोंकी शांतिभी स्वभावतैंही सिद्ध है । या अर्थकूं श्रीभगवान् दृष्टांतकरिकै निरूपण करे हैं ।

(मू. श्लो.) आपूर्यमाणमचलप्रतिष्ठं समुद्रमापः प्रविशंति यद्वत् । तद्वत्कामायं प्रविशंति सर्वे स शांतिमाप्नोति न कामकामी ॥ ७० ॥ (पदच्छेदः) आपूर्यमाणं । अचलप्रतिष्ठं । समुद्रं । आपः । प्रविशंति । यद्वत् । तद्वत् । कामाः । यं । प्रविशंति । सर्वे । सः । शांतिं । आप्नोति । न । कामकामी ॥ ७० ॥ (पदार्थः) हे अर्जुन जिस प्रकार सर्व नदीयोंकरिकै पूर्ण करे हुए तथा अचल प्रतिष्ठावाले समुद्रकूं वर्षाके जल प्रवेश करे हैं तिस प्रकार जिस स्थितप्रज्ञ पुरुषकूं सर्व शब्दादिक विषय प्रवेश करे हैं सो स्थितप्रज्ञ पुरुषही सर्व विक्षेपकी निवृत्तिरूप शांतिकूं प्राप्त होवै है विषयोंकी कामनावाला पुरुष ता शांतिकूं नहीं प्राप्त होवै है ॥ ७० ॥

टीका । श्रीगंगा, यमुना, गोदावरी, सिंधु, सरस्वती इत्यादिक सर्व नदीयोंके जलोंकरिकै सर्व ओरतैं पूर्ण हुआ जो समुद्र है । ता समुद्रकूंही वृष्टि

आदिकोंतैं उत्पन्न हुए सर्व जल प्रवेश करे हैं । तिन सर्व जलोंके प्रवेश हुएभी सो समुद्र अचलप्रतिष्ठही रहे है । नहीं परित्याग करी है अपणी मर्यादा जिसनैं ताका नाम अचलप्रतिष्ठ है । अथवा मैनाकादिक पर्वतोंका नाम अचल है तिन मैनाकादिक पर्वतोंकी है स्थिति जिसविषे ताका नाम अचलप्रतिष्ठ है । इतनै कहणेकरिकै ता समुद्रके गंभीरताकी अधिकता वर्णन करी । ऐसे महान् गंभीर समुद्रविषेही ते सर्व जल प्रवेश करे हैं । परंतु तिन जलोंके प्रवेश करणेतैं सो समुद्र किंचित्मात्रभी क्षोभकूं प्राप्त होवै नहीं । यह वार्त्ता सर्व लोकोंकूं अनुभवसिद्ध है । तैसे निर्विकारूपकरिकै स्थित जिस स्थितप्रज्ञ पुरुषकूं यह अज्ञानी पुरुषोंकी कामनाके विषय शब्दादिक विषय प्रारब्धकर्मके वशतैं प्राप्त होवै है । परंतु ते शब्दादिक विषय जिस विद्वान् पुरुषकूं विकारकी प्राप्ति करि सकते नहीं । ऐसा महान् समुद्रके समान सो स्थितप्रज्ञ विद्वान् पुरुषही लौकिक वैदिक सर्व कर्मोंकी निवृत्तिरूप तथा कार्यसहित अविद्याकी निवृत्तिरूप शांतिकूं प्राप्त होवै है । और जो पुरुष तिन शब्दादिक विषयोंके प्राप्तिकी इच्छावाला है । सो पुरुष ता शांतिकूं प्राप्त होवै नहीं । किंतु सो विषयासक्त पुरुष सर्व कालविषे ता लौकिक वैदिक कर्मरूप विक्षेपकरिकै महान् क्लेशरूप समुद्रविषे मग्न होवै है । इतनैकरिकै यह अर्थ कह्या गया । जिस पुरुषकूं गुरुशास्त्रके उपदेशतैं आत्मसाक्षात्कारकी प्राप्ति भई है । तिस ज्ञानवान् पुरुषकूंही फलरूप विद्वत्संन्यास प्राप्त होवै है । तथा तिस ज्ञानवान् पुरुषकूंही सर्व विक्षेपकी निवृत्तिरूप जीवन्मुक्तिकी प्राप्ति होवै है । तथा विषयभोगोंके प्राप्त हुएभी निर्विकारताही होवै है इति ॥ ७० ॥ ❀ ॥ जिस कारणतैं विषयोंकी कामनावाला पुरुष ता शांतिकूं प्राप्त होवै नहीं । तिस कारणतैं प्राप्त हुएभी तिन विषयोंकूं यह विवेकी पुरुष परित्यागही करै । या अर्थकूं श्रीभगवान् कहे हैं ।

(मू. श्लो.) विहाय कामान्यः सर्वान् पुमांश्चरति निःस्पृहः । निर्ममो निरहंकारः स शांतिमधिगच्छति ॥ ७१ ॥ (पदच्छेदः) विहाय । कामान् । यः । सर्वान् । पुमान् । चरति । निःस्पृहः । निर्ममः । निरहंकारः । सः । शांतिं । अधिगच्छति ॥ ॥ ७१ ॥ (पदार्थः) हे अर्जुन जो पुरुष सर्व कामोंकूं परित्याग करिकै निःस्पृह हुआ तथा निर्मम हुआ तथा निरहंकार हुआ विचरे है सो स्थितप्रज्ञ ता शांतिकूं प्राप्त होवै है ॥ ७१ ॥

टीका । गृह, क्षेत्र, धन आदिक जितनै की बहिरले काम हैं । तथा मनोराज्यरूप जितनै की अंतरले काम हैं । तथा वासनामात्ररूप जितनै की काम हैं ऐसे तीन प्रकारके कामोंकूं जो पुरुष मार्गविषे चलते हुए तृणोंके स्पर्शकी न्यांई तुच्छ जानिकै उपेक्षा करि देवै है । तथा जो पुरुष अपणे शरीरके जीवनमात्रकी इच्छातैंभी रहित है । तथा जो पुरुष शरीर इंद्रियादिक संघातविषे यहही मैं हूं या प्रकारके अभिमानरूप अहंकारतैं रहित है । अथवा विद्या, उत्तम आश्रम आदिकोंकी प्राप्तिकरिकै जन्य जो अपणेविषे उत्कृष्टता बुद्धिरूप अहंकार है ता अहंकारतैं रहित है । निरहंकार होणेतैं जो पुरुष निर्मम है । क्या शरीरके निर्वाहवासतै प्रारब्धकर्मनैं प्राप्त करे जो कंथा कौपिनादिक हैं तिनोंविषेभी यह हमारे हैं या प्रकारके अभिमानतैं जो पुरुष रहित है । इस प्रकार सर्व पदार्थोंकी उपेक्षाकरिकै तथा निःस्पष्ट होइकै तथा निरहंकार होइकै तथा निर्मम होइकै जो पुरुष प्रारब्धकर्मके वशतैं शास्त्रविहित भोगोंकूं भोगे है । अथवा अपणी इच्छापूर्वक जहां तहां विचरे है । सो इस प्रकारका स्थितप्रज्ञ पुरुष सर्व संसारदुःखोंकी उपरामतारूप कार्यसहित अविद्याकी निवृत्तिरूप शांतिकूं आत्मज्ञानके बलतैं प्राप्त होवै है । या प्रकारका व्रजन ता स्थितप्रज्ञ पुरुषका होवै है । इतनै कहणेकरिकै (किं व्रजेत्) या चतुर्थ प्रश्नका उत्तर सिद्ध भया इति ॥ ७१ ॥ ❀ ॥ तहां पूर्व ग्रंथविषे चारि प्रश्नोंके चारि उत्तरोंके व्याजकरिकै स्थितप्रज्ञ पुरुषके सर्व लक्षणोंकूं मुमुक्षु जननैं अवश्य संपादन करणा यह अर्थ निरूपण करा । अब निष्कामकर्मयोगका फलरूप जो सांख्यनिष्ठा है ता सांख्यनिष्ठाकी फलके निरूपणकरिकै स्तुति करता हुआ श्रीभगवान् ताका उपसंहार करे हैं ।

(मू॰श्लो॰) एषा ब्राह्मी स्थितिः पार्थ नैनां प्राप्य विमुह्यति । स्थित्वास्यामंतकालेपि ब्रह्मनिर्वाणमृच्छति ॥ ७२ ॥ इति श्रीमहाभारते शतसाहस्र्यां संहितायां वैयासिक्यां श्रीभीष्मपर्वणि श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे सांख्ययोगोनाम द्वितीयोऽध्यायः समाप्तः ॥ २ ॥ (पदच्छेदः) एषा । ब्राह्मी । स्थितिः । पार्थ । न । एनां । प्राप्य । विमुह्यति । स्थित्वा । अस्यां । अंतकाले । अपि । ब्रह्मनिर्वाणं । ऋच्छति ॥ ७२ ॥ (पदार्थः) हे पार्थ यह जो ब्रह्मविषयक स्थिति है इसकूं प्राप्त होइकै कोइभी पुरुष नहीं मोहकूं प्राप्त होवै है इस स्थितिविषे अंत्य अवस्थाविषे स्थित होइकै भी यह पुरुष ब्रह्मनिवार्णकूं प्राप्त होवै है ॥ ७२ ॥

टीका । हे अर्जुन पूर्व हमनैं तुमारे प्रति स्थितप्रज्ञ पुरुषके लक्षणोंके व्याजकरिकै कथन करी हुई तथा (एषा तेभिहिता सांख्ये बुद्धिः) इस वचनकरिकै कथन करी हुई जो सर्व कर्मोंके संन्यासपूर्वक परमात्माकी ज्ञानरूप स्थिति है । कैसी है सा स्थिति । प्रत्यक् अभिन्न ब्रह्मकूं विषय करणेहारी है । यातैं ता स्थितिकूं ब्राह्मी कहे हैं । ऐसी ब्रह्मनिष्ठारूप स्थितिकूं जो कोई पुरुष प्राप्त होवै है । सो पुरुष पुनः कदाचितभी अज्ञानरूप मोहकूं प्राप्त होवै नहीं । काहेतैं सो अज्ञान अनादि है क्या उत्पत्तितैं रहित है । यातै आत्मज्ञानकरिकै एकवार नाशकूं प्राप्त हुआ सो अज्ञान पुनः कदाचित्‌भी उत्पन्न होवै नहीं । ऐसी ब्रह्मनिष्ठारूप स्थितिविषे जो कोई पुरुष अंत्य अवस्थाविषेभी स्थित होवै है । सो पुरुषभी ब्रह्मनिर्वाणकूं प्राप्त होवै है । क्या ब्रह्मविषेही आनंदकूं प्राप्त होवै है । अथवा ब्रह्मरूप आनंदकूं मैं ब्रह्मरूप हूं या प्रकार अभेदरूपकरिकै प्राप्त होवै है । इहां (निर्वाणं) यह पद आनंदका बोधक है । और किसी टीकाविषे तौ (ब्रह्मनिर्वाणं) यह दोनों पद भिन्न मानिकरिकै यह अर्थ करा है । ता ब्राह्मीस्थितिविषे स्थित होइकै सो विद्वान् पुरुष ब्रह्मकूं प्राप्त होवै है । शंका । जैसे स्वर्गादिक लोक गमनरूप क्रियाकरिकै प्राप्त होवै हैं । तैसे सो ब्रह्मभी गमनरूप क्रियाकरिकै प्राप्त होता होवैगा । ऐसी शंकाके हुए ता शंकाके निवृत्त करणेवासतै ता ब्रह्मका विशेषण कहे हैं (निर्वाणं इति) " निर्गतं वानं गमनं यस्मिन्प्राप्ये ब्रह्मणि तन्निर्वाणं " । अर्थ यह । निवृत्त होइ गई है गमनरूप क्रिया जिस ब्रह्मविषे ताका नाम निर्वाण है । तहां श्रुति " न तस्य प्राणा उत्क्रामंत्यत्रैव समवलीयंते ब्रह्मैव सन् ब्रह्माप्येति " अर्थ यह । मरणकालविषे जैसे अज्ञानी पुरुषोंके प्राण इस शरीरतैं उत्क्रमण करे हैं । तैसे तिस ब्रह्मवेत्ता ज्ञानी पुरुषके प्राण इस शरीरतैं बाहिर उत्क्रमण करते नहीं । किंतु ते प्राण इस शरीरके भीतरही लयभावकूं प्राप्त होवै हैं । और यह विद्वान् पुरुष ब्रह्मरूप हुआही ब्रह्मकूं प्राप्त होवै है । इति । इहां (अंतकालेपि) या वचनविषे स्थित जो (अपि) यह शब्द है । ता अपि शब्दकरिकै श्रीभगवान्‌नैं यह कैमुतिक न्याय सूचन करा । यह अधिकारी पुरुष जबी अंत्य अवस्थाविषेभी ता ब्रह्मनिष्ठाविषे स्थित होइकै ता आनंदस्वरूप ब्रह्मकूंही प्राप्त होवै है । तबी जो पुरुष ब्रह्मचर्यआश्रमतैंही संन्यासकूं करिकै मरणपर्यंत ता ब्राह्मीस्थितिविषे स्थित हुआ है । सो पुरुष ता ब्रह्मकूं प्राप्त होवै है । याके विषे क्या कहणा है । तहां श्लोक । " विज्ञाय चरमावस्थां देवताभ्यो नृपोत्तमः । खट्वांगो नामराजर्षिर्मुहूर्ते मुक्तिमेयिवान् इति " । अर्थ यह । सर्व राजावोंविषे श्रेष्ठ खट्वांग नामा राजऋषि अपणी अंत्य अवस्थाकूं देखिकै देवतावोंके उपदेशतैं एक मुहूर्तमात्रविषे कैवल्यमुक्तिकूं प्राप्त होता भया इति । अब इस द्वितीय अध्यायविषे विस्तारतैं निरूपण करा जो अर्थ है । ता सर्व अर्थका संक्षेपतैं निरूपण करणेहारा श्लोक कथन करे

हैं । " ज्ञानं तत्साधनं कर्म सत्वशुद्धिश्च तत्फलं । तत्फलं ज्ञाननिष्ठैवेत्यध्यायेऽस्मिन्प्रकीर्तितं " । अर्थ यह । इस भगवद्गीताके द्वितीय अध्यायविषे आत्मज्ञानका कथन करा है । तथा ता ज्ञानका परंपरा साधनरूप निष्काम कर्म कथन करा है । और ता निष्काम कर्मका अंतःकरणकी शुद्धिरूप फल कथन करा है । और ता अंतःकरणके शुद्धिका ज्ञाननिष्ठारूप फल कथन करा है । इतनै पदार्थ इस द्वितीय अध्यायविषे कथन करे हैं इति ॥ ७२ ॥ ॥ इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकार्य श्रीमत्स्वामिउद्धवानंदगिरिपूज्यपादशिष्येण स्वामिचिद्घनानंदगिरिणा विरचितायां प्राकृतटीकायां श्रीभगवद्गीतागूढार्थदीपिकाख्यायां सर्वगीतार्थसूत्रं नाम द्वितीयोऽध्यायः समाप्तः ॥ २ ॥ श्रीगुरुभ्यो नमः श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यां नमः श्रीशंकराचार्येभ्यो नमः ॥

॥ इति द्वितीयोऽध्यायः समाप्तः ॥

ॐ श्रीगणेशाय नमः । श्रीगुरुभ्यो नमः । श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यां नमः । श्रीशंकराचार्येभ्यो नमः। अथ तृतीयाऽध्यायप्रारंभः । तहां इस भगवद्गीताके प्रथम अध्यायकरिकै उपोद्घात करा जो संपूर्ण गीताशास्त्रका अर्थ है । सो संपूर्ण गीताशास्त्रका अर्थ सूत्ररूप द्वितीय अध्यायकरिकै सूचन करा है। सो प्रकार दिखावै हैं । या अधिकारी पुरुषकूं प्रथम निष्काम कर्मनिष्ठा होवै है । तिसतैं अनंतर अंतःकरणकी शुद्धि होवै है । तिसतैं अनंतर शमदमादिक साधनपूर्वक सर्व कर्मोंका संन्यास होवै है । तिसतैं अनंतर वेदांतवाक्योंके विचारसहित भगवद्भक्तिनिष्ठा होवै है। तिसतैं अनंतर तत्त्वज्ञाननिष्ठा होवै है । तिसतैं अनंतर तिस तत्त्वज्ञाननिष्ठाका त्रिगुणात्मक अविद्याकी निवृत्तिपूर्वक जीवन्मुक्तिरूप फल होवै है। सो जीवन्मुक्तिरूप फल प्रारब्धकर्मके फलभोगपर्यंत रहे है । ता प्रारब्धकर्मके समाप्त हुएतैं अनंतर विदेहमुक्ति होवै है। तहां जीवन्मुक्तिदशाविषे परम पुरुषार्थके आलंबन करिकै इस पुरुषकूं पर वैराग्यकी प्राप्ति होवै है। ता परवैराग्यकी प्राप्तिविषे दैवीसंपदनामा शुभ वासना उपयोगी होवै है। यातैं सा शुभवासना तौ ग्रहण करणे योग्य है । और आसुरी संपदनामा अशुभ वासना ता परवैराग्यकी प्राप्तिविषे विरोधी है । यातैं सा अशुभ वासना परित्याग करणे योग्य है । तहां दैवी संपदाका असाधारण कारण सात्विकी श्रद्धा है। और आसुरी संपदाका असाधारण कारण राजसी तथा तामसी श्रद्धा है । इस प्रकार ग्रहण करणेके योग्य तथा परित्याग करणेके योग्य पदार्थोंका विभाग करिकै सर्व गीताशास्त्रके अर्थकी परिसमाप्ति होवै है । सो सर्व अर्थ इस गीताके सूत्ररूप द्वितीय अध्यायविषे सूचन करा है । तहां इस गीताके द्वितीय अध्यायविषे (योगस्थः कुरु कर्माणि) इत्यादिक वचनोंकरिकै सूचन करी जो अंतःकरणके शुद्धिका साधनरूप निष्काम कर्मनिष्ठा है। सा निष्काम कर्मनिष्ठा सामान्यरूपकरिकै तथा विशेषरूपकरिकै इस गीताके तृतीय और चतुर्थ या दोनों अध्यायोंविषे निरूपण करी है। तिसतैं अनंतर (विहाय कामान्यः सर्वान्) इत्यादिक वचनोंकरिकै सूचन करी जो शुद्ध अंतःकरणवाले अधिकारी पुरुषकूं शमदमादिक साधनसंपत्तिपूर्वक सर्व कर्मोंके संन्यासकी निष्ठा है । सा सर्व कर्मसंन्यासनिष्ठा इस गीताके पंचम और षष्ठ या दोनों अध्यायोंविषे निरूपण करी है । इतनै करिकै त्वंपदार्थका निरूपण सिद्ध भया । तिसतैं अनंतर (युक्त आसीत मत्परः) इत्यादिक वचनोंकरिकै सूचन करी जो वेदांतवाक्योंके विचार सहित अनेक प्रकारकी भगवद्भक्तिनिष्ठा है। सा भगवद्भक्तिनिष्ठा इस गीताके सप्तम, अष्टम, नवम, दशम, एकादश, और द्वादश या षट् अध्यायोंविषे निरूपण करी है। इतनै करिकै तत्पदार्थका निरूपण सिद्ध भया । तहां पूर्व पूर्व अध्यायका उत्तर उत्तर अध्यायके साथि संबंधरूप जो अवांतर संगति है तथा अवांतर प्रयोजनोंका भेद है ते दोनों तिस तिस अध्यायके व्याख्यानविषे हम निरूपण करैंगे ।

तिसतैं अनंतर (वेदा विनाशिनं नित्यं) इत्यादिक वचनोंकरिकै सूचन करी जो तत्त्वंपदार्थका अभेद ज्ञानरूप तत्त्वज्ञाननिष्ठा है । सा तत्त्वज्ञाननिष्ठा इस गीताके त्रयोदशे अध्यायविषे प्रकृतिपुरुषके विवेकद्वारा निरूपण करी है । तिसतैं अनंतर (त्रैगुण्यविषया वेदा निस्त्रैगुण्यो भवार्जुन) इत्यादिक वचनोंकरिकै सूचन करा जो त्रैगुण्यनिवृत्तिरूप ता ज्ञाननिष्ठाका फल है। सो फल इस गीताके चतुर्दशे अध्यायविषे निरूपण करा है । सो त्रैगुण्यकी निवृत्तिही जीवन्मुक्ति है। यह वार्त्ता गुणातीत पुरुषके लक्षणोंके कथनकरिकै निरूपण करी है । तिसतैं अनंतर (तदा गंतासि निर्वेदं) इत्यादिक वचनोंकरिकै सूचन करी जो परवैराग्यनिष्ठा है । सा परवैराग्यनिष्ठा इस गीताके पंचदशे अध्यायविषे संसाररूप वृक्षके उच्छेदनद्वारा निरूपण करी है । तिसतैं अनंतर (दुःखेष्वनुद्विग्नमनाः) इत्यादिक वचनोंविषे स्थितप्रज्ञ पुरुषके लक्षणकरिकै सूचन करी जो तिस परवैराग्यकी उपयोगी दैवी संपदा है सा दैवी संपदा तौ ग्रहण करणे योग्य है । और (यामिमां पुष्पितां वाचं) इत्यादिक वचनोंकरिकै सूचन करी जो ता परवैराग्यकी विरोधी आसुरी संपदा है सा आसुरी संपदा परित्याग करणे योग्य है । यह सर्व वार्त्ता इस गीताके षोडशे अध्यायविषे कथन करी है । तिसतैं अनंतर (निर्द्वंद्वो नित्यसत्वस्थः) इत्यादिक वचनोंकरिकै सूचन करी जो ता दैवी संपदाका असाधारणकारणरूप सात्विकी श्रद्धा है । सा सात्विकी श्रद्धा इस गीताके सप्तदशे अध्यायविषे राजसी तामसी श्रद्धाकी निवृत्तिपूर्वक कथन करी है । इस प्रकार त्रयोदशे अध्यायतैं आदि लैके सप्तदशे अध्यायपर्यंत पंच अध्यायोंविषे फलसहित ज्ञाननिष्ठा निरूपण करी है । तिसतैं अनंतर इस गीताके अष्टादशे अध्यायविषे पूर्व कथन करे हुए सर्व अर्थका उपसंहार करा है। इस प्रकारसैं सर्व गीताके अर्थका परस्पर संबंध सिद्ध होवै है इति । तहां पूर्व द्वितीय अध्यायविषे सांख्यबुद्धिकूं आश्रयण करिकै श्रीभगवान्नैं (एषातेऽभिहिता सांख्ये) इत्यादिक वचनोंकरिकै ज्ञाननिष्ठा कथन करी थी । तथा योगबुद्धिकूं आश्रयण करिकै श्रीभगवान्नैं (योगे त्विमां शृणु) इसतैं आदि लैके (कर्मण्येवाधिकारस्ते मा ते संगोऽस्त्वकर्मणि) इस वचनपर्यंत सर्व वचनोंकरिकै कर्मनिष्ठा कथन करी थी । परंतु ज्ञाननिष्ठा तथा कर्मनिष्ठा या दोनों निष्ठावोंके अधिकारीका भेद श्रीभगवान्नैं स्पष्ट करिकै कथन करा नहीं । शंका । तिन दोनों निष्ठावोंका एकही अधिकारी है । काहेतैं ज्ञान और कर्म या दोनोंका समुच्चयही मोक्षके प्राप्तिका हेतु है । समाधान । ज्ञान और कर्म या दोनोंका समुच्चय अंगीकार करिकै तिन दोनोंकी एक अधिकारीता श्रीभगवान्कूं वांछित है नहीं । काहेतैं (दूरेण ह्यवरं कर्म बुद्धियोगाद्धनंजय) इस वचनकरिकै श्रीभगवान्नैं ज्ञाननिष्ठाकी अपेक्षा करिकै कर्मनिष्ठाविषे निकृष्टता कथन करी है । और (यावानर्थ उदपाने) या वचनकरिकै श्रीभगवान्नैं आत्मज्ञान-

के फलविषे सर्व कर्मोंके फलका अंतरभाव दिखाया है । और स्थितप्रज्ञ पुरुषका लक्षण कहिकरिकै श्रीभगवान्नैं (एषा ब्राह्मी स्थितिः पार्थ) या वचनकरिकै प्रशंसासहित ज्ञानके फलका उपसंहार करा है । और (या निशा सर्वभूतानां) इत्यादिक वचनोंकरिकै श्रीभगवान्नैं ज्ञानवान् पुरुषकूं द्वैतदर्शनके अभावतैं कर्मोंके अनुष्ठानका असंभव कथन करा है । और जैसे लोकविषे अंधकारकी निवृत्तिविषे केवल प्रकाशमात्रकूंही कारणता होवै है । तैसे अविद्याकी निवृत्तिरूप मोक्षफलविषेभी केवल ज्ञानमात्रकूंही कारणता है । और श्रुतिभी ज्ञानमात्रतैंही मोक्षकी प्राप्तिका कथन करे है । तहां श्रुति । " तमेव विदित्वातिमृत्युमेति नान्यःपंथा विद्यतेऽयनाय " । अर्थ यह । यह अधिकारी पुरुष आनंदस्वरूप आत्माकूं साक्षात्कारकरिकै संसाररूप मृत्युकूं नाश करै है । और मोक्षकी प्राप्तिवासतै आत्मसाक्षात्कारतैं विना दूसरा कोई मार्ग है नहीं इति । यातैं ज्ञान और कर्म या दोनोंका समुच्चय संभवै नहीं । तथा एक अधिकारिकताभी संभवै नहीं । शंका । जैसे प्रकाश तथा अंधकार यह दोनों परस्पर विरोधी हैं । यातैं तिन दोनोंका समुच्चय संभवै नहीं । तैसे आत्मज्ञान तथा कर्म यह दोनोंभी परस्पर विरोधी हैं । यातैं तिन दोनोंकाभी समुच्चय संभवै नहीं । यातैं ज्ञान तथा कर्म इन दोनोंका भिन्न भिन्नही अधिकारी होवै है । समाधान । ज्ञान तथा कर्म इन दोनोंका भिन्न भिन्नही अधिकारी होवै है यह वार्त्ता यद्यपि सत्य है । तथापि एकही अर्जुनके प्रति ज्ञान और कर्म इन दोनोंका उपदेश करणा संभवता नहीं । काहेतैं जो देहाभिमानी पुरुष कर्मका अधिकारी होवै है । तिस पुरुषके प्रति ज्ञाननिष्ठाका उपदेश करणा योग्य नहीं होवै है । और जो देहाभिमानतैं रहित पुरुष ज्ञानका अधिकारी होवै है । तिस पुरुषके प्रति कर्मनिष्ठाका उपदेश करणा योग्य नहीं होवै है । शंका । एकही पुरुषके प्रति विकल्पकरिकै ज्ञान तथा कर्म या दोनोंका उपदेश संभव होइ सकै है । समाधान । समान स्वभाववाले पदार्थोंकाही विकल्पकरिकै विधान होवै है । जैसे होमविषे समान स्वभाववाले व्रीहियवादिक पदार्थोंका विकल्पकरिकै विधान होवै है । परंतु उत्कृष्ट निकृष्ट पदार्थोंका विकल्पकरिकै विधान होवै नहीं । और आत्मज्ञानकी अपेक्षाकरिकै कर्मोंविषे निकृष्टता तथा कर्मोंकी अपेक्षाकरिकै आत्मज्ञानविषे उत्कृष्टता (दूरेण ह्यवरं कर्म बुद्धियोगाद्धनंजय) इत्यादिक वचनोंकरिकै स्पष्टही है । यातैं ज्ञान तथा कर्म या दोनोंका विकल्प संभवै नहीं । किंवा । कार्यसहित अविद्याकी निवृत्तिकरिकै उपलक्षित जो ब्रह्मानंदरूप मोक्ष है । ता मोक्षविषे कर्मोंके स्वर्गादिक फलकी न्याई न्यून अधिकता संभवै नहीं । या कारणतैंभी ज्ञान और कर्म या दोनोंका समुच्चय संभवै नहीं । यातैं यह अर्थ सिद्ध भया । ज्ञाननिष्ठा तथा कर्मनिष्ठा या दोनों निष्ठावोंका जो कदाचित् भिन्न भिन्न अधिकारी मानियें । तौ एक पुरुषके

प्रति तिन दोनों निष्ठावोंका उपदेश संभवै नहीं । और तिन दोनों निष्ठावोंका जो कदाचित् एकही अधिकारी मानियें । तौ परस्पर विरुद्ध तिन दोनों निष्ठावोंका समुच्चय नहीं संभवैगा । तथा कर्मकी अपेक्षाकरिकै ता आत्मज्ञानविषे श्रेष्ठताभी नहीं सिद्ध होवैगी । और ज्ञान तथा कर्म या दोनोंका जो कदाचित् विकल्प अंगीकार करियें । तौ सर्वतैं उत्कृष्ट तथा परिश्रमतैं विनाही सिद्ध होणेहारा जो आत्मज्ञान है । ता आत्मज्ञानका परित्याग करिकै बहुत परिश्रमकरिकै सिद्ध होणेहारा तथा अत्यंत निकृष्ट ऐसे कर्मका अनुष्ठान कोईभी पुरुष करैगा नहीं । इस प्रकारका विचारकरिकै अत्यंत व्याकुल हुई है बुद्धि जिसकी ऐसा सो अर्जुन श्रीभगवान्‌के प्रति या प्रकारका वचन कहता भया ।

(मू. श्लो.) अर्जुन उवाच ॥ ज्यायसीचेत्कर्मणस्ते मता बुद्धिर्जनार्दन । तत्किं कर्मणि घोरे मां नियोजयसि केशव ॥ १ ॥

(पदच्छेदः) ज्यायसी । चेत् । कर्मणः । ते । मता । बुद्धिः । जनार्दन । तत् । किं । कर्मणि । घोरे । मां । नियोजयसि । केशव ॥ १ ॥ (पदार्थः) हे जनार्दन तुमारेकूं जबी निष्कामकर्मतैं आत्मविषयक बुद्धि श्रेष्ठरूपकरिकै अभिमत है तबी हे केशव हिंसारूप घोर कर्मविषे तूं हमारेकूं किसवासतै प्रेरणा करता है ॥ १ ॥

टीका । हे जनार्दन जो कदाचित् तुमारेकूं निष्काम कर्मोंतैं आत्मतत्त्वविषयक बुद्धि अत्यंत श्रेष्ठरूपताकरिकै अभिमत है । तौ हे केशव हिंसादिक अनेक आयासोंकरिकै युक्त इस युद्धरूप घोर कर्मविषे मैं अत्यंत भक्तकूं (कर्मण्येवाधिकारस्ते) इत्यादिक वचनोंकरिकै आप वारंवार किस वासतै प्रेरणा करते हो । तहां सर्वैर्जनैरर्द्यते याच्यते स्वाभिलषितसिद्धये इति जनार्दनः । अर्थ यह । अपणे मनवांछित पदार्थोंकी प्राप्तिवासतै सर्व जनोंनैं जिसके प्रति याचना करीती है ताका नाम जनार्दन है । अथवा जनं जननं तत्कारणमज्ञानं च स्वसाक्षात्कारेणार्दयति हिनस्तीति जनार्दनः । अर्थ यह । जन्मकूं तथा जन्मके कारण अज्ञानकूं जो अपणे साक्षात्कारकरिकै नाश करै है ताका नाम जनार्दन है । इहां (हे जनार्दन) या संबोधनकरिकै अर्जुननैं यह अर्थ सूचन करा । ऐसे याचना करणेहारे भक्तजनोंके प्रति आप मनवांछित पदार्थोंकी प्राप्ति करणेहारे हो । यातैं अपणे श्रेयके निश्चय करणेवासतै जो हमारी आपके प्रति याचना है सो कोई अनुचित नहीं है इति । और (हे केशव) या संबोधनकरिकै अर्जुननैं यह अर्थ सूचन करा । सर्वका ईश्वर तथा सर्व इष्ट पदार्थोंकी प्राप्ति करणेहारे जो आप भगवान् हो । तिस एक आपकेही (शिष्यस्तेहं शाधि मां) इत्यादिक प्रार्थनापूर्वक शरणकूं प्राप्त भया जो मैं भक्त अर्जुन हूं । तिस हमारेसाथि वंचना करणी आपकूं उचित नहीं है इति ॥ १ ॥ ❀ ॥ शंका । हे अर्जुन

मैं कृष्णभगवान् किसीभी प्राणीके साथि वंचना करता नहीं । तौ तैं अत्यंत प्रिय भक्तके साथि मैं किस प्रकार वंचना करौंगा । किंतु नहीं करौंगा । और तूं अर्जुन हमारेविषे ता वंचना करणेका कौन चिन्ह देखता है । ऐसी भगवान्‌की शंकाके हुए अर्जुन श्रीभगवान्‌के प्रति कहे है ।

(मू. श्लो.) व्यामिश्रेणेव वाक्येन बुद्धिं मोहयसीव मे । तदेकं वद निश्चित्य येन श्रेयोहमाप्नुयां ॥ २ ॥ (पदच्छेदः) व्यामिश्रेण । इव । वाक्येन । बुद्धिं । मोहयसि । इव । मे । तत् । एकं । वद । निश्चित्य । येन । श्रेयः । अहं । आप्नुयां ॥ २ ॥ (पदार्थः) हे भगवन् मिल्ये हुए वचनकी न्यांई वचनकरिकै आप हमारे बुद्धिकूं मोहकर्त्ताकी न्याई मोहकी प्राप्ति करते हो तिस एक अधिकारकूं आप निश्चयकरिकै कथन करो जिसकरिकै मैं अर्जुन मोक्षकूं प्राप्त होवौं ॥ २ ॥

टीका । हे भगवन् (त्रैगुण्यविषयावेदा निस्त्रैगुण्यो भवार्जुन) इत्यादिक वचनोंकरिकै आप पूर्व किसी स्थलविषे तौ वेदनिष्ठाका परित्याग करावते भये हो । और (कर्मण्येवाधिकारस्ते) इत्यादिक वचनोंकरिकै पूर्व किसी स्थलविषे तौ आप तिसी वेदनिष्ठाका ग्रहण करावते भये हो और (निर्द्वंदो नित्यसत्वस्थो निर्योगक्षेम आत्मवान्) इत्यादिक वचनोंकरिकै पूर्व किसी स्थलविषे तौ आप निवृत्तिमार्गका उपदेश करते भये हो । और (धर्म्याद्धि युद्धाच्छ्रेयोन्यत्क्षत्रियस्य न विद्यते) इत्यादिक वचनोंकरिकै पूर्व किसी स्थलविषे तौ आप प्रवृत्तिमार्गका उपदेश करते भये हो । इस प्रकार ज्ञाननिष्ठाकूं तथा कर्मनिष्ठाकूं प्रतिपादन करणेहारे जो आपके वचन हैं । ते आपके वचन यद्यपि मिल्ये हुए अर्थकूं कथन करते नहीं । किंतु भिन्न भिन्न अर्थकूं कथन करते हैं । तथापि मैं अर्जुनकूं अपणे बुद्धिके दोषतैं ज्ञाननिष्ठा तथा कर्मनिष्ठा या दोनोंका एकही अधिकारी है अथवा भिन्न भिन्न अधिकारी हैं या प्रकारके संशयकरिकै मिल्ये हुए अर्थके वाचक प्रतीत होवै हैं । यह अर्थ अर्जुननैं (व्यामिश्रेणेव) या वचनविषे स्थित इव या शब्दकरिकै सूचन करा इति । हे भगवन् ऐसे ज्ञान तथा कर्मनिष्ठाके प्रतिपादक व्यामिश्रित वाक्योंकरिकै आप मैं मंदबुद्धि अर्जुनके अंतःकरणकूं मानो मोहकी प्राप्ति करते हो । इहां (मोहयसीव) या वचनविषे स्थित जो इव यह शब्द है । ता इवशब्दकरिकै अर्जुननैं यह अर्थ सूचन करा । आप परम कृपालु हो । यातैं आप हमारे मोहके निवृत्त करणेवासतैही प्रवृत्त हुए हो । कोई हमारेकूं मोह करणेवासतै आप प्रवृत्त हुए नहीं । तथापि आपके वचनोंकूं श्रवण करिकै हमारेकूं जो भ्रमरूप मोह भया है । सो अपणे अंतःकरणके दोषतैं भया है इति । हे भगवन् ज्ञान तथा कर्म या दो-

नोंका जो कदाचित् एकही पुरुष अधिकारी होवै । तौ परस्पर विरुद्ध होणेतैं ता ज्ञान तथा कर्म दोनोंका समुच्चय नहीं संभवैगा । और ज्ञान तथा कर्म यह दोनों एक अर्थके हेतु हैं नहीं । यातैं तिन दोनोंका विकल्पभी संभवै नहीं । और पूर्व उक्त रीतिसैं जो कदाचित् आप ज्ञान तथा कर्म या दोनोंके अधिकारीका भेद मानते होवौ । तौ एकही मैं अर्जुनके प्रति परस्पर विरुद्ध ज्ञाननिष्ठा तथा कर्मनिष्ठा या दोनोंका उपदेश संभवता नहीं । और जैसे एकही पुरुष एकही कालविषे परस्पर विरुद्ध स्थिति तथा गमन या दोनोंके करणेविषे समर्थ होवै नहीं । तैसे एकही मैं अर्जुन एकही कालविषे परस्पर विरुद्ध ज्ञाननिष्ठा तथा कर्मनिष्ठा या दोनोंके अनुष्ठान करणेविषे समर्थ नहीं हूं । यातैं ज्ञानका अधिकार तथा कर्मका अधिकार या दोनोंविषे एक अधिकारकूं आप निश्चयकरिकै हमारेप्रति कथन करो । जिस अधिकार निश्चयपूर्वक आपके वचनकरिकै मैं अर्जुन ज्ञान तथा कर्म या दोनोंके मध्यविषे एक ज्ञानका अथवा कर्मका अनुष्ठान करिकै मोक्षरूप श्रेयकूं प्राप्त होवौं । इहां ज्ञाननिष्ठा और कर्मनिष्ठा या दोनों निष्ठावोंका जो एक अधिकारी अंगीकार करियें तौ तिन दोनों निष्ठावोंका विकल्प तथा समुच्चय संभवै नहीं । यातैं तिन दोनों निष्ठावोंके अधिकारीके भेद जाणणेवासतै यह दो श्लोकोंकरिकै अर्जुनका प्रश्न है यह सिद्ध भया इति ॥ २ ॥ ❁ ॥ इस प्रकार जबी अर्जुननैं ज्ञाननिष्ठा तथा कर्मनिष्ठा या दोनों निष्ठावोंके अधिकारीके भेदका प्रश्न करा । तबी सो श्रीभगवान् ता अर्जुनके प्रश्नके अनुसारी उत्तरकूं कहता भया ।

(मू. श्लो.) श्रीभगवानुवाच । लोकेस्मिन् द्विविधा निष्ठा पुरा प्रोक्ता मयानघ । ज्ञानयोगेन सांख्यानां कर्मयोगेन योगिनां ॥ ३ ॥ (पदच्छेदः) लोके । अस्मिन् । द्विविधा । निष्ठा । पुरा । प्रोक्ता । मया । अनघ । ज्ञानयोगेन । सांख्यानां । कर्मयोगेन । योगिनां ॥३॥ (पदार्थः) हे पापतैं रहित अर्जुन इस लोकविषे पूर्व अध्यायविषे हमनैं दो प्रकारकी निष्ठा कथन करी थी तहां तत्ववेत्ता पुरुषोंकूं ज्ञानरूप योगकरिकै सा निष्ठा कही थी और कर्मयोगवान् पुरुषोंकूं कर्मरूप योगकरिकै सा निष्ठा कथन करी थी ॥३॥

टीका । हे अर्जुन अधिकारीरूपकरिकै अंगीकार करे जो शुद्धअंतःकरणवाले तथा अशुद्धअंतःकरणवाले दो प्रकारके जन हैं । ता दो प्रकारके जनरूप इस लोकविषे ज्ञानपरतारूप तथा कर्मपरतारूप दो प्रकारकी स्थितिरूप निष्ठा पूर्व अध्यायविषे मैं कृष्णभगवान्नैं तुमारेप्रति स्पष्टरूपकरिकै कथन करी थी । यातैं ज्ञाननिष्ठा तथा कर्मनिष्ठा या दोनों निष्ठावोंविषे एक अधिकारीकी शंकाकरिकै तूं ग्लानिकूं मत प्राप्त होउ । इहां (हे अनघ)

क्या है पापोंतैं रहित या संबोधनकरिकै श्रीभगवान्नैं ता अर्जुनविषे ब्रह्मविद्याके उपदेशकी योग्यता सूचन करी। काहेतैं (ज्ञानमुत्पद्यते पुंसां क्षयात्पापस्य कर्मणः) इत्यादिक शास्त्रोंके वचनोंनैं पापकर्मतैं रहित पुरुषोंविषेही आत्मज्ञानके उत्पत्तिकी योग्यता कथन करी है इति। और सा एकही स्थितिरूप निष्ठा साध्य अवस्था तथा साधन अवस्था या दोनों अवस्थावोंके भेदकरिकै दो प्रकारकी होवै है। कोई दोनोंही निष्ठा स्वतंत्र हैं नहीं। या अर्थके बोधन करणेवासतै श्रीभगवान्नैं (निष्ठा) या पदविषे एकवचन कथन करा है। जो कदाचित् स्वतंत्र दोनों निष्ठा भगवान्कूं अभिमत होतीयां। तौ निष्ठे या प्रकारके द्विवचनकूं भगवान् कथन करता। इसी अर्थकूं (एकं सांख्यं च योगं च यः पश्यति स पश्यति) या वचनकरिकै श्रीभगवान् आगे कथन करैगा इति। अब तिसीही स्थितिरूप निष्ठाकूं दो प्रकारतारूपकरिकै वर्णन करे हैं। (ज्ञानयोगेन सांख्यानां इति) प्रत्यक् अभिन्न ब्रह्मकूं विषय करणेहारी जो बुद्धि है ताका नाम सांख्या है। ता सांख्या नामा बुद्धिकूं जो प्राप्त हुए हैं तिनोंका नाम सांख्य है। क्या जिन पुरुषोंनैं ब्रह्मचर्य आश्रमतैंही संन्यासकूं धारण करा है। तथा जिन पुरुषोंनैं वेदांतके श्रवणमननादिकोंकरिकै आत्मवस्तुकूं निश्चय करा है। तथा जे पुरुष ज्ञानभूमिकाविषे आरूढ हुए हैं। ऐसे शुद्धअंतःकरणवाले सांख्यनामा पुरुषोंकूं (तानि सर्वाणि संयम्य युक्त आसीत मत्परः) इत्यादिक वचनोंकरिकै पूर्व ज्ञानरूप योगकरिकैही सा निष्ठा कथन करी है। इहां "युज्यते ब्रह्मणा अनेन स योगः"। अर्थ यह। यह अधिकारी पुरुष जिसकरिकै ब्रह्मके साथि जुडे है ताका नाम योग है इति। और यह अधिकारी पुरुष ता ज्ञानकरिकैही ब्रह्मके साथि अभेदभावकूं प्राप्त होवै है। यातैं सो ज्ञानही योगरूप है इति। और जिन पुरुषोंका अंतःकरण शुद्ध नहीं भया है। तथा जे पुरुष ज्ञानभूमिकाविषे आरूढ नहीं भए हैं। ऐसे कर्मोंके अधिकारीरूप योगी पुरुषोंकूं अंतःकरणकी शुद्धिद्वारा ज्ञानभूमिकाविषे आरूढ होणेवासतै (धर्म्याद्धि युद्धाच्छ्रेयोन्यत्क्षत्रियस्य न विद्यते) इत्यादिक वचनोंकरिकै कर्मरूप योगकरिकैही पूर्व सा निष्ठा कथन करी है। इहां 'युज्यते अंतःकरणशुद्ध्या अनेन स योगः'। अर्थ यह। यह अधिकारी पुरुष जिसकरिकै अंतःकरणकी शुद्धिके साथि जुडे है ताका नाम योग है इति। ऐसे अंतःकरणकी शुद्धि करणेहारे निष्काम कर्म हैं। यातैं ते निष्काम कर्मही योगरूप हैं। या कहणेतैं यह अर्थ सिद्ध भया। ज्ञान और कर्म या दोनोंका पूर्व उक्त प्रकारतैं समुच्चय तथा विकल्प संभवै नहीं। किंतु प्रथम निष्काम कर्मोंकरिकै शुद्ध हुआ है अंतःकरण जिनोंका ऐसे अधिकारी पुरुषोंकूं सर्व कर्मोंके संन्यासकरिकैही आत्मज्ञानकी प्राप्ति होवै है। यातैं चित्तकी शुद्धिरूप तथा चित्तकी अशुद्धिरूप दो अवस्थावोंके भेदकरिकै एकही तैं अर्जुनके प्रति हमनैं (एषा तेभिहिता सांख्ये बुद्धिर्योगे त्विमां श्रृणु)

इत्यादिक वचनोंकरिकै सा दो प्रकारकी निष्ठा कथन करी है। यातैं भूमिकाके भेदकरिकै एकही पुरुषके प्रति ज्ञान और कर्म या दोनोंका उपयोग संभव होइ सकै है। यातैं ज्ञान और कर्म या दोनोंके अधिकारके भेद हुएभी उपदेशकी व्यर्थता होवै नहीं इति। इसी अर्थके जनावणेवासतै श्रीभगवान् इस तृतीय अध्यायविषे अशुद्धचित्तवाले पुरुषकूं ता चित्तकी शुद्धिपर्यंत निष्कामकर्मोंके अनुष्ठानकी कर्त्तव्यता (न कर्मणामनारंभात्) इसतैं आदिलैकै (मोघं पार्थ स जीवति) इस वचनपर्यंत त्रयोदश श्लोकोंकरिकै कथन करैगा। और जिन पुरुषोंका चित्त शुद्ध हुआ है ऐसे ज्ञानवान् पुरुषोंकूं तौ ते कर्म किंचित्मात्रभी अपेक्षित नहीं हैं या अर्थकूं (यस्त्वात्मरतिः) इत्यादिक दो श्लोकोंकरिकै कथन करैंगे। और तिसतैं अनंतर (तस्मादसक्तः) इत्यादिक वचनोंकरिकै तौ बंधके हेतुरूप कर्मोंकूंभी फलकी इच्छातैं राहित्यरूप कौशल्यताकरिकै अंतःकरणकी शुद्धि तथा ज्ञानकी उत्पत्तिद्वारा मोक्षकीही कारणता संभवै है यह अर्थ कथन करैंगे। तिसतैं अनंतर (अथ केन प्रयुक्तोयं) या अर्जुनके प्रश्नका उत्थापन करिकै कामदोषकरिकैही काम्य कर्मोंकूं अंतःकरणके शुद्धिकी कारणता नहीं है। यातैं ता कामतैं रहित होइकै कर्मोंकूं करता हुआ तूं अर्जुन अंतःकरणकी शुद्धिकरिकै ज्ञानका अधिकारी होवैगा। यह अर्थ श्रीभगवान् इस तृतीय अध्यायकी समाप्तिपर्यंत कथन करैगा इति ॥ ३ ॥ ❀ ॥

तहां जैसे मृत्तिका, दंड, चक्र और कुलाल आदिक कारणोंके अभाव हुए घटरूप कार्यकी उत्पत्तिही होवै नहीं। तैसे निष्काम कर्मरूप कारणके अभाव हुए ज्ञानरूप कार्यकी उत्पत्तिही होवै नहीं या अर्थकूं श्रीभगवान् अर्जुनकेप्रति कथन करे हैं।

(मू. श्लो.) न कर्मणामनारंभान्नैष्कर्म्यं पुरुषोश्नुते। न च संन्यसनादेव सिद्धिं समधिगच्छति ॥ ४ ॥ (पदच्छेदः) न। कर्मणां। अनारंभात्। नैष्कर्म्यं। पुरुषः। अश्नुते। न। च। संन्यसनात्। एव। सिद्धिं। समधिगच्छति ॥ ४ ॥ (पदार्थः) हे अर्जुन यह अधिकारी पुरुष निष्काम कर्मोंके न करणेतैं निष्कर्मभावकूं नहीं प्राप्त होवै है तथा संन्यासतैं भी ज्ञाननिष्ठाकूं नहीं प्राप्त होवै है ॥ ४ ॥

॥ ४ ॥

टीका। "तमेतं वेदानुवचनेन ब्राह्मणा विविदिषंति यज्ञेन दानेन तपसा नाशकेन"। या श्रुतिनैं आत्मज्ञानकी प्राप्तिवासतै कथन करे जो अपणे अपणे वर्ण आश्रमके अनुसार वेदाध्ययन, यज्ञ, दान, तप इत्यादिक कर्म हैं। तिन नित्यनैमित्तिक कर्मोंकूं जो पुरुष निष्काम होइकै नहीं करे है। तिस

पुरुषका अंतःकरण शुद्ध होवै नहीं। और अंतःकरणकी शुद्धितैं विना यह पुरुष आत्मज्ञानकी प्राप्तिके योग्य होवै नहीं। यातैं निष्काम कर्मोंके नहीं करणेतैं सो अशुद्धचित्तवाला पुरुष सर्व कर्मोंतैं रहिततारूप नैष्कर्म्यकूं प्राप्त होवै नहीं। क्या ज्ञानरूप योगकरिकै ता निष्ठाकूं प्राप्त होवै नहीं इति। शंका। हे भगवन् श्रुतिविषे सर्व कर्मोंके संन्यासतैंही ता ज्ञाननिष्ठाकी प्राप्ति कथन करी है। तथा तिन कर्मोंकरिकै ज्ञाननिष्ठाके प्राप्तिका निषेधभी कथन करा है। तहां श्रुति। "एतमेव प्रव्राजिनो लोकमिच्छंतः प्रव्रजंति इति न कर्मणा न प्रजया धनेन त्यागेनैकेऽमृतत्वमानशुः"। अर्थ यह। संन्यासीयोंकूं प्राप्त होणेयोग्य जो अद्वितीयब्रह्मरूप लोक है ता ब्रह्मके प्राप्तिकी इच्छा करते हुए यह अधिकारी पुरुष संन्यासकूं ग्रहण करे हैं इति। और पूर्व कोईक विद्वान् पुरुष ब्रह्मभावकी प्राप्तिरूप मोक्षकूं अग्निहोत्रादिक कर्मोंकरिकै तथा पुत्रादिक प्रजाकरिकै तथा सुवर्णादिक धनकरिकै नहीं प्राप्त होते भए हैं किंतु एक त्यागकरिकैही ता मोक्षरूप अमृतकूं प्राप्त होते भए हैं इति। यातैं सर्व कर्मोंके संन्यासतैंही सा ज्ञाननिष्ठा प्राप्त होइ सकै है। ता ज्ञाननिष्ठाकी प्राप्तिवासतै कर्मोंकूं करणा व्यर्थ है। ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् कहे हैं (न च संन्यसनात् इति) हे अर्जुन निष्काम कर्मोंके अनुष्ठान करिकै अंतःकरणकी शुद्धि करेतैं विनाही किया हुआ जो संन्यास है। ता संन्यासतैं सो अशुद्ध अंतःकरणवाला पुरुष मोक्षरूप फलकी प्राप्ति करणेहारी ज्ञाननिष्ठारूप सिद्धिकूं प्राप्त होवै नहीं। तात्पर्य यह। निष्काम कर्मोंके अनुष्ठानकरिकै जन्य जो चित्तकी शुद्धि है। ता चित्तशुद्धितैं विना प्रथम संन्यासही नहीं संभवै है। काहेतैं "यदहरेव विरजेततदहरेव प्रव्रजेत्" अर्थ यह। यह अधिकारी पुरुष जिस दिनविषे सर्व विषयसुखोंतैं वैराग्यकूं प्राप्त होवै तिसी दिनविषे संन्यासकूं ग्रहण करै इति। या श्रुतिनैं वैराग्यवान् पुरुषकूंही संन्यासका अधिकारी कह्या है। सो वैराग्य अशुद्धचित्तवाले पुरुषकूं होवै नहीं। और सो अशुद्धचित्तवाला पुरुष जो कदाचित् 'दंडग्रहणमात्रेण नरो नारायणो भवेत्'। अर्थ यह। दंडादिक चिन्होंके ग्रहणमात्रकरिकै यह पुरुष नारायणरूप होवै है इत्यादिक प्ररोचक वचनोंकूं श्रवण करिकै औत्सुक्यमात्रकरिकै संन्यासकूं ग्रहणभी करे है। तौभी ता अशुद्धचित्तवाले पुरुषकूं सो संन्यास ज्ञाननिष्ठारूप फलकी प्राप्ति करे नहीं। उलटा प्रत्यवायकीही प्राप्ति करे है। इहां कार्यके अधिकारका तथा फलका न विचार करिकै ता कार्यविषे प्रवृत्त करणेहारा जो आह्लादविशेष है ताका नाम औत्सुक्य है। तिसी औत्सुक्यकूं कुतूहल कहे हैं इति। और पूर्व सर्व कर्मोंके त्यागरूप संन्यासकरिकै मोक्षकी प्राप्तिकूं कथन करणेहारे जो श्रुतिवचन कहे थे। ते श्रुतिवचन शुद्ध-

चित्तवाले पुरुषपरि हैं। अशुद्धचित्तवाले पुरुषपरि हैं नहीं इति ॥ ४ ॥ ❀ ॥ तहां निष्काम कर्मोंके अनुष्ठानकरिकै जिस पुरुषका चित्त शुद्ध नहीं भया है। सो पुरुष सर्वदा बहिर्मुखही रहे है। या अर्थकूं श्रीभगवान् अर्जुनके प्रति कहे हैं।

॥ ५ ॥

(मू.श्लो.) न हि कश्चित्क्षणमपि जातु तिष्ठत्यकर्मकृत्। कार्यते ह्यवशः कर्म सर्वः प्रकृतिजैर्गुणैः ॥ ५ ॥ (पदच्छेदः) न[1]। हि[2]। कश्चित्[3]। क्षणं[4]। अपि[5]। जातु[6]। तिष्ठति[7]। अकर्मकृत्[8]। कार्यते[9]। हि[10]। अवशः[11]। कर्म[12]। सर्वः[13]। प्रकृतिजैः[14]। गुणैः[15] ॥५॥ (पदार्थः) हे अर्जुन जिस[2] कारणतैं कोईभी[3] अज्ञानी पुरुष कदाचित्[6] क्षणमात्र[4] भी[5] कर्मोंकूं[8] नहीं करता हुआ नहीं[1] स्थित[7] होवै है जिस[10] कारणतैं प्रकृतिजन्य[14] सत्त्वादिक गुणोंनैं[15] अस्वतंत्र[11] सर्व[13] अज्ञानी जनोंकेप्रति लौकिक वैदिक[12] कर्म करा‍ईते[9] हैं ॥ ५ ॥

टीका। हे अर्जुन जिस पुरुषनैं मनसहित इंद्रियोंकूं अपणे वश नहीं करा है। ऐसा अजित इंद्रिय कोईभी पुरुष जिस कारणतैं कदाचित् एक क्षणमात्र कालपर्यंतभी खानपानादिक लौकिक कर्मोंकूं तथा अग्निहोत्रादिक वैदिक कर्मोंकूं नहीं करता हुआ स्थित होवै नहीं। किंतु ऐसा अजित इंद्रिय पुरुष तिन लौकिक वैदिक कर्मोंकूं करता हुआही स्थित होवै है। तिस कारणतैं ता अशुद्धचित्तवाले पुरुषकूं सर्व कर्मोंका संन्यास करणा संभवता नहीं इति। शंका। हे भगवन् सो अशुद्धचित्तवाला अविद्वान् पुरुष तिन लौकिक वैदिक कर्मोंकूं नहीं करता हुआ नहीं स्थित होवै है किंतु तिन कर्मोंकूं करता हुआही स्थित होवै है याकेविषे क्या कारण है। ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् कहे हैं (कार्यते हि इति) हे अर्जुन मूलप्रकृतितैं उत्पन्न भये जो सत्त्व, रज, तम, यह तीन गुण हैं। अथवा प्रकृति नाम स्वभावका है ता स्वभावरूप प्रकृतितैं उत्पन्न भये जो रागद्वेषादिक गुण हैं। तिन प्रकृतिजन्य गुणोंनैं जिस कारणतैं चित्तशुद्धितैं रहित अस्वतंत्र सर्व प्राणीयोंके प्रति ते लौकिक वैदिक सर्व कर्म कराईते हैं। अथवा कायिक वाचिक मानस यह सर्व कर्म कराईते हैं। तिस कारणत अशुद्धचित्तवाला कोईभी अविद्वान् पुरुष तिन कर्मोंकूं नहीं करता हुआ स्थित होवै नहीं। किंतु तिन प्रकृतिजन्य गुणोंकरिकै चलायमान करा हुआ यह पराधीन अज्ञानी पुरुष सर्व कालविषे तिन कर्मोंकूं करता हुआही स्थित होवै है। ऐसे अशुद्धचित्तवाले पुरुषकूं सर्व कर्मोंका संन्यास करणा संभवता नहीं। जबी ता अशुद्धचित्तवाले पुरुषकूं सो संन्यासही नहीं संभवै है। तबी ता अशुद्धचित्तवाले पुरुषकूं ता संन्यासजन्यज्ञाननिष्ठा नहीं संभवै है याकेविषे क्या कहणा है इति ॥ ५ ॥ ❀ ॥ किंवा जिस पुरुषनैं

॥ ५ ॥

निष्काम कर्मोंके अनुष्ठानतैं अपणे चित्तकूं शुद्ध नहीं करा है । किंतु औत्सुक्यमात्रकरिकै प्रथम संन्यासकूंही ग्रहण करा है । ऐसा अशुद्ध चित्तवाला पुरुष ता संन्यासके फलकूं प्राप्त होवै नहीं । या अर्थकूं श्रीभगवान् कथन करे हैं ।

(मू. श्लो.) कर्मेंद्रियाणि संयम्य य आस्ते मनसा स्मरन् । इंद्रियार्थान्विमूढात्मा मिथ्याचारः स उच्यते ॥ ६ ॥ (पदच्छेदः) कर्मेंद्रियाणि । संयम्य । यः । आस्ते । मनसा । स्मरन् । इंद्रियार्थान् । विमूढात्मा । मिथ्याचारः । सः । उच्यते ॥ ६ ॥ (पदार्थः) हे अर्जुन जो मूढात्मा पुरुष वाकादिक कर्मइंद्रियोंकूं निग्रह करिकै शब्दादिक विषयोंकूं मनकरिकै स्मरण करता हुआ स्थित होवै है सो पुरुष मिथ्या आचारवाला कह्या जावै है ॥ ६ ॥

टीका । रागद्वेषकरिकै दूषित है अंतःकरण जिसका ऐसा अशुद्धअंतःकरणवाला जो पुरुष केवल औत्सुक्यमात्रकरिकै वाक् पाणि पाद आदिक कर्म इंद्रियोंका निरोध करिकै क्या बाह्यइंद्रियोंकरिकै तिन कर्मोंकूं नहीं करता हुआ रागद्वेषकरिकै प्रेरित मनकरिकै शब्दस्पर्शादिक विषयोंकूं स्मरण करता हुआ स्थित होवै है । आत्मतत्त्वकूं स्मरण करता हुआ स्थित होता नहीं । क्या हमनैं सर्व कर्मोंका संन्यास करा है या प्रकारके अभिमान करिकै जो पुरुष सर्व कर्मोंतैं रहित हुआ स्थित होवै है । सो पुरुष मिथ्या आचारवाला कह्या जावै है । तात्पर्य यह । तिस पुरुषका अंतःकरण शुद्ध हुआ नहीं । यातैं ज्ञाननिष्ठारूप फलकी प्राप्तिके अयोग्य हुआ सो पुरुष पापआचरणवाला कह्या जावै है इति । यह वार्त्ता धर्मशास्त्रविषेभी कही है। तहां श्लोक। " त्वंपदार्थविवेकाय संन्यासः सर्वकर्मणां । श्रुत्येहविहितो यस्मात्तत्त्यागी पतितो भवेत् " । अर्थ यह । जिस कारणतैं इस अधिकारी लोकविषे श्रुतिभगवतीनैं त्वंपदार्थ आत्माके विचार करणेवासतैही सर्व कर्मोंका संन्यास विधान करा है । तिस कारणतैं जो अशुद्धचित्तवाला पुरुष औत्सुक्यमात्रतैं ता संन्यासकूं ग्रहण करिकै त्वंपदार्थ आत्माका विचार करता नहीं । सो बहिर्मुख संन्यासी पतित होवै है इति । यातैं अशुद्धअंतःकरणवाला पुरुष ता संन्यासतैं ज्ञाननिष्ठारूप सिद्धिकूं प्राप्त होवै नहीं यह जो वार्त्ता श्रीभगवान्नैं कथन करी है सो यथार्थ है इति ॥ ६ ॥ ❀ ॥ तहां चित्तशुद्धितैं विना केवल औत्सुक्यमात्रकरिकै जो सर्व कर्मोंका संन्यास है । ता संन्यासकूं न करिकै यह अधिकारी पुरुष अपणे चित्तकी शुद्धिवासतै शास्त्रविहित निष्काम कर्मोंकूंही करै । या अर्थकूं श्रीभगवान् अर्जुनके प्रति कथन करे हैं ।

(मू. श्लो.) यस्त्विंद्रियाणि मनसा नियम्यारभतेऽर्जुन। कर्मेंद्रियैः कर्मयोगमसक्तः स विशिष्यते ॥ ७ ॥ (पदच्छेदः) यः । तु । इंद्रियाणि । मनसा । नियम्य । आरभते । अर्जुन । कर्मेंद्रियैः । कर्मयोगं । असक्तः । सः । विशिष्यते ॥ ७ ॥ (पदार्थः) हे अर्जुन जो पुरुष मनसहित श्रोत्रादिक ज्ञानइंद्रियोंकूं रोकिकरिकै फलइच्छातें रहित हुआ वाकादिक कर्मइंद्रियोंकरिकै निष्काम कर्मोंकूं करे है सो पुरुष अशुद्धचित्तवाले संन्यासीतें अत्यंत श्रेष्ठ है ॥ ७ ॥

टीका । हे अर्जुन जो अधिकारी पुरुष श्रोत्र, त्वक्, चक्षु, रसन और घ्राण या पंच ज्ञानइंद्रियोंकूं मनसहित रोकिकरिकै क्या पापके उत्पत्तिका हेतु जो शब्दादिक विषयोंकी आसक्ति है ता विषयासक्तितैं तिन श्रोत्रादिक इंद्रियोंकूं निवृत्त करिकै अथवा विवेकयुक्त मनकरिकै तिन श्रोत्रादिक इंद्रियोंकूं रोकिकरिकै वाक्, पाणि आदिक कर्मइंद्रियोंकरिकै शास्त्रविहित कर्मोंकूं करे है। परंतु ता कर्मोंके फलकी इच्छा करता नहीं । सो निष्काम कर्मोंके करणेहारा अधिकारी पुरुष पूर्व उक्त अशुद्धअंतःकरणवाले मिथ्याचार संन्यासीतैं बहुत श्रेष्ठ है । इसी विलक्षणताके जनावणेवासतै श्रीभगवान्नैं मूलश्लोकविषे (यस्तु) यह तु शब्द कथन करा है । तात्पर्य यह । हे अर्जुन या महान् आश्चर्यकूं तूं देख । तिन दोनों पुरुषोंकूं यद्यपि परिश्रम तौ तुल्यही होवै है । तथापि एक पुरुष तौ वाकादिक कर्मइंद्रियोंकूं रोकिकरिकै मनसहित श्रोत्रादिक ज्ञानइंद्रियोंकूं विषयोंविषे प्रवृत्त करता हुआ परम पुरुषार्थरूप फलतैं रहित होवै है । और दूसरा पुरुष तौ मनसहित श्रोत्रादिक ज्ञानइंद्रियोंकूं शब्दादिक विषयोंतैं निवृत्तकरिकै वाकादिक कर्मइंद्रियोंकरिकै कर्मोंकूं करता हुआभी परम पुरुषार्थकूं प्राप्त होवै है । यातैं चित्तशुद्धितैं रहित संन्यासीतैं सो निष्काम कर्मोंके करणेहारा पुरुष बहुत श्रेष्ठ है इति ॥ ७ ॥ ❁ ॥ जिस कारणतैं अशुद्धअंतःकरणवाले संन्यासीतैं निष्काम कर्मोंके करणेहारा पुरुष बहुत श्रेष्ठ है । तिस कारणतैं तूं मनसहित ज्ञानइंद्रियोंकूं रोकिकरिकै वाकादिक कर्मइंद्रियोंकरिकै नित्यनैमित्तिक कर्मोंकूं कर । या अर्थकूं श्रीभगवान् अर्जुनके प्रति कथन करे हैं ।

(मू. श्लो.) नियतं कुरु कर्म त्वं कर्म ज्यायो ह्यकर्मणः । शरीरयात्रापि च ते न प्रसिद्ध्येदकर्मणः ॥ ८ ॥ (पदच्छेदः) नियतं । कुरु । कर्म । त्वं । कर्म । ज्यायः । हि । अकर्मणः । शरीरयात्रा । अपि । च । ते । न । प्रसिद्ध्येत् । अकर्मणः ॥ ८ ॥ (पदार्थः)

हे अर्जुन तूं नित्यनैमित्तिक कर्मोंकूंही कर जिस कारणतैं कर्मोंके न करणेतैं कर्मही श्रेष्ठ है तथा कर्मोंतैं रहित तुमारे शरीरकी यात्रा भी नहीं सिद्ध होवैगी ॥ ८ ॥

टीका । हे अर्जुन अंतःकरणकी शुद्धि करणेहारे कर्मोंके अनुष्ठानतैं रहित जो तूं है । सो तूं स्वर्गादिक फलोंकी इच्छातैं रहित होइकै श्रुतिकरिकै प्रतिपादित तथा स्मृतिकरिकै प्रतिपादित संध्या उपासनादिक नित्यकर्मोंकूं तथा ग्रहण श्राद्धादिक नैमित्तिक कर्मोंकूंही कर । शंका । हे भगवन् अशुद्धअंतःकरणवाले पुरुषनैं किस कारणतैं कर्मही करणेकूं योग्य है । ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् कहे हैं (कर्म ज्यायो ह्यकर्मणः इति) जिस कारणतैं तिन नित्यनैमित्तिक कर्मोंके नहीं करणेतैं तिन नित्यनैमित्तिक कर्मोंका करणाही अत्यंत श्रेष्ठ है । तिस कारणतैं अशुद्धअंतःकरणवाले पुरुषनैं फलकी इच्छातैं रहित होइकै ते नित्यनैमित्तिक कर्मही अवश्यकरिकै करणे । यद्यपि " संन्यास एवात्यरेचयत् " या श्रुतिनैं धर्मादिक सर्व साधनोंतैं संन्यासकूंही श्रेष्ठ रूपकरिकै कथन करा है । यातैं संन्यासतैं कर्मोंविषे श्रेष्ठता कथन करणी संभवै नहीं । तथापि जीवन्मुक्तिके सुखवासतै ब्रह्मवेत्ता पुरुषनैं करा जो विद्वत्संन्यास है । तथा आत्मज्ञानकी प्राप्तिवासतै शुद्धचित्तवाले मुमुक्षु जननैं करा जो विविदिषा संन्यास है । ता दोनों प्रकारके संन्यासविषेही सा श्रुति धर्मादिक सर्व साधनोंतैं श्रेष्ठता कथन करे है । और इहां प्रसंगविषे जो संन्यासतैं कर्मोंविषे श्रेष्ठता कथन करी है । सो अशुद्धचित्तवाले पुरुषनैं केवल औत्सुक्यमात्रकरिकै करा जो संन्यास है ता संन्यासतैं निष्काम कर्मोंविषे श्रेष्ठता कथन करी है । कोई संन्यासकी निंदाविषे भगवान्का तात्पर्य नहीं है । तहां धर्म, सत्य, तप, दम, शम, दान, प्रजनन, आहिताग्नि, अग्निहोत्र, यज्ञ और मानस, या एकादश साधनोंतैं संन्यासकी अधिकता आत्मपुराणके दशम अध्यायके अंतविषे हम विस्तारतैं कथन करि आये हैं इति । किंवा । हे अर्जुन तिन नित्यनैमित्तिक कर्मोंके नहीं करणेकरिकै केवल तुमारे अंतःकरणके शुद्धिका अभावही नहीं होवैगा । किंतु युद्धादिक कर्मोंके नहीं करणेतैं तुमारे शरीरके खानपानादिक व्यवहारभी नहीं सिद्ध होवैंगे । इहां भगवान्का यह अभिप्राय है । तूं अर्जुन क्षत्रिय है । यातैं संन्यास आश्रमकूं धारण करिकै भिक्षावृत्तितैं शरीरके निर्वाह करणेविषे तुमारा अधिकार है नहीं । काहेतैं श्रुतिस्मृतियोंविषे ब्राह्मणकूंही संन्यास करणेका अधिकार कथन करा है। तहां श्रुति । " ब्राह्मणाः पुत्रैषणायाश्च वित्तैषणायाश्च लोकैषणायाश्च व्युत्थायाथ भिक्षाचर्यं चरंति इति " । अर्थ यह । पुत्रएषणाका तथा वित्तएषणाका तथा लोकएषणाका परि-

त्याग करिकै वैराग्यवान् ब्राह्मण संन्यासपूर्वक भिक्षावृत्तिकूं करे हैं इति । तहां स्मृति । "चत्वार आश्रमा ब्राह्मणस्य त्रयो राजन्यस्य द्वौ वैश्यस्य इति" । अर्थ यह । ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, संन्यास यह चारि आश्रम ब्राह्मणके होवै हैं । और ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ यह तीन आश्रम क्षत्रियके होवै हैं । और ब्रह्मचर्य, गृहस्थ यह दो आश्रम वैश्यके होवै हैं इति । तहां अन्य स्मृति । "मुखजानामयं धर्मो वैष्णवं लिंगधारणं । बाहुजातोरुजातानां नायं धर्मो विधीयते" । अर्थ यह । परमेश्वरके मुखतैं उत्पन्न भये जो ब्राह्मण हैं । तिन ब्राह्मणोंकाही यह दंडादिकचिन्हधारणपूर्वक संन्यास धर्म है । परमेश्वरके बाहुतैं उत्पन्न भये जो क्षत्रिय हैं । तथा परमेश्वरके ऊरुस्थलतैं उत्पन्न भये जो वैश्य हैं । तिन क्षत्रिय वैश्योंकूं यह लिंगसंन्यास विधान नहीं करा है इति । इत्यादिक अनेक श्रुतिस्मृतिवचनोंविषे ब्राह्मणकूंही संन्यास आश्रमका अधिकार कथन करा है । क्षत्रियवैश्यकूं संन्यासका अधिकार कथन करा नहीं । या प्रकारके अभिप्रायकरिकैही श्रीभगवान्नैं अर्जुनके प्रति युद्धादिक कर्मोंतैं विना तुमारे शरीरके खानपानादिक व्यवहारभी सिद्ध नहीं होवैंगे या प्रकारका वचन कथन करा है इति ॥ ८ ॥ ❁ ॥ शंका । हे भगवन् "कर्मणा बध्यते जंतुर्विद्यया च विमुच्यते" । अर्थ यह । यह जीव कर्मोंकरिकै तौ संसारविषे बंधायमान होवै है । और विद्याकरिकै ता संसारतैं मुक्त होवै है इति । या स्मृतिवचनकरिकै तिन सर्व कर्मोंविषे बंधकी हेतुताही सिद्ध होवै है । यातैं मुमुक्षु जननैं ते बंधके हेतुभूत कर्म करणेकूं योग्य नहीं हैं । ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए । श्रीभगवान् ता अर्जुनके प्रति काम्यकर्मोंकूंही बंधकी हेतुता है ईश्वर अर्पण बुद्धिकरिकै करे हुए कर्मोंकूं बंधकी हेतुता नहीं है या प्रकारका उत्तर कथन करे हैं ।

(मू. श्लो.) यज्ञार्थात्कर्मणोन्यत्र लोकोयं कर्मबंधनः । तदर्थं कर्म कौंतेय मुक्तसंगः समाचर ॥ ९ ॥ (पदच्छेदः) यज्ञार्थात् । कर्मणः । अन्यत्र । लोकः । अयं । कर्मबंधनः । तदर्थं । कर्म । कौंतेय । मुक्तसंगः । समाचर ॥ ९ ॥ (पदार्थः) हे अर्जुन यह लोक परमेश्वरके आराधनअर्थ कर्मतैं अन्य कर्मविषेही कर्मकरिकै बंधायमान होवै है यातैं तूं फलकी इच्छातैं रहित होइकै ता परमेश्वर आराधन अर्थ कर्मकूं भली प्रकार कर ॥ ९ ॥

टीका । "यज्ञो वै विष्णुः" । अर्थ यह । विष्णुभगवान् यज्ञरूप हैं । या श्रुतितैं यज्ञ नाम परमेश्वरका वाचक सिद्ध होवै है । ता परमेश्वरके आराधन वा-

सतै जो नित्यनैमित्तिक कर्म करीते हैं तिन कर्मोंका नाम यज्ञार्थ कर्म है। ऐसे निष्काम कर्मोंतें भिन्न जो स्वर्गादिक फलोंकी प्राप्तिवासतै काम्य कर्म हैं। तिन काम्य कर्मोंविषे प्रवृत्त हुए यह कर्मोंके अधिकारी जनही तिन काम्य कर्मोंकरिकै बंधायमान होवै हैं। और परमेश्वरके आराधनअर्थ करे जो कर्म हैं तिन निष्काम कर्मोंकरिकै यह अधिकारी जन बंधायमान होवै नहीं। यातैं " कर्मणा बध्यते जंतुः " यह पूर्व उक्त स्मृतिभी केवल काम्यकर्मोंविषेही बंधनकी हेतुता कथन करे है। निष्काम कर्मोंविषे बंधनकी हेतुता कथन करै नहीं। यातैं हे अर्जुन तूं स्वर्गादिक फलोंकी इ-च्छातैं रहित होइकै केवल परमेश्वरके आराधनअर्थ श्रद्धाभक्तिपूर्वक तिन नित्यनैमित्तिक कर्मोंकूं कर इति ॥ ९ ॥ ❀ ॥ किंवा भगवान् प्र-जापतिके वचनतैंभी या अधिकारी पुरुषनैं ते कर्मही करणेकूं योग्य हैं। या अर्थकूं श्रीभगवान् चारि श्लोकोंकरिकै अर्जुनके प्रति कथन करे हैं।

(मू.श्लो.) सहयज्ञाः प्रजाः सृष्ट्वा पुरोवाच प्रजापतिः। अनेन प्रसविष्यध्वमेष वोस्त्विष्टकामधुक् ॥ १० ॥ (पदच्छेदः) सहयज्ञाः। प्रजाः। सृष्ट्वा। पुरा। उवाच। प्रजापतिः। अनेन। प्रसविष्यध्वं। एषः। वः। अस्तु। इष्टकामधुक ॥ १० ॥ (पदार्थः) हे अ-र्जुन कल्पके आदिविषे प्रजापति यज्ञके अधिकारी प्रजाकूं उत्पन्न करिकै यह वचन कहता भया है प्रजा इसँ यज्ञकरिकै तुम वृद्धिकूं प्राप्त होवो जिस कारणतैं यह यज्ञही तुमारेकूं मनवांछित फलोंकी प्राप्ति करणेहारा होवो ॥ १० ॥

टीका। श्रुतिस्मृतियोंकरिकै विधान करे जो स्ववर्णआश्रमके यज्ञादिरूप कर्म हैं तिन कर्मोंके सहित जे वर्त्तमान होवैं तिनोंका नाम सहयज्ञ है। अर्थात् कर्मोंके अधिकारियोंका नाम सहयज्ञ है। ऐसे यज्ञादिरूप कर्मोंके अधिकारी ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य या त्रैवर्णिक प्रजाकूं सृष्टिके आदिकालविषे रचिकरिकै परम कृपालु भगवान् प्रजापति ता त्रैवर्णिक प्रजाके प्रति या प्रकारका वचन कहता भया। हे प्रजा अपणे अपणे वर्ण आश्रमकरिकै उ-चित जो यह यज्ञादिरूप धर्म है ता यज्ञादिरूप धर्मकरिकै तुम उत्तरउत्तरकालविषे वृद्धिकूं प्राप्त होवौ। शंका। इस यज्ञादिरूप धर्मकरिकै किस प्र-कार वृद्धि होवै है। ऐसी शंकाके हुए प्रजापति कहे हैं (एष वोस्त्विष्टकामधुक् इति) हे प्रजा यह यज्ञादिरूप धर्मही तुम अधिकारी जनोंकूं मन-वांछित फलोंकी प्राप्ति करणेहारा होवो इति। शंका। (सहयज्ञाः) या वचनविषे करा जो यज्ञका ग्रहण है। सो यज्ञका ग्रहण अवश्य करणे-योग्य नित्यनैमित्तिक कर्मोंकाही उपलक्षक है। काम्य कर्मोंका उपलक्षक है नहीं। काहेतैं तिन कर्मोंके नहीं करणेतैं प्रत्यवायकी प्राप्ति आगे कथन

करणी है । सा प्रत्यवायकी प्राप्ति नित्यनैमित्तिक कर्मोंके नहीं करणेतैंही होवै है । काम्य कर्मोंके नहीं करणेतैं कोई प्रत्यवायकी प्राप्ति होवै नहीं । किंवा इस गीताशास्त्रविषे तिन काम्य कर्मोंके कहणेका कोई प्रसंगभी है नहीं । उलटा (मा कर्मफलहेतुर्भूः) इस वचनकरिकै तिन काम्य कर्मोंका निषेधही करा है । यातैं निष्काम कर्मोंके प्रसंगविषे यह यज्ञादिरूप धर्म तुमारेकूं मनवांछित फलोंकी प्राप्ति करैगा यह फलका कथन असंगत है । समाधान । काम्य कर्मोंकी न्यांई तिन नित्यनैमित्तिक कर्मोंकाभी सो आनुषंगिक फल संभव होइ सकै है । यह वार्त्ता आपस्तंब ऋषिनैंभी कथन करी है । "तद्यथाम्रे फलार्थे निर्मितेच्छाया गंधे इत्यनूत्पद्येते एवं धर्म चर्यमाणमर्था अनूत्पद्यंते नोचेदनूत्पद्यंते न धर्महानिर्भवतीति" । अर्थ यह । जैसे किसी पुरुषनैं फलोंकी प्राप्तिवास्तै लगाया हुआ जो आम्रका वृक्ष है ता आम्रवृक्षके छाया सुगंध यह दोनों आनुषंगिक फल ता लगावणेहारे पुरुषकूं अवश्य प्राप्त होवैं हैं । तैसे या अधिकारी पुरुषनैं स्वधर्म जानिकरिकै करे जो नित्यनैमित्तिक कर्म हैं । तिन कर्मोंतैं अनंतर ता कर्मकर्त्ता पुरुषकूं मनवांछित पदार्थोंकी प्राप्तिरूप आनुषंगिक फल अवश्य होवै है । जो कदाचित् ता कर्मकर्त्ता पुरुषकूं सो आनुषंगिक फल नहींभी प्राप्त होवै । तौभी ता नित्यनैमित्तिकरूप धर्मकी हानि होवै नहीं । जिस कारणतैं अंतःकरणकी शुद्धिद्वारा मोक्षरूप परम फल ता पुरुषकूं अवश्यकरिकै प्राप्त होवै है इति । शंका । काम्यकर्मोंकी न्यांई जो कदाचित् नित्यकर्मोंकाभी फल अंगीकार करौगे तौ काम्र्यकर्मोंतैं नित्यकर्मोंविषे विलक्षणता सिद्ध नहीं होवैगी । समाधान । काम्यकर्म तथा नित्यकर्म या दोनोंविषे फलकी कारणताके समान हुएभी फलकी इच्छाकरिकै करे हुए कर्मकूं काम्यकर्म कहे हैं । और फलकी इच्छातैं रहित होइकै करे हुए कर्मकूं नित्यकर्म कहे हैं । या रीतिसैं तिन काम्यकर्मोंतैं नित्यकर्मोंविषे विलक्षणता संभवै है । और अनिच्छित फलकीभी वस्तुके स्वभावतैंही उत्पत्ति अंगीकार किये हुए तिन दोनोंविषे विशेषता संभवै नहीं । इस वार्त्ताकूं आगे विस्तारकरिकै निरूपण करैंगे । यातैं यह यज्ञादिरूप धर्म तुमारेकूं मनवांछित फलोंकी प्राप्ति करणेहारा होवो यह वचन असंगत नहीं है किंतु यथार्थ है । तहां स्मृति । "संध्यामुपासते ये तु सततं संशितव्रताः । विधूतपापास्ते यांति ब्रह्मलोकमनामयं" । अर्थ यह । जे पुरुष निरंतर श्रद्धाभक्तिपूर्वक संध्याकूं उपासना करे हैं । ते पुरुष सर्व पापोंतैं रहित होइकै रोगादिक विकारोंतैं रहित ब्रह्मलोककूं प्राप्त होवै हैं इति । इत्यादिक अनेक वचनोंकरिकै संध्याउपासनादिक नित्यकर्मोंका ब्रह्मलोकादिकोंकी प्राप्तिरूप आनुषंगिक फल कथन करा है इति ॥ १० ॥ ॥ शंका । हे भगवन् यज्ञादिरूप धर्मकूं मनवांछित फलोंके प्राप्तिकी हेतुता किस प्रकार है । ऐसी शंकाके हुए सो प्रजापति ता प्रकारकूं निरूपण करे हैं ।

(मू. श्लो.) देवान्भावयतानेन ते देवा भावयंतु वः। परस्परं भावयंतः श्रेयः परमवाप्स्यथ ॥ ११॥ (पदच्छेदः) देवान्। भावयत। अनेन। ते। देवाः। भावयंतु। वः। परस्परं। भावयंतः। श्रेयः। परं। अवाप्स्यथ ॥ ११ ॥ (पदार्थः) हे प्रजा तुम अधिकारी ईस यज्ञादिरूप धर्मकरिकै इंद्रादिक देवतावोंकूं संतुष्ट करो तिसतैं अनंतर ते इंद्रादिक देवता तुमारेकूं संतुष्ट करैं इस प्रकार परस्पर संतुष्ट करते हुए तुम दोनों परम श्रेयकूं प्राप्त होवौंगे ॥ ११ ॥

टीका। हे प्रजा तुम सर्व यजमान इस यज्ञादिरूप धर्मकरिकै इंद्रादिक देवतावोंकूं संतुष्ट करो। और ता यज्ञविषे हविर्भागोंकरिकै तुमोंनैं संतुष्ट करे हुए जो इंद्रादिक देवता हैं ते इंद्रादिक देवता जलकी वृष्टि आदिकोंतैं अन्नकी उत्पत्तिद्वारा तुम यजमानोंकूं संतुष्ट करैं। इस प्रकार परस्पर संतुष्ट करते हुए तुम प्रजा तथा इंद्रादिक देवता दोनोंही मनवांछित अर्थरूप परम श्रेयकूं प्राप्त होवौंगे। तहां तुमारेकूं संतुष्ट करणेतैं इंद्रादिक देवता तौ तृप्तिरूप परम श्रेयकूं प्राप्त होवैंगे। और इंद्रादिक देवतावोंकूं संतुष्ट करणेतैं तुम प्रजा स्वर्गरूप परम श्रेयकूं प्राप्त होवौंगे इति ॥ ११ ॥ ❀ ॥ किंवा ता यज्ञादिकरूप धर्मकरिकै तुमारेकूं केवल परलोकविषे स्थित स्वर्गादिरूप फलकीही प्राप्ति नहीं होवैगी। किंतु इस लोकविषे स्थित अन्न, सुवर्ण, पशु आदिक फलकीभी प्राप्ति होवैगी। या अर्थकूं प्रजापति कथन करे हैं।

(मू. श्लो.) इष्टान्भोगान्हि वो देवा दास्यंते यज्ञभाविताः। तैर्दत्तानप्रदायैभ्यो यो भुंक्ते स्तेन एव सः ॥ १२ ॥ (पदच्छेदः) इष्टान्। भोगान्। हि। वः। देवाः। दास्यंते। यज्ञभाविताः। तैः। दत्तान्। अप्रदाय। एभ्यः। यः। भुंक्ते। स्तेनः। एव। सः ॥ १२ ॥ (पदार्थः) जिस कारणतैं यज्ञकरिकै संतुष्ट हुए यह देवता तुमारे तांई मनवांछित भोगोंकूं देवैंगे तिस कारणतैं तिन देवतावोंनैं दीये हुए भोगोंकूं ईन देवतावोंके तांई न देकरिकै जो पुरुष भोगे है सो पुरुष चौर ही है ॥ १२ ॥

टीका। हे प्रजा इस प्रकार श्रौत स्मार्त यज्ञरूप धर्मकरिकै संतुष्ट हुए जो इंद्रादिक देवता हैं। ते इंद्रादिक देवता तुम कर्मकर्त्ता यजमानोंके तांई अन्न, पशु, सुवर्ण इत्यादिक मनवांछित भोगोंकूं देवैंगे। और जैसे कोई पुरुष किसी अन्य पुरुषके प्रति ऋण देवै है। तैसे तिन इंद्रादिक देवतावोंनैं तुमारे तांई दीये जो अन्नादिक भोग हैं। तिन भोगोंकूं तिन इंद्रादिक देवतावोंके तांई न देकरिकै अर्थात् इंद्रादिक देवतावोंके उद्देशकरिकै व्री-

हियवादिक पदार्थोंका त्यागरूप जो वैश्वदेव, अग्निहोत्र, जातेष्टि इत्यादिक नित्यनैमित्तिक याग हैं तिनोंकूं न करिकै जो पुरुष केवल अपणे देहइंद्रियादिकोंकी पुष्टि करणेवासतै तिन अन्नादिक पदार्थोंकूं भोगे है। सो पुरुष तिन देवतावोंका चौरही है तथा कृतघ्न है। काहेतैं तिस पुरुषनैं देवतावोंके अन्नादिक पदार्थोंकूं तौ हरण करा है। और यज्ञादिकोंकरिकै तिन देवतावोंके ऋणकी निवृत्ति करी नहीं इति ॥ १२ ॥ ॥ किंवा तिन यज्ञादिक कर्मोंके न करणेतैं या अधिकारी पुरुषकूं केवल चौरभावकी तथा कृतघ्नताकी प्राप्ति होवै नहीं। किंतु तिन यज्ञादिक कर्मोंके नहीं करणेतैं या अधिकारी पुरुषकूं प्रत्यवायकीभी प्राप्ति होवै है। या अर्थकूं अन्वयव्यतिरेककरिकै निरूपण करे हैं।

(मू. श्लो.) यज्ञशिष्टाशिनः संतो मुच्यंते सर्वकिल्बिषैः। भुंजते ते त्वघं पापा ये पचंत्यात्मकारणात् ॥ १३ ॥ (पदच्छेदः) यज्ञशिष्टाशिनः। संतः। मुच्यंते। सर्वकिल्बिषैः। भुंजते। ते। तु। अघं। पापाः। ये। पचंति। आत्मकारणात् ॥ १३ ॥ (पदार्थः) जे पुरुष यज्ञके शेष अन्नकूं भोजन करे हैं ते शिष्ट पुरुष सर्व पापोंनैं परित्याग करीते हैं तथा जे पापात्मा पुरुष केवल अपणे वासतैही अन्नकूं पकावे हैं ते पुरुष पापकूंही भोजन करे हैं ॥ १३ ॥

टीका। जे अधिकारी पुरुष ऋषियज्ञ, देवयज्ञ, पितृयज्ञ, मनुष्ययज्ञ, भूतयज्ञ या पंच यज्ञोंकूं करिकै परिशेषतैं रहे हुए अमृतरूप अन्नकूं भोजन करे हैं। ते पुरुषही शिष्ट कहे जावै हैं। काहेतैं श्रद्धाभक्तिपूर्वक वेदविहित कर्मोंके करणेहारे पुरुषकूंही शास्त्रविषे शिष्ट कह्या है। ऐसे शिष्ट पुरुष सर्व पापोंनैं परित्याग करीते हैं। तात्पर्य यह। प्रमादकरिकै करे हुए जो पाप हैं। तथा पंचसूनारूप निमित्ततैं उत्पन्न हुए जो पाप हैं। तथा विहित कर्मोंके न करणेकरिकै प्राप्त भये जो पाप हैं। तिन सर्व पापोंतैं ते पुरुष रहित होवै हैं इति। इतनै कहणेकरिकै तिन यज्ञादिकोंके करणेहारे पुरुषकूं पापके प्राप्तिका अभाव कथन करा। अब तिन यज्ञादिक कर्मोंके नहीं करणेहारे पुरुषकूं प्रत्यवायके प्राप्तिका कथन करे हैं (भुंजते ते तु इति) तिन पंचमहायज्ञोंकूं नहीं करते हुए जे पापात्मा पुरुष केवल अपणे उदरके भरण करणेवासतैही अन्नकूं पकावै हैं। देवता, अतिथि आदिकोंके वासतै अन्नकूं पकावते नहीं। ते पुरुष केवल पापकूंही भोजन करे हैं। अन्नकूं भोजन करते नहीं। यद्यपि तिन पापात्मा पुरुषोंकी दृष्टिकरिकै तौ सो अन्न है। तथापि शास्त्रकी दृष्टिकरिकै तथा देवतावोंकी दृष्टिकरिकै सो अन्न पापरूपही है इति। इहां (पापाः अघं भुंजते) या वचनकरिकै यह अर्थ बोधन क-

रा। जे पुरुष तिन पंचयज्ञोंकूं न करिकै केवल अपणे उदरके भरण करणेवासतैही अन्नकूं पकावे हैं। ते पुरुष पूर्वही पंचसूनाकृत पापवाले तथा प्रमादकृत हिंसाजन्य पापवाले हुएभी पुनः वैश्वदेवादिक नित्यकर्मोंके नहीं करणेजन्य दूसरे पापकूं प्राप्त होवै हैं इति। तहां स्मृति। "कंडनी पेषणी चुल्ली उदकुंभी च मार्जनी। पंचसूना गृहस्थस्य ताभिः स्वर्गं न विंदति। पंचसूनाकृतं पापं पंचयज्ञैर्व्यपोहति"। अर्थ यह। गृहस्थ पुरुषोंके गृहविषे जीवोंकी हिंसा होणेके पंचस्थान होवै हैं। एक तौ ऊखलविषे अन्नके कूटणेतैं जीवोंकी हिंसा होवै है। और दूसरा पाषाणकी चक्कीविषे अन्नके पीसणेतैं जीवोंकी हिंसा होवै है। और तीसरा अन्नके पकावणेवासतै चुल्हेविषे अग्निके जगावणेतैं जीवोंकी हिंसा होवै है। और चौथा पात्रोंविषे जलके भरणेतैं जीवोंकी हिंसा होवै है। और पंचमा मृत्तिकाजलादिकोंसैं घरके मार्जन करणेतैं जीवोंकी हिंसा होवै है। ता पंच प्रकारकी जीवहिंसाकरिकै यह गृहस्थ पुरुष स्वर्गकूं प्राप्त होता नहीं। और तिन पंच हिंसास्थानोंतैं उत्पन्न भये जो पाप हैं। ते पाप पंचयज्ञोंकरिकै निवृत्त होवै हैं इति। ते पंचयज्ञ यह हैं। तहां श्लोक। "ऋषियज्ञं देवयज्ञं भूतयज्ञं च सर्वदा। नृयज्ञं पितृयज्ञं च यथाशक्ति न हापयेत्"। अर्थ यह। यह ब्राह्मणादिक गृहस्थ पुरुष दिनदिनविषे ऋषियज्ञ, देवयज्ञ, भूतयज्ञ, मनुष्ययज्ञ, पितृयज्ञ यह पंच यज्ञ यथाशक्ति करैं। इन पंच यज्ञोंका परित्याग कदाचित्‌भी नहीं करैं इति। तहां वेदका पठन पाठन करणा तथा संध्योपासन करणा याका नाम ऋषियज्ञ है। और अग्निहोत्रादिकोंका करणा याका नाम देवयज्ञ है। और बलि, वैश्वदेवकूं करणा याका नाम भूतयज्ञ है। और गृहविषे प्राप्त हुए अतिथिका अन्नादिकोंकरिकै संतोष करणा याका नाम मनुष्ययज्ञ है। और श्राद्ध तर्पणकूं करणा याका नाम पितृयज्ञ है इति। तिन यज्ञोंके नहीं करणेहारे गृहस्थ पुरुषोंकूं दोषकी प्राप्ति पाराशरस्मृतिविषेभी कथन करी है। तहां श्लोक। "वैश्वदेवविहीना ये आतिथ्येन विवर्जिताः। सर्वे ते नरकं यांति काकयोनिं व्रजंति ते। काष्ठभारसहस्रेण घृतकुंभशतेन च। अतिथिर्यस्य भग्नाशस्तस्य होमो निरर्थकः"। अर्थ यह। जे ब्राह्मणादिक गृहस्थ वैश्वदेव करणेतैं रहित हैं। तथा अतिथिके प्रति भोजन देणेतैं रहित हैं। ते पुरुष मरिकरिकै नरककूं प्राप्त होवै हैं। तिसतैं अनंतर काकयोनिकूं प्राप्त होवै हैं इति। किंवा जिस गृहस्थ पुरुषके गृहतैं अतिथि पुरुष अन्नादिकोंकी प्राप्तितैं विना निराश चल्या जावै है। तिस गृहस्थ पुरुषनैं काष्ठोंके सहस्र भारोंकरिकै तथा घृतके शत कुंभोंकरिकै करा हुआ जो होम है। सो होम ता पुरुषकूं किंचित्‌मात्रभी फलकी प्राप्ति करै नहीं इति। अतिथिका लक्षण पाराशरस्मृतिविषे यह कह्या है। तहां श्लोक। "दूराध्वोपगतं श्रांतं वैश्वदेव उपस्थितं। अतिथिं तं विजानीयान्नातिथिः पूर्वमागतः। चौरो वा यदि चांडालः शत्रुर्वा पितृघातकः। वैश्वदेवे तु संप्राप्ते सोतिथिः सर्वसंगमः। न पृच्छेद्गोत्रचरणे

स्वाध्यायं च व्रतानि च। हृदयं कल्पयेत्तस्मिन्सर्वदेवमयो हि सः"। अर्थ यह। जो पुरुष दूर मार्गतैं चलिके आया होवै तथा थक्या होवै तथा वैश्वदेवके करणेके कालविषे प्राप्त होवै ताकूं अतिथि जानणा। और जो अपणे पुरोहितादिक पूर्वही तहां प्राप्त हैं ते पुरोहितादिक अतिथि नहीं कहे जावै हैं इति। और वैश्वदेव करणेके कालविषे ब्राह्मणादिक गृहस्थ पुरुषोंके गृहविषे जो कोई अन्नार्थी चौर आवै अथवा चांडाल आवै अथवा शत्रु आवै अथवा पिताके हनन करणेहारा आवै सो अन्नार्थी पुरुष अतिथि जानणा तथा सर्व सत्संगादिकोंका कारण जानणा इति। किंवा यह गृहस्थ पुरुष गृहविषे प्राप्त हुए ता अन्नार्थी अतिथिका गोत्र नहीं पूछै। तथा वेदकी शाखादिकभी नहीं पूछै तथा ऋग्वेदादिकोंका अध्ययनभी नहीं पूछै। तथा ब्रह्मचर्यादिक व्रतभी नहीं पूछै। किंतु सो गृहस्थ पुरुष ता अतिथिविषे यह अतिथि सर्वदेवमय विष्णुरूप है या प्रकारकी भावना करिकै ता अतिथिके प्रति अन्नादिक देवै इति। यातैं जे ब्राह्मणादिक गृहस्थ पुरुष पूर्व उक्त पंचयज्ञोंकूं न करिकै केवल अपणे उदर भरणेवासतैही अन्नकूं पकावे हैं। ते पुरुष अन्नरूपकरिकै स्थित पापकूंही भोजन करे हैं इति ॥ १३ ॥ ❀ ॥ किंवा केवल पूर्व उक्त प्रजापतिके वचनमात्रतैंही ते यज्ञादिक कर्म करणेकूं योग्य नहीं हैं। किंतु या जगतरूप चक्रके प्रवृत्तिका हेतु होणेतैंभी ते यज्ञादिक कर्म करणेकूं योग्य हैं। या अर्थकूं श्रीभगवान् अर्जुनके प्रति तीन श्लोकोंकरिकै कथन करे हैं।

(मू. श्लो.) अन्नाद्भवंति भूतानि पर्जन्यादन्नसंभवः। यज्ञाद्भवति पर्जन्यो यज्ञः कर्मसमुद्भवः ॥ १४ ॥ (पदच्छेदः) अन्नात्। भवंति। भूतानि। पर्जन्यात्। अन्नसंभवः। यज्ञात्। भवति। पर्जन्यः। यज्ञः। कर्मसमुद्भवः ॥ १४ ॥ (पदार्थः) हे अर्जुन अन्नतैं शरीर उत्पन्न होवै है और ता अन्नका जन्म जलकी वृष्टितैं होवै है और सा जलकी वृष्टि अपूर्वरूप धर्मतैं उत्पन्न होवै है और सो अपूर्वरूप धर्म कर्मतैं उत्पन्न होवै है ॥ १४ ॥

टीका। हे अर्जुन भोजनद्वारा पुरुष स्त्रीयोंके शरीरविषे प्राप्त होइकै शुक्रशोणितरूपकरिकै परिणामकूं प्राप्त भया जो व्रीहियवादिक अन्न है। तिस अन्नतैंही सर्व मनुष्यादिक प्राणीयोंके शरीर उत्पन्न होवै हैं। और ता व्रीहियवादिक अन्नकी उत्पत्ति जलकी वृष्टितैं होवै है। यह वार्त्ता सर्व प्राणीयोंकूं प्रत्यक्ष सिद्ध है और कारीरीइष्टि अग्निहोत्र आदिकोंतैं उत्पन्न भया जो धर्म है। जिस धर्मकूं शास्त्रविषे अपूर्व अदृष्ट या नामकरिकै कथन करे हैं।

ता धर्मरूप यज्ञतैं सा जलकी वृष्टि उत्पन्न होवै है। तहां मनुस्मृति। "अग्नौ प्रास्ताहुतिः सम्यगादित्यमुपतिष्ठते। आदित्याज्जायते वृष्टिर्वृष्टेरन्नं ततः प्रजाः"। अर्थ यह। वैदिक अग्निविषे प्रातःसायंकालमैं श्रद्धाभक्तिपूर्वक पाई हुई जो घृतादिक पदार्थोंकी आहुति हैं सा आहुति सूक्ष्मरूपकरिकै आदित्यविषे स्थित होवै है। ता आहुतिविशिष्ट आदित्यतैं मेघोंद्वारा जलकी वृष्टि उत्पन्न होवै है। ता जलकी वृष्टितैं व्रीहियवादिक अन्न उत्पन्न होवै हैं। और ता अन्नतैं यह मनुष्यादिक शरीर उत्पन्न होवै हैं इति। और सो धर्मरूप यज्ञ अग्निहोत्र कारीरी इष्टि आदिक कर्मोंतैं उत्पन्न होवै है इति॥१४॥ ॥किंच

(मू.श्लो.) कर्म ब्रह्मोद्भवं विद्धि ब्रह्माक्षरसमुद्भवं। तस्मात्सर्वगतं ब्रह्म नित्यं यज्ञे प्रतिष्ठितं॥१५॥ (पदच्छेदः) कर्म। ब्रह्मोद्भवं। विद्धि। ब्रह्म। अक्षरसमुद्भवं। तस्मात्। सर्वगतं। ब्रह्म। नित्यं। यज्ञे। प्रतिष्ठितं॥१५॥ (पदार्थः) हे अर्जुन ता अग्निहोत्रादिक कर्मकूं तूं वेदतैं उत्पन्न हुआ जान और ता वेदकूं परमात्मादेवतैं उत्पन्न हुआ जान तिस कारणतैंही सर्व अर्थका प्रकाशक तथा नाशतैं रहित सो वेद ता धर्मरूप यज्ञविषे स्थित है॥१५॥

टीका। ब्रह्म नाम वेदका है सो वेदरूप ब्रह्म है प्रमाण जिसविषे ताका नाम ब्रह्मोद्भव है। तिस अग्निहोत्रादिक कर्मकूं तूं ब्रह्मोद्भव जान। तात्पर्य यह। वेदनैं विधान करा जो अग्निहोत्रादिक कर्म है। ता कर्मकूंही तूं अपूर्वरूप धर्मका साधन जान। दूसरे पाखंडशास्त्रोंनैं प्रतिपादन करे हुए कर्मोंकूं तुमनैं ता अपूर्वरूप धर्मका साधन जाणना नहीं इति। शंका। हे भगवन् तिन पाखंडशास्त्रोंकी अपेक्षाकरिकै वेदविषे कौन विलक्षणता है। जिस विलक्षणताकरिकै वेदप्रतिपादित अर्थही धर्मरूप होवै है। दूसरे पाखंडशास्त्रप्रतिपादित अर्थ धर्मरूप नहीं होवै हैं। ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् ता वेदविषे दूसरे पाखंडशास्त्रोंतैं विलक्षणता कथन करे हैं। (ब्रह्माक्षरसमुद्भवं इति) हे अर्जुन भ्रम, प्रमाद, करणाऽपाटव, विप्रलिप्सा इत्यादिक सर्व दोषोंतैं रहित जो परमात्मा देव है। ता अक्षर परमात्मादेवतैंही पुरुषके निःश्वासोंकी न्यांई विनाही प्रयत्नतैं सो ऋग्, यजुष्, साम अथर्वणरूप वेद प्रादुर्भाव हुआ है। या कारणतैं भ्रम प्रमाद आदिक दोषोंकी शंकातैं रहित हुए ते अपौरुषेय वेदोंके वचनही धर्मरूप अतिइंद्रिय अर्थविषयक प्रमाकी जनकताकरिकै प्रमाणरूप हैं। भ्रम प्रमाद आदिक दोषोंवाले पुरुषोंकरिकै रचित पाखंडवाक्य ता अतिइंद्रिय धर्मविषयक प्रमाकूं उत्पन्न करै नहीं। यातैं ते पाखंडशास्त्र ता धर्मविषे प्रमाणरूप हैं नहीं। इहां अन्य पदार्थविषे अन्य बुद्धिका नाम भ्रम है। और अवश्य करणेयो-

ग्य अर्थकूंभी नहीं करणा याका नाम प्रमाद है। और नेत्रादिक करणोंविषे वस्तुके यथार्थ ग्रहण करणेकी नहीं शक्ति होणी याका नाम करणाऽपाटव है । अन्य लोकोंके वंचन करणेकी इच्छाका नाम विप्रलिप्सा है इति। तहां अक्षरपरमात्मा देवतैंही वेदोंका प्रादुर्भाव होवै है यह वार्त्ता श्रुतिविषेभी कही है। तहां श्रुति। "अस्य महतो भूतस्य निःश्वसितमेतद्यदृग्वेदो यजुर्वेदः सामवेदोऽथर्वांगिरस इतिहासः पुराणं विद्या उपनिषदः श्लोकाः सूत्राण्यनुव्याख्यानानि व्याख्यानानि इति"। अर्थ यह। ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्वणवेद यह चारि वेद इस महान् परमात्मा देवके निःश्वासरूप हैं। ते चारों वेद, इतिहास, पुराण, विद्या, उपनिषद्, श्लोकसूत्र, अनुव्याख्यान, व्याख्यान, या भेदकरिकै अष्ट प्रकारके हैं इति। इतिहास, पुराण आदिक अष्टोंका अर्थ आत्मपुराणके सप्तम अध्यायविषे हम विस्तारतैं निरूपण करि आये हैं। इस प्रकार साक्षात्परमात्मा देवतैंही उत्पन्न होणेतैं सर्व अर्थका प्रकाशक तथा अविनाशी जो वेद है। सो वेद अतिइंद्रिय धर्मरूप यज्ञविषे अपणे तात्पर्यकरिकै स्थित होवै है। यातैं पाखंडशास्त्रकरिकै प्रतिपादित निकृष्ट धर्मका परित्याग करिकै या अधिकारी पुरुषनैं वेदप्रतिपादित धर्मही अनुष्ठान करणा इति ॥ १५ ॥ ❀ शंका। हे भगवन् इस प्रकार वेदादिकोंकी उत्पत्ति होवौ ता कहणेकरिकै इहां प्रसंगविषे क्या फल सिद्ध होवै है। ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् कहे हैं ।

(मू. श्लो.) एवं प्रवर्तितं चक्रं नानुवर्तयतीह यः । अघायुरिंद्रियारामो मोघं पार्थ स जीवति ॥ १६ ॥ (पदच्छेदः) एवं । प्रवर्तितं । चक्रं । न । अनुवर्तयति । इह । यः । अघायुः । इंद्रियारामः । मोघं । पार्थ । सः । जीवति ॥ १६ ॥ (पदार्थः) हे अर्जुन इस लोकविषे जो अधिकारी पुरुष इस प्रकार प्रवृत्त हुए चक्रकूं नहीं अंगीकार करे हैं सो पाप जीवन इंद्रियाराम पुरुष व्यर्थही जीवता है ॥ १६ ॥

टीका। हे अर्जुन प्रथम सर्वज्ञ परमेश्वरतैं सर्व अर्थकूं प्रकाश करणेहारे नित्य निर्दोष वेदका प्रादुर्भाव होवै है । तिसतैं अनंतर ता वेदउक्त कर्मोंका ज्ञान होवै है । ता कर्मोंके ज्ञानतैं अनंतर तिन कर्मोंके अनुष्ठानतैं अपूर्वरूप धर्मकी उत्पत्ति होवै है। तिस धर्मकी उत्पत्तितैं अनंतर जलकी वृष्टि होवै है। तिस जलकी वृष्टितैं व्रीहियवादिक अन्न उत्पन्न होवै हैं । ता अन्नतैं मनुष्यादिक भूत उत्पन्न होवै हैं । तिसतैं अनंतर तिन मनुष्यादिकोंकी पुनः कर्मोंविषे प्रवृत्ति होवै है । इस प्रकार सर्व जगतके निर्वाह करणेवासतै परमेश्वरनैं प्रवृत्त करा जो यह चक्र है तिस चक्रकूं जो अधिकारी पुरुष नहीं

अंगीकार करे है । सो पुरुष पापरूप जीवनवाला होणेतैं व्यर्थही जीवता है । अर्थात् तिस पुरुषके जीवनेतैं मरणही श्रेष्ठ है । काहेतैं ता शरीरका परित्याग करिकै दूसरे जन्मविषे ता पुरुषकूंभी कदाचित् धर्मका अनुष्ठान संभव होइ सकै है । तथा इस जन्मविषे वेदविहित कर्मोंके न करणेतैं जो पापका संग्रह होवै है तिसतैंभी रहित होवै है । यातैं ता पुरुषके जीवनेतैं मरणही श्रेष्ठ है । शंका । हे भगवन् ता पूर्व उक्त चक्रकूं नहीं अंगीकार करणेहारा जो ब्रह्मवेत्ता पुरुष है तिसकाभी जीवन निष्फल होवैगा । ऐसी अर्जुनकी शंकाके निवृत्त करणेवासतै श्रीभगवान् ता अज्ञानी पुरुषका विशेषण कहे हैं (इंद्रियाराम इति) श्रोत्रादिक इंद्रियोंकरिकै शब्दादिक विषयोंविषे जो पुरुष रमण करे है ताका नाम इंद्रियाराम है ऐसा विषयलंपट पुरुष केवल कर्मोंकाही अधिकारी होवै है । तिन कर्मोंका अधिकारी हुआभी जो पुरुष तिन कर्मोंकूं नहीं करै है । सो पुरुष तिन विहित कर्मोंके न करणेतैं केवल पापकाही संग्रह करता हुआ व्यर्थही जीवै है । और जीवन्मुक्त विद्वान् पुरुष इंद्रियाराम है नहीं । यातैं तिन कर्मोंके न करणेतैं सो विद्वान् पुरुष प्रत्यवायकूं प्राप्त होवै नहीं इति ॥ १६ ॥ ❀ ॥ किंवा । जो पुरुष इंद्रियाराम नहीं है तथा परमार्थ वस्तुकूं सर्वदा देखणेहारा है । सो विद्वान् पुरुष इस जगतरूप चक्रके हेतुभूत कर्मोंका नहीं अनुष्ठान करता हुआभी प्रत्यवायकूं प्राप्त होवै नहीं । जिस कारणतैं सो विद्वान् पुरुष कृतकृत्यभावकूं प्राप्त हुआ है । या अर्थकूं श्रीभगवान् दो श्लोकोंकरिकै कथन करै हैं ।

(मू. श्लो.) यस्त्वात्मरतिरेव स्यादात्मतृप्तश्च मानवः । आत्मन्येव च संतुष्टस्तस्य कार्यं न विद्यते ॥ १७ ॥ (पदच्छेदः) यः । तु । आत्मरतिः । एव । स्यात् । आत्मतृप्तः । च । मानवः । आत्मनि । एव । च । संतुष्टः । तस्य । कार्यं । न । विद्यते ॥ १७ ॥ (पदार्थः) हे अर्जुन पुनः जो मनुष्य आत्माविषे प्रीतिवाला ही होवै है तथा आत्माकरिकैही तृप्त होवै है तथा आत्माविषे ही संतुष्ट होवै है तिस पुरुषकूं किंचित्मात्रभी कार्य नहीं कर्तव्य होवै है ॥ १७ ॥

टीका । हे अर्जुन जो पुरुष इंद्रियाराम होवै है । सो विषयलंपट पुरुष स्रक्, चंदन, वनिता आदिक विषयोंकी प्राप्ति करिकैही रतिकूं अनुभव करै है । तथा सो पुरुष मनोहर अन्नपानादिक पदार्थोंकी प्राप्तिकरिकैही तृप्तिकूं अनुभव करै है । तथा सो इंद्रियाराम पुरुष सुवर्ण, पुत्र, पशु आदिक पदार्थोंकी प्राप्तिकरिकै तथा रोगादिकोंकी अप्राप्तिकरिकैही तुष्टिकूं अनुभव करै है । तिन पदार्थोंके अप्राप्त हुए तिन इंद्रियाराम रागी पुरुषोंविषे यथा-

क्रमतैं अरति, अतृप्ति, अतुष्टिही देखणेविषे आवै है। इहां रति, तृप्ति तुष्टि यह तीनों मनकी वृत्तिविशेष हैं। ते तीनों साक्षीरूप अनुभवकरिकै सिद्ध हैं। और जिस विद्वान् पुरुषकूं परमानंदस्वरूप परमात्मा देवकी प्राप्ति भई है। सो विद्वान् पुरुष द्वैतदर्शनके अभावतैं तथा विषयसुखोंविषे तुच्छबुद्धिवाला होणेतैं तिन विषयसुखोंकी इच्छा करता नहीं। यह वार्त्ता (यावानर्थ उदपाने) इस श्लोकविषे पूर्व कथन करि आये हैं। या कारणतैं सो ब्रह्मवेत्ता विद्वान् पुरुष आनंदस्वरूप आत्माविषेही रति करै है। स्त्री आदिक विषयोंविषे रति करै नहीं। शंका। हे भगवन् आनंदस्वरूप आत्माविषे तौ सर्व प्राणीमात्रकी निरुपाधिक प्रीति है। ता अपणे आत्माके वासतैही स्त्रीपुत्रादिकोंविषे प्रीति होवै है। यातैं ता आत्मरति विद्वान् पुरुषविषे अज्ञानी पुरुषोंतैं विलक्षणता सिद्ध होवै नहीं। ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् कहे हैं (आत्मतृप्तः इति) हे अर्जुन सो विद्वान् पुरुष परमानंदस्वरूप आत्माकरिकैही तृप्त होवै है। अज्ञानी पुरुषकी न्यांई सो विद्वान् पुरुष कोई मनोरम स्त्रीयोंकरिकै तथा मिष्ट अन्नकरिकै तृप्त होवै नहीं। शंका। हे भगवन् जिस पुरुषका जठराग्नि रोगादिकोंकरिकै मंद हुआ है। तथा धातुक्षय होइ गया है। सो पुरुष मिष्ट अन्नकरिकै तृप्त होवै नहीं। तथा मनोरम स्त्रीयोंविषेभी रमण करता नहीं। यातैं तिस रोगी पुरुषतैं ता विद्वान् पुरुषविषे विलक्षणता सिद्ध नहीं होवैगी। ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् कहे हैं (आत्मन्येव च संतुष्टः इति) हे अर्जुन सो विद्वान् पुरुष केवल आनंदस्वरूप आत्माविषेही संतोषकूं प्राप्त हुआ है। दूसरे किसी अनात्म पदार्थोंविषे सो विद्वान् पुरुष संतोषकूं प्राप्त होवै नहीं। और रोगादिकोंकरिकै जिस पुरुषका जठराग्नि मंद हुआ है तथा धातुक्षय हुआ है। सो पुरुष तौ ता जठराग्निके प्रज्वलित करणेवासतै तथा धातुकी वृद्धि करणेवासतै नाना प्रकारके औषधोंके अर्थ जहां तहां भ्रमण करै है। आनंदस्वरूप आत्माविषे सो अज्ञानी पुरुष संतोषकूं प्राप्त होवै नहीं इति। इसी विलक्षणताके बोधन करणेवासतै श्रीभगवान्नैं (यस्त्वात्मरतिः) या वचनविषे तु यह शब्द कथन करा है। तहां श्रुति। "आत्मक्रीड आत्मरतिः क्रियावानेष ब्रह्मविदां वरिष्ठः"। अर्थ यह। ब्रह्मवेत्तावोंविषे श्रेष्ठ यह विद्वान् पुरुष आनंदस्वरूप आत्माविषेही क्रीडा करै है। तथा ता आत्माविषेही रति करै है। तथा ता आत्माविषेही क्रियावान् होवै है इति। ऐसे ब्रह्मवेत्ता विद्वान् पुरुषविषे कर्मोंके अधिकारीपणेका कोई हेतु है नहीं। या कारणतैं ता विद्वान् पुरुषकूं कोईभी लौकिक, वैदिक, कार्य कर्त्तव्य नहीं हैं। किंतु सो ब्रह्मवेत्ता पुरुष कृतकृत्यही है। इहां (मानवः) या पदकरिकै श्रीभगवान्नैं यह अर्थ सूचन करा। जो कोईभी मनुष्यमात्र इस प्रकार आत्मरति होवै है तथा आत्मतृप्त होवै है तथा आत्मसंतुष्ट होवै है। सोईही मनुष्य कृतकृत्यभावकूं प्राप्त होवै है। ता कृतकृत्यभावकी प्राप्ति-

विषे ब्राह्मणत्व आदिक उत्तम जातिका किंचित्मात्रभी उपयोग नहीं है इति ॥ १७ ॥ ❀ ॥ शंका । हे भगवन् आत्मसाक्षात्कारवान् पुरुषकूं-भी स्वर्गादिक सुखोंकी प्राप्तिवासतै अथवा मोक्षकी प्राप्तिवासतै अथवा प्रत्यवायकी निवृत्तिवासतै अवश्यकरिकै ते कर्म करणे योग्य हैं ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् उत्तर कहे हैं ।

(मू. श्लो.) नैव तस्य कृतेनार्थो नाकृतेनेह कश्चन । न चास्य सर्वभूतेषु कश्चिदर्थव्यपाश्रयः ॥ १८ ॥ (पदच्छेदः) न । एव । तस्य । कृतेन । अर्थः । न । अकृतेन । इह । कश्चन । न । च । अस्य । सर्वभूतेषु । कश्चित् । अर्थव्यपाश्रयः ॥ १८ ॥ (पदार्थः) हे अर्जुन तिस विद्वान् पुरुषकूं कर्मकरिकै कोईभी प्रयोजन नहीं है तथा कर्मके न करणेकरिकै इस लोकविषे कोईभी अर्थ नहीं है जिस कारणतैं इस विद्वान् पुरुषकूं सर्व भूतोंविषे कोईभी प्रयोजनका संबंध नहीं है ॥ १८ ॥

टीका । हे अर्जुन जो पुरुष आत्मरति है तथा आत्मतृप्त है तथा आत्मसंतुष्ट है । तिस आत्मवेत्ता पुरुषकूं नित्यनैमित्तिक कर्मोंकरिकै कोईभी अभ्युदयरूप प्रयोजन तथा निःश्रेयसरूप प्रयोजन है नहीं । काहेतैं तिस विद्वान् पुरुषकूं स्वर्गादिरूप अभ्युदयके प्राप्तिकी तौ इच्छामात्रभी नहीं है । और मोक्षरूप निःश्रेयस तौ कर्मोंकरिकै साध्यही नहीं है । तहां श्रुति । " परीक्ष्य लोकान्कर्मचितान्ब्राह्मणो निर्वेदमायान्नास्त्यकृतः कृतेन इति " । अर्थ यह । यह अधिकारी ब्राह्मण पुण्यकर्मकरिकै रचित स्वर्गादिक लोकोंकूं अनित्यता सातिशयता आदिक दोषोंवाला जाणिकै तिन स्वर्गादिक लोकोंतैं वैराग्यकूं प्राप्त होवै । जिस कारणतैं आत्मारूप नित्यमोक्ष नित्यनैमित्तिक कर्मोंकरिकै प्राप्त होवै नहीं इति । इहां (नैव तस्य) या वचनविषे स्थित जो एव यह शब्द है । सो एवशब्द ता आत्मरूप नित्यमोक्षविषे ज्ञानसाध्यताकीभी निवृत्ति सूचन करे है । अर्थात् सो आत्मरूप नित्यमोक्ष जैसे कर्मोंकरिकै साध्य नहीं है तैसे ज्ञानकरिकैभी साध्य नहीं है । काहेतैं सो आत्मरूप मोक्ष वास्तवतैं तौ या जीवोंकूं नित्यही प्राप्त है । तथापि ता आत्माका जो अज्ञान है सो अज्ञानही ता मोक्षकी अप्राप्ति है । सो अज्ञान तत्त्वज्ञानमात्रकरिकै निवृत्त होवै है । ता तत्त्वज्ञानकरिकै अज्ञानके निवृत्त हुए ता विद्वान् पुरुषकूं कर्मोंकरिकै सिद्ध होणेहारा तथा तत्त्वज्ञानकरिकै सिद्ध होणेहारा कोईभी प्रयोजन बाकी रहै नहीं इति । शंका । हे भगवन् नित्यनैमित्तिक कर्मोंके नहीं करणेतैं शास्त्रविषे प्रत्यवायकी प्राप्ति कथन करी है । यातैं ता विद्वान् पुरुषनैंभी प्रत्यवायकी निवृत्ति करणेवासतै ते नित्यनैमित्तिक कर्म अवश्य क-

रणे योग्य हैं। ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए श्रीभगवान् कहे हैं (नाकृतेनेह कश्चन इति) हे अर्जुन तिस ब्रह्मवेत्ता विद्वान् पुरुषकूं नित्यनैमित्तिक कर्मोंके न करणेकरिकै इस लोकविषे किंचित्मात्रभी निंदारूप अनर्थ तथा प्रत्यवायकी प्राप्तिरूप अनर्थ होवै नहीं इति। तहां इस श्लोकके पूर्वार्द्धकरिकै कथन करे हुए सर्व अर्थविषे (न चास्य सर्वभूतेषु कश्चिदर्थव्यपाश्रयः) या उत्तरार्द्धकरिकै युक्तिका कथन करै हैं। हे अर्जुन जिस कारणतैं इस ब्रह्मवेत्ता पुरुषकूं ब्रह्मातैं आदिलैके स्थावरपर्यंत सर्व भूतोंविषे कोईभी प्रयोजनका संबंध नहीं है। अर्थात् किसीभी भूतविशेषकूं आश्रयण करिकै कोई क्रिया साध्य अर्थ है नहीं। तिस कारणतैं इस ब्रह्मवेत्ता विद्वान् पुरुषकूं तिन नित्यनैमित्तिक कर्मोंका करणा तथा तिन कर्मोंका नहीं करणा यह दोनों निःप्रयोजन हैं। तहां श्रुति। " नैनं कृताऽकृते तपतः इति "। अर्थ यह। इस ब्रह्मवेत्ता विद्वान् पुरुषकूं कर्मोंका करणा तथा कर्मोंका नहीं करणा यह दोनों तपायमान करैं नहीं इति। शंका। हे भगवन् तिस ब्रह्मवेत्ता विद्वान् पुरुषकूंभी मोक्षकी प्राप्तिविषे इंद्रादिक देवता नाना प्रकारके विघ्न करैंगे। यातैं तिन विघ्नोंकी निवृत्ति करणेवासतै ता ब्रह्मवेत्ता पुरुषनैंभी तिन देवतावोंका आराधनरूप कर्म अवश्य करना चाहिये। समाधान। हे अर्जुन आत्मज्ञानतैं पूर्वही ते देवता विघ्न करैं हैं। आत्मज्ञानकी प्राप्तितैं उत्तर मोक्षकी प्राप्तिविषे ते देवता विघ्न करणेविषे समर्थ होवैं नहीं। तहां श्रुति। " तस्य ह न देवाश्च नाभूत्या ईशत आत्मा ह्येषां स भवति "। अर्थ यह। जिस कारणतैं सो ब्रह्मवेत्ता पुरुष इन देवतावोंका आत्मारूप है। तिस कारणतैं यह इंद्रादिक देवता तिस ब्रह्मवेत्ता पुरुषके पराभव करणेविषे समर्थ होवैं नहीं इति। यातैं ता ब्रह्मवेत्ता पुरुषकूं विघ्नोंकी निवृत्ति करणेवासतै सो देवतावोंका आराधनरूप कर्मभी कर्त्तव्य नहीं है इति। ऐसा ब्रह्मवेत्ता पुरुष सप्त भूमिकावोंके भेदकरिकै वसिष्ठभगवान्नैंभी निरूपण करा है। तहां श्लोक। " ज्ञानभूमिः शुभेच्छाख्या प्रथमा परिकीर्तिता। विचारणा द्वितीया स्यात्तृतीया तनुमानसा। सत्त्वापत्तिश्चतुर्थी स्यात्ततोऽसंसक्तिनामिका। पदार्थाभावनी षष्ठी सप्तमी तुर्यगा स्मृता"। अर्थ यह। शुभइच्छा १, विचारणा २, तनुमानसा ३, सत्त्वापत्ति ४, असंसक्ति ५, पदार्थाभावनी ६ और तुरीया ७ यह भूमिका ज्ञानकी होवै हैं। तहां नित्यअनित्यवस्तुका विचार तथा इस लोक परलोकके विषयसुखोंतैं वैराग्य तथा शमदमादिक षट्संपत्ति या तीनों साधनपूर्वक जो फलपर्यंत मोक्षकी इच्छा है जिसकूं मुमुक्षुता कहे हैं ताका नाम शुभइच्छा है ॥ १ ॥ तिसतैं अनंतर श्रोत्रिय ब्रह्मवेत्ता गुरुके समीप जाइकै वेदांतवचनोंका श्रवण करणा तथा श्रवण करे हुए अर्थका मनन करणा याका नाम विचारणा है॥ २॥ तिसतैं अनंतर निदिध्यासनरूप अभ्यासतैं मनकी एकाग्रता करिकै ता मनविषे जो सूक्ष्म वस्तुके ग्रहण करणेकी योग्यता है याका नाम तनुमानसा है ॥ ३ ॥ यह तीनों भूमिका ज्ञानके

प्राप्तिका साधनरूप हैं। और या तीनों भूमिकावोंविषे यह सर्व जगत् भेदकरिकै विशिष्ट हुआ प्रतीत होवै है। यातैं यह तीनों भूमिका जाग्रत् अवस्था या नामकरिकै कही जावै हैं। यह वार्त्ताभी वसिष्ठभगवान्नैं कथन करी है। तहां श्लोक। "भूमिकात्रितयं त्वेतत् राम जाग्रदिति स्थितं। यथावद्भेदबुद्ध्येदं जगज्जाग्रति दृश्यते"। अर्थ यह। हे रामचंद्र जैसे जाग्रत् अवस्थाविषे यह जगत् यथावत् भेदबुद्धिकरिकै देख्या जावै है। तैसे या तीन भूमिकावोंविषेभी यह सर्व जगत् यथावत् भेदबुद्धिकरिकै देख्या जावै है। यातैं शुभइच्छा, विचारणा, तनुमानसा यह तीनों भूमिका जाग्रत् अवस्था या नामकरिकै कही जावै हैं इति। तिसतैं अनंतर या अधिकारी पुरुषकूं 'तत्त्वमसि' आदिक वेदांतवाक्योंतैं निर्विकल्पक ब्रह्मात्मैक्यविषयक साक्षात्कार होवै है याका नाम सत्त्वापत्ति है ॥ ४ ॥ और ता सत्त्वापत्ति नामा चतुर्थ भूमिकाविषे यह सर्व जगत् स्वप्नकी न्यांई मिथ्यारूपकरिकै प्रतीत होवै है। या कारणतैं सा फलरूप सत्त्वापत्ति स्वप्न अवस्था या नामकरिकै कही जावै है। यह वार्त्ताभी वसिष्ठ भगवान्नैं कथन करी है। तहां श्लोक। "अद्वैते स्थैर्यमायाते द्वैते प्रशममागते। पश्यति स्वप्नवल्लोकं चतुर्थी भूमिका मता"। अर्थ यह। जिस कालविषे अद्वैतकी स्थिरता प्राप्त होवै है तथा द्वैतकी निवृत्ति होवै है तथा यह विद्वान् पुरुष सर्व जगतकूं स्वप्नकी न्यांई मिथ्या देखै है। तिस कालविषे चतुर्थी भूमिका कही जावै है इति। ता चतुर्थी भूमिकाकूं प्राप्त हुआ योगी पुरुष ब्रह्मवित् या नामकरिकै कह्या जावै है। और पंचमी, षष्ठी, सप्तमी यह तीन भूमिका तौ जीवन्मुक्तिकेही अवांतर भेद हैं। तहां सविकल्पक समाधिके अभ्यासकरिकै निरुद्ध हुआ जो मन है ता निरुद्ध मनविषे जो निर्विकल्पक समाधि अवस्था है ताका नाम असंसक्ति है ॥ ५ ॥ ता असंसक्ति नामा पंचमी भूमिकाकूं सुषुप्ति या नामकरिकै कथन करे हैं। और ता पंचमी भूमिकावाला योगी पुरुष आपही समाधितैं व्युत्थानकूं प्राप्त होवै है। यातैं सो पंचमी भूमिकावाला योगी पुरुष ब्रह्मविद्वर या नामकरिकै कह्या जावै है। तिसतैं अनंतर ता असंसक्ति नामा पंचमी भूमिकाके परिपक्वताकरिकै चिरकालपर्यंत स्थिर हुई जो सा निर्विकल्पक समाधि अवस्था है ताका नाम पदार्थाभावनी है ॥ ६ ॥ सा पदार्थाभावनी नामा षष्ठी भूमिका गाढ सुषुप्ति या नामकरिकै कही जावै है। ता पदार्थाभावनी नामा षष्ठी भूमिकाकूं प्राप्त हुआ सो योगी पुरुष आपही समाधितैं उठै नहीं। किंतु दूसरे शिष्यादिकोंके प्रयत्नकरिकैही सो योगी पुरुष समाधितैं व्युत्थानकूं प्राप्त होवै है। सो षष्ठी भूमिकावाला योगी पुरुष ब्रह्मविद्वरीयान् या नामकरिकै कह्या जावै है। यह वार्त्ताभी वसिष्ठभगवान्नैं कथन करी है। तहां श्लोक। "पंचमीं भूमिकामेत्य सुषुप्ति पदनामिकां। षष्ठीं गाढसुषुप्त्याख्यां क्रमात्पतति भूमिकां"। अर्थ यह। यह योगी पुरुष सुषुप्ति नामा पंचमी भूमिकाकूं प्राप्त होइकै क्रमतैं गाढ सुषुप्ति नामा षष्ठी भूमिकाकूं प्राप्त होवै है इति। और

जिस समाधि अवस्थातैं यह योगी पुरुष आपभी व्युत्थानकूं प्राप्त होवै नहीं । तथा अन्य शिष्यादिकोंकरिकैभी व्युत्थानकूं प्राप्त होवै नहीं । किंतु सर्वथा भेददर्शनके अभावतैं तद्रूपही होवै है । तथा अपणे प्रयत्नतैं विनाही परमेश्वरकरिकै प्रेरणा करे हुए प्राणवायुके वशतैं तथा प्रारब्धकर्मके वशतैं जिस विद्वान् पुरुषके देहका व्यवहार अन्य लोकही सिद्ध करै हैं । तथा जो विद्वान् पुरुष सर्वदा परिपूर्ण परमानंदघन हुआ स्थित होवै है । ऐसी अवस्था तुरीया नामा सप्तमी भूमिका कही जावै है ॥ ७ ॥ ता सप्तमी भूमिकाकूं प्राप्त हुआ सो योगी पुरुष ब्रह्मविद्वरिष्ठ या नामकरिकै कह्या जावै है । इन सप्त भूमिकावोंके संग्रहका यह श्लोक है । " चतुर्थी भूमिका ज्ञानं तिस्रः स्युः साधनं पुरा । जीवन्मुक्तेरवस्थास्तु पराःस्तिस्रः प्रकीर्तिताः" । अर्थ यह । शुभइच्छा, विचारणा, तनुमानसा यह पूर्वली तीन भूमिका तौ साधनरूप हैं । और सत्त्वापत्ति नामा चतुर्थी भूमिका ज्ञानरूप है । और असंसक्ति, पदार्थाभावनी, तुरीया यह तीन भूमिका जीवन्मुक्तिकी अवस्थाविशेष हैं इति । इन सप्त भूमिकावोंके कहणेका इहां प्रसंगविषे यह प्रयोजन है । जो पुरुष शुभइच्छा, विचारणा, तनुमानसा या साधनरूप प्रथम तीन भूमिकावोंकूंभी प्राप्त भया है । सो पुरुषभी जबी कर्मोंका अधिकारी नहीं है । तबी चतुर्थी भूमिकावाला ज्ञानवान् पुरुष तथा उत्तर तीन भूमिकावाला जीवन्मुक्त पुरुष तिन कर्मोंका अधिकारी नहीं है याकेविषे क्या कहणा है इति ॥ १८ ॥ ⊛ ॥ जिस कारणतैं तूं अर्जुन इस प्रकारका ज्ञानवान् है नहीं । किंतु केवल कर्मोंकाही तूं अधिकारी है । तिस कारणतैं फलकी इच्छातैं रहित होइकै तूं नित्यनैमित्तिक कर्मोंकूंही कर या प्रकारके अर्थकूं श्रीभगवान् अर्जुनके प्रति कथन करै हैं ।

(मू.श्लो.) तस्मादसक्तः सततं कार्यं कर्म समाचर । असक्तो ह्याचरन्कर्म परमाप्नोति पूरुषः ॥ १९ ॥ (पदच्छेदः) तस्मात् । असक्तः । सततं । कार्यं । कर्म । समाचर । असक्तः । हि । आचरन् । कर्म । परं । आप्नोति । पूरुषः ॥ १९ ॥ (पदार्थः) हे अर्जुन तिस कारणतैं तूं फलकामनातैं रहित होइकै सर्वदा अवश्य करणेयोग्य नित्यनैमित्तिक कर्मकूं भली प्रकारतैं कर जिस कारणतैं यह पुरुष फलकी कामनातैं रहित होइकै तिस कर्मकूं करता हुआ मोक्षकूंही प्राप्त होवै है ॥ १९ ॥

टीका । हे अर्जुन जिस कारणतैं तूं ज्ञानवान् है नहीं । किंतु केवल कर्मोंकाही अधिकारी है । तिस कारणतैं " यावज्जीवमग्निहोत्रं जुहुयात " इत्या-

दिक श्रुतियोंनैं विधानकरचेहूए तथा (तमेतंवेदानुवचनेनब्राह्मणाविविदिषंतियज्ञेनदानेनतपसानाशकेन) इस श्रुति नैं आत्मज्ञानविषे उपयोग कथनकरयाहै जिनो का ऐसेजे नित्यनैमित्तिक कर्महैं ॥ तिनकर्मोंकूं तूं फलकीइच्छातैंरहितहोइकै श्रद्धाभक्तिपूर्वक निरंतरकर ॥ जिसकारणतैं यह पुरुष फलकीइच्छातैरहितहोइकै निरंतर तिन नित्यनैमित्तिककर्मोंकूं करताहूआ अंतःकरणकीशुद्धिद्वारा तथाआत्मज्ञानद्वारा मोक्षकुंहींप्राप्तहोवैहै इति ॥ १९ ॥ ॥ शंका ॥ हेभगवन् ज्ञानकेप्राप्तिकीइच्छावान्पुरुषकूंभी ताज्ञाननिष्ठाकीप्राप्तिवासतै श्रवणमननिदिध्यासनकेअनुष्ठानअर्थ सर्वकर्मोंकात्यागरूपसंन्यास शास्त्रविषे विधानकरयाहै ॥ यातैं केवल ज्ञानवान्पुरुषकूंहीं तिनकर्मोंका अनधिकारनहींहै ॥ किंतु ताज्ञानकेप्राप्तिकीइच्छावान् विरक्तपुरुषकूंभी तिनकर्मोंकाअनधिकारहीहै ॥ यातैं ज्ञानकेप्राप्तिकीइच्छावान् तथा विरक्त ऐसाजो मैं अर्जुनहूं ॥ तिस मैं अर्जुननेभी तेकर्म परित्यागकरणेकूंहीयोग्यहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकूं श्रीभगवान् क्षत्रियराजाकूं संन्यासका अनधिकार प्रतिपादनकरिकै निवृत्तकरेहैं ॥

(मू. श्लो.) कर्मणैवहिसंसिद्धिमास्थिताजनकादयः ॥ लोकसंग्रहमेवापिसंपश्यन्कर्तुमर्हसि ॥ २० ॥ कर्मणा । एव । हिं । संसिद्धिम् । आस्थिताः । जनकादयः । लोकसंग्रहम् । एव । अपि । संपश्यन् । कर्तुम् । अर्हसि ॥ इतिपद० ॥ हेअर्जुन जिस कारणतैं पूर्व जनकादिकक्षत्रियराजे कर्मकरिकै हीं ज्ञाननिष्ठाकूं प्राप्तहोतेभयेहैं तिसकारणतैं तूभी कर्महीकरणेकूंयोग्यहैं किंवा लोकसंग्रहकूं देखताहूआ भी तूं कर्मकरणेकूं हीं योग्यहैं ॥ २० ॥ (इतिपदार्थः)

॥ टीका ॥ हेअर्जुन श्रुतिस्मृतिविषे प्रसिद्धजे जनकराजा अजातशत्रुराजा अश्वपतिराजा भगीरथराजा इत्यादिकक्षत्रियराजेहैं ॥ ते जनकादिक विद्वान्राजेभी नित्यनैमित्तिककर्मोंकरिकेही अंतःकरणकीशुद्धिद्वारा श्रवणमननादिकों करिकै साध्य ज्ञाननिष्ठाकूं प्राप्तहोतेभयेहैं ॥ कोईकर्मोंकेत्यागकारिकै ताज्ञाननिष्ठाकूं नहींप्राप्त होतेभयेहैं ॥ यहवार्ताजिसकारणतै यथार्थहै ॥ तिसकारणतै तूंक्षत्रियअर्जुनभी ज्ञानकीइच्छावालाहूआ अथवा विद्वान्हूआ सर्वप्रकारतैकर्महींकरणेकूंयोग्यहैं ॥ कर्मोंकेत्यागकरणेकूं तू योग्यनहींहै ॥ काहेतैं (ब्राह्मणाःपुत्रैषणायाश्च वित्तैषणायाश्च लोकैषणायाश्चव्युत्थायाथ भिक्षाचर्यंचरंति) यह जो संन्यासआश्रमकाविधायकश्रुतिवचनहै ॥ तावचनविषे ब्राह्मणकाहीं संन्यासविषेअधिकार कथनकर्याहै ॥ क्षत्रियवैश्यकाअधिकार कथनकर्यानहीं ॥ जैसे (स्वाराज्यकामोराजाराजसूयेनयजेत) इसवचनविषे राजसूययज्ञविषे क्षत्रियराजाकाहीअधिकार कथनकरयाहै ॥ ब्राह्मणादिकोंकाअधिकार कथनकरया नहीं ॥ और (चत्वारआश्रमाब्राह्मणस्यत्रयोराजन्यस्यद्वौवैश्यस्य) अर्थ—यह ब्रह्मचर्य गृहस्थ वानप्रस्थ सं

न्यास यह च्यारि आश्रम ब्राह्मणकेहींहोवैहैं ॥ और संन्यासकूंछोडिकै तीन आश्रम क्षत्रियराजाकेहोवैहैं ॥ और ब्रह्मचर्य गृहस्थ यह दोआश्रम वैश्यकेहोवै हैं इति ॥ इत्यादिक अनेकश्रुतिस्मृतिवचनोंविषे क्षत्रियवैश्यकूं संन्यासकेअभावकाकथनकऱ्याहै ॥ तिनश्रुतिस्मृतिवचनोंकेतात्पर्यकूंजानणेहारे ते जनकादिकक्षत्रियराजे नित्यनैमित्तिककर्मोकरिकैहीं ज्ञाननिष्ठाकूंप्राप्तहोतेभयेहैं ॥ तिनकर्मोकेत्यागरूपसंन्यासकरिकै ते जनकादिक ज्ञाननिष्ठाकूं नहीं प्राप्तहोते भयेहैं इति ॥ किंवा ॥ (सर्वेराजाश्रिताधर्माराजाधर्मस्यधारकः) ॥ अर्थ यह श्रुतिस्मृतिकरिकैप्रतिपादितसर्वधर्म राजाकेआश्रितरहे हैं॥तथा यहराजाहीं सर्वधर्म काधारणकरणेहाराहोवैहै इति ॥ यास्मृतिवचनतैं सर्ववर्णआश्रमकेधर्मोकाप्रवर्त्तकपणा क्षत्रियराजाविषेसिद्धहोवैहै ॥ याकारणतैंभी यहक्षत्रियराजा अवश्यकरिकै कर्मोकूंकरै ॥ याअर्थकूं श्रीभगवान् कहेहैं (लोकसंग्रहमेवापीति) लोकोंकूं आपणेआपणेधर्मविषे प्रवर्त्तकरणा तथा अधर्मतैंनिवृत्तकरणा याका नाम लोकसंग्रहहै॥ तालोकसंग्रहकूंदेखताहूआभी तथा पूर्वजनकादिकक्षत्रियराजावोंकेशिष्टाचारकूं देखताहूआभी तूं अर्जुन नित्यनैमित्तिककर्मोकेकरणेकूंहीयोग्यहै ॥ तात्पर्य यह ॥ क्षत्रियजन्मकीप्राप्तिकरणेहारेकर्मोनैं आरंभकऱ्याहै शरीरजिसका ऐसाजो तूअर्जुनहैं ॥ सो तूं अर्जुन विद्वान्हूआभी जनकादिकोंकीन्यांई प्रारब्धकर्म के बलकरिकै तालोकसंग्रहकेवासते कर्मकरणेकूंहींयोग्यहैं ॥ कोईकर्मोकेत्यागकरणेकेयोग्य तूं नहींहै ॥ जिसकारणतैं कर्मोकेसंन्यासकरणेयोग्यब्राह्मणशरीर तुमा रेकूंप्राप्तभयानहीं इति ॥ इसीप्रकारके श्रीभगवान्के अभिप्रायकूं जानणेहारे भगवान्भाष्यकारोंनेंब्राह्मणकूंहीं संन्यासविषेअधिकारहै अन्यक्षत्रियादिकोंकूं संन्या सविषेअधिकारनहींहै याप्रकारकानिर्णयकरयाहै ॥ और (सर्वाधिकारविच्छेदिज्ञानंचेदभ्युपेयते ॥ कुतोऽधिकारनियमोव्युत्थानेक्रियतेबलात्) अर्थ यह ॥ सर्व अधिकारका विच्छेदकरणेहाराज्ञान जबी क्षत्रियवैश्यकूं अंगीकारकरतेहो ॥ तबी संन्यासविषे ब्राह्मणकाहींअधिकारहै क्षत्रियवैश्यका नहींहै याप्रकारका संन्यासकेअधिकारकानियम बलात्कारसैं किसवासतै अंगीकार करतेहो ॥ किंतु यह नियमभी नहीं मान्याचाहियेइति ॥ इत्यादिकवचनोंकरिकै जोवार्त्तिक कारनैं क्षत्रियवैश्यकूंभी संन्यासका अधिकार सिद्धकरयाहै ॥ सोप्रौढिवादतैं सिद्धकऱ्याहै ॥ सर्वथाअनुपपन्नअर्थकूंभी आपणीप्रज्ञाके बलतैं सिद्धकरदेणा या कानाम प्रौढिवादहै ॥ अथवा क्षत्रियवैश्यकूं संन्यासकाप्रतिपादनकरणेहारवचनोंका भरतऋषभादिकोंकीन्यांई अलिंगविद्वत्संन्यासविषे तात्पर्यहै इति ॥ सर्व प्रकारतैं दंडादिकचिह्नपूर्वक विविदिषासंन्यासविषै एकब्राह्मणकाहीं अधिकार है ॥ क्षत्रियादिकोंकाहैनहीं इति ॥ २० ॥ शंका ॥ हेभगवन् जोकदाचित् मैं अर्जून तिनकर्मोकूंकरौंभी ॥ तौंभी दूसरेलोक तिनकर्मोंकूं किसप्रकारकरैंगे ॥ ऐसी अर्जुनकीशंकाकेहूए ॥ श्रीभगवान् दूसरे लोक श्रेष्ठपुरुषोंकेआचारके अनुसारहीं प्रवृत्तहोवैहैं याप्रकारकाउत्तर कहेहैं ॥

(मू० श्लो०) यद्यदाचरतिश्रेष्ठस्तत्तदेवेतरोजनः ॥ सयत्प्रमाणंकुरुतेलोकस्तदनुवर्त्तते ॥ २१ ॥ यत् । यत् । आचरति । श्रेष्ठः । तत् । तत् । एव । इतरः । जनः । सः । यत् । प्रमाणं । कुरुते । लोकः । तत् । अनुवर्त्तते ॥ (इतिपदच्छेदः) हेअर्जुन श्रेष्ठपुरुष जिसे जिसेकर्मकूं करेहैं तिसी तिसीकर्मकूं हीं दूसरे जनभी करेहै और सोश्रेष्ठपुरुष जिसेकूं प्रमाण करेहैं तिसेकूंहीं दूसरेलोक भी प्रमाणकरेहैं ॥ २१ ॥ (इतिपदार्थः)

टीका ॥ हेअर्जुन सर्वलोकोंविषेप्रधानभूत जेराजादिकश्रेष्ठपुरुषहैं ॥ तेराजादिकश्रेष्ठपुरुष जिसजिस शुभकर्मकूं अथवा अशुभकर्मकूं करेहैं ॥ तिसी तिसी शुभकर्मकूं अथवा अशुभकर्मकूं तिनराजादिकोंकेआज्ञाविषेचलणेहारेदूसरेजनभी करेहैं ॥ तिनराजादिकोंतैंस्वतंत्रहोइकै तेदूसरेजन किंचित्मात्रभीकार्यकूं करैनहीं ॥ ॥ शंका ॥ हेभगवन् तेदूसरेलोक शास्त्रकूंभलीप्रकारतैंविचारकरिकै शास्त्रतैंविरुद्ध राजादिकश्रेष्ठपुरुषोंकेआचारकूंपरित्यागकरिकै केवलशास्त्रविहितआचारकूं किसवासतैनहींकरते ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए ॥ तिनदूसरेलोगोंकूं श्रेष्ठाचारकीन्यांई प्रमाणताकानिश्चयभी तिनश्रेष्ठपुरुषोंकेअनुसारहींहोवैहै याप्रकारकाउत्तर श्रीभगवान् कथनकरेहैं (सयत्प्रमाणंकुरुतेइति) हेअर्जुन तेराजादिकश्रेष्ठपुरुष जिसलौकिकपदार्थकूं अथवा वैदिकपदार्थकूंप्रमाणरूपकरिकै अंगीकारकरेहैं ॥ तिसीहीं लौकिकपदार्थकूं तथा वैदिकपदार्थकूं दूसरेलोकभी प्रमाणरूपकरिकै अंगीकारकरेहैं ॥ तेदूसरेलोक तिनराजादिकश्रेष्ठपुरुषोंतैं स्वतंत्रहोईकै किसीभीपदार्थकूं प्रमाणरूपकरिकैअंगीकारकरतेनहीं ॥ यातैं हेअर्जुन सर्वलोकोंविषे प्रधानभूतजोतूंराजाहैं ॥ तिसतुमनैं लोकोंकेसंरक्षणवासतैं अवश्यकरिकै कर्म करणेकूं योग्यहैं ॥ तुमारीशुभकर्मविषेप्रवृत्तिकूं देखिकरिकै दूसरेलोकभी अवश्यकरिकै तिनशुभकर्मोंविषे प्रवृत्तहोवैंगे ॥ जिसकारणतै राजादिकप्रधानपुरुषोंकेअनुसारहीं दूसरेसर्वलोकोकेव्यवहारहोवैहैं इहां ॥ २१ ॥ ❀ ॥ हे अर्जुन दूसरेलोकोंकूं शुभकर्मविषे प्रवृत्तकरणेवासतै राजादिकश्रेष्ठपुरुषोंनैं अवश्यकरिकै शुभकर्मोंविषेप्रवृत्तहोणा याअर्थविषे मैंकृष्णभगवानहीं दृष्टांतहूं इसअर्थकूं तीनश्लोकोंकरिकै श्रीभगवान् कहेहैं ॥

(मू० श्लो०) नमेपार्थास्तिकर्तव्यंत्रिषुलोकेषुकिंचन ॥ नानवाप्तमवाप्तव्यंवर्त्तएवचकर्मणि ॥ २२ ॥ न । मे । पार्थ । अस्ति । कर्त्तव्यं । त्रिषु । लोकेषु । किंचन । न । अनवाप्तं । अवाप्तव्यम् । वर्ते । एव । च । कर्मणि ॥ (इतिपदच्छेदः) हेअर्जुन हमारेकूं तीन लोकोंविषे किंचित् मात्रभी करणेयोग्य नहींहै जिसकारणतैं हमारेकूं पूर्वअप्राप्तफल किंचित्मात्रभी प्राप्तहोणेयोग्य नहींहै तौभी मै कर्मविषे प्रसिद्ध वर्त्तता हींहूं ॥ २२ ॥ (इतिपदार्थः)

॥ टीका ॥ जैसे गृहकेस्वामीकूं तागृहविषेस्थितसर्वपदार्थ प्राप्तहींहैं ॥ तैसे सर्वब्रह्मांडकास्वामी जोमैं कृष्णभगवान्हूं तिसहमारेंकूं ताब्रह्मांडविषेस्थितसर्वपदार्थ प्राप्तहींहैं ॥ कोईभीपदार्थ हमारेकूं अप्राप्तनहींहै॥ और लोकविषेपूर्वअप्राप्तवस्तुकीप्राप्तिवासतैहीं प्रयत्नकरेहैं॥पूर्वप्राप्तवस्तुकीप्राप्ति वासतै कोईभी प्रयत्नकरतानहीं॥ यातैं तीन लोकोंविषे किसीपदार्थकेप्राप्तिकाउद्देशकरिकै हमारेकूं किंचित्मात्रभी कर्त्तव्यनहींहै ॥ तौभी मैंकृष्णभगवान् वेदविहितशुभकर्मोविषे प्रवृत्तहोताहींहूं ॥ तिनशुभकर्मोंका मैं कदाचित्‌भी परित्यागकरतानहीं ॥ तिनशुभकर्मोविषेहमारीप्रवृत्ति तुमारेकूंभी प्रत्यक्षहींसिद्धहै ॥ इसीप्रसिद्धिकेबोधनकरणेवासतै श्रीभगवान्‌नैं (वर्तएवच) यावचनविषेस्थित च यहशब्दकथनकर्याहै ॥ और (हेपार्थ) यासंबोधनकरिकै श्रीभगवान्‌नैं यहअर्थसूचनकर्या ॥ शुद्धक्षत्रियवंशविषेउत्पन्न होणेतैं तूं अर्जुन हमारेसमानही शूरवीरहैं ॥ यातैं हमारेन्यांई तुमारेकूंभी शुभकर्मोविषेप्रवृत्तहोणाहींउचितहै इति ॥ २२ ॥ ॥ शंका ॥ हेभगवन् आप शुभकर्मोविषेप्रवृत्तहोइकै दूसरेलोकोंकूंभी तिनशुभकर्मोविषे प्रवृत्तकरणा याप्रकारके लोकसंग्रहकरणेका कोईफलहैनहीं ॥ यातैं सोलोकोंकासंग्रहभी तुमारेकूंकरणे योग्यनहींहै ॥ ऐसी अर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान् उत्तरकहेहैं ॥

(मू. श्लो.) यदिह्यहंनवर्त्तेयंजातुकर्मण्यतंद्रितः ॥ ममवर्त्मानुवर्त्ततेमनुष्याःपार्थसर्वशः ॥ २३ ॥ यदि । हि । अहं । न । वर्त्तेयं जातु । कर्मणि । अतंद्रितः । मम । वर्त्म । अनुवर्तंते । मनुष्याः । पार्थ । सर्वशः ॥ इतिप० ॥ हेअर्जुन जो कदाचित् मैंकृष्णभगवान् अलसतैंरहितहोइकै शुभकर्मोविषे नहीं प्रवर्त्तहोवौं तौ कर्मकेअधिकारीमनुष्य हमारे मार्गकूंही सर्वप्रकारकरिकै अंगीकारकरैंगे ॥ २३ ॥ (इतिपदार्थः)

॥ टीका ॥ हेअर्जुन मैं अभीकृतार्थहूआहूं कर्मोकेकरणेकरिकै अभी हमारेकूं किंचित्मात्रभीअर्थ सिद्धकरणेयोग्यनहींरह्या याप्रकारकी कृतकृत्यबुद्धिकरिकै जोकदाचित् मैंकृष्णभगवान् आलसतैंरहितहोइकै शुभकर्मोविषेनहीं प्रवृत्तहोवौंगा ॥ तौ जितनैंकीकर्मोकेअधिकारीमनुष्यहैं तेसर्वमनुष्य हमारेकूं शुभकर्मोतैंरहितहूआ देखिकै आपभी शुभकर्मोतैं रहितहोवैंगे ॥ काहेतैं यहकृष्ण भगवान् सर्वज्ञहैं याप्रकारकी हमारेविषेसर्वज्ञत्वबुद्धि करिकै यहसर्व अधिकारीमनुष्य सर्वप्रकारतैं हमारेहींमार्गकूं अंगीकारकरेहैंइति ॥ २३ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् सर्वमनुष्योंविषेश्रेष्ठ जोआपहो तिस आपके शुभकर्मोकेत्यागरूपमार्गकूं अंगीकारकरणा इनअधिकारीमनुष्योंकूं उचितहींहैं ॥ ताकरिकै तिनअधिकारीमनुष्योंकूं कौनदोषहै ॥ ऐसी अर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान् उत्तरकहेहैं ॥

(मू. श्लो.) उत्सीदेयुरिमेलोकानकुर्यांकर्मचेदहम् ॥ संकरस्यचकर्तास्यामुपहन्यामिमाःप्रजाः ॥ २४ ॥ उत्सीदेयुः । इमे ।

लोकाः । न । कुर्यां । कर्म । चेत् । अहं । संकरस्य । च । कर्त्ता । स्याम् । उपहन्याम् । इमाः । प्रजाः ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेअर्जुन जो कदाचित् मैंईश्वर शुभकर्मकूं नहीं करौंगा तौ यह सर्वलोक नाशकूंप्राप्तहोवैंगे तथा मैंहीं वर्णसंकरका कर्त्ता होवौंगा तथा इस सर्वप्रजाकूं मैंहीं हननकरौंगा ॥ २४ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन सर्वकाईश्वर मैंकृष्ण भगवान् जोकदाचित् शास्त्रविहितशुभकर्मोंकूं नहींकरौंगा ॥ तौ हमारेअनुसारवर्त्तणेहारे मनुआदिक श्रेष्ठपुरुषभी तिन शुभकर्मोंविषेप्रवृत्तनहींहोवैंगेयातैं जलकीवृष्टिद्वारा सर्वलोकोंकेस्थितिकाकारणरूपजेयज्ञादिककर्महैं तिनसर्वकर्मोंकालोपहोवैंगा ॥ तिनसर्वकर्मोंकेलोपहूए यह सर्वलोक नाशकूंप्राप्त होवैंगे ॥ तिन सर्वलोकोंकेनाशतैं अनंतर जोवर्णसंकरहोनाहै तिसवर्णसंकरकाभीमैंहीं करणेहाराहोवौंगा ॥ तिसकरके मैंहींइससर्वप्रजाकूं हननकरणेहाराहोवौंगा ॥ सोयहवार्त्ता हमारेकूंअत्यंतअनुचितहै ॥ काहेतैं सर्वप्रजाकेअनुग्रहकरणेवासतै प्रवृत्तहूआ जोमैं कृष्णभगवान्हूं तिसहमारेकूं धर्मकालोपकरिकै सर्वप्रजाकाहननकरणा उचितनहींहै इति ॥ अथवा (यद्यदाचरतिश्रेष्ठः) इत्यादिकच्यारिश्लोकोंका यह दूसरा अर्थकरना ॥ हेअर्जुन केवललोकसंग्रहकूं देखताहुआही तूं कर्मकरणेकूयोग्यनहींहै ॥ किंतु श्रेष्ठाचारतैंभी तू कर्मकरणेकूंयोग्यहै ॥ इस अर्थकूं श्रीभगवान् कहेहैं (यद्यदाचरतिश्रेष्ठःइति) यातैसर्वप्राणियोंतैंश्रेष्ठ जौमैंकृष्णभगवानहूंतिसहमारा जिसप्रकारका आचारहै तिसीप्रकारका आचार हमारे अनुसारवर्त्तणेहारे तैं अर्जुननैंभी करणेयोग्यहै ॥ हमारेतैंस्वतंत्रहोईकै किंचित्मात्रभीआचारतुमारेकूं करणेयोग्यनहींहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् सो आपकाआचार किसप्रकारकाहैजो आचार हमारेकूं अवश्यकरिकै अंगीकारकरणेकूंयोग्यहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् (नमेपार्थास्तिकर्त्तव्यम्) इत्यादिकतीनश्लोकोंकरिकै ताआपणेआचारका कथनकरताभया इति ॥ २४ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् आप ईश्वरहो ॥ यातैंलोकसंग्रहवास्तै शुभकर्मोंकूंकरतेहुएभीमैं सर्वदा अकर्त्ताहूं याप्रकारके कर्तृत्वअभिमानकेअभावतैं आपकी किंचित्मात्रभीहानिहोवैनहीं ॥ औरमैंअर्जुनतौ जीवहूं ॥ यातैंलोकसंग्रहवास्तै तिनशुभकर्मोंकेकरणेतैं मैंकर्मोंकाकर्त्ताहूंयाप्रकारकेकर्तृत्वअभिमानकरिकैहमारेज्ञानका अभिभव अवश्यकरिकैहोवैगाऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान् उत्तरकहैहैं ॥

(मू. श्लो.) सक्ताः कर्मण्यविद्वांसोयथाकुर्वंतिभारत॥कुर्याद्विद्वांस्तथासक्ताश्चिकीर्षुर्लोकसंग्रहम्॥२५॥सक्ताः।कर्मणि।अविद्वांसः।यथा। कुर्वंति । भारत । कुर्यात् । विद्वान् । तथा । असक्तः । चिकीर्षुः । लोकसंग्रहम् ॥ इतिप० ॥ हेभारत जैसे अज्ञानीपुरुष कर्मविषे

अभिनिवेशवालेहूए तिसकर्मकूं करैहैं तैसे लोकसंग्रहके करणेकीइच्छावाला विद्वान्पुरुष अभिनिवेशतैंरहितहूआ ताकर्मकूं करै ॥ २५ ॥ (इतिपदार्थः)

॥ टीका ॥ हेभारत आत्मज्ञानतेंरहितअज्ञानीपुरुष मैंकर्मोंकाकर्त्ताहूं याप्रकारकेकर्तृत्वअभिमानकरिकै तथास्वर्गादिकफलकीइच्छाकरिकै यज्ञादिककर्मोंविषे अभिनिवेशवालेहुए जिसप्रकार श्रद्धाभक्तिपूर्वक तिनयज्ञादिककर्मोंकूंकरेहैं ॥ तिसीप्रकार लोकसंग्रहकरणेकीइच्छावाला विद्वान्पुरुषभी श्रद्धाभक्तिपूर्वक तिन यज्ञादिककर्मोंकूंकरै ॥ परंतु सोविद्वान्पुरुष कर्तृत्वअभिमानतेंरहितहुआ तथास्वर्गादिकफलकीइच्छातैंरहितहुवातिनशुभकर्मोंकूंकरै ॥ ईहां (हेभारत) यासंबोधनकरिकै श्रीभगवान्ने अर्जुनकेप्रति यहअर्थसूचनकऱ्या ॥ भरतवंशविषे जाकीउत्पत्तिहोवै ताकानाम भारतहै ॥ अथवा भानाम ज्ञानकाहै ताज्ञानविषे जोप्रीतिवालाहोवै ताकानाम भारतहै ॥ ऐसेभारतनामवाला तूअर्जुनहै ॥ यातैं अज्ञानीपुरुषकीन्याई विद्वान्पुरुषभी लोकसंग्रहवास्तै शुभकर्मोंकूंकरै याप्रकारका जोशास्त्रकाअर्थहै तिसअर्थकेधारणकरणेकूं तू योग्यहैं ॥ ताअर्थकेधारणकरणेतैंही तुमारेविषे सोभारतनाम सार्थकहोवैगा इति ॥ २५ ॥ ❀ ॥ शंका हे भगवन् विद्वान्पुरुषने शुभकर्मोंका अनुष्ठानकरिकैही लोकसंग्रहकरणा ॥ तत्त्वज्ञानकेउपदेशकरिकै सोलोकसंग्रह नहींकरणा याकेविषे कौनहेतुहै ॥ ऐसी अर्जुनकीशंकाकेहुए ॥ श्रीभगवान् उत्तरकहेहैं ॥

(मू.श्लो.) नबुद्धिभेदंजनयेदज्ञानांकर्मसंगिनाम् ॥ जोषयेत्सर्वकर्माणिविद्वान्युक्तःसमाचरन् ॥ २६ ॥ न । बुद्धिभेदं । जनयेत् । अज्ञानां । कर्मसंगिनां । जोषयेत् । सर्वकर्माणि । विद्वान् । युक्तः । समाचरन् ॥ २६ ॥ (इतिपदच्छेदः) हेअर्जुन यहविद्वान्पुरुष कर्मकेसंगी । अविवेकीपुरुषोंके बुद्धिभेदकूं नहीं उत्पन्नकरे किंतु सोविद्वान्पुरुष आदरपूर्वक सर्वकर्मोंकूं करताहूआ तिन अविवेकी पुरुषोंकूंभी तिनकर्मोंविषेही जोडै ॥ २६ ॥ (इतिपदार्थः)

॥ टीका ॥ हेअर्जुन कर्तृत्वअभिमानकरिकै तथास्वर्गादिकफलकीइच्छाकरिकै यज्ञादिककर्मोंविषे अभिनिवेशवालेजेअज्ञानीपुरुषहैं ॥ तिनअज्ञानीपुरुषोंकी मैं इस कर्मकूंकरौंगा तथामैं इसफलकूंभोगौंगा याप्रकारकीजाबुद्धिहै ताबुद्धिकेभेदकूं यहविद्वान् पुरुष नहींउत्पन्नकरै ॥ अर्थात् तूंआत्मा अकर्त्ताहैं तथाअभोक्ताहैं याप्रकारकाउपदेशकरिकै तिनअज्ञानी पुरुषोंकेबुद्धिकूं तिनशुभकर्मोंतैं चलायमाननहींकरै ॥ किंतु लोकसंग्रहकरणेकीइच्छावाला सोविद्वान्पुरुष आपश्रद्धाभक्तिपूर्वक तिनशुभकर्मोंकूंकरताहुआ तिनअज्ञानीपुरुषोंकीभी तिनशुभकर्मोंविषेश्रद्धाउत्पन्नकरिकै तिनअज्ञानीपुरुषोंकूं तिनशुभकर्मोंविषेहींनिरंतरजोडै ॥ काहेतैं शास्त्रविहित

शुभकर्मोंकेअनुष्ठानतैं जिसपुरुषकाअंतःकरणशुद्धहुआहै ॥ सोपुरुषहीं अकर्त्ताआत्माकेउपदेशकाअधिकारीहोवैहै ॥ अशुद्धअंतःकरणवालापुरुष अकर्त्ताआत्माकेउपदेशका अधिकारीहोवैनहीं ॥ ऐसेअनधिकारीपुरुषोंकेप्रति अकर्त्ताआत्माकेउपदेशकरिकै तिनोंकेबुद्धिकुं शुभकर्मोतैंचलायमानकियेहुएतिनपुरुषोंकी शुभकर्मोविषे श्रद्धानिवृत्तहोइजावैहै ॥ यातैंतिनअज्ञानीपुरुषोंकूंस्वर्गादिकउत्तमलोकोंकीभी प्राप्तिहोवैनहीं ॥ तथाअशुद्धअंतःकरणविषे आत्माकाज्ञानभी उत्पन्नहोवैनहीं ॥ यातैं तेअज्ञानीपुरुष भोग मोक्षदोनोंतैंभ्रष्टहोवे हैं ॥ यहवार्त्ता अन्यशास्त्रविषेभीकहीहै ॥ तहांश्लोक ॥ "अज्ञस्यार्द्धप्रबुद्धस्यसर्वंब्रह्मेतियोवदेत् ॥ महानिरयजालेषुसतेनविनियोजितः ॥" ॥अर्थ यह ॥ अंतःकरणकीशुद्धितैंरहित तथाविषयोंविषेआसक्त ऐसा जो केवलकर्मोंकाअधिकारी अर्धप्रबुद्ध अज्ञानीपुरुषहै॥ तिसअज्ञानीपुरुषकेप्रति जोविद्वान्पुरुष तूं मैं यहसर्वजगत् ब्रह्मरूपहींहै याप्रकारकाउपदेशकरेहैं ॥ तिसविद्वान्पुरुषने सोअज्ञानीपुरुष महारौरवनरकादिकोंविषे प्राप्तकरया इति ॥ यातैं यह विद्वान्पुरुष आपशुभकर्मोविषेप्रवृत्तहोइकै तिनअज्ञानीपुरुषोंकूंभी शुभकर्मविषेहींप्रवृत्तकरै ॥ तिनशुभकर्मोकेकरणेतैं जभी तिन अज्ञानीपुरुषोंकेअंतःकरणकीशुद्धिहोवे ॥ तभी यह विद्वान्पुरुष तिनअज्ञानीपुरुषोंकेप्रति अकर्त्ताअभोक्ताआत्मकाउपदेशकरै इति ॥ २६ ॥ ॥ तहांअज्ञानीपुरुष तथाज्ञानीपुरुष दोनोंविषे शुभकर्मोकेअनुष्ठानकीसमानताहुएभी कर्तृत्वअभिमान तथाता कर्तृत्वअभिमानकाअभाव यादोनोंहेतुवोंकरिकै अज्ञानी तथाज्ञानी दोनोंकीविलक्षणताकूं दिखावताहुआ श्रीभगवान् (सक्ताःकर्मण्यविद्वांसो) यापूर्वउक्तश्लोकके अर्थकूं दोश्लोकोंकरिकैस्पष्टकरेहै ॥

(मू० श्लो०) प्रकृतेःक्रियमाणानिगुणैःकर्माणिसर्वशः ॥ अहंकारविमूढात्माकर्ताहमितिमन्यते ॥ २७ ॥ प्रकृतेः । क्रियमाणानि । गुणैः । कर्माणि । सर्वशः । अहंकारविमूढात्मा । कर्त्ता । अहम् । इति । मन्यते ॥२७॥ (इतिपदच्छेदः) हेअर्जुन मायाके गुणोनैं सर्वप्रकारतैं सर्वकर्म करीतेहैं अहंकारकरिकैविमूढहूआहैअंतःकरणाजिसका ऐसाअज्ञानीपुरुष मैं कर्मोका कर्ताहूं यांप्रकार मानेहै ॥ २७ ॥ (इतिपदार्थः)

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जामाया सत्त्व रज तम यातीनगुणरूपहै तथामिथ्याज्ञानरूपहै तथा (देवात्मशक्तिंस्वगुणैर्निगूढाम्) इस श्वेताश्वतरउपनिषदकीश्रुतिविषे जिस मायाकूं परमेश्वरकी शक्तिरूपकरिकै कथनकरयाहै तामायाकानाम प्रकृतिहै तहांश्रुति ॥ (मायांतुप्रकृतिं विद्यान्मायिनंतुमहेश्वरम् ॥) अर्थ यह ॥ मायाकूं जगत्का प्रकृति जानना तथामायाउपाधिवालेकूं महेश्वरजाननाइति ॥ ऐसीमायारूपप्रकृतिके विकाररूप जितनैंकी देहइंद्रियअंतःकरणादिक कार्यकारणरूप गुणहैं ॥ तिनगुणोंनेहीसर्वप्रकारते लौकिकवैदिकसर्वकर्मकरितेहैं ॥ यह असंगआत्मा तिनकर्मोंकूंकरता नहीं ॥ तथापि कार्यकारणरूपसंघातविषे आत्म

अहंकारविमूढात्माहै ॥ ऐ
त्वबुद्धिरूपजोअहंकारहै ताअहंकारकरिके विमूढहुआहै क्या विवेककरणेविषेअसमर्थहूआहै आत्मा क्या अंतःकरणजिसका ताकानाम अहंकारविमूढात्माहै ॥ ऐ
सा अनात्मपदार्थोंविषे आत्मत्वअभिमानकरणेहारा अज्ञानीपुरुष तिनदेहादिकोंकेअध्यासकरिके तिनसर्वकर्मोंका मैंहीकर्त्ताहूं याप्रकार आपणे आत्माकूंही कर्त्ता
मानेहै ॥ तिनप्रकृतिकेगुणोंकूं कर्मोंका कर्त्ता मानतानहीं इति ॥ २७ ॥ ॥ अबजैसे अज्ञानीपुरुष तिनकर्मोंकाकर्त्ता आपणेआत्माकूंहींमानेहैं ॥
तैसे विद्वान्ज्ञानीपुरुष तिनकर्मोंकाकर्त्ता आपणेआत्माकूंमानतानहीं ॥ याअर्थकूं श्रीभगवान् कथनकरेहैं ॥

(मू०श्लो०) तत्त्ववित्तुमहाबाहोगुणकर्मविभागयोः ॥ गुणागुणेषुवर्त्ततइतिमत्वानसज्जते ॥२८॥ तत्त्ववित्। तु। महाबाहो। गुणकर्म
विभागयोः। गुणाः। गुणेषु। वर्त्तते। इति। मत्वा। न। सज्जते ॥ २८ ॥ (इतिपदच्छेदः) हेमहान्बाहुवालाअर्जुन गुण
कर्मविभागके यथार्थस्वरूपकूंजानणेहाराविद्वान्पुरुष तौ इंद्रियादिककरणहीं रूपादिकविषयोंविषे प्रवृत्तहोवेहैं नअसंगआत्मा
ईस प्रकार मानि करिकै नहीं कर्तृत्वअभिमानकरेहै ॥ २८ ॥ (इति पदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ तत्वनाम यथार्थस्वरूपकाहै तिसकूंजोजानेहै ताकानाम तत्त्ववित्है ॥ इहां (तत्त्ववित्तु) यावचनविषे स्थितजो तु यहशब्दहै ॥ सोतुशब्द पूर्वश्लो
कविषेकथनकरेहुए अज्ञानीपुरुषतैं तातत्त्ववेत्तापुरुषविषे विलक्षणताकूं कथनकरेहै ॥शंका॥ हेभगवन् सोविद्वान्पुरुष किसवस्तुकेतत्त्वकूंजाने ॥ ऐसीअर्जुनकीशंका
केहुए श्रीभगवान्कहेहैं (गुणकर्मविभागयोःइति) अहंअभिमानकेविषयरूप जेदेहइंद्रियअंतःकरणहैं तिनोंकानाम गुणहै ॥ और मम अभिमानकेविषयरूप जे
तिनदेहइंद्रिय अंतः करणकेव्यापारहैं तिनव्यापारोंकानाम कर्महै ॥ और जोवस्तु सर्वजड विकारोंकाप्रकाशकहोणेते तिनसर्वजड विकारोतैं पृथक्होवे ताकानाम
विभागहै ॥ ऐसास्वप्रकाशकज्ञानरूपअसंग आत्माहै ॥ तहां तेगुणकर्मतो भास्य जडविकारी रूपहैं ॥ और यहविभागरूपआत्मादेवतौं भासक चेतन निर्विका
ररूपहै ॥ इसप्रकार गुणकर्म तथाविभाग यादोनोंकेयथार्थस्वरूपकूंजानणेहारा जोविद्वान्पुरुषहै ॥ सोविद्वान्पुरुषतौं यहइंद्रियादिककरणहीं विकारीहोणेते
आपणेआपणे रूपादिकविषयोंविषे प्रवृत्तहोवेहैं निर्विकार आत्मा तिनरूपादिकविषयोंविषे प्रवृत्तहोतानहीं याप्रकारकानिश्चयकरिकै अज्ञानीपुरुषकीन्यांई
आपणेआत्माविषे कर्तृत्व अभिमान करैनहीं इति ॥ और किसीटीकाविषे तो (तत्त्ववित्तुमहाबाहो) याश्लोकका याप्रकारकाअर्थकर्‍याहै ॥ चक्षुआदिकपंचज्ञान
इंद्रिय तथा वाकादिकपंचकर्मइंद्रिय बुद्धि मन इनसर्वांकानाम गुणहै ॥ और तिनचक्षुआदिकइंद्रियोंकेजेव्यापारहैं तिनोंकानाम कर्महै ॥ विभाग यापदका गुणपद
केसाथि तथाकर्मपदकेसाथि दोनोंकेसाथि संबंध करणा ॥ ताकरिकैयहअर्थसिद्धहोवैहै ॥ चक्षुश्रोत्रादिकइंद्रियोंकीही दर्शन श्रवणादिकक्रियाहैं ॥ और

वाक्पाणिआदिकइंद्रियोंकीही वचन आदानादिकक्रियाहैं ॥ और बुद्धिकीही अहंकरणरूपक्रियाहै ॥ और मनकीही संकल्परूप क्रियाहै आत्माकी कोईभीक्रिया नहींहै ॥ किंतु यह आत्मादेव सर्वदा कूटस्थअसंगचितरूपकरिकैस्थित है इस प्रकारकाजो गुणविभागहै तथा कर्मविभागहै ॥ तिनदोनोंविभागोंके तथाआत्माके यथार्थस्वरूपकूं जोभलीप्रकारतैंजानेहैताकानाम तत्त्ववित्है ऐसातत्ववेत्ताविद्वान्पुरुषतौ सर्वकर्मोविषे यह चक्षुआदिकइंद्रियही रूपादिकविषयोंविषेप्रवृत्तहोवैहैं तथावाकादिकइंद्रियही वचनादिकोंविषेप्रवृत्तहोवैहैं तथाबुद्धिही तिनचक्षुआदिकइंद्रियोंके कर्मोंविषे मैं कर्ताहूं याप्रकारकाअभिमानकरेहै मैंआत्मातौं नश्रवणकरताहूं नदेखताहूं नबोलताहूं नकरताहूं नचालताहूं किंतुकूटस्थअसंगचेतनरूपकारिके सर्वदा तूष्णीं हीस्थितहूं याप्रकारकानिश्चयकरिके तिनइंद्रियादिकोंकेकर्मविषे अहंममअभिमानकरतानहींइति ॥ औरकिसीटीकाविषेतौं (तत्त्ववित्तु) याश्लोककेपदोंकी इसप्रकारतैं योजनाकरिके याप्रकारकाअर्थ कथनकरयाहै (यस्तत्त्ववित्सगुणाःगुणेषुवर्त्ततेइतिमत्वागुणविभागेकर्मविभागेचनसज्जते) इतियोजना ॥ अर्थयह ॥ आत्मा अनात्मा यादोनोंके यथार्थस्वरूपकूंजाननेहारा ॥ जोविद्वान्पुरुषहै ॥ सोविद्वान्पुरुषतौं बुद्धिचक्षुआदिकगुणही सुखरूपादिकविषयोंविषेप्रवृत्तहोवैहैं आत्मातौ किसीभीविषयविषेप्रवृत्तहोतानहीं याप्रकारकानिश्चयकरिके गुणविभागविषे तथाकर्मविभागविषे अहंममअभिमानकरैनहीं ॥ ईहां सत्व रज तम यातीनोंगुणोंका जो बुद्धि अहंकार ज्ञानइंद्रिय कर्मइंद्रिय विषय रूपकरिकै भिन्नभिन्न अवस्थानहै ताकानाम गुणविभागहै ॥ तागुणविभागविषे मैं बुद्धिअहं कारादिरूपहूं याप्रकारकाअहं अभिमान सोतत्त्ववेत्तापुरुष करैनहीं ॥ और तिनबुद्धिअहंकारादिकोंके जे भिन्नभिन्न कर्महैं तिनोंकानाम कर्मविभागहै ॥ ताकर्मविभागविषे यहकर्ममेराहैयाप्रकारका ममअभिमान सोतत्त्ववेतापुरुष करैनहीं इति ॥ ईहां (हेमहाबाहो) यासंबोधनकरिके श्रीभगवान्ने यहअर्थ सूचनकरया ॥ जानुपर्यंत जिसकादीर्घबाहुहोवैहैं ताकानाम महाबाहुहै ॥ और सामुद्रिकशास्त्रविषे महाबाहुपणा श्रेष्ठपुरुषकालक्षणकह्या ॥ यातैं ऐसेश्रेष्ठपुरुषों केलक्षणवालाहोईके तूं अन्यपुरुषोंकीन्याई अविवेकीहोणेकूंयोग्यनहींहै इति ॥ २८ ॥ ❀ ॥ तहां पूर्वप्रसंगविषे विद्वान् तथा अविद्वान् यादोनोंविषे कर्मोकेअनुष्ठानकी समानताकथनक रिकेसोविद्वान्पुरुषअविद्वान्पुरुषकेबुद्धिभेदकूं नहींउत्पन्नकरै यहअर्थ कथनकरया ॥ ताअर्थका अबउपसंहारकरेहैं ॥

(मू.श्लो.) प्रकृतेर्गुणसंमूढाःसज्जंतेगुणकर्मसु ॥ तानकृत्स्नविदोमंदान्कृत्स्नविन्नविचालयेत् ॥ २९ ॥ प्रकृतेः । गुणसंमूढाः । सज्जंते । गुणकर्मसु । तान् । अकृत्स्नविदः । मंदान् । कृत्स्नवित् । नं । विचालयेत् ॥ २९ ॥ (इतिपदच्छेदः) हेअर्जुन प्रकृतिके गुणों

कीरिकैसंमूढहूए जेअज्ञानीजीव तिनंगुणोंकेकर्मोंविषे आंसक्तिकरेहैं तिनं अनात्मवेत्ता अनधिकारीपुरुषोंकूं आंत्मवेत्ताविद्वान् शुभकर्मकीश्रद्धातें नहीं चलायमानकरे ॥ २९ ॥ (इतिपदार्थः)

टीका ॥ हेअर्जुन पूर्वकथनकरीजा मायारूपप्रकृतिहै ॥ ताप्रकृतिका कार्यरूपहोणेतैं धर्मरूपजे देहइंद्रियअंतःकरणादिकविकारहैं ॥ तिनविकाररूपगुणोंकरिके संमूढहुए अर्थात् स्वरूपकेअस्फुरणकरिके तिनदेहादिकोंकूंही आत्मारूपकरिकेमानतेहुए जेअज्ञानीपुरुष तिनदेहइंद्रियअंतःकरणादिकोंकेव्यापारोंविषेही हम स्वर्गादिकफलकीप्राप्तिवास्ते कर्मोंकूंकरेहैं याप्रकारकी अत्यंतदृढ आत्मीयत्वबुद्धिकरेहैं ॥ तिन कर्मोंकेअधिकारी तथाअनात्मपदार्थोंके अभिमानवाले तथा अशुद्धचित्तवाले होणेतैं ज्ञानकेअधिकारकूंनहींप्राप्तहुए अज्ञानीपुरुषोंकूं यहपरिपूर्णआत्माकेजाणनेहारा विद्वान्पुरुष आप फलकीकामनाकरिकेकर्मनहींकरणे अथवा इनकर्मोंकाफल असत्है अथवा कर्मोकेकर्तादिक मिथ्याहींहै अथवा तू ब्रह्मरूपहै तेरेकूं किंचित्मात्रभीकर्त्तव्यनहींहै इत्यादिकउपदेशकरिके तिनशुभकर्मोंकीश्रद्धातें चलायमाननहींकरै ॥ किंतु उलटा तिनशुभकर्मोकीस्तुतिकरिके सोविद्वान्पुरुष तिनअज्ञानीपुरुषोंकूंतिनशुभकर्मोंविषेहींप्रवृत्तकरैं ॥ और जेपुरुष शुद्धअंतःकरणवालेहोणेतैं अधिकारीहैं ॥ तेपुरुषतौं उपदेशतैंविनाआपहीं विवेककीउत्पत्तिकरिके चलायमानतातेरहित ज्ञानकेअधिकारकूंप्राप्तहोवेहैं इति ॥ ईहां जिसवस्तुकेज्ञानहुएभी तिसतैंअन्यवस्तुकाज्ञानहोवैनहीं ॥ तथा जिसवस्तुकेनहींज्ञानहुएभी तिसतैंअन्यवस्तुकाज्ञानहोइजावै तावस्तुकानामअकृत्स्नहै ॥ जैसेएकघटकेज्ञानहुएभी तावटतैंभिन्नपटादिकोंकाज्ञानहोवैनहीं ॥ और तावटकेनहींज्ञानहुएभी तावटतैंभिन्नपटादिकपदार्थोंकाज्ञानहोइजावैहै ॥ यातैं तेघटादिकसर्वअनात्मपदार्थ अकृत्स्न यानामकरिकेकहेजावेहैं ॥ और जिसएकवस्तुकेज्ञानहुए सर्ववस्तुकाज्ञानहोइजावै तथाजिसएकवस्तुके नहींज्ञानहुए सर्ववस्तुकाज्ञानहोवैनहीं तावस्तुकानाम कृत्स्नहै ॥ जैसे एकअद्वितीयआत्माकेज्ञानहुए सर्वअनात्मपदार्थोंकाज्ञानहोइजावैहै ॥ और ताअद्वितीय आत्माके नहींज्ञानहुए तिनसर्वअनात्मपदार्थोंकाज्ञानहोवैनहीं ॥ यातैं सोअद्वितीयआत्मा कृत्स्न यानामकरिकेकह्याजावैहै ॥ तहांश्रुति ॥ (आत्मनोवाअरेदर्शनेनश्रवणेनमत्याविज्ञानेनेदंसर्वंविदितम्) अर्थ यह ॥ हेमैत्रेयी अधिष्ठानरूपआत्माके दर्शनकरिके तथाश्रवणकारिकै तथामननकरिकै तथाविज्ञानकरिकै यहसर्वअनात्मजगत् जान्याजावैहैइति ॥ याप्रकारका अकृत्स्न कृत्स्न या दोनोंशब्दोंकाअर्थ वार्तिकग्रंथविषे सुरेश्वराचार्यने कथनकऱ्याहैइति ॥ और किसीटीकाविषेतौं (प्रकृतेः) यापदका (गुणकर्मसु) यापदके साथि अन्वयकरिके यह अर्थकऱ्याहै ॥ अहंकारादिकगुणोंकारिकैसंमूढहुए अज्ञानीपुरुष प्रकृतिके देहादिकगुणोंविषे तथागमनादिककर्मोंविषे मैं ब्राह्मणहूं मेरायहयज्ञादिककर्महै याप्रकारका अहंममअभिमानकरेहैं इति ॥ २९ ॥ ❀ ॥ पूर्वप्रसंगविषे अज्ञानीपुरुष तथाज्ञानवान्पुरुष दोनोंविषे शुभकर्मोंकेअनुष्ठा

नकीसमानताकेहूएभी अज्ञानीपुरुषविषेतो कर्तृत्वकाअभिमानरहेहै और ज्ञानीपुरुषविषे ताकर्तृत्वअभिमानकाअभावरहेहै याप्रकारतैं दोनोंकी विलक्षणता कथनकरी॥ अब अज्ञानीपुरुषभी दोप्रकारकाहोवैहैं ॥ एक तौ मोक्षकीइच्छावाला मुमुक्षु अज्ञानीहोवैहै ॥ और दूसरा मोक्षकीइच्छातैंरहित अमुमुक्षु अज्ञानीहोवैहैं ॥ तहां अमुमुक्षु अज्ञानीकीअपेक्षाकरिके मुमुक्षु अज्ञानीविषे सर्वकर्मोंकाश्रीभगवतअर्पण तथाफलकीइच्छाकाअभाव याप्रकारकीविलक्षणताकूंकथनकरताहुआ श्री भगवान् अर्जुनविषेभी मुमुक्षुअज्ञानीपणेकरिकेकर्मोंके अधिकारकूंदृढकरे है ॥

(मू. श्लो.) मयिसर्वाणिकर्माणिसंन्यस्याध्यात्मचेतसा॥ निराशीर्निर्ममोभूत्वायुध्यस्वविगतज्वरः॥३०॥मयि । सर्वाणि । कर्माणि संन्यस्य । अध्यात्मचेतसा । निराशीः । निर्ममः । भूत्वा । युध्यस्व । विगतज्वरः ॥ इतिप० ॥ हेअर्जुन तूं मैंपरमेश्वरविषे अध्यात्मचित्तकरिकै सर्व कर्मोंकूं समर्पणकरिकै कामनातैंरहिततथाममतातैंरहित तथाशोकतैरहित होइकै ईसयुद्धकूंकर ॥ ३० ॥ इतिपदार्थः॥

॥ टीका ॥ हे अर्जुन ! सर्वज्ञ तथा सर्वजगत्कानियंता तथासर्वकाआत्मारूप ऐसा जो मैं परमेश्वरवासुदेवहूं ॥ ऐसेमैं परमेश्वरविषे तू सर्वलौकिकवैदिककर्मोंकूं अध्यात्मचित्तकरिकै समर्पणकर ॥ इहां आत्माकेप्रतिपादनकरणेवासते जोशास्त्र प्रवृत्तहोवै ताशास्त्रकानाम अध्यात्महै ऐसाउपनिषद्रूप वेदांतशास्त्रहै ॥ ता अध्यात्मशास्त्रकेविचारविषे जो चित्त तत्परहोवै ताचित्तकानाम अध्यात्मचेतस्है ॥ अर्थात् आत्मा अनात्माकेविवेकवाले चित्तकानाम अध्यात्मचेतस्है ॥ ऐसे अध्यात्मचित्तकरिके तूं सर्वकर्मोंकूं मैंपरमेश्वरविषे समर्पणकर ॥ तात्पर्ययह ॥ मैंअर्जुन कर्त्तारूपअंतर्यामीईश्वरके आधीनहूं ॥ और जैसे भृत्य महाराजकेवासतेहीं सर्वकर्मोंकूंकरेहैं ॥ तैसे मैंभी तिसईश्वरकेवासतेहीं सर्वकर्मोंकूकरताहूं ॥ याप्रकारकीबुद्धिकरिके तिनसर्वकर्मोंका मैंईश्वरविषे अर्पणकरिके तथासर्वकामनावोंतैंरहितहोइकै तथा देहपुत्रभ्राताादिकोंविषे ममताअभिमानतैंरहितहोइकै तथाइसलोकविषे अपकीर्तिकाहेतुरूप तथापरलोकविषेनरककेप्राप्तिकाहेतुरूप जो शोकरूपज्वरहै ताशोकरूपज्वरतैंरहितहोइके तूंमुमुक्षुअज्ञानीअर्जुन इसयुद्धकूंकर ॥ अर्थात् शास्त्रविहितशुभकर्मोंकूंकर ॥ इहां श्रीभगवतअर्पण तथानिष्कामपणा यहदोनों युद्धविषेहीकथनकरेहैं ॥ काहेतैं तायुद्धतैंभिन्नकिसीकर्म विषे ताअर्जुनका ममता तथाशोक प्राप्तहैनहीं ॥ किंतु तायुद्धविषेहीप्राप्तहै इति ॥ ३० ॥ ॥ तहां स्वर्गादिकफलकीइच्छातैरहितहोइकै तथाश्रीभगवतअर्पणबुद्धिकरिके वेदविहितशुभकर्मोंकाजोअनुष्ठानहै ॥ सोशुभकर्मोंकाअनुष्ठानही अंतःकरणकीशुद्धिद्वारा तथाआत्मज्ञानकीप्राप्तिद्वारा मुक्तिरूपफलकीप्राप्तिकरणेहाराहैं याअर्थकूं अभी श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

(मू. श्लो.) येमेमतमिदंनित्यमनुतिष्ठंतिमानवाः ॥ श्रद्धावंतोनसूयंतोमुच्यंतेतेपिकर्मभिः ॥३१॥ ये । मे । मतं । इदं । नित्यं । अनुतिष्ठंति । मानवाः । श्रद्धावंतः । अनसूयंतः । मुच्यन्त । ते । अपि । कर्मभिः ॥इतिपदच्छेदः॥ हेअर्जुन जेकेई मनुष्य श्रद्धावान्हुए तथाअसूयातैंरहितहुए हमारे इस नित्य मतकूं अंगीकार करेहैं तेपुरुष भी पुण्यपापकर्मोंनैं परित्यागकरोतेहैं॥३१॥इतिपदार्थः॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन फलकीइच्छातैंरहितहोइकै तथाश्रीभगवत्अर्पणबुद्धिकरिके या अधिकारीपुरुषने शास्त्रविहितशुभकर्मोंकाअनुष्ठानकरणा यहजो हमारामतहै ॥ सोहमारामतनित्यवेदकरिकेबोधितहोणेतैं अनादिपरंपराकरिकैप्राप्तहै यातै नित्यहै अथवा सोहमारामत अधिकारीपुरुषोंकूंअवश्यकरिके करणेयोग्यहै यातैं नित्यहै ॥ ऐसेहमारेनित्यमतकूंजेकोईमनुष्य श्रद्धावालेहुए तथाअसूयातैंरहितहुए अंगीकार करेहैं ॥ इहां शास्त्रनैंतथागुरनैं उपदेशकऱ्याजोअर्थहै ॥ सोअर्थ जोकदाचित् आपणे अनुभवविषे नहींभीआवताहोवै ॥ तौंभीताअर्थविषे यहअर्थइसीप्रकारहै याप्रकारकाजो विश्वासहै ताविश्वासकानाम श्रद्धाहै ॥ और किसीपुरुषकेगुणोंविषे जोदोषोंकाप्रगटकरणाहै याकानाम असूयाहै ॥ साअसूया ईहांप्रसंगविषे याप्रकारकीप्राप्तहै ॥ इसदुःखरूपयुद्धधर्मविषे मैंअर्जुनकूं प्रवृत्तकरताहूआ यहभगवान् करुणातैं रहितहैइति ॥ ऐसी असूयाकूं सर्वप्राणीयोंकेसुहृदरूप तथागुरुरूप मैंभगवान्वासुदेवविषे नहींकरतेहुए जेमनुष्य हमारेइसमतकूं श्रद्धाभक्तिपूर्वक अंगीकारकरेहैं ॥ तेमनुष्यभी अंतःकरणकीशुद्धिद्वारा तथाज्ञानकीप्राप्तिद्वारा यथार्थज्ञानीकीन्यांई पुण्यपापकर्मोंनैं परित्यागकरतेहै अर्थात् पुण्यपापकर्मोंतैंरहितहोवैहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ ताज्ञानवान्पुरुषके भावीशरीरोंकीप्राप्तिकरणेहारे जितनैंकीपुण्यपापरूपसंचितकर्महैं ॥ तेसंचितकर्मतौं ज्ञानरूपअग्निकरिकैदग्धहोइजावैहैं ॥ और जिन प्रारब्धकर्मोंनैं यहशरीरदियाहै ॥ तेप्रारब्धकर्म भोगकरिकै क्षयहोवैहैं ॥ और सो ज्ञानवान् इस वर्त्तमानशरीरविषे जेपुण्यपापकर्मकरेहै ॥ तेपुण्यपापकर्म ताज्ञानवान् पुरुषकी सेवाकरणेहारे भक्तजन तथा निंदाकरणेहारे दुष्टजन लेजावैहैं ॥ तहांश्रुति ॥ (तस्यपुत्रादायमुपयांतिसुहृदःसाधुकृत्यांद्विषंतःपापकृत्यां) ॥ अर्थ यह ॥ तिसज्ञानवान्पुरुषके धनादिकपदार्थोंकूंतौं पुत्रशिष्यादिक लेजावैहैं ॥ और तिसज्ञानवान्पुरुषके पुण्यकर्मोंकूंतौं सेवाकरणेहारे भक्तजन लेजावे हैं ॥ और तिसज्ञानवान्के पापकर्मोंकूंतौं निंदाकरणेहारे दुष्टजन लेजावैहै इति ॥ इसप्रकार सोविद्वान्पुरुष सर्वपुण्यपापकर्मोंतैंरहितहोवैहै ॥ ईहां शास्त्रविहित नित्यनैमित्तिककर्मोंका मनुष्यकूंहीं अधिकारहै ॥ अन्य किसीकूंअधिकारहैनहीं यातैं श्रीभगवान्नैं (मानवाः) यहवचन कथनकऱ्याहै इति ॥ ३१ ॥ ❀ ॥

तहां पूर्वश्लोकविषे भगवत्अर्पणबुद्धिकरिकै निष्कामकर्मोंकाअनुष्ठानरूपजोभगवत्का मतहै तामतके अंगीकाररूपअन्वयविषे अंतःकरणकी शुद्धिद्वारा तथा ज्ञानकीप्राप्तिद्वारा सर्वकर्मोंतैंरहिततारूपगुणका कथनकऱ्या ॥ अब इसश्लोकविषे ताभगवत्मतकेनहीं अंगीकाररूपव्यतिरेकविषे दोषकेप्राप्तिका कथनकरैहैं ॥

(मू० श्लो०) येत्वेतदभ्यसूयंतोनानुतिष्ठंतिमेमतम् ॥ सर्वज्ञानविमूढाँस्तान्विद्धिनष्टानचेतसः ॥ ३२ ॥ ये। तु। एतत्। अभ्यसूयंतः। न। अनुतिष्ठंति। मे। मतम्। सर्वज्ञानविमूढान्। तान्। विद्धि। नष्टान्। अचेतसः ॥ ३२ ॥ (इतिपदच्छेदः)

हेअर्जुन! पुनः जेपुरुष दोषकूंआरोपणकरतेहूए हमारे इसपूर्वउक्त मतकूं नहीं अंगीकारकरेहैं तिनपुरुषोंकूं तूं दुष्टचित्तवाला जान तथा सर्वज्ञानविषे मूढ जान तथा सर्वपुरुषार्थतेंभ्रष्टजान ॥ ३२ ॥ (इतिपदार्थः)

॥ टीका ॥ हे अर्जुन जेकोईपुरुष नास्तिकपणेतें गुरुशास्त्रकेवचनोंविषे श्रद्धाकूंनहींकरतेहुए तथा गुणोंविषेदोषोंका कथनरूपअसूयाकूंकरतेहूए यापूर्वउक्त हमारेमतकूं नहींअगीकारकरेहैं ॥ तिनपुरुषोंकूं तूं अत्यंत दुष्टचित्तवालाजान ॥ याकारणतेंहीं कर्मविषयक जेज्ञानहैं तथा सगुणनिर्गुणब्रह्मविषयक जेज्ञानहैं तिन सर्वज्ञानोंविषे प्रमाणतें तथाप्रमेयतें तथाप्रयोजनतें तेपुरुष विशेषकरिकै मूढहूएजान ॥ तात्पर्ययह ॥ तेकर्मविषयकज्ञान तथा सगुणनिर्गुणब्रह्मविषयकज्ञान किसप्रमाणकरिकै जन्यहैं तथा तिनज्ञानोंका प्रमेय कौनहै तथा तिनज्ञानोंका प्रयोजन कौनहै याअर्थकूं तेपुरुष जानिसकतेनहीं ॥ याकारणतेंहीं तिनपुरुषोंकूं तू सर्वपुरुषार्थोंतेंभ्रष्टहूआजान इति ॥ ३२ ॥ ❋ ॥ शंका ॥ हेभगवन् जैसे इसलोकविषे जेपुरुष महाराजाकेआज्ञाका उल्लंघनकरेहैं ॥ तिनपुरुषोंकूं महान् भयकीप्राप्तिहोवेहै ॥ तैसे आप ईश्वरकीआज्ञाकेउल्लंघनकरणेविषे महान्भयकीप्राप्तिकूं देखतेहुएभीतेपुरुष किसकारणतें असूयाकरतेहुए ताआपकेमतकूं नहींअंगीकारकरेहैं ॥ तथा किसकारणतें तिनसर्वपुरुषार्थोंके साधनोंविषे प्रतिकूलताबुद्धिकरेहैं ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान् उत्तरकहेहैं ॥

(मू० श्लो०) सदृशंचेष्टतेस्वस्याःप्रकृतेर्ज्ञानवानपि ॥ प्रकृतिंयांतिभूतानिनिग्रहःकिंकरिष्यति ॥ ३३ ॥ सदृशं। चेष्टते। स्वस्याः। प्रकृतेः। ज्ञानवान्। अपि। प्रकृतिं। यांति। भूतानि। निग्रहः। किं। करिष्यति ॥ ३३ ॥ (इति पदच्छेदः)

हेअर्जुन ज्ञानवान्पुरुष भी आपणी प्रकृतिके अनुसारही चेष्टाकरेहै यातें सर्वप्राणी ताप्रकृतिकूंही अनुसरणकरेहैं तिसविषे हमारानिग्रह क्यों करेगा ॥ ३३ ॥

॥ टीका ॥ हे अर्जुन! पूर्वजन्मोंविषेकरतेहुए धर्म अधर्मके तथा ज्ञानइच्छादिकोंके जेसंस्काररहैं ॥ जेसंस्कार इसवर्त्तमानजन्मविषे अभिव्यक्तिकूं प्राप्तभयेहैं ॥ तिन अभिव्यक्तसंस्कारोंकानाम प्रकृतिहै ॥ साप्रकृति सर्वप्रकारतें बलवान्है ॥ ऐसी बलवान्प्रकृतिके अनुसारहीं ब्रह्मवेत्तापुरुषभी चेष्टाकरेहै ॥ अथवा (ज्ञानवान्) यापदकरिकै केवल गुणदोषके जानणेहारेपुरुषकाग्रहणकरणा ॥ तहां आचार्यवचनं ॥ (पश्वादिभिश्चाविशेषात्) ॥ अर्थयह ॥ खानपानादिकव्यवहारकालविषे

विद्वान्पुरुषकी पश्वादिकोंकेसाथि तुल्यताहींहै इति ॥ ऐसाब्रह्मवेत्ताज्ञानवान् अथवा गुणदोषकेजानणेहारा ज्ञानवान्भी जबी आपणे संस्काररूपप्रकृतिकेअनुसार ही चेष्टाकरेहैं ॥ तबी दूसरेअज्ञानीमूर्खपुरुष आपणेप्रकृतिकेअनुसारहीं चेष्टाकरेहैं याकेविषेक्याकहणाहे ॥ यातैं साप्रकृति यद्यपि अविवेकीप्राणियोंकूं पुरुषार्थतैं भ्रष्टकरणेहारीहै तथापि तेसर्वप्राणी ताप्रकृतिकूंहीं अनुसरणकरेहैं ॥ तिसविषे मैंपरमेश्वरकृतनिग्रह तथाराजकृतनिग्रह क्याकरैगा ॥ अर्थात् उत्कटरागकरिकै पापकर्मोंविषेप्रवृत्तहुएपुरुषोंकूं सोनिग्रह तापापकर्मतैंनिवृत्तकरणेविषे समर्थनहींहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जेपुरुष पापकर्मोंविषे महान्नरककीसाधनाकूंजानिकरिकैभी दुर्वासनाकीप्रबलतातैं पुनः तिनपापकर्मोंविषेहीं प्रवृत्तहोवैहैं ॥ तेपुरुष मेरीआज्ञाकेउल्लंघनजन्यदोषतैं कदाचित्भयनहींकरैंगे इति ॥ ३३ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् जोकदाचित् सर्वप्राणी आपणीआपणी प्रकृतिकेहीवशवर्तीहोवैं ॥ तौ लौकिकपुरुषार्थका तथा वैदिकपुरुषार्थका कोईभीविषयहोवैगानहीं ॥ यातैं (स्वर्गकामोयजेत) इत्यादिकविधिवाक्योंविषे तथा (परदारान्नगच्छेत) इत्यादिकनिषेधवाक्योंविषे अनर्थकताप्राप्तहोवैगी ॥ काहेतैं इसलोकविषे पूर्वसंस्काररूपप्रकृतितैंरहित कोईभीप्राणीहैनहीं ॥ जिसकेप्रति तिनविधिनिषेधवाक्योंकूं अर्थवेत्ताहोवै ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् उत्तरकहेहैं ॥

(मू. श्लो.) इंद्रियस्येंद्रियस्यार्थेरागद्वेषौव्यवस्थितौ ॥ तयोर्नवशमागच्छेत्तौह्यस्यपरिपंथिनौ ॥ ३४ ॥ इंद्रियस्य । इंद्रियस्य । अर्थे । रागद्वेषौ । व्यवस्थितौ । तयोः । न । वशम् । आगच्छेत् । तौ । हि । अस्य । परिपंथिनौ । इतिप० ॥ हेअर्जुन इंद्रियं इंद्रियके शब्दादिकविषयविषे रागद्वेषदोनों नियमपूर्वकस्थितहैं तिनरागद्वेषदोनोंके वशकूं यहप्राणीनहीं प्राप्तहोवै जिसंकारणतै तेराग द्वेषदोनों इसप्राणीके शत्रुहीहैं ॥ ३४ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन श्रोत्र त्वक् चक्षु रसन घ्राण यह जेपंचज्ञानइंद्रियहैं ॥ तथा वाक् पाणि पाद उपस्थ पायु यह जे पंचकर्मइंद्रियहैं ॥ तिनज्ञानइंद्रियोंके तथा कर्मइंद्रियोंके जे यथाक्रमतैं शब्द स्पर्श रूप रस गंध वचन आदान गमन आनंद मलविसर्जन यह दश विषयहैं ॥ तिनशब्दस्पर्शादिकविषयोंविषे तथा वचनआदाना दिकविषयोंविषेजोजोविषय इसपुरुषकेअनुकूलहोवैहैं॥सोसोविषय जोकदाचित् शास्त्रकरिकैनिषिद्धभी होवैहै॥तौभी तिसतिसविषयविषे इसपुरुषकारागहीं होवैहै॥ और तिनविषयोंविषे जोजोविषय इसपुरुषके प्रतिकूलहोवैहै॥सोसोविषय जोकदाचित् शास्त्रकरिकैविहितभीहोवैहै ॥ तौभी तिसतिसविषयविषे इसपुरुषका द्वेषहीहो वैहै ॥ इसप्रकार श्रोत्रादिकसर्वइंद्रियोंके शब्दादिकसर्वविषयोंविषे अनुकूलताकरिकै तथाप्रतिकूलताकरिकै तेरागद्वेषदोनों नियमपूर्वकही स्थितहैं ॥ कोईतिनसर्व विषयोंविषे नियमतैं विनाहीं तेरागद्वेषस्थितहैं नहीं॥तहां इसपुरुषनैं ता रागद्वेषकेवशकूंनहींप्राप्तहोना यहही आपणेपुरुषार्थका तथाशास्त्रका विषयहै ॥ ईहां हयतात्प

येहै ॥ यहपरस्त्रीगमनादिककर्ममहान्नरककीप्राप्तिकरणेहारेहैं याप्रकारकाजो बलवत्अनिष्टसाधनताज्ञानहै ॥ ताज्ञानकेअभावसहकृत जो यहपरस्त्रीगमनादिककर्म हमारेविषयसुखरूपइष्टकेसाधनहैं याप्रकारका इष्टसाधनताज्ञानहै ता इष्टसाधनताज्ञानकरिकै जन्यजो तिनपरस्त्रीगमनादिककर्मोंविषे रागहै॥ ताररागकूं अंगीकारकरि केही साप्रकृति इसपुरुषकूं तिनपरस्त्रीगमनादिकनिषिद्धकर्मोंविषे प्रवृत्तकरेहै ।। इसीप्रकार यहसंध्यावंदनादिककर्म स्वर्गादिकफलकीप्राप्तिकरणेहारेहैं याप्रकारकाजो इष्टसाधनताज्ञानहै ॥ ताज्ञानकेअभावसहकृतजो यहसंध्यावंदनादिककर्म हमारे दुःखरूप अनिष्टकेसाधनहैं याप्रकारका अनिष्टसाधनताज्ञानहै ॥ ताअनिष्टसाधनताज्ञानकरिकेजन्यजो तिनसंध्यावंदनादिककर्मोंविषेजोद्वेषहै ताद्वेषकूंअंगीकारकरिकैहीं साप्रकृति तापुरुषकूं तिनसंध्यावंदनादिकविहितकर्मोंतैं निवृत्तकरेहै ॥ तहां जिसकालविषे धर्मशास्त्र तिनपरस्त्रीगमनादिककर्मोंविषे यहपरस्त्रीगमनादिककर्म नरककीप्राप्तिकरणेहारेहैं याप्रकारबलवत्अनिष्टसाधनताकूं बोधनकरेहै ॥ तिसकालविषे बलवत्अनिष्टसाधनताज्ञानकाअभावरहैनहीं जैसे घटरूपप्रतियोगीविद्यमानहुए घटाभावरहैनहीं ॥ और तिनपरस्त्रीगमनादिकनिषिद्धकर्मोंविषे रागकीउत्पत्तिकरणेमेंताइष्टसाधनताज्ञानका सोबलवत्अनिष्टसाधनताज्ञानकाअभावही सहकारीकारणथा ॥ तासहकारीकारणकेअभावहुए सो केवल इष्टसाधनताज्ञान तिनपरस्त्रीगमनादिकनिषिद्धकर्मोंविषे रागकूंउत्पन्नकरिसकैनहीं ॥ जैसे मधुविषयादोनोंकरिकैयुक्तजोअन्नहै ताअन्नविषे यह अन्न हमारेक्षुधाकेनिवृत्तिकासाधनहै याप्रकारके इष्टसाधनताज्ञानकेहुएभी जिसपुरुषकूं ताअन्नविषे यहअन्न हमारेमरणकासाधनहै याप्रकारका अनिष्टसाधनताज्ञानहुआहै तिसपुरुषके सोकेवलइष्टसाधनताज्ञान ताअन्नविषे रागकूं उत्पन्नकरिसकेनहीं ॥ इसीप्रकार जिसकालविषे धर्मशास्त्रसंध्यावंदनादिकविहितकर्मोंविषे ॥ यहसंध्यावंदनादिककर्म स्वर्गादिकसुखकेप्राप्तिकासाधनहैं याप्रकार बलवत्इष्टसाधनताकूं बोधनकरेहै ॥ तिसकालविषे तिनसंध्यावंदनादिकविहितकर्मों विषे बलवत्इष्टसाधनताज्ञानकाअभाव रहैनहीं ॥ जैसे घटरूपप्रतियोगीकेविद्यमानहूए घटाभाव रहैनहीं ॥ और तिनसंध्यावंदनादिकविहितकर्मोंविषे द्वेषकीउत्पत्तिकरणे में ताअनिष्टसाधनताज्ञानका सोबलवत्इष्टसाधनताज्ञानकाअभावही सहकारीकारणथा ॥ तासहकारीकारणकेअभावहुए सोकेवलअनिष्टसाधनताज्ञानका तिनसंध्यावंदनादिकविहितकर्मोंविषे द्वेषकूंउत्पन्नकरिसकैनहीं ॥ यातैंयहअर्थसिद्धभया ॥ प्रतिबंधतैंरहितहूआ सोशास्त्र इसपुरुषकूं संध्यावंदनादिकविहितकर्मोंविषेतैं प्रवृत्तकरेहै ॥ औरपरस्त्रीगमनादिकनिषिद्धकर्मोंतैं निवृत्तकरेहै ॥ इसप्रकार शास्त्रकेविचारजन्यज्ञानकीप्रबलताकरिकै जबी तास्वाभाविकरागद्वेषकेकारणकी निवृत्तिहोवेहै ॥ तबी ताकारणकीनिवृत्तिकरिकै सोस्वाभाविकरागद्वेषरूपकार्यभी निवृत्तहोइजावैहै ॥ यातैं साप्रकृति विपरीतमार्गविषे शास्त्रदृष्टिवालेपुरुषकूं प्रवृत्तकरिसकैनहीं॥यातैं शास्त्रकूं तथापुरुषार्थकूं व्यर्थताकीप्राप्तिहोवैनहींइति॥इसीअभिप्रायकरिकै श्रीभगवान्ने (तयोर्नवशमागच्छेत्) यहवचनकह्याहै अर्थात्

यहपुरुष तारागद्वेषकेअधीनहोइके नहींतौ किसीकर्मविषेप्रवृत्तहोवै तथानहीं किसीकर्मतैंनिवृत्तहोवै ॥ किंतुशास्त्रजन्यज्ञानकरिकै तारागद्वेष तारागद्वेषके नाशद्वातारागद्वेषकूं नाशहींकरे ॥ जिसकारणतैं स्वाभाविकदोषजन्यतेरागद्वेषदोनों इसमोक्षरूपश्रेयकीइच्छावान्‌पुरुषके शत्रुहींहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे मार्ग विषेचलणेहारेपुरुषोंकूं दुष्टचोर अनेकप्रकारकेविघ्नकरेहैं ॥ तैसे मोक्षरूपश्रेयके आत्मज्ञानरूपमार्गविषेप्रवृतहूए इसअधिकारीपुरुषकूं ते रागद्वेषदोनों अनेकप्रकारके विघ्नकरणेहारेहैं॥ यातैं यहअधिकारीपुरुष तारागद्वेषकूं अवश्यकरिकैनाशकरै इति॥ ३४॥ ॥शंका॥ हेभगवन्‌! स्वाभाविकरागद्वेषकरिकैजन्यजा पशुमनुष्यादिकस र्वप्राणीयोंकी साधारणप्रवृत्तिहै॥ तासाधारणप्रवृत्तिकीनिवृत्तिकरिकै जबी इसपुरुषकूं शास्त्रविहितकर्महीं करणेयोग्यहूआ॥ तबी जैसे इसयुद्धविषेशास्त्रविहितकर्मरूप ताहै॥ तैसे संन्यासपूर्वक भिक्षाअन्नकेभोजनविषेभी शास्त्रविहितकर्मरूपताहै॥ यातैं अत्यंतसुगम तथाहिंसादिकोंतैंरहित जोभिक्षाअन्नकाभोजनहै ॥ सोईहीं हमारेकूं करणेयोग्यहै ॥ अत्यंतदुःखरूप तथाहिंसादिकोंकाकारणरूप इसयुद्धकेकरणेविषेहमारा क्याप्रयोजनहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए ॥ श्रीभगवान्‌उत्तर कहेहैं ॥

(मू० श्लो०) श्रेयान्स्वधर्मोविगुणःपरधर्मात्स्वनुष्ठितात् ॥ स्वधर्मेनिधनंश्रेयःपरधर्मोभयावहः ॥ ३५ ॥ श्रेयान् । स्वधर्मः । विगुणः। परधर्मात् । स्वनुष्ठितात् । स्वधर्मे । निधनं । श्रेयः । परधर्मः । भयावहः ॥ ३५ ॥ (इतिपदच्छेदः) हेअर्जुन! सर्वअं गोंकीसंपूर्णता पूर्णतापूर्वककऱ्येहूए परकेधर्मतैं किंचित् अंगोंकीन्यूनतापूर्वककरचाहूआ आपणाधर्म अत्यंत श्रेष्ठहै इसकारणतैं ताआपणे धर्मविषे मरणभी श्रेष्ठहै और परकाधर्मतौ भयकीहींप्राप्तिकरणेहाराहै ॥ ३५ ॥ (इतिपदार्थः)

॥ टीका ॥ हेअर्जुन! ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र यहजेच्यारिवर्णहैं ॥ तथा ब्रह्मचर्य गृहस्थ वानप्रस्थ संन्याससह जेच्यारिआश्रमहैं ॥ तिनच्यारिवर्णोंविषे तथाच्या रिआश्रमविषे जिसजिसवर्णकेप्रति तथाजिसजिसआश्रमकेप्रति धर्मशास्त्रनैं जोजोधर्म विधानकरचा सोसोधर्म तिसतिसवर्णका तथातिसतिसआश्रमका तथा स्वधर्म कह्याजावैहै ॥ दूसरेवर्णनका तथादूसरेआश्रमका सोसोधर्म परधर्म कह्याजावैहै ॥ जैसे बृहस्पतिसवनामायज्ञ शास्त्रने एकब्राह्मणकेप्रतिही विधान करचाहै ॥ क्षत्रियादिकोंकेप्रति विधानकरचानहीं॥ यातैं सोबृहस्पतिसवनामायज्ञ ब्राह्मणकातौं स्वधर्महै ॥ क्षत्रियादिकोंका परधर्महै ॥ इसप्रकार राजसूयनामायज्ञ शास्त्रनैं एकक्षत्रियकेप्रतिहीं विधानकरचाहै ॥ ब्राह्मणादिकोंकेप्रति विधानकरचानहीं ॥ यातैं सोराजसूयनामायज्ञ क्षत्रियकातौं स्वधर्महै॥ ब्राह्मणादिकोंका परधर्महै ॥ इसप्रकार सर्वअसाधारणधर्मविषे स्वधर्मता तथा परधर्मता जानिलेणी॥ ईश्वरनामस्मरणादिकसाधारणधर्मोंविषेतौं सर्वप्राणीमात्रकी स्वधर्मताहींरहैहै किसीभीप्राणकी परधर्मतारहैनहीं॥ याकारणतैं असाधारणधर्मकह्याहै॥ तहां द्रव्य मंत्र देवता इत्यादिकजेकर्मके अंगहैं॥ तिनसर्वअंगोंकी संपूर्णतातैंविनाहीं जोधर्म करचाजावैहै ॥ सो

धर्मविगुणकह्याजावैहै॥ इसप्रकारका विगुणजोस्वधर्महै॥सोस्वधर्म तिनसर्वअंगोंकीसंपूर्णतापूर्वककरचेहूएपरधर्मतैंअत्यंतश्रेष्ठहै ॥ काहेतैं एकवेदप्रमाणकूंछोडिकै दूसराकोईप्रमाण धर्मविषेंहैनहीं किंतुता धर्मविषे एकवेदहीप्रमाणहै॥ यहवार्ता(नोदनालक्षणोऽर्थोधर्मः)इसपूर्वमीमांसाकेसूत्रविषे विस्तारतैंकथनकरीहै यातैं परधर्मजोहै सोभीअनुष्ठानकरणेकूंयोग्यहै धर्महोणेतैं स्वधर्मकी न्याई याप्रकारकाअनुमान ताधर्मविषे प्रमाणहोइसकैनहीं ॥ यातैं यत्किंचित्अंगोंकीन्यूनताकारिकै विगुणभावकूंप्राप्तभयाजो स्वधर्महै ॥ ताविगुणस्वधर्मविषेभी स्थितजोपुरुषहै॥तास्वधर्मनिष्ठपुरुषका परधर्मविषेस्थितपुरुषकेजीवनतैं मरणभी अत्यंतश्रेष्ठहै ॥ काहेतैं स्वधर्मविषेंस्थित पुरुषकाजोमरणहै सोमरण इसलोकविषेतौं तापुरुषकूं कीर्तिकीप्राप्तिकरणेहाराहै ॥ और परलोकविषे स्वर्गादिकोंकीप्राप्तिकरणेहाराहै ॥ यातैं सोमरणभी अत्यंतश्रेष्ठहै ॥ और परधर्मतौं इसपुरुषकूं इसलोकविषेतौं अकीर्तिकीप्राप्तिकरैहै ॥ और परलोकविषे नरकादिकोंकीप्राप्तिकरैहै ॥ यातैं जैंसे रागद्वेषकरिकै जन्य स्वाभाविकप्रवृत्ति इसपुरुषकूं परित्यागकरणेयोग्यहै ॥ तैंसे यहपरधर्मभी परित्यागकरणेकूंयोग्यहै इति ॥ तहां पूर्वप्रसंगविषे श्रीभगवान्‌केमतकूंअंगीकारकरणेहारेपुरुषोंकूं श्रेयकीप्राप्ति कथनकरी ॥ और ताभगवान्‌केमतकूंनहींअंगीकारकरणेहारेपुरुषोंकूं ताश्रेयकेमार्गतैंभ्रष्टपणा कथनकरचा ॥ और ताश्रेयकेमार्गतैं भ्रष्टहोणेविषे तथाफलकीइच्छापूर्वककाम्यकर्मोंकेकरणेविषे तथाकेवलपापकर्मोंकेकरणेविषे (येत्वेतदभ्यसूयंतः) इत्यादिकवचनोंकरिकै बहुतकारण कथनकर्‍ये॥ तिनसर्वकारणोंकूंसंक्षेपतैंकथनकरणेहारा ॥ यहश्लोकहै ॥ (श्रद्धाहानिस्तथासूयादुष्टचित्तत्वमूढते ॥ प्रकृतेर्वशवर्तित्वंरागद्वेषौचपुष्कलौ ॥ परधर्मरुचित्वंचेत्युक्तादुर्मार्गवाहकाः) अर्थयह ॥ श्रद्धातैंरहितहोणा तथाअसूयाकरणी तथाचित्तकीदुष्टता तथामूढतातथाप्रकृतिकेवशवर्तिहोणा तथापुष्कलरागद्वेष तथापरधर्मविषेप्रीतिकरणी यहसर्व दुर्मार्गकीप्राप्तिकरणेहारेहैं इति ॥ ३५ ॥ ❀ ॥ तहां इसपुरुषकी काम्यकर्मोंविषेप्रीतिकरावणेहारा तथानिषिद्धकर्मोंविषे प्रीतिकरावणेहारा जोकोई कारणहै ताकारणकूंनिवृत्तिकरिकै श्रीभगवान्‌के तापूर्वउक्तमतकूं आश्रयणकरणेवासतै अर्जुन प्रथम ताकारणकास्वरूपपूछेहै ॥

(मू०श्लो०) अर्जुनउवाच ॥ अथकेनप्रयुक्तोयंपापंचरतिपूरुषः ॥ अनिच्छन्नपिवार्ष्णेयबलादिवनियोजितः ॥ ३६ ॥ अथ । केनं । प्रयुक्तः । अयं । पापं । चरति । पूरुषः । अनिच्छन् । अपि । वार्ष्णेय । बलात् । इव । नियोजितः ॥ ३६ ॥ (इतिपदच्छेदः)
हेवार्ष्णेय यह पुरुष पापकरणेकीनहींइच्छाकरताहूआ भी बलात्कारतैं प्रवृत्तकर्‍येहूएपुरुषकी न्यांई किसकरिकै प्रवृत्तकर्‍या हूआ पाप कर्मकूं करैहै ॥ ३६ ॥ (इतिपदार्थः)

॥ टीका ॥ हेभगवन् (ध्यायतोविषयान्पुंसः) इत्यादिकवचनोंकरिकै पूर्वभी आपनैं अनर्थकामूल कथनकर्‍याथा ॥ और अबभी आपने (प्रकृतेर्गुणसंमूढाः)

इत्यादिकवचनोंकरिकै बहुतप्रकारका सोअनर्थकामूल कथनकऱ्याहै ॥ तहां तेसर्वहीं समानप्रधानताकरिकै अनर्थकेकारणहैं ॥ अथवा तिनसर्वोविषे एकहींमुख्य कारणहै दूसरे सर्वगौणहैं ॥ तहां ॥ प्रथमपक्षविषेतौं तिनसर्वकारणोंकूं भिन्नभिन्न निवृत्तकरणेविषे महान्परिश्रमहोवैंगा ॥ और दूसरेपक्षविषेतौं ताएकहीं प्रधानकारणके निवृत्तकिये हूए इसपुरुषकूं कृतकृत्यभावकीप्राप्ति होवैंगी ॥ यातैं हेभगवन् ! आप यहवार्त्ताकहो ॥ तुमारेमतकूंनहींअंगीकारकरणेहारा तथासर्वज्ञानोंविषेमूढ यहपुरुष किसबलवान्कारणकरिकै प्रवृत्तकऱ्याहूआ अनर्थकीप्राप्तिकरणेहारे अनेकप्रकारकेनिषिद्धकर्मोंकूं तथाकाम्यकर्मोंकूं करेहै ईहां परस्त्रीगमनादिक निषिद्धकर्म हैं ॥ और शत्रुकेनाशकरणेहारेश्येनयज्ञादिक काम्यकर्महैं ॥ तेदोनोंप्रकारकेकर्म इसपुरुषकूं अनर्थकीहींप्राप्तिकरणेहारेहैं ॥ यातैं तिनदोनोंप्रकारकेकर्मोंका पापशब्दकरिकैग्रहणकऱ्याहै इति ॥ हेभगवन् ! यहपुरुष आप तिनपापकर्मोंकेकरणेकीनहीं इच्छाकरताहूआभी बलात्कारतैं तिनपापकर्मोंकूंहींकरेहै ॥ और परमपुरुषार्थकासाधनरूप करिकै आपनैं उपदेशकऱ्याजोकर्महै ॥ ताकर्मकेकरणेकीइच्छाकरताहूआभी यहपुरुष ताकर्मकूंकरतानहीं ॥ यातैं यहजान्याजावैहै ॥ यहपुरुष परतंत्रहै स्वतंत्रनहींहै ॥ परतंत्रतातैंविना यहवार्त्ता संभवतीनहीं ॥ यातैं हेभगवन् जैसे महाराजानैं किसीकार्यविषे बलात्कारसैं प्रवृत्तकऱ्याजोकोईभृत्यहै ॥ सोभृत्य ताकार्यकेकरणेकीनहींइच्छाकरताहूआभी ताकार्यकूं अवश्यकरिकैकरेहै ॥ तैसे जिसबलवान्कारणकरिकै प्रवृत्तकऱ्याहूआ यहपुरुष तुमारेमतकेविरोधीपापकर्मोंकूं सर्वअनर्थोंकामूलभूतजानताहूआभी तिनपापकर्मोंकूंहींकरेहै ॥ तिस अनर्थविषेप्रवृत्तकरणेहारेकारणका स्वरूप आप हमारेप्रति कथनकरो ॥ जिसकारणकेस्वरूपकूंजानिकरिकै मैंअर्जुन तिसकारणकेनाशकरणेवासतै प्रयत्नकरो इति ॥ ईहां (अनिच्छन्नपि) यावचनकरिकै अर्जुननैं यहअर्थ सूचनकऱ्या ॥ पूर्वकथनकऱ्येहूए रागद्वेषविषेभी प्रवृत्तिकीकारणतासंभवैनहीं ॥ काहेतैं रागके विद्यमानहूए इच्छा अवश्यकरिकैहोवैहै ॥ यातैं यापुरुषविषे इच्छाकेअभावहूए तारागकाभीअभावहींहै ॥ जबी तारागविषे अप्रवर्त्तकतासिद्धभई ॥ तबी तारागजन्यसंस्कारोंकरिकैजन्यजोधर्मअधर्महै ताधर्मधर्मविषेभी साप्रवर्त्तकता संभवैनहीं ॥ और ताधर्मअधर्मविषे अप्रवर्त्तकताहूए ताधर्मअधर्मकीअपेक्षाकरणेहारेईश्वरविषेभी साप्रवर्त्तकता संभवैनहींइति ॥ और (हेवार्ष्णेय) यासंबोधनकेकहणेकरिकै अर्जुननैं यहअर्थ सूचनकऱ्या ॥ हमारे मातामहकाकुल जोवृष्णिवंशहै तावृष्णिवंशविषे आपणेभक्तजनोंकेउद्धारकरणेवासतै आपनैं अवतारधारणकऱ्याहै ॥ और मैंअर्जुनभी तावृष्णिवंशविषेउत्पन्नहूई कुंतीमाताकापुत्रहूं ॥ यातैं हमारेकूं आपना जानिकरिकै आपनैं हमारीउपेक्षानहीं करणी ॥ किंतु इसहमारेप्रश्नका आपनैं यथार्थउत्तरकहणा इति ॥ ३६ ॥ ❀ ॥ इस प्रकार अर्जुनकरिकैपूछाहूआ श्रीभगवान् । (काममयएवायंपुरुषःइति आत्मैवेदमग्रआसीदेकएव सोकामयत जायामेस्यात् अथप्रजामेस्यात् अथवित्तंमेस्यात्

अथकर्मकुर्वीय) इत्यादिकश्रुतियोंकरिकै सिद्ध तथा । (अकामस्यक्रियाकाचिद्दृश्यतेनेहकर्हिचित् ॥ यद्यद्धिकुरुतेजंतुस्तत्तत्कामस्यचेष्टितम्) इत्यादिक स्मृतियोंकरिकैसिद्ध उत्तरकूं कहताभया ॥ तिनश्रुतियोंका तथास्मृतिवचनका यह अर्थहै यहपुरुष काममयहींहैइति ॥ इस जगत्कीउत्पत्तितैंपूर्व एकं आत्माहींहोताभया ॥ सोआत्मादेव याप्रकारकीकामना करताभया ॥ हमारेकूं जायाप्राप्त होवै ॥ तथा हमारेकूं प्रजाप्राप्तहोवै तथा हमारेकूं धनप्राप्तहोवै ॥ तथा मैं कर्मोंकूं करौंइति ॥ और यालोकविषे कामनातैंराहितपुरुषकी कोईभीक्रिया देखणेविषेआवतीनहीं ॥ यातैं यहजीव जिसजिसकर्मकूंकरेहै ॥ सोसर्व इसकामकीहींचेष्टाहैइति ॥ इत्यादिकश्रुतिस्मृतियोंकरिकेसिद्धउत्तरकूं श्रीभगवान् कहेहैं ॥

(मू. श्लो.) श्रीभगवानुवाच ॥ कामएषक्रोधएषरजोगुणसमुद्भवः ॥ महाशनोमहापाप्माविद्ध्येनमिहवैरिणम् ॥३७॥ कामः । एषः । क्रोधः । एषः । रजोगुणसमुद्भवः । महाशनः । महापाप्मा । विद्धि । एनं । इह । वैरिणम् ॥३७॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेअर्जुन सोअनर्थ मार्ग विषेप्रवृत्तकरणेहारा यह कामहींहै यहकामही क्रोधरूपहै तथारजोगुणतैंउत्पन्नभया है तथामहान् आहारवालाहै तथाअत्यंतं उग्रहै यातैं ईससंसारविषे ईसकामकूंही तूं वैरीरूप जान ॥३७॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन! इसपुरुषकूं बलात्कारसे अनर्थमार्गविषेप्रवृत्तकरणेकाकारण जो तुमने पूछाथा ॥ सोकारण यहकामरूपमहान्शत्रुहींहै ॥ इसकामकरि केही इनप्राणियोंकूं सर्वअनर्थोंकीप्राप्तिहोवैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् जैसे यहकामप्राणियोंकूं अनर्थविषेप्रवृत्तकरेहै ॥ तैसे क्रोधभी इनप्राणियोंकूं ॥ सर्वअनर्थविषेप्रवृत्तकरेहै ॥ यातैंकेवलकामविषेही प्रवर्त्तकता संभवैनहीं ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहेहैं (क्रोधएषः इति) हेअर्जुन यह विष योंकीअभिलाषारूपजोकामहै ॥ ताकामते सोक्रोध भिन्ननहींहै ॥ किंतु यहकामहींक्रोधरूपहोवैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जोकोईपुरुषकिसीधनादिकपदार्थोंकीइच्छा करिकै जबी किसीधनीपुरुषकेसमीपजावैहै ॥ आगेतैंकोईदुष्टपुरुष तापुरुषकीइच्छा पूर्णहोणेदेवैनहीं ॥ तबी तापुरुषका सोइच्छारूपकामहीं तादुष्टपुरुषऊपरि क्रोधरूप होइकै परिणामकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यहवार्ता सर्वलोकोंकूं अनुभवसिद्धहै ॥ यातैं सोकामहींक्रोधरूपहै इति ॥ ताकामरूपमहाशत्रुके निवृत्तकि येहुए इसपुरुषकूं सर्वपुरुषार्थोंकीप्राप्तिहोवैहै ॥ अबताकामरूपशत्रुकेनिवृत्तकरणेहारेउपायकेजनावणेवास्ते ताकामरूपशत्रुकेकारणकूं कथनकरेहैं (रजोगुण समुद्भवः इति) हेअर्जुन दुःखप्रवृत्तिबलरूपजोरजोगुणहै ॥ सोरजोगुणहैसमुद्भवनाम कारणजिसका ऐसायहकामहै ॥ और लोकविषेकारणकेसमानस्वभाववाला हींकार्यहोवैहै ॥ यातैं जैसे सोरजोगुणरूपकारण दुःखप्रवृत्तिआदिरूपहै ॥ तैसे यहकाम रूपकार्यभीदुःखप्रवृत्तिआदिरूपहींहै ॥ यद्यपि रजोगुणकीन्यांई तमो

गुणभी ताकामकाकारणहै ॥ यातैं (रजोगुणसमुद्भवः) यावचनकीन्यांई तमोगुणसमुद्भवः यहभीवचनकहणाउचितथा ॥ तथापि दुःखविषे तथाप्रवृत्तिविषे रजोगुणकूंहीं प्रधानताहै ॥ तमोगुणकूंप्रधानताहैनहीं ॥ यातैं ईहां रजोगुणकाहीकथनकरयाहै ॥ इतनैंकहनेकरिकैश्रीभगवान्नैं यहअर्थबोधनकऱ्या ॥ सात्विकवृत्तिकरिकै जबी ताररजोगुणरूपकारणकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ तबी कारणकेनिवृत्तहुए सोकामरूपकार्य आपहींनिवृत्तहोइजावैहै ॥ यातैं सा सात्विकवृत्तिहीं रजोगुणकीनिवृत्तिद्वारा ताकामकेनिवृत्तिकाउपायहैइति ॥ अथवा ॥ हेभगवन् ताकामकूं किसप्रकारतैं अनर्थविषेप्रवर्त्तकताहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहैहैं (रजोगुणसमुद्भवःइति) हेअर्जुन दुःखप्रवृत्ति आदिरूपजोरजोगुणहै ताररजोगुणकाहै समुद्भवनाम उत्पत्तिजिसतैं ताकानाम रजोगुणसमुद्भवहै ॥ ऐसारजोगुणकाकारणरूप यहकामहै ॥ तात्पर्ययह ॥ विषयोंकीअभिलाषारूपजोयहकामहै ॥ सोयहकाम आपप्रगटहोइकै ताररजोगुणकूं प्रवर्त्तकरताहुआ इसपुरुषकूं दुःखरूपकर्मोंविषे प्रवृत्तकरैहैइति ॥ यातैं अधिकारीपुरुषोंनैं यहकामरूपशत्रु अवश्यकरिकै जयकरणेयोग्यहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ! इसलोकविषे शत्रुकेजयकरणेवास्तै साम दान भेद दंड यहच्यारि उपायहोवैहैं ॥ तहां साम दान भेद यातीनउपायोंकरिकै जो शत्रु वशनहींहोताहोवै ॥ तौ ताशत्रुकेजयकरणेवास्तै चौथा दंडरूपउपायकरणा ॥ परंतु तिन तीनउपायोंकेकियेतैंविनाहीं प्रथमहीं सोदंडरूपउपायकरणा उचितनहींहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए ॥ श्रीभगवान् ताकामरूपशत्रुकेजीतणेविषे प्रथम तीनउपायोंकेअसंभवकहणेवास्तै ताकामरूपशत्रुके दोविशेषण कहैहैं (महाशनोमहापाप्माइति) महान्है अशन क्या आहार जिसका ताकानाम महाशनहै ॥ ऐसायहकामहै ॥ तात्पर्ययह ॥ अनेकप्रकारकेमहान् भोगोंकीप्राप्तिकरिकैभी यहकाम कदाचित्भी तृप्तहोवैनहीं ॥ यहवार्ता स्मृतिविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ (नजातुकामःकामानामुपभोगेनशाम्यति ॥ हविषाकृष्णवर्त्मेवभूयएवाभिवर्द्धते ॥१॥ यत्पृथिव्यांव्रीहियवंहिरण्यंपशवःस्त्रियः ॥ नालमेकस्यतत्सर्वमितिमत्वाशमंव्रजेत् ॥२॥ अर्थ यह यहकाम पदार्थोंकेभोगकरिकै कदाचित्भी शांतिकूंप्राप्तहोतानहीं ॥ किंतु जैसे अग्नि घृतकाष्ठादिकोंकेपावणेकरिकै वृद्धिकूंप्राप्तहोता जावैहै ॥ तैसे यहकामभी बहुतपदार्थोंकेभोगकरिकैदिनदिनविषे वृद्धिकूंप्राप्तहोताजावैहै ॥ और इसपृथिवीविषे जितनैंकीव्रीहियवादिकअन्नहै ॥ तथा जितनैंकीसुवर्णादिकधनहैं ॥ तथा जितनैंकि गोअश्वादिकपशुहैं ॥ तथा जितनीकि सुंदरास्त्रियांहैं ॥ तेसर्वपदार्थ जोकदाचित् कामनावालेकिसीएकपुरुषकूंभी प्राप्तहोवै ॥ तोभी तेसर्वपदार्थ तापुरुषकेकामकूं तृप्तकरणेविषे समर्थहोवैनहीं ॥ तौ अल्पभोगोंकरिकै ताकामकीशांति कैसेहोवैगी ॥ किंतुनहींहोवैगी ॥ याप्रकारकाविचारकरिकै यहपुरुष शांतिकूंप्राप्तहोवै ॥ २ ॥ यातैं तादानरूपउपायकरिकै यहकामरूप शत्रु वशहोवैनहीं ॥ इसप्रकार साम भेद यादोनोंउपायोंकरिकैभी

यहकामरूपशत्रु वशहोवैनहीं ॥ जिसकारणतैं यहकामरूपशत्रु महापाप्माहे क्या अत्यंतउग्रहे ॥ याकारणतैंहीं इसकामकरिकेप्रेरणाकरयाहूआ यहपुरुष पापकर्मोतैं दुःखरूपफलकींप्राप्तिकूंजानताहुआभी पुनः तिनपापकर्मोंकूंहींकरेहे ॥ ऐसाअत्यंतउग्र यहकामरूपशत्रु साम भेद या दोनोंउपायोंकरिकै वशहोइ सकैनहीं ॥ जिसकारणतैं लोकविषेक्रूरस्वभाववालेशत्रुहींता साम भेदरूपउपायकरिकैवशहोवै हैं ॥ यातैं हेअर्जुन इससंसारविषे तूं इसकामकूंहींशत्रुरूप जान इति ॥ ३७ ॥ ❀ तहांपूर्वश्लोकविषे अत्यंतउग्ररूपकरिकै ताकामविषे कथनकरया जोशत्रुपणा ता शत्रुपणेकूं अब तीनदृष्टांतोंकरिकै स्पष्टकरेहैं ॥

(मू० श्लो०) धूमेनाव्रियतेवह्निर्यथादर्शोमलेनच ॥ यथोल्बेनावृतोगर्भस्तथातेनेदमावृतम् ॥ ३८ ॥ धूमेन । आव्रियते । वह्निः । यथा । आदर्शः । मलेन । च । यथा । उल्वेन । आवृतः । गर्भः । तथा । तेन । इदम् । आवृतम् ॥ ३८ ॥ (इतिपदच्छेदः) हेअर्जुन जैसे धूमने अग्नि आवृतकरिताहे तथा जैसे रजरूपमलनैं दर्पण आवृतकरिताहे तथा जैसे जरायुचर्मने गर्भ आवृत करताहैं तैसे तिसकामनैं यह ज्ञान आवृतकरयाताहै ॥ ३८ ॥ (इतिपदार्थः)

॥ टीका ॥ हेअर्जुन इसस्थूलशरीरकेआरंभतैंपूर्व अंतःकरण कामादिकवृत्तियोंकूं प्राप्तहोवैनहीं ॥ यातैं यास्थूलशरीरकीउत्पत्तितैंपूर्व सोअंतःकरणसूक्ष्म कहाजावैहै और शरीरकेआरंभकरणेहारेपुण्यपापकर्मोंकरिकैरचित जोयहस्थूलशरीर है ॥ तास्थूलशरीरविषे स्थितहोइके सोअंतःकरण कामादिकवृत्तियोंकूंप्राप्तहोवैहै यातैं तास्थूलशरीरावच्छिन्नअंतःकरणविषे अभिव्यक्तिकूंप्राप्तहूआ सोकाम स्थूल कह्याजावैहै ॥ और सोईहींकाम विषयोंके चिंतनअवस्थाविषे पुनःपुनः वृद्धिकूंप्राप्त हुआ स्थूलतर कह्याजावैहै ॥ और सोईहींकाम तिनाविषयोंकेभोग अवस्थाविषे अत्यंतवृद्धिकूंप्राप्तहुआ स्थूलतम कह्याजावैहै ॥ यहां स्थूलतैंभी अधिकस्थूलकानाम स्थूलतरहै ॥ और स्थूलतरतैंभी अधिकस्थूलकानाम स्थूलतमहै ॥ इसप्रकार सोएकहींकाम स्थूल स्थूलतर स्थूलतम यातीनअवस्थावोंवालाहोवैहै ॥ तहांताकामके प्रथम स्थूलअवस्थाविषे दृष्टांतकथनकरेहैं (धूमेनाव्रियतेवह्निः इति) हेअर्जुन जैसे अग्निकेसाथि उत्पन्नभयाजो अप्रकाशरूपधूमहै ॥ ताअप्रकाशरूपधूमनैं प्रकाशरूपअग्नि आवृतकरीताहै ॥ तैसे इसस्थूलकामनैं यहज्ञान आवृतकरीताहै ॥ अब ताकामकी दूसरीस्थूलतरअवस्थाविषे दृष्टांत कथनकरेहैं (यथादर्शोमलेनचइति) हेअर्जुन जैसे दर्पणतैंपश्चात्उत्पन्नभयाजो रजरूपमलहै ॥ तिस रजरूपमलनैं सोदर्पण आवृतकरीताहै ॥ तैसे इस स्थूलतरकामनैंभी यहज्ञान आवृतकरीताहै ॥ अब ताकामकीतीसरी स्थूलतमअवस्थाविषे दृष्टांतकथनकरेहैं (यथोल्बेनावृतोगर्भः इति) हेअर्जुन जैसे माताकेउदरविषे स्थितगर्भकूं सर्वओरतैंवलेटरह्याहुआ जो जरायुनामाचर्महै ॥ ताजरायुनामाचर्मनैं सोगर्भ आवृतकरीताहै ॥ तैसे इसस्थूलतमकामनैं यहज्ञान

आवृतकरीताहै ॥ ईहां इनतीनदृष्टांतोंविषे परस्पर इतनीविशेषताहै ॥ ताधूमकरिकैआवृतहुआभीअग्नि दाहादिरूपआपणेकार्यकूंकरतानहींहै ॥ और रजरूप मलकरिकैआवृतहुआजोदर्पणहै ॥ सोदर्पणतो प्रतिबिंबकाग्रहणरूपआपणेकार्यकूंकरतानहीं ॥ जिसकारणतैं तादर्पणकेस्वच्छतामात्रकातारजरूपमलकरिकै तिरोधानहोइरह्याहै ॥ परंतु सोदर्पण स्वरूपतैंतौं प्रतीतहोतारहेहै ॥ और जरायुनामाचर्मकरिकैआवृतजोगर्भहै ॥ सोगर्भ तौं हस्तपादादिकोंकाप्रसारणरूप आपणे कार्यकूंभी करतानहीं ॥ तथा आपणेस्वरूपतैं भी प्रतीतहोतानहीं ॥ याप्रकारकी तिनदृष्टांतोंकीविलक्षणताकूंअंगीकारकरिकैहीं ताकामकी स्थूल स्थूलतर स्थूलतमयातीनअवस्थावोंविषे यथाक्रमतैं तेतीनदृष्टांत कथनकरेहैंइति ॥ ३८ ॥ ॥ तहां पूर्वश्लोकविषे (तथातेनेदमावृतं यहजोसंग्रहवचनकह्याथा) तासंग्रहवचनकेअर्थकूं अब विस्तारकरिकै कथनकरेहैं ॥

(मू. श्लो.) आवृतंज्ञानमेतेनज्ञानिनोनित्यवैरिणा ॥ कामरूपेणकौंतेयदुष्पूरेणानलेनच ॥ ३९ ॥ आवृतं । ज्ञानम् । एतेन । ज्ञानिनः । नित्यवैरेणा । कामरूपेण । कौंतेय । दुष्पूरेण । अनलेन । च । इतिपदच्छेदः ॥ ३९ ॥ हेकौंतेय इसकामनैंही यहज्ञान आवृतकरयाहै कैसाहैयहकाम ज्ञानीपुरुषका नित्यहींवैरीहै तथाइच्छा तृष्णारूपहै तथा अग्निकी न्याई पूरितितैंरहितहै ॥ ३९ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जिसकरिकै वस्तुकूंजानिये ताकानाम ज्ञानहै ॥ ऐसा अंतःकरणहै ॥ अंतःकरण करिकैहीं वस्तु जान्याजावैहै ॥ अथवा अंतःकरणकीवृत्तिरूप जोविवेकविज्ञानहै ताकानाम ज्ञानहै ॥ ऐसाज्ञान इसकामनैंहीं आवृतकरयाहै ॥ शंका ॥ ❀ ॥ हेभगवन् यद्यपि इसकामनैं सोज्ञान आवृतकरयाहै ॥ तथापि अविचारासिद्धसुखकाहेतुहोणेतैंयहकाम ग्रहणकरणेकूंयोग्यहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुये श्रीभगवान्कहेहैं (ज्ञानिनोनित्यवैरिणाइति) हेअर्जुन यहकाम ज्ञानीपुरुषोंकातौ नित्यहींवैरीहै ॥ काहेते अज्ञानीपुरुषतौं विषयभोगकालविषे ताकामकूं मित्रकीन्याईहींजानतेहैं ॥ और ताअज्ञानीपुरुषकूं जबी ताकामका कार्यरूपदुःख आइकैप्राप्तहोवैहै तबी सोअज्ञानीपुरुषइसकामनैंहीं हमारेकूं इसदुःखकीप्राप्तिकरीहै इसप्रकार ताकामकूं शत्रुरूपकरिकैजानेहै यातैं ताअज्ञानीपुरुषका सोकाम नित्यहींवैरीनहींहै ॥ किंतु दुःखरूपपरिणामकालविषे वैरीहै ॥ और ज्ञानवान्पुरुषतौं ताविषयभोगकालविषेभी इसकामनैंही हमारेकूं इसअनर्थविषेप्रवृत्तकरयाहै याप्रकार ताकामकूं वैरीहींजानेहै ॥ यातैं सोज्ञानवान्पुरुष विषयभोगकालविषे तथाताकेदुःखरूपपरिणामकालविषे इसकामकरिकै दुःखीहींहोवैहै ॥ याकारणतैं यहकामताज्ञानवान्पुरुषका नित्यहींवैरीहै ॥ ऐसेनित्यवैरीरूपकामकूं ताज्ञानवान्पुरुषनैं अवश्यकरिकैहननकरणा ॥ शंका ॥ ❀ ॥ हेभगवन् ताकामकेस्वरूपजानेतैंविना ताका हननसंभवैनहीं ॥ यातैं ताकामका स्वरूपकह्याचाहिये ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए

श्रीभगवान्कहेहैं (कामरूपेणइति) हेअर्जुन इच्छातृष्णारूपकामहींहैरूपाजिसका ऐसायहकामहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् यद्यपि सोकामं विवेकीपुरुषका नित्यहीं वैरीहींहै ॥ यातैं विवेकीपुरुषोंनैंतौं ताकामकाअवश्यकरिकै हननकरणा ॥ तथापि अविवेकीपुरुषोंका सोकाम नित्यवैरीहैनहीं ॥ यातैं तिनअविवेकीपुरुषोंनैं तौं ताकामका अवश्यकरिकैग्रहणकरणा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहेहैं (दुष्पूरेणानलेनचइति) हेअर्जुन जैसे यह अग्नि घृतकाष्ठादिकोंकरिकै तृप्तहोवैनहीं ॥ तैसे यहकामभी अनेकप्रकारकेभोगोंकरिकैभी तृप्तहोवैनहीं ॥ याकारणतैं यहकाम निरंतर संतापकाहींहेतुहै ॥ यातैं विवेकीपुरुषकीन्यांई अविवेकीपुरुषनैंभी ताकामकापरित्यागहींकरणाइति ॥ अथवा ॥ शंका ॥ हेभगवन् इसलोकविषे जोजोइच्छाहोवैहै ॥ सोसोइच्छा आपणेआपणेविषयकीप्राप्तिवैंनिवृत्तिहोइजावैहै ॥ और यहकामभी इच्छारूपहींहै ॥ यातैं यहकामभी तिसतिसविषयोंकेभोगकरिकै आपहींनिवृत्तिहोइजावैगा ताकामकीनिवृत्तिकरणेवासते ॥ दूसरेउपायका कछुप्रयोजननहींहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान्कहेहैं (दुष्पूरेणानलेनचइति) हेअर्जुन विषयकी प्राप्तिकालविषे यद्यपि ताविषयकीइच्छाकातिरोधानहोवैहै ॥ तथापि कालांतरविषेपुनःताइच्छाका प्रादुर्भावहोवैहै ॥ यातैं विषयकीप्राप्ति ताइच्छाकानिवर्त्तक नहींहै ॥ किंतु विषयोंविषे वारंवार दोषदृष्टिहीं ताइच्छाकानिवर्त्तकहै इति ॥ ३९ ॥ ❀ शंका ॥ हेभगवन् इसलोकविषेजिसशत्रुकेस्थानकाज्ञानहोवै है ॥ सोईहींशत्रु जीत्याजावैहै ॥ ताशत्रुकेस्थानकेज्ञानतैंविना सोशत्रु जीत्याजावैनहीं ॥ यातैं इसकामशत्रुके जीतणेवासतैं प्रथम इसकामका अधिष्ठानजान्या चाहिये ॥ जिसअधिष्ठानकेआश्रितहुआयहकाम लोकोंकूं अनर्थकीप्राप्तिकरैहै ॥ सोकामकाअधिष्ठान कौनहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए ॥ श्रीभगवान् ताकामके अधिष्ठानका कथनकरैहैं ॥

(मू० श्लो०) इंद्रियाणिमनोबुद्धिरस्याधिष्ठानमुच्यते ॥ एतैर्विमोहयत्येषज्ञानमावृत्यदेहिनम् ॥४०॥ इंद्रियाणि । मनः । बुद्धिः । अस्य । अधिष्ठानम् । उच्यते । एतैः । विमोहयति । एषः । ज्ञानम् । आवृत्य । देहिनम् ॥४०॥ (इतिपदच्छेदः) हेअर्जुन इंद्रियं मन बुद्धि यहतीनोंहीं ईसकामके अधिष्ठान कहेजावैहैं इनतीनोंकरिकैहीं यहकाम तांज्ञानकूं आवृतकरिकै देहाभिमानीजीवकूं मोहकीप्राप्तिकरैहै ॥ ४० ॥ (इतिपदार्थः)

॥ टीका ॥ हे अर्जुन शब्द स्पर्श रूप रस गंध यापांचोंकूंयथाक्रमतैं विषयकरणेहारे जे श्रोत्र त्वक् चक्षु रसन घ्राण यहपंचज्ञानइंद्रियहैं ॥ तथा वचन आदान गमन आनंद विसर्ग यापंचक्रियावोंके यथाक्रमतैंजनक जे वाक् पाणि पाद उपस्थ पायु यहपंचकर्मइंद्रियहैं ॥ यह दशइंद्रियजोहैं ॥ तथा संकल्प

रूपजोमनहे ॥ तथा निश्चयरूपजोबुद्धिहे ॥ यातीनोंहीं इसकामका अधिष्ठान कहेजावैहैं ॥ इनतीनोंकरिकेहीं यहकाम ताविवेकज्ञानकूं आवृतकरिके देहाभिमानीपुरुषकूं नानाप्रकारकेमोहकीप्राप्तिकरेहै इति ॥ ४० ॥ ❀ ॥ जिसकारणतें तिनइंद्रियादिकोंकेआश्रितहुआहीं यह काम देहाभिमानीजीवोंकूं अनेकप्रकारकेमोहकीप्राप्तिकरेहै ॥ तिसकारणतैं तूं प्रथम तिनइंद्रियादिकोंकूंहीं जयकर ॥ तिनइंद्रियादिकोंकेजयहुए ताकामकाभी सुखेनहीं जयहोवैगा ॥ याअर्थकूं श्रीभगवान् अर्जुनकेप्रति कथनकरे हे ॥

(मू. श्लो.) तस्मात्त्वमिंद्रियाण्यादौनियम्यभरतर्षभ ॥ पाप्मानंप्रजहिह्येनंज्ञानविज्ञाननाशनम् ॥ ४१ ॥ तस्मात् । त्वम् । इंद्रियाणि । आदौ । नियम्य । भरतर्षभ । पाप्मानं । प्रजहि । हि । एनं । ज्ञानविज्ञाननाशनम् ॥ ४१ ॥ (इति पदच्छेदः) हेअर्जुन तिसकारणतैं तूं अर्जुन प्रथम तिनइंद्रियोंकूं वशकरिकै सर्वपापकेमूलभूत तथाज्ञानविज्ञानकेनाशकरणहारे इसकामकूं हीं नाशकर ॥ ४१ ॥ इति पदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जिसकारणतें इसकामके तेश्रोत्रादिकइंद्रियहीं अधिष्ठानरूपहैं ॥ जैसे किसीराजाके पर्वत दुर्गआदिक अधिष्ठानहोवैहैं ॥ तैसेइसकामके तेश्रोत्रादिकइंद्रियही अधिष्ठानरूपहैं तिसकारणतैं तूअर्जुन ताकामकृतमोहतैंपूर्व अथवा ताकामकेनिरोधतैंपूर्व तिनश्रोत्रादिकइंद्रियोंकूंवशकरिकै इस कामकूंनाशकर ॥ तिनइंद्रियोंकेवशकीयेतैंविना ताकामकानाश करयाजावेनहीं जैसे किसीपर्वतविषे तथाकिसीदुर्गादिकोंविषे स्थितजो कोईराजाहै ॥ ताराजाके तिनपर्वतदुर्गादिकोंकूं आपणेवशकरिकेहीं दूसरेराजे ताराजाकूंनाशकरेहैं ॥ तिनपर्वतदुर्गादिकोंकेवशकीयेतैंविना ताराजाकूं दूसरेराजे नाशकरिसकैंनहीं ॥ तैसे तिनइंद्रियोंकेवशकीयेतैंविना ताकामका नाशहोवैनहीं ॥ और तिनश्रोत्रादिकइंद्रियोंकेवशकियेतैंअनंतर मन बुद्धि यादोनोंकाभीवशकरणा सिद्धहोवैहै ॥ काहेतैं संकल्परूपजोमनहे तथानिश्चयरूपजोबुद्धिहे ॥ यहदोनों बाह्यइंद्रियजन्यवृत्तिद्वाराहीं अनर्थकेकारणहोवैहैं ॥ ताबाह्यइंद्रियजन्यवृत्तितैंविना तिनदोनोंविषे अनर्थकीकारणता संभवैनहीं ॥ यातैं तिनश्रोत्रादिकइंद्रियोंकेवशहूएतैं अनंतर सो मन बुद्धिभी अवश्यकरिकै वशहोवैहै ॥ याकारणतैंहीं पूर्वश्लोकविषे (इंद्रियाणिमनोबुद्धिः) यावचनकरिकै इंद्रिय मनबुद्धि यातीनोंका भिन्नभिन्न कथनकरिकैभी इसलोकविषे (इंद्रियाणि) यावचनकरिकै केवल श्रोत्रादिकइंद्रियोंकाहीं कथनकरयाहै ॥ अथवा जैसे बाह्यशब्दादिकोंकेज्ञानविषे श्रोत्रादिकोंकूं इंद्रियरूपताहै ॥ तैसे अंतरसुखदुःखादिकोंकेज्ञानविषे मनबुद्धिकूंभी इंद्रियरूपताहै ॥ यातैं (इंद्रियाणि) यापदकरिकै तामनबुद्धिकाभी ग्रहणहोइसकेहैइति ॥ ईहां

(हेभरतर्षभ) यासंबोधनकेकहणेकरिकै श्रीभगवान्नैं यहअर्थ सूचनकरया ॥ महान्भरतवंशविषे तूं उत्पन्न भयाहै ॥ यातै तिनइंद्रियोंकेवशकरणेविषे तूसमर्थहैइति ॥ शंका ॥ हेभगवन् इसलोकविषे जोकोईपुरुषकिसीमहान्अपराधकूंकरेहै ॥ तिसपुरुषकाहीं राजादिक नाशकरेहैं अपराधतैंविनाकिसी कामी कोई नाशकरतानहीं ॥ सो ऐसाअपराध इसकामनैं कौनकरयाहै ॥ जिसअपराधकरिकै मैं इसकानाशकरों ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् ताकामकृतअपराधका वर्णनकरेहैं (पाप्मानंज्ञानविज्ञाननाशनमिति) हेअर्जुन यहजीव ताकामकेवशहुएहीं सर्वपापोंकूंकरेहैं ॥ कामरहितपुरुष किसीभीपापकूंकरतेनहीं ॥ यातैं अन्वयव्यतिरेककरिकै यहकामहीं सर्वपापकर्मोंकामूलरूपहै ॥ पुनः कैसाहैसोकाम ॥ गुरुशास्त्रकेउपदेशतैंउत्पन्नभया जो आत्माकापरोक्षज्ञानहै ॥ तथा तापरोक्षज्ञानकाफलरूपजो आत्माकाअपरोक्षज्ञानरूपविज्ञानहै ॥ जेज्ञानविज्ञानदोनों इसपुरुषकूं मोक्षकीप्राप्तिकरणेहारेहैं ॥ तिनज्ञानविज्ञानदोनोंका यहकाम नाशकरणेहाराहै ॥ ऐसेमहान्अपराधवालेकामका अवश्यकरिकैनाशकरयाचाहीये इति ॥ ४१ ॥ ❀

॥ शंका ॥ हेभगवन् ताकामकेनाशकरणेवास्तै पूर्व आपनैं इंद्रियोंकावशकरणा कथनकरया ॥ सो यद्यपि जिसीकिसीप्रकारतैं बाह्यश्रोत्रादिकइंद्रियोंका वशकरणातौं संभवहोइसकेहै ॥ तथापि अंतरकीतृष्णाकात्यागकरणा बहुतदुर्घटहै ॥ समाधान ॥ हेअर्जुन (रसोप्यस्यपरंदृष्ट्वानिवर्त्तते) इसवचनविषे पूर्व हम परवस्तुकेदर्शनकूंहीं तारसरूपतृष्णाकीनिवृत्तिविषेकारणरूप कथनकरिआयेहैं ॥ शंका ॥ हेभगवन् जिसपरवस्तुकेदर्शनतैं तिस तृष्णाकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ सोपरवस्तु कौनहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए ॥ श्रीभगवान् तिसपरशब्दकाअर्थरूप शुद्धआत्माकूं देहादिकोंतैंभिन्नकरिकै निरूपणकरेहै ॥

(मू० श्लो०) इंद्रियाणिपराण्याहुरिंद्रियेभ्यःपरंमनः ॥ मनसस्तुपराबुद्धिर्योबुद्धेःपरतस्तुसः ॥ ४२ ॥ इंद्रियाणि । पराणि । आहुः । इंद्रियेभ्यः । परं । मनः । मनसः । तु । परा बुद्धिः । यः । बुद्धेः । परतः । तु । सः ॥ ४२ ॥ (इतिपदच्छेदः) हेअर्जुन वेदकी श्रुतियां इसस्थूलशरीरतैं श्रोत्रादिकइंद्रियोंकूं पर कहेहैं तथा तिनइंद्रियोंतैं मन परहै तथा तामनतैं बुद्धि परहै और जो बुद्धि तैंभी परेस्थितहै सोई इहीं परआत्माहै ॥ ४२ ॥ (इतिपदार्थः)

॥ टीका ॥ हेअर्जुन स्थूल तथा जड तथा परिच्छिन्न तथा बाह्य ऐसेजेयहदेहादिकअर्थहैं ॥ तिनदेहादिकअर्थोंकीअपेक्षाकरिकै श्रोत्रादिकपंचज्ञानइंद्रिय सूक्ष्महैं तथाप्रकाशकहैं तथाव्यापकहैं तथाअंतरस्थितहैं ॥ यातैं वेदवेत्तापुरुष अथवा वेदकीश्रुतियां तिनदेहादिकअर्थोंतै तिनश्रोत्रादिकइंद्रियोंकूं परकहे हैं अर्थात् उत्कृष्टकहेहैं ॥ इसप्रकार आगेभी जानिलेणा ॥ और संकल्पविकल्परूपमनहीं तिनश्रोत्रादिकइंद्रियोंका प्रवर्त्तकहै ॥ मनतैंविना तिनइंद्रियों

कीप्रवृत्तिहोवैनहीं याकारणतैंहीं मनकीसावधानतातैंविना समीपवस्तुकाभी नेत्रादिकइंद्रियोंकरिकै ग्रहणहोतानहीं ॥ यातैं तिनश्रोत्रादिकइंद्रियोंतैं सोसंकल्पविकल्परूपमन परहै ॥ और निश्चयरूपबुद्धिपूर्वकहीं सो मनकासंकल्परूपधर्म उत्पन्नहोवैहै ॥ तानिश्चयतैंविना सोसंकल्प होवैनहीं ॥ यातैं सासं कल्परूपमनतैं सानिश्चयरूपबुद्धि परहै ॥ और जो आत्मादेव ताबुद्धिकाप्रकाशकहोणेतैं ताबुद्धितैंभी परेस्थितहै ॥ और जिसदेहीरूपआत्माकूं इंद्रियादिक आश्रयोंकरिकैयुक्तहुआ यहकाम ज्ञानकेआवरणद्वारा मोहकीप्राप्तिकरैहै ॥ सोबुद्धिद्रष्टासाक्षीआत्माहीं तापरशब्दकाअर्थहै ॥ इहां (बुद्धेःपरतस्तुसः) यावचनविषेस्थित जो सःयहपदहै ॥ ता सः पदकरिकै यद्यपि व्यवधानतैंरहितवस्तुकाहीं परामर्शहोवैहै ॥ व्यवधानयुक्तवस्तुका परामर्शहोवैनहीं ॥ तथापि जैसेश्रुतिविषे (आत्मैवेदमग्रआसीत्) यावचनकरिकै आत्माका प्रतिपादनकरिकै तिसतैं अनंतर अनेकपदार्थोंकाप्रतिपादनकरिकै तिसतैंअनंतर (सएषइहप्रविष्टः) याप्रकारकावचन कथनकऱ्याहै ॥ यावचनविषेस्थितजो सःयहपदहै ॥ ता सःपदकरिकै पूर्व (आत्मैवेदमग्रआसीत्) यावचन विषेकथनकऱ्येहुए व्यवहितआत्माकाभी परामर्शकऱ्याहै ॥ तैसे ईहांभी चालीसवेंश्लोकविषे (देहिनं) यापदकरिकैकथनकऱ्याजोआत्माहै ॥ ताव्यवहितआत्माका ता सःपदकरिकै परामर्श संभवहोइसकेहै इति तहां श्रुति ॥ (इंद्रियेभ्यःपराह्यर्थाअर्थेभ्यश्चपरंमनः ॥ मनसस्तुपराबुद्धिर्बुद्धेरात्मामहान्परः ॥ महतःपरमव्यक्तमव्यक्तात्पु रुषःपरः ॥ पुरुषान्नपरंकिंचित्साकाष्ठासापरागतिः ॥) अर्थयह ॥ श्रोत्रादिकइंद्रियोंतैं शब्दादिकअर्थ परहैं ॥ औरतिनअर्थोंतैं मनपरहै ॥ और ता मनतैं व्यष्टिबुद्धि परहै ॥ और ताव्यष्टिबुद्धितैं हिरण्यगर्भकीसमष्टिबुद्धि परहैं ॥ और तासमष्टिबुद्धितैं मायारूपअव्याकृत परहै ॥ और तामायारूप अव्याकृततै सर्वजडपदार्थोंकाप्रकाशकरणैहारापूर्णआत्मा परहै ॥ शंका ॥ ऐसेपरिपूर्णआत्मातैंभी कोई परहोवैगा ॥ ऐसीशंकाकेहूए साक्षात्श्रुतिभगवती उत्तरकहैहै ॥ (पुरुषान्नपरंकिंचित्इति) तापरमात्मादेवतैंपरे कोईभीवस्तुनहींहै ॥ जिसकारणतैं सोपरमात्मादेवहीकाष्ठारूपहै ॥ अर्थात् सर्वकाअधिष्ठानहोणेतैं समाप्तिरूपहै ॥ तथा (सोऽध्वनः परमाप्नोतितद्विष्णोः परमंपदम्) इत्यादिकश्रुतियोंकरिकैसिद्धजा परागतिहै ॥ तापरागतिरूपभी सोपरमात्मादेवहींहैइति ॥ यहसर्व अर्थ (योबुद्धेः परतस्तुसः) इसवचनकरिकै श्रीभगवान्नें कथनकऱ्याहै ॥ इहां श्रुतिका तथाभगवत्वचनका आत्माकेपरत्वविषेही तात्पर्यहै ॥ कोईइं द्रियादिकोंकेपरत्वविषे तात्पर्यनहींहै ॥ और श्रुतिविषे (इंद्रियेभ्यः पराह्यर्थाः) यहजोवचन स्थितहै ॥ तावचनकेस्थानविषे श्रीभगवान्नैंअर्थेभ्यः पराणीं द्रियाणि यहवचन कथनकऱ्याहै ॥ तहां जैसे शब्दादिकअर्थोंविषे इंद्रियोंतैं परत्वसंभवैहै ॥ तैसे पूर्वउक्तहेतुवोंते तिनइंद्रियोंविषेभी देहादिक अर्थोंते परत्वसंभवैहै ॥ यातैं ताश्रुतिवचनकेसाथि भगवानकेवचनका विरोधहोवैनहीं ॥ इनदोनों श्रुतियोंकाअर्थ आत्मपुराणकेनवमें अध्यायविषे हम विस्ता रतैंकथनकरिआयेहैं इति ॥ ४२ ॥ ❁ ॥ अब पूर्ववचनोंकेकहणेकरिकै सिद्धभयाजोअर्थहै ॥ ताफलितार्थकूं श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) एवंबुद्धेःपरंबुद्ध्वासंस्तभ्यात्मानमात्मना ॥ जहिशत्रुंमहाबाहोकामरूपंदुरासदम् ॥ ४३ ॥ इतिश्रीभगवद्गीतासू पनिषत्सुब्रह्मविद्यायांयोगशास्त्रेश्रीकृष्णार्जुनसंवादेकर्मयोगोनामतृतीयोऽध्यायःसमाप्तः ॥ ३ ॥ एवं । बुद्धेः । परं । बुद्ध्वा । संस्तभ्य । आत्मानम् । आत्मना । जहि । शत्रुं । महाबाहो । कामरूपं । दुरासदम् ॥ ४३ ॥ (इतिपदच्छेदः) हेमहान्बाहुवालाअर्जुन इस प्रकार आत्मादेवकूं बुद्धितें पर जानिकरिकै तथा मनकूं निश्चयरूपबुद्धिकरिकै स्थिरकरिकै इसतृष्णारूप तथा दुःखकरिकैव शहो णेहारे कामरूपशत्रुकूं तूं नाशकर ॥ ४३ ॥ (इतिपदार्थः)

॥ टीका ॥ हेअर्जुन (रसोप्यस्यपरंदृष्ट्वानिवर्त्तते) इसश्लोकविषे जोआत्मादेव परशब्दकरिकैकथनकरयाहै ॥ तिसपरिपूर्णआत्मादेवकूं बुद्धितैंपर साक्षात्कार करिकै तथा यह साक्षी आत्मा बुद्धितैंभीपरहै याप्रकारकी निश्चयरूपबुद्धिकरिकै मनकूं स्थिरकरिकै तूं सर्वपुरुषार्थकेनाशकरणेहारे इसकामरूपशत्रुकूं नाशकर ॥ कैसाहै यहकामरूप शत्रु इच्छातृष्णाहैस्वरूपजिसका ॥ तथा ता परआत्माकेसाक्षात्कारतैंविना बहुतदुःखकरिकैभी नाशकरणेकूंअशक्यहै ॥ ऐसेकामकेनाशहूएतैं अनंतर सर्वअनर्थोंकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ ताकामकेनाशतैंविना जन्ममरणादिकअनर्थोंकीनिवृत्तिहोवै नहीं ॥ ईहां (दुरासदं) यहजोकामका विशेषणकथनकरयाहै ॥ सो इसकामकेनाशकरणेवास्तै इसअधिकारीपुरुषनैं अत्यंतअधिकप्रयत्नकरणा याअर्थकेबोधनकरणेवासतै कथनकरयाहै ॥ और (हेमहाबाहो) यासंबोधनकरिकै श्रीभगवान्ने यहअर्थ सूचनकरया ॥ महान्पराक्रमवाले तैंअर्जुनकूं इसकामरूपशत्रुकानाशकरणा अत्यंतसुगमहैइति ॥ इसतृतीयअध्यायकेसर्वअर्थका संक्षेपतैंकथनकरणेहारा यहश्लोकहै ॥ उपायःकर्मनिष्ठात्रप्राधान्येनोपसंहृता ॥ उपेयाज्ञाननिष्ठातुतद्गुणत्वेनकीर्त्तिता ॥ अर्थयह ॥ ज्ञाननिष्ठाकाउपायरूप जोनिष्कामकर्मनिष्ठाहै ॥ साकर्मनिष्ठा इसतृतीयअध्यायविषे प्रधानरूपकरिकैंकथनकरीहै ॥ और फलरूपज्ञाननिष्ठातौ ताकागौणरूपकरिकै कथनकरीहै इति ॥ ४३ ॥ ❀ ॥ इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यश्रीमत्स्वामिउद्धवानंदगिरिपूज्यपादशिष्येण स्वामिचिद्घनानंदगिरिणा विरचितायां प्राकृतटीकायां श्रीभगवद्गीतागूढार्थदीपिकाख्यायां तृतीयोऽध्यायःसमाप्तः ॥ ३ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥

॥ ॐ श्रीगणेशायनमः ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥ अथ चतुर्थाऽध्यायप्रारंभः ॥ तहां पूर्वअध्यायविषे यद्यपि उपायकरिकेप्राप्तहोणेकूंयोग्य जोउपेयरूपज्ञानयोगहै तथाताज्ञानयोगकाउपायरूप जोकर्मयोगहै तिनदोनोंयोगोंकूं यथाक्रमतें उपेयरूपकरिकै तथाउपायरूप करिकै श्रीभगवान्‌कथनकरताभयाहै ॥ तथापि (एकंसांख्यंचयोगंचयःपश्यतिसपश्यति) इसवक्ष्यमाणवचनकीरीतिसें साध्यरूपज्ञानयोग तथा ताकासाधनरूपकर्म योग यादोनोंयोगोंकेफलकीएकतातें एकताकथनकरिकै ता साधनरूपकर्मयोगकी तथा साध्यरूपज्ञानयोगकी अनेकप्रकारकेगुणोंकेआधानअर्थ श्रीभगवान् विद्या वंशकेकथनकरिकै स्तुतिकरेहै ॥

(मू० श्लो०) ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ इमंविवस्वतेयोगंप्रोक्तवानहमव्ययम् ॥ विवस्वान्मनवेप्राहमनुरिक्ष्वाकवेऽब्रवीत् ॥ १ ॥ इमं । विवस्वते । योगं । प्रोक्तवान् । अहम् । अव्ययं । विवस्वान् । मनवे । प्राह । मनुः । इक्ष्वाकवे । अब्रवीत् ॥ (इतिप०) ॥ हेअर्जुन मैंकृष्णभगवान् इस नाशतैंरहित ज्ञानयोगकूं प्रथम सूर्यकेताई कहताभया और सोसूर्य आपणे मनुपुत्रकेताई कहताभया और सोमनु आपके इक्ष्वाकुपुत्रकेताई कथनकरताभया ॥ १ ॥ (इतिपदा०) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन द्वितीय तृतीय यादोनोंअध्यायोंकरिकै कथनकर्‍याजो ज्ञाननिष्ठारूप ज्ञानयोगहै॥ जोज्ञानयोगकर्मनिष्ठारूपकर्मयोगरूपउपायकरिकै प्राप्तहोवैहै॥ ऐसे ज्ञाननिष्ठारूपज्ञानयोगकूं मैंसर्वजगतकापालक वासुदेवसृष्टिकेआदिकालविषे सूर्यकेप्रति कथनकरताभया ॥ जोसूर्यक्षत्रियवंशका बीजरूपहै ॥ तात्पर्ययह ॥ ताज्ञानयोगकीप्राप्तिद्वारा तिनराजावोंविषे बलकाआधानकरिकै तिनराजावोंकेअधीन सर्वजगत्‌कापालनकरणेवास्तै मैंकृष्णभगवान् तिनराजावोंकेप्रति ताज्ञानयोगका कथनकरताभयाइति ॥ शंका ॥ हेभगवन् इसज्ञानयोगकरिकै तिनराजावोंविषे किसप्रकार बलकाआधानहोवैहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए ॥ श्रीभगवान् ता ज्ञानयोगविषे विशेषणकरिकै ताबलकेआधानकीकारणताकूं निरूपणकरैहै (अव्ययमिति) हेअर्जुन नाशतैंरहितजोवेदभगवान्‌है ॥ सोवेदभगवान्‌हीं इसज्ञान योगका मूलरूपहै ॥ याकारणतैं यहज्ञानयोग अव्यय यानामकरिकैकह्याजावैहै ॥ अथवाताज्ञानयोगकाफलरूपजोमोक्षहै ॥ सोमोक्ष नाशतैंरहितहै ॥ याकारण तैंभी यहज्ञानयोग अव्यय यानामकरिकैकह्याजावैहै ॥ इसप्रकार वेदरूपमूलकरिकै तथामोक्षरूपफलकरिकै नाशतैंरहित जोज्ञानयोगहै ॥ ताज्ञानयोगविषे तिनरा जावोंकेबलकीआधानकता संभवैहै इति ॥ हेअर्जुन सोहमाराशिष्य सूर्य आपणे वैवस्वतमनुनामापुत्रकेतांईसोज्ञानयोग कथनकरताभया ॥ और सोवैवस्वतमनु आपणे इक्ष्वाकुनामापुत्रकेतांई सोज्ञानयोग कथनकरताभया ॥ जोइक्ष्वाकु सर्वराजावोंतैं आदिराजाहै ॥ यद्यपि यहश्रीभगवान्‌काउपदेश मन्वंतरमन्वंतरविषे

स्वायंभुवमनुआदिकसर्वमनुवोंकेप्रति साधारणहींहै ॥ तथापि इदानींकालविषेविद्यमान जो वैवस्वतमन्वंतरहै ॥ तावैवस्वतमन्वंतरकेअभिप्रायकरिके श्रीभगवान्नैं सूर्यतैंलेके विद्याकासंप्रदाय गणनकरयाहै इति ॥ १ ॥ ❀ किंच—

(मू० श्लो०) एवंपरंपराप्राप्तमिमंराजर्षयोऽविदुः ॥ सकालेनेहमहतायोगोनष्टःपरंतप ॥ २ ॥ एवं । परंपराप्राप्तम् । इमं । राजर्षयः । अविदुः । सः । कालेन । इह । महता । योगः । नष्टः । परंतप ॥ २ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेअर्जुन इसप्रकार परंपराकरिकैप्राप्त इस ज्ञानयोगकूं राजऋषि जानतेभयेहैं सो ज्ञानयोग इदानींकालविषे दीर्घ कालकरिकै नष्टहोइरह्याहै ॥ २ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन इसप्रकार सूर्यतैंआदिलेके गुरुशिष्योंकीपरंपराकरिके प्राप्तभयाजो यहज्ञानयोगहै ॥ ताज्ञानयोगकू निमि जनक अजातशत्रु केकेय इत्यादिक राजऋषि सूक्ष्मअर्थकेजाननेहारे आपणे आपणे आचार्य पिता आदिकोंतैं जानतेभयेहैं ॥ राजेहोवैं तेईहींऋषिहोवैं तिनोंकानाम राजऋषिहै अर्थात् क्षत्रियराजावोंकानाम राजऋषिहै ॥ अथवा (राजर्षयः) यापदकरिकै राजावोंका तथा ऋषियोंका भिन्नभिन्न ग्रहणकरना ॥ तहां राजाशब्दकरिकैतौं निमि जनक अजातशत्रु केकेय इत्यादिक राजाओंकाग्रहणकरणा ॥ और ऋषिशब्दकरिकै सनक वसिष्ठ इत्यादिकऋषियोंकाग्रहणकरना याप्रकारकाअर्थ किसीटीकाविषे कथनकरयाहै ॥ और किसीटीकाविषेतौ (राजर्षयः) यापदकरिकै पूर्वउक्तरीतिसैं क्षत्रियराजावोंकाहींग्रहणकरयाहै ॥ परंतु तापदकूं सनक वसिष्ठ इत्यादिकब्राह्मणऋषियोंकाभी उपलक्षक अंगीकारकऱ्याहैइति ॥ यातैं यहज्ञानयोग अनादिवेदमूलकहोणेतैं तथा नाशतैरहितमोक्षरूपफलकाजनकहोणेतैं तथाअनादिगुरुशिष्योंकी परंपराकरिकैप्राप्तहोणेतैं कृत्रिमशंकाका विषयहोवैनहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ यह ज्ञानयोग पूर्वनहींथा किंतु इदानींकालविषेहीहूआहै याप्रकारकी कृत्रिमशंका ताज्ञानयोगविषे संभवतीनहींइति ॥ ऐसामहान्प्रभाववाला यहज्ञानयोगहै ॥ इसप्रकार ताज्ञानयोगविषे मुमुक्षुजनोंकी अत्यंतश्रद्धाकरावणेवासतै श्रीभगवान्नैं ताज्ञानयोगकीस्तुति कथनकरीहैइति ॥ हेअर्जुन सोऐसा महान्प्रयोजनवालाभी ज्ञानयोग धर्मकीन्यूनताकरणेहारेदीर्घकालकरिकै इसद्वापरकेअंतमैं तुमारेहमारेव्यवहारकालविषे दुर्बलअजितइंद्रियअनधिकारीपुरुषोंकूंप्राप्तहोइकै कामक्रोधादिकविकारोंकरिकैअभिभवकूंप्राप्तहुआ विच्छिन्नसंप्रदायवाला होताभयाहै ॥ और ताज्ञानयोगतैंविना अधिकारीजनोंकूं मोक्षरूपपरमपुरुषार्थकीप्राप्ति होवैनहीं ॥ यातैं इनलोकोंकेअत्यंतदुर्भाग्यहै ॥ ईहां (हेपरंतप) यासंबोधनकेकहणेकरिकै श्रीभगवान्नैं यहअर्थसूचनकऱ्या ॥ परंशत्रूंतापयतीतिपरंतपः ॥ अर्थयह ॥ कामक्रोधादिकश

नुवोंकानाम परहै ॥ तिनकामक्रोधादिकशत्रुवोंकूं जोपुरुष आपणे शौर्यताकरिकै अथवा बलवानविवेककरिकै अथवा तपकरिकै सूर्यकीन्यांई तपाय मानकरैहै ॥ तापुरुषकानाम परंतपहै ॥ अर्थात् जितइंद्रियपुरुषकानाम परंतपहै ॥ ऐसातुमारा जितइंद्रियपणा स्वर्गकीउर्वशी आदिकअप्सरावोंकीउपेक्षाकरणेतैं शास्त्रविषेप्रसिद्धहीं है ॥ ऐसाजितइंद्रियहोणेतैं तूंअर्जुन इसज्ञानयोगविषेअधिकारीहैं इति ॥ २ ॥ ❀ ॥ किंच–

(मू० श्लो०) सएवायंमयातेद्ययोगःप्रोक्तःपुरातनः ॥ भक्तोसिमेसखाचेतिरहस्यंह्येतदुत्तमम् ॥ ३ ॥ सः । एवं । अयम् । मया । ते । अद्य । योगः । प्रोक्तः । पुरातनः । भक्तः । असि । मे । सखा । च । इति । रहस्यं । हि । एतत् । उत्तमम् ॥ ३ ॥ (इतिपदच्छेदः)

हेअर्जुन सोई हीं यह अनादि ज्ञानयोग इसकालविषे मैंकृष्णभगवान्नैं तुमारेतांई कथनकऱ्याहै जिसकारणतैं तूं अर्जुन हमारा भक्तहै तथा सखाहै जिसकारणतैं यहज्ञानयोग उत्तमहै तथा अत्यंतगोप्यहै ॥ ३ ॥ (इतिपदार्थः)

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जोज्ञानयोग पूर्वहमनैं सूर्यादिकशिष्योंके प्रति उपदेशकरयाहुआभी इदानींकालविषे अधिकारी पुरुषोंकेअभावतैं विच्छिन्नसंप्रदायवाला होताभया है ॥ तथा जिसज्ञानयोगतैंविना इनपुरुषोंकूं मोक्षरूपपरमपुरुषार्थकीप्राप्ति होतीनहीं ॥ सोईहीं गुरुशिष्योंकीपरंपराकरिकैअनादि ज्ञानयोग इससंप्रदायकेविच्छेदकाल विषे अतिस्नेहयुक्तमैंकृष्णभगवान्नैं तैंअर्जुनकेतांई विस्तारतैं कथनकरयाहै ॥ दूसरे जिसीकिसीपुरुषकेतांई हमनैं यहज्ञानयोग उपदेशकरयानहीं ॥ जिसकारणतैं तू अर्जुन हमाराभक्तहै ॥ अर्थात् मेरेशरणागतकूंप्राप्तहुआ तूं मेरेविषेअत्यंतप्रीतिमान्है ॥ तथा तूंअर्जुन हमारासखाहै ॥ अर्थात् हमारे समानअवस्थावालाहै तथाहमारेविषेस्नेहवालाहै तथाहमारीसहायताकरणेहाराहै ॥ इसकारणतैं यहज्ञानयोग हमनैं तुमारेप्रति कथनकऱ्याहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् यहज्ञानयोग हमारेतैंभिन्न दूसरेपुरुषोंकेप्रति आपनैं किसवास्तै नहींकथनकरयाहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान्कहैहैं (रहस्यंह्येतदुत्तममिति) हेअर्जुन जिसकारणतैं यहज्ञानयोग अत्यंतउत्तमहै ॥ तथा अत्यंतगोप्यराखणेयोग्यहै ॥ तिसकारणतैं हमनैं यहज्ञानयोग अन्यकिसीपुरुषकेप्रति कथनकरयानहीं ॥ तहांश्रुति ॥ (विद्याहवैब्राह्मणमाजगाम गोपायमाशेवधिष्टेहमस्मि ॥ असूयकायानृजवेयताय नमाब्रूयावीर्यवतीतथास्याम् ॥) अर्थयह ॥ एककालविषे ब्रह्मविद्या ब्रह्मवेत्ताब्राह्मणोंकेसमीपजातीभई ॥ तहांजाइकै तिनब्राह्मणोंकेप्रति याप्रकारकावचनकहतीभई ॥ हेब्राह्मणो तुम हमारेकूं अत्यंतगोप्यराखो ॥ ताकरिकै मैं तुमारेप्रति भोगमोक्षदोनोंकी प्राप्तिकरौंगी ॥ और जोकदाचित् कृपाकेवशहुए तुम हमारेकूं गोप्यनहींराखिसको ॥ तौंभी विवेकवैराग्यादिकसाधनसंपन्न अधिकारियोंकेप्रति हमाराउपदेशकरो ॥ और जोपुरुष असूयावालाहै तथाऋजुभावतैंरहितहै ॥ तथा मनसहितइंद्रियोंकेनिग्रहतैंरहितहै ॥ ऐसे अनधिकारीपुरुषकेप्रति हमाराउपदेश

तुमने कदाचित्भी नहींकरणा ॥ किंतु अधिकारीपुरुषोंकेप्रतिही उपदेशकरणा ॥ जिसकरिकै मैंब्रह्मविद्या फलकाहेतुहोवौइति ॥ इसश्रुतिका विस्तार तैंअर्थतौं आत्मपुराणकेद्वितीयअध्याय विषे हम कथनकरिआयेहैं ॥ यातैं ईहां संक्षेपतैंकह्याहैइति ॥ ३ ॥ तहां शास्त्रविचारतैंरहितमूर्खलोकोंकूं वसुदेवके पुत्ररूपश्रीकृष्णभगवान्‌विषे मनुष्यत्वरूपहेतुकरिकै जो असर्वज्ञपणेकी तथाअनित्यपणेकी शंकाहोवै है ताशंकाकेनिवृत्तकरणेवासते ताशंकाका अनुवादकरताहुआ अर्जुन श्रीभगवान्‌केप्रति प्रश्नकरेहैं ॥

(मू. श्लो.) अर्जुनउवाच ॥ अपरंभवतोजन्मपरंजन्म विवस्वतः ॥ कथमेतद्विजानीयांत्वमादौप्रोक्तवानिति ॥ ४ ॥ अपरं। भवतः। जन्म। परं। जन्म। विवस्वतः। कथम्। एतत्। विजानीयां। त्वम्। आदौ। प्रोक्तवान्। इति ॥ (इतिप०) ॥ हेभगवन् आपका जन्मतौ अबीहुआहै और सूर्यका जन्मतौ पूर्वहुआहै यातैं तूंकृष्णभगवान् सृष्टिकेआदिकालविषे सूर्यकेप्रति यहज्ञानयोग कहै तभयाहै यह वार्ता मैं अर्जुन किसप्रकार निश्चयकरौं ॥ ४ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेभगवन् आपकृष्णभगवानका शरीरकाग्रहणरूपजन्मतौं इसद्वापरकेअंतकालविषे वसुदेवकेगृहविषेहूआहै सोजन्मभी मनुष्यत्वजातिवालाहोणेतैं निकृष्टहै ॥ और सूर्यकाजन्मतौ सृष्टिकेआदिकालविषे हूआहै ॥ और सोसूर्यकाजन्म देवत्वजातिवालाहोवेतैं उत्कृष्टहै ॥ ईहां (नजायतेम्रियतेवाकदाचित्) इत्यादिवचनोंकरिकै पूर्व आत्माकेजन्मकाअभाव विस्तारतैं कथनकरिआयेहैं ॥ यातै आत्माकेजन्मविषेतौं अर्जुनकाप्रश्न संभवतानहीं ॥ किंतु स्थूलदेहके जन्मकेअभिप्रायकरिकेही अर्जुनका यहप्रश्नहैइति ॥ यातैं हेभगवन् अबीइसकालविषेउत्पन्नहूआ तथा सर्वज्ञ मनुष्यतूं पूर्वसृष्टिकेआदिकालविषे उत्पन्नहूए सर्वज्ञसूर्यकेतांई यहज्ञानयोग कथनकरताभयाहै ॥ इसअर्थकूं मैंअर्जुन अविरुद्धरूपकरिकै किसप्रकार निश्चयकरौं। किंतु यहआपकेवचनकाअर्थ हमारेकूं अत्यंतविरुद्धप्रतीतहोताहै ॥ ईहांअर्जुनका यहअभिप्रायहै ॥ सूर्यकेप्रति जोआपनैं इसज्ञानयोगकाउपदेशकऱ्याथा ॥ सोइसवर्त्तमानदेहतैंभिन्न किसीदूसरेदेह करिकै उपदेशकऱ्याथा ॥ अथवा इसवर्त्तमानदेहकरिकैहीं उपदेशकऱ्याथा ॥ तहां प्रथमपक्ष जोआप अंगीकारकरौ ॥ सोसंभवतानहीं ॥ काहेतैं पूर्वजन्म विषे अनुभवकऱ्याजोअर्थहै ॥ ताअर्थका उत्तरदूसरेजन्मविषे असर्वज्ञपुरुषकूं स्मरणहोवैनहीं ॥ जोकदाचित् पूर्वजन्मविषेअनुभवकरचेहूएअर्थका दूसरेजन्म विषेभी असर्वज्ञपुरुषकूं स्मरणहोताहोवै ॥ तौ मैंअर्जुनकूंभी पूर्वजन्मविषेअनुभवकरचेहूएअर्थका इसजन्मविषे स्मरणहोणाचाहिये ॥ सोस्मरण हमारेकूंहोता नहीं ॥ और तुमारेविषे तथा हमारेविषे मनुष्यरूपताकरिकै असर्वज्ञपणा तुल्यहीहै ॥ यातै हमारेन्यांईतुमारेकूंभी जन्मांतरविषेअनुभवकऱ्येहूएपदार्थका इसजन्मविषे

॥ यहदूसरापक्ष जोआप अंगीकारकरों ॥ सोभीसं स्मरणनहींहोवैगाइति ॥ और इसवर्तमानदेह करिकैही पूर्व सूर्यकेप्रति हमने यहज्ञानयोग उपदेशकऱ्याहै ॥ सोयहदेह पूर्वसृष्टिकेआदिकालविषेविद्यमानथानहीं ॥ यातै इसवर्त्त भवतानहीं ॥ काहेतैं इसवर्तमानकालविषे वसुदेवपितातैं उत्पन्नभयाजो यहतुमारादेहहै ॥ इसदेहतैं भिन्न दूसरेकिसीदेहकरिकै तासृष्टिकेआदिकालविषे मानदेहकरिकैभी आपका सूर्यकेप्रतिउपदेश संभवैनहीं ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ और इसवर्त्तमानदेहकरिकै तास्मरणकीसिद्धिहूएभी आपकीस्थितिकेसंभवहूएभी तादेहकरिकै अनुभवकऱ्येहूएअर्थकाइसवर्त्तमानदेहविषे स्मरणनहींसंभवैगा ॥ और सृष्टिकेआदिकालविषेइसवर्त्तमानदेहकीस्थिति संभवतीनहीं ॥ इसप्रकार असर्वज्ञत्व अनित्यत्व यादोनोंहेतुवों करिकै अर्जुनके दोपूर्वपक्षसिद्धहोवैहैं इति ॥४॥ ❀ ॥ तहां श्रीभगवान् आपणेविषेसर्वज्ञपणाकथनकरिकै प्रथमपूर्वपक्षके परिहारकूं कथनकरैहै ॥

(मू. श्लो.) श्रीभगवानुवाच ॥ बहूनिमेव्यतीतानिजन्मानितव चार्जुन ॥ तान्यहंवेदसर्वाणिनत्वंवेत्थपरंतप ॥ ५ ॥ बहूनि । मे । व्यतीतानि । जन्मानि । तव । च । अर्जुन । तानि । अहं । वेद । सर्वाणि । न । त्वं । वेत्थ । परंतप ॥ (इतिप०) ॥ हेअर्जुन हमारे तथा तुमारे बहुत जन्म वितीतहोतेभयेहैं तिन सर्वजन्मोंकू मैंकृष्णभगवान् जानताहूं हेपरंतप तूं तिनजन्मोंकू नहीं जानताहै ॥ ५ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जैसे यहलोक सर्वदाविद्यमानसूर्यकाभी उदयमानैहै ॥ तैसे वास्तवतैंजन्मतैंरहितहूएभी मैंकृष्णभगवान्के लोकदृष्टिकेअभिप्रायकरिकै लीला मात्रतैंदेहकाग्रहणरूप अनेकजन्म पूर्व वितीतहोतेभयेहैं॥ और आत्मज्ञानतैंरहितजोतूंअर्जुनहै ॥ तिसतुमारेभी पुण्यपापकर्मोंकेवशतैं देहकाग्रहणरूपअनेक जन्मपूर्व होतेभयेहैं ॥ ईहां (तव) यहएकअर्जुनकावाचकपद दूसरेजीवोंकाभी उपलक्षकहै ॥ अथवा (तव) यहपद एकजीववादकेअभिप्रायकरिकै कथनकऱ्याहैइति ॥ हेअर्जुन तिनआपणेसर्वजन्मोंकूं तथातुमारेसर्वजन्मोंकूं तथाअन्यजीवोंके सर्वजन्मोंकूं मैंसर्वज्ञसर्वशक्तिसंपन्नईश्वरहीं जानताहूं ॥ तूंआवृतज्ञानशक्तिवाला अज्ञानी अर्जुन तिनसर्वजन्मोंकूं जानतानहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ तूंअर्जुन अज्ञानदोषकेवशतैं जबी पूर्ववितीतहुए आपणेजन्मोंकूंभी नहींजानताहै ॥ तबी पूर्ववितीतहुए हमारेज न्मोंकूं तथाअन्यजीवोंकेजन्मोंकूं तूं कैसेजानिसकैगा ॥ किंतु नहींजानिसकैगाइति ॥ ईहां (हेअर्जुन) यासंबोधनकरिकै श्रीभगवान्नैं यहअर्थ सूचनकऱ्या॥ शास्त्रविषे किसीवृक्षविशेषकूंभी अर्जुन यानामकरिकैकथनकरैहैं ॥ ताअर्जुननामावृक्षकी ज्ञानशक्ति जैसे आवृतरहैहै ॥ तैसे तैंअर्जुनकीभी साज्ञानशक्तिआवृत होइरहीहै ॥ यातैं तिन आपणेजन्मोंकूं तथाहमारेजन्मोंकूं तूं जानिसकतानहींइति ॥ और (हेपरंतप) यासंबोधनकेकहणेकरिकै श्रीभगवान्नैं यहअर्थ सूचन

कन्या ॥ परंनामशत्रुकाहै ॥ ताशत्रुकूं भेददृष्टितैंकल्पनाकरिकै ताशत्रुकेहननकरणेविषे तूं प्रवृत्तहुआहै जैसे कोईमूढबालक आपणेशरीरकूंहीं पिशाचकल्पनाक रिकै ताकेहननकरणेविषेप्रवृत्तहोवैहै ॥ यातैं विपरीतदर्शीहोणेतैं तूंअर्जुन भ्रांतहैइति ॥ ईहां (हेअर्जुन हेपरंतप) यादोनोंसंबोधनोंकरिकै श्रीभगवान्नैं आवरण विक्षेप यादोनोंविषे अज्ञानकीधर्मरूपताकथनकरी इति ॥ ५ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् जोकदाचित् पूर्वविर्तीतहुए आपणेअनेकजन्मोंकूं आप स्मरणकरतेहो ॥ तौं आपभी जातिस्मरनामा कोईजीवविशेष होवौंगेकाहेतैं जातिस्मरयोगीपुरुषोंकूं सर्वात्मअभिमानकरिकै दूसरेजन्मोंकाज्ञानभी संभवहोइसकताहै ॥ जैसे वामदेवकूं सर्वात्मअभिमानकरिकै पूर्वअनेकजन्मोंका स्मरणहोताभयाहै ॥ तहां सोवामदेव माताकेउदरविषेस्थितहोइकै याप्रकारकावचन न कहताभयाहै ॥ हेअधिकारीजनो मैंवामदेव जीवहूआभी पूर्व मनुहोताभयाहूं तथासूर्यहोताभयाहूं तथाकक्षीवान्ऋषि होताभयाहूंइति ॥ इस प्रकार सोवामदेवनामजीव सर्वात्मअभिमानकरिकै पूर्वलेअनेकजन्मोंकूं स्मरणकरताभयाहै ॥ तिनजन्मोंकेस्मरणकरिकै जैसे वामदेवविषे मुख्यसर्वज्ञपणा सिद्धहोतानहीं ॥ तैसे पूर्वजन्मोंकेस्मरणकरिकै आपविषेभी मुख्यसर्वज्ञपणा सिद्धनहींहोवैंगा ॥ यातैं ईश्वरभावतैंरहितहूआ तूंकृष्णभगवान् पूर्व सर्वज्ञसूर्यके प्रति सोज्ञानयोग किसप्रकार उपदेशकरताभयाहै ॥ किंतु सर्वज्ञसूर्यके प्रति आपकाउपदेश संभवतानहीं ॥ हेभगवन् जीवविषे मुख्यसर्वज्ञपना संभव तानहीं ॥ काहेतैं व्यष्टिउपाधिवालेकानाम जीवहै ॥ सोव्यष्टिउपाधिवालाजीव परिच्छिन्नहींहोवैहै ॥ यातैं तापरिच्छिन्नजीवका भूतभविष्यत्वर्त्तमानसर्वप दार्थोंकेसाथि संबंधहींनहींसंभवताहै ॥ और तिनसर्वपदार्थोंकेसाथि संबंधतैंविना तिनसर्वपदार्थोंकाज्ञान संभवतानहीं ॥ हेभगवन् व्यष्टिउपाधिवालेजीवकीक्यावार्त्ता है ॥ परंतु समष्टिउपाधिवालाजोविराट्है तथासमष्टिउपाधिवालाजोहिरण्यगर्भहै ॥ तिनदोनोंकूंभी सर्वपदार्थोंकाज्ञान संभवतानहीं ॥ काहेतैं समष्टिस्थू लभूतरूपउपाधिवालाजोविराट्है ॥ तिसविराट्कूं यद्यपि स्थूलभूतोंकेकार्यविषयकज्ञान संभवैहै ॥ तथापि ताविराट्कूं सूक्ष्मभूतोंकेपरिणामविषयकज्ञान तथा मायाकेपरिणामविषयकज्ञान संभवतानहीं ॥ इसप्रकार समष्टिसूक्ष्मभूतरूपउपाधिवालाजोहिरण्यगर्भहै ॥ ताहिण्यगर्भकूं यद्यपि स्थूलभूतोंकेपरिणामविषयक ज्ञान तथासूक्ष्मभूतोंकेपरिणामविषयकज्ञान संभवहोइसकैहै ॥ तथापि ताहिरण्यगर्भकूं तिनसूक्ष्मभूतोंकाकारणरूपमायाकेपरिणामरूप आकाशादिकसृष्टि क्रमादिकविषयकज्ञान संभवतानहीं ॥ यातैं विराट्विषे तथाहिरण्यगर्भविषेभीमुख्यसर्वज्ञतासंभवैनहीं ॥ तौं व्यष्टिउपाधिवालेजीवोंविषे सामुख्यसर्वज्ञताकैसे संभवैगी ॥ किंतु नहींसंभवैगी यातैं मायारूपकारणउपाधिवालाहोणेतैं भूतभविष्यत्वर्त्तमानसर्वपदार्थविषयकज्ञानवालाजोईश्वरहै ॥ सोमायाउप हितईश्वरहीमुख्यसर्वज्ञहै ॥ ऐसे जन्ममरणतैंरहित नित्य सर्वज्ञईश्वरविषेपुण्यपापकर्महैंनहीं ॥ यातैं ताईश्वरका प्रथमतौं जन्महोणाहीं संभवतानहीं तौं पूर्ववि

तीतहूए अनेकजन्म ताईश्वरके कैसेसंभवैंगे ॥ किंतु नहींसंभवैंगे ॥ यातैंयहअर्थसिद्धभया ॥ जोकदाचित् आप जीवहो ॥ तौं हमारेन्यांई आपविषेसर्व ज्ञतानहींसंभवैंगी ॥ और जोकदाचित् आप ईश्वरहो ॥ तौं आपविषे देहकाग्रहणरूपजन्मनहींसंभवैगाइति ॥ ऐसीअर्जुनकीदोनोंशंकावोंकूंनिवृत्तकरताहूआ श्रीभगवान् पूर्वकथनकरयेहूए अनित्यत्वपक्षकेभीपरिहारकूं कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) अजोपिसन्नव्ययात्माभूतानामीश्वरोपिसन् ॥ प्रकृतिंस्वामधिष्ठायसंभवाम्यात्ममायया ॥ ६ ॥ अजः।अपि।सन्। अव्ययात्मा। भूतानां। ईश्वरः। अपि। सन्। प्रकृतिं। स्वां। अधिष्ठाय। संभवामि। आत्ममायया॥६॥(इतिपदच्छेदः) हेअर्जुन मैंकृष्णभगवान् जन्मतैंरहित हूआ भी तथामरणतैंरहितहूआभी तथा सर्वभूतोंका ईश्वर हुआ भी आपणी मायाकूं आश्रयण करिकै ताआपणीमायाकरिकै जन्मवालाहोताहूं ॥ ६ ॥ (इतिपदार्थः)

॥ टीका ॥ अपूर्वदेहइंद्रियादिकोंकाजोग्रहणहै ताकानाम जन्महै ॥ और पूर्वग्रहणकरयेहूए देहइंद्रियादिकोंका जोवियोगरूपमरणहै ताकानाम व्ययहै ॥ ता जन्ममरणदोनोंकूंहीं नैयायिक प्रेत्यभाव यानामकरिकैकथनकरेहैं तिनजन्ममरणदोनोंकूं (जातस्यहिध्रुवोमृत्युर्ध्रुवंजन्ममृतस्यच) इसवचनकरिकै पूर्वकथन करिआयेहैं ॥ तेजन्ममरणदोनोंइसजीवकूं धर्मअधर्मकेवशतैं प्राप्तहोवैंहैं ॥ और सोधर्मअधर्मकावशपणा देहाभिमानीअज्ञानीजीवकूं कर्मोंकेअधिकारीपणेकरि केहीं होवैहैं ॥ तहां सर्वकेकारणरूपसर्वज्ञईश्वरकूं इसप्रकारका देहकाग्रहणरूपजन्म नहींसंभवताहै यह जो पूर्वकथनकरयाथा सोयथार्थहींहै काहेतैं जोकदाचित् तिसईश्वरकाशरीर स्थूलभूतोंकाकार्यरूपहोवै ॥ तिनस्थूलभूतोंकाकार्यरूपहूआभी सोशरीर जोकदाचित् व्यष्टिरूपहोवैंगा ॥ तौं जाग्रत्अवस्थाविषेस्थितअस्मदा दिकविश्वनामाजीवोंकेतुल्यही सोईश्वरहोवैंगा ॥ और जोकदाचित् सोईश्वरकाशरीर समष्टिरूपहोवैंगा ॥ तौं ताईश्वरविषे विराट्नामाजीवरूपता प्राप्तहोवैंगी ॥ जिसकारणतैं समष्टिस्थूलउपाधिवाला विराट्हींहोवैहै ॥ और सोईश्वरकाशरीर जोकदाचित् सूक्ष्मभूतोंकाकार्यरूपहोवै ॥ तहां सूक्ष्मभूतोंकाकार्यरूपहूआभी सोईश्वरकाशरीर जोकदाचित् व्यष्टिरूपहोवैगा ॥ तौं ताईश्वरविषे स्वप्नअवस्थाविषेस्थितहमतैजसनामाजीवोंकीतुल्यता प्राप्तहोवैंगी ॥ और सोईश्वरकाशरीर जोकदाचित् समष्टिरूपहोवैंगा ॥ तौं ताईश्वरविषे हिरण्यगर्भनामाजीवरूपता प्राप्तहोवैंगी ॥ जिसकारणतैं समष्टिसूक्ष्मउपाधिवाला हिरण्यगर्भहीहोवैहै ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ आकाशादिकभूतोंकाकार्यरूप तथाकिसीभीजीवनैंनहींआश्रयणकऱ्याहूआ ऐसाभौतिकशरीर ताईश्वरकासंभवतानहीं इति ॥ और जेकोई यहकहै ॥ किसीजीवकरिकैयुक्त जोभौतिकशरीरहै ॥ ताभौतिकशरीरविषे भूतावेशकीन्यांई सोईश्वर प्रवेशकरैहै ॥ सोयहकहणाभी संभवतानहीं ॥ काहेतैं

जिसजीवकरिकैयुक्त जिसभौतिकशरीरविषे ताईश्वरनैं प्रवेशकऱ्याहै ॥ तिसशरीरकरिकै तिसजीवकूं सुखदुःखकाभोग होताहै अथवा नहींहोताहै ॥ तहां प्रथम पक्ष जोअंगीकारकरौ ॥ तौं अंतर्यामीरूपकरिकै ताईश्वरकाप्रवेश सर्वशरीरोंविषे वियमानहै ॥ यातैं ताईश्वरके शरीरविशेषकाअंगीकारकरणा व्यर्थहोवैगा ॥ और दूसरापक्ष जोअंगीकारकरौ ॥ तौं सोशरीर ताजीवका नहींसंभवैगा ॥ यातैं किसीप्रकारकरिकैभी ईश्वरका भौतिकशरीर संभवतानहीं ॥ इससर्वअर्थकूं श्रीभगवान् श्लोककेपूर्वार्द्धकरिकै अंगीकारकरेहैं (अजोपिसन्नव्ययात्माभूतानामीश्वरोपिसन्इति) हेअर्जुन अपूर्वदेहकाग्रहणरूपजोजन्महै ताजन्मतैंभी मैंकृष्ण भगवान् रहितहूं ॥ तथा पूर्वदेहकापरित्यागरूपजो व्ययहै तामरणरूपव्ययतैंभी मैंकृष्णभगवान् रहितहूं ॥ तथाब्रह्मातैंआदिलैकेस्तंबपर्यंत जितनैंकीभूतहैं तिनसर्व भूतोंका मैंकृष्णभगवान् ईश्वरहूं ॥ इतनैंकहणेकरिकै श्रीभगवान्नैं आपणेविषे धर्मअधर्मकावशपणा निवृत्तकऱ्या ॥ जिसकारणतैं जन्ममरणवालापराधीनजीवहीं ताधर्मअधर्मकेवशहोवैहै ॥ स्वतंत्रईश्वर ताधर्मअधर्मकेवशहोवैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ऐसेजन्ममरणादिकविकारोंतैंरहित आपईश्वरकूं देहकाग्रहण किसप्रकार संभवैगा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए ॥ श्रीभगवान् श्लोककेउत्तरार्द्धकरिकै समाधानकरेहैं (प्रकृतिंस्वामधिष्ठायसंभवामिइति) हेअर्जुन यद्यपि वास्तवतैं मैंकृष्ण भगवान् जन्ममरणादिकसर्वविकारोंतैंरहितहूं ॥ तथापि मैं परमेश्वरकीउपाधिरूप तथाविचित्रअनेकशक्तियोंवाली तथाअघटितघटनापटीयसीनामवाली तथासत्वर जतम यात्रिगुणरूप ऐसीजा मायारूपप्रकृतिहै ॥ ताप्रकृतिकूं आपणेचिदाभासद्वारा वशकरिकै तिसमायाकेपरिणामविशेषोंकरिकेहीं देहवालेकीन्यांई तथाजन्मेहूएकीन्यांई प्रतीतहोताहूं ॥ तात्पर्ययह ॥ उत्पत्तितैंरहितहोणेतैं अनादिरूपजामायाहै ॥ सा अनादिमायाहीं मैंपरमात्मादेवकी उपाधिहै ॥ सामाया व्यवहारकालपर्यंत स्थायीहोणेतैंनित्यहै ॥ तथा मैंपरमात्मादेवविषे सर्वजगत्केकारणपणेकासंपादकहै तथा मैंपरमात्मादेवकीइच्छाकरिकेहीं सामाया प्रवृत्तहोवैहै ॥ ऐसीमायाहीं विशुद्धसत्वरूपकरिकै मैंपरमात्मादेवकीमूर्त्तिहै ॥ तामायारूपमूर्त्तिविशिष्टमैंपरमात्मादेवविषे जन्मतैंरहितपणा तथामरणतैंरहितपणा तथासर्वभूतोंकाईश्वरपणा संभवहोइसकेहै ॥ यातैं ताशुद्धसत्त्वप्रधानमायारूपनित्यदेहकरिकेहीं मैंपरमात्मादेव सृष्टिकेआदिकालविषेतौं सूर्यकेप्रति तथाइदानींकाल विषे तैंअर्जुनकेप्रति यहज्ञानयोग उपदेशकरताभयाहूं ॥ इसअर्थविषे किंचित्मात्रभी पूर्वउक्तदोषोंकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ तहांश्रुति ॥ (आकाशशरीरंब्रह्म) ॥ अर्थयह ॥ आकाशहैनामजिसका ऐसाजो मायारूपअव्याकृतहै ॥ ताअव्याकृतरूपशरीरवाला ब्रह्महैइति ॥ इत्यादिकश्रुतियोंविषे ब्रह्मका मायाहींशरीर कथन कऱ्याहै ॥ तामायारूपशरीरकरिकै मैंपरमात्मादेवकी जगत्कीउत्पत्तिकालविषे तथास्थितिकालविषे तथाप्रलयकालविषे सर्वदा स्थितिसंभवहोइसकेहै इति ॥ ॥ शंका ॥ हेभगवन् जोकदाचित् आपका केवलमायाहीं शरीरहोवै ॥ भौतिकशरीर होवैनहीं ॥ तौं भौतिकशरीरकेंधर्मजेमनुष्यत्वादिकहैं तेमनुष्यत्वादिकधर्म

इसआपकेशरीरविषे किसवासतै प्रतीतहोवेहैं ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहेहैं (आत्ममाययाइति) हेअर्जुन! हमारेविषे जेमनुष्यत्वादिकधर्म प्रतीत होवेहैं ॥ तेमनुष्यत्वादिकधर्म हमारेविषेकोईवास्तवतैंनहीं ॥ किंतु लोकोंऊपरिअनुग्रहकरणेवासतै हमारीमायाकरिकैहीं तेमनुष्यत्वादिकधर्म हमारेंविषेप्रतीतहोवे हैंइति ॥ यहवार्त्ता मोक्षधर्मविषेभी कथनकरीहे ॥ तहांश्लोक ॥ (मायाह्येषामयासृष्टायन्मांपश्यसिनारद ॥ सर्वभूतगुणैर्युक्तंनतुमांद्रष्टुमर्हसि ॥) अर्थयह ॥ हे नारद! जिसशरीरविशिष्टमेरेकूं तूंइनचर्मचक्षुवोंकरिकैदेखताहे ॥ सोयहशरीर हमनैं मायाकरिकैरच्याहे ॥ और कारणमायारूपशरीरवालाजोमैंहूं तिसहमारेकूं तूं इनचर्मचक्षुवोंकरिकै देखणेकूंसमर्थनहींहैइति ॥ तहांअनेकशक्तियोंवाला तथामायानामवाला ऐसाजो नित्यकारणउपाधिहै ॥ सोमायारूपकारणउपाधिहीं परमे श्वरका देहहे ॥ यह भगवान्भाष्यकारोंकामत कथनकरचा ॥ और दूसरेकैईशास्त्रवालेतौं परमेश्वरविषे देहदेहीभावकूंमानतेनहीं ॥ किंतु जो सत् चित् आनंद घन भगवान् वासुदेव परिपूर्ण निर्गुण परमात्माहैं सोईहीं तापरमेश्वरका शरीरहे ॥ दूसराकोईभौतिकशरीर तथामायिकशरीर तापरमेश्वरकाहैनहींइति ॥ तहांश्रुति (सभगवःकस्मिन्प्रतिष्ठितःस्वेमहिम्नि ।) अर्थयह ॥ हेभगवन् सोपरमात्मादेव किसविषेस्थितहै ऐसीशंकाकेहुए ॥ सोपरमात्मादेव आपणे सत्चित् आनंद रूपमहिमाविषेहीं स्थितहैइति ॥ इत्यादिकश्रुतियोंविषे तिसपरमात्मादेवकी आपणेस्वरूपविषेही स्थितिकथनकरीहै किसीमायिकशरीरविषे तथाभौतिकशरीरविषे स्थितिकथनकरीनहींइति ॥ इसपक्षविषेतौ इसश्लोककी इसप्रकारतैं योजनाकरणी ॥ (आकाशवत्सर्वगतश्चनित्यः ॥ अविनाशीवाअरेऽयमात्माऽनुच्छित्तिधर्मा) अर्थयह ॥ यहपरमात्मादेव आकाशकीन्यांईसर्वत्रव्यापकहै तथानित्यहै ॥ हेमैत्रेयी यह आत्मादेवस्वरूपतैंभी नाशतैरहितहै ॥ तथा धर्मोंकेनाशप्रयुक्तनाशतैंभी रहितहैइति ॥ इत्यादिकश्रुतिप्रमाणोंतैं मैंपरमात्मादेव वास्तवतैं जन्ममरणादिकविकारोंतैंरहितहुआभी तथा सर्वजगत्काप्रकाशहुआभी तथा सर्व जगत्काकारण रूपमायाका अधिष्ठानहोणेतैं सर्वभूतोंकाईश्वरहुआभी (स्वांप्रकृतिं) आपणास्वरूपभूत सत् चित्आनंदघन एकरस स्वभावरूपप्रकृतिकूं (अधिष्ठाय) क्याआश्रणकरिकै अर्थात् ता आपणेस्वरूपविषेस्थितहोइके (संभवामि) क्या देहदेहीभावतैंविनाहीं लोकप्रसिद्ध देहवालेजीवोंकीन्यांई यहपरमेश्वर देहवालाहै याप्रकारकेव्य वहारकाविषयहोवूंहूंइति ॥ शंका ॥ हेभगवन् मायिकदेहतैं तथाभौतिकदेहतैं रहित सत्चित्आनंदघनजोआपहो ॥ ऐसेआपविषे इसमनुष्यदेहत्वकीप्रतीति किसवासतै होतीहै ॥ ऐसीअर्जुनकी शंकाकेहुए श्रीभगवान् कहेहैं (आत्ममाययाइति) हेअर्जुन देहदेहीभावतैंरहित जोमैं नित्य शुद्ध सत् चित् आनंदघन भगवान् वासुदेवहूं ॥ ऐसेमैंपरमात्मादेवविषे जोदेहदेहीरूपकरिकैप्रतीतिहै ॥ सामायामात्रहीहै ॥ वास्तवतैं हमारेविषे सोदेहदेहीभावहैनहीं ॥ यहवार्त्ता अन्यशास्त्र विषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ (कृष्णमेनमवेहित्वमात्मानमखिलात्मनाम् ॥ जगद्धितायसोप्यत्रदेहीवाभातिमायया ॥ अहोभाग्यमहोभाग्यंनंदगोपव्रजौ

कसाम् ॥ यन्मित्रंपरमानंदंपूर्णब्रह्मसनातनम् ॥) अर्थयह ॥ इसकृष्णभगवान्कूं तूं सर्वभूतप्राणियोंका आत्मारूपजान ॥ ऐसासर्वभूतप्राणियोंकाआत्मारूपहुआभी जोकृष्णभगवान् इसलोकविषे भक्तजनोंकेउद्धारकरणेवासते आपणीमायाकरिकै देहवालेजीवोंकीन्यांई प्रतीतहोवैहै ॥ किंवा व्रजभूमिविषेरहणेहारेजे नंदगोप गोपियांहैंतिनसर्वोंकेअहोभाग्यहैं अहोभाग्यहैं ॥ जिसव्रजवासीलोकोंके यहपरमानंदपरिपूर्णसनातनब्रह्म कृष्णरूपकरिकै मित्रभावकूंप्राप्तहुआहैइति ॥ और कोईकपु रुषतौं तिसपरमात्मादेवकूं नित्य निरवयव निर्विकार परमानंदरूपमानिकरिकैभीतापरमात्मादेवविषेअवयवअवयवीभाव वास्तवहींअंगीकारकरैहैं ॥ तिनपुरुषोंकाक हणा अत्यंत निर्युक्तिकहै इति ॥ ॥ ६ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् इसप्रकार] सत्‌चित्‌आनंदघनरूपजोआपहो तिसआपका किसकालविषे तथाकिसप्रयो जनवासतैं देहवालेजीवकीन्यांई व्यवहारहोवैहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् उत्तरकहैहैं ॥

(मू० श्लो०) यदायदाहिधर्मस्यग्लानिर्भवतिभारत ॥ अभ्युत्थानमधर्मस्यतदात्मानंसृजाम्यहम् ॥ ७ ॥ यदा । यदा । हि । धर्मस्य । ग्लानिः । भवति । भारत । अभ्युत्थानम् । अधर्मस्य । तदा । आत्मानं सृजामि । अहम् ॥ ७ ॥ (इतिपदच्छेदः) हेअर्जुन जिसै जिसकालविषे धर्मकी हानि होवैहै तथा अधर्मकी वृद्धिहोवैहै तिसंकालविषे मैंपरमात्मादेव देहकूं उत्पन्नकरूंहूं ॥ ७ ॥ (इतिप०)

॥ टीका ॥ हेअर्जुन वेदकरिकेविधानकऱ्याहुआ जो प्रवृत्तिनिवृत्तिरूपधर्महै ॥ जो धर्म कामनापूर्वककऱ्याहुआ इनप्राणियोंके स्वर्गादिरूपअभ्युदयका साधनहोवैहै ॥ तथा जोधर्म निष्कामकऱ्याहुआ इनप्राणियोंके मोक्षरूपनिःश्रेयसका साधनहोवैहै ॥ तथा जोधर्म ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र या च्यारिवर्णोंका तथा ब्रह्मचर्य गृहस्थ वानप्रस्थ संन्यास या च्यारिआश्रमोंका अभिव्यंजकहै अर्थात् जनावणेहाराहै ॥ तहांश्रद्धाभक्तिपूर्वक अग्निहोत्रादिककर्मोंकूंकरणा याकानाम प्रवृत्तिरूपधर्महै ॥ और परस्त्रीगमनादिकनहींकरणे याकानाम निवृत्तिरूपधर्महै ॥ ऐसेधर्मकी जिसाजिसकालविषेहानिहोवैहै ॥ और वेदकरिकैनिषिद्धकऱ्याहुआ तथानानाप्रकारके दुःखोंकासाधनरूप तथाधर्मकाविरोधी ऐसाजोअधर्महै ॥ तिसअधर्मकीजिसजिसकालविषे वृद्धिहोवैहै ॥ तिसातिसकालविषे मैंपरमात्मादेव आपणेदेहकूंसृजताहूं ॥ अर्थात् नित्यसिद्धआपणेदेहकूं मायाकरिकै रचेहुएकीन्यांई दिखावताहूं ॥ ईहां (हेभारत) यासंबोधनकेकहणेकरिकै श्रीभगवान्ने यहअर्थ सूचनकऱ्या ॥ भरतवंशविषेजोउत्पन्नहोवै ताकानाम भारतहै ॥ अथवा भा नामज्ञानकाहै ताकेविषे जोरतहोवै अर्थात् ज्ञानविषेजोप्रीतिवालाहोवै ताकानाम भारतहै ॥ ऐसे भारतनामवालातूंअर्जुन धर्मकीहानिकूं सहारणेविषेसमर्थनहींहै इति ॥ ७ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् साधर्मकीहानि तथाअधर्मकीवृद्धि यहदोनों आपके

परितोषकाकारणहोवैंगे जिसकरिकै आपतिसीकालविषेहीं अवतारकूंधारणकरोहो यातैं आपका अवतार उलटा लोकोंकूं अनर्थकीप्राप्तिकरणेहाराहींहुआ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान् उत्तरकहेहैं ॥

(मू० श्लोक०) परित्राणायसाधूनांविनाशायचदुष्कृताम् ॥ धर्मसंस्थापनार्थायसंभवामियुगेयुगे ॥ ८ ॥ परित्राणाय । साधूनां । विनाशाय । च । दुष्कृतां । धर्मसंस्थापनार्थाय । संभवामि । युगे । युगे ॥ ८ ॥(इतिपदच्छेदः)॥ हेअर्जुन साधुपुरुषोंके रक्षाकरणे वासतै तथा पापीपुरुषोंके नाशकरणेवासतै तथा धर्मकेसंस्थापनकरणेवासतै मैंपरमेश्वर युग युगविषे अवतारकूंधारणकरूंहू ॥ ८ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन धर्मकीहानिकरिकै हानिकूंप्राप्तहुए तथा निरंतरवेदप्रतिपादितमार्गविषेस्थित ऐसेजेवेदविहितपुण्यकर्मोंकूंकरणेहारे श्रेष्ठपुरुषहैं ॥ जे श्रेष्ठपुरुष आपणेप्राणोंकेनाशहुएभी आपणेधर्मकूंपरित्यागकरतेनहीं तिन श्रेष्ठपुरुषोंकानाम साधुहै ॥ ऐसेसाधुपुरुषोंकेरक्षणकरणेवास्ते ॥ और अधर्मकीवृद्धि करिकैवृद्धिकूंप्राप्तहुए तथावेदमार्गकेविरोधी तथाशरीरमनवाणीकरिकै सर्वदा वेदनिषिद्धपापकर्मोंकूंकरणेहारे ऐसेजे दुष्टपुरुषहैं ॥ तिनदुष्टपुरुषोंका नाम दुष्कृतहै ॥ ऐसेदुष्कृतपुरुषोंका समूलतैं नाशकरणेवास्ते मैंपरमेश्वर युगयुगविषे अवतारकूंधारणकरूंहूं ॥ शंका ॥ हेभगवन् साधुपुरुषोंकारक्षण तथादुष्टपुरुषोंकाविनाश यादोनोंकूं आप किसप्रकारकरोहो ॥ ऐसी अर्जुनकीशंकाकेहुए ॥ श्रीभगवान्कहेहैं (धर्मसंस्थापनार्थायइति) हेअर्जुन पूर्ववृद्धिकूंप्राप्तहुआजोअधर्महै ॥ ताअधर्मकीनिवृत्तिकरिकै जोधर्मका सम्यक्स्थापनहै अर्थात् वेदमार्गकापरिरक्षणहै ताकानाम धर्मसंस्थापनहै ॥ ताधर्मकेसंस्थापनकरणेवास्तेहीं मैंपरमात्मादेव अवतारकूंधारणकरूंहूं ॥ ताधर्मकेसंस्थापनकरिकै साधुपुरुषोंका रक्षण तथा दुष्टपुरुषोंकाविनाश अवश्यकरिकैहोवैहै ॥ याते हमाराअवतार किसीकूं अनर्थकीप्राप्ति करणेहारानहींहै इति ॥ ८ ॥ ❀ ॥

(मू० श्लो०) जन्मकर्मचमेदिव्यमेवंयोवेत्तितत्वतः॥त्यक्त्वादेहंपुनर्जन्मनैतिमामेतिसोऽर्जुन॥९॥जन्म । कर्म । च । मे । दिव्यम् । एवं । यः । वेत्ति । तत्त्वतः । त्यक्त्वा । देहं । पुनः । जन्म । न । एति। मां एति । सः। अर्जुन॥९॥(इतिप०)॥ हेअर्जुन जोपुरुष हमारे दिव्य जन्मकूं तथा कर्मकूं ईसप्रकार यथार्थ जानेहै सोपुरुष ईसदेहकूं परित्यागकरिकै पुनः जन्मकूं नहीं प्राप्तहोवैहै किंतु मैंपरमेश्वरकूंही प्राप्तहोवैहै ॥ ९ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन नित्यसिद्धजोमैं सत्‌चित् आनंदघनहूं ॥ ऐसेमैं परमात्मादेवका आपनीलीलामात्रकरिके लोकप्रसिद्धजीवोंकेजन्मकीन्यांई जोजन्मकाअनुकरणमात्ररूप जन्महै ॥ तथा मैंनित्यसिद्धपरमेश्वरका वेदविहितधर्मकीस्थापनाकारिकै जगत्‌कापरिपालनरूपजोकर्महै ॥ तेहमारे जन्म कर्म दोनों दिव्य हैं ॥ अर्थात् दूसरेप्राकृतपुरुषोंकूंकरणेविषेअवशक्यहैं केवल मैंईश्वरकेहीं असाधारणधर्मरूपहैं ॥ ऐसेहमारे दिव्यजन्मकर्मदोनोंकूं जोपुरुष (अजोपिसन्नव्ययात्मा) इत्यादिकवचनोक्तरीतिसे तत्त्वतैंजानेहै ॥ अर्थात् मूढपुरुषोंनेंही श्रीभगवान्‌विषे मनुष्यत्वकीभ्रांतिकरकैइतरजीवोंकीन्यांई गर्भवासादिरूपजन्म आरोपणकऱ्याहै तथा आपणेस्वार्थवास्ते सोकर्म आरोपणकऱ्याहै ताआरोपित जन्मकर्मकूं वास्तवतैं शुद्धसत्‌चित्‌आनंदस्वरूपकेज्ञानतैं निवृत्तकरिकै जन्मतैं रहितपरमेश्वरकाभी आपणीमायाकारिकै लीलामात्रतैं लोकप्रसिद्धजीवोंकेजन्मकीन्यांई जन्मकाअनुकरणमात्र संभवैहै ॥ तथा वास्तवतैंअकर्तापरमेश्वरकाभी दूसरेलोकोंऊपरिअनुग्रहकरणेवास्ते लोकप्रसिद्धजीवोंकेकर्मकीन्यांई कर्मकाअनुकरणमात्र संभवहोइसकेहै ॥ इसप्रकार जोपुरुष हमारेजन्मकर्मकूं वास्तवरूपतैंजानेहै ॥ तथा इसीप्रकार आपणेवास्तवस्वरूपकूंभीजानेहै ॥ सोपुरुष इसवर्त्तमानशरीरका परित्यागकरिकै पुनः दूसरेजन्मकूंप्राप्तहोतानहीं ॥ किंतु सोपुरुष सत्‌चित् आनंदघनमैंभगवान्‌वासुदेवकूंही प्राप्तहोवैहै ॥ अर्थात् सत्‌चित् आनंदरूप परमात्मादेव मैंहू याप्रकारकेअभेदज्ञानतै सोपुरुष इससंसारते मुक्तहोवैहै इति ॥ ९ ॥ ❋ तहां पूर्वश्लोकविषे (मामेतिसोऽर्जुन) यहवचनकथनकऱ्या ॥ अब श्रीभगवान् आपणेवास्तवस्वरूपकूं सर्वमुक्तपुरुषोंकेप्राप्तिकापदरूपकरिकै परमपुरुषार्थरूपताका तथाइसमोक्षमार्गकूं अनादिपरंपराकरिकैप्राप्तपणेका कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) वीतरागभयक्रोधामन्मयामामुपाश्रिताः॥ बहवोज्ञानतपसापूतामद्भावमागताः ॥ १० ॥ वीतरागभयक्रोधाः । मन्मयाः । माम् । उपाश्रिताः । बहवः । ज्ञानतपसा । पूताः । मद्भावम् । आगताः ॥ १० ॥ (इतिपदच्छेदः) हेअर्जुन रागभयक्रोधतैं रहित तथामेरेविषेचित्तवाले तथाहमारे शरणकूंप्राप्तहूए तथाज्ञानरूपतपकरिकै पापोंतैंरहितहूए ऐसेबहुतपुरुष मेरेस्वरूपकूं प्राप्तहोतेभयेहैं ॥ १० ॥ (इतिपदार्थः)

॥ टीका ॥ तिसतिसस्वर्गादिकफलोंकेप्राप्तिकीजातृष्णाहै ताकानाम रागहै ॥ और ॥ स्त्रीपुत्रधनादिकसर्वविषयोंकापरित्यागकरिकै ज्ञानमार्गविषेस्थितहुए हमारा किसप्रकार जीवनहोवैगा याप्रकारकाजो त्रासहै ताकानाम भयहै ॥ और सर्वविषयोंका मूलतैंउच्छेदकरणेहाराजोज्ञानमार्गहै सोज्ञानमार्ग किसप्रकार हमारा हितहोवैगा किंतु हितनहींहोवैगा याप्रकारकाजोद्वेषहै ताकानाम क्रोधहै ॥ तेरागभयक्रोधतीनों विवेककरिकै निवृत्तहुएहैं जिनपुरुषोंके तिनपुरुषोंकानाम वीतराग

भयकोधहै ॥ अर्थात् शुद्धअंतःकरणवालेजेपुरुषहैं ॥ पुनःकैसेहैंतेपुरुष (मन्मयाः) क्यामैंतत्पदार्थरूपपरमात्मादेवकूं त्वंपदार्थरूपआपणेआत्माकेसाथि अभेद करिकै साक्षात्कारकरयाहैजिनोंने ॥ अथवा (मन्मयाः) क्यामैंएकपरमात्मादेवविषेहीहै चित्तजिनोंका ॥ पुनः कैसेहैंतेपुरुष (मामुपाश्रिताः) क्या अनन्य प्रेमभक्तिकरिकै मैंपरमात्मादेवकेही जेशरणकूंप्राप्तहूएहै ॥ ऐसेअनेकशुकवामदेवादिकपुरुष ज्ञानरूपतपकरिके सर्वपापोंतैंरहितहुए अर्थात् कार्यसहित अज्ञानरूप मलतैंरहितहुए हमारे सत्चित्आनंदस्वरूपभूतमोक्षकूं प्राप्तहोतेभयेहैं ॥ अथवा (ज्ञानतपसापूताः) क्याज्ञानरूपतपकरिकै जीवन्मुक्तरूपवेपुरुष (मद्भावमागताः) क्यामैंपरमात्माविषयक रतिनामाप्रेमरूपभावकूं प्राप्तहोतेहैं इसीअर्थकूंश्रीभगवान् आपही (तेषांज्ञानीनित्ययुक्तएकभक्तिर्विशिष्यते) इसवचनकरिके आगेकथनकरेगा इति ॥ १० ॥ शंका ॥ हेभगवन् जेपुरुष ज्ञानरूपतपकरिकै पवित्रहुएहैं ॥ तेनिष्कामपुरुषतौं आपके भावकूं प्राप्तहोवैहैं और जेपुरुषताज्ञान रूपतपकारिकै पवित्रनहींहूएहैं ॥ तेसकामपुरुष ताआपकेभावकूं नहींप्राप्तहोवैहैं ॥ इसप्रकार निष्कामपुरुषोंकूंतौं आपणे भावकीप्राप्ति करणेहारा तथासकाम पुरुषोंकूं आपणे भावकीनहींप्राप्तिकरणेहारा जोआपईश्वरहो ॥ तिसआपकूं विषमता दोषकीप्राप्ति तथानिर्दयतादोषकीप्राप्ति अवश्यकरिकैहोवैगी ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् उत्तरकहेहैं ॥

(मू० श्लो०) येयथामांप्रपद्यंतेतांस्तथैवभजाम्यहम् ॥ ममवर्त्मानुवर्ततेमनुष्याः पार्थसर्वशः ॥ ११ ॥ ये । यथा । मां । प्रपद्यंते । तान् । तथा । एव । भजामि । अहं । मम । वर्त्म । अनुवर्त्तते । मनुष्याः । पार्थ । सर्वशः । इतिपदच्छेदः ॥ हेपार्थ जेपुरुष जिसै प्रकारकरिके मैंपरमेश्वरकूं भजतेहैं तिनपुरुषोंकूं मैंपरमेश्वर तिसीप्रकार हीं अनुग्रहकरूंहूं यहकर्मकेअधिकारीमनुष्य सर्वप्रकार करिके मैंपरमेश्वरके भजनमार्गकूं अनुसरणकरेहैं ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन इसलोकविषे दुःखकरिकैपीडितजेआर्त्तपुरुषहैं ॥ तथा धनादिकपदार्थोंकेप्राप्तिकीइच्छाकरणेहारे जे अर्थार्थीपुरुषहैं ॥ तथा आत्माके जानणेकीइच्छावाले जेजिज्ञासुपुरुषहैं ॥ तथा तत्त्वसाक्षात्कारवाले जेज्ञानीपुरुषहैं ॥ तिनच्यारिप्रकारकेपुरुषोंविषे जेजेपुरुष सकामपणेकरिकै तथानिष्काम पणेकरिकै सर्वकर्मोंकेफलप्रदातामैंईश्वरकूं भजतेहैं ॥ तिनपुरुषोंकूं तिसतिसमनवांछितफलकीप्राप्तिकरिकै मैंपरमेश्वरअनुग्रहकरूंहूं ॥ तिनभक्तजनोंकूं मैंपरमेश्वर विपरीतफलकीप्राप्तिकरतानहीं ॥ तहां मोक्षकीइच्छातैंरहित जेआर्त्तभक्तहैं ॥ तिनआर्त्तभक्तोंकूंतौं तिनोंकेपीडाकीनिवृत्तिकरिकै अनुग्रहकरौंहूं और मोक्षकी इच्छातैंरहित जेअर्थार्थीपुरुषहैं ॥ तिनअर्थार्थीपुरुषोंकूंतौं धनादिकपदार्थोंकीप्राप्तिकरिकै अनुग्रहकरौंहूं ॥ और (तमेतंवेदानुवचनेनब्राह्मणाविविदिषंतियज्ञेन दानेनतपसाऽनाशकेन ।) इसश्रुतिनैंविधानकरयेजोनिष्कामकर्महैं ॥ तिननिष्कामकर्मोंकूंकरणेहारेजे जिज्ञासुजनहैं ॥ तिनजिज्ञासुभक्तोंकूंतौं आत्मज्ञानकी प्राप्तिक

रिकै अनुग्रहकरौंहूं ॥ और ज्ञानवान्भक्तोंकूंतौं मोक्षकीप्राप्तिकरिकै अनुग्रहकरोंहूं ॥ अन्यवस्तुकीकामनावालेभक्तजनकूं अन्यवस्तुकीप्राप्ति मैंकरतानहीं ॥ यातैं तिनपुरुषोंके भावनाकेअनुसार फलकेदेणेहारेमैंपरमेश्वरविषे विषमतादोषकी तथानिर्दयतादोषकी प्राप्ति संभवैनहीं ॥ शंका ॥ हे भगवन् यद्यपि आप लोकोंकेभावनाकेअनुसारहीं तिसतिसफलकीप्राप्तिकरोहो ॥ तथापि आपणे भक्तजनोंकेप्रतिहीं ताफलकीप्राप्तिकरोहो ॥ अन्यइंद्रादिकदेवतावोंकेभक्तोंकूं आप तिसफलकीप्राप्ति करतेनहीं ॥ यातैं आपकेविषे सोविषमतादोष तथा निर्दयतादोष तिसीप्रकारस्थितहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहेहैं (ममवर्त्मानुवर्त्तंतेमनुष्याःपार्थसर्वशःइति) हेअर्जुन जेकर्मोंकेअधिकारीमनुष्य इंद्र अग्नि सूर्य इत्यादिकदेवतावोंकाभी भजनकरेहैं ॥ तेमनुष्यभी मैंअंतर्यामीवासुदेवकेहीं ज्ञानकर्मरूपमार्गकूं अनुसरणकरेहैं ॥ अर्थात् तेमनुष्यभी मैंपरमेश्वरकाहींभजनकरेहैं ॥ और तिनइंद्रादिकदेवतावोंकेभक्तोंकूंभी मैंपरमात्मादेवहीं तिसतिस इंद्रादिरूपकरिकै तिसतिस फलकीप्राप्तिकरोंहूं ॥ यातैं मैंपरमेश्वरविषे किंचित्मात्रभी विषमतादोषकी तथानिर्दयतादोषकी प्राप्ति संभवैनहीं ॥ इसीअर्थकूं (फलमतउपपत्तेः) इस सूत्रकरिकै श्रीव्यासभगवान्भीकथनकरताभयाहै ॥ इसीअर्थकूं (येप्यन्यदेवताभक्ताः) इत्यादिकवचनोंकरिकै श्रीभगवान् आपहीं आगे स्पष्टकरिकेकथनकरैंगे ॥ तथा इसीअर्थकूं (इंद्रंमित्रंवरुणमग्निमाहुः) इत्यादिकवेदकेमंत्रकथनकरेहैं इति ॥ ११ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् इसप्रकारसे आपईश्वरहीं जोकदाचित्इंद्रादिरूपकरिकै सर्वलोकोंकूं तिसतिसफलकीप्राप्तिकरणेहारेहोवो ॥ तौं तेसर्वजन साक्षात् आपपरमेश्वरकूंहीं किसवासतै नहींभजतेहैं ॥ साक्षात् आपईश्वरकूंछोडिकै तिनइंद्रादिकदेवतावोंकूं किसवासतैभजतेहैं ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् उत्तरकहेहैं ॥

(मू० श्लो०) कांक्षंतःकर्मणांसिद्धिंयजंतइहदेवताः ॥ क्षिप्रंहिमानुषेलोकेसिद्धिर्भवतिकर्मजा ॥ १२ ॥ कांक्षंतः। कर्मणां। सिद्धिं। यजंते। इह। देवताः। क्षिप्रं। हि। मानुषे। लोके। सिद्धिः। भवति। कर्मजा ॥१२॥ (इतिपदच्छेदः) हेअर्जुन इसलोकविषे कर्मोंके फलकी इच्छाकरतेहुए सकामपुरुष इंद्रादिकदेवतावोंकूं पूजनकरेहैं जिस कारणतैं इसमनुष्यलोकविषे तिनसकामपुरुषोंकूं कर्म जन्य फल शीघ्रहीं प्राप्तहोवैहै ॥ १२ ॥ (इतिपदार्थः)

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जेपुरुष इसलोकविषे यज्ञादिककर्मोंके धनपुत्रादिकफलोंकीइच्छाकरैहैं ॥ तेसकामपुरुषतौं इंद्र अग्नि सूर्य आदिकदेवतावोंकूंहीं पूजनकरेहैं ॥ तेपुरुषनिष्कामहोइकै कदाचित्भी मैंपरमेश्वरका पूजनकरतेनहीं ॥ काहेतैं जेपुरुष तिसतिसफलकीइच्छाकरतेहुए तिनइंद्रादिकदेवतावोंका पूजनकरेहैं अर्थात् यज्ञादिककर्मोंकरिकैतिनइंद्रादिकदेवतावोंकूं प्रसन्नकरेहैं ॥ तिनसकामपुरुषोंकूं तिसतिसकर्मजन्यफलकीप्राप्ति इसमनुष्यलोकविषे शीघ्रहीहोवैहै ॥ और

आत्मज्ञानका जोमोक्षरूपफलहै तो ॥ सोफलहै ॥ अंतःकरणकीशुद्धितैंविना प्राप्तिहोवैनहीं ॥ किंतु सोज्ञानकाफल आपणीप्राप्तिविषे अंतःकरणकेशुद्धिकीअपेक्षा अवश्यकरेहै ॥ और साअंतःकरणकीशुद्धि अनेकजन्मोंकेपुण्यकर्मकरिकैहोवैहै ॥ यातैं कर्मकेफलकीन्यांई सोज्ञानकाफल शीघ्रहीप्राप्तहोवैनहीं ॥ ईहां मनुष्य लोकविषे सोकर्मकाफल शीघ्रहीप्राप्तहोवैहै यावचनकेकहणेकरिकै श्रीभगवान्नैं यहअर्थसूचनकऱ्या ॥ इसमनुष्यलोकतैंभिन्न दूसरेलोकोंविषेभी वर्णआश्रमके धर्मोंतेभिन्न अन्यकर्मोंकेकरणैतैं फलकीप्राप्ति अवश्यकरिकैहोवैइति ॥ यातैं हेअर्जुन जिसकारणतैं मोक्षतैंविमुखहूए तेसकामपुरुष तिसतिसतुच्छफलकीप्राप्तिवासतै अन्यइंद्रादिकदेवतावोंका पूजनकरेहैं ॥ तिसकारणतैं जैसे मुमुक्षुजन साक्षात् मैंपरमेश्वरकाहीपूजनकरेहै ॥ तैसे तेसकामपुरुष साक्षात् मैंपरमेश्वरकापूजन करतेनहींइति ॥ १२ ॥ ❀ ॥ तहां पूर्वश्लोकविषे सकामताके तथानिष्कामताके भेदकरिकै सर्वपुरुषोंविषे समानस्वभावताकाअभाव कथनकऱ्या ॥ अब शरीरके आरंभकरणेहारे सत्वादिकगुणौंकीविषमताकरिकैभीतिनसर्वपुरुषोंविषे समानस्वभावताकाअभाव कथनकरेहैं ॥

(मू० श्लो०) चातुर्वर्ण्यंमयासृष्टंगुणकर्मविभागशः ॥ तस्यकर्त्तारमपिमांविद्धयकर्त्तारमव्ययम् ॥ १३ ॥ चातुर्वर्ण्यं । मया । सृष्टं । गुणकर्मविभागशः । तस्य । कर्त्तारम् । अपि । मां । विद्धि । अकर्त्तारम् । अव्ययम् ॥ १३ ॥ इतिपद० ॥ हेअर्जुन मैंपरमेश्वरनैं गुणकर्म विभागकरिकै च्यारिवर्ण उत्पन्नकरेहैं तिसच्यारिवर्णका कर्त्तारूप भी मैंपरमेश्वरकूं तूं अकर्त्तारूप तथाअव्ययरूप जान ॥ ॥ १३ ॥ (इतिपदार्थः)

॥ टीका ॥ हेअर्जुन मैंईश्वरनें सृष्टिकेआदिकालविषे सत्वादिकगुणोंकेभेदकरिकै तथाशमदमादिककर्मोंकेभेदकरिकै ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र यहच्यारिवर्ण भिन्न भिन्नकरिके उत्पन्नकरेहैं ॥ तहां सत्वगुणहैप्रधानाजिनोंविषे ऐसेजेब्राह्मणहैं ॥ तिनब्राह्मणोंकेतौं तासत्त्वगुणकेकार्यरूप शमदमादिकहीं कर्महै और सत्वगुणउनसर्जनरजोगुणहै प्रधानाजिनोंविषे ऐसेजेक्षत्रियहैं तिनक्षत्रियोंकेतौं तासत्त्वगुणउपसर्जनप्रधानभूतरजोगुणकाकार्यरूप शौर्य तेजआदिकहीं कर्महैं ॥ और तमोगुणउपसर्जनरजोगुणहैप्रधानाजिनोंविषे ऐसेजेवैश्यहैं ॥ तिनवैश्योंकेतौं तातमोगुणउपसर्जनप्रधानभूतरजोगुणकाकार्यरूप कृषिवाणिज्यादिकहीं कर्महैं ॥ और तमोगुणहैप्रधानाजिनोंविषे ऐसेजेशूद्रहैं ॥ तिनशूद्रोंकेतौं तिसतमोगुणकाकार्यरूप त्रैवर्णिकपुरुषोंकीसेवादिकही कर्महैं ॥ ईहां उपसर्जननाम गौणकाहै ॥ इसप्रकार गुणोंकेभेदकरिकै यहच्यारिवर्ण स्थितहैं ॥ शंका ॥ हेभगवन् इसप्रकार गुणकर्मकेभेदकरिकै विषमस्वभाववाले च्यारिवर्णोंकूंउत्पन्नकरणेहारे आपईश्वरविषे विषमतादोषकीप्राप्ति अवश्यकरिकैहोवैगी ॥ ऐसी अर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान्कहेहैं (तस्यकर्तारमपिमांविद्धयकर्तारमव्ययमिति) हे अर्जुन यद्यपि मैंपरमेश्वर

व्यवहारदृष्टिकरिकै ताविषमस्वभाववालेच्यारिवर्णोंका करताहूं ॥ तथापि परमार्थदृष्टिकरिकै तूं हमारेकूं अकर्त्तारूपहीं जान ॥ तथा अव्ययरूपजान अर्थात् निरहंकारताकरिकै अबाधितमहिमावालाजानइति ॥ और किसीटीकाविषेतौं (गुणकर्मविभागशः) यावचनविषे गुणकर्म विभागशः यहदोपदअंगीकारकरिकै यह अर्थकथनकरचाहै ॥ च्यारिवर्णोंके जेहितरूपहोवैं तिनोंकानामचातुर्वर्ण्यहै ॥ ऐसेजे द्रव्यदेवतादिकगुणहैं तथाअग्निहोत्रादिककर्म हैं ॥ तेच्यारिवर्णोंकेहितरूपगुणकर्म मैंपरमेश्वरनैं (विभागशःसृष्टं) क्या साधारणअसाधारणभेदकरिकै उत्पन्नकरेहैं तहां दानजपादिककर्म सर्ववर्णोंका साधारणधर्महैं ॥ और अग्निहोत्र वेदाध्ययन संध्योपासन इत्यादिककर्मतौं ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य यातीनवर्णकेहींहैं ॥ शूद्रके तेअग्निहोत्रादिककर्महैंनहीं ॥ तिन तीनवर्णोंविषेभी बृहस्पतिसवादिककर्म ॥ केवल ब्राह्मणकेहीं असाधारणधर्महैं अन्यक्षत्रियादिकोंकेतेधर्मनहींहैं ॥ और राजसूयादिकर्म केवल क्षत्रियकेहीं असाधारणधर्महैं ब्राह्मणादिकोंके तेधर्मनहींहैं ॥ और वैश्यस्तोमादिककर्म केवल वैश्यकेहीं असाधारणधर्महैं ॥ ब्राह्मणादिकोंके तेधर्मनहींहैं ॥ और त्रैवर्णिकपुरुषोंकीसेवाकरणी इत्यादिककर्म केवल शूद्रकेहीं असाधारणधर्महैं॥ ब्राह्मणादिकोंके तेधर्मनहींहैं ॥ इसप्रकार तिनअग्निहोत्रादिककर्मोंकेभेदहुए तिनकर्मोंविषे अंगभूतद्रव्यदेवतादिकगुणोंकाभी भेदहोवैहै इसप्रकार तिनच्यारिवर्णोंके गुण तथाकर्म मैंपरमेश्वरनैंही साधारणअसाधारणरूपकरिकै उत्पन्नकरेहैं यातैं जैसे पुत्रकीप्रसन्नताकरिकै पिताकीप्रसन्नताहोवैहै ॥ तैसे तिनइंद्रादिकदेवतावोंकीप्रसन्नताकरिकै मैंपरमेश्वरकीभी प्रसन्नताहोवैहै ॥ इसप्रकार प्रसन्नताकूंप्राप्तहुआ मैंपरमेश्वर तिनइंद्रादिकदेवतावोंकेभक्तोंकूंभी तिसतिसकर्मकेफलकी प्राप्तिकरोंहूं इति ॥ १३ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् पूर्वआपनैं कर्तारूपमैंपरमेश्वरकूं तूं अकर्त्तारूपजान याप्रकारकावचन कथनकरचा ॥ सो कर्त्ताकूं अकर्त्तारूपता किसप्रकार संभवैगी ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् ताअर्थकूं स्पष्टकरिकै निरूपणकरेहै ॥

(मू० श्लो०) नमांकर्माणिलिंपंतिनमेकर्मफलेस्पृहा ॥ इतिमांयोभिजानातिकर्मभिर्नसबध्यते ॥१४॥ नं। मां । कर्माणि। लिंपंति । नं । मे । कर्मफले । स्पृहा। इंति । मां।यः । अभिजानाति। कर्मभिः । नं। सः। बध्यते ॥१४॥ (इतिपद०) हेअर्जुन मैंपरमेश्वरकूं यहकर्म नहीं लिंपायमानकरेहैं तथाहमारेकूं ताकर्मकेफलविषे तृष्णाभी नहींहै इसप्रकार जोपुरुष मैंपरमेश्वरकूं जानताहै सोपुरुषभी कर्मोंकरिकै नहीं बंधायमानहोवैहै ॥ १४ ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन निरहंकारताकरिकै कर्तृत्वअभिमानतैंरहितजोमैंभगवान्हूं ॥ तिसहमारेकूं यह जगत्केउत्पत्ति स्थितिआदिककर्म नहीं लिपायमानकरते ॥ अर्थात् जैसे अन्यअज्ञानीपुरुषोंकूं यहकर्म देहकीआरंभताकरिकैबंधायमानकरेहैं ॥ तैसे मैंपरमेश्वरकूं तेकर्म बंधायमानकरतेनहीं ॥ यातैं व्यवहारदृष्टिकरिकै मैं

कर्मोंकूं करताहुआभीवास्तवतैं अकर्त्तारूपहीहूं ॥ इसप्रकार श्रीभगवान् आपणेविषे कर्त्तापणेकानिषेधकरिकै अब भोक्तापणेकाभी निषेधकरेहैं (नमेकर्मफले स्पृहाइति) हे अर्जुन जैसे अज्ञानीजीवोंकूं कर्मोंकेस्वर्गादिकफलोंविषे यह फल हमारेकूंप्राप्तहोवै याप्रकारकीतृष्णा होवैहै ॥ तैसे मैंआप्तकामईश्वरकूं तिनकर्मोंके फलोंविषे तृष्णाहैनहीं ॥ तहांश्रुति (आप्तकामस्यकास्पृहाइति) ॥ अर्थयह ॥ सर्वात्मदृष्टिकरिकै जिसपुरुषकूं सर्वपदार्थप्राप्तहुएहैं तिसपुरुषकानाम आप्तकामहै ॥ ऐसेआप्तकामपुरुषकूं किंचित्मात्रभी किसीफलकीतृष्णाहोवैनहींइति ॥ तात्पर्ययह इसलोकविषे अज्ञानीजीवोंकूं जो कर्म बंधायमानकरेहैं ॥ सो मैं इनकर्मोंका कर्त्ताहूं तथा मैं इनकर्मोंकेफलकूंप्राप्तहोवौंगा याप्रकारका कर्तृत्वअभिमान तथाफलकीतृष्णा यादोनोंकरिकैही बंधायमानकरेहैं ॥ कर्तृत्वअभिमान तथाफलकी तृष्णा यादोनोंतैंविनातेकर्म किसीकूंभी बंधायमानकरतेनहीं ॥ और सोकर्तृत्वअभिमान तथाफलकीतृष्णा यहदोनों मैंआप्तकामईश्वरविषेहैंनहीं ॥ याकारणतैं तेकर्म मैंईश्वरकूं बंधायमानकरतेनहीं ॥ इसप्रकार कर्मोंकूंकरताहुआभीमैंईश्वर वास्तवतैं अकर्त्तारूपहीहूं ॥ शंका ॥ हेभगवन् इसप्रकार आपईश्वरविषे अकर्त्ता पणा तथा अभोक्तापणा सिद्धहुएभी ताकेजानणेकरिकै हमलोकोंकूं कौनफलप्राप्तहोवैहै ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहेहैं (इतिमांयोऽभिजानातिइति) हेअर्जुन इस प्रकार जोकोईअन्यपुरुषभी अकर्त्ताअभोक्तामैंपरमेश्वरकूं आपणाआत्मारूपकरिकैजानेहै ॥ सोपुरुषभी हमारेन्यांई तिनकर्मोंकरिकै बंधायमानहोवै नहीं ॥ अर्थात् अकर्त्ता आत्माकेज्ञानकरिकै सोपुरुषभी तिनकर्मोंतैंमुक्तहीहोवैहै इति ॥ १४ ॥ ❀ ॥ जिसकारणतैं मैं कर्त्ता नहींहूं तथामेरेकूं कर्मों केफलकी तृष्णाभीनहींहै याप्रकारके अकर्त्ताअभोक्ताआत्माके ज्ञानतैं यह पुरुष तिनकर्मोंकरिकै बंधायमानहोतानहीं ॥ तिसकारणतैं पूर्वअनेकमहान्पुरुष आत्मा कूं अकर्त्ताअभोक्ताजानिकरिकै तिनकर्मोंकूंहींकरतेभयेहैं तिसप्रकार तूंअर्जुनभीतिनकर्मोंकूंहींकर ॥ याअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरेहैं ॥

(मू० श्लो०) एवंज्ञात्वाकृतंकर्मपूर्वैरपिमुमुक्षुभिः ॥ कुरुकर्मैवतस्मात्त्वंपूर्वैः पूर्वतरंकृतम् ॥ १५॥ एवं । ज्ञात्वा । कृतं । कर्म । पूर्वैः। अपि । मुमुक्षुभिः । कुरु । कर्म । एव । तस्मात् । त्वं । पूर्वैः । पूर्वतरं । कृतं ॥१५॥(इतिपदच्छेदः)॥ हेअर्जुन इसप्रकार आत्माकूं अकर्त्ताअभोक्ता जानिकरिकैपूर्वले मुमुक्षुवोंनैं भी कर्महीं करयाहै तथा तिसतैंभीपूर्व मुमुक्षुवोंनैं युगांतरविषे सोकर्महीं करया है तिसकारणतैं तूंअर्जुनभी ताकर्मकूं हीं कर ॥ १५ ॥ (इतिपदार्थः)

॥ टीका ॥ हेअर्जुन इसद्वापरयुगविषे पूर्व मोक्षकीइच्छावाले जे ययातिराजा यदुराजा इत्यादिकराजेहोतेभयेहैं ॥ तेराजेभी इसआत्मादेवकूं अकर्त्ताअभोक्ता जानिकरि आपणेवर्णआश्रमकेकर्मोंकूंहीं करतेभयेहैं ॥ तिनकर्मोंकापरित्यागकरिकै तेराजे तूर्ष्णीभावकूं तथासंन्यासकूं नहींकरतेभयेहैं ॥ तिसकारणतैं तूं अर्जुनभी आत्माकूं

अकर्त्ताअभोक्ता जानिकरिकै तिनकर्मोंकूंहींकर ॥ तूष्णींभावकूं तथासंन्यासकूं तूं मतकर ॥ हेअर्जुन जोकदाचित् तूं तत्त्ववेत्तानहींहोवै ॥ तौं तूं आपणेअंतःकरणकीशुद्धिवासतै तिनकर्मोंकूंकर ॥ और जोकदाचित् तूं तत्त्ववेत्ताहोवै ॥ तौं तूं लोकसंग्रहकेवासतै तिनकर्मोंकूं कर ॥ सर्वप्रकारतैं तुमारेकूं तेकर्म करणेयोग्यहैं ॥ शंका ॥ हेभगवन् इसद्वापरयुगविषे पूर्व ययातियदुआदिकराजे कर्मोकूंकरतेभयेहैं याप्रकारकावचन आपनैं कथनकरया ॥ ताकरिकैयहजान्याजावैहै ॥ केवल इसद्वापरयुगविषेहीं तिनकर्मोंकेकरणेका अधिकारहै ॥ अन्यत्रेतादिकयुगोंविषे तिनकर्मोंकेकरणेका अधिकारनहींहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहेहैं (पूर्वैःपूर्वतरंकृतमिति) हेअर्जुन केवल इसीद्वापरयुगविषेहीं पूर्व ययातिराजा यदुराजा आदिकराजे तिनकर्मोंकूंनहींकरतेभयेहैं ॥ किंतु इसयुगतैंपूर्व त्रेतादिकयुगोंविषे जनकादिकराजेभी इसआत्मादेवकूं अकर्त्ताअभोक्ता जानिकरिकै तिनकर्मोंकूंनहींकरतेभयेहैं ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ इसयुगविषे तथादूसरेयुगोंविषे मुमुक्षुराजे तथातत्त्ववेत्ताराजे अंतःकरणकीशुद्धिवासतै अथवा लोकसंग्रहकेवासतै आपणेवर्णआश्रमकेकर्मोंकूं अवश्यकरिकेकरतेभयेहैं ॥ यातैं तिनराजावोंकीन्यांईं तैंअर्जुनकूंभी आपणेवर्णआश्रमकेकर्म अवश्यकरिकैकरणेचाहिये इति ॥ १५ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् क्या तिनकर्मोंविषे कोईसंशयभीहै ॥ जिसकरिकै आप (पूर्वैःपूर्वतरंकृतं) यावचनकरिकै तिसकर्मकूं अत्यंतदृढ करतेहो ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए ॥ श्रीभगवान् ताकर्मविषे संशयहै याकारणतैंहीं तिसकर्मविषे बुद्धिमान्पुरुषभी मोहकूंप्राप्तहोवैहैं याप्रकारकाउत्तरकहेहैं ॥

(मू० श्लो०) किंकर्मकिमकर्मेतिकवयोप्यत्रमोहिताः ॥ तत्तेकर्मप्रवक्ष्यामियज्ज्ञात्वामोक्ष्यसेऽशुभात् ॥ १६ ॥ किं । कर्म । किं । अकर्म । इति । कवयः । अपि । अत्र । मोहिताः । तत् । ते । कर्म । प्रवक्ष्यामि । यत् । ज्ञात्वा । मोक्ष्यसे । अशुभात् ॥ १६ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन कर्म क्याहै तथा अकर्म क्याहै इस अर्थविषे बुद्धिमान्पुरुष भी मोहकूंप्राप्तहोतेभयेहैं तिसकारण तैं तुमारेतांईं तौंकर्मअकर्मकूं मैं कहताहूं जिसकूं जानिकरिकै तूं संसारतैं मुक्तहोवैगा ॥ १६ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन नौकाविषेस्थितजोपुरुषहै ॥ तिसपुरुषकूं तीरविषेस्थितगमनरूपक्रियातैंरहितवृक्षोंविषेभी गमनरूपक्रियाकाभ्रम देखणेविषेआवैहै ॥ तथागमनरूपक्रियावालेपुरुषोंविषेभी दूरतैं तागमनक्रियाकेअभावकाभ्रम देखणेविषेआवैहै ॥ यातैं वास्तवतैं सोकर्म क्यावस्तुहै ॥ तथा वास्तवतैं सोअकर्म क्यावस्तुहै ॥ इसप्रकारकाअर्थविषे बुद्धिमान्पुरुषभी मोहकूंप्राप्तहोतेभयेहैं ॥ अर्थात् ताकर्मअकर्मकेस्वरूपनिर्णयकरणेविषे असमर्थहोतेभयेहैं इति ॥ और किसीटीकाविषेतौं (किंकर्मकिमकर्मेतिकवयोप्यत्रमोहिताः) याअर्धश्लोकका यहअर्थ कथनकरयाहै ॥ श्रुतिस्मृतिरूपशास्त्रकरिकै जोअर्थ विधानकरयाहोवै ताअर्थकानाम कर्महै ॥

और ताश्रुतिस्मृतिरूपशास्त्रकरिकै जोअर्थ नहींविधानकऱ्याहोवै ताअर्थकानाम अकर्महै ॥ इसप्रकार केईकपंडितपुरुष ताकर्मअकर्मकास्वरूपकथनकरैहैं ॥ और दूसरेकेईकपंडितजनतौं यहकहैहैं ॥ श्रुतिस्मृतिरूपशास्त्रकरिकै जोअर्थ विधानकऱ्याहोवै ताअर्थकानाम कर्महै ॥ और तिनकर्मोंकेसंन्यासकानाम अकर्महै ॥ और दूसरेकेईकशास्त्रवेत्तापुरुषतौं यहकहैहैं ॥ गमनआगमनादिकक्रियावोंकानाम कर्महै ॥ और तिनगमनादिकक्रियावोंतैंरहितहोइकै तूर्ष्णींस्थितहोणेकानाम अकर्महै ॥ इसप्रकार ताकर्मअकर्मकेस्वरूपविषे बहुतप्रकारकाविवाद देखणेविषेआवताहै ॥ यातै कर्मशब्दकावाच्यार्थ कौंनहै तथाअकर्मशब्दकावाच्यार्थ कौंनहै इसप्रकारके अर्थविषेशास्त्रवेत्तापुरुषभी मोहकूंप्राप्तहोतेभयेहैं ॥ अर्थात् ताकर्मअकर्मकेवास्तवस्वरूपकेनिर्णयकरणेविषे असमर्थहोतेभयेहैं इति ॥ तिसकारणतैं मैंकृष्णभगवान् तैंअर्जुनकेप्रति ताकर्मकेस्वरूपकूं तथाअकर्मकेस्वरूपकूं संशयकीनिवृत्तिपूर्वक कथनकरताहूं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ताकर्मअकर्मकेजाणणेकारिकै किस फलकीप्राप्तिहोवैहै ॥ ऐसीअर्जुनकेशंकाकेहुए श्रीभगवान् ताकाफल कथनकरैहै (यज्ज्ञात्वाइति) हेअर्जुन जिसकर्मकेस्वरूपकूं तथाअकर्मकेस्वरूपकूं यथार्थ जानिकै तूं इससंसार तैंमुक्तहोवैंगा ॥ अर्थात् इससंसारतैंमुक्तिहीं ताकर्मअकर्मज्ञानकाफलहै ॥ यद्यपि (तत्तेकर्मप्रवक्ष्यामि) यावचनविषे केवल कर्मफलहींहैतथापि तत्ते इसपदतैंआगे अकारनिकासिकै अकर्मकाभी ग्रहणहोइसकैहै ॥ इति ॥ १६ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् ताकर्मअकर्मकास्वरूप सर्वलोकविषेप्रसिद्धहींहै ॥ यातैं मैंअर्जुनभी ताकर्मअकर्मकेस्वरूपकूं जानताहींहूं ॥ तहां देहइंद्रियादिकोंकाजो व्यापारहै ताव्यापारकानाम कर्महै ॥ और सर्वव्यापारतैंरहितहोइकै तूर्ष्णींस्थितहोणेकानाम अकर्महै ॥ ऐसे सर्वलोकोंविषेप्रसिद्ध कर्मअकर्मकेस्वरूपविषे आपनैं दूसराक्याकहणाहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहैहैं ॥

(मू० श्लो०)कर्मणोह्यपिबोद्धव्यंबोद्धव्यंचविकर्मणः॥अकर्मणश्चबोद्धव्यंगहनाकर्मणोगतिः ॥१७॥ कर्मणः । हि । अपि । बोद्धव्यं । बोद्धव्यं । च । विकर्मणः । अकर्मणः । च । बोद्धव्यं । गहना । कर्मणः । गतिः ॥१७॥ इतिपद० ॥ हेअर्जुन शास्त्रविहितकर्मका भी तत्त्व जानणेयोग्यहै तथा निषिद्धकर्मकाभी तत्त्व जानणेयोग्यहै तथा अकर्मकाभी तत्त्व जानणेयोग्यहै जिसकारणतैं कर्मविकर्म अकर्मका तत्त्व अत्यंतदुर्बोध्यहै ॥ १७ ॥ (इतिपदार्थः)

॥ टीका ॥ हेअर्जुन श्रुतिस्मृतिरूपशास्त्रनैं विधानकऱ्याजो अर्थहै ताकानामकर्महै ॥ ताकर्मकाभी वास्तवस्वरूप तुमारेकूं अवश्यकरिकै जानणेयोग्यहै ॥ जिसकारणतैं ताकर्मकेस्वरूपजानेतैंविना ताकर्मकाअनुष्ठान होइसकैनहीं ॥ और श्रुतिस्मृतिरूपशास्त्रनैं निषेधकऱ्याजो अर्थहै ताकानाम विकर्महै ॥ ताकर्मकाभी वास्तवस्वरूप तुमारेकूं अवश्यकरिकैजानणेयोग्यहै ॥ जिसकारणतैं तानिषिद्धकर्मकेजानेतैंविना तानिषिद्धकर्मतैंनिवृत्तहूआजावैनहीं ॥ औरसर्वव्यापार

तेंरहितहोइके जोतूष्णींस्थितहोणाहै ताकानाम अकर्महै ॥ ताअकर्मकाभी वास्तवस्वरूप तुमारेकूं अवश्यकरिकै जानणेयोग्यहै ॥ जिसकारणतें कर्म विकर्म अकर्म यातीनोंकावास्तवस्वरूप अत्यंत दुर्विज्ञेयहै ॥ ईहां (गहनाकर्मणोगतिः) यावचनविषेस्थितजो कर्मशब्दहै ॥ सोकर्मशब्दविकर्म अकर्म यादोनोंकाभीउपलक्षकहै॥अर्थात्ताकर्मशब्दकरिकै कर्म विकर्म अकर्म यातीनोंकाग्रहणकरणा ॥ और (कर्मणः विकर्मणः अकर्मणः) यातीनोंपदोंतेंउत्तर तत्त्वं इसपदका अध्याहारकरणा ॥ तथा (बोद्धव्यं) यातीनोंपदोंतेंउत्तर अस्ति यापदका अध्याहारकरणा ॥ ताकरिकै कर्मणस्तत्त्वबोद्धव्यंअस्ति इसप्रकारकेतीनवाक्यसिद्धहोवेहैं ॥ तहां कर्मोंकाभीवास्तवस्वरूप तुमारेकूं जानणेयोग्यहै इसप्रकारका तिनवाक्योंकाअर्थसिद्धहोवैहै ॥ १७ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् कर्म विकर्म अकर्म या तीनोंका जोवास्तवस्वरूप हमारेकूं अवश्यकरिकै जानणेयोग्यहै ॥ सो कर्मादि तीनोंकावास्तवस्वरूप किसप्रकारकाहै ॥ ऐसी अर्जुनकीशंकाके हुए ॥ श्रीभगवान् तिनकर्मादिकोंकेवास्तवस्वरूपकूं कथनकरेहैं ॥

(मू० श्लो०) कर्मण्यकर्मयःपश्येदकर्मणिचकर्मयः ॥ सबुद्धिमान्मनुष्येषुसयुक्तःकृत्स्नकर्मकृत ॥ १८ ॥ कर्मणि । अकर्म । यः । पश्येत् । अकर्मणि । च । कर्म । यः । सः । बुद्धिमान् । मनुष्येषु । सः । युक्तः । कृत्स्नकर्मकृत ॥ १८ ॥ इतिपद० ॥ हेअर्जुन जोपुरुष कर्मविषे अकर्मकूं देखेहै तथा जोपुरुष अकर्मविषे कर्मकूं देखेहै सोपुरुषहीं सर्वमनुष्योंविषे बुद्धिमान्है तथा सोपुरुषही योगयुक्त है तथा सर्वकर्मोंकिकरणेहाराहै ॥ १८ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन देह इंद्रिय बुद्धि आदिकोंका जो श्रुतिस्मृतिरूपशास्त्रकरिकैविहित व्यापारहै तथाशास्त्रकरिकै निषिद्ध व्यापारहै ताव्यापारकानाम कर्महै॥ सोकर्म वास्तवतेंतौ तिनदेहइंद्रियादिकोंविषेहीरहेहै ॥ असंगआत्माविषे सोकर्म रहैनहीं ॥ तौभी सोव्यापाररूपकर्म अहंकरोमि इसधर्माध्यासरूपप्रतीतिके बलतै आत्माविषे आरोपणकऱ्याजावैहै ॥ जैसे नदीकेतीरविषेस्थितजेवृक्षहैं ॥ तिनवृक्षोंविषे यद्यपि वास्तवतें गमनरूपक्रियाहैनहीं ॥ तथापि नौकाविषेस्थितपुरुष तानौकाकेचलने करिकै तिनवृक्षोंविषे गमनरूपक्रियाकाआरोपणकरेहै ॥ तैसे शास्त्रविचारतें रहितमूढपुरुष अक्रियआत्माविषे तादेहइंद्रियादिकोंकेव्यापाररूपकर्मका आरोपणकरेहैं ॥ ताआत्माविषेआरोपितकर्मविषे जोपुरुष आत्माकेअकर्त्तास्वरूपकाविचारकरिकै वास्तवतें कर्मके अभावकूंही देखेहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे नौकाविषेस्थितपुरुषोंनें यद्यपि तीरस्थवृक्षोंविषे गमनरूपकर्मकाआरोपणकरीताहै ॥ तथापि वास्तवते तिनवृक्षोंविषे तागमनरूपकर्मकाअभावहीहै ॥ तैसे मूढपुरुषोंनें यद्यपि अक्रियआत्माविषे तादेहादिकोंकेव्यापाररूपकर्मका आरोपणकरीताहै ॥ तथापि ताअक्रियआत्माविषे वास्तवते तिनकर्मोंकाअभावहीहै ॥ इसप्रकार जोपुरुष कर्मविषे अकर्मकूंदेखेहैं इति ॥ और सत्वादितीनगुणोंवालीमायाकापरिणामहोणेतैं

सर्वकालविषे ताव्यापाररूपकर्मवालेजेदेहइंद्रियादिकहैं ॥ तिनदेहइंद्रियादिकोंविषे वास्तवतैं ताकर्मकाअभाव रहे नहीं ॥ किंतु तिनदेहइंद्रियादिकोंविषेताकर्मके अभावका आरोपणहोवैहै ॥ जैसे चक्षुकेसंबंधवाले दूरदेशविषेस्थित जेगमनरूपक्रियावालेपुरुषहैं ॥ तिनपुरुषोंका यद्यपि वास्तवतैं तागमनरूपक्रियाकाअभाव हैनहीं तथापि दूरत्वदोषकेवशतैं तिनपुरुषोविषें तागमनरूपक्रियाकेअभावका आरोपणहोवैहै तथा जैसे आकाशविषेस्थित जेचंद्रतारकादिकनक्षत्रहैं ॥ तिननक्षत्रों विषे यद्यपि वास्तवतैं गमनरूपक्रियाकाअभावहैनहीं ॥ किंतु सर्वदा तिनोंविषे गमनरूपक्रियाहै ॥ तथापि दूरत्व दोषकेवशतैं तिननक्षत्रों विषे तागमनक्रियाकेअभावका आरोपणहोवैहैं तैसे सर्वदा व्यापाररूपकर्मवाले जेदेहइंद्रियादिकहैं ॥ तिनदेहइंद्रियादिकोंविषे वास्तवतैं ताकर्मकाअभावहैंनहीं ॥ किंतु मैंतूष्णींहूआ किंचित्मात्रभीकर्म नहींकरताहूं याप्रकारकीअध्यासरूपप्रतीतिकेबलतैं तिनदेहइंद्रियादिकोंविषे ताकर्मकेअभावका आरोपणकरयाजावैहै ॥ ऐसे देहइंद्रियादिकोंविषे आरोपणकरयाजो व्यापारकीउपरामतारूप अकर्महै ताअकर्मविषे जोपुरुष तिनदेहइंद्रियादिकोंके सर्वदा व्यापारवत्स्वरूप वास्तवस्वरूपकाविचारकरिकै वास्तवतैं कर्मकूंदेखैहै ॥ अर्थात् ताआरोपित अकर्मविषे कर्मनिवृत्तिहैनामजिसका ऐसाजोप्रयत्नरूपव्यापारहै जिसकूंनिग्रहभीकहेहैं ताप्रयत्नरूपकर्मकूं जोपुरुषदेखैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे चक्षुकेसंबंधवाले दूरदेशविषेस्थित जे गमनरूपक्रियावालेपुरुषहैं तथा आकाशविषेस्थित जे गमनरूपक्रियावालेनक्षत्रहैं ॥ तिनपुरुषोंविषे तथानक्षत्रोंविषे यद्यपि दूरत्वदोषतैंतागमनरूपक्रियाकाअभाव प्रतीतहोवैहै ॥ तथापि तेपुरुष तथानक्षत्र वास्तवतैं तागमनरूपक्रियावालेहींहैं ॥ तैसेतूष्णींस्थितहुआ मैं किंचित्मात्रभीनहींकरताहूं याप्रकारकी अध्यासरूपप्रतीतिके बलतैं यद्यपि तिनदेहइंद्रियादिकोंविषे ताव्यापाररूपकर्मकाअभाव प्रतीतहोवैहै ॥ तथापि तेदेहइंद्रियादिक वास्तवतैं ताकर्मवालेहींहैं ॥ और उदासीनअवस्थाविषेभी मैं उदासीनहुआस्थितथा इसप्रकारकाअभिमानहीं एककर्महै इति ॥ इसप्रकार कर्मविषेअकर्मकूं देखणेहारा तथा अकर्मविषे कर्मकूं देखणेहारा जोपरमार्थदर्शीपुरुषहै ॥ सोपुरुषहीं सर्वमनुष्योंविषे बुद्धिमान्है तथासोपुरुषहीं योगयुक्तहै तथासोपुरुषहीं सर्वकर्मोंकेकरणेहाराहै ॥ ईहां बुद्धिमत्त्व योगयुक्तत्व कृत्स्नकर्मकृत्त्वयातीनधर्मोंकरिकै श्रीभगवान्नैं तापरमार्थदर्शीपुरुषकीस्तुति कथनकरीहै ॥ तहां (कर्मण्यकर्मयःपश्येत्) याप्रथमपादकरिकै श्रीभग वान्नैं कर्मका तथाविकर्मका वास्तवस्वरूप दिखाया ॥ जिसकारणतैं कर्मशब्द विहितकर्म तथानिषिद्धकर्म दोनोंकाहीं वाचकहै ॥ और (अकर्मणिचकर्मयः) याद्वितियपादकरिकै श्रीभगवान्नैं अकर्मका वास्तवस्वरूप दिखायाइति ॥ यातैं हेअर्जुन जोतूं यहमानताहैं ॥ यहसर्वकर्म बंधकेहेतुहै ॥ यातैं तेकर्म हमारेकूं करणे योग्यनहींहैं ॥ किंतु हमारेकूं तूष्णींभावतैंहीं सुखपूर्वकस्थितहोणायोग्यहै ॥ सोयहतुमारामानणा मिथ्याहींहै ॥ काहेतैं मैं कर्मोंकाकर्त्ताहूं याप्रकारका

कर्तृत्वअभिमान जबपर्यंत इसपुरुषकूं होवैहै ॥ तबपर्यंतहीं तेविहितकर्म तथानिषिद्धकर्म इसपुरुषकूं बंधनकीप्राप्तिकरेहैं ताकर्तृत्वअभिमानतैंरहितहोइके केवल देहइंद्रियादिकोंकेधर्ममानिकेकरचेहुए तेकर्म इसपुरुषकूं बंधनकीप्राप्तिकरतेनहीं ॥ इसअर्थकूं (नमांकर्माणिलिंपंति) इत्यादिकवचनोंकरिकै पूर्वहम कथनकरि आयेहैं ॥ हेअर्जुन ताकर्तृत्वअभिमानकेविद्यमानहुए मैंतूष्णींहुआस्थितथा याप्रकारका उदासीनताकाअभिमानमात्ररूपजोकर्महै सोकर्मभी इसपुरुषकेबंधकाहींहेतु होवैहै ॥ जिसकारणतैं इसकर्तृत्वअभिमानीपुरुषनैंवस्तुका वास्तवस्वरूप जान्यानहीं ॥ यातैं हेअर्जुन कर्म विकर्म अकर्म यातीनोंके पूर्वउक्त वास्तवस्वरूपकूंजानि करिके तथा विकर्म अकर्म यादोनोंकापरित्यागकरिकै तथा कर्तृत्वअभिमानतैंरहितहोइके तथाफलकीइच्छातैंरहितहोइकै तूं शास्त्रविहितशुभकर्मोंकूंहींकरइति ॥ अथवा ॥ इसश्लोकका यहदूसराअर्थ करणा प्रत्यक्षादिप्रमाणजन्यज्ञानकाजोविषयहोवै ताकानामकर्महै ॥ ऐसा यहदृश्यरूप तथाजडरूप प्रपंचहै ॥ और जोवस्तु प्रत्यक्षादिप्रमाणजन्यज्ञानका विषयनहींहोवै तावस्तुकानाम अकर्महै ॥ ऐसा स्वप्रकाशरूप तथासर्वभ्रमकाअधिष्ठानरूप चैतन्यहै ॥ तहां जोपुरुष ताजगतरूपकर्म विषे आपणेसत्तास्फुरणरूपकारिकैअनुस्यूत स्वप्रकाशअधिष्ठानचैतन्यरूपअकर्मकूं परमार्थदृष्टिकरिकैदेखैहै ॥ तथा जोपुरुष तास्वप्रकाशअधिष्ठानचैतन्यरूपअकर्म विषे इसमायामयदृश्यप्रपंचरूपकर्मकूं कल्पितदेखैहै ॥ अर्थात् द्रष्टाचैतन्यका तथादृश्यप्रपंचका कोईभीसंबंधसंभवतानहीं यातैं यहदृश्यप्रपंच ताद्रष्टाचैतन्यविषे वास्तवतैंहैनहीं याप्रकार जोपुरुष देखैहै ॥ तहांश्रुति (यस्तुसर्वाणिभूतानिआत्मन्येवानुपश्यति ॥ सर्वभूतेषुचात्मानंततोनविजुगुप्सते ॥) अर्थयह ॥ जोपुरुष सर्व अधिष्ठानआत्माविषे कल्पितदेखैहै ॥ तथा तिनसर्वभूतोंविषे सत्तास्फुरणरूपकरिकै आत्माकूं अनुस्यूतदेखैहैं ॥ सोपरमार्थदर्शीपुरुषहीं सर्वतैंश्रेष्ठहैइति ॥ इसप्रकार चैतन्यआत्माका तथादृश्यजगतका परस्पर अध्यासहुएभी जोपुरुष वास्तवतैं शुद्ध चैतन्यकूंहींदेखैहै ॥ सोविद्वान् पुरुषहीं सर्वमनुष्योंकेमध्यविषे अत्यंतबुद्धिमान् है ॥ ताविद्वान्पुरुषतैंभिन्न कोईभीपुरुष बुद्धिमान्नहींहै ॥ काहेतैं इसलोकविषेभी यथावत्वस्तुकेस्वरूपकूंजानणेहारापुरुषहीं बुद्धिमान्कह्याजावैहै ॥ अयथावत् वस्तुकेस्वरूपकूंजानणेहारापुरुष बुद्धिमान्कह्याजावैनहीं ॥ जैसे रज्जुकूं रज्जुरूपकरिकैजानणेहारापुरुष बुद्धिमान् कह्याजावैहै और तिसीरज्जुकूं सर्परूपकरिकैजान णेहारापुरुष बुद्धिमान् कह्याजावैनहीं ॥ तैसे सर्वकेअधिष्ठानपुरुषशुद्धचैतन्यकूं देखणेहारापुरुषहीं परमार्थदर्शीहोणेतैं बुद्धिमान्है ॥ और अनात्मप्रपंचकूंदेखणेहारा अज्ञानीपुरुषतौं मिथ्यादर्शीहोणेतैं बुद्धिमान्होवैनहीं ॥ और सोपरमार्थदर्शीपुरुषहीं ताबुद्धिकेसाधनरूपयोगकरिकैयुक्तहै ॥ अर्थात् अंतःकरणकीशुद्धिकरिकै एकाग्रचित्तवालाहै ॥ इसीकारणतैं सोईहींपुरुष ताअंतःकरणकीशुद्धिकेसाधनरूप सर्वकर्मोंका कर्ताहै ॥ इसप्रकार बुद्धिमत्त्व योगयुक्तत्त्व कृत्स्नकर्मकृत्त्व यावास्त वतीनधर्मोंकरिकै सोपरमार्थदर्शीपुरुष स्तुतिकरयाजावैहै ॥ हेअर्जुन जिसकारणतैं सोपरमार्थदर्शीपुरुष इसप्रकारके महान्पणेकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तिसकारणतैं तूंअर्जु

नभी परमार्थदर्शी होउ ॥ तापरमार्थदर्शीपणेकरिकैहीं तुमारेंविषे सोसर्वकर्मकाकर्त्तापणा सिद्धहोवैंगा ॥ यातैं जिसकर्मअकर्मकेस्वरूपकूंजानिकै तूं इससंसारतैंमुक्त होवैंगा यहजोपूर्व कथनकरयाथा तथा कर्म विकर्म अकर्म यातिनोंका वास्तवस्वरूप तुमारेकूं जानणेयोग्यहै यहजोपूर्व कथनकऱ्याथा ॥ तथा सोईहींपुरुष बुद्धिमान्हे इत्यादिकजोस्तुति कथनकरीहै ॥ यहसर्ववार्त्ता परमार्थवस्तुकेदर्शनहुएहीं संभवहोइसकेहै ॥ अन्यवस्तुकेदर्शनतैं संभवैनहीं ॥ काहेतैं ताचैतन्यरूपपरमार्थवस्तुतैंभिन्न जितनैंकि अनात्मपदार्थहैं ॥ तिनअनात्मपदार्थोंकेज्ञानतैं अशुभसंसारतैंमुक्ति संभवतीनहीं उलटा बंधकीहींप्राप्तिहोवैहै ॥ तथा तापरमार्थवस्तुतैंभिन्न सर्वपदार्थअतत्त्वरूपहैं ॥ यातैं तेअतत्त्वरूपपदार्थ इसअधिकारीपुरुषकूं जानणेयोग्यभीनहींहै ॥ तथा तिनअनात्मपदार्थोंकेज्ञानहुए इसपुरुषविषे सोबुद्धिमान्पणाभी संभवतानहीं ॥ यातैं परमार्थदर्शीपुरुषोंका यहपूर्वउक्तव्याख्यान युक्तहैइति ॥ और किसीटीकाविषेतौं (कर्मण्यकर्मयः पश्येत्) याश्लोकका यहअर्थ कथनकऱ्याहै ॥ परमेश्वरकीप्रसन्नतावासतै करयेजे अग्निहोत्रसंध्याउपासनादिकनित्यकर्महैं ॥ तेनित्यकर्मबंधकेहेतुहोवैनहीं ॥ यातैं तानित्यकर्मविषे जोपुरुष यहनित्यकर्म बंधकाअहेतुहोणेतैं अकर्मरूपहींहै याप्रकारदेखेहै ॥ और तिननित्यकर्मोंका जोनहींकरणाहै ताकानाम अकर्महै ॥ सोनित्यकर्मोंकानहींकरणारूपअकर्म इसअधिकारीपुरुषके प्रत्यवायकाहेतुहोवैहै ॥ यातैं ताअकर्मविषे जोपुरुष यहअकर्म प्रत्यवायकाहेतुहोणेतैं कर्मरूपहींहै याप्रकारदेखेहै ॥ सोपुरुषहीं सर्वमनुष्योंविषे बुद्धिमान्है ॥ तथा योगयुक्तहै ॥ तथा सर्व कर्मोंकाकर्त्ताइति ॥ सोयहअर्थ असंगतहै ॥ काहेतैं तानित्यकर्मविषे यहअकर्म है याप्रकारकाजो ज्ञानहे ॥ सोज्ञानरज्जुविषे सर्पज्ञानकीन्यांई भ्रांतिरूपहींहै ॥ यातैं ताभ्रांतिज्ञानविषे (यज्ज्ञात्वामोक्ष्यसेऽशुभात्) यावचनकरिकैकथनकरीजा अशुभसंसारतैंमोक्षकी हेतुताहै ॥ साहेतुता संभवैनहीं ॥ किंतु सोज्ञान मिथ्यारूपहोणेतैं आपही अशुभरूपहै ॥ तथा सोभ्रांतिज्ञान (बोद्धव्यं) यावचनकरिकैकथनकरयाजानणेयोग्यतत्त्वरूपभीनहींहै ॥ तथा ताभ्रांतिज्ञानकेप्राप्तहुए बुद्धिमत्त्व योगयुक्तत्व इत्यादिकस्तुतिभी संभवतीनहीं ॥ उलटा सो भ्रांतिज्ञानवालापुरुष मिथ्यादर्शीहीं कह्याजावैहै ॥ और तानित्यकर्मोंकाजोअनुष्ठानहे ॥ सोअनुष्ठानतौं स्वरूपतैंहीं अंतःकरणकीशुद्धिद्वारा आत्मज्ञानविषे उपयोगीहै ॥ तानित्यकर्मविषे अकर्मबुद्धितौं किसीविषेभी उपयोगीहैनहीं ॥ काहेतैं जो अर्थ शास्त्रकरिकैविवितहोवैहै ॥ सोईहींअर्थ अंतःकरणकीशुद्धिविषे तथाज्ञानविषे उपयोगीहोवैहै ॥ जैसे वाक् मन इत्यादिकोंविषे शास्त्रनै ब्रह्मदृष्टि विधानकरीहै ॥ यातैं तादृष्टिका अंतःकरणकीशुद्धिद्वारा ज्ञानविषेउपयोगहै ॥ तैसे नित्यकर्म अकर्मरूपहै याप्रकारकीदृष्टि किसीशास्त्रनैं विधानकरीनहीं ॥ यातैं तादृष्टिका किसीभीअर्थविषे उपयोगसंभवैनहीं ॥ तहां (कर्मण्यकर्मयः पश्येत्) यहगीताकावचनहीं ताकर्मविषे अकर्मदृष्टिका विधानकरेहै ॥ याप्रकारकावचन जोकोईकथनकरै ॥ सोभी संभवतानहीं ॥ काहेतैं इसगीतावचनका

इसप्रकारकाअर्थ मानणेविषे पूर्व (यज्ज्ञात्वामोक्ष्यसेऽशुभात्) इत्यादिक उपक्रमादिकवचनोंकाविरोध कथनकरिआयेहैं ॥ इसप्रकारका नित्यकर्मोंकानहीं करणारूप अकर्मभी स्वरूपतैंहीं तानित्यकर्मतैंविरुद्धकर्मकीलक्षकताकरिकै उपयोगीहोवैहे ॥ तिसअकर्मविषे कर्मदृष्टि किसीभीअर्थविषेउपयोगीहोवैनहीं ॥ तथा तानित्यकर्मकेनहींकरणेतैं प्रत्यवायभी होवैनहीं ॥ काहेतैं सोनित्यकर्मकानहींकरणा अभावरूपहै ॥ और प्रत्यवाय भावरूपहै ॥ ताअभावतैं भाव कीउत्पत्ति संभवतीनहीं ॥ जोकदाचित् अभावतैंभी भावकार्यकीउत्पत्तिहोतीहोवै ॥ तौं अभावतौं सर्वदेशकालविषे विद्यमानहै ॥ यातैं सर्वदेशविषे तथा सर्वकालविषे सर्वकार्योंकीउत्पत्तिहोणीचाहिये ॥ सोऐसादेखणेविषेआवतानहीं ॥ यातैं अभावतैंभावकीउत्पत्तिमानणी अत्यंतविरुद्धहै ॥ किंवा भावरूपअर्थहीं धर्मअधर्मरूपअपूर्वका जनकहोवैहे ॥ अभावरूपअर्थ ताअपूर्वकाजनकहोवैनहीं ॥ यातैं नित्यकर्मकाअभाव ताप्रत्यवायफलजनकहैनहीं ॥ किंतु तानित्यक र्मकेअनुष्ठानकालविषे जो तानित्यकर्मकाविरोधी शयनउपवेशनादि कर्महैं ॥ सो नित्यकर्मकेअकरणउपलक्षितभावरूपकर्महीं ताप्रत्यवायकाहेतुहै ॥ यह सर्ववैदिकपुरुषोंका सिद्धांतहै ॥ यातैं मिथ्याज्ञानकेनिवृत्तिप्रसंगविषे मिथ्याज्ञानकाहींव्याख्यानकरणा अत्यंतविरुद्धहै ॥ और जोकोईवादी यहकहै ॥ सोभग वानकावचन नित्यकर्मोंकेअनुष्ठानपरहै ॥ सो यहकहणाभी संभवतानहीं ॥ काहेतैं यहअधिकारीपुरुष नित्यकर्मोंकूंकरै याप्रकारकेअर्थकूं (कर्मण्यक र्मयःपश्येत्) यहवचन कथनकरतानहीं ॥ ताअर्थकेबोधनकरणेवासतै जोकदाचित् श्रीभगवान् तावचनकूंकथनकरैंगे ॥ तौं श्रीभगवान्विषेहीं मिथ्या वादीपणा सिद्धहोवैगाइति ॥ और किसीटीकाविषेतौं (कर्मण्यकर्मयःपश्येत्) इसश्लोकका यहअर्थ कथनकरचाहै ॥ तहां पूर्व (कर्मणोह्यपिबोद्धव्यं) या श्लोकविषे कर्म विकर्म अकर्म यातीनोंका जापरिअवसानरूपगतिहै साअत्यंत गहनहैयातैं इसअधिकारीपुरुषकूं ताकर्मादिकोंकीगति अवश्यकरिकैजान णेयोग्यहै यहअर्थ श्रीभगवान्नैं कथनकरचाथा ॥ तिसीअर्थकाहींव्याख्यानरूप (कर्मण्यकर्मयःपश्येत्समनुष्येषुबुद्धिमान्) यहवचनहै ॥ सोदिखावेहैं ॥ (कर्मणि) यापदकरिकै कर्म अकर्म विकर्म यातीनोंका ग्रहणकरणा ॥ और (अकर्म) यापदकरिकै ताकर्म अकर्म विकर्म यातीनों तैं विपरीतभावका ग्रहणकरणा ॥ तहां जो पुरुष ताकर्मविषे अकर्मकूंदेखैहे ॥ अर्थात् कर्म तैं विपरीतभावकूं देखै है ॥ तहां कर्म अकर्म विकर्म यातीनोंविषे तिनकर्मादिकोंतैविपरीतरूपता शास्त्रप्रमाणतैं देखणेविषेआवैहे ॥ जैसे कर्मविषे श्रद्धातैंरहितजोपुरुषहै ॥ ताश्रद्धाहीन पुरुषनैं करचाजो कोईयज्ञरूपकर्महै ॥ सोयज्ञरूपकर्म फलकाअहेतुहोणे तैं करचाहूआभी नकरयेकेसमानहोवैहे ॥ यातैं सो श्रद्धाहीनपुरुषकृत यज्ञरूपकर्मविषेहीं परिअवसानकूंप्राप्तहोवैहे ॥ और दांभिकपुरुषनैं करचाहूआ सोईयज्ञरूपकर्म विकर्मविषेहीं परिअवसानकूंप्राप्तहोवैहे ॥ याअर्थकूं श्रीभगवान् आपही (अश्र

द्ययोहुतदर्थदर्शी होउ, चयते ॥ असदित्युच्यते कैर्दृनचतत्प्रेत्यनोइह) इसश्लोकविषे आगे कथनकरैंगे ॥ इसप्रकार सर्वव्यापारतैंरहित उदासीनता ॥ यद्यपि अकर्मरूपहै ॥ तथापि दुःखीपुरुषोंकीरक्षाकरणे विषेसमर्थ जोपुरुषहै ॥ सोसमर्थपुरुष ताऔदासीनताकूं अंगीकारकरिकै जो तिनदुःखीपुरुषोंकीरक्षा नहींकरेहै ॥ तौं तिससमर्थपुरुषका सोउदासीनतारूपअकर्म विकर्मविषेही परिअवसानकूंप्राप्तहोवैहै तथा पितृयज्ञादिक पंचयज्ञोंका जो आपणेआपणेविहितकालविषे नहींकरणाहै सोपंचयज्ञोंकानहींकरणा यद्यपि अकर्मरूपहै ॥ तथापि तिसकालविषे ईश्वरकेआराधनविषे अत्यंतआसक्तजोपुरुषहै तापुरुषका सोपंचयज्ञादिकोंका नहींकरणारूपअकर्मभी कर्मविषेही परिअवसानकूं प्राप्तहोवैहै ॥ यहवार्ता (सर्वधर्मान्परित्यज्यमामेकंशरणंव्रज) याश्लोकविषे श्रीभगवान्नैं आपही कथन करीहै ॥ और नित्यकर्मकेपरित्यागतैं जो पापकीप्राप्ति कथनकरीहै ॥ सोभी तानित्यकर्मकेकरणे कालविषे शास्त्रनिषिद्धलौकिकव्यवहारकेकरणेतैंहीं पापकी प्राप्ति कथनकरीहै ॥ परंतु ताकालविषे ईश्वरकेआराधनविषेआसक्तहूआपुरुष ताप्रत्यवायकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ याकारणेतैंही पूर्व जलादिकोंकेभीतरस्थितहोइकै तपकूंकरतेहुएऋषि ताकालविषे नित्यकर्मोंकेनहींकरणेतैं प्रत्यवायकूं नहींप्राप्तहोतेभयेहैं ॥ इसप्रकार किसीपशुकी हिंसाकरणी यद्यपि विकर्मरूपहै तथापि (अग्नीषोमीयंपशुमालभेत) इसवचनतैं यज्ञविषेकरीहुई सापशुकीहिंसा कर्मविषेही परिअवसानकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और व्यर्थहींतापशुकेनष्टहुए जा सापशुकीहिंसाहै तिस हिंसातैं कोई धर्मरूपअपूर्व उत्पन्नहोवैनहीं ॥ यातैं सापशुकीहिंसा कर्मरूपभीनहींहै ॥ और किसीकानामवालेपुरुषनैं सापशुकीहिंसाकरीनहीं ॥ यातैं साहिंसा विकर्मरूपभीनहींहै ॥ किंतु परिशेषतैं करीहुईभीसापशुकीहिंसा नहींकरेकेतुल्यहोवैहै ॥ यातैं साव्यर्थहिंसा अकर्मविषेहीं परिअवसानकूंप्राप्तहोवैहै ॥ इसप्रकार चौरपुरुषकाजोछोडिदेणाहै सो यद्यपि ताचौरपुरुषकेसहवर्त्तीपुरुषोंका कर्मरूपहींहै ॥ तथापि सोचौरपुरुषकाछोडना राजाका विकर्महींहै ॥ काहेतै (स्तेनःप्रमुकोराजनिपापमार्ष्टी) इत्यादिकवचनोंविषे चौरपुरुषकाछोडना राजाकूं पापकीप्राप्तिकाहेतु कह्याहै और सोईही चौरपुरुषका छोडना निष्कामसंन्यासियोंका उपेक्षाविषयहोणेतैं अकर्मरूपहीहै ॥ इसप्रकार सत्यवचनकहणा यद्यपि कर्मरूपहै ॥ तथापि जिससत्यवचनतैं किसीप्राणीकीहिंसा होवैहै ॥ सोसत्यवचनरूपकर्मभी विकर्मविषेही परिअवसानकूं प्राप्तहोवैहै ॥ इसप्रकार मिथ्यावचनकहणा यद्यपि विकर्मरूपहै ॥ तथापि जिसमिथ्यावचनकेकहणेतैं किसीप्राणीकीरक्षाहोवैहै ॥ तामिथ्यावचनरूपविकर्मका कर्मविषेही परिअवसानहोवैहै ॥ इसप्रकार जोपुरुष शास्त्रप्रमाणतैं कर्मविषेतौं अकर्मरूपताकूं तथाविकर्मरूपताकूं देखेहै ॥ और अकर्मविषेतौं कर्मरूपताकूं तथाविकर्मरूपताकूं देखेहै ॥ और विकर्मविषेतौ कर्मरूपताकूं तथाअकर्मरूपताकूं देखेहै ॥ सो कार्यअकार्यकेविभागकूंजानणेहारापुरुष तिनकर्मादिकोंके वास्तवस्वरूपकेबोधवालाहोणेतैं बुद्धिमान् कह्याजावैहैइति ॥ और पूर्व (किंकर्मकिमकर्मेतिइस

श्लोकविषे जिस कर्मअकर्मकेस्वरूपविषे कवीपुरुषोंकूंभी मोहकीप्राप्तिकथनकरीथी ॥ तथा (यज्ज्ञात्वामोक्ष्यसेऽशुभात्) यावचनविषे जिस कर्मअकर्मकाज्ञान अशुभसंसारतैं मोक्षकाहेतु कथनकऱ्याथा ॥ ताकर्मअकर्मदोनोंकास्वरूप मैं तुमारेप्रति कथनकरताहूं ॥ याप्रकारकावचन श्रीभगवान्नैं अर्जुनकेप्रति कथनकऱ्याथा ॥ तिसीहींवचनकाव्याख्यानरूप (अकर्मणिचकर्मयःपश्येत्सयुक्तः) यहवचनहै ॥ तहां इसवचनविषेस्थितजो चकारहै ॥ सोचकार कर्मविषेअकर्मदर्शन तथा अकर्मविषेकर्मदर्शन यादोनोंदर्शनोंके समुच्चयकरावणेवासतैंहै ॥ ताकरिकैयहअर्थ सिद्धहोवैहै ॥ जोपुरुष बुद्धिमान्है तथायुक्तहै ॥ सोईहींपुरुष कृत्स्नकर्मकृत्है ॥ और जोपुरुष केवल बुद्धिमान्हींहै युक्तनहींहै ॥ सोपुरुषभी कृत्स्नकर्मकृत नहींहै ॥ और जोपुरुष केवल युक्तहींहै बुद्धिमान्नहींहै ॥ सोपुरुषभी कृत्स्नकर्मकृत् नहींहै ॥ इसीअर्थकूं अब स्पष्टकरिकैदिखावैहैं ॥ जोपुरुष अकर्मविषे कर्मकूंदेखेहै ॥ सोपुरुष युक्त कह्याजावैहै ॥ तहां स्पंदतैंरहितजो कूटस्थआत्माहै ताका नाम अकर्महै ॥ और स्पंदसहित जोआकाशादिकबाह्यप्रपंचहै तथामनबुद्धि आदिकजो अंतरप्रपंचहै ॥ तादोनोंप्रकारकेप्रपंचकानाम कर्महै ॥ ताकूटस्थवस्तुरूप अकर्मविषे ताप्रपंचरूपकर्मकूं आधारआधेयभावकरिकै अथवा उपादानउपादेयभावकरिकै अथवा अधिष्ठानअध्यस्तभावकरिकै देखतेहुए शास्त्रवेत्तापुरुष कर्मोंकूं करेहैं ॥ तहां प्रथम सांख्यशास्त्रवालातौं जैसे जपाकुसुमकीरक्तता स्फटिकविषेप्रतीतहोवैहै तैसे संघातके कर्तृत्वादिकधर्म मैंअसंगकूटस्थविषे अविवेकतैं प्रतीत होवैहैं याप्रकारकीभावनाकरताहुआ कर्मोंकूंकरेहै ॥ और दूसरा उपनिषद्शास्त्रकावेत्तापुरुषतौं जैसे सुवर्णतैंउत्पन्नहुए कुंडलकंकणादिककार्य सुवर्णरूपहींहोवैहैं तैसे ब्रह्मतैंउत्पन्नभया यहसर्वजगत्भी ब्रह्मरूपहींहै यातैं यज्ञादिककर्म तथा ताकर्मकेद्रव्यदेवतादिकसाधन तथामैंकर्मकाकर्त्ता सर्व ब्रह्मरूपहींहैं याप्रकारकीभावना करताहुआ कर्मोंकूंकरेहै ॥ यहदोनों युक्त कहेजावैहैं ॥ तहां पूर्वउक्तरीतिसैं जोपुरुष बुद्धिमान्भींहै ॥ परंतु इसप्रकारकायुक्त हैनहीं ॥ सोबुद्धिमान्अयुक्त पुरुष जिसजिसकर्मकूंकरेहै ॥ तेसर्वकर्म तिसपुरुषके असत्हींहोवैहैं ॥ यातैं तेकर्म तिसपुरुषकूं अशुभसंसारतैं मुक्तकरैनहीं ॥ तहांश्रुति (योवाएतदक्षरंगार्ग्य विदित्वाऽस्मिँल्लोकेजुहोतियजते तपस्तप्यते बहूनिवर्षसहस्राण्यंतवदेवास्यतद्भवति) अर्थयह ॥ हेगार्गी जोपुरुष इसअक्षरआत्माकूं नजानिकरिकै इसमनुष्यलोक विषे जिसजिस होमकूंकरेहै तथा जिसजिस यज्ञकूंकरेहै तथाअनेकसहस्रवर्षपर्यंत जिसजिस तपकूंकरेहै तेसर्वहोमयज्ञादिककर्म इसपुरुषकूं नाशवान्फलकीहींप्राप्ति करेहैंइति ॥ और जोपुरुष युक्ततौंहै परंतु बुद्धिमान्हैनहीं ॥ सोपुरुष नहींकरणेयोग्यकर्मोंकूंभी करेहै ॥ ताकरिकै सोपुरुष प्रत्यवायकूंहीं प्राप्तहोवैहै ॥ काहेतैं पापकेअस्पर्शकाकारण जोआत्माकाअपरोक्षज्ञानहै ॥ सोअपरोक्षज्ञान ता निर्बुद्धियुक्तपुरुषकूंहैनहीं ॥ किंतु तिसयुक्तपुरुषकूं केवलपरोक्षज्ञानहींहै ॥ इसी कर्मकूं तथापरोक्षज्ञानकूं (विद्यांचाविद्यांच) याश्रुतिनैं अविद्या विद्या यादोनोंशब्दोंतैं कथनकरिकै तिनदोनोंका समुच्चय कथनकऱ्याहैइति ॥ अथवा ॥ सो अकर्म

विषेकर्मका दर्शन दोप्रकारकाहोवैहै ॥ एकतौ परोक्षदर्शनहोवैहै ॥ दूसरा अपरोक्षदर्शनहोवैहै ॥ तहां परोक्षदर्शनवालातौं ज्ञान कर्म दोनोंकेसमुच्चयका अनुष्ठानकरताहोणेतैं बुद्धिमान् कह्याजावैहै ॥ और दूसरा अपरोक्षदर्शनभी दोप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां एकतौं उपास्यसाक्षात्काररूपहोवैहै ॥ और दूसरा तत्त्वसाक्षात्काररूपहोवैहै ॥ तहां जिसवस्तुकीउपासनाकरिये ताकानाम उपास्यहै ॥ सोउपास्य दोप्रकारकाहोवैहै ॥ एकतौं व्याकृतरूपहोवैहै ॥ और दूसरा अव्याकृतरूपहोवैहै ॥ ताउपास्यकेभेदकरिकै सोउपास्यविषयक साक्षात्कारभीदोप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां कार्यरूपसूत्रआत्माकानाम व्याकृतहै ॥ और सर्वजगतकेकारणकानाम अव्याकृतहै ॥ तहां तासूत्ररूपव्याकृतकेसाक्षात्कारवान्पुरुष देहाभिमानतैं रहितहोणेतैं योगशास्त्रविषे विदेह यानामकरिकै कह्याजावैहै ॥ और ताकारणरूपअव्याकृतकेसाक्षात्कारवान्पुरुष प्रकृतिलय यानामकरिकै कह्याजावैहै ॥ यादोनोंउपासनावोंका ॥ (अन्यदेवाहुःसंभवात्) इत्यादिकश्रुतिनैं संभव असंभव यादोनोंशब्दोंतैं कथनकरिकै समुच्चयविधानकरयाहै ताउपासनावालापुरुष युक्त यानामकरिकैकह्याजावैहै ॥ इसउपासक युक्तपुरुषकूंभी आगेबाकीकर्तव्य रहैहै ॥ यातैं यहयुक्तपुरुषभी कृत्स्नकर्मकृत् होइसकैनहीं ॥ किंतु जिसपुरुषकूं ताप्रपंचरूपकर्मकाबाधकरिकै कूटस्थआत्मारूपअकर्मका मुख्य दर्शन प्राप्तभयाहै ॥ सोतत्त्वसाक्षात्कारवान्पुरुषहीं कृतकृत्यहोणेतैं मुख्य कृत्स्नकर्मकृत् कह्याजावैहै ॥ इनसर्वोंविषे प्रथम ज्ञानकर्मकेसमुच्चयकाअनुष्ठानकरणेहारापुरुषतौं देहाभिमानीमनुष्योंविषेहीं बुद्धिमान्है ॥ यातैं अक्रांतदर्शीहोणेतैं सो पुरुष अकवीहीहै ॥ और व्याकृतउपास्यविषयक साक्षात्कारवान् तथाअव्याकृतउपास्यविषयक साक्षात्कारवान् यहमध्यकेदोनों क्रांतदर्शीहोणेतैं यद्यपि कवीहैं ॥ तथापि तत्त्ववस्तुविषे मूढहोणेतैं तेदोनों (कवयोप्यत्रमोहिताः) इसवचनकरिकैकथनकरेहैं ॥ इनदोनोंको व्यवधानकरिकै अशुभ संसारतैंमुक्तिहोवैहै ॥ और तत्वसाक्षात्कारवान् उत्तमपुरुषतौं जीवताहुआहीं ताअशुभसंसारतैं मुक्तहोवैहैं ॥ ईहां सूक्ष्मदर्शीपुरुषकानाम क्रांतदर्शीहै इति ॥ अथवा (कर्मण्यकर्मयःपश्येत्) याश्लोकका यहअर्थकरणा ॥ पूर्व (तत्तेकर्मप्रवक्ष्यामि) यावचनविषे श्रीभगवान्नैं कर्म अकर्म दोनोंकूं वक्तव्यरूपकरिकै कथनकरयाथा ॥ और (कर्मणोह्यपिबोद्धव्यं) यावचनविषे तिनदोनोंकूं बोद्धव्यरूपकरिकै कथनकरयाथा सोकर्मअकर्मकाबोध लक्षणतैंविनाहोवैनहीं ॥ यातैं इसश्लोकविषे तिनदोनोंका लक्षणकथनकरणाहीं उचितहै तहां (कर्मण्यकर्मयःपश्येत्) यावचनकरिकै जो अकर्मकरिकैविशेषितहोवैहै सोईहीं कर्महोवैहै अन्यकर्महोवैनहीं यहकर्मका लक्षण कथनकऱ्याहै ॥ और (अकर्मणिचकर्मयः) यावचनकरिकै जो कर्मकरिकै विशेषितहोवैहै सोईहीं अकर्महोवैहै यहअकर्मकालक्षण कथनकरयाहै ॥ इसव्याख्यानविषे श्लोककेअक्षरोंकाअर्थ याप्रकार करणा ॥ द्रव्यदेवतादिकसाधनोंसहितजेयज्ञादिकहैं तिनोंकानाम कर्महै और स्पंदतैंरहितकूटस्थब्रह्मकानाम अकर्महै ॥

तहां जोपुरुष तासाधनसहितयज्ञादिकरूपअकर्मविषे कूटस्थब्रह्मरूपकर्मकूंदेखेहै ॥ अर्थात् (अहंक्रतुरहंयज्ञःस्वधाहमहमौषधम् ॥ मंत्रोहमहमेवाज्यमहमग्निरहंहुतम्) ॥ इसभगवतवचनउक्तरीतिसैं तिनयज्ञादिककर्मोंविषे तथातिनकर्मोंके द्रव्य देवतादिकअंगोंविषे जोपुरुष ब्रह्मदृष्टिकरेहै ॥ ताब्रह्मदृष्टितैंविना जोकर्म करयाजावैहै ॥ सो कर्म व्यर्थचेष्टारूपहींहोवैहै ॥ याकारणतैं तिनकर्मोंकीगति अत्यंतगहनहैइति ॥ शंका ॥ हेभगवन् जोअकर्म कर्मविषे आरोपणकरीताहै ॥ सोअकर्म क्यावस्तुहै ऐसीअर्जुनकी शंकाकेहूए श्रीभगवान् कहेहैं (अकर्मणिचकर्मयः इति) हेअर्जुन जिसवस्तुविषे पुण्यपापरूपकर्म (पुण्योवैपुण्येनकर्मणाभवतिपापःपापेन) इसश्रुतिकेबलतैं प्रतीतहोवैहै ॥ तथा जिसवस्तुविषे तापुण्यपापकर्मका सुखदुःखरूपफल अहंसुखी अहंदुःखी याप्रतीतिकेबलतैं प्रतीतहोवैहै॥सोप्रत्यक्चेतनहीं अकर्मरूपहै ॥ और जैसे सर्पभावतैंरहितरज्जुविषे सर्प अध्यस्तहोवैहै तैसे तास्पंदभावतैंरहित चेतनरूपअकर्मविषे यहस्पंदरूपकर्म अध्यस्तहै ॥ याप्रकार जोपुरुष ताअकर्मविषे कर्मकूंदेखेहै ॥ ईहांयहतात्पर्यहै ॥ जैसे रज्जुविषेअध्यस्तसर्पकूं देखताहूआजोपुरुषहै ॥ तापुरुषकूं यहसर्पनहींहै किंतु रज्जुहींहै याप्रकारके आप्तवक्तापुरुषकेवचनतैं जोकदाचित् विक्षेपकीप्रबलतातैं रज्जुत्वकाज्ञाननहींहोवैहै ॥ तौं सोआप्तवक्तापुरुष ताभ्रांतपुरुषकेप्रति इससर्पकूं तूं रज्जुदृष्टिकरिकै उपासनाकर याप्रकारका जबी उपदेशकरेहै ॥ तबी सोभ्रांतपुरुष ताउपासनाकीदृढतातैं तासर्पकाविस्मरणकरिकै तारज्जुत्वकूंहीं साक्षात्कारकरेहै ॥ और जोपुरुष यहसर्पनहींहै किंतु रज्जुहींहैयाप्रकारकेवचनतैंहीं तारज्जुकेवास्तवस्वरूपकूंजानेहै ॥ तिसपुरुषकूं यहसर्प रज्जुहींहै याप्रकारकीवृत्तियोंका निरंतर प्रवाहरूपउपासना करणेका किंचितमात्रभी प्रयोजननहींहै ॥ इसप्रकार कूटस्थब्रह्मरूपअकर्मविषे अध्यस्तजो कर्त्ताक्रियादिक प्रपंचरूपकर्महै ॥ ताप्रपंचरूपकर्मकूं तत्त्वमसि इसवचनतैं बाधकरिकै शुद्धअंतःकरणवालेपुरुषकूं ताकूटस्थब्रह्मरूपअकर्मका बोधहोईसकैहै ॥ और जिसपुरुषकाअंतःकरण शुद्धनहींहै ॥ सोपुरुष जबी ताकर्मकूं अकर्मदृष्टिकरिकैउपासनाकरेहै तबी ताउपासनाकीदृढतातैं सोपुरुषभीताकर्मकेतिरोधानकरिकै ताअकर्मकेवास्तवस्वरूपकूं साक्षात्कारकरैइति ॥ इसप्रकारका विलक्षणव्याख्यानकरिकै ताटीकाकारने श्रीभाष्यकारभगवान्केआगे याप्रकारकीप्रार्थनाकरीहै ॥ तहांश्लोक (व्याख्यातुरपिमेनास्तिभाष्यकारेणतुल्यता ॥ गुहावद्योतिनोप्यस्तिकिंदीपस्यार्कतुल्यता) अर्थयह ॥ इसप्रकार विलक्षणव्याख्यानकूंभी करणेहाराजोमैंहूं ॥ तिसहमोरकूं भगवान्भाष्यकारोंकीतुल्यता होवैनहीं ॥ जैसे किसीगुहाविषेप्रकाशकरणेहारेभीदीपककूं सूर्यभगवान्कीतुल्यता होवैनहींइति ॥ १८ ॥ ❀ ॥ अब पूर्वउक्तपरमार्थदर्शीपुरुषकूं कर्तृत्व अभिमानकेअभावतैं कर्मोंकरिकैअलिप्तपणा श्रीभगवान् (यस्यसर्वे) इसवचनतैंआदिलेके (ब्रह्मकर्मसमाधिना) इसवचनपर्यंत विस्तारतैं कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) यस्यसर्वेसमारंभाःकामसंकल्पवर्जिताः ॥ ज्ञानाग्निदग्धकर्माणंतमाहुःपंडितंबुधाः ॥ १९ ॥ यस्य । सर्वे । समारंभाः । कामसंकल्पवर्जिताः । ज्ञानाग्निदग्धकर्माणं । तं । आहुः । पंडितं । बुधाः ॥ १९ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन जिसपुरुषके सर्व कर्म कामसंकल्पतैंरहितहैं तथा ज्ञानरूपअग्निकरिकै दग्धहूएहैंकर्मजिसके तिसपुरुषकूं ब्रह्मवेत्तापुरुष पंडित कहेहैं ॥ १९ ॥ (इतिपदार्थः)

॥ टीका ॥ हेअर्जुन पूर्वश्लोकविषेकथनकरचेहुए जिसपरमार्थदर्शीपुरुषके सर्व लौकिकवैदिककर्म कामतैंरहितहुएहैं तथासंकल्पतैंरहितहुएहैं ॥ ईहां स्वर्गादिकफलोंकीजातृष्णाहै ताकानाम कामहै ॥ और मैं कर्मकाकर्त्ताहूं याप्रकारका जो कर्तृत्वअभिमानहै ताकानामसंकल्पहै ताकामसंकल्प दोनोंतैं जिसपुरुषके तेकर्मरहित हुएहैं ॥ अर्थात् जिसपुरुषके तेसर्वकर्म केवल लोकसंग्रहवासतै अथवा शरीरकेजीवनमात्रवासतै प्रारब्धकर्मकेवेगतैं व्यर्थचेष्टारूपहुएहैं ॥ और पूर्वश्लोकविषे कथनकरयाजो प्रपंचरूपकर्मविषे सत्तास्फूर्त्तिरूपकरिकै चैतन्यब्रह्मरूपअकर्मकादर्शन तथा ताब्रह्मरूपअकर्मविषे कल्पितरूपकरिकै प्रपंचरूपकर्मकादर्शन तादर्शनकानामज्ञानहै ॥ सोज्ञान प्रसिद्धअग्निकीन्यांई सर्वकर्मोंका दाहकहोणेतैं अग्निरूपहै ॥ ताज्ञानरूपअग्निकरिकै दग्धहोइगयेहैं शुभअशुभकर्मजिसके ॥ तहां श्रीव्याससूत्रं (तदधिगमउत्तरपूर्वाघयोरश्लेषविनाशौतदव्यपदेशात्) अर्थयह ॥ तापरमात्मादेवकेसाक्षात्कारहुये तासाक्षात्कारतैंउत्तर करचेहुए पुण्यपापकर्मोंका ताविद्वान्पुरुषकूं संबंधहीं नहींहोवैहै ॥ और तासाक्षात्कारतैंपूर्वकरचेहुए संचितकर्मोंका ताज्ञानरूपअग्निकरिकै नाशहोइजावैहै ॥ यहवार्ता बहुतश्रुतिस्मृतियोंविषे देखणेमैंआवैहैइति ॥ ऐसेविद्वान्पुरुषकूं ब्रह्मवेत्तापुरुष वास्तवतैं पंडित कहेहैं ॥ ईहांसर्वत्र चैतन्यब्रह्ममात्रकूंविषयकरणेहारी जाअंतःकरणकीवृत्तिहै तावृत्तिकानाम पंडाहै॥ सापंडानामावृत्ति जिसपुरुषके अंतःकरणविषेउत्पन्नहोवै तापुरुषकानाम पंडितहै ॥ और लोकविषेभी सम्यक्दर्शीपुरुषहीं पंडित कह्याजावैहै ॥ भ्रांतपुरुष पंडित कह्याजावैनहीं ॥ सोसम्यक्दर्शीपणा विद्वान्पुरुषविषेहींहै ॥ अज्ञानीपुरुषोंविषे सोसम्यक्दर्शीपणा हैनहीं ॥ यातैं सोविद्वान्पुरुषहीं पंडितहै इति ॥ १९ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् ताज्ञानरूपअग्निकरिकै पूर्वआरंभकरचेहुए प्रारब्धकर्मतैंभिन्नकर्मोंकादाहहोवो ॥ तथा आगामिकर्मोंकीअनुत्पत्तिभीहोवो ॥ परंतु ताज्ञानकीउत्पत्तिकालविषे कन्याहुआजोकर्महै सोकर्म तिनपूर्वकर्मोंविषे तथा उत्तरकर्मोंविषे अंतर्भूतहोइसकैनहीं ॥ यातैं सोकर्मतौं ताज्ञानवान्पुरुषकूं अवश्यकरिकै फलकीप्राप्तिकरैगा ॥ ऐसी अर्जुनकीशंकाकेहुए ॥ श्रीभगवान् ताशंकाकीनिवृत्तिकरेहैं ॥

(मू० श्लो०) त्यक्त्वाकर्मफलासंगंनित्यतृप्तोनिराश्रयः॥ कर्मण्यभिप्रवृत्तोपिनैवकिंचित्करोतिसः॥ २० ॥ त्यक्त्वा। कर्मफलासंगं। नित्यतृप्तः। निराश्रयः। कर्मणि। अभिप्रवृत्तः। अपि। नं। एव। किंचित्। करोति। सः॥ २० ॥ इतिपदच्छेदः॥ हेअर्जुन कर्म फलकेआसंगकूं परित्याग करिकै नित्यतृप्तहुआ तथानिराश्रयहुआ कर्मविषे प्रवृत्तहुआ भी सोविद्वान्पुरुष किंचित्मात्रभी नहीं करेहै ॥ २० ॥ (इतिपदार्थः)

॥ टीका ॥ हेअर्जुन नित्यनैमित्तिककर्मोंविषे जो मैंइनकर्मोंकाकर्त्ताहूं याप्रकारका कर्तृत्वअभिमानहैं ताकर्तृत्वअभिमानकानाम कर्मआसंगहै ॥ और तिनकर्मों के स्वर्गादिकफलोंविषे जाभोगकीअभिलाषाहै ताअभिलाषाकानामफलआसंगहै ॥ ताकर्मआसंगका तथाफलआसंगका परित्यागकरिकै अर्थात् अकर्त्ताअभोक्ता आत्माकेयथार्थज्ञानकरिकै ताआसंगका बाधकरिकै जोपुरुष नित्यतृप्तहुआहै ॥ अर्थात् परमानंदस्वरूपकेलाभकरिकै जोपुरुष सर्वपदार्थोंविषे निराकांक्षहुआहै ॥ तथा जोपुरुष निराश्रयहुआहै ॥ अर्थात् अद्वैतआत्मदर्शनकरिकै जोपुरुष देहइंद्रियादिरूपआश्रयकेअभिमानतैं रहितहुआहै ॥ ऐसाजीवन्मुक्तपुरुष समाधितैंव्यु त्थानदशाविषे प्रारब्धकर्मकेवशतैं लोकदृष्टिकरिकै लौकिकवैदिककर्मोंके सांगोपांगअनुष्ठानकरणेवासतै प्रवृत्तहुआभी सोविद्वान्पुरुष आपणीपरमार्थदृष्टिकरिकै किंचित्मात्रभी कर्मकूंकरतानहीं ॥ जिसकारणतैं निष्क्रियआत्माकेसाक्षात्कारकरिकै ताविद्वान्पुरुषकेतेसर्वकर्म बाधभावकूंप्राप्तहुएहैं ॥ ईहां ताविद्वान्पुरुषके (नित्यतृप्तःनिराश्रयः) यहजो दोविशेषणकथनकरेहैं ॥ तेदोनोंविशेषण हेतुरूपहैं ॥ तहां फलआसंगकीनिवृत्तिविषेतौं नित्यतृप्तः यहहेतुहै ॥ और कर्मआसंगकी निवृत्तिविषे निराश्रयः यहहेतुहै ॥ ताकरिकै यहदोअनुमान सिद्धहोवैहैं ॥ सोविद्वान्पुरुष फलकीअभिलाषारूप फलआसंगतैंरहितहै नित्यतृप्तहोणेतैं जोपुरुष ताफलआसंगतैंरहित नहींहोवैहै सोपुरुष नित्यतृप्तभी नहींहोवैहै जैसे अज्ञानी पुरुषहैइति ॥ और सोविद्वान्पुरुष कर्तृत्वअभिमानरूप कर्मआसंगतैंरहितहै निराश्र यहोणेतैं जोपुरुष ताकर्मआसंगतैंरहित नहींहोवैहै सोपुरुष निराश्रयभी नहींहोवैहै जैसे अज्ञानीपुरुषहै इति ॥ २० ॥ ❀ ॥ तहां अत्यंतविक्षेपकेहेतुजे ज्योति ष्टोमादिककर्महैं ॥ तिनकर्मोंकूंभी जबी तासम्यक्ज्ञानकेवशतैं बंधकीहेतुताहोवैनहीं ॥ तबीशरीरकीस्थितिमात्रकेहेतु तथाविक्षेपकीनहींप्राप्तिकरणेहारे जेभिक्षा अटनादिक यतिकेकर्महैं ॥ तिनकर्मोंकूं तासम्यक्दर्शनकेबलतैं बंधकीहेतुता नहींहै याकेविषे क्याकहणाहै ॥ याप्रकारके कैमुतिकन्यायकरिकै श्रीभगवान् तिनभिक्षाअटनादिककर्मोंविषे बंधकीहेतुताकाअभाव कथनकरे है ॥

(मू० श्लो०) निराशीर्यतचित्तात्मात्यक्तसर्वपरिग्रहः॥ शारीरंकेवलंकर्मकुर्वन्नाप्नोतिकिल्बिषम् ॥ २१ ॥ निराशीः। यतचित्ता

त्मा । त्यक्तसर्वपरिग्रहः । शारीरं । केवलं । कर्म । कुर्वन् । न । आप्नोति । किल्बिषं ॥ २१ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेअर्जुन जोपुरुष तृष्णातैं रहितहै तथा जीत्येहैंचित्तआत्माजिसने तथात्यागकरेहैं सर्वपरिग्रहजिसने सोपुरुष कर्तृत्वअभिमानतैंरहित शरीरकीस्थितिविषेउपयोगी भिक्षाअटनादिककर्मकूं करताहूआ किल्बिषकूं नहीं प्राप्तहोवैहै ॥ २१ ॥ (इतिपदार्थः)

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जोपुरुष स्वर्गादिकफलकीतृष्णातैंरहितहै ॥ तथा जिसपुरुषनैं अंतःकरणरूपचित्तकूं तथाबाह्यइंद्रियसहितदेहरूपआत्माकूं प्रत्याहारकरिकै निग्रहकर्याहै ॥ जिसकारणतैं सोपुरुष जितइंद्रियहै ॥ तिसकारणतैंही सोपुरुष तृष्णातैंरहितहोणेतैं त्यक्तसर्वपरिग्रहहै ॥ ईहां विषयभोगकेसाधनरूप जेधनादिक उपकरणहैं तिनोंकानाम परिग्रहहै ॥ ते विषयभोगकेउपकरणरूप सर्वपरिग्रह त्यागकरेहैंजिसनैं ताकानाम त्यक्तसर्वपरिग्रहहै ॥ ऐसानिराशी तथायतचित्तात्मा तथात्यक्तसर्वपरिग्रह संन्यासी प्रारब्धकर्मकेवशतैं शारीरकर्मकूंकरताहुआ किल्बिषकूं प्राप्तहोवैनहीं ॥ ईहां शरीरकीस्थितिमात्रहैप्रयोजनजिनोंका ऐसेजे कंथाकौपीनादिकोंकाग्रहणरूप तथा भिक्षाअटनादिरूप कायिक वाचिक मानस कर्महैं ॥ जेकर्म संन्यासीकेप्रति शास्त्रनैं विधानकर्येहैं ॥ तिनकर्मोंकानाम शारीरकर्महै ॥ ऐसेशारीरकर्मोंकूं कर्तृत्वअभिमानतैंरहितहोइकै अन्यारोपितकर्तृत्वरूपकरिकै करताहुआ सोसंन्यासी धर्मअधर्मकाफलभूतअनिष्टसंसाररूपकिल्बिषकूं प्राप्तहोवै नहीं ॥ यद्यपि पापकूंहीं किल्बिषकहेहैं ॥ तथापि पापकीन्यांई सकामपुण्यभी अनिष्टफलकाहींहेतुहोवैहै ॥ यातैं सोपुण्यभी किल्बिषरूपहींहैं इति ॥ और किसी टीकाविषे (शारीर) इसपदका यहअर्थकर्याहै ॥ शरीरकरिकै जोकर्म सिद्धहोवैहै ॥ ताकर्मकानाम शारीरहैइति ॥ सोइसव्याख्यानविषे (केवलंकर्मकुर्वन्) इतनैंवचनमात्रकहणेतैं जोअर्थ सिद्धहोवैहै तिसतैंअधिकअर्थ ताशारीरपदकेकहणेतैं सिद्धहोवैनहीं ॥ यातैं इतरकर्मका अव्यावर्त्तकहोणेतैं सोशारीरपद व्यर्थहींहोवैगा ॥ और सोटीकाकार जोयहकहै ॥ वाचिक मानस कर्मकी व्यावृत्तिकरणेवासतै सोशारीरपदहै ॥ यातैं सोशारीरपद व्यर्थनहींहै इति ॥ सोयहकहणाभी संभवतानहीं ॥ काहेतैं (शारीरंकेवलंकर्म) यावचनविषेस्थितजोकर्मपदहै ॥ सोकर्मपद विहितकर्मकावाचकहै ॥ अथवा विहितनिषिद्धसाधारण कर्ममात्रकावाचकहै ॥ तहां सोकर्मपद विहितकर्मका वाचकहै यहप्रथमपक्ष जोअंगीकारकरिये ॥ तौं तावचनका यहअर्थ सिद्धहोवैहै ॥ शास्त्रविहित शारीरकर्मकूंकरताहुआ सोविद्वान्पुरुष ताकिल्बिषकूंप्राप्तहोवैनहीं इति ॥ तहां विहितकर्मविषे किल्बिषकीहेतुता कहांभीप्राप्तहैनहीं ॥ और प्राप्तअर्थकाहीं प्रतिषेधहोवैहै ॥ अप्राप्तअर्थका प्रतिषेध होवैनहीं ॥ यातैं अप्राप्तअर्थका प्रतिषेधकहोणेतैं सोवचन अनर्थकहोवैगा ॥ और शास्त्रविहित शारीरकर्मकूंकरताहुआ सोविद्वान्पुरुष किल्बिषकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ याकहणेतैं अर्थतैंयहसिद्धहोवैहै ॥ शास्त्रविहित वाचिक मानस कर्मकूंकरताहुआ

सोपुरुष ताकिल्बिषकूंप्राप्तहोवैहै इति॥ सोयहवार्त्ता शास्त्रतैंविरुद्धहींहै॥ और सोकर्मपद विहितनिषिद्धसाधारणकर्ममात्रका वाचकहै यहदूसरापक्ष जोअंगीकारकरिये॥ तौंयहअर्थ सिद्धहोवैगा ॥ शास्त्रविहित तथानिषिद्ध शारीरकर्मकूं करताहुआ सोविद्वान्पुरुष ताकिल्बिषकूंप्राप्तहोवैनहीं इति सोयह कहणाभी पूर्वकीन्यांई अत्यंतविरुद्धहींहै यातैं यहशारीरपदकाव्याख्यान अत्यंतअसंगतहै ॥ किंतु पूर्वउक्तव्याख्यानही समीचीनहै इति ॥ २१ ॥ ❀ ॥ तहांपूर्वश्लोकविषे त्यागकऱ्याहैसर्वपरिग्रहजिसनैं ऐसेसंन्यासीकूं शरीरकीस्थितिमात्रविषेउपयोगकर्मोंकीकर्त्तव्यता कथनकरीथी ॥ तहां अन्नवस्त्रादिकोंतैंविना शरीरकीस्थितिहीं संभवतनहीं॥ यातैं याचनाआदिक आपणेप्रयत्नकरिकैभी तासंन्यासीनैं तिनअन्नवस्त्रादिकोंका संपादनकरणा याप्रकारके अर्थकेप्राप्तहुए ॥ श्रीभगवान् ताकेविषे नियमकूं कथनकरेहैं ॥

(मू० श्लो०) यदृच्छालाभसंतुष्टोद्वंद्वातीतोविमत्सरः॥ समः सिद्धावसिद्धौचकृत्वापिननिबद्धयते॥ २२॥ यदृच्छालाभसंतुष्टः। द्वंद्वातीतः। विमत्सरः। समः। सिद्धौ। असिद्धौ। च। कृत्वा। अपि। न। निबद्धयते॥२२॥इति पदच्छेदः॥हेअर्जुन जोपुरुष यदृच्छालाभकरिकै संतुष्टहै तथाद्वंद्वधर्मोंतैंरहितहै तथा मत्सरतैंरहितहै प्राप्तिविषे तथा अप्राप्तिविषे समानहै सोपुरुष तिनभिक्षाअटनादिक कर्मोंकूं करिकै भी नहीं बंधकूं प्राप्तहोवैहै ॥ २२ ॥ इतिपदार्थः॥

॥ टीका॥ संन्यासीकेप्रति शास्त्रनैं विधानकऱ्याजो शरीरकीस्थितिमात्रविषेउपयोगी प्रयत्नहै ॥ ताशास्त्रविहितप्रयत्नतैंभिन्न जितनेकी याचना कृषि सेवा वाणिज्य आदिकप्रयत्नहैं जेप्रयत्न संन्यासीकेप्रति शास्त्रनैं निषेधकऱ्येहैं ॥ तिनशास्त्रनिषिद्धप्रयत्नोंकूंनहींकरणा याकानाम यदृच्छाहै ॥ तायदृच्छाकरिकै जोशास्त्रविहित अन्नवस्त्रादिकपदार्थोंकालाभहै ॥ तालाभकरिकै जोसंन्यासी संतुष्टहै अर्थात् तिसतैंअधिकपदार्थोंकीतृष्णातैंरहितहै ॥ तासंन्यासीकानाम यदृच्छालाभसंतुष्टहै ॥ तहां शास्त्रविषे (भैक्ष्यंचरेत्) यावचनतैं संन्यासीकूं भिक्षाकाविधानकरिकै पश्चात् यहवचन कथनकऱ्याहै (अयाचितमसंक्लृप्तमुपपन्नंयदृच्छया) अर्थयह ॥ भिक्षाअटनकरणेवासतैं जोउद्यमहैं ताउद्यमतैं पूर्वकालविषे तासंन्यासीकेप्रति किसीश्रेष्ठगृहस्थनैं निमंत्रणकऱ्याजोभिक्षाअन्नहै ताभिक्षाअन्नकानाम अयाचितहै ॥ ताअयाचित भिक्षाअन्नकूंभी सोसंन्यासी ग्रहणकरै ॥ और संकल्पतैविनाहीं पंचगृहोंतैं अथवासप्तगृहोंते माधुकरीवृत्तितैंप्राप्तभयाजोअन्नहै ताअन्नका नाम असंक्लृप्तहै ॥ ताअसंक्लृप्तअन्नकूंभी सोसंन्यासी ग्रहणकरै ॥ और आपणेप्रयत्नतैंविनाहीं तासंन्यासीकेसमीप भक्तजनोंनैं प्राप्तकरयाजोपक्वअन्नहै ताअन्नका नाम उपपन्नहै ॥ ऐसेउपपन्नअन्नकूंभी सोसंन्यासी ग्रहणकरैइति ॥ यहवार्त्ता अन्यशास्त्रविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक (माधुकरमसंक्लृप्तंप्राक्प्रणीतमयाचितम् ॥ तात्कालिकोपपन्नंचभैक्ष्यंपंचविधंस्मृतमिति) ॥ अर्थयह ॥ माधुकर १ प्राक्प्रणीत २ अयाचित

३ तात्कालिक ४ उपपन्न ५ यहपंचप्रकारका भिक्षाअन्न संन्यासीकेवास्तै होवैहै ॥ तहां मनकेसंकल्पका अविषयभूत जेतीनगृहहैं अथवा पंचगृहहैं अथवा सप्तगृहहैं तिनगृहोंतैं जोअन्न प्राप्तहोवैहै ताकानाम माधुकरहै ॥ १ ॥ और शयनकेउत्थानतैंपूर्व किसीभक्तजननैं करीजाभिक्षाअन्नकीप्रार्थनाहै सो भिक्षाअन्न प्राक्प्रणीत कह्याजावैहै ॥ २ ॥ और भिक्षाअटनकेउद्यमतैंपूर्व किसीभक्तजननैं भिक्षाअन्नका निमंत्रणदिया सोभिक्षाअन्न अयाचित कह्याजावैहै ॥ ३ ॥ और भिक्षाकेअटनवासतैउद्यमकीयेतैंअनंतर जोकिसीभक्तजननैं भिक्षावासतैप्रार्थनाकरी सोभिक्षाअन्न तात्कालिककह्याजावैहै ॥ ४ ॥ और भिक्षाकेसमयविषे आपणेआसनऊपरिहीं कोईभक्तजन पक्वअन्नलेआया सोअन्न उपपन्न कह्याजावैहैइति ॥ ५ ॥ इत्यादिकशास्त्रकेवचन तासंन्यासीकेप्रति भिक्षाअन्नकेनियमकाविधानकरतेहुए तिनयाचनादिकप्रयत्नोंकीनिवृत्तिकूं कथनकरेहैं यहवार्त्ता मनुभगवान्नेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ (नचोत्पातनिमित्ताभ्यांननक्षत्रांगविद्यया ॥ नानुशासनवादाभ्यांभिक्षांलिप्सेतकर्हिचित् ॥) अर्थयह ॥ यहसंन्यासी उत्पातकरिकै तथा निमित्तकरिकै तथानक्षत्रविद्याकरिकै तथा अंगविद्याकरिकै तथाअनुशासनकरिकै तथावादकरिकै कदाचित्भी भिक्षाग्रहणकरणेकीइच्छा नहींकरै ईहां भूकंपादिकोंके शुभअशुभफलका कथनकरणा याकानाम उत्पातहै ॥ और चक्षुआदिकोंकीस्पंदरूपक्रियाके शुभअशुभफलका कथनकरणा याकानाम निमित्तहै ॥ और अश्विनीआदिकनक्षत्रोंके शुभअशुभ फलका कथनकरणा याकानाम नक्षत्रविद्याहै और हस्तादिकोंकीरेखाओंके शुभअशुभफलकाकथनकरना याकानाम अंगविद्याहै ॥ और यहनीतिमार्ग इसप्रकारकाहै इसप्रकार तुमोनैं इसनीतिमार्गविषेवर्त्तणा याप्रकारकेउपदेशकानाम अनुशासनहै ॥ और शास्त्रकेअर्थकाकथनकरणा याकानाम वादहै ॥ इत्यादिकउपायोंकरिकै संन्यासीने आपणेशरीरका निर्वाह कदाचित्भीनहींकरणा ॥ किंतु पूर्वउक्तरीतिसे भिक्षाअन्नसे शरीरकानिर्वाहकरणाइति ॥ और (यतयोभिक्षार्थंग्रामंप्रविशंति) इत्यादिकशास्त्रने विधानकरया जो संन्यासीका भिक्षाकेवासतै प्रयत्नहै ॥ सोशास्त्रविहितप्रयत्नतौ संन्यासीने अवश्यकरिकैकरणा ताशास्त्रविहितप्रयत्नकरिकै प्राप्तहोणेयोग्य अन्नवस्त्रादिकपदार्थभी शास्त्रकरिकैनियतहीहोवैहै ॥ यातैं शास्त्रविहितप्रयत्नकरिकै जोसंन्यासीकूं शास्त्रविहितअन्नवस्त्रादिकपदार्थोंकीप्राप्तिहै सोयदृच्छालाभरूपहीहै ॥ यहवार्त्ता अन्यशास्त्रविषेभी कथनकरीहै तहांश्लोक (कौपीनयुगलंवासःकंथांशीतनिवारिणीं ॥ पादुकेचापिगृह्णीयात्कुर्यान्नान्यस्यसंग्रहं)॥ अर्थयह ॥ यहसंन्यासी दोकौपीनोंकूं तथा ताकौपीनऊपरिबांधणेवासतै दोकटीवस्त्रोंकूं तथाशीतकीनिवृत्तिकरणेवास्ते कंबलादिरूपकंथाकूं तथापादुकाकूं ग्रहणकरै ॥ इसतैंअधिक द्रव्यादिकपदार्थोंकासंग्रह नहींकरैइति ॥ इसप्रकार दूसरेभी विधिनिषेधरूपवचन जानिलेणे ॥ शंका ॥ हेभगवन् तिनयाचनादिक आपणेप्रयत्नतैं विना अन्नवस्त्रादिकोंकेअप्राप्तहुए क्षुधा शीत उष्ण आदिकोंक

रिकैपीडितहुआ सोसंन्यासी किसप्रकार जीवैगा ऐसीअर्जुनकी शंकाकेहुए श्रीभगवान्कहेहैं (द्वंद्वातीतः इति) हेअर्जुन क्षुधांपिपासा शीतउष्ण वातवर्षा इत्यादिकसर्वद्वंद्वधर्मोंतै सोसंन्यासीरहितहै ॥ तात्पर्ययह॥ समाधिदशाविषेतौ ताब्रह्मवेत्तासंन्यासीकूं तेद्वंद्वधर्म स्फुरणहींहोवैनहीं॥और तासमाधितैंव्युत्थानदशाविषे यद्यपि तेद्वंद्वधर्मस्फुरणहोवैहैं ॥ तथापि परमानंदस्वरूप अद्वितीयअकर्त्ताअभोक्ताआत्माकेसाक्षात्कारकरिकै तिनसर्वद्वंद्वधर्मोंका बाधहोइजावैहै ॥ यातैं तिनबाधितद्वंद्वधर्मोंकरिकै हन्यमानहूआभी सोसंन्यासी चित्तकेक्षोभतैंरहितहींहोवैहैइति ॥ जिसकारणतैं सोब्रह्मवेत्तासंन्यासी द्वंद्वधर्मोंतैंरहितहै ॥ तिसकारणतैं सोब्रह्मवेत्तासंन्यासी अन्यपुरुषकूं किसीवस्तुकी प्राप्तिविषे तथा आपणेकूं किसीवस्तुकीअप्राप्तिविषे विमत्सरहै ॥ ईहां परकीउत्कृष्टताके नसहनपूर्वक जोआपणी उत्कृष्टताकीइच्छाहै ताकानाम मत्सरहै ॥ तामत्सरतैंजोरहितहोवै ताकानाम विमत्सरहैइति ॥ और जिसकारणतैं सोब्रह्मवेत्तासंन्यासी अद्वितीयआत्माकेसाक्षात्कारकरिकै तामत्सरतैंरहितहै ॥ तिसकारणतैं सोब्रह्मवेत्तासंन्यासी तायदृच्छालाभकी प्राप्तिविषे तथाअप्राप्तिविषे समानहै ॥ अर्थात् तायदृच्छालाभकी प्राप्तिविषेतौ हर्षतैंरहितहै और अप्राप्तिविषे विषादतैंरहितहैइति ॥ ऐसाब्रह्मवेत्तासंन्यासी आपणेअनुभवकरिकैतौ अकर्त्ताहींहै ॥ परंतु अन्यपुरुषोंनैं ताकेविषे आरोपणकर्‍याजोकर्तृत्वहै ॥ ताआरोपितकर्तृत्वकरिकै सोब्रह्मवेत्तासंन्यासी शरीरकीस्थितिमात्रविषेउपयोगी भिक्षाअटनादिक शास्त्रविहितकर्मोंकूं करताहूआभी बंधकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ जिसकारणतैं बंधकेहेतुरूपअज्ञानसहितकर्मोंका पूर्वउक्तज्ञानरूपअग्निकरिकै दाहहोइगयाहै इति ॥ २२ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् पूर्वआपनैं यहकह्याथा ॥ त्यागकरेहैं सर्वपरिग्रहजिसनैं तथायदृच्छालाभकरिकै संतोषकूंप्राप्तहुआहैचित्तजिसका ऐसाजोसंन्यासीहै ॥ तासंन्यासीके शरीरमात्रकीस्थितिविषेउपयोगी जोभिक्षाअटनादिककर्महैं ॥ तिनभिक्षाअटनादिककर्मोंकूं करताहुआभी सोब्रह्मवेत्तासंन्यासी बंधकूंप्राप्तहोवैनहींइति ॥ याआपकेकहणेतैं यहअर्थ प्रतीतहोवैहै ॥ गृहस्थआश्रमविषेस्थित जे जनकअजातशत्रुआदिक ब्रह्मवेत्ताहैं ॥ तिनजनकादिकोंके जेयज्ञादिककर्महैं ॥ तेयज्ञादिककर्म तिनजनकादिकोंके अवश्यकरिकै बंधकेहेतुहोवैंगे ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए ताशंकाकीनिवृत्तिकरणेवासतै श्रीभगवान् (त्यक्त्वाकर्मफलासंगम्) इत्यादिकवचनकरिकैकथनकरयेहुएअर्थकूं अब स्पष्टकरिकै कथनकरेहैं ॥

(मू० श्लो०) गतसंगस्यमुक्तस्यज्ञानावस्थितचेतसः ॥ यज्ञायाचरतःकर्मसमग्रंप्रविलीयते ॥ २३ ॥ गतसंगस्य । मुक्तस्य । ज्ञानावस्थितचेतसः । यज्ञाय । आचरतः । कर्म । समग्रं । प्रविलीयते॥२३॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन फलकीअभिलाषातैरहित

तथा अध्यासतैंरहित तथा ज्ञानविषेस्थितहैचित्तजिसका तथा यज्ञादिकोंकेसंरक्षणवासतै आचरजकरताहूआ जोविद्वान् पुरुषहै ता विद्वान्‌पुरुषके तेयज्ञादिककर्म फलसहित नाशकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ २३ ॥ (इतिपदार्थः)

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जोपुरुष गतसंगहै अर्थात् स्वर्गादिकफलोंकीअभिलाषातैंरहितहै ॥ तथा जोपुरुष मुक्तहै अर्थात् मैं कर्त्ताहूं मैंभोक्ताहूं याप्रकारकेकर्तृत्वभोक्तृत्वअध्यासतैंरहितहै ॥ तथा जोपुरुष ज्ञानावस्थितचेतसहै अर्थात् तत्त्वमसिआदिकमहावाक्यतैंजन्यनिर्विकल्पकरूप जीवब्रह्मकेअभेदज्ञानविषे अवस्थितहुआहैचित्तजिसका ऐसाजोस्थितप्रज्ञपुरुषहै ॥ ईहां (गतसंगस्यमुक्तस्य ज्ञानावस्थितचेतसः) यातीनपदोंकरिकै ताविद्वान्‌पुरुषके तीनविशेषण कथनकरे ॥ तहां पूर्वपूर्वविशेषणकीसिद्धिविषे उत्तरउत्तरविशेषणहेतुरूपहै ॥ ताकरिकै यहदोअनुमान सिद्धहोवैहैं॥सोविद्वान्‌पुरुष फलकीअभिलाषारूपसंगतैंरहितहै कर्तृत्वभोक्तृत्वअध्यासतैंरहितहोणेतैंजोपुरुष तासंगतैंरहितनहींहोवैहै सोपुरुष ताअध्यासतैंरहितभीनहींहोवैहै जैसे अज्ञानीपुरुषहैइति ॥ और सोविद्वान्‌पुरुष ताअध्यासतैं रहितहैस्थितप्रज्ञहोणेतैंजोपुरुष ताअध्यासतैंरहितनहींहोवैहै सोपुरुष स्थितप्रज्ञभीनहींहोवैहै जैसे अज्ञानीपुरुषहैइति ॥ ऐसाब्रह्मवेत्ताविद्वान्‌पुरुषभी प्रारब्धकर्मके वशतैं वेदविहितयज्ञदानादिकोंके संरक्षणकरणेवासतै अर्थात् ज्योतिष्टोमादिकयज्ञोंविषे श्रेष्ठाचारताकरिकै लोकोंकीप्रवृत्तिकरावणेवासतै अथवा (यज्ञोवैविष्णुः) इत्यादिकवचनोंविषे यज्ञशब्दकरिकैकथनकरयाजोविष्णुहै ताविष्णुकीप्रसन्नतावासतै यज्ञदानादिककर्मोंकूंकरैहै॥परंतु ताविद्वान्‌पुरुषके तेयज्ञदानादिकसर्वकर्म समग्र नाशकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ ईहां अग्रनाम फलकाहै ॥ ताफलरूपअग्रकेसहितजोविद्यमानहोवै ताकानाम समग्रहै ॥ अर्थात् तत्त्वसाक्षात्कारकेबलतैं अविद्यारूपकारणकेनिवृत्तहुए ताविद्वान्‌पुरुषके तेफलसहितकर्म नाशकूंहींप्राप्तहोवैहैं ॥तहांश्रुति॥ (तद्यथेषीकातूलमग्नौप्रोतंप्रदूयेतैवंहास्यसर्वेपाप्मानः प्रदूयंतेइति) ॥ अर्थयह ॥ जैसे प्रज्वलितअग्निविषे प्राप्तहूआ इषीकातूल नाशकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे इसब्रह्मवेत्ता विद्वान्‌पुरुषके सर्व पुण्यपापकर्म ज्ञानरूपअग्निकरिकै नाशकूंप्राप्तहोवैहैंइति ॥ इसीअर्थकूं श्रीभगवान् आपहीं (ज्ञानाग्निःसर्वकर्माणिभस्मसात्कुरुते तथा) इसश्लोकविषे कथनकरैंगे इति ॥ २३ ॥ ❁ ॥ शंका ॥ हेभगवन् सोक्रियमाण कर्म फलकूंउत्पन्नकरिकै केसेनाशकूंप्राप्तहोवैंगा किंतु फलकेदीयेतैंविना सोकर्म नाशनहींहोवैंगा ॥ काहेतैं (नाभुक्तंक्षीयतेकर्मकल्पकोटिशतैरपि) अर्थयह फलकेभोगतैंविना यहशुभअशुभकर्मकल्पकोटीशतकरिकैभी नाशकूंप्राप्तहोवैनहींइति ॥ इत्यादिकवचनोंविषे फलकेभोगतैंविना तिनकर्मोंकेनाशका निषेधहींकरयाहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए ॥ श्रीभगवान् ब्रह्मसाक्षात्कारकरिकै ताकर्मकैकारणकानाशहोणेतैं साकर्मभी नाशकूंहींप्राप्तहोवैहै याप्रकारकेउत्तरकूं कथनकरैहै

(मू॰ श्लो॰) ब्रह्मार्पणंब्रह्महविर्ब्रह्माग्नौब्रह्मणाहुतम् ॥ ब्रह्मैवतेनगंतव्यंब्रह्मकर्मसमाधिना ॥२४॥ ब्रह्म । अर्पणं । ब्रह्म । हविः ब्रह्माग्नौ ।

ब्रह्मणा। हुतं। ब्रह्म। एव तेन। गंतव्यं। ब्रह्म। कर्मसमाधिना ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन अर्पणभी ब्रह्म हीहै तथा हविभी ब्रह्महीहै तथा ब्रह्मरूप अग्निविषे ब्रह्मरूपकर्त्तानें जोहवनकरयाहैसोहवनभी ब्रह्महीहै तथा तिसंहवनकरिके प्राप्तहोणेयोग्यस्वर्गा दिकभी ब्रह्मरूपहीहै तथा कर्मविषेब्रह्मबुद्धिवालेपुरुषनैंभी परमानंदस्वरूपब्रह्महही गंतव्यहै ॥ २४ ॥ (इतिपदार्थः)

॥ टीका ॥ कर्ता कर्म करण संप्रदान अधिकरण यापंचप्रकारकेकारकोंकरिकै यज्ञादिरूपक्रिया सिद्धहोवैहै ॥ तहां इंद्रादिकदेवतावोंकाउद्देशकारिकै जोघृता दिकद्रव्यका त्यागकरयाहै ताकानाम यागहै ॥ सोयागहीं त्यागकरणे योग्यघृतादिकद्रव्यका अग्निविषेप्रक्षेपकरणेतैं होम इसनामकरिकैकह्याजावैहै ॥ तहां उद्दिश्यमानइंद्रादिकदेवतातैं संप्रदानकारकरूपहैं ॥ और त्यागकरणेयोग्यजेघृतादिकहैं तेघृतादिक हविष् याशब्दकरिकैकहेजावैहैं ॥ सोघृता दिकरूपहविष्तैं त्यागप्रक्षेपरूप धातुअर्थका साक्षात् कर्मरूपहै ॥ और ताकाफलभूत स्वर्गादिक व्यवहित भावनाकाकर्मरूपहै ॥ और अग्निविषे ताघृतादिरूप हवि षूकेप्रक्षेपविषे ताहविषूकेधारकहोणेतैं जुहूआदिक करणरूपहैं॥ तथा इंद्रादिरूपअर्थकीप्रकाशताकारिकै (इंद्रायस्वाहा)यहमंत्रादिकभी करणरूपहीहै। इसप्रकारकारक ज्ञापक याभेदकरिकै सोकरण दोप्रकारकाहोवैहैं ॥ इसप्रकार देवताकाउद्देशकरिकै घृतादिकद्रव्यकात्याग तथाताद्रव्यकाअग्निविषेप्रक्षेप यहदोप्रकारकीक्रिया होवैहै ॥ तहां प्रथम त्यागरूपक्रियाविषेतौं यजमानपुरुषहीं कर्त्ताहोवैहै ॥ और दूसरी प्रक्षेपरूपक्रियाविषेतौं तायजमानपुरुषनें दक्षिणादेकरिकैस्थापनकरयाहुआ अध्वर्यु कर्त्ताहोवैहै ॥ और आहवनीयादिकअग्नि ताहविषूकेप्रक्षेपका अधिकरणरूपहोवैहै ॥ इसप्रकार देशकालादिकभी सर्वक्रियावोंकेप्रति साधारण अधिकरण रूपजानणे ॥ इसप्रकार जितनेंकि क्रियाकारकव्यवहारहैं तेसर्वव्यवहार ब्रह्मकेअज्ञानकरिकैकल्पितहैं ॥ यातैं जैसे रज्जुकेअज्ञानकरिकैकल्पितजे सर्प दंड माला आदिकहैं ॥ तिनकल्पितसर्पादिकोंका तारज्जुरूपअधिष्ठानकेज्ञानकरिकै बाधहोइजावैहै ॥ तैसे अधिष्ठानब्रह्मकेसाक्षात्कारकरिकै तेक्रियाकारकादिकसर्वव्यवहार बाधकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ यातैं ताविद्वान्पुरुषविषे बाधितानुवृत्तिकरिकै सोक्रियाकारकादिरूपव्यवहाराभास प्रतीतहुआभी दग्धपटकीन्यांई किसीफलकेउत्पन्नकरणेविषे समर्थहोवैनहीं ॥ याप्रकारकेअर्थकूं श्रीभगवान् इसश्लोककरिकैकथनकरेहै ॥ तथा साब्रह्मदृष्टिहीं सर्वयज्ञरूपहै याप्रकार ताब्रह्मदृष्टिकीस्तुतिकरेहैइति ॥ अब सोप्रकार दिखावैहैं ॥ (अर्प्यतेअनेन तदर्पणं) अर्थयह जिसकरिकै घृतादिरूपहविष् अग्निविषे अर्पणकरयाजावैहै ताकानाम अर्पणहै ॥ याप्रकारकी करण व्युत्पत्तिकरिकै सोअर्पणपद जुहुआदिककरणोंका तथामंत्रादिककरणोंका वाचकहै ॥ और (अर्प्यतेअस्मैतदर्पणं) अर्थयह सोघृतादिरूपहविष् जिसकेतांई अर्पणकरीयेहै ताकानाम अर्पणहै ॥ याप्रकारकीव्युत्पत्तिकरिकै सोअर्पणपद इंद्रादिकदेवतारूप संप्रदानका वाचकहै ॥ और (अर्प्यतेअस्मिन् तदर्पणं) अर्थ

यह सोघृतादिरूपहविष् अर्पणकरीयेजिसविषे ताकानाम अर्पणहै ॥ याप्रकारकीव्युत्पत्तिकरिकै सोअर्पणशब्द देशकालादिरूप अधिकरणका वाचकहै ॥ इस
प्रकार एकहीं अर्पणपद करण संप्रदान अधिकरण यातीनकारकोंका वाचकहै ॥ यातैं जुहूमंत्रादिरूप करणकारक तथादेवतादिरूप संप्रदानकारक तथादेशका
लादिरूप अधिकरणकारक यहसर्व ब्रह्मविषेकल्पितहोणेतैं ब्रह्मरूपहींहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे रज्जुविषेकल्पित सर्पदंडादिक तारज्जुरूपअधिष्ठानतैंभिन्नताकारिकै
असत्हींहोवैहैं ॥ तैसे तेकारकभी अधिष्ठानब्रह्मतैं भिन्नताकरिकै असत्हींहैंइति ॥ और यजमानकर्तृक त्यागरूपक्रियाका तथाअध्वर्युकर्तृक प्रक्षेपरूपक्रियाका
साक्षात्कर्मरूप जोघृतादिकहविष्है ॥ सोहविष्रूपकर्मकारकभी ब्रह्मरूपहींहै ॥ और जिस आहवनीयादिकअग्निविषे सोघृतादिरूपहविष् पायाजावैहै ॥ सोअग्नि
रूपअधिकरणकारकभी ब्रह्मरूपहींहै ॥ और जिसयजमाननैं देवताकाउद्देशकरीकै सोघृतादिरूपहविष् त्यागकरिताहै ॥ तथा जिसअध्वर्युनैं सोघृतादिरूपहविष्
अग्निविषे प्रक्षेपकरीताहै ॥ सोयजमानरूप कर्त्ताकारक तथाअध्वर्युरूप कर्त्ताकारक दोनों ब्रह्मरूपहींहैं ॥ और हुतं याशब्दकरिकै कथनकरयाजो त्यागक्रिया
रूप तथाप्रक्षेपक्रियारूप हवनहै ॥ सोक्रियारूपहवनभी ब्रह्मरूपहींहै ॥ और तिसहवनरूपक्रियाकरिकै प्राप्तहोणेयोग्यजो स्वर्गादिरूप व्यवहितकर्महै ॥ सोस्वर्गादि
रूपकर्मकारकभी ब्रह्मरूपहींहै ॥ और इसप्रकार ताकर्मविषे ब्रह्मदृष्टिरूपसमाधिहैजिसकी ताकानाम कर्मसमाधिहै ॥ ऐसाजो कर्मोंकेअनुष्ठानकरणेहारा ब्रह्मवेत्ता
पुरुषहै ॥ ताब्रह्मवेत्तापुरुषनैंभी परमानंदस्वरूपअद्वितीयब्रह्महीं गंतव्यहै ॥ ईहां (कर्मसमाधिना) यावचनतैंउत्तर (ब्रह्म गंतव्यं) यादोनोंपदोंका पूर्ववाक्यतैं अ
नुषंगकरणाइति ॥ अथवा ॥ (अर्प्यतेअस्मैफलायतदर्पणं) ॥ अर्थयह ॥ जिसफलकीप्राप्तिवासतै सोहविष् अर्पणकरियेहै ॥ ताकानाम अर्पणहै ॥ याप्रका
रकीव्युत्पत्तिकरिकै ताअर्पणपदकरिकैहीं तिनस्वर्गादिकफलोंकाभी ग्रहणकरणा (गंतव्यं) यापदकरिकै तिनस्वर्गादिकोंका ग्रहणकरणानहीं ॥ यातैं (ब्रह्मैवतेनगंतव्यं
ब्रह्मकर्मसमाधिना) यह श्लोककाउत्तरार्द्ध ज्ञानकेफलकथनकरणेवासतैहींहै ॥ यहहींव्याख्यान समीचीनहै ॥ तहां इसद्वितीयव्याख्यानविषे (ब्रह्मकर्मसमाधिना)
यहएकहीं समस्त पदहै ॥ अथवा (ब्रह्मैवतेन) यावचनविषेस्थितजो ब्रह्म यहपदहै ॥ ताब्रह्मपदकातौं पूर्व (हुतं) यापदकेसाथि अन्वयकरणा ॥ और (ब्रह्मकर्मसमा
धिना) यावचनविषेस्थितजो ब्रह्म यहपदहै ॥ ताब्रह्मपदकातौं (गंतव्यं) यापदकेसाथि अन्वयकरणा ॥ यातैं (ब्रह्मकर्मसमाधिना) यहदोनोंपद भिन्नभिन्नहींहै ॥
इसद्वितीयव्याख्यानविषे पूर्वव्याख्यानकीन्यांई (ब्रह्म गंतव्यं) यादोनोंपदोंकेअनुषंगरूपक्लेशकीप्राप्तिहोवैनहीं इति ॥ ईहां (ब्रह्मैवतेनगंतव्यं ब्रह्मकर्मसमाधि
ना) यावचनकरिकै श्रीभगवान् ब्रह्मवेत्तापुरुषकूं जोब्रह्मकीप्राप्ति कथनकरीहै ॥ सो मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकार अभेदरूपकरिकै ब्रह्मकीप्राप्ति कथनकरीहै ॥ कोई
स्वर्गादिकोंकी न्यांई भिन्नरूपकरिकै अथवा स्वामीसेवकभावकरिकै साप्राप्ति कथनकरीनहीं ॥ तहांश्रुति (ब्रह्मवेदब्रह्मैवभवतीति) ॥ अर्थयह ॥ ब्रह्मकूं

जानणेहारापुरुष ब्रह्मरूपहींहोवैहैइति ॥ इसीकारणतैं सोब्रह्मवेत्तापुरुष स्वर्गादिकतुच्छफलोंकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ जिसकारणतैं ताब्रह्मवेत्तापुरुषके ब्रह्मविद्याक रिकै अविद्याकृत सर्वकारकव्यवहार नाशकूंप्राप्तहूएहैंइति ॥ यहवार्त्ता वार्तिकग्रंथकेकर्त्ता सुरेश्वराचार्यनैंभी कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ (कारकव्यवहा रेहिशुद्धंवस्तुनवीक्ष्यते ॥ शुद्धेवस्तुनिसिद्धेचकारकव्यापृतिः कुतः) ॥ अर्थयह ॥ कर्त्ताकर्मादिककारकोंकेव्यवहारहुए आत्मारूपशुद्धवस्तु देख्याजावैनहीं ॥ और ताशुद्धवस्तुकेसाक्षात्कारहुए तिनकारकोंकाव्यापार होवैनहींइति ॥ और किसीटीकाकारनैंतौं इसश्लोकका यहव्याख्यानकरयाहै ॥ जैसे नाम वाक् मन इत्यादिकोंकेस्वरूपका नवाधकरिकै तिननामादिकोंविषे श्रुतिनैंब्रह्मदृष्टिका विधानकरयाहै तैसे ईहां श्रीभगवान्नैंभी अर्पणादिककारकोंकेस्वरूपका नबा धकरिकै तिनअर्पणादिककारकोंविषे ब्रह्मदृष्टिका विधानकरयाहैइति ॥ सोइसव्याख्यानकूं श्रीभाष्यकारोंनैं तात्पर्यकेनिश्चयके उपक्रमादिकोंके विरोधकरिकै तथाब्रह्मविद्याकेप्रकरणविषे संपत्उपासनामात्रकीप्राप्तिहीनहींहै इत्यादिकयुक्तियोंकरिकै विस्तारतैंखंडनकरयाहैइति ॥ २४ ॥ ❀ ॥ तहांपूर्व (ब्रह्मार्पणं) यामंत्ररूपश्लोकविषे सर्वत्रब्रह्मदृष्टिरूपसम्यक्दर्शनकीयज्ञरूपकरिकैस्तुति कथनकरी ॥ अब तिसीसम्यक्दर्शनकी पुनःस्तुतिकरणेवासतै श्रीभगवान् दूसरेयज्ञोंकाभी कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) दैवमेवापरेयज्ञंयोगिनःपर्युपासते ॥ ब्रह्माग्नावपरेयज्ञंयज्ञेनैवोपजुह्वति ॥ २५ ॥ दैवम् । एवं । अपरे । यज्ञं । योगिनः । पर्युपासते । ब्रह्माग्नौ । अपरे । यज्ञं । यज्ञेन । एव । उपजुह्वति ॥ २५ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन दूसरे कर्मीपुरुषतौं दैव यज्ञकूं हीं सर्वदा करेहैं और दूसरेतत्त्ववेत्तापुरुषतौं ब्रह्मरूपअग्निविषे आत्माकूं आत्मारूपकरिकै हीं होमकरेहैं ॥ २५ ॥ (इतिपदार्थः)

॥ टीका ॥ हेअर्जुन इंद्र अग्नि वायु आदिकदेवता जिसकर्मकरिकै संतुष्टकरयेजावैहै ताकानाम दैवहै ॥ ऐसाजो दर्शपूर्णमास ज्योतिष्टोम आदिकयज्ञहै तादैवयज्ञकूंहीं दूसरेकर्मीपुरुष सर्वदाकरेहैं ॥ तेकर्मीपुरुष ज्ञानयज्ञकूं कदाचित्भी करतेनहींइति ॥ इसप्रकार कर्मयज्ञकूंकथनकरिकै अंतःकरणकीशुद्धिद्वारा ताकर्मयज्ञकाफलभूत जोज्ञानयज्ञहै ताज्ञानयज्ञकूं श्रीभगवान् कथनकरेहै (ब्रह्माग्नौइति) हेअर्जुन सत्य ज्ञान अनंत आनंदरूप तथासर्वविशेषोंतैंरहित ऐसाजो तं त्पदार्थरूपब्रह्महै ॥ सोब्रह्महीं ज्ञातहुआ सर्वकर्मोंकादाहककहोणेतैं अग्निकीन्यांई अग्निरूपहै ॥ ऐसे तत्पदार्थब्रह्मरूपअग्निविषे दूसरेतत्त्ववेत्तासंन्यासी त्वंपदार्थरूपप्रत्य क्आत्माकूं अभिन्नरूपकरिकै होमकरेहैं ॥ अर्थात् तत्त्वंपदार्थरूपप्रत्यक्आत्माकूं ताब्रह्मरूपकरिकेदेखेहैं ॥ ईहां (यज्ञेनैव) यावचनविषेस्थित जो एव यह शब्दहै ॥ सोएवकार जीवब्रह्मकेभेदकीनिवृत्तिकरणेवासतेहै ॥ ईहां जीवब्रह्मके अभेदज्ञानकूं यज्ञरूपतैंसंपादनकरिकै (श्रेयान्द्रव्यमयाद्यज्ञाज्ज्ञानयज्ञः) इत्यादिकवचनोंकरि

के ताज्ञानयज्ञकी स्तुतिकरणेवासतै ताज्ञानयज्ञकेसाधनरूपयज्ञोंकेमध्यविषे श्रीभगवान्नैं सोज्ञानयज्ञ कथनकऱ्याहै इति ॥ २५ ॥ ❀ ॥ ॥ इतनैंकहणेक रिके श्रीभगवान्नैं मुख्ययज्ञ तथागौणयज्ञ यहदोयज्ञ कथनकरे ॥ अब वेदाविषे जितनैंकोश्रेयकेसाधन कथनकरेहैं ॥ तिनसर्व साधनोंकूं श्रीभगवान् यज्ञरूपकरिके प्रतिपादनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) श्रोत्रादीनींद्रियाण्यन्येसंयमाग्निषुजुह्वति ॥ शब्दादीन्विषयानन्येइंद्रियाग्निषुजुह्वति ॥ २६ ॥ श्रोत्रांदीनि । इंद्रियांणि । अन्ये । संयमाग्निषु । जुह्वति । शब्दादीन् । विषयान् । अन्ये । इंद्रियाग्निषु । जुह्वति॥(इतिप०)हेअर्जुनदूसरेपुरुषतौं श्रोत्रादिक इंद्रियोंकुं संयमरूपअग्नियोंविषे होमकरेहैं तथाकईअन्यपुरुषतौं शब्दादिक विषयोंकुं श्रोत्रादिकइंद्रियरूपअग्नियोंविषे होमकरेहैं ॥ ॥ २६ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन यम नियम आसन प्राणायाम याच्यारोंकूंसिद्धकरिके केवलप्रत्याहारपरायण जेकेईकअधिकारीपुरुषहैं ॥ तेअधिकारीपुरुषतौं श्रोत्रादिकपंच ज्ञानइंद्रियोंकूं आपणेआपणेशब्दादिकविषयोंतैं निवृत्तकरिके संयमरूपअग्निविषे होमकरेहैं ॥ ईहां (त्रयमेकत्रसंयमः) इसपतंजलिभगवानकेसूत्रविषे एकवस्तुकूंविषयकरणेहारे धारणाध्यान समाधि यातीनोंकूं संयम याशब्दकरिकेकथनकऱ्याहै ॥ तहां हृदयकमलादिकस्थानोंविषे चिरकालपर्यंत जोमनकास्थापनकरणा है ताकानाम धारणाहै ॥ इसप्रकार एकस्थानविषेधारणकऱ्याजोचित्तहै ॥ ताचित्तका उत्तरउत्तर विजातीयवृत्तियोंकृतव्यवधानसहित जोभगवत्आकार सजातीयवृत्तियोंकाप्रवाहहै ताकानाम ध्यानहै ॥ और ताचित्तका विजातीयवृत्तियोंकेव्यवधानतैंरहित केवल ताभगवत्आकार सजातीयवृत्तियोंकाजोप्रवाहहै ताकानाम समाधिहै ॥ सोसमाधिभी चित्तकीभूमिकावोंकेभेदकरिके दोयप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां एकतौं संप्रज्ञातनामासमाधि होवैहै ॥ और दूसरा असंप्रज्ञातनामासमाधि होवैहै ॥ तहां क्षिप्त मूढ विक्षिप्त एकाग्र निरुद्ध यहपंचभूमिका चित्तकीहोवैहैं ॥ भूमिकानाम अवस्थाविशेषकाहै ॥ तहां रागद्वेषादिकोंकेवशतैं विषयोंविषे अत्यन्तअभिनिवेशवाला जोचित्त है सोचित्त क्षिप्त कह्याजावैहै ॥ और निद्रातंद्रादिकोंकरिके ग्रस्तहुआजोचित्तहै सोचित्त मूढ कह्याजावैहै ॥ और सर्वकालविषे विषयोंविषे आसक्तहूआभी जोचित्त कदाचित् दैवयोगतैं ध्याननिष्ठभीहोवैहै सोचित्त ताक्षिप्ततैं श्रेष्ठहोणेतैं विक्षिप्त कह्याजावैहै ॥ तहां क्षिप्तचित्तविषे तथामूढचित्तविषे तासमाधिहोणेकी शंकाहीनहीं होवैहै और विक्षिप्तचित्तविषेतौं कादाचित्कसमाधि होवैभीहै ॥ परंतु विक्षेपकीप्रधानतातैं सोसमाधि योगपक्षविषे वर्त्ततानहीं ॥ किंतु जैसे महान्पवनकरिकेविक्षिप्तहुआ दीपक आपेहीं नाशहोइजावैहै ॥ तैसे सोकादाचित्कसमाधिभी आपेही नाशकूंप्राप्तहोवैहै

और ताचित्तविषे एकवस्तुकूंविषयकरणेहारी धारावाहिकवृत्तियोंका जोसामर्थ्यहै ताकानाम एकाग्रहै ॥ तहां सत्वगुणकीवृद्धिकरिकै तमोगुणकृत तंद्रादिरूपलयके अभावहुए आत्माकारवृत्तिहोवैहै ॥ साआत्माकारवृत्ति रजोगुणकृतचंचलतारूपविक्षेपकेअभावतैं एकवस्तुविषयकहींहोवैहै ॥ इसप्रकारशुद्धसत्वगुणकेहुएही सोचित्त एकाग्रहोवैहै ताएकाग्रचित्तविषेही सोसंप्रज्ञातनामासमाधिहोवैहै ॥ तासंप्रज्ञातनामासमाधिविषे सा ध्येयाकारवृत्तिभी प्रतीतहोवैहै ॥ और जिसकालविषे साध्येयाकारवृत्तिभी निरोधकूंप्राप्तहोवैहै तिसकालविषे सोचित्त निरुद्ध कह्याजावैहै ॥ तानिरुद्धचित्तविषे असंप्रज्ञातनामासमाधिहोवैहै ॥ यहहींअसंप्रज्ञातसमाधि सर्वसुखोंतैंविरक्तयोगीपुरुषका दृढभूमिकारूपहुआ धर्ममेघ यानामकरिकै कह्याजावैहैइति ॥ इसप्रकार अनेकरूपकरिकै तिनधारणादिकसंयमोंकाभेदहै ॥ यातैं (संयमाग्निषु) यावचनविषे श्रीभगवान्‌नैं बहुवचनकथनकरयाहै ॥ ऐसेसंयमरूपअग्नियोंविषे केईकअधिकारीपुरुष श्रोत्रादिकइंद्रियोंकूं होमकरेहैं ॥ अर्थात् धारणा ध्यान समाधि यातीनोंकीसिद्धिवास्तै श्रोत्रादिकइंद्रियोंकूं आपणेआपणेविषयोंतैं प्रत्याहरणकरेहैं ॥ तहां आपणेआपणेविषयोंतैं निग्रहकूंप्राप्तहुए तेइंद्रिय चित्तरूपहीहोवैहैं ॥ इसीकूंही शास्त्रविषे प्रत्याहार यानामकरिकैकथनकरेहैं ॥ तिसप्रत्याहारतैअनंतर विक्षेपके अभावतैं सोचित्त तिन धारणादिकोंकूंसंपादनकरेहै ॥ इतनैंकहणेकरिकै प्रत्याहार धारणा ध्यान समाधि यहच्यारिअंग योगके कथनकरये ॥ ताकरिकै समाधिअवस्थाविषे सर्वइंद्रियजन्यवृत्तियोंके निरोधकूं यज्ञरूपकरिकै वर्णनकरया ॥ अब तासमाधितैंव्युत्थानदशाविषे रागद्वेषतैंरहितहोइकै जोशास्त्रविहितविषयोंकाभोगहै सोभोगभी एकयज्ञरूपहीहै इस अर्थकूं श्रीभगवान् कथनकरेहै (शब्दादीन्विषयानन्येइंद्रियाग्निषुजुह्वतीति) हेअर्जुन तासमाधितैंव्युत्थानकूंप्राप्तहुए जेयोगीपुरुषहैं ॥ तेयोगीपुरुष रागद्वेषतैंरहितहोके ताव्युत्थानकालविषे श्रोत्रादिकइंद्रियोंकरिकै शास्त्रतैं अविरुद्धशब्दादिकविषयोंकूं ग्रहणकरेहैं ॥ यहहीं तिनशब्दादिकविषयोंका श्रोत्रादिकइंद्रियोंविषेहोमहै इति ॥ २६ ॥ ❀ ॥ तहां इसपूर्वश्लोकविषे पातंजलमतकेअनुसारकरिकै लयपूर्वकसमाधिरूप तथातासमाधितैंव्युत्थानदशारूप यादोनोंयज्ञोंकूं कथनकरया ॥ अब इसश्लोकविषे ब्रह्मवादीपुरुषोंके मतकेअनुसारकरिकै सर्वसाधनोंकाफलरूप तथाकारणकेनाशकरिकैव्युत्थानतैंरहित ऐसाजोनिरोधपूर्वकसमाधिहै ॥ तासमाधिरूपयज्ञांतरकूं श्रीभगवान् कथनकरेहैं ॥

(मू०श्लो०) सर्वाणींद्रियकर्माणिप्राणकर्माणिचापरे ॥ आत्मसंयमयोगाग्नौजुह्वतिज्ञानदीपिते ॥ २७ ॥ सर्वाणि । इंद्रियकर्माणि । प्राणकर्माणि । च । अपरे । आत्मसंयमयोगाग्नौ । जुह्वति । ज्ञानदीपिते ॥२७॥ (इतिपदच्छेदः) हेअर्जुन दूसरेकेईअधिकारीतों सर्व इंद्रियोंकेकर्मोंकुं तथा प्राणोंकेसर्वकर्मोंकूं ज्ञानकरिकैदीपित आत्मसंयमयोगरूपअग्निविषे होमकरेहै ॥ २७ ॥ (इतिपदार्थः)

॥ टीका ॥ तहां समाधि दोप्रकारकाहोवैहै ॥ एकतौ लयपूर्वक समाधिहोवैहै ॥ और दूसरा बाधपूर्वक समाधिहोवैहै ॥ तहां (तदनन्यत्वमारंभणशब्दादिभ्यः) इससूत्रविषे श्रीव्यासभगवान्नैं कारणतैंभिन्नकरिकै कार्यकाअसत्त्व कथनकऱ्याहै ॥ यातैं पंचीकृतपंचभूतोंकाकार्यजोव्यष्टिरूपहै सोव्यष्टिरूप समष्टिरूपविराट्का कार्यहोणेतैं ताविराट्रूपकारणतैं भिन्ननहींहै ॥ और सोसमष्टिरूपपंचीकृतपंचभूतात्मककार्यभी अपंचीकृतपंचमहाभूतोंकाकार्यरूपहोणेतैं तिनअपंचीकृतपंचमहा भूतरूपकारणतैं भिन्ननहींहै ॥ और तिनपंचभूतोंविषेभीशब्द स्पर्श रूप रस गंध यापंचगुणोंवाली जापृथिवीहै ॥ सापृथिवी शब्द स्पर्श रूप रस या च्यारिगुणों वालेजलकाकार्यहोणेतैं ताजलरूपकारणतैं भिन्ननहींहै ॥ और सोच्यारिगुणोंवालाजलभी शब्द स्पर्श रूप यातीनगुणोंवालेतेजकाकार्यहोणेतैं तातेजरूपकारणतैं भिन्ननहींहै ॥ और सोतीनगुणोंवालातेजभी शब्द स्पर्श यादोगुणोंवालेवायुकाकार्यहोणेतैं तावायुरूपकारणतैं भिन्ननहींहै ॥ और सोदोगुणोंवालावायुभी एकशब्दगुणवालेआकाशकाकार्यहोणेतैं ताआकाशरूपकारणतैं भिन्ननहींहै ॥ और सोशब्दगुणवालाआकाशभी (बहुस्यां) याश्रुतिनैंकथनकऱ्याजो परमेश्वरकासं कल्परूपअहंकारहै ताअहंकारकाकार्यहोणेतैं ताअहंकाररूपकारणतैं भिन्ननहींहै ॥ और सोसंकल्परूपअहंकारभी (तदैक्षत) याश्रुतिकरिकैकथनकऱ्याजो मायाई क्षणरूप महत्तत्त्वहै तामहत्तत्त्वकाकार्यहोणेतैं तामहत्तत्त्वरूपकारणतैं भिन्ननहींहै ॥ और सोईक्षणरूपमहत्तत्त्वभी मायाकापरिणामहोणेतैं तामायारूपकारणतैं भिन्न नहींहै ॥ और सोमायारूपकारणभी जडरूपहोणेतैं चैतन्यरूपब्रह्मविषे अध्यस्तहै ॥ यातैं ताचैतन्यब्रह्मतैं सोमायारूपकारण भिन्ननहींहै ॥ इसप्रकार निरंतर चिंतनकरिकै कार्यकारणरूपसर्वप्रपंचकेविद्यमानहुएभी जोचैतन्यब्रह्ममात्रविषयकसमाधिहै ॥ सोसमाधि लयपूर्वकसमाधि कह्याजावैहै ॥ तालयपूर्वकसमाधिविषे ताअधिकारीपुरुषकूं तत्त्वमसिआदिकवेदांतमहावाक्योंकेअर्थकाज्ञानहैनहीं ॥ यातैं कार्यसहितअविद्याकानाशहुआनहीं ॥ किंतु साअविद्या तालयचिंतनकाल विषे विद्यमानहींहै ॥ ताअविद्याकेविद्यमानहुए ताअविद्यारूपकारणतैं पुनः संसाररूपकार्यकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ यातैं यहलयपूर्वकसमाधि सुषुप्तिकीन्याई सबीजस माधिहीहै ॥ मुख्य निर्बीजसमाधिहैनहीं ॥ और जिसकालविषे तत्त्वमसिआदिकमहावाक्यजन्यसाक्षात्कारकरिकै ताअविद्याकीनिवृत्तिहोवैहै तथा उत्पत्तिक्रमतैं ताअविद्याके महत्तत्त्वादिक सर्वकार्योंकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ और तत्त्वसाक्षात्कारकरिकै एकवार नाशकूंप्राप्तहुई साअनादिअविद्या पुनः कदाचित्भी उत्थानकूं प्राप्तहोवैनहीं तथा ताअविद्याकाकार्यभी पुनः उत्थानकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ तिसकालविषे ताविद्वान्पुरुषकूं मुख्य निर्बीज बाधपूर्वकसमाधिहोवैहै ॥ सोबाधपूर्वक समाधिहीं इसश्लोककरिकै श्रीभगवाननने कथनकरिताहै ॥ सोप्रकार दिखावैहैं ॥ तहां अंतर बाह्य याभेदकरिकै इंद्रिय दोप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां श्रोत्र त्वक् चक्षु रसन घ्राण यहपंचज्ञानइंद्रिय तथा वाक् पाणि पाद उपस्थ पायु यहपंचकर्मइंद्रिय यहदशइंद्रियतौं बाह्यइंद्रिय कहेजावैहै ॥ और मन बुद्धि यह दोनों अंतर

इंद्रिय कहेजावैहैं ॥ तिनबाह्यअंतर सर्वइंद्रियोंके जितनेकी स्थूलरूप तथासंस्काररूप कर्महैं ॥ तहां शब्दकाश्रवण श्रोत्रइंद्रियका कर्महै ॥ और स्पर्शकाग्रहण त्वकूइंद्रियका कर्महै ॥ और रूपकादर्शन चक्षुइंद्रियका कर्महै॥ और रसकाग्रहण रसनइंद्रियका कर्महै॥ और गंधकाग्रहण घ्राणइंद्रियका कर्महै ॥ और वचनकाउच्चारण वाक्इंद्रियका कर्महै ॥ और वस्तुकाग्रहण पाणिइंद्रियका कर्महै ॥ और गमनआगमन पादइंद्रियका कर्महै ॥ और विषयानंद उपस्थइंद्रियका कर्महै ॥ और मलकापरित्याग पायुइंद्रियका कर्महै ॥ और संकल्प मनका कर्महै ॥ और निश्चय बुद्धिका कर्महै इति ॥ इसप्रकार प्राण अपान व्यान उदान समान यापंचप्राणोंके जितनेंकीकर्महैं ॥ तहां बहिर्गमन प्राणका कर्महै ॥ और अधोगमन अपानका कर्महै ॥ और हस्तपादादिकअंगोंका आकुंचनप्रसारणआदिक व्यानका कर्महै ॥ और भोजनकरयेहुएअन्नजलकासमानकरणा समानका कर्महै ॥ और ऊर्ध्वगमन उदानका कर्महै ॥ इतनैंकरिकै पंचज्ञानइंद्रिय पंचकर्मइंद्रिय पंचप्राण दोमनबुद्धि यासप्तदशतत्वोंकासमुदायरूपलिंगशरीर कथनकरचा ॥ सोसूक्ष्मशरीरभी ईहां सूक्ष्मभूतोंकासमष्टिरूप हिरण्यगर्भहीं विवक्षितहै ॥ इसी अर्थकेजनावणेवासतैं श्रीभगवान्नैं तिनइंद्रियोंकेकर्मोंका तथाप्राणोंकेकर्मोंका (सर्वाणि) यहविशेषण कथनकऱ्याहै ॥ ऐसेसप्तदशतत्त्वरूपलिंगशरीरकूं अन्यकेई विद्वान्पुरुष आत्मसंयमयोगाग्निविषे होमकरेहैं ॥ तहां आत्माकूंविषयकरणेहाराजोधारणाध्यान संप्रज्ञातसमाधिरूप संयमहै तासंयमकेपरिपाकहुएतैं सिद्धभयाजो निरोधसमाधिरूपयोगहै ताकानाम आत्मसंयमयोगहै ॥ इसीनिरोधसमाधिरूपयोगकूं पतंजलिभगवान्भी योगसूत्रोंविषे कथनकरताभयाहै ॥ तहां सूत्रं ॥ (व्युत्थाननिरोधसंस्कारयोरभिभवप्रादुर्भावौनिरोधक्षणचित्तान्वयोनिरोधपरिणामः इति) ॥ अर्थयह ॥ क्षिप्त मूढ विक्षिप्त यातीनभूमिकावोंकानाम व्युत्थानहै ॥ ताव्युत्थानकेसंस्कार समाधिकेविरोधीहोवैहैं ॥ तेविरोधिसंस्कारतौं योगीपुरुषके प्रयत्नकरिकै दिनदिनविषे तथाक्षणक्षणविषे अभिभवकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ और तिनव्युत्थानसंस्कारोंकेविरोधीरूप जेनिरोधकेसंस्कारहैं तेनिरोधकेसंस्कार दिनदिनविषे तथाक्षणक्षणविषे प्रादुर्भावकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तिसतैंअनंतर निरोधमात्रक्षणकेसाथि जो चित्तकाअन्वयहै सोनिरोधपरिणाम कह्याजावैहै इति ॥ इसीनिरोधसमाधिकेफलकूंभी सोपतंजलिभगवान् योगसूत्रोंविषे कथनकरताभयाहै ॥ तहांसूत्रं ॥ (तस्य प्रशांतवाहितासंस्कारादिति) ॥ अर्थयह ॥ तानिरोधपरिणामतैंअनंतर निरोधसंस्कारोंकीदृढताकरिकै तिसचित्तकूं प्रशांतवाहिता होवैहै ॥ अर्थात्तमोगुण रजोगुण यादोनोंगुणोंकेनाशहुएतैंअनंतर लयविशेषदोषतैंरहितपणेकरिकै शुद्धसत्त्वरूपजोचित्तहै सोचित्त प्रशांत कह्याजावैहै ॥ और पूर्वपूर्व ताप्रशमकेसंस्कारोंकी बाहुल्यताकरिकै जोतिसतैंभी अधिकताहै ताकूं प्रशांतवाहिता कहेहैंइति ॥ तानिरोधसमाधिकेकारणकूंभी सोपतंजलिभगवान् योगसूत्रोंविषे कथनकरताभयाहै ॥ तहांसूत्रं ॥ (विरामप्रत्ययाभ्यासपूर्वः संस्कारशेषोन्यः इति) ॥ अर्थयह ॥ वृत्तिकीउपरामताद्रूपजोविरामहै ताविरामकाजोप्रत्ययहै क्या कारणहै अर्थात्

तावृत्तिकीउपरामतावासतैं जोपुरुषकाप्रयत्नहै तापुरुषप्रयत्नकाजो पुनःपुनःसंपादनरूप अभ्यासहै ॥ ताअभ्यासकरिकेजन्य संप्रज्ञातसमाधितैंविलक्षण असंप्रज्ञात समाधिहोवैहैइति ॥ इसप्रकारका निरोधसमाधिरूप जोआत्मसंयमयोगहै सोईहीं अग्निरूपहै ॥ कैसाहैसो आत्मसंयमयोगरूपअग्नि ॥ ज्ञानकरिकैदीपितहै ॥ अर्थात् वेदांतवाक्यकरिकेजन्यजो ब्रह्मात्मऐक्यसाक्षात्कारहै तासाक्षात्कारकरिकै कार्यसहितअविद्याकेनाशद्वाराअत्यंतउज्ज्वालितहै ॥ ऐसे ज्ञानकरिकैदीपित आत्मसंयम योगाग्निरूप बाधपूर्वकसमाधिविषे अन्यकेईविद्वान्पुरुष समष्टिलिंगशरीरकूं होमकरेहैं ॥ अर्थात् तासमाधिविषे तालिंगशरीरकूं प्रविलापनकरेहैंइति ॥ ईहां (सर्वाणि आत्मज्ञानदीपिते) यातीनविशेषणोंकेकहणेकरिकै तथा (अग्नौ) याएकवचनकेकहणेकरिकै पूर्वकथनकरयेहुएयज्ञतैं इसयज्ञविषेविलक्षणता सूचनकरी ॥ यातैं ईहांपुनरुक्तिदोषकीप्राप्तिहोवैनहीं इति ॥ २७ ॥ ❁ ॥ तहांपूर्व (दैवमेवापरेयज्ञम्) इत्यादिकतीनश्लोकोंकरिकै श्रीभगवान्नैं पंचयज्ञोंकूंकथनकरया ॥ अब इसएकहींश्लोककरिकै श्रीभगवान् षट्यज्ञोंकूं कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) द्रव्ययज्ञास्तपोयज्ञायोगयज्ञास्तथापरे॥स्वाध्यायज्ञानयज्ञाश्चयतयःसंशितव्रताः॥२८॥द्रव्ययज्ञाः। तपोयज्ञाः।योगयज्ञाः। तथा।अपरे।स्वाध्यायज्ञानयज्ञाः। च। यतयः। संशितव्रताः॥ २८ ॥ (इतिपदच्छेदः) हेअर्जुन केईक अधिकारीपुरुष द्रव्यकोत्याग रूपयज्ञकूंकरेहै तथाकेईकअधिकारीपुरुष तपरूपयज्ञकुं करेहै तथा केईकअधिकारीपुरुष योगरूपयज्ञकूंकरेहै तथा केईकअधिकारी पुरुष वेदाभ्यास रूपयज्ञकूंतथाज्ञानरूपयज्ञकूंकरेहैं तथाकेईक यत्नशीलपुरुष अत्यंतदृढव्रतरूपयज्ञकूंकरेहैं ॥ २८ ॥(इतिपदार्थः)

॥ टीका ॥ हेअर्जुन शास्त्रकीविधिप्रमाण जोद्रव्यकात्यागहै सोद्रव्यकात्यागहींहैयज्ञरूपजिनोंका तेअधिकारीपुरुष द्रव्ययज्ञा कहेजावैहैं ॥ अर्थात् पूर्तदत्त नामा स्मार्त्तकर्मकूंकरणेहारेपुरुष द्रव्ययज्ञा कहेजावैहैं तहां पूर्त दत्त यादोनोंकर्मोंकास्वरूप स्मृतिविषे यहकह्याहै ॥ तहां श्लोक ॥ (वापीकूपतडागादिदेवता यतनानिच ॥ अन्नप्रदानमारामः पूर्तमित्यभिधीयते ॥ शरणागतसंत्राणंभूतानांचाप्यहिंसनम् ॥ बर्हिर्वेदिचयद्दानंदत्तमित्यभिधीयते ॥) अर्थयह ॥ बावडी बनावणी तथाकूप बनावणा तथातलाव बनावणा तथाविष्णुशिवादिकदेवतावोंकेमंदिर बनावणे तथाक्षुधातुरप्राणियोंकूं अन्नप्रदानकरणा तथालोकोंकेनिवा सकरणेवास्तैं धर्मशाला बगीचा बनावणा ॥ इत्यादिकसर्वकर्म पूर्त्त यानामकरिकैकहेजावैहैंइति ॥ और शरणागतप्राणियोंकीरक्षाकरणी तथा किसीभी भूतप्राणीकीहिंसानहींकरणी तथावेदीतैंबाह्यजोदानहैं इत्यादिकसर्वकर्म दत्त यानामकरिकैकहेजावैहै इति ॥ इसप्रकारके पूर्त दत्त नामा स्मार्त्तकर्मोंकूंकरणेहारे पुरुष द्रव्ययज्ञा कहेजावैहैं ॥ और इष्टनामा जोश्रौतकर्महै ताश्रौतकर्मकूंतौं (दैवमेवापरेयज्ञं) यावचनकरिकै पूर्वकथन करिआयेहैं ॥ और जोदान वेदिकेअं

तर दीयाजावैहै सोदानभी तिसश्रौतकर्मकेअंतर्भूतहींहैइति ॥ १ ॥ और कृच्छ्रचांद्रायणादिरूपजोतपहै सोतपहींहैयज्ञरूपजिनोंका तेअधिकारीपुरुष तपोयज्ञा कहेजावैहैं ॥ अर्थात् केईकतपस्वीपुरुष कृच्छ्रचांद्रायणादिकतपरूपयज्ञकूंहींकरेहैं ॥ २ ॥ और चित्तकीवृत्तिकानिरोधरूप जोअष्टांगयोगहै सो अष्टांगयोग हींहैयज्ञरूपजिनोंका तेअधिकारीपुरुष योगयज्ञाकहेजावैहैं ॥ अर्थात् केईकअधिकारीपुरुष अष्टांगयोगरूपयज्ञकूंहीकरेहैं ॥ तहां यम १ नियम २ आसन ३ प्राणायाम ४ प्रत्याहार ५ धारणा ६ ध्यान ७ समाधि ८ यहयोगकेअष्टअंगकहेजावैहैं ॥ तहां प्रत्याहारकास्वरूपतौं (श्रोत्रादीनींद्रियाण्यन्ये) इसवचनविषे पूर्वक थनकरिआयेहैं ॥ और धारणा ध्यान समाधि यातीनोंकास्वरूपतौं (आत्मसंयमयोगाग्नौ) इसवचनविषे पूर्वकथनकरिआयेहैं ॥ और प्राणायामकास्वरूपतौं (अपानेजुह्वतिप्राणम्) इसअगलेश्लोकविषे कथनकरैंगे ॥ यातैं अब यम नियम आसन यातीनोंकास्वरूप कथनकरेहैं ॥ तहा अहिंसा १ सत्य २ अस्तेय ३ ब्रह्मचर्य ४ अपरिग्रह ५ यहपंचप्रकारका यमहोवैहै ॥ तथा शौच १ संतोष २ तप ३ स्वाध्याय ४ ईश्वरप्रणिधान ५ यहपंचप्रकारका नियमहोवैहै ॥ और आसनतौ पद्मक स्वस्तिक भद्र इत्यादिकभेदकरिकै अनेकप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां शास्त्रकरिकैअप्रतिपादित जोकिसीप्राणीकावधकरणाहै ताकानाम हिंसाहै ॥ ईहां शास्त्रकरिकैअप्रतिपादित इतनैंकहणेकरिकै (अग्नीषोमीयंपशुमालभेत) इत्यादिकशास्त्रनैं विधानकऱ्या जो यज्ञविषेपशुकावधहै ताके विषे हिंसापणेकी निवृत्तिकरी ॥ साहिंसाभी कृत कारित अनुमोदितयाभेदकरिकै तीनप्रकारकीहोवैहै ॥ तहां जाहिंसा इसपुरुषने आपेहीं करीती है ताहिंसाकूं कृत कहेहैं ॥ और जाहिंसा इसपुरुषनैं किसी अन्यद्वारा कराईतीहै ताहिंसाकूं कारित कहेहैं ॥ और इसपुरुषनै जिसहिंसाकी प्रशंसा करीतीहै ताहिंसाकूं अनुमोदित कहेहैं ॥ इसप्रकारकी हिंसातैं निवृत्तिरूप जोउपरामताहै ताकानाम अहिंसाहै ॥ १ ॥ और अयथार्थभाषणकरणा तथा नहींहननकरणेयोग्यप्रा णीकीहिंसाकेअनुकूलसत्यभाषणकरणा तादोनोंकानाममिथ्याभाषणहै ॥ तादोनोंप्रकारके मिथ्याभाषणतैंनिवृत्तिरूपजाउपरामताहै ताकानाम सत्यहै ॥ २ ॥ और शास्त्रकरिकैनहींप्रतिपादितमार्गकरिकै जोपराएद्रव्यका स्वीकारकरणाहै याकानाम स्तेयहै ॥ तास्तेयतैं निवृत्तिरूप जाउपरामताहै ताकानाम अस्तेयहै ॥ ३ ॥ और शास्त्रकरिकैनिषिद्ध जोस्त्रीपुरुषका संबंधरूप मैथुनहै ॥ तामैथुनतैंनिवृत्तिरूप जाउपरामताहै ताकानाम ब्रह्मचर्यहै ॥ ४ ॥ और शास्त्रनिषि द्धमार्गकरिकै शरीरयात्राकेनिर्वाहकभोगकेसाधनोंतैं जोअधिकभोगसाधनोंकास्वीकारकरणाहै याकानाम परिग्रहहै॥ तापरिग्रहतैंनिवृत्तिरूप जाउपरामताहै ताकानाम अपरिग्रहहै ॥ ५ ॥ इतिपंचयमनिरूपणं ॥ अब पंचप्रकारकेनियमकानिरूपणकरेहैं ॥ तहां शौच दोप्रकारकाहोवैहै ॥ एकतौ बाह्यशौचहोवैहै ॥ और दूसरा अंतरशौचहोवैहै तहांमृत्तिकाजलादिकोंकरिकै शरीरका प्रक्षालनकरणा तथा हित मित मेध्य अन्नादिकोंकोभोजनकरणा यह बाह्यशौच कह्याजावैहै ॥ और मैत्री करुणा मुदिता

उपेक्षा इत्यादिकगुणोंकरिकै चित्तके मदमानादिरूपमलकीनिवृत्तिकरणी यह अंतरशौच कह्याजावैहै ॥ तहां सुखीप्राणीयोंविषे मित्रभाव करणा याकानाम मैत्री हैं ॥ और दुःखीप्राणीयोंऊपरि कृपाकरणी याकानाम करुणाहै ॥ और पुण्यवान्पुरुषोंकूंदेखिकरिकै प्रसन्नहोणा याकानाम मुदिताहै ॥ और पापीदुष्टजनोंके संगका परित्यागकरणा याकानाम उपेक्षाहै ॥ १ ॥ और आपणेसमीपवियमान जेभोगकेसाधनहैं ॥ तिनोंतैंअधिक भोगसाधनोंकेनहींसंपादनकरणेकीइच्छा रूप जोचित्तकीवृत्तिविशेषहै ताकानाम संतोषहै ॥ २ ॥ और क्षुधातृषा शीतउष्ण इत्यादिकद्वंद्वधर्मोंका सहनकरणा तथाकाष्ठमौन आकारमौन इत्यादिकजेव्रतहैं इनसर्वोंकानाम तपहै ॥ तहां हस्तादिकअंगोंकीचेष्टाकरिकैभी आपणेअभिप्रायकूं नहींप्रगटकरणा याकानाम काष्ठमौनहै ॥ और तिनहस्तादिक अंगोंकीचेष्टाकरिकैतौं आपणेअभिप्रायकूं प्रगटकरणा परंतु मुखसेवचनउच्चारणकरणानहीं याकानाम आकारमौनहै ॥ ३ ॥ और मोक्षकेप्रतिपादक वेदांत शास्त्रका जोअध्ययनहै ॥ अथवाप्रणवमंत्रकाजोजपहै याकानाम स्वाध्यायहै ॥ ४ ॥ और तिसतिसफलकीइच्छातैंरहितहोइके सर्वकर्मोंका परमगुरुरूपईश्वरविषे जोअर्पणकरणाहै ॥ याकानाम ईश्वरप्रणिधानहै ॥ ५ ॥ इतिपंचनियमनिरूपणम् ॥ यहयोगशास्त्रकीरीतिसैं पंचप्रकारके यमनियमका निरूपणकरयाहै ॥ औरपुरा णोंविषेतौं स्तेयकर्मनिवृत्ति १ करुणा २ आर्जव ३ शांति ४ शौच ५ धृति६ मिताहार ७ सत्यभाषण ८ जीवाहिंसन ९ ब्रह्मचर्य १० इसभेदकरिकै दशप्रकारकेयमकथन करेहैं ॥ और आस्तिकत्व १ हर्ष २ तप ३ सुरार्चन ४ दान ५ लज्जा ६ सद्ज्ञान ७ होम ८ सत्श्रवण ९ जप १० याभेदकरिकै दशप्रकारकेनियम कथन करेहैं ॥ तेअधिकपंचयमनियम पूर्वउक्तपंचयमनियमोंकेअंतर्भूतहींहैं ॥ इसप्रकारके यमनियमादिकअष्टअंगोंकेअभ्यासपरायण जेअधिकारीपुरुषहैं ॥ तेअधि कारीपुरुष योगयज्ञा कहेजावैहैं ॥ ३ ॥ और जेअधिकारीपुरुष विधिपूर्वक गुरुकेसमीपनिवासकरिकै ऋगादिकवेदोंका अभ्यासकरेहैं ॥ तेअधिकारीपुरुष स्वाध्याययज्ञा कहेजावैहैं ॥ अर्थात् केईकअधिकारीपुरुष वेदाभ्यासरूपयज्ञकूंहीं करेहैं ॥ ४ ॥ और जेअधिकारीपुरुष अनेकप्रकारकीयुक्तियोंकरिकै वेदकेअर्थकानिश्चयकरेहैं तेअधिकारीपुरुष ज्ञानयज्ञा कहेजावैहैं ॥ अर्थात् केईकअधिकारीपुरुष वेदकेअर्थकानिश्चयरूपयज्ञकूंहींकरेहैं ॥ ५ ॥ अब यज्ञां तरका कथनकरेहैं (यतयःसंशितव्रताःइति) हेअर्जुन केईक यत्नशील अधिकारीपुरुषतौं संशितव्रतरूपयज्ञकूंहींकरेहैं ॥ तहां भलीप्रकारतैंअत्यंतदृढहुएहैं अहिंसादिकव्रत जिनोंके तेअधिकारीपुरुष संशितव्रता कहेजावैहैं ॥ यहवार्ता भगवान्पतंजलिनैंभी योगशास्त्रविषे कथनकरीहै ॥ तहांसूत्रं ॥ (जाति देशकालसमयानवच्छिन्नाःसार्वभौमामहाव्रताःइति ॥) अर्थयह ॥ जेपूर्वअहिंसा सत्य अस्तेय ब्रह्मचर्य अपरिग्रह यहपंचयम कथनकरेथे ॥ तेअहिंसादिक पंचयमहीं जाति देश काल समय इनच्यारोंकरिकैअनवच्छिन्नहोणेतैं अत्यंतदृढभूमिकारूपहुए महाव्रत याशब्दकरिकैकहेजावेहैंइति ॥ अब तिनअहिंसा

॥९०॥

दिकपंचयमोंविषे जातिदेशादिकोंकरिकैअनवच्छिन्नता स्पष्टकरणेवास्ते प्रथम तिनअहिंसादिकोंविषे जातिदेशादिकोंकरिकैअवच्छिन्नता निरूपणकरेहैं ॥ तहां एकमृगकूंछोडिके दूसरे गौअश्वादिकप्राणीयोंकूं मैं कदाचित्भी हनन नहींकरौंगा ॥ याप्रकारकासंकल्प मनविषेकरिकै जोतिनगौअश्वादिकप्राणीयोंकीअहिंसाहै सा अहिंसा जातिअवच्छिन्न कहीजावैहै ॥ और तीर्थविषे मैं किसीभीजीवकीहिंसा नहींकरौंगा ॥ याप्रकारकासंकल्प मनविषे कारिकै जोतीर्थमात्रविषे किसीप्राणीकीहिंसानहींकरणीहै साअहिंसा देशावच्छिन्न कहीजावैहै ॥ और एकादशीविषे तथाअन्यकिसीपवित्रदिनविषे मैं किसीभीजीवकीहिंसा नहींकरौंगा ॥ याप्रकारकासंकल्प मनविषे करिकै जोतिन एकादशी आदिकोंविषे किसीभीजीवकीहिंसा नहींकरणीहै साअहिंसा कालावच्छिन्न कहीजावैहै ॥ और देवताब्राह्मणोंकेप्रयोजनतैंविना अथवा युद्धतैंविना मैं किसीभीजीवकीहिंसा नहींकरौंगा याप्रकारकासंकल्प मनविषे करिकै जो तिसप्रयोजनतैंविना किसीभीजीवकीहिंसा नहींकरणीहै ॥ साअहिंसा समयावच्छिन्न कहीजावैहै ॥ ईहां समयनाम प्रयोजन विशेषकाहैइति ॥ इसप्रकार विवाहादिकप्रयोजनतैंविना मैं मिथ्याभाषण नहींकरौंगा ॥ याप्रकारकासंकल्प मनविषे करिकै जोविवाहादिप्रयोजनतैंविना मिथ्याभाषणकापरित्यागरूप सत्यहै सोसत्य समयावच्छिन्न कह्याजावैहै ॥ इसप्रकार आपतकालतैंविना क्षुधाकेनिवर्त्तकपदार्थतैंअतिरिक्तपदार्थकी मैं चौरीनहींकरौंगा ॥ याप्रकारकासंकल्प मनविषेकरिकै जो चोरीतैंनिवृत्तिरूप अस्तेयहै सोअस्तेय कालावच्छिन्न कह्याजावैहै ॥ इसप्रकार ऋतुकालतैंभिन्नकालविषे मैं आपणीस्त्रीविषे गमननहींकरौंगा ॥ याप्रकारकासंकल्प मनविषे करिकै जो ऋतुकालतैंभिन्नकालविषेमैथुनकापरित्यागरूप ब्रह्मचर्यहै सोब्रह्मचर्य कालावच्छिन्न कह्याजावैहै ॥ इसप्रकार गुरुदेवता आदिकोंकेप्रयोजनतैंविना मैं अधिकपदार्थोंकापरिग्रह नहींकरौंगा ॥ याप्रकारकासंकल्प मनविषे करिकै जोअधिकपदार्थोंके परिग्रहतैंनिवृत्तिरूप अपरिग्रहहै सोअपरिग्रह समयावच्छिन्न कह्याजावैहै ॥ इसरीतिसैं अहिंसा सत्य अस्तेय ब्रह्मचर्य अपरिग्रह यापांचोंयमोंविषे यथायोग्य जातिअवच्छिन्नता तथादेशावच्छिन्नता तथाकालावच्छिन्नता तथासमयावच्छिन्नता जानिलेणी ॥ तहां जाति देश काल समय याच्यारोअवच्छेदकोंकीनिवृत्तिकरिकै जिसकालविषे तेअहिंसादिकपंचयम सर्वजातीयोंविषे तथा सर्वदेशों विषे तथा सर्वकालोंविषे तथासर्वप्रयोजनोंविषे होवैहै ॥ अर्थात् किसीदेशविषे किसीकालविषे किसीप्रयोजनवास्ते किसीभीजीवकी मैं हिंसाकरौंगानहीं तथामिथ्याभाषण तथाचोरी तथामैथुन तथापरिग्रह करौंगानहीं ॥ याप्रकराकेसंकल्पपूर्वक जवी तेअहिंसादिकपंचयम निरवच्छिन्न सिद्धहोवैहै ॥ तिसकालविषे तेअहिंसादिकपंचयम महाव्रत यानामकरिकैकहेजावैहैं इसप्रकार काष्ठमौनादिकव्रतभीजानिलेणे ॥ इसप्रकार अहिंसादिकव्रतकी दृढताकेहुए नरककेद्वारभूत काम क्रोध लोभ मोह याच्यारोंकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ तहां अहिंसाकरिकै तथा क्षमाकरिके क्रोधकीनिवृत्तिहोवैहै और ब्रह्मचर्य

करिकै तथा वस्तुकेविचारकरिकै कामकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ और अस्तेयअपरिग्रहरूप संतोषकरिकै लोभकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ और सत्यकरिकै तथायथार्थज्ञानरूपविवेककरिकै मोहकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ इसप्रकार तिनकामक्रोधादिकोंकेनिवृत्तहुएतैंअनंतर तिनकामक्रोधादिकोंकेकार्यरूप सर्वअनर्थोंकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ तिन अहिंसादिकोंके दूसरेभीअनेकफल सकामपुरुषोंवास्तै योगशास्त्रविषे कथनकरेहैं इति ॥ २८ ॥ ❀ ॥ अब प्राणायामरूपयज्ञकूं सार्धश्लोककरिकै श्रीभगवान् कथनकरेहैं ॥

(मू० श्लो०)अपानेजुह्वतिप्राणंप्राणेपानंतथापरे ॥ प्राणापानगतीरुद्ध्वाप्राणायामपरायणाः ॥ २९ ॥ अपरेनियताहाराःप्राणान्प्राणेषुजुह्वति॥अपाने । जुह्वति। प्राणं । प्राणे । अपानं तथा। अपरे । प्राणापानगती । रुद्ध्वा । प्राणायामपरायणाः। अपरे। नियताहाराः। प्राणान्। प्राणेषु ।जुह्वति ॥ २९ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेअर्जुन अन्यअधिकारीपुरुषतो अपानविषे प्राणकूं होमकरेहैं तथा प्राणविषेअपानकूं होमकरेहैं और नियतआहारवाले दूसरेअधिकारीजनतो प्राणअपानकीगतिकूं रोकिकैकरिकै प्राणायामपरायणहुए प्राणोंविषे ज्ञानकर्मइंद्रियोंकूं होमकरेहै ॥ २९ ॥ (इतिपदार्थः)

॥ टीका ॥ हेअर्जुन केईकअधिकारीपुरुषतो अपानकीप्रश्वासरूपवृत्तिविषे प्राणकीश्वासरूपवृत्तिकूं होमकरेहैं ॥ अर्थात् बाह्यवायुका शरीरकेभीतर प्रवेशकरिकैं पूरकनामाप्राणायामकूंकरेहैं ॥ तथा ते अधिकारीपुरुष प्राणकीश्वासरूपवृत्तिविषे अपानकीप्रश्वासरूपवृत्तिकूं होमकरेहैं ॥ अर्थात् शरीरकेभीतरलेवायुकूं बाह्यदेशविषेनिर्गमनकरिकै रेचकनामाप्राणायामकूंकरेहैं ॥ ईहां पूरक रेचक यादोप्रकारकेप्राणायामकेकथनकरिकै श्रीभगवान्ने दोप्रकारकेकुंभककाभी अर्थतैंहीकथनकऱ्या ॥ जिसकारणतैं तापूरकरेचकतैंविना सोदोप्रकारकाकुंभक सिद्धहोवैनहीं ॥ तहां अंतर कुंभक बाह्यकुंभक याभेदकरिकै सोकुंभक दोप्रकारकाहोवैहैतहां यथाशक्तिपरिमाण बाह्यवायुकूं नासिकाद्वारा शरीरकेभीतर पूर्णकरिकै तिसतेअनंतर जोश्वासप्रश्वासका निरोधकऱ्याजावैहै ॥ सोअंतरकुंभक कह्याजावैहै ॥ और यथाशक्तिपरिमाणशरीरकेअंतरलेवायुका तानासिकाद्वारा बाह्यपरित्यागकरिकै तिसतैंअनंतर जोश्वासप्रश्वासकानिरोध कऱ्याजावैहै ॥ सो बाह्यकुंभक कह्याजावैहैइति ॥ अब पूर्वकथनकऱ्ये हुए पूरक रेचक कुंभक यातीनप्रकारकेप्राणायामकेअनुवादपूर्वक चतुर्थकुंभककूं श्रीभगवान् कथनकरेहैं (प्राणापानगतीरुद्ध्वाइति) हेअर्जुन मुखनासिकाद्वारा शरीरकेअंतरलेवायुका जो बाह्यनिर्गमनहै ताकानाम श्वासहै ॥ सोश्वासतौं प्राणकीगतिहै ॥ और बाह्यनिकसेहुएवायुका जो तामुखनासिकाद्वारा शरीरकेभीतरप्रवेशहै ताकानाम प्रश्वासहै ॥ सोप्रश्वास अपानकीगतिहै तहां पूरकविषेतौं प्राणकेश्वासरूपगतिका निरोधहोवैहै ॥और रेचकविषे

अपानके प्रश्वासरूपगतिका निरोधहोवैहै ॥ औरकुंभकविषेतौ तिनदोनोंगतियोंका निरोधहोवैहै ॥ इसप्रकार क्रमकरिकै तथाएकहींकालविषे ताप्राणअपानके श्वास प्रश्वास रूपगतिकूं रोकिकरिकै त्रिविधप्राणायामपरायणहुए तथाआहारनियमादिक योगकेसाधनोंकरिकैविशिष्टहुए केईकअधिकारीजन बाह्यअंतरकुंभकककेअभ्यास करिकै निग्रहकऱ्येहुएप्राणोंविषे ज्ञानकर्मइंद्रियरूपप्राणोंकूं होमकरेहैं ॥ अर्थात् चतुर्थकुंभकके अभ्यासकरिकै तिनइंद्रियोंकूं निगृहीतप्राणोंविषे लयकरेहैं इति ॥ यह सर्व अर्थ भगवान्पतंजलिने योगसूत्रोंविषे संक्षेपकरिकै तथाविस्तारकरिकै कथनकऱ्याहै ॥ तहां संक्षेपसूत्रं (तस्मिन्सतिश्वासप्रश्वासयो र्गतिविच्छेदलक्षणःप्राणायामइति) ॥ अर्थयह ॥ तिसआसनकेस्थिरहुए प्राणायाम करणेकूंयोग्यहै ॥ कैसाहैसोप्राणायाम ॥ श्वासप्रश्वासकीगतिका निरो धरूपहै अर्थात् प्राण अपान यादोनोंके यथाक्रमतैं धर्मरूपजे श्वास प्रश्वास यहदोनोंहैं ताश्वासप्रश्वासदोनोंकी पुरुषप्रयत्नतैंविनाहीं जा स्वाभाविक चलनरूपगतिहै तागतिका क्रमकरिकै तथाएकहींकालविषे जोपुरुषप्रयत्नविशेषकरिकै निरोधहै सोनिरोधहैस्वरूपजिसका ताकूं प्राणायामकहेहैंइति ॥ इससं क्षिप्तअर्थकूं अब विस्तारतेकथनकरेहैं ॥ तहांसूत्रम् ॥ (बाह्याभ्यंतरस्तंभवृत्तिर्देशकालसंख्याभिःपरिदृष्टोदीर्घःसूक्ष्मइति) अर्थयह ॥ सोप्राणायाम बाह्यवृत्ति आभ्यंतरवृत्ति स्तंभवृत्ति तुरीय याभेदकरिकैच्यारिप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां बाह्यगतिकानिरोधरूपहोणेतैं पूरक बाह्यवृत्ति कह्याजावैहै ॥ और अंतर्गतिकानिरोधरूप होणेतैं रेचक अंतरवृत्ति कह्याजावैहै ॥ अथवा बाह्यवृत्तिशब्दकरिकै रेचककाग्रहणकरणा ॥ और आभ्यंतरवृत्तिशब्दकरिकै पूरककाग्रहणक रणा ॥ और एकहींकालविषेतिनदोनोंगतियोंकाजोनिरोधहै ताकानामस्तंभहै ॥ तास्तंभरूपहोणेतैं कुंभक स्तंभवृत्तिकह्याजावैहै ॥ अर्थात् जहां श्वास प्रश्वास दोनोंका एकही विधारकप्रयत्नतैं अभावहोवैहै ॥ पूर्वकीन्यांई पूरणकेप्रयत्नकाभीविधारणहोवेनहीं तथारेचनकेप्रयत्नकाभी विधारणहो वेनहीं ॥ किंतु जैसे अग्निअरिकैतप्तपाषाणऊपरिपायाहुआजल परिशोषणकूंप्राप्तहुआ सर्वओरतैंसंकोचकूंप्राप्तहोवेहै ॥ तैसे सर्वदा चलनस्वभाववाला यहप्राणवायुभी बलवान्विधारकप्रयत्नकरिकै ताचलनक्रियातैंरहितहुआ शरीरविषेहीं सूक्ष्महुआस्थितहोवेहै ॥ तिसकालविषे सोसूक्ष्मप्राणवायु पूरणकूंभी प्राप्तहोवेनहीं यातै पूरकभीहोवेनहीं ॥ तथा सोसूक्ष्मप्राणवायु रेचनकूंभीप्राप्तहोवेनहीं यातैं रेचकभीकह्याजावेनहीं ॥ किंतु परिशेषते सो निरुद्धहुआ सूक्ष्मप्राणवायु कुंभकहीं कह्याजावेहैइति ॥ सोयह पूरक रेचक कुंभक तीनप्रकारकाप्राणायाम देशकरिकै तथाकालकरिकै तथासंख्याक रिकै परीक्षाकरयाहुआ सूक्ष्मसंज्ञाकूंप्राप्तहोवैहै ॥ जैसे घनीभूततूलकापिंड प्रसारणकरयाहुआ विरलताकरिकैदीर्घहोवैहै तथासूक्ष्महोवैहै ॥ तैसे यहप्राण वायुभी देशकालसंख्याकीअधिकताकरिकै अभ्यासकरयाहुआ दीर्घहोवैहै तथा दुर्लक्ष्यताकरिकै सूक्ष्मभीहोवैहै ॥ सोप्रकार अबदिखावैहैं ॥ तहां प्राणकी

गतिरूपजोश्वासहै ॥ सोश्वासतौ हृदयदेशतेनिकसिकै नासिकाकेअग्रभागकेसन्मुख द्वादशअंगुलपर्यंतदेशविषेजाइकै समाप्तहोवैहै ॥ और अपानकीगतिरूप जोप्रश्वासहै ॥ सोप्रश्वासतौ ताश्वासकीसमाप्तिदेशतैं पुनः उलटिकरिकै ताहृदयदेशविषेजाइकै समाप्तहोवैहै ॥ यहसर्वमनुष्योंके प्राणअपानकी स्वाभाविकगति होवैहै ॥ और अभ्यासकरिकैतौ सोप्राणवायु यथाक्रमतैं नाभिदेशतैंनिकसिकै अथवा आधारदेशतैंनिकसिकै तानासिकाकेअग्रभागकेसन्मुख चौवीसअंगुलपर्यंत देशविषे अथवा छत्तीसअंगुलपर्यंतदेशविषे जाइकै समाप्तहोवैहै ॥ पुनःतिससमाप्तिदेशतैंहीं उलटिकरिकै तानासिकाद्वारातानाभिदेशविषे अथवा आधारदेशविषे प्राप्तहोवैहै ॥ तहां बाह्यदेशविषे तावायुकासंबंधतौ वायुतैंरहितदेशविषे आपणीनासिकाकेसन्मुख किसीइषीकाकेसूक्ष्मतूलकूंराखिकै तातूलकीचलन रूप क्रियातैं अनुमान करयाजावैहै ॥ और शरीरकेअंतरदेशविषे ताप्राणवायुकासंबंधतौ पिपीलिकाकेस्पर्शकेसमानस्पर्शकरिकै अनुमान करयाजावैहै ॥ सोयह देशपरीक्षाकहीजावैहैइति ॥ और नेत्रोंकीजानिमेषक्रियाहै ॥ तानिमेषक्रियावच्छिन्नकालकाजोचतुर्थभागहै ताकानाम क्षणहै ॥ तिनक्षणोंके इयत्ताकानिश्चय करणा याकानाम कालपरीक्षाहैइति ॥ और आपणेजानुमंडलकूं आपणेहस्ततैं प्रदक्षिणाकीन्यांई तीनवारस्पर्शकरिकै छोटिकामुद्राकरणी ताछोटिकामुद्रा अवच्छिन्नजोकालहै ताकानाम मात्राहै ॥ तिनछतीसमात्रावोंकरिकै जोप्रथम उद्घातहै सो मंदकह्याजावैहै ॥ और सोईहींउद्घात पूर्वतैंद्विगुणकरयाहुआ द्वितीय मध्यकह्याजावैहै ॥ और सोईहींउद्घात त्रिगुणकरयाहुआ तृतीय तीव्रकह्याजावैहै ॥ तहां नाभिदेशतैंउठाइकै विरेचनकऱ्येहुए प्राणवायुका जोशिर विषेअभिहननहै ताकानाम उद्घातहै ॥ सोयह संख्यापरीक्षाकहीजावैहै ॥ अथवा प्रणवमंत्रकेजपकीआवृत्तिकेभेदकरिकै संख्यापरीक्षा जानणी ॥ अथवा श्वासप्रदेशोंकीगणनाकरिकै संख्यापरीक्षा जानणी ॥ इसप्रकार काल संख्या यादोनोंका यत्किंचित्भेदअंगीकारकरिकै भिन्नभिन्न कथनकरयाहै ॥ यद्यपि कुंभकविषे पूरकरेचककीन्यांई देशव्याप्ति प्रतीतहोवैनहीं ॥ तथापि कालव्याप्ति तथासंख्याव्याप्ति ताकुंभकविषेभी जानीजावैहै ॥ सोयहतीनप्रकारका प्राणायाम तिनदिनविषेअभ्यासकरयाहुआ दिवस पक्षमास इत्यादिकक्रमकरिकै अधिकदेशकालविषेव्यापकहोणेतैं दीर्घकह्याजावैहै ॥ तथा परमनै पुण्यसमाधिकरिकै गम्यहोणेतैं सूक्ष्मकह्याजावैहै ॥ इतनैंकरिकै पूरक रेचक कुंभक यहतीनप्रकारकाप्राणायाम कथनकऱ्या ॥ अब फलरूपचतुर्थ प्राणायामका निरूपणकरेहैं ॥ तहांपतंजलिसूत्रं (बाह्याऽभ्यंतरविषयाक्षेपीचतुर्थःइति) ॥ अर्थयह ॥ बाह्यविषयजोश्वासहै ॥ सो रेचककह्या जावैहै ॥ और अंतरविषयजोप्रश्वासहै सो पूरक कह्याजावैहै ॥ अथवा बाह्यविषयशब्दकरिकै पूरककाग्रहणकरणा ॥ और अभ्यंतरविषय शब्दकरिकै रेचककाग्रहणकरना तारेचकपूरकदोनोंकीअपेक्षाकरिकै एकहींवलवान् विधारकप्रयत्नकेवशतैं बाह्यअंतरभेदकरिकै दोप्रकारकातृतीयकुं

भकहोवैहै ॥ और तिसरेचकपूरकदोनोंकीनअपेक्षाकरिकैहीं केवल कुंभककेअभ्यासकीदृढताकरिकै अनेकवार तिसतिसप्रयत्नकेवशतैं चतुर्थकुं भकहोवैहैइति ॥ अथवा इससूत्रका यह दूसराव्याख्यान करणा ॥ पूर्व कथनकरयाजो द्वादशअंगुलपर्यंत तथा चौवीस अंगुलपर्यंत तथा छत्तीसअंगुल पर्यंत प्राणकेजाणेका बाह्यदेशहै ॥ सोबाह्यदेशही बाह्यविषयशब्दकरिकैग्रहणकरना॥और अभ्यंतरविषयशब्दकरिकैतौ हृदयनाभिचक्रआदिकोंका ग्रहणकरणा॥ तिनदोनोंविषयोंकूं सूक्ष्मदृष्टिसैंनिश्चयकरिकै जोस्तंभरूप गतिकाविच्छेदहै सो चतुर्थ प्राणायाम कह्याजावैहै ॥ और तीसराकुंभकनामा प्राणायामतौ बाह्यवि षय अभ्यंतरविषय यादोनोंविषयोंके निश्चयतैंविनाहीं शीघ्रही होवैहै ॥ इतनीहीं तीसरे कुंभकनामा प्राणायामविषे तथाचतुर्थ कुंभकनामा प्राणायामविषे विशेष ताहै इति ॥ यहहीं च्यारिप्रकारका प्राणायाम श्रीभगवान्ने (अपानेजुह्वतिप्राणम्) इत्यादिक सार्धश्लोककरिकै कथनकरयाहै इति ॥ २९ ॥ ❀ तहां (दैव मेवापरेयज्ञम्) इसतैंआदिलेके साढेपंचश्लोकोंकरिकै द्वादशयज्ञ कथनकरचे ॥ अब तिनद्वादशप्रकारकेयज्ञोंकेजानणेहारेपुरुषोंकूं तथा तिनद्वादशप्रकारकेयज्ञोंकेकर णेहारेपुरुषोंकूं जोफल प्राप्तहोवैहै ॥ ताफलकूं श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) सर्वेप्येतेयज्ञविदोयज्ञक्षपितकल्मषाः ॥ ३० ॥ यज्ञशिष्टामृतभुजोयांतिब्रह्मसनातनं ॥ नायंलोकोस्त्ययज्ञस्यकुतोन्यः कुरुसत्तम ॥ ३१ ॥ सर्वे । अपि । एते । यज्ञविदः । यज्ञक्षपितकल्मषाः । यज्ञशिष्टामृतभुजः । यांति । ब्रह्म । सनातनं । न । अयं । लोकः । अस्ति । अयज्ञस्य । कुतः । अन्यः । कुरुसत्तम ॥ ३१ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन तिनयज्ञकूंकरणेहारे तथातिन यज्ञोंकरिकैनाशहूएहैंकल्मषजिनोंके तथातिनयज्ञोंकेउत्तरकालविषेअमृतरूपअन्नकूंभोजनकरणेहारे यह सर्वहीं अधिकारीजननि त्यं ब्रह्मकूं प्राप्तहोवैहै हेअर्जुन तिनय ज्ञोंतैंरहितपुरुषकूं यह मनुष्यलोकभी नहीं प्राप्तहै तौस्वर्गादिलोक कहांतैंहोवै ॥ ३१ ॥ (इतिपदार्थः)

॥ टीका ॥ हेअर्जुन पूर्वउक्तद्वादशयज्ञोंकूं जेपुरुष गुरुशास्त्रकेउपदेशतैंजानेहैं ॥ अथवा तिनद्वादशयज्ञोंकूं जे प्राप्तहोवैहैं ॥ अर्थात् तिनयज्ञोंकूं जेपुरुष श्रद्धापूर्व ककरैहैं ॥ तिनोंकानाम यज्ञविद्है ॥ ऐसे तिनयज्ञोंकेजानणेहारे तथा तिनयज्ञोंकेकरणेहारे जेपुरुषहैं ॥ तथा तिनपूर्वउक्तयज्ञोंकरिकै नाशकूंप्राप्तहुएहैं पापकर्म रूपकल्मषजिनोंके ॥ तथा तिनयज्ञोंकूंकरिकै बाकीरहेहुएकालविषे अमृतरूपअन्नकूं भोजनकरणेहारेजेपुरुषहैं ॥ तेसर्वहीं अधिकारीपुरुष अंतःकरणकीशुद्धिद्वारा तथाज्ञानकीप्राप्तिद्वारा नित्यब्रह्मकूंहीं प्राप्तहोवैहैं ॥ अर्थात् इसजन्ममरणादिरूपसंसारतैं तेपुरुष मुक्तहोवैहै ॥ इतनैंकहणेकरिकै तिनयज्ञोंकेकरणेहारेपुरुषोंकूं फलकीप्राप्ति कथनकरी ॥ अब तिनयज्ञोंकेनहींकरणेहारेपुरुषोंकूं दोषकीप्राप्ति कथनकरेहैं (नायंलोकोस्त्ययज्ञस्यइति) हेअर्जुन पूर्वउक्तद्वादशयज्ञोंकेमध्य

विषे कोईभी यज्ञ जिसपुरुषकूंनहींहै ताकानाम अयज्ञहै ऐसे अयज्ञपुरुषकूं यह अल्पसुखवाला मनुष्यलोकभी प्राप्तहोंवैनहीं ॥ जिसकारणतैं सोअयज्ञपुरुष सर्व शिष्टपुरुषोंकरिकैनिंघहोणेतैं दुःखीहींहै ॥ जबी तिसअयज्ञपुरुषकूं यह अल्पसुखवालामनुष्यलोकभी नहींप्राप्तहुआ ॥ तबी महान्पुण्यकर्मोंकरिकैप्राप्तहोणेंहारा स्वर्गादिरूपलोक तिसअयज्ञपुरुषकूं किसप्रकार प्राप्तहोवैंगा ॥ किंतु ताअयज्ञपुरुषकूं कोईभीलोक नहींप्राप्तहोवैंगा ॥ इति ॥ ३१ ॥ ❀ ॥ शंका हेभगवन् पूर्व आपने जोफलसहित यज्ञोंकाकथनकऱ्याहै ॥ सो केवल आपणीकल्पनाकरिकैहींकथनकऱ्याहै ॥ तिनफलसहितयज्ञोंविषे दूसराकोई प्रमाणहैनहीं ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए ॥ श्रीभगवान् साक्षात् वेदहीं तिनयज्ञोंविषे प्रमाणहै याप्रकारकाउत्तर कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) एवंबहुविधायज्ञाविततात्रह्मणोमुखे ॥ कर्मजान्विद्धितान्सर्वानेवंज्ञात्वाविमोक्ष्यसे ॥ ३२ ॥ एवं । बहुविधाः । यज्ञाः । वितताः । ब्रह्मणः । मुखे । कर्मजान् । वि द्धि । तान् । सर्वान् । एवं । ज्ञात्वा । विमोक्ष्यसे ॥ (इतिपदच्छेदः) हेअर्जुन ईसप्रकार बहुतप्रकारके यज्ञ वेदके मुखविषे विस्तृतहैं तिनं सर्वयज्ञोंकूं तूंकर्मजन्यहीं जान ईसप्रकार जानिकरिकै तूं इससंसारतैं मुक्तहोवैंगा ॥ ३२ ॥ (इतिपदार्थः)

॥ टीका ॥ हेअर्जुन (दैवमेवापरेयज्ञं) इसवचनतैंआदिलेके पूर्वकथनकऱ्येजेद्वादशयज्ञहैं ॥ जेयज्ञ सर्ववैदिकश्रेयके साधनरूपहैं ॥ तेसर्वयज्ञ ऋगादिकवेदकेमुखविषे विस्तृतहैं ॥ अर्थात् ऋगादिक वेदद्वाराहीं तेसर्वयज्ञ जानेजावेहैं ॥ केवल आपणीकल्पनाकरिकै हमने तेयज्ञ कथनकऱ्येनहीं ॥ हेअर्जुन तिनसर्वयज्ञोंकूं तूं कायिकवाचिकमानसकर्मोतैंहीं उत्पन्नहुआजान ॥ तिनयज्ञोंकूं आत्मातैंउत्पन्नहुआ जाननानहीं ॥ जिसकारणतैं यहआत्मादेव सर्वव्यापारोंतैं रहितहैं ॥ तिसकारणतैं तेयज्ञ मैंआत्माकेव्यापाररूपनहींहैं ॥ किंतु मैंआत्मा सर्वव्यापारोंतैंरहित असंगउदासीनहूं ॥ इसप्रकार आत्मादेवकूं असंग उदासीनजानिकै तूंअर्जुन इससंसारबंधतैं मुक्तहोवैंगा इति ॥ ३२ ॥ ❀ ॥ तहां पूर्वप्रसंगविषे श्रीभगवान्ने सर्वयज्ञोंका तुल्यहीं कथनकऱ्या ॥ याते कर्मयज्ञ ज्ञानयज्ञ यहदोनोंयज्ञ समानहींहोवैंगे ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् तिनदोनोंयज्ञोंकीसमानताकेनिवृत्तकरणेवास्ते ज्ञानयज्ञकी श्रेष्ठताकूंकहेहैं ॥

मू० श्लो० श्रेयान्द्रव्यमयाद्यज्ञाज्ज्ञानयज्ञःपरंतप ॥ सर्वंकर्माखिलंपार्थज्ञानेपरिसमाप्यते ॥ ३३ ॥ श्रेयान् । द्रव्यमयात् । यज्ञात् । ज्ञानयज्ञः । परंतप । सर्वं । कर्म । अखिलं । पार्थ । ज्ञाने । परिसमाप्यते ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन द्रव्यमय यज्ञतैं ज्ञानयज्ञ अत्यंत श्रेष्ठहै जिसकारणतैं हेपार्थ सर्व निरवशेष कर्म ज्ञानविषेहीं परिअवसानकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ ३३ ॥ (इतिपदार्थः)

॥ टीका ॥ हेअर्जुन द्रव्यमययज्ञतैं आदिलैके जितनैंकीज्ञानतेशून्ययज्ञहैं ॥ तिनसर्वयज्ञोंतैं सोज्ञानयज्ञ अत्यंतश्रेष्ठहै ॥ काहेतैं तेज्ञानतैंशून्यसर्वयज्ञतौ संसाररूपफल कींहीं प्राप्तिकरणेहारेहैं ॥ और सोज्ञानयज्ञतौ साक्षात् मोक्षरूपफलकींहीं प्राप्तिकरणेहाराहै ॥ तहांश्रुति ॥ (ज्ञानादेवतुकैवल्यम्) ॥ अर्थयह ॥ इसअधिकारीपु रुषकूं ज्ञानतैंही कैवल्यमोक्षकीप्राप्तिहोवैहै इति ॥ अब ताज्ञानयज्ञकीश्रेष्ठताविषे श्रीभगवान् हेतुकहेहैं (सर्वकर्माखिलमिति) हेअर्जुन अग्निहोत्र ज्योतिष्टोम सोमयज्ञ चयनयज्ञ इसतैं आदिलैके जितनैंकीश्रौतकर्महैं ॥ तथा उपासनादिरूप जितनैंकीस्मार्त्तकर्महैं ॥ तेसर्वकर्म निरवशेषहुए ब्रह्मात्मऐक्यज्ञानविषेहीं समाप्तहो वैहैं ॥ अर्थात् तेसर्वश्रौतस्मार्त्तकर्म पापरूपप्रतिबंधकीनिवृत्तिद्वारा ताआत्मज्ञानविषेहीं परिअवसानकूंप्राप्तहोवैहैंइति ॥ तहांश्रुति ॥ (तमेतंवेदानुवचनेनब्राह्मणा विविदिषंतियज्ञेनदानेनतपसानाशकेनइति ॥ धर्मेणपापमपनुदति) ॥ अर्थयह ॥ यहअधिकारीब्राह्मण वेदकेअध्ययनकरिकै तथायज्ञकरिकै तथादानकरिकै तथा तपकरिकै इसआत्मादेवके जानणेकीइच्छा करेहैइति ॥ और यहअधिकारीपुरुष धर्मकरिकै पापकूं निवृत्तकरेहैइति ॥ सर्वशुभकर्मोंका प्रतिबंधकपापोंकीनिवृ त्तिद्वारा आत्मज्ञानविषेही उपयोगहै ॥ इस अर्थकूं श्रीव्यासभगवान्नैं तथाभाष्यकारोंने (सर्वापेक्षायज्ञादिश्रुतेरश्ववत्) इससूत्रविषे विस्तारतैं कथनकरयाहै याते यहज्ञानरूपयज्ञही सर्वयज्ञोंते श्रेष्ठहै इति ॥ ३३ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् जिसआत्मज्ञानविषे सर्वशुभकर्मोंका परिअवसानहै ॥ तिसआत्मज्ञानकीप्रा प्तिविषे अत्यंत समीपउपाय कौनहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् ताउपायका कथनकरेहैं ॥

(मू०श्लो०) तद्विद्धिप्रणिपातेनपरिप्रश्नेनसेवया ॥ उपदेक्ष्यंतितेज्ञानंज्ञानिनस्तत्त्वदर्शिनः ॥ ३४ ॥ तत् । विद्धि । प्रणिपातेन । परि प्रश्नेन । सेवया । उपदेक्ष्यंति । ते । ज्ञानं । ज्ञानिनः । तत्त्वदर्शिनः ॥ ३४ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन तिसआत्मज्ञानकूं तूं ब्रह्मवेत्तागुरु केआगेदंडवतप्रणामकरिकै तथाप्रश्नकरिकै तथासेवाकरिकै प्राप्तहोउ ताकरिकैप्रसन्नहुए तेतत्वदर्शी ज्ञानीगुरु तुमारेतांई ज्ञानकूं उपदेशकरैंगे ॥ ३४ ॥ (इतिपदार्थः)

॥ टीका ॥ हेअर्जुन सर्वशुभकर्मोंकाफलभूतजो आत्मज्ञानहै तिसआत्मज्ञानकूं तू अवश्यकरिकैप्राप्तहोउ ॥ ताआत्मज्ञानकीप्राप्तिवास्ते तू याप्रकारकाउपायकर ॥ तहां (आचार्यवान्पुरुषोवेद) याश्रुतिनै ब्रह्मवेत्ताआचार्यकेउपदेशतैंही ज्ञानकीप्राप्तिकथनकरीहै ॥ यातैं तूं अर्जुनभी ब्रह्मवेत्ताआचार्योंकेसमीपजाइकै प्रथम दंडवतप्रणामकर ॥ तथा सर्वप्रकारतैं तिनआचार्योंकीअनुकूलताकासंपादकजोव्यापारविशेषहै ताकानाम सेवाहै ऐसीसेवाकूंकर ॥ तिसतेअनंतर हेभगवन् मैं कौनहूं तथामैं किसप्रकार बंधायमानहुआहूं तथाकिसउपायकरिकै मैं इससंसारतैं मुक्तहोवैंगा याप्रकारकाप्रश्न तिनगुरुवोंकेआगेकर ॥ इसप्रकार भक्तिश्रद्धा

पूर्वक तुमारेदंडवत्प्रणामकरिकै तथासेवाकरिकै प्रसन्नहुए तेतत्त्वदर्शीज्ञानवान्गुरु तुमारेतांई आत्मज्ञानका उपदेशकरैंगे ॥ जोआत्मज्ञान साक्षात् मोक्षरूप फलकीप्राप्तिकरणेहाराहै ॥ ईहां पदोंकेज्ञानविषे तथावाक्योंकेज्ञानविषे तथानानाप्रकारकीयुक्तियोंकेज्ञानविषे जेपुरुष अत्यंतकुशलहोवैहैं तिनोंकानाम ज्ञानीहै ॥ और जिनपुरुषोंकूं संशयविपरीतभावनातैंरहित आत्माका साक्षात्कारहुआहै तिनोंकानाम तत्त्वदर्शीहै ॥ ऐसे ज्ञानवान् ॥ तथातत्त्वदर्शीपुरुषोंने उपदेशकऱ्या जोआत्मज्ञानहै सो आत्मज्ञानहीं मोक्षरूपफलकी प्राप्तिकरेहै ॥ तातत्त्वदर्शीपणेतैंरहित केवल पदवाक्ययुक्तिआदिकोंकेज्ञानविषेकुशल पुरुषनैं उपदेशकऱ्या हुआ सो आत्मज्ञान तामोक्षरूपफलकीप्राप्तिकरैनहीं ॥ अर्थात् श्रोत्रियब्रह्मनिष्ठगुरुनैं उपदेश कऱ्याहुआ आत्मज्ञानही तामोक्षरूपफलकीप्राप्तिकरेहैइति ॥ तहां (ज्ञानिनः) यापदकरिकै श्रीभगवान्ने श्रोत्रियका कथनकऱ्याहै ॥ और (तत्त्वदर्शिनः) यापदकरिकै श्रीभगवान्नैं ब्रह्मनिष्ठका कथनकऱ्याहै इसीअर्थकुं साक्षात् श्रुतिभगवतीभी कथनकरैहै ॥ तहांश्रुति ॥ (तद्विज्ञानार्थंसगुरुमेवाभिगच्छेत्समित्पाणिः श्रोत्रियंब्रह्मनिष्ठमिति) ॥ अर्थ यह तिसपरमात्मादेवकेसाक्षात्कारवास्ते यहअधिकारीपुरुष यथाशक्ति भेटाहस्तविषेलैके श्रोत्रियब्रह्मनिष्ठगुरुके समीपजावैइति ॥ ईहां (ज्ञानिनःतत्त्वदर्शिनः) इस आचार्यकेवाचक दोनोंपदोंविषे जो बहुवचन भगवान्ने कथन कऱ्याहै ॥ सो आचार्यकी महानताकेबोधनकरणेवास्ते कथनकऱ्याहै ॥ कोई ताबहुवचनकरिकै बहुतआचार्य भगवान्कूं विवक्षितनहींहैं ॥ काहेतें श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठएकहीआचार्यतैं इसअधिकारीशिष्यकूं तत्त्वसाक्षात्कारकीप्राप्ति होइसकैहै ॥ तातत्त्वसाक्षात्कारकीप्राप्तिवास्ते बहुतआचार्योंकेसमीपजानेका किंचित्मात्रभी प्रयोजननहींहै इति ॥ ३४ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् इसप्रकारके अत्यंतदृढउपायकरिकै ताआत्मज्ञानकेउत्पन्नकियेहुएभी ताज्ञानकरिकै कौन फलप्राप्तहोवैहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए ॥ श्रीभगवान् ताआत्मज्ञानकेफलका वर्णनकरेहैं ॥

(मू० श्लो०) यज्ज्ञात्वानपुनर्मोहमेवंयास्यसिपांडव ॥ येनभूतान्यशेषेणद्रक्ष्यस्यात्मन्यथोमयि ॥ ३५ ॥ यत् । ज्ञात्वा । न । पुनः । मोहं । एवं । यास्यसि । पांडव । येन । भूतानि । अशेषेण । द्रक्ष्यसि । आत्मनि । अथो । मयि ॥ ३५ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन जिसेपूर्वउक्तज्ञानकूं प्राप्तहोइकै तूं पुनः इसप्रकारके मोहकूं नहीं प्राप्तहोवैगा जिसकारणतें जिस ज्ञानकरिकै इनसर्व भूतोंकूं आपणेआत्माविषे तथा मैंपरमेश्वरविषे अभेदरूपकरिकै देखैगा ॥ ३५ ॥ (इतिपदार्थः)

॥ टीका ॥ हेअर्जुन श्रोत्रियब्रह्मनिष्ठगुरुने उपदेशकऱ्याजो आत्मज्ञानहै ॥ ताआत्मज्ञानकूं प्राप्तहोइकै इनबांधवोंके वधादिकहैंनिमित्तजिसविषे ऐसेभ्रमरूप शोककूं तूं पुनःकदाचित्भी नहींप्राप्तहोवैगा ॥ काहेतें आत्माकेअज्ञानकरिकैजन्य जितनैंकी ब्रह्मातैंआदिलैके स्तंबपर्यंत पितापुत्रादिकभूतप्राणीहैं तिनसर्व भूतप्राणि

योंकूं जिसआत्मज्ञानकरिकै तूं आपणेत्वंपदार्थआत्माविषे तथावास्तवतैं भेदतैंरहित सर्वकाअधिष्ठानभूत मैंतत्पदार्थपरमेश्वरविषे अभेदरूपकरिकै देखैगा ॥ जिसकारणतैं अधिष्ठानतैंभिन्नकरिकैं कल्पितवस्तुका अभावहींहोवैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ मैंभगवान् वासुदेवकूं अपनाआत्मारूपजानिकै अज्ञानकेनाशहुएतैंअनंतर ताअज्ञानकेकार्यरूप यहसर्वभूतप्राणीभीस्थितहोवैंगेनहींइति ॥ ईहां किसीटीकाविषेतौं (आत्मनि मयि) यादोनोंपदोंका समानाधिकरणअंगीकारकरिकैआत्मारूपमैंपरमेश्वरविषे तिन सर्वभूतोंको तूं देखैगा इसप्रकारकाअर्थ कथनकरयाहै इति ॥ ३५ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् इसप्रकारकेआत्मज्ञानकूंप्राप्तहोइकैभी मैंअर्जुन भीमद्रोणादिकगुरुवोंके तथादुर्योधनादिकबांधवोंके वधजन्यपापतैं मुक्तनहींहोवौंगा ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए ॥ श्रीभगवान् ताआत्मज्ञानका परममाहात्म्य कथनकरेहैं ॥

(मू० श्लो०) अपिचेदसिपापेभ्यःसर्वेभ्यःपापकृत्तमः ॥ सर्वंज्ञानप्लवेनैववृजिनंसंतरिष्यासि ॥३६॥ अपि । चेत् । असि । पापेभ्यः । सर्वेभ्यः । पापकृत्तमः । सर्वं । ज्ञानप्लवेन । एव । वृजिनं । संतरिष्यसि ॥ ३६ ॥ (इतिप०) ॥ हेअर्जुन जोकदाचित् तूं सर्व पापकारीपुरुषोंतैं अत्यंतपापकारीभी होवे तौभी तूं तासर्व पापरूपसमुद्रकूं ज्ञानरूपनौकाकरिकै हीं तरैगा ॥ ३६ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ ईहां अपि चेत् यहदोनोंपद असंभावितअर्थकेअंगीकारका बोधकहैं ॥ अर्थात् सर्वपापकारीपुरुषोंतैं ताअर्जुनविषे अत्यंतपापकारीपणा यद्यपि हैनहीं ॥ तथापि ज्ञानकेफलका कथनकरणेवास्ते ताअर्जुनविषे सोअत्यंतपापकारीपणा अंगीकारकरिकै श्रीभगवान् कहेहैं ॥ हेअर्जुन जोकदाचित् तूं सर्वपापकारीपुरुषोंतैं अत्यंतपापकारीभीहोवै ॥ तौभी तिस सर्वपापरूप समुद्रकूं तूं इसज्ञानरूपनौकाकरिकैहीं तरैगा ॥ ताआत्मज्ञानते भिन्नउपायकरिकै यहपापरूपसमुद्र तरयाजावै नहीं ॥ तहांश्रुति ॥ (तरतिशोकमात्मवित्) ॥ अर्थयह ॥ आत्मवेत्तापुरुषसर्वसंसाररूपशोककूंतरैहैइति ॥ ईहां (वृजिनं) याशब्दकरिकै संसाररूपफलकीप्राप्तिकरणेहारे सर्वधर्मअधर्मरूपकर्मोंकाग्रहणकरणा ॥ काहेतैं मोक्षकीइच्छावान्अधिकारीपुरुषकूं पापकर्मकीन्यांई सोपुण्यकर्मभी अनिष्टहींहै इति ॥ ३६ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् यहअधिकारीपुरुष आत्मज्ञानरूपनौकाकरिकै पुण्यपापरूपसमुद्रकूं तरेहै ॥ यहवार्त्ता पूर्वआपने कथनकरी ॥ तहां जैसेनौकाकरिकैसमुद्रकेतरयेहुएभी तासमुद्रकानाशहोवैनहीं ॥ तैसेआत्मज्ञानरूपनौकाकरिकै इसपुण्यपापरूपसमुद्रकेतरयेहुएभी तापुण्यपापरूपकर्मकानाशहोवैगानहीं ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए ॥ श्रीभगवान् आत्मज्ञानकरिकै तिनकर्मोंकेनाशविषे दूसरादृष्टांतकथनकरेहैं ॥

(मू० श्लो०) यथैधांसिसमिद्धोग्निर्भस्मसात्कुरुतेर्जुन ॥ ज्ञानाग्निःसर्वकर्माणिभस्मसात्कुरुतेतथा॥३७॥यथा । एधांसि । समिद्धः ।

अग्निः । भस्मसात् । कुरुते । अर्जुन । ज्ञानाग्निः सर्वकर्माणि । भस्मसात् । कुरुते तथा । (इतिप०) हेअर्जुन जैसे प्रज्वलितं अग्नि काष्ठोंकूं भस्मीभूत करैहै तैसें ज्ञानरूपअग्नि सर्वकर्मोंकूं भस्मीभूत करैहै ॥ ३७ ॥ (इतिपदार्थः)

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जैसेअत्यंतप्रज्वलितअग्नि बहुतकाष्ठोंकूंभी भस्मीभूत करिदेवैहै ॥ तैसे मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारका जोआत्मज्ञानरूप अग्निहै ॥ सोज्ञानरूपअग्निभी प्रारब्धकर्मतैंभिन्न सर्वपुण्यपापकर्मोंकूं भस्मीभूत करिदेवैहै ॥ अर्थात् सोज्ञानरूपअग्नि तिनपुण्यपापकर्मोंकेकारणभूतअज्ञानकूं नाशकरिकैतिनकर्मोंकूंभी नाशकरैहैइति ॥ तहांश्रुति (भिद्यतेहृदयग्रंथिश्छिद्यंतेसर्वसंशयाः ॥ क्षीयंतेचास्यकर्माणितस्मिन्दृष्टेपरावरेइति ॥) अर्थयह ॥ ब्रह्मादिकदेवतावोंतैंभी अत्यंतउत्कृष्टजोपरमात्मादेवहै ॥ तापरमात्मादेवकेसाक्षात्कारहुए इसविद्वान्पुरुषकी आत्माअनात्माकाअध्यासरूपहृदयग्रंथि नाश कूंप्राप्तहोवैहै ॥ तथा आत्मा देहादिकोंतैंभिन्नहै अथवा देहादिरूपहै तहां देहादिकोंतैंभिन्नहुआभी आत्मा ब्रह्मरूपहै अथवा ब्रह्मतैंभिन्नहै इसतेआदिलैकै जि तनैंकी आत्मविषयकसंशयहैं तेसर्वसंशयभीनाशकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तथा जिन पुण्यपापरूपप्रारब्धकर्मोंनैं यहशरीरदियाहै तिनप्रारब्धकर्मोंकूंछोडिकै दूसरेसर्वकर्मनाश कूंप्राप्तहोवैहैंइति ॥ यहवार्त्ता श्रीव्यासभगवान्ने ब्रह्मसूत्रोंविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांसूत्रं ॥ (तदधिगम उत्तरपूर्वाघयोरश्लेषविनाशौतद्व्यपदेशात्) अर्थयह ॥ मैंब्रह्म रूपहूं याप्रकारके आत्मसाक्षात्कारकेहुए इसविद्वान्पुरुषके पूर्वसंचितकर्मोंका तौ नाशहोजावैहै ॥ औरजैसे जलविषेस्थितपद्मपत्रकोजलकास्पर्शहोवैनहीं ॥ तैसे आत्मज्ञानतैं उत्तरकरयेहुएकर्मोंका ताविद्वान्पुरुषको स्पर्शहीहोवैनहीं ॥ यहवार्ता अनेकश्रुतिस्मृतियोंविषे कथनकरीहैइति ॥ और जिसशरीरविषे इसविद्वान्पुरुष को आत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिहुईहै ॥ तिसशरीरकेआरंभकरणेहारे जेपुण्यपापरूपप्रारब्धकर्महैं तिनप्रारब्धकर्मोंकातौ तिसशरीरकेनाशकालविषेही नाशहोवैहै ॥ तहांश्रुति ॥ (तस्यतावदेवचिरंयावन्नविमोक्ष्येऽथसंपत्स्ये) ॥ अर्थयह तिसविद्वान्पुरुषकूं विदेहमोक्षकीप्राप्तिविषे तितनैंकालपर्यंतही विलंबहै ॥ जितनैंकालपर्यंत प्रारब्धकर्मोंकेभोगपूर्वक इसशरीरकीनिवृत्ति नहींहुई ॥ इसशरीरकेनिवृत्तहुएतैंअनंतर सोविद्वान्पुरुष विदेहमोक्षकोप्राप्तहोवैहैइति ॥ यहवार्ता ॥ श्रीव्यासभगवान्नैंभी ब्रह्मसूत्रोंविषेकथनकरीहै ॥ तहांसूत्रं ॥ (भोगेनत्वितरेक्षपयित्वासंपद्यन्ते ॥) अर्थयह ॥ संचितक्रियमाणकर्मोंतैंभिन्न पुण्यपापरूपप्रारब्धकर्मोंका भोगतैंनाशकरिकै यह विद्वान्पुरुष विदेहमोक्षकूंप्राप्त होवैहैं इति ॥ और वसिष्ठसनकादिकजेअधिकारकपुरुषहैं ॥ तिनअधिकारकपुरुषोंकूंतौ ज्ञानकीउत्पत्तितैंअनंतरभी दूसरेशरीरों कीप्राप्ति शास्त्रोंविषेदेखणेमेंआवैहै ॥ यातैं (यावदधिकारमवस्थितिरधिकारकाणां) इससूत्रकेव्याख्यानविषे भगवान् भाष्यकारोंनैं याप्रकारकीव्यवस्था कथनकरीहै ॥ तिनवसिष्ठादिकोंकूं जिसशरीरविषे आत्मज्ञानकीप्राप्तिभईहै ॥ तिसशरीरकेआरंभकरणेहारे जेप्रारब्धकर्महैं ॥ तेप्रारब्धकर्महीं तिनवसिष्ठादिकोंके

दूसरेशरीरोंकाभी आरंभकरेहैं ॥ तात्पर्य यह ॥ अनेकशरीरोंका आरंभकरणेहारा जोबलवान्प्रारब्धकर्महै ताकानाम अधिकारहै ॥ सोऐसाअधिकार वसिष्ठादि कउपासकपुरुषोंकाहींहोवैहै ॥ अन्यजीवोंका होवैनहीं ॥ सोऐसाअधिकार जबपर्यंतरहेहै ॥ तबपर्यंतहीं तिनवसिष्ठादिक अधिकारकपुरुषोंकीस्थितिहोवैहै ॥ यातैंयह अर्थसिद्धभया ॥ जिनकर्मोंनैं आपणेफलकाआरंभनहींकरयाहै ॥ तेकर्मतौ आत्मज्ञानरूपअग्निकरिकै नाशहोइजावैहैं ॥ और जिनकर्मोंनैं आपणे फलका आरंभकरयाहै ॥ तेकर्मतौ भोगकी समाप्तिपर्यंत स्थितहोवैहैं ॥ तिनप्रारब्धकर्मोंकाभोग अस्मदादिकतत्त्ववेत्ताजीवोंविषेतौ एकहींदेहकरिकैहोवैहै ॥ और वसिष्ठादिकअधिकारकपुरुषोंविषेतौअनेक देहोंकरिकै सोभोग होवैहैइति ॥ ३७ ॥ ❀ ॥ जिसकारणतैं इसआत्मज्ञानका ऐसामहान्प्रभावहै ॥ तिसकारणतैं इसआत्मज्ञानकेसमान दूसराकोईपदार्थहै नहीं ॥ इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

(मू. श्लो.) नहिज्ञानेनसदृशंपवित्रमिहविद्यते ॥ तत्स्वयंयोगसंसिद्धःकालेनात्मनिविंदति ॥ ३८ ॥ नं । हि । ज्ञानेन सदृशं । पवित्रं । इह । विद्यते । तत् । स्वयं । योगसंसिद्धः । कालेन । आत्मनि । विंदति ॥ ३८ ॥ (इतिपद०) हेअर्जुन जिसकारणतैं इसवेदलोकविषे ज्ञानके समान पवित्र नहीं विद्यमानहै तिसज्ञानकूं महान्कालकरिकै कर्मयोगकरिकैशुद्धचित्तवालापुरुष आपहीं अंतःकरणविषे प्राप्तहोवैहै ॥ ३८ ॥ (इतिपदार्थः)

॥ टीका ॥ हेअर्जुन वेदोंविषे अथवा इसलोकव्यवहारविषे इसआत्मज्ञानकेसमान दूसराकोईपदार्थ शुद्धिकरणेहाराहैनहीं ॥ किंतु यह एकआत्मज्ञानहीं शुद्धिक रणेहाराहै ॥ काहेतैं इसआत्मज्ञानतेभिन्न जितनैंकीदूसरेकर्मउपासनादिकउपायहैं ॥ तेउपाय अज्ञानकीनिवृत्तिकरैनहीं ॥ यातैं तेभिन्नउपाय अज्ञानरूपमूलसहित पापोंकीनिवृत्तिकरैनहीं ॥ किंतु यत्किंचित् पापकीनिवृत्तिकरेहैं ॥ जैसे प्रायश्चित्त यत्किंचित् पापकीनिवृत्तिकरेहै ॥ और जबपर्यंत तिनसर्वपापोंका मूलकारण रूप अज्ञान विद्यमानहै ॥ तबपर्यंत किसीप्रायश्चित्तादिकउपायोंकरिकै एकपापकेनाशहुएभी पुनः दूसरेपाप अवश्यकरिकैउत्पन्नहोवैंगे ॥ और आत्मज्ञानक रिकैतौ अज्ञानकेनिवृत्तिहुए मूलसहित सर्वपापोंकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ यातैं इसआत्मज्ञानकेसमान दूसराकोई शुद्धिकरणेकाउपायहैनहीं इति ॥ शंका ॥ हेभगवन् सोआत्माकाज्ञान इनसर्वप्राणीयोंकूं शीघ्रहीं किसवास्तेनहींउत्पन्नहोता ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहेहैं (तत्स्वयंयोगसं सिद्धः इति) हेअर्जुन जोअधिकारीपुरुष बहुतकालपर्यंत तापूर्वउक्तकर्मयोगकरिकै अंतःकरणकी शुद्धिपूर्वक आत्मज्ञानकेयोग्यताकूंप्राप्तहुआहै ॥ सोअ धिकारीपुरुषहीं आपहीं ताआपणेअंतःकरणविषे तिसआत्मज्ञानकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तिसअंतःकरणकीशुद्धिरूपयोग्यताकूंनहींप्राप्तहुआपुरुष ताआत्मज्ञानकूं

प्राप्तहोवैनहीं ॥ तथा अन्यकिसीपुरुषकेदियेहुएज्ञानकूं आपणेविषेस्थितरूपकरिकैभी प्राप्तहोवेनहीं ॥ तथा अन्यकिसीपुरुषविषेस्थितज्ञानकूं आपणाकरिकेभी प्राप्तहोवेनहीं ॥ किंतु सोशुद्धचित्तवालापुरुष आपहीं आपणेअंतःकरणविषेहीं ताआत्मज्ञानकूंप्राप्तहोवैहैइति ॥ ३८ ॥ तहां जिसउपायकरिकै नियमपूर्वक आत्मज्ञानकीप्राप्तिहोवैहै ॥ सोउपायपूर्वउक्तप्रणिपातसेवादिकउपायोंकीअपेक्षाकरिकै अत्यंतसमीपहै ॥ ऐसेअत्यंतसमीपउपायकूं अब श्रीभगवान् कथनकरेहैं ॥

(मू० श्लो०) श्रद्धावाँल्लभतेज्ञानंतत्परःसंयतेंद्रियः ॥ ज्ञानंलब्ध्वापरांशांतिमचिरेणाधिगच्छति ॥ ३९ ॥ श्रद्धावान् । लभते । ज्ञानं । तत्परः । संयतेंद्रियः । ज्ञानं । लब्ध्वा । परां । शांतिम् । अचिरेण । अधिगच्छति ॥ ३९ ॥ (इतिपदच्छेदः) हेअर्जुन जो पुरुष श्रद्धावान्है तथागुरुकीउपासनाविषेतत्परहै तथाजितइंद्रियहै सोपुरुषहीं आत्मज्ञानकूं प्राप्तहोवैहै ताआत्मज्ञानकूं प्राप्तहो इके शीघ्रहीं कैवल्य मुक्तिकूं प्राप्तहोवैहै ॥ ३९ ॥ (इतिपदार्थः)

॥ टीका ॥ हेअर्जुन ब्रह्मवेत्तागुरुकेवचनोंविषे तथावेदांतशास्त्रकेवचनोंविषे यहवचन यथार्थअर्थकेहींकहणेहारेहैं याप्रकारकी प्रमाणरूपजाआस्तिक्यबुद्धिहै ताकानाम श्रद्धाहै ॥ ऐसीश्रद्धावालापुरुषहीं ताआत्मज्ञानकूंप्राप्तहोवैहै ॥ शंका ॥ ऐसाश्रद्धावान्हुआभी जोपुरुष अत्यंतआलसीहोवैहै ॥ ताआलसीपुरुषकूंभी ताआत्मज्ञानकीप्राप्तिहोणीचाहिये ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान्कहेहैं (तत्परःइति) हेअर्जुन जोपुरुष श्रद्धावान्होवैहै ॥ तथा आत्मज्ञानकीप्राप्तिकाउपायभूत जेब्रह्मवेत्तागुरुकीउपासनादिकहैं तिनउपायोंविषे जोपुरुष आलस्यतैंरहितहुआ अत्यंत तत्परहोवैहै ॥ सोपुरुषहीं ताआत्मज्ञानकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तिस तत्परतातैंविना केवलश्रद्धावान्पुरुष ताआत्मज्ञानकूं प्राप्तहोवैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् जोपुरुष श्रद्धावान्भीहै तथाब्रह्मवेत्तागुरुकीउपासनादिकोंविषे तत्परभीहै ॥ परंतु श्रोत्रादिकइंद्रियोंकूं आपणेआपणेशब्दादिकविषयोंतैं जिसने निवृत्तकऱ्यानहीं ॥ ऐसेअजितइंद्रियपुरुषकूंभी ताआत्मज्ञानकी प्राप्तिहोणीचाहिये ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहेहैं (संयतेंद्रियःइति) हेअर्जुन जोपुरुष श्रद्धावान्भीहैतथातत्परभीहै॥परंतु जिसपुरुषनैं आपणेश्रोत्रादिकइंद्रियोंकूं शब्दादिकविषयोंतैं निवृत्तनहींकऱ्या ॥ सोअजितइंद्रियपुरुषभी ताआत्मज्ञानकूं प्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु जोपुरुष श्रद्धावान्होवैहै तथातत्परहोवैहै तथाजितइंद्रियहोवैहै ॥ सोपुरुषहीं ताआत्मज्ञानकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और (तद्विद्धिप्रणिपातेन) याश्लोकविषे जेपूर्व प्रणिपात प्रश्न सेवा यहतीनउपाय आत्मज्ञानकेकथनकऱ्येथे ॥ ते तीनों बाह्यउपायतौ दांभिक मायाकीपुरुषविषेभी संभवहोइसकेहै ॥ यातैं तेप्रणिपातादिकबाह्यउपाय नियमकरिकै ताआत्मज्ञानकी प्राप्तिविषेहेतुहोवैनहीं॥ और इसश्लोकविषे कथनकऱ्येजे श्रद्धा तत्परता जितइंद्रियता यहअंतरतीनउपायहैं॥ तेयहतीनउपायतौ नियमपूर्वक ताआत्मज्ञानकी प्राप्तिकरेहैं ॥ऐसेश्रद्धादिकतीनउपायों

काहेतैं तेकामादिक जोआत्माकेधर्महोंते ॥ तौं तिनकामादिकोंकरिकै आत्माविषे स्वतःहीं सोदुष्टपणाहोता ॥ परंतु तेकामादिक आत्माकेधर्महैंनहीं ॥ किंतु (कामः संकल्पोविचिकित्सा) इसश्रुतिविषे तेकामादिकसर्व अंतःकरणकेहींधर्म कथनकरेहैं ॥ आत्माका कोईभीधर्म कथनकऱ्यानहीं ॥ किंतु (साक्षीचेताकेवलोनिर्गुणश्च) यहश्रुति आत्माकूं सर्वधर्मोंतैंरहित निर्गुणकहेहै ॥ इसप्रकार सर्वदोषोंतैंरहितजोब्रह्महै ॥ ताब्रह्मकूंहीं आपणाआत्मारूपकरिकैजानणेहारेजेजीवन्मुक्तसंन्यासीहै ॥ तिनजीवन्मुक्तसंन्यासीयोंकूं पापकीउत्पत्ति तथातपरूपधनकीहानि तथाधर्मकीहानी इत्यादिकदोषोंकरिकेदुष्टकहणा अत्यंतविरुद्धहै ॥ और (समासमाभ्यां विषमसमेपूजातः) यहजोपूर्व स्मृतिवचनकथनकऱ्याथा ॥ सोस्मृतिवचनतौं अज्ञानीगृहस्थविषयकहींहै ॥ ब्रह्मवेत्तासंन्यासीविषयक सोस्मृतिवचननहींहै ॥ काहेतैं तास्मृतिविषे (तस्यान्नमभोज्यं) याप्रकारका प्रथम उपक्रमकऱ्याहै ॥ तिसतैं अनंतर मध्यविषे (समासमाभ्यांविषमसमेपूजातः) यहवचनकथनकऱ्याहै ॥ तिसतैंअनंतर (पूजायिताप्रतिपत्तिविशेषमकुर्वन्नृधनाद्धर्माचहीयते) याप्रकारका उपसंहारकऱ्याहै ॥ ताउपक्रमउपसंहारवचनतैं अविद्वान्गृहस्थहीं प्रतीतहोवैहै ॥ काहेतैं जोवस्तु जहां प्राप्तहोवैहै ॥ तिसवस्तुकाहीं तहां निषेधहोवैहै अप्राप्तवस्तुका निषेधहोतानहीं ॥ और अन्नकासंग्रह तथाधनकासंग्रह गृहस्थपुरुषकूंहीं प्राप्तहै ॥ संन्यासीकूं ताअन्नकासंग्रह तथाधनकासंग्रह प्राप्तहैनहीं ॥ यातैं समोंकी विषमपूजाकरणेहारेपुरुषका तथाविषमकी समपूजाकरणेहारेपुरुषका अन्न भोजनकरणे योग्यनहींहै तथाइसप्रकारकीपूजाकरणेहारापुरुष धनतैं तथाधर्मतैं रहितहोवैहै याप्रकारकानिषेध ताअविद्वान्गृहस्थविषेहींघटैहै ॥ ताब्रह्मवेत्तासंन्यासीविषे सोनिषेध घटतानहीं॥और (अन्नमभोज्यं)इसवचनका मुख्यअर्थछोडिके तावचनकरिकै पापकीउत्पत्तिका ग्रहणकरणा तथाधनशब्दका सुवर्णादिरूपमुख्य अर्थछोडिकै ताधनशब्दकरिकै तपकाग्रहणकरणा यहभी अत्यंतअसंगतहै ॥ यातैंयहअर्थसिद्धभया ॥ जैसे सुवर्णमयजादेवताकीप्रतिमाहै ॥ तथा सुवर्णमयजो ताप्रतिमाका सिंवासनहै ॥ तिनदोनोंविषे सुवर्णद्रष्टापुरुषतौं समानताकूंहीं देखेहै ॥ और तासुवर्णदृष्टितैंरहित केवलआकारदृष्टिवाला जोपूजाकरणेहारापुरुषहै ॥ सोपूजकपुरुषतौं तिनदोनोंविषे महान् विषमताकूंहींदेखेहै ॥ तैसे सोब्रह्मवेत्ताविद्वान्पुरुषतौं तिन ब्राह्मण गो हस्ति श्वान चांडाल आदिकपदार्थोंविषे एकपरिपूर्णब्रह्मकूंहीं देखेहै और अज्ञानीपुरुषतौं तिनपदार्थोंविषे महान् विषमताकूंदेखेहै ॥ यातैं सापूजास्मृतितौं भ्रांतिकृतन्यूनअधिकताकूं विषयकरेहै ॥ और (विद्याविनयसंपन्ने) यहभगवान्कावचनतौं परमार्थवस्तुकूं विषयकरेहै ॥ यातैं तास्मृतिवचनका ईहां विरोधहोवैनहीं इति ॥ १९ ॥ ❀ ॥ जिसकारण तै सोपरब्रह्म निर्दोषहै तथासर्वत्रसमहै ॥ तिसकारणतै तानिर्दोषसमब्रह्मकूं आपणाआत्मारूपजानताहुआ सोब्रह्मवेत्ताविद्वान्पुरुष आपभी रागद्वेषादिकदोषोंतैंरहितहुआ स्थितहोवैहै ॥ इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरेहैं ॥

नप्रहृष्येत्प्रियंप्राप्यनोद्विजेत्प्राप्यचाप्रियम् ॥ स्थिरबुद्धिरसंमूढोब्रह्मविद्ब्रह्मणिस्थितः ॥ २० ॥ नं । प्रहृष्येत् । प्रियं । प्राप्य । नं । उद्विजेत् । प्राप्य । च । अप्रियं । स्थिरबुद्धिः । असंमूढः । ब्रह्मवित् । ब्रह्मणि । स्थितः ॥२० ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन सोविद्वान्पुरुष प्रियवस्तुकूं प्राप्तहोइके नहीं हर्षकूंप्राप्तहोवैहै तथा अप्रियवस्तुकूं प्राप्तहोइके नहीं उद्वेगकूंप्राप्तहोवैहै जिसकारणतैं सोविद्वान् स्थिरबुद्धिहै तैंथासंमोहतैंरहितहै तथाब्रह्मवित्है तथाब्रह्मविषेही स्थितहै ॥ २० ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन सो समदर्शीविद्वान्संन्यासी सुखकेकरणेहारेप्रियपदार्थकूंप्राप्तहोइके हर्षकूंनहींप्राप्तहोवैहै ॥ तथादुःखकेकरणेहारेअप्रियपदार्थकूं प्राप्तहोइके विषादकूंनहींप्राप्तहोवैहै किंतु तिनदोनोंकूं आपणेप्रारब्धकर्मकाफलरूपजानिकै सर्वदा एकरसहीं रहेहै ॥ यहसर्वअर्थ (दुःखेष्वनुद्विग्नमनाःसुखेषुविगतस्पृहः) इसश्लोकाविषे पूर्व विस्तारतैंकथनकरिआयेहैं ॥ और प्रियअप्रियपदार्थोंकूंप्राप्तहोइकैभी हर्षविषादतैंरहितहोणा इत्यादिक जो जीवन्मुक्तपुरुषोंका स्वाभाविकच रितहैं ॥ तास्वाभाविकचरितकूं मुमुक्षजननैं प्रयत्नपूर्वक संपादनकरणा ॥ इसअर्थकेबोधनकरणेवासतै श्रीभगवान्नैं (नप्रहृष्येत्नोद्विजेत्) यादोनोंपदोंविषे विधिकावाचक लिङ् प्रत्ययकथनकरयाहै॥ कोई जीवन्मुक्तपुरुषउपरि सोविधिवचन नहींहै ॥ तात्पर्ययह ॥ सर्वत्र अद्वितीयआत्माकूंदेखणेहाराजोविद्वान्पुरुषहै तिसविद्वान्पुरुषकूं आपणेतैंभिन्नरूपकरिकै किसीभीप्रियअप्रियपदार्थकीप्राप्ति संभवतीनहीं॥और लोकविषे आपणेतैंभिन्नकरिकै जान्याहुआपदार्थही हर्षविषादकाहे तुहोवैहै आपणाआत्मा किसीकेहर्षविषादकाहेतुहोवै नहीं ॥ याकारणतैं ताप्रियअप्रियपदार्थकीप्राप्तिकरिकै ताविद्वान्पुरुषकूं हर्षविषादकीप्राप्ति संभवतीनहींइति ॥ अब जिसअद्वितीयआत्माकेज्ञानकरिकै ताविद्वान्पुरुषकूं हर्षविषादकीप्राप्ति नहीहोवैहै॥ताआत्मज्ञानका साधन पूर्वक निरूपणकरेहै (स्थिरबुद्धिरसंमूढोब्रह्मविद्ब्रह्मणिस्थितःइति)स्थिरा कहिये संन्यासपूर्वक वेदांतवाक्योंके विचारकीपरिपक्वताकरिकै संशयतैंरहितहुईहै ब्रह्मविषेबुद्धिजिसकी ताकानामस्थिरबुद्धिहै अर्थात् श्रवणका फलरूपजा प्रमाणगत असंभावनाकीनिवृत्तिहै तथामननकाफलरूप जा प्रमेयगतअसंभावनाकीनिवृत्तिहै तेदोनोंफलजिसपुरुषकूं प्राप्तहुएहैंइति ॥ शंका ॥ हेभगवन् ताप्रमाणगतअसंभावनातैं तथाप्रमेयगतअसंभावनातैं रहितजोपुरुषहै ॥ तिसपुरुषकूंभी विपरीतभावनारूपप्रतिबंधकेवशतैं आत्माकासाक्षात्कार नहींहोवैगा ॥ ऐसीअर्जुनकी शंकाकेहुए श्रीभगवान् निदिध्यासनकूंकथनकरेहैं (असंमूढइति) तहां अनात्माकारविजातीयवृत्तियोंकेव्यवधानतैंरहित जो आत्माकार सजातीयवृत्तियोंका प्रवाहहै ताकानाम निदिध्यासनहै ॥ तानिदिध्यासनकीपरिपक्वताकरिकै विपरीतभावनारूप संमोहतैंरहित जोपुरुषहैताकानाम असंमूढहै ॥ ईहां वेदांतशास्त्र जीवब्रह्मकेअभेदकाप्रतिपादकहै अथवा भेदकाप्रतिपादकहै याप्रकारकेसंशयकानाम प्रमाणगतअसंभावनाहै ॥ और यहजीवात्मा ब्रह्मरूपहै अथवानहींहै इत्या

दिकसंशयोंकानाम प्रमेयगतअसंभावनाहै ॥ और देहादिकोंविषेआत्मत्वबुद्धिकानाम विपरीतभावनाहै ॥ तेअसंभावनाविपरीतभावना आत्मज्ञानके प्रतिबंध कहोवैहैं ॥ ताअसंभावनाविपरीतभावनाकी जबी श्रवणमननिदिध्यासनतैं निवृत्तिहोवैहै ॥ तबी सर्वप्रतिबंधोंतैंरहितहुआ सोपुरुष ब्रह्मवित्होवैहै ॥ अर्थात् मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकार ब्रह्मकूं आपणाआत्मारूपकरिकैसाक्षात्कारकरैहै ॥ तिसतैंअनंतर समाधिकीपरिपक्वताकरिकै सोविद्वान् पुरुष तानिर्दोषसमब्रह्मविषेहीं अभेदरूपकरिकैस्थितहोवैहै ॥ ताब्रह्मतैंभिन्न दूसरेकिसीपदार्थविषेस्थितहोवैनहीं ॥ इसप्रकार ब्रह्मविषेस्थितहुआ सोविद्वान्पुरुष जीवन्मुक्त कह्याजावैहै तथा स्थितप्रज्ञ कह्याजावैहै ॥ ऐसेजीवन्मुक्तपुरुषविषे द्वैतप्रपंचकादर्शन हैनहीं यातैं ताजीवन्मुक्तपुरुषकूं प्रियअप्रियवस्तुकीप्राप्तिहुएभी जोहर्षविषादकाअभावकथ नकऱ्याहै सोउचितहींहै और साधकमुमुक्षुजननैंतौं ताद्वैतदर्शनकेविद्यमानहुएभी तिनविषयोंविषेदोषदृष्टिकरिकै सोहर्षविषाद प्रयत्नकरिकैंपरित्यागकरणाइति ॥ २० ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् बाह्यशब्दादिकविषयोंविषेजाप्रीतिहै ॥ साप्रीति पूर्वअनेकजन्मोंविषेअनुभूतहोणेतैं अत्यंतप्रबलहै ॥ यातैं तिनबाह्य विषयोंविषे आसक्तहुआहैचित्तजिसका ऐसेपुरुषकी सर्वदृष्टसुखोंतैंरहित अलौकिकब्रह्मविषे स्थिति किसप्रकारहोवैगी ॥ किंतु नहींहोवैगी ॥ और जोआप यहकहो ॥ सोब्रह्म परमआनंदरूपहै ॥ यातैं बाह्यविषयोंकीप्रीतिकापरित्यागकरिकै ताब्रह्मविषे तिसपुरुषकीस्थिति संभवहोइसकेहैइति ॥ सोयहआपका कहणा भीसंभवतानहीं ॥ काहेतैं सोब्रह्मकाआनंदअनुभवहोतानहीं ॥ यातैं ताब्रह्मानंदकूं चित्तकेस्थितिकीहेतुतासंभवतनिहीं ॥ अनुभवकऱ्याहुआ आनंदहीं चित्तके स्थितिकाहेतुहोवैहै ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहैहै ॥

(मू० श्लो०) बाह्यस्पर्शेष्वसक्तात्माविंदत्यात्मनियत्सुखम् ॥ सब्रह्मयोगयुक्तात्मासुखमक्षय्यमश्नुते ॥ २१ ॥ बाह्यस्पर्शेषु । असक्तात्मा । विंदति । आत्मनि । यत् । सुखं । सः । ब्रह्मयोगयुक्तात्मा । सुखम् । अक्षय्यम् । अश्नुते ॥ २१ ॥ (इतिपदच्छेदः) हेअर्जुन बाह्यशब्दादिकविषयोंविषे आसक्तितैंरहितपुरुष अंतःकरणविषेस्थित जो सुखहै तिसकूं प्राप्तहोवैहै तथा सोतृष्णारहित ब्रह्मयोग विषेयुक्तचित्तवाला नाशतैंरहित सुखकूंभी प्राप्तहोवैहै ॥ २१ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन श्रोत्रादिकइंद्रियोंकरिकैग्रहणकरणेयोग्य जेशब्दादिकविषयहैं ॥ तेशब्दादिकविषय अनात्मवस्तुकाधर्महोणेतैं बाह्यकहेजावैहैं ॥ ऐसेबाह्य शब्दादिकविषयोंविषे नहींआसक्तिकूंप्राप्तभयाहैचित्तजिसका ऐसाजोनिष्कामपुरुषहै ॥ सोनिष्कामपुरुष तृष्णातैंरहितहोणेतैं अत्यंतविरक्तहुआ आपणेअंतः करणविषेस्थित जोबाह्यविषयोंकीअपेक्षातैंरहित उपशमरूपसुखहै तिससुखकूंहीं निर्मलअंतःकरणकीवृत्तिकरिकै अनुभवकरैहै ॥ यहवार्त्ता भारतविषेभीकथन

करीहै ॥ तहांश्लोक ॥ (यच्चकामसुखंलोकेयच्चदिव्यंमहत्सुखम् ॥ तृष्णाक्षयसुखस्यैतेनार्हतःषोडशींकलाम्) ॥ अर्थयह ॥ इसलोकविषे जेकामजन्यसुखहैं ॥ तथा स्वर्गादिकलोकोंविषे जेमहान् दिव्यसुखहैं ॥ तेसर्वसुखतृष्णाकीनिवृत्तिजन्यसुखके षोडशवेंभागकेतुल्यभीनहींहोवैहैंइति ॥ अथवा (आत्मनि) यापद करिके प्रत्यक्आत्माका ग्रहणकरणा ॥ यापक्षविषे तावचनका यहअर्थकरणा ॥ त्वंपदार्थरूप प्रत्यक्आत्माविषेविद्यमानजोस्वरूपभूतसुखहैजोसुख सुषुप्तिअवस्थाविषे सर्वप्राणीयोंकूं अनुभवहोवैहै ॥ तथा जोसुख बाह्यविषयोंकीआसक्तिरूपप्रतिबंधकेवशतैं प्रतीतहोतानहीं ॥ तिसीस्वरूपभूतसुखकूं सोविद्वान्पुरुष बाह्यविषयोंकीआसक्तिकेअभावतैं प्राप्तहोवैहैइति ॥ किंवा सोविद्वान्पुरुष केवल त्वंपदार्थआत्माकेसुखकूंहीं नहींप्राप्तहोवैहै ॥ किंतु तत्पदार्थकीएकताके अनुभवकरिकै पूर्णसुखकूंभी अनुभवकरैहै ॥ इसअर्थकूं श्रीभगवान् कहैहै (सब्रह्मयोगयुक्तात्मासुखमक्षय्यमश्नुतेइति) परमात्मारूपब्रह्मविषे जोसमाधिरूपयोगहै ताकानाम ब्रह्मयोगहै ॥ ताब्रह्मयोगकरिकै युक्तहै आत्माक्या अंतःकरण जिसका अर्थात् ताब्रह्मयोगविषे संलग्नहैअंतःकरणजिसका ताकानाम ब्रह्मयोगयुक्तात्माहै ॥ अथवा ब्रह्मशब्दकरिकै तत्पदार्थका ग्रहणकरणा ॥ तिसतत्पदार्थरूपब्रह्मविषे महावाक्यार्थकाअनुभवरूपसमाधियोगकरिकै युक्तहुआहै क्याएक ताकूंप्राप्तहुआहै त्वंपदार्थरूपआत्माजिसका ताकानाम ब्रह्मयोगयुक्तात्माहै ॥ ऐसाब्रह्मयोगयुक्तात्माविद्वान्पुरुष उत्पत्तिनाशतैंरहित स्वस्वरूपभूत नित्यसुखकूंहीं प्राप्तहोवैहै ॥ अर्थात् सोविद्वान्पुरुष सर्वदा सुखानुभवरूपहींहोवैहै ॥ यद्यपि सोआत्मास्वरूपनित्यसुख वास्तवतैं इसपुरुषकूं तत्त्वसाक्षात्कारतैंपूर्वभी प्राप्तहींहै ॥ यातैं ताकीप्राप्तिकहणीसंभवतीनहीं ॥ पूर्वअप्राप्तवस्तुकीहीं प्राप्तिहोवैहै ॥ तथापि तत्त्वसाक्षात्कारतैंपूर्व सोनित्यसुख अविद्याकरिकैआवृतहै ॥ यहहीं तानित्यसुखकीअप्राप्तिहै ॥ और तत्त्वसाक्षात्कारकरिकै ताअविद्याकीनिवृत्तिहोइजावैहै ॥ यहहीं तासुखकी प्राप्तिहै ॥ अर्थात् तानित्यसुखकाजे अज्ञानहै सोईहीं तानित्यसुखकीअप्राप्तिहै ॥ और तानित्यसुखकाजोअपरोक्षज्ञानहै सोईहीं तानित्यसुखकीप्राप्तिहैइति ॥ यातैं प्रत्यक्आत्माविषेअभेदरूपकरिकैस्थितजोनित्यसुखहै ॥ तानित्यसुखकेअनुभवकीइच्छाकरताहुआ यहअधिकारीपुरुष महान्नरकोंकीप्राप्तिकरणेहारी तथाक्षणिक जाबाह्यविषयोंकीप्रीतिहै ताप्रीतितैं आपणे इंद्रियोंकूंनिवृत्तकरै ॥ ताकरिकैहीं इसपुरुषकी प्रत्यक्अभिन्नब्रह्मविषे स्थितिहोवैहै इति ॥ २१ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् बाह्यविषयोंकेप्रीतिकी जबी निवृत्तिहोवै तबी आत्माकेनित्यसुखका अनुभवहोवै ॥ और आत्माकेनित्यसुखका जबी अनुभवहोवै तबी ताअनुभवकेप्रसादतैं बाह्यविषयोंकेप्रीतिकीनिवृत्ति होवैहै इसप्रकार नित्यसुखकाअनुभव तथाबाह्यविषयोंकेप्रीतिकीनिवृत्ति इनदोनोंकी अन्योअन्यआश्रयता प्राप्तहोवैहै ॥ और जिनदोपदार्थोंविषे अन्योअन्य

आश्रयता प्राप्तहोवैहै ॥ तिनपदार्थोंविषे एकभी पदार्थ सिद्धहोतानहीं ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् विषयोंविषेदोषदर्शनकेअभ्यासकरिकैहीं तिनविषयोंकेप्रीतिकीनिवृत्तिहोवैहै यातैं ताअन्योअन्यआश्रयतादोषकीप्राप्तिहोवैनहीं याप्रकारकाउत्तरकथनकरैहै ॥

(मू० श्लो०) येहिसंस्पर्शजाभोगादुःखयोनयएवते ॥ आद्यंतवंतःकौंतेयनतेषुरमतेबुधः ॥ २२ ॥ ये । हि । संस्पर्शजाः । भोगाः । दुःखयोनयः । एव । ते । आद्यंतवंतः । कौंतेय । न । तेषु । रमंते । बुधः ॥ २३ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हे अर्जुन जिसकारणतैं जितनैंकी विषयइंद्रियकेसंबंधजन्य भोगहैं तेसर्वभोग दुःखकेहेतु हींहै तथा आदिअंतवालेहैं तिसकारणतैं विवेकी पुरुष तिनभोगोंविषे नहीं प्रीतिकरैहै ॥ २२ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन शब्दादिकविषयोंकेसाथि जेश्रोत्रादिकइंद्रियोंकेसंबंधहैं तिनोंकानाम संस्पर्शहै ॥ तासंस्पर्शकरिकैजन्य जितनैंकी अत्यंतक्षुद्रलेशमात्रसुखकेअनुभवरूप भोगहैं ॥ तेसर्वभोग इसलोकविषे तथापरलोकविषे रागद्वेषकरिकैव्याप्तहोणेतैं दुःखकेहीहेतुहैं ॥ अर्थात् इसमनुष्यलोकतैं आदिलैकेब्रह्मलोकपर्यंत जितनैंकीभोगहैं तेसर्वभोग तीनकालविषे दुःखकेहींहेतुहैं ॥ यहवार्त्ता विष्णुपुराणविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ (यावतःकुरुतेजंतुः संबंधान्मनसःप्रियान् ॥ तावंतोऽस्यनिखन्यंतेहृदयेशोकशंकवः) ॥ अर्थयह ॥ यहजीव जितनैंकी मनके प्रियसंबंधोंकूं करैहै ॥ तितनैहीं शोकरूपीशंकु इसपुरुषकेहृदयविषे छिद्रकरैहैंइति ॥ इसप्रकारके तेभोगभी कोईस्थिरहैंनहीं ॥ किंतु आदिअंतवालेहैं ॥ ईहां विषयइंद्रियकेसंयोगकानाम आदिहै ॥ और ताकेवियोगकानामअंतहै ॥ तेआदिअंतदोनो जिनोंविषे विद्यमानहोवैं तिनोंकानाम आदिअंतवतहै ॥ अर्थात् तेभोग ताआदिकालविषेभीनहींहैं तथाअंतकालविषेभीनहींहैं ॥ किंतु स्वप्नपदार्थोंकीन्यांई तेभोग केवल मध्यकालविषेहीं प्रतीतहोवैहैं ॥ यातैं तेभोग स्वप्नपदार्थोंकीन्यांइं क्षणिकहैं तथामिथ्यारूपहै ॥ यहवार्त्ता श्रीगौडपादाचार्यनैंभी कथनकरीहै ॥ (आदावंतेचयन्नास्तिवर्त्तमानेपितत्तथाइति ॥) अर्थयह ॥ जोपदार्थ आदिकालविषेभी नहींहोवैहै तथाअंतकालविषेभी नहींहोवैहै ॥ सोपदार्थ वर्त्तमान कालविषेभी वास्तवतैंनहींहोवैहै॥ जैसे स्वप्नकेपदार्थहैंइति॥ हेअर्जुन जिसकारणतैं यहविषयजन्यभोगइसप्रकारकेहैं ॥ तिसकारणतैं विवेकीपुरुष तिनभोगोंविषे नहींरमणकरैहै॥ अर्थात् तिनभोगोंकूं प्रतिकूलजानिकै सोविवेकीपुरुष तिनभोगोंविषे प्रीतिकूं अनुभवकरैनहींइति ॥ यहवार्त्ता पतंजलिभगवान्नैंभी योगसूत्रोंविषेकथनकरीहैं ॥ तहांसूत्रं ॥ (परिणामतापसंस्कारदुःखैर्गुणवृत्तिविरोधाच्चदुःखमेवसर्वंविवेकिनः इति ॥) अर्थयह ॥ भलीप्रकारतैंनिश्चयकऱ्याहै क्लेशादिकोंकास्वरूप जिसनैं ऐसाजोविवेकीपुरुषहैं तिस विवेकीपुरुषकूं इसलोकके तथापरलोकके सर्वविषयसुख दुःखरूपहींप्रतीतहोवैहैं ॥ अविवेकीपुरुषकूं तेविषयसुख दुःखरूपप्रतीतहोवैनहीं॥

याकारणतैंहीशास्त्रविषे ताविवेकीपुरुषकूं अक्षिपात्रकेतुल्य कथनकऱ्याहै॥जैसे ऊर्णनाभिजंतुकृतजोतंतुहै॥सोतंतु अत्यंतसूक्ष्महोवैहै तथा अत्यंतकोमलहोवैहै ॥ ऐसा तंतुभी नेत्रविषेपड्याहुआ आपणस्पर्शकरिकै तानेत्रकूं दुःखकीहींप्राप्तिकरेहै ॥ तानेत्रतैंभिन्न दूसरेमुखनासिकादिकअंगोविषेपड्याहुआ सोतंतुदुःखकीप्राप्ति करैनहीं ॥ तैसे मधु विष दोनोंकरिकैमिलित अन्नभोजनकीन्यांई तीनकालोंविषे क्लेशकरिकैव्याप्त जेविषयभोगकेसाधनहैं ॥ तेविषयभोगके साधन ताविवेकीपुरुषकूंहीं दुःखकी प्राप्तिकरेहैं॥अर्थात् सोविवेकीपुरुषहीं तिनोंकूं दुःखरूपमानेहैं ॥ और रात्रि दिनविषे बहुतप्रकारकेदुःखोंकूंसहनकरणेहारा जो अविवेकीमूढपुरुषहै॥ तिसअविवेकी मूढपुरुषकूं तेविषयभोगके साधन दुःखकीप्राप्तिकरेनहीं॥अर्थात् सोअविवेकीपुरुष तिनभोगकेसाधनोंकूं दुःखरूपमानतानही तहां तापतंजलिसूत्रविषे (परिणामताप संस्कारदुःखैः) यापदकरिकै भूत वर्तमान भविष्यत् यातीनकालोंविषेभी दुःखकरिकैं मिश्रितहोणेतैं तिनविषयसुखोंविषे औपाधिकदुःखरूपता कथनकरीहै और (गुणवृत्तिविरोधात्) यापदकरिकै तिन विषयसुखोंविषे स्वरूपतैंभीदुःखरूपता कथनकरीहै ॥ तहां (परिणामतापसंस्कारदुःखैः) यावचनकेअंतविषेस्थित जो दुःख यहशब्दहै ॥ तादुःखशब्दका परिणाम ताप संस्कार यातीनोंशब्दोंकेसाथि संबंधकरणा ॥ याकरिकैयह अर्थसिद्धहोवेहै ॥ परिणामदुःख तापदुःख संस्कार दुःख यातीनोंरूपताकरिकै तेविषयसुख दुःखरूपहींहै ॥ सोयह प्रकार अब दिखावेहैं ॥ जितनाकी विषयसुखकाअनुभवहोवैहै ॥ सोसर्व रागकरिकैयुक्तहींहोवैहै ॥ रागतैंविना सोविषयसुखकाअनुभवहोवैहैनही ॥ काहेतैं जिसपुरुषका जिसवस्तुविषे रागहोवैहै ॥ सोपुरुषही तिसवस्तुकीप्राप्तिकरिकै सुखीहोवैहै और जिस पुरुषका जिसवस्तुविषे रागनहींहोवैहै ॥ सोपुरुष तिसवस्तुकीप्राप्तिकरिकै सुखीहोवैनही ॥ यहवार्त्ता सर्वलोकविषेप्रसिद्धहै ॥ यातैं विषयकीप्राप्तितैंपूर्व उद्भवहुआ जोरागहै सोरागही ताविषयकीप्राप्तिकालविषे सुखरूपकरिकैपरिणामकूं प्राप्तहोवैहै और सोराग क्षणक्षणविषे वृद्धिकूंप्राप्तहोताजावैहै ॥ तारागकाविषयजोपदार्थहै तापदार्थकी जबी अप्राप्तिहोवैहै तबी अवश्यकरिकै दुःखकीप्राप्तिहोवेहै ॥ यातैं सोराग दुःखरूपहीहैं ॥ तहां भोगोंविषे परितृप्तताकरिकै जाइंद्रियोंकीउपशांतिहै ताकानाम सुखहै ॥ और तिनभोगोंविषे लौल्यताकरिकै जातिनइंद्रियोंकी अनुपशांतिहै ताकानाम दुःखहै ॥ सोबहुतभोगोंकेभोगणेकरिकै तिनइंद्रियोंकूं तृष्णातैंरहितकरणेविषे कोईभीप्राणी समर्थनहींहै ॥ उलटा बहुतभोगणेंकरिकैं तृष्णाकीवृद्धिहोतीजावैहै ॥ जैसे घृतकाष्ठोंकेपावणेकरिकै अग्निकीवृद्धिहोती जावैहै यातैं दुःखरूपरागकापरिणामहोणेतैं सोविषयसुखभी दुःखरूपहींहोवैहै जिसकारणतैं कार्यकारणकाअभेदहींहोवैहै ॥ तिसकारणतैं दुःखरूपरागका परिणामहोणेतै सोविषयसुखभी दुःखरूपहींहै ॥ इतनेकरिकै ताविषयसुखविषे परिणामदुःखरूपता कथनकरी ॥ अब तापदुःखरूपता कथन करेहैं ॥ तहां यहपुरुष जिसकालविषे ताविषयसुखकाअनुभवकरेहै ॥ तिसकालविषे ताविषयसुखकेप्रतिकूल जितनेकीदुःखकेसाधनहैं तिनसर्वदुःखकेसाधनोंविषें

यहपुरुष द्वेषकरेहै ॥ और तिन दुःखकेसाधनरूपभूतोंका नहीहननकरिकै सोविषयसुखकाभोग संभवतानहीं ॥ यातैं ताविषयसुखवासतै सोपुरुष तिनप्रतिकूलभूतोंकूं अवश्यकरिकै हननकरेहै तहां जितनैंकीदुःखहै तेसर्वदुःखकेसाधन हमारेकूं मतप्राप्त होवैं याप्रकारकाजो संकल्पविशेषहै ताकानाम द्वेषहै ॥ ताद्वेषकेविषयरूप जितनैंकी दुःखकेसाधनहैं ॥ तिनसर्वोंकेनिवृत्तकरणेविषे कोईभी प्राणी समर्थहोवैनही ॥ यातैं ताविषयसुखकेअनुभवकालविषेभी तासुखकेविरोधीविषयकद्वेष सर्वदा बन्यारहेहै तिसद्वेषके विद्यमानहुए सोतापदुःख निवृत्तकरणेकूं अशक्यहै ईहां तापकूंहीं द्वेषकहेहैं ॥ इसप्रकार तिनदुःखसाधनोंकेनिवृत्तकरणेविषे असमर्थजोपुरुषहै ॥ सोपुरुष तिसकालविषे मोहकूंभी अवश्यकरिकैप्राप्तहोवैहै ॥ यातैं तापदुःखताकीन्यांई संमोहदुःखताभी निवृत्तकरणेकूं अशक्यहै ॥ तहां तिसतापरूपद्वेषतैं कर्माशय उत्पन्नहोवैहै ॥ काहेतैं जोपुरुष विषयसुखकेसाधनोंकीइच्छाकरेहै सोपुरुष शरीरकरिकै तथामनकरिकै तथावाणीकरिकै अवश्य प्रवृत्तहोवैहै ॥ ताप्रवृत्तितैंअनंतर आपणेअनुकूलप्राणीयोंऊपरि अनुग्रहकरेहैं॥ और आपणेप्रतिकूलप्राणीयोंका हननकरेहै ॥ ताअनुकूलप्राणीयोंके अनुग्रहतै तथा प्रतिकूलप्राणीयोंकेहननतैं ॥ सोपुरुष धर्मअधर्मकूं संपादनकरेहै ॥ याकानाम कर्माशयहै ॥ सोकर्माशय लोभतैं तथामोहतैं होवैहै इति ॥ इतनैंकरिकै तिनविषयसुखोंविषे तापदुःखता कथनकरी ॥ अब संस्कारदुःखता कथनकरेहैं ॥ तहां वर्त्तमानकालविषेजोविषयसुखकाअनुभवहैं ॥ सोविषयसुखका अनुभव आपणेनाशकालविषे इसपुरुषकेचित्तविषे संस्कारोकूंउत्पन्नकरिजावैहै ॥ आगेतैं तेसंस्कार तासुखविषयकस्मरणकूं उत्पन्नकरेहैं ॥ तिसतैंअनंतर सोसुखविषयकस्मरण तिनसुखोंविषे रागकूंउत्पन्नकरेहै ॥ तिसतैंअनंतर सोसुखविषयकराग तासुखकीप्राप्तिवासतैं शरीरमनवाणीकीचेष्टाकूं उत्पन्नकरेहै ॥ तिसतैंअनंतर साशरीरादिकोंकीचेष्टा पुण्यपापरूपकर्माशयकूं उत्पन्नकरेहै ॥ तिसतैंअनंतर तेपुण्यपापकर्म जन्मादिकोंकीप्राप्तिकरेहैं ॥ इसकानाम संस्कारदुःखताहै इसप्रकार तापमोहकेसंस्कारभीजानिलेणे ॥ इतनैंकरिकै भूत भविष्यत् वर्त्तमान यातीनोंकालविषे दुःखकरिकैयुक्तहोणेतैं यहसर्वविषयसुख दुःखरूपहींहै यहअर्थ कथनकऱ्या ॥ अब तिनविषयसुखोंविषे स्वरूपतैंभी दुःखरूपता कथनकरेहै (गुणवृत्तिविरोधाच्च) इसवचनकरिकै ईहां सुखरूपजोसत्त्वगुणहै तथादुःखरूपजोरजोगुणहै तथामोहरूपजोतमोगुणहै यातीनोंका गुणशब्दकरिकै ग्रहणकरणा ॥ ते सत्त्व रज तम तीनोंगुण परस्पर विरुद्धस्वभाववालेहुएभी जैसे तेल वर्त्ति अग्नि यहतीनों मिलिकैं एकहीं दीपकरूपकार्यकूं उत्पन्नकरेहैं तैसे इस पुरुषकेभोगवासतै तीनगुणात्मककार्यकूं उत्पन्नकरेहैं ॥ तिसत्रिगुणात्मककार्यविषेभी एकगुणकीतो प्रधानताहोवैहै ॥ और दूसरेदोगुणोंकी गौणताहोवैहैं ॥ ताएकप्रधानगुणकूंअंगीकारकरिकैंहीं सोत्रिगुणात्मककार्यभी सात्त्विक राजस तामस याप्रकार एकएकगुणकरिकै कथनकऱ्याजावैहै ॥ तहां सुखकाउपभोगरूपजोप्रत्ययहै ॥ सोप्रत्यय उद्भूतसत्त्वगुणकाकार्यहुआभी अनुद्भूतरजतमकाभी कार्यहोवैहै ॥ केवल

सत्त्वगुणका सोप्रत्यय कार्यहैनहीं ॥ यातैं सोसुखकाउपभोगरूपप्रत्ययभी त्रिगुणात्मकहींहैं यातैं तासुखकाउपभोगरूपप्रत्ययविषे सुखरूपतातथादुःखरूपता तथावि षादरूपता यहतीनोंहीं विद्यमानहैं ॥ याकारणतैंहीं विवेकीपुरुषकूं तैंसर्वविषयकसुखोंके अनुभव दुःखरूपहींहैं ॥ ऐसादुःखरूपविषयसुखकाउपभोगरूपप्रत्ययभी कोईस्थिरनहींहै ॥ किंतु सोप्रत्यय शीघ्रहीनाशकूंप्राप्तहोवैहै ॥ जिसकारणतैं (चलंचगुणवृत्तं) इसवचनकरिकै चित्तकूं शीघ्रपरिणामि कथनकऱ्याहै ॥ शंका॥ एकहीं सोप्रत्यय एकहींकालविषे परस्परविरुद्ध सुखदुःखमोहरूपताकूं कैसेप्राप्तहोवैगा किंतु नहींप्राप्तहोवैगा ॥ समाधान ॥ उद्भूत अनुद्भूत यादोनोंका परस्परवि रोधहोवैनहीं ॥ किंतु समवृत्तिवालेगुणोंकाहीं एककालविषे परस्पर विरोधहोवैहै ॥ विषमवृत्तिवालेगुणोंका एककालविषे परस्पर विरोधहोतानहीं ॥ जैसे इसपुरुषविषे अभिव्यक्तिकूंप्राप्तहुएजे धर्म ज्ञान वैराग्य ऐश्वर्य यहच्यारोहैं तेअभिव्यक्तधर्मादिकच्यारों आपणेसमान अभिव्यक्तिकूंप्राप्तहुएजे अधर्म अज्ञान अवैराग्य अनैश्वर्य यहच्यारिहै तिनचारोंकेसाथिहीं यथाक्रमतैं विरोधकूंकरेहै ॥ अनभिव्यक्तअधर्मादिकोंकेसाथि अभिव्यक्तधर्मादिक विरोधकूंकरते नहीं ॥ इसलोकविषेभी एकप्रधानपुरुषका दूसरेप्रधानपुरुषकेसाथिहीं विरोधहोवैहै ॥ दुर्बलपुरुषकेसाथि ताप्रधानपुरुषका विरोधहोतानहीं ॥ तैसे सत्त्व रज तम यहतीनोंगुणभी एककालविषे परस्पर प्रधानतामात्रकूं नहींसहनकरेहैं ॥ एकदूसरेके सद्भावमात्रकूंअसहनकरतेनहीं ॥ इसीप्रकार परिणाम दुःख तापदुःख संस्कारदुःख यातीनोंविषेभी एकहींकालविषे राग द्वेष मोह यातीनोंकासद्भावभीजानिलेणा ॥ जिसकारणतैं तेरागद्वेषादिकक्लेश प्रसुप्त तनु विच्छिन्न उदार इनच्यारिरूपोंकारिकै च्यारिअवस्थावोंवालेहींहोवैहैं ॥ अब तिनक्लेशोंकास्वरूप योगशास्त्रकीरीतिसैंवर्णनकरेहैं ॥ तहांयोगसूत्राणि ॥ (अविद्याऽस्मितारागद्वेषा भिनिवेशाःपंचक्लेशाः ॥ १ ॥ अविद्याक्षेत्रमुत्तरेषांप्रसुप्ततनुविच्छिन्नोदाराणाम् ॥ २ ॥ अनित्याशुचिदुःखाऽनात्मसुनित्यशुचिसुखात्मख्यातिरविद्या ॥ ३ ॥ दृग्दर्श नशक्त्योरेकात्मतेवास्मिता ॥ ४ ॥ सुखानुशयीरागः ॥ ५ ॥ दुःखानुशयीद्वेषः ॥ ६ ॥ स्वरसवाहीविदुषोऽपितथारूढोऽभिनिवेशः ॥ ७ ॥ तेप्रतिप्रसवहे याःसूक्ष्माः ॥ ८ ॥ ध्यानहेयास्तद्वृत्तयः ॥ ९ ॥ क्लेशमूलःकर्माशयोदृष्टाऽदृष्टजन्मवेदनीयः ॥ १० ॥ सतिमूलेतद्विपाकोजात्यायुर्भोगाः ॥ ११ ॥) अब यथाक्र मतैं इनएकादशसूत्रोंकाअर्थ निरूपणकरेहैं ॥ अविद्या अस्मिता राग द्वेष अभिनिवेश यहपंचक्लेशहोवैहैं ॥ तहां कर्मके तथाताकेफलके प्रवर्त्तकहुएजे इस पुरुषकूं दुःखकीप्राप्तिकरैं तिनोंकानाम क्लेशहै ॥ याप्रकारकालक्षण तिनअविद्यादिकपांचोविषेघटेहै ॥ यातैं तेअविद्यादिकपांचो क्लेशकहेजावैहैंइति ॥ १ ॥ तिनपंचक्लेशोंविषेभी प्रथमक्लेशरूप जाअविद्याहै ॥ साअविद्याहीं प्रसुप्त तनु विच्छिन्न उदार याच्यारिअवस्थावाले अस्मितादिकच्यारिक्लेशोंका कारणरूपहै ॥ तहां ततअभाववालेविषेततवत्ताबुद्धि विपर्यय मिथ्याज्ञान अविद्या यहच्यारोशब्द एकहींअर्थकेवाचककहैंइति ॥ २ ॥ साअविद्या च्यारि प्रकारकी होवैहै ॥

तहां अनित्यपदार्थोंविषे नित्यबुद्धिकरणी यहप्रथम अविद्याहै ॥ जैसे पृथिवी चंद्र सूर्य तारागण स्वर्ग देवता इत्यादिक अनित्यपदार्थोंविषे यहसर्वपदार्थनित्यहैं ॥ याप्रकारकीबुद्धिकरणीइति ॥ और अशुचिपदार्थोंविषे शुचिबुद्धिकरणी यहदूसरीअविद्याहै ॥ जैसे अशुचिस्त्रीकेशरीरविषे शुचिबुद्धिकरणी ॥ यह वार्त्ता श्रीव्यासभगवान्नैंभी कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ (स्थानाद्बीजादुपष्टंभान्निष्पंदान्निधनादपि ॥ कायमाधेयशौचत्वात्पंडिताह्यशुचिंविदुः) ॥ अर्थयह ॥ शास्त्रकेयथार्थतात्पर्यकूंजानणेहारेविद्वान्पुरुष इसशरीरकूं स्थान बीज उपष्टंभ निष्पंद निधन आधेयशौच इतनैंहेतुवोंतैं अशुचिहीं जानेहैं ॥ तहां विष्ठामूत्रादिकोंकरिकैयुक्त जोमाताकाउदरहै ताकानाम स्थानहै ॥ ऐसेमलिनस्थानविषे इसशरीरकीस्थितिहोवैहै ॥ यातैं यहशरीर स्थानतैंभी अशुचिहींहै ॥ और पिताकाजो सप्तमधातुरूपशुक्रहै तथामाताकाजो सप्तमधातुरूपशोणितहै याकानाम बीजहै ॥ ऐसेबीजतैं इसशरीरकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ यातैं यहशरीर बीजतैंभी अशुचिहींहै ॥ और अन्नकापरिणामरूप जो श्लेष्मरुधिरादिकहैं याकानामउपष्टंभहै ॥ ताउपष्टंभतैंभी यहशरीर अशुचिहींहै ॥ और मुख नासिका कर्ण नेत्र पायु उपस्थ इनसर्व द्वारोंतैं जेमलका बाहरिनिकसणाहै याकानाम निष्पंदहै ॥ तानिष्पंदतैंभी यहशरीर अशुचिहींहै ॥ और मरणका नाम निधनहै ॥ जिसमरणकरिकै विद्वान्ब्राह्मणकाशरीरभी अशुचिहोवैहै ॥ तानिधनतैंभी यहशरीर अशुचिहींहै और स्नानचंदनलेपादिकोंकरिकै जोइसशरीरविषे शुचित्वकाआपादनकरणाहै याकानाम आधेयशौचहै ॥ ताआधेयशौचताकरिकैभी यहशरीर अशुचिहींहै इति ॥ ऐसेअशुचिस्त्रीशरीरविषे शुचिबुद्धिकरणी दूसरीअविद्याहैइति ॥ और दुःखरूप विषयभोगोंविषे सुखबुद्धिकरणी यहतीसरीअविद्याहै ॥ सादुःखविषेसुखबुद्धितौं (परिणामतापसंस्कारदुःखैर्गुणवृत्तिविरोधाच्चदुःखमेवसर्वंविवेकिनः) इससूत्रकेव्याख्यानविषे पूर्वकथनकरिआयेहैंइति ॥ और अनात्मवस्तुविषे आत्मबुद्धिकरणी यहचतुर्थअविद्याहै ॥ जैसे अनात्मरूपइसस्थूलशरीरविषे मैंमनुष्यहूं मैंब्राह्मणहूं इसप्रकारकीआत्मबुद्धिकरणीइति ॥ इसप्रकार च्यारिप्रकारकेभेदकरिकैस्थितजाअविद्याहै ॥ साअविद्याहीं अस्मितादिकसर्वक्लेशोंका मूलभूतहै ॥ इसीअविद्याकूं शास्त्रविषे तम यानामकरिकैकथनकरेहैं इति ॥ ३ ॥ और दृक्शक्ति जोपुरुषहै तथादर्शनशक्ति जाबुद्धिहै तेदोनों भोक्ताभोग्यरूपकरिकै अत्यंतभिन्नहैं ॥ ऐसे पुरुष बुद्धि दोनोंका जोअविद्याकृत अभेदअभिमानहै याकानाम अस्मिताहै ॥ इसीअस्मिताकूं ब्रह्मवेत्तापुरुष हृदयग्रंथि इसनामकरिकैकथनकरेहैं ॥ और इसीअस्मिताकूं शास्त्रविषे मोह यानाम करिकैकथनकरेहैंइति ॥ ४ ॥ और तिसतिससुखकीप्राप्तिकेजेसाधनहैं तिनसर्वसाधनोंतैंरहित पुरुषका जो सर्वप्रकारकेसुख हमारेकूंप्राप्तहोवैं याप्रकारका विपर्ययविशेषहै ताकानाम रागहै ॥ इसीरागकूं शास्त्रविषे महामोह यानामकरिकै कथनकरेहैं ॥ ५ ॥ और दुःखकीप्राप्तिकरणेहारे साधनोंकेविद्यमानहुएभी हमारे

कूंकोईप्रकारकादुःख नहींप्राप्तहोवै याप्रकारका जोविपर्ययविशेषहै ताकानाम द्वेषहै ॥ इसीद्वेषकूंशास्त्रविषे तामिश्र यानामकरिकैकथनकरेहैं इति ॥ ६ ॥ और जीवनकाहेतुजोआयुष्है ताआयुष्केअभावहुएभी इनअनित्यभीदेहइंद्रियादिकोंसाथि हमारा कदाचित्भी वियोगनहींहोवै याप्रकारकाजो विद्वान्अविद्वान् सर्वप्राणियोंविषेसाधारण मरणकात्रासरूपविपर्ययहै ताकानाम अभिनिवेशहै ॥ इसीअभिनिवेशकूं शास्त्रविषे अंधतामिस्र यानामकरिकैकथनकऱ्याहैइति ॥ ७ ॥ यहवार्त्ता पुराणविषेभीकथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ (तमोमोहोमहामोहस्तामिस्रोह्यंधसंज्ञितः ॥ अविद्यापंचपर्वैषाप्रादुर्भूतामहात्मनः) ॥ अर्थयह ॥ इसपुरुष कीअविद्या तम मोह महामोह तामिस्रअंधतामिस्र इनपंचप्रकारोंकरिकै प्रादुर्भावकूंप्राप्तहोवैहैइति ॥ यहअविद्यादिकपंचक्लेश प्रसुप्तअवस्था तनुअवस्थाविच्छिन्न अवस्था उदारअवस्था याच्यारिअवस्थावोंवालेहोवैहैं ॥ तहां असत्कार्यकी कदाचित्भी उत्पत्तिहोवैनहीं ॥ यातैं तिनअविद्यादिकपंचक्लेशोंकी आपणी उत्पत्तितैंपूर्व जाअनभिव्यक्तरूपकरिकैस्थितिहै ताकानाम प्रसुप्तअवस्थाहै ॥ और अभिव्यक्तिकूंप्राप्तहुएभी तिनक्लेशोंविषे दूसरेसहकारीकारणकेअलाभतैं जोकार्यकीअजनकताहै ताकानाम तनुअवस्थाहै ॥ और जेक्लेश अभिव्यक्तिकूंभी प्राप्तहुएहैं तथाजिनक्लेशोंनैं आपणेआपणेकार्यकूंभी उत्पन्न कऱ्या है ऐसेक्लेशोंकाभी जोकिसीबलवान्प्रत्ययकरिकै अभिभवहै ताकानाम विच्छिन्नअवस्थाहै ॥ और जेक्लेश अभिव्यक्तिकूंभीप्राप्तहुएहैं तथा दूसरेसहकारी कारणोंकीसंपत्तिकूंभीप्राप्तहुएहैं ॥ ऐसेक्लेशोंविषे जोप्रतिबंधतैंरहितपणेकरिकै आपणेआपणेकार्यकीजनकताहै ताकानाम उदारअवस्थाहै ॥ इस प्रकारकी च्यारिअवस्थावोंकरिकैविशिष्ट तथाविपर्ययबुद्धिरूप ऐसेजे अस्मितादिक च्यारिक्लेशहैं ॥ तिनच्यारोंक्लेशोंका सामान्यरूपअविद्याहीं क्षेत्ररूपहै ॥ अर्थात् साअविद्या तिनच्यारोंक्लेशोंकेउत्पत्तिकाभूमिरूपहै ॥ तिनसर्वक्लेशोंविषे विपरीतबुद्धिरूपता पूर्वकथनकरिआयेहैं ॥ यातैं ताअविद्याकीनिवृत्तिकरिकैहीं तिनअस्मितादिकसर्वक्लेशोंकीनिवृत्तिहोवैहैइति ॥ तेक्लेशभी सूक्ष्म स्थूल याभेदकरिकै दोप्रकारकेहोवैहैं ॥ तहां प्रकृतिविषेलीनपुरुषोंके जेप्रसुप्तक्लेशहैं ॥ तथा विरोधीभावनाकरिकै तनुकरेहुए जेयोगीपुरुषोंके तनुक्लेशहैं ॥ तेप्रसुप्तअवस्थावालेक्लेश तथातनुअवस्थावालेक्लेश दोनों सूक्ष्म कहेजावैहैं ॥ तेसूक्ष्मक्लेशतौं मनका निरोधरूपनिर्बीजसमाधिकरिकैहीं निवृत्तहोवैहैं ॥ इसीमनकेनिरोधकूं सूत्रविषे प्रतिप्रसव इसनामकरिकैकथनकऱ्याहैइति ॥ ८ ॥ और तिनसूक्ष्मक्लेशोंकाकार्यरूप जेविच्छिन्नअवस्थावाले तथाउदारअवस्थावाले क्लेशहैं तेदोनोंप्रकारकेक्लेश स्थूल कहेजावैहैं॥ तहां जेक्लेश बीचमैंविच्छेदकूंप्राप्तहोइकै तिसतिसरूपकरिकै पुनः पुनः प्रादुर्भावकूं प्राप्तहोवैहैं तेक्लेश विच्छिन्न कहेजावैहैं ॥ जैसे रागकालविषे क्रोध विद्यमानहुआभी प्रादुर्भूतहोवैनहीं किंतु कालांतरविषे सोक्रोध प्रादुर्भूतहोवैहै ॥ यातैं सोक्रोध विच्छिन्न कह्याजावैहै ॥ इसीप्रकार जिसकालमैं चैत्रनामा पुरुष एकस्त्रीविषेरागवालाहै तिसकालविषे सोचैत्रनामापुरुष अन्यस्त्रियोंविषे कोईवैरा

ग्यकूंप्राप्तहुआनहीं ॥ किंतु तिसकालविषे सोचैत्रपुरुषकाराग ताएकस्त्रीविषे वृत्तिकूंप्राप्तहुआहै ॥ और अन्यस्त्रियोंविषे सोराग आगेवृत्तिकूंप्राप्तहोवैगा यातैं तिसकालविषे सोराग विच्छिन्न कह्याजावैहै ॥ इसप्रकारकीरीति दूसरेक्लेशोंविषेभी जानिलेणी और जेक्लेश जिसकालविषे विषयोंविषे वृत्तिकूंप्राप्तहुएहैं तेक्लेश तिसकालविषे सर्वरूपकरिकै प्रादुर्भूतहुए उदार कहेजावैहैं ॥ तेविच्छिन्नअवस्थावाले तथाउदारअवस्थावाले दोनोंप्रकारकेक्लेश अत्यंतस्थूलहैं ॥ यातैं तेदोनों प्रकारकेक्लेश शुद्धसत्त्वमय भगवत्‌केध्यानकरिकैहीं निवृत्तिहोवैहै ॥ तेदोनोंस्थूलक्लेश आपणीनिवृत्तिविषे तामनकेनिरोधकीअपेक्षाकरतेनहीं ॥ सूक्ष्मक्लेशहीं आपणीनिवृत्तिविषे तामनकेनिरोधकीअपेक्षाकरेहैं ॥ जैसे लोकविषे वस्त्रकाजोस्थूल मलहै सोस्थूलमल जलकेप्रक्षालनतैं निवृत्तहोइजावैहै और तावस्त्रविषे जोसूक्ष्म मल है सो सूक्ष्म मल क्षारसंयोगादिकोंकरिकै निवृत्तहोवैहै॥ तैसे तेस्थूलक्लेशतौ भगवत्‌केध्यानकरिकै निवृत्तहोवैहैं॥ और तेसूक्ष्मक्लेशतौ तामनकेनिरोधकरिकैनिवृत्तहोवैहैं॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ पूर्वउक्त परिणामदुःख तापदुःख संस्कारदुःख यातीनोंविषे प्रसुप्त तनु विच्छिन्न यातीनरूपोंकरिकै तेसर्व क्लेश सर्वदा रहेहैं ॥ और उदारअवस्थातौ किसीकालविषे किसीक्लेशकीहींहोवैहै ॥ यहअविद्यादिकपंच बाधनारूपदुःखकूंउत्पन्नकरतेहुए क्लेशशब्दकावाच्यहोवैहैंइति ॥ ९ ॥ औरधर्म अधर्मरूप जोकर्माशयहै ॥ सोक्लेशमूलकहीहोवैहै ॥ अर्थात् ताकर्माशयका तेक्लेशहींमूलभूतहै ॥ सोक्लेशमूलक कर्माशयभी दोप्रकारकाहोवैहै ॥ एकतौं दृष्टजन्मवेदनीय होवैहै ॥ दूसरा अदृष्टजन्मवेदनीय होवैहै ॥ तहां जिसदेवकरिकै तेधर्मअधर्मरूपकर्मकरेजावैहै तिसदेहकरिकै जो तिनकर्मोंकेफलका भोगणाहै ताकानाम दृष्टजन्मवेदनीयहै ॥ और जिसकर्माशयकाफल इसशरीरविषेभोग्याजावैनहीं किंतु जन्मांतरविषेभोग्याजावैहै सोकर्माशय अदृष्ट जन्मवेदनीय कह्याजावैहै इति ॥ १० ॥ तहां मूलभूतक्लेशोंकेविद्यमानहुए ताधर्मअधर्मरूपकर्माशयकाफल अवश्यकरिकैहोवैहै ॥ सोकर्माशयकाफलभी जाति आयुष भोग याभेदकरिकै तीनप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां जन्मकानाम जातिहै ॥ अथवा ब्राह्मणत्व देवत्व आदिकोंकानाम जातिहै ॥ और देह प्राण यादोनोंका जोचिरकालपर्यंतसंबंधहै ताकानामआयुष्है ॥ और श्रोत्रादिकइंद्रियोंकरिकै शब्दादिकविषयोंकाजोअनुभवहै ताकानाम भोगहै ॥ तिनतीनों विषेभी भोगतौं मुख्यहै ॥ और जाति आयुष् यहदोनों ताभोगका शेषरूपहैंइति ॥ ११ ॥ इसप्रकार तिनअविद्यादिकक्लेशोंकीसंतति निरंतर प्रवृत्तहोइरहीहै ॥ इसीपूर्वउक्तसर्वअभिप्रायकूं मनविषेराखिकै श्रीभगवान्‌नैं (येहिसंस्पर्शजाभोगादुःखयोनयएवते आद्यंतवंतः) यहवचन कथनकर्‍याहै ॥ तहां तिनविषयभोगोंविषे दुःखयोनित्वतौं (परिणामतापसंस्कारदुःखैर्गुणवृत्तिविरोधाच्च) इसवचनकरिकै पूर्वकथनकर्‍याहै॥ और तिनविषयभोगोंविषे आदिअंतवत्त्वतौं (चलंहिगुणवृत्तम्) इसवचनकरिकै पूर्वकथनकर्‍याहै ॥ यहसर्वव्याख्यान योगशास्त्रकेमतकेअनुसार कथनकर्‍याहै ॥ औरवेदांतमतविषेतौं ताकायहअर्थहै ॥ ब्रह्मकेआश्रित तथाब्र

लकूंविषयकरणेहारा जोअनादिभावरूपअज्ञानहै ताकानाम अविद्याहैं॥और सुखदुःखादिकधर्मसहित अहंकारका जो आत्माविषेअध्यासहै ताकानाम अस्मिताहै ॥ और राग द्वेष अभिनिवेश यहतीनोंतौं ताअहंकारकी वृत्तिविशेषहैं ॥ इसप्रकार संसार अविद्यामूलकहोणेतैं अविद्यारूपहींहै ॥ यातैं तेसर्वविषयभोग मिथ्यारूपहुयेभी रज्जुविषेसर्पअध्यासकीन्यांई दुःखकेहींकारणहैं ॥ तथा स्वप्नपदार्थोंकीन्यांई दृष्टिसृष्टिमात्रहोणेतैं आदिअंतवालेभीहै ॥ जिसपुरुषका अधिष्ठानआत्माकेसाक्षात्कारकरिकै सोअज्ञानसहितभ्रम निवृत्तहोइगयाहै ऐसाजोविद्वान्पुरुषहै सोविद्वान्पुरुष तिनामिथ्याविषयभोगोंविषे रमणकरतानहीं ॥ जैसे मृगतृष्णाकेवास्तवस्वरूपकूंजानणेहाराजोपुरुषहै सोपुरुष जलकेप्राप्तिकीइच्छाकरिकै तहांप्रवृत्तहोतानहीं ॥ तैसे अधिष्ठानआत्माकेज्ञानतैं सर्वप्रपंचकूं मिथ्याजानणेहारा सोविद्वान्पुरुष तिनाविषयभोगोंविषे प्रीतिकरैनहीं ॥ किंतु इससंसारविषे सुखकागंधमात्रभी नहींहै याप्रकारकानिश्चयकरिकै सोविद्वान्पुरुष तिससंसारतैं सर्वइंद्रियोंकूंनिवृत्तकरैहै इति ॥ २२ ॥ ❋ ॥ तहां सर्वअनर्थोंकेप्राप्तिकाहेतुरूप तथाश्रेयमार्गकाविरोधी तथाअल्पप्रयत्नकरिकैदुर्निवार ऐसाजो यहअत्यंतकष्टरूपदोषहै सो दोष महान्प्रयत्नकरिकैभी मुमुक्षुजनोंनैं निवृत्तकरणेकूंयोग्यहै ॥ इसप्रकार प्रयत्नकीअधिकता विधानकरणेवासतै श्रीभगवान् पुनःकथनकरैहै ॥

(मू०श्लो०) शक्नोतीहैवयःसोढुंप्राक्शरीरविमोक्षणात् ॥ कामक्रोधोद्भवंवेगंसयुक्तःससुखीनरः ॥ २३ ॥ शक्नोति । इह । एव । यः । सोढुं । प्राक् । शरीरविमोक्षणात् । कामक्रोधोद्भवं । वेगं । सः । युक्तः । सः । सुखी । नरः ॥ (इ० प०) ॥ २३ ॥ हेअर्जुन जोधीरपुरुष शरीरकेनाश पर्यंतसंभाव्यमान तथाकामक्रोधजन्यऐसेवेगकूंबाह्यइंद्रियोंकीप्रवृत्तितैं पूर्व हींसहनकरणेविषे समर्थहोवैहै सोईहींपुरुष युक्तहै तथासोईहींपुरुष सुखी है तथासोईहीं पुरुषहै ॥ २३ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन प्रत्यक्षदेखेहुए तथा श्रवणकरेहुए तथास्मरणकरेहुए जितनैंकी आत्माकेअनुकूल विषयसुखकेसाधनहैं ॥ तिनसुखसाधनोंके सौंदर्यतादिकगुणोंका वारंवार चिंतनकरणेकरिकै तिनविषयसुखकेसाधनोंविषे उत्पन्नभयाजो रतिनामा अभिलाषाहै जिस अभिलाषाकूं तृष्णा लोभ कहेहैं ताकानाम कामहै ॥ यद्यपि स्त्रीपुरुषदोनोंकी जापरस्पर विषयसंबंधविषे अभिलाषाहै ताअभिलाषाविषेहीं सोकामशब्द निरूढहै ॥ इसअभिप्रायकरिकेहीं (कामः क्रोधस्तथालोभः) इसवचनविषे धनकीतृष्णाकानाम लोभहै और स्त्रीकेसंसर्गकीतृष्णाकानाम कामहै इसप्रकार काम लोभ यहदोनों भिन्नभिन्न कथन करेहैं ॥ तथापि ईहांतौं काम लोभ दोनोंविषेअनुगत जोतृष्णारूप सामान्यहै ॥ तातृष्णारूपसामान्यकेअभिप्रायकरिकै केवल कामशब्दहींकथनकरयाहै ॥ ताकामशब्दतैंपृथक् लोभ शब्द कथनकरयानहीं इति ॥ और प्रत्यक्षदेखेहुए तथाश्रवणकरेहुए तथास्मरणकरेहुए जितनैंकी आत्माकेप्रतिकूल दुःखकेसा

धनहैं ॥ तिनदुःखकेसाधनोंविषे वारंवार दोषोंकेचिंतनकरणेकरिकै उत्पन्नभयाजो प्रज्वलनरूपद्वेषहै जिसद्वेषकूं मन्युभीकहेहैं ताकानाम क्रोधहै ॥ ताकामक्रोध दोनोंकी जोउत्कटअवस्थाहै ॥ जाउत्कटअवस्था लोकवेदके विरोधज्ञानका प्रतिबंधकहोणेतैं लोकवेदतैंविरुद्धअर्थविषे प्रवृत्तिकीउन्मुखतारूपहै ॥ साकाम क्रोधकीउत्कटअवस्था प्रसिद्धनदीकेवेगकेसमानहोणेतैं वेदशब्दकरिकैकहीजावैहै ॥ जैसे लोकप्रसिद्धनदीकावेग वर्षाकालविषे अत्यंतप्रबलताकरिकै लोकवेद केविरोधज्ञानतैं गर्त्तादिकोंविषे नहींपडनेकीइच्छाकरतेहुएपुरुषकूंभी बलात्कारतैं तागर्त्तविषेप्राप्तकरिकै डुबावैहै ॥ तथाअधोदेशकूंलेजावैहै ॥ तैसे सोकाम क्रोधकावेगभी निरंतर विषयोंकाचिंतनरूपवर्षाकालकरिकै अत्यंतप्रबलताकूंप्राप्तहुआ लोकवेदकेविरोधज्ञानतैं तिनविषयोंकीनहींइच्छाकरतेहुएपुरुषकूंभी तावि षयरूपगर्त्तविषे प्राप्तकरिकै संसाररूपसमुद्रविषेडुबावैहै तथामहान्नरकरूपअधोदेशकूं लेजावैहै ॥ यहसर्वअर्थ श्रीभगवान्नैं (वेगं) याशब्दकरिकेसूचनकरयाहै ॥ यहसर्वअर्थ (अथकेनप्रयुक्तोयंपापंचरतिपूरुषः) इसश्लोकविषे पूर्वकथनकरिआयेहैं॥इसप्रकारका अंतःकरणकाक्षोभरूप जोकामकावेगहै तथाक्रोधकावेगहै जोका मक्रोधकावेग अनेकप्रकारके बाह्यविकाररूपलिंगोकरिकै जान्याजावैहै॥ तहां रोमांचोकाखडाहोणा तथामुखकीप्रसन्नताहोणी तथानेत्रोंकी प्रसन्नताहोणी इत्यादिक बाह्यचिन्होंकरिकै सोकामवेग अनुमानकरयाजावैहै ॥ और शरीरविषेकंपहोणा तथाप्रस्वेदकानिकसणा तथाआपणेओष्ठोंकूंदांतोंसैंदबावणा तथानेत्रोंकीरक्तता इत्यादिकबाह्यचिन्होंकरिकै सोक्रोधकावेग अनुमानकऱ्याजावैहै ॥तथा जो कामक्रोधकावेग शरीरकेनाशपर्यंत अनेकप्रकारकेनिमित्तोंकेवशतैं सर्वदा संभावनाकरया जावैहै ॥ ताअंतरउत्पन्नहुए कामक्रोधकेवेगकूं जोधैर्यवान्‌संन्यासी बाह्यइंद्रियोंकेव्यापाररूपगर्त्तकेपाततैंपूर्वहीं विषयोंविषे वारंवार दोषचिंतनजन्यवशीकारनामावै राग्यकरिकैसहनकरणेविषे समर्थहोवैहै ॥अर्थात् जैसे तिमिंगिलनामा मत्स्यआपणेबलकरिकै नदीकेवेगकूंसहनकरेहै ॥ तैसे जोधैर्यवान्पुरुष वैराग्यकेबलतैं ताका मक्रोधकेवेगकूं सहनकरेहै ॥तहां कामक्रोधकेवेगकरिकै जोबाह्यअनर्थविषेप्रवृत्तिहै ताप्रवृत्तिरूपकार्यकूं नसंपादनकरिकै जो तिसकामक्रोधकेवेगकूं निष्फलकरणाहै यहहीं ताकामक्रोधकेवेगकासहनकरणाहै ॥ सोईहींपुरुष योगीहै॥तथा सोईहींपुरुष सुखीहै ॥ तथा सोईहीं परमपुरुषार्थकासंपादकहोणेतैं पुरुषरूपहै॥तिसतैंभिन्न जितनेंकी विषयासक्तपुरुषहैं ॥ते सर्व आहार निद्रा भय मैथुन इत्यादिकपशुवोंकेधर्मविषेप्रीतिवालेहोणेतैं मनुष्यकेआकारवालेहुएभी पशुरूपहींहैं ॥ यहवार्त्ता अन्यशास्त्रविषेभीकथनकरीहै ॥ तहां श्लोक ॥ (आल्हादरूपतायस्यसुषुप्तेसर्वसाक्षिकी ॥ तत्रोपेक्षाभवेयस्यतदन्यःस्यात्पशुःकथम्)॥ अर्थयह ॥ जिसआत्मा देवकी आनंदरूपता सुषुप्तिअवस्थाविषे सर्वप्राणीयोंकेअनुभवकरिकैसिद्धहै ॥ तिसआनंदस्वरूपआत्माविषे जिसविषयासक्तपुरुषकी उपेक्षाहींरहेहै ॥ तिसब हिर्मुखपुरुषतैंपरे दूसराकौंन पशुहै ॥ किंतु सोविषयासक्तबहिर्मुखपुरुषहीं पशुहैइति ॥ और किसीटीकाविषेतौं (प्राक्शरीरविमोक्षणात्) इसवचनका यह अर्थ

कन्याहै ॥ जैसे मरणतैंउत्तर विलापकरतीहुई सुंदरस्त्रियोंनैं आलिंगनकन्याहुआभी तथापुत्रादिकोंनैं अग्निविषेदाहकन्याहुआभी यहपुरुष प्राणोंतैंरहितहोणेतैं ताकामक्रोधकेवेगकूंसहनकरेहै ॥ तैसे मरणतैंपूर्व जीवतअवस्थाविषेभी जोपुरुष ताकामक्रोधकेवेगकूं सहनकरेहै ॥ सोपुरुषहीं युक्तहै तथासुखीहै ॥ यहवार्त्ता वसिष्ठभगवान्‌नैंभी कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ (प्राणेगतेयथादेहःसुखंदुःखंनविंदति ॥ तथा चेत्प्राणयुक्तोपिसकैवल्याश्रमेवसेत् ॥) अर्थयह ॥ जैसे प्राणोंकेगयेतैंअनंतर यहदेह सुखदुःखकूंप्राप्तहोतानहीं ॥ तैसे प्राणोंकरिकैयुक्तहुआभी जोपुरुष तासुखदुःखकूंप्राप्तहोतानहीं ॥ सोपुरुषहीं कैवल्यमोक्षविषेस्थित होवैहै इति ॥ परंतु याप्रकारकाव्याख्यान तबी सिद्धहोवै जबी मरणअवस्थाकीन्यांई जीवतअवस्थाविषे ताकामक्रोधकीउत्पत्तिमात्रहीं नहींअंगीकारकरीये ॥ और ईहांप्रसंगविषे ताकामक्रोधकेवेगकीअनुत्पत्तिमात्र प्राप्तहैनहीं ॥ किंतु अंतरउत्पन्नहुए कामक्रोधकेवेगकासहनहीं ईहांप्राप्तहै ॥ यातैं ताकामक्रोधकीअनुत्पत्तिमात्रकूं दृष्टांतरूपतासंभवैनहीं ॥ यातैं पूर्वउक्तव्याख्यानहीं समीचीनहैइति ॥ और किसीटीकाविषेतौं (प्राक्शरीरविमोक्षणात्) इसवचनका यहअर्थ कन्याहै ॥ ईहां शरीरपदकरिकै शरीरकेआश्रितरहणेहारा गृहस्थआश्रम ग्रहणकरणा ॥ तागृहस्थआश्रमकेपरित्यागरूपसंन्यासतैंपूर्वहीं जोअधिकारीपुरुष विवेकवैराग्यकरिकै ताकामक्रोधकेवेगकूं सहनकरणेविषेसमर्थहोवैहै ॥ सोईहींपुरुष पश्चात् संन्यासपूर्वक श्रवणादिकसाधनोंकरिकै आत्मज्ञानकूंसंपादनकरिकै ब्रह्मयोगयुक्तहोणेकूं तथा ब्रह्मानंदीहोणेकूं योग्यहोवैहै ॥ और जोपुरुष तासंन्यासतैंपूर्व ताकामक्रोधकेवेगकूंनहींसहनकरेहै अर्थात् ताकामक्रोधकूंजयनहींकरेहै ॥ सोअशुद्धचित्तवालापुरुष संन्यासआश्रमकूंकरिकै श्रवणादिकोंकूंकरताहुआभी आत्मज्ञानकूं तथाज्ञानकेफलरूप मोक्षरूपसुखकूं प्राप्त होवैनहीं इति ॥ २३ ॥ तहां यह अधिकारी पुरुष केवल ताकामक्रोधके वेगके सहनमात्रकरिकैहीं मोक्षकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु तिसतैं अधिकभी किंचित् कर्त्तव्यहै ॥ इस अर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) योऽन्तःसुखोऽन्तरारामस्तथान्तर्ज्योतिरेवयः ॥ सयोगीब्रह्मनिर्वाणंब्रह्मभूतोधिगच्छति ॥ २४ ॥ यः। अंतःसुखः। अंतरारामः। तथा। अंतर्ज्योतिः। एव। यः। सः। योगी। ब्रह्म। निर्वाणं। ब्रह्मभूतः। अधिगच्छति ॥ २४ ॥ (इतिप०) हेअर्जुन जोपुरुष अंतरसुख हींहै तथा अंतरारामहींहै तथा जोपुरुष अंतर्ज्योतिहींहै सो योगीपुरुष ब्रह्मरूपहुआहीं निर्वाणं ब्रह्मकूं प्राप्तहोवैहै ॥ २४ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ बाह्यविषयोंकीअपेक्षातैंविनाहीं अंतर स्वरूपभूतसुख प्राप्तहैजिसकूं ताकानाम अंतःसुखहै ॥ अर्थात् जोपुरुष बाह्यविषयजन्यसुखतैंरहितहै॥ शंका॥

हेभगवन् तापुरुषकूं बाह्यविषयसुखकाअभाव किसकारणतैंहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहेहै (अंतरारामःइति) हेअर्जुन जिसकारणतैं ॥ सोपुरुष अंतरारामहै तिसकारणतैं सोपुरुष बाह्यविषयसुखोंतैंरहितहै ॥ अंतरआत्माविषेहींक्रीडारूपआरामजिसकूं बाह्यविषयसुखकेसाधनरूपस्त्रीपुत्रधनादिकविषयोंविषे सोक्रीडारूप आराम जिसकूंहैनहीं ताकानामअंतरारामहै॥अर्थात् जोपुरुष सर्वपरिग्रहतैंरहितहोणेतैं बाह्यविषयसुखकेसाधनोंतैंरहितहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् सर्वप रिग्रहतैंरहित जोविरक्तसंन्यासीहै ॥ तिससंन्यासीकूंभी यदृच्छातैंप्राप्तहुए कोकिलादिकोंकेमधुरशब्दकेश्रवणकरिकै तथामंदमंदपवनकेस्पर्शकरिकै तथाचंद्रमाके दर्शनकरिकै तथामयूरनृत्यकेदर्शनकरिकै तथाअत्यंतमधुरशीतलगंगाजलकेपानकरिकै तथाकेतकीकुसुमकीसुगंधिकेग्रहणकरिकै सुखकीउत्पत्ति संभवहोइसकेहै ॥ यातैं तासंन्यासीकूं बाह्यसुखकाअभाव तथातासुखकेसाधनोंकाअभाव कहणासंभवतानहीं ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहेहै (तथांतर्ज्योतिरेवयः) हे अर्जुन जैसे ताविद्वान्पुरुषकूं अंतरआत्माविषेहीं सुखहै ॥ बाह्यविषयोंकरिकै सुखहैनहीं ॥ तैसे अंतरआत्माविषेहींहै ज्योतिःक्या वृत्तिरूपविज्ञान जिसका बाह्यइंद्रियोंकरिकै सोविज्ञानरूपज्योति जिसका हैनहीं ताकानाम अंतर्ज्योतिहै ॥ अर्थात् जोपुरुष श्रोत्रादिकइंद्रियजन्य शब्दादिकविषयोंकेज्ञानतैंरहितहै ॥ तात्पर्ययह ॥ ताविद्वान्पुरुषकूं समाधिकालविषेतौं तिनशब्दादिकविषयोंकी प्रतीतिहीं नहींहोवैहै ॥ और तासमाधितैंव्युत्थानकालविषे यद्यपि ताविद्वान्पु रुषकूं तिनशब्दादिकोंकीप्रतीति होवैहै ॥ तथापि सोविद्वान्पुरुष तिनशब्दादिकविषयोंकूं मृगतृष्णाकेजलकीन्यांई मिथ्याहींजानेहै ॥ यातैं ताविद्वान्पुरुषकूं बाह्यविषयोंकरिकै सुखकीउत्पत्ति संभवतीनहीं इति ॥ हेअर्जुन इसप्रकार जोपुरुष अंतःसुखहै तथाअंतरारामहै तथाअंतर्ज्योतिहै ॥ सोविद्वान्पुरुषहीं मन सहितसर्वइंद्रियोंकेनिरोधरूपयोगवालाहोणेतैं योगीहै ॥ ऐसायोगीपुरुषहीं तत्वसाक्षात्कारकरिकै अविद्यारूपआवरणकीनिवृत्तिकरिकै परमानंदस्वरूपब्रह्मकूं प्राप्त होवैहै ॥ कैसाहैसोब्रह्म निर्वाणहै ॥ अर्थात् कल्पितप्रपंचकीनिवृत्तिरूपहै ॥ जिसकारणतैं कल्पितवस्तुकाअभाव अधिष्ठानरूपहींहोवैहै ताअधिष्ठानतैंभिन्नहो वैनहीं ॥ इतनैंकहणेकरिकै द्वैतप्रपंचरूपअनर्थकीनिवृत्तिपूर्वकपरमानंदकीप्राप्तिरूप मोक्षका कथनकऱ्या ॥ ऐसेनिर्वाणब्रह्मकूंभी यहविद्वान्पुरुष आप अब्रह्म रूपहुआ प्राप्तहोवैनहीं किंतु सोविद्वान्पुरुष आप सर्वदा ब्रह्मरूपहुआहीं ताब्रह्मकूंप्राप्तहोवैहै ॥ अर्थात् नित्यप्राप्तब्रह्मकूंहीं प्राप्तहोवैहै ॥ तहांश्रुति ॥ (ब्रह्मैवसन्ब्रह्माप्येति ॥) अर्थयह ॥ यहविद्वान्पुरुष ज्ञानतैं पूर्वहीं वास्तवतैं ब्रह्मरूपहुआभी अज्ञानकृतविस्मृतिकेहुए आत्मज्ञानकरिकै पुनःताब्रह्मकूं प्राप्तहोवैहैइति ॥ २४ ॥ ❀ ॥ तहां मोक्षकेप्राप्तिकाकारणरूप जो आत्मज्ञानहै ॥ ताआत्मज्ञानके पूर्व अनेकप्रकारकेसाधन कथनकरेहै ॥ अबताआ त्मज्ञानके दूसरेसाधनोंकूंभी श्रीभगवान् कथनकरैहै ॥

(मू० श्लो०) लभंतेब्रह्मनिर्वाणमृषयःक्षीणकल्मषाः ॥ छिन्नद्वैधायतात्मानःसर्वभूतहितेरताः ॥ २५ ॥ लभंते । ब्रह्म । निर्वाणम् । ऋषयः । क्षीणकल्मषाः । छिन्नद्वैधाः । यतात्मानः । सर्वभूतहिते । रताः ॥ २५ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन जेपुरुष पापोंतैंरहित हैं तथासंन्यासयुक्तहैं तथासंशयतैंरहितहैं तथाएकाग्रचित्तवालेहैं तथासर्वभूतोकेहितविषे प्रीतिवालेहैं ऐसेपुरुषहीं तानिर्वाण ब्रह्मकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ २५ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जेपुरुष प्रथम यज्ञदानादिक निष्कामकर्मोकरिकै पापरूपकल्मषोंतैंरहितहुएहैं ॥ तिसतैंअनंतर अंतःकरणकीशुद्धिकरिकै जेपुरुष ऋषिभावकूं प्राप्तहुएहै ॥ अर्थात् ॥ सूक्ष्मवस्तुकेविवेककरणेविषेसमर्थ संन्यासीहुएहैं ॥ तिसतैंअनंतर जेपुरुष वेदांतशास्त्रके श्रवणमननकीपरिपक्वताकरिकै छिन्नद्वैधाहुएहैं ॥ अर्थात् प्रमाणगतसंशयप्रमेयगतसंशय इत्यादिकसर्वसंशयोंतैंरहितहुएहैं ॥ तिसतैंअनंतर निदिध्यासनकीपरिपक्वताकरिकै यतात्माहुएहैं ॥ अर्थात् विपरीतभावनाकीनिवृत्तिपूर्वक एकपरमात्माविषेहीं एकाग्रचित्तवालेहुएहैं ॥ तिसतैंअनंतर द्वैतदर्शनकेअभावकरिकै जेपुरुष सर्वभूतोंकेहितविषे प्रीतिवालेहुएहै ॥ अर्थात् शरीरकरिकै तथामनकरिकै तथावाणीकरिकै सर्वभूतप्राणीयोंकीहिंसातैंरहितहुएहैं ॥ ऐसेब्रह्मवेत्तापुरुषहीं तासर्वद्वैतकीनिवृत्तिरूप परमानंदस्वरूपब्रह्मकूं अभेदरूपकरिकैप्राप्तहोवैहैं ॥ तहांश्रुति ॥ (यस्मिन्सर्वाणिभूतान्यात्मैवाभूद्विजानतः ॥ तत्रकोमोहःकःशोकएकत्वमनुपश्यतःइति) ॥ अर्थयह ॥ जिसज्ञानअवस्थाविषे इसविद्वान्पुरुषकूं यहसर्वभूत आपणाआत्मारूपहींहोतेभयेहैं ॥ तिसज्ञानअवस्थाविषे एकअद्वितीयआत्माकूंदेखणेहारे ब्रह्मवेत्तापुरुषकूं द्वैतदर्शनकेअभाव हुए किसीमोहकीप्राप्ति तथाकिसी शोककीप्राप्ति कदाचित्भी होवैनहींइति ॥ २५ ॥ ❀ ॥ तहां पूर्व (शक्नोतीहैवयःसोढुम्) इसश्लोकविषे उत्पन्नहुएभी कामक्रोधकेवेगकूं इसपुरुषनैं सहनकरणा यहअर्थ कथनकऱ्याथा ॥ अब इसअधिकारीपुरुषनैं कामक्रोधकेउत्पत्तिकाहीं प्रतिबंधकरणा ॥ अर्थात् ताकामक्रोधकूं उत्पन्नहींनहींहोणेदेणा इसअर्थकूं श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

(मू०श्लो०) कामक्रोधवियुक्तानांयतीनांयतचेतसाम् ॥ अभितोब्रह्मनिर्वाणंवर्त्ततेविदितात्मनाम् ॥ २६ ॥ कामक्रोधवियुक्तानां । यतीनां । यतचेतसाम् । अभितः । ब्रह्म । निर्वाणं । वर्त्तते । विदितात्मनाम् ॥ २६ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन जेपुरुष कामक्रोधकीउत्पत्तितैंरहितहैं तथाचित्तकेनिग्रहवालेहैं तथाआत्मसाक्षात्कारवालेहैं ऐसेसंन्यासीयोंकूं सर्वअवस्थाविषे सोनिर्वाणरूप ब्रह्म प्राप्तहै ॥ २६ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

कूंकरताहुआ ॥ जिसप्रकार कोईभीसंशयरहैनहीं इसप्रकार बलशक्तिऐश्वर्यादिकसर्वविभूतिसंपन्न मैंपरमेश्वरकूं जिसप्रकारतैं जानैंगा ॥ तिसप्रकारकूं मैंभगवान् तुमारेप्रति कथनकरताहूं ॥ तूं सावधानहोईकैश्रवणकर इति ॥ १ ॥ तहां इसपूर्वश्लोकविषे (मांज्ञास्यसि) यहवचन भगवान्नैं कथनकऱ्या ॥ तावचनतैं यह जान्याजावैहै ॥ सो भगवत्विषयकज्ञान परोक्षहींहोवैगा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकूं निवृत्तकरताहुआ श्रीभगवान् श्रोतापुरुषकूं ताज्ञानकेअभिमुखकरणेवासतै ताज्ञानकीस्तुति करेहै ॥

(मू० श्लो०) ज्ञानंतेहंसविज्ञानमिदंवक्ष्याम्यशेषतः ॥ यज्ज्ञात्वानेहभूयोन्यज्ज्ञातव्यमवशिष्यते ॥ २ ॥ ज्ञानं । ते । अहं । । सविज्ञानम् । इदं । वक्ष्यामि । अशेषतः । यत् । ज्ञात्वा । न । इह । भूयः । अन्यत् । ज्ञातव्यम् । अवशिष्यते ॥ २ ॥ (इतिपदच्छेदः)॥
हेअर्जुन मैंपरमेश्वर तैंअर्जुनकेप्रति इस विज्ञानसहित ज्ञानकूं साधनफलादिकोंसहित कथनकरताहूं जिसचैतन्यरूपज्ञानकूं जानिकै ईहां पुनःकोईअन्यपदार्थ जानणेयोग्य नहीं बाकीरहैहै ॥ २ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन मेरेअद्वितीयपरिपूर्णस्वरूपकूंविषयकरणेहारा जोयहज्ञानहै ॥ सोयहज्ञान स्वभावतैंअपरोक्षहुआभी असंभावनाविपरीतभावनारूपप्रतिबंधके वशतैं आपणेफलकूंनहींउत्पन्नकरताहुआ परोक्ष कह्याजावैहै ॥ और श्रवणमननादिरूपविचारकेपरिपाककरिकै ताअसंभावनादिरूपप्रतिबंधकेनिवृत्तहुऐतैंअनंतर तिसीवाक्यप्रमाणकरिकैउत्पन्नहुआ जोज्ञान प्रतिबंधककेअभावतैं आपणेफलकूंउत्पन्नकरताहुआ अपरोक्ष कह्याजावैहै ॥ इसरीतिसैं श्रवणमननरूपविचार करिकैजन्यहोणेतैं सोईहींज्ञान विज्ञान कह्याजावैहै ॥ इसप्रकारकेविज्ञानसहित तथामहावाक्यतैंजन्य इसअपरोक्षज्ञानकूं मैंयथार्थवक्ता कृष्णभगवान् तुमारे तांई अशेषतैं कथनकरताहूं ॥ अर्थात् ताअपरोक्षज्ञानकेजितनैंकीसाधन तथाफलहै तिनसाधनफलादिकोंसहित तिसज्ञानकूं मैं तुमारेप्रति कथनकरताहूं ॥ जिस नित्यचैतन्यस्वरूपज्ञानकूं जानिकै अर्थात् अहंब्रह्मास्मि यावेदांतवाक्यजन्य मनकीवृत्तिकाविषयकरिकै इसव्यवहारभूमिविषे पुनःदूसराकोईवस्तु तुमारेकूं जानणेयोग्यरहैंगानहीं ॥ तहांश्रुति ॥ (येनाश्रुतंश्रुतंभवत्यमतंमतमविज्ञातंविज्ञातमिति ॥ कस्मिन्नुभगवोविज्ञातेसर्वमिदंविज्ञातंभवति ॥) इत्यादिकश्रुतियोंविषे एक परमात्मादेवकेज्ञानकरिकैहीं सर्वजगतकाज्ञानहोणा कथनकऱ्याहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे अज्ञानतैं रज्जुविषेप्रतीतभयेजे सर्प दंड माला जलधारा आदिकहैं ॥ तिन कल्पितसर्पादिकोंका तारज्जुरूपअधिष्ठानकेज्ञानहुऐतैंअनंतर बाधहोइजावैहै ॥ तिसतैंअनंतर एकरज्जुहीं परिशेषतैंरहैहै ॥ तैसे अधिष्ठानसत्ब्रह्मविषेकल्पित जोयहसर्वप्रपंचहै ॥ ताप्रपंचकाभी तिसअधिष्ठानब्रह्मकेज्ञानतैंअनंतर बाधहोइजावैहै ॥ तिसतैं अनंतर सोअधिष्ठानब्रह्महीं परिशेषतैंरहैहै ॥ ऐसेअधिष्ठानब्रह्मके

साक्षात्कारकरिकैहीं तूंअर्जुन कृतार्थहोवैंगा इति ॥ २ ॥ ❀ ॥ हेअर्जुन ऐसेमहान्फलकीप्राप्तिकरणेहारा यहहमारेस्वरूपकाज्ञान मैंपरमेश्वरकेअनुग्रहतैंविना अत्यंतदुर्लभहै इसप्रकार ताज्ञानकीदुर्लभताकूंकथनकरिकै श्रीभगवान् ताज्ञानकीस्तुतिकरेहै ॥ अधिकारीजनोंकूं ताज्ञानविषे प्रवृत्तकरणेवासतै ॥

(मू० श्लो०) मनुष्याणां सहस्रेषुकश्चिद्यततिसिद्धये ॥ यततामपिसिद्धानांकश्चिन्मांवेत्तितत्वतः ॥ ३ ॥ मनुष्याणां । सहस्रेषु । कश्चित् । यतति । सिद्धये । यतताम् । अपि । सिद्धानां । कश्चित् । मां । वेत्ति । तत्वतः ॥३॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन मनुष्योंके अनेकसहस्रोंविषे कोईएकमनुष्यहीं ज्ञानकीउत्पत्तिवासतै प्रयत्नकरेहै और तिनप्रयत्नकरणेहारे अधिकारीमनुष्योंकेमध्य विषेभी कोईएकमनुष्यहीं मैंपरमेश्वरकूं वास्तवस्वरूपतैं जानेहै ॥ ३ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन शास्त्रनैंप्रतिपादन करयाजो ज्ञानहै तथाकर्महै ॥ ताज्ञानकर्मकेअनुष्ठानकरणेकूंयोग्य जितनैंकी ब्राह्मणादिक अधिकारीमनुष्यहैं तिनअनेक सहस्रमनुष्योंविषे कोईएकमनुष्यहीं पूर्वले अनेकजन्मोंकेपुण्यकर्मोंकेवशतैं नित्यअनित्यवस्तुकेविवेकवालाहुआ अंतःकरणकीशुद्धिद्वारा ज्ञानकीउत्पत्तिवासतै प्रयत्नकरेहै ॥ इसप्रकार आत्मज्ञानकीप्राप्तिवासतै प्रयत्नकरणेहारेभी जेसाधकमनुष्यहैं ॥ तिनसाधकमनुष्योंकेअनेकसहस्रोंविषेभी कोईएकसाधकमनुष्यहीं श्रवण मनननिदिध्यासनकेपरिपाकतैं अनंतर मैंपरमेश्वरकूंसाक्षात्कारकरेहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् विष्णुकूं तथारामकूं तथाआपकृष्णकूं देवता असुर मनुष्य आदिक बहुतप्राणी जानतेहैं ॥ यातैं अनेकसहस्रमनुष्योंविषे कोईएकमनुष्यहीं हमारेकूंजानताहै यहआपकाकहणा संभवतानहीं ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहेहै (तत्त्वतः इति) हेअर्जुन यद्यपि शंख चक्र गदा पद्म याच्यारोंकूंधारणकरणेहारे इसहमारे स्थूलचतुर्भुजस्वरूपकूं तेदेवतामनुष्यादिकबहुतलोकजानतेहैं ॥ तथापि यहहमारा वास्तवस्वरूपहैनहीं ॥ किंतु मायाकृतहै ॥ यातैं तेसर्वपुरुष हमारेवास्तवस्वरूपकूंजानतेनहीं ॥ और जेपुरुष ब्रह्मवेत्तागुरुकेउपदेशतैं मैंब्रह्म रूपहूं याप्रकार आपणेप्रत्यक्आत्मासैंअभिन्नरूपकरिकै मैंपरमेश्वरकूंजानतेहैं ॥ तेपुरुषहीं हमारेवास्तवस्वरूपकूंजानतेहैं ॥ इसप्रकार वास्तवस्वरूपतैंहमारेकूंजानणे हारा पुरुष अनेकसहस्रमनुष्योंविषे कोईएकहींनिकसैंगा ॥ यातैंयहअर्थसिद्धभया ॥ प्रथमतौं अनेकमनुष्योंकेमध्यविषे आत्मज्ञानकेसाधनोंकूं अनुष्ठानकरणेहारा पुरुषहीं परमदुर्लभहै ॥ और तिन ज्ञानसाधनोंकेअनुष्ठानकरणेहारेपुरुषोंकेमध्यविषेभी ज्ञानरूपफलकूंप्राप्तहुआपुरुष परमदुर्लभहै ॥ ऐसेब्रह्मज्ञानकामाहात्म्य कौन वर्णनकरिसकैंगा इति ॥ ३ ॥ ❀ ॥ इसप्रकार आत्मज्ञानकीस्तुतिकरिकै श्रोतापुरुषकूं ताज्ञानकेअभिमुखकरिकै अब सर्वात्मत्वरूपहेतुकरिकै आत्माके परिपूर्णत्वकूंकथनकरणेवासतैं प्रथम अपरप्रकृतिकूं श्रीभगवान् कथनकरेहै (भूमिरापःइति) अथवा (यज्ज्ञात्वानेहभूयोऽन्यज्ज्ञातव्यमवशिष्यते) इसवचनकरिकै

श्रीभगवान् एकब्रह्मकेज्ञाननैं सर्वप्रपंचकेज्ञानकीप्रतिज्ञा करताभयाहै ॥ साप्रतिज्ञा तबी सिद्धहोवै ॥ जबी ब्रह्मकूं सर्वजगत्काकारण अंगीकारकरीये ॥ काहेतैं लोकविषे उपादानकारणकेज्ञानकरिकैहीं ताकेसर्वकार्योंकाज्ञानहोवैहै ॥ जैसे एकमृत्तिकारूपकारणकेज्ञानहुएहीं तामृत्तिकाकेकार्यरूप घटशरावादिकसर्वकाज्ञान होवैहै ॥ कारणकेज्ञाननैंविनाताकेसर्वकार्यकाज्ञानहोवैनहीं ॥ यातैं तापूर्वलीप्रतिज्ञाकेउपपादनकरणेवासतै श्रीभगवान् ताज्ञानस्वरूपब्रह्मतैं जडअजडरूपसर्वप्रपंचकीउत्पत्तिकूं कथनकरेहै ॥ (भूमिरापः) इत्यादिकतीनश्लोकोंकरिकै ॥

(मू० श्लो०) भूमिरापोनलोवायुःखंमनोबुद्धिरेवच ॥ अहंकारइतीयंमेभिन्नाप्रकृतिरष्टधा ॥ ४ ॥ भूमिः । आपः । अनलः । वायुः । खं । मनः । बुद्धिः । एव । च । अहंकारः । इति । इयं । मे । भिन्ना । प्रकृतिः । अष्टधा ॥ ४ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन पृथिवी जल तेज वायु आकाश मन बुद्धि तथा अहंकार इसप्रकारतैं मैं परमेश्वरकी यह प्रकृति अष्टप्रकार भेदवालीहै ॥ ४ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ तहां सांख्यशास्त्रवाले पंचतन्मात्रा अहंकार महत्तत्व अव्यक्त याअष्टोंकूं प्रकृति कहेहैं ॥ और पंचमहाभूत पंचकर्मइंद्रिय पंचज्ञानइंद्रिय एकमन इन षोडशोंकूं विकार कहेहैं ॥ तेअष्टप्रकृति तथाषोडशविकार दोनोंमिलिकै चौवीसतत्त्व कहेजावैहै ॥ तहां भूमिआदिकपंचशब्दोंकरिकै लक्षणावृत्तितैं पृथिवीआदिकपंचमहाभूतोंकीसूक्ष्मअवस्थारूप गंधादिकपंचतन्मात्रावोंकाग्रहणकरणा ॥ अर्थात् भूमि याशब्दकरिकैतौं गंधतन्मात्राका ग्रहणकरणा ॥ और आपःयाशब्दकरिकै रसतन्मात्राका ग्रहणकरणा ॥ और अनल याशब्दकरिकै रूपतन्मात्राका ग्रहणकरणा ॥ और वायु याशब्दकरिकै स्पर्शतन्मात्राका ग्रहणकरणा और खं याशब्दकरिकै शब्दतन्मात्राका ग्रहणकरणा ॥ और बुद्धि अहंकार यहदोनोंशब्द तौं आपणे प्रसिद्धअर्थकूंहीं बोधनकरेहैं ॥ और मन याशब्दकरिकैं परिशेषतैंरहेहुएअव्यक्तकाग्रहणकरणा ॥ काहेतैं तामनशब्दका प्रकृतिशब्दकेसाथि सामानाधिकरण्य है ॥ यातैं तामनशब्दकेस्वार्थकापरित्यागकरिकै अव्यक्तविषेलक्षणाकरणी उचितहै ॥ अथवा लक्षणावृत्तितैं तामनशब्दकरिकै तामनकेकारणरूप अहंकारका ग्रहणकरणा ॥ काहेतैं पूर्व गंधादिकपंचतन्मात्रावोंका कथन कर्याहै ॥ तिनतन्मात्रावोंकीअहंकारतैंहींउत्पत्तिहोवैहै यातैं तन्मात्रावोंकीसमीपतातैं ईहां मनशब्दकरिकै अहंकारकाहींग्रहणकरणाउचितहै ॥ और बुद्धिशब्दतौं ताअहंकारकेकारणरूप महत्तत्त्वकूं शक्तिरूपमुख्यवृत्तिकरिकैहीं कथनकरेहै और ॥ अहंकारशब्दकीलक्षणावृत्तिकरिकै सर्ववासनावोंयुक्तअविद्यारूपअव्यक्तका ग्रहणकरणा ॥ काहेतै प्रवर्त्तकत्वादिकअसाधारणधर्म अहंकारअव्यक्तदोनोंविषे तुल्यहीरहेहैं ॥ यातैं अहंकारशब्दकरिकै ताअव्यक्तकाग्रहणकरणा उचितहै ॥ इसप्रकार साक्षीआत्माकरिकैभास्यमानहोणेतैं अपरोक्षरूप तथापरमेश्वरकीशक्तिरूप तथाअनिर्वचनीयस्वभाववाली तथात्रिगुणात्मक ऐसीजामायारूपप्रकृतिहै ॥

सामायारूपप्रकृति पंचतन्मात्रा अहंकार महत्तत्व अव्यक्त याअष्टप्रकारोंकरिकै भेदकूंप्राप्तहुईहै ॥ ताअष्टप्रकारकीप्रकृतिविषेहीं यहसंपूर्णजडप्रपंच अंतर्भूतहै ॥ यहव्याख्यानसांख्यशास्त्रकीरीतिसैंकथनकऱ्या ॥ और वेदांतशास्त्रविषेतौं भूमिः आपः अनलः वायुः खं यापंचशब्दोंकरिकै अपंचीकृत पृथिवीआदिक पंचभूतों काहीं ग्रहणकरणा ॥ और बुद्धिशब्दकरिकै सृष्टिकेआदिकालविषे परमेश्वरकीमायाकापरिणामरूपईक्षणका ग्रहणकरणा ॥ और अहंकारशब्दकरिकै तामाया कापरिणामरूपसंकल्पका ग्रहणकरणा इति ॥ ४ ॥ ❋ ॥ तहां पूर्वश्लोकविषेकथनकरीजा क्षेत्ररूप अष्टप्रकारकीप्रकृतिहै ताप्रकृतिविषे अपरपणेकूंकथनकर ताहुआ श्रीभगवान् अब क्षेत्ररूप पराप्रकृतिकूंकथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) अपरेयमितस्त्वन्यांप्रकृतिंविद्धिमेपराम् ॥ जीवभूतांमहाबाहोययेदंधार्यतेजगत् ॥५॥ अपरा। इयम्। इतः। तु। अन्यां। प्रकृतिं। विद्धि। मे। परां। जीवभूतां। महाबाहो। यया। इदं। धार्यते। जगत्॥५॥ (इतिपद०) हेअर्जुन यहेपूर्वउक्तअष्टप्रकारकी प्रकृति अपराकहीजावैहै अब इसअपराप्रकृतितैं विलक्षण मैंपरमेश्वरकी जीवरूप परा प्रकृतिकूं तूं जान जिसपराप्रकृतिनैं यह सर्वजगत् धारणकरीताहै ॥ ५ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन पूर्वश्लोकविषेकथनकरीजा अचेतनवर्गरूप क्षेत्रनामा अष्टप्रकारकीप्रकृतिहै ॥ सायहप्रकृति अपराजानणी ॥ अर्थात् साप्रकृति जडहोणेतैं तथापरकेअर्थहोणेतैं तथासंसारबंधरूपहोणेतैं निकृष्टहींहै ॥ और ताअचेतनवर्गरूप तथा क्षेत्ररूप अपराप्रकृतितैं विलक्षण तथामैंतत्पदार्थरूपपरमेश्वरकाआत्मारूप जा चेतनजीवात्मकक्षेत्रज्ञरूपप्रकृतिहै ॥ ताक्षेत्रज्ञरूपविशुद्धप्रकृतिकूं तूं पराप्रकृति जान ॥ अर्थात् सर्वतैंउत्कृष्टजान ॥ ईहां (इतस्तु) यावचनविषेस्थितजो तु यहशब्दहै ॥ सोतुशब्द पूर्वउक्तक्षेत्ररूपजडप्रकृतितैंइसक्षेत्रज्ञरूपचेतनप्रकृतिविषेअत्यंतविलक्षणताकेबोधनकरणेवास्तैहै ॥ अर्थात् इनक्षेत्रक्षेत्रज्ञरूपदोनोंप्रकृतियों की किसीअंशविषेभीएकताहोइसकैनहीं ॥ हेअर्जुनसर्वसंघातोंविषे प्रविष्टहुईजा क्षेत्रज्ञनामा जीवरूपपराप्रकृतिहै ॥ ताप्रकृतिनैंहीं यहदेहइंद्रियादिरूपजडजगत् धारणकऱ्याहै ॥ तहांश्रुति ॥ (अनेनजीवेनात्मनानुप्रविश्यनामरूपेव्याकरवाणि ॥) अर्थयह ॥ मैंपरमात्मादेवइसआपणेजीवरूपतैं प्रवेशकरिकै नामरूपकूं प्रगटकरौं इति ॥ ऐसी क्षेत्रज्ञनामा जीवरूपपराप्रकृतिनैंहीं यहसर्वजगत् धारणकऱ्या है ॥ ताचेतनजीवतैंरहित कोईभीवस्तु किसीवस्तुकेधारणकरणेविषे समर्थहोवैनहीं इति ॥ ५ ॥ ❋ ॥ तहां पूर्वदोश्लोकोंकरिकै अपराप्रकृति तथापराप्रकृति यहदोप्रकारकीप्रकृति कथनकरी ॥ अब तादोप्रकारकी प्रकृतिविषे कार्यलिंगकअनुमानप्रमाणकूंदिखावताहुआ श्रीभगवान् आपणेकूं ताप्रकृतिद्वारा सर्वजगत्केउत्पत्तिआदिकोंकीकारणता कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) एतद्योनीनिभूतानिसर्वाणीत्युपधारय ॥ अहंकृत्स्नस्यजगतःप्रभवःप्रलयस्तथा ॥ ६ ॥ एतद्योनीनि । भूतानि । सर्वाणि । इति । उपधारय । अहं । कृत्स्नस्य । जगतः । प्रभवः । प्रलयः । तथा ॥ ६ ॥ (इतिपद०) ॥ हेअर्जुन यहसर्व एक भूत इनदोनोंप्रकृतियोंकेकार्यरूपहैं इसप्रकार तूं निश्चयकर यातैं मैंपरमेश्वरहीं संपूर्ण जगतके उत्पत्तिकाकारणहूं तथा प्रलयकाकारणहूं ॥ ६ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

टीका ॥ हे अर्जुन पूर्वअपरस्वरूपकरिकै कथनकरीजा क्षेत्रनामाप्रकृति ॥ तथा परस्वरूपकरिकैकथनकरीजा क्षेत्रज्ञनामाप्रकृतिहै ॥ तेदोनोंप्रकृतिहैंकारणजिनोंका तिनोंकानाम एतद्योनिहै ॥ ऐसाएतद्योनिरूप इनउत्पत्तिधर्मवाले चेतनअचेतनरूपसर्वभूतोंकूं तूंजान ॥ तात्पर्ययह ॥ यहसर्वकार्य चेतनअचेतनकीग्रंथिरूपहैं ॥ यातैं ताकार्यरूपहेतुतैंतिनोंकेप्रकृतिरूपकारणकूंभी चेतनअचेतनकीग्रंथिरूपकरिकैअनुमानकर जिसकारणतैं कार्यकारणका समानस्वभावहीं लोकविषेदेखणेमैंआवैहै ॥ तिसकारणतैं चेतनअचेतनकीग्रंथिरूपकार्यतैं ताके चेतनअचेतनकीग्रंथिरूपकारणकाअनुमान संभवहोइसकेहै ॥ इसप्रकार सर्वभूतोंकाकारणरूप क्षेत्रक्षेत्रज्ञनामा दोप्रकारकीप्रकृति मैंपरमेश्वरकाउपाधिरूपहै ॥ यातैं सर्वज्ञ तथा सर्वकाईश्वर तथाअनंतशक्तिवाला मायाउपहित मैंपरमेश्वरहीं तिसपूर्वउक्तप्रकृतिद्वारा इसचराचररूप सर्वजगतकेउत्पत्तिकाकारणहूं तथा तासर्वजगतकेविनाशकारणहूं ॥ अर्थात् जैसे स्वप्नकेपदार्थोंकाउपादानकारण तथाद्रष्टा एकहींहोवैहै ॥ तैसे मायाका आश्रयविषयहोणेतैं मैंमायावीपरमेश्वरहीं आपणीमायिकजगतका उपादानकारणहूं तथाद्रष्टारूपहूं इति ॥ ६ ॥ ॥ ❀

जिसकारणतैं मैंपरमेश्वरहीं आपणीमायाशक्तिकरिकैं इससर्वजगतके उत्पत्तिस्थितिलयकाहेतुहूं ॥ तिसकारणतैं परमार्थतैं मैं परमेश्वरतैंभिन्न कोईभीपदार्थहै नहीं ॥ इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरेहै (मत्तःपरतरमिति) अथवा (यज्ज्ञात्वानेहभूयोऽन्यज्ज्ञातव्यमवशिष्यते) इसवचनकरिकै पूर्व एकआत्मवस्तुकेज्ञानतैं सर्वजगत्केज्ञानकीप्रतिज्ञाकरीथी ॥ ताप्रतिज्ञाकेउपपादनकरणेवासतै आत्माकूं सर्वजगत्काउपादानकारण कथनकऱ्या ॥ ताउपादानकारणपणेकरिकै आत्माकेनिर्विकारत्वरूपकीहानिहोवैगी ॥ ऐसीशंकाकेप्राप्तहुए श्रीभगवान् कहेहै ॥

(मू० श्लो०) मत्तःपरतरंनान्यत्किंचिदस्तिधनंजय ॥ मयिसर्वमिदंप्रोतंसूत्रेमणिगणाइव ॥ ७ ॥ मत्तः । परतरम् । न । अन्यत् । किंचित् । अस्ति । धनंजय । मयि । सर्वम् । इदं । प्रोतं । सूत्रे । मणिगणाः । इव ॥ ७ ॥ (इतिपदच्छेदः) हेअर्जुन मैंपरमेश्वरतैं

अन्य कोईभीपदार्थ परमार्थ सत्य नहीं है जैसे सूत्रविषे मणियोंकासमूहग्रथितहै तैसे मैंपरमेश्वरविषे यह सर्वजगत् ग्रथितहै॥ ७ ॥ (इतिपदार्थः)॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन सर्वदृश्यप्रपंचाकारपरिणामकूंप्राप्तहुईमायाकाअधिष्ठानरूप तथासर्वजगत्काप्रकाशक तथा सत्तास्फुरणरूपकरिकै सर्वजगत्‌विषेअनुस्यूत तथास्वप्रकाशपरमानंदचैतन्यघन तथापरमार्थतैंसत्यस्वरूप ऐसाजोमैं परमेश्वरहूं ॥ तिसमैंपरमेश्वरतैंभिन्न दूसराकोईभीपदार्थ परमार्थतैंसत्यहैनहीं ॥ जैसे स्वप्नद्रष्टातैंभिन्न स्वप्नकेपदार्थपरमार्थतैंसत्यहैंनहीं ॥ तथा मायावीपुरुषतैंभिन्न मायिकपदार्थ परमार्थतैंसत्यहैंनहीं ॥ तथा शुक्तिअवच्छिन्नचैतन्यतैंभिन्न कल्पितरजत परमार्थतैंसत्यहै ॥ तैसे मैंपरमेश्वरविषेकल्पित यहसर्वजगत् वास्तवतैं मेरेतैंभिन्ननहींहै यह सर्ववार्त्ता (तदनन्यत्वमारंभणशब्दादिभ्यः) इससूत्रकेव्याख्यानविषे श्रीभाष्यकारोनैं विस्तारतैंनिरूपणकरीहै इति ॥ और व्यवहारदृष्टिकरिकैतौं यहसर्वजडप्रपंचमैंसत्‌रूप तथास्फुरणरूप परमेश्वरविषेहीं ग्रथितहै अर्थात् मैंपरमेश्वरकी सत्ताकरिकै यहसर्वजगत् सत्‌कीन्यांई प्रतीतहोवैहै तथामेरेस्फुरणरूपकरिकै स्फुरणकीन्यांई प्रतीतहोवैहै ॥ तहां यहसर्वप्रपंच चैतन्यविषेग्रथितहै इतनैंअंशमात्रविषे दृष्टांतकूंकथनकरेहैं (सूत्रेमणिगणाइवइति) हेअर्जुन जैसे सूत्रविषे मणियोंकासमूह ग्रथितहोवैहै ॥ तैसे सत्तास्फुरणरूप मैं परमेश्वरविषे यहसर्वजगत् ग्रथितहैइति ॥ अथवा (सूत्रेमणिगणाइव) इसवचनका यहअर्थकरणा ॥ हिरण्यगर्भरूप जोस्वप्नकाद्रष्टा तैजसआत्माहै ताकानाम सूत्रहै ॥ ऐसे सूत्रहै ॥ ऐसेसूत्रआत्माविषे ॥ जैसे स्वप्नविषेप्राप्तमणियोंकासमूह ग्रथितहोवैहै ॥ तैसे मैंपरमेश्वरविषे यहसर्वजगत् ग्रथितहै इति ॥ इसद्वितीयव्याख्यानविषे कारणकार्यभाव तथाद्रष्टादृश्यभाव इत्यादिकसर्वअंशोंविषे दृष्टांतकासंभवहोइसकेहै ॥ और प्रथमव्याख्यानविषेतौं केवल ग्रथितपणेमात्रविषे सोदृष्टांतसंभवैहै इति ॥ और किसीटीकाविषेतौं इसश्लोकका याप्रकारकाअर्थ कथनकरयाहै ॥ हेअर्जुन सर्वज्ञ तथासर्वशक्तिवाला तथासर्वकाकारणरूप ऐसाजोमैंपरमेश्वरहुं ॥ तिसमैंपरमेश्वरतैंभिन्न दूसराकोई इसजगत्‌केउत्पत्तिसंहारकास्वतंत्रकारण प्रसिद्धहैनहीं किंतु मैंपरमेश्वरहीं इसजगत्‌केउत्पत्तिसंहारकाकारणहूं ॥ जिसकारणतैं मैंपरमेश्वरहीं इससर्वजगत्‌का कारणहूं ॥ तिसकारणतैं सर्वजगत्‌केकारणरूपमैंपरमेश्वरविषेहीं यहकार्यरूपसर्वजगत् ग्रथितहै मेरेतैंभिन्नअन्याकिसीविषे यहजगत् ग्रथितहैनहीं ॥ जैसे मणियोंकासमूह सूत्रविषेहीं ग्रथितहोवैहै ॥ अन्याकिसीविषे ग्रथितहोवैनहीं ईहां सूत्रमणियोंकादृष्टांत केवल ग्रथितत्वमात्रविषेहींहै ॥ कारणपणेविषे यहदृष्टांत संभवतानहीं ॥ जिसकारणतैं सोसूत्र तिनमणियोंका कारणरूपहैनहीं ॥ ताकारणपणेविषेतौं सुवर्णविषेकुंडलकंकणादिकभूषणोंकादृष्टांतहीं संभवैहै इति ॥ और किसीटीकाविषेतौं इसश्लोकका यहअर्थ करयाहै ॥ व्यवहारकालविषेतौं मृत्तिकादिरूपकारणका तथाघटादिरूपकार्यका परस्परभेद प्रतीतहोवैहै ॥

यातैं मृत्तिकादिरूपकारणतैं घटादिरूपकार्य परहै अर्थात् पृथक्है ॥ और जैसे घटादिककार्योंका सामृत्तिका उपादानकारणहै ॥ तैसे गौअश्वादिककार्योंका सामृत्तिका उपादानकारण हैनहीं ॥ यातैं तेगौअश्वादिककार्य तामृत्तिकातैं परतरहैं ॥ तैसे मैंपरमात्मादेवतैं कोईभीकार्य परतर नहींहै ॥ अर्थात् जिस कार्यवस्तुका मैंपरमेश्वर उपादानकारणनहींहूं ॥ ऐसाकोईकार्यवस्तु हैनहीं ॥ इतनैकहणेकरिकै प्रपंचविषे ब्रह्मकाअव्यतिरेकपणादिखाया ॥ अब ताब्रह्मविषे प्रपंचकेव्यतिरेकपणेकूं दृष्टांतसहित कथनकरैहैं (मयिसर्वमिति) हेअर्जुन जैसे परस्परव्यावृत्त तथासूत्रतैंव्यावृत्त जेमणियांहैं ॥ तेमणियां तिनसर्वमणियोंविषे अनुस्यूतसूत्रविषे ग्रथितहोवैहैं ॥ तैसे सत्तारूपकरिकै तथास्फुरणरूपकरिकै सर्वत्रअनुस्यूत जोमैंपरमेश्वरहूं ॥ तिसमैंपरमेश्वरविषे यहपरस्परव्यावृत्तप्रपंच ग्रथितहै ॥ और जैसे व्यावृत्तमणियोंतैं सर्वत्रअनुस्यूतसूत्र भिन्नहोवैहै ॥ तैसे इसव्यावृत्तप्रपंचतैं सर्वत्रअनुस्यूतमैंपरमेश्वरभी भिन्नहूं ॥ इसप्रकार सर्वप्रपंच तैंरहित मैंपरमेश्वरविषे विकारीपणा संभवतानहीं इति ॥ इसीव्याख्यानकेअनुसार श्लोककेप्रारंभविषे अथवाइत्यादिकअवतरण कथनकऱ्याथा इति ॥ ७ ॥ ❀

॥ शंका ॥ हेभगवन् जलादिकोंकातौ रसादिकोंविषेहीं प्रोतपणा प्रतीतहोवैहै ॥ यातैं मैंपरमेश्वरविषेहीं यहसर्वजगत् प्रोतहै यहआपकावचन कैसेसंगतहोवैगा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए ॥ मैंपरमेश्वरहीं रसादिरूपकरिकैस्थितहुआहूं ॥ यातैं रसादिकोंविषे जोजलादिकोंकाप्रोतपणाहै सो मैंपरमेश्वरविषेहीं प्रोतपणाहै ॥ याप्रकारकेउत्तरकूं पंचश्लोकोंकरिकै श्रीभगवान् कहेहै ॥

(मू० श्लो०) रसोहमप्सुकौंतेयप्रभास्मिशशिसूर्ययोः ॥ प्रणवःसर्ववेदेषुशब्दःखेपौरुषंनृषु ॥ ८ ॥ रसः । अहम् । अप्सु । कौंतेय । प्रभा । अस्मि । शशिसूर्ययोः । प्रणवः । सर्ववेदेषु । शब्दः । खे । पौरुषं । नृषु ॥ ८ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन जलों विषे जोरसहै सोरस मैं हूं तथा चंद्रसूर्यविषे जाप्रभाहै साप्रभा मैंहूं तथा सर्ववेदोंविषे जोप्रणवहैसो प्रणव मैंहूं तथाआकाशविषे जोशब्दहै सोशब्द मैंहूं तथा सर्वनरोंविषे जोपौरुष सोपौरुष मैंहूं ॥ ८ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन सर्वजलोंविषेस्थित जोरसतन्मात्रारूप पुण्य मधुररसहै ॥ जोरस तिनसर्वजलोंका सारभूतहै तथा तिनसर्वजलोंका कारणभूतहै तथा तिनसर्व जलोंविषेअनुस्यूतहै सोरस मैंहूं ॥ अर्थात् ऐसेरसरूप मैंपरमेश्वरविषेहीं तेसर्वजल प्रोतहैं ॥ और चंद्रमाविषे तथासूर्यविषे जोप्रभारूपप्रकाशहै ॥ जिसप्रकाश करिकै सर्वलोकोंकाव्यवहार सिद्धहोवैहै ॥ सोप्रकाश मैंहूं ॥ अर्थात् तासामान्यप्रकाशरूप मैंपरमेश्वरविषेहीं तेचंद्रमासूर्य प्रोतहैं ॥ और सर्ववेदोंविषेअनुस्यूत जोॐकाररूपप्रणवहै ॥ सोप्रणव मैंहूं ॥ अर्थात् ताप्रणवरूप मैंपरमेश्वरविषेहीं तेसर्ववेद प्रोतहैं ॥ तहांश्रुति ॥ (तद्यथाशंकुनासर्वाणिपर्णानिसंतृण्णानिएवमों

कारेणसर्वावाक्संतृण्णाइति) ॥ अर्थयह ॥ जैसे सर्वपर्ण शंकुकरिकैग्रथितहैं ॥ तैसे सर्ववेदोंकेवचन ॐकारकरिकैग्रथितह इति ॥ और संपूर्णआकाशविषे अनुस्यूत तथाताआकाशकाकारणरूप जो शब्दतन्मात्रारूप पुण्यशब्दहै सोशब्द मैंहूं ॥ अर्थात् ताशब्दरूप मैंपरमेश्वरविषेहीं सोआकाश प्रोतहै ॥ और सर्वपुरुषों विषे अनुस्यूत होइकैरह्याहुआजो पुरुषत्वसामान्यरूप पौरुषहै ॥ सोपौरुष मैंहूं ॥ अर्थात् तापौरुषरूप मैंपरमेश्वरविषेहीं तेसर्वपुरुष प्रोतहैं ॥ ईहांयहतात्पर्यहै ॥ जैसे सर्वशब्दोंविषे अनुगत शब्दत्वसामान्यविषे दुंदुभिशब्दत्वादिकविशेष प्रोतहोवैहैं ॥ तैसेरसादिसामान्यरूप मैंपरमेश्वरविषेहीं जलादिकसर्वविशेष प्रोतहैं ॥ याप्रकारकीरीति अगलेच्यारिश्लोकोंविषेभी सर्वत्रजानणी ॥ तहां दुंदुभि शंख वीणा यहतीनदृष्टांत आत्मपुराणकेसप्तमअध्यायविषे हम विस्तारतैंकथनकरि आयेहैं ॥ ईहां (रसोहमप्सु) इत्यादिकपंचश्लोकोंकरिकै श्रीभगवाननैं जो आपणीविभूति कथनकरीहै ॥ सोकेवल ध्यानकरणेवासतैकथनकरीहै ॥ यातैंइसध्येयस्वरूपविषे अत्यंतअभिनिवेशकरणानहीं इति ॥ ८ ॥ ❀ किंच

(मू॰श्लो॰)पुण्योगंधःपृथिव्यांचतेजश्चास्मिविभावसौ ॥ जीवनंसर्वभूतेषुतपश्चास्मितपस्विषु ॥ ९ ॥ पुण्यः । गंधः । पृथिव्यां । च । तेजः । च । अस्मि । विभावसौ । जीवनं । सर्वभूतेषु । तपः । च । अस्मि । तपस्विषु ॥ ९ ॥ (इतिपदच्छेदः) हेअर्जुन पृथिवी विषे जोपुण्य गंधहैसोगंध मैंहूं तथा अग्निविषे जोतेजहै सोमैंहूं तथा सर्वभूतोंविषे जोजीवनहै सोमैंहूं तथा तपस्वीपुरुषोंविषे जोतपहै सो मैं हूं ॥ ९ ॥ (इतिपदार्थः ॥)

॥ टीका ॥ हे अर्जुन सर्वपृथिवीविषेसामान्यरूप तथासर्वपृथिवीविषेअनुस्यूत तथातापृथिवीकाकारणरूप ऐसाजोतन्मात्रारूपपुण्यगंधहै ॥ अर्थात् विकारभावतैं रहित जोसुरभिगंधहै ॥ सोपुण्यगंध मैंहूं ॥ अर्थात् तापुण्यगंधरूप मैंपरमेश्वरविषेहीं सापृथिवी प्रोतहै ॥ ईहां (पुण्योगंधःपृथिव्यांच) यावचनविषेस्थितजोचकार है ॥ सोचकार रसादिकोंविषेभी तापुण्यत्वके समुच्चयकरावणेवासतैंहै ॥ तात्पर्ययह ॥ शब्द स्पर्श रूप रस गंध यापांचोंविषे स्वभावतैंतों पुण्यत्वहींरहेहै ॥ और प्राणीयोंकेअधर्मविशेषतैं तिनशब्दादिकोंविषे अपुण्यत्व होवैहै ॥ स्वभावतैं सो अपुण्यत्व तिनशब्दादिकविषयोंविषे होवैनहीं ॥ ईहां असुरभिआदिकविकार भावतैरहितपणेकानाम पुण्यत्वहै इति ॥ और अग्निविषेजोतेजहै जोतेज सर्वपदार्थोंके दहनप्रकाशनका सामर्थ्यरूपहै तथाउष्णस्पर्शसहितहैं तथाश्वेतभास्वररूपहै तथासर्वअग्निविषेअनुस्यूतहै ॥ सोतेज मैंहूं ॥ अर्थात् तिसतेजरूप मैंपरमेश्वरविषेहीं सोअग्नि प्रोतहै ॥ इहां (तेजश्चास्मि) यावचनविषेस्थितजो चकारहै ॥ ता चकारतैं वायुकेस्पर्शकाभी ग्रहणकरणा ॥ अर्थात् उष्णस्पर्शकरिकैआतुरपुरुषोंकूं शीतलताकीप्राप्तिकरणेहारा जोवायुकाशीतस्पर्शहै ॥ सोशीतस्पर्शभी मैंहींहूं॥

ताशीतस्पर्शरूप मैंपरमेश्वरविषेहीं सोवायु प्रोतहै इति ॥ और स्थावरजंगमरूपसर्वप्राणियोंविषेस्थितजो प्राणोंकाधारणरूप आयुषरूपजीवनहै ॥ सोआयुषरूपजीवन मैं हूं ॥ अर्थात् ताआयुषरूपमैंपरमेश्वरविषेहीं तेसर्वप्राणी प्रोतहैं ॥ अथवा (जीवत्यनेनेतिजीवनं) ॥ अर्थयह ॥ जीवनकूंप्राप्तहोवैंजिसकरिकै ताकानाम जीवनहै ॥ याप्रकारकीव्युत्पत्तिकरिकै सोजीवनशब्द विराट्‌रूपसमष्टिअन्नकावाचकहै ॥ तिसअन्नरूप मैंपरमेश्वरविषेहीं तेसर्वभूतप्रोतहैं ॥ और दिनदिनविषे तपकरिकै युक्तजेवानप्रस्थादिकहैं ॥ तिनवानप्रस्थादिक तपस्वियोंविषेस्थितजो शीतउष्ण क्षुधापिपासा इत्यादिकद्वंद्वोंकेसहनकरणेकासामर्थ्यरूपतपहैं ॥ सोतप मैंहूं ॥ अर्थात् तिस तपरूपमैंपरमेश्वरविषेहीं तेतपस्वीपुरुष प्रोतहैं ॥ ईहां (तपश्चास्मि) यावचनविषेस्थितजोचकारहै ॥ ताचकारकरिकै अंतरबाह्य सर्वतपोंकाग्रहणकरणा ॥ तहां चित्तकीएकाग्रतारूप अंतरतपहै ॥ और जिव्हाउपस्थादिकइंद्रियोंकानिग्रहरूप बाह्यतपहै इति ॥ ९ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् (आकाशाद्वायुर्वायोरग्निरग्नेरापःअद्भ्यःपृथिवी) इसश्रुतिनैं आकाशतैंवायुकीउत्पत्तिकथनकरीहै ॥ और वायुतैंअग्निकीउत्पत्तिकथनकरीहै ॥ और अग्नितैंजलकीउत्पत्तिकथनकरीहै ॥ और जलतैंपृथिवीकीउत्पत्तिकथनकरीहै ॥ और कार्यका आपणेआपणेकारणविषेहीं प्रोतपणाहोवैहै ॥ यातैं तेसर्वभूतआपणेआपणेकारणविषेहीं प्रोतहैं ॥ अकारणरूपतुमारेविषे कोईभीपदार्थ प्रोतनहींहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए (आत्मनआकाशःसंभूतःयतोवाइमानिभूतानिजायंते) इत्यादिकश्रुतियां मैंपरमेश्वरतैंहीं सर्वभूतोंकीउत्पत्तिकूंकथनकरेहैं ॥ यातैं मैंपरमेश्वरहीं सर्वभूतोंकाकारणहूं याप्रकारकाउत्तर श्रीभगवान् कथनकरेहैं ॥

(मू० श्लो०) बीजंमांसर्वभूतानांविद्धिपार्थसनातनम् ॥ बुद्धिर्बुद्धिमतामस्मितेजस्तेजस्विनामहम् ॥ १० ॥ बीजं । मां । सर्वभूतानां विद्धि । पार्थ । सनातनं । बुद्धिः । बुद्धिमताम् । अस्मि । तेजः । तेजस्विनाम् । अहम् ॥ १० ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन उत्पत्तितैंरहित मैं परमेश्वरकूं तूं सर्वभूतोंका कारण जान तथा बुद्धिमान्पुरुषोंकी जाबुद्धिहै साबुद्धिमैं हूं तथा तेजस्वीपुरुषोंका जोतेजहै सोतेज मैं हूं ॥ १० ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन स्थावरजंगमरूपसर्वभूतोंका जोएकसनातनबीजहै ॥ अर्थात् आपणीउत्पत्तिविषेबीजांतरकीअपेक्षातैंरहित जोसर्वभूतोंका एकनित्यकारण है जोकारण व्यक्तिव्यक्तिविषे भेदवालाहैनही तथाअनित्यहैनहीं ॥ ऐसा अव्याकृतनामा सर्वजगत्‌काबीजकारणरूप मैंपरमेश्वरकूंहीं तूंजान ॥ मैंपरमेश्वरतैंभिन्न दूसराकोईवस्तु सर्वभूतोंकाबीजरूपहैनही ॥ और श्रुतिविषे आकाशादिकोंतैं जोवायुआदिकोंकीउत्पत्तिकथनकरीहै ॥ सोभी केवल जड आकाशादिकोंतैंहीं वायुआदिकोंकीउत्पत्ति कथनकरीनहीं ॥ किंतु आकाशादिउपहित मैंपरमेश्वरतैंहीं वायुआदिकोंकीउत्पत्ति कथनकरीहै ॥ यातैं सर्वभूतोंका अव्याकृतनामाबीज

रूप मैंपरमेश्वरविषे तिनसर्वभूतोंकाप्रोतपणा युक्तहै किंवा तत्त्वअतत्त्ववस्तुविवेककाजोसामर्थ्यहै ताकानाम बुद्धिहै ॥ तिसबुद्धिवालेपुरुषोंकानाम बुद्धिमत्‌है ॥ ऐसे बुद्धिमान्‌पुरुषोंकी साबुद्धि मैंहूं॥ अर्थात् ताबुद्धिरूप मैंपरमेश्वरविषेहीं तेबुद्धिमान्‌पुरुष प्रोतहैं ॥ और अन्यशत्रुवोंके अभिभवकरणेकाजोसामर्थ्यहै जिससामर्थ्य करिकै यह पुरुष अन्यप्राणीयोंकरिकैअभिभवकूंप्राप्तहोतानहीं तासामर्थ्यकानाम तेजहै ॥ ऐसेतेजवालेपुरुषोंकानाम तेजस्वीहै तिनतेजस्वीपुरुषोंका सोतेज मैंहूं अर्थात् ता तेजरूप मैंपरमेश्वरविषेहींतेतेजस्वीपुरुष प्रोतहैं इति ॥ १०॥ ❀ किंच ॥

(मू० श्लो०) बलंबलवतांचाहंकामरागविवर्जितम् ॥ धर्माविरुद्धोभूतेषुकामोस्मिभरतर्षभ ॥११॥ बलं । बलवतां । च । अहं । काम रागविवर्जितं । धर्माविरुद्धः । भूतेषु । कामः । अस्मि । भरतर्षभ ॥ ११ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन बलवान्‌पुरुषोंका काम रागतैंरहित जोबलहै सोबल मैं हूं तैंथा सर्वप्राणीयोंविषे धर्मतैंअविरुद्ध जोकामहै सोकाम मैंहूं ॥ ११ ॥

॥ टीका ॥ अप्राप्तजोविषयहै ताविषयकीप्राप्तिकरणेहारेकारणकेअभावहुएभी यहविषय हमारेकूंप्राप्तहोवै याप्रकारकीजा चित्तकीवृत्तिविशेषहै ताकानाम कामहै और प्राप्तजोविषयहै ताविषयके नाशकरणेहारेकारणकेवियमानहुएभी यहविषय नाशकूंनहींप्राप्तहोवै याप्रकारकी जा रंजनात्मकचित्तकीवृत्तिविशेषहै ताकानाम रागहै ॥ ऐसेकामरागतैंराहित जोबलहै ॥ अर्थात् सर्वप्रकारतैं ताकामरागकूंनहीं उत्पन्नकरणेहारा तथारजतमतैंरहित जोस्वधर्मकेअनुष्ठानवासतै देहइंद्रियादिकोंकेधारणकासामर्थ्यरूपबलहै॥ ऐसेसात्विकबलवालेपुरुषोंकानाम बलवत्‌है ॥ ऐसेसंसारतैंपराङ्मुख बलवान्‌पुरुषोंका सोबल मैंहूं ॥ अर्थात् तासात्विकबलरूप मैंपरमेश्वरविषेहीं तेबलवान्‌पुरुष प्रोतहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ सोकामरागतैंरहितबलहीं मैंपरमेश्वरकास्वरूपभूतकरिकै ध्यानकरणेयोग्यहै ॥ ताकामरागकूंउत्पन्नकरणेहारा जोविषयासक्तपुरुषोंकाबलहै सोबल मैंपरमेश्वरकास्वरूपभूतकरिके ध्यानकरणेयोग्यनहींहै इति ॥ अथवा (कामरागविवर्जितं) यावचनविषैस्थितजोरागशब्दहै ॥ तारागशब्दकरिके क्रोधकाहींग्रहणकरणा ॥ किंवाधर्मशास्त्रकानाम धर्महै ॥ ताधर्मशास्त्रतैअविरुद्ध अर्थात् ताधर्मशास्त्रनैंनहींनिषेधकन्याहुआ अथवा धर्मकेअनुकूलऐसाजो सर्वभूतप्राणीयोंविषे शास्त्रकेअनुसार स्त्रीपुत्रादिकपदार्थविषयक अभिलाषारूपकामहै ॥ सोकाम मैंहूं ॥ अर्थात् ताशास्त्रअविरुद्धकामरूप मैंपरमेश्वरविषेहीं तेकामयुक्तसर्वप्राणी प्रोतहैं इति ॥ ११ ॥ ❀ ॥ हेअर्जुन इसप्रकार बहुतपदार्थोंकेगणनैंसेक्याप्रयोजनहै ॥ यहसर्वजगत् मैंपरमेश्वरतैंहींउत्पन्नहुआ मैंपरमेश्वरविषेहींप्रोतहै ॥ इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) येचैवसात्विकाभावाराजसास्तामसाश्चये ॥ मत्तएवेतितान्विद्धिनत्वहंतेषुतेमयि ॥ १२ ॥ ये । च । एव ।

सात्विकाः । भावाः । राजसाः । तामसाः । च । ये । मत्तः । एव । इति । तान् । विद्धि । न । तु । अहं । तेषु । ते । मयि ॥१२॥ (इतिपदच्छेदः)॥ हेअर्जुन जे कोई अन्यभी सात्विक पदार्थहैं तथा जेकोई राजसपदार्थहैं तथा तामस पदार्थहैं तिनंसर्वपदार्थोंकूं मैंपरमेश्वरतें हीं पूर्वउक्तरीतिसें उत्पन्न हुआ जानं तौ भी मैंपरमेश्वर तिनंपदार्थोंविषे नहींहूं तेपंदार्थतौं मैंपरमेश्वरविषेहींहैं ॥ १२ ॥ (इतिपदार्थः)॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन पूर्वउक्तपदार्थोंतैंभिन्न जेकोईदूसरेभी अंतःकरणकेपरिणामरूप शमदमादिक सात्विकभावहैं ॥ तथा हर्षदर्पादिक राजसभावहैं ॥ तथा शोकमोहादिक तामसभावहैं ॥ जेसात्विकराजसतामसभाव इनप्राणीयोंकूं विद्याकर्मादिकोंकेवशतैं उत्पन्नहोवैहैं ॥ तिनसर्वभावोंकूं (अहंकृत्स्नस्यजगतःप्रभवः) इत्यादिकवचनउक्तरीतिसें मैं परमेश्वरतैंहीं उत्पन्नहुआ जान ॥ अथवा सत्वगुणहैप्रधानजिनोंविषे ऐसेजेसात्विकभावहैं ॥ जैसे देव ऋषि ब्राह्मण शर्करा इत्यादिकपदार्थहैं ॥ तथा रजोगुणहैप्रधानजिनोंविषे ऐसेजेराजसभावहैं ॥ जैसे गंधर्व यक्ष क्षत्रिय मिरच इत्यादिकपदार्थहैं ॥ तथा तमोगुणहैप्रधानजिनोंविषे ऐसेजे तामसभावहैं ॥ जैसे राक्षस क्रव्याद शूद्र गृंजन इत्यादिकपदार्थहैं ॥ तेसर्वपदार्थ मैंपरमेश्वरतैंहीं उत्पन्नहुएजान ॥ हेअर्जुन इसप्रकार तेसर्वपदार्थ मैंपरमेश्वरतें उत्पन्नभीहुएहैं ॥ तौंभी मैंपरमेश्वर तिनजडपदार्थोंविषे आधेयरूपकरिकैस्थितनहींहूं ॥ अर्थात् जैसे रज्जुरूपअधिष्ठानकल्पितसर्पादिकोंकेविकल्पोंकरिकै दूषितहोवैनहीं ॥ तैसे मैंपरमेश्वरभी तिनअनात्मपदार्थोंके वशवर्ति तथातिनोंकेविकारोंकरिकैदूषित होतानहीं ॥ जैसे संसारीजीव तिनोंकेवशवर्ति तथातिनोंके विकारोंकरिकै दूषित होवैहै ॥ तैसे मैंपरमेश्वरदूषितहोतानहीं ॥ और तेसर्वजडपदार्थतौं जैसे रज्जुविषे सर्पादिककल्पितहोवैहैं तैसे मैंपरमेश्वरविषेहीं कल्पितहैं ॥ अर्थात् ॥ मैंपरमेश्वरतें सत्तास्फूर्तिकूंप्राप्तहुए तेसर्वपदार्थ मैंपरमेश्वरकेहीं अधीनहैं ॥ इति ॥ १२ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् (रसोहमप्सुकौंतेय) इत्यादिकवचनोंकरिकै आपनैं सर्वजगत्कूं आपणास्वरूपकह्या ॥ तथा आपणेकूं स्वतंत्रकह्या तथानित्यशुद्धमुक्तस्वभावकह्या ॥ ऐसे स्वतंत्र नित्य शुद्ध मुक्तस्वभाव आपपरमेश्वरतैंअभिन्न जोयहजगत्है तिसजगत्विषे संसारीपणा कैसेसंभवैंगा किंतु नहींसंभवैंगा ॥ तहां तिसहमारे स्वतंत्रनित्यशुद्धमुक्तस्वरूप केअज्ञानतैंहीं इसजगत्विषे सोसंसारीपणाहोवैहै वास्तवतैंनहीं ॥ ऐसावचन जोआपकहो ॥ तौंभी तिसआपकेस्वरूपकाअज्ञान इसजगत्विषे किसकारणतैंहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए ॥ श्रीभगवान् ताआपणेस्वरूपकेअज्ञानविषे कारणकूं कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) त्रिभिर्गुणमयैर्भावैरेभिःसर्वमिदंजगत् ॥ मोहितंनाभिजानातिमामेभ्यःपरमव्ययम् ॥१३॥ त्रिभिः । गुणमयैः । भावैः ।

एभिः । सर्वम् । इदं । जगत् । मोहितं । न । अभिजानाति । माम् । एभ्यः । परम् । अव्ययम् ॥१३॥ (इतिपदच्छेदः)॥ हेअर्जुन इनपूर्व उक्त गुणमय तीनप्रकारके भावोंनें यह सर्व जगत् मोहितकऱ्याहे याकारणतैं इनंगुणमयभावोंतैं परं तथाअविक्रिय मैंपरमेश्वरकूं नहीं जानताहै ॥ १३ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन पूर्वकथनकऱ्येजे सत्व रज तम यातीनगुणोंकेविकाररूप तीनप्रकारकेभावपदार्थहैं ॥ तिन तीनप्रकारकेपदार्थोंनेंहीं यहसर्वप्राणीमात्र मोहित करेहैं ॥ अर्थात् नित्यअनित्यवस्तुकेविवेककीअयोग्यताकूं प्राप्तकरेहैं ॥ याकारणतैंहीं यहप्राणी मैंपरमात्मादेवकूं जानतेनहीं ॥ कैसाहूंमैंपरमेश्वर ॥ इनतीन प्रकारकेभावोंतैं परहूं ॥ अर्थात् तिनसर्वभावोंकेकल्पनाका अधिष्ठानरूपहूं ॥ तथा तिनसर्वभावोंतैं अत्यंत विलक्षणहूं ॥ ताविलक्षणताविषे हेतुगर्भितविशेषणकहेहैं (अव्ययमिति) अर्थात् जन्ममरणादिकसर्व विकारोंतैंरहितहूं ॥ तथा इसदृश्यप्रपंचतैंरहितहूं ॥ तथा आनंदघनहूं ॥ तथा आपणेस्वयंज्योतिरूपकरिकैप्रकाशमानहूं ॥ तथा सर्वप्राणीयोंका आत्मारूपहूं ॥ ऐसे अत्यंतसमीपभी मैंपरमेश्वरकूं यहप्राणी जानतेनहीं ॥ ताप्रत्यक्अभिन्न मैंपरमेश्वरकेअज्ञानतैंहीं यहसर्वप्राणी वारंवार जन्ममरणरूपसंसारकूं प्राप्तहोवैंहैं ॥ यातैं इनअविवेकीजनोंके बहुतदौर्भाग्यहैंइति ॥ तहां सत्वादिकगुणमय भावोंनें यहसर्वप्राणी मोहकूंप्राप्तकरीतेहैं यहवार्त्ता अन्यशास्त्रविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ (इंद्रियाभ्यामजय्याभ्यांद्वाभ्यामेवहतंजगत् ॥ अहोउपस्थजिह्वाभ्यांब्रह्मादिमशकावधि) ॥ अर्थयह ॥ अल्पयत्नकरिकैजयकरणेकूंअशक्यजोउपस्थइंद्रियहै तथाजिह्वाइंद्रियहै ॥ तिनदोनोंइंद्रियोंनेंहीं ब्रह्मातैंआदिलैकेमशकपर्यंत यहसर्व जगत् हननकऱ्याहे ॥ यहबडाआश्चर्यहे ॥ यद्यपि आपणेआपणेविषयोंविषेप्रवृत्तहुए नेत्रादिकसर्वइंद्रिय इसपुरुषकेअनर्थकाहेतुहैं ॥ तथापि तिनसर्वइंद्रियों विषे उपस्थ जिह्वा यहदोनोंइंद्रिय अत्यंतप्रबलहैं ॥ यातैं तिनदोनोंइंद्रियोंकाहीं ईहांग्रहणकऱ्याहै इति ॥ १३ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् पूर्वकथन कऱ्येजे अनादिसिद्धमायाके सत्वादिकतीनगुणहैं ॥ तिन तीनगुणोंकरिकैसंबद्धहुए इसजगतकूं स्वतंत्रताकेअभावहोणेतैं तिसत्रिगुणात्मकमायाकेनिवृत्तकरणेकासामर्थ्य हैनहीं ॥ यातैं कदाचित्भी तामायाकीनिवृत्ति नहींहोवैंगी ॥ काहेतैं यथार्थवस्तुकेविवेकका जोअसामर्थ्यहे ॥ ताअसामर्थ्यकाहेतुरूप सात्रिगुणात्मकमाया सनातनहींहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए ॥ अन्यउपायकरिकैं यद्यपि तामायाकीनिवृत्तिनहींहोवैहे ॥ तथापि एकभगवत्कीशरणताकरिकैं प्राप्तहुएतत्वज्ञानतैं तामायाकीनिवृत्ति संभवैहे ॥ याप्रकारकेउत्तरकूं श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

(मू ० श्लो ०) दैवीह्येषागुणमयीममामायादुरत्यया ॥ मामेवयेप्रपद्यंतेमायामेतांतरतिते ॥ १४ ॥ दैवी । हि । एषा । गुणमयी । मम ।

माया। दुरत्यया। माम्। एवं। ये। प्रपद्यंते। मायाम्। एतां। तरंति। ते ॥ १४ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन मैंपरमेश्वरकी येह सत्त्वादिगुणरूप प्रसिद्ध दैवी माया दुरतिक्रमाहै जेपुरुष मैंपरमेश्वरकूं हीं साक्षात्कारकरेहैं तेपुरुषहीं इस मायाकूं नाशकरेहैं ॥ १४ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन (एकोदेवःसर्वभूतेषुगूढः) इत्यादिकश्रुतियोंनें प्रतिपादनकऱ्याजो स्वप्रकाशचैतन्यआनंदस्वरूपदेवहै जोदेव जीवईश्वरविभागतैंरहितहै ॥ ताशुद्धचैतन्यमात्रदेवके आश्रयरूपकरिकै तथाविषयरूपकरिकै जामायाकल्पनाकरीजावैहै ताकानाम दैवीहै ॥ अर्थात् जैसे अंधकार जागृहकेआश्रितरहैहै तागृहकूंहीं आवृतकरेहै ॥ तैसे यहमायाभी जिस शुद्धचैतन्यदेवकेआश्रितरहैहै तिसीशुद्धचैतन्यदेवकूं विषयकरेहै ॥ इसप्रकार चैतन्यदेवके आश्रित तथाचैतन्यदेवविषयकहोणेतैं सामाया दैवी कहीजावैहै ॥ यहवार्त्ता अन्यशास्त्रविषेभी कथनकरीहै ॥ तहां श्लोक ॥ (आश्रयत्वविषयत्वभागिनीनिर्विभागचितिरेवकेवला। पूर्वसिद्धतमसोहिपश्चिमोनाश्रयोभवतिनापिगोचरः ॥) अर्थयह ॥ जीवईश्वरविभागतैंरहित केवलचैतन्यमात्रहीं अनादिसिद्धअज्ञानके आश्रयत्वकूं तथाविषयत्वकूं प्राप्त होवैहै ॥ जिसकारणतैं ताअनादिसिद्धअज्ञानका ताअज्ञानकेपश्चात्भावीकोईभीपदार्थ आश्रय तथाविषयहोवै नहीं इति ॥ जादैवीमाया मामहंनजानामि अर्थ मैंआपणेकूंनहींजानताहूं याप्रकारकेसाक्षीरूपप्रत्यक्षकरिकैसिद्धहोणेतैं अपलापकरीजावैनहीं ॥ तथा जामाया स्वप्नभ्रमादिकोंकीअन्यथाअनुपपत्तिरूप अर्थापत्तिरूप अर्थापत्तिप्रमाणकरिकै सिद्धहै ॥ यहमायाकीप्रसिद्धि (एषा हि) यादोनोंशब्दोंकरिकैकथनकरीहै तहां एषा याशब्दकरिकैतौ साक्षिप्रत्यक्षसिद्धता कथनकरीहै ॥ और हि याशब्दकरिकैं अर्थापत्तिप्रमाणसिद्धता कथनकरीहै ॥ तथा जामाया गुणमयीहै ॥ अर्थात् सत्त्व रज तम यातीनगुणरूपहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे त्रिगुणकरीहुईरज्जु अत्यंतदृढहोणेतैं पुरुषोंकेबंधनकाहेतुहोवैहै ॥ तैसे अत्यंतदृढहोणेतैं यहत्रिगुणात्मकमायाभी इनजीवोंकेबंधनकाहेतुहै ॥ इसअर्थकेबोधनकरणेवासतैहीं श्रीभगवान्नें तामायाका गुणमयी यहविशेषणकथनकऱ्याहै ॥ ऐसीजा मैंपरमेश्वरकीमायाहै ॥ अर्थात् सर्वजगत्काकारणरूप तथासर्वज्ञ तथासर्वशक्तिसंपन्न तथामायावी ऐसाजोमैंपरमेश्वरहूं ॥ तिसहमारे गृहीपुरुषकेगृहादिकोंकीन्यांई ममत्वकाविषयीभूत जामायाहै जामाया मैंपरमेश्वरकेअधीनहोणेतैं इसजगत्केउत्पत्तिआदिकोंका निर्वाहकरणेहारीहै तथा जामाया तत्त्ववस्तुकेभानकाप्रतिबंधकरिकै अतत्ववस्तुकेभानकाहेतुरूप आवरणविक्षेपशक्तिवालीअविद्यारूपहै ॥ तथा जामाया सर्वजगत्कीप्रकृतिरूपहै ॥ तहांश्रुति ॥ (मायांतुप्रकृतिंविद्यान्मायिनंतुमहेश्वरम् ॥) अर्थयह ॥ इससर्वजगत्का माया उपादानकारणहै ॥ और तामायावाला महेश्वर कह्याजावैहैइति ॥ ईहां यहप्रक्रियाहै ॥ जीव ईश्वर जगत् इत्यादिकविभागतैंरहित जोशुद्धचैतन्यहै ॥ ताशुद्धचैतन्यविषेअध्यस्त जाअनादि मायारूप

अविद्याहै ॥ जाअविद्या सत्वगुणकीप्रधानताकरिकै अत्यंतस्वच्छहै ॥ ऐसीस्वच्छअविद्या जैसैस्वच्छदर्पण मुखकेआभासकूंग्रहणकरेहै तैसे चेतनकेआभासकूंग्रहण करैहै ॥ तहां जैसे दर्पणरूपउपाधिके श्यामतादिकदोष मुखरूपाबिंबकूं स्पर्शकरैनहीं ॥ तैसेताअविद्यारूपउपाधिकेदोषोंकरिकैअसंबद्धहोणेतैं परमेश्वरतौं बिंब स्थानीयहै ॥ और जैसे दर्पणविषेस्थितप्रतिबिंब तादर्पणकेश्यामतादिकदोषोंकरिकै संबद्धहोवैहै ॥ तैसे ताअविद्यारूपउपाधिकेदोषोंकरिकैसंबद्धहोणेतैं जीवात्मा प्रतिबिंबस्थानीयहै ॥ तहां तिसबिंबरूपईश्वरतैंहीं ताजीवकेभोगवासते आकाशादिकक्रमकरिकै शरीरइंद्रियादिकसंघात तथातासंघातका भोग्यरूपसंपूर्णप्रपंच उत्पन्नहोवैहै ॥ याप्रकारकीकल्पना करीजावैहै ॥ तहां जैसे बिंब प्रतिबिंब यादोनोंविषे शुद्धमुख अनुगतहोवैहै ॥ तैसे ईश्वर जीव यादोनोंविषेअनुगत जो मायाउपहितचैतन्यहै ॥ सोचैतन्य साक्षी कह्याजावैहै ॥ तिससाक्षीचैतन्यनैंहीं आपणेविषेअध्यस्तमाया तथातामायाकाकार्यरूप सर्वप्रपंच प्रकाशकरीताहै ॥ यातैं तासाक्षीचैतन्यकेअभिप्रायकरिकै तौं श्रीभगवानूनैं ताअविद्यारूपमायाकूं दैवी या नामकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ और ताबिंबरूपईश्वरकेअभिप्रायकरिकै श्रीभगवानूनैं तामायाकूं ममभाया यानामकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ यद्यपि ताएकअविद्याविषेप्रतिबिंबरूप एकहींजीव संभवैहै ॥ तथापि ताएकअविद्याविषेस्थित अंतःकरणकेसंस्कार भिन्नभिन्नहैं ॥ तिनसंस्कारोंकेभेदकरिकै अंतःकरणरूपउपाधिवालेजीवका ईहांगीताविषे तथाश्रुतिविषे भेदकथनकऱ्याहै ॥ तहां इसगी ताविषेतौं (मामेवयेप्रपद्यंते । दुष्कृतिनोमूढानप्रपद्यंते । चतुर्विधाभजंतेमाम्) इत्यादिकवचनोंकरिकै ताजीवकाभेद कथनकऱ्याहै ॥ और श्रुतिविषेतौं । (तद्योयो देवानांप्रत्यबुध्यतसएवतदभवत्तथाऋषीणांतथामनुष्याणाम् ।) इत्यादिकवचनोंकरिकै ताजीवकाभेद कथनकऱ्याहै ॥ और ताअंतःकरणरूपउपाधिकेभेदकानहींवि चारकरिकैतौं जीवत्वकाप्रयोजकअविद्यारूपउपाधिकेएकत्वहोणेतैं ताजीवकाभी एकत्वरूपकरिकैहीं इसगीताविषे तथाश्रुतिविषे कथनकऱ्याहै ॥ तहांइसगीता विषेतौं (क्षेत्रज्ञंचापिमांविद्धिसर्वक्षेत्रेषुभारत । प्रकृतिंपुरुषं चैवविद्ध्यनादीउभावपि । ममैवांशोजीवलोकेजीवभूतःसनातनः) इत्यादिकवचनोंकरिकै ताजीवका एकत्वकथनकऱ्याहै ॥ और श्रुतिविषेतौं । (ब्रह्मवाइदमग्रआसीत्तदात्मानमेवावेदहंब्रह्मास्मीतितस्मात्सर्वमभवत् । एकोदेवःसर्वभूतेषुगूढः । अनेनजीवेनात्मनानु प्रविश्य । वालाग्रशतभागस्यशतधाकल्पितस्यच ॥ भागोजीवःसविज्ञेयःसचानंत्यायकल्पते ॥) इत्यादिकवचनोंकरिकै ताजीवका एकत्वकथनकऱ्याहै ॥ यद्यपि दर्पणविषेस्थित जोचैत्रनामापुरुषका प्रतिबिंबहै ॥ सोप्रतिबिंब आपणेकूं तथापरकूं जानतानहीं ॥ काहेतैं जडचेतनकासमुदायरूप जोचैत्रनामापुरुषहै ॥ ताचैत्रपुरुषकेशरीररूपअचेतनअंशकाहीं तादर्पणविषे प्रतिबिंबहोवैहै॥ चेतनअंशका तादर्पणविषे प्रतिबिंबहोवैनहीं॥ यातैंजडहोणेतैं सोप्रतिबिंब आपणेकूं तथापरकूं जानतानहीं॥ तथापि अविद्याविषेजोचेतनकाप्रतिबिंबहै॥ सोप्रतिबिंबचेतनरूपहोणेतैं आपणेकूं तथापरकूं जानताहींहै ॥ काहेतैं प्रतिबिंबपक्षविषे सोप्रतिबिंब मिथ्या

होवैनहीं॥किंतुताबिंबचैतन्यविषे उपाधिस्थत्वमात्रहीं कल्पितहोवैहै॥और आभासपक्षविषेतौं यद्यपि सोचिदाभासशुक्तिरजतादिकोंकीन्यांई अनिर्वचनीयहींउत्पन्न
होवैहै॥तथापि सोचिदाभास घटादिकजडपदार्थोंतैं विलक्षणहींहोवैहै॥यातैं ताचिदाभासविषेभी आपणाज्ञान तथापरकाज्ञान संभवैहै॥ऐसाप्रतिबिंबरूपजीव जबपर्यं
त आपणे परमेश्वररूपबिंबकेसाथि आपणीएकताकूं नहीं जानेहै ॥ तबपर्यंत जैसे जलविषेस्थितसूर्य ताजलकेकंपादिकविकारोंकूं प्राप्तहोवैहै तैसे सोप्रतिबिंबरूपजी
वभी ताअविद्यारूप उपाधिके सहस्रविकारोंकूं अनुभवकरैहै ॥इससर्वअर्थकूं श्रीभगवान्कथनकरैहै (ममभायादुरत्ययाइति) हे अर्जुन बिंबभूतमैंपरमेश्वरके ऐक्यसा
क्षात्कारतैंविना यह मेरीमाया तरणेकूंअशक्यहै ॥ यातै यहमाया दुरत्ययाहै ॥ यहवार्त्ता श्रुतिविषेभीकथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ (यदाचर्मवदाकाशंवेष्टयिष्यंति
मानवाः ॥ तदादेवमविज्ञायदुःखस्यांतोभविष्यति) ॥ अर्थयह ॥ जिसकालविषे यहमनुष्य चर्मकीन्यांई इस आकाशकूं एकठाकरिलेवैंगे ॥ तिसकालविषे मैंब्रह्म
रूपहूं याप्रकारतैं परमात्मादेवकूंनजानिकैभी अविद्यादिकसर्वदुःखका नाश होवैंगा ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे चर्मकीन्यांई निरवयवआकाशका एकठाकरणा अत्यंतअ
शक्यहै तैसे ब्रह्मसाक्षात्कारतैंविना अविद्यादिकदुःखकानाशकरणाभी अत्यंतअशक्यहै इति॥इसीकारणतैं सोजीव अंतःकरणावच्छिन्नहोणेतैं ताअंतःकरणसैंसंबद्ध
पदार्थोंकूं नेत्रादिकइंद्रियद्वारा प्रकाशकरताहुआ अल्पज्ञकह्याजावैहै॥तिसकारणतैंहीं सोजीव मैंजानताहूं मैंकरताहूं मैंभोक्ताहूं इत्यादिकअध्यासरूपसहस्रअनर्थोंका
पात्रहोवैहै ॥ और सोईहींप्रतिबिंबरूपजीव जबीआपणेबिंबभूतईश्वरका आराधनकरैहै ॥ अर्थात् जोबिंबरूपईश्वर अनंतशक्तिवालाहै ॥ तथा अविद्यारूपमायाका
नियंताहै ॥ तथा सर्वप्रपंचकूंजानणेहाराहै ॥ तथा सर्वशुभअशुभकर्मकेफलका प्रदाताहै ॥ तथा परिपूर्णआनंदघनमूर्तिहै तथा भक्तजनोंकेउद्धारकरणेवासतै अने
कअवतारोंकूंधारणकरैहै ॥तथा सर्वका परमगुरुरूपहै ऐसेबिंबभूतपरमेश्वरकूं यहप्रतिबिंबरूपजीव जबी सर्वकर्मोंकासमर्पणकरिकै आराधनकरैहै ॥ तबी बिंबविषे
समर्पणकऱ्येहुएगुणोंका प्रतिबिंबविषेभानहोणेतै यहजीव सर्वपुरुषार्थोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यहवार्त्ता प्रल्हादनैंभी कथनकरीहै तहांश्लोक ॥ (नैवात्मनःप्रभुरयंनिजलाभ
पूर्णोमानंजनादविदुषःकरुणोवृणीते ॥ यद्यज्जनोभगवतेविदधीतमानंतच्चात्मनेप्रतिमुखस्ययथामुखश्रीः ॥) अर्थयह ॥ दर्पणविषेप्रतिबिंबितमुखविषे जबी तिलका
दिरूपश्री अपेक्षितहोवैहै तबी बिंबभूतमुखविषेहीं तेतिलकादिकचिन्ह करचेजावैहैं ॥ ताबिंबभूतमुखविषेकरचेहुए तेतिलकादिकचिन्ह आपेहीं ताप्रतिबिंबविषे
प्रतीतहोवैहैं ॥ ताबिंबभूतमुखविषे तिनतिलकादिकोंके कीयेतैंविना ताप्रतिबिंबविषे तिनतिलकादिकोंकेप्राप्तिकरणेका दूसराकोईउपायहैंनहीं ॥ तैसे बिंबभूतईश्वर
विषे समर्पणकरचेहुए धर्मादिकपुरुषार्थोंकूंहीं सोप्रतिबिंबरूपजीव प्राप्तहोवैहै ॥ तिसबिंबभूतईश्वरविषे तिनधर्मादिकोंकेअर्पणकीयेतैंविना तिसप्रतिबिंबरूपजीव
कूंपुरुषार्थकीप्राप्तिविषे दूसराकोईउपायहैनहीं इति ॥ इसप्रकार सर्वत्रपरिपूर्णभगवान्वासुदेवकूं आराधनकरणेहारे अधिकारीपुरुषका अंतःकरण जबीज्ञानकेप्रति

बंधकपापोंतैंरहितहोवैहै तथा ज्ञानेकअनुकूलपुण्योंकरिकै युक्तहोवैहै ॥ तबी जैसे अत्यंतनिर्मल दर्पणविषे मुख स्पष्टप्रतीतहोवैहै तैसे सर्व कर्मोंकेत्यागपूर्वक तथा शमदमादिपूर्वक ब्रह्मवेत्तागुरुके समीपजाइके करचेहुए श्रवणमनननिदिध्यासनकरिकैसंस्कृत अत्यंतस्वच्छअंतःकरणविषे मैंब्रह्मरूपहूं यामकारकीसाक्षात्काररूप वृत्ति उत्पन्न होवैहै ॥ जासाक्षात्काररूपवृत्ति ब्रह्मवेत्तागुरुनैंउपदेशकरचेहुए तत्त्वमसि इसवेदांतवाक्यकरिकैजन्यहै ॥ तथा जावृत्ति अनात्माकारतातैंरहितहै ॥ तथा सर्वउपाधियोंतैंरहित शुद्धचैतन्यकेआकारहै॥ ऐसीसाक्षात्काररूपवृत्तिविषे प्रतिबिंबितहुआ चैतन्य उसीकालविषे स्वआश्रयविषयअविद्याकूं नाशकरेहै ॥ जैसे दीपक आपणीउत्पत्तिकालविषेहीं अंधकारकूंनाशकरेहै ॥ ताअविद्याकेनाशहुएतैंअनंतर तिसवृत्तिसहित सर्वकार्यप्रपंचका नाशहोवैहै ॥ काहेतैं उपादानकारणकेनाशहुएतैं अनंतर उपादेयकार्यकेनाशकूं सर्वशास्त्रवालेअंगीकारकरेहैं ॥ इसीसर्वअर्थकूं श्रीभगवान्‌कहेहै (मामेवयेप्रपद्यंतेमायामेतांतरंतितेइति) तहां । (आत्मेत्येवोपासीत । तदात्मानमेवावेत् । तमेवधीरोविज्ञाय । तमेवविदित्वातिमृत्युमेति ।) इत्यादिकश्रुतियोंविषेस्थितजो एव यहशब्दहै ॥ सोएवकारजैसे प्रत्यक्‌अभिन्नब्रह्मविषे सर्वउपाधियोंतैंराहितपणेकूं बोधनकरेहै ॥ तैसे (मामेवयेप्रपद्यंते) इसगीतावचनविषेस्थित एवकारभी तिसप्रत्यक्‌अभिन्नब्रह्मविषे सर्वउपाधियोंतैंरहितपणेकूंबोधनकरेहै ॥ अर्थात् स्थूलसूक्ष्मकारणरूपसर्वउपाधियोंतैंरहित सच्चिदानंदअखंड अद्वितीयरूप मैंपरमात्मादेवकूं जेअधिकारीपुरुष साक्षात्कारकरेहैं ॥ तेअधिकारीपुरुषहीं इस अविद्यारूपमायाकूं नाशकरेहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ जाअंतःकरणकीवृत्ति तत्त्वमसिआदिकवेदांतवाक्योंकरिकैजन्यहै ॥ तथा निर्विकल्पक साक्षात्काररूपहै ॥ तथा निर्वचनकरणेकूंअयोग्य शुद्धचिदाकारत्वधर्मकरिकैविशिष्टहै ॥ तथासर्वसुकृतोंकाफलरूपहै ॥ तथा निदिध्यासनकेपरिपाकतैं उत्पन्नहुईहैं॥ तथा सर्वकार्यसहितअज्ञानकाविरोधीहै ॥ ऐसीसाक्षात्काररूपवृत्तिकरिकै जेअधिकारीपुरुष मैंतत्पदार्थरूपपरमात्मादेवकूं आपणाआत्मारूपकरिकै साक्षात्कारकरेहैं ॥ तेअधिकारीपुरुषहीं इसहमारीअविद्यारूपमायाकूं विनाहीं आयासतैं नाशकरेहैं ॥ कैसीहैसामाया ॥ मैंब्रह्मरूपहूं यामकारके हमारेसाक्षात्कारतैंविना दूसरेअनेकउपायोंकरिकैभी नाशकरीजावैनहीं ॥ तथाजामाया सर्वअनर्थोंकेजन्मकाभूमिरूपहै ॥ ऐसीअविद्यारूपमायाकूं तेअधिकारीपुरुष मैंपरमात्मादेवकेसाक्षात्कारकरिकै सुखेनहीं नाशकरेहैं॥ अर्थात् सर्वउपाधियोंकीनिवृत्तिकरिकै तेपुरुष सच्चिदानंदघनरूपकरिकैस्थितहोवैहैं ॥ ऐसेब्रह्मवेत्तापुरुषोंका कोईभी प्रतिबंध करिसकैनहीं ॥ तहांश्रुति ॥ (तस्यहनदेवाश्चनाभूत्याईशतआत्माह्येषांसभवति ॥) अर्थयह ॥ तिसब्रह्मवेत्तापुरुषकेअभिभवकरणेविषे इंद्रादिकदेवताभी समर्थहोवैनहीं ॥ जिसकारणतैं सोब्रह्मवेत्तापुरुष तिनसर्वदेवतावोंका आत्मारूपहींहै इति ॥ तहां (ये ते) यादोनोंपदोंविषे बहुतपुरुषोंकावाचक जोबहुवचनभगवानूनैं कथनकऱ्याहै ॥ सोबहुवचन देहइंद्रियरूपसंघातकेभेदकरिकैकल्पनाकऱ्येहुए आत्माकेभेदभ्रमका अनुवाद करेहै ॥ कोईसोबहुवचन वास्तवतैं आत्माके

भेदकाबोधकनहींहै ॥ (और मामेवयेप्रपद्यंते (यावचनकेस्थानविषे (मामेवयेप्रपश्यंति) यहसाक्षात्कारकावाचक वचनहीं भगवान्कूंकहणेयोग्यथा ॥ काहेतैं साक्षात्कारकरिकैहीं तामायाकीनिवृत्तिहोवैहे ॥ कर्मउपासनादिकोंकरिकै तामायाकीनिवृत्तिहोवैनहीं ॥ तावचनकूंनकहिकै श्रीभगवान्नैंजो (मामेवयेप्रपद्यंते) यहवचन कथनकऱ्याहे ॥ ताकरिकै यहअर्थ सूचनकऱ्याहै ॥ जेअधिकारीपुरुष मैंएकपरमेश्वरकेशरणकूंप्राप्तहोइकै परमानंदघनपरिपूर्ण मैंभगवान्वासुदेवकूंचिंतनकरतेहुए दिवसोंकूंवितीतकरेहैं ॥ तेअधिकारीपुरुष मैंपरमेश्वरकेप्रेमजन्यमहान्आनंदसमुद्रविषेमग्नमनवालेहोणेतैं इसमेरीमायाकेसंपूर्णगुणाविकारोंनैं अभिभवनहींकरीतेहैं ॥ किंतु उलटा साहमारीमाया यहभगवत्शरणपुरुष हमारेविलासविनोदविषेअकुशलहोणेतैं हमारे नाशकरणेविषेसमर्थहै याप्रकारकीशंकाकरतीहुई तिनभक्तजनोंतैं आपहींनिवृत्तहोइजावैहे ॥ जैसे क्रोधवान्तपस्वीपुरुषोंतैं वारांगना निवृत्तहोइजावैहे ॥ यातैं यह अधिकारीपुरुष तिसहमारीमायाकेतरणवासतै मैंपरिपूर्णभगवान्वासुदेवकूं निरंतर चिंतनकरै इति ॥ १४ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् इसप्रकार आपपरमेश्वरकेशरणागतहोइकै आपकेनिरंतरचिंतनतैं जोइसमायाकीनिवृत्तिहोतीहोवै ॥ तौ सर्वअनर्थोंकामूलभूत इसमायाकेनाशकरणेवासतै यहसर्वमनुष्य आपकेशरणागतकूं किसवासतैनहींप्राप्तहोते ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए ॥ अनेकजन्मोंविषेसंचयकरचेहुए पापरूपप्रतिबंधकेवशतैं यहसर्वमनुष्य हमारेशरणकूं प्राप्तहोतेनहीं याप्रकारकेउत्तरकूं श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) नमांदुष्कृतिनोमूढाःप्रपद्यंतेनराधमाः ॥ माययापहृतज्ञानाआसुरंभावमाश्रिताः ॥ १५ ॥ नं । मांम् । दुष्कृंतिनः । मूढाः । प्रंपद्यंते । नराधमाः । मायया । अंपहृतज्ञानाः । आसुरं । भावम् । आश्रिताः ॥ १५ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन जेपुरुष पापकर्मोंवालेहैं तथामूढहैं तथानरोंविषेअधमहैं तथामायाकरिकै निवृत्तहुआहैज्ञानजिनोंका तथादंभदर्पादिरूपआसुरभावकूं आश्रय णकरचाहैजिनोंनैं ऐसेपुरुष मैंपरमेश्वरकूं नहीं भजेहैं ॥ १५ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जेपुरुष पापकर्मोंकरिकै नित्यहींयुक्तहैं ॥ जिसकारणतैं पापकर्मिकैयुक्तहैं तिसकारणतैं तेपुरुष सर्वमनुष्योंविषेअधमहैं ॥ अर्थात् तेपापात्मापुरुष इसलोकविषेतौ श्रेष्ठपुरुषोंकरिकै निंदाकरणेयोग्यहोवैहैं ॥ और परलोकविषे सहस्रअनर्थोंकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ याकारणतैं तेपापात्मापुरुष सर्वमनुष्योंविषे अधमहैं ॥ शंका ॥ हेभगवन् तेपुरुषअनर्थकीप्रातिकरणेहारे पापकर्मकूंहीं सर्वदा किसकारणतैंकरतेहैं ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहेहै ॥ (मूढाःइति) हेअर्जुन जिसकारणतैं तेपुरुष मूढहैं ॥ अर्थात् यहकार्य हमारेअर्थकासाधनहैं तथायहकार्य हमारेअनर्थकासाधनहै याप्रकारके इष्टअनिष्टकेविवेकतैंशून्यहैं ॥ तिसकारणतैं तेपुरुष सर्वदा पापकूंहींकरेहैं ॥ शंका ॥ हेभगवन् शास्त्रप्रमाणकेविद्यमानहुए तेपुरुष तिसविवेककूं किसवासतै नहींकरतेहैं ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहेहै (माययापहृतज्ञानाःइति)

शरीरइंद्रियादिकसंघातविषेतादात्म्यभ्रांतिरूपकरिकैपरिणामकूंप्राप्तभईजामायाहै ॥ तामायाकरिकै प्रतिबद्धहुआहै ताविवेककरणेकासामर्थ्यरूपज्ञानजिनोंका तिनों कानाम माययाऽपहृतज्ञानाहै ॥ जिसकारणतैं तेपुरुष माययापहृतज्ञानाहैं ॥ तिसकारणतैं तिसकार्यअकार्यकेविवेककूंकरतेनहीं ॥ इसीकारणतैंहीं (दंभोदर्पोऽभिमान श्वक्रोधःपारुष्यमेवच) इत्यादिकवचनोंकरिकै आगेकथनकरणाजोआसुरभावहै॥ तिसहिंसाअनृतादिरूपआसुरस्वभावकूंहीं आश्रयणकऱ्याहै जिनोंनैं॥ इसप्रकार मैंपर मात्मादेवकेसाक्षात्कारकेअयोग्यहुएतेदुष्कृतीपुरुषमैं परमेश्वरकूं भजतेनहीं ॥ यातैं तिनदुष्कृतीपुरुषोंका कोईआश्चर्यरूप दौर्भाग्यहै इति ॥ और किसीटीकाविषेतौं इसश्लोकका यहअर्थ कथनकऱ्याहै॥ जिसकारणतैं तेपुरुष दुष्कृतीहैं तिसकारणतैं चित्तकीशुद्धिकेअभावतैं तेपुरुष मूढहै॥ अर्थात् आत्मअनात्मविवेकतैंरहितहैं इसी कारणतैंहीं तेपुरुष मनुष्योंविषेअधमहैं॥ ऐसेदुष्कृतीनराधमपुरुष मैंपरमेश्वरकूंभजतेनहीं॥ तेपुरुष दुष्कृतीक्युंहैं॥ ऐसीशंकाकेहुए कहेहैं (माययाऽपहृतज्ञानाःइति) जिस कारणतैं अविद्यारूपमायाकरिकै तिनपुरुषोंका अखंडसंविद्ब्रह्मरूपज्ञान आच्छादितहोइगयाहै ॥ तिसकारणतैं तेपुरुष दुष्कृतीहैं ॥ इतनैंकहणेकरिकै मायाकीआवरण शक्ति कथनकरी॥ पुनःकैसेहैंतेपुरुष॥ आसुरभावकूं आश्रयणकऱ्याहैजिनोंनैं॥ अर्थात् यहदेहइंद्रियरूपसंघातहीं आत्माहै यातैं इससंघातकूंहीं सर्वप्रकारतैंतृप्तकरणा इसप्र कारकाजो असुरविरोचनकेचित्तकाअभिप्रायहै ताकानाम आसुरभावहै ॥ ऐसेआसुरभावकूं आश्रयणकऱ्याहैजिनोंनैं ॥ इतनैंकहणेकरिकैतामायाकीविक्षेपशक्ति कथनकरी ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ इसमायानैंस्वरूपानंदकूंआवरणकरिकै उत्पन्नकऱ्याजो देहविषेआत्मत्वबुद्धिरूपभ्रमहै ॥ तादेहात्मअभिमानतैं तिनदेहादि कोंकीपुष्टिकरणेवासतै तेपुरुष अनेकप्रकारकेदुष्कृतोंकूंकरेहैं ॥ तिनपापकर्मोंकरिकै मूढहुए तथासर्वमनुष्योंविषेअधमहुए तेपुरुष मैंपरमेश्वरकूं नहींभजेहैं ॥ यातैं यहअविद्यारूपमायाहीं सर्वअनर्थोंकामूलभूतहै इति ॥ १५ ॥ ❀ ॥ किंवा जेपुरुष तिसआसुरभावतैंरहितहैं ॥ तथा सर्वदा पुण्यकर्मवालेहैं ॥ तथाइष्टअ निष्टवस्तुकेविवेकवालेहैं ॥ तेपुरुष तिसपुण्यकर्मकीन्यूनअधिकताकरिकै च्यारिप्रकारकेहुए मैंपरमेश्वरकूंभजेहैं ॥ तथा यथाक्रमकरिकै कामनातैंरहितहुए तेपुरुष मैंपरमेश्वरकेप्रसादतैं तिसमायाकूं तरेहैं ॥ इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) चतुर्विधाभजंतेमांजनाःसुकृतिनोर्जुन ॥ आर्त्तोजिज्ञासुरर्थार्थीज्ञानीचभरतर्षभ ॥ १६ ॥ चतुर्विधाः । भजंते । मां । जनाः । सुकृतिनः । अर्जुन । आर्त्तः । जिज्ञासुः । अर्थार्थी । ज्ञानी । च । भरतर्षभ ॥ १६ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेभरतवंशविषेश्रेष्ठ अर्जुन आर्त्त जिज्ञासु अर्थार्थी तथा ज्ञानी यहच्यारिप्रकारके सुकृति जन मैंपरमेश्वरकूं भजेहैं ॥ १६ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जेपुरुष सुकृतीहैं अर्थात् जिनपुरुषोंनैं पूर्वअनेकजन्मोंविषे पुण्यकर्मकासंचयकऱ्याहै ॥ तेपुरुषहीं जनहैं ॥ अर्थात् सफलजन्मवालेहैं ॥

तिनोंतैंभिन्नपुरुष निष्फलजन्मवालेहोंहैं ॥ ऐसेसुकृतीजनहीं मैंपरमेश्वरकूं भजेहैं ॥ अर्थात् मैंपरमेश्वरका आराधनकरेंहैं ॥ तेहमारेभजनकरणेहारेजनभी आर्त्त जिज्ञासु अर्थार्थी ज्ञानी इसभेदकरिकैच्यारिप्रकारकेहींहोवैहैं ॥ तिनच्यारोंविषेभी आर्त्त जिज्ञासु अर्थार्थी यहतीनतौं सकामहोवैहैं ॥ और एकज्ञानी निष्काम होवैहै ॥ तहां शत्रुव्याघ्रादिरूपआपदाकानाम आर्त्तिहै ॥ ताआर्त्तिकरिकैजोग्रस्तहोवै ताकानाम आर्त्तहै ॥ ऐसाआर्त्तजन ताआपदारूपआर्त्तिकेनिवृत्तकरणेवासतै मैंपरमेश्वरकाआराधनकरेहै ॥ जैसे यज्ञकेभंगकरिकै क्रोधकूंप्राप्तहुआइंद्र व्रजभूमिविषे महान्वर्षाकरताभया ॥ ताकरिकैदुःखीहुए व्रजवासीजन मैंपरमेश्वरका आराधनकरतेभयेहैं ॥ तथा जैसे जरासंधराजाकेबंधनगृहविषेप्राप्तहुए सर्वराजे आर्त्तहोइकै मैंपरमेश्वरका आराधनकरतेभयेहैं ॥ तथा जैसे दुर्योधनकीसभाविषे वस्त्रोंकेउतारणेकरिकै आर्त्तहुईद्रौपदी मैंपरमेश्वरका आराधनकरतीभईहै ॥ तथा जैसे ग्राहकरिकैग्रस्तहुआ गजेंद्र आर्त्तहोइकै मैंपरमेश्वरका आराधनकरभयाहै ॥ इसतैं आदिलैके दूसरेभीअनेकजन आर्त्तहोइकै मैंपरमेश्वरका आराधनकरतेभयेहैं इति ॥ और जिसपुरुषकूं सर्वदा आत्मज्ञानकेप्राप्तिकीइच्छाहै ताकानाम जिज्ञासुहै ॥ सोजिज्ञासुभी ताआत्मज्ञानकीप्राप्तिवासतै मैंपरमेश्वरका आराधनकरेहैं ॥ जैसे मुचुकुंद तथाजनकराजा तथाउद्धव इत्यादिकजिज्ञासुजन आत्मज्ञानकीप्राप्तिवासतै मैंपरमेश्वरका आराधनकरतेभयेहैं इति ॥ और इसलोकविषेस्थित तथापरलोकविषेस्थित जेधनस्त्रीपुत्रादिक भोगकेसाधनहैं तिनोंकानाम अर्थहै ॥ ताअर्थकीइच्छाकरणेहारेपुरुषकानाम अर्थार्थीहै ॥ ऐसाअर्थार्थीजनभी ताधनादिरूपअर्थकीप्राप्तिवासतै मैंपरमेश्वरका आराधनकरेहै ॥ तहां सुग्रीव बिभीषण उपमन्यु इत्यादिक अर्थार्थीजनतौं इसलोककेभोगसाधनोंकीइच्छाकरतेहुए मैंपरमेश्वरकाआराधकरतेभयेहैं ॥ और ध्रुवादिकअर्थार्थीजनतौं परलोककेभोगसाधनोंकीइच्छाकरतेहुए मैंपरमेश्वरकाआराधनकरतेभयेहैं इति ॥ तहां जैसे तत्त्ववेत्तापुरुष मायाकूंतरेहै ॥ तैसे आर्त्त जिज्ञासु अर्थार्थी यहतीनोंभी भगवत्केभजनकरिकै तामायाकूंतरेहैं ॥ तिनतीनोंविषेभी जिज्ञासुजनतौं आत्मज्ञानकीउत्पत्तिकरिकै साक्षात्हीं तामायाकूंतरेहै ॥ और आर्त्त तथाअर्थार्थी यहदोनोंतौं जिज्ञासुपणेकूंप्राप्तहोइकैहीं तामायाकूंतरेहैं॥इतनीतिनोंविषेविशेषताहै ॥ तहां आर्त्तकूं तथा अर्थार्थीकूं जिज्ञासुपणा संभवहोइसकेहै ॥ और जिज्ञासुकूंभी आर्त्तपणा तथा आत्मज्ञानकेसाधनरूपअर्थोंकाअर्थीपणा संभवहोइसकेहैं ॥ याकारणतैं श्रीभगवान्नैं आर्त्त अर्थार्थी यादोनोंकेमध्यविषे जिज्ञासुका कथनकर्‍याहै ॥ इतनैंकरिकै आर्त्त जिज्ञासु अर्थार्थी यातीनसकामभक्तोंका कथनकर्‍या ॥ अब चतुर्थनिष्कामभक्तका कथनकरेहैं (ज्ञानीचइति) तहां सर्वत्रपरिपूर्ण अद्वितीय परमात्मादेव मैंहूं याप्रकारकाजो भगवत्के वास्तवस्वरूपकासाक्षात्कारहै ताकानाम ज्ञानहै ॥ ताज्ञानकरिकैजोनित्ययुक्तहोवै ताकानाम ज्ञानीहै ॥ जोज्ञानी तिसज्ञानकरिकै मेरीमायाकूंतर्‍याहै ॥ तथा सर्वकामोंतैंरहितहै ॥ ऐसा ज्ञानीभी निरंतर मैंपरमात्मादेवका आराधन करेहै ॥ ईहां (ज्ञानीच) यावचनविषेस्थितजो

चकारहै ॥ सोचकार जिसीकिसीनिष्कामप्रेमभक्तका ताज्ञानीविषे अंतर्भाव बोधनकरणेवास्तैहै ॥ अर्थात् निष्कामप्रेमभक्तोंका ताज्ञानीविषेहीं अंतर्भावहै ॥ यातैं श्रीभगवान्कूं पंचप्रकारकेभक्तहीं कथनकरणेयोग्यथे याप्रकारकीन्यूनताशंका संभवैनहीं इति ॥ और (हेभरतर्षभ) यासंबोधनकरिकै श्रीभगवान्नैं यहअर्थ सूचनकऱ्या ॥ तूंअर्जुनभी जिज्ञासुभक्तहैं अथवा ज्ञानीभक्तहैं ॥ यातैं तिनच्यारोंभक्तोंविषे मैंअर्जुन कौंनभक्तहूं याप्रकारकीशंका तुमनैं करणीनहीं इति ॥ तहां निष्कामज्ञानीभक्ततौं जैसेसनकादिकहैं तथा नारदहै तथा प्रह्लाद है तथापृथुराजाहै तथाशुकदेवहै इत्यादिकसर्व निष्कामज्ञानीभक्त होतेभयेहैं ॥ और निष्काम शुद्धप्रेमभक्ततौं जैसे व्रजवासीगोपिकाहैं तथाअक्रूरयुधिष्ठिरादिकहैं ॥ और कंसशिशुपालादिकतौं यद्यपि भयतैं अथवा द्वेषतैं निरंतर भगवत्‌काचिंतनकरतेभये हैं तथापि तेकंसशिशुपालादिक भक्तकहेजावैनहीं ॥ जिसकारणतैं तिनकंसादिकोंकीपरमेश्वरविषे भगवत्अनुरक्तिरूपभक्ति हैनहीं ॥ तिसकारणतैं द्वेषभयतैं भगवत्‌काचिंतनकरतेहुएभी तेकंसादिक भगवत्‌भक्त कहेजावैनहीं इति ॥ १६ ॥ ❀ ॥ तहां पूर्वश्लोकविषे आर्त्त जिज्ञासु अर्थार्थी ज्ञानी इनच्यारोंविषे भगवाननैं सुकृतीपणा कथनकऱ्या ॥ यातैं श्रीभगवान्कूं तिनच्यारोंकी तुल्यताहीं अभिमतहोवैगी ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए ॥ तिनच्यारोंविषे यद्यपि सुकृतीपणा निश्चितहीं है ॥ तथापि सुकृतकीअधिकताकरिकै प्राप्तहुई निष्कामताकरिकै प्रेमकी अधिकतातैं सोज्ञानीहीं सर्वतैंश्रेष्ठहै याप्रकारकेउत्तरकूं श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) तेषांज्ञानीनित्ययुक्तएकभक्तिर्विशिष्यते ॥ प्रियोहिज्ञानिनोत्यर्थमहंसचममप्रियः ॥ १७ ॥ तेषां । ज्ञानी । नित्ययुक्तः । एकभक्तिः । विशिष्यते । प्रियः । हि । ज्ञानिनः । अत्यर्थम् । अहम् । सः । च । मम । प्रियः ॥ १७ ॥ (इतिपदच्छेदः) हेअर्जुन तिनच्यारोंकेमध्यविषे नित्ययुक्त तथाएकभक्तिवाला ज्ञानी उत्कृष्टहै जिसकारणतैं मैंपरमेश्वर तिसज्ञानीकूं अत्यंत प्रियहूं तथा सोज्ञानी मैंपरमेश्वरकूं अत्यंत प्रियहै ॥ १७ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हे अर्जुन आर्त्त जिज्ञासु अर्थार्थी ज्ञानी इनच्यारिप्रकारकेभक्तोंकेमध्यविषे सर्वत्रपरिपूर्णअद्वितीयब्रह्मरूपमैंहूं याप्रकारकेतत्वज्ञानवालाजोज्ञानीहै ॥ जोज्ञानी सर्वकामनावोंतैंरहितहै ॥ सोज्ञानी सर्वतैंउत्कृष्टहै ॥ अब ताज्ञानीकीउत्कृष्टताविषे ताज्ञानीके हेतुगर्भितदोविशेषणकथनकरेहैं (नित्ययुक्तःएकभक्तिःइति) जिसकारणतैं सोज्ञानी नित्ययुक्तहै ॥ अर्थात् सर्वविक्षेपकेअभावतैं प्रत्यक्‌अभिन्नपरमात्मादेवविषे सर्वदा समाहितहैचित्तजिसका ताकानाम नित्ययुक्तहै ॥ नित्ययुक्तहोणेतैंहीं सोज्ञानी एकभक्तिहै ॥ अर्थात् एकप्रत्यक्‌अभिन्नपरमात्माविषेहींहै अनुरक्तिरूपभक्तिजिसकी अन्यकिसीविषे साभक्ति जिसकीहैनहीं ताका नाम एकभक्तिहै ॥ इसप्रकार नित्ययुक्तहोणेतैंतथाएकभक्तिहोणेतैं सोज्ञानवान् सर्वतैंश्रेष्ठहै ॥ अब ताएकभक्तिपणेविषेहेतुकहेहैं (प्रियोहिइति) जिसकारणतैं

तिसज्ञानवान्पुरुषकूं मैंप्रत्यक्अभिन्नपरमात्मादेव अत्यंतप्रियहूं ॥ अर्थात् निरुपाधिकप्रीतिकाविषयहूं ॥ तिसकारणतैं सोज्ञानवान्पुरुष एकभक्तिहै ॥ इसकारणतैं सोज्ञानवान्पुरुषभी मैंपरमेश्वरकूं अत्यंत प्रियहै ॥ काहेतैं आपणाआत्मा अत्यंत प्रियहोवैहै यहवार्ता श्रुतिविषे तथालोकविषे प्रसिद्धहींहै इति ॥ और किसीटीकाविषेतौं इसश्लोकका यहअर्थ कर्‍याहै ॥ तिनच्यारोंकेमध्यविषे एकज्ञानीहींश्रेष्ठहै ॥ जिसकारणतैं सोज्ञानी नित्ययुक्तहै ॥ अर्थात् सर्वदा हमारेभजनविषेयुक्तहै ॥ और आर्त्तादिकसकामभक्ततौं जबपर्यंत कामनाकीपूर्णतानहींभई तबपर्यंतहीं मेरेभजनविषेयुक्तहोवैहैं ॥ कामनाकीपूर्णतातैंअनंतर मेरेभजनविषेयुक्तहोवैनहीं ॥ यातैं तेआर्त्तादिकभक्त नित्ययुक्त कहेजावैनहीं ॥ तथा सोज्ञानी एकभक्तिहै ॥ अर्थात् मैंपरमेश्वरकाहींएकभावकरिकैभजनकरेहै ॥ अन्यकिसीका भजनकरेनहीं ॥ और आर्त्तादिकतौं एकभावकरिकैभजनकूंकरतेनहीं ॥ तहां रोगग्रस्तआर्त्तपुरुषतौं सूर्यकाभजनकरेहैं ॥ और जिज्ञासुजन सरस्वतीकाभजन करेहैं ॥ और अर्थार्थीपुरुष कुबेरादिकोंकाभजनकरेहैं ॥ इसप्रकार तिनआर्त्तादिकोंविषे तिसतिसकामकीभांतिवासते अनेकोंकीभक्ति देखणेविषेआवैहै ॥ अब तिसज्ञानीपुरुषकेनित्ययुक्तपणेविषे तथाएकभक्तिपणेविषे हेतु कहेहैं (प्रियोहिइति) जिसकारणतैं मैंपरमेश्वर तिसज्ञानवान्पुरुषकूं अत्यंतप्रियहूं ॥ काहेतैं मैंपरमेश्वर तिसज्ञानवान्पुरुषका आत्मारूपहींहूं ॥ और आपणाआत्मा निरुपाधिकप्रीतिकाविषयहोणेतैं सर्वकूं प्रियहींहोवैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ प्रीतिदोप्रकारकीहोवैहै ॥ एकतौं सोपाधिकप्रीतिहोवैहै ॥ और दूसरीनिरुपाधिकप्रीतिहोवैहै तहां जाप्रीति जिसवस्तुविषे अन्यवासतेहोवैहै साप्रीति सोपाधिकप्रीति कहीजावैहै ॥ जैसे आपणे आत्माकेसुखवासतै स्त्रीपुत्रधनादिकोंविषे प्रीतिहै ॥ और जाप्रीति जिसवस्तुविषे किसीअन्यवासतैं नहीं होवैहै ॥ साप्रीति निरुपाधिकप्रीति कहीजावैहै ॥ जैसे आपणेआत्माविषेप्रीति अन्यकिसीवासतैहैनहीं ॥ यातैं सा आत्मविषयकप्रीति निरुपाधिकप्रीतिहै ॥ तहांश्रुति ॥ (तदेतत्प्रेयःपुत्रात्प्रेयोवित्तात्प्रेयोऽन्यस्मात्सर्वस्मादंतरतरंयदयमात्माइति) अर्थयह ॥ बुद्धिआदिकसर्वसंघाततैंअंतर जोयहआत्मादेवहै ॥ सोयहआत्मादेव पुत्रतैंभी अत्यंतप्रियहै ॥ तथा धनतैंभी अत्यंतप्रियहै ॥ तथा अन्यसर्वपदार्थोंतैंभी अत्यंतप्रियहै इति ॥ और ऐसानिष्कामज्ञानीभक्त अत्यंतदुर्लभहै तथामैंपरमेश्वरकाआत्मारूपहै ॥ यातै सोज्ञानीपुरुष मैंपरमेश्वरकूंभी अत्यंतप्रियहै इति ॥ १७ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् (सचममप्रियः) इसआपकेवचनतै यहजान्याजावैहै ॥ जोएकज्ञानीभक्तहीं आपकूं प्रियहै ॥ दूसरे आर्त जिज्ञासु अर्थार्थी यह तीनोंभक्त आपकूं प्रियनहींहैं ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए ॥ तेआर्तादिकभक्तभीहमारेकूं प्रियहींहै ॥ परंतु तेआर्त्तादिकभक्त हमारेकूं अत्यंतप्रियनहींहै ॥ और ज्ञानवान्भक्ततौ हमाराआत्मारूपहोणेतै अत्यंतप्रियहै ॥ याप्रकारकाउत्तर श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) उदाराःसर्वएवैतेज्ञानीत्वात्मैवमेमतम् ॥ आस्थितःसहियुक्तात्मामामेवानुत्तमांगतिम् ॥ १८ ॥ उदाराः । सर्वे । एव ।

एते । ज्ञानी । तु । आत्मा । एव । मे । मतम् । आस्थितः । सः । हि । युक्तात्मा । माम् । एव । अनुत्तमां । गतिम् ॥ १८ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हे अर्जुन यह आर्त्तादिकतीनोंभी उत्कृष्ट हींहै परंतु ब्रह्मज्ञानीतौ हमारा आत्मा हीं है याप्रकारका मैंपरमेश्वरका निश्चयहै जिसकारण तैं सोब्रह्मज्ञानी मैंपरमेश्वरविषे समाहित चित्तवालाहुआ मैंपरमेश्वरकूं हीं सर्वतैंउत्कृष्ट परमफलरूप अंगीकारकरेहै॥ १८ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन आर्त्त जिज्ञासु अर्थार्थी यहतीनों हमारेभक्त यद्यपि सकामहैं ॥ तथापि हमारीभक्तितैरहितप्राणीयोंतैं तेतीनोंभक्त उत्कृष्टहींहैं ॥ काहेतैं पूर्वजन्मोंविषे तिनपुरुषोंनैं अनेकसुकृतकरेहैं ॥ जिसकरिकै इसजन्मविषेतौ तिनोंकूं हमारीभक्तिप्राप्तभईहै ॥ पूर्वसुकृतोंतैंविना साहमारीभक्ति प्राप्तहोवैनहीं ॥ जोकदाचित् तिनोंके पूर्वलेजन्मोंके अनेकसुकृत नहींहोवैं तौतैंपुरुष मैंपरमेश्वरकूं कदाचित्भी भजैनहीं ॥ जिसकारणतैं इसलोकविषे मैंपरमेश्वरतैंबहिर्मुखहुए कितनेकी आर्त्त तथाजिज्ञासुअर्थार्थी अन्यक्षुद्रदेतावोंकाहीं भजनकरतेहुए देखणेविषेआवैहैं ॥ यातैं इसजन्मविषे मैंपरमेश्वरकेभजनतैं तिनपुरुषोंके पूर्वलेजन्मोंकिसुकृत अनुमानकर्‍ये जावैहैं ॥ ऐसे पूर्वजन्मोंकेपुण्यकर्मोंकेप्रभावतैं मैंपरमेश्वरकाभजनकरणेहारे जेआर्त्तजिज्ञासु अर्थार्थीपुरुषहैं ॥ तेतीनोंभी हमारेकूं प्रियहीहैं ॥ कोईभीहमाराभक्तज्ञानवान् अथवाअज्ञानी हमारेकूं अप्रियनहींहै ॥ परंतु जिसपुरुषकी जिसप्रकारकी मैंपरमेश्वरविषे प्रीतिहै ॥ मैंपरमेश्वरकीभी तिसपुरुषविषे तिसीप्रकारकीप्रीति होवैहै ॥ यहवार्त्ता सर्वलोकविषे स्वभावसिद्धहींहै ॥ तहां आर्त्त जिज्ञासु अर्थार्थी यातीनोंसकामभक्तोंकूंतौ केवल मैंपरमेश्वरहीं प्रियहोवैनहीं ॥ किंतु कामना केविषय पदार्थभी प्रियहोवैहै तथामैंपरमेश्वरभी प्रियहोवउहूं ॥ और ज्ञानवान्पुरुषकूंतौ मैंपरमेश्वरतेविना दूसराकोईभीपदार्थ प्रियहोवैनहीं ॥ किंतु तिसज्ञानवान् पुरुषकूं एकमैंपरमेश्वरहीं निरतिशयप्रीतिकाविषयहूं ॥ इसकारणतैं सोनिष्कामज्ञानीभक्तभी मैंपरमेश्वकूं निरतिशयप्रीतिकाविषयहै जोकदाचित् मैंपरमेश्वर तिस ज्ञानवान्भक्तविषे निरतिशयप्रीति नहींकरौंगा ॥ तौं मैंपरमेश्वरविषे कृतज्ञता नहींसिद्धहोवैगी ॥ तथा कृतघ्नता प्राप्तहोवैगी ॥ यातैं आपणेविषे ताकृतज्ञताकी सिद्धिवास्तै तथाकृतघ्नताकीनिवृत्तिकरणेवास्तै मैंपरमेश्वरभी ताज्ञानीभक्तविषे निरतिशय प्रीतिकरूंहूं ॥ इसीकारणतैंहीं पूर्वश्लोकविषे (अत्यर्थं) यहविशेषण कथनकर्‍याहै ॥ जैसे (यदेवविद्ययाकरोतिश्रद्धयोपनिषदातदेववीर्यवत्तरंभवति) इसश्रुतिविषे विद्याश्रद्धादिकोंकरिकैकर्‍येहुएकर्मकूं वीर्यवत्तर कथनकर्‍याहै ॥ ईहां वीर्यवत्तरं यावचनकेअंतविषेस्थितजो तर प्रत्ययहै ॥ ताका अतिशयतारूपअर्थहीं विवक्षितहै ताकरिकैयहअर्थ सिद्धहोवैहै ॥ विद्यादिकोंकरिकैकर्‍याहुआकर्मतैं अतिशयकरिकैवीर्यवालाहोवैहै ॥ और तिनविद्यादिकोंतैंविना कर्‍याहुआकर्मभी वीर्यवालातौंहोवैहींहै ॥ तैसे ज्ञानवान्भक्त मैंपरमेश्वरकूं (अत्यर्थंप्रियः) इसभगवान्केवचनविषेस्थित जो अत्यर्थं यहपदहै ताका अतिशयतारूप

अर्थहीं विवक्षितहै ताकारिकै यहअर्थसिद्धहोवैहै ॥ ज्ञानवान्पुरुषतौंमैंपरमेश्वरकूं अतिशयकारिकैप्रियहै ॥ और ताज्ञानतैंरहित आर्त्तादिकभक्तभी मैंपरमेश्वरकूंप्रियतौंहैंहीं ॥ इसीअभिप्रायकरिकै श्रीभगवान्नैं ताज्ञानवान्विषे अत्यर्थं यहविशेषण कथनकऱ्याहै ॥ तथा इसीअर्थकूं श्रीभगवान् (येयथामांप्रपद्यंतेतांस्तथैवभजाम्यहम्) इसवचनकारिकै आपहीं कथनकरताभयाहै॥ इसकारणतैं मैंपरमेश्वरकूं आपणाआत्मारूपकारिकैजानणेहारा सोज्ञानवान्भक्त मैंपरमेश्वरकाआत्मारूपहींहै मैंपरमेश्वरतैं सोज्ञानवान्भक्त भिन्ननहींहै ॥ तहांश्रुति ॥ (ब्रह्मवेदब्रह्मैवभवति ॥) अर्थयह ॥ मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकार आपणेआत्मातैंअभेदरूपकरिकै ब्रह्मकूंजानणेहारा ब्रह्मवेत्ताज्ञानीपुरुष ब्रह्मरूपहींहोवैहैइति ॥ इसप्रकारका मैंपरमेश्वरका निश्चयहै ॥ ईहां (ज्ञानीतु) यावचनविषेस्थितजो तु यहशब्दहै ॥ सोतुशब्द सकामतथाभेददर्शी आर्त्तादिकतीनभक्तोंकीअपेक्षाकरिकै ताज्ञानवान्भक्तविषे निष्कामतारूप तथाअभेददर्शित्वरूप विशेषताकै बोधनकरणेवासतैंहै ॥ अब ताज्ञानीकै आत्मरूपताविषे श्रीभगवान् हेतुकहैहै (सहियुक्तात्माइति) हेअर्जुन जिसकारणतैं सोज्ञानवान्भक्त युक्तात्माहुआ अर्थात् मैंहींभगवान्वासुदेवहूं याप्रकार अभेदरूपकरिकै मैंपरमेश्वरविषे सर्वदा समाहितचित्तवालाहुआ मैआनंदघनपरमेश्वरकूंहीं सर्वतैंउत्कृष्ट परमफलरूपकरिकै अंगीकारकरताभयाहै ॥ मैंपरमात्मादेवतैंभिन्न दूसरेकिसीफलकूं सोज्ञानवान्पुरुष मानतानहीं ॥ यातैं सोब्रह्मज्ञानीपुरुष मैंपरमेश्वरका आत्मारूपहीं है इति ॥ १८ ॥ ❀ ॥ हेअर्जुन जिसकारणतैं सोज्ञानवान्पुरुष मैंपरमेश्वरकूंहीं परमफलरूपकरिकैमानेहै ॥ तिसकारणतैं सोज्ञानवान् मैंपरमेश्वरकूंहीं अभेदरूपकरिकैप्राप्तहोवैहै ॥ तथा सोज्ञानवान्पुरुषहीं अत्यंतदुर्लभहै ॥ इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरेहैं ॥

(मू० श्लो०) बहूनांजन्मनामंतेज्ञानवान्मांप्रपद्यते ॥ वासुदेवःसर्वमितिसमहात्मासुदुर्लभः॥१९॥ बहूनां । जन्मनाम् । अंते । ज्ञानवान् । मां । प्रपद्यते । वासुदेवः । सर्वम् । इति । सः । महात्मा । सुदुर्लभः ॥ १९ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन सोज्ञानवान्पुरुष बहुत जन्मोंके अंतविषे यहसर्वजगत् वासुदेवरूपहींहै याप्रकारकेज्ञानवालाहुआ मैंपरमेश्वरकूं अभेदरूपकरिकै भजेहै सो महात्मा अत्यंतदुर्लभहै ॥ १९ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन किंचित्किंचित्पुण्यकेसंपादनकाहेतुरूप जेपूर्वव्यतीतहुएबहुतजन्महैं ॥ तिनबहुतजन्मोंकेअंतविषे अर्थात् सर्वसुकृतोंकेफलभूत अंत्यजन्मविषे सोज्ञानवान्पुरुष यहसर्वजगत् वासुदेवरूपहै याप्रकारकेज्ञानवालाहुआ निरुपाधिकप्रीतिकाविषयरूप मैंपरमेश्वरकूंहीं सर्वदा संपूर्णप्रेमकाविषयरूपकरिकै भजेहै काहेतें मैं तथा यहसर्वजगत् परमेश्वरवासुदेवरूपहींहै याप्रकारकीदृष्टिकरिकै तिसज्ञानवान्पुरुषकेसर्वधर्मोंका मैंपरमेश्वरविषेहींपरिअवसानहोवैहै ॥ इसीकारणतैं

सोज्ञानपूर्वकहमारीभक्तिकरणेहारा विद्वान्पुरुष महात्माहै ॥ अर्थात् अत्यंतशुद्धअंतःकरणवालाहोणेतैं सोजविन्मुक्तपुरुष सर्वतैंउत्कृष्टहै ॥ तिसजीवन्मुक्तविद्वा न्केसमान दूसराकोईहैनहीं ॥ जबीताजीवन्मुक्तपुरुषके समानभी कोईनहींभया ॥ तबी ताजीवन्मुक्तपुरुषतैं अधिक कहांतेहोवैंगा ॥ इसीकारणतैं सो जीवन्मुक्तविद्वान्पुरुष सुदुर्लभहै ॥ अर्थात् सोविद्वान्पुरुष अनेकसहस्रमनुष्योंविषे दुःखकरिकैभी प्राप्तहोणेकूंअशक्यहै ॥ ऐसेविद्वान्पुरुषकीदुर्लभता (मनुष्या णांसहस्रेषु) इसवचनविषे श्रीभगवान्नैं स्पष्टकरिकैकथनकरीहै ॥ यातैं सोजीवन्मुक्तपुरुष मैंपरमेश्वरकूं निरतिशयप्रीतिकाविषयहै ॥ यहपूर्वउक्तअर्थ युक्तहींहै इति ॥ १९ ॥ ❀ ॥ तहां (तेषांज्ञानीनित्ययुक्तएकभक्तिर्विशिष्यते) इसवचनकरिकै श्रीभगवान्नैं आर्त्तादिकतीनभक्तोंकी अपेक्षाकरिकैज्ञानवान्भक्तके उत्कृष्टताकी प्रतिज्ञाकरीथी ॥ साप्रतिज्ञा इतनैंपर्यंत सिद्धकरी ॥ और सकामत्व तथाभेददर्शित्वयादोनोंकेसमानहुएभी दूसरेदेवतावोंकेभक्तोंकीअपेक्षाकरिकै मैंपरमेश्वरके आर्त्तादिकतीनोंभक्त उत्कृष्टहैं ॥ याप्रकारकी जाप्रतिज्ञा श्रीभगवान्नैं (उदाराःसर्वएवैते) इसवचनकरिकै पूर्वकथनकरीथी ॥ अब इससप्तमअ ध्यायकीसमाप्तिपर्यंत श्रीभगवान् तिसप्रतिज्ञाकीसिद्धिकरेहै ॥ ईहां परमकृपालु श्रीभगवान्का यहअभिप्रायहै ॥ हमारे आर्त्तादिकतीनभक्तोंविषे तथाअन्य देवतावोंके आर्त्तादिकभक्तोंविषे यद्यपि आयास तथासकामत्व तथाभेददर्शित्वइत्यादिक धर्मसमानहींहैं ॥ तथापि मैंपरमेश्वरकेभक्ततौं भूमिकावोंकेक्रम करिकै सर्वतैंउत्कृष्ट मोक्षरूपफलकूंहीं प्राप्तहोवैहैं ॥ और क्षुद्रदेवतावोंकेभक्ततौं पुनः पुनः जन्ममरणकीप्राप्तिरूप क्षुद्रफलकूंहीं प्राप्तहोवैहैं ॥ यातैंसर्वआर्त्त भक्त तथाजिज्ञासुभक्त तथाअर्थार्थीभक्त मैंपरमेश्वरकेशरणागतकूंप्राप्तहोइकैं विनाहींआयासतैं सर्वतैं उत्कृष्टमोक्षरूपफलकूं प्राप्तहोवैं इति ॥ तहां मोक्षरूपपरम पुरुषार्थरूपफलकीप्राप्तिकरणेहारा जोमैंपरमेश्वरकाभजनहै ॥ तामेरेभजनकीउपेक्षाकरिकै क्षुद्रफलकीप्राप्तिकरणेहारे क्षुद्रदेवतावोंकेभजनविषे जोलोकोंकीप्रवृत्ति होवैहै ॥ ताप्रवृत्तिविषे पूर्वलेसंस्काररूपवासनाविशेषहीं असाधारणकारणहैं ॥ इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

(मू०श्लो०) कामैस्तैस्तैर्हृतज्ञानाःप्रपद्यंतेन्यदेवताः ॥ तंतंनियममास्थायप्रकृत्यानियताःस्वया ॥२०॥ कामैः । तैः । तैः । हृत ज्ञानाः । प्रपद्यंते । अन्यदेवताः । तं । तं । नियमम् । आस्थाय । प्रकृत्या । नियताः । स्वया ॥ २० ॥ (इतिपदच्छेदः) हेअर्जुन तिनं तिनं कामनावोंकरिकै मैंपरमेश्वरतैंविमुखहुआहैअंतःकरणजिनोंका ऐसेपुरुष आपणी पूर्ववासनारूपप्रकृतिनैं वशीकरे हुए तिसं तिसं नियमकूं आश्रयणकरिकै अन्यदेवतावोंकूं भजेहैं ॥ २० ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन मारण मोहन उच्चाटन स्तंभन आकर्षण वशीकरण इत्यादिकोंकूंविषयकरणेहारे जेअभिलाषारूपकामहैं ॥ जिनकामोंके मारणमोहना

दिकविषय भगवत्‌कीसेवाकारिकै प्राप्तहोणेकूं लोकोंनैं अशक्यमानेहैं ॥ ऐसेक्षुद्रअभिलाषारूपजेकामहैं ॥ तिनतिनकामोंकरिकै अपहृतहुआहै क्या भगवान् वासुदेवतैंविमुखकरिकै तिसतिसमारणादिकफलकादातारूपकरिकैमान्येहुएक्षुद्रदेवतावोंकेअभिमुखकऱ्याहुआहै ज्ञान क्या अंतःकरण जिनोंका तिनोंकानाम हृत ज्ञानाहै ॥ ऐसे मैंपरमेश्वरतैंबहिर्मुखपुरुष मैंपरमेश्वरतैंअन्य क्षुद्रदेवतावोंकूं तिसतिसदेवताकेआराधनविषेप्रसिद्धजे जप उपवास प्रदक्षिणा नमस्कार इत्यादि कनियमहैं तिसतिसनियमकूंआश्रयणकरिकै तिसतिस मारणमोहनादिकक्षुद्रफलकेप्राप्तिकी इच्छाकरिकै भजेहैं ॥ तिनक्षुद्रदेवतावोंकेमध्यविषेभी केईकपुरुष पूर्वअभ्यासजन्य आपणीआपणी असाधारण वासनाकेवशहुए किसीदेवताकूंहीं भजेहैं इति ॥ २० ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् जेपुरुष अन्यक्षुद्रदेवतावोंका भजनकरेहैं ॥ तिनपुरुषोंकूंभी तिसतिसदेवताकेप्रसादतैं सर्वकेईश्वररूप भगवान्‌वासुदेवविषे अवश्यकरिकै भक्तिहोवैंगी ॥ ऐसी अर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहेहै ॥

(मू० श्लो०) योयोयांयांतनुंभक्तःश्रद्धयार्चितुमिच्छति ॥ तस्यतस्याचलांश्रद्धांतामेवविदधाम्यहम् ॥ २१ ॥ यः । यः । यां । यां । तनुं । भक्तः । श्रद्धया । अर्चितुम् । इच्छति । तस्य । तस्य । अचलां । श्रद्धां । ताम् । एव । विदधामि । अहम् ॥ २१ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन जो जो सकामपुरुष भक्तियुक्तहुआ जिस जिस देवतामूर्तिकूं श्रद्धाकरिकै अर्चनकरणेकूं प्रवृत्तहोवैहै तिस तिसपुरुषकी तिस देवतामूर्तिप्रति हीं स्थिर भक्तिकूं मैंअंतर्यामी करूंहूं ॥ २१ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन तिनअन्यदेवतावोंकेभजनकरणेहारेपुरुषोंकेमध्यविषे जोजोसकामपुरुष भक्तिकरिकैयुक्तहुआ जिसजिसदेवतामूर्त्तिकूं पूर्वलेजन्मकीवासना वोंकेवलतैं प्रादुर्भूतहुईश्रद्धाकरिकै अर्चनकरणेवासतै प्रवृत्तहोवैहै ॥ तिसतिस सकामपुरुषकी तिसतिसदेवतामूर्त्तिविषेहीं पूर्ववासनावोंकेवशतैंप्राप्तहुई भक्तिरूप श्रद्धाकूं मैंअंतर्यामी स्थिरकरूंहूं ॥ तिसपुरुषकी तिसदेवतातैं श्रद्धाहटाइकै आपणेविषे तिसकीश्रद्धाकूंमैं करावतानहीं इति ॥ ईहां किसीटीकाविषे (तां) इसपदकरिकै श्रद्धाकाहीं ग्रहणकऱ्याहै ॥ परंतु इसव्याख्यानविषे पूर्वकथनकऱ्येहुए (यांयां) इसदेवतावाचक यत्‌शब्दका अन्वयनहींहोवैंगा ॥ अथवा तत् इसशब्दकाअध्याहारकरिकैहीं तायत्‌शब्दकाअन्वयहोवैंगा ॥ काहेतैं यत्‌शब्दकूं तत्‌शब्दकीआकांक्षा अवश्यकरिकैहोवैहै ॥ यातैं ईहां तां इसशब्दकेआगे प्रति इसशब्दकाअध्याहारकरिकै तां इसशब्दकरिकै पूर्व (यांयां) इसयत्‌शब्दउक्तदेवताकाहीं परामर्शकऱ्याहै इति ॥ २१ ॥ ❀ ॥ किंच

(मू० श्लो०) सतयाश्रद्धयायुक्तस्तस्याराधनमीहते ॥ लभतेचततःकामान्मयैवविहितान्हितान् ॥ २२ ॥ सः । तया । श्रद्धया ।

युक्तः । तस्य । आराधनम् । ईहते । लभते । च । ततः । कामान् । मया । एव । विहितान् । हि । तान् ॥ २२॥ (इतिपदच्छेदः)॥ हेअर्जुन सोसकामपुरुष तिसें श्रद्धाकरिकै युक्तहुआ तिसीदेवतामूर्तिकरिकै पूजनकूं करैहै तथा तिसीदेवतामूर्तितें मैंपरमेश्वरनें हीं रच्येहुए पूर्वसंकल्पित कामोंकूं प्रसिद्ध प्राप्तहोवैहै ॥ २२ ॥ (इतिपदार्थः)॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन तिनमारणमोहनादिकअर्थोंकेप्राप्तिकीइच्छाकरताहुआ सोसकामपुरुष मैंपरमेश्वरनैं तिसतिसदेवताविषे स्थिरकरीहुईश्रद्धाकरिकैयुक्तहुआ तिसीदेवतामूर्तिकाहीं पूजनकरैहै ॥ तादेवतामूर्तिकूंछोडिकै मैंपरमेश्वरका पूजनकरैनहीं ॥ तापूजनकरिकै सोसकामपुरुष तिसीदेवताकीमूर्तितेंहीं पूर्वसंकल्पक रचेहुए मारणमोहनादिककाम्यमानपदार्थोंकूं प्राप्तहोवैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् जबी तेअन्यदेवताभी आपणेआपणेभक्तजनोंकेप्रति तिसतिसकर्मकेफलदेणेविषे स्वतंत्रहींहुए ॥ तबी आपपरमेश्वरविषे सर्वकर्मोंकेफलकादातापणा सिद्धनहींहोवैगा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहैहै (मयैवविहितान्इति) हेअर्जुन सर्वजीवोंकेपुण्यपापकर्मोंकूंजानणेहारा तथातिनसर्वकर्मोंकेफलकाप्रदाता तथातिनसर्वदेवतावोंकाअंतर्यामी ऐसाजो मैंपरमेश्वरहूं ॥ तिसमैंपरमेश्वरनैंहीं तिसतिसकर्म केफलविपाकसमयविषे तेमारणमोहनादिकअर्थ उत्पन्नकरेहैं॥मैंपरमेश्वरतैंविना तेदेवता तिसतिस अर्थकेउत्पन्नकरणेविषे समर्थहैंनहीं ॥ ऐसे मैंअंतर्यामीपरमेश्वरनैं उत्पन्नकरेहुए तिनमारणमोहनादिकअर्थोंकूंहीं तेसकामपुरुष तिसतिसदेवतातैं प्राप्तहोवैहैं ॥ यातैं मैंअंतर्यामीपरमेश्वरहीं साक्षात् अथवा किसीअन्यद्वारा सर्वकर्मोंकेफलकाप्रदाताहूं॥इतनैंकहणेकरिकै श्रीभगवान्नैं सर्वदेवतावोंविषे आपणीआज्ञाकेवशवर्तिपणा बोधनकऱ्या इति ॥ अथवा मूल श्लोकविषे (हितान्) यहएकहींपद जानणा ॥ अर्थात् वास्तवतैं अहितरूपहुएभी तेमारणमोहनादिकअर्थ तिनसकामपुरुषोंकूं हितरूपकरिकैप्रतीतहुएहै इति ॥ २२ ॥ ❀ ॥ यद्यपि तेसर्वहींदेवता सर्वात्मारूपमैंपरमेश्वरकीहीं मूर्तिहैं ॥ यातैं तिनदेवतावोंकाआराधनभी वास्तवतैं मैंपरमेश्वरकाहीं आराधनहै ॥ तथासर्वत्र फलप्रदाताभी मैंअंतर्यामीईश्वरहींहूं ॥ तथापि साक्षात् मैंपरमेश्वरके भक्तोंकूं तथाअन्यदेवतावोंकेभक्तोंकूं जोविषमफलकीप्राप्तिहोवैहै ॥ सोवस्तुकेविवेककरिकै ॥ तथावस्तुकेअविवेककरिकैहीं होवैहै ॥ तहां मैंपरमेश्वरकेभक्तोंविषेतौं सोवस्तुकाविवेकरहैहै ॥ और अन्यदेवतावोंकेभक्तोंविषे सोवस्तुकाअविवेकरहैहै ॥ याकारणतैंहीं तिनोंकूं विषमफलकीप्राप्तिहोवैहै ॥ इस अर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरैहै ॥

(मू० श्लो०) अंतवत्तुफलंतेषांतद्भवत्यल्पमेधसाम् ॥ देवान्देवयजोयांतिमद्भक्तायांतिमामपि॥२३॥अंतवत् । तु । फलम् । तेषाम् । तत् । भवति । अल्पमेधसाम् । देवान् । देवयजः । यांति । मद्भक्ताः । यांति । माम् । अपि ॥२३॥ (इतिपदच्छेदः)॥ हेअर्जुन

तिन अल्पबुद्धिवालेपुरुषोंका सो फल नाशवान् हीं होवैहै जिसकारणतैं देवतावोंकेआराधनकरणेहारेपुरुषतिंनदेवतावोंकूंहीं प्राप्तहोवैहैं और मैंपरमेश्वरकेभक्त मैंपरमेश्वरकूं हीं प्राप्तहोवैहै ॥ २३ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन अल्पहैबुद्धिरूपमेधाजिनोंकी अर्थात् मंदताकरिकै यथार्थवस्तुकेविवेककरणेविषेअसमर्थहै बुद्धिरूपमेधाजिनोंकी तिनोंकानाम अल्पमेधस्है ऐसेजे तिसतिसदेवताकेभक्तहैं ॥ तिन अन्यदेवतावोंकेभक्तोंकूं यद्यपि मैंअंतर्यामीपरमेश्वरनैंहीं तिसतिसदेवताकेआराधनजन्य सोसोफल प्राप्तकऱ्याहै॥तथापि सोतिनोंकाफल नाशवान्हींहोवैहै ॥ अर्थात् परमार्थवस्तुकेविवेककरणेहारे मैंपरमेश्वरकेभक्तोंका मोक्षरूपफल जैसे नाशतैंरहितहोवैहै ॥ तैसे तिनअन्यदेवतावोंके भक्तोंका सोमारणमोहनादिरूपफल नाशतैंरहितहोवैनहीं ॥ किंतु सोफल नाशवान्हींहोवैहै ॥ परमार्थवस्तुकेविवेकतैंरहितपुरुषोंकूं कर्मोतैं नाशवान्फलकीहींप्राप्तिहोवैहै ॥ यहवार्त्ता श्रुतिविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ (योवाएतदक्षरंगार्ग्यविदित्वास्मिँल्लोकेजुहोतियजतेतपस्तप्यतेबहूनिवर्षसहस्राण्यंतवदेवास्यतद्भवति) ॥ अर्थयह ॥ हेगार्गी जोपुरुष इसअक्षरपरमात्मादेवकूं नजानिकरिकै इसलोकविषे होमकरेहै तथायज्ञकरेहै तथा अनेकसहस्रवर्षपर्यंत तपकरेहै ॥ तेसर्वकर्म इस पुरुषकूं नाशवान्फलकीहीं प्राप्तिकरेहै इति ॥ शंका ॥ हेभगवन् अन्यदेवतावोंकेभक्तोंकूंतौं नाशवान्फलकीप्राप्तिहोवैहै॥और तुमारेभक्तोंकूंतौं अविनाशीफलकी प्राप्तिहोवैहै ॥ याके विषेकौनकारणहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् ताकेविषेकारणकूंकहैहै ॥ (देवान्देवयजःइति) हेअर्जुनमैंपरमेश्वरतैंअन्य इंद्रादिकदेवतावोंका आराधनकरणेहारे तेसकामपुरुष तिन नाशवान्इंद्रादिकदेवतावोंकूंहीं प्राप्तहोवैहैं ॥ मैंपरमेश्वरकूं तेपुरुष प्राप्तहोवैंनहीं ॥ इसप्रकार यक्षराक्षसोंके भक्त तिनयक्षराक्षसोंकूंही प्राप्तहोवैहैं ॥ तथा भूतप्रेतोंके भक्त तिन भूतप्रेतोंकूंहीं प्राप्तहोवैहैं ॥ तहां इंद्रादिकदेवता तथातिनोंकेभक्त यहदोनों सात्विकहैं और यक्षराक्षस तथातिनोंकेभक्त यहदोनों राजसहै ॥ और भूतप्रेत तथातिनोंकेभक्त यहदोनों तामसहैं ॥ जोजोपुरुष जिसजिसका आराधनकरेहै ॥ सोसोपुरुष तिस तिसकूंहींप्राप्तहोवैहै ॥ यहवार्त्ता श्रुतिविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ (कर्मणापितृलोकोविद्ययादेवलोकः ॥ देवोभूत्वादेवानप्येति) ॥ अर्थयह ॥ पितृसंबंधीकर्मकरिकै इसपुरुषकूं पितृलोक प्राप्तहोवैहै ॥ और देवतावोंकीउपासनाकरिकै इसपुरुषकूं देवलोक प्राप्तहोवैहै इति ॥ और तिसतिसदेवताकाआराधनकरणेहारापुरुष तिसतिसदेवताभावकूंप्राप्तहोइकै तिसतिसदेवताकेलोककूंप्राप्तहोवैहै इति ॥ इत्यादिकश्रुतिवचन तिसतिसदेवताकेआराधनकरणेहारेपुरुषकूं तिसतिसदेवताकीप्राप्ति कथनकरेहैं॥ और जेआर्त्तादिकतीनभक्त साक्षात् मैंपरमेश्वरकाहीं आराधनकरेहैं तेतीनोंभक्ततौं मैंपरमेश्वरकूंहीं प्राप्तहोवैहैं॥ईहां (मामपि) यावचन विषेस्थितजो अपि यहशब्दहै ॥ ताअपिशब्दकरिकै श्रीभगवाननैं यहअर्थ सूचनकऱ्या ॥ तेहमारे आर्त्तादिकतीनसकामभक्त प्रथमतौं मैंपरमेश्वरकेप्रसाद

तैं तिसतिस मनवांछितपदार्थोंकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ तिसतैंअनंतर मैंपरमेश्वरकी उपासनाकेपरिपाकतैं मैंअनंतआनंदघनपरमेश्वरकूंभी प्राप्तहोवैहैं इति ॥ यातैं यह अर्थसिद्धभया ॥ मैंपरमेश्वरके आर्तादिकतीनभक्तोंविषे तथाअन्यदेवतावोंके आर्त्तादिकभक्तोंविषे सकामताकेसमानहुएभी नित्यफलकीप्राप्तिकरिकै तथाअनित्यफलकीप्राप्तिकरिकै तिनदोनोंका महान्भेदहै ॥ यातैं (उदाराः सर्वएवैते) यहपूर्वउक्त भगवान्कावचनयुक्तहै इति ॥ यद्यपि परमेश्वरकेआर्त्तादिकतीनसकामभक्तोंकूं आपणीआपणीकामनाकेअनुसार जोदुःखकीनिवृत्तितथावांछितअर्थोंकीप्राप्ति इत्यादिक सांसारिकफल प्राप्तहोवैहै ॥ सोसांसारिकफल अनित्यहीहै ॥ तथापि तापरमेश्वरकेआराधनका परमफलजोमोक्षहै सोनित्यहै ॥ तामोक्षरूपफलकेअभिप्रायकरिकैहीं तिनपरमेश्वरकेभक्तोंकूं नित्यफलकीप्राप्ति कथनकरीहै इति ईहां किसीटीकाविषे (अल्पमेधसां) यावचनकायहअर्थ कथनकऱ्याहै ॥ अल्पमेधायेषां ॥ अर्थयह ॥ श्रुतिनैं अल्पशब्दकरिकथनकऱ्याजोयहद्वैतप्रपंचहै ता अल्पद्वैतविषेहैबुद्धिरूपमेधाजिनोंकीतिनोंकानाम अल्पमेधस्है ॥ अर्थात् बाह्यअर्थोंकीअभिलाषाकरणेहारेपुरुषोंकानाम अल्पमेधस्है ॥ तहांश्रुति ॥ (अथयत्रान्यत्पश्यत्यन्यच्छृणोतिअन्यन्मनुतेऽन्यद्विजानातितदल्पम् ॥) अर्थयह ॥ जिसद्वैतभावविषे यहपुरुष अन्यवस्तुकूंदेखेहै तथाअन्यवस्तुकूंश्रवणकरेहै तथाअन्यवस्तुकूं मननकरेहैं तथा अन्यवस्तुकूंजानेहै सोसर्वद्वैतप्रपंच अल्पहै इति ॥ २३ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् सोसाक्षात्भगवत्काभजन जोकदाचित् नाशतैंरहित उत्तमफलकीप्राप्ति करताहोवै ॥ तौं इसलोकविषे विशेषकरिकै यहमनुष्य तिसभगवततैंविमुख किसकारणतैंहोवैहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए ॥ श्रीभगवान् तिनबहुतमनुष्योंकीभगवत्विमुखताविषे कारणकूंकथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) अव्यक्तंव्यक्तिमापन्नंमन्यंतेमामबुद्धयः ॥ परंभावमजानंतोममाव्ययमनुत्तमम् ॥ २४ ॥ अव्यक्तम् । व्यक्तिम् । आपन्नम् । मन्यंते । माम् । अबुद्धयः । परम् । भावम् । अजानंतः । मम । अव्ययम् । अनुत्तमम् ॥ २४ ॥ (इतिपदच्छेदः) हेअर्जुन विवेकतैंशून्यपुरुष मैंपरमेश्वरके सर्वकाकारणरूप तथानित्य सोपाधिकस्वरूपकूं तथासर्वतैंउत्कृष्ट निरुपाधिकस्वरूपकूंनहीं जानतेहुए अव्यक्तरूप मैंपरमेश्वरकूं व्यक्तिकूं प्राप्तहुआ मानेहैं याकारणतैंहीं तेअविवेकीपुरुष मैंपरमेश्वरतैं विमुखरहेहैं ॥ ॥ २४ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन विवेकतैंरहितपुरुष अव्यक्तरूपमैंपरमेश्वरकूं व्यक्तिभावकूं प्राप्तहुआमानेहैं ॥ अर्थात् इसदेहग्रहणतैंपूर्व कार्यकरणेकीअसामर्थ्यतारूपकरिकै स्थितहुए मैंपरमेश्वरकूं अबीइसकालविषे वसुदेवकेगृहविषे भौतिकशरीरकरिकै कार्यकरणेकीसामर्थ्यताकूंप्राप्तहुआ कोईकजीवविशेषहीं मानेहैं ॥ अथवा अव्यक्तं

कहीये सर्वकाकारणरूपभीमैंपरमेश्वरकूं व्यक्तिमापन्नं कहीये मत्स्यकूर्मादिकअवताररूपकरिकै कार्यभावकूंप्राप्तहुआ मानेहैं ॥ शंका ॥ हेभगवन् तेमनुष्य तुमा रेस्वरूपकाविवेक किसकारणतैंनहींकरेहैं ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् ताकेविषेकारणकूंकहेहै (अबुद्धयःइति) हेअर्जुन जिसकारणतैं तेपुरुष मेरेस्व रूपकेविवेककरणेहारीबुद्धितैंरहितहैं ॥ तिसकारणतैं तेपुरुष अव्यक्तरूपमैंपरमेश्वरकूं व्यक्तिभावकूंप्राप्तहुआ मानेहैं ॥ तहां अव्यक्तरूपपरमेश्वरकूं व्यक्तिभावकी प्राप्तिमानणेविषे कथनकऱ्याजो (अबुद्धयः) यहहेतुहै ॥ ताहेतुकूं अब स्पष्टकरिकै निरूपणकरेहैं ॥ (परंभावमजानंतइति) हेअर्जुन मैंपरमेश्वरकाजो परअव्य यभावहै ॥ अर्थात् मैंपरमेश्वरकाजो सर्वजगत्काकारणरूप तथानित्यसोपाधिकस्वरूपहै ॥ तिसहमारेसोपाधिकस्वरूपकूंभी तेपुरुष जानतेनहीं ॥ तथा मैंपरमे श्वरकाजो अनुत्तमभावहै ॥ अर्थात् (पुरुषान्नपरंकिंचित्साकाष्ठासापरागतिः) इत्यादिकश्रुतियोंनैं कथनकऱ्याजो सर्वतैंउत्कृष्ट तथाअतिशयतातैंरहित तथाअ द्वितीयपरमानंदघन तथादेशकालवस्तुपरिच्छेदतैंरहित मैंपरमेश्वरका निरुपाधिकस्वरूपहै ॥ तिसमेरेनिरुपाधिकस्वरूपकूंभी तेपुरुष जानतेनहीं ॥ इसीकारणतैं तेविवेकहीनपुरुष अन्यजीवोंकीन्यांई हमारेलीलामात्रकार्यकूंदेखिकै मेरेकूंभी कोईजीवविशेषहीं मानतेहैं ॥ ईश्वररूप हमारेकूं मानतेनहीं इसकारणतैं तेअविवे कीपुरुषमैंपरमेश्वरकूंपरित्यागकरिकै प्रसिद्धइंद्रादिकदेवतावोंकाहीं आराधनकरेहैं ॥ तिनअन्यदेवतावोंकेआराधनतैं तेपुरुष नाशवान्फलकूंहीं प्राप्तहोवैहैं ॥ इसी वार्त्ताकूं श्रीभगवान् (अवजानंतिमांमूढामानुषींतनुमाश्रितम्) इसीवचनकरिकै आगेभीकथनकरैंगा इति ॥ २४ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् आप कैसेहो ॥ आपणेजन्मकालविषेभी सर्वयोगीपुरुषोंकरिकेध्यानकरणेयोग्य तथाश्रीवैकुंठविषेस्थित ऐसेदिव्य ईश्वरसंबंधीस्वरूपकूं आविर्भावकरतेभयेहो ॥ और अवी वर्त्तमानकालविषेभी श्रीवत्स कौस्तुभमणि वनमाला मुकुट कुंडल इत्यादिकदिव्यअलंकारोंकरिकै आप युक्तहो ॥ तथा शंख चक्र गदा पद्म याच्यारोंकूंधारणकरणेहारी च्यारिभुजावोंकरिकैयुक्तहो ॥ तथा श्रीगरुड आपका वाहनहै ॥ तथा सर्वसुरलोकोंकरिकैसंपादित राजराजेश्वरअभिषेकआ दिकमहावैभवकरिकैयुक्तहो ॥ तथा सर्वसुरअसुरौंकूं जयकरणेहारेहो ॥ तथा नानाप्रकारकेदिव्यलीलाविलासोंकूं करणेहारेहो ॥ तथा रामादिकसर्वअवतारों विषे शिरोमणीहो ॥ तथा साक्षात् वैकुंठलोककेअधिपतिहो ॥ तथा सर्वलोकोंकेउद्धारकरणेवासतै इसभूमिलोकविषे अवतारकूंधारणकरणेहारेहो ॥ तथा ब्रह्माकीसृष्टिविषे नहींउत्पन्नकरणेहारी निरतिशयसौंदर्यताकूं धारणकरणेहारेहो ॥ तथा आपणीबाललीलाकरिकै साक्षात्ब्रह्माकूंभी मोहकीप्राप्तिकरणेहारेहो ॥ तथा सूर्यकीकिरणावोंकेसमानउज्ज्वल दिव्यपीतांबरकूंधारणकरणेहारेहो ॥ तथा उपमातैंरहित श्यामसुंदरस्वरूपकूं धारणकरणेहारेहो ॥ तथा पारिजातकेवासतै साक्षातइंद्रकूंभी पराजयकरतेभयेहो ॥ तथा बाणयुद्धविषे साक्षात्महादेवकूंभी पराजयकरतेभयेहो ॥ तथा संपूर्णसुरअसुरोंकूंजयकरणेहारेदैत्योंके प्राणपर्यंत सर्व

पदार्थोंकूं हरणकरणेहारेहो ॥ तथा श्रीदामादिकपरमरंकोंकेप्रति महान्‌वैभवकीप्राप्ति करणेहारेहो तथा एकहींकालविषे षोडशसहस्र दिव्यरूपोंकूंधारणकरणे हारेहो ॥ तथा अपरिमितगुणोंकरिकैयुक्तहो ॥ तथा महान्‌महिमावालेहो ॥ तथा नारदमार्कंडेय इत्यादिकमहान्‌मुनियोंकेसमुदायकरिकै स्तुतिकरणेयोग्यहो ॥ इसतैंआदिलेके अनेकप्रकारकेदिव्यगुण आपकेविषेहैं ॥ जेदिव्यगुण किसीभीजीवविषेसंभवतेनहीं ॥ किंतु ईश्वरविषेहीं तेगुण संभवैहैं ॥ ऐसे आपपरमेश्वरविषे अविवेकीपुरुषोंकीभी सामनुष्यत्वबुद्धि तथा जीवत्वबुद्धि कैसेहोवैहैं ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकूं निवृत्तकरताहुआ श्रीभगवान् कहेहै ॥

(मू०श्लोक०) नाहंप्रकाशःसर्वस्ययोगमायासमावृतः ॥ मूढोयंनाभिजानातिलोकोमामजमव्ययम् ॥ २५ ॥ न । अहं । प्रकाशः । सर्वस्य । योगमायासमावृतः । मूढः । अयं । न । अभिजानाति । लोकः । माम् । अजम् । अव्ययम् ॥ २५ ॥ (इतिपदच्छेदः) हे अर्जुन मैंपरमेश्वर सर्वलोकोंकूं प्रगट नहींहोवूंहूं जिसकारणतैं मैंपरमेश्वर योगमायाकरिकैआवृतहूं तिसकारणतैं मूढहुआ यह लोक जन्मतैं रहित तथामरणतैंरहित मैंपरमेश्वरकूं नहीं जानेहै ॥ २५ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हे अर्जुन मैंपरमेश्वर सर्वलोकोंकूं आपणेस्वरूपकरिकै प्रगटनहींहोवूंहूं ॥ किंतु मैंपरमेश्वरकेजेकोईभक्तहैं तिनभक्तोंकूंहीं मैंपरमेश्वर आपणेस्वरूपकरिकै प्रगटहोवूंहूं ॥ शंका ॥ हेभगवन् तिनसर्वलोकोंकूं आप क्युंनहींप्रगटहोतेहो ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए ॥ श्रीभगवान् तानहींप्रगटहोणेविषे हेतुकूंकहेहै (योग मायासमावृतःइति) ईहां मैंपरमेश्वरकीभक्तितैंरहितप्राणी मैंपरमेश्वरकूं वास्तवस्वरूपकरिकैनहींजानैं याप्रकारकाजो मैंपरमेश्वरका संकल्पहै ताकानाम योगहै ॥ तायोगकेवशवर्ती जाअनादिअनिर्वचनीयअविद्यारूपमायाहै ताकानाम योगमायाहै ॥ अर्थात् मैंपरमेश्वरकेसंकल्पकेअनुसारवर्त्तणेहारीमायाकानाम योगमायाहै ॥ तायोगमायाकरिकै मैंपरमेश्वर सम्यक्‌आवृतहुआहूं ॥ अर्थात् हमारेस्वरूपविषयकज्ञानके कारणकेविद्यमानहुएभी तायोगमायानैं तिसज्ञानकीविषयताकेअयोग्य कऱ्याहूं ॥ इसीकारणतैं तिनसर्वलोकोंकूं मैंपरमेश्वर आपणेवास्तवस्वरूपकरिकैप्रगटहोतानहीं ॥ यातैं (परंभावमजानंतोममाव्ययमनुत्तमम्) इसवचनकरिकै जोपूर्व आपणे सोपाधिकस्वरूपका तथानिरुपाधिकस्वरूपका अज्ञान लोकोंकूं कह्याथा ॥ तास्वरूपकेअज्ञानविषे मैंपरमेश्वरका सोमायाकाप्रेरकसंकल्पहीं कारण है इति ॥ इसीकारणतैं तिसहभारीयोगमायाकरिकैमूढहुए अर्थात् आवृतज्ञानशक्तिवालेहुए यह पूर्वउक्तआर्त्तादिकच्यारिप्रकारकेभक्तजनोंतैंविलक्षणलोक मैंपरमेश्व रविषयकज्ञानकेकारणकेविद्यमानहुएभी उत्पत्तिनाशतैंरहितमैंपरमेश्वरकूं जानिसकतेनहीं ॥ किंतु तेमूढलोक विपरीतदृष्टिकरिकै मैंपरमेश्वरकूं कोईमनुष्यविशेषहीं मानतेहैं ॥ याकारणतैंहीं तेविपरीतदृष्टिवाले मूढलोक मैंपरमेश्वरकापरित्यागकरिकै अन्यइंद्रादिकदेवतावोंकूंहीं भजेहैं ॥ तहां वस्तुकेविद्यमानयथार्थस्वरूपकूं

आवरणकरिकै तावस्तुके अविद्यमानअयथार्थस्वरूपकूंदिखावणा यहमायाकास्वभाव लौकिकऐंद्रजालिकमायाविषेभी प्रसिद्धहींहै इति ॥ इहां किसीटी काविषेतौं (योगमाया) यावचनका यहअर्थकऱ्याहै ॥ आपणीआवरणशक्तिकरिकै इसपुरुषकूं जन्ममरणरूपदुःखकेप्रवाहसाथि जा जोडदेवै ताकानाम योगाहै ॥ ऐसीयोगाजामायाहै ताकानाम योगमायाहै इति ॥ और भगवान्‌भाष्यकारोंनैंतौं (योगमाया) इसवचनका यहअर्थ कथन कऱ्याहै ॥ सत्वादिकतीनगुणोंकाजोसंबंधहै ताकानाम योगहै तायोगवालीजामायाहै ताकानाम योगमायाहै इति ॥ और किसीटीकाविषेतौं (योगमायासमावृतः) इस वचनविषे योग मायासमावृतः यहदोपद निकासेहैं ॥ तहां चित्तकानिरोधरूपयोगहैविद्यमानजिसविषे ताकानाम योगहै ॥ याप्रकारका तायोगशब्द काअर्थकरिकै योगिन्‌इसशब्दकीन्यांई सोयोगशब्द अर्जुनकासंबोधन अंगीकारकऱ्याहै ॥ अर्थात् हेयोगिन् मायाकरिकै आवृत्तहुआ मैंपरमेश्वर तिनसर्व लोकोंकूं प्रगटहोतानहीं इति ॥ २५ ॥ ❀ ॥ हेअर्जुन इसप्रकार मैंपरमेश्वरकेआधीनजामाया है ॥ तास्वाधीनमायाकरिकै मैंपरमेश्वर सर्वभूतोंकूं मोहकी प्राप्तिकरूंहूं ॥ तथा आपमैंपरमेश्वर प्रतिबंधतैंरहितज्ञानशक्तिवालाहूं यातैं मैंपरमेश्वरतौं तिनसर्वभूतोंकूंजानताहूं ॥ और मैंपरमेश्वरकूं मेरीभक्तितैंरहित कोई भीप्राणिजानतानहीं ॥ इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) वेदाहंसमतीतानिवर्तमानानिचार्जुन ॥ भविष्याणिचभूतानिमांतुवेदनकश्चन ॥ २६ ॥ वेद॑ । अहं । समतीतानि । वर्त्तमानानि । च । अर्जुन । भविष्याणि । च । भूतानि । मां । तु । वेद । न । कश्चन ॥२६॥(इतिपदच्छेदः)॥ हेअर्जुन मैंपरमे श्वर पूर्वविंतीतहुए तथा अबीवर्त्तमान तथा आगेहोणेहारे सर्वभूतोंकूं जानताहुं और मैंपरमेश्वरकूं तौं कोईभीअभक्त नहीं जानेहै ॥ २६ ॥ (इतिपदार्थः)॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन प्रतिबंधतैंरहित सर्वविषयकज्ञानवाला मैंपरमेश्वर आपणीमायाकरिकै तिनसर्वलोकोंकूंमोहकीप्राप्तिकरताहुआभी चिरकालकेनष्टहुए तथाअबी वर्तमान तथाआगेहोणेहारे जितनेंकी तीनकालवर्ति स्थावरजंगमरूपभूतहैं तिनसर्वोंकूं अपरोक्षहींजानताहूं॥इसीकारणतैंहीं मैंसर्वज्ञपरमेश्वरहूं ॥ इसअर्थविषे तुमनै किंचितमात्रभी संशयकरणानहीं ॥ ऐसेसर्वदर्शीभीमैंपरमेश्वरकूं मेरीमायाकरिकैमोहितहुआ कोईभीप्राणी जानतानहीं ॥ अर्थात् जैसे लोकप्रसिद्ध ऐंद्रजालिकमा यावीपुरुषकी मायाकरिकैमोहितहुएलोक तामायावीपुरुषकूं जानिसकतेनहीं॥ किंतुतामायावीपुरुषके अनुग्रहकापात्रभूतजे तिसमायावीपुरुषकेपुत्रादिकहैं तेपुत्रादिकहीं तिसमायावीपुरुषकूं जानेहैं॥ तैसे मैंपरमेश्वकेअनुग्रहकेपात्रभूत जेहमारेभक्तजनहैं तिनौंतैंभिन्न दूसरेसर्वप्राणी हमारीयोगमायाकरिकैमोहितहोणेतैं मैंपरमेश्वकूंजानिसक

तेनहीं ॥ किंतु तेभक्तजनहीं हमारीमायाकरिकैनहींमोहितहोणेतैं मैंपरमेश्वरकूंवास्तवरूपकरिकैजानेहैं ॥ इसीकारणतैंहीं मैंपरमेश्वरकेवास्तवस्वरूपकेअज्ञानतैं बहुत मनुष्य मैंपरमेश्वरकूंभी कोईजीवविशेषमानतेहुए मैंपरमेश्वका आराधनकरतेनहीं ॥ किंतु इंद्रादिकदेवतावोंकाहीं आराधनकरेहै ॥ ईहां (मांतु) यावचन विषेस्थितजो तु यहशब्दहै ॥ ता तुशब्दकरिकै श्रीभगवान्नैं तिनअभक्तप्राणीयोंविषे परमेश्वरविषयकज्ञानका प्रतिबंध सूचनकऱ्याहै ॥ अर्थात् किसीप्रतिबंधकेवशतैं तेअभक्तलोक मैंपरमेश्वरकूं वास्तवरूपतैं जानिसकतेनहीं इति ॥ २६ ॥ ❀ ॥ तहां परमेश्वरकेवास्तवस्वरूपके ज्ञानकाजोप्रतिबंधहै ॥ ताप्रतिबंधविषे पूर्व योगमायाकूं हेतुरूपता कथनकरी ॥ अब ताप्रतिबंधविषे देहइंद्रियरूपसंघातकेअभिमानकी अतिशयतापूर्वक भोगोंविषे अभिनिवेशरूप दूसरेहेतुकूं श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) इच्छाद्वेषसमुत्थेनद्वंद्वमोहेनभारत ॥ सर्वभूतानिसंमोहंसर्गेयांतिपरंतप ॥ २७ ॥ इच्छाद्वेषसमुत्थेन । द्वंद्वमोहेन । भारत । सर्वभूतानि । संमोहं । सर्गे । यांति । परंतप ॥ २७ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेभारत हेपरंतप यहसर्वभूतप्राणी स्थूलशरीर कीउत्पत्तितैंअनंतर इच्छाद्वेषदोनोंतैंउत्पन्नहुए शीतउष्णादिकद्वंद्वनिमित्तकमोहकरिकै संमोहकूं प्राप्तहोवैहैं॥२७॥(इतिपदार्थः)॥

॥ टीका ॥ हेभरतवंशविषेउत्पन्नहुआ तथाशत्रुवोंकूंनाशकरणेहारा ॥ अर्जुन अनुकूलवस्तुकूंविषयकरणेहाराजा यहवस्तु हमारेकूंप्राप्तहोवै याप्रकारकीइच्छाहै ॥ तथा प्रतिकूलवस्तुकूंविषयकरणेहाराजो यहवस्तु हमारेकूंमतप्राप्तहोवैयाप्रकारकाद्वेषहै ॥ ताइच्छाद्वेषदोनोंकरिकैउत्पन्नहुआ तथा शीतउष्ण सुखदुःख क्षुधापिपासा इत्यादिकद्वंद्वधर्महैंनिमित्तजिसविषे ऐसाजो अहंसुखी अहंदुःखी इत्यादिक विपर्ययरूपमोहहै ॥ तामोहकरिकै यहसर्वभूतप्राणी स्थूलशरीरकीउत्पत्तितैंअनंतर नित्यअनित्यवस्तुकेविवेककीअयोग्यतारूप संमोहकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ ईहां (हेभारत) यासंबोधनकरिकै श्रीभगवान्नैं अर्जुनविषे कुलकीमहिमा कथनकरी ॥ और (हेपरंतप) यासंबोधनकरिकै ताअर्जुनविषे स्वरूपतैंशक्ति कथनकरी ॥ ताकहणेकरिकै श्रीभगवान्नैं अर्जुनकेप्रति यहअर्थ सूचनकऱ्या ॥ ऐसेकुलमहिमा करिकै तथास्वरूपशक्तिकरिकै युक्त तैंअर्जुनकूं सोद्वंद्वमोहरूपशत्रु पराजयकरणेविषेसमर्थनहींहै ॥ किंतु तूं अर्जुनहीं तिसद्वंद्वमोहकूं पराजयकरणेविषेसमर्थहैं इति ॥ इहां श्रीभगवान्का यहतात्पर्यहै ॥ ताइच्छाद्वेषतैंरहित कोईभीभूतप्राणीहैनहीं ॥ किंतु सर्वभूतप्राणी ताइच्छाद्वेषकरिकैविशिष्टहैं ॥ और ताइच्छाद्वेषकरिकैआविष्टपुरुषकूं बाह्यवस्तुविषयकज्ञानभी संभवतानहीं ॥ तौं तिसपुरुषकूं अंतरआत्मविषयकज्ञान कैसेहोवेंगा किंतु नहींहोवेंगा ॥ यातें रागद्वेषकरिकैव्याकुलहुए अंतःकरणवालेहोणेतैं तेसर्वभूतप्राणी मैंपरमेश्वरकूं आपणाआत्मारूपकरिकैजानतेनहीं ॥ इसीकारणतैं भजनकरणेयोग्यभी मैंपरमेश्वरकूं भजतेनहीं इति ॥ २७ ॥

॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् (सर्वभूतानिसंमोहंयांति) इसवचनकरिकै पूर्व आपने सर्वभूतप्राणीयोंकूं संमोहकीप्राप्ति कथनकरी ॥ और इसवचनतैंभीपूर्व (चतु र्विधाभजंतेमाम्) इसवचनकरिकै आर्त जिज्ञासु अर्थार्थी ज्ञानी याच्यारिप्रकारकेभक्तजनोंकूं परमेश्वरकेभजनकीहींप्राप्ति कथनकरीथी ॥ तेदोनोंवचन परस्पर विरुद्धअर्थकूंहीं कथनकरेहैं ॥ यातैं (चतुर्विधाभजंतेमाम्) इसवचनकूं जोआप प्रमाणभूतमानौंगे ॥ तौं (सर्वभूतानिसंमोहंयांति) यहआपकावचन असंगत होवैगा ॥ और (सर्वभूतानिसंमोहंयांति) इसवचनकूं जोआप प्रमाणभूतमानौंगे ॥ तौं (चतुर्विधाभजंतेमां) यहआपकावचन असंगतहोवैगा ॥ ऐसीअर्जुनकी शंकाकेहुए ॥ पुण्यकर्मोंकीअतिशयताकरिकै जिनपुरुषोंके सर्वपापकर्म नाशहोइगयेहैं ॥ तेभक्तजनहीं मैंपरमेश्वरकाआराधनकरेहैं ॥ ऐसेभक्तजनहीं (चतुर्विधा भजंतेमाम्) इसवचनकरिकै पूर्व कथनकरेहैं ॥ और (सर्वभूतानिसंमोहंयांति) इसवचनकरिकेतौं तिनपुण्यवान्‌भक्तजनोंतैं भिन्नहींप्राणीयोंका कथनकऱ्याहै ॥ यातैं तिनदोनोंवचनोंका परस्परविरोध होवैनहीं ॥ याप्रकारकेउत्तरकूं श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

(मू॰श्लो॰) येषांत्वंतगतंपापंजनानांपुण्यकर्मणाम् ॥ तेद्वंद्वमोहनिर्मुक्ताभजंतेमांदृढव्रताः॥२८॥येषां । तु । अंतगतं । पापं । जनानां । पुण्यकर्मणां । ते । द्वंद्वमोहनिर्मुक्ताः । भजंते । मां । दृढव्रताः ॥ २८ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन पुनः जिनै पुण्यकर्मवाले जनोंका पाप नाशकूंप्राप्तहुआहै तेपुरुष ताद्वंद्वमोहतैं रहितहुए दृढसंकल्पवालेहुए मैंपरमेश्वरकूं भजेहैं ॥ २८ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन पूर्वअनेकजन्मोंविषे पुण्यकर्मोंकासंचयकऱ्याहैजिनोंनैं याकारणतैंहीं सफलहैजन्मजिनोंका याकारणतैंहीं इतरसर्वलोकोंतैंविलक्षण ऐसेजिन अधिकारीपुरुषोंका तिसतिसपुण्यकर्मोंकरिकै ज्ञानकाप्रतिबंधकपाप नाशकूंप्राप्तहुआहै ॥ तेपुरुष ताप्रतिबंधरूपपापकेअभावहुए द्वंद्वमोहनिर्मुक्तहुए ॥ अर्थात् सोपापहैनिमित्तकारणजिसकाऐसाजो रागद्वेषादिकजन्य अहंसुखी अहंदुःखी इत्यादिकविपर्ययरूपमोहहै तिसद्वंद्वमोहनैं तेपुरुष पुनरावृत्तिकेअयोग्यदेखिकै त्यागकी येहैं ॥ ऐसे द्वंद्वमोहतैंरहितपुरुष दृढव्रतहुए क्या अचलसंकल्पवालेहुए ॥ अर्थात् सर्वप्रकारतैं यहपरमेश्वरहींभजनकरणेयोग्यहै सोपरमेश्वर इसप्रकारकाहींहै याप्र कारकाजो शास्त्रप्रमाणजन्य तथाअप्रामाण्यशंकातैंरहित ज्ञानहै ताज्ञानवालेहुए ॥ मैंपरमेश्वरकूं आराधनकरेहैं ॥ अर्थात् अनन्यशरणहुएमैंपरमेश्वरकाहीं सेवन करेहैं ॥ ऐसेअधिकारीजनहीं (चतुर्विधाभजंतेमांजनाःसुकृतिनोऽर्जुन) इसपूर्वउक्तवचनविषे सुकृतिशब्दकरिकै कथनकरेहैं ॥ यातैं यहअर्थ सिद्धभया (सर्वभूता निसंमोहंयांति) यहवचनतौं उत्सर्गरूपहै ॥ और तिनसर्वभूतप्राणीयोंकेमध्यविषे जेपुरुष पुण्यकर्मवालेहैं ॥ तेपुरुष तिससंमोहतैंरहितहुए मैंपरमेश्वरकूंभजेहैं इस अर्थकूंबोधनकरणेहाराजो (चतुर्विधाभजंतेमांजनाःसुकृतिनोऽर्जुन) यहपूर्वउक्तवचनहै तथा (येषांत्वंतगतंपापंजनानांपुण्यकर्मणां) यहवचनहै ॥ सोयहवचन

ताउत्सर्गका अपवादरूपहे ॥ सामान्यतैं सर्वत्र जिसकीप्रवृत्तिहोवै ताकूं उत्सर्गकहेहैं ॥ और किसीकस्थानविशेषविषेजाकीप्रवृत्तिहोवै ताकूं अपवादकहेहैं ॥ तहां जिसस्थानविषे अपवादकीप्रवृत्तिहोवैहे ॥ तिसस्थानविषे उत्सर्गकीप्रवृत्तिहोवैनहीं ॥ किंतु तिसस्थानतैंभिन्नस्थानविषेहीं ताउत्सर्गकीप्रवृत्तिहोवैहे ॥ जैसे (नहिंस्यात्सर्वाणिभूतानि)॥ यहसर्वभूतोंकेहिंसाकानिषेधकरणेहारावचनतौ उत्सर्गरूपहे ॥ और (अग्नीषोमीयंपशुमालभेत॥) यह यज्ञविषेपशुकीहिंसाकूंविधानकरणेहारावचन अपवादरूपहे ॥ ताअपवादस्थानविषे तिसउत्सर्गकी प्रवृत्तिहोवैनहीं ॥ किंतु तिसतैंभिन्नस्थानविषेहीं ताउत्सर्गकीप्रवृत्तिहोवैहे ॥ अर्थात् यज्ञतैं तथायुद्धतैं भिन्नस्थानविषेकिसीभीप्राणीकीहिंसानहींकरणी ॥ याप्रकरका ताउत्सर्गवाक्यकाअर्थ सिद्धहोवैहे ॥ तैसे (सर्वभूतानिसंमोहंयांति) इसउत्सर्गवचनकीभी तिनआर्तादिकच्यारिप्रकारकेसुकृतीजनोंकूंछोडिकै अन्यत्रहीं प्रवृत्तिहोवैहे ॥ अर्थात् तिनहमारेभक्तोंतैंभिन्न अन्यसर्वप्राणी संमोहकूंप्राप्तहोवैहैं याप्रकारका तिसउत्सर्गवचनकाअर्थ सिद्धहोवैहे ॥ इसीप्रकारकाउत्सर्ग पूर्वभी (त्रिभिर्गुणमयैर्भावैरेभिः सर्वमिदंजगत् ॥ मोहितंनाभिजानातिमामेभ्यःपरमव्ययम्) इसश्लोकविषे कथनकऱ्याथा ॥ यातैं (सर्वभूतानिसंमोहंयांति । चतुर्विधाभजंतेमाम्) इत्यादिकवचनोंका परस्पर विरोधहोवैनहीं इति ॥ यातैं अंतःकरणकीशुद्धिकरणेहारेपुण्यकर्मोंकेसंपादनकरणेवासतै इसअधिकारीपुरुषनैं सर्वदा प्रयत्नकरणा इति ॥२८॥ ❀ ॥ अब अर्जुनके वक्ष्यमाणप्रश्नकेउत्थापनकरणेवासतैं श्रीभगवान् सूत्रभूतदोश्लोकोंकूं कथनकरेहैं ॥ इसीसूत्रभूतदोश्लोकोंका अगलाअष्टमअध्याय व्याख्यानरूपहोवैगा ॥

(मू० श्लो०) जरामरणमोक्षायमामाश्रित्ययतंतिये ॥ तेब्रह्मतद्विदुःकृत्स्नमध्यात्मंकर्मचाखिलम् ॥ २९ ॥ जरामरणमोक्षाय। माम्। आश्रित्य। यतंति। ये। ते। ब्रह्म। तत्। विदुः। कृत्स्नम्। अध्यात्मम्। कर्म। च। अखिलम् ॥२९॥ (इतिपदच्छेदः)

हेअर्जुन जेपुरुष जरामरणादिकोंकेनिवृत्तकरणेवासतै मैंसगुणपरमेश्वरकूंआश्रयणकरिकै प्रयत्नकरेहैं तेपुरुष तत्पदकेलक्ष्यअर्थरूप निर्गुणब्रह्मकूं तथाअपरिच्छिन्न त्वंपदकेलक्ष्यअर्थरूपआत्माकूं तथा संपूर्ण श्रवणादिकसाधनोंकूं जानेहैं॥२९॥ (इतिप०)

॥ टीका ॥ हेअर्जुन संसारकेजरामरणादिकदुःखोंतैंवैराग्यकूंप्राप्तहुए जेअधिकारीजन तिनजरामरणादिकनानाप्रकारकेदुःसहदुःखोंकेनिवृत्तकरणेवासतैं तिनसर्वदुःखोंकेनिवृत्तकरणेहारेमैंसगुणपरमेश्वरकूं आश्रयणकरिकै अर्थात् इतरसर्वतैंविमुखहोइकै एकमैंपरमेश्वरकेशरणकूंप्राप्तहोइ प्रयत्नकरेहैं ॥ अर्थात् फलकीइच्छातैं रहितहोइकै मैंपरमेश्वरविषेअर्पणकरेहुए शास्त्रविहितशुभकर्मोंकूंकरेहैं ॥ तेअधिकारीपुरुष क्रमकरिकै शुद्धअंतःकरणवालेहुए तिसब्रह्मकूं जानेहैं ॥ अर्थात् इस सर्वजगत्काकारणरूपजामायाहै तामायाकाअधिष्ठानरूप तथातत्पदकालक्ष्यअर्थरूप तथासर्वउपाधियोंतैंपरे ऐसेनिर्गुणशुद्धब्रह्मकूं तेअधिकारीपुरुष जानेहैं ॥

तथा शरीरकूंआश्रयणकरिकैप्रकाशमानहोणेतैं अध्यात्मसंज्ञाकूंप्राप्तहुआ तथाउपाधिकृतसर्वपरिच्छेदतैंरहित ऐसाजो त्वंपदकालक्ष्यअर्थरूप प्रत्यक्आत्माहै तिसआत्माकूंभी तेअधिकारीजन जानेहैं ॥ तथा तिसतत्त्वंपदार्थविषयक ज्ञानके जितनैंकी ब्रह्मवेत्तागुरुकेसमीपनिवास श्रवण मनन निदिध्यासन इत्यादिक साधनहैं ॥ जेसाधन तिसज्ञानरूपफलकी नियमतैंप्राप्तिकरेहैं ॥ तिन संपूर्णसाधनोंकूंभी तेअधिकारीपुरुष जानेहैं इति ॥ २९ ॥ ❀ ॥ किंच ॥

साधिभूताधिदैवंमांसाधियज्ञंचयेविदुः ॥ प्रयाणकालेपिचमांतेविदुर्युक्तचेतसः ॥ ३० ॥ इतिश्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सुब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रेश्रीकृष्णार्जुनसंवादेज्ञानयोगोनामसप्तमोऽध्यायः समाप्तः ॥ ७ ॥ साधिभूताधिदैवम् । माम् । साधियज्ञम् । च । ये । विदुः । प्रयाणकाले । अपि । च । माम् । ते । विदुः । युक्तचेतसः ॥ ३० ॥ (इतिप०) ॥ हेअर्जुन जेअधिकारीजन अधिभूतअधिदैवदोनों सहित तथा अधियज्ञसहित मैंपरमेश्वरकूं चिंतनकरेहैं तेअधिकारीपुरुष मैंपरमेश्वरविषे युक्तचित्तवालेहुए मरणकालविषे भी मैंपरमेश्वरकूंहीं जानेहैं ॥ ३० ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन इसप्रकारकेहमारेभक्तजनोंकूं मरणकालविषेभीइंद्रियादिककरणोंकी विवशताकारिकै मैंपरमेश्वरकेविस्मरणकीशंका तुमनैं करणीनहीं ॥ जिसकारणतैं अधिभूतसहित तथाअधिदैवसहित तथाअधियज्ञसहित मैंपरमेश्वरकूं जेअधिकारीजन सर्वदा चिंतनकरेहैं ॥ तेअधिकारीजन सर्वदा मैपरमेश्वरविषे समाहितचित्तवालेहुए तापूर्वअभ्यासजन्यसंस्कारोंकीदृढतातैं प्राणोंकेउत्क्रमणकालविषेभी मैंसर्वात्मारूपपरमेश्वरकूंहींजानेहैं ॥ अर्थात् तामरणकालविषे इंद्रियादिककरणोंकेअसावधानहुएभी मैंपरमेश्वरकीकृपाकरिकै तथापूर्वअभ्यासजन्यसंस्कारोंकीदृढतातैं तिनपुरुषोंकेचित्तकीवृत्ति मैंपरमेश्वरकेआकारहींहोवैहै ॥ दूसरेकिसीअनात्मपदार्थकेआकारहोवैनहीं ॥ यातैं तेअधिकारीजन मैंपरमेश्वरकेभक्तियोगतैं कृतार्थहींहोवेहैं ॥ तहां अधिभूत अधिदैव अधियज्ञ इनशब्दोंके अर्थकूं श्रीभगवान् आपहीं आगलेअष्टमअध्यायविषे अर्जुनकेप्रश्नपूर्वक स्पष्टकरिकैकथनकरेगा ॥ यातैं ईहां इनशब्दोंका अर्थ कथनकऱ्यानहीं इति ॥ तहां इस सप्तमअध्यायविषे श्रीभगवान्नैं उत्तमअधिकारीकेप्रतितौं लक्षणावृत्तिकरिकै तत्पदप्रतिपाद्य ज्ञेयब्रह्म कथनकऱ्या॥ और मध्यमअधिकारीकेप्रतितौं शक्तिरूपमुख्य वृत्तिकरिकै तत्पदप्रतिपाद्यध्येयब्रह्म कथनकऱ्या इति ॥ ३० ॥ ❀ ॥ इतिश्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यश्रीस्वामिउद्धवानंदगिरिपूज्यपादशिष्येण स्वामि चिद्घनानंदगिरिणा विरचितायां प्राकृतटीकायां गीतागूढार्थदीपिकाख्यायां सप्तमोऽध्यायःसमाप्तः ॥ ७ ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥ ॥छ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥छ॥

ॐश्रीगणेशायनमः ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥ अथअष्टमाध्यायप्रारंभः ॥ तहां पूर्वसप्तमअध्यायकेअंतविषे (तेब्रह्मतद्विदुःकृत्स्नम्) इत्यादिकसार्द्धश्लोककरिकै श्रीभगवान्नैं सप्तपदार्थ ज्ञेयत्वरूपकरिकै सूत्रितकऱ्ये । तिन सूत्ररूपवचनकरिकैकथनकरेहुए सप्तपदार्थोंकाहीव्याख्यानरूप यहसमग्रअष्टमअध्याय श्रीभगवान्नैं प्रारंभकरीताहै ॥ तहां पूर्व तिससूत्ररूपवचनकरिकै सामान्यरूपतैंजान्येहुए तिनसप्तपदार्थोंकूं पुनःविशेषरूपतैं जानणेकीइच्छाकरताहुआ अर्जुन दोश्लोकोंकरिकै तिनसप्तपदार्थोंकेस्वरूपका प्रश्नकरेहै ॥

(मू० श्लो०) अर्जुनउवाच ॥ किंतद्ब्रह्मकिमध्यात्मंकिंकर्मपुरुषोत्तम॥अधिभूतंच किंप्रोक्तमधिदैवंकिमुच्यते ॥१॥ अधियज्ञःकथंकोत्रदेहेस्मिन्मधुसूदन ॥ प्रयाणकालेचकथंज्ञेयोसिनियतात्मभिः ॥२॥ किं । तत् । ब्रह्म । किम् । अध्यात्मं । किं । कर्म । पुरुषोत्तम । अधिभूतं । च । किं । प्रोक्तम् । अधिदैवं । किम् । उच्यते । अधियज्ञः । कथं । कः । अत्र । देहे । अस्मिन् । मधुसूदन । प्रयाणकाले । च । कथं । ज्ञेयः । असि । नियतात्मभिः ॥ २ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेसर्वपुरुषोंविषेश्रेष्ठ मधुसूदन सो ब्रह्म कौनहै तथा अध्यात्म कौनहै तथा कर्म कौनहै तथा अधिभूत कौन कह्याथा तथा अधिदैव कौन कहीताहै तथा इहां अधियज्ञ कौनहै सोअधियज्ञ किसप्रकारकरिकै चिंतनकरणेयोग्यहै तथा सोअधियज्ञ इस देहविषे वर्तेहै अथवा देहतैंबाह्यवर्तेहै तथा मरणकालविषे समाहितचित्तवालेपुरुषोंनैंतूं परमेश्वर किसप्रकारकरिकै जानणेयोग्य है ॥ १॥२ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेभगवन् पूर्वज्ञेयरूपकरिकै ॥ आपनैं कथनकऱ्याजोब्रह्महै ॥ सोब्रह्म कौनहै ॥ अर्थात् सोब्रह्म सोपाधिकहै अथवा निरुपाधिक है ॥ इतिप्रथमप्रश्नः ॥१॥ तथा हेभगवन् आत्माकेसंबंधवालाहोणेतैं आत्मशब्दकरिकैंप्रतिपादित जोयहदेहहै तादेहरूपआत्माकूंआश्रयणकरिकैजोस्थितहोवै ताकानाम अध्यात्म है ॥ सोअध्यात्म कौनहै ॥ अर्थात् श्रोत्रादिककरणोंकेसमूहकानाम अध्यात्महै ॥ अथवा प्रत्यक्चैतन्यकानाम अध्यात्महै ॥ इतिद्वितीयप्रश्नः ॥ २ ॥ और हेभगवन् (कर्मचाखिलम्) इसपूर्वउक्तवचनविषे आपनैं कथनकऱ्याजोकर्महै ॥ सोकर्म कौनहै ॥ अर्थात् सोकर्म यज्ञरूपहै अथवा तिसयज्ञतैंकोईअन्यवस्तुहै ॥ जिसकारणतैं (विज्ञानंयज्ञंतनुतेकर्माणितनुतेपिच) इसश्रुतिविषे यज्ञ कर्म दोनों भिन्नभिन्नहीं कथनकरेहैं ॥ इतितृतीयप्रश्नः ॥ ३ ॥ और हेभगवन् भूतोंकूंआश्रयणकरिकैजोस्थितहोवै ताकूं अधिभूतकहेहैं ॥ सोअधिभूत आप किसकूंकहतेहो अर्थात् ताअधिभूतशब्दकरिकै आपकूं पृथिवीआदिकभूतोंकूंआश्रयणकरिकैस्थित यत्किंचित्कार्य विवक्षितहै अथवा संपूर्णकार्यमात्र विवक्षितहै॥इतिचतुर्थप्रश्नः॥४॥और हेभगवन् देवकूंआश्रयणकरिकै जोस्थितहोवै ताकानाम अधिदैवहै॥सोअ

धिदैव आप किसकूंकहतेहो॥ अर्थात् देवता विषयजोध्यानहै ताकूं अधिदैव कहतेहो अथवा देवतावोंके आदित्यमंडलादिकोंविषेअनुस्यूत जोचैतन्यहै ताकूं अधिदैव कहतेहो॥ इतिपंचमप्रश्नः॥ ५॥ और हेभगवन् यज्ञकूंआश्रयणकरिकैजोस्थितहोवै ताकानाम अधियज्ञहै॥ सोअधियज्ञ ईहां कौंनहै॥ अर्थात् किसीदेवताविशेषकानाम अधियज्ञहै॥ अथवा परब्रह्मकानाम अधियज्ञहै॥ सोअधियज्ञभी इसअधिकारीपुरुषनैं किसप्रकारकरिकै चिंतनकरणेयोग्यहै॥ अर्थात् तादात्म्यरूपकरिकै चिंतनकरणे योग्यहै ॥ अथवा अत्यंतअभेदरूपकरिकै चिंतनकरणेयोग्यहै ॥ तथा सर्वप्रकारतैंभी सोअधियज्ञ इसदेहविषेहींरहैहै॥ अथवा इसदेहतैंबाह्यरहैहै॥ जोकहो इसदेहविषेरहैहै॥ तौंभी इसदेहविषे सोअधियज्ञ कौंनहै॥ अर्थात् बुद्धि आदिरूपहै अथवा तिनबुद्धिआदिकोंतैंभिन्नहै॥ इतिषष्ठप्रश्नः॥ ६॥ और हेभगवन् मरणकालविषे श्रोत्रादिकसर्वकरणोंकासमूह सावधानतातैंरहितहोवैहै॥ यातैं तिसकालविषे चित्तकीसावधानता संभवतीनहीं॥ ऐसेमरणकालविषे समाहितचित्तवालेपुरुषोंनैं किसप्रकारकरिकै तूंपरमेश्वर जानणेयोग्यहोवैहैं ॥ इतिसप्तमप्रश्नः ॥ ७ ॥ हेभगवन् सर्वज्ञहोणेतैं तथा परमकृपालुहोणेतैं आप यहसर्व अर्थ मैंशरणागतशिष्यकेप्रति कथनकरो इति॥ इहां अर्जुननैं श्रीभगवान्के (हेपुरुषोत्तम हेमधुसूदन) यहदोसंबोधनकथनकरेहैं ॥ तहां हेअर्जुन तुम हम दोनों समानहैं ॥ यातैं तूंहमारेसैं तिनअध्यात्मादिकोका स्वरूप किसवासतैपूछताहैं ॥ ऐसीभगवान्कीशंकाकेनिवृत्तकरणेवासतै ॥ अर्जुननैं हेपुरुषोत्तम यहसंबोधनकरिकै यहअर्थ सूचनकऱ्या ॥ सर्वपुरुषोविषे सर्वज्ञतादिकगुणोंकरिकैजोउत्तमहोवै ताकानाम पुरुषोत्तमहै ॥ ऐसेसर्वज्ञपुरुषोत्तम आपहींहो ॥ यातैं आपकूं कोईभीपदार्थ अज्ञात नहींहै ॥ किंतु आपकूं करामलककीन्यांई सर्वपदार्थ अपरोक्षहींहै ॥ और अल्पज्ञताकरिकैमैंअर्जुनकूं तिनसर्वपदार्थोंकाज्ञानहैनहीं यातैं आपहीं सोसर्वअर्थ हमारेप्रति कथनकरो इति ॥ और (हेमधुसूदन) यासंबोधनकरिकै अर्जुननैं यहअर्थ सूचनकऱ्या ॥ आप परमकरुणाकरिकैयुक्तहो ॥ यातैं मधुआदिकदैत्योंकूं हननकरिकै महान्आयासकरिकैभी सर्वउपद्रवोंकीनिवृत्तिकरतेहो ॥ ऐसेआपकूं विनाहींआयासकरिकै इसहमारे संशयरूपीतुच्छउपद्रवकीनिवृत्तिकरणी उचितहींहैइति ॥ १ ॥ २॥ ❁ ॥ इसप्रकार दोश्लोकोंकरिकै अर्जुननैं कऱ्येजेसप्तप्रश्नहैं ॥ तिनसप्तप्रश्नोंकेउत्तरकूं श्रीभगवान् यथाक्रमतैं तीनश्लोकोंकरिकै कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) श्रीभगवानुवाच ॥ अक्षरंब्रह्मपरमंस्वभावोऽध्यात्ममुच्यते ॥ भूतभावोद्भवकरोविसर्गःकर्मसंज्ञितः ॥ ३ ॥ अक्षरम् । ब्रह्म । परमम् । स्वभावः । अध्यात्मम् । उच्यते । भूतभावोद्भवकरः । विसर्गः । कर्मसंज्ञितः ॥ ३ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन परम अक्षर ब्रह्म कह्याजावैहै तथा स्वभाव अध्यात्म कह्याजावैहै तथा भूतोंकीउत्पत्तिवृद्धिकरणेहारा यज्ञदानादिक कर्मकह्याजावैहै ॥ ३ ॥ (इतिपदार्थः)॥

॥ टीका ॥ तहां जिसक्रमकरिकै शिष्यनैं प्रश्नकऱ्येहोवै ॥ तिसीक्रमकरिकै जबी गुरु तिनप्रश्नोंकेउत्तरकूं कथनकरेहै ॥ तबी अनायासकरिकैहीं तिसप्रश्नकरणे हारेशिष्यकेइष्टकीसिद्धिहोवैहै ॥ इसअभिप्रायकरिकै श्रीभगवान् इसप्रथमश्लोकविषे यथाक्रमकरिकै तीनप्रश्नोंकेउत्तरकूं कथनकरताभयाहै ॥ इसप्रकार द्वितीयश्लोकविषेभी तीनप्रश्नोंकेउत्तरकूं कथनकरताभयाहै ॥ और तीसरेश्लोकविषेतौं एकहींप्रश्नकेउत्तरकूं कथनकरताभयाहै इति ॥ तहां ब्रह्मशब्दकरिकै निरुपाधिकब्रह्महीं ईहां विवक्षितहै ॥ सोपाधिकब्रह्म ईहां ब्रह्मशब्दकरिकै विवक्षितनहींहै ॥ इसप्रकारका प्रथमप्रश्नकाउत्तर श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥ तहां (नक्षरति ननश्यतीतिअक्षरम् ॥) अर्थयह ॥ ज्ञानकरिकै तथा अज्ञानकरिकै तथादेशकालकरिकै तथाकिसीअन्यकरिकै जो नाशकूंनहींप्राप्तहोवै ताकूं अक्षर कहेहैं ॥ अथवा ॥ (अश्नुतेसर्वमितिअक्षरम् ॥) अर्थयह ॥ जैसे अग्नि लोहकेपिंडकूं अंतरबाह्यतैं व्याप्यकरिकैस्थितहोवैहै ॥ तैसे अव्याकृतकूं तथाताकेसर्व कार्यकूं अंतरबाह्यतैं व्याप्यकरिकै जोस्थितहोवै ताकूं अक्षरकहेहैं ॥ अर्थात् उत्पत्तिनाशतैंरहित तथासर्वत्रव्यापक वस्तुकानाम अक्षरहै ॥ इसीअक्षरकूं बृह दारण्यकउपनिषदविषेभी कथनकऱ्याहै ॥ तहां याज्ञवल्क्यमुनिनैंगार्गीकेप्रति यहवचन कथनकऱ्याहै ॥ (तद्वैतदक्षरंगार्गिब्राह्मणाअभिवदंतिअस्थूलमनण्वह्रस्वम दीर्घम्) अर्थयह ॥ हेगार्गी ब्रह्मवेत्ताब्राह्मण इसअक्षरकूं स्थूलभावतैंरहित तथाअणुभावतैंरहित तथाह्रस्वभावतैंरहित तथादीर्घभावतैंरहित कथनकरेहैं इति ॥ इसप्रकारकाउपक्रमकरिकै मध्यविषे सोयाज्ञवल्क्यमुनि तागार्गीकेप्रति याप्रकारकावचन कहताभया ॥ (एतस्याक्षरस्यप्रशासनेगार्गिसूर्यचंद्रमसौविधृतौतिष्ठतः नान्योतोऽस्तिद्रष्टा) ॥ अर्थयह ॥ हेगार्गी इसीअक्षरके प्रशासनविषे यहसूर्यचंद्रमा नियमपूर्व स्थितहै॥ इसअक्षरतैंभिन्नदूसराकोईद्रष्टाहैनहीं॥किंतु यहअक्षरहीं सर्वकाद्रष्टाहै इति ॥ इसप्रकारकावचन मध्यविषेकहिकै अंतविषे सोयाज्ञवल्क्यमुनि याप्रकारका उपसंहार करताभयाहै॥ (एतस्मिन्नुखल्वक्षरेगार्ग्याकाशश्चओत श्चप्रोतश्च) ॥अर्थयह॥ हेगार्गी इसीअक्षरविषे यहअव्याकृतआकाश ओतप्रोतहै इति ॥ इसप्रकार तात्पर्यकेनिश्चयकरावणेहारे उपक्रमउपसंहारादिकलिंगोंतैं सर्वउ पाधियोंतैंरहित तथासूर्यचंद्रमादिकसर्वजगत्काप्रशासिता तथाअव्याकृतरूपआकाशपर्यंत सर्वप्रपंचकाधारणकरणेहारा तथाइसशरीरइंद्रियरूपसंघातविषेविज्ञाता ऐसानिरुपाधिचैतन्यहीं ताअक्षरशब्दकाअर्थ सिद्धहोवैहै ॥ ऐसाचैतन्यस्वरूपअक्षरहीं ईहां ब्रह्मशब्दकरिकैविवक्षितहै ॥ इसीअर्थकेस्पष्टकरणेवासतै ताअक्षरका विशेषणकहेहैं (परममिति) अर्थात् सोअक्षर स्वप्रकाशपरमानंदस्वरूपहै ॥ तात्पर्ययह ॥ सूर्यचंद्रमादिकोंका शासितापणा तथासर्वजडजगत्का धारकपणा तथासर्वकाद्रष्टापणा इत्यादिकलिंग जे श्रुतिविषेअक्षरकेकहेहैं ॥ तेसर्वलिंग ब्रह्मविषेहींसंभवैहैं ॥ ब्रह्मतैंभिन्न दूसरेकिसीपदार्थविषे तेलिंग संभवतेनहीं ॥ यातैं सोअक्षरब्रह्मरूपहींहै इति ॥ यहवार्त्ता व्यासभगवान्नैं ब्रह्मसूत्रोंविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांसूत्रम्॥ (अक्षरमंबरांतधृतेः) ॥ अर्थयह ॥ बृहदारण्यकउपनि

पदविषे अक्षरकूं अव्याकृतनामाआकाशपर्यंत सर्वजगत्का विधारकत्व कथनकऱ्याहै ॥ सोसर्वजगत्काविधारकपणा ब्रह्मविषेहीं संभवैहै ॥ अन्यकिसीपदार्थ विषे संभवतानहीं ॥ यातैं अक्षरशब्दकरिकै ब्रह्मकाहीं ग्रहणकरणा इति ॥ शंका ॥ हेभगवन् (ओमित्येतदक्षरम्) इत्यादिकश्रुतिविषे तथा (ओमित्येकाक्षरंब्रह्म) इसस्मृतिविषे ओंकाररूपप्रणवकूंहीं अक्षरकह्याहै ॥ और लोकविषेभी अक्षरशब्द वर्णोंविषेहींरूढहै ॥ तहां (रूढिर्योगमपहरति) ॥ अर्थयह ॥ पदकी रूढिशक्ति तिसपदकेयोगाशक्तिका बाधकहोवैहै ॥ इसन्यायकरिकै तिसरूढिशक्तिकूं (नक्षरतीतिअक्षरम्) इसयोगाशक्तितैंप्रबलता सिद्धहोवैहै ॥ यातैं ताअक्षर शब्दकरिकै ओंकाररूपप्रणवकाहीं ग्रहणकरणा ॥ अथवा ॥ (संयुक्तमेतत्क्षरमक्षरंच) इत्यादिक श्रुतियोंविषे अव्यक्तकूंभी अक्षरकह्याहै ॥ यातैं ताअक्षर शब्दकरिकै अव्यक्तकाहीं ग्रहणकरणा ॥ समाधान ॥ सर्वजगत्का शासितापणा तथाविधारकपणा तथाद्रष्टापणा इत्यादिक जे लिंग पूर्व अक्षरकेकथनकरेहैं ॥ तेलिंग ओंकाररूपप्रणवविषे तथामायारूपअव्यक्तविषे संभवतेनहीं ॥ तथा (तस्यप्रकृतिलीनस्य) इसश्रुतिनैं तिसप्रणवकाभी प्रलय कथनकऱ्याहै ॥ तथा (तरत्यविद्यांविततान्) इसस्मृतिनैं तिसमायारूपअव्यक्तकाभी नाशकथनकऱ्याहै ॥ यातैं ईहां अक्षरशब्दकरिकै वर्णात्मकप्रणवका तथामायारूपअव्यक्तका ग्रहणकऱ्याजावैनहीं ॥ और श्रुतिविषे तथास्मृतिविषे जो प्रणवकूं अक्षरकह्याहै ॥ सो ताकेनित्यपणेकूंलैके अक्षर नहींकह्या ॥ किंतु जैसे सत्यब्रह्मकीप्राप्तिकरणेहारे ज्ञानकूं श्रुतिविषेसत्यकह्याहै ॥ तैसे अक्षरब्रह्मकावाचकहोणेतैं ताप्रणवकूं अक्षरकह्याहै ॥ इसीप्रकार अव्यक्तकूंजो श्रुतिविषे अक्षरकह्याहै सो ताकेनित्यपणेकूंलैके नहींकह्या ॥ किंतु स्वकार्यकीअपेक्षाकरिकै सोअव्यक्त चिरकालपर्यंतरहेहै ॥ यातैं ताकूं अक्षरकह्याहै ॥ जिसकारणतैं (क्षरंप्रधानममृताक्षरंहरः) यहश्रुति प्रधानरूपअव्यक्तकूं नाशवान् कहिकै परब्रह्मकूंहीं अक्षरकहेहै ॥ और पूर्वकथनकऱ्येहुए जगत्विधारकत्वादिकअक्षरकेलिंग वर्णात्मकप्रणवविषे संभवेनहीं ॥ यातैं इहां अक्षरशब्दकी सायोगाशक्तिहीं रूढशक्तितैंप्रबलहै ॥ यातैं ईहां अक्षरशब्दकरिकै उत्पत्तिनाशतैंरहितचैतन्यकाहीं ग्रहण करणा ॥ प्रणवका तथाअव्यक्तका ताअक्षरशब्दकरिकैग्रहणकरणानहीं ॥ तिसप्रणवअव्यक्तकीव्यावृत्तिकरणेवास्तेहीं श्रीभगवान्नैं ताअक्षरका (परमं) यहविशेषण कथनकऱ्याहै ॥ इतनैंपर्यंत (किंतद्ब्रह्म) इसप्रथमप्रश्नकाउत्तर कथनकऱ्या ॥ १ ॥ अब (किमध्यात्मम्) इसद्वितीय प्रश्नकाउत्तर कथनकरेहैं (स्वभावोऽध्यात्ममुच्यतेइति) हेअर्जुन जोउत्पत्तिनाशतैंरहित अक्षर पूर्व ब्रह्मरूपकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ तिसअक्षरब्रह्मका जोस्वभावहै अर्थात् तिसअक्षरब्रह्मका स्वरूपभूतजोप्रत्यक्चैतन्यहै ॥ सोप्रत्यक्चैतन्यहीं इसदेहरूपमिथ्याआत्माकूं आश्रयणकरिकै भोक्तारूपतैंवर्त्तमानहुआ अध्यात्म इसशब्द करिकैकह्याजावैहै ॥ तिसभोक्ताचैतन्यतैंभिन्न श्रोत्रादिककरणोंकासमूह अध्यात्मशब्दकरिकैग्रहणकरणानाहीं ॥ इतिद्वितीयप्रश्नउत्तरम् ॥ २ ॥ अब (किंकर्म)

इसतीसरेप्रश्नकाउत्तर निरूपणकरेहैं (विसर्गः कर्मसंज्ञितः इति) हेअर्जुन इंद्रादिकदेवतावोंकाउद्देशकरिकै द्रव्यकात्यागरूपजोयागहै ॥ तथा वैदिकअग्निविषे घृत यवादिकपदार्थोंका प्रक्षेपरूपजोहोमहै ॥ तथा ब्राह्मणोंकेताईं सुवर्णगौआदिकपदार्थोंकीदक्षिणारूपजोदानहै ॥ ता याग होम दान तीनोंविषे त्यागरूपता अनुगतहै ॥ यातैं त्यागकावाचकजोविसर्गशब्दहै ॥ ताविसर्गशब्दकरिकै याग होम दान इनतीनोंकाग्रहणकरणा ॥ ऐसा यागहोमदानरूपविसर्गहीं ईहां कर्मशब्दकरिकैक थनकऱ्याहै ॥ कोई उदासीनक्रियामात्र ईहां कर्मशब्दकरिकैकथनकऱ्यानहीं ॥ कैसाहैसोत्यागरूपविसर्ग ॥ भूतभावोद्भवकरहै ॥ अर्थात् स्थावरजंगमरूपभूतोंका जोउत्पत्तिरूपभावहै तथावृद्धिरूपउद्भवहै तिनदोनोंकूं करणेहाराहै ॥ यज्ञहोमादिककर्मोंकरिकैहीं सर्वभूतोंकीउत्पत्ति तथावृद्धि श्रुतिस्मृतिविषेप्रसिद्धहींहै॥ तहांस्मृति ॥ (अग्नौप्रास्ताहुतिः सम्यगादित्यमुपतिष्ठते ॥ आदित्याज्जायतेवृष्टिर्वृष्टेरन्नंततः प्रजाः ॥) अर्थयह ॥ वैदिकअग्निविषे श्रद्धापूर्वक पाईहुईजाआहुतिहै ॥ साआ हुति सूक्ष्मरूपकरिकै आदित्यमंडलविषेस्थितहोवैहै ॥ तिसआहुतिविशिष्टआदित्यतैं जलकी वृष्टिहोवैहै ॥ तिसजलकीवृष्टितैं व्रीहियवादिकअन्न उत्पन्नहोवैहै ॥ तिसअन्नतैं स्थावरजंगमरूपप्रजाउत्पन्नहोवैहै ॥ तथा तिसीअन्नतैं तापजाकीवृद्धिहोवैहै ॥ इसप्रकारकी परंपराकरिकै तेयज्ञहोमादिककर्महीं सर्वभूतोंके उत्पत्तिवृद्धि का कारणहैं इति ॥ इसीअर्थकूं (तेवाएतेआहुतीउत्क्रामंतः) इत्यादिकश्रुतिभी कथनकरेहै इति ॥ और किसीटीकाविषेतौं (भूतभावोद्भवकरः) इसवचनका यहअर्थकऱ्याहै ॥ मनुष्यादिकभूतोंका जोसात्विकराजसादिरूपभावहै तथाउत्पत्तिरूप उद्भवहै तिनदोनोंकूं जोकरेहै ताकानाम भूतभावोद्भवकरहै ॥ तहां तिन भूतोंकी यज्ञदानादिककर्मोंतैंउत्पत्तितौं (अग्नौप्रास्ताहुतिः) इसपूर्वउक्तस्मृतिवचनकरिकैहीसिद्धहै ॥ इसप्रकार भूतोंकेसात्विकादिकभावकी कर्मोंतैंउत्पत्तिभी (बुद्धिःकर्मानुसारिणी) अर्थयह ॥ इसपुरुषकी आपणेकर्मोंकेअनुसारहीं सात्विक वाराजस बुद्धिहोवैहै इत्यादिकस्मृतिवचनोंकरिकैसिद्धहींहै इति ॥ और किसीटीकाविषेतौं (भूतभावोद्भवकरः) इसवचनका यह अर्थकथनकऱ्याहै ॥ भूतरूपजेभावहोवैं तिनोंकूं भूतभावकहेहैं ॥ अर्थात् स्थावरजंगमरूपजेपदार्थहैं तिनोंकानाम भूतभावहै ॥ ऐसेभूतभावोंकेउत्पत्तिरूपउद्भवकूंजोकरेहै ताकानाम भूतभावोद्भवकरहैइति ॥ इतितृतीयप्रश्नउत्तरम् ॥३॥ इति ॥ ३ ॥ ❀ ॥ तहां पूर्वश्लोकविषे (किंतद्ब्रह्म किमध्यात्मं किंकर्म) इनतीनप्रश्नोंकाउत्तर कथनकऱ्या अब अधिभूतंकिम् अधिदैवंकिम् अधियज्ञःकः इनतीनप्रश्नोंकाउत्तर कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) अधिभूतंक्षरोभावःपुरुषश्चाधिदैवतम् ॥ अधियज्ञोहमेवात्रदेहेदेहभृतांवर ॥४॥ अधिभूतं । क्षरः । भावः । पुरुषः । च । अधिदैवतम् । अधियज्ञः । अहम् । एव । अत्र । देहे । देहभृतां । वर ॥ ४ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेसर्वप्राणीयोंकेमध्यविषे श्रेष्ठ अर्जुन

नाशवान् पदार्थ अधिभूत कह्याजावे है तथा हिरण्यगर्भनामपुरुष अधिदेव कह्याजावैहै तथाविष्णुरूपअधियज्ञ मैंवासुदेव हीं हूं सोअधि यज्ञ ईस मनुष्य देहविषेहीं वर्त्तैहै ॥ ४ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जोपदार्थ विनाशकूंप्राप्तहोवैहै ताकानाम क्षरहै ॥ और जोपदार्थ उत्पत्तिकूंप्राप्तहोवैहै ताकानाम भावहै ॥ ऐसाउत्पत्तिनाशवान् जितनाकी पदार्थमात्रहै ॥ सोपदार्थमात्र सर्वप्राणीमात्ररूपभूतकूं आश्रयणकरिकैहीं होवैहै ॥ यातैं सोउत्पत्तिनाशवान्पदार्थमात्र अधिभूत इसनामकरिकै कह्याजावैहै ॥ कोईयत्किंचित्पदार्थ ताअधिभूतशब्दकरिकै कह्याजावैनहीं ॥ इतिचतुर्थप्रश्नउत्तरम् ॥ ४ ॥ अब (अधिदैवंकिम्) इसपंचमप्रश्नकाउत्तर कथनकरैहैं (पुरुषश्चाधिदैवतमिति) तहां सर्वकार्यमात्र पूर्णकरयेहोवैंजिसनैं ताकानाम पुरुषहै ॥ अथवा शरीररूपसर्वपुरोंविषेजो निवासकरैहै ताकानाम पुरुषहै ऐसापुरुष जो हिरण्यगर्भ है ॥ जो हिरण्यगर्भसमष्टिलिंगस्वरूपहै ॥ तथा जोहिरण्यगर्भ सूर्यादिरूपकरिकै चक्षुआदिकसर्वव्यष्टिकरणोंऊपरि अनुग्रहकरैहै ॥ तथा जिसहिरण्यगर्भकूं (आत्मैवेदमग्रआसीत्पुरुषविधः ॥ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रेभूतस्य) इत्यादिकश्रुतियां कथनकरैहैं ॥ तथा जिसहिरण्यगर्भकूं (सवैशरीरीप्रथमः सवैपुरुषउच्यते ॥ आदिकर्त्तासभूतानांब्रह्माग्रेसमवर्त्तत) इत्यादिकस्मृतियां कथनकरैहैं ॥ सोहिरण्यगर्भपुरुष आदित्यादिकदेवतोंकूं आश्रयणकरिकै चक्षुआदिककरणोंऊपरि अनुग्रहकरैहै ॥ यातैं सोहिरण्यगर्भपुरुष अधिदैव इसनामकरिकैकह्याजावैहै ॥ देवताविषयकध्यानादिक ताअधिदैवशब्दकरिकैकह्येजावैनहीं ॥ ईहां (पुरुषश्च) यावचनविषेस्थित चशब्दकरिकै ताहिरण्यगर्भविषे श्रुतिस्मृतिकरिकैसिद्ध प्रसिद्धता कथनकरी ॥ और किसीटीकाविषेतौं (पुरुषश्च) यावचनविषेस्थितचकारकरिकै श्रोत्रादिक चतुर्दशकरणोंकेप्रवर्त्तक दिक् वात अर्क आदिक चतुर्दशदेवतावोंका ग्रहणकरयाहै ॥ अर्थात् हिरण्यगर्भपुरुष तथादिक्वातअर्कादिकदेवता सर्वहीं अधिदैव कह्येजावैहैं इति ॥ इति पंचमप्रश्नउत्तरम् ॥ ५ ॥ अब (अधियज्ञःकः) इसषष्ठेप्रश्नकाउत्तर कथनकरैहैं ॥ (अधियज्ञोहमिति) तहां सर्वयज्ञोंकाआधिष्ठानतारूप तथासर्वयज्ञोंकेफलकाप्रदाता तथासर्वयज्ञोंकाअभिमानीरूप जोविष्णुदेवताहै ॥ सोविष्णुदेव पूर्वउक्तविसर्गरूपयज्ञकूंआश्रयणकरिकै स्थितहोवैहै ॥ यातैं सोविष्णु अधियज्ञ इसनामकरिकैकह्याजावैहै ॥ जिसविष्णुकूं (यज्ञोवैविष्णुः) यहश्रुतिभी यज्ञरूपकरिकैकथनकरैहै ॥ ऐसाअंतर्यामीविष्णुरूपअधियज्ञमैं वासुदेवहींहूं ॥ मैंपरमेश्वरतैंभिन्न कोईभीवस्तुहैनहीं ॥ इसतैंकहणेकरिकै पूर्वषष्ठेप्रश्नविषे (कथम्) इसशब्दकरिकै कथनकऱ्याजो सोअधियज्ञ तादात्म्यरूपकरिकैचिंतनकरणेयोग्यहै अथवा अत्यंत अभेदरूपकरिकैचिंतनकरणेयोग्यहै याप्रकारकासंदेहथा तासंदेहकीभी निवृत्तिकरी ॥ अर्थात् सो परब्रह्मरूपविष्णु अत्यंतअभेदरूपकरिकैहीं चिंतनकरणेयोग्यहै इति ॥ ऐसाअधियज्ञरूपविष्णु इसमनुष्यदेहविषेहीं यज्ञरूपकरिकैवर्तैहै ॥ तथा सोविष्णु सर्वव्याप

कहोणेतैं परिच्छिन्नबुद्धिआदिकोंतैंभिन्नहै ॥ इतनैंकहणेकरिकै सोअधियज्ञ इसदेहविषेवर्तैहै अथवा इसदेहतैं बाह्यवर्त्तैहै ॥ देहविषेरह्याभी सोअधियज्ञ बुद्धिआदिरूपहै अथवा बुद्धिआदिकोंतैंभिन्नहै इससंदेहकीभी निवृत्तिकरी ॥ अर्थात् सोअधियज्ञरूप विष्णु यज्ञरूपकरिकै इसमनुष्यदेहविषेहींरहेहै ॥ तथा बुद्धिआदिकोंतैंभिन्नहै यहउत्तर सिद्धभया ॥ ईहां इसमनुष्यदेहकरिकैहीं सोयज्ञ सिद्धहोवैहै अन्यदेहकरिकैसिद्धहोवैनहीं ॥ यातैं इसमनुष्यदेहविषेहीं यज्ञकीस्थितिकथनकरीहै ॥ तहां (हेदेहभृतांवर) अर्थात् हेसर्वप्राणीयोंविषेश्रेष्ठअर्जुनयहजोअर्जुनकासंबोधन भगवान्नैंकथनकऱ्याहै ॥ सो क्षणक्षणविषे मैंपरमेश्वरकेसंभाषणतैंकृतकृत्यहुआ तूंअर्जुन इसहमारेबोधकेयोग्यहैं इसप्रकारकेउत्साहकरावणेवासतैं कथनकऱ्याहै ॥ इतिषष्ठप्रश्नउत्तरम् ॥ ६ ॥ इति ॥ ४ ॥ ❀ ॥ अब (प्रयाणकालेकथंज्ञेयोसि) अर्थात् मरणकालविषे समाहितचित्तवालेपुरुषोंनैं किसप्रकारतैं तूंपरमेश्वर जानणेयोग्यहैं ॥ इस सप्तमप्रश्नकेउत्तरकूं श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) अंतकालेचमामेवस्मरन्मुक्त्वाकलेवरम् ॥ यःप्रयातिसमद्भावंयातिनास्त्यत्रसंशयः॥५॥अंतकाले । च । माम् । एव । स्मरन् । मुक्त्वा । कलेवरं । यः । प्रयाति । सः । मद्भावं । याति । न । अस्ति । अत्र । संशयः॥५॥(इतिपदच्छेदः)॥हेअर्जुन जोपुरुष मरणकालविषे भी मैंपरमेश्वरकूंहीं चिंतनकरताहूआ इसशरीरकूं परित्यागकरिकै जावैहै सोपुरुष मैंपरमेश्वरकेस्वरूपताकूंहीं प्राप्तहोवैहै इसअर्थविषे कोईभीसंशय नहीं है ॥ ५ ॥ (इतिपदार्थः ॥)

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जोअधिकारीपुरुष अधियज्ञरूप मैंसगुणब्रह्मकूं अथवा परमअक्षररूप मैंनिर्गुणब्रह्मकूं सर्वकालविषे चिंतनकरताहुआ ताचिंतनकेसंस्कारों कीदृढतातैं श्रोत्रादिकसर्वकरणोंकीअसावधानतावालेमरणकालविषेभी स्मरणकरताहुआ इसकलेवरकापरित्यागकरिकै अर्थात् इसशरीरविषेअहंममअभिमानकापरित्यागकरिकैप्राणोंकेवियोगकालविषे गमनकरेहै ॥ सोपुरुष मद्भावकूं प्राप्तहोवैहै ॥ अर्थात् निर्गुणब्रह्मभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तहांसगुणब्रह्मकेध्यानपक्षविषेतौं (अग्निर्ज्योतिरहःशुक्लः) इत्यादिकवक्ष्यमाणश्लोककरिकै कथनकऱ्याजोदेवयानमार्गहै तिसदेवयानमार्गकरिकै जोउपासकपुरुष ब्रह्मलोकविषेजावैहै ॥ सोउपासकपुरुष तिसहिरण्यगर्भलोककेभोगोंकेअंतविषे निर्गुणब्रह्मभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और निर्गुणब्रह्मस्वरूपकेस्मरणपक्षविषेतौं जोपुरुष इसकलेवरकूंपरित्यागकरिकैजावैहै यहवचन केवल लोकदृष्टिकेअभिप्रायकरिकैजानणा ॥ काहेतैं मैंब्रह्मरूपहूं इसप्रकारका निर्गुणब्रह्मकासाक्षात्कार जिसपुरुषकूं प्राप्तभयाहै ॥ तिसतत्त्ववेत्तापुरुषके प्राणोंका मरणकालविषे इसशरीरतैंबाह्य उत्क्रमणहीं नहींहोवैहै ॥ और शरीरतैंप्राणोंकेउत्क्रमणतैंविना लोकांतरविषेगमनसंभवैनहीं ॥ यहवार्त्ता श्रुतिविषेभीकथन

करीहै ॥ तहांश्रुति ॥ (नतस्यप्राणाउत्क्रामंत्यत्रैवसमवलीयंते) ॥ अर्थयह ॥ तिसब्रह्मवेत्तापुरुषकेप्राण इसशरीरतैंबाह्य उत्क्रमण करतेनहीं ॥ किंतु इसशरीरके भीतरहीं अधिष्ठानचैतन्यविषेलयभावकूंप्राप्तहोवैहैं इति ॥ ऐसाब्रह्मवेत्तापुरुष तिसनिर्गुणब्रह्मभावकूं साक्षात्‌हींप्राप्तहोवैहैं ॥ तहांश्रुति ॥ (ब्रह्मैवसन्‌ब्रह्माप्येति ॥) अर्थयह ॥ सोतत्त्ववेत्तापुरुष ब्रह्मरूपहुआहीं ब्रह्मभावकूं प्राप्तहोवैहैइति ॥ हेअर्जुन देहतैंभिन्नआत्माविषे तथामैंनिर्गुणब्रह्मकीप्राप्तिविषे कोईभीसंशयहैनहीं ॥ अर्थात् आत्मा देहतैं भिन्नहै अथवा नहींहै ॥ तथादेहतैंभिन्नहूआभी आत्मा ईश्वरतैं अभिन्नहै अथवाभिन्नहै ॥ इसप्रकारका कोईभीसंशय ईहां नहींहै ॥ जिस कारणतैं तत्त्वसाक्षात्कारतैं अनंतर (छिद्यंतेसर्वसंशयाः) इसश्रुतिनैं सर्वसंशयोंकीनिवृत्तिहीं कथनकरीहै ॥ ईहां (कलेवरंमुक्त्वाप्रयाति) इसवचनकरिकैतौं श्रीभगवान्‌नैं जीवात्माका इसदेहतैंभिन्नपणा कथनकऱ्याहै और (मद्भावंयाति) इसवचनकरिकैतौं इसजीवात्माका ईश्वरतैं अभिन्नपणा कथनकऱ्याहै ॥ इसी जीवईश्वरकेअभेदकूं तत्त्वमसि अहंब्रह्मास्मि इत्यादिकमहावाक्यभीकथनकरेहैं ॥ इतिसप्तमप्रश्नउत्तरम् ॥ ७ ॥ इति ॥ ५ ॥ ❀ ॥ तहां अंतकालविषे परमेश्वरकाध्यानकरणेहारेपुरुषकूं तिसपरमेश्वरकीप्राप्तिअवश्यकरिकैहोवैहै इसपूर्वउक्तअर्थकेहीं स्पष्टकरणेवासतै श्रीभगवान् दूसरेदेवताओंकेध्यानकरणेहारेपुरुषकूं भीनियमकरिकै तिसतिसदेवताभावकीप्राप्ति कथनकरेहैं ॥

(मू० श्लो०) यंयंवापिस्मरन्भावंत्यजत्यंतेकलेवरम् ॥ तंतमेवैतिकौंतेयसदातद्भावभावितः॥६॥ यं । यं । वा । अपि । स्मरन् । भावं । त्यजति । अंते । कलेवरं । तं । तम् । एव । एति । कौंतेय । सदा । तद्भावभावितः ॥ ६ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन सर्वकाल विषे तिसतिसदेवताविषयकभाववालाहुआ यहपुरुष मरणकालविषे जिस जिसभी देवताविशेषकूं स्मरणकरताहुआ इसशरीरकूं त्यागकरेहै सोपुरुष तिसि तिसि देवताभावकूंहीं प्राप्तहोवैहै ॥ ६ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन मरणकालविषे मैंपरमेश्वरकूंस्मरणकरताहुआ यहअधिकारीपुरुष मैंपरमेश्वरकेभावकूंहीं प्राप्तहोवैहै यहहींकेवलनियमनहींहै ॥ किंतु तामरणकालविषे यहपुरुष जिसजिसदेवताविशेषरूपभावकूं तथाअन्यभीकिसी प्रियअप्रियपदार्थरूपभावकूं स्मरणकरताहुआ इसशरीरका परित्यागकरेहै ॥ सोपुरुष तामरणतैंअनंतर तिसतिसभावकूंहीं प्राप्तहोवैहै ॥ तिसतैं अन्यभावकूं प्राप्तहोवैनहीं ॥ ईहांयहतात्पर्यहै ॥ जोप्राणी जिसवस्तुका निरंतर ध्यानकरेहै ॥ तिस प्राणीकूं ताध्यानकेबलतैं देहांतरकीप्राप्तितैंविना इसजीवतकालविषेहीं तिसवस्तुभावकीप्राप्ति किसीस्थलविषे देखणेमैं आवैहै ॥ जैसे भयकेवशतै निरंतर भ्रमरकाध्यानकरणेहारा जोकीटविशेषहै ॥ तिसकीटकूं ताध्यानकेप्रभावतैं जीवतेहुएहीं तिसभ्रमररूपताकीप्राप्तिहोवैहै ॥ और नंदिकेश्वर निरंतर महादेवकेध्यान

करिकै देहांतरकीप्राप्तितैंविनाहींतामहादेवकेसमानरूपताकूं प्राप्तहोताभयाहै ॥ यहवार्त्ता शास्त्रविषेप्रसिद्धहींहै ॥ जबी तिसतिसवस्तुकेध्यानकरणेहारेपुरुषकूं जीवते हुएहीं ताध्यानकेप्रभावतैं तिसतिस ध्येयवस्तुभावकीप्राप्तिहोवैहै ॥ तबी तिसतिस देवताविशेषका सर्वदा ध्यानकरणेहारे पुरुषकूं मरणतैं अनंतर तिसतिस देवताविशेषकीप्राप्तिहोवैहै याकेविषेक्याकहणाहै इति ॥ तहां मरणकालविषे यद्यपि तिसतिस देवताविशेषके स्मरणकाउद्यम संभवतानहीं ॥ तथापि पूर्वकालके अभ्यासजन्य जेसंस्काररूपवासनाहैं तेवासनाहीं तामरणकालविषे तिसस्मरणकाहेतुहैं ॥ इसअर्थकूं श्रीभगवान् कहेहै (सदातद्भावभावितःइति) तहां तिसमरण तैंपूर्व सर्वकालविषे तिसतिस देवतादिकोंविषे जोभावहे अर्थात् भावनाजन्यसंस्काररूपवासनाहै ताकानामतद्भावहै ॥ सोतद्भाव संपादनकर्‍याहैजिसपुरुषनैं ताकानाम तद्भावभावितहै ॥ अर्थात् जोपुरुष पूर्वध्यानजन्यसंस्कारोंकरिकैयुक्तहै ॥ तिनसंस्कारोंकेबलतैंहीं तिसपुरुषकूंमरणकालविषे तिसतिसदेवतादिकोंका स्मरणहोवैहै ॥ ईहां (हेकौंतेय) इससंबोधनकरिकै श्रीभगवान्नैं अर्जुनविषेआपणेपिताकीभगिनीकापुत्ररूपताकहिकै स्नेहकीअतिशयतासूचनकरी ॥ तिसकरिकै मैंपरमेश्वर अवश्यकरिकै तुमारेऊपरि अनुग्रहकरौंगा यहअर्थ सूचनकर्‍या ॥ ताकरिकै यहभगवान् हमारेसाथि वंचनाकरताहै याप्रकारकीशंकाकाअभाव सूचनकर्‍या इति ॥ ईहां किसीटीकाविषे (यंयंचापि) याप्रकारकामूलश्लोककापाठ कल्पनाकरिकै (यंयं) याशब्दकरिकैतौं तिसतिसदेवताविशेषका ग्रहण कर्‍याहै ॥ और चकारतैं अन्यभीजिसीकिसीवस्तुका ग्रहणकर्‍याहै ॥ परंतु बहुतमूलपुस्तकोंविषे (यंयंवापि) इसप्रकारकाहीं पाठहोवैहै ॥ यातैंसोईहीं ईहांलिख्याहै इति ॥ ६ ॥ ❋ ॥ हेअर्जुन जिसकारणतैं पूर्वस्मरणकेअभ्यासजन्य मरणकालकीअंत्यभावनाहीं तिसमरणकालविषे परवशपुरुषकूं देहांतरकीप्राप्तिविषे कारण होवैहै ॥ तिसकारणतैं तूंअर्जुन तिसअंत्यभावनाकीउत्पत्तिवासतै सर्वकालविषे मैंपरमेश्वरकाहीं चिंतनकर ॥ इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) तस्मात्सर्वेषुकालेषुमामनुस्मरयुध्यच ॥ मय्यर्पितमनोबुद्धिर्मामेवैष्यस्यसंशयम् ॥ ७ ॥ तस्मात् । सर्वेषु । काले षु । माम् । अनुस्मर । युध्य । च । मयि । अर्पितमनोबुद्धिः । माम् । एव । एष्यसि । असंशयम् ॥ ७ ॥ (इतिपदच्छेदः) हेअर्जुन तिसकारणतैं सर्व कालोंविषे मैंपरमेश्वरकूं तूं चिंतनकर तथा युद्धकर मैंपरमेश्वरविषे अर्पणकर्‍येहुएमनबुद्धिवा लातूं मैंपरमेश्वरकूं हीं प्राप्तहोवैगा याअर्थविषे किंचित्मात्रभी संशयनहींहै ॥ ७ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जिसकारणतैं पूर्वउक्तप्रकारतैं पूर्वलेअभ्यासजन्य अंत्यभावनाहीं देहांतरकीप्राप्तिका कारणहोवैहै ॥ तिसकारणतैं मैंपरमेश्वरविषयक ता अंत्यभावनाकीउत्पत्तिवासतैं तूंअर्जुन तामरणतैंपूर्वहीं सर्वकालोंविषे बहुतआदरपूर्वक निरंतर मैंसगुणपरमेश्वरकूं चिंतनकर ॥ जोकदाचित् आपणेअंतःकरण

कीअशुद्धिकेवशतैं निरंतर मैंपरमेश्वरकेचिंतनकरणेविषे तूं समर्थनहींहोइसकै ॥ तौं तिसअंतःकरणकीशुद्धिकरणेवासतै तूं युद्धकूंकर ॥ ईहां युद्धशब्द स्ववर्णआश्रमके सर्वनित्यनैमित्तिककर्मोंका उपलक्षणहै ॥ प्रसंगविषेपूर्वयुद्धहींप्राप्तहै यातैं श्रीभगवान्नैं अर्जुनकेप्रतियुद्धकरणेकाविधानकऱ्याहै ॥ अर्थात् ताअंतःकरणकीशुद्धिवासतैं तूं युद्धादिकनित्यनैमित्तिककर्मोंकूंकर ॥ इसप्रकार नित्यनैमित्तिककर्मोंकेअनुष्ठानकरिकै ताअंतःकरणकीशुद्धिहुएतैंअनंतर मैंपरमेश्वरविषे अर्पणकऱ्याहुआहैसंकल्परूपमन तथानिश्चयरूपबुद्धि जिसतुमनैं ऐसाहुआतूं अर्थात् सर्वकालविषे मैंपरमेश्वरकेचिंतनपरायणहुआ तूं मैंपरमेश्वरकूंहीं प्राप्तहोवैंगा ॥ इसअर्थविषे किंचित्मात्रभी संशयनहींहै इति ॥ सोयह सगुणब्रह्मकाचिंतन उपासकपुरुषकेप्रतिहीं भगवान्नैं कथनकऱ्याहै ॥ जिसकारणतैं तिनउपासकपुरुषोंकूं तिसमरणकालकीअंत्यभावनाकीअपेक्षा अवश्यकरिकैरहैहै ॥ और जिनपुरुषोंकूं निर्गुणब्रह्मकासाक्षात्कारहुआहै ॥ तिनतत्ववेत्तापुरुषोंकूंतौं तिसब्रह्मज्ञानकी प्राप्तिकालविषेहीं अज्ञानकी निवृत्तिरूपमुक्ति सिद्धहै ॥ यातैं तिसतत्ववेत्तापुरुषकूं तिसअंत्यभावनाकी किंचित्मात्रभीअपेक्षानहींहै ॥ ईहां ध्येयवस्तुकेआकार चित्तकेवृत्तिकानाम भावनाहै ॥ इति ॥ ७ ॥ ❀ ॥ इसप्रकार अर्जुनकेसप्तप्रश्नोंकाउत्तरकहिकै मरणकालविषे परमेश्वरकेस्मरणका जोपरमेश्वरकीप्राप्तिरूपफल कथनकऱ्याहै ॥ तिसीकूंहीं विस्तारतैंकहणेवासतै श्रीभगवान् आरंभकरैहै ॥

(मू० श्लो०) अभ्यासयोगयुक्तेनचेतसानान्यगामिना । परमंपुरुषंदिव्यंयातिपार्थानुचिंतयन् ॥ ८ ॥ अभ्यासयोगयुक्तेन । चेतसा । नान्यगामिना । परमम् । पुरुषम् । दिव्यम् । याति । पार्थ । अनुचिंतयन् ॥ ८ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन सर्वदापरमात्मादेवकूंचिंतनकरताहुआ यहपुरुष अभ्यासरूपयोगकरिकैयुक्त तथाअन्यविषयोंविषेनहींगमनकरणेहारे ऐसेचित्तकरिकै परम दिव्य पुरुषकूं प्राप्तहोवैहै ॥ ८ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन गुरुशास्त्रकेउपदेशतैंअनंतर निरंतर परमात्मादेवकाध्यानकरताहुआ यहअधिकारीपुरुष चित्तकरिकै तिसपरमात्मादेवकूं प्राप्तहोवैहै ॥ अब ताचित्तविषे परमेश्वरकीप्राप्तिकरणेकीयोग्यताकेबोधनकरणेवासतैताचित्तकेदोषविशेषणोंकूं भगवान्कथनकरैहै (अभ्यासयोगयुक्तेननान्यगामिनाइति) ईहां मैंपरमेश्वरविषे विजातीयवृत्तियोंकेव्यवधानतैंरहित जोसजातीयवृत्तियोंकाप्रवाहहै ताकानाम अभ्यासहै ॥ जोअभ्यास पूर्वषष्ठेअध्यायविषे विस्तारतैंकथनकरिआयेहैं ॥ सोअभ्यासहीं समाधिरूपयोगहै ॥ ऐसे अभ्यासरूपयोगकरिकैयुक्तजोचित्तहै ॥ अर्थात् अनात्माकारसर्ववृत्तियोंकापरित्यागकरिकै तिसअभ्यासयोगविषेहीं अत्यंतसंलग्नजोचित्तहै ॥ तथा जोचित्त नान्यगामीहै ॥ अर्थात् निरोधकेप्रयत्नतैंविनाभी जिसचित्तका अनात्मपदार्थोंविषे जाणेकास्वभावनहींहै ॥ ऐसे

समाहितचित्तकरिकैहीं यहअधिकारीपुरुष तिसपरमात्मादेवकूं प्राप्तहोवैहै ॥ कैसाहैसोपरमात्मादेव परमहै ॥ अर्थात् निरतिशयआनंदरूपहै ॥ पुनःकैसाहैसोपरमात्मादेव पुरुषहै ॥ अर्थात् सर्वत्रपरिपूर्णहै ॥ पुनः कैसाहैसोपरमात्मादेव दिव्यहै ॥ अर्थात् प्रकाशरूपआदित्यविषे अंतर्यामीरूपकरिकैस्थितहै ॥ तहां (यश्चासावादित्ये) यहश्रुति तिसपरमात्मादेवकी आदित्याविषेस्थिति कथनकरेहै ॥ ऐसे परमदिव्यपुरुषकूं अभेदरूपकरिकैचिंतनकरताहुआ यहपुरुषनदीसमुद्रकीन्यांई तिसीपरमात्मादेवकूं प्राप्तहोवैहै ॥ यहवार्त्ता श्रुतिविषेभीकथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ (यथानद्यः स्यंदमानाः समुद्रेऽस्तंगच्छंतिनामरूपेविहाय ॥ तथाविद्वान्पुण्यपापेविधूयपरात्परंपुरुषमुपैतिदिव्यम्) ॥ अर्थयह ॥ जैसे श्रीगंगायमुनादिकनदीयां आपणेनामरूपकापरित्यागकरिकै समुद्रविषे एकताभावकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तैसे यह विद्वान्पुरुषभी पुण्यपापकर्मकापरित्यागकरिकै सूत्रात्मातैंभीपर अंतर्यामीदिव्यपुरुषकूं अभेदरूपकरिकैप्राप्तहोवैहै इति ॥ ८ ॥ ❋ ॥ तहां पूर्वश्लोकविषे श्रीभगवान्नैं कथनकऱ्याजो अधिकारीजनोंकूं चिंतनकरणेयोग्य तथाप्राप्तहोणेयोग्य परमदिव्यपुरुषहै ॥ तिसीपरमदिव्यपुरुषकूं पुनःभी अनेकविशेषणोंकरिकै श्रीभगवान् अब कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) कविंपुराणमनुशासितारमणोरणीयांसमनुस्मरेद्यः ॥ सर्वस्यधातारमचिंत्यरूपमादित्यवर्णंतमसःपरस्तात् ॥ ९ ॥

कविं । पुराणम् । अनुशासितारम् । अणोः । अणीयांसम् । अनुस्मरेत् । यः । सर्वस्य । धातारम् । अचिंत्यरूपम् । आदित्यवर्णं । तमसः । परस्तात् ॥ ९ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन सर्वज्ञ तथाअनादि तथासर्वकानियंता तथासूक्ष्मतैंभी अत्यंतसूक्ष्म तथा सर्वकाधारणकरणेहारा तथाअचिंत्यरूपवाला तथाआदित्यकीन्यांईप्रकाशवाला तथाअज्ञानतैं परेस्थित ऐसेदिव्यपुरुषकूं जोकोई पुरुषचिंतनकरैहै सोपुरुष तिसीदिव्यपुरुषकूंप्राप्तहोवैहै ॥ ९ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन मोक्षकीकामनावालेअधिकारीजनोंकूं चिंतनकरणेयोग्य तथाप्राप्तहोणेयोग्य जोपरमदिव्यपुरुषहै ॥ सोपरमात्मादेव कैसाहै कविहै ॥ अर्थात् भूत भविष्यत् वर्त्तमान सर्ववस्तुवोंका द्रष्टाहोणेतैं सर्वज्ञहै ॥ पुनःकैसाहैसोपरमात्मादेव पुराणहै ॥ अर्थात् इससर्वजगत्काकारणहोणेतैं अनादिहै ॥ पुनःकैसाहै सोपरमात्मादेव अनुशासिताहै ॥ अर्थात् सूर्यचंद्रमादिकसर्वजगत्कूं नियमपूर्वक चलावणेहाराहै ॥ अथवा सर्वप्राणीयोंकेहृदयविषेस्थितहोइकै तिनप्राणीयोंके कर्मोंकेअनुसार तिनप्राणीयोंकूं शुभअशुभकार्यविषे प्रवृत्तकरणेहाराहै ॥ पुनःकैसाहैसोपरमात्मादेव ॥ आकाशादिकसर्वप्रपंचका उपादानकारणहोणेतैं आकाशादिकसूक्ष्मपदार्थोंतैंभी अत्यंतसूक्ष्महै ॥ कार्यकीअपेक्षाकरिकै ताकेउपादानकारणविषेअत्यंतसूक्ष्मता पटतंतुआदिकोंविषेप्रसिद्धहीहै ॥ ईहां सूक्ष्मताक

रिकै दुर्विज्ञेयता ग्रहणकरणी ॥ अन्यथा (महतोमहीयान्) यहश्रुति असंगतहोवैंगी ॥ पुनः कैसाहैसोपरमात्मादेव ॥ सर्वकाधारणकरणेहाराहै ॥ अर्थात् पुण्य पापकर्मोंकाजितनाकीफलहै ॥ तिससर्वफलकूं सर्वप्राणीयोकेताईं आपणेआपणेपुण्यपापकर्मकेअनुसार विचित्ररूपतैं भिन्नभिन्नकरिकै देणेहाराहै ॥ यहवार्त्ता (फलमतउपपत्तेः) इससूत्रकेव्याख्यानविषे श्रीभाष्यकारोंनैं विस्तारतैंप्रतिपादनकरीहै ॥ पुनःकैसाहैसोपरमात्मादेव अचिंत्यरूपहै ॥ अर्थात् अपरिमितमहिमावा लाहोणेतैं नहींचिंतनकरणेकूंशक्यहैंरूपजिसका ॥ पुनःकैसाहैसोपरमात्मादेव आदित्यवर्णहै ॥ आदित्यकीन्यांई सर्वजगत्का अवभासकहैं वर्ण क्या प्रकाश जिस का ताकानाम आदित्यवर्णहै ॥ अर्थात् जोपरमात्मादेव सूर्यकीन्यांई सर्वजगत्कूंप्रकाशकरणेहाराहै ॥ प्रकाशरूपहोणेतैंहीं जोपरमात्मादेव तमतैंपरहै ॥ ईहां अज्ञानरूप जोमोहअंधकारहै ताकानाम तमहै ॥ तिसतमतैं परहै ॥ अर्थात् प्रकाशरूपहोणेतैं तिसअज्ञानरूपतमकाविरोधीहै ॥ ऐसे परमात्मारूपदिव्यपुरुषकूं जो अधिकारीपुरुष चिंतनकरेहै ॥ सोअधिकारीपुरुष तिसअभ्यासकीदृढतातैं तिसपरमदिव्यपुरुषकूंहीं प्राप्तहोवैहै ॥ इसप्रकारतैं इसश्लोकका पूर्वलेश्लोककेसाथि अन्वयकरणा ॥ अथवा (सतंपरंपुरुषमुपैतिदिव्यम्) इसअगलेश्लोककेसाथि अन्वयकरणा ॥ अन्वयनाम संबंधकाहै इति ॥ ९ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् आप वारंवार परमेश्वरकेस्मरणविषेप्रयत्नकीअधिकता कथनकरतेहो सोकिसकालविषे तापरमेश्वरकेस्मरणविषयक प्रयत्नकीअधिकता कथनकरतेहो ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् ताकालका कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) प्रयाणकालेमनसाऽचलेनभक्त्यायुक्तोयोगबलेनचैव ॥ भ्रुवोर्मध्येप्राणमावेश्यसम्यक्सतंपरंपुरुषमुपैतिदिव्यम्॥१०॥

प्रयाणकाले । मनसा । अचलेन । भक्त्या । युक्तः । योगबलेन । च । एव । भ्रुवोः । मध्ये । प्राणम् । आवेश्य । सम्यक् । सः । तं । परं । पुरुषम् । उपैति । दिव्यम् ॥ १० ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन जोपुरुष मरणकालविषे एकाग्र मनकरिकै तिसदिव्यपुरुषका स्मरणकरेहै तथाभक्तिकरिकै युक्तहै तथा योगकरिकै युक्तहै सोपुरुष दोनोंभ्रुवोंके मध्यविषे प्राणकूं भलीप्रकारतैं स्थापनकरिकै तिस परम दिव्य पुरुषकूं प्राप्तहोवैहै ॥ १० ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हे अर्जुन जोउपासकपुरुष मरणकालविषे एकाग्रमनकरिकै तिसदिव्यपुरुषकूं स्मरणकरेहै ॥ तथा जोपुरुषभक्तिकरिकैयुक्तहै ॥ अर्थात् परमेश्वरवि षयक परमप्रेमकरिकैयुक्तहै ॥ तथा जोपुरुष योगबलकरिकैयुक्तहै ॥ ईहां समाधिकानाम योगहै ॥ तासमाधिरूपयोगकाजोबलहै अर्थात् तासमाधिरूपयोगकरि केजन्य जोसंस्कारोंकासमूहहैं ॥ जोसंस्कारोंकासमूह तासमाधितैंव्युत्थानकरणेहारेसंस्कारोंकाविरोधीहै ॥ ऐसेयोगबलकरिकै जोपुरुष युक्तहै ॥ तथा जो

पुरुष प्रथम आपणेहृदयकमलविषे प्राणोंकूं वशकरिकै तिसतैंअनंतर तिसहृदयदेशतैंऊर्ध्वगमनकरणेहारी सुषुम्नानाडीरूपमार्गद्वारा पूर्वपूर्वभूमिकाकेजयक्रमकरिकै दोनों भ्रुवोंकेमध्यविषेस्थितआज्ञाचक्रविषे तिसप्राणकूंस्थापनकरिकै सावधानहुआ दशमद्वाररूपब्रह्मरंध्रतैं उत्क्रमणकरेहै ॥ सोउपासकपुरुषहीं कविपुराणइत्यादिक लक्षणोंकरिकैयुक्त तिसपरमदिव्यपुरुषकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तहां आधारचक्र स्वाधिष्ठानचक्र मणिपूरकचक्र अनाहतचक्र विशुद्धचक्र आज्ञाचक्र इनषट्चक्रोंका स्वरूप तथा तिनोंकेस्थान तथातिनोंकेदेवता तथातिनषट्चक्रोंविषेप्राणके स्थापनकरणेकाप्रकार आत्मपुराणकेएकादशेअध्यायविषे हम विस्तारतैंनिरूपणकरि आयेहैं इति ॥ १० ॥ ❀ ॥ तहां पूर्वप्रसंगविषे परमेश्वरभावकीप्राप्तिवासतै श्रीभगवान्‌नें परमेश्वरकास्मरण विधानकऱ्या ॥ ताकहणेकरिकै यहसंशय प्राप्त होवैहै ॥ जो तिसध्यानकालविषे जिसीकिसीनामकरिकै तिसपरमेश्वरका स्मरणकरणा अथवा नियमतैं किसीएकनामकरिकैहीं तापरमेश्वरका स्मरणकरणाइति ॥ इससंशयकीनिवृत्तिकरणेवासतै श्रीभगवान्(सर्ववेदायत्पदमामनंति तपांसिसर्वाणिचयद्वदंति ॥ यदिच्छंतोब्रह्मचर्यंचरंति तत्तेपदंसंग्रहेणब्रवीम्योमित्येतत्) इत्यादिक श्रुतियोंकरिकै प्रतिपादित जोओंकाररूपप्रणवनामहै तिसप्रणवनामकरिकेहीं परमेश्वरकास्मरणकरणा अन्यमंत्रादिकोंकरिकैकरणानहीं याप्रकारकेनियमकूं अब कथनकरेहैं ॥

(मू॰श्लो॰) यदक्षरंवेदविदोवदंतिविशंतियद्यतयोवीतरागाः ॥ यदिच्छंतोब्रह्मचर्यंचरंतितत्तेपदंसंग्रहेणप्रवक्ष्ये ॥ ११ ॥ यत् । अक्षरं । वेदविदः । वदंति । विशंति । यत् । यतयः । वीतरागाः । यत् । इच्छंतः । ब्रह्मचर्यम् । चरंति । तत् । ते । पदं । संग्रहेण । प्रवक्ष्ये ॥ ११ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन वेदवेत्तापुरुष जिस अक्षरकूं कथनकरेहैं तथानिःस्पृह संन्यासी जिसअक्षरकूं प्राप्तहोवैहै तथासाधकपुरुष जिसअक्षरकूं इच्छतेहुए ब्रह्मचर्यकूं करेहै तिस अक्षरकूंमैं तुमारेताई संक्षेपकरिकै कथनकरताहूं ॥ ११ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जिस ओंकारनामवाले अविनाशीब्रह्मकूं वेदवेत्तापुरुष कथनकरेहैं ॥ अर्थात् (एतद्वैतदक्षरंगार्गिब्राह्मणाअभिवदंतिअस्थूलमनण्वह्रस्वमदीर्घम्) इत्यादिकश्रुतिवचनोंकरिकै स्थूलादिकसर्वविशेषधर्मोंकीनिवृत्तिकरिकै जिसअक्षरब्रह्मकूं प्रतिपादनकरेहैं ॥ हेअर्जुन सोअक्षरब्रह्म केवल प्रमाणाविषेकुशल वेदवेत्ता पुरुषोंनेंहीं प्रतिपादन नहींकरीता ॥ किंतु मुक्तपुरुषोंकूं प्राप्तहोणेयोग्यहोणेतैं सोअक्षरब्रह्म तिनमुक्तपुरुषोंकूंभी अनुभवकरीताहै ॥ इसअर्थकूं श्रीभगवान् कथनकरेहै (विशंतिइति) हेअर्जुन सर्वविषयसुखोंकीइच्छातैंरहित जेयत्नशीलसंन्यासीहैं ॥ तेनिष्कामसंन्यासीभी मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारकेआत्मज्ञानकरिकै जिसअक्षरब्रह्मकूं आपणास्वरूपभूतकरिकैप्राप्तहोवैहै ॥ हेअर्जुन सोअक्षरब्रह्म तिनतत्त्ववेत्तासिद्धपुरुषोंनेंहीं केवल अनुभवनहींकरीता ॥ किंतु साधकमुमुक्षुजनोंकाभी सर्व प्रयत्न तिस

अक्षरब्रह्मकी प्राप्तिवास्तेहींहै ॥ इसअर्थकूं श्रीभगवान् कहेहै (यदिच्छंतःइति) हेअर्जुन जिसअक्षरब्रह्मकेजानणेकीइच्छाकरतेहुए नैष्ठिकब्रह्मचारी गुरुकुलविषे निवासकरिके ब्रह्मचर्यपूर्वक वेदांतशास्त्रकेश्रवणमननादिकोंकूंकरेहैं ॥ ऐसाअक्षरब्रह्मरूपपद मैंभगवान् तैंअर्जुनकेप्रति संक्षेपतैंकथनकरताहूं ॥ अर्थात् जिसप्रकारतैं तैं अर्जुनकूं तिसअक्षरब्रह्मका संशयतैंरहित यथार्थ बोधहोवै ॥ तिसप्रकारतैं मैंतुमारेप्रति कथनकरताहूं ॥ यातैं तिसअक्षरब्रह्मकूं मैंअर्जुन किसप्रकारजानूंगा याप्रकारकीचिंताकरिकै तूं व्याकुलमतहोउ इति ॥ तहां यहओंकाररूपप्रणव परब्रह्मकाहींवाचकहै ॥ अथवा शालग्रामादिकप्रतिमाकीन्याईं तिसपरब्रह्मका प्रतीकहै ॥ यातैं तिसपरब्रह्मकी वाचकतारूपकरिकै तथाप्रतीकतारूपकरिकै श्रुतिभगवतीनैं मंदमध्यमबुद्धिवाले पुरुषोंकेप्रति क्रममुक्तिरूपफलवाली तिसप्रणवकीउपासना कथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ (यःपुनरेतत्त्रिमात्रेणोमित्यनेनैवाक्षरेणपरंपुरुषमभिध्यायीतसतमधिगच्छति) ॥ अर्थयह ॥ जोपुरुष अकार उकार मकार इनतीनमात्रावोंवाले ॐइसअक्षरकरिकै परमपुरुषकूं चिंतनकरेहै ॥ सोपुरुष तिसपरमपुरुषकूंहीं प्राप्तहोवैहै इति ॥ इसप्रकारतैं श्रुतिविषे कथनकरीजा प्रणवकीउपासनाहै ॥ साईहींउपासना ईहांभगवान्‌कूं विवक्षितहै ॥ यातैं इसअष्टमअध्यायकीसमाप्तिपर्यंत श्रीभगवान्‌नैं सायोगधारणासहित ओंकारकीउपासना तथाताउपासनाका स्वस्वरूपकीप्राप्तिरूपफल तथातिसफलतैंअपुनरावृत्ति तथाताकामार्ग यहसर्वअर्थ कथनकरीताहै ॥ ११ ॥ ❀ ॥ तहां (तत्तेपदंप्रवक्ष्ये) इसपूर्वउक्तवचनकरिकै प्रतिज्ञाकऱ्याजोअर्थहै ॥ तिसअर्थकूं साधनसहित दोश्लोकोंकरिकै श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) सर्वद्वाराणिसंयम्यमनोहृदिनिरुध्यच ॥ मूर्ध्न्याधायात्मनःप्राणमास्थितोयोगधारणाम् ॥ ओमित्येकाक्षरंब्रह्मव्याहरन्मामनुस्मरन् ॥ यःप्रयातित्यजन्देहंसयातिपरमांगतिम् ॥ १३ ॥ सर्वद्वाराणि । संयम्य । मनः । हृदि । निरुध्य । च । मूर्ध्नि । आधाय । आत्मनः । प्राणम् । आस्थितः । योगधारणाम् । ओं । इति । एकाक्षरं । ब्रह्म । व्याहरन् । माम् । अनुस्मरन् । यः । प्रयाति । त्यजन् । देहं । सः । याति । परमां । गतिम् ॥ १२ ॥ १३ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन जोउपासकपुरुष सर्वइंद्रियद्वारोंकूं रोकिकरिकै तथा मनकूं हृदयविषे निरुद्धकरिकै तथा प्राणकूं मूर्द्धदेशविषे स्थितकरिकै आत्मविषयक समाधिरूपधारणाकूं करताहुआ तथाओम इस ब्रह्मरूप एकअक्षरकूं उच्चारणकरताहुआ तथा मैंपरमेश्वरकूं चिंतनकरताहुआ इसदेहकूं परित्यागकरताहूआ जावैहै सोउपासकपु रुष परम गतिकूं प्राप्तहोवैहै ॥ १२ ॥ १३ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जोउपासकपुरुष श्रोत्रादिकइंद्रियरूपद्वारोंकूं आपणेआपणे शब्दादिकविषयोंतैंरोकिकै स्थितहुआहै ॥ अर्थात् तिनशब्दादिकविषयोंविषे

वारंवार दोषदर्शनकेअभ्यासतैं तिनविषयोंतैंविमुखताकूंप्राप्तहुएश्रोत्रादिकइंद्रियोंकरिकै तिनशब्दादिकविषयोंकूंनहींग्रहणकरताहुआ स्थितहुआहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् श्रोत्रादिकबाह्यइंद्रियोंकेनिरोधकीयेहुएभी अंतर मनकरिकै तिनविषयोंकाचिंतन होवैंगा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान्‌कहेहैं (मनोहृदिनिरुध्य चइति) हेअर्जुन पूर्वषष्ठेअध्यायविषे विस्तारतैं कथनकऱ्याजो अभ्यासवैराग्यहै ॥ तिस अभ्यासवैराग्यदोनोंकरिकै जोपुरुष तिसमनकूं हृदयदेशविषे सर्ववृत्तियोंतैंरहितकरिकै स्थितहुआहै ॥ अर्थात् जोपुरुष अंतरभी विषयोंकीचिंताकूंनहींकरताहुआ स्थितहुआहै ॥ इसप्रकार बाह्यअंतरज्ञानकेद्वारभूत मनसहित श्रोत्रादिकइंद्रियरूपसर्वद्वारोंकूं निरोधकरिकै जोपुरुष क्रियाकेद्वारभूतप्राणकूंभी सर्वओरतैंनिग्रहकरिकै मूर्द्धदेशविषे स्थापनकरिकै स्थितहुआहै ॥ अर्थात् जोपुरुष गुरुउपदिष्टमार्गकरिकै पूर्वपूर्वभूमिकाजयक्रमतैं प्रथमतिसप्राणकूं दोनोंभ्रुवोंकेमध्यविषेस्थितकरिकै पश्चात् तिसतैंऊपरि मूर्द्धदेशविषे स्थापनकरिकै स्थितहुआहै ॥ तथाजोपुरुष प्रत्यक्‌आत्माविषयक समाधिरूपधारणाकूंकरताहुआ स्थितहुआहै ॥ ईहां (आत्मनः) यहपद अन्यदेवताविषयकधारणाकीव्यावृत्तिकरणेवास्तैहै ॥ और ॐ यहजोएकअक्षरहै ॥ सो ॐअक्षर ब्रह्मकावाचकहोणेतैं अथवा शालग्रामादिकप्रतिमाकीन्यांई ब्रह्मकाप्रतीकहोणेतैं ब्रह्मरूपहै ॥ ऐसे ब्रह्मरूप ओंइसएकअक्षरकूं उच्चारणकरताहुआ जोपुरुष स्थितहुआहै ॥ ईहां यद्यपि (ॐइतिव्याहरन्) इतनैंमात्रकहणेकरिकैहीं निर्वाहहोइसकेहै (एकाक्षरम्) इसकहणेतैं कोईअधिकअर्थ सिद्धहोतानहीं ॥ तथापि (एकाक्षरं) यहवचन अनायासताकूं कथनकरताहुआ ताप्रणवकेउच्चारणकीस्तुतिवास्तैहै ॥ अथवा (ॐ इतिव्याहरन् एकाक्षरंब्रह्ममामनुस्मरन्) याप्रकारतैं पदोंकाअन्वयकरणा ॥ अर्थयह जोपुरुष ॐ इसप्रणवमंत्रकूं उच्चारणकरताहुआ स्थितहुआहै ॥ तथा जोपुरुष तिस ॐकारकाअर्थरूप अद्वितीय अविनाशी सर्वत्रव्यापक मैंपरमेश्वरकूं स्मरणकरताहुआ स्थितहूआहै ॥ इसप्रकार प्रणवमंत्रकाजपकरताहुआ तथाताप्रणवमंत्रकेअर्थरूपमैंपरमेश्वरकाचिंतनकरताहुआ जोपुरुष मरणकालविषे सुषुम्नानाम मूर्द्धन्यनाडीरूपमार्गकरिकै इसदेहकूंपरित्याग करताहुआगमनकरेहै ॥ सो उपासकपुरुष देवयानमार्गद्वारा ब्रह्मलोकविषेजाइकै तिसब्रह्मलोककेदिव्यभोगोंकूंभोगिकै अंतविषे परमगतिकूंप्राप्तहोवैहै ॥ अर्थात् मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारकेतत्त्वसाक्षात्कारकरिकै सर्वतैंउत्कृष्ट ब्रह्मभावकूं प्राप्तहोवैहै ॥ यहवार्त्ता श्रुतिविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ (एषाऽस्यपरमागतिरेषाऽस्यपरमासंपदेषोऽस्यपरमआनंदः ॥) अर्थयह ॥ यहअद्वितीयआनंदस्वरूपब्रह्महीं इसविद्वान्‌पुरुषकी परमगतिहै तथापरमसंपदहै तथापरम आनंदहै इति ॥ १२ ॥ १३ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् इसपूर्वउक्तरीतिसें जोपुरुष मरणकालविषे प्राणवायुकेनिरोधकेअभावतैं दोनोंभ्रुवोंकेमध्यविषे प्राणोंकूंस्थितकरिकै मूर्द्धन्यनाडीकरिकै इसदेहकेपरित्याग

करणेकूं आपणीइच्छाकरिकै समर्थनहींहोवैहै ॥ किंतु प्रारब्धकर्मोंकेनाशहूए तिसमरणकालविषे परवशहुआ जोपुरुष इसदेहकापरित्यागकरैहै ॥ तिसपुरुषकूं कौंनफलप्राप्तहोवैहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् तिसफलकूं कथनकरैहै ॥

(मू० श्लो०) अनन्यचेताःसततंयोमांस्मरतिनित्यशः ॥ तस्याहंसुलभःपार्थनित्ययुक्तस्ययोगिनः ॥ १४ ॥ अनन्यचेताः । सततं । यः । मां । स्मरति । नित्यशः । तस्य । अहं । सुलभः । पार्थ । नित्ययुक्तस्य । योगिनः ॥ १४ ॥ (इतिपदच्छेदः) हेअर्जुन जोपुरुष अनन्यचित्तवालाहुआ निरंतर जीवतकालपर्यंत मैंपरमेश्वरकूं चिंतनकरैहै तिस समाहितचित्तवाले योगीपुरुषकूं मैंपरमेश्वर अतिसुलभहूं ॥ १४ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन मैंपरमेश्वरतैंअन्य किसीभीपदार्थविषे नहींहैआसक्तचित्तजिसका ताकानाम अनन्यचेताहै ॥ ऐसाअनन्यचेताहुआ जोपुरुष निरंतर जीवतकालपर्यंत मैंपरमेश्वरकूं चिंतनकरैहै ॥ सो निरंतर समाहितचित्तवालापुरुष पूर्वउक्तरीतिसे स्वाधीनताकरिकै इसदेहकापरित्यागकरै अथवा पराधीनताकरिकै इसदेहकापरित्यागकरै ॥ सर्वप्रकारतैं तिसपुरुषकूं मैंपरमेश्वर अत्यंतसुलभहूं ॥ अर्थात् इतरपुरुषोंकूं अत्यंतदुर्लभहुआभी मैंपरमेश्वर तिसपुरुषकूंतौं सुखेनहीं प्राप्तहोंणेयोग्यहूं ॥ हेअर्जुन तूंभी इसप्रकारका हमारा अनन्यभक्तहैं ॥ यातैंमैंपरमेश्वर तुमारेकूंभी अत्यंतसुलभहूं ॥ यातैं तूं किसीप्रकारका भयमतकर इति ॥ ईहां (अनन्यचेताः)इसवचनकरिकै श्रीभगवान्नैं तिसपरमेश्वरकेस्मरणविषे अतिआदररूपसत्कार कथनकऱ्या॥ और (सततम्)इसवचनकरिकैनिरंतरताकथनकरी और (नित्यशः)इसवचनकरिकै दीर्घकालता कथनकरी ॥ ताकहणेकरिकै श्रीभगवान्नैं (सतुदीर्घकालनैरंतर्य्यसत्कारसेवितोदृढभूमिः)इससूत्रउक्त पतंजलिकामत अनुसरणकऱ्या ॥ यद्यपि इससूत्रविषे सःइसपदकरिकै पतंजलिनैं अभ्यासका कथनकऱ्याहै ॥ और ईहां श्रीभगवान्नैं (मांस्मरति) यावचनकरिकै स्मरणका कथनकऱ्याहै ॥ तथापि तिसअभ्यासका परमेश्वरकेस्मरणविषेहीं परिअवसानहै यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ दूसरेसर्वविक्षेपोंतैंरहितहोइकै अतिआदरपूर्वक तथाजीवतकालपर्यंत तथाव्यवधानतैंरहित जोनिरंतर परमेश्वरकाचिंतनहै ॥ सोपरमेश्वरकाचिंतनहीं तिसमोक्षरूपपरमगतिके प्राप्तिकाहेतुहै ॥ ऐसे परमेश्वरकेचिंतनकेप्राप्तहूए आपणीइच्छापूर्वक सुषुम्नानाडीद्वारा प्राणोंकाउत्क्रमणहोवो अथवानहींहोवो ॥ याकेविषे कोईअत्यंतआग्रहहैनहीं॥ सर्वप्रकारतैं सोपरमेश्वरकेचिंतनकरणेहारापुरुष तिसपरमगतिकूंहींप्राप्तहोवैहै इति ॥ १४ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् इसप्रकार सर्वदा परमेश्वरकाचिंतनकरिकै तिसपरमेश्वरकूंप्राप्तहुए तेअधिकारीजन पुनःआवृत्तिकूं प्राप्तहोवैहैं अथवानहीं ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए॥ श्रीभगवान् तेअधिकारीजन पुनः आवृत्तिकूं नहींप्राप्तहोवैहैं याप्रकारकाउत्तर कहेहै॥

(मू० श्लो०) मामुपेत्यपुनर्जन्मदुःखालयमशाश्वतम् ॥ नाप्नुवंतिमहात्मानःसंसिद्धिंपरमांगताः ॥ १५ ॥ माम् । उपेत्य । पुनः । जन्म । दुःखालयम् । अशाश्वतम् । न । आप्नुवंति । महात्मानः । संसिद्धिं । परमाम् । गताः ॥ १५ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन तेउपासकपुरुष मैंपरमेश्वरकूं प्राप्तहोइकै पुनः सर्वदुःखोंकेस्थानभूत नाशवान् जन्मकूं नहीं प्राप्तहोवैहै जिसकारणतैं तेमहात्माजन सर्वतैंउत्कृष्ट मोक्षकूं प्राप्तहुएहैं ॥ १५ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन यहउपासकपुरुष मैंपरमेश्वरकूंप्राप्तहोइकै पुनः मनुष्यादिकदेहकासंबंधरूपजन्मकूं प्राप्तहोतेनहीं ॥ कैसाहैसोजन्म दुःखालयहै ॥ अर्थात् गर्भवास तथायोनिद्वारतैंनिर्गमन इसतैंआदिलैके जेगर्भउपनिषदविषे दुःखकथनकरेहैं तिनसर्वदुःखोंकास्थानहै ॥ पुनःकैसाहैसोजन्म अशाश्वतहै ॥ अर्थात् स्थिरपणेतैंरहितहै तथाआपणेदर्शनकालविषेभी नाशहुएजैसाहै ॥ ऐसेशरीरकेसंबंधरूपजन्मकूं तेपुरुष प्राप्तहोतेनहीं ॥ अर्थात् तेपुरुष पुनः आवृत्तिकूंप्राप्तहोते नहीं इति ॥ अब तापुनरावृत्तिकेनहींहोणेविषे तिनउपासकपुरुषोंके हेतुरूपदोविशेषण कथनकरेहैं (महात्मानःसंसिद्धिंपरमांगताःइति) हेअर्जुन जिसकारणतैं ते पुरुष महात्माहै ॥ अर्थात् रजतमरूपमलतैंरहित शुद्धअंतःकरणवालेहैं ॥ तथा तेपुरुष परमसिद्धिकूंप्राप्तहुएहै ॥ अर्थात् तेउपासकपुरुष मैंपरमेश्वरकेलोककूं प्राप्तहोइकै तहां अनेकप्रकारकेदिव्यभोगोंकूंभोगिकै ताके अंतविषे ब्रह्मज्ञानकूंप्राप्तहोइकै सर्वतैं उत्कृष्ट कैवल्यमुक्तिकूंप्राप्तहुएहैं ॥ तिसकारणतैं तेपुरुष पुनरावृत्तिकूंप्राप्तहोतेनहीं ॥ ईहां मैंपरमेश्वरकूंप्राप्तहोइकै तेपुरुष मोक्षकूंप्राप्तहुएहैं इसवचनकेकहणेकरिकै श्रीभगवान्नैं तिनउपासकपुरुषोंकूं क्रममुक्तिकीप्राप्ति दिखाई ॥ तहां उपासनाकेबलतैं देवयानमार्गद्वारा ब्रह्मलोकविषेजाइकै तहांदिव्यभोगोंकूंभोगिकै ताकेअंतविषे तत्त्वज्ञानकरिकै जोमुक्तिकीप्राप्तिहै ताकानाम क्रममुक्तिहै ॥ यहवार्त्ता स्मृतिविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांस्मृति ॥ (ब्रह्मणासहतेसर्वेसंप्राप्तेप्रतिसंचरे॥परस्यांतेकृतात्मानः प्रविशंतिपरंपदम् ॥) अर्थयह ॥ तेउपासकपुरुष ब्रह्मलोकविषेजाइकै तहांब्रह्माकेप्रलयकीप्राप्तिहुए तत्त्वसाक्षात्कारवालेहोइकै ताब्रह्माकेनाशहुएतैंअनंतर तिसब्रह्माकेसाथिहीं विदेहमुक्तिकूंप्राप्तहोवैहैंइति ॥ ईहां मैंपरमेश्वरकूंप्राप्तहोइकै तेउपासकपुरुष मोक्षकूंप्राप्तहोवैहैं इसभगवान्केवचनतैं ब्रह्मलोकतैंभिन्न कोईविष्णुलोकजानणानहीं ॥ काहेतैं जैसे पौराणिक ब्रह्मलोक विष्णुलोक रुद्रलोक इनतीनलोकोंकी भिन्नभिन्न ऊपरिऊपरिकल्पनाकरेहैं ॥ तैसे वेदांतसिद्धांतविषे तिनलोकोंकी भिन्नभिन्नऊपरिऊपरि कल्पनाहै नहीं ॥ किंतु वेदांतसिद्धांतविषे तेसर्वलोक सत्यलोकनामाब्रह्मलोकविषेहीं अंतर्भूतहैं ॥ तहां विष्णुकेउपासकोंकूंतौ सोब्रह्मलोक विष्णुलोकहोइकै प्रतीतहोवैहै ॥ और रुद्रकेउपासकोंकूंतौ सोब्रह्मलोक रुद्रलोकहोइकै प्रतीतहोवैहै ॥ यहसर्ववार्त्ता (पराहिसोपासनकर्मोर्जितिर्हिरण्यगर्भप्राप्त्यंता) इसबृहदारण्यकउपनिषदकी

श्रुतिकेव्याख्यानविषे श्रीभाष्यकारोंनैं तथाताभाष्यकेव्याख्यानकरतावोंनैं स्पष्टकरिकैकथनकरीहै इति ॥ १५ ॥ ❀ ॥ तहां परमेश्वरकीउपासनातैं परमेश्वर कूंप्राप्तहोइके तहां तत्त्वसाक्षात्कारकूंप्राप्तहुए जेउपासकपुरुषहैं ॥ तिनउपासकपुरुषोंकी अपुनरावृत्तिकेकथनकीयेहुए तिसपरमेश्वरतैंविमुख तथातत्त्वसाक्षात्कारतैं रहित ऐसेपुरुषोंकी ताब्रह्मलोकतैंपुनरावृत्ति अर्थतैंहीं सिद्धहोवैहै ॥ इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरेहैं ॥

(मू० श्लो०) आब्रह्मभुवनाल्लोकाःपुनरावर्त्तिनोऽर्जुन ॥ मामुपेत्यतुकौंतेयपुनर्जन्मनविद्यते ॥ १६ ॥ आब्रह्मभुवनात् । लोकाः । पुनरावर्त्तिनः । अर्जुन । माम् । उपेत्य । तु । कौंतेय । पुनः । जन्म । न । विद्यते ॥ १६ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन ब्रह्मलोक सहित सर्वलोक पुनरावृत्तिवालेहींहैं हेकौंतेय एकमैंपरमेश्वरकूंहीं प्राप्तहोइके पुनः जन्म नहीं होवैहै ॥ १६ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन मैंपरमेश्वरतैंविमुख तथाअसम्यक्दर्शनवाले जितनेंकीपुरुषहै तिनसर्वपुरुषोंकूं ब्रह्मलोककेसहित सर्व भोगभूमिरूपलोक पुनरावृत्तिवालेहीं होवैहैं ॥ अर्थात् मैंपरमेश्वरतैंविमुखपुरुष ब्रह्मलोकादिकसर्वलोकोंतैं नीचैपतनहोइके पुनःजन्मकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ शंका ॥ हेभगवन् तैंपरमेश्वरकूंप्राप्तहुए अधिकारी जनोंकूंभी तिनपुरुषोंकीन्यांई क्यापुनरावृत्तिकीहींप्राप्तिहोवैहै ॥ ऐसीशंकाकेहुए श्रीभगवान् पूर्वकहेहुएअर्थकूं पुनःदृढकरावणेवासतै कहेहै ॥ (मामुपेत्यतुइति) हेकौंतेय मैंएकपरमेश्वरकूंहींप्राप्तहोइकै परमआनंदकूंप्राप्तहुए जेअधिकारीपुरुषहैं ॥ तिनअधिकारीपुरुषोंकूं पुनःकदाचित्भी जन्मनहींहोवैहै ॥ अर्थात् तिनपुरुषोंकी कदाचित्भी पुनरावृत्ति नहींहोवैहै ॥ ईहां (हेअर्जुन) यासंबोधनकरिकै श्रीभगवाननैं ताअर्जुनविषे स्वभावसिद्ध महानुभावपणा कथनकऱ्या ॥ और (हेकौंतेय) यासंबोधनकरिकै मातातैंभी महानुभावपणा कथनकऱ्या ॥ ताकहणेकरिकै आत्मज्ञानकीसिद्धिवासतै ताअर्जुनविषे स्वरूपतैंशुद्धि तथाकारणतैंशुद्धि सूचनकरी इति ॥ ईहां (आब्रह्मभवनात्) याप्रकारका जोकिसीपुस्तकविषेपाठहोवै ॥ तौभी पूर्वउक्तअर्थतैं विलक्षणतानहींहै ॥ काहेतैं (भवंत्यत्रभूतानीति भुवनम्) अर्थयह जिसविषे भूतविद्यमानहोवैं ताकानाम भुवनहै॥ याप्रकारकी व्युत्पत्तिकरिकै सोभुवनशब्द लोककावाचकहै ॥ और निवासकेस्थानकानाम भवन है ॥ सोभवनशब्दभी लोककाहींवाचकहै इति ॥ ईहां (आब्रह्मभुवनाल्लोकाःपुनरावर्तिनोऽर्जुन) इसपूर्वार्द्धकरिकै श्रीभगवाननैं ब्रह्मलोकविषेप्राप्तहुए पुरुषोंकी पुनरावृत्ति कथनकरी ॥ और (मामुपेत्यतुकौंतेयपुनर्जन्मनविद्यते) इसउत्तरार्धकरिकै तिसब्रह्मलोकतैं अपुनरावृत्ति कथनकरी ॥ याकेविषेयहव्यवस्थाहै ॥ क्रममुक्तिहैफलजिनोंका ऐसीजे दहरादिकउपासनाहै ॥ तिनउपासनावोंकरिकै जेपुरुष देवयानमार्गद्वारा तिसब्रह्मलोककूं प्राप्तहुएहैं ॥ तिनउपासकपुरुषोंकूंहीं तहां उत्पन्न हुएतत्त्वसाक्षात्कारकरिकै ब्रह्माकेसाथि मोक्षकीप्राप्तिहोवैहै ॥ यातैं तेउपासकपुरुष पुनरावृत्तिकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ औरजेपुरुष पंचाग्निविद्यादिकोंकरिकै ताब्रह्मलोक

कूं प्राप्तहुएहैं ॥ तिनपुरुषोंकूं तहां तत्त्वसाक्षात्कारकी प्राप्तिहोवैनहीं ॥ यातैं तेपुरुषतौं तहां भोगोंकूंभोगिकै अवश्यकरिकै पुनरावृत्तिकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ परंतु तेउपासकपुरुषभी जिसकल्पविषे तिसब्रह्मलोककूंप्राप्तहुएहैं ॥ तिसकल्पविषे पुनरावृत्तिकूंप्राप्तहोतेनहीं ॥ किंतु दूसरेकल्पविषे पुनरावृत्तिकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ यातैं (ब्रह्मलोकमभिसंपद्यतेनचपुनरावर्तते) इत्यादिकश्रुतियोंनैं तथा (अनावृत्तिःशब्दात्) इससूत्रनैं ब्रह्मलोकविषेप्राप्तहुएउपासकपुरुषोंकी जोपुनरावृत्ति कथनकरीहै ॥ सो क्रममुक्तिवालेउपासकपुरुषोंकी अपुनरावृत्ति कथनकरीहै ॥ और जेश्रुतिस्मृतिवचन ब्रह्मलोकविषेप्राप्तहुएपुरुषोंकी पुनरावृत्तिकूं कथनकरेहैं ॥ तेवचनतौं पंचाग्निविद्यादिकोंकरिकै ब्रह्मलोककूंप्राप्तहुएपुरुषोंके पुनरावृत्तिकूंकथनकरेहैं ॥ यातैं उपासकपुरुषोंकी ब्रह्मलोकतैं अपुनरावृत्तिकूंकथनकरणेहारेवचनोंका तथाताब्रह्मलोकतैं पुनरावृत्तिकूंकथनकरणेहारेवचनोंका परस्पर विरोधहोवैनहीं ॥ तापंचाग्निविद्याकास्वरूप आत्मपुराणकेषष्ठेअध्यायविषे हम विस्तारतैंनिरूपणकरिआयेहैं इति ॥ १६ ॥ ❋ ॥ तहां ब्रह्मलोकसहित सर्वलोक कालकरिकैपरिच्छिन्नहोणेतैं पुनरावृत्तिवालेहींहैं ॥ इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

(मू०श्लो०) सहस्रयुगपर्यंतमहर्यद्ब्रह्मणोविदुः ॥ रात्रियुगसहस्रांतांतेहोरात्रविदोजनाः ॥ १७ ॥ सहस्रंयुगपर्यंतम् । अहः । यत् । ब्रह्मणः । विदुः । रात्रिं । युगसहस्रांतां । ते । अहोरात्रविदः । जनाः ॥ १७ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन जेपुरुष ब्रह्मोके चतुर्युगसहस्रपर्यंत दिनेंकूं जानैहैं तथा चतुर्युगसहस्रपर्यंत रात्रिकूं जानेहैं ते योगीजनहीं दिनरात्रिकूंजानणेहारेहैं॥१७॥(इतिपदार्थः)॥

॥ टीका ॥ तहां सतारहलक्ष अठावीससहस्रवर्ष १७२८००० सत्ययुगका परिमाणहोवैहै ॥ और बारहलक्ष छियानवेसहस्रवर्ष १२९६००० त्रेतायुगका परिमाणहोवैहै ॥ और आठलक्ष चौसठसहस्रवर्ष ८६४००० द्वापरयुगका परिमाणहोवैहै और च्यारिलक्ष बतीससहस्रवर्ष ४३२००० कलियुगका परिमाण होवैहै ॥ यहचारोंयुग जबी एकसहस्रवार वितीतहोवैहैं ॥ तबी प्रजापतिनामाब्रह्माका एकदिनहोवैहै ॥ इसीप्रकार यहच्यारियुग जबी एकसहस्रवार वितीत होवैहैं ॥ तबी तिसब्रह्माकी एकरात्रिहोवैहै ॥ यहहीं ब्रह्माकेदिनरात्रिकापरिमाण (चतुर्युगसहस्रंतुब्रह्मणोदिनमुच्यते) इत्यादिकपुराणकेवचनोंविषेभी कथनकऱ्याहै ॥ इसप्रकारके ब्रह्माकेदिनकूं तथारात्रिकूं जेपुरुष जानेहैं तेयोगीजनहीं रात्रिदिनकेजानणेहारेकहेजावैहैं ॥ और जेपुरुष सूर्यचंद्रमाकीगतिकरिकै दिनरात्रिकूंजानेहैं ॥ तेपुरुष दिनरात्रिकेजानणेहारेकहेजावैनहीं ॥ जिसकारणतैं तेपुरुष अल्पदर्शीहैं इति ॥ १७ ॥ ❋ ॥ इसप्रकारका ब्रह्माकादिनरात्रिजबी पंचदशदिनहोवैहैं ॥ तबी ताब्रह्माका एकपक्ष कह्याजावैहै ॥ ऐसे दोपक्षोंका एकमास कह्याजावैहै ॥ ऐसेद्वादशमासोंका एकवर्ष कह्याजावैहै ॥ ऐसेएकशत वर्ष १०० ताब्रह्माकी परमआयुषहोवैहै ॥ तहां प्रथम पंचासवर्ष प्रथमपरार्द्ध कह्याजावैहै और दूसरेपंचासवर्ष द्वितीयपरार्द्ध कह्याजावैहै ॥ ऐसीशतवर्षआ

युष्कूंभोगिके सोब्रह्मा नाशकूंप्राप्तहोवैहै ॥ इसप्रकारतैं सोब्रह्माभी कालकरिकैपरिच्छिन्नहोणेतैं अनित्यहींहै ॥ यातैंक्रममुक्तितैंरहितपुरुषोंकी तिसब्रह्मलोकतैंपुन रावृत्ति युक्तहींहै ॥ और जेइंद्रादिकदेवता तिसब्रह्मातैंभीनीचैहैं ॥ तेइंद्रादिकदेवतातौं तिसब्रह्माके एकदिनरूपकालकरिकैहीं परिच्छिन्नहै ॥ यातैं तिनइंद्रादिक देवतावोंकेलोकोंतैं इनपुरुषोंकी पुनरावृत्तिहोवैहै याके विषेक्याकहणाहै ॥ इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) अव्यक्ताद्व्यक्तयःसर्वाःप्रभवंत्यहरागमे ॥ रात्र्यागमेप्रलीयंतेतत्रैवाव्यक्तसंज्ञके ॥ १८ ॥ अव्यक्तात् । व्यक्तयः । सर्वाः । प्रभवंति । अहरागमे । रात्र्यागमे । प्रलीयंते । तत्र । एव । अव्यक्तसंज्ञके ॥ १८ ॥ (इतिपद०)॥ हेअर्जुन तिसब्रह्माके दिनके आगमनविषे अव्यक्ततैं यहसर्व व्यक्तियां उत्पन्नहोवैहैं और रात्रिकेआगमनविषे तेसर्वव्यक्तियां तिसैं अव्यक्तनामाकारणविषे हीं प्रलयकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ १८ ॥ (इतिपदार्थः)॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन पूर्वजोब्रह्माकादिनकथनकऱ्याहै ॥ तादिनकेआगमविषे अर्थात् ताब्रह्माकेजाग्रतकालविषे अव्यक्ततैं यहसर्वव्यक्तियां उत्पन्नहोवैहैं ॥ यद्यपि अन्यस्थलविषे अव्यक्तशब्द अव्याकृतअवस्थाकाहीं वाचकहोवैहै ॥ तथापि ईहांअव्यक्तशब्दकरिकै अव्याकृतअवस्थाकाग्रहणकरणानहीं ॥ काहेतैं ईहांप्रसंगविषे ब्रह्माके दिनदिनविषे सृष्टिकूं तथारात्रिरात्रिविषे प्रलयकूं कथनकरणेवासतैहीं प्रारंभकऱ्याहै ॥ ताब्रह्माके दिनसृष्टिविषे तथारात्रिप्रलयविषे आका शादिकभूतोंकी उत्पत्ति तथानाश होवैनहीं ॥ किंतुते आकाशादिकभूत तहां जिउकेतिउ बनेंरहेहैं ॥ यातैं ताअव्यक्तशब्दकरिकै आकाशादिकोंकाकारणरूप अव्याकृतअवस्थाका ग्रहणकरणानहीं॥ किंतु ताअव्यक्तशब्दकरिकै ब्रह्माकेसुषुप्तिअवस्थाका ग्रहणकरणा ॥ अर्थात् सुषुप्तिअवस्थाकूंप्राप्तहुएप्रजापतिकानाम अव्य क्तहै॥ ऐसेअव्यक्ततैं शरीरविषयादिरूपभोगकीभूमियां रूपव्यक्तियां उत्पन्नहोवैहै अर्थात् पूर्वसूक्ष्मरूपकरिकैरहीहुई तेव्यक्तियांव्यवहारकरणेविषे समर्थतारूपकरिकै अभिव्यक्तिकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और तिसप्रजापतिनामा ब्रह्माके रात्रिकेआगमनविषे अर्थात् तिसब्रह्माकेसुषुप्तिकालविषेतेसर्वव्यक्तियां जिसअव्यक्तरूपकारणतैं पूर्व प्रादुर्भूतहुईयांथ्यां ॥ तिसीअव्यक्तनामाकारणविषे लयभावकूंप्राप्तहोवैहैं इति ॥ १८ ॥ ❀ ॥ इसप्रकार यहसंसार यद्यपि शीघ्रहीं विनाशकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तथापि इससंसारकी निवृत्तिहोतीनहीं॥ काहेतैं अविद्या काम कर्म इनतीनोंकरिकै परतंत्रहुआ यहसंसार पुनः पुनःप्रादुर्भावकूंप्राप्तहोवैहै॥ तथा ताप्रादुर्भावकूंप्राप्तहुए इससंसारका ताअविद्याकामकर्मवशतैं पुनःपुनः तिरोभावहोवैहै ॥ ऐसेआगमापायीसंसारविषेवर्त्तमान जितनैंकीप्राणीहैं ॥ तेप्राणीभी ताअविद्याकामकर्मकरिकै परतंत्रहींहैं ॥ ऐसेपरतंत्रप्राणीयोंकूंहीं जन्ममरणादिकदुःखोंकीप्राप्तिहोवैहै ॥ यातैं इसदुःखरूपसंसारतैं निवृत्तहोणाहींश्रेष्ठहै याप्रकारकेवैराग्यकीउत्पत्तिवासतै तथाइससंसारका समाननामरूपकरिकैहीं पुनःपुनःप्रादुर्भावहोणेतैं कृतनाश अकृताभ्यागमरूपदोषकीनिवृत्तिकरणेवासतै श्रीभगवान् कहेहै ॥

(मू० श्लो०) भूतग्रामःसएवायंभूत्वाभूत्वाप्रलीयते ॥ रात्र्यागमेऽवशःपार्थप्रभवत्यहरागमे॥१९॥भूतग्रामः। सः। एव। अयं। भूत्वा भूत्वा। प्रलीयते। रात्र्यागमे। अवशः। पार्थ। प्रभवति। अहरागमे॥ १९॥ (इतिपदच्छेदः)॥ हेअर्जुन जोपूर्वकल्पविषेथा सोई हीं यह प्राणीयोंकासमुदाय उत्तरउत्तरकल्पविषे उत्पन्नहोइकै उत्पन्नहोइकै परतंत्रहुआ ब्रह्माके दिनकेआगमनविषेतौं उत्पन्न होवैहै और रात्रिके आगमनविषे लयहोवैहै॥ १९॥ (इतिपदार्थः)॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जोस्थावरजंगमभूतोंकासमुदाय पूर्वकल्पविषेस्थितथा ॥ सोईहीं भूतोंकासमुदाय उत्तरउत्तरकल्पविषे उत्पन्नहोवैहै ॥ कल्पकल्पविषे अन्य अन्यनवीन भूतोंकासमुदाय उत्पन्नहोवैनहीं ॥ काहेतैं जैसे तार्किकअसत्कार्यकीउत्पत्तिकूंअंगीकारकरेहैं ॥ तैसे वेदांतसिद्धांतविषे असत्कार्यकीउत्पत्ति अंगीकारहैनहीं ॥ जोकदाचित् असत्कीभीउत्पत्तिहोतीहोवै ॥ तौं नरशृंगवंध्यापुत्रकीभी उत्पत्तिहोणीचाहीये ॥ यातैं असत्कार्यकीउत्पत्तिहोवैनहीं ॥ किंतु आपणी उत्पत्तितैंपूर्व आपणेकारणविषे सूक्ष्मरूपकरिकैरह्येहुएकार्यकीहीं कारणसामग्रीकेवशतैं पुनःअभिव्यक्तिहोवैहै ॥ किंवा जोकदाचित् कल्पकल्पविषे अन्यअन्य नवीन प्राणीयोंकीउत्पत्ति अंगीकारकरीये ॥ तौं पूर्वकल्पकेअंतविषे प्राणीयोंनैं कन्येजेपुण्यपापकर्महैं तिनकर्मोंका भोगतैंविनाही नाशहोवैगा ॥ और इस कल्पकेआदिविषेउत्पन्नभयेजेप्राणीहैं ॥ तिनप्राणीयोंकूं पूर्वनहींकन्येहुएपुण्यपापकर्मोंके सुखदुःखरूपफलकाभोग होवैगा ॥ इसीकूंहीं शास्त्रविषेकृतनाश अकृताभ्यागम कहेहैं ॥ सोआत्मज्ञानतैंरहित पुरुषोंकूं कन्येहुएकर्मका फलकेभोगतैंविना नाशकहणा तथानकन्येहुएकर्मोंकेफलकाभोगकहणा शास्त्रतैंविरुद्धहै ॥ काहेतैं शास्त्रविषे यहकह्याहै ॥ (अवश्यमेवभोक्तव्यं कृतंकर्मशुभाशुभम् ॥ नाभुक्तंक्षीयतेकर्म कल्पकोटिशतैरपि ॥) अर्थयह ॥ आत्मज्ञानतैंरहितअज्ञानीपुरुषनैंजोशुभ कर्मकन्याहै अथवा अशुभकर्मकन्याहै ॥ सोशुभअशुभकर्म अवश्यकरिकैभोग्याजावैहै ॥ तिसअज्ञानीपुरुषकूंभोगदीयेतैंविना सोशुभअशुभकर्म शतकोटीकल्पों करिकैभी नाशकूंप्राप्तहोवैनहीं इति ॥ याकारणतैंभी कल्पकल्पविषे नवीनप्राणीयोंकीउत्पत्तिहोवैनहीं किंतु पूर्वपूर्वकल्पविषेस्थितप्राणीयोंकीहीं उत्तरउत्तर कल्पविषे उत्पत्तिहोवैहै ॥ किंवा यहवार्त्ता केवलयुक्तिकरिकैहींसिद्धनहींहै ॥ किंतु साक्षात्श्रुतिभगवतीहीं इसअर्थकूं कथनकरेहै ॥ तहांश्रुति ॥ (सूर्याचंद्रमसौधातायथापूर्वमकल्पयत् दिवंचपृथिवींचांतरिक्षमथोस्वरिति ॥) अर्थयह ॥ सूर्य चंद्रमा पृथिवी अंतरिक्ष स्वर्गइसतैंआदिलेके यहसर्वजगत् जिसप्रकारका पूर्वपूर्वकल्पविषेथा तिसीतिसीप्रकारका उत्तरउत्तरकल्पविषे परमेश्वर रचताभया इति ॥ सोईहीं यहस्थावर जंगमरूपभूतोंकासमुदाय अविद्याकामकर्मकरिकै परतंत्रहुआ तिसब्रह्माके दिनकेआगमनविषेतौं तिसपूर्वउक्तरूपकारणतैं प्रादुर्भावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और तिसब्रह्माके रात्रिकेआगमनविषे तिसअव्यक्तरूपकारणविषे

लयभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ इति ॥ १९ ॥ ❀ ॥ इसप्रकार अविद्याकामकर्मकेअधीनप्राणीयोंका वारंवार उत्पत्तिविनाश दिखाइके (आब्रह्मभुवनाल्लोकाःपुनरावर्तिनोऽर्जुन) इसपूर्वउक्तवचनकाअर्थ तीनश्लोकोंकरिकै उपपादनकऱ्या ॥ अब (मामुपेत्यपुनर्जन्मनविद्यते) इसपूर्वउक्तवचनकाअर्थ दोश्लोकोंकरिकै श्रीभगवान् उपपादनकरेहै ॥

(मू०श्लो०) परस्तस्मात्तुभावोन्योऽव्यक्तोव्यक्तात्सनातनः ॥ यःससर्वेषुभूतेषुनश्यत्सुनविनश्यति ॥ २० ॥ परः । तस्मात् । तु । भावः । अन्यः । अव्यक्तः । अव्यक्तात् । सनातनः । यः । सः । सर्वेषु । भूतेषु । नश्यत्सु । न । विनश्यति ॥ २० ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन जो सत्तारूपभाव तिस अव्यक्ततैं परहै तथाअत्यंतविलक्षणहै तथाइंद्रियोंकाअविषयहै ॥ तथानित्यहै सोसत्तारूप भाव सर्व भूतोंके नाशहुएभी नहीं नाशहोवैहै ॥ २० ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन सर्वकल्पितप्रपंचविषे अनुस्यूत जोसत्तारूपभावहै ॥ सोसत्तारूपभावकैसाहै ॥ पूर्वकथनकऱ्याजो चराचरस्थूलप्रपंचकाकारणभूत हिरण्यगर्भनामा अव्यक्तहै ॥ तिसअव्यक्ततैंभी परहै ॥ अर्थात् ताअव्यक्ततैं व्यतिरिक्तहै अथवा ताअव्यक्ततैं श्रेष्ठहै ॥ काहेतैं सोसत्तारूपभाव तिसहिरण्यगर्भरूपअव्यक्तकाभी कारणरूपहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् तिससत्तारूपभावकूं तिसअव्यक्ततैंव्यतिरिक्तताहुयेभी तिसअव्यक्तकीसादृश्यता होवैगी ॥ जैसे गवयकूं गौतैं व्यतिरिक्तताहुएभी गौकीसादृश्यताहै ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहेहै (अन्यःइति) हेअर्जुन सोसत्तारूपभाव तिसअव्यक्ततैं अन्यहै ॥ अर्थात् अत्यंतविलक्षणहै किसीअंशविषेभी ताअव्यक्तकेसदृशनहींहै ॥ तहांश्रुति ॥ (नतस्यप्रतिमाअस्ति ॥) अर्थयह ॥ तिससत्तारूप परमात्माकेसदृश कोईभीपदार्थहैनहीं इति ॥ शंका ॥ हेभगवन् ऐसा सत्तारूपभाव सर्वलोकोंकूं प्रत्यक्षक्युंनहींहोता ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहेहै (अव्यक्तः इति) हेअर्जुन सोसत्तारूपभाव अव्यक्तरूपहै ॥ अर्थात् रूपादिकगुणोंतैंरहितहोणेतैं चक्षुआदिकइंद्रियोंका अविषयहै ॥ तहांश्रुति ॥ (नचक्षुषापश्यतिकश्चिदेनम् ॥) अर्थयह ॥ इसआत्मादेवकूं चक्षुआदिकइंद्रियोंकरिकै कोईभीदेखसकतानहीं इति ॥ पुनःकैसाहैसोसत्तारूपभाव सनातनहै ॥ अर्थात् उत्पत्तिनाशतैंरहितहोणेतैं सर्वदानित्यहै ॥ ईहां (तस्मात्तु) यावचनविषेस्थितजो तु यहशब्दहै ॥ सोतुशब्द परित्यागकरणेयोग्य अनित्य अव्यक्ततैं तिससत्तारूपनित्यअव्यक्तविषे ग्राह्यत्वरूपविलक्षणताकूं सूचनकरेहै ॥ अथवा सोतुशब्द नैयायिकोंनैंकल्पनाकरीहुई जातिरूपसत्ताकीव्यावृत्तिकूं बोधनकरेहै काहेतैं साजातिरूपसत्ता द्रव्य गुण कर्म इनतीनपदार्थोंविषेअनुगतहुईभी सामान्य विशेष समवाय अभाव इनच्यारिपदार्थोंविषेरहैनहीं ॥ और यहचैतन्यरूपसत्तातौ सर्वपदार्थोंविषे अनुस्यूतहोइकैर

हैहै ॥ इसप्रकारकाजोसत्तारूपभावहै ॥ सोसत्तारूपभाव तिसअव्यक्तनामाहिरण्यगर्भकीन्यांई तिनसर्वभूतोंकेनाशहुएभी नाशहोवैनहीं ॥ तथा तिनसर्वभूतोंकेउत्पन्नहुएभी उत्पन्नहोवैनहीं ॥ और सोअव्यक्तनामा हिरण्यगर्भतैंआप कार्यरूपहै तथातिनभूतोंकाअभिमानीहै ॥ यातैं तिनभूतोंकेउत्पत्तिनाशकरिकै तिसहिरण्यगर्भका उत्पत्तिनाश युक्तहै ॥ और तिनभूतोंकानहींअभिमानीहै ॥ तथाअकार्यरूप जोसत्तारूप परमात्मादेवहै ॥ तिसपरमात्मादेवका तिनभूतोंकेउत्पत्तिनाशकरिकै उत्पत्तिनाश संभवतानहीं इति ॥ २० ॥ ❀ ॥ ॥ किंच

(मू० श्लो०) अव्यक्तोऽक्षरइत्युक्तस्तमाहुःपरमांगातिम् ॥ यंप्राप्यननिवर्त्ततेतद्धामपरमंमम ॥ २१ ॥ अव्यक्तः । अक्षरः । इति । उक्तः । तम् । आहुः । परमाम् । गतिम् । यम् । प्राप्य । न । निवर्त्तते । तत् । धाम । परमम् । मम ॥ २१ ॥ ॥ (इतिपदच्छेदः)
हेअर्जुन जोसत्तारूपभाव ईहां अव्यक्त अक्षर इसनामकरिकै कथनकऱ्याहै तिससत्तारूपभावकुं श्रुतिस्मृतियां परम गति कहेहैं जिससत्तारूपभावकूं प्राप्तहोइकै यहअधिकारीजन पुनः नहीं जन्मकूं प्राप्तहोवैहैं सोसत्तारूपभाव मैंपरमेश्वरका सर्वतैंउत्कृष्ट स्वरूपहीहै ॥ २१ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जोसत्तारूपभाव इसगीताशास्त्रविषे इंद्रियोंकाअविषयहोणेतैं अव्यक्त इसनामकरिकै पूर्वकथनकऱ्याहै ॥ तथा जोसत्तारूपभाव नाशतैंरहित होणेतैं अथवा सर्वत्रव्यापकहोणेतैं अक्षर इसनामकरिकै पूर्वकथनकऱ्याहै ॥ तथा अन्यश्रुतिस्मृतियोंविषेभी अव्यक्त अक्षर इसनामकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ तिससत्तारूपभावकूं श्रुतिस्मृतियां परमगतिरूपकहेहैं ॥ ईहां (परमाम्) इसशब्दकरिकै उत्पत्तिनाशतैंरहितस्वप्रकाशपरमानंदरूपका ग्रहणकरणा ॥ और मुमुक्षुजनोंकूं एकआत्माज्ञानकरिकैहीं जोपुरुषार्थ प्राप्तहोवैहै ताकानाम गतिहै ॥ अर्थात् तिससत्तारूपभावकूं श्रुतिस्मृतियां स्वप्रकाशपरमानंदस्वरूप परमपुरुषार्थरूप कहेहैं ॥ अथवा ब्रह्मलोकपर्यंत जागतिहै ॥ सागति कार्यरूपहोणेतैं अपरमाहै ॥ और यहचैतन्यसत्तारूपगतितौं कार्यकारणभावतैंरहितहोणेतैं परमाहै इति ॥ तहांश्रुति ॥ (एषास्यपरमागतिः । पुरुषान्नपरंकिंचित्साकाष्ठासापरागतिः) ॥ अर्थयह ॥ यहसतचित्आनंदस्वरूप परमात्मादेवहीं इसविद्वान्पुरुषकीपरमगतिहै ॥ ऐसेपरमात्मादेवतैंपरेकोईभीवस्तुनहींहैं किंतु सोपरमात्मादेवहीं सर्वकाअवधिहै तथापरमगतिहै इति ॥ और जिससत्तारूपभावकूं यहअधिकारीजन प्राप्तहोइकै पुनः संसारविषे पतनहोते नहीं ॥ अर्थात् पुनःजन्मकूं प्राप्तहोतेनहीं ॥ सोसत्तारूपभाव मैंपरमेश्वरका परमधामहै ॥ अर्थात् सोसत्तारूपभाव मैंपरिपूर्णविष्णुका सर्वतैं उत्कृष्ट तथासर्वउपाधियोंतैंरहित वास्तवस्वरूपहै ॥ तहांश्रुति ॥ (तद्विष्णोःपरमंपदम्) ॥ अर्थयह ॥ जिससतचित्आनंदस्वरूप अद्वितीयनिर्गुणब्रह्मकूं अहं

ब्रह्मास्मि इसप्रकार अभेदरूपतैंप्राप्तहोइकै तत्त्ववेत्तापुरुष पुनःजन्ममरणरूपसंसारकूंप्राप्तहोतेनहीं ॥ सोअद्वितीयनिर्गुणहीं विष्णुका परमपदहै ॥ अर्थात् ताविष्णुका वास्तवरूपहै इति ॥ ईहां (राहोःशिरःपुरुषस्यचैतन्यम्) इसस्थलविषे जैसे राहुशिरकेअभेदहुएभी तथापुरुषचैतन्यकेअभेदहुएभी भेदकीकल्पनाकरिकै षष्ठीविभक्तिहै ॥ वास्तवतैं राहुशिरका तथापुरुषचैतन्यका अभेदहींहैं ॥ तैसे (ममधाम) इसवचनविषेभी परमेश्वरके तथासत्तारूपधामके वास्तवतैंअभेदहुएभी भेदकीकल्पनाकरिकै षष्ठीविभक्तिहै ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ जिसअक्षरअव्यक्तरूपभावकूं श्रुतियां परमगतिरूपकहेहैं ॥ सापरमगति मैंपरमेश्वरहींहूं इति ॥ २१ ॥ ❀ ॥ तहां (अनन्यचेताःसततंयोमांस्मरतिनित्यशः ॥ तस्याहंसुलभःपार्थनित्ययुक्तस्ययोगिनः) इसश्लोककरिकै पूर्वकथनकऱ्याजो भक्तियोगहै ॥ सोभक्तियोगहीं तिसपरमगतिकेप्राप्तिकाउपायहै ॥ इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) पुरुषःसपरःपार्थभक्त्यालभ्यस्त्वनन्यया ॥ यस्यांतःस्थानिभूतानियेनसर्वमिदंततम् ॥ २२ ॥ पुरुषः । सः । परः । पार्थ । भक्त्या । लभ्यः । तु । अनन्यया । यस्य । अंतःस्थानि । भूतानि । येन । सर्वम् । इदं । ततम् ॥ २२ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन सोपूर्वउक्त निरतिशय परमात्मापुरुष अनन्य भक्तिकरिकै हीं प्राप्तहोवैहै जिसपुरुषके सर्वभूत अंतर्वर्त्तिहैं तथा जिसे पुरुषनैं यह सर्वजगत् व्याप्तकऱ्याहै ॥ २२ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन सो निरतिशय परमात्मापुरुष मैंहींहूं ॥ ऐसा मैंपरमात्मादेव एकअनन्यभक्तिकरिकैहीं प्राप्तहोताहूं ॥ तहां मैंपरमेश्वरतैंविना नहींविद्यमानहै अन्यविषय जिसविषे ऐसीजाप्रेमलक्षणाभक्तिहै ताकानाम अनन्यभक्तिहै ॥ सोनिरतिशयपुरुष कौनहै ॥ ऐसीअर्जुनकीजिज्ञासाकेहुए श्रीभगवान् कहेहै (यस्यांतःस्थानिइति) हेअर्जुन जिसकारणपुरुषके यहसर्वकार्यरूपभूत अंतर्वर्ती हैं ॥ काहेतैं इसलोकविषेभीं जोजोकार्यहोवैहै ॥ सोसोकार्य आपणेउपादानकारणकेहीं अंतर्वर्तीहोवैहै ॥ जैसे घटशरावादिककार्य मृत्तिकारूपकारणकेहीं अंतर्वर्त्तिहोवैहैं ॥ तैसे यहसर्वकार्यप्रपंचजिसकारणरूपपुरुषके अंतर्वर्त्तीहै ॥ इसीकारणतैंहीं जिसपुरुषनैं यहसर्वकार्यप्रपंचव्याप्तकऱ्याहै ॥ जैसे मृत्तिकारूपकारणनैं घटशरावादिकसर्वकार्य व्याप्तकऱ्येहैं ॥ तहांश्रुति ॥ (यस्मात्परंनापरमस्तिकिंचित् यस्मान्नाणीयोनज्यायोस्तिकश्चित् ॥ वृक्षइवस्तब्धोदिवितिष्ठत्येकस्तेनेदंपूर्णंपुरुषेणसर्वम् ॥ यच्चकिंचिज्जगत्यस्मिन् दृश्यतेश्रूयतेपिवा ॥ अंतर्बहिश्चतत्सर्वंव्याप्यनारायणःस्थितः ॥) अर्थयह ॥ जिसपरमात्मादेवतैं कोईभीवस्तु पर तथाअपर नहींहै ॥ तथाजिसपरमात्मादेवतैं कोईभीवस्तु अत्यंतअणु तथाअत्यंतमहान् नहींहै ॥ तथा जोअद्वितीयपरमात्मादेव महान् वृक्षकीन्यांई चलायमानतातैंरहितहै ॥ तथा आपणेस्वयंज्योतिःस्वरूपविषेस्थितहै ॥ तिसपरमात्मादेवपुरुषनेहींयहसर्वजगत् पूर्णकऱ्याहै ॥

और इसजगत्‌विषे जोकोईवस्तु देखणेविषेआवैहै ॥ तथाश्रवणकऱ्याजावैहै ॥ तिससर्वजगत्‌कूं अंतरबाह्यतैंव्याप्यकरिकैहीं नारायणस्थितहै इति ॥ इत्यादिक अनेकश्रुतियां तिसपरमात्मादेवकीव्यापकताकूं कथनकरेहैं ॥ ऐसामैंपरमात्मादेव केवलअनन्यभक्तिकरिकैहीं प्राप्तहोवूंहूं ईहां मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारकाजो तत्त्वज्ञानहै सोईहीं तिसपरमात्मादेवकीप्राप्तिहै ॥ तिसतत्त्वज्ञानकीप्राप्तिका परमेश्वरकीअनन्यभक्तिहीं उपायहै ॥ यहवार्त्ता श्रुतिविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ (यस्यदेवेपराभक्तिर्यथादेवेतथागुरौ ॥ तस्यैतेकथिताह्यर्थाः प्रकाशंतेमहात्मनः ॥) अर्थयह ॥ जिसअधिकारीपुरुषकी परमेश्वरविषे अनन्यभक्तिहै ॥ और जैसी परमेश्वरविषे अनन्यभक्तिहै तैसीहीं गुरुविषेअनन्यभक्तिहै ॥ तिसमहात्मापुरुषकूंहीं यहवेदांतकरिकैप्रतिपादितअर्थ अपरोक्षहोवैहैं ॥ ताभक्तितैंरहितपुरुषकूं ते अर्थ अपरोक्षहोतेनहीं ॥ यातैं जिज्ञासुजनकूं सापरमेश्वरकीभक्ति अवश्यकर्त्तव्यहै इति ॥ २२ ॥ ❀ ॥ तहां पूर्व यहवार्त्ता कथनकरीथी ॥ जोसगुणब्रह्मके उपासक तिससगुणब्रह्मकूंप्राप्तहोइके पुनः आवृत्तिकूंप्राप्तहोतेनहीं ॥ किंतु तहां क्रममुक्तिकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ तहां तिससगुणब्रह्मलोकके भोगतैंपूर्व नहींउत्पन्नभयाहै आत्मसाक्षात्कारजिनोंकूं ऐसेजेउपासकपुरुषहैं ॥ तिनउपासकपुरुषोंकूं ताब्रह्मलोकविषे जाणेवासतैं मार्गकीअपेक्षा अवश्यकरिकैरहेहैं ॥ तत्त्ववेत्तापुरुषोंकीन्यांई तिन उपासकपुरुषोंकूं मार्गकीअनपेक्षा नहींहै ॥ यातैं उपासकपुरुषोंकूं तिसब्रह्मलोककीप्राप्तिवासतै श्रीभगवान् देवयानमार्गकाकथनकरेहै ॥ और पितृयाणमार्गका जोईहांकथनकऱ्याहै ॥ सो तिसदेवयानमार्गकीस्तुतिवासतैंकथनकऱ्याहै ॥

(मू० श्लो०) यत्रकालेत्वनावृत्तिमावृत्तिंचैवयोगिनः ॥ प्रयातायांतितंकालंवक्ष्यामिभरतर्षभ ॥ २३ ॥ यत्र । काले । तु । अनावृत्तिम् । आवृत्तिम् । च । एव । योगिनः । प्रयाताः । यांति । तं । कालं । वक्ष्यामि । भरतर्षभ ॥ २३ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन जिसे मार्गविषे जाणेहारे उपासककर्मीपुरुष अनावृत्तिकूं तथा आवृत्तिकूं हीं प्राप्तहोवैहैं तिसे मार्गकूं मैं कथनक रताहूं ॥ २३ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन इसशरीरतैंप्राणोंकेउत्क्रमणतैंअनंतर जिसकालविषे जाणेहारे योगीपुरुष अर्थात् दिनरात्रि आदिककालकेअभिमानीदेवतावोंकरिकैउपलक्षितमार्गविषे जाणेहारेयोगीपुरुष अनावृत्तिकूं तथाआवृत्तिकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ सोकाल मैं तुमारेप्रति कथनकरताहूं ॥ अर्थात् ताकालकेअभिमानीदेवताओंकरिकैउपलक्षित सोअनावृत्तिकामार्ग तथाआवृत्तिकामार्ग मैं तुमारेप्रति कथनकरताहूं ॥ ईहां (योगिनः) यापदकरिकै उपासकपुरुषोंका तथाकर्मीपुरुषोंका दोनोंका ग्रहणकरणा ॥ तहां देवयानमार्गविषे जाणेहारे उपासकपुरुषतौं अनावृत्तिकूं प्राप्तहोवैहै ॥ और पितृयाणमार्गविषे जाणेहारे कर्मीपुरुषतौं आवृत्तिकूं प्राप्तहोवैहैं ॥

यद्यपि देवयानमार्गविषे जाणेहारे उपासकपुरुषभी पुनरावृत्तिकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ यहवार्त्ता (आब्रह्मभुवनाल्लोकाःपुनरावर्त्तिनोऽर्जुन) इसवचनविषे पूर्वकथनकरीहै ॥ तथापि पितृयाणमार्गविषे जाणेहारे जितनैंकीकर्मीपुरुषहैं ॥ तेसर्वकर्मीपुरुष नियमकरिकै आवृत्तिकूंहींप्राप्तहोवैहैं ॥ कोईभीकर्मीपुरुष तहां क्रममुक्तिकूंप्राप्तहोता नहीं ॥ और देवयानमार्गविषे जाणेहारे जेउपासकपुरुषहैं तिनउपासकोंकेमध्यविषे यद्यपि केईकउपासकपुरुष ताब्रह्मलोकविषे भोगोंकूंभोगिकै अंतविषे पुनःआवृत्तिकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ जैसे पंचाग्निविद्यादिकउपासनाकरिकै तादेवयानमार्गद्वारा ब्रह्मलोकविषेप्राप्तहुएभी तेउपासकपुरुष पुनः आवृत्तिकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तथापि जेउपासकपुरुष दहरविद्यादिकउपासनावोंकरिकै तादेवयानमार्गद्वारा ब्रह्मलोककूंप्राप्तहुएहैं ॥ तेउपासकपुरुषतौ पुनः आवृत्तिकूंप्राप्तहोतेनहीं ॥ किंतु ब्रह्मलोककेभोगोंकेअंतविषे क्रममुक्तिकूंहीं प्राप्तहोवैहैं ॥ यातैं तादेवयानमार्गद्वारा ब्रह्मलोकविषेप्राप्तहुए उपासकपुरुष सर्वहीं आवृत्तिकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ इसीकारणतैंहीं पितृयाणमार्ग नियमकरिकै आवृत्तिरूपफलवालाहोणेतैं निकृष्टहै ॥ और यहदेवयानमार्गतौ अनावृत्तिरूपफलवालाहोणेतैं उत्कृष्टहै ॥ याप्रकारतैं तिसदेवयानमार्गकीस्तुति संभवैहै ॥ यद्यपि तादेवयानमार्गद्वारागएहुए कितनैंकीपुरुषोंकी पुनः आवृत्तिहोवैहै॥ तथापि तादेवयानमार्गद्वारा गएहुए कितनैंकीउपासकपुरुषोंकी पुनःआवृत्तिहोतीनहीं ॥ यातैं तादेवयानमार्गविषे अनावृत्तिरूपफलवत्ता संभवैहै ॥ ईहां (यत्रकाले तंकालम्) यावचनविषेस्थितजो काल यहशब्दहै ॥ ताकालशब्दकी दिनरात्रिआदिककालकेअभिमानीदेवतावोंकरिकैउपलक्षितमार्गविषे जोलक्षणानहींअंगीकारकरीये ॥ किंतु ताकालशब्दका यहश्रुतमुख्यअर्थहीं अंगीकारकरीये ॥ तौ वक्ष्यमाणश्लोकविषे (अग्निर्ज्योतिर्धूमः) इनशब्दोंकीअनुपपत्तिहोवैगी ॥ जिसकारणतैं इनशब्दोंकेअर्थोविषे कालरूपताहैनहीं ॥ तथा स्पष्टमार्गकेवाचकजो वक्ष्यमाण गति सृति यह दोशब्दहै तिनोंकीभीअनुपपत्तिहोवैगी ॥ याकारणतैं कालशब्दकी तामार्गविषेलक्षणाअंगीकारकरीहै ॥ और तिनदोनोंमार्गोंविषे कालकेअभिमानी देवतावहुतहैं ॥ यातैं श्रीभगवान्नैं तामार्गकाउपलक्षक कालशब्द कथनकऱ्याहै इति ॥ २३ ॥ ❀ ॥ तहां प्रथमउपासकपुरुषोंके देवयानमार्गकूं श्रीभगवान् कथनकरैहै ॥

(मू० श्लो०) अग्निर्ज्योतिरहःशुक्लःषण्मासाउत्तरायणम् ॥ तत्रप्रयातागच्छंतिब्रह्मब्रह्मविदोजनाः ॥ २४ ॥ अग्निः । ज्योतिः । अहः । शुक्लः । षण्मासाः । उत्तरायणम् । तत्र । प्रयाताः । गच्छंति । ब्रह्म । ब्रह्मविदः । जनाः । ॥ २४ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन जिसमार्गविषे ज्योतिरूप अग्नि तथादिन तथाशुक्लपक्ष तथाषट्मासरूप उत्तरायण इत्यादिक स्थितहैं तिसदेवयानमार्गविषे गमनकरणेहारे सगुणब्रह्मकेउपासक जन तिससगुणब्रह्मकूं प्राप्तहोवैहै ॥ २४ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जिसदेवयानमार्गविषे प्रथमज्योतिरूपअग्नि स्थितहै ॥ तिसतैंअनंतर दिवसस्थितहै ॥ तिसतैंअनंतर शुक्लपक्ष स्थितहै ॥ तिसतैंअनंतर षट्मासरूपउत्तरायणस्थितहै ॥ ईहां (अग्निर्ज्योतिः) इसशब्दकरिकै अग्निकेअभिमानीदेवताका ग्रहणकरणा ॥ इसीअग्निकूं श्रुतिविषेआर्चिः यानामकरिकै कथनकर्‍याहै ॥ और (अहः) इसशब्दकरिकै दिनकेअभिमानीदेवताका ग्रहणकरणा ॥ और (शुक्लः) इसपदकरिकै शुक्लपक्षकेअभिमानीदेवताका ग्रहण करणा ॥ और (षण्मासाउत्तरायणम्) इसवचनकरिकै षट्मासरूपउत्तरायणकेअभिमानीदेवताका ग्रहणकरणा ॥ यहकथनकरणेहुएदेवता श्रुतिउक्तदूसरेदेव ताओंकेभी उपलक्षकहै ॥ तहांश्रुति ॥ (तेऽर्चिरभिसंभवंत्यर्चिषोऽहरह्नआपूर्यमाणपक्षमापूर्यमाणपक्षाद्यान्षडुदङ्ङेतिमासांस्तान्मासेभ्यः संवत्सरं संवत्सरादा दित्यमादित्याच्चंद्रमसंचंद्रमसोविद्युतंतत्पुरुषोऽमानवः सएतान्ब्रह्मगमयत्येषदेवपथोब्रह्मपथएतेनप्रतिपद्यमानाइमंमानवमावर्त्तंनावर्त्तंतेइति) ॥ अर्थयह ॥ तेउपास कपुरुष प्रथम अर्चिकेअभिमानीदेवताकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ तिसतैंअनंतर दिनकेअभिमानीदेवताकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ तिसतैंअनंतर शुक्लपक्षकेअभिमानीदेवताकूं प्राप्तहो वैहैं ॥ तिसतैंअनंतर षट्मासरूपउत्तरायणकेअभिमानीदेवताकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ तिसतैंअनंतर संवत्सरकेअभिमानीदेवताकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ तिसतैंअनंतर आदित्यकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ तिसतैंअनंतर चंद्रमाकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ तिसतैंअनंतर विद्युतकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ तहां अमानवपुरुष आइकै इनउपासकपुरुषोंकूं ब्रह्मलोकविषे लेजा वैहैं ॥ इसीकानाम देवमार्गहै तथाब्रह्ममार्गहै ॥ इसदेवयानमार्गकरिकै ब्रह्मलोककूंप्राप्तहुए यहउपासकपुरुष इसमानवआवर्त्तकूं नहींप्राप्तहोवैहैं इति ॥ तहां इस श्रुतिविषे दूसरी श्रुतिकेअनुसार संवत्सरतैंअनंतर देवलोकदेवता तिसतैंअनंतर वायुदेवता तिसतैंअनंतर आदित्यदेवताका ग्रहणकरणा ॥ तथा विद्युतकेअनंतर वरुण इंद्र प्रजापति इनतीनोंदेवतावोंका ग्रहणकरणा ॥ इसप्रकार श्रीभाष्यकारोंने निर्णयकरयाहै ॥ तहां तिसउपासकपुरुषकूं प्रथमतौं अग्निदेवतालेजावैहैं ॥ ताअग्निलोकतैं दिनकाअभिमानीदेवता आपणेलोकविषेलेजावैहै ॥ यहरीति आगेभीजानलेणी ॥ और विद्युतलोकविषे ब्रह्मलोकवासीअमानवपुरुष आइकै ताउपासकपुरुषकूं वरुणलोकविषे लेजावैहै ॥ ताउपासक तथाअमानवपुरुष दोनोंकेसाथि विद्युतकाअभिमानीदेवता तावरुणलोकपर्यंत जावैहै ॥ तिसतैंअनंतर सोवरुणदेवता तिनदोनोंकेसाथि इंद्रलोकपर्यंतजावैहै ॥ तिसतैंअनंतर सोइंद्रदेवता तिनदोनोंकेसाथि प्रजापतिकेलोकपर्यंतजावैहै ॥ तिसतैंअनंतर प्रजापतिकूं ताब्रह्मलोकविषे जाणेकासामर्थ्यहैनहीं ॥ यातैं केवलअमानवपुरुषहीं ताउपासककूं ब्रह्मलोकविषेलेजावैहै ॥ ईहां प्रजापतिशब्दकरिकैविराट्काग्रहणकरणा इति ॥ तहां श्रीभगवान्नेतो अग्निकाअभिमानीदेवता दिनकाअभिमानीदेवता शुक्लपक्षकाअभिमानीदेवता उत्तरायणकाअभिमानीदेवता यहच्यारिदेवताहीं ईहां कथनकरेहैं ॥ संवत्सर देवलोक वायु आदित्य चंद्रमा विद्युत वरुण इंद्र प्रजापति यहसर्वदेवता ईहांकथनकरेनहीं ॥ तौंभी ताश्रुतिकेअनुसार तिनसर्वदेवता

वोंका ईहांग्रहणकरणा इति ॥ जिसमार्गविषे यहअग्नितैंआदिलैकेप्रजापतिपर्यंत सर्वदेवता स्थितहैं ॥ तिसदेवयानमार्गविषे गमनकरणेहारे सगुणब्रह्मकेउपासक जन तिसहिरण्यगर्भरूप सगुणब्रह्मकूंहीं प्राप्तहोवैहैं ॥ तिससगुणब्रह्मद्वाराहीं तेउपासकपुरुष निर्गुणब्रह्मकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ यहवार्त्ता (कार्यंबादरिरस्यगत्युपपत्तेः) इससूत्रविषे भगवान्भाष्यकारोंनें विस्तारतैं कथनकरीहै ॥ ईहां (एतेनप्रतिपद्यमानाइमंमानवमावर्तंनावर्तंते) इसश्रुतिविषे इमं यहविशेषणकथनकरयाहै ॥ ताविशे षणतैं यहअर्थ प्रतीतहोवैहैं ॥ इसकल्पतैंअनंतर दूसरेकल्पविषे केईकपंचाग्निविद्यावाले उपासकपुरुष तिसब्रह्मलोकतैं पुनःआवृत्तिकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तिनोंकीहीं श्रीभगवान्नैं (आब्रह्मभुवनाल्लोकाःपुनरावर्तिनः) इसवचनकरिकैआवृत्ति कथनकरीहै इसीकारणतैंही ईहां श्रीभगवान्नैंउक्तमार्गका श्रुतिप्रतिपादितमार्गकेकथन करिकैहीं व्याख्यानकरयाहै ॥ इसदेवयानमार्गका विस्तारतैंकथनतौं आत्मपुराणकेषष्ठेअध्यायविषे प्रसिद्धहै इति ॥ २४ ॥ ❀ ॥ अबइसपूर्वउक्तदेवयानमा र्गकीस्तुतिकरणेवासतै श्रीभगवान् पितृयाणमार्गकूंकथनरेहै ॥

(मू० श्लो०) धूमोरात्रिस्तथाकृष्णःषण्मासादक्षिणायनम् ॥ तत्रचांद्रमसंज्योतिर्योगीप्राप्यनिवर्त्तते ॥ २५ ॥ धूमः । रात्रिः । तथा । कृष्णः । षण्मासाः । दक्षिणायनम् । तत्र । चांद्रमसम् । ज्योतिः । योगी । प्राप्य । निवर्त्तते ॥ २५ ॥ (इतिपदच्छेदः) हेअर्जुन जिसमार्गविषे धूम तथारात्रि तथा कृष्णपक्ष तथाषट्मासरूप दक्षिणायन इत्यादिकस्थितहैं तिसमार्गविषे गमनकरणे हारे कर्मीपुरुष चंद्रमातैंप्राप्तहुए कर्मकेफलकूं प्राप्तहोइकै पुनःआवृत्तिकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ २५ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जिसपितृयाणमार्गविषे प्रथम धूम स्थितहै ॥ तिसतैंअनंतर रात्रि स्थितहै ॥ तिसतैंअनंतर कृष्णपक्षस्थितहै ॥ तिसतैंअनंतर षट्मास रूपदक्षिणायन स्थितहै ॥ ईहांभी (धूमः) इसशब्दकरिकै धूमकेअभिमानीदेवताका ग्रहणकरणा ॥ और (रात्रिः) इसशब्दकरिकै रात्रिकेअभिमानीदेवताका ग्रहणकरणा ॥ और (कृष्णः) इसशब्दकरिकै कृष्णपक्षकेअभिमानीदेवताका ग्रहणकरणा ॥ और (षण्मासादक्षिणायनम्) इसवचनकरिकै षट्मासरूपद क्षिणायनकेअभिमानीदेवताका ग्रहणकरणा ॥ ईहांभी यहकथनकरयेहुए धूमादिकच्यारिदेवता श्रुतिउक्तदूसरेदेवतावोंकेभी उपलक्षकहैं ॥ तहांश्रुति ॥ (तेधूममभिसंभवंतिधूमाद्रात्रिंरात्रेरपरपक्षमपरपक्षाद्यान्षड्दक्षिणेतिमासांस्तान्मासेभ्यः पितृलोकंपितृलोकादाकाशमाकाशाच्चंद्रमसंतस्मिन्यावत्संपातमुषित्वाथैतमे वाध्वानंपुनर्निवर्त्तंतेइति ॥) अर्थयह ॥ तेकर्मीपुरुष प्रथम धूमकेअभिमानीदेवताकूंप्राप्तहोवैहैं तिसतैंअनंतर रात्रिकेअभिमानी देवताकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तिसतैंअनंतर कृष्णपक्षकेअभिमानीदेवताकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ तिसतैंअनंतर षट्मासरूपदक्षिणायनकेअभिमानीदेवताकूं प्राप्तहोवैहैं तिसतैंअनंतर पितृलोककेअभिमानीदेवताकूंप्राप्तहो

वैहैं ॥तिसतैंअनंतर आकाशकेअभिमानीदेवताकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तिसतैंअनंतर चंद्रमाकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तास्वर्गनामा चंद्रलोकविषे पुण्यकर्मोंके भोगकालपर्यंतनिवास करिकै पश्चात् परिशेषतैं रहेहुए पुण्यपापकर्मोंकेवशतैं पुनःतिसमार्गद्वारा निवृत्तहोवैहैं इति ॥ ईहांश्रीभगवान्‌नैंधूमकाअभिमानीदेवता रात्रिकाअभिमानीदेवता कृष्णपक्षकाअभिमानीदेवता दक्षिणायनकाअभिमानीदेवता यहच्यारिदेवताहीं कथनकरेहैं॥पितृलोककाअभिमानीदेवता आकाशकाअभिमानीदेवता चंद्रमादेवता यहतीनदेवता कथनकरेनहीं॥ तौंभी इसश्रुतिकेअनुसार तेतीनोंदेवताभी ईहांग्रहणकरणे ॥ इसप्रकार धूमकेअभिमानीदेवतातैं आदिलैकै चंद्रमा देवतापर्यंत कथन करेहुए सर्वदेवता जिसमार्गविषेस्थितहै ॥ तिसपितृयाणमार्गविषे गमनकरणेहारे इष्ट पूर्त्त दत्त इनतीनप्रकारकेकर्मोंकूंकरणेहारेकर्मीपुरुष ताचंद्रलोकविषे चंद्रमातैं प्राप्तहुये तिनकर्मोंकेसुखरूपफलकूंप्राप्तहोइकै तिनकर्मोंकेक्षयतैंअनंतर पुनः इसमनुष्यलोकविषे आवृत्तिकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ यातैं इसपितृयाणनामा आवृत्तिकेमार्गतैं सोदेवयाननामा अनावृत्तिकामार्ग अत्यंतश्रेष्ठहै ॥ ईहां अग्निहोत्रादिककर्मोंकानाम इष्टकर्महै ॥ और वापी कूप तलाव धर्मशाला इत्यादिककर्मोंकानाम पूर्त्तकर्महै ॥ और सुपात्रकेप्रति गौसुवर्णादिकपदार्थोंकादानकरणा याकानाम दत्तकर्महै ॥ इनतीनप्रकारकेकर्मोंकास्वरूप पूर्वभी विस्तारतैंकथनकरिआयेहैं इति ॥ २५ ॥ ❀ ॥

अब इनपूर्वउक्तदोनोंमार्गोंका उपसंहारकरेहैं ॥

(मू०श्लो०) शुक्लकृष्णेगतीह्येतेजगतःशाश्वतेमते ॥ एकयायात्यनावृत्तिमन्ययावर्त्ततेपुनः॥ २६ ॥ शुक्लकृष्णे । गती । हि । एते । जगतः । शाश्वते । मते । एकया । याति । अनावृत्तिम् । अन्यया । आवर्त्तते । पुनः ॥ २६ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन इनलोकोंके यह प्रसिद्ध शुक्लकृष्ण दोनों मार्ग अनादिसिद्धहैं तिनदोनोंमार्गोंविषे एकशुक्लमार्गकरिकैतौं कोईकउपासकपुरुष अनावृत्तिकूं प्राप्तहोवैहैं और दूसरेकृष्णमार्गकरिकैतौं सर्वहींजन पुनः आवृत्तिकूंप्राप्तहोवैहैं॥ २६ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन पूर्व ब्रह्मलोककेप्राप्तिका मार्गरूपकरिकैकथनकरयाजो देवयानमार्गहै ॥ सोदेवयान मार्ग ज्ञानरूपप्रकाशकीअधिकतावाले अग्नि आदिकदेवतावोंकरिकैयुक्तहै ॥ तथाप्रकाशरूप सगुणब्रह्मविद्याकरिकैप्राप्तहोवैहै ॥ तथा प्रकाशमयलोकभी तिसमार्गविषे बहुतहैं ॥ तथा स्वप्रकाशब्रह्मकेप्राप्तिकाहेतु होणेतैं उत्कृष्टहै ॥ तथाज्ञानरूपप्रकाशमयहै ॥ याकारणतैं सोदेवयानमार्ग शुक्ल इसनामकरिकै कह्याजावैहै ॥ और पूर्व स्वर्गलोककेप्राप्तिका मार्गरूपकरिकै कथनकरयाजो पितृयाणमार्गहै ॥ सोपितृयाणमार्गतौं ज्ञानरूपप्रकाशतैंरहितहोणेतैं तमोमयहै ॥ तथा अप्रकाशरूप धूमरात्रिआदिकोंकरिकैयुक्तहै ॥ तथा पुनःसंसारकाहेतुहोणेतैं निकृष्टहै ॥ याकारणतैं सोपितृयाणमार्ग कृष्ण इसनामकरिकैकह्याजावैहै ॥ इसप्रकार शुक्लकृष्णनामकरिकैप्रसिद्ध यहपूर्वउक्तदोनोंमार्ग इसजग

तके अनादिसिद्धहैं ॥ अर्थात् यहसंसार प्रवाहरूपकरिकैअनादिहै ॥ यातैं तासंसारविषेवर्त्तणेहारे तेदोनोंमार्गभी अनादिहींहैं ॥ यद्यपि जगत् यहशब्द प्राणीमात्रकावाचकहै ॥ तथापि ईहां जगत्शब्दकरिकै सगुणविद्याकेअधिकारी तथाकर्मोंकेअधिकारी जेशास्त्रज्ञमनुष्यहैं तिनोंकाहींग्रहणकरणा ॥ प्राणीमात्रकाग्रहण करणानहीं ॥ काहेतैं तेदोनोंमार्ग सर्वप्राणिमात्रकूं प्राप्तहोतेनहीं किंतु केवल उपासककर्मीपुरुषोंकूंहीं प्राप्तहोतेहैं ॥ कर्मउपासनातैंरहित पापात्माअज्ञानीपुरुषोंकूंतौं अधोगतिकूंप्राप्तकरणेहारा तृतीयस्थाननामा मार्गहीं प्राप्तहोवैहै ॥ यातैं ईहांजगत्शब्दकरिकै उपासकपुरुषोंका तथाकर्मीपुरुषोंकाहीं ग्रहणकरणाउचित है इति ॥ हेअर्जुन तिनदोनोंमार्गोंविषे प्रथम देवयानरूपशुक्लमार्गकरिकै ब्रह्मलोकविषेप्राप्तहुए उपासकपुरुषोंविषेकेईकउपासकपुरुष अनावृत्तिकूंहीं प्राप्तहोवैंहै ॥ तहांश्रुति ॥ (नचपुनरावर्त्ततेइति ॥) अर्थयह ॥ सोक्रममुक्तिवाला उपासकपुरुष पुनःआवृत्तिकूंप्राप्तहोतानहीं इति ॥ और दूसरे पितृयाणनामा कृष्णमार्गकरिकै स्वर्गविषेप्राप्तहुए कर्मीपुरुषतौं सर्वहीं पुनःआवृत्तिकूंप्राप्तहोवैंहैं ॥ तहांश्रुति ॥ (प्राप्यांतंकर्मणस्तस्य यत्किंचेहकरोत्ययम् ॥ तस्मा ल्लोकात्पुनरेति अस्मैलोकायकर्मणे) ॥ अर्थयह ॥ यहपुरुष इसमनुष्यलोकविषे जोजोपुण्यकर्मकरैहै ॥ तिसपुण्यकर्मकेवशतैं स्वर्गलोकविषेजाइकै तिस पुण्यकर्मोंकूंभोगतैंनाशकरिकै तिसलोकतैं पुनः इसमनुष्यलोककीप्राप्तिवासतै आवैहै इति ॥ २६ ॥ ❀ ॥ तहांजैसे सगुणब्रह्मकीउपासना ताब्रह्मलोककेप्राप्तिकाकारणहै ॥ तैसे तादेवयानमार्गकाचिंतनभी कारणहै ॥ यातैं तामार्गकीउपासनाकरावणेवासतै श्रीभगवान् तामार्गकेज्ञानकीस्तुतिकरैहै ॥

(मू० श्लो०) नैतेसृतीपार्थजानन्योगीमुह्यतिकश्चन ॥ तस्मात्सर्वेषुकालेषुयोगयुक्तोभवार्जुन ॥ २७ ॥ न । एते । सृती । पार्थ । जानन् । योगी । मुह्यति । कश्चन । तस्मात् । सर्वेषु । कालेषु । योगयुक्तः । भव । अर्जुन ॥ २७ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेपार्थ इनपूर्वउक्त दोनोंमार्गोंकूं जानताहुआ कोईभी ध्यानपरायणपुरुष नहीं मोहकूंप्राप्त होवैहै तिसकारणतैं हेअर्जुन सर्व कालविषे तूं ध्यानपरायण होउं ॥ २७ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन यहदेवयाननामा शुक्लमार्गतौं क्रममुक्तिकीहीं प्राप्तिकरणेहाराहै ॥ और यहपितृयाणनामा कृष्णमार्गतौं पुनः संसारकीही प्राप्तिकरणेहाराहै ॥ याप्रकारतैं इनदोनोंमार्गोंकूंजानणेहारा सगुणब्रह्मकेध्यानपरायण पुरुष कोईभी मोहकूंप्राप्तहोतानहीं ॥ अर्थात् तापितृयाणमार्गकीप्राप्तिकरणेहारे जोइष्टपूर्त्तकर्महै तेकर्महीं हमारेकूंकर्त्तव्यहै अन्यकछुकर्त्तव्यहै नहीं याप्रकारतैं केवल तिनकर्मोंकूंहीं कर्त्तव्यतारूपकरिकै निश्चयकरतानहीं ॥ हेअर्जुन जिसकारणतैं सोसगुणब्रह्म

काध्यानरूपयोग अपुनरावृत्तिरूपफलकीहीं प्राप्तिकरणेहाराहै ॥ तिसकारणतैं तूंअर्जुन तिसअपुनरावृत्तिरूपफलवासतैं तिसयोगकरिकै युक्तहोउ ॥ अर्थात् समाहितचित्तवालाहोउ इति ॥ २७ ॥ ❀ अबताध्यानरूपयोगविषे अधिकारीजनोंकेश्रद्धाकीवृद्धिकरावणेवासतै श्रीभगवान् पुनः तायोगकीस्तुतिकरेंहै ॥

(मू० श्लो०) वेदेषुयज्ञेषुतपःसुचैवदानेषुयत्पुण्यफलंप्रदिष्टम् ॥ अत्येतितत्सर्वमिदंविदित्वायोगीपरंस्थानमुपैतिचाद्यम् ॥ २८ ॥ इतिश्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सुब्रह्मविद्यायांयोगशास्त्रेश्रीकृष्णार्जुनसंवादेमहापुरुषयोगोनामअष्टमोऽध्यायः समाप्तः ॥ ८ ॥ वेदेषु । यज्ञेषु । तपःसु । च । एव । दानेषु । यत् । पुण्यफलं । प्रदिष्टम् । अत्येति । तत् । सर्वम् । इदं । विदित्वा । योगी । परं । स्थानम् । उपैति । च । आद्यम् ॥ २८ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन वेदोंविषे तथायज्ञोंविषे तथा तपोंविषे तथा दानोंविषे जो पुण्यकास्वर्गादिकफलशास्त्रनैं कथनकऱ्याहै तिस सर्वकूं सोध्याननिष्ठपुरुष इसपूर्वअर्थकूं जानिकै अतिक्रमणकरेहैतथा सर्वतैंउत्कृष्ट कारणरूप स्थानकूंभी प्राप्तहोवैहै ॥ २८ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हे अर्जुन वेदोंकेअध्ययनकालविषे शास्त्रनैं जेब्रह्मचर्यादिकनियमकथनकरेहैं ॥ तिननियमोंकेपालनपूर्वक व्याकरणादिकषट्अंगोंसहित अध्ययनकऱ्येजेऋगादिकवेदहैं ॥ तिनवेदोंकेअध्ययनकीयेहुए ताअध्ययनकरतापुरुषकूं शास्त्रनैंजोपुण्यकाफल कथनकऱ्याहै ॥ और अंगउपअंगोंसहित तथाश्रद्धापूर्वक सम्यक्अनुष्ठानकऱ्येहुए जे अश्वमेधादिकयज्ञहैं ॥ तिनयज्ञोंकेकीयेहूए तिसयज्ञकरतापुरुषकूं शास्त्रतैं जोपुण्यकाफल कथनकऱ्याहै ॥ और मनबुद्धिआदिकोंकीएकाग्रताकरिकै श्रद्धापूर्वक कऱ्येहुएजेशास्त्रविहित कृच्छ्रचांद्रायणादिकतपहैं ॥ तिनतपोंकेकीयेहुए तिसतपकरता पुरुषकूंशास्त्रनैं जोपुण्यकाफल कथनकऱ्याहै और उत्तमदेशकालविषे सुपात्रकेतांई शास्त्रकीविधिपूर्वक तथाश्रद्धापूर्वक गौसुवर्णादिकपदार्थोंकादानहै ॥ तादानकेकीयेहुए तिसदानकरतापुरुषकूं शास्त्रनैं जोपुण्यकाफल कथनकऱ्याहै ॥ अर्थात् सार्वभौमकेसुखतैंआदिलैके विराट्लोककेसुखपर्यंत जितनाकी तैत्तिरीयश्रुतिनैं शतशतगुणा अधिकसुख कथनकऱ्याहै ॥ तिनसर्व पुण्यकेसुखरूपफलोंकूं सोध्यानपरायणपुरुष अतिक्रमणकरेहै ॥ किसअर्थकूं जानिकरिकैं अतिक्रमणकरेहै ॥ ऐसीअर्जुनकीजिज्ञासाकेहुए श्रीभगवान्कहेहै (इदंविदित्वाइति) हेअर्जुन इसअष्टमअध्यायविषे पूर्वउक्तसप्तप्रश्नोंकेनिरूपणद्वारा कथनकऱ्याजोअर्थहै ॥ तिससर्वअर्थकूं सम्यक्निश्चयकरिकै तथाश्रद्धापूर्वक तिसअर्थकाअनुष्ठानकरिकै सोसगुणब्रह्मकेध्यानपरायणउपासकपुरुष तिनसर्व पुण्यकर्मोंकेफलोंकूं अतिक्रमणकरेहै ॥ शंका ॥ हे भगवन् सोउपासकपुरुष केवल तिनपुण्यकर्मोंकेफलोंकूंहीं अतिक्रमणकरेहै ॥ अथवा तिसकूं कोईदूसराभीफल प्राप्तहोवैहै ॥ ऐसीअर्जुनकीजिज्ञासाकेहुए श्रीभग

वान् कहेहै ॥ (परंस्थानमुपैतिचाद्यं) हेअर्जुन सोध्यानपरायणपुरुष केवल तिनस्वर्गादिकफलोंकाहीं अतिक्रमणनहींकरेहै ॥ किंतु सर्वतैंउत्कृष्ट तथासर्वकाकारणरूपजो ईश्वरसंबंधीस्थानहै ॥ तिसस्थानकूंभी प्राप्तहोवै ॥ अर्थात् सोध्याननिष्ठउपासकपुरुष सर्वकेकारणरूपब्रह्मकूंभीप्राप्तहोवैहै इति ॥ तहां इसअष्टमअध्यायकरिकै श्रीभगवान्नैं ध्येयत्वरूपकरिकैतत्पदार्थका निरूपणकऱ्या इति ॥२८॥ ❀ ॥ इतिश्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यश्रीस्वामिउद्धवानंदगिरिपूज्यपादशिष्येण स्वामिचिद्घनानंदगिरिणा विरचितायां प्राकृतटीकायां गीतागूढार्थदीपिकाख्यायामष्टमोध्यायःसमाप्तः ॥ ८ ॥ ॥छ॥ ॥छ॥

इति अष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥



ॐश्रीगणेशायनमः ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥ अथ नवमाऽध्यायप्रारंभः ॥ तहांपूर्वअष्टमअध्यायविषे यहवार्त्ता कथनकरीथी ॥ सुषुम्नानामा मूर्द्धन्यानाडीहै गमनकाद्वारजिसविषे ॥ तथा हृदय कंठ भ्रुवोंकामध्य इत्यादिकस्थानोंविषे प्राणोंकीधारणाहै जिसविषे ॥ तथा सर्व इंद्रियद्वारोंका संयमरूपगुणहैजिसविषे ॥ ऐसाजोयोगहै ॥ तायोगकरिकै आपणीइच्छापूर्वक इसशरीरतैं उत्क्रमणकूंप्राप्तहुएहैं प्राणजिसके ॥ तथाअर्चिरादिमार्ग करिकैं ब्रह्मलोकविषेप्राप्तिहुईहै जिसकी ॥ ऐसाजोउपासकपुरुषहै ॥ जिसउपासकपुरुषकूंताब्रह्मलोकविषे दिव्यभोगोंकेभोगतैंअनंतर ब्रह्मज्ञानकीउत्पत्तिकरिकै ताक ल्पकेअंतविषे परब्रह्मकीप्राप्तिरूप क्रममुक्तिकीप्राप्तिहोवैहै इति ॥ यहवार्त्ता पूर्वअध्यायविषे कथनकरीथी ॥ ताकेविषे पूर्व यहशंकाप्राप्तभईथी जो इसअधिकारी पुरुषकूं इसपूर्वउक्तप्रकारतैंहीं मुक्तिकीप्राप्तिहोवैहै ॥ अथवा किसीअन्यप्रकारतैंभी मुक्तिकीप्राप्तिहोवैहै इति ॥ ऐसीशंकाकेप्राप्तहूये ताशंकाकीनिवृत्तिकरणेवासतै (अनन्यचेताःसततंयोमांस्मरतिनित्यशः ॥ तस्याहंसुलभःपार्थनित्ययुक्तस्ययोगिनः) इत्यादिकवचनोंकरिकै श्रीभगवान्‌कावास्तवस्वरूपकेविज्ञानतैं ईहांहीं साक्षा त्मोक्षकीप्राप्ति कथनकरीथी ॥ तहां तिससाक्षात्मोक्षकीप्राप्तिविषे अनन्यभगवत्भक्तिहीं असाधारणकारणहै ॥ यहवार्त्ताभी (पुरुषःसपरःपार्थभक्त्यालभ्य स्त्वनन्यया) इसवचनकरिकैकथनकरीथी॥इत्यादिकसर्ववार्त्ता पूर्वअष्टमअध्यायविषेनिरूपणकरीथी ॥ तहां पूर्वउक्तधारणापूर्वकप्राणोंकाउत्क्रमण तथाअर्चिरादि मार्गविषेंमन तथाबहुतकालकाविलंब इत्यादिकक्लेशोंतैंविनाहीसाक्षात्मोक्षकीप्राप्तिवासतै श्रीभगवान्‌केवास्तवरूपका तथाताकेभक्तिका विस्तारतैंनिरूपणकरणेवा सतै इसनवमअध्यायका प्रारंभकरीताहै ॥ तहां पूर्वअष्टमअध्यायविषेतौं ध्येयब्रह्मकानिरूपणकरिकै ताध्येयब्रह्मकेध्यानपरायण पुरुषोंकीगति कथनकरी ॥ अब इस नवमअध्यायविषे ज्ञेयब्रह्मकानिरूपणकरिकै ज्ञाननिष्ठपुरुषोंकीगति कथनकरीतीहै ॥ तहां वक्ष्यमाणज्ञानकीस्तुतिवासतै श्रीभगवान्‌नैं प्रथम यहतीनश्लोक कथनकरीतेहैं ॥

(मू० श्लो०) श्रीभगवानुवाच ॥ इदंतुतेगुह्यतमंप्रवक्ष्याम्यनसूयवे ॥ ज्ञानंविज्ञानसहितंयज्ज्ञात्वामोक्ष्यसेऽशुभात् ॥ १ ॥ इदं । तु । ते । गुह्यतमं । प्रवक्ष्यामि । अनसूयवे । ज्ञानं । विज्ञानसहितं । यत् । ज्ञात्वा । मोक्ष्यसे । अशुभात् ॥१॥ (इतिपदच्छेदः)॥ हेअर्जुन असूयातैंरहित तैंअर्जुनकेतांई मैं यह अत्यंतगुह्य तथाविज्ञानसहित ज्ञान कथनकरताहूं जिसज्ञानकूं प्राप्तहोइकै तूं संसारबंधनतैं मुक्तहोवैगा ॥ १ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन केवलमहावाक्यरूपशब्दप्रमाणकरिकैजन्य तथाप्रत्यक्अभिन्नब्रह्मकूंविषयकरणेहारा जोमैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारकाज्ञानहै ॥ जोज्ञान पूर्वभी

अनेकवार हमनैं तुमारेप्रति कथनकऱ्याहै ॥ तथा आगेकथनकरणाहै ॥ तथा अबीइसअध्यायविषे कथनकऱ्याजावैंगा ॥ सोज्ञान मैंपरमेश्वर तुमारेतांई कथनकरताहूं ॥ तूं सावधानहोइकैश्रवणकर ॥ ईहां (इदंतु) यावचनविषेस्थितजो तु यहशब्दहै सोतुशब्द पूर्वअध्यायविषेकथनकऱ्येहुए सगुणब्रह्मकेध्यानतैं इसज्ञानविषे विलक्षणताकूंकथनकरैहै ॥ अर्थात् यहआत्मज्ञानहीं साक्षात् मोक्षकेप्राप्तिकासाधनहै ॥ पूर्वकथनकऱ्याहुआध्यान साक्षात् मोक्षकेप्राप्तिकासाधनहैनहीं ॥ काहेतैं जैसे आत्मज्ञान अज्ञानकीनिवृत्तिकरैहै ॥ तैसे सोध्यान अज्ञानकीनिवृत्तिकरतानहीं ॥ यातैं सोध्यान साक्षात् मोक्षकेप्राप्तिकासाधननहींहै ॥ किंतु सोध्यान तौं अंतःकरणकीशुद्धिद्वारा इसआत्मज्ञानकूंसंपादनकरिकैहीं क्रमकरिकै तामोक्षकूंउत्पन्नकरैहै ॥ यहवार्त्ता पूर्वअध्यायविषेकहिआयेहैं ॥ पुनः कैसाहैसोज्ञान गुह्यतमहै ॥ अर्थात् अतिरहस्यहोणेतैं सोज्ञान गोप्यराखणेयोग्यहै ॥ अब ताज्ञानकीगोप्यताविषे तिसज्ञानका हेतुगर्भितविशेषण कहेहैं (विज्ञानसहितमिति) हेअर्जुन कैसाहैसोज्ञान विज्ञानसहितहै ॥ अर्थात् मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारकेअपरोक्षअनुभवपर्यंतहै ॥ याकारणतैंहीं सोज्ञान गोप्यराखणेयोग्यहै ॥ ऐसाअतिरहस्यरूपभीयहज्ञान मैंभगवान्वासुदेव तुमारेतांई कथनकरताहूं ॥ अब ताअर्जुनविषे तिसज्ञानकेउपदेशकरणेकीयोग्यताबोधनकरणेवासतै श्रीभगवान् ताअर्जुनका विशेषण कथनकरैहै (अनसूयवेइति) हेअर्जुन तूं असूयातैंरहितहैं ॥ यातैं इसज्ञानकेउपदेशका तूं अधिकारीहैं ॥ तहां गुणोंविषेदोषदृष्टिकरणी याकानाम असूयाहै ॥ ताअसूयातैं तूंरहितहैं ॥ अर्थात् यहकृष्णभगवान् हमारेसमीप सर्वदा आपणीऐश्वर्यताकथनकरिकै आपणीहींस्तुतिकरताहै याप्रकारकी असूयातैं तूं रहितहैं ॥ ईहां असूयातैंरहितपणा दूसरेभी आर्जवसंयमादिकशिष्यकेगुणोंका उपलक्षकहै ॥ अर्थात् शिष्यकेसर्वगुणोंकरिकैसंपन्न तैं अर्जुनकेतांई मैं यहज्ञान उपदेशकरताहूं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ऐसेज्ञानकीप्राप्तिकरिकै हमारेकूं कौंनफलहोवैंगा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहेहै (यज्ज्ञात्वामोक्ष्यसेऽशुभात्) हेअर्जुन जिसआत्मज्ञानकूंप्राप्तहोइकै तूं शीघ्रही इससर्वदुःखोंकेकारणरूपसंसारबंधनतैं मुक्तहोवैंगा इति ॥ १ ॥ ❀ ॥ अब तिसआत्मज्ञानविषे अधिकारीजनोंकीअभिमुखता करावणेवासतैं श्रीभगवान्पुनः तिसज्ञानकीस्तुतिकरैहै ॥

(मू० श्लो०) राजविद्याराजगुह्यंपवित्रमिदमुत्तमम् ॥ प्रत्यक्षावगमंधर्म्यंसुसुखंकर्त्तुमव्ययम् ॥२॥ राजविद्या । राजगुह्यं । पवित्रम् । इदम् । उत्तमम् । प्रत्यक्षावगमं । धर्म्यं । सुसुखं । कर्त्तुम् । अव्ययम् ॥२॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन यहआत्मज्ञान सर्वविद्यावोंकाराजाहै तथासर्वगुह्यपदार्थोंकाराजाहै तथासर्वतैंउत्तम पवित्रहै तथाप्रत्यक्षहैप्रमाणजिसविषे तथासर्वधर्मकाफलरूपहै तथासुखपूर्वकहीं करणेकूंशक्यहै तथाअक्षयफलवालाहै ॥ २ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन यहआत्मज्ञानकैसाहै जितनीकी लौकिक तथाशास्त्रीय विद्याहैं ॥ तिनसर्वविद्यावोंकाराजाहै ॥ अर्थात् तिनसर्वविद्यावोंतैं अत्यंतश्रेष्ठहै ॥ काहेतैं यहआत्मज्ञान कार्यसहित संपूर्णमूलाअविद्याका नाशकरणेहाराहै ॥ और इसआत्मज्ञानतैंभिन्न दूसरीजितनीकीविद्याहैं ॥ तेविद्यातौं संपूर्णमूलाअविद्या कूंनाशकरतीनहीं ॥ किंतुतेविद्या तिसमूलाअविद्याकेकिसीएकदेशकाहीं विरोधीहोवैहैं ॥ जिसएकदेशकूं शास्त्रविषे मूलाअविद्या तथाअवस्थाअज्ञान इसनामकरि केकथनकऱ्याहै ॥ पुनःकैसाहैयहआत्मज्ञान ॥ लोकशास्त्रविषे जितनैंकी गुह्यपदार्थहैं ॥ तिनसर्वगुह्यपदार्थोंकाराजाहै ॥ अर्थात् तिनसर्वगुह्यपदार्थोंतैंभी अत्यंत गुह्यहै ॥ काहेतैं यहआत्मज्ञान अनेकजन्मोंविषेकऱ्येहुए निष्कामपुण्यकर्मोंकरिकैहींप्राप्तहोवैहै ॥ तापुण्यकर्मतैंरहितजेपुरुषहैं ॥ तेपुरुष यद्यपि आपणीबुद्धिके बलतैं अनेकगुह्यपदार्थोंकूंजानेहैं ॥ तथापि इसआत्मज्ञानकूं तेपुरुष जानिसकतेनहीं ॥ यातैं यहआत्मज्ञान तिनसर्वगुह्यपदार्थोंतैं अत्यंतगुह्यहै ॥ पुनःकैसाहैयहआ त्मज्ञान सर्वतैंउत्तम पवित्रहै ॥ काहेतैं धर्मशास्त्रविषे पापकीनिवृत्ति करणेवास्तै जितनैंकीप्रायश्चित्तकथनकरेहैं ॥तेप्रायश्चित्त इसपुरुषके सर्वपापोंकीनिवृत्तिकरतेनहीं किंतु तेप्रायश्चित्त किसीएकपापकीहीं निवृत्तिकरेहै ॥ ताप्रायश्चित्तकरिकै निवृत्तहुआभी सोएकपाप आपणेकारणविषे सूक्ष्मरूपहोइकैरहेहै ॥ जिसपापवासनातैं यहपुरुषपुनः तिसपापकरणेविषेप्रवृत्तहोवैहै ॥ यातैं तेप्रायश्चित्त सर्वतैंउत्तमपवित्रनहींहै ॥ और यहआत्मज्ञानतौं अनेकसहस्रजन्मोंविषेसंचयकरचेहुए तथास्थूल सूक्ष्मअवस्थावाले जितनैंकी पापहैं तिनसर्वपापोंका तथातिनपापोंकेकारणरूपअज्ञानका शीघ्रहीं नाशकरेहै ॥ यातैं यहआत्मज्ञान सर्वतैंउत्तमपवित्रहै अर्थात् शुद्धिकरणेहाराहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् जैसे अतिइंद्रियधर्मविषे लोकोंकूंसंदेहरहेहै ॥ तैसे इसज्ञानविषेभीं लोकोंकूं संदेहहींरहैगा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए ॥ यहआत्मज्ञान आपणेस्वरूपतैं तथाफलतैं प्रत्यक्षहींहै इसप्रकारकेउत्तरकूं श्रीभगवान् कथनकरेहै (प्रत्यक्षावगममिति) तहां (अवगम्यतेअनेनेत्यवगमोमानम्) ॥ अर्थयह ॥ जिसकरिकैवस्तुजानीजावैहै ताकानाम अवगमहै ॥ इसप्रकारकीव्युत्पत्तिकरिकै अवगम यहशब्द प्रमाणकावाचकहै ॥ और (अवगम्यते प्राप्यतेइत्यवगमःफलम्) ॥ अर्थयह ॥ अधिकारीपुरुषोंकूं जोप्राप्तहोवै ताकानाम अवगमहै ॥ याप्रकारकी व्युत्पत्तिकरिकै सोअवगमशब्द फलवाचकहै ॥ तहां प्रथमअर्थविषेतौं प्रत्यक्षहैअवगम क्या प्रमाण जिसविषे ताकानाम प्रत्यक्षावगमहै ॥ याप्रकारके बहुव्रीहिसमासकरिकै तावृत्तिरूपज्ञानविषे स्वरूपतैं साक्षीप्रत्यक्षगम्यत्व सिद्धहोवैहै ॥ और दूसरेअर्थविषेतौं प्रत्यक्षहैअवगमक्या फल जिसका ताकानाम प्रत्यक्षावगमहै ॥ याप्रकारकेबहुव्रीहिसमासकरिकै तावृत्तिज्ञानविषे फलतैंभी साक्षीप्रत्यक्षगम्यत्व सिद्धहोवैहै ॥ तहां मैनैं यह वस्तु जान्याहै इसकारणतैं अबी हमारा इसवस्तुविषयकअज्ञान नष्टहुआहै ॥ याप्रकारकासाक्षीरूपअनुभव सर्वलोकोंकूंहोवैहै ॥ सोयहसाक्षीरूपअनुभव तावृत्तिज्ञानकूंस्वरूपतैं तथाअज्ञानकीनिवृत्तिरूपफलतैं विषयकरेहै इति ॥ इसप्र

कार विद्वान्लोकोंके साक्षीरूपअनुभवकरिकैसिद्धहुआभी सोआत्मज्ञान स्वधर्मकेप्रतिकूलनहींहै ॥ किंतु धर्म्यरूपहै ॥ अर्थात् अनेकजन्मोंविषेसंचयकऱ्येहुए निष्कामधर्मका फलरूपहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ऐसाआत्मज्ञानअत्यंतदुःखकरिकैसंपादनहोताहोवैगा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान्कहेहै (सुसुखं कर्तुमिति) हेअर्जुन ब्रह्मवेत्तागुरुनैं कृपाकरिकै प्राप्तकऱ्याजोविचारहै सोविचारहैसहकारीजिसका ऐसाजो तत्त्वमसिआदिक महावाक्यहै ॥ तामहावायकरिकै सोतत्त्वज्ञान सुखेनहीं संपादनकरणेकूंशक्यहै ॥ सोआत्मज्ञान आपणीउत्पत्तिविषे देशकालादिकोंकेव्यवधानकी अपेक्षाकरतानहीं ॥ काहेतैं सोज्ञान केवल वस्तुप्रमाणकेहीं अधीनहोवैहै ॥ ध्यानकीन्यांई सोज्ञान पुरुषकीइच्छाकेअधीनहोतानहीं वस्तुकेसाथि प्रमाणकेसंबंधहुएतैंअनंतर तावस्तुकाज्ञान अवश्यकरिकै उत्पन्नहोवैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् इसप्रकार विनाही आयासतैं जोआत्मज्ञानकीसिद्धि अंगीकारकरौगे ॥ तौ अल्पआयासकरिकैसाध्यक्रियाका अल्पहीं फलहोवैहै महान्फलहोवैनहीं यातैं तिसआत्मज्ञानकाभी अल्पहींफलहोवैगा महान्फलहोवैगानहीं ॥ जिसकारणतैं महान्आयासकरिकैसाध्यजेकर्महैं तिन कर्मोंकाहीं महान्फल देखणेविषेआवैहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहेहै (अव्ययमिति) हेअर्जुन यहआत्मज्ञान यद्यपि अनायासकरिकैहीं सिद्ध होवैहै ॥ तथापि इसआत्मज्ञानके मोक्षरूपफलकानाश होवैनहीं ॥ यातैं यहआत्मज्ञान अव्ययहै ॥ अर्थात् यह आत्मज्ञान मोक्षरूप अक्षयफलवालाहै ॥ यद्यपि अंतःकरणकीवृत्तिरूपज्ञानविषे अव्ययरूपता संभवतीनहीं तथापि जैसे श्रुतिविषे सत्यब्रह्मकीप्रापकताकारिकै ज्ञानकूं सत्यकह्याहै तैसे ईहां श्रीभगवा नूंनैंभी मोक्षरूपअव्ययफलकीप्रापकताकरिकै ताज्ञानकूं अव्ययकह्याहैं ॥ और अग्निहोत्रादिककर्म यद्यपिमहान्आयासकरिकैसाध्यहैं ॥ तथापि तिनकर्मोंका नाशवान्फलहींहोवैहै यहवार्त्ता श्रुतिविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ (योवाएतदक्षरंगार्ग्यविदित्वास्मिँल्लोकेजुहोतियजतेतपस्तप्यतेबहूनिवर्षसहस्राण्यंतवदेवा स्यतद्भवति ॥) अर्थयह ॥ हेगार्गी जोपुरुष इसअक्षरपरमात्मादेवकूंनजानिकै इसलोकविषे होमकरेहै तथायज्ञकरेहै तथाबहुतसहस्रवर्षपर्यंत तपकूंकरेहै ॥ तेसर्वकर्म इसपुरुषकूं नाशवान्फलकीहींप्राप्तिकरेहैं इसप्रकारतैं यहआत्मज्ञान सर्वतैंउत्कृष्टहै ॥ यातैं इसआत्मज्ञानविषे मुमुक्षुजनोंनैं अत्यंतश्रद्धाकरणीयो ग्यहै इति ॥ २ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् इसप्रकार यहआत्मज्ञान जोकदाचित् अत्यंतसुगम होवै तथासर्वतैंउत्कृष्टहोवै ॥ तथामहान्फलकीहेतुहोवै ॥ तौं सर्वप्राणी तिसआत्मज्ञानविषे किसवासतैनहीं प्रवृत्तहोते ॥ किंतु सर्वप्राणी ताआत्मज्ञानविषेप्रवृत्तहोणेचाहीये ॥ महान्फलवाले सुगमकार्यविषेतौं सर्व लोक स्वभावतैंहीं प्रवृत्तहोवैहैं ॥ यातैं ताआत्मज्ञानविषे सर्वप्राणीयोंकीप्रवृत्तिहुए कोईभीप्राणीसंसारीनहींहोवैगा ॥ यातैं संसारमार्गकाहीं उच्छेदहोवैगा ऐसी अर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहेहैं ॥

(मू० श्लो०) अश्रद्दधानाःपुरुषाधर्मस्यास्यपरंतप ॥ अप्राप्यमांनिवर्त्ततेमृत्युसंसारवर्त्मनि ॥ ३ ॥ अश्रद्दधानाः । पुरुषाः । धर्मस्य । अस्य । परंतप । अप्राप्य । मां निवर्त्तते । मृत्युसंसारवर्त्मनि ॥ ३ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन इस आत्मज्ञानरूप धर्मकी श्रद्धातैंरहित पुरुष मैंपरमेश्वरकूं नंप्राप्तहोइकै मृत्युयुक्तसंसाररूपमार्गविषे निरंतरभ्रमणकरेहैं ॥ ३ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन यहआत्मज्ञान यद्यपि संपादनकरणेकूं अत्यंतसुगमहै तथासर्वतैंउत्कृष्टहै तथामहान्फलकाहेतुहै ॥ तथापि इसआत्मज्ञानविषे जोसर्वप्राणी योंकीप्रवृत्तिनहींहोती ॥ ताकेविषे इनप्राणियोंकीअश्रद्धाहीं कारणहै ॥ हेअर्जुन इसआत्मज्ञानरूपधर्मका जो स्वरूपहै तथासाधनहै तथाफलहै ॥ तेतीनों यद्यपि शास्त्रकरिकैप्रतिपादितहैं ॥ तथापि तिनोंविषे श्रद्धाकूंनहींकरणेहारे जेपुरुषहैं ॥ अर्थात् वेदतैंविरोधी कुत्सितहेतुवोंकेदर्शनकरिकै दूषितअंतःकरणवालेहोणेतैं जेपुरुष ताआत्मज्ञानके स्वरूपसाधनफलकूं अप्रमाणरूपहीं मानेहैं ॥ तथा जेपुरुष सर्वदा पापकर्मोंकूंहीं करणेहारेहैं ॥ तथा जेपुरुष दंभदर्पादिकआसुरसंपदकूंहीं धारणकरणेहारेहैं ॥ ऐसेश्रद्धाहीन पापात्मापुरुष आपणीबुद्धितैंकल्पनाकऱ्येहुए उपायकरिकै यथाकथंचित् प्रयत्नकरतेहुएभी शास्त्रविहितप्रयत्नकेअभावतैं मैं परमेश्वरकूं प्राप्तहोतेनहीं ॥ तथा मैंपरमेश्वरकीप्राप्तिकेसाधनोंकूंभी प्राप्तहोतेनहीं ॥ याकारणतैंहीं तेश्रद्धाहीनपुरुषइसमृत्युयुक्तसंसाररूपमार्गविषे भ्रमणकरेहैं ॥ अर्थात् तेपुरुष वारंवार कीटपतंगादिक नारकीययोनियोंविषेहीं भ्रमणकरेहैं ॥ ३ ॥ ❀ ॥ तहां पूर्व श्रीभगवान्नैं अर्जुनकेप्रति कहणेवासतै प्रतिज्ञा कऱ्याजो आत्मज्ञानहै ॥ ताआत्मज्ञानकी विधिमुखकरिकै तथानिषेधमुखकरिकै स्तुतिकथनकरी ॥ तहां प्रथमदोश्लोकोंकरिकैतौं ताआत्मज्ञानकी विधिमुख करिकैस्तुतिकरी ॥ और (अश्रद्दधानाःपुरुषाः) इसतृतीयश्लोककरिकै ताआत्मज्ञानकी निषेधमुखकरिकैस्तुतिकरी ॥ तहां जिसवस्तुकीअप्राप्तितैं जो महान् अनफलका कथनहै ॥ सोकथन तिसवस्तुकी विधिमुखस्तुतिहोवैहै ॥ और जिसवस्तुकीअप्राप्तितैं जोमहान् अर्थकेप्राप्तिका कथनहै ॥ सोकथन तिसवस्तुकी निषेधमुखस्तुतिहोवैहै ॥ इसप्रकार तीनश्लोकोंतैं तिसआत्मज्ञानकीस्तुतिकरिकै तिसआत्मज्ञानके अभिमुखकऱ्याजोअर्जुनहै ॥ तिसअर्जुनकेप्रति श्रीभगवान् अब दोश्लोकोंकरिकै सोआत्मज्ञान कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) मयाततमिदंसर्वंजगदव्यक्तमूर्तिना ॥ मत्स्थानिसर्वभूतानिनचाहंतेष्ववस्थितः ॥ ४ ॥ मया । ततम् । इदं । सर्वं । जगत् । अव्यक्तमूर्त्तिना । मत्स्थानि । सर्वभूतानि । न । च । अहं । तेषु । अवस्थितः ॥ ४ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन अव्यक्तमूर्त्तिवाले मैंपरमेश्वरनैं यह सर्व जगत् व्याप्तकऱ्याहै इसकारणतैं यहसर्वभूत मेरेविषेस्थितहैं और मैंपरमेश्वरतौं तिनभूतोंविषे नहीं स्थितहूं ॥ ४ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन भूतभौतिकरूप तथातिनभूतभौतिकोंकाभीकारणरूप जितनाकीयह दृश्यजगत्है ॥ जोजगत् मैंपरमेश्वरकेअज्ञानकरिकैकल्पितहै ॥ सोयहसर्वजगत् मैंअधिष्ठानरूप तथापरमार्थसत्स्वरूप परमेश्वरतैं सत्रूपकरिकै तथास्फुरणरूपकरिकै व्याप्तकऱ्याहै ॥ जैसे रज्जुविषेकल्पित जे सर्प दंड जलधारा माला आदिक हैं ॥ तेसर्पादिक ताररज्जुरूपअधिष्ठाननैं आपणे इदम्अंशकरिकै व्याप्तकीयहैं ॥ तैसे मैंअधिष्ठानरूप परमेश्वरनैं आपणेसत्ता स्फुरणकरिकै यहसर्वजगत् व्याप्तकऱ्याहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् हमारेरथविषेस्थित जो वसुदेवकेपुत्र आपहो ॥ सोआप परिच्छिन्नहो ॥ ऐसेपरि च्छिन्न आपनैं यहसर्वजगत् कैसेव्याप्तकऱ्याहै ॥ किंतु नहींव्याप्तकऱ्याहैं ॥ जिसकारणतैं इसआपकेकहणेविषे प्रत्यक्षप्रमाणकाविरोधहोवैहै ॥ ऐसीअर्जुनकी शंकाकेहुए श्रीभगवान् कहेहैं (अव्यक्तमूर्त्तिनाइति) तहांनेत्रादिककरणोंका नहींविषयहै स्वप्रकाशअद्वितीयसत्चित् आनंदरूपमूर्त्तिजिसकी ताकानाम अव्यक्त मूर्त्ति हैं ॥ ऐसेअव्यक्तमूर्त्तिरूप मैंपरमेश्वरनैं नहीं यहसर्वजगत् व्याप्तकऱ्याहै ॥ और जिसहमारेइसस्थूलशरीरकूंतूं मांसमयनेत्रोंकरिकै देखताहैं ॥ इसशरीरकरिकै हमनैं कोईसर्वजगत् व्याप्तकऱ्यानहीं ॥ यातै हमारेकहणेविषे प्रत्यक्षप्रमाणका विरोधहोवैनहीं ॥ जिसकारणतै मैंपरमेश्वरनैं यहसर्वजगत् व्याप्तकऱ्याहै ॥ तिस कारणतैंहीं यहस्थावरजंगमरूपसर्वभूत मैंपरमेश्वरकेसत्तास्फुरणरूपकरिकै सत्कीन्यांई तथास्फुरणकीन्यांई स्थितहैं ॥ तथापि मैं परमेश्वर तिनकल्पितभूतोंविषे वास्तवतैं स्थितनहींहूं ॥ काहेतैं अकल्पितरूपजोमैंपरमेश्वरहूं तथाकल्पितरूपजो यहभूतहैं तिनदोनोंका कोईसंबंधहीं संभवतानहीं ॥ संबंधतैंविना तिनभूतोंविषे वास्तवतैं हमारीस्थिति संभवतीनहीं ॥ याकारणतैंहीं वेदवेत्तापुरुषोंनैं यहवचनकह्याहै ॥ (यत्रयदध्यस्तंतत्कृतेनगुणेनदोषेणवाऽणुमात्रेणापिनससंबध्यते ॥) अर्थयह ॥ जिसअधिष्ठानविषे जोवस्तु कल्पितहोवैहै ॥ तिसकल्पितवस्तुकृत गुणकेसाथि अथवा दोषकेसाथिसोअधिष्ठान किंचित्मात्रभी संबंधकूंप्राप्तहोवैनहीं इति ॥ ४ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् सर्वविकारोंतैंरहित तथासर्वत्रपरिपूर्ण ऐसेजोआप परब्रह्महो ॥ तिसआपकी तिनभूतोंविषे वास्तवतैं स्थिति मतहोवौ ॥ परंतु तेसर्वभूततौ आपपरमेश्वरविषे वास्तवतैंहीं स्थितहोवेंगे ॥ ऐसी अर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहेहै ॥

(मू० श्लो०) नचमत्स्थानिभूतानिपश्यमेयोगमैश्वरम् ॥ भूतभृन्नचभूतस्थोममात्माभूतभावनः ॥ ५ ॥ न[3] । च । मत्स्थानि । भूतानि । पश्य । मे । योगम् । ऐश्वरम् । भूतभृत् । न । च । भूतस्थः । मम । आत्मा । भूतभावनः ॥५॥ (इतिप०) ॥ हेअर्जुन यहस र्वभूतमैंपरमेश्वरविषेस्थित नहींहै मैंपरमेश्वरके इसअद्भुत प्रभावकूं तूंदेखं जोमैंपरमेश्वरका सच्चिदानंदस्वरूप भूतोंकूंधारणकरता हुआ तथाभूतोंकूंउत्पन्नकरताहुआ भी तिनभूतोंविषेस्थित नहींहै ॥ ५ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जैसे आकाशविषेस्थितसूर्यविषे जलकेचलनादिकविकार कल्पितहोवैहैं ॥ तैसे मैंपरमेश्वरविषे कल्पित जेयहसर्वभूतहैं ॥ तेसर्वभूत वास्तवतैं मैंपरमेश्वरविषेहैं नहीं ॥ हेअर्जुन तू इसप्राकृतमनुष्यबुद्धिकूंपरित्यागकरिकै सूक्ष्मविचारदृष्टिकरिकै मैंपरमेश्वरके इसयोगऐश्वरकूंदेख ॥ अर्थात् जैसे लोकप्रसिद्ध मायावीपुरुषका अघटितअर्थकेबनावनेकीचातुर्यतारूपप्रभावहै ॥ तैसे महामायावीरूप मैंपरमेश्वरके इस अघटितअर्थके बनावनेकी चातुर्यतारूपप्रभावकूं तूं देख ॥ जो मैंपरमेश्वर वास्तवतैं किसीवस्तुका आधेयरूपभीनहींहूं ॥ तथा किसीवस्तुका आधाररूपभी नहीं हूं ॥ तौभीमैंपरमेश्वर इनसर्वभूतोंविषेस्थितहूं ॥ तथा मैंपरमेश्वरविषे यहसर्वभूतास्थितहै ॥ यह मैंपरमेश्वरकी एकमहान्मायाहै ॥ हेअर्जुन मैंपरमेश्वरका जोसच्चिदानंदघनएकरस परमार्थस्वरूपहै ॥ सोहमारास्वरूपहीं भूतभृतहै ॥ अर्थात् सोहमारास्वरूपहींउपादानकारणतारूपकरिकै तिनसर्वकार्यरूपभूतोंकूं धारणकरेहै ॥ तथापोषणकरेहै यातें सोहमारास्वरूप भूतभृत् कह्याजावैहै ॥ और सोहमारास्वरूपहीं कर्त्तारूपकारिकै तिनसर्व भूतोंकूं उत्पन्नकरेहै ॥ यातैं सोहमारास्वरूप भूतभावन कह्याजावैहै ॥ इसप्रकार तिन सर्वभूतोंका उपादानकारणरूप तथानिमित्तकारणरूपहुआभी सोहमारा सच्चिदानंदस्वरूप वास्तवतैं असंगअद्वितीयस्वरूपहोणेतैं तिनभूतोंविषेस्थितहैनहीं॥ अर्थात् जैसे स्वप्नद्रष्टापुरुष वास्तवतैं तिनकल्पितस्वप्नपदार्थोंका संबंधीहोवैनहीं ॥ तैसे सोहमारास्वरूपभी वास्तवतैं इनकल्पितभूतोंकासंबंधीहोवैनहीं ॥ ईहां (ममआत्मा) इस वचनविषे जोषष्ठीविभक्तिहै॥ सोभेदकी कल्पनाकरिकैहै ॥जैसे राहोःशिरः इसवचनविषे राहुशिरकेअभेदहुएभी भेदकीकल्पनाकरिकै षष्ठीविभक्तिहै इति ॥५॥ ❁ तहांपूर्वश्लोकविषे श्रीभगवान्नैं यहअर्थ कथनकऱ्या ॥ जो मैंपरमेश्वरका तथाइनसर्व भूतोंका वास्तवतैं कोईभीसंबंधहैनहीं ॥ तौंभी मैंपरमेश्वर इनभूतोंविषे स्थितहुं ॥ तथा यहसर्वभूत मैंपरमेश्वरविषे स्थितहैं ॥ इसभगवान्केकहणेविषे अर्जुनकी यहशंका प्राप्तभई ॥ जो आपपरमेश्वरका तथाइनभूतोंका वास्तवतैं कोईसंबंधनहीहै ॥ तौं आपपरमेश्वरका तथाइनभूतोंका परस्पर अधारआधेयभाव कैसेहोवैगा ऐसीअर्जुनकीशंकाकेनिवृत्तकरणेवासतै श्रीभगवान् वास्तवतैं परस्परसंबंधतैंरहितपदार्थोंकेभी आधारआधेयभावकूं लोकप्रसिद्धदृष्टांतकरिकै कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०)यथाकाशस्थितोनित्यंवायुःसर्वत्रगोमहान्। तथासर्वाणिभूतानिमत्स्थानीत्युपधारय॥६॥यथा। आकाशस्थितः। नित्यं। वायुः। सर्वत्रगः । महान्। तथा । सर्वाणि। भूतानि । मत्स्थानि। इति। उपधारय ॥ ६ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन जैसे सर्वदिशावोंविषेगमनकरणेहारा तथामहत्परिमाणवाला तथासदा चलनस्वभाववालावायु आकाशविषेस्थितहैं तैसें यहसर्व भूत मैंपरमेश्वरविषेस्थितहैं ईसप्रकार तू निश्चयकर ॥ ६ ॥ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जैसेपूर्वादिकसर्वदिशावोंविषेगमनकरणेहारा तथामहत्परिमाणवाला तथाउत्पत्तिस्थितिसंहारकालविषे चलनस्वभाववाला वायु असंगस्वभाववालेआकाशविषे स्थितहोवैहै ॥ परंतु सोवायु तिसअसंगआकाशकेसाथि वास्तवतैं कदाचित्भी संबंधकूंप्राप्तहोतानहीं ॥ तैंसे असंगस्वभाववाले मैंपरमेश्वरविषे संबंधतैंविनाहीं यहआकाशादिकसर्वभूत स्थितहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे असंगस्वभाववाले आकाशविषे वास्तवतैं वायुकासंबंध नहींभीहै ॥ तौभी सोवायु आकाशविषेस्थित कह्याजावैहै ॥ तैसे असंगस्वभाववाले मैंपरमेश्वरविषे वास्तवतैं इनआकाशादिकभूतोंकासंबंध नहींभीहै ॥ तौंभी यहआकाशादिकभूत मैंपरमेश्वरविषेस्थित कहेजावैहैं ॥ इसप्रकारवास्तवतैं संबंधकेअभावहुएभी मैंपरमेश्वरविषेतौं इसकल्पितप्रपंचकीआधारताकूं तथाइसकल्पितप्रपंचविषे मैंपरमेश्वरकीआधेयताकूं तूं इसआकाशकेदृष्टांतसैं विचारकरिकैं निश्चयकर इति ॥ किंवा ॥ (असंगोह्ययंपुरुषः । असंगोनहिसज्जते ।) इत्यादिकअनेक श्रुतियां प्रत्यक्अभिन्नअसंगब्रह्मविषे आकाशादिकसर्वभूतौंकेसंबंधका निषेधकरेहैं ॥ तिनश्रुतियोंविषे अविश्वासकरिकै जोवादी तिसब्रह्मविषे आकाशादिक भूतोंकेसंबंधकूं अंगीकारकरेहै ॥ तावादीसैं यहपूछाचाहिये ॥ तिसअसंगब्रह्मविषे तेभूत संयोगसंबंधकरिकैरहेहैं ॥ अथवा समवायसंबंधकरिकैरहेहैं ॥ अथवा तादात्म्यसंबंधकरिकैरहेहैं ॥ तहां प्रथम संयोगपक्षविषेभी ब्रह्मका तथाभूतोंका सर्वओरतैंसंयोगहै ॥ अथवा एकदेशकरिकैसंयोगहै ॥ तहां प्रथम सर्वओरतैं संयोगतौं बनैंनहीं ॥ काहेतैं ब्रह्मतौंअपरिच्छिन्नहै और तेभूत परिच्छिन्नहैं॥ तिनपरिच्छिन्नभूतोंका अपरिच्छिन्नब्रह्मकेसाथि सर्वओरतैंसंयोग बनैंनहीं॥ तैसेएकदेश करिकै संयोगहै यहद्वितीयपक्षभी संभवैनहीं ॥ काहेतैं जेपदार्थ सावयवहोवैहैं ॥ तिनपदार्थोंकाहीं आपसमैं एकदेशकरिकैसंयोगहोवैहैं ॥ जैसे वृक्ष वानर दोनोंका आपसमैं एकदेशकरिकैसंयोगहै ॥ और ब्रह्मतौं निरवयवहै ॥ यातैं तानिरवयवब्रह्मका तथातिनभूतोंका एकदेशकरिकैभी संयोगसंभवैनहीं ॥ और ताब्रह्मविषे तेआकाशादिकभूत समवायसंबंधकरिकैरहेहै यहद्वितीयपक्ष जोवादी अंगीकारकरै ॥ सोभीसंभवतानहीं ॥ काहेतैं गुणगुणीका तथाजातिव्यक्तिका तथाअवयवी अवयवकाहीं वादीयोंनैं समवायसंबंध अंगीकारकर्‍याहै ॥ सोईहां तिनभूतोंका तथाब्रह्मका गुणगुणीभाव तथाजातिव्यक्तिभाव तथाअवयवीअवयवभाव हैनहीं ॥ यातैं ताब्रह्मविषे तिनभूतोंकी समवायसंबंधकरिकैभीस्थिति संभवैनहीं ॥ और ताब्रह्मविषे तेभूत तादात्म्यसंबंधकरिकैरहेहैं यहतीसरापक्ष जो वादी अंगीकारकरै ॥ सोभीसंभवैनहीं॥ काहेतैं ब्रह्मतौ सत् चित् आनंद परिपूर्ण स्वरूपहै॥ औरते आकाशादिकभूततौं असत् जड दुःख परिच्छिन्न स्वरूप है ॥ ऐसे विरुद्धस्वभाववाले तिनआकाशादिकभूतोंका ताब्रह्मविषे तादात्म्यसंबंध संभवतानहीं ॥ यातैं परिशेषतैं तिनआकाशादिकभूतोंका ताब्रह्मविषे अध्यासरूपकल्पितसंबंधहीं अंगीकारकरणाहोवैगा सोतौं हमारेकूंभी इष्टहै ॥ काहेतैं जिसअधिष्ठानविषे जोपदार्थ अध्यस्तहोवैहै ॥ सोकल्पितपदार्थ तिसअधिष्ठानविषे

नाममात्रहींहोवैहै ॥ वास्तवतैंहोवैनहीं ॥ जैसे रज्जुविषेकल्पितसर्प तथाशुक्तिविषेकल्पितरजत नाममात्रहींहै ॥ वास्तवतैंहैनहीं ॥ तैसे ब्रह्मविषेअध्यस्तते आकाशादिकभूतभी नाममात्रहींहै ॥ वास्तवतैंहैंनहीं ॥ ऐसेकल्पितभूतोंके अध्यासरूपसंबंधकेहुएभी ताअधिष्ठानब्रह्मकी स्वाभाविकअसंगरूपता निवृत्तहोवैनहीं इति ॥ और किसीटीकाविषेतौं इसश्लोकका यहअर्थ कथनकरयाहै ॥ पूर्वअष्टमअध्यायविषे किं तद्ब्रह्म अर्थयह सोब्रह्म कौंनहै इसप्रश्नका (अक्षरंपरमंब्रह्म) अर्थयह अक्षरनामा शुद्धत्वंपदार्थहीं निरुपाधिकब्रह्महै यहउत्तर कथनकरयाथा ॥ सोनिरुपाधिकब्रह्महीं ईहां (मयाततमिदंसर्वम्) इत्यादिकश्लोकोंकरिकै प्रतिपादनकऱ्या है ॥ अबतिसनिरुपाधिकब्रह्मका अक्षरनामजीवकेसाथि अभेदकूं दृष्टांतकरिकैकथनकरेहैं (यथाकाशस्थितःइति) ईहां (वायुः) इसशब्दकरिकै सूत्रात्माकाग्रहणकरणा ॥ काहेतैं (वायुर्वैगौतमसूत्रम्) इसश्रुतिविषे तासूत्रात्माकूं वायुनामकरिकै कथनकऱ्याहै ॥ कैसाहै सोसूत्रात्मारूपवायु सर्वत्रगहै ॥ अर्थात् समष्टिलिंगदेहरूपहोणेतैं सर्वत्रव्यापकहै ॥ पुनःकैसाहैसोवायु महान्है अर्थात् इसबाह्यवायुतैंविलक्षणहै ॥ ऐसासूत्रात्मारूपवायु जैसे नित्यहीं स्वकारणीभूत अव्याकृतनामाआकाशविषे स्थितहै॥ईहां (नित्यम्) इसशब्दकरिकै तासूत्रआत्माका तीनकालविषे ताअव्याकृतनामाआकाशकेसाथि संबंध कथनकऱ्या ॥ तैसे यहसर्वभूत मैंपरमेश्वरविषेस्थितहैं॥ईहां भूतशब्दकरिकै उपाधितैंरहितत्वंपदार्थरूपजीवचेतनका ग्रहणकरणा॥सोजीवचेतन यद्यपि वास्तवतैं एकहींहै॥ तथापि लोकदृष्टिकरिकै श्रीभगवान्नैं ताजीवचेतनकाबहुतपणा कथनकऱ्याहै॥तात्पर्ययह ॥ जैसे सर्वकार्य आपणीउत्पत्तितैंपूर्व तथानाशतैंअनंतर तथाआपणीस्थितिकालविषे आपणे उपादानकारणविषेहीं अभेदरूपकरिकै स्थितहोवैहैं ॥ तैसे यहसर्वजीव अंतःकरणादिकउपाधिकी उत्पत्तितैंपूर्व तथाउपाधिकेनाशतैंअनंतर तथामध्यविषे तिसपरब्रह्मतैं भिन्ननहींहैं ॥ किंतु अभिन्नहींहैं ॥ जैसे घटाकाश घटरूपउपाधिकीउत्पत्तितैंपूर्व तथाघटरूपउपाधिकेनाशतैंअनंतर तथाताघटरूपउपाधिकेविद्यमानकालविषे महाकाशतैंभिन्ननहींहै ॥ किंतु सोघटाकाश तीनोंकालविषे महाकाशरूपहींहै ॥ तैसे यहजीवभी तीनोंकालविषे परब्रह्मरूपहींहैं ॥ तहांश्रुति ॥ (अयमात्माब्रह्म। अहंब्रह्मास्मि) ॥ अर्थयह ॥ यहप्रत्यकूआत्मा ब्रह्मरूपहै ॥ और मैंब्रह्मरूपहूं इति ॥ ६ ॥ ❀ ॥ तहां पूर्वश्लोकविषे इसप्रपंचकीउत्पत्तिकालविषे तथास्थितिकालविषे ताप्रपंचकेसाथिअसंगआत्माका असंबंध कथनकऱ्या ॥ अब प्रलयकालविषेभीताप्रपंचकेसाथि असंगआत्माकेअसंबंधकूं श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) सर्वभूतानिकौंतेयप्रकृतिंयांतिमामिकाम् ॥ कल्पक्षयेपुनस्तानिकल्पादौविसृजाम्यहम् ॥ ७ ॥ सर्वभूतानि । कौंतेय । प्रकृतिं । यांति । मामिकाम् । कल्पक्षये । पुनः । तानि । कल्पादौ । विसृजामि । अहम् ॥ ७ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेकौंतेय

प्रलयकालविषे यहसर्वभूत मैंपरमेश्वरकीशक्तिरूप जात्रिगुणात्मकप्रकृतिकूं प्राप्तहोवैहैं पुनः सृष्टिकालविषे मैंपरमेश्वर तिनंभूतोंकूं उत्पन्नकरूंहूं ॥ ७ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन मैंपरमेश्वरकीशक्तिरूपकरिकैकल्पनाकरीहुई जात्रिगुणात्मकमायाहै ॥ जामाया (मायांतुप्रकृतिंविद्यात्) इसश्रुतिनैं सर्वजगत्का प्रकृति रूपकरिकैकथनकरीहै ॥ ऐसीकारणरूपमायाप्रकृतिकूंहीं तेआकाशादिकसर्वभूत प्रलयकालविषे प्राप्तहोवैहैं ॥ अर्थात् तेआकाशादिकसर्वभूत ताप्रलयकालविषे आपणेकारणभूत मायानामाप्रकृतिविषेहींसूक्ष्मरूपकरिकै लयभावकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ हेअर्जुन जेआकाशादिकसर्वभूत प्रलयकालविषे ताप्रकृतिविषे अविभागकूंप्राप्त हुएथे ॥ तिनआकाशादिकभूतोंकूंहीं मैंसर्वशक्तिसंपन्नसर्वज्ञपरमेश्वर सृष्टिकालविषे भिन्नभिन्न करिकैउत्पन्नकरूंहूं इति ॥ ७ ॥ ❀ ॥ तहां परमेश्वरकी यहआकाशादिकप्रपंचकीसृष्टि किसप्रयोजनवास्तैहै ॥ तिसपरमेश्वरकेहीं भोगवास्तैहै ॥ अथवा अन्यकिसीकेभोगवास्तैहै ॥ तहां परमेश्वरकेभोगवास्तैतौ यह सृष्टि संभवतीनहीं ॥ काहेतैं सर्वकासाक्षीरूप तथाचैतन्यमात्ररूप जोपरमेश्वरहै ॥ तापरमेश्वरविषे सुखदुःखकाभोक्तापणा संभवैनहीं ॥ जोकदाचित् परमेश्वर विषेभी सुखदुःखकाभोक्तापणा अंगीकारकरीये ॥ तौं तिसपरमेश्वरविषेभी अस्मदादिकजीवोंकीन्याई संसारीपणाहीं प्राप्तहोवैगा ॥ यातैं तापरमेश्वरविषे ईश्वर पणा नहींरहैगा ॥ काहेतैं जिसविषे संसारीपणा रहैहै तिसविषे ईश्वरपणा रहैनहीं ॥ और जिसविषे ईश्वरपणा रहैहै तिसविषे संसारीपणा रहैनहीं ॥ यातैं परमे श्वरकेभोगवास्तैतौं यहसृष्टि संभवतीनहीं और परमेश्वरतैंअन्यकिसीभोक्तावास्तै यहसृष्टिहै ॥ यहदूसरापक्षभी संभवतानहीं ॥ काहेतैं (नान्योतोऽस्तिद्रष्टा) इत्यादिकश्रुतियोंनैं तिसपरमेश्वरतैंभिन्न दूसरेचेतनकाअभावहीं कथनकऱ्याहै ॥ और जोकोई यहकहै ॥ तिसपरमेश्वरतैं जीवचेतनभिन्नहै ॥ सोकहणाभी संभवतानहीं ॥ काहेतैं (अनेनजीवेनात्मनानुप्रविश्यनामरूपेव्याकरवाणि) इत्यादिकश्रुतियोंनैं तिसपरमेश्वरकीहीं सर्वत्र जीवरूपकरिकैस्थितिकथनकरीहै ॥ याकारणतैंहीं तत्त्वमसि अहंब्रह्मास्मि इत्यादिकमहावाक्य इसजीवकूं ब्रह्मरूपकरिकैकथनकरैहैं ॥ यातैं तिसपरमेश्वरतैंभिन्न दूसराकोईचेतनहैनहीं जोइसजगत्काभोक्ताहोवै ॥ यद्यपि तिसचैतन्यस्वरूप परमेश्वरतैं जडपदार्थभिन्नहैं ॥ तथापि तिनजडपदार्थोंविषे सुखदुःखकाभोक्तापणाहीं संभवतानहीं ॥ किंवा तेसर्वजडपदार्थ भोग्यरूपहीहैं ॥ तिनभोग्यपदार्थोंकूं जोभोक्तामानीये तौं भोक्ता भोग्य यहभेद सिद्धनहींहोवैगा ॥ यातैं तिनजडपदार्थोंकेभोगवास्तै भी यहसृष्टि संभवतीनहीं ॥ किंवा जैसे यहसृष्टि किसीकेभोगवास्तै नहींसंभवैहै ॥ तैसे यहसृष्टि किसीके मोक्षवास्तैभी संभवतीनहीं ॥ काहेतैं जोकोईबं ध वास्तवतैंहोवै तौं ताकेमोक्षवास्तै यहसृष्टिसंभवै ॥ सो वास्तवतैं कोईबंधनहीं नहीहै ॥ किंवा यहसृष्टि तामोक्षका उलटा विरोधीहीं है ॥ जो जिसकाविरो

पीहोवैहै ॥ सो तिसकीप्राप्तिवासतैहोवैनहीं ॥ यातैं किसीकेमोक्षवासतैभी यहसृष्टि संभवतीनहीं ॥ इसतैंआदिलेके अनेकप्रकारकी अनुपपत्तियां इससृष्टिविषे प्राप्तहोवैहैं ॥ तेअनुपपत्तियांहीं इससृष्टिविषे मायामयत्वकीसिद्धि करेहैं ॥ यातैं तेअनुपपत्तियां हमसिद्धांतियोंकूं प्रतिकूलनहींहै ॥ किंतु अनुकूलहींहै इसी कारणतैंहीं तेअनुपपत्तियां परिहारकरणेंकूं योग्यनहींहै ॥ इसीसर्वअभिप्रायकरिकै श्रीभगवान् इसप्रपंचविषे मायामयत्वहेतुतैं मिथ्यात्वसिद्धकरणेका आरंभकरेहै तीनश्लोकोंकरिकै ॥

(मू० श्लो०) प्रकृतिंस्वामवष्टभ्यविसृजामिपुनःपुनः ॥ भूतग्राममिमंकृत्स्नमवशंप्रकृतेर्वशात् ॥ ८ ॥ प्रकृतिं । स्वाम् । अवष्टभ्य । विसृजामि । पुनः । पुनः । भूतग्रामम् । इमं । कृत्स्नम् । अवशं । प्रकृतेः । वशात् ॥ ८ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन मैंपरमेश्वर आपणी मायारूपप्रकृतिकूं आश्रयणकरिकै तिसमायाके प्रभावतैं उत्पन्नहुए इस संपूर्ण आकाशादिकभूतोंकेसमुदायकूं पुनः पुनः उत्पन्नकरूंहूं ॥ ८ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन मैंपरमेश्वरविषेकल्पित तथामैंपरमेश्वरकेअधीन ऐसीजा मायानामा अनिर्वचनीयप्रकृतिहै ॥ तिसआपणीप्रकृतिकूंआश्रयकरिकै अर्थात् ताप्रकृतिकूं आपणीसत्तास्फूर्तिकीप्राप्तिद्वाराहृढकरिकै मैंमायावीपरमेश्वर प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकरिकैसिद्ध इसआकाशादिकभूतोंकेसमुदायरूपप्रपंचकूं जीवोंकेकर्मोंके अनुसार विविधप्रकारतैं उत्पन्नकरूंहूं ॥ अर्थात् जैसे स्वप्नद्रष्टापुरुष स्वप्नप्रपंचकूं कल्पनामात्रकरिकै उत्पन्नकरेहै ॥ तैसे मैंपरमेश्वरभी इसआकाशादिकप्रपंचकूं कल्पनामात्रकरिकैउत्पन्नकरूंहूं ॥ कैसाहैयहआकाशादिकभूतोंकासमुदाय ॥ प्रकृतिकेवशतैंजायमानहै ॥ अर्थात् मायारूपप्रकृतिकाजो अविद्यादिकपंचक्लेशोंका कारणीभूत आवरणविक्षेपशक्तिरूपप्रभावहै तिसप्रभावतैं उत्पन्नहुआहै इति ॥ और किसीटीकाविषेतौं (अवशंप्रकृतेर्वशात्) इसवचनका यहअर्थकऱ्याहै ॥ आपणेस्वभावकानामप्रकृतिहै ॥ तास्वभावरूपप्रकृतिकेवशतैं यहप्रपंच अवशहै ॥ अर्थात् रागद्वेषादिकोंकेअधीनहै इति ॥ और अन्यकिसीटीकाविषे इसवचनका यहअर्थकऱ्याहै ॥ अविद्या अस्मिता राग द्वेष अभिनिवेश यहपंचक्लेश ईहां प्रकृतिशब्दकरिकैग्रहणकरणे ॥ ताअविद्यादिपंचक्लेशरूपप्रकृतिके वशात् कहिये स्वभावतैं यहभूतसमुदाय अवशहै अर्थात् अस्वतंत्रहै ॥ इति ॥ ८ ॥ ❀ ॥ जिसकारणतैं इसजगत्की सृष्टिस्थितिआदिककर्म स्वप्नकीन्यांई मिथ्याभूतहीं हैं ॥ तिसकारणतैं तेसृष्टिआदिककर्म स्वप्नद्रष्टापुरुषकीन्यांई मैंपरमेश्वरकूं बंधायमानकरतेनहीं ॥ इसअर्थकूं अबश्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) नचमांतानिकर्माणिनिबध्नंतिधनंजय ॥ उदासीनवदासीनमसक्तंतेषुकर्मसु ॥ ९ ॥ न । च । माम् । तानि । कर्माणि ।

निर्बध्नंति । धनंजय । उदासीनवत् । आसीनम् । असक्तं । तेषु । कर्मसु ॥ ९ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन उदासीनपुरुषकीन्यांई
स्थित तथा तिनें कर्मोंविषे आसक्तितैंरहित मैंपरमेश्वरकूं ते सृष्टिआदिकंकर्म नहीं बंधायमानकरते ॥ ९ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जैसे मायावीपुरुष आपणीमायाकरिकै अनेकपदार्थोंकी सृष्टि स्थिति लयकूं करेहै ॥ परंतु ते सृष्टिस्थितिलयरूपकर्म तिसमायावीपुरुषकूं बंधायमानकरतेनहीं ॥ और जैसे स्वप्नद्रष्टापुरुष स्वप्नविषे अनेकपदार्थोंकी सृष्टि स्थिति लयकूं करेहै ॥ परंतु तेसृष्टिस्थितिलयरूपकर्म तिसस्वप्नद्रष्टापुरुषकूं बंधायमानकरतेनहीं ॥ तैसे मैंपरमेश्वरभी आपणीमायाशक्तिकेवशतैं इसआकाशादिकप्रपंचकी सृष्टि स्थिति लयकूं करूंहूं ॥ परंतु तेसृष्टिआदिककर्म मैंपरमेश्वरकूं बंधायमानकरतेनहीं ॥ अर्थात् तेसृष्टिआदिककर्म अनुग्रहकरिकै ॥ मैंपरमेश्वरकूं सुकृतकाभागीनहींकरेहैं तथा निग्रहकरिकै हमारेकूं दुष्कृतकाभागीनहींकरेहैं ॥ जिसकारणतैं तेसृष्टिआदिककर्म स्वप्नकीन्यांईमिथ्याभूतहींहैं ॥ शंका ॥ हेभगवन् तेसृष्टिआदिककर्म आपकूं किसवासतै नहींबंधायमानकरते ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् ताकेविषेहेतुकहेहै (उदासीनवदासीनमिति) हेअर्जुन परस्पर विवादकरणेहारेदोपुरुषोंकेजयअजयरूपकर्मकेसंबंधतैंरहित तथादोनोंकीउपेक्षाकरणेहारा जो कोईउदासीनपुरुषहै ॥ सोउपेक्षकउदासीनपुरुष जैसे तिनविवादकरतापुरुषोंके जयअजयकृतहर्षविषादतैंरहितहुआ निर्विकाररूपतैंस्थितहोवैहै ॥ तैसे मैंअसंगपरमेश्वरभी सर्वदा निर्विकाररूपकरिकैस्थितहूं ॥ यद्यपि ईहां परमेश्वररूपदार्ष्टांतिकविषे उदासीनपुरुषरूपदृष्टांतकीन्यांई विवादकरणेहारेदोनोंका अभावहै ॥ तथापि तादृष्टांतविषे तथादार्ष्टांतिकविषे उपेक्षकपणा समानहींहै ॥ ताउपेक्षकपणेमात्रकूंलेकै ईहां (उदासीनवत्) इसवचनकेअंतविषे वत् यहप्रत्यय कथनकरयाहै ॥ हेअर्जुन जिसकारणतैं मैंपरमेश्वर उदासीनपुरुषकीन्यांई हर्षविषादादिकविकारोंतैंरहितहुआस्थितहूं ॥ तिसकारणतैं मैंपरमेश्वर तिनसृष्टिआदिककर्मोंविषे असक्तहूं ॥ अर्थात् मैं इसकर्मकूंकरताहूं तथामैं इसकर्मकेफलकूंभोगोंगा याप्रकारके कर्तृत्वअभिमानरूप तथाफलकीअभिलाषारूप संगतैं रहितहूं ॥ याकारणतैंहीं मैंपरमेश्वरकूं तेसृष्टिआदिककर्म बंधायमानकरतेनहीं ॥ इतनैंकहणेकरिकै श्रीभगवाननैं यहअर्थ बोधनकरया ॥ जैसे कर्तृत्वअभिमानतैंरहित तथाफलकीइच्छातैंरहित मैंपरमेश्वरकूं तेसृष्टिआदिककर्म बंधायमानकरतेनहीं ॥ तैसे दूसराभीजोकोईअधिकारीपुरुष ताकर्तृत्वअभिमानतैं तथाफलकीइच्छातैं रहितहोइके कर्मोंकूंकरेहै ॥ तिसपुरुषकूंभी तेलौकिकवैदिककर्म बंधायमानकरतेनहीं ॥ ताकर्तृत्वअभिमान तथाफलकीइच्छा दोनोंके विद्यमानहुएहीं यहमूढपुरुष कोशकारजंतुकीन्यांई तिनकर्मोंकरिकैबंधायमानहोवैहैं इति ॥ ईहां श्रीभगवाननैं स्वउपदिष्टअर्थकेधारणकरणेविषे अर्जुनकेउत्साहकरणेवासतै (हेधनंजय) इससंबोधनकरिकै ताअर्जुनके महान्प्रभावकूं सूचनकर्याहै ॥ अर्थात् युधिष्ठिरराजाके राजसूयनामायज्ञवासतै तूं सर्वराजावोंकूंजीतिकरिकै

धनकूंलेआवताभयाहैं ॥ याकारणतैं तुमारा धनंजय यहनामहुआहै ॥ ऐसेमहान्प्रभाववाला तूं अर्जुनहैं इति ॥ और किसीटीकाविषेतौं इसश्लोक का यहअर्थ कथनकऱ्याहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् इसलोकविषें कोईप्राणी सुखीहै ॥ कोईप्राणीदुःखीहै ॥ कोईधनीहै कोईदरिद्रीहै कोईबुद्धिमान्है कोई मूर्खहै ॥ इसप्रकारकीविषमसृष्टिकूंकरणेहारे आपईश्वरकूं विषमतादोषकी तथानिर्दयतादोषकीप्राप्ति अवश्यकरिकेहोवैंगी ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहेहै (नचमांतानिकर्माणि इति) हेअर्जुन तेविषमसृष्टिरूपकर्ममैंपरमेश्वरकूं बंधायमानकरतेनहीं ॥ तिसविषेहेतुकहेहै (उदासीनवदासीनमिति) हेअर्जुन जैसे मेघ किसीबीजोंविषेरागकूं तथाकिसीबीजोंविषे द्वेषकूं नहींकरिकै उदासीनहुआ जलकीवृष्टिकरेहै ॥ आगेतैं तिनतिनबीजोंके अनुसार भिन्नभिन्नफल उत्पन्नहो वैहैं ॥ तैसे मैंपरमेश्वरभी पुण्यवान्पुरुषोंविषे रागकूंनहींकरताहुआ तथापापीपुरुषोंविषे द्वेषकूंनहींकरताहुआ इसजगत्कूं उत्पन्नकरताहूं ॥ आगेतैं तेप्राणी आपणेआपणेपुण्यपापकर्मके अनुसार तिसतिस सुखदुःखादिरूप भिन्नभिन्नफलकूं प्राप्तहोवैहै ॥ यातैं मैंपरमेश्वरकूं विषमतादोषकीप्राप्ति तथानिर्दयतादोषकीप्राप्ति होवैनहीं इति ॥ ९ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् पूर्वआपनैं (भूतग्रामंसृजामि) इसवचनकरिकै आपणेकूं सर्वभूतोंका कर्त्तापणा कथनकऱ्या ॥ और (उदासीनवदासीनम्) इसवचनकरिकै आपणेकूं उदासीनपणाकथनकऱ्या ॥ सोयहदोनों आपकेवचन परस्परविरुद्धअर्थके बोधकहोणेतैं असंगतहै ॥ काहेतैं जिसविषे कर्त्तापणा रहेहै ॥ तिसविषे उदासीनपणा रहैनहीं ॥ और जिसविषे उदासीनपणा रहेहै ॥ तिसविषे कर्त्तापणा रहैनहीं ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेनिवृत्त करणेवास्तै श्रीभगवान् इसप्रपंचविषे पुनः मायामयत्वकूंहीं कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) मयाध्यक्षेणप्रकृतिःसूयतेसचराचरम्॥ हेतुनानेनकौंतेयजगद्विपरिवर्त्तते॥ १०॥ मया। अध्यक्षेण। प्रकृतिः। सूयते। सचराचरं। हेतुना। अनेन। कौंतेय। जगत्। विपरिवर्त्तते ॥ १०॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेकौंतेय प्रकाशरूप मैंपरमेश्वरनैं प्रकाशितकरीहुई मायारूपप्रकृतिहीं इसचरअचरसहितजगत्कूं उत्पन्नकरेहै इसीप्रकाशत्व निमित्तकरिकै यहजगत् विविधप्रकारतैंप रिवर्त्तमानहोताहै ॥ १० ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन केवलद्रष्टामात्रस्वरूप तथासर्वविकारोंतैंरहित तथाआपणीसमीपतामात्रकरिकैसर्वकानियंता तथासर्वप्रकाशक ऐसाजोमैंपरमेश्वरहूं ॥ तिसमैं परमेश्वरनैं प्रकाशितकरीहुई जामायारूपप्रकृतिहैं ॥ कैसीहैसाप्रकृति ॥ सत्व रज तम यहतीनगुणस्वरूपहैं ॥ तथा जाप्रकृति सत्रूपकरिकै तथाअसत्रूपकरिकै तथासत्असत्उभयरूपकरिकै कथनकरीजातीनहीं ॥ ऐसीमायारूपप्रकृतिहीं इसस्थावरजंगमरूप सर्वजगत्कूं उत्पन्नकरेहै ॥ जैसे मायावीपुरुषनैं प्रवृत्तकरीहुई

माया कल्पित गजतुरंगादिकपदार्थोंकूं उत्पन्नकरेहै ॥ तैसे मैंपरमेश्वरनैं प्रकाशितकरीहुई सामायाहीं इसकल्पितजगत्‌कूं उत्पन्नकरेहै ॥ मैंपरमेश्वरतौं तिसकार्यसहितमायाकूं केवल प्रकाशमात्रहीं करताहूं ॥ ताकार्यसहितमायाके प्रकाशमात्रतैंभिन्न दूसरेकिसीव्यापारकूं मैंपरमेश्वर करतानहीं ॥ हेअर्जुन तिसप्रकाशकत्वरूप निमित्तकरिकै यहस्थावरजंगमरूपसर्वजगत् विविधप्रकारतैं परिवर्त्तमानहोवैहै ॥ अर्थात् यहजगत् जन्मतैंआदिलैके विनाशपर्यंत अनेक प्रकारकेविकारोंकूं निरंतर प्राप्तहोवैहैं ॥ यातैं (भूतग्रामंसृजामि) अर्थ मैंपरमेश्वर इससर्वजगत्‌कूंउत्पन्नकरताहूं यहजोवचन हमनैं पूर्वकथनकऱ्याथा ॥ सो तिसजगत्‌काकारणरूप मायाका प्रकाशकत्वमात्ररूपव्यापारकरिकै कथनकऱ्याथा ॥ और जैसे इसलोकविषे सूर्यादिकोंकेप्रकाशकरिकैहींसर्वकार्योंकी उत्पत्तिहोवैहै ॥ परंतु ताप्रकाशकत्वमात्रकरिकै तिनसूर्यादिकोंकूं कर्त्तापणा प्राप्तहोवैनहीं ॥ तैसे ताकारणरूपमायाकेप्रकाशकत्वमात्रकरिकै मैंपरमेश्वरविषेभी सोकर्त्तापणा प्राप्तहोवैनहीं ॥ याअभिप्रायकरिकैहीं पूर्वहमनैं (उदासीनवदासीनम्) यहवचन कथनकऱ्याथा ॥ यातैं तिनपूर्वउक्तदोनोंवचनोंका परस्पर विरोधहोवै नहीं ॥ यहवार्त्ता अन्यशास्त्रविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ (अस्यद्वैतेंद्रजालस्य यदुपादानकारणम् ॥ अज्ञानंतदुपाश्रित्यब्रह्मकारणमुच्यते) ॥ अर्थयह ॥ इसद्वैतप्रपंचरूपइंद्रजालका जो अज्ञानरूपउपादानकारणहै ॥ तिसअज्ञानकीप्रकाशकताकरिकैहीं ब्रह्म जगत्‌काकारणकह्याजावैहै ॥ वास्तवतैं सोब्रह्म जगत्‌काकारणहैनहीं इति ॥ और किसीटीकाविषेतौं इसश्लोकका यहअभिप्राय वर्णनकऱ्याहै ॥ जैसे चुंबकपाषाण आपणीसमीपतामात्रकरिकैं लोहकूं प्रवृत्तकरताहुआभी वास्तवतैं उदासीनहीं रहेहै ॥ तैसे मैंपरमेश्वरभी आपणीसमीपतामात्रकरिकै तिसमायारूपप्रकृतिकूं जगत्‌कीउत्पत्तिकरणेविषे प्रवृत्तकरताहुआभी वास्तवतैं उदासीनहींरहूहूं याते (भूतग्रामंसृजामि उदासीनवदासीनम्) इनदोनोका परस्पर विरोधहोवैनहीं इति ॥ १० ॥ ❀ ॥ हेअर्जुन इसप्रकार नित्य शुद्ध बुद्ध मुक्त स्वभाव तथा सर्वप्राणीयोंकाआत्मारूप तथाआनंदघन तथादेशकालवस्तुपरिच्छेदतैंरहित ऐसेभीमैंपरमेश्वरकूं यह अविवेकीलोक मनुष्यमानिकै आदरकरतेनहीं उलटानिंदाकरेहैं ॥ इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरेहैं ॥

(मू०श्लो०) अवजानंतिमांमूढामानुषींतनुमाश्रितम् ॥ परंभावमजानंतोममभूतमहेश्वरम्॥ ११॥अवजानंति। मां। मूढाः। मानुषीं। तनुम्। आश्रितं। परं। भावम्। अजानंतः। मम। भूतमहेश्वरम्॥ ११ ॥ (इतिपदच्छेदः)॥ हेअर्जुन अविवेकीजन मैंपरमेश्वरके सर्वभूतोंकामहान्ईश्वररूप सर्वतैंउत्कृष्ट पारमार्थिकतत्वकूं नजानतेहुए इसमनुष्य मूर्त्तिकूं धारणकरणेहारे मैंपरमेश्वरकूं अनादरकरेहै ॥ ११ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन विचारतैंरहित जेमूढपुरुषहैं ॥ तेमूढपुरुष मैंपरमेश्वरकीभी अवज्ञाकरेहैं ॥ अर्थात् तेमूढपुरुषमैंपरमेश्वरकूं यहकृष्णभगवान् साक्षात् ईश्वरहै यापकारतैं आदरकरतेनहीं ॥ उलटा हमारीनिंदाकरतेहैं ॥अब तिनमूढपुरुषोंनैं करीहुईअवज्ञाविषे तिनमूढपुरुषोंकीभ्रांतिरूपहेतुकूं कथनकरेहैं (मानुषींतनुमाश्रितम् इति) हेअर्जुन मनुष्यरूपकरिकैप्रतीतहोतीजोयहमूर्त्तिहै ॥ तिसमूर्त्तिकूं मैंपरमेश्वर आपणीइच्छाकरिकै भक्तजनोंकेअनुग्रहवासतैग्रहणकरताभयाहुं ॥ अर्थात् मनुष्यरूपकरिकैप्रतीतहुएइसदेहकरिकै मैंपरमेश्वर व्यवहारकूंकरताहूं ॥ याकारणतैंहीं यहकृष्णभी हमारेसरीखा कोईमनुष्यहींहै यापकारकीभ्रांतिकरिकै आवृत्त हुआहैंअंतःकरणजिनोंका ऐसेतेमूढपुरुष मैंपरमेश्वरके परमभावकूं नहींजानतेहुए अर्थात् मैंपरमेश्वरके सर्वतैंउत्कृष्ट पारमार्थिकतत्त्वकूं नहींजानतेहुए जोपरमेश्वरका आदरनहींकरेहैं तथामैंपरमेश्वरकीनिंदाकरेहैं ॥ सो तिनमूढपुरुषोंविषे संभवताहीहै ॥ हेअर्जुन जिसहमारेपरमभावकूंनहींजानतेहुए तेमूढपुरुष हमारीअवज्ञाकरेहै॥ सोहमारा परमभावकैसाहै ॥ सर्वभूतोंका महान्ईश्वरहै ॥ अर्थात् तिनसर्वभूतोंका नियंताहै इति ॥ ११ ॥ ❀ ॥ हेअर्जुन इसप्रकार मैंपरमेश्वरकीअवज्ञाकरिकैउत्पन्नभयाजोमहान्पापहै ॥ तापापकरिकैप्रतिबद्धहुईहैबुद्धिजिनोंकी ऐसे तेमूढपुरुष निरंतर नरकविषेहीं निवासकरणेकूं योग्यहोवैहैं ॥ इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) मोघाशामोघकर्माणोमोघज्ञानाविचेतसः ॥ राक्षसीमासुरींचैवप्रकृतिंमोहिनींश्रिताः ॥ १२ ॥ मोघाशाः । मोघकर्माणः । मोघज्ञानाः । विचेतसः । राक्षसीम् । आसुरीं । च । एव । प्रकृतिम् । मोहिनीम् । श्रिताः॥१२॥(इतिपदच्छेदः)॥ हेअर्जुन निष्फलहैआशाजिनोंकी तथानिष्फलहैकर्मजिनोंके तथानिष्फलहैज्ञानजिनोंका ऐसेविचारहीनैपुरुष राक्षसी तथा आसुरी तथा मोहिनी प्रकृतिकूं हीं आश्रयणकरेहैं ॥ १२ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन अंतर्यामीईश्वरतैंविना केवलकर्महीं हमारेकूंफलकीप्राप्तिकरैंगे इसप्रकारकी निष्फलहींहै फलकीप्रार्थनारूपआशा जिनोंकी तिनोंकानाम मोघ आशाहै ॥ तात्पर्ययह॥ अंतर्यामीसर्वज्ञईश्वरतैंविना जडकर्मोंविषे स्वतंत्र फलदेणेकासामर्थ्यहैनहीं ऐसेअसमर्थकर्मोंतैंहीं फलकेप्राप्तिकीइच्छाकरणी निष्फलहींहै ॥ इसीकारणतैंहीं परमेश्वरतैंविमुखहोणेतैं मोघहैं क्या केवलपरिश्रममात्ररूपहै अग्निहोत्रादिककर्म जिनोंके तिनोंकानाम मोघकर्माहै ॥ अर्थात् परमेश्वरतैंविमुख पुरुषोंके तेअग्निहोत्रादिककर्म केवलपरिश्रमकेहीं हेतुहैं ॥ दूसरेकिसीफलकीप्राप्तिकरतेनहीं ॥ और ईश्वरका नहींप्रतिपादनकरणेहारे जेकुतर्कशास्त्रहैं ॥ तिनशास्त्रों करिकैउत्पन्नहोणेतैं निष्फलहैज्ञानजिनोंका तिनोंकानाम मोघज्ञानाहै ॥ अर्थात् परमेश्वरकाप्रतिपादनहैजिनोंविषे ऐसेजेअध्यात्मशास्त्रहैं ॥ तिनशास्त्रोंकेविचारतैं

उत्पन्नभयाज्ञानहीं इसअधिकारीपुरुषकूं फलकीप्राप्तिकरेहै ॥ और जिनशास्त्रोंविषेपरमेश्वरका प्रतिपादननहींहै उलटापरमेश्वरकाखंडनहै ॥ ऐसेकुतर्कशास्त्रोंकेविचारतैंउत्पन्नहुआज्ञान इसपुरुषकूं किंचित्मात्रभी फलकीप्राप्तिकरतानहीं ॥ यातैं सोज्ञान निष्फलहींहै ॥ अब इसपूर्वउक्तअर्थविषेहेतुकहेहैं (विचेतसःइति) तहां परमेश्वरकीअवज्ञाकरिकैउत्पन्नभयाजोमहान्पापहै तापापकरिकै प्रतिबद्धहुआहैविवेकविज्ञान जिनोंका तिनोंकानामविचेतस्है ॥ ऐसेविचेतस्होणेतैंहीं तेमूढपुरुष मोघआशा मोघकर्मा मोघज्ञाना होवैहैं ॥ किंवा तेमूढपुरुष मैंपरमेश्वरकीअवज्ञाकेवशतैं राक्षसीप्रकृतिकूं तथाआसुरीप्रकृतिकूं तथामोहिनीप्रकृतिकूंहीं आश्रयणकरेहैं ॥ तहां शास्त्रअविहितहिंसाका हेतुभूतजोद्वेषहै सोद्वेषहैप्रधानजिसविषे ऐसीजातामसीप्रकृतिहै ताकानाम राक्षसीप्रकृतिहै ॥ और शास्त्रअविहित विषयभोगोंका हेतुभूतजोरागहै सोरागहैप्रधानजिसविषे ऐसीजाराजसीप्रकृतिहै ताकानाम आसुरी प्रकृतिहै ॥ और सत्शास्त्रजन्यज्ञानतैंभ्रष्टकरणेहारी जाप्रकृतिहै ताकानाम मोहिनीप्रकृतिहै ॥ ईहां प्रकृतिनामस्वभावकाहै ॥ इसप्रकारकी राक्षसी आसुरी मोहिनी प्रकृतिकूंहीं तेमूढपुरुष आश्रयणकरेहैं ॥ इसीकारण तैंहीं तेमूढपुरुष नरककीप्राप्तिकेद्वारोंकाभागीहोणेतैं निरंतर नरकयातनाकूंहीं अनुभवकरेहै ॥ तेनरककेद्वार शास्त्रविषेयहकथनकऱ्येहै ॥ तहांश्लोक ॥ (त्रिविधंनरकस्येदंद्वारंनाशनमात्मनः ॥ कामःक्रोधस्तथालोभस्तस्मादेतत्त्रयंत्यजेत्) ॥ अर्थयह ॥ काम क्रोध लोभ यहतीनोंहीं इसपुरुषकूं नरककेप्राप्तिकाद्वारभूत होवैहैं ॥ यातैंयहपुरुष तिनतीनोंका परित्यागकरे इति ॥ १२ ॥ ❀ ॥ तहांपूर्व यहवार्त्ता कथनकरी ॥ जेपुरुष परमेश्वरतैंविमुखहैं ॥ तिनपुरुषोंकी जा फलकीकामनाहै ॥ तथा ताफलकीकामनाकरिकैकऱ्याजो नित्यनैमित्तिककाम्यकर्मोंकाअनुष्ठानहै ॥ तथा तिनकर्मोंकेअनुष्ठानविषेउपयोगीजोशास्त्रजन्यज्ञानहै॥तेसर्व व्यर्थहींहोवैहैं ।। यातैं तेपुरुष परलोककेफलतैंतथा ताफलकेसाधनोंतैं शून्यहींहोवैहै ॥ और तिनपुरुषोंकूं इसलोककाभी कोईफल प्राप्तहोतानहीं ॥ जिसकारणतैं तेपुरुष विवेकविज्ञानतैंशून्यहोणेतैं विचेतसूहैं ॥ यातैं तेपरमेश्वरतैंविमुख दीनपुरुष सर्वपुरुषार्थोंतैंभ्रष्टहोणेतैं सर्व प्राणीयोंकूं शोच्यकरणेयोग्यहैं ॥ यहसर्व अर्थ पूर्वकथनकऱ्या ॥ तहां सर्वपुरुषार्थोंकूं प्राप्तहोणेहारे तथानहींशोच्यकरणेयोग्य ऐसेकौंनपुरुषहैं ॥ ऐसीअर्जुनकीजिज्ञासाकेहुए ॥ एकपरमेश्वरकेशरणागत कूंप्राप्तहुएपुरुषहीं इसप्रकारकेहैं इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) महात्मानस्तुमांपार्थदैवींप्रकृतिमाश्रिताः॥ भजंत्यनन्यमनसोज्ञात्वाभूतादिमव्ययम् ॥१३॥महात्मानः । तुं । माम् । पार्थ । दैवीम् । प्रकृतिम् । आश्रिताः । भजंति । अनन्यमनसः । ज्ञात्वा । भूतादिम् । अव्ययम्॥१३॥(इतिपदच्छेदः)॥ हेअर्जुनदैवी

प्रकृतिकूं आश्रयकरणेहारे तथा मैंपरमेश्वरतैं अन्यविषेनहींहै मनजिनोंका ऐसेमहात्मापुरुष तौ मैंपरमेश्वरकूं सर्वभूतोंकाकारणरूप तथानाशतैं रहित जानिके भजेहैं ॥ १३ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन महानहै आत्मा क्या अंतःकरण जिनोंका तिनपुरुषोंकानाम महात्माहै ॥ अर्थात् अनेकजन्मोंविषेकऱ्येहुएपुण्यकर्मोंकरिकैसंस्कृत तथाक्षुद्र कामादिकविकारोंकरिकैनहीं अभिभवकऱ्याहुआहैअंतःकरण जिनोंका तिनोंकानाम महात्माहै ॥ जिसकारणतैं तेपुरुष महात्माहैं ॥ तिसकारणतैंहीं (अभयंसत्व संशुद्धिः) इत्यादिकवचनोंकरिकै आगेकथनकरणीजा दैवीनामा सात्विकीप्रकृतिहै ॥ तादैवीप्रकृतिकूं आश्रयणकऱ्याहैजिनोंनैं ॥ जिसकारणतैं तिनमहात्मापुरुषों नैं दैवीप्रकृतिकूंआश्रयणकऱ्याहै॥तिसकारणतैंहीं मैंपरमेश्वरतैंअन्यवस्तुविषेनहींहैमन जिनोंका ऐसेमहात्मापुरुषतौ मैंपरमेश्वरकूं गुरुशास्त्रकेउपदेशतैंसर्वजगत्काकार णरूपजानिकै तथाअविनाशिरूपजानिकै भजेहैं ॥ अर्थात् मैंपरमेश्वरका सेवनकरेहैं ॥ ईहां (महात्मानस्तु) यावचनविषेस्थितजो तु यहशब्दहै ॥ सोतुशब्द पूर्वकथनकऱ्येहुए मूढपुरुषोंतैं इनमहात्मापुरुषोंविषे महान्‌विलक्षणताकूं सूचनाकरेहै इति ॥ १३ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् तेमहात्मापुरुष आपपरमे श्वरकूं किसप्रकारकरिकै भजेहैं ॥ ऐसीअर्जुनकीजिज्ञासाकेहुए ॥ श्रीभगवान् ताभजनकेप्रकारकूं दोश्लोकोंकरिकै कथनकरेहै ॥

(मू०श्लो०) सततंकीर्त्तयंतोमांयतंतश्चदृढव्रताः ॥ नमस्यंतश्चमांभक्त्यानित्ययुक्ताउपासते ॥ १४ ॥ सततं । कीर्त्तयंतः । मां । यतंतः । च । दृढव्रताः । नमस्यंतः । च । मां । भक्त्या । नित्ययुक्ताः । उपासते ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन तेमहात्मापुरुष सर्वदा मैंपरब्रह्मकूं कीर्त्तनकरतेहुए तथा प्रयत्नकरतेहुए तथादृढव्रतवालेहुए तथा मैंपरमेश्वरकों नमस्कारकरतेहुए तथामैंपरमेश्व रकी भक्तिकरिकै नित्ययुक्तहुए मैंपरमेश्वरकूं चिंतनकरेहैं ॥ १४ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन तेमहात्मापुरुष सर्वकालविषे मैंपरमात्मादेवकूंहीं कीर्त्तनकरेहैं ॥ अर्थात् सर्वउपनिषदोंकरिकैप्रतिपाद्य जो मैंनिर्गुणपरमात्मादेवहूं ॥ तिस मैंनिर्गुणस्वरूपकूं तेमहात्मापुरुष ब्रह्मवेत्तागुरुकेसमीपजाइकै वेदांतवाक्योंकेविचारकरिकै कीर्त्तनकरेहै ॥ और तागुरुकीसमीपतातैंभिन्नकालविषेतौं प्रणवादिकमंत्रोंकेजपकरिकै तथाउपनिषदोंकीआवृत्तिकरिकै कीर्त्तनकरेहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ तेमहात्माजन मैंनिर्गुणब्रह्मकूं सर्वकालविषे वेदांतशास्त्रके अध्ययनरूपश्रवणव्यापारका विषयकरेहैं ॥ इतनैंकहणेकरिकै श्रवणरूपसाधनकानिरूपणकऱ्या ॥ अबमननरूपसाधनका निरूपणकरेहैं (यतंतः इति) हेअर्जुन पुनः तेमहात्मापुरुष गुरुकेसमीप अथवाअन्यत्र वेदांततैं अविरोधितर्कोंकाअनुसंधानकरिकै गुरूपदिष्टमैंपरमेश्वरकेनिर्गुणस्वरूपकेनिश्चयकूं अप्रामाण्यशंका

तैंरहित करणेवासतैं प्रयत्नकरेहैं ॥ अर्थात् श्रवणकरिकैनिश्चयकऱ्येहुएअर्थके बाधकरणेहारीशंकावोंकूं निवृत्तकरणेहारीतर्कोंका अनुसंधानरूपमननपरायणहोवैहैं॥ इतनैंकहणेकरिकैमननका निरूपणकऱ्या ॥ अब ताश्रवणमननकेअधिकारवासतै शमदमादिकसाधनोंका निरूपणकरेहैं (दृढव्रताःइति) हेअर्जुन तेम हात्मापुरुष तिसश्रवणमननकेअधिकारकीप्राप्तिवासतै प्रथम दृढव्रतहोवैहैं ॥ तहां दृढहैं क्या प्रतिपक्षियोंकरिकैचलायमानकरणेकूंअशक्यहैं अहिंसा सत्य अस्तेय ब्रह्मचर्य अपरिग्रह इत्यादिकव्रतजिनोंके तिनोंकानाम दृढव्रताहै ॥ अर्थात् तेमहात्मापुरुष शमदमादिकसाधनोंकरिकैसंपन्नहोवै ॥ तहां अहिंसादिकव्रतों विषे दृढरूपता पतंजलिभगवान्नैंभी योगसूत्रोंविषे कथनकरीहै ॥ तहां सूत्रद्वयम् ॥(अहिंसासत्यास्तेयब्रह्मचर्यापरिग्रहायमाः॥ जातिदेशकालसमयानवच्छिन्नाः सर्वभौमाः महाव्रतम्) ॥ अर्थयह ॥ अहिंसा सत्य अस्तेय ब्रह्मचर्य अपरिग्रह यहपंच यमकहेजावैहैं इति ॥ तेअहिंसादिकपंचयम क्षिप्त मूढविक्षिप्त इनतीनभूमि कावोंविषेभी संभावनाकऱ्येजावैहैं ॥ यातैं तेपंचयम सार्वभौमा कह्येजावैहैं ॥ ऐसेअहिंसादिकपंचयम जाति देश काल समय इन चारोंकरिकै अनवच्छिन्नहुए महाव्रत कहेजावैहैं ॥ ईहां जातिशब्दकरिकै ब्राह्मणत्वादिकजातिका ग्रहणकरणा ॥ और देशशब्दकरिकै तीर्थादिकउत्तमदेशका ग्रहणकरणा ॥ और कालशब्द करिकै एकादशीअमावास्यादिकपवित्रदिनोंकाग्रहणकरणा ॥ और समयशब्दकरिकै प्रयोजनविशेषका ग्रहणकरणा ॥ तहां ब्राह्मणादिकउत्तमप्राणियोंकूं मैं नहीं हननकरोंगा याप्रकारकासंकल्पकरिकै जो तिनब्राह्मणादिकोंका नहींहननकरणाहै ॥ साअहिंसा जातिकरिकैअवच्छिन्न कहीजावैहै ॥ और तीर्थादिकउत्तमदेश विषे मैं किसीभीप्राणीकाहनननहींकरोंगा याप्रकारकासंकल्पकरिकै जो तिनतीर्थादिकोंविषे किसीभीप्राणीका नहींहननकरणाहै ॥ साअहिंसादेशकरिकैअवच्छि न्न कहीजावैहै ॥ और एकादशीआदिकपवित्रदिनोंविषे मैं किसीभीप्राणीकानहींहननकरोंगा याप्रकारकासंकल्पकरिकै जो तिनएकादशीआदिकोंविषे किसीभीप्रा णीका नहींहननकरणाहै ॥ साअहिंसा कालकरिकैअवच्छिन्न कहीजावैहै ॥ और यज्ञयुद्धादिकप्रयोजनतैंविना मैं किसीभीप्राणीका नहींहननकरोंगा याप्रकारका संकल्पकरिकै जो तिनयज्ञयुद्धादिकप्रयोजनतैंविना किसीभीप्राणीका नहींहननकरणाहै॥ साअहिंसा समयकरिकैअवच्छिन्न कहीजावैहै ॥ इसप्रकार सत्यादिकोंवि षेभी यथायोग्य जातिआदिकोंकरिकैअवच्छिन्नता जानिलेणी ॥ और किसीभीदेशविषे तथाकिसीभीकालविषे तथाकिसीभीप्रयोजनवासतै किसीभीजातिवाले जीवका मैं हनननहींकरोंगा याप्रकारकासंकल्पकरिकै जो सर्वप्रकारतैं किसीभीप्राणीमात्रका नहींहननकरणाहै ॥ साअहिंसा तिनजातिआदिकचारोंकरिकै अनवच्छिन्न कहीजावैहै ॥ इसीप्रकार सत्यादिकयमोंविषेभी जातिआदिकोंकरिकैअनवच्छिन्नता जानिलेणी ॥ इसप्रकार जातिआदिकोंकरिकैअनवच्छिन्नहु एते अहिंसादिकयम महाव्रत कह्येजावैहैं इति ॥ इनदोनोंयोगसूत्रोंका विस्तारतैंअर्थतौं द्वादशीतकेचतुर्थअध्यायविषे ॥ (द्रव्ययज्ञास्तपोयज्ञाः) इसश्लोककेव्या

ख्यानविषे कथनकरिआयेहैं ॥ इसप्रकारतैं दृढहैंअहिंसादिकव्रतजिनोंके तिनोंकानाम दृढव्रताहै इति ॥ और तेमहात्माजन मैंपरमेश्वरकूंहीं नमस्कारकरेहैं ॥
अर्थात् तिनमहात्माजनोंका इष्टदेवतारूपकरिकै तथागुरुरूपकरिकैस्थित जो सर्वशुभगुणोंकानिधानरूप मैंभगवान्‌वासुदेवहूं तिसमैंभगवान्‌कूंहीं तेमहात्माजन
शरीरमनवाणीकरिकै नमस्कारकरेहैं ॥ ईहां (नमस्यंतश्च) इसवचनविषेस्थितजो चकारहै ॥ ताचकारकरिकै शास्त्रांतरविषे प्रसिद्धश्रवणादिकोंकाभी ग्रहण
करणा ॥ तहांश्लोक ॥ (श्रवणंकीर्त्तनंविष्णोःस्मरणंपादसेवनम् ॥ अर्चनंवंदनंदास्यंसख्यमात्मनिवेदनम्) ॥ अर्थयह ॥ सर्वत्रव्यापकविष्णुका श्रवणकरणा ॥ तथा
कीर्तनकरणा तथा स्मरणकरणा ॥ तथा ताकेपादोंका सेवनकरणा ॥ तथा अर्चनकरणा ॥ तथा वंदनकरणा ॥ तथा दासभावकरणा ॥ तथा सखाभावकरणा ॥
तथा आपणेआत्माका समर्पणकरणा इति ॥ इसश्लोकविषे वंदनभीकथनकऱ्याहै ॥ सोईहींवंदन श्रीभगवान्‌नैं (नमस्यंतश्च) यावचनकरिकैकथनकऱ्याहै ॥
यातैं इसश्लोकविषे तावंदनकेसहवर्त्तणेहारे श्रवणादिकोंका तिसचकारकरिकै ग्रहणसंभवैहै ॥ यद्यपि पुष्पचंदनअक्षतादिकोंकरिकैअर्चन तथापादोंकासेवन साक्षात्
ईश्वरकासंभवतानहीं ॥ तथापि सोईश्वरहीं गुरुरूपहोइकै शिष्यकूं उपदेशकरेहै यहवार्त्ता शास्त्रविषे कथनकरीहै ॥ यातैं तागुरुरूपईश्वरका अर्चन तथापादों
कासेवन संभवैहै ॥ अथवा (द्वेरूपेवासुदेवस्यचलंचाचलमेवच ॥ चलंसंन्यासिनोरूपमचलंप्रतिमादिकम् ॥) अर्थयह ॥ सर्वत्रव्यापक भगवान्‌वासुदेवके दोरूपहैं ॥
एकतौं चलणेहारारूपहै ॥ दूसरा अचलरूपहै ॥ तहां संन्यासीकास्वरूप चलरूपहै ॥ और प्रतिष्ठाकरीहुई पाषाणमय अथवाधातुमय प्रतिमाआदिक अचल
रूपहै इति ॥ इत्यादिकशास्त्रवचनोंविषे प्रतिमाभी विष्णुकारूपकह्याहै ॥ यातैं ताप्रतिमारूपविष्णुकाअर्चन तथापादसेवन दोनोंसंभवैहैं ॥ इसीकारणतैंहीं
शास्त्रविषे तिनदोनोंस्वरूपोंकूं नहींनमस्कारकरणेहारेपुरुषकूं नरककीप्राप्ति कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ (देवताप्रतिमांदृष्ट्वा यतिंदृष्ट्वाचदंडिनम् ॥ प्रणिपात
मकुर्वाणोरौरवंनरकंव्रजेत्) ॥ अर्थयह ॥ विष्णुशिवादिकदेवतावोंकी प्रतिमाकूंदेखिकै तथादंडयुक्तसंन्यासीकूं देखिकै जोपुरुष तिनोंकूं नमस्कारनहीं करेहै ॥
सोपुरुष रौरवनरककूंप्राप्तहोवैहै इति ॥ ईहां (नमस्यंतश्चमाम्) इसवचनविषेजो मां यहपद दूसरीवार कथनकऱ्याहै ॥ सोसगुणरूपकेबोधनकरणेवासतैं
कथनकऱ्याहै ॥ जोऐसानहींअंगीकारकरिये ॥ तौं (कीर्त्तयंतोमाम्) इसपूर्ववचनविषेस्थित मां शब्दकरिकैहीं अर्थकीसिद्धिहोइसकेहै ॥ पुनः मां यहशब्दकहणा
व्यर्थहोवैगा ॥ यातैं प्रथम मां यहशब्द निर्गुणस्वरूपकाबोधकहै ॥ और द्वितीय मां यहशब्द सगुणस्वरूपकाबोधकहै ॥ यहअर्थहीं अंगीकारकरणा उचितहै
इति ॥ तथा तेमहात्माजन सर्वदा मैंपरमेश्वरविषयक परमप्रेमरूपभक्तिकरिकैयुक्तहोवैहैं ॥ इतनैंकहणेकरिकै सर्वसाधनोंकीपुष्कलता तथाप्रतिबंधककाअभाव
दिखाया ॥ अर्थात् जेअधिकारीपुरुष सर्वदा परमेश्वरकीभक्तिकरिकैयुक्तहोवैहैं ॥ तेअधिकारीपुरुष ताभक्तिकेप्रभावतैं सर्वप्रतिबंधकोंतैं रहितहोइकै शीघ्रहीं आत्म

ज्ञानकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ यहवार्त्ता श्रुतिविषेभी कथनकरीहै ॥तहांश्रुति॥ (यस्यदेवेपराभक्तिर्यथादेवेतथागुरौ ॥ तस्यैतेकथिताह्यर्थाःप्रकाशंतेमहात्मनः) ॥ अर्थयह ॥ जिसअधिकारीपुरुषकी परमात्मादेवविषे परमभक्तिहै ॥तथा जैसे परमात्मादेवविषे परमभक्तिहै॥ तैसेहीं ब्रह्मउपदेष्टागुरुविषे परमभक्तिहै ॥ तिस महात्माअधिकारी पुरुषकूंहीं यहवेदांतप्रतिपादितअर्थ बुद्धिविषे प्रकाशमानहोवैहैं इति ॥ यहवार्त्ता पतंजलिभगवान्नैंभी योगसूत्रोंविषेकथनकरीहै ॥ तहांसूत्रम् ॥ (ततःप्रत्यक्चेतनाधिगमोऽप्यंतरायाभावश्च) ॥ अर्थयह ॥ तिसपरमेश्वरकीअनन्यभक्तिरूप प्रणिधानतैं इसअधिकारीपुरुषकूं प्रत्यक्चेतनका साक्षात्कारहोवैहै ॥ तथा सर्व विघ्नोंकाभी अभावहोवैहै इति ॥ इसप्रकार तेमहात्माजन शमदमादिकसाधनोंकरिकैसंपन्नहुए तथावेदांतशास्त्रकेश्रवणमननपरायणहुए तथापरमगुरुरूपपरमेश्वरविषे परमप्रेमकरिकै तथानमस्कारादिकोंकरिकै सर्वविघ्नोंतैंरहितहुए मैंपरमेश्वरकूं उपासनाकरेहैं ॥ अर्थात् श्रवणमननकीपरिपाकतातैं उत्तरभावी जोअनात्माकारविजातीयवृत्तियोंकेव्यवधानतैंरहित मैंपरमेश्वरकेआकार सजातीयवृत्तियोंकाप्रवाहहै ताकरिकै निरंतर मैंपरमेश्वरकूंचिंतनकरेहैं ॥ इतनैंकहणेकरिकै श्रीभगवान्नैं तत्त्वसाक्षात्कारकेसमीपहोणेतैं परमसाधनरूप निदिध्यासन दिखाया ॥ इसप्रकार श्रवणादिकसाधनोंकीपुष्कलताकेहुए इसअधिकारीपुरुषविषे वेदांतवाक्यकरिकैजन्य तथाअखंडवस्तुविषयक तथामैंब्रह्मरूपहूं ऐसासाक्षात्काररूप जोआत्मज्ञान उत्पन्नहोवैहै ॥ सो सर्वसाधनोंकाफलभूत आत्मज्ञान संपूर्णशंकारूपीकलंकोंतैंरहितहुआ केवल आपणीउत्पत्तिमात्रकरिकै संपूर्ण अज्ञानकूं तथाताअज्ञानकेकार्यरूपसर्वप्रपंचकूं नाशकरेहै ॥ जैसे दीपक आपणीउत्पत्तिमात्रकरिकैहीं अंधकारकूं नाशकरेहै ॥ ताअंधकारकेनाशकरणेविषे सोदीपक दूसरेकिसीसाधनकीअपेक्षाकरतानहीं ॥ किंतु सोदीपक आपणीउत्पत्तिविषेहीं तेलवर्तीआदिक साधनोंकीअपेक्षाकरेहै ॥ तैसे सोआत्मज्ञानभी ताकार्यसहितअज्ञानकीनिवृत्तिकरणेविषे दूसरेकिसीसाधनकी अपेक्षाकरतानहीं ॥ किंतु सोआत्मज्ञान आ[illegible]गी उत्पत्तिविषेहीं तिनश्रवणादिकसाधनोंकीअपेक्षाकरेहै ॥ यातैं सोआत्मज्ञान निरपेक्षहुआहीं साक्षात् मोक्षकाहेतुहै ॥ तामोक्षकीप्राप्तिकरणेविषे सोआत्मसाक्षात्कार भूमिकावोंकेजयक्रमकरिकैभ्रुवोंकेमध्यविषेप्राणोंकेप्रवेशकीभीअपेक्षाकरैनहीं ॥ तथा सुषुम्नानामा मूर्द्धन्यनाडीकरिकै प्राणोंकेउत्क्रमणकी अपेक्षाकरैनहीं ॥ तथा अर्चिरादि मार्गकरिकैब्रह्मलोकविषेगमनकरणेकीभी अपेक्षाकरैनहीं ॥ तथा ताब्रह्मलोककेभोगोंकेअंतकालपर्यंत विलंबकीभी अपेक्षाकरेनहीं ॥ यातैं श्रीभगवान्नैं (इदंतुतेगुह्यतमंप्रवक्ष्याम्यनसूयवेज्ञानम्) इसवचनकरिकै जोपूर्व ज्ञानकेउपदेशकीप्रतिज्ञाकरीथी ॥ सोज्ञान इसश्लोकविषे श्रीभगवान्नैं कथनकऱ्याहै ॥ और इसआत्मज्ञानकाजो अशुभसंसारतैंमुक्तिरूपफलहै ॥ सोफलतौ श्रीभगवान्नैं पूर्वहीं कथनकऱ्याथा ॥ यातैं ईहां पुनः सोफल कथनकऱ्यानहीं ॥ इसप्रकारकागंभीरअभिप्राय श्रीभगवान्का इसश्लोकविषेहैं ॥ और इसश्लोकका ऊपरिलाअर्थतौ प्रगटहींहै इति ॥ १४ ॥ ❀ ॥ तहां पूर्वश्लोकविषे कथनक

न्येजे तत्त्वज्ञानकेसाधनरूप श्रवण मनन निदिध्यासनहैं ॥ तिनश्रवणादिकोंकेकरणेविषे जेपुरुष समर्थनहींहै ॥ तेपुरुषभी उत्तम मध्यम मंद इसभेदकरिकै तीन प्रकारकेहींहोवैहैं ॥ तेसर्व आपणीआपणीबुद्धिकेअनुसार मैंपरमेश्वरकूंहीं चिंतनकरेहैं ॥ इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरेहैं ॥

(मू० श्लो०) ज्ञानयज्ञेनचाप्यन्येयजंतोमामुपासते ॥ एकत्वेनपृथक्त्वेनबहुधाविश्वतोमुखम् ॥ १५ ॥ ज्ञानयज्ञेन । च । अपि । अन्ये । यजंतः । माम् । उपासते । एकत्वेन । पृथक्त्वेन । बहुधा । विश्वतोमुखम् ॥१५॥ (इतिपदच्छेदः)॥ हेअर्जुन अन्यकेईकउत्तम अधिकारीजनतौं ज्ञानरूपयज्ञकरिकै मेरापूजनकरतेहुए केवल एकत्वरूपकरिके मैंपरमेश्वरकूं हीं चिंतनकरेहैं तथाकेईकमध्यमअ धिकारी जनतौं भेदरूपकरिकैहीं चिंतनकरेहैं तथा केईकमंद जनतौं बहुतप्रकारों करिकै मैं विश्वरूप परमेश्वरकूंहीं चिंतनक रेहैं ॥ १५ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन पूर्वश्लोकविषे कथनकरेजेश्रवणादिकसाधनहैं ॥ तिनश्रवणादिकसाधनोंकेअनुष्ठानकरणेविषे असमर्थ जेकेईक अधिकारीजनहैं ॥ ते अधि कारीजन मैंपरमेश्वरकूंहीं ज्ञानरूपयज्ञकरिकै चिंतनकरेहैं ॥ तिनअधिकारीजनोविषेभी केईकउत्तमअधिकारीजनतौं केवल एकत्वज्ञानयज्ञकरिकैहीं चिंतनकरेहैं ॥ ईहां श्रुतिविषेंकथनकरीजाउपास्यउपासककाअभेदचिंतनरूप अहंग्रहउपासनाहै ताकानाम ज्ञानहै ॥ तहांश्रुति ॥ (त्वंवाअहमस्मिभगवोदेवतेअहंवैत्वमसि) ॥ अर्थयह ॥ हेभगवन् सगुणदेवता तथानिर्गुणदेवता जोतूंहैं सोमैंहूं ॥ और जोमैंहुं सोतूंहैं ॥ तुमारेहमारेविषे किंचित्मात्रभीभेदनहींहै इति ॥ याप्रकारकीअहं ग्रहउपासनारूपज्ञानहीं परमेश्वरका यजनरूपहोणेतें यज्ञरूपहै ॥ ईहां (ज्ञानयज्ञेनचाप्यन्ये) इसवचनविषेस्थितजो च अपि यहदोशब्दहैं ॥ तिनदोनोंशब्दोंविषे प्रथमचशब्दतौं एवकारकेअवधारणरूपअर्थकाबोधकहै ॥ ताचशब्दका माम् इसशब्दकेसाथि अन्वयकरणा ॥ और दूसरा अपिशब्दतौं दूसरेसाधनोंकीनिवृत्तिका बोधकहै ॥ यातें यहअर्थसिद्धहोवैहै॥केईकअधिकारीजनतौं दूसरेसाधनोंकीइच्छातैंरहित हुए उपास्यउपासककाअभेदचिंतनरूप अहंग्रहउपासनारूपज्ञानयज्ञकरिकै मैंपरमेश्वरकूंहीं चिंतनकरेहैं ॥ इसप्रकार अहंग्रहउपासनारूपज्ञानयज्ञकरिकै मैंपरमेश्वरकूंचिंतनकरणेहारेपुरुष उत्तमकह्येजावैहैंइति ॥ और दूसरेकेईक मध्यम अधिकारीजनतौं पृथक्त्वरूपकरिकै मैंपरमेश्वरकूंहीं चिंतनकरेहैं ॥ अर्थात् (आदित्योब्रह्मेत्यादेशः मनोब्रह्म) इत्यादिकश्रुतियोंनैं कथनकरीजा उपास्यउपास ककाभेदरूपप्रतीकउपासनाहै ॥ ताप्रतीकउपासनारूप ज्ञानयज्ञकरिकै मैंपरमेश्वरकूंहीं चिंतनकरेहैं इति ॥ और ताअहंग्रहउपासनाकेकरणेविषे तथाप्रतीक उपासनाकेकरणेविषे असमर्थ जेकेईक मंदपुरुषहैं ॥ तेमंदपुरुषतौं जिसीकिसीअन्यदेवताकीउपासनाकूंकरतेहुए तथाजिसीकिसीकर्मोंकूंकरतेहुए तिसतिसबहुत

प्रकारोंकरिकेभी विश्वरूपमैंपरमेश्वरकूंहीं तिसतिसदेवताकीउपासनारूपज्ञानयज्ञकरिकै चिंतनकरेहैं ॥ तहां तिसतिसज्ञानयज्ञकरिकै उत्तरउत्तरपुरुषोंकूं क्रमकरिके पूर्वपूर्वभूमिकाकालाभ अवश्यकरिकैहोवैहै इति ॥ और किसीटीकाविषेतौं इसश्लोकका यहअर्थ कथनकऱ्याहै ॥ योगशास्त्रवाले पातंजलतौं निर्विकल्पसमाधिरूप ज्ञानयज्ञकरिकै मैंपरमेश्वरकूंहीं चिंतनकरेहैं ॥ और औपनिषद्पुरुषतौं मैंहींभगवान्वासुदेवस्वरूपहूं याप्रकार अभेदरूपएकत्वकरिकै मैंपरमेश्वरकूंहीं चिंतनकरेहैं ॥ और विचारहीनप्राकृतजनतौ यहईश्वर हमारास्वामीहै मैंइसकादासहूं याप्रकार पृथक्त्वरूपकरिकै मैंपरमेश्वरकूंहीं चिंतनकरेहैं ॥ और दूसरेकेईकजनतौ बहुतप्रकारतैं विश्वतोमुख जैसे होवै तैसे हमारेकूंचिंतनकरेहैं अर्थात् जोकोईवस्तु देखणेविषे आवैहै सोवस्तु भगवत्काहीं स्वरूपहै ॥ और जोजोशब्द श्रवणकरणेविषेआवैहै ॥ सोसोशब्द भगवत्काहींनामहै ॥ और जोकोईवस्तु किसीकूंदीयाजावैहै ॥ तथा जोकोईपदार्थ भोग्याजावैहै ॥ सोसर्व भगवत्विषेहीं अर्पणहोवैहै ॥ इसप्रकार सर्वद्वारोंकरिकै मैंपरमेश्वरकाहीं चिंतनकरेहै ॥ १५ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् जबी तेपुरुष बहुतप्रकारतैं उपासनाकरेहैं ॥ तबी तेसर्व मैंपरमेश्वरकूंहीं चिंतनकरेहैं यह आपकावचन कैसे संगतहोवैगा ॥ ऐसी अर्जुनकीशंकाके हुए श्रीभगवान् च्यारिश्लोकोंकरिकै आपणेकूं विश्वरूपता वर्णनकरेहैं ॥

अहंक्रतुरहंयज्ञः स्वधाहमहमौषधम् ॥ मंत्रोहमहमेवाज्यमहमग्निरहंहुतम् ॥ १६ ॥ अहं । क्रतुः । अहं । यज्ञः । स्वधा । अहम् । अहम् । औषधं । मंत्रः । अहम् । अहम् । एव । आज्यम् । अहम् । अग्निः । अहं । हुतम् ॥ १६ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥
हेअर्जुन मैंपरमेश्वरहीं क्रतुरूपहूं तथामैंहीं यज्ञरूपहूं तथामैंहीं स्वधारूपहूं तथामैंहीं औषधरूपहूं तथामैंहीं मंत्ररूपहूं तथामैं परमेश्वर हीं आज्यरूपहूं तथामैंहीं अग्निरूपहूं तथामैंहीं हवनरूपहूं ॥ १६ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन श्रौतकर्महैनामजिनोंका ऐसेजेअग्निष्टोमादिककर्महैं तिनोंकानाम क्रतुहै ॥ सोक्रतुरूपभी मैंपरमेश्वरहींहूं ॥ और स्मार्तकर्महैनामजिनोंका ऐसेजे वैश्वदेवादिककर्महैं जिनवैश्वदेवादिकोंकूं श्रुतिस्मृतियोंविषे महायज्ञरूपकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ तिन वैश्वदेवादिकस्मार्तकर्मोंकानाम यज्ञहै ॥ सोयज्ञरूपभी मैंपरमेश्वरहींहूं ॥ और पितरोंकेताई दियाजोअन्नहै ताअन्नकानाम स्वधाहै ॥ सोस्वधारूपभी मैंपरमेश्वरहींहूं ॥ और वनस्पतिरूपओषधियोंतैं उत्पन्नभयाजोअन्नहै जिसअन्नकूं यहसर्वप्राणी भोजनकरतेहैं ॥ ताअन्नकानाम औषधहै ॥ अथवा रोगकी निवृत्तिका उपायरूपजोभेषजहै ताकानाम औषधहै ॥ सोऔषधरूपभी मैंपरमेश्वरहींहूं और स्वाहा स्वधा यह शब्दहैअंतविषेजिनोंके ऐसेजो वेदकेवचनहैं ॥ जिसवचनोंकाउच्चारणकरिकै देवतावोंकेताई तथापितरोंकेताई हविष दीयाजा

वेहै ॥ तिनवेदवचनोंकानाम मंत्रहै ॥ जैसे इंद्रायस्वाहा पितृभ्यःस्वधा इत्यादिकमंत्रहैं सोमंत्ररूपभी मैंपरमेश्वरहींहूं ॥ और तिनमंत्रोंकरिकै अग्निविषेपायाजोघृ तहै ताघृतकानाम आज्यहै ॥ सोघृतरूपआज्य ईहां व्रीहियवादिकसर्वहविषमात्रका उपलक्षणहै ॥ सोघृतादिहविषरूपभी मैंपरमेश्वरहींहूं ॥ और ताघृतादिरूपह विषकेप्रक्षेपकाअधिकरणरूप जेआहवनीयआदिकअग्निहैं ॥ सोअग्निरूपभी मैंपरमेश्वरहींहूं ॥ और ताअग्निविषे घृतादिरूपहविषका प्रक्षेपरूपजोहवनहै ताकानाम हुतहै ॥ सोहवनरूपभी मैंपरमेश्वरहींहूं ॥ ईहां यद्यपि एकहींअहंशब्दकेउच्चारणतैं उक्तअर्थकीसिद्धि होइसकैहै ॥ तथापि एकएक क्रतुयज्ञादिकशब्दकेसाथि जो अहंशब्दका उच्चारणकऱ्याहै सो तिनक्रतुयज्ञादिकोंविषे एकएकक्काज्ञानभी मैंपरमेश्वरकीहीं उपासनाहै इसअर्थके बोधनकरणेवासतै उच्चारणकऱ्याहै तहां इसश्लो कका यहसमुदायअर्थ सिद्धहोवैहै ॥ जितनैंकी क्रियाहैं तथा ताक्रियाकीसिद्धिकरणेहारे कारकहैं तथाताक्रियाकरिकैसाध्य फलहैं तेसर्व क्रियाकारकफल मैंपरमे श्वरकाहीं स्वरूपहैं ॥ मैंपरमेश्वरतैं अतिरिक्त कोईभीक्रियाकारकफलनहींहैं इति ॥ ईहां किसीटीकाविषेतौं क्रतुशब्दकरिकै देवताविषयकध्यानरूपसंकल्पका ग्रह णकऱ्याहै ॥ और यज्ञशब्दकरिकै श्रौतस्मार्त्तकर्मका ग्रहणकऱ्याहै इति ॥ १६ ॥ किंच ॥

(मू० श्लो०) पिताहमस्यजगतोमाताधातापितामहः ॥ वेद्यंपवित्रमोंकारऋक्सामयजुरेवच॥१७॥ पिता। अहम्। अस्य। जगतः। माता। धाता। पितामहः। वेद्यं। पवित्रम्। ओंकारः। ऋक्। साम। यजुः। एव। च ॥ १७॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन इस जगत्का पितारूप तथामातारूप तथाधातारूप तथापितामहरूप मैंपरमेश्वरहींहूं तथा वेद्यवस्तुरूप तथापवित्रवस्तुरूप तथाओंकाररूप तथाऋग्वेदरूप सामवेदरूप यजुर्वेदरूप मैंपरमेश्वरहींहूं ॥ १७॥ (इतिपदार्थः)॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन यहसर्वप्राणीमात्ररूपजोजगत्है ॥ इसजगत्का उत्पन्नकरणेहारा पितारूपभी मैंपरमेश्वरहींहूं ॥ तथा इसजगत्कूंउत्पन्नकरणेहारी मातारूप भी मैंपरमेश्वरहींहूं ॥ तथा इसजगत्काधातारूपभी मैंपरमेश्वरहींहूं अर्थात् इसजगत्कापोषणकरणेहारा अथवा तिसातिसपुण्यपापरूपकर्मकेसुखदुःखरूपफलके देणेहाराभी मैंपरमेश्वरहींहूं ॥ और इनप्राणीयोंकेपिताकाभीजोपिताहोवै ताकानाम पितामहहै ॥ सोपितामहरूपभी मैंपरमेश्वरहींहूं ॥ ईहांकिसीटीकाविषे जगत् शब्दकरिकै आकाशादिकसर्वकार्यप्रपंचका ग्रहणकरिकै मायाविशिष्टशबलब्रह्मकूं ताजगत्कापितारूपकह्याहै ॥ और अव्यक्तनामा अपराप्रकृतिकूं मातारूप कह्याहै ॥ और मायाउपहितअक्षरकूं पितामहरूप कह्याहै इति ॥ और इसअधिकारीजनोंकूं जानणेयोग्य जोपरब्रह्मवस्तुहै ताकानाम वेद्यहै ॥ सोवेद्यवस्तुरू पभी मैंपरमेश्वरहींहूं ॥ अथवा सर्वप्राणीमात्रकरिकै जानणेयोग्य जोशब्दस्पर्शरूपादिकवस्तुहैं तिनोंकानामवेद्यहै ॥ सोवेद्यवस्तुरूपभी मैंपरमेश्वरहींहूं ॥ और यह

अधिकारीजन जिसकरिकैशुद्धिकूंप्राप्तहोवैं ताकानाम पवित्रहै ॥ ऐसेशुद्धिकरणेहारे गंगास्नान गायत्रीजप आदिक हैं ॥ सोपवित्ररूपभी मैंपरमेश्वरहींहूं ॥ और तिसजाणणेयोग्यब्रह्मकेज्ञानका साधनरूपजो ओंकारहै ॥ सोओंकाररूपभी मैंपरमेश्वरहींहूं ॥ और अग्निहोत्रादिककर्मोंकीसिद्धिविषेउपयोगी तथातावेद्यब्रह्मविषे प्रमाणभूत जोऋग्वेदहै तथासामवेदहै तथायजुर्वेदहै ॥ सोऋगादिवेदरूपभी मैंपरमेश्वरहींहूं ॥ ईहां (यजुरेवच) यावचनविषेस्थितजो चकारहै ॥ ताचकार करिकै अथर्वणवेदकाभीग्रहणकरणा इति ॥ १७ ॥ ❋ ॥

(मू० श्लो०) गतिर्भर्त्ताप्रभुःसाक्षीनिवासःशरणंसुहृत् ॥ प्रभवःप्रलयःस्थानंनिधानंबीजमव्ययम् ॥ १८ ॥ गतिः । भर्त्ता । प्रभुः । साक्षी । निवासः । शरणं । सुहृत् । प्रभवः । प्रलयः । स्थानं । निधानं । बीजम् । अव्ययम् ॥ १८ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन मैंपरमेश्वरहीं गतिरूपहूं तथाभर्त्तारूपहूं तथाप्रभुरूपहूं तथासाक्षीरूपहूं तथानिवासरूपहूं तथाशरणरूपहूं तथासुहृत्रूपहूं तथाप्रभवरूपहूं तथाप्रलयरूपहूं तथास्थानरूपहूं तथानिधानरूपहूं तथानाशतैंरहित बीजरूपहूं ॥ १८ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन कर्मोंकरिकै जोफलप्राप्तहोवैहै ताफलकानाम गतिहै ॥ ऐसे स्वर्गादिफलहै ॥ सोगतिरूपभीमैंपरमेश्वरहींहूं और सुखकेसाधनोंकीप्राप्तिकरिकै जो पोषणकरैहै ताकानाम भर्त्ताहै ॥ सोभर्त्तारूपभी मैंपरमेश्वरहींहूं ॥ और यहपुत्रादिकपदार्थ हमारेहींहै याप्रकारतैं तिनपुत्रादिकपदार्थोंकूंस्वीकारकरणेहारा जोस्वामीहैताकानाम प्रभुहै ॥ सोप्रभुरूपभी मैंपरमेश्वरहींहूं ॥ और सर्वप्राणियोंकेशुभअशुभकर्मोंकूं जोदेखणेहाराहै ताकानाम साक्षीहै ॥ जैसे सूर्यचंद्रमादि कहैं ॥ सोसाक्षीरूपभी मैंपरमेश्वरहींहूं ॥ और निवासकरियेजिसविषे ताकानाम निवासहै ॥ अर्थात् भोगकेस्थानकानाम निवासहै ॥ सोनिवासरूपभी मैंपरमेश्वरहींहूं ॥ और विनाशकूंप्राप्तहोवैंदुःखजिसकेसमीप ताकानाम शरणहै ॥ अर्थात् शरणागतकूंप्राप्तहुएजनोंकेदुःखकानाशकरणेहारेकानाम शरणहै ॥ सो शरणरूपभी मैंपरमेश्वरहींहूं॥ और प्रतिउपकारकीनहींअपेक्षाकरिकै जोउपकारकरैहै ताकानाम सुहृत्है॥सोसुहृत्रूपभीमैंपरमेश्वरहींहूं॥और उत्पत्तिकानाम प्रभवहै॥ और विनाशकानाम प्रलयहै ॥ औरस्थितिकानाम स्थानहै ॥ सो प्रभवप्रलय स्थानरूपभी मैंपरमेश्वरहींहूं ॥ अथवा जिसकरिकै यहकार्य उत्पन्नहोवैहै ताकाना मप्रभवहै ॥ अर्थात् स्रष्टाकानामप्रभवहै ॥ और तेकार्य लयभावकूंप्राप्तहोवैं जिसकरिकै ताकानाम प्रलयहै ॥ अर्थात् संहर्त्ताकानाम प्रलयहै ॥ और यहकार्य स्थितहोवैंजिसविषे ताकानाम स्थानहै ॥ अर्थात् आधारकानाम स्थानहै ॥ सो प्रभव प्रलयस्थानरूपभी मैंपरमेश्वरहींहूं ॥ और तिसकालविषेभोगकीअयोग्यता तैं कालांतरविषेभोगणेयोग्यवस्तु स्थितकरीयेजिसविषे ताकानाम निधानहै ॥ अर्थात् सूक्ष्मरूपसर्ववस्तुवोंकाअधिकरणजोप्रलयस्थानहै ताकानाम निधानहै ॥

अथवा शंखपद्मादिकनिधिकानाम निधानहै ॥ सोनिधानरूपभी मैंपरमेश्वरहींहूं ॥ और उत्पत्तिकाजोकारणहोवै ताकानाम बीजहै ॥ जोबीज अव्ययहै ॥ अर्थात् जैसे व्रीहियवादिकबीज विनाशकूंप्राप्तहोवैहैं तैसे जोबीजविनाशकूंप्राप्तहोतानहीं ॥ ऐसा उत्पत्तिविनाशतेरहित सर्वकाकारणरूपबीजभी मैं परमेश्वरहींहूं इति ॥ १८ ॥ ❀ ॥ किंच ॥

(मू० श्लो०) तपाम्यहमहंवर्षंनिगृह्णाम्युत्सृजामिच ॥ अमृतंचैवमृत्युश्चसदसच्चाहमर्जुन ॥ १९ ॥ तपामि । अहम् । अहं । वर्षं । निगृह्णामि । उत्सृजामि । च । अमृतं । च । एव । मृत्युः । च । सत् । असत् । च । अहम् । अर्जुन ॥ १९ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥

हेअर्जुन मैंपरमेश्वरहीं तापकूंकरूंहूं तथा मैंपरमेश्वरहीं जलरूपरसकूं आकर्षणकरूंहूं तथा तारसकूं पुनःभूमिविषे परित्यागक रूंहूं तथा मैंपरमेश्वरहीं अमृतरूपहूं तथा मृत्युरूपहूं तथा सत्रूपहूं तथा असत्रूपहूं ॥ १९ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन सर्वकाआत्मारूप मैंअंतर्यामीपरमेश्वरहीं सूर्यरूपहोइके इसलोकविषे तापकूंकरूंहूं ॥ और तिसतापकेवशतैं सोसूर्यरूपमैंपरमेश्वरहीं पूर्व कन्येहुएवृष्टिरूपरसकूं किसीकआपणीकिरणावोंकरिके कार्त्तिकादिकअष्टमासोंविषे इसपृथिवीतैं आकर्षणकरूंहूं ॥ तिसतैंअनंतर सोसूर्यरूपमैंपरमेश्वरहीं तिसआ कर्षणकन्येहुएरसकूं आषाढादिकच्यारिमासोंविषे किसीकआपणीकिरणावोंकरिके इसपृथिवीविषे वृष्टिरूपकरिकेपरित्यागकरूंहूं ॥ और देवतावोंकेभक्षणकरणे योग्यजोअन्नहै ॥ जिसअन्नकेभक्षणकरिके तेदेवता मरणकूंप्राप्तहोतेनहीं ॥ ताअन्नकानाम अमृतहै ॥ अथवा सर्वप्राणीयोंकेजीवनकानाम अमृतहै सोअमृतरूप भी मैंपरमेश्वरहींहूं ॥ और सर्वप्राणीयोंकूंजोनाशकरेहै ताकानाम मृत्युहै ॥ अथवा सर्वप्राणीयोंकाजोविनाशहै ताकानाम मृत्युहै ॥ सोमृत्युरूपभी मैंप रमेश्वरहींहूं ॥ और जोवस्तु जिसआधारकेसंबंधवालाहुआ विद्यमानहोवैहै सोवस्तु तिसआधारविषे सत्कह्याजावैहै ॥ और जोवस्तु जिसआधारकेसंबंधवाला हुआ नहींविद्यमानहोवैहै ॥ सोवस्तु तिसअधिकरणविषे असत्कह्याजावैहै ॥ जैसे रूप पृथिवीजलतेजरूपआधारकेसंबंधवालाहुआ विद्यमानहोवैहै ॥ यातैं सो रूप तापृथिवीजलतेजरूपआधारविषे सत्कह्याजावैहै ॥ और सोईहींरूप वायुआकाशरूपआधारकेसंबंधवालाहुआविद्यमानहोवैनहीं ॥ यातैंसोरूप तावायुआका शविषे असत्कह्याजावैहै ॥ ऐसेसत्असत्रूपता अन्यपदार्थोंविषेभी जानिलेणी ॥ सोसत्रूप तथाअसत्रूपभी मैंपरमेश्वरहींहूं ॥ और किसीटीकाविषेतौं सत्असत् यादोनोंशब्दोंका यहअर्थकन्याहै ॥ शास्त्रविहितसाधुकर्मकानाम सत्है ॥ और शास्त्रनिषिद्धअसाधुकर्मकानाम असत्है इति ॥ और अन्यकिसीटीका विषेतौं सत् असत् यादोनोंशब्दोंका यहअर्थकन्याहै ॥ जोवस्तुइदमस्ति इदमस्ति इसप्रकारकेनामरूपकरिके कथनकन्याजावैहै ॥ सोवस्तु व्यक्तकह्याजावैहै ॥

ऐसाव्यक्तरूप जोनामरूपात्मक कार्यमात्रहै ॥ सोव्यक्तनामाकार्य सत्कह्याजावैहै ॥ और ताकार्यरूपव्यक्ततैंविलक्षण तथानामरूपकाकारणरूप जोअव्यक्तहै ॥ सोअव्यक्त असत्कह्याजावैहै ॥ अथवा स्थूलरूपदृश्यकानाम सत्है ॥ और सूक्ष्मरूपअदृश्यकानाम असत्है ॥ सोसत्रूप तथा असत्रूपभी मैंपरमेश्वरहींहूं ॥ ईहां (सदसच्च) इसवचनविषेस्थितजोचकारहै ॥ सोचकार ताव्यक्तअव्यक्तरूप सत्असत्दोनोंकेनिषेधकींयेहुए तानिषेधकाअवधिरूपकरिकैस्थित तथाकार्य कारणभावतैंरहित जोनिर्विशेष परब्रह्महै सोभीमैंहींहूं इसअर्थकेसूचनकरणेवासतैहै ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ सर्वकाआत्मारूपमैंपरमेश्वरकूंजानिकैतेअधि कारीजन आपणेआपणेअधिकारकेअनुसार पूर्वउक्तबहुतप्रकारोंकरिकै मैंपरमेश्वरकूंहीं चिंतनकरेहैं इति ॥ १९ ॥ ❀ ॥ इसप्रकार अहंग्रहउपासनारूप एक भावकरिकै तथाप्रतीकउपासनारूप पृथक्भावकरिकै तथाअन्यबहुतप्रकारोंकरिकै मैंपरमेश्वरकूं निष्कामहोइकैचिंतनकरणेहारे जेपूर्वउक्त उत्तम मध्यम मंद यह तीनप्रकारकेअधिकारीजनहैं ॥ तेअधिकारीजनतैं अंतःकरणकीशुद्धिद्वारा तथाआत्मज्ञानकीउत्पत्तिद्वारा क्रमकरिकै मुक्तिकूंहीं प्राप्तहोवैहैं ॥ और जेपुरुष सका महुए किसीभीप्रकारकरिकै मैंपरमेश्वरकूं चिंतनकरतेनहीं ॥ किंतु आपणीआपणीकामनाके विषयभूत जेस्वर्गादिकविषयसुखहैं ॥ तिनोंकीप्राप्तिवासतै काम्य कर्मोंकूंहीं करेहैं ॥ तेसकामपुरुष अंतःकरणकीशुद्धिकरणेहारे निष्कामकर्मोंकेअभावकरिकै आत्मज्ञानकेश्रवणादिकसाधनोंकेअयोग्यहुए वारंवार जन्ममरण रूपसंसारकूंहीं अनुभवकरेहैं ॥ इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् दोश्लोकोंकरिकैनिरूपणकरेहै ॥

(मू० श्लो०) त्रैविद्यामांसोमपाःपूतपापायज्ञैरिष्ट्वास्वर्गतिंप्रार्थयंते॥ तेपुण्यमासाद्यसुरेंद्रलोकमश्नंतिदिव्यान्दिविदेवभोगान् ॥ २० ॥

त्रैविद्याः । माम् । सोमपाः । पूतपापाः । यज्ञैः । इष्ट्वा । स्वर्गतिं । प्रार्थयंते । ते । पुण्यम् । आसाद्य । सुरेंद्रलोकम् । अश्नंति । दिव्यान् । दिवि । देवभोगान् ॥ २० ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन जेऋगादिकतीनवेदोंकूंजानणेहारेपुरुष काम्ययज्ञोंकरिकै मैंपरमेश्वरकूं पूजनकरिकै सोमकूंपानकरतेहुए तथापापोंतैंरहितहुए स्वर्गकीप्राप्तिकूं चाहतेहैं तेसकामपुरुष पुंण्यकेफलरूप तिसै स्वर्गलोककूं प्राप्तहोइकै तिसैस्वर्गलोकविषे दिव्य देवतोंवोंकेभोगोंकूं भोगेहैं ॥ २० ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन यज्ञविषे होताकृतजोकर्महै तथाअध्वर्युकृतजोकर्महै तथाउद्गाताकृतजोकर्महै ताकर्मकेज्ञानकाहेतुभूतहैं ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद यहतीनविद्या जिनपुरुषोंकी तिनोंकानाम त्रैवियहै ॥ अथवा तिनऋगादिकतीनविद्यावोंकूं जेभलीप्रकारतेजानतेहोवैं तिनोंकानाम त्रैवियहै ॥ तहां तिनतीनवेदोंउक्तकर्मके करणविषे तथाआपकरणेविषे जोसामर्थ्यहै ॥ यहहीं तिनतीनवेदोंका भलीप्रकारजानणाहै ॥ ऐसे तीनवेदोंकूंजानणेहारे याज्ञिकपुरुष अग्निष्टोमादिककाम्य

यज्ञोंकरिकै इंद्र वसु रुद्र आदित्यरूप मैंपरमेश्वरकूंपूजनकरिकै ॥ अर्थात् यहपरमेश्वरहीं इंद्रादिरूपहै याप्रकारतैं इंद्रादिरूपकरिकै मैंपरमेश्वरकूंनहींजानते हुएभी तेसकामपुरुष वस्तुगतितैं तिनइंद्रादिक देवतावोंकेपूजनतैं मैंअंतर्यामीपरमेश्वरकूंनहीं पूजनकरिकै जेपुरुष सोमपाहोवैहै ॥ इहां सोमवल्लीकेरसकूंनिकासिकै तारसरूपसोमकूंहीं वैदिकअग्निविषेहवनकरिकै परिशेषतैंरह्येहुए सोमकूं जेपुरुष पानकरेहैं तिनोंकानाम सोमपाहै ॥ तिससोमकेपानकरिकैहीं पूतपापाहुए ॥ अर्थात् स्वर्गभोगोंकेप्रतिबंधकपापकर्मोंतैंरहितहुए जेसकामपुरुष केवल स्वर्गलोककेप्राप्तिकीहींइच्छाकरेहैं ॥ अंतःकरणकेशुद्धिकी तथाआत्मज्ञानकेप्राप्तिकी जे पुरुष इच्छाकरतेनहीं ॥ अर्थात् स्वर्गलोकविषे किंचित्मात्रभी भयहोतानहीं तथास्वर्गवासीदेवता अमृतभावकूं प्राप्तहोतेहैं याप्रकारकेअर्थवादवचनोंकूंश्रवणकरिकै जेसकामपुरुष सोस्वर्गलोक हमारेकूंप्राप्तहोवै याप्रकारतैं केवलस्वर्गसुखकेप्राप्तिकीहींइच्छाकरेहैं ॥ तेस्वर्गकीकामनावालेसकामपुरुष तिनअग्निष्टोमादिकपुण्यकर्मोंकेफलरूप देवराजइंद्रकेस्वर्गलोकरूपस्थानकूं प्राप्तहोइकै तिसस्वर्गलोकविषे दिव्यदेवभोगोंकूं भोगेहैं ॥ तहां जेभोग इनमनुष्योंकूं नहींप्राप्तहोवैहैं तिन भोगोंकूं दिव्यभोग कहेहैं ॥ और जेभोग केवल देवतादेहकरिकैहीं भोगेजावैहैं तिनभोगोंकानाम देवभोगहै ॥ अथवा स्वर्गविषे देवतावोंनैं प्राप्तकन्येजेभोगहैं तिनोंकानाम देवभोगहै ईहां भोगशब्दकरिकै विषयसुखकाग्रहणकरणा ॥ अथवा ताभोगशब्दकरिकै तासुखकेसाधनरूपविषयोंकाग्रहणकरणा ॥ तहां विषयसुखकानाम भोगहै इसपक्षविषेतौं (अश्नंति) इसपदका अनुभवंति यहअर्थकरणा ॥ और विषयोंकानाम भोगहै इसपक्षविषेतौं (अश्नंति) इसपदका भुंजते यहअर्थकरणा ॥ अर्थात् तेसकामपुरुष तास्वर्गलोकविषे विषयजन्यदिव्यसुखोंकूं अनुभवकरेहैं ॥ अथवा दिव्यविषयोंकूंभोगेहैं इति ॥ २० ॥ ❀ ॥ ॥ शंका ॥ हेभगवन् तास्वर्गलोकविषे दिव्यभोगोंकेभोगणेतैं तिनसकामपुरुषोंकूं किसअनिष्टकीप्राप्तिहोवैहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् तिनसकामपुरुषोंकूं महान्अनिष्टकीप्राप्तिकथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) तेतंभुक्त्वास्वर्गलोकंविशालंक्षीणेपुण्येमर्त्यलोकंविशंति ॥ एवंहित्रैधर्म्यमनुप्रपन्नागतागतंकामकामालभंते ॥ २१ ॥

ते । तम् । भुक्त्वा । स्वर्गलोकम् । विशालम् । क्षीणे । पुण्ये । मर्त्यलोकम् । विशंति । एवम् । हि । त्रैधर्म्यम् । अनुप्रपन्नाः ॥ गतागतम् । कामकामाः । लभंते ॥ २१ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन तेसकामपुरुष तिस विशाल स्वर्गलोककूं भोगिकै तापुण्यके नाशहुए पुनः इसमनुष्यलोककूं प्राप्तहोवैहैं ॥ इसप्रकारतैं प्रसिद्ध वेदप्रतिपादितकाम्यकर्मकूं पुनःनिश्चयकरतेहुए तथा दिव्य भोगोंकीकामनाकरतेहुए तेसकामपुरुष वारंवार गर्भनआगमनकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ २१ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन तेसकामपुरुष तिसकाम्यरूपपुण्यकर्मकरिकै प्राप्तहुए विस्तारवालेस्वर्गलोककूं भोगिकै अर्थात् आपणेआपणेपुण्यकर्मकीअधिकतातैं तिस स्वर्गलोककेअधिकसुखकूंअनुभवकरिकै तिसभोगकेजनक पुण्यकर्मोंकेनाशहुएतैंअनंतर तिसदेवतादेहकेनाशहुए पुनः देहकेग्रहणवासतै इसमनुष्यलोककूंप्राप्तहोवैहैं॥ अर्थात् पुनःगर्भवासतैंआदिलैकेअनेकप्रकारकेदुःखोंकूंअनुभवकरैहैं ॥ और जैसेपूर्वमनुष्यदेहविषे तिनकर्मीपुरुषोंनैं त्रैधर्म्यकूं निश्चयकऱ्याथा ॥ तैसे इसमनुष्य देहविषेभी तिस त्रैधर्म्यकूंहीं निश्चयकरैहैं ॥ अर्थात् तिस त्रैधर्म्यकेअनुष्ठानविषेहीं तत्परहोवैहैं ॥ तहां ऋग् यजुष् साम यातीनवेदोंकरिकैप्रतिपादित जो होताका तथाअध्वर्युका तथाउद्गाताका धर्मविशेषहै ॥ तिनतीनधर्मोंकेयोग्यजे ज्योतिष्टोमादिककाम्यकर्महैं ॥ तिनकाम्यकर्मोंकानाम त्रैधर्म्यहै ॥ और (एवंत्रयीधर्ममनुप्रपन्नाः) इसप्रकारकाजो मूलश्लोकविषेपाठहोवै ॥ तौंभी इसपूर्वउक्तअर्थतैं विलक्षणअर्थ सिद्धहोवैनहीं ॥ किंतु सोपूर्वउक्तअर्थहींसिद्धहोवैहै ॥ तहां ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद यातीनवेदोंकानाम त्रयीहै ॥ तिस तीनवेदरूपत्रयीकरिकैप्रतिपादितजो ज्योतिष्टोमादिककाम्यधर्महै ताकानाम त्रयीधर्महै ॥ तहां होता अध्वर्यु उद्गातायहतीनोंनाम यज्ञकरावणेहारेब्राह्मणोंकेहोवैहैं ॥ और अग्निष्टोम ज्योतिष्टोम यहयज्ञविशेषहोवैहै ॥ और (अनुप्रपन्नाः) इसवचनकेआदिविषेस्थितजो अनुयहशब्दहै ॥ सोअनुशब्द उत्तरउत्तरजन्मके कर्मविषयकानिश्चयविषे पूर्वपूर्वजन्मके कर्मविषयकनिश्चयकीअपेक्षाकूं सूचनकरैहै ॥ यातैं यहअर्थसिद्धहोवैहै ॥ (त्रिकर्मकृत्तरतिजन्ममृत्यू दक्षिणावंतोअमृतत्वंभजंते ॥) अर्थयह ॥ तीनवेदप्रतिपादितकर्मोंकूंकरणेहारेपुरुष जन्ममृत्युतैंरहितहोवैहैं ॥ और दक्षिणावालेपुरुष अमृतभावकूं प्राप्तहोवैहैं इति ॥ इत्यादिक स्तुति रूपअर्थवादोंकेकथनपूर्वक ऋगादिकवेदोंनैं प्रतिपादनकऱ्ये जेज्योतिष्टोमादिककाम्यकर्महैं ॥ तेकाम्यकर्महीं भोगमोक्षकीप्राप्तिविषे परमकारणहैं मनका निग्रहरूपशम तथाइंद्रियोंकानिग्रहरूपदम तथासर्वकर्मोंकासंन्यास तथा आत्मज्ञान तथाईश्वर इनसर्वोंविषे कोईभी साधन तिसभोगमोक्षका कारणहै नहीं ॥ इसप्रकारके पूर्वपूर्वजन्मकेनिश्चयकूंलैके उत्तरउत्तरजन्मविषेभी तेसकामपुरुष तिसीप्रकारकेनिश्चयकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ इसीकारणतैंहीं तेसकामपुरुष पुनःभी तिनदिव्यभोगोंकीइच्छाकरतेहुए गतागतकूंहीं प्राप्तहोवैहैं ॥ तहां पुण्यकर्मकरिकै इसमनुष्यलोकतैं स्वर्गलोककूं जाणा ताकानाम गतहैं ॥ और तापुण्यकर्मकेक्षयहुए तास्वर्गलोकतैं पुनःइसमनुष्यलोकविषेआवणा ताकानाम आगतहै ॥ अर्थात् तेसकामपुरुषकाम्यकर्मोंकूंकरिकै स्वर्गकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तिनपुण्यकर्मोंकेक्षयहुएतैंअनंतर तास्वर्गलोकतैं मनुष्यलोकविषेआइकै ते सकामपुरुष पूर्वसंस्कारोंकेवशतैं पुनःकर्मोंकूंकरैहै ॥ तिनकर्मोंकेभोगवासतै पुनः स्वर्गकूंजावैहैं ॥ तहांतैं पुनःमनुष्यलोककूं प्राप्तहोवैहैं ॥ इसप्रकार तिनसकामपुरुषोंकूं गर्भवासतैंआदिलैकेअनेकप्रकारकेदुःखोंकाप्रवाह निरंतर बन्यारहैहै ॥ यहहीं तिनसकामपुरुषोंकूं महान्अनिष्टकीप्राप्तिहै इति ॥ साअनिष्टकीप्राप्तीमुंडकउपनिषदकीश्रुतिविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ (प्लवाह्येते

अदृढायज्ञरूपाअष्टादशोक्तमवरंयेषुकर्म ॥ एतच्छ्रेयोयेऽभिनंदंतिमूढाजरामृत्युंतेपुनरेवापियंति ॥) अर्थयह ॥ षोडशऋत्विज यजमान ताकीस्त्री यहअष्टादश धीवरहैं चलावनेहारेजिनोंके ऐसेजो काम्यकर्मरूप अदृढप्लुवहैं ॥ तेकाम्यकर्मरूपप्लुव इसपुरुषकूं महान्‌संसारसमुद्रतैं पारकरतेनहीं ॥ ऐसेकाम्यकर्मोंकूं आपणेश्रेयकासाधनमानिके जेमूढपुरुष हर्षकूंप्राप्तहोवैहै तेसकामपुरुष पुनःपुनःजरामरणकूं प्राप्तहोवैहै इति ॥ इसश्रुतिकाअर्थ आत्मपुराणेकषोडशेअध्याय विषे हम विस्तारतैंनिरूपण करिआयेहैं ॥ यातैं ईहांसंक्षेपतैंनिरूपणकऱ्याहै और यद्यपि बहुतमूलपुस्तकोंविषे (एवंत्रयीधर्ममनुप्रपन्नाः) याप्रकारकाहीं पाठहोवैहै ॥ तथा श्रीशंकरानंदस्वामीनैं श्रीनीलकंठपंडितनैंभी इसीप्रकारकेपाठकूंअंगीकारकरिकै व्याख्यानकऱ्याहै ॥ तथापि गीताभाष्यकाव्याख्यानकरणेहारे श्रीस्वामीआनंदगिरिनैं तथाश्रीस्वामीमधुसूदननैं (एवंहित्रैधर्म्यमनुप्रपन्नाः) याप्रकारकेपाठकूं अंगीकारकरिकैहीं व्याख्यानकऱ्याहै ॥ याकारणतैं इसग्रंथविषेभी (एवंहि त्रैधर्म्यमनुप्रपन्नाः) यहहींपाठराख्याहै इति ॥ २१ ॥ ❀ ॥ तहां पूर्व दोश्लोकोंकरिकै सम्यक्‌ज्ञानतैंरहित सकामपुरुषोंकीगति कथनकरी ॥ अब सम्यक्‌ज्ञानवालेनिष्कामपुरुषोंकेगतिकूं श्रीभगवान् कथनकरैहै ॥

(मू० श्लो०) अनन्याश्चिंतयंतोमांयेजनाःपर्युपासते ॥ तेषांनित्याभियुक्तानांयोगक्षेमंवहाम्यहम् ॥ २२ ॥ अनन्याः । चिंतयंतः । माम् । ये । जनाः । पर्युपासते । तेषाम् । नित्याभियुक्तानाम् । योगक्षेमम् । वहामि । अहम् ॥२२॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन जे अधिकारीजन अनन्यहोइकै चिंतनकरतेहुए मैंपरब्रह्मकूं साक्षात्कारकरैहैं तिन नित्ययुक्तपुरुषोंके योगक्षेमकूं मैंपरमेश्वरहीं प्राप्तकरूंहूं ॥ २२ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन अन्य कहीये भेददृष्टिकाविषय नहींविद्यमानहैजिनोंकूं तिनोंकानाम अनन्यहै ॥ अर्थात् जेपुरुष सर्वत्र अद्वितीयब्रह्मकूंहींदेखैहैं तथासर्व विषयभोगोंकीइच्छातैंरहितहैं ॥ तथा मैंहीं भगवान्‌वासुदेवसर्वात्मारूपहूं हमारेतैंभिन्न किंचित्‌मात्रभीवस्तुनहींहै याप्रकारकानिश्चयकरिकै तिसीप्रत्यक्‌आत्माकूं सर्वदाचिंतनकरतेहुए जेसाधनचतुष्टयसंपन्न विरक्तसंन्यासी मैंपरब्रह्मकूं आपणाआत्मारूपकरिकैसाक्षात्कारकरैहैं ॥ तेतत्त्ववेत्तापुरुष मैंपरिपूर्णब्रह्मकेअभेदभाव करिकै कृतकृत्यहींहोवैहैं ॥ ऐसेतत्त्ववेत्तापुरुषोंकूं पुनःसंसारकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् अद्वैतदर्शनविषेहैनिष्ठाजिनोंकी तथाअत्यंतनिष्कामताकरिकै युक्त तथाआपणीइच्छापूर्वक नहींप्रयत्नकरतेहुए ऐसेजेतत्त्ववेत्तापुरुषहैं ॥ तिनतत्त्ववेत्तापुरुषोंका इसशरीरकेरक्षणवास्तै योगक्षेम किसप्रकार सिद्धहोवैगा ॥ ऐसी अर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान्‌कहैहैं (तेषांनित्याभियुक्तानामिति) तहां निरंतर आदरपूर्वक परमेश्वरकेध्यानविषे जेतत्परहोवैं तिनोंकानाम नित्याभियुक्तहै ॥

जेध्याननिष्ठपुरुष आपणेदेहकीयात्रामात्रवासतैंभी प्रयत्नकरतेनहीं ॥ ऐसेतत्त्ववेत्तापुरुषोंके योगकूं तथाक्षेमकूं मैंपरमेश्वरहीं प्राप्तकरूंहूं ॥ तहां पूर्वअप्राप्त अन्न वस्त्रादिक पदार्थोंकीजाप्राप्तिहै ताकानाम योगहै ॥ और प्राप्तहुए तिनपदार्थोंकाजोपरिरक्षणहै ताकानाम क्षेमहै ॥ यद्यपि तेतत्त्ववेत्तापुरुष आपणेशरीरकी स्थितिवासतै तायोगक्षेमकीइच्छाकरतेनहीं ॥ तथापि मैंअंतर्यामीईश्वर आपहीं तिनोंकेयोगक्षेमकूंसिद्धकरूंहूं ॥ जैसे आपणीइच्छातैंरहितबालकके योगक्षेमकूं ताकेमातापिताहीं सिद्धकरेहैं ॥ तैसे मैंपरमेश्वरहीं तिसतत्त्ववेत्तापुरुषके योगक्षेमकूं सिद्धकरूंहूं ॥ जिसकारणतैं (प्रियोहिज्ञानिनोऽत्यर्थमहंसचमम प्रियः ॥ उदाराःसर्वएवैतेज्ञानीत्वात्मैवमेमतम्) इत्यादिकवचनोंकरिकै मैंपरमेश्वर तिनज्ञानवान्पुरुषोंकूं आपणाआत्मारूपकरिकैकथनकरताभयाहूं ॥ तथाआपणा आत्मारूपहोणेतैंहीं सोज्ञानवान्पुरुषतौं मैंपरमेश्वरकूं अत्यंतप्रियहै ॥ और मैंपरमेश्वर तिसज्ञानवान्पुरुषकूं अत्यंतप्रियहूं ॥ ऐसे आत्मारूप तथाअत्यंतप्रिय ज्ञानवान्पुरुषोंके योगक्षेमकूंसिद्धकरणा मैंपरमेश्वरकूं उचितहींहै ॥ यद्यपि सर्वप्राणीयोंकेयोगक्षेमकूं मैंपरमेश्वरहीं प्राप्तकरेहै ॥ केवल ज्ञानवान्पुरुषोंकेहीं योगक्षेमकूं प्राप्तकरतानहीं ॥ तथापि अन्यप्राणीयोंकेयोगक्षेमकूं जो परमेश्वरप्राप्तकरेहैं ॥ सो तिनप्राणीयोंकेप्रयत्नकूं प्रथमउत्पन्नकरिकै तिसप्रयत्नद्वाराहीं तिनप्राणीयोंकूं तायोगक्षेमकीप्राप्तिकरेहै ॥ ताप्रयत्नतैंविना प्राप्तिकरेनहीं और ज्ञानवान्पुरुषोंकूंतौ तायोगक्षेमकी प्राप्तिवासतै प्रयत्नकूंनहींउत्पन्नकरिकैहीं तायोगक्षेमकीप्राप्तिकरेहै ॥ इतनीदोनोंविषेविशेषताहै इति ॥ और किसीटीकाविषेतौ तायोगक्षेमका यहअर्थकन्याहै ॥ पूर्वअप्राप्तयोगभूमिकाकीजाप्राप्तिहै ताकानाम योगहै ॥ और पूर्वप्राप्तयोगभूमिकाका जोरक्षणहै ताकानाम क्षेमहै इति ॥ और किसीटीकाविषेतौं (योगस्यक्षेमंयोगक्षेमं) याप्रकारकासमासकरिकै तायोगक्षेम का यहअर्थ कथनकन्याहै ॥ निरंतरब्रह्मनिष्ठाकानाम योगहै ॥ तिसब्रह्मनिष्ठारूपयोगकाजोक्षेमहै अर्थात् अध्यात्मिकआदिकउपद्रवोंकरिकै जोविच्छेदतैंरहित पणाहै ताकानामयोगक्षेमहै ॥ ऐसेयोगक्षेमकूं मैंपरमेश्वरहीं सर्वदा सिद्धकरूंहूं इति ॥ २२ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् आपपरमेश्वरतैंभिन्न दूसराकोईवस्तु हैनहीं ॥ किंतु सर्वपदार्थ तुमाराहींस्वरूपहैं ॥ यातैं तेइंद्रादिकअन्यदेवताभी तुमाराहींस्वरूपहैं ॥ तुमारेतैं तेइंद्रादिकदेवता जुदानहींहैं ॥ यातैं जैसे साक्षात् तुमारेभक्त तैंपरमेश्वरकूंहीं भजेहैं ॥ तैसेइंद्रादिकअन्यदेवतावोंकेभक्तभी वस्तुगतितैं तैंपरमश्वरकूंहीं भजेहैं ॥ इसरीतिसैं तुमारेभक्तोंविषे तथाअन्यदेवतावोंकेभक्तों विषे किंचित्मात्रभी विशेषता सिद्धहोतीनहीं ॥ यातैं इंद्रादिकअन्यदेवतावोंकेभक्ततौं पुनः पुनः गमनआगमनकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और मैंपरमेश्वरकूं अनन्यहोइकै चिंतनकरणेहारेज्ञानवान् भक्ततौं कृतकृत्यहोवैहैं ॥ यहपूर्वउक्तआपकावचन कैसेसंगतहोवैगा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहेहै ॥

(मू०श्लो०) येप्यन्यदेवताभक्तायजंतेश्रद्धयान्विताः ॥ तेपिमामेवकौंतेययजंत्यविधिपूर्वकम् ॥ २३ ॥ ये[२]। अपि । अन्ये[३]देवता

भक्ताः। यंजंते। श्रद्धया। आन्विताः। ते। अपि। मांम्। एव। कौंतेय। यंजंति। अविधिपूर्वकम् ॥२३॥ (इतिपदच्छेदः)॥ हेकौं तेय जे अन्यदेवतावोंकेभक्त भी श्रद्धाकरिके युक्तहुए पूजनकरेहैं तेभक्त भी अज्ञानपूर्वक मैंपरमेश्वरकूं हीं पूजनकरेहैं ॥ ॥२३॥ (इतिपदार्थः)॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जैसे मैंपरमेश्वरकेभक्त मैंपरमेश्वरकूंहीं पूजनकरेहैं ॥ तैसे जेइंद्रादिकअन्यदेवतावोंकेभक्तभी आस्तिक्यबुद्धिरूपश्रद्धाकरिकेयुक्तहुए ज्योतिष्टोमादिकयज्ञोंकरिके तिनइंद्रादिकदेवतावोंकूं पूजनकरेहैं ॥ तेअन्यदेवतावोंकेभक्तभी वस्तुगतितैं तिसतिसदेवतारूपकरिकेस्थितहुएमैंपरमेश्वरकूंहीं पूजनकरेहैं ॥ परंतु तेअन्यदेवतावोंकेभक्त मैंपरमेश्वरकूं अविधिपूर्वकहीं पूजनकरेहैं ॥ ईहां अविधिनाम अज्ञानकाहै ताअज्ञानपूर्वकहीं मैंपरमेश्वरकूं पूजनकरेहैं ॥ अर्थात् यह परमेश्वरहीं सर्वकाआत्मारूपहै याप्रकारतैं सर्वकाआत्मारूपकरिके मैंपरमेश्वरकूंनजानिके तथातिनइंद्रादिकदेवतावोंकूं मैंपरमेश्वरतैंभिन्नकल्पनाकरिके तेअन्यदेवतावोंकेभक्त मैंपरमेश्वरकूंपूजनकरेहैं ॥याकारणतैंहीं तेइंद्राइिकदेवतावोंकेभक्त पुनःपुनः जन्ममरणरूपसंसारकूंप्राप्तहोवैहैं इति ॥ और किसीटीकाविषेतौं(अविधिपूर्वकम्) इसवचनकायह अर्थकऱ्याहै ॥ अभेदबुद्धिकानाम विधिहै ॥ ताअभेदबुद्धिरूपविधितैं तेपुरुष रहितहैं ॥ यातैं तेअन्यदेवताओंकेभक्त वस्तुगतितैं मैंसर्वात्मारूपपरमेश्वरकूं पूजनकरतेहुएभी सोतिनोंकापूजन अविद्यापूर्वकहींहै ॥ अभेदबुद्धिपूर्वक कऱ्याहुआ मैंपरमेश्वरकापूजनहीं विधिपूर्वकपूजनहोवैहै इति ॥ २३ ॥ ❀ ॥

अब श्रीभगवान् तिनसकामपुरुषोंकेभजनविषे अविधिपूर्वकपणा स्पष्टकरताहुआ तिनसकामपुरुषोंकी तिसस्वर्गादिकफलतैंभीप्रच्युतिकूं कथनकरेहै ॥

(मू०श्लो०) अहंहिसर्वयज्ञानांभोक्ताचप्रभुरेवच ॥ नतुमामभिजानंतितत्त्वेनातश्च्यवंतिते ॥२४॥ अहं। हिं। सर्वयज्ञानाम्। भोक्ता। च। प्रभुः। एव। च। न। तु। मांम्। अभिजानंति। तत्त्वेन। अतः। च्यवंति। ते ॥२४॥(इतिपदच्छेदः)॥ हेअर्जुन मैंपरमेश्वरहीं सर्वयज्ञोंका भोक्ताहूं तथा फलप्रदाताहूं यहवार्त्ता प्रसिद्धहै परंतु तेसकामपुरुष मैंपरमेश्वरकूं तिसरूपकरिके नहीं जानतेहैं इसकारणतैंहीं तेसकामपुरुष पुनरावृत्तिकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ २४ ॥ (इतिपदार्थः)॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन अधिकारीजनोंकेप्रति शास्त्रनैंविधानकरचे जितनैंकीश्रौतयज्ञहैं तथास्मार्त्तयज्ञहैं ॥ तिनसर्वयज्ञोंका मैंपरमेश्वरहीं तिसतिसइंद्रादिकदेवतारूपकरिके भोक्ताहूं ॥ तथा मैंपरमेश्वरहीं आपणेअंतर्यामीरूपकरिके अधियज्ञरूपहोणेतैं तिनयज्ञोंकेफलकाप्रदाताहूं ॥ यहवार्त्ता श्रुतिस्मृतियोंविषे प्रसिद्धहींहै ॥ ऐसेमैंपरमेश्वरकूं तेअन्यदेवतावोंकेसकामभक्त तिसतत्त्वरूपकरिकेजानतेनहीं ॥ अर्थात् यहभगवानवासुदेवहीं इंद्रादिकदेवतारूपकरिके तौं तिनसर्वयज्ञोंका भोक्ता

रूपहै और आपणेअंतर्यामीस्वरूपकरिकैतौं तिनयज्ञोंकेफलकाप्रदाताह ऐसेसर्वात्मारूप परमेश्वरतैंभिन्न दूसराकोई आराधनकरणेयोग्यनहींहै ॥ इसप्रकारकेस्व रूपकरिकै तेसकामपुरुष मैंपरमेश्वरकूंजानतेनहीं ॥ इसप्रकारतैंहीं तेअन्यदेवतावोंकेसकामभक्त तिसतिसफलतैं प्रच्युतिकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ अर्थात् मैंपरमेश्वरके तिसवास्तवस्वरूपकूंनहींजानतेहुए तेसकामपुरुष महान्‌आयासकारिकै तिनइंद्रादिकदेवतावोंकापूजनकरतेहुएभी मैंपरमेश्वरविषे तिनकर्मोंकानहींअर्पणकरतेहुए तिन काम्यकर्मोंकेप्रभावतैं पूर्वउक्तधूमादिकमार्गकरिकै तिसतिसदेवताकेलोकोंकूंप्राप्तहोइकै तिसलोकके भोगके अंतविषे तहांतैं प्रच्युतहोवैहैं॥तात्पर्ययह॥तिसतिसलोकके भोगोंकेजनक जेपुण्यकर्महैं ॥ तिनकर्मोंका भोगकरिकैनाशहुएतैंअनंतर तेसकामकर्मीपुरुष तिसतिसदेवतादेहादिकोंतैंवियोगवालेहुए पुनः देहकेग्रहणकरणेवा सते इसमनुष्यलोककूं प्राप्तहोवैहैं ॥ और जेअधिकारीजन तिनइंद्रादिकसर्वदेवतावोंविषे सर्वअंतर्यामीरूपभगवान्‌कूंहींदेखतेहुए तिनयज्ञादिककर्मोंकूंकरेहैं ॥ तथा तिनसर्वकर्मोंकूं अंतर्यामीपरमेश्वरविषेहीं अर्पणकरेहैं ॥ तेनिष्कामपुरुष तिसउपासनासहितकर्मके प्रभावतैं पूर्वउक्तअर्चिरादिकमार्गद्वारा ब्रह्मलोककूं प्राप्तहोइकै तहां आत्मज्ञानकूंप्राप्तहोइकै ताब्रह्मलोककेभोगोंकेअंतविषे ॥ कैवल्यमोक्षकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ इसप्रकारतैं तिनसकामपुरुषोंकेफलविषे तथानिष्कामपुरुषोंकेफलविषे महान्‌भेदहै इति ॥ २४ ॥ ❋ ॥ तहां तिनइंद्रादिकअन्यदेवतावोंकेपूजनकरणेहारेपुरुषोंकूं अनावृत्तिरूपफलकेअभावहुएभी तिसतिसदेवताकेपूजनकेअनुसार तिसतिसक्षुद्रफलकीप्राप्ति अवश्यकरिकैहोवैहै ॥ इसअर्थकूंकथनकरताहुआ श्रीभगवान् साक्षात् परमेश्वरकेपूजनकरणेहारेभक्तजनोंकी तिनअन्यदेवतावोंके भक्तोंतैं विलक्षणताकूं कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) यांतिदेवव्रतादेवान्पितॄन्यांतिपितृव्रताः ॥ भूतानियांतिभूतेज्यायांतिमद्याजिनोपिमाम् ॥ २५ ॥ यांति । देवव्रताः । देवान् । पितॄन् । यांति । पितृव्रताः । भूतानि । यांति । भूतेज्याः । यांति । मद्याजिनः । अपि माम् ॥ २५ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन देवतावोंकेपूजक तिनदेवतावोंकूंहीं प्राप्तहोवैहैं तथापितरोंकेपूजक तिनपितरोंकूंहीं प्राप्तहोवैहैं तथाभूतोंकेपूजक तिनभूतोंकूंहीं प्राप्तहोवैहैं तथामैंपरमेश्वरकेपूजक मैंपरमेश्वरकूं हीं प्राप्तहोवैहैं ॥ २५ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन अंतःकरणरूपउपाधिके सत्त्व रज तम इनतीनगुणोंकेभेदकरिकै तेअविधिपूर्वक भजनकरणेहारे पुरुषभी सात्विक राजस तामस इसभेदक रिकै तीनप्रकारकेहोवैहैं ॥ तहां इंद्रादिकदेवतावोंका बलिप्रदान प्रद[illegible]णा नमस्कार इत्यादिकपूजनरूपहैव्रत जिनोंकूं तिनपुरुषोंकानाम देवव्रतहै ॥ ऐसे देव तावोंकूंपूजनकरणेहारेपुरुष तिनइंद्रादिकदेवतावोंकूंहीं प्राप्तहोवैहैं ॥ तेदेवतावोंकापूजनकरणेहारेपुरुष सात्विक कहेजावैहै ॥ और श्राद्धादिककर्मोंकरिकै

अग्निष्वात्तादिकपितरोंका आराधनकरणेहारेजेपुरुषहैं तिनोंकानाम पितृव्रतहै ॥ ऐसे पितरोंकाआराधनकरणेहारेपुरुष तिनपितरोंकूंहीं प्राप्तहोवैहैं ॥ तेपितरों काआराधनकरणेहारेपुरुष राजस कहेजावैहैं ॥ और यक्ष रक्षस् विनायक मातृगण इत्यादिकभूतोंका पूजनकरणेहारे जेपुरुषहैं तिनोंकानाम भूतेज्यहै ॥ ऐसे भूतोंकापूजनकरणेहारेपुरुष तिनभूतोंकूंहीं प्राप्तहोवैहैं ॥ तेभूतोंकूंपूजनकरणेहारेपुरुष तामस कहेजावैहैं ॥ इतनैंकहणेकरिकै परमेश्वरतैंअन्यदूसरेदेवतावोंकेआराधनका तिसतिसदेवतारूपकीप्राप्तिरूप नाशवान्‌फल कथनकऱ्या ॥ अब परमेश्वरकेआराधनका परमेश्वररूपताकीप्राप्तिरूप अविनाशीफलकूं कथनकरेहैं ॥ (यांतिमद्याजिनोपिमाम्) हेअर्जुन मैंपरमेश्वरकेहीपूजनकरणेकाहैस्वभावजिनोंका तिनोंकानाम मद्याजीहै ॥ अर्थात् जेपुरुष इंद्रादिकसर्वदेवतावोंविषे मैंपरमेश्वरकूंहीं व्यापकदेखतेहुए निरंतर मैंपरमेश्वरकेहीं आराधनपरायणहोवैहै ॥ तेहमारेभक्तवौं मैंपरमेश्वरकूंहीं अभेदरूपकरिकैप्राप्तहोवैहैं इति ॥ जो जिसका आराधनकरेहै सो तिसभावकूंहीं प्राप्तहोवैहै ॥ यह वार्त्ता श्रुतिविषेभी कथनकरेहै ॥ तहांश्रुति ॥ (तंयथायथोपासतेतदेवभवति) ॥ अर्थयह ॥ जोपुरुष जिसजिस देवताकीउपासनाकरेहै मरणतैंअनंतर सोपुरुष तिसतिसदेवताभावकूंहीं प्राप्तहोवैहै इति ॥ इसश्लोकविषे श्रीभगवान्‌कायहअभिप्रायहै ॥ परमेश्वरकेआराधनकरणेविषे तथाइंद्रादिकअन्यदेवतावोंकेआराधनकरणेविषे आयासकेसमानहुएभी यहजीव अविनाशीफलकी प्राप्तिकरणेहारेअंतर्यामीपरमेश्वरकूं नहींआराधनकरिकै अन्यइंद्रादिकदेवतावोंकाआराधनकरिकै नाशवान्‌फलकूंहीं प्राप्तहोवैहैं ॥ यातैं इनअज्ञानीजीवोंके दुष्टअदृष्टकाप्रभाव कोईआश्चर्यरूपहै ॥ जिसदुष्टअदृष्टकेप्रभावतैं यहअज्ञानीजीव मुक्तिकरणेहारे परमेश्वरकेआराधनकापरित्यागकरिकै तुच्छफलकीप्राप्तिवासतै तिनइंद्रादिकदेवतावोंकाहीं आराधनकरेहैं इति ॥ २५ ॥ ❀ ॥ यातैं परमेश्वरतैंअन्यदेवतावोंका परित्यागकरिकै इसअधिकारीजननैं केवल परमेश्वरकाहीं आराधनकरणा ॥ जिसकारणतैं सोपरमेश्वरकाआराधन इसअधिकारीपुरुषकूं मोक्षरूपअविनाशीफलकीहीं प्राप्तिकरेहै ॥ तथा अन्यदेवतावोंकेआराधनकरणेविषे इसपुरुषकूं द्रव्यकेखरचतैंआदिलेके जितनाकीआयासहोवैहै ॥ तितनाआयास परमेश्वरकेआराधनकरणेविषेहोतानहीं ॥ किंतु सोपरमेश्वरकाआराधन अत्यंत सुगमहै ॥ इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरेहैं ॥

(मू० श्लो०) पत्रंपुष्पंफलंतोयंयोमेभक्त्याप्रयच्छति ॥ तदहंभक्त्युपहृतमश्नामिप्रयतात्मनः ॥ २६ ॥ पत्रम् । पुष्पम् । फलम् । तोयं । यः । मे । भक्त्या । प्रयच्छति । तत् । अहं । भक्त्युपहृतम् । अश्नामि । प्रयतात्मनः ॥२६॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन

जोकोईपुरुष मैंपरमेश्वरकेताई भक्तिकरिकै पत्र वांपुष्प वांफल वांजल देताहै तिंसशुद्धबुद्धिवाले पुरुषके तिंस भक्तिपूर्वकअर्पण कऱ्येहुए पत्रपुष्पादिककूं मैंपरमेश्वर अंगीकारकरूंहूं ॥ २६ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन पत्र पुष्प फल जल इसतैंआदिलेकें जेकेईवस्तु विनाहींप्रयत्नतैंप्राप्तहोवैहैं ॥ तिनअत्यंतसुलभवस्तुवोंविषे जिसीकिसीपत्रपुष्पादिकवस्तुकूं जोकोईमनुष्य अनंतमहान्‌विभूतिवालेमैंपरमेश्वरकेताई भक्तिकरिकै देवैहै ॥ अर्थात् परमेश्वरतैंपरेदूसराकोईहैनहीं इसप्रकारकीबुद्धिपूर्वक जा निरतिशयप्रीतिहै ताप्रीतिकरिकै जोपुरुष भृत्यकीन्यांई मैंपरमेश्वरकेताई तिसवस्तुकाअर्पणकरैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे महाराजाकेराज्यविषेस्थित जितनैंकीपदार्थहैं ॥ तेसर्वपदार्थ वस्तुगतितैं तामहाराजाकेहींहैं ॥ तिनमहाराजाकेपदार्थोंकूंही भृत्यलोक प्रीतिपूर्वकतिसमहाराजाकेताई अर्पणकरैहैं ॥ ताकरिकै सोमहाराजा परितोषकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तैसे इसजगत्‌विषे जितनेकी पदार्थहे ॥ तेसर्व पदार्थ मैंपरमेश्वरकेहींहैं ॥ ऐसाकोईपदार्थ इसजगत् विषेहैनहीं ॥ जोपदार्थ मैंपरमेश्वरका नहींहोवै ॥ ऐसे मैंपरमेश्वरकेपदार्थोंकूंहीं जेपुरुष प्रीतिपूर्वक मैंपरमेश्वरकेताई अर्पणकरैहैं ॥ तिन प्रीतिपूर्वकअर्पणकऱ्ये हुए शुद्धबुद्धिवालेपुरुषोंके पत्रपुष्पादिक अत्यंततुच्छपदार्थोंकूंभी मैंपरमेश्वर भोजनकरूंहूं ॥ अर्थात् जैसेकोई पुरुष अन्नकूं भोजनकरिकै तृप्तिकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे मैंपरमेश्वरभी तिनपत्रपुष्पादिकपदार्थोंकूं प्रीतिपूर्वकस्वीकारमात्रकरिकै तृप्तिकूंप्राप्तहोवूंहूं ॥ यद्यपि (अश्नामि) इसपदका मुख्यअर्थ भोजनकर्तृत्वहींहै ॥ तथापि तामुख्यअर्थकापरित्यागकरिकै तापदकीलक्षणावृत्तितैं जो प्रीतिपूर्वकस्वीकर्तृत्वरूपअर्थ अंगीकारकऱ्याहै ॥ सो प्रीतिकेअतिशयताकीहेतुताकेबोधनकरणेवासतै अंगीकारकऱ्याहै ॥ अर्थात् तिन भक्तिपूर्वकअर्पणकऱ्येहुए पत्रपुष्पादिकपदार्थोंके स्वीकारमात्रतैंहीं मैंपरमेश्वर अत्यंतप्रसन्नहोवूंहूं ॥ और श्रुतिविषेभी देवतावोंविषे मनुष्योंकीन्यांई भोजनकर्तृत्वकानिषेधहींकऱ्याहै ॥ याकारणतैंभी (अश्नामि) इसपदकी स्वीकाररूपअर्थविषे लक्षणाकरणी उचितहै ॥ तहांश्रुति ॥ (नहवैदेवाअश्नंतिनपिबंति एतदेवामृतंदृष्ट्वातृप्यंति) ॥ अर्थयह ॥ जैसे यहमनुष्य अन्नादिकपदार्थोंकूंभोजनकरैहैं तथाजलादिकोंकूंपानकरैहैं ॥ तैसे देवता तिनअन्नादिकोंकूंभोजनकरते नहीं ॥ तथा जलादिकोंकूंभी पानकरतेनहीं ॥ किंतु तेदेवता केवल अमृतकेदर्शनमात्रकरिकैहीं तृप्तिकूंप्राप्तहोवैहैं इति ॥ शंका ॥ हेभगवन् आप साक्षात् परमेश्वरहोइके ऐसेपत्रपुष्पादिकतुच्छवस्तुवोंकूं किसवासतै स्वीकारकरतेहो ॥ महान्‌पुरुषोंकूंतौ महान्‌वस्तुकाहीं स्वीकारकरणाउचितहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंका केहुए ॥ तिनतुच्छवस्तुवोंकेस्वीकारकरणेविषे हेतुकूंकथनकरैहैं (भक्त्युपहृतमिति) तेपत्रपुष्पादिकवस्तु यद्यपि तुच्छहैं ॥ तथापि तिनभक्तजनोंनैं तेपत्रपुष्पादिक अत्यंतप्रीतिरूपभक्तिकरिकै मैंपरमेश्वरकेताई अर्पणकरैहैं ॥ याकारणतैं मैंपरमेश्वर तिनपत्रपुष्पादिकतुच्छपदार्थोंकूंभी महान्‌पदार्थरूपकरिकै स्वीकारकरूंहूं ॥

अर्थात् तिसतिसवस्तुकेस्वीकारकरणेविषे कोई तिसतिसवस्तुकीसौंदर्यता वामहानता निमित्तनहींहै॥ किंतु अत्यंतप्रीतिपूर्वक समर्पणहीं तावस्तुकेस्वीकारकरणेविषे निमित्तहै इति (ईहां भक्त्यापयच्छति) इसवचनविषे भक्तिकाकथनकरिकै (भक्त्युपहृतम्) इसवचनविषे जो पुनःभगवान्नैं भक्तिका कथनकऱ्याहै ॥ सो इसअर्थकेसूचनकरणेवासतै कथनकऱ्याहै ॥ जोपुरुषब्राह्मणहै तथाबहुततपस्वीहै परंतु मैंपरमेश्वरकीभक्तितैंरहितहै ॥ तिसभक्तिहीन तपस्वीब्राह्मणनैं कोईमहान् वस्तुदेईहुईभी मैंपरमेश्वर तिसवस्तुकूं स्वीकारकरतानहीं ॥ यातैं मैंपरमेश्वरकृत वस्तुकेस्वीकारकरणेविषे कोईब्राह्मणत्वादिक उत्तमजाति तथातपस्वीपणा निमित्तनहींहै ॥ किंतुदेणेहारेपुरुषकी केवल परमप्रीतिहीं तास्वीकारकरणेविषे निमित्तहै इति ॥ अथवा जैसे अत्यंतप्रीतिपूर्वक मातानैंदीयेहुएपदार्थोंकूं बालक भक्ष्याभक्ष्यविचारतैंरहितहोइकै भक्षणकरेहै ॥ तैसे भक्तजनोंकीअत्यंतप्रीतिकरिकै प्रतिबद्ध हुआहै भक्ष्याभक्ष्यवस्तुकाज्ञान जिसका ऐसाजोमैंपरमेश्वरहूं ॥ सोमैंपरमेश्वरभक्तिपूर्वक अर्पणकऱ्येहुए तिनभक्तजनोंकेपत्रपुष्पादिकवस्तुवोंकूं आपणेलीलाअवतारोंकरिकै साक्षात्हीं भक्षणकरूंहूं ॥ जैसे श्रीदामाब्राह्मणनैं अत्यंतप्रीतिपूर्वक दीयेहुएतंदुलोंकूं मैंपरमेश्वर भक्षणकरताभयाहूं ॥ तथा शबरीनैं अत्यंतप्रीतिपूर्वक दीयेहुए बदरीफलोंकूं मैंपरमेश्वर भक्षणकरताभयाहूं ॥ यातैं केवल अनन्यभक्तिहीं मैंपरमेश्वरके परितोषका निमित्तहै ॥ दूसरेइंद्रादिकदेवतावोंके परितोषणकरणेविषे जैसे बहुतद्रव्यकाखरच तथाशरीरकाआयास इत्यादिक निमित्तहोवैहै ॥ तैसे मैंपरमेश्वरकेपरितोषकरणेविषे तेनिमित्त अवश्यअपेक्षितनहींहैं ॥ किंतुकेवल एकभक्तिहीं अपेक्षितहै ॥ यातैं यहअधिकारीजन तिनदूसरे देवतावोंके परित्यागकरिकै एक मैंपरमेश्वरकूंहीं आराधनकरैं ॥ और किसीटीकाविषेतौं (पत्रंपुष्पम्) इसश्लोककायह अर्थ कथनकऱ्याहै ॥ (द्वेरूपेवासुदेवस्यचलं चाचलमेवच ॥ चलंसंन्यासिनो रूपमचलंप्रतिमादिकम्) ॥ अर्थयह ॥ परमेश्वरवासुदेवके चल अचल यहदोरूपहोवैहैं ॥ तहांसंन्यासीतौं चलरूपहै॥ और शालग्रामप्रतिमादिक अचलरूपहै इति ॥ इस शास्त्रकेवचनविषे संन्यासी तथाशालग्रामप्रतिमादिक परमेश्वरकेरूप कथनकरेहैं ॥ और (अभ्यागतःस्वयं विष्णुः) अर्थयह भोजनकेसमय गृहविषेप्राप्तहुआ अतिथि विष्णुरूपहोवैहै इति ॥ इसस्मृतिविषेभी अतिथिकूं विष्णुरूपकह्याहै ॥ यातैं जोअधिकारीपुरुष शालग्रामविषे अथवा प्रतिमाविषे भक्तिपूर्वक पत्रपुष्पादिक मैंपरमेश्वरकेताईं अर्पणकरेहै ॥ तिन भक्तिपूर्वक अर्पणकऱ्येहुए पत्रपुष्पादिकोंकूं मैंपरमेश्वरअंगीकारकरूंहूं इति ॥ अथवा भोजनकालविषे गृहविषे प्राप्तभयाजोअतिथिहै ॥ तिस अन्नार्थीअतिथिकेताईं जोपुरुष जैसे शाकफलादिक आपभोजनकरेहै तैसेहीं शाकफलादिक भक्तिपूर्वकदेवैहै ॥ तिसपुरुषके भक्तिपूर्वकदीयेहूए तिनपत्रपुष्पादिकोंकूं मैंपरमेश्वर साक्षात् तिसअतिथिकेमुखकरिकै भोजनकरूंहूंइति ॥ २६ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् जिसभजन करिकै आप प्रसन्नहोवोहो ॥सो आपका भजन किसप्रकारका होवैहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए ॥ श्रीभगवान् तिसभजनकेप्रकारकूं कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) यत्करोषियदश्नासियज्जुहोषिददासियत् ॥ यत्तपस्यसिकौंतेयतत्कुरुष्वमदर्पणम् ॥ २७ ॥ यत् । करोषि । यत् । अश्नासि । यत् । जुहोषि । ददासि । यत् । यत् । तपस्यसि । कौन्तेय । तत् । कुरुष्व । मदर्पणम् ॥२७॥ (इतिपदच्छेदः) ॥हेकौंतेय तूं जो करताहै तथाजो भोजनकरताहै तथा जो होमकरताहैं तथा जो दान करताहै तथा जो तपकरताहै सोसर्व मैंपरमेश्वरकेअर्पण कर ॥ २७ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन शास्त्रकी आज्ञातैंविनाहीं केवलरागकरिकैंप्राप्त जिसगमन आगमनरूप लौकिकर्मकूं तूं करताहैं ॥ तथा आपणीतृप्तिवासतैं अथवा कर्मोंकीसिद्धिवासतै जिसअन्नकूं तूं भोजनकरताहै ॥ तथा शास्त्रकेबलतैं जिसनित्य अग्निहोत्रादिकहोमकूं तूं करताहैं ॥ ईहां (जुहोषि) यहहोमकावाचकपद श्रौतस्मार्त्तसर्वहोमका उपलक्षणहै ॥ अर्थात् श्रौतस्मार्त्तरूपजितनैंकीहोमोंकूं तूं करताहैं ॥ तथा अतिथिब्राह्मणादिकोंकेतांई जोतूं अन्नसुवर्णादिकपदार्थ देताहैं ॥ तथा प्रतिवर्षविषे अज्ञातपापोंकी तथाप्रमादकृतपापोंकी निवृत्तिकरणेवासते जोतूं चांद्रायणव्रतादिकतपकूंकरताहै ॥ अथवा यथाइच्छापूर्वक प्रवृत्तिकेनिवृत्तकरणेवासते शरीरइंद्रियोंकेसमयरूपतपकूं जोतूं करताहै ॥ यहतप सर्वनित्यनैमित्तिककर्मोंकाउपलक्षणहै ॥ तेसर्वकर्म तूं मैंपरमेश्वरविषेअर्पणकर ॥ अर्थात् जोतुमारेकूंआपणेप्राणीस्वभावकेवशतैं शास्त्रतैंविनाभी अवश्यकरणेयोग्य गमनआगमनादिक लौकिककर्महैं तथा जोतुमारेकूं शास्त्रकेबलतैं अवश्यकरणेयोग्य होमदानादिक वैदिककर्महैं ॥ जेलौकिकवैदिककर्म किसीअन्यहींनिमित्तकरिकैकर्‍येहैं ॥ तेलौकिकवैदिकसर्वकर्म जैसे मैंपरमेश्वरविषेहीं अर्पितहोवैं तैसे तिनसर्वकर्मोंकूं तूंकर ॥ ईहां (कुरुष्व) इसवचनकरिकै श्रीभगवान्नैं यहअर्थ बोधनकर्‍या ॥ इसप्रकार जोपुरुष मैंपरमेश्वरविषेहीं तिनसर्वकर्मोंका समर्पण करैहै ॥ तासमर्पणका मोक्षरूपफल तिससमर्पकपुरुषकूंहीं प्राप्तहोवैहै ॥ ताकरिकै मैंपरमेश्वरकूं किंचित्मात्रभीफलहोतानहींइति ॥ यातैंयहअर्थसिद्धभया ॥ अवश्यकरणेयोग्य कर्मोंका जो परमगुरुरूपमैंपरमेश्वरविषे अर्पणहै ॥ सोअर्पणहीं मैंपरमेश्वरकाभजनहै ॥ तिसभजनवासते दूसराकोईजुदाव्यापार करणेयोग्य नहींहै इति ॥२७॥ ❀ ॥ अब इसपूर्वउक्तभजनकेफलकूं श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥ अधिकारीजनोंकूं तिसभजनविषे प्रवृत्तकरणेवासतै ॥

(मू०श्लो०) शुभाशुभफलैरेवंमोक्ष्यसेकर्मबंधनैः ॥ संन्यासयोगयुक्तात्माविमुक्तोमामुपैष्यासि ॥ २८ ॥ शुभाशुभफलैः । एवं । मोक्ष्यसे । कर्मबंधनैः । संन्यासयोगयुक्तात्मा । विमुक्तः । माम् । उपैष्यसि ॥ २८ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन ऐसे भजनकेप्राप्तहुए तूं अर्जुन ईष्टअनिष्टफलवाले कर्मरूपबंधनोंनैं परित्यागकीयाजावैंगा तथा संन्यासयोगयुक्तात्माहुआतूं तिनकर्मबंधनोंतैं विमुक्तहुआ मैंपरब्रह्मकूं प्राप्तहोवैंगा ॥ २८ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन इसपूर्वउक्तप्रकारतैं विनाहींआयासतैंसिद्धजो सर्वकर्मोंका मैंपरमेश्वरविषेअर्पणरूपभजनहै ॥ तिसहमारेभजनकेप्राप्तहुए ॥ इष्टरूप तथा अनिष्टरूप फलहैजिनोंका ऐसेजेबंधनरूप लौकिकवैदिककर्महैं ॥ तिनकर्मोंनैं तूंअर्जुन परित्यागकीयाजावैंगा ॥ अर्थात् तेसर्वकर्म मैंपरमेश्वरविषे अर्पितहोणेतैं तैंअर्जुनका तिनकर्मोंकेसाथि संबंधहींसंभवतानहीं ॥ यातैं तिनकर्मोंकरिकै तथातिनकर्मोंकेइष्टअनिष्टफलोंकरिकै तूं लिपायमानहोवैंगानहीं ॥ तिसतैंअनंतर संन्यासयोगयुक्तात्माहुआ तूं ॥ ईहां सर्वकर्मोंका जोपरमेश्वरविषेअर्पणहै ताकानाम संन्यासहै ॥ सोसंन्यासहीं योगकीन्यांई चित्तकाशोधकहोणेतैं योगरूपहै ॥ ऐसे संन्यासयोगकरिकै युक्तहै क्या शोधितहै आत्मा क्या अंतःकरण जिसका ताकानाम संन्यासयोगयुक्तात्माहै ॥ अथवा तिससंन्यासयोगविषे युक्तहै क्या आसक्तहै आत्मा क्या मन जिसका ताकानाम संन्यासयोगयुक्तात्माहै ॥ अथवा फलसहितसर्वकर्मोंकेपरित्यागकानामसंन्यासयोगहै ॥ तासंन्यासयोगकरिकैयुक्तहै चित्तजिसका ताकानाम संन्यासयोगयुक्तआत्माहै ॥ ऐसा संन्यासयोगयुक्तात्माहुआ तथाजीवताहुआहीं तिनबंधनरूपकर्मोंतैंविमुक्तहुआ तूंअर्जुन मैंपरमेश्वरकूंहीं प्राप्तहोवैंगा ॥ अर्थात् सम्यक्दर्शनकरिकै अज्ञानरूपआवरणकीनिवृत्तिकरिकै मैंपरब्रह्मकूंहीं अहंब्रह्मास्मि इसप्रकारतैं तूं साक्षात्कारकरैंगा ॥ तिसतैंअनंतर भोगकरिकै प्रारब्धकर्मकेनाशहुएतैं इसशरीरकेपातहुए तूं विदेहकैवल्यरूप मैंपरब्रह्मकूं प्राप्तहोवैंगा ॥ और इसवर्त्तमानकालविषेभी मैंपरब्रह्मस्वरूपहुआतूं सर्वउपाधियोंकीनिवृत्तिकरिकै मायाकृतभेदव्यवहारकाविषय नहींहोवैंगा इति ॥ २८ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् जबी तूं आपणेभक्तोंऊपरिहीं अनुग्रहकरताहैं ॥ अभक्तोंऊपरि अनुग्रहकरतानहीं ॥ तबी अस्मदादिकजीवोंकी न्यांई तूंभी रागद्वेषवालाहोणेतैं परमेश्वर कैसेहोवैंगा ॥ किंतु अस्मदादिकजीवोंकी न्यांई तूंभी कोईजीवविशेषहींहोवैंगा ॥ ऐसी अर्जुनकी शंकाकेहुए श्रीभगवान् कहेहैं ॥

(मू० श्लो०) समोहंसर्वभूतेषुनमेद्वेष्योस्तिनप्रियः ॥ येभजंतितुमांभक्त्यामयितेतेषुचाप्यहम् ॥ २९ ॥ समः । अहं । सर्वभूतेषु । न । मे । द्वेष्यः । अस्ति । न । प्रियः । ये । भजंति । तु । माम् । भक्त्या । मयि । ते । तेषु । च । अपि । अहम् ॥ २९ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन मैंपरमेश्वर सर्वप्राणियोंविषे समानहूं यातैं कोईभीप्राणी मैंपरमेश्वरके द्वेषकाविषय नहींहै तथा प्रीतिकाविषय नहींहै तौंभी जेपुरुष मैंपरमेश्वरकूं भक्तिकरिकै सेवनकरैहैं तेपुरुष हीं मैंपरमेश्वरविषे वर्त्तैहैं तथामैंपरमेश्वर भी तिनंपुरुषोंविषेहीं वर्त्तताहूं ॥ २९ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जितनैंकीप्राणी मैंपरमेश्वरकेभक्तहैं ॥ तथाजितनैंकीप्राणी मैंपरमेश्वरतैंविमुख अभक्तहैं ॥ तिनसर्वप्राणियोंविषे मैंपरमेश्वर समानहींहूं ॥

अर्थात् मैंपरमेश्वरका दोप्रकारकारूपहै ॥ एकतौं स्वाभाविकरूपहै ॥ और दूसरा औपाधिकरूपहै ॥ तहां सत्ता स्फुरण आनंद यहतीनोंतौं हमारा स्वाभाविक रूपहै ॥ और अंतर्यामीपणा औपाधिकरूपहै ॥ तास्वाभाविक सत्तारूपकरिकै तथास्फुरणरूपकरिकै तथाआनंदरूपकरिकैभी मैंपरमेश्वर तिनसर्वप्राणियोंविषे समानहूं ॥ तथा औपाधिक अंतर्यामीरूपकरिकैभी मैंपरमेश्वर तिनसर्वप्राणियोंविषे समानहूं इति ॥ याकारणतैंहीं कोईभीप्राणी मैंपरमेश्वरके द्वेषकाविषय नहींहै॥ तथा कोईभीप्राणी मैंपरमेश्वरके प्रीतिकाविषय नहींहै ॥ अर्थात् मैंपरमेश्वरका किसीभीप्राणीविषे द्वेष तथाप्रीति नहींहै ॥ जैसे आकाशमंडलविषे व्यापक जो सूर्यकाप्रकाशहै ॥ तिसप्रकाशका किसीभीपदार्थविषे द्वेष तथाप्रीति नहींहोवैहै ॥ किंतु सोसूर्यकाप्रकाश सर्वत्र समानहींहोवैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् किसीभी प्राणीविषे जो तुमारा द्वेष तथाप्रीति नहींहोवै ॥ तौं तुमारेभक्तोंविषे तथाअभक्तोंविषे फलकीविषमता कैसेहोवैहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् ताफलकी विषमताविषे हेतुकहेहैं (येभजंतिइति) हेअर्जुन जेपुरुष सर्वकर्मोंका मैंपरमेश्वरविषेअर्पणरूप भक्तिकरिकै मैंपरमेश्वरकूं सेवनकरेहैं ॥ तेभक्तजन श्रेष्ठहैं ॥ ईहां (येभजंतितु) इसवचनविषेस्थितजो तु यहशब्दहै ॥ सोतुशब्द अभक्तोंकीअपेक्षाकरिकै भक्तोंकीविशेषताकेबोधनकरणेवास्तैहै ॥ साविशेषता कौंनहै ॥ ऐसी जिज्ञासाकेहुए श्रीभगवान् ताविशेषताकूं कहेहै (मयितेतेषुचाप्यहमिति) हेअर्जुन मैंपरमेश्वरविषेअर्पणकर्येहुएनिष्कामकर्मोंकरिकै जेपुरुष शुद्धअंतःकरणवालेहुएहैं ॥ तेपुरुषहीं मैंपरमेश्वरविषे वर्त्तेहैं ॥ अर्थात् निवृत्तहोइगयाहैरजतमरूपमलजिसका तथासत्वगुणकीअधिकताकरिकै अत्यंतस्वच्छहुआ ऐसाजोअंतःकरणहै ॥ ऐसेअंतःकरणकी मैंपरमेश्वरकेआकारवृत्तिकूं उपनिषदरूपप्रमाणकरिकैउत्पन्नकरतेहुए तेभक्तजनहीं मैंपरमेश्वरविषेवर्तेहैं ॥ अभक्तजन इसप्रकारतैं मैंपरमेश्वरविषे वर्त्ततेनहीं ॥ और मैंपरमेश्वरभी तिनभक्तजनोंविषेहीं वर्त्तताहूं ॥ अर्थात् मैंपरमेश्वरभी तिनभक्तजनोंकेअत्यंतस्वच्छचित्तकीवृत्तिविषे प्रतिबिंबितहुआ तिनभक्तोंविषेहीं वर्त्तताहूं ॥ काहेतैं इसलोकविषे जोजोस्वच्छद्रव्यहै॥ तास्वच्छद्रव्यका यहहींस्वभावहोवैहै ॥ जो जिसपदार्थकेसाथि तास्वच्छद्रव्यकासंबंधहोवैहै ॥ तिसपदार्थकेआकारकूं सोस्वच्छद्रव्य आपणेविषेग्रहणकरेहै ॥ और तास्वच्छद्रव्यकेसंबंधवाला जोजोपदार्थहोवैहै ॥ तिसपदार्थकाभी यहहींस्वभावहोवैहै ॥ जोतिसस्वच्छद्रव्यविषे प्रतिबिंबभावकूंप्राप्तहोणा ॥ और इसलोकविषे जोजो अस्वच्छद्रव्यहोवैहै ॥ तिसअस्वच्छद्रव्यकाभी यहहींस्वभावहोवैहै ॥ जोआपणेसंबंधवालेपदार्थकेभीआकारकूं आपणेविषेनहींग्रहणकरणा ॥ और ताअस्वच्छद्रव्यकेसंबंधवालेपदार्थकाभी यहहींस्वभावहोवैहै ॥ जो तिस अस्वच्छद्रव्यविषे प्रतिबिंबभावकूंनहींप्राप्तहोणा ॥ जैसे सर्वत्रसमानविद्यमानहुआभी सूर्यकाप्रकाश स्वच्छदर्पणादिकोंविषेहीं अभिव्यक्तिकूंप्राप्तहोवैहै ॥ अस्वच्छघटादिकोंविषे अभिव्यक्तिकूंप्राप्तहोतानहीं ॥ इतनैंमात्रकरिकै ताप्रकाशका तिनदर्पणादिकोंविषे कोईराग सिद्धहोवैनहीं ॥ तथा तिनघटादिकोंविषे कोई

द्वेष सिद्धहोवैनहीं ॥ तैसे सर्वत्रसमानहुआभी मैंपरमेश्वर भक्तजनोंकेअत्यंतस्वच्छचित्तविषेहीं अभिव्यक्तिकूंप्राप्तहोवूंहूं ॥ अभक्तजनोंकेअत्यंतअस्वच्छचित्त विषे अभिव्यक्तिकूंप्राप्तहोवूंनहीं ॥ इतनैंमात्रकरिकै मैंपरमेश्वरका तिनभक्तजनोंविषे कोईराग सिद्धहोवैनहीं ॥ तथा तिनअभक्तजनोंविषे कोईद्वेष सिद्धहोवै नहीं ॥ यातैं मैंपरमेश्वरविषे किंचित्मात्रभी विषमतानहींहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसेरागद्वेषतैंरहितहुआभी अग्नि आपणेसमीपस्थितप्राणीयोंकेहीं शीतकूंनिवृत्त करेहै ॥ दूरस्थितप्राणियोंकेशीतकूं निवृत्तकरैनहीं ॥ तथा जैसे रागद्वेषतैंरहितहुआभी कल्पवृक्ष आपणेसमीपस्थितमनुष्योंकूंहीं मनवांछितपदार्थोंकीप्राप्ति करेहै ॥ दूरस्थितमनुष्योंकूं मनवांछितपदार्थोंकीप्राप्तिकरैनहीं ॥ इतनैंमात्रकरिकै ताअग्निविषे तथाकल्पवृक्षविषे विषमतादोषकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ तैसेरागद्वेष तैंरहितहुआभी मैंपरमेश्वर शरणागतकूंप्राप्तहुए भक्तजनोंकेहींबंधनकूं निवृत्तकरूंहूं ॥ अन्यप्राणियोंकेबंधनकूंनिवृत्तकरतानहीं ॥ इतनैंमात्रकरिकै मैंपरमेश्वर विषेभी विषमतादोषकीप्राप्तिहोवैनहीं इति ॥ २९ ॥ ❀ ॥ हेअर्जुन मैंपरमेश्वरकीभक्तिकाहीं यहप्रभावहै ॥ जोसर्वत्रसमान मैंपरमेश्वरविषेभी विषम ताकूं दिखाइदेवैहै ॥ तिसहमारीभक्तिकेप्रभावकूं तूं अब श्रवणकर ॥

(मू० श्लो०) अपिचेत्सुदुराचारोभजतेमामनन्यभाक् ॥ साधुरेवसमंतव्यःसम्यग्व्यवसितोहिसः ॥ ३० ॥ अपि । चेत् । सुदुराचारः । भजते । माम् । अनन्यभाक् । साधुः । एव । सः । मंतव्यः । सम्यक् । व्यवसितः । हि । सः ॥ ३० ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हे अर्जुन जोकोईपुरुष अत्यंतदुराचरणवालाहुआ भी जबी अनन्यचित्तहोइकै मैंपरमेश्वरकूं भजेहै तबी सोपुरुष साधु हीं मांनणा जिसकारणतैं सोपुरुष साधु निश्चयवालाहै ॥ ३० ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जोकोई पुरुष अजामिलादिकोंकीन्यांई पूर्व अत्यंतदुराचरणवालाहुआभी जबी किसीपूर्वलेपुण्यकर्मकेउदयतैं अनन्यचित्तवालाहुआ मैंपर मेश्वरकूं सेवनकरेहै ॥ तबी सोपुरुष पूर्वअसाधुहुआभी तिसभजनकालविषे साधुहींमानणा ॥ जिसकारणतैं सोपुरुष तिसकालविषे साधुनिश्चयवालाहींहै ॥ तहां दुराचारीपुरुषभी परमेश्वरके आराधनतैं साधुहींहोवैहै ॥ यहवार्त्ता अन्यशास्त्रविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ (अतिपापप्रसक्तोपिध्यायन्निमिषमच्युतम् ॥ भूयस्तपस्वीभवतिपंक्तिपावनपावनः ॥ १ ॥ प्रायश्चित्तान्यशेषाणितपःकर्मात्मिकानिवै ॥ यानितेषामशेषाणांकृष्णानुस्मरणंपरम् ॥ २ ॥) अर्थयह ॥ अत्यंतपा पकर्मोंविषेप्रसक्तपुरुषभी जबी अनन्यचित्तहोइकै एक निमेषमात्रकालपर्यंतभी परमेश्वरकाआराधनकरेहैं॥तबी तिसपरमेश्वरकेआराधनकेप्रभावतैं सोपुरुष तिनसर्व पापोंतैंरहितहोइकैपुनःतपस्वीहोवैहै ॥ तथा सोपुरुष पंक्तिकूं पावनकरणेहारे सदाचारवालेपुरुषोंकूंभी आपणेदर्शनतैंपावनकरेहैंइति ॥ किंवा पापकीनिवृत्तिकरणे

वास्तै धर्मशास्त्रनैं विधानकऱ्ये जितनैंकी कृच्छ्र अतिकृच्छ्र महाकृच्छ्रचांद्रायण इत्यादिक तपरूपप्रायश्चित्तहैं ॥ तथा जितनैंकी वाजपेययज्ञ राजसूययज्ञ अश्वमेधयज्ञ इत्यादिक कर्मरूपप्रायश्चित्तहैं ॥ तिनसर्वप्रायश्चित्तोंतैं श्रीकृष्णभगवान्‌कास्मरण अधिकहैं इति ॥ तात्पर्ययह ॥ तेकृच्छ्रादिकप्रायश्चित्त जिसजिसपापकीनिवृत्तिकरणेवास्तै कऱ्येजावैहैं ॥ तिसतिस पापकीहीं निवृत्तिकरैहैं ॥ अन्यपापकीनिवृत्तिकरैनहीं ॥ और यहपरमेश्वरकास्मरणतौ शतकोटिकल्पोंकेपापोंकूंनाशकरैहैं ॥ यहवार्त्ताभी शास्त्रविषैं कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ (अहंब्रह्मेतिमांध्यायन्नेकाग्रमनसासकृत् ॥ सर्वंतरतिपाप्मानंकल्पकोटिशतैःकृतम्) ॥ अर्थयह ॥ जो पुरुष एकाग्रमनकरिकै एकवारभीमैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारतैं अभेदरूपकरिकै मैंपरमेश्वरकूं चिंतनकरैहैं ॥ सोपुरुष शतकोटिकल्पोंकरिकैकऱ्येहुए सर्वपापोंकूं नाशकरैहै इति ॥ ३० ॥ ❀ ॥ तहां अनन्य चित्तहोइकै जोपरमेश्वरकास्मरणहै ॥ सोस्मरणहीं मोक्षकासाधनहैं ॥ याप्रकारके सम्यक्‌निश्चयतैं सोपुरुष पूर्वलीदुराचारताकूं परित्यागकरिकै शीघ्रहीं धर्मात्माहोवैहै ॥ इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरैहै ॥

(मू० श्लो०) क्षिप्रंभवतिधर्मात्माशश्वच्छांतिंनिगच्छति॥ कौंतेयप्रतिजानीहिनमेभक्तःप्रणश्यति॥३१॥क्षिप्रं। भवति । धर्मात्मा । शश्वत् । शांतिं । निगच्छति । कौंतेय । प्रतिजानीहि । न । मे । भक्तः । प्रणश्यति॥३१॥(इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन सोपुरुष शीघ्रहीं धर्मात्मा होवैहै तथा नित्य शांतिकूं प्राप्तहोवैहै हेकौंतेय मैंपरमेश्वरका भक्त नहीं नाशहोवैहै ऐसी तूं प्रतिज्ञा कर ॥ ३१ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जोपुरुष पूर्व बहुतकालका अधर्मात्माहोवैहै ॥ सोपुरुषभी मैंपरमेश्वरकेभजनकेप्रभावतैं शीघ्रहीं धर्मात्माहोवैहै ॥ अर्थात् सोपुरुष तिसभजनकेप्रभावतैं पूर्वलेदुराचारपणेकूं शीघ्रहीं परित्यागकरिकै धर्मविषेप्रीतिवालाहोवैहै ॥ किंवा तिसहमारेकूं केवल इतनामात्रहींफलनहींहोवैहै ॥ किंतु इसतैंअधिकभी फलहोवैहै ॥ इस अर्थकूं अब श्रीभगवान् कहेहै (शश्वच्छांतिंनिगच्छतिइति) हेअर्जुन तिसहमारेभजनकेप्रभावतैं सोपुरुष नित्यशांतिकूंभी प्राप्तहोवैहै ॥ अर्थात् मैंपरमेश्वरकेभजनकरिकै शुद्धअंतःकरणवालाहुआ सोपुरुष तीव्रवैराग्यवान्‌होइकै सर्वविषयभोगोंकीइच्छातैंरहितहोवैहै ॥ शंका ॥ हे भगवन् परमेश्वरकापूजनकरणेहाराभी कोईकभक्त पूर्वअभ्यासकऱ्येहुएदुराचारकूं नहींत्यागकरताहुआ धर्मात्मानहींभीहोवैगा ॥ यातैं सोभक्ततौ नाशकूंहींप्राप्तहोवैगा ॥ ऐसी अर्जुनकीशंकाकेहुए ॥ श्रीभगवान् तिनभक्तजनोंकेऊपरिकरुणाकेपरवशताकरिकैं क्रोधवान्‌हुएकीन्यांई ताअर्जुनकेप्रति कहेहै (कौंतेयइति) हेअर्जुन पूर्वदुराचारीहुआभी यहपुरुष मैंपरमेश्वरकेभजनकेप्रभावतैं तादुराचारकापरित्यागकरिकै शीघ्रहीं धर्मात्माहोवैहै ॥ तथा नित्यशांतिकूंप्राप्तहोवैहै ॥ इसवार्त्ताकूं तुमने

कोईआश्चर्यरूपनहींमानणा ॥ किंतु यहहमारेभक्तिकाप्रभाव निश्चितहींहै ॥ यातें हेअर्जुन इसहमारेभक्तिकेप्रभावविषे विवादकरणेहारेजेप्रतिवादीहैं ॥ तिनप्रतिवादीयोंकेसन्मुखस्थितहोइकै तथाऊचीभुजाकरिकै तिनप्रतिवादीयोंकीअवज्ञापूर्वक तथागर्वपूर्वक तूं याप्रकारकीप्रतिज्ञाकर ॥ जो मैंपरमेश्वरकाभक्त अत्यंतदुराचारी हुआभी तथाप्राणसंकटकूंप्राप्तहुआभी तथाअत्यंतमूढ तथाअशरणहुआभी नाशकूंप्राप्तहोतानहीं ॥ अर्थात् दुर्गकूंप्राप्तहोतानहीं ॥ किंतु सर्वप्रकारतें सोहमाराभक्त कृतार्थहीहोवैहे ॥ हेअर्जुन इसहमारे भक्तिकेप्रभावविषे अजामिल प्रल्हाद ध्रुव गजेंद्र इसतैंआदिलैकेअनेकदृष्टांत प्रसिद्धहैं ॥ तथा (नवासुदेवभक्तानामशुभंविद्यतेक्वचित् ॥ अर्थयह ॥ परमेश्वरकेभक्तोंकूं कदाचित्भी अशुभकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ इत्यादिक अनेक शास्त्रकेवचन प्रमाणरूपहैं इति ॥ ३१ ॥

❀ ॥ तहां पूर्वश्लोकविषे आगंतुकदोषकरिकैदुष्टपुरुषोंका भगवद्भक्तिकेप्रभावतें विस्तारकथनकऱ्या ॥ अब स्वाभाविकदोषकरिकैदुष्टपुरुषोंकाभी तिसभगवद्भक्तिकेप्रभावतें निस्तार कथनकरेहैं ॥

(मू०श्लो०) मांहिपार्थव्यपाश्रित्ययेपिस्युःपापयोनयः ॥ स्त्रियोवैश्यास्तथाशूद्रास्तेपियांतिपरांगतिम् ॥ मां । हि । पार्थ । व्यपाश्रित्य । ये । अपि । स्युः । पापयोनयः । स्त्रियः । वैश्याः । तथा । शूद्राः । ते । अपि । यांति । पराम् । गतिम् ॥ ३२ ॥

(इतिपदच्छेदः) ॥हेअर्जुनमैंपरमेश्वरकूं आश्रयणकरिकै जेपुरुष पापयोनी भी हैं तथा स्त्रीयांहैं तथावैश्यहैं तथा शूद्रहैं तेसर्व भी परमें गतिकूं प्राप्त होवैहैं यहवार्ता निश्चितहींहै ॥ ३२ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन मैंपरमेश्वरकेशरणागतकूंप्राप्तहोइकै जेप्राणी पापयोनिभीहैं ॥ अर्थात् जातिदोषकरिकैदुष्ट जेचांडालादिकभीहैं अथवा जेप्राणी सर्पादिकतिर्यक्योनिवालेभीहैं ॥ तथा वेदकेअध्ययनादिकोंतैंरहितहोणेतैं अतिनिकृष्टजेस्त्रीयांहैं ॥ तथा कृषिवाणिज्यादिक लौकिकव्यापारोंविषेतत्पर जेवैश्यहैं ॥ तथाशूद्रत्वजातितैंहीं वेदकेअध्ययनादिकोंकेअभावकरिकै परमगतिकेअयोग्य जेशूद्रहैं ॥ तेसर्वहीं मैंपरमेश्वरकीभक्तिकेप्रभावतैं शुद्धअंतःकरणवालेहोइकै ब्रह्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिद्वारा मोक्षरूपपरमगतिकूहीं प्राप्तहोवैहैं ॥ यहवार्त्ता तुमनैं निश्चितहींजानणी ॥ इसवार्त्ताविषे किंचित्मात्रभी तुमनैं संशयकरणानहीं ॥ ईहां (मांहि) यावचनविषेस्थितजो हि यहशब्दहै ॥ ताहिशब्दकरिकै इसअर्थविषे शास्त्रप्रमाणकीप्रसिद्धि बोधनकरीहै ॥ सोशास्त्रप्रमाण यहहै ॥ श्लोक ॥ (किरातहूणांध्रपुलिंदपुल्कसाआभीरकंकायवनाःखशादयः ॥ येऽन्येचपापायदुपाश्रयाश्रयाःशुद्ध्यंतितस्मैप्रभविष्णवेनमः ॥) अर्थयह ॥ किरात हूण अंध्र पुलिंद पुल्कस आभीर कंक यवन खश इत्यादिक जेनीचजातिवालेप्राणीहैं ॥ तथाजेअन्यभी पापआचरणवालेहैं ॥ तेसर्वप्राणी जिसपरमेश्वरकेशरणागतकूंप्राप्तहोईकै शुद्धिकूंप्राप्तहोवैहैं ॥

तिसपरमेश्वरकेताईहमारा नमस्कारहे इति ॥ ईहां (तेऽपि) इसवचनविषेस्थितजो अपि यहशब्दहै ॥ ताअपिशब्दकरिकै(अपिचेत्सुदुराचारः) इसपूर्व श्लोकविषेकथनकऱ्येहुए दुराचारीपुरुषोंकाभी ग्रहणकरणाइति ॥ ३२ ॥ ❀ ॥ तहां इसप्रकारके स्त्रीशूद्रादिकप्राणीभी जबी परमेश्वरकेभक्तितैं परमगतिकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ तबी ब्राह्मणादिक उत्तममनुष्य तिसभगवद्भक्तितैं परगतिकूंप्राप्तहोवैहैं याकेविषे क्याआश्चर्यहे ॥ इसप्रकारके कैमुतिकन्यायकरिकै श्रीभगवान् ताभगवद्भक्तिकेप्रभावकूं वर्णनकरेहैं ॥ तिनउत्तममनुष्योंकूं तिसभक्तिविषेप्रवृत्तकरणेवासतै ॥

(मू० श्लो०) किंपुनर्ब्राह्मणाःपुण्याभक्ताराजर्षयस्तथा ॥ अनित्यमसुखंलोकमिमंप्राप्यभजस्वमाम् ॥ ३३ ॥ किं । पुनः । ब्राह्मणाः । पुण्याः । भक्ताः । राजर्षयः । तथा । अनित्यम् । असुखम् । लोकम् । इमम् । प्राप्य । भजस्व । माम् ॥ ३३ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन मेरेभक्त उत्तमजातिवाले ब्राह्मण तथा क्षत्रिय परमगतिकूंप्राप्तहोवैहैं याकेविषे पुनः क्यांकहणाहै यातैंतूं इस अनित्य तथादुःखयुक्त मनुष्यदेहकूं प्राप्तहोइकै मैंपरमेश्वरकूं आराधनकर ॥ ३३ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जबीपूर्वउक्तस्त्रीशूद्रादिकप्राणीभी मैंपरमेश्वरकीभक्तिकरिकै ब्रह्मज्ञानकीप्राप्तिद्वारा मोक्षरूपपरमगतिकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ तबी श्रेष्ठआचारवाले तथाउत्तमजातिवाले जेब्राह्मणहैं तथासूक्ष्मवस्तुकेविवेककरणेहारेजेक्षत्रियहैं ॥ तेब्राह्मण तथाक्षत्रिय मैंपरमेश्वरकेभक्त तिसभक्तिकरिकै ब्रह्मज्ञानद्वारा मोक्ष रूप परमगतिकूं प्राप्तहोवैहैं याकेविषे पुनः क्याकहणाहे ॥ किंतु इसवार्त्ताविषे किसीकूंभी संशयनहींहे ॥ हेअर्जुन जिसकारणतैं मैंपरमेश्वरभक्तिका महान्प्र भावहे ॥ इसकारणतैं सर्वपुरुषार्थोंकेसिद्धकरणेकूंयोग्य तथाअत्यंतदुर्लभ इसअधिकारी मनुष्यदेहकूं प्राप्तहोइकै तूं जितनैंकालपर्यंत वहमनुष्यदेह नाशकूंनहीं प्राप्तभया तथारोगादिकोंकरिकैग्रस्तनहींभया तितनैंकालपर्यंत अतिशीघ्रतातैं महान्प्रयत्नकरिकै मैंपरमेश्वरकेशरणागतकूंप्राप्तहोउ ॥ हेअर्जुन यहमनुष्यदेहकैसाहे अनित्यहे ॥ अर्थात् शीघ्रहीं नाशहोणेहाराहे ॥ पुनःकैसाहे यहदेह असुखहै ॥ अर्थात् गर्भवासतैंआदिलैके अनेकप्रकारकेदुःखोंकरिकैग्रस्तहे हेअर्जुन यहशरीर अनित्यहे तथाअसुखरूपहे ॥ यातैं तूं मैंपरमेश्वरकेभजनविषे विलंब मतकर ॥ तथा इसशरीरकेसुखवासतै उद्यमकूंमतकर ॥ हेअर्जुन जैसे पूर्वश्रेष्ठ आचारवालेजनकादिकराजऋषि मैंपरमेश्वरकेभजनकरिकै आपणेजन्मकूं सफलकरतेभयेहैं तैसे तूं अर्जुनभी मैंपरमेश्वरकेभजनकरिकै आपणेजन्मकूं सफलकर ॥ जोतूं इसअधिकारीमनुष्यशरीरकूं प्राप्तहोइकै मैंपरमेश्वरकेचिंतनपरायणनहींहोवैंगा ॥ तौं यहतुमाराअधिकारीमनुष्यशरीरहीं निष्फलहोवैंगा ॥ यहवार्त्ता श्रुति विषेभी कथनकरीहे ॥ तहांश्रुति ॥ (इहचेदवेदीदथसत्यमस्ति नचेदवेदीन्महतीविनष्टिः ॥) अर्थयह ॥ इसभारतखंडविषे अधिकारीमनुष्यशरीरकूं प्राप्तहोइकै

यहपुरुष जबी परमात्मादेवकूं साक्षात्कारकरेहै ॥ तबीइसपुरुषकूं मोक्षरूपसत्यफलकीहीं प्राप्तिहोवैहै ॥ और यहपुरुष जबी इसअधिकारीमनुष्यशरीरकूंपाइकै तिसपरमात्मादेवकूं नहींसाक्षात्कारकरेहै ॥ तबीइसपुरुषकूं वारंवार जन्ममरणरूपसंसारकीहींप्राप्तिहोइकै इति ॥ ३३ ॥ ❀ ॥ अब पूर्वकथनकऱ्येहुए भजनकेप्रकारकूंकथनकरताहुआ श्रीभगवान् इसनवमअध्यायकीसमाप्तिकरेहै ॥

(मू० श्लो०) मन्मनाभवमद्भक्तोमद्याजीमांनमस्कुरु ॥ मामेवैष्यसियुक्त्वैवमात्मानंमत्परायणः ॥ ३४ ॥ इतिश्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सुब्रह्मविद्यायांयोगशास्त्रेश्रीकृष्णार्जुनसंवादेराजविद्याराजगुह्ययोगोनामनवमोऽध्यायःसमाप्तः ॥९॥ मन्मनाः । भव । मद्भक्तः । मद्याजी । माम् । नमस्कुरु । माम् । एव । एष्यसि । युक्त्वा । एवम् । आत्मानम् । मत्परायणः ॥ ३४ ॥ (इतिपदच्छेदः)

हेअर्जुन तूं मैंपरमेश्वरविषेमनवाला होउ मेराभक्त होउ तथा मेरेपूजनपरायण होउ तथा मैंपरमेश्वरकूं नमस्कारकर इसप्रकारतें मैंपरमेश्वरकेशरणहुआ तूं आपणेअंतःकरणकूं मैंपरमेश्वरविषे जोडिकेंकरिकै मैंपरमेश्वरकूं हीं प्राप्तहोवैगा ॥ ३४ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जिसपुरुषकामन केवल मैंपरमेश्वरविषेहीं संलग्नहै अन्यपुत्रभार्यादिकोंविषे संलग्नहैनहीं तिसपुरुषकानाम मन्मनाहै ॥ ऐसा मन्मना तूंहोउ ॥ और जोपुरुष एकमैंपरमेश्वरकाहींभक्तहै धनादिकपदार्थोंकीप्राप्तिवासते अन्यराजादिकोंका भक्तहैनहीं तिसपुरुषकानाम मद्भक्तहै ॥ ऐसा मद्भक्त तूंहोउ ॥ तात्पर्ययह ॥ इसलोकविषे जोराजादिकोंकाभृत्यहोवैहै ॥ सोभृत्य धनादिकपदार्थोंकीप्राप्तिवासतें तिन राजादिकोंका भक्तहुआभी तिनराजादिकोंविषे तिसभृत्य कामन संलग्नहोवैनहीं ॥ किंतु ताभृत्यकामन आपणेस्त्रीपुत्रादिकोंविषेहीं संलग्नहोवैहै ॥ यातें सोभृत्य ताराजाका भक्तहुआभी तन्मना होवैनहीं ॥ और आपणेपुत्रस्त्रीआदिकोंविषे सोभृत्य तन्मना हुआभी तिनस्त्रीपुत्रादिकोंका भक्तहोवैनहीं ॥ तैसे तूंअर्जुन मैंपरमेश्वरविषे भक्तिवालाहुआभी अन्यविषेमनवाला मत होउ तथा मैंपरमेश्वरविषे मनवालाहुआभी अन्यविषेभक्तिवाला मतहोउ ॥ किंतु तूंअर्जुनतौं मैंपरमेश्वरविषेहीं मनवाला तथाभक्तिवाला होउ इति ॥ तथा तूंअर्जुन मद्याजी होउ ॥ अर्थात् एकमैंपरमेश्वरकेहीं पूजनपरायणहोउ ॥ तथाशरीर मन वाणी करिकै तूं मैंपरमेश्वरकूंहीं नमस्कारकर ॥ इसप्रकारतें मत्परायणहुआतूं अर्थात् एकमैंपरमेश्वरके शरणागतकूंप्राप्तहुआतूं आपणेअंतःकरणकूं मैंपरमेश्वरकेचिंतनविषेजोडिकै मैंपरमानंदघन स्वप्रकाश सर्वउपद्रवोंतें रहित अभयब्रह्मकूंहीं घटाकाशमहाकाशकीन्यांई तथानदीसमुद्रकीन्यांई अभेदरूपकरिकै प्राप्तहोवैगा ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे घटरूपउपाधिकेनिवृत्तहुए घटाकाश अभेदरूपकरिकै महाकाशभावकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तथा जैसे श्रीगंगायमुनादिकनदीयां आपणेनामरूपकापरित्यागकरिकैसमुद्रविषे एकताभावकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ तैसे

तूंअर्जुनभी मैंपरमेश्वरकीभक्तितैंउत्पन्नहुएब्रह्मसाक्षात्कारकरिकै अविद्यादिकसर्वउपाधियोंतैंरहितहुआ अभेदरूपकरिकै मैंनिर्गुण ब्रह्मकूंहीं प्राप्तहोवैंगा ॥ तहां श्रुति ॥ (यथानद्यःस्पंदमानाः समुद्रेऽस्तंगच्छंतिनामरूपेविहाय ॥ तथाविद्वान्नामरूपाद्विमुक्तः परात्परंपुरुषमुपैतिदिव्यम्) ॥ अर्थयह ॥ जैसे श्रीगंगायमुनादिकनदीयां आपणेनामरूपकापरित्यागकरिकै समुद्रविषेजाइकै एकताभावकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तैसे यहविद्वान्पुरुषभी नामरूपतैंरहितहुआ सर्वतैंउत्कृष्ट स्वयंज्योति परमात्मापुरुषकूंहीं अभेदरूपकरिकै प्राप्तहोवैहै इति ॥ ईहां किसीटीकाविषेतौं (मामेवआत्मानमेष्यसि) इसप्रकारतैं पदोंकीयोजनाकरिकै (आत्मानम्) इसपदकरिकै परमात्माकाहीं ग्रहणकऱ्याहै इति ॥ ३४ ॥ ❀ ॥ इतिश्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यश्रीस्वामिउद्धवानंदगिरिपूज्यपादशिष्येण स्वामिचिद्घनानंदगिरिणा विरचितायां प्राकृतटीकायां श्रीभगवद्गीतागूढार्थदीपिकाख्यायां नवमोऽध्यायःसमाप्तः ॥ ९ ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥

इति नवमोऽध्यायःसमाप्तः ॥ ९ ॥



ॐ श्रीगणेशायनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥ अथ दशमाऽध्यायप्रारंभः ॥ तहां पूर्व सप्तम अष्टम नवम इन तीनअध्यायोंकरिके तत्पदार्थरूपपरमेश्वरका सोपाधिकस्वरूप तथानिरुपाधिकस्वरूप दिखाया ॥ तिसतत्पदार्थरूपपरमेश्वरकीजेविभूतियांहैं ॥ तेविभूतियां तिस सोपाधिकस्वरूपकेतौंध्यानविषे उपायभूतहैं ॥ और तेविभूतियां तिसनिरुपाधिकस्वरूपकेतौं ज्ञानविषे उपायभूतहैं ॥ ऐसी परमेश्वरकीविभूतियांभी सप्तमअध्याय विषेतौं (रसोहमप्सुकौंतेय) इत्यादिकवचनोंकरिके और नवमअध्यायविषेतौं (अहंक्रतुरहंयज्ञः) इत्यादिकवचनोंकरिकै संक्षेपतैं कथनकरीयां ॥ तिन संक्षेपतैं कथनकरीहुई विभूतियोंका विस्तार अब अवश्यकरिकैकहणेयोग्यहे ॥ काहेतैं कितनैंकीवहिर्मुखलोकोंकूंसोपरमेश्वरकास्वरूपध्यानकरणेवासतैंभी अत्यंतदुर्विज्ञेयहे ॥ ऐसेस्वरूपकाजो पुनःपुनःकथनहे सोतिसस्वरूपकेज्ञानवासतैंहींहे ॥ याकारणतैं श्रीभगवान्नैं यह दशमअध्याय प्रारंभकरीता है ॥ तहां प्रथम अर्जुनकेचित्तविषे उत्साहकरावणेवासतैं परमकृपालु श्रीभगवान् विनाहींपूछेतैं ताअर्जुनकेप्रति कहेहै ॥

(मू० श्लो०) श्रीभगवानुवाच ॥ भूयएवमहाबाहोशृणुमेपरमंवचः ॥ यत्तेहंप्रीयमाणायवक्ष्यामिहितकाम्यया ॥ १ ॥ भूयः । एव । महाबाहो । शृणु । मे । परमं । वचः । यत् । ते । अहं । प्रीयमाणाय । वक्ष्यामि । हितकाम्यया ॥ १ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥
हेअर्जुन पुनः भी मैंपरमेश्वरके उत्कृष्ट वचनकूं तूं श्रवणकर जोवचन मैंपरमेश्वर तुमारे हितकी कामनाकरिके तैं प्रीतिवालेकेतांई कथन करताहूं ॥ १ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेमहान्बाहुवाला अर्जुन तूं पुनःभी मैंपरमेश्वरके अत्यंतउत्कृष्टवचनकूं श्रवणकर ॥ जोवचन मैंपरमआप्त परमेश्वर तुमारेइष्टकेप्राप्तिकीइच्छाकरिकै तुमारेतांई कथनकरताहूं ॥ अब अर्जुनकेप्रति तिसवचनकेउपदेशकरणेकीयोग्यताकेबोधनकरणेवासतै ताअर्जुनका विशेषणकहेहैं (प्रीयमाणायइति) हेअर्जुन जैसे अमृतकेपानतैं प्रीतिकाअनुभवकरीताहै ॥ तैसे मैंपरमेश्वरकेवचनरूपअमृतकेपानतैं तूं प्रीतिकूं अनुभवकरणेहाराहैं ॥ यातैं तुमारेतांई पुनःभी मैं उपदेशकरता हूं ॥ ईहां (प्रीयमाणाय) इसवचनकरिके श्रीभगवान्नैं यहअर्थ सूचनकऱ्या ॥ इनोंकेवचनोंकूं श्रवणकरिकै हमारेइष्टकीसिद्धि अवश्यकरिकैहोवैगी याप्रकारकी दृढभावनाकरिकै जोपुरुष प्रीतिपूर्वक तिनवचनोंकूं श्रवणकरेहै ॥ तिसअधिकारीपुरुषकेतांईहीं तत्त्ववेत्तापुरुषनैं ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरणा ॥ ताप्रीतितैंरहित पुरुषकेप्रति ब्रह्मविद्याका उपदेशकरणानहीं इति ॥ और तिसवचनकाजो परमं यहविशेषणकथनकऱ्याहै ॥ तापरमविशेषणकरिकै श्रीभगवान्नैं यह अर्थसूचतकऱ्याहै ॥ जिसकारणतैं यहहमारावचन अत्यंतउत्कृष्टहै॥ तिसकारणतैं इसहमारेवचनकेश्रवणतैं तुमारेकूं अवश्यकरिकै इष्टअर्थकीप्राप्ति होवैगी इति॥ १॥ ❀ ॥

॥ शंका ॥ हेभगवन् ऐसेवचनतौं पूर्व बहुतवार आप हमारेप्रति कथनकरि आयेहो ॥ तिनवचनोंकूं पुनःअबी किसवासतै कथनकरतेहो ॥ ऐसी अर्जुनकीशंकाकेहुए ॥ श्रीभगवान् दुर्विज्ञेयवस्तुका पुनःपुनःउपदेशकरणेतैंहीं बोधहोवैहै याप्रकारकेअभिप्रायकरिकै आपणेस्वरूपकीदुर्विज्ञेयताकूं कथन करेहै ॥ अथवा ॥ शंका ॥ हेभगवन् हमारेप्रति तैंपरमेश्वरकेस्वरूपकाउपदेशकरणेहारे इंद्रादिकदेवता तथाभृगुआदिकऋषि बहुतहैं ॥ तिनोंकेवचनश्रवणतैंहीं हमारेकूं आपकेस्वरूपकाज्ञान होवैंगा ॥ इसविषे आपकेकहणेकाक्याप्रयोजनहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए ॥ जिनइंद्रादिकोंकेवचनतैं तूं हमारेस्वरूपकाज्ञान चाहताहैं तिनइंद्रादिकोंकूंहीं हमारास्वरूप दुर्विज्ञेयहै इसअर्थकूं अबश्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) नमेविदुःसुरगणाःप्रभवंनमहर्षयः ॥ अहमादिर्हिदेवानांमहर्षीणांचसर्वशः ॥ २ ॥ न । मे । विदुः । सुरगणाः । प्रभवं । न । महर्षयः । अहम् । आदिः । हि । देवानां । महर्षीणां । च । सर्वशः ॥ २ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन मैंपरमेश्वरके प्रभावकूं इंद्रादिकदेवता नहीं जानैहैं तथाभृगुआदिकमहान्ऋषिभी नहींजानैं हैं जिसकारणतैं मैंपरमेश्वर तिनदेवतावोंका तथा तिनमहान् ऋषियोंका सर्वप्रकारतैं कारणहूं ॥ २ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन मैंपरमेश्वरकाजो प्रभावहै ॥ अर्थात् आकाशादिकसर्वप्रपंचके उत्पत्ति स्थिति संहार प्रवेश नियमन निग्रह अनुग्रह इत्यादिकोंकेकरणेकाजो सामर्थ्यरूप प्रभावहै ॥ अथवा अनेकविभूतियोंकरिकै आविर्भावरूपजोप्रभवहै ॥ तिसहमारे प्रभावकूं इंद्रादिकदेवता तथाभृगुआदिकमहान्ऋषि सर्वज्ञहुएभी जानतेनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् तेइंद्रादिकदेवता तथाभृगुआदिकमहान्ऋषि तिसआपकेप्रभावकूं किसकारणतैं नहींजानतेहै॥ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए ॥ श्रीभगवान् ताकेनजानणेविषेहेतुकहेहै (अहमादिर्हिइति) हेअर्जुन जिसकारणतैं मैंपरमेश्वरतिनइंद्रादिकदेवतावोंका तथातिनभृगुआदिकमहान्ऋषियोंका सर्वप्रकारतैं कारणहूं ॥ अर्थात् मैंपरमेश्वर तिनइंद्रादिकदेवतावोंके तथाभृगुआदिकऋषियोंके उत्पादकपणेकरिकै तथाबुद्धिआदिकोंका प्रवर्त्तकपणेकरिकै कारणहूं ॥ अथवा मैंपरमेश्वर तिनोंका उपादानरूपकरिकै तथानिमित्तरूपकरिकै कारणहूं ॥ तिसकारणतैं तेइंद्रादिकदेवता तथाभृगुआदिकऋषि मैंपरमेश्वरकेकार्यहोणेतैं कारणरूपमैंपरमेश्वरकेप्रभावकूं जानिसकतेनहीं ॥ जैसे पिताके प्रभावकूं पुत्र जानिसकतानहीं ॥ यातैं मैंपरमेश्वरहीं आपणाप्रभाव तुमारेतांई कथनकरताहुं ॥ तहां परमेश्वरतैंहीं सर्वदेवतावों तथासर्वऋषियोंकी उत्पत्तिहोवैहै ॥ यहवार्त्ता ॥ (तस्माच्चदेवाबहुधासंप्रसूताः यस्मिन्युक्तामहर्षयोदेवताश्च ॥) इत्यादिकश्रुतियोंविषे प्रसिद्धहीहै इति ॥ २ ॥ ❀ ॥ तहां सोपरमेश्वरकेप्रभावकाज्ञान महान्फलकाहेतुहै ॥ यातैं कोईकअधिकारीजनहीं तिसपरमेश्वरकेप्रभावकूं जाने

है ॥ इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥ अथवा ॥ शंका ॥ हेभगवन् तेइंद्रादिकदेवता तथाभृगुआदिकऋषि जोकदाचित् आपपरमेश्वरकेप्रभावका उपदेशकरणेविषे समर्थनहींहैं ॥ तौं आपही हमारेप्रति ताआपणेप्रभावकाउपदेशकरौं ॥ परंतु तिसआपके प्रभावकेजानणे करिकै हमारेकूं कौंनफलहोवैंगा ॥ ऐसी अर्जुनकीजिज्ञासाकेहुए ॥ श्रीभगवान् ताज्ञानकाफल कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) योमामजमनादिंचवेत्तिलोकमहेश्वरम् ॥ असंमूढःसमर्त्येषुसर्वपापैःप्रमुच्यते ॥३॥ यः । माम् । अजम् । अनादिं । चं । वेत्ति । लोकमहेश्वरम् । असंमूढः । सः । मर्त्येषु । सर्वपापैः । प्रमुच्यते ॥३॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन जन्मतैंरहित तथा कारणतैं रहित तथासर्वलोकोंकामहान्ईश्वर ऐसेमैंपरमेश्वरकूं जोपुरुप जाने है सोपुरुष सर्वमनुष्योंकेमध्याविषे संमोहतैंरहितहुआ सर्वपापोंनैं परित्यागकरीताहै ॥ ३ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन मैंपरमेश्वरहीं सर्वजगत्काकारणहुं ॥ यातैं नहींवियमानहै आदि क्याकारण जिसका ताका नाम अनादिहै ॥ ऐसाअनादिरूप मैंपरमेश्वरहुं ॥ और अनादिहोणेतैंहीं मैंपरमेश्वर अजहुं ॥ अर्थात् उत्पत्तिरूप जन्मतैंरहितहुं ॥ तथा सर्वलोकोंकामहेश्वरहुं ॥ ऐसे मैंपरमेश्वरकूं जोअधिकारीपुरुष आपणेआत्मासैंअभिन्नरूपकरिकै साक्षात्कारकरेहै ॥ सोपुरुष सर्वमनुष्योंकेमध्यविषे असंमूढहुआ अर्थात् अज्ञानकीनिवृत्तिद्वारा आत्माअनात्माकेतादात्म्यअध्यास रूप संमोहतैंरहितहुआ सर्वपापोंतैंमुक्तहोवैहै ॥ अर्थात् बुद्धिपूर्वककऱ्येहुए तथाअबुद्धिपूर्वककऱ्येहुए भूत भविष्यत् वर्त्तमान सर्वपापोंतै सोतत्त्ववेत्तापुरुष मुक्तहो वैहै ॥ ईहां (प्रमुच्यते) इसवचनविषेस्थितजो प्र यहशब्दहै ॥ ताप्रशब्दकरिकै श्रीभगवान्नैं यहअर्थ सूचनकऱ्या ॥ यद्यपि अज्ञानीपुरुषभी तिनपापकर्मोंके भोगकरिकै तथाप्रायश्चित्तकरिकै तिनपापकर्मोतैंमुक्तहोवैहैं ॥ तथापि तेअज्ञानीपुरुष ताकरिकै तिनपापकर्मोंतैं अत्यंतमुक्तहोवैनहीं ॥ काहेतैं सर्वपापकर्मोंकाका रणरूप जोअज्ञानहै ॥ तथा ताअज्ञानकृतजो देहादिकोंविषे अहंममअध्यासहै ॥ सोअज्ञान तथाअध्यास तिनअज्ञानीपुरुषोंविषे वियमानहै ॥ तिसतैं पुनः पापोंकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ और भोगकरिकैनिवृत्तहुएभी तेपापकर्म संस्काररूपतैं तिनअज्ञानीपुरुषोंविषे बनेरहेहैं ॥ याकारणतैंहीं तिनसंस्कारोंकेवशतैं तेअज्ञानीपुरुष पुनः तिनपापकर्मोविषे प्रवृत्तहोवैहैं ॥ और तत्त्ववेत्तापुरुषतौ आत्मसाक्षात्कारकरिकै अज्ञानरूपमूलकारणकी तथातत्जन्यअहंममअध्यासकी तथासंस्कारस हितसर्वपापकर्मोंकी निःशेषतैं निवृत्तिहोइजावैहै ॥ यातैं सोतत्त्ववेत्तापुरुषहीं तिनसर्वपापकर्मोंतैं अत्यंतमुक्तहोवैहै ॥ इसअर्थविषे ॥ (क्षीयंतेचास्यक र्माणितस्मिन्दृष्टेपरावरे ॥ ज्ञानाऽग्निःसर्वकर्माणिभस्मसात्कुरुतेतथा) ॥ इत्यादिकअनेकश्रुतिस्मृतिवचन प्रमाणरूपहैंइति ॥ ३ ॥ ❀ ॥ तहांपूर्वश्लोकविषे

(लोकमहेश्वरम्) इसवचनकरिकै श्रीभगवान्नैं आपणेविषे सर्वलोकोंकामहेश्वरपणा कथनकऱ्या ॥ अब तिसी सर्वलोकमहेश्वरपणेकूं विस्तारतैं प्रतिपादनकरेहैं ॥

(मू० श्लो०) बुद्धिर्ज्ञानमसंमोहःक्षमासत्यंदमःशमः ॥ सुखंदुःखंभवोभावोभयंचाभयमेवच ॥ ४ ॥ अहिंसासमतातुष्टिस्तपोदानंयशोऽयशः ॥ भवंतिभावाभूतानांमत्तएवपृथग्विधाः ॥ ५ ॥ बुद्धिः । ज्ञानम् । असंमोहः । क्षमा । सत्यम् । दमः । शमः । सुखम् । दुःखम् । भवः । भावः । भयम् । च । अभयम् । एव । च । अहिंसा । समता । तुष्टिः । तपः । दानम् । यशः । अयशः । भवंति । भावाः । भूतानाम् । मत्तः । एव । पृथग्विधाः ॥ ४ ॥ ५ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन बुद्धि ज्ञान असंमोह क्षमा सत्य दम शम सुख दुःख भव भाव भय तथा अभय अहिंसा समता तुष्टि तप दान यश अयश यहलोकप्रसिद्ध नानाप्रकारके कार्यविशेष सर्व प्राणीयोंके मैंपरमेश्वरतैं हीं उत्पन्नहोवैंहैं ॥ ४ ॥ ५ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन सर्वप्राणीयोंके यहबुद्धितैंआदिलेके अयशपर्यंत कार्यविशेष मैंपरमेश्वरतैंहीं उत्पन्नहोवैंहैं अन्यकिसीतैंउत्पन्नहोवैंनहीं ॥ अब तिनबुद्धिआदिकोंकास्वरूप कथनकरेहैं ॥ तहां अंतःकरणविषे जोसूक्ष्मअर्थकेविवेककरणेकासामर्थ्यहै ताकानाम बुद्धिहै ॥ और आत्मा अनात्मारूप सर्वपदार्थोंकाजोअवबोधहै ताकानाम ज्ञानहै ॥ और ज्ञातव्यतारूपकरिकै अथवा कर्त्तव्यतारूपकरिकै प्राप्तभयेजेपदार्थहैं तिनपदार्थोंविषे व्याकुलतातैंरहितहोइकै जाविवेकपूर्वक प्रवृत्तिहै अर्थात् ताकेइष्टअनिष्टरूपफलकेविचारपूर्वक जाप्रवृत्तिहै ताकानाम असंमोहहै ॥ और कठोरवाणी करिकै अथवा दंडादिकोंकरिकै ताडनकऱ्येहुएपुरुषकेचित्तका जोनिर्विकारपणाहै अर्थात् तिसताडनकरणेहारेप्राणीकेअनिष्टकानहींचिंतनकरणाहै ताकानाम क्षमाहै ॥ अथवा आध्यात्मिक आधिदैविक आधिभौतिक यातीनप्रकारकेउपद्रवोंके सहनकरणेकाजोस्वभावहै ताकानाम क्षमाहै ॥ तहां ज्वरादिकरोग आध्यात्मिकउपद्रव कहेजावैंहैं ॥ और अतिशीत अतितप्त अतिवर्षा इत्यादिक आधिदैविकउपद्रव कहेजावैंहैं ॥ और सर्प व्याघ्र शत्रुइत्यादिकआधिभौतिकउपद्रव कहेजावैंहैं इति ॥ और प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकरिकै जोअर्थ जिसप्रकारतैं निश्चयकऱ्याहै तिसअर्थकूं तिसीप्रकारतैं कथनकरणा याकानाम सत्यहै ॥ और श्रोत्रादिकबाह्यइंद्रियोंकी जाशब्दादिकविषयोंतैं निवृत्तिहै ताकानाम दमहै ॥ और अंतःकरणकी जातिनशब्दादिकविषयोंतैंनिवृत्तिहै ताकानाम शमहै ॥ और केवलधर्महैअसाधारणकारणजिसका तथाअनुकूलतारूपकरिकैहीं सर्वप्राणीयोंकेज्ञानकाविषय ऐसाजोआनंदहै ताकानाम सुखहै ॥ और केवलअधर्महैअसाधारणकारणजिसका तथाप्रतिकूलतारूपकरिकैहीं सर्वप्राणीयोंकेज्ञानकाविषय ऐसाजोपरितापहै ताकानाम दुःखहै ॥ और उत्पत्तिकानाम भवहै ॥ और सत्ताकानाम भावहै ॥ अथवा (भवोभावः) इसवचनविषे भवःअभावः याप्रकारका

पदच्छेदकरणा ॥ तहां असत्ताकानाम अभावहै ॥ और त्रासकानाम भयहै ॥ त्रासतैंरहितहोणेकानाम अभयहै ॥ ईहां (भयंचाभयमेवच) इसवचनविषे स्थित प्रथमचकारतौं पूर्वउक्तबुद्धिआदिकोंकेसमुच्चयकरावणेवासतैंहे ॥ और दूसराचकारतौं पूर्वनहींकथनकऱ्येहुए बुद्धिआदिकोंकेविरोधी अबुद्धि अज्ञान संमोह अक्षमा असत्य इत्यादिकोंकेसमुच्चयकरावणेवासतैंहे ॥ और एव यहशब्द तिनबुद्धिआदिकोंविषे सर्वलोकप्रसिद्धताके बोधनकरणेवासतैंहे ॥ अर्थात् यहबुद्धि आदिक सर्वलोकविषेप्रसिद्धहींहैं इति ॥ और स्थावरजंगमसर्वप्राणीयोंकीपीडातैंजानिवृत्तिहै ताकानाम अहिंसाहै ॥ अर्थात् शरीरमनवाणीकरिकै जोकिसीभी प्राणीमात्रकूं पीडाकीनहींप्रातिकरणी ताकानाम अहिंसाहै ॥ और इष्टवस्तुके तथाअनिष्टवस्तुके प्राप्तहुएभी जाचित्तकी रागद्वेषादिकोंतैंरहितअवस्थाहै ॥ ताका नाम समताहै ॥ और प्रारब्धकर्मकेवशतैं यत्किंचित्भोग्यपदार्थोंकेप्राप्तहुए इतनैंपदार्थोंकरिकैहीं हमारेकूं तृप्तिहै याप्रकारकीजाअलंबुद्धिहै ॥ जिसकूं संतोषकहे हैं ताकानाम तुष्टिहै ॥ और शास्त्रउपदिष्टमार्गकरिकै जोशरीरइंद्रियोंकाशोषणहै अर्थात् कृच्छ्रचांद्रायणादिकव्रतोंकरिकै जोशरीरइंद्रियोंके बलकीक्षीणताकरणी है ताकानाम तपहै ॥ और उत्तमदेशकालविषे सत्पात्रविषे श्रद्धाकरिकै यथाशक्तिपरिमाण जो अन्नसुवर्णादिकपदार्थोंकासमर्पणहै ताकानाम दानहै ॥ और धर्मरूप निमित्ततैं उत्पन्नभईजा लोकविषे प्रशंसादिरूपप्रसिद्धिहै ताकानाम यशहै॥और अधर्मरूपनिमित्ततैं उत्पन्नभईजा लोकविषेनिंदारूपप्रसिद्धिहै ताकानाम अयशहै यह बुद्धितैंआदिलैकेअयशपर्यंत जेकार्यविशेषहैं॥जेबुद्धिआदिककार्य धर्मअधर्मादिकसाधनोंकीविचित्रताकरिकै नानाप्रकारकेहैं ॥ ऐसेसर्वप्राणीयोंके बुद्धिआदिकपदार्थ आपणेआपणेकारणोंसहित मैंपरमेश्वरतैंहींउत्पन्नहोवैहैं॥ अन्याकिसीतैं तेबुद्धिआदिक उत्पन्नहोवैंनहीं ॥ ऐसेसर्वकेकारणरूप मैंपरमेश्वरविषे तिनसर्वलोकोंकामहेश्व रपणाहै याकेविषेक्याकहणाहै इति ॥ ४ ॥ ५ ॥ ❀ ॥ हेअर्जुन केवलबुद्धिआदिकोंकाकारणहोणेतैं मैंपरमेश्वरविषे सोसर्वलोकोंका महेश्वरपणा नहींहैं ॥ किंतु भृगुआदिकमहान्ऋषियोंका तथास्वयंभुवादिकमनुवोंका कारणहोणेतैंभी मैंपरमेश्वरविषे सोसर्वलोकोंकामहेश्वरपणाहै॥ इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

(मू०श्लो०) महर्षयःसप्तपूर्वेचत्वारोमनवस्तथा ॥ मद्भावामानसाजातायेषांलोकइमाःप्रजाः ॥६॥ महर्षयः । सप्त । पूर्वे । चत्वारः । मनवः । तथा । मद्भावाः । मानसाः । जाताः । येषां । लोके । इमाः । प्रजाः ॥ ६ ॥ (इतिपदच्छेदः)॥ हेअर्जुन सृष्टिकेआदिकालविषे उत्पन्नहुए जेभृगुआदिकसप्त महाऋषिहैं तथा सावर्णीआदिकच्यारि मनुहैं जेभृगुआदिक मैंपरमेश्वरकेचिंतनपरायणहैं तथा मनकेसंकल्पमात्रतैं उत्पन्नहुएहैं तथा जिनंभृगुआदिकोंकी ईसलोकविषे यह ब्राह्मणादिकप्रजाहै ॥ तेभृगुआदिकभी मैंपरमेश्वरतैंहीं उत्पन्नहुएहैं ॥ ६ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन पूर्वसृष्टिकेआदिकालविषे उत्पन्नहुए जेभृगुआदिकसप्त महाऋषिहैं कैसेहैंतेभृगुआदिकसप्तऋषिवेदोंकेपाठकूं तथावेदोंकेअर्थकूं भलीप्रकारतैंजानणेहारेहैं ॥ तथा सर्वज्ञहैं ॥ तथा वेदवियाकेसंप्रदायकी प्रवृत्तिकरणेहारेहैं ॥ याकारणतैंहीं तिनभृगुआदिकसप्तऋषियोंकूं शास्त्रविषे महाऋषिकहेहैं ॥ तहां तिनभृगुआदिकसप्तऋषियोंकेनाम तथासृष्टिकेआदिकालविषे तिनोंकीउत्पत्ति पुराणोंविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ (भृगुंमरीचिमत्रिंचपुलस्त्यंपुलहं क्रतुम् ॥ वसिष्ठंचमहातेजाःसोसृजन्मनसासुतान्) अर्थयह ॥ भृगु मरीचि अत्रि पुलस्त्य पुलह क्रतु वसिष्ठ इनसप्तऋषिरूपपुत्रोंकूं सोमहान्तेजवालाब्रह्मा सृष्टिकेआदिकालविषे आपणेमनकरिकै उत्पन्नकरताभया इति ॥ तथा सृष्टिकेआदिकालविषेउत्पन्नहुएजे सावर्णीआदिकनामकरिकैप्रसिद्धच्यारिमनुहैं ॥ अथवा (महर्षयःसप्त) इसवचनकरिकैतौं भृगुआदिकसप्तमहाऋषियोंकाग्रहणकरणा ॥ और (पूर्वेचत्वारः) इसवचनकरिकै तिनभृगुआदिकसप्तऋषियोंतैंभीपूर्वउक्तहुए सनकादिकच्यारिमहाऋषियोंकाग्रहणकरणा ॥ और (मनवस्तथा) इसवचनकरिकै स्वायंभुवआदिकचतुर्दशमनुवोंकाग्रहणकरणा इति ॥ कैसेहैंतेभृगुआदिक सर्व मद्भावाहैं ॥ तहां मैंपरमेश्वरविषेहै भाव क्या भावना जिनोंकी तिनोंकानाम मद्भावाहै ॥ अर्थात् मैंपरमेश्वरकाचिंतनरूपभावनाकेवशतैं आविर्भूतहुआहै मैंपरमेश्वरकाज्ञान तथाऐश्वर्य तथानानाप्रकारकीशक्तियां जिनोंकूं ॥ पुनःकैसेहैंतेभृगुआदिक मानसाहैं ॥ अर्थात् ब्रह्माकेमनकेसंकल्पमात्रतैंहीं उत्पन्नहुएहैं ॥ अन्यमनुष्योंकीन्यांई योनितैंउत्पन्नहुएनहीं ॥ इसीकारणतैंहीं विशुद्धजन्मवालेहोणेतैं तेभृगुआदिकसर्वप्राणीयोतैं श्रेष्ठहैं ॥ और शास्त्रविषे (योनिंविनानशरीरम्) यहजोवचनकह्याहै ॥ सो इसवचनविषे योनिशब्द स्त्रीकेयोनिकावाचकनहीहै ॥ किंतु सोयोनिशब्द कारणकावाचकहै ॥ अर्थात् कारणतैंविना शरीर उत्पन्ननहींहोवैहै इति ॥ ऐसेभृगुआदिकसप्तमहाऋषि तथासनकादिकच्यारिमहाऋषि तथास्वायंभुवादिकचतुर्दश मनु यहसर्व सृष्टिकेआदिकालविषे हिरण्यगर्भरूपमैं परमेश्वरतैंहीं उत्पन्नहोतेभयेहैं ॥ जिनभृगुआदिकसप्तऋषियोंकी तथासनकादिकच्यारिमहाऋषियोंकी तथास्वायंभुवादिकचतुर्दशमनुवोंकी इसलोकविषे जन्मकरिकै तथावियाकरिकै यहब्राह्मणादिकसर्वप्रजा संततिरूपहैइति ॥ ईहां किसीटीकाविषेतौं (लोकइमाः) इसवचनविषे लोकःयहप्रथमाविभक्तिअंतपद ग्रहणकरिकैयहअर्थकन्याहै ॥ जिनभृगुआदिकोंकीयहजरायुजादिकच्यारिप्रकारकीप्रजा तथाताप्रजाकेनिवासकाआधारभूतयहलोक दोनों संततिरूपहैं इति ॥ अथवा (येषां) यहषष्ठीविभक्ति येभ्यः इसपंचमीविभक्तिकेअर्थविषेहै ॥ यातैं यहअर्थसिद्धहोवैहै ॥ जिनभृगुआदिकोंतैं यहजरायुजादिकच्यारिप्रकारकीप्रजा तथायहलोक उत्पन्नहोताभयाहै ॥ ऐसेभृगुआदिकोंकाभीकारणरूप मैंपरमेश्वरविषे सर्वलोकोंकामहेश्वरपणाहै याकेविषेक्याकहणाहै ॥ इति ॥ ६ ॥ ❁ ॥ इसकारणतैं सोपाधिकपरमेश्वरके प्रभावकूंकथनकरिकै अब तिसप्रभावकेज्ञानकाफल कथनकरेहैं ॥

(मू० श्लो०) एतांविभूतिंयोगंचममयोवेत्तितत्त्वतः ॥ सोऽविकंपेनयोगेनयुज्यतेनात्रसंशयः ॥ ७ ॥ एताम् । विभूतिम् । योगम् । च । मम । यः । वेत्ति । तत्त्वतः । सः । अविकंपेन । योगेन युज्यते । न । अत्र । संशयः ॥ ७ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन जोपुरुष मैंपरमेश्वरके इसपूर्वउक्त विभूतिकूं तथा योगकूं यथावत् जानेहै सोपुरुष अचल योगकरिकै युक्तहोवैहै इस विषे कोईभीप्रतिबंधक नहींहै ॥ ७ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन पूर्व (बुद्धिर्ज्ञानम्) इत्यादिकतीनश्लोकोंकरिकैकथनकरीहुई जाबुद्धितैं आदिलेकेअयशपर्यंत मैंपरमेश्वरकीविभूतिहै ॥ तथा भृगुआदिक सप्तमहाऋषिरूप तथासनकादिकच्यारिमहाऋषिरूप तथास्वायंभुवादिकचतुर्दशमनुरूप जाहमारीविभूतिहै ॥ अर्थात् तिसतिस बुद्धिआदिरूपकरिकै तथातिसतिस महाऋषिआदिरूपकरिकै जामैंपरमेश्वरकीस्थितिहै ऐसी मैंपरमेश्वरकीविभूतिकूं जोअधिकारीपुरुष गुरुशास्त्रकेउपदेशतैं यथावत् जानेहै ॥ तथा जोअधिकारीपुरुष मैंपरमेश्वरकेयोगकूं यथावत् जानेहै॥ ईहां तिसतिसअर्थकेउत्पन्नकरणेकासामर्थ्यरूप जोपरमऐश्वर्यहै॥ताकानाम योगहै ऐसेपरमऐश्वर्यरूपयोगकूं जोपुरुष जानेहै॥ सोअधिकारीपुरुष चलायमानतातैं रहित योगकरिकै युक्तहोवैहै ॥ अर्थात् सोपुरुष तत्वज्ञानकीस्थिरतारूपसमाधिकरिकैयुक्तहोवैहै ॥ हेअर्जुन इसहमारी विभूतिके तथायोगके जानणेहारेपुरुषकूं तासमाधिरूपयोगकीप्राप्तिविषे कोईभीसंशयनहींहै अर्थात् कोईभीप्रतिबंधकरणेहारानहींहै इति ॥ ७ ॥ ❀ ॥ तहां परमेश्वरके जिस विभूति योग दोनोंके ज्ञानकरिकै इसअधिकारी पुरुषकूं अचलसमाधिरूपयोगकी प्राप्तिहोवैहै ॥ तिसज्ञानके स्वरूपकूं अब श्रीभगवान् च्यारि श्लोकोंकरिकै वर्णनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) अहंसर्वस्यप्रभवोमत्तःसर्वंप्रवर्त्तते ॥ इतिमत्वाभजंतेमांबुधाभावसमन्विताः ॥ ८ ॥ अहं । सर्वस्य । प्रभवः । मत्तः । सर्वं । प्रवर्त्तते । इति । मत्वा । भजंते । मां । बुधाः । भावसमन्विताः ॥ ८ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन मैंपरमेश्वरहीं सर्वजगत्के उत्पत्तिकारणहूं तथा मैंपरमेश्वरतैंहीं सर्व प्रवृत्तहोवैहैं इसप्रकारतै मानिकरिकै बुद्धिमान् जन प्रेमरूपभावकरिकैयुक्तहुए मैपरमेश्वर कूं आराधनकरेहैं ॥ ८ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन वासुदेवनामा मैंपरब्रह्महीं इससर्वजगत्के उत्पत्तिकाकारणहूं ॥ अर्थात् मैंपरमेश्वरहीं इससर्वजगत्का उपादानकारणरूपहूं तथानिमित्तकारण रूपहूं ॥ तथा इसजगत्के स्थितिनाशादिकसर्वव्यवहारभी मैंपरमेश्वरतैंहीं प्रवर्त्तहोवैहै ॥ अर्थात् सर्वशक्तिसंपन्न तथासर्वज्ञ ऐसेमैंअंतर्यामीपरमेश्वरकरिकै प्रेरणा

कन्याहुआ यह सूर्यचंद्रमादिकसर्वजगत् आपणीआपणीमर्यादाका नहींउल्लंघनकरिकै प्रवर्त्तहोवैहै ॥ अथवा प्रत्यक्साक्षीआत्मारूपमैंपरमेश्वरकीसत्तास्फूर्तिकंपाइके यहबुद्धिइंद्रियादिकसर्वप्रपंच नानाप्रकारकीचेष्टाकूंकरेहै ॥ इसप्रकारके मैंपरमेश्वरकेस्वरूपकूं जानिकरिकैविवेककरिकैजान्याहैतत्त्ववस्तुजिनोंनें ऐसेबुद्धिमान्पुरुष परमार्थतत्त्वकाग्रहणरूपप्रेमरूपभावकरिकैयुक्तहुए मैंपरमेश्वरकूं भजेहैं ॥ अर्थात् नित्य निरंतर मैंपरमेश्वरकाहीं चिंतनकरेहैं ॥ ८ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् सोआपका प्रेमपूर्वकभजन कैसाहोवैहै ॥ ऐसीअर्जुनकीजिज्ञासाकेहुए ॥ श्रीभगवान् तिसप्रेमपूर्वकभजनकास्वरूप वर्णनकरेहै ॥

(मू०श्लो०) मच्चित्तामद्गतप्राणाबोधयंतःपरस्परम् ॥ कथयंतश्चमांनित्यंतुष्यंतिचरमंतिच ॥ ९ ॥ मच्चित्ताः । मद्गतप्राणाः । बोधयंतः । परस्परं । कथयंतः । च । माम् । नित्यं । तुष्यंति । च । रमंति । च ॥ ९ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन मैंपरमेश्वरविषेहै चित्त जिनोका तथा मैंपरमेश्वरकूंप्राप्तहुएहैप्राणजिनोंके तथा परस्पर मैंपरमेश्वरकाहीं बोधनकरतेहुए तथा नित्यहीं मैंपरमेश्वरकूं कथन करतेहुए तेहमारेभक्त संतोषकूं प्राप्तहोवैहै तथा सुखकूंअनुभवकरेहैं ॥ ९ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन मैंपरमेश्वरविषेहींहैचित्तजिनोंका तिनोंकानाम मच्चित्ताहै ॥ अथवा मैंपरब्रह्महींहुंचित्तविषेजिनोंके तिनोंकानाम मच्चित्ताहै ॥ अर्थात् जेपुरुष चित्तकरिकै मैंपरमेश्वरकाही सर्वदा चिंतनकरेहैं ॥ और मैंपरमेश्वरकूं हींप्राप्तहुएहैं प्राण क्या चक्षुआदिकइंद्रिय जिनोंके तिनोंकानाम मद्गतप्राणाहै ॥ अर्थात् मैंपरमेश्वरकेवासतैहींहै चक्षुआदिकइंद्रियोंकाव्यापार जिनोंके तिनोंकानाम मद्गतप्राणाहै ॥ अथवा बाह्यविषयोंतैंनिवृत्तकरिकै ॥ मैंपरमेश्वराविषेहीं लयकरेहैं चक्षुआदिकसर्वकरणजिनोंनें तिनोंकानाम मद्गतप्राणाहै ॥ अथवामैंपरमेश्वरके भजन अर्थहै प्राण क्या जीवन जिनोंका अन्यकिसीप्रयोजनवासतै जिनोंकाजीवनहैनहीं तिनोंकानाम मद्गतप्राणाहै ॥ तथा जेपुरुष विद्वान्पुरुषोंकीसभाविषे श्रुतिवचनोंकरिकै तथाश्रुतिअनुकूलयुक्तियोंकरिकै अन्योन्य मैंपरमे श्वरकाहीं बोधनकरेहैं ॥ तथा जेपुरुष नित्यप्रति आपणेश्रद्धावान्शिष्योंकेताईं मैंपरमेश्वरकाहीं ज्ञेयरूपकरिकै तथाध्येयरूपकरिकै उपदेशकरेहैं ॥ इसप्रकार मैंपरमेश्वरविषेजोचित्तकाअर्पणहै तथाबाह्यनेत्रादिककारणोंकाअर्पणहै तथाआपणेजीवनकाअर्पणहै तथास्वसमानपुरुषोंका जोपरस्पर मैंपरमेश्वरकाबोधनहै तथा आपणेतैंन्यूनबुद्धिवालेशिष्योंकेताईं जोमैंपरमेश्वरकाउपदेशकरणाहै यहहीं मैंपरमेश्वरकाभजनहै ॥ इसप्रकारके मैंपरमेश्वरकेभजनकरिकैहीं तेविद्वान्पुरुष तोषकूं प्राप्तहुएहैं ॥ अर्थात् इस परमेश्वरकेभजनकीप्राप्तिकरिकैहीं हम कृतकृत्यहूएहैं इसभगवद्भजनतैंअन्य कोईभीपदार्थ हमारेइष्टकासाधन नहींहै इसप्रकारकेज्ञानरूप संतोषकूं प्राप्तहुएहैं ॥ तथा तिससंतोषकरिकैहीं तेविद्वान्जन सर्वतैंउत्तमसुखकूं अनुभवकरेहैं ॥ संतोषकरिकैहींउत्तमसुखकीप्राप्ति होवैहै यहवार्त्ता पतंजलिभग

वान्‌नैंभी कथनकरीहै ॥ तहांसूत्रम् ॥ (संतोषादनुत्तमःसुखलाभःइति) ॥ अर्थयह ॥ इसअधिकारीपुरुषकूं तिससंतोषतैंहीं सर्वतैंउत्तमसुखकी प्राप्तिहोवैहै इति ॥ यहवार्त्ता पुराणविषेभीकथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ (यच्चकामसुखंलोकेयच्चदिव्यंमहत्सुखम् ॥ तृष्णाक्षयसुखस्यैते नार्हतः षोडशींकलाम्) ॥ अर्थयह ॥ इस लोकविषे जितनाकी विषयजन्यसुखहै तथास्वर्गादिकलोकोंविषे जितनाकी विषयजन्यमहान्‌दिव्यसुखहै ॥ तेसर्वसुख तृष्णाकीनिवृत्तिरूपसंतोषजन्यसुखके षोडशवेंभागकेतुल्यभीनहींहोवैहै इति ॥ ९ ॥ ❋ ॥ हेअर्जुन जेअधिकारीजन इसपूर्वउक्तप्रकारतें मैंपरमेश्वरकाभजनकरेहैं ॥ तिनअधिकारीजनोंकूं मैंपरमेश्वरभी तिसबुद्धियोगकीप्राप्तिकरिके आपणेनिर्गुणस्वरूपकीहीं प्राप्तिकरूंहूं ॥ इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) तेषांसततयुक्तानांभजतांप्रीतिपूर्वकम् ॥ ददामिबुद्धियोगंतंयेनमामुपयांतिते ॥ १० ॥ तेषां । सततयुक्तानां । भजतां । प्रीतिपूर्वकम् । ददामि । बुद्धियोगं । तं । येन । माम् । उपयांति । ते ॥१०॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन मैंपरमेश्वरविषेंहैए काग्रबुद्धिजिनोंकी तथा प्रीतिपूर्वकें मैंपरमेश्वरकाभजनकरणेहारे तिनभक्त जनोंके तिसपूर्वउक्त बुद्धियोगकूं मैंपरमेश्वर उत्पन्नकरूंहूं जिसबुद्धियोगकरिके तेभक्तजन मैंपरमेश्वरकूं आपणाआत्मारूपकरिके प्राप्तहोवैहैं ॥ १० ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन पूर्व (मच्चित्तामद्गतप्राणाः) इसश्लोककरिके कथनकर्‍याजो मैंपरमेश्वरकेभजनकाप्रकारहै ॥ तिसप्रकारकरिके जेपुरुष मैंपरमेश्वरकाभजन करेहैं ॥ तथा सर्वकालविषे मैंपरमेश्वरविषेंहैएकाग्रबुद्धिजिनोंकी ॥ इसीकारणतैंहीं जेपुरुष लाभ पूजा ख्याति इत्यादिक लौकिकप्रयोजनोंकीनहीं इच्छा करतेहुए अत्यंतप्रीतिपूर्वक एकमैंपरमेश्वरकाहीं भजनकरेहैं ॥ तिनभक्तजनोंके तिसपूर्वउक्तबुद्धियोगकूं मैंपरमेश्वरहीं उत्पन्नकरूंहूं ॥ अर्थात् (सोऽविकंपेनयोगेनयुज्यते) इसवचनकरिके पूर्व कथनकर्‍याजो मैंपरमेश्वरकेवास्तवस्वरूपकूंविषयकरणेहारा सम्यक्‌दर्शनरूपबुद्धियोगहै ॥ तिसबुद्धियोगकूं मैं परमेश्वरहीं उत्पन्नकरूंहूं ॥ शंका ॥ हेभगवन् तिसबुद्धियोगकरिके तिनअधिकारीजनोंकूं कौनफलप्राप्तहोवैहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए ॥ श्रीभगवान् ताबुद्धियोगकाफल कथनकरेहै (येनमामुपयांतितेइति) हेअर्जुन जिसबुद्धियोगकरिके तेहमारेभक्तजन मैंपरमेश्वरकूंहीं आपणाआत्मारूपकरिके प्राप्तहोवैहैं ॥ अर्थात् जैसे घटरूपउपाधिके निवृत्तहुए घटाकाश अभेदरूपकरिके महाकाशकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तथा जैसेश्रीगंगायमुनादिकनदीयां आपणेआपणेनामरूपकापरित्यागकरिके समुद्रविषेअभेदभावकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तैसे तेहमारेभक्तजनभी हमारीभक्तिकरिकेउत्पन्नहुए तत्त्वसाक्षात्कारकरिके मैंपरमेश्वरकूं अभेदरूपकरिकेप्राप्तहोवैहैं ॥ अर्थात् मैंअद्वितीयनिर्गुणपरमेश्वरकूं आपणाआत्मारूपहींजानेहैं इति ॥ १० ॥ ❋ ॥ तहां आपणेभक्तजनोंकेप्रति परमेश्वरनैं प्राप्तकर्‍याजो तत्त्वज्ञानरूपबुद्धियोगहै ॥ सोबुद्धियोग जिस

अज्ञानकीनिवृत्तिरूपव्यापारवाला हुआ आनंदस्वरूपआत्माकीप्राप्तिरूपफलकी प्राप्तिकरैहै ॥ तिसमध्यवर्त्तीव्यापारकूं अब श्रीभगवान् कथनकरैहै ॥

(मू० श्लो०) तेषामेवानुकंपार्थमहमज्ञानजंतमः ॥ नाशयाम्यात्मभावस्थोज्ञानदीपेनभास्वता ॥ ११ ॥ तेषाम् । एव । अनुकं पार्थम् । अहम् । अज्ञानजम् । तमः । नाशयामि । आत्मभावस्थः । ज्ञानदीपेन । भास्वता ॥ ११ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥

हेअर्जुन तिनभक्तजनोंकेही अनुग्रहअर्थ तिनोंके आत्माकारवृत्तिविषेस्थितहुआ मैंपरब्रह्म चिदाभासयुक्त तिसँवृत्तिज्ञानरूप दीपककरिके तिनोंके अज्ञानजन्य आवरणरूपतमकूं नाशकरूंहूं ॥ ११ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन पूर्वउक्तरीतिसैं जेअधिकारीजन मैंपरमेश्वरकाभजनकरैहैं तिनभक्तजनोंकेहीं अनुकंपाअर्थ अर्थात् इनहमारेभक्तजनोंका किसीभीप्रकारक रिकै श्रेयहोवै याप्रकारकेअनुग्रहवासतै मैंस्वप्रकाश चैतन्य आनंदअद्वितीयरूप प्रत्यक्आत्मा तिनभक्तजनोंके आत्मभावविषेस्थितहुआ अर्थात् तिनभक्तज नोंकी महावाक्यतैंजन्य जाआत्माकार अंतःकरणकीवृत्तिहै तावृत्तिविषे विषयतारूपकरिकैस्थितहुआ तिसीहीं चिदाभासयुक्त अंतःकरणकी वृत्तिरूपज्ञानदीप करिकै अज्ञानजन्यतमकूं नाशकरूंहूं ॥ अर्थात् अज्ञानहैउपादानकारणजिसका ऐसाजो मिथ्याज्ञानरूप आत्माविषयक आवरणरूपअंधकारहै तिसआवरणरू पतमकूं ताकेउपादानकारणरूपअज्ञानकानाशकरिकै नाशकरूंहूं ॥ काहेतैं लोकप्रसिद्ध सर्वभ्रमस्थलविषे तिसभ्रमकाउपादानकारणजोअज्ञानहै सोअज्ञान अ धिष्ठानकेज्ञानकरिकैहीं निवृत्तहोवैहै ॥ अन्यकिंसीउपायकरिकै सोअज्ञाननिवृत्तहोवैनहीं ॥ जैसे सर्परजतादिरूपभ्रमका उपादानकारणजोअज्ञानहै ॥ सोअज्ञान रज्जुशुक्तिआदिकअधिष्ठानकेज्ञानकरिकैहीं निवृत्तहोवैहै ॥ अन्यकिसीउपायकरिकै ताअज्ञानकीनिवृत्ति होवैनहीं ॥ तथा सर्वस्थलविषे उपादानकारणकेनाश करिकै उपादेयरूपकार्यकाभी अवश्यकरिकैनाशहोवैहै ॥ जैसे मृत्तिकातंतुआदिकउपादानकारणकेनाशकरिकै उपादेयरूपघटपटादिककार्योंकाभी अवश्यकरिकैनाश होवैहै ॥ तैसे आत्माकारअंतःकरणकीवृत्तिरूपज्ञानकरिकै अज्ञानरूपउपादानकारणकेनाशहुएतैं तिसतमरूपउपादेयकानाशभी अवश्यकरिकैहोवैहै इति ॥ इहां (ज्ञानदीपेन) इसवचनकरिकै श्रीभगवान्नैं आत्मज्ञानविषे दीपककीसादृश्यतारूप रूपालंकार कथनकऱ्या ॥ तारूपालंकारकरिकै श्रीभगवान्नैं यहअर्थ सूचनकऱ्या ॥ जैसे दीपककरिकै अंधकारकीनिवृत्तिकरणेविषे केवल तिसदीपककीउत्पत्तिमात्रहीं अपेक्षितहोवैहै तिसदीपककीउत्पत्तितैंभिन्न दूसरे किसीकर्मकी अथवाअभ्यासकी अपेक्षाहोवैनहीं ॥ और तादीपककरिकै अंधकारकीनिवृत्तिहुएतैंअनंतर पूर्वविद्यमानघटादिकवस्तुवोंकीहीं अभिव्यक्तिहोवैहै ॥ पूर्वनहींउत्पन्नहुईकिसीवस्तुकीउत्पत्तिहोवैनहीं ॥ तैसे आत्मज्ञानकरिकै अज्ञानकीनिवृत्तिकरणेविषे तिसआत्मज्ञानकीउत्पत्तिमात्रहीं अपेक्षितहोवैहै ॥ तिसआ

त्मज्ञानकीउत्पत्तितैंभिन्न दूसरेकिसीकर्मकी अथवा अभ्यासकीअपेक्षाहोवैनहीं ॥ और ताआत्मज्ञानकरिके अज्ञानकीनिवृत्तितैं अनंतर पूर्वविद्यमानहुएहीं ब्रह्मभाव रूपमोक्षकीअभिव्यक्तिहोवैहे ॥ कोईपूर्वनहींउत्पन्नहुएमोक्षकी तिसआत्मज्ञानतैं उत्पत्तिहोवैनहीं ॥ जिसउत्पत्तिकरिके तिसमोक्षविषेभी स्वर्गादिकफलोंकी न्यांई नाशवत्ता अथवा कर्मादिकोंकीअपेक्षा होवै इति ॥ और (भास्वता) इसवचनकरिके श्रीभगवान्नैं यह अर्थ सूचनकऱ्या ॥ जैसे वायुतैंरहितदे शविषेस्थित प्रकाशमानदीपकविषे तीव्रपवनादिकप्रतिबंधकहोवैंनहीं ॥ तैसे मैंपरमेश्वरकीभक्तिकरिकैप्राप्तहुए आत्मज्ञानविषे असंभावनादिकदोष प्रति बंधकहोवैनहीं इति ॥ ११ ॥ ❁ ॥ इसप्रकारतैं परमेश्वरके विभूतिकूं तथायोगकूं सामान्यतैं श्रवणकरिके पुनःविशेषकरिके ताविभूतियोगकेश्रवणकर णेकी परमउत्कंठाकूंप्राप्तहुआ जोअर्जुन प्रथम श्रीभगवान्कीस्तुतिकूंकरेहे ॥

(मू० श्लो०) अर्जुनउवाच॥ परंब्रह्मपरंधामपवित्रंपरमंभवान् । पुरुषंशाश्वतंदिव्यमादिदेवमजंविभुम्॥१२॥आहुस्त्वामृषयःसर्वेदेवर्षि र्नारदस्तथा । असितोदेवलोव्यासःस्वयंचैवब्रवीषिमे ॥ १३ ॥ परं । ब्रह्म । परं । धाम । पवित्रं । परमं । भवान् । पुरुषं । शाश्वतं । दिव्यम् । आदिदेवम् । अजं । विभुम् । आहुः । त्वाम् । ऋषयः । सर्वे । देवर्षिः । नारदः । तथा । असितः । देवलः । व्यासः । स्वयं । च । एव । ब्रवीषि । मे ॥ १२ ॥ १३ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेभगवन् पर ब्रह्म तथा परम धाम तथापरम पवित्र आपहींहो जिसकारणतैं भृगुआदिकसर्व ऋषि तथा देवर्षि नारद तथाअसित तथादेवल तथाव्यास यहसर्व हमारेताई तुमारेकूं पुरुष शाश्वत दिव्य आदिदेव अज विभु रूप कथनकरेहैं तथा साक्षात्आप हीं कथनकरते हो ॥ १२ ॥ १३ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेभगवन् आप परब्रह्मरूपहो ॥ अर्थात् तत्त्ववेत्तापुरुषोंकूंप्राप्तहोणेयोग्य जोसर्वउपाधियोंतैंरहित निर्विशेषब्रह्महै सोआपहींहो ॥ ईहां (परम्) इस विशेषणकरिके उपासनाकरणेयोग्य सोपाधिकअपरब्रह्मकीव्यावृत्तिकथनकरीहे ॥ काहेतैं (तदेवब्रह्मत्वंविद्धिनेदंयदिदमुपासते) यहश्रुति उपासनाकरणेयोग्य सो पाधिकअपरब्रह्मका निषेधकरिके निर्विशेषचैतन्यकूंहीं ब्रह्मकहेहे ॥ पुनःकैसेहोआप परंधामहो ॥ अर्थात् स्थूलतैंआदिलेकेअव्याकृतपर्यंत सर्वप्रपंचकाआश्र यरूपहो ॥ अथवा परमप्रकाशरूपहो ॥ ईहांभी (परम्) इसविशेषणकरिकै वृत्तिरूपअपरप्रकाशकीव्यावृत्ति कथनकरीहे ॥ काहेतैं (ह्रीर्धीर्भीरित्येतत्सर्वंमनएव) यहश्रुति तिसवृत्तिरूपज्ञानकूं मनकाहींपरिणामविशेष कथनकरेहे ॥ पुनःकैसेहोआप परमपवित्रहो ॥ अर्थात् लोकशास्त्रविषेप्रसिद्ध जितनैंकीपावनकरणेहारे तीर्थादिकहैं ॥ तिनसर्वोंतैं आप परम उत्तम पावनकरणेहारेहो ॥ काहेतैं श्रद्धापूर्वककऱ्येहुए तेतीर्थादिक इसपुरुषके केवलपापकर्मकूंहीं नाशकरेहैं ॥ तिनपापकर्मोंके

कारणरूपअज्ञानकूं नाशकरतेनहीं ॥ और आपपरब्रह्मतौं इनअधिकारीपुरुषोंकेवृत्तिविषेआरूढहोइकै अज्ञानरूपकारणसहित सर्वपापकर्मौंकूंनाशकरोहो ॥ याका रणतैंहीं (पवित्राणांपवित्रंयोमंगलानांचमंगलम्) इत्यादिकस्मृतिवचन आपकूं पवित्रकरणेहारेतीर्थादिकसर्वपवित्रोंकाभी पवित्रकरणेहारा कथनकरेहैं। तथा सर्व मंगलोंकाभी मंगलरूप कथनकरेहैं ॥ शंका ॥ हेअर्जुन ऐसाहमारास्वरूप तुमनैं केवल आपणीबुद्धिकरिकै निश्चयकऱ्याहै॥अथवा किसीप्रमाणतैं निश्चयकऱ्याहै ॥ ऐसीभगवान्‌कीशंकाकेहुए ॥ अर्जुन तिसउक्तस्वरूपविषे परमआप्तरूपऋषियोंके तथासाक्षात्श्रीभगवान्‌के वचनरूपप्रमाणकूंकथनकरेहै (पुरुषंशाश्वतम्) इत्या दिकसार्द्धश्लोककरिकै ॥ हेभगवन् ज्ञाननिष्ठावाले जेभृगुवसिष्ठादिकसर्वऋषिहैं ॥ तथा देवऋषिजोनारदहै ॥ तथा असितऋषिजोहै ॥ तथा देवलऋषिजोहै ॥ तथा साक्षात्विष्णुकाअवताररूपजोव्यासमुनिहै ॥ यहसर्वऋषिभी हमारेतांई इसीप्रकारके तुमारेस्वरूपकूं कथनकरतेभयेहैं ॥ तेभृगुआदिकसर्वऋषि किसप्रकारकेहमारे स्वरूपकूं कथनकरतेभयेहैं ॥ ऐसीश्रीभगवान्‌कीशंकाकेहुए अर्जुनकहेहै (पुरुषमिति) हेभगवन् तेभृगुआदिकसर्वऋषिभी अनंतमहिमावालेआपपरमेश्वरकूं पुरुषक हेहैं ॥ अर्थात् (पुरुषान्नपरंकिंचित्साकाष्ठासापरागतिः) इसश्रुतिविषे पुरुषशब्दकरिकै कथनकऱ्याजो निर्विशेषपरब्रह्महै तिसपरब्रह्मरूप आपकूं कथनकरेहैं ॥ तथा तेऋषि आपकूं शाश्वत कहेहैं अर्थात् भूत भविष्यत् वर्तमान सर्वकालविषे एकरूप कहेहैं ॥ तथा तेऋषि आपकूं दिव्य कहेहैं ॥ तहां (परमेव्योमन्‌सर्वा भूतानि) इसश्रुतिविषे परमव्योमशब्दकरिकैकथनकऱ्याजो स्वस्वरूपहै तास्वस्वरूपकानाम दिवहै तादिवविषेजोविराजमानहोवै ताकानाम दिव्यहै ॥ ऐसेदिव्यरू प आपकूं कहेहैं ॥ अर्थात् सर्वप्रपंचतैंरहितकहेहैं ॥ तथा तेऋषि आपकूं आदिदेव कहेहैं ॥ ईहां सर्वजगत्‌केकारणकानाम आदिहै और स्वप्रकाशकानाम देवहै ॥ जो आदिहोवे तथादेवहोवै ताकानाम आदिदेवहै ॥ अर्थात् तेऋषि आपकूं सर्वजगत्‌काकारणरूप तथास्वप्रकाशरूप कहेहैं ॥ ईहां कारणकीस्वप्रका शताकहणेतैं नैयायिकोंनैंकल्पनाकऱ्येहुए परमाणुरूपकारणकी तथा सांख्यीयोंनैंकल्पनाकऱ्येहुए प्रधानरूपकारणकी व्यावृत्तिकरी ॥ तेप्रधानपरमाणुआदिसर्व जडहोणेतैं परप्रकाशहींहैं ॥ तथा तेऋषि आपकूं अज कहेहैं अर्थात् जन्मतैंरहित कहेहैं ॥ तथा तेऋषि आपकूं विभु कहेहैं ॥ अर्थात् सर्वत्रव्यापककहेहैं ॥ हेभगवन् केवल तेभृगुआदिकऋषिहीं हमारेतांई इसप्रकारकेतुमारेस्वरूपकूं नहींकथनकरेहैं ॥ किंतु जिसआपपरमेश्वरकेवेदरूपवचनोंकेअनुसारीहुएहीं तिनभृगुआदि कऋषियोंकेवचन प्रमाणरूपहोवैहै ॥ ऐसेसाक्षात्आपभगवान्‌हीं हमारेतांई (भोक्तारंयज्ञतपसां सर्वभूतस्थितंयोमाम्) इत्यादिकवचनोंकरिकै इसीप्रकारकेआपके स्वरूपकूंकथनकरतेभयेहो इति ॥ ईहां यद्यपि (आहुस्त्वामृषयःसर्वे) इसवचनविषेस्थितजो सर्व यहशब्दहै ॥ तासर्वशब्दकरिकैहीं तिननारदादिकसर्वऋषि योंकाग्रहणहोइसकेहै तथापि नारद असित देवल श्रीव्यास इनचारोंकाजो अर्जुननैं नामलेके पृथक्‌ग्रहणकऱ्याहै ॥ सो साक्षात् परमेश्वरकेस्वरूपकेवक्तापणेकरिकै

तिननारदादिकोंकीअत्यंत श्रेष्ठताकेबोधनकरणेवास्तैंहै इति ॥ और (आहुस्त्वामृषयःसर्वे) इसवचनकरिकै जो अर्जुननैं आपणेनिश्चयविषे ऋषियोंकेवचनोंकी संमति कथनकरीहै ॥ ताकरिकैयहअर्थ सूचनकऱ्याहै ॥ इनअधिकारीपुरुषोंनैं शास्त्रद्वारा आपणीबुद्धिकरिकै निश्चयकऱ्याहुआभी आत्माकास्वरूप ताकेविषे पुनःसंशयकी अनुत्पत्तिवास्तै ब्रह्मवेत्ताविद्वान्पुरुषोंकीसंमति अवश्यकरिकै ग्रहणकरणी इति ॥ १२ ॥ १३ ॥ ❀ ॥ तहां गुरुशास्त्रउपदिष्टअर्थविषे इस अधिकारीपुरुषनैंकदाचित्‌भी संशयनहींकरणा ॥ किंतु सो गुरुशास्त्रनैं उपदेशकऱ्याहुआ सर्वअर्थ सत्यहै याप्रकारकीसत्यत्वबुद्धिहींकरणी ॥ इसअर्थकूंसूचनकरताहुआ सोअर्जुन तिनवचनोंविषे आपणेसत्यत्वबुद्धिकूं कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) सर्वमेतदृतंमन्येयन्मांवदसिकेशव ॥ नहितेभगवन्व्यक्तिंविदुर्देवानदानवाः ॥ १४ ॥ सर्वम् । एतत् । ऋतम् । मन्ये । यत् । माम् । वदसि । केशव । न । हि । ते । भगवन् । व्यक्तिं । विदुः । देवाः । न । दानवाः ॥ १४ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥

हेकेशव मैंअर्जुनकेप्रति जोवचन आप कथनकरतेहो यह सर्ववचन मैं सत्य मानताहूं जिसकारणतैं हेभगवन् तुमारे प्रभावकूं देवताभी नहीं जानतेहैं तथा दानवभी नहीं जानतेहैं ॥ १४ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेकेशव मैंअर्जुनकेप्रति जोपूर्वआपनैं आपकास्वरूप कथनकऱ्या ॥ तथा भृगुआदिकसर्वऋषियोंनैं जोआपकास्वरूप कथनकऱ्याहै ॥ तिनसर्व वचनोंकूं मैंअर्जुन सत्यहींमानताहूं ॥ हेभगवन् तुमारेवचनोंविषे हमारेकूं किंचित्‌मात्रभी अप्रमाणपणेकीशंकानहींहै ॥ इसहमारेहृदयकीवार्त्ताकूं सर्वज्ञहोणेतैं आप जानतेहींहो ॥ यहअर्थ अर्जुननें केशव इससंबोधनकरिकैसूचनकऱ्या ॥ तहां (केशौवातिअनुकंप्यतयाअवगच्छतीतिकेशवः) ॥ अर्थयह ॥ क नाम ब्रह्माकाहै और ईश नामरुद्रकाहै तिनदोनोंकूं अनुग्रहकरिकैजोप्राप्तहोवै ताकानाम केशवहै ॥ इसप्रकारकीव्युत्पत्तिकूंअंगीकारकरिकै सोकेशवशब्द निरतिशयऐश्वर्यकाहीं प्रतिपादकहै ॥ ऐसेकेशवनामवाले आपपरमेश्वर हमारेहृदयकेवृत्तांतकूंजानतेहींहो इति ॥ यातैं हेभगवन् जोपूर्व आपनैं (नमेविदुःसुरगणाः प्रभवंनमहर्षयः) इत्यादिकवचन कथनकऱ्येथे ॥ तेसर्व आपकेवचन यथार्थहींहै ॥ हेभगवन् अर्थात् हेसमग्रऐश्वर्यादिकषट्‌भगसंपन्न ॥ तुमारेप्रभावकूं बहुत बुद्धिमान् इंद्रादिकदेवताभी जानिसकतेनहीं ॥ तथा तुमारेप्रभावकूं मधुआदिकदानवभी जानिसकतेनहीं ॥ तथा तुमारेप्रभावकूं भृगुआदिकमहान्ऋषिभी जानिसकतेनहीं ॥ जबी तिस तुमारेप्रभावकूं सर्वज्ञ इंद्रादिकदेवता तथामधुआदिकदानव तथाभृगुआदिकमहान्ऋषिभी नहींजानिसकते ॥ तबी इदानीं कालकेअल्पज्ञमनुष्य तिस आपकेप्रभावकूं नहींजानेहैं याकेविषेक्याकहणाहै इति ॥ १४ ॥ ❀ ॥ हेभगवन् जिसकारणतैं आपपरमेश्वर तिनदेवता

ऋषिआदिकसर्वोंकाआदिकारणहो ॥ तथा तिनदेवतावोंकरिकैभी जानणेकूंअशक्यहो ॥ तिसकारणतैं तुमआपहीं आपकेप्रभावकूं यथावत्‌जानतेहो ॥ इसअर्थकूं अब अर्जुन कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) स्वयमेवात्मनात्मानंवेत्थत्वंपुरुषोत्तम ॥ भूतभावनभूतेशदेवदेवजगत्पते ॥ १९ ॥ स्वयम् । एव । आत्मना । आत्मानम् । वेत्थ । त्वम् । पुरुषोत्तम । भूतभावन । भूतेश । देवदेव । जगत्पते ॥ १९ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेपुरुषोत्तम हेभूतभावन हेभूतेश हेदेवदेव हेजगत्पति श्रीभगवान् अन्यकेउपदेशतैंविनाहीं तूं आपणेस्वरूपकरिकै आपणेआत्माकूं जानताहैं॥१९॥(इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेभगवन् अन्यकिसीकेउपदेशतैंविनाहीं तूं आपहीं आपणेस्वप्रकाशस्वरूपकरिकै आपणेनिरुपाधिकस्वरूपकूं तथासोपाधिकस्वरूपकूं जानताहैं ॥ तहां आपणेनिरुपाधिकशुद्धस्वरूपकूंतौं प्रत्यक्‌रूपकरिकै तथाअविषयतारूपकरिकै जानताहै ॥ और आपणेसोपाधिकस्वरूपकूंतौं निरतिशयज्ञानऐश्वर्यादिकशक्तिमत्‌रूपकरिकै जानताहैं ॥ अन्यकोई देवता वाऋषि वादानव मनुष्य तिसतुमारेस्वरूपकूं जानतानहीं ॥ शंका ॥ हेअर्जुन अन्यदेवतादिकोंकरिकै जानणेकूं अशक्यस्वरूपकूं मैंपरमेश्वरभी कैसेजानूंगा ॥ ऐसीभगवान्‌कीशंकाकूं निवृत्तकरताहुआ अर्जुन अत्यंतप्रेमकीउत्कंठाकरिकै श्रीभगवान्‌के बहुतसंबोधनोंकूं कथनकरेहै (हेपुरुषोत्तम) अर्थात् हेसर्वपुरुषोंविषेश्रेष्ठ ॥ तात्पर्ययह ॥ तुमारीअपेक्षाकरिकै दूसरेसर्वपुरुष अपकृष्टहींहै॥ यातैं तिनदूसरेपुरुषोंकूं जोअर्थजानणेकूं अशक्यहै ॥ सोअर्थ सर्वतैंउत्तम तैंपरमेश्वरकूं जानणेकूंशक्यहींहैं इति ॥ अब परमेश्वरविषेकथनकऱ्याजोपुरुषोत्तमपणाहै तिसपुरुषोत्तमपणेकूं पुनःच्यारिसंबोधन करिकै प्रतिपादनकरेहैं (हेभूतभावनइति) तहां सर्वभूतोंकूं जो उत्पन्नकरेहै ताकानाम भूतभावनहै ॥ अर्थात् हेसर्वभूतोंकेपिता ॥ तहां इसलोकविषे कोईक पुरुष पिताहुआभी पुत्रादिकोंकानियंताहोतानहीं ॥ तैसेपरमेश्वरभी तिनसर्वभूतोंकापिताहुआभी तिनसर्वभूतोंका नियंतानहींहोवैंगा ॥ किंतु तापरमेश्वरतौं भिन्नहीं कोई तिनभूतोंकानियंताहोवैंगा ॥ ऐसीशंकाकेनिवृत्तकरणेवासतै अर्जुन तापरमेश्वरका अन्यसंबोधन कहेहै (हेभूतेशइति) अर्थात् हेसर्वभूतोंके नियंता ॥ तहां इसलोकविषे कोईकराजादिकपुरुष आपणीप्रजादिकोंकेनियंताहुएभी तिनप्रजादिकोंकरिकै आराधन करणेयोग्यहोतेनहीं ॥ तैसे सोपरमेश्वरभी तिनसर्व भूतोंका नियंताहुआभी तिनसर्वभूतोंकरिकै आराधनकरणेयोग्यनहीं होवैंगा ॥ किंतु तापरमेश्वरतैं भिन्नहींकोई आराधनकरणेयोग्यहोवैंगा ॥ ऐसीशकाके निवृत्तकरणे वासतैं अर्जुन तापरमेश्वरका अन्यसंबोधनकरेहै (हेदेवदेवइति) तहां सर्वप्राणीयोंकरिकै आराधन करणेयोग्य जेइंद्रादिकदेवताहैं तिनइंद्रादिकदेवतावोंकरिकैभी जोआराधनकऱ्याजावैहै ताकानाम देवदेवहै ॥ अर्थात् हेदेवतावोंतैं आदिलेकेसर्वप्राणीयोंकरिकै आराधन करणेयोग्य ॥ तहां इसलोकविषे कोईक पुरुष

आराधनकरणेयोग्यहुआ भी पालनकर्त्तारूपकरिकै पतिहोतानहीं ॥ तैसे सोपरमेश्वरभी आराधनकरणेयोग्यहुआभी पालनकर्त्तारूपकरिकै पतिनहीं होवैंगा ॥ किंतु तिसपरमेश्वरतैंभिन्नहींकोई इसजगत्‌कापतिहोवैंगा॥ऐसीशंकाके निवृत्तकरणेवासतै अर्जुन तिसपरमेश्वरका अन्यसंबोधन कहेहै (हेजगत्पतेइति) अर्थात् अधिकारीजनोंकेप्रति हितकाउपदेशकरिकै शुभकर्मोंविषे प्रवृत्तकरणेहारा तथाअहितकाउपदेशकरिकै अशुभकर्मोंतैंनिवृत्तकरणेहारा ऐसाजोदेवहै तादेवकूं सृष्टिकेआदिकालविषे उत्पन्नकरिकै आपहीं इससर्वजगत्‌कूंपालनकरतेहो ॥ यातैंयहअर्थसिद्धभया ॥ इसप्रकारकेसर्वविशेषणोंकरिकै विशिष्ट आपपरमेश्वरहीं सर्वप्राणीयोंकेपिताहो ॥ तथासर्वप्राणीयोंकेगुरुहो तथासर्वप्राणीयोंकेराजाहो ॥ इसकारणतैंहीं आपसर्वप्रकारकरिकै सर्व प्राणीयोंकूंआराधनकरणेयोग्यहो ॥ ऐसेमहान्‌प्रभाववालेआपविषे पुरुषोत्तम पणाहै याकेविषेक्याकहणाहै इति ॥१५॥ ❀ ॥ हेभगवन् जिसकारणतैं आपपरमेश्वरकी विभूतियोंकूं अन्यकोई भी देवता वाऋषि वादानव वामनुष्यजानिसकतानहीं ॥ और तेआपकी विभूतियां हमारेकूं अवश्यकरिकै जानीयांचाहिये ॥ तिसकारणतैं तेआपकीविभूतियां आपहीं हमारेप्रति विस्तारतैंकथनकरो इसप्रकारकीप्रार्थना अर्जुनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) वक्तुमर्हस्यशेषेणदिव्याह्यात्मविभूतयः। याभिर्विभूतिभिर्लोकानिमांस्त्वंव्याप्यतिष्ठसि ॥१६॥ वक्तुम्[१२]। अर्हसि[१३]। अशेषेण। दिव्याः। हि। आत्मविभूतयः[११]। याभिः। विभूतिभिः। लोकान्। इमान्। त्वम्। व्याप्य। तिष्ठसि ॥ १६ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥

हेभगवन् जिन विभूतियोंकरिकै इन सर्वलोकोंकूं व्याप्यकरिकै तुम स्थितहो तेविभूतियां जिसकारणतैंदिव्यहैं तिसकारणतैं आपहीं तेसमग्र आपणीविभूतियां[११] कहणेकूं[१२] योग्यहो[१३] ॥ १६ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेभगवन् जिन आपणीविभूतियोंकरिकै आप इसमनुष्यलोकतैं आदिलैकेब्रह्मलोकपर्यंत सर्वलोकोंकूंव्याप्तकरिकै स्थितहो ॥ तेआपकी असाधारण विभूतियां जिसकारणतैं दिव्यहैं ॥ अर्थात् अस्मदादिकअसर्वज्ञपुरुषोंनैं आपेहीं जानणेकूंअशक्यहैं ॥ तथा अवश्यकरिकै जानीयांचहीये ॥ तिसकारणतैं आप सर्वज्ञहीं तेआपणीसमग्रविभूतियां कहणेकूंयोग्यहो इति ॥ १६ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेअर्जुन लोकविषे प्रयोजनतैंविना किसीभीचेतन प्राणीकी प्रवृत्तिहोतीनहीं ॥ किंतु किसीप्रयोजनकाउद्देशकरिकैहीं सर्वप्राणीयोंकी प्रवृत्तिहोवैहै ॥ यातैं तिनविभूतियोंकेजानणेकरिकै तुमारा जोप्रयोजन सिद्धहोताहोवै ॥ सोआपणा प्रयोजन तूं प्रथम हमारेप्रति कथनकर ॥ पश्चात् मैं तुमारेतांई तेंआपणीविभूतियां कथनकरौंगा ॥ ऐसीश्रीभगवान्‌कीशंकाकेहुए ॥ अर्जुन दोश्लोकोंकरिकै ताआपणेप्रयोजनकूं कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) कथंविद्यामहंयोगिंस्त्वांसदापरिचिंतयन् ॥ केषुकेषुचभावेषुचिंत्योसिभगवन्मया ॥ १७ ॥ कथम् । विद्याम् । अहं । योगिन् । त्वाम् । सदा । परिचिंतयन् । केषुं । केषुं । च । भावेषु । चिंत्यः । असि । भगवन् । मया ॥ १७ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥

हेयोगिन् मैंस्थूलबुद्धिवालाअर्जुन सर्वदा तुमाराध्यानकरताहुआ तुमारेकूं किसप्रकारतें जानउ हेभगवन् किनं किनं वस्तुवोंविषे मैंअर्जुननैं तूंपरमेश्वर चिंतनकरणेयोग्यहैं ॥ १७ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेयोगिन् ईहां निरतिशयऐश्वर्यादिकशक्तिकानाम योगहै ॥ सोयोग जिसविषेविद्यमानहोवै ताकानाम योगिन्है ॥ अर्थात् हेनिरतिशयऐश्वर्यादिक शक्तिवाला कृष्णभगवान् ॥ अत्यंतस्थूलबुद्धिवाला मैंअर्जुन सर्वकालविषे तुमाराध्यानकरताहुआ देवादिकोंकरिकैभी जानणेकूं अशक्य तैंपरमेश्वरकूं किसप्रकारतैं जानउ ॥ शंका ॥ हेअर्जुन हमारीविभूतियोंविषे मैंपरमेश्वरकूं ध्यानकरताहुआ तूं मैंपरमेश्वरकूं जानैंगा ॥ यहहीं हमारेजानणेकाप्रकारहै ॥ ऐसीश्रीभगवान्की शंकाकेहुए ॥ जिनविभूतियोंविषेस्थितआपका ध्यानकरताहुआ मैं आपकूंजानूंगा ॥ तिनविभूतियोंकूंहीं मैं प्रथम जानतानहीं ॥ इसप्रकारकेउत्तरकूं अर्जुन कथनकरेहै (केषुकेषुचभावेषुइति) हेभगवन् तुमारीविभूतिरूप किनकिन चेतनअचेतनरूपवस्तुवोंविषे मैं अर्जुन करिकै आप चिंतनकरणेयोग्यहो ॥ अर्थात् किनकिनविभूतियोंविषे मैंअर्जुन आपकाचिंतनकरूं इति ॥ १७ ॥ ❀ ॥ हेभगवन् जिनजिनविभूतियोंविषे आपचिंतनकरणेयोग्यहो ॥ तिनविभूतियोंकूं मैं अर्जुन जानतानहीं ॥ इसकारणतैं आपहीं कृपाकरिकै तिनआपणेविभूतियोंकूं कथनकरो ॥ इसप्रकारकीप्रार्थना अर्जुन करेहै ॥

(मू० श्लो०) विस्तरेणात्मनोयोगंविभूतिंचजनार्दन ॥ भूयःकथयतृप्तिर्हिशृण्वतोनास्तिमेऽमृतम् ॥ १८ ॥ विस्तरेण । आत्मनः । योगं । विभूतिं । च । जनार्दन । भूयः । कथय । तृप्तिः । हिं । शृण्वतः । नं । अस्ति । मे । अमृतम् ॥ १८ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥

हेजनार्दन आप आपणे योगकूं तथा विभूतिकूं पुनः विस्तारकरिकै कथनकरो जिसकारणतैं तुमारेवचनरूप अमृतकूं श्रवणकरिकै पानकरतेहुए मैंअर्जुनकी तृप्ति नहीं होवैहै ॥ १८ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेजनार्दन सर्वज्ञपणा तथासर्वशक्तिसंपन्नपणा इत्यादिकऐश्वर्यतारूपजोयोगहै ॥ तथा अधिकारीजनोंके ध्यानकाआलंबनरूपजाविभूतिहै ॥ ऐसे आपणेयोगकूं तथाविभूतिकूं आप पुनः विस्तारकरिकै कथनकरो ॥ यद्यपि तिसआपणेयोगकूं तथाविभूतिकूं आप पूर्व सप्तमअध्यायविषे तथानवमअध्याय विषे संक्षेपतैंकथनकरिआयेहो ॥ तथापि अवी तिसयोगकूं तथाविभूतिकूं विस्तारकरिकैकथनकरो ॥ यहअर्थ अर्जुननैं (भूयः) इसशब्दकेकहणेकरिकैसूचन

कऱ्या ॥ और (हेजनार्दन) इससंबोधनकेकहणेकरिकै अर्जुननैं श्रीभगवान्केप्रति यहअर्थ सूचनकऱ्या ॥ सर्वजनोंनैं स्वर्गादिकसुखोंकीप्राप्तिवासतै तथामो क्षकीप्राप्तिवासतै जिसकेप्रति याचनाकरीतीहै ताकानाम जनार्दनहै ॥ ऐसेआपजनार्दनकेआगे यहहमारीयाचनाभी उचितहै इति ॥ शंका ॥ हेअर्जुन पूर्वक थनकऱ्येहुएअर्थके पुनःकथनकरणेकीयाचना तूं किसवासतैकरताहैं ॥ पूर्वकथनकऱ्येहुएअर्थकापुनःकथनकरणा पीस्येहुएअन्नकूंपुनः पसिणेकीन्यांई संभवता नहीं ऐसीश्रीभगवान्कीशंकाकेहुए ॥ अर्जुन तापुनःकथनकरणेकीयाचनाविषे कारणकूंकहेहै (तृप्तिर्हिशृण्वतोनास्तिमेऽमृतममिति) हेभगवन् जिसकारणतैं अमृतकी न्यांई पदपदविषेस्वादुस्वादु ऐसेजेआपकेवचनहै ऐसेआपकेअमृतमयवचनोंकूं श्रवणइंद्रियरूपमुखकरिकै पानकरतेहुए मैंअर्जुनकी तृप्तिहोतीनहीं ॥ अर्थात् इनवचनोंकूंश्रवणकारिकै अबीमैं तृप्तहुआहुं याप्रकारकीअलंबुद्धिकरिकै तिनवचनोंकेश्रवणविषयक हमारीइच्छानिवृत्तहोतीनहीं ॥ तिसकारणतैं तिसआपणेयो गकूं तथाविभूतिकूं पुनःहमारेप्रति विस्तारतैंकथनकरो इति ॥ १८ ॥ ❀ ॥ अब इसपूर्वउक्तअर्जुनकेप्रश्नकाउत्तर श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

(मू॰श्लो॰) श्रीभगवानुवाच ॥ हंततेकथयिष्यामिदिव्याह्यात्मविभूतयः ॥ प्राधान्यतःकुरुश्रेष्ठनास्त्यंतोविस्तरस्यमे ॥ १९ ॥
हंत । ते । कथयिष्यामि । दिव्याः । हि । आत्मविभूतयः । प्राधान्यतः । कुरुश्रेष्ठ । न । अस्ति । अंतः । विस्तरस्य । मे ।
॥ १९ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेकुरुवंशविषेश्रेष्ठअर्जुन मैं अबी तुमारेतांई प्रसिद्ध तथादिव्यं आपणीविभूतियां प्रधानताकरिकै कथनकरताहूं जिसकारणतैं मैंपरमेश्वरकीविभूतियोंके विस्तारका कोईपार नहीं है ॥ १९ ॥(इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ ईहां (हंत) यहशब्द इदानींकालकावाचकहै ॥ अर्थात् अबीहीं तेविभूतियां मैं तुमारेतांई कहताहूं ॥ अथवा हंत यहशब्द अनुमतिकावाचकहै ॥ अर्थात् मैंपरमेश्वरकेआगे तुमनैं जिसअर्थकेजानणेकीप्रार्थनाकरीहै ॥ सोअर्थअवश्यकरिकै तुमारेतांई कथनकरूंगा ॥ तूं व्याकुलमतहोउ ॥ इसप्रकार अर्जुनकूं धैर्यदेकरिकै श्रीभगवान् तिसअर्थकेकथनकरणेका प्रारंभकरेहै ॥ हेअर्जुन मैंपरमेश्वरकी जेअसाधारणविभूतियां दिव्यरूपकरिकै प्रसिद्धहैं ॥ तेआपणीविभूतियां मैंपरमेश्वर तैंअर्जुनकेतांई प्रधानताकरिकै कथनकरताहूं ॥ अर्थात्आपणीप्रधानप्रधानविभूतियोंकूं मैंकथनकरताहूं ॥ शंका ॥ हेभगवन्जितनीआपकी प्रधानरूप तथाअप्रधानरूप विभूतियांहै॥तेसर्वहींविभूतियां आप हमारेतांई कथनकरो ॥ केवल प्रधानप्रधानविभूतियोंकूं किसवासतैकथनकरतेहो ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् तिनआपणेविभूतियोंकीअनंतताकूं कथनकरेहै (नास्त्यंतोविस्तरस्यमेइति) हेअर्जुन मैंपरमेश्वरकी जितनीकी प्रधानरूप तथाअप्रधानरूप सर्वविभूतियांहै॥ तेसर्वविभूतियां कथनकरणेकूंअशक्यहैं ॥ जिसकारणतैं मैंपरमेश्वरके तिनविभूतियोंकेविस्तारका कोईअंतनहींहै ॥ अर्थात् सर्वविभूतियां इतनीहै याप्रकारकी

इयत्तासंख्यातैंरहितहैं ॥ तिसकारणतैं प्रधानप्रधानभूत कोईककविभूतियांहीं मैंतुमारेतांई कथनकरताहूं इति ॥ १९ ॥ ❀ ॥ तहां तिनप्रधानप्रधानविभूतियों विषेभी जोप्रथम मुख्यवस्तु चिंतनकरणेयोग्यहै ॥ तिसकूं तूं श्रवणकर ॥

(मू० श्लो०) अहमात्मागुडाकेशसर्वभूताशयास्थितः ॥ अहमादिश्चमध्यंचभूतानामंतएवच ॥ २० ॥ अहम्। आत्मा। गुडाकेश। सर्वभूताशयस्थितः। अहम्। आदिः। च। मध्यं। च। भूतानाम्। अंतः। एव। च ॥२०॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेगुडाकेशअर्जुन सर्वभूतोंकेहृदयदेशविषेस्थित चैतन्यआनंदघन मैंहींहूं तथा मैंपरमेश्वरहीं सर्वभूतोंका उत्पत्तिहूं तथा स्थितिहूं तथा विनाशहूं ॥ २० ॥ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेगुडाकेशअर्जुन सर्वप्राणीयोंकेहृदयदेशविषे अंतर्यामिरूपकरिकै तथाप्रत्यक्आत्मारूपकरिकै स्थितजोचैतन्यस्वरूप आनंदघन परमात्मादेवहै ॥ सो परमात्मावासुदेव मैंहींहूं ॥ इसप्रकारतैं अभेदरूपकरिकै तुमनैं मैंपरमेश्वरकाध्यानकरणा ॥ ईहां (हेगुडाकेश) इससंबोधनकरिकै श्रीभगवान्नैं यहअर्थसूचनकऱ्या ॥ गुडाकानाम निद्राकाहै ॥ तानिद्राकूं जोआपणेवशकरैहै ताकानाम गुडाकेशहै ॥ ऐसा निद्रादिकविकारोंकूं आपणेवशकरणेहारा तूंअर्जुन अभेदरूपकरिकैमैंपरमेश्वरकेध्यानकरणेविषेसमर्थहैं इति ॥ इतनैंकरिकै उत्तमअधिकारीपुरुषोंकेध्यानकाप्रकार कथनकऱ्या ॥ अब मध्यमअधिकारीपुरुषोंकेध्यानकाप्रकार निरूपणैंकरहै (अहमादिःइति) हेअर्जुन इसप्रकारतैं अभेदरूपकरिकै मैंपरमेश्वरकेध्यानकरणेविषे जोतूं समर्थनहींहोवैं ॥ तौं आगेकथनकरणेयोग्यध्यान तुमारेकूं करणेयोग्यहै ॥ तिनवक्ष्यमाणध्यानोंविषेभी प्रथम जोवस्तु ध्यानकरणेयोग्यहै तिसकूं श्रीभगवान् कथनकरैहै (अहमादिःइति) हेअर्जुन लोकविषे चेतनरूपकरिकैप्रसिद्ध जितनैंकीप्राणीहैं ॥ तिनसर्वप्राणीयोंका मैं परमेश्वरहीं उत्पत्तिहूं ॥ तथा मैंपरमेश्वरहीं तिनसर्वप्राणीयोंकी स्थितिहूं ॥ तथा मैंपरमेश्वरहीं तिनसर्वप्राणीयोंकाविनाशहूं ॥ अर्थात् तिनसर्वप्राणीयोंकी उत्पत्तिस्थितिनाशरूपकरिकै तथातिनसर्वप्राणीयोंका कारणरूपकरिकै मैंपरमेश्वरहीं तुमारेकूं ध्यानकरणेयोग्यहूं ॥ इतनैंकरिकै मध्यमअधिकारीपुरुषोंकेध्यानकाप्रकार कथनकऱ्या इति ॥ २० ॥ ❀ ॥ हेअर्जुन इसप्रकारकेध्यानकरणेविषेभी जोतूं समर्थनहींहोवैं ॥ तौं आगेकथनकरणेयोग्य बाह्यध्यानहीं तुमारेकूं करणेयोग्यहै ॥ इसप्रकारकेअभिप्रायकरिकै श्रीभगवान् मंदअधिकारी पुरुषोंऊपरि अनुग्रहकरिकै तिनबाह्यध्यानोंकूं इसदशमअध्यायकीसमाप्तिपर्यंत विस्तारतैं कथनकरैहै ॥

(मू० श्लो०) आदित्यानामहंविष्णुर्ज्योतिषांरविरंशुमान् ॥ मरीचिर्मरुतामस्मिनक्षत्राणामहंशशी ॥ २१ ॥ आदित्यानाम्। अहं।

विष्णुः । ज्योतिषां । रविः । अंशुमान् । मरीचिः । मरुताम् । अस्मि । नक्षत्राणाम् । अहं । शशी॥२१॥ (इतिपदच्छेदः)॥ हेअर्जुन आदित्योंकेमध्यमै विष्णुनामाआदित्य मैंपरमेश्वर हूं तथा प्रकाशकोंकेमध्यमै व्यापकप्रकाशवाला रवि मैंहूं तथा मरुद्गणोंके मध्यमै मरीचिनामामरुत् मैंहूं तथा नक्षत्रोंकेमध्यमै चंद्रमा मैंहूं ॥ २१ ॥ (इतिपदार्थः)॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन द्वादशआदित्योंकेमध्यमै विष्णुनामाआदित्य मैंहूं॥अथवा विष्णुकहीये वामनअवतार मैंहूं ॥ तथा अग्नितैंआदिलैके जितनैंकीप्रकाशकरणेहारेहैं तिनसर्वप्रकाशकोंकेमध्यविषे सर्वविश्वविषे व्यापकहैप्रकाशजिसका ऐसाजोसूर्यहै सोमैंहूं ॥ तथा मरुत्नामाजेओगणपंचास देवताविशेषहैं तिनमरुतोंकेमध्यमै मरीचिनामामरुत् मैंहूं ॥ तथा अश्विनीतैंआदिलैकेजितनैंकी आकाशविषेस्थित तारागणरूपनक्षत्रहैं तिनसर्वनक्षत्रोंकेमध्यविषे तिनसर्वनक्षत्रोंकाअधिपतिचंद्रमा मैंहूं ॥ तात्पर्ययह ॥ तेद्वादशसूर्य तथाअग्निआदि सर्वज्योति तथा ओगणपंचासमरुद्गण तथा अश्विनीआदिकसर्वनक्षत्र यहसर्वहीं यद्यपि सामान्यरूपतैं मैंपरमेश्वरकीहीं विभूतिहैं ॥ तथापि तिनोंकेमध्यविषे विष्णुनामाआदित्य तथारविनामाज्योति तथामरीचिनामामरुत् तथाचंद्रमानामानक्षत्र यहसर्वप्रभावकीअधिकताकरिके हमारी विशेषविभूतिहैं ॥ यातैं तिनद्वादशआदित्योंविषे विष्णुनामाआदित्य परमेश्वरहींहै याप्रकार मैंपरमेश्वरकीबुद्धिकरिकै सोविष्णुनामाआदित्य इनअधिकारीपुरुषोंने ध्यानकरणेयोग्यहै ॥ इसप्रकारतैंहीं रविमरीचि चंद्रमा यहतीनों मैंपरमेश्वररूपकरिकै ध्यानकरणेयोग्यहैं ॥ यहध्यानकीरीतिइसदशमअध्यायकीसमाप्तिपर्यंत सर्वपर्यायोंविषे जानिलेणी इति ॥ ईहां यद्यपि वामन राम इत्यादिक साक्षात् परमेश्वरकेअवतारहींहैं ॥ तथा सर्वऐश्वर्यतावालेहैं ॥ आदित्यादिकोंकीन्याईं परमेश्वरकीविभूतिरूपनहींहैं ॥ तथापि जैसे (वृष्णीनांवासुदेवोस्मि) इसवक्ष्यमाणवचनविषे श्रीभगवाननैं तिसवासुदेवरूपतैं परमेश्वरकेध्यानकरावणेवासतैं आपणाभी तिनविभूतियोंविषेहीं पठनकऱ्याहैं ॥ तैसे वामनरामादिकोंकाभी तिसतिसरूपतैं परमेश्वरकेध्यानकरावणेवासतैं श्रीभगवान्नैं आपणीविभूतियोंविषेहीं पठनकऱ्याहै ॥ इति ॥ २१ ॥ ❀ ॥ किंच ॥

(मू० श्लो०) वेदानांसामवेदोस्मिदेवानामस्मिवासवः ॥ इंद्रियाणांमनश्चास्मिभूतानामस्मिचेतना ॥ २२ ॥ वेदानाम् । साम वेदः । अस्मि । देवानाम् । अस्मि । वासवः । इंद्रियाणाम् । मनः । च । अस्मि । भूतानाम् । अस्मि । चेतना॥२२॥ (इतिप०)॥ हेअर्जुन वेदोंकेमध्यमै सामवेद मैंहूं तथा देवतावोंकेमध्यमैं इंद्र मैं हूं तथा इंद्रियोंकेमध्यमैं मन मैं हूं तथा भूतोंकेमध्यमै चेतना मैं हूं ॥ २२ ॥ (इतिपदार्थः)॥

॥ टीका॥ हेअर्जुन ऋग् यजुष् साम अथर्वण इनच्यारिवेदोंकेमध्यविषे गायनकीमधुरताकरिकै अत्यंतरमणीकजोसामवेदहै सोसामवेद मैंहूं।।तथा अग्निवायुआदिस र्वदेवताओंके मध्यविषे तिनसर्वदेवतावोंकाअधिपतिजोइंद्रहै सोइंद्र मैंहूं तथा चक्षु श्रोत्र त्वक् रसन घ्राण वाक् पाणि पाद उपस्थ पायु मन इनएकादशइंद्रियोंके मध्यविषे सर्वइंद्रियोंकाप्रवर्त्तकजोमनहै ॥ सोमन मैंहूं ॥ तथा सर्वप्राणियोंकेसंबंधी जितनैंकीपरिणामहैं तिनोंकानामभूतहै ॥ ऐसेपरिणामरूपभूतोंकेमध्यविषे चै तन्यकीअभिव्यक्तिकरणेहारीजाबुद्धिकीवृत्तिरूपचेतनाहै साचेतना मैंहूं इति ॥ २२ ॥ ❀ ॥ किंच ॥

(मू०श्लो०) रुद्राणांशंकरश्चास्मिवित्तेशोयक्षरक्षसाम् ॥ वसूनांपावकश्चास्मिमेरुःशिखरिणामहम् ॥ २३ ॥ रुद्राणां । शंकरः । च । अस्मि । वित्तेशः । यक्षरक्षसां । वसूनां । पावकः । च । अस्मि । मेरुः । शिखरिणाम् । अहम् ॥२३॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन रुद्रोंकेमध्यमै शंकर मैंहूं तथा यक्षराक्षसोंकेमध्यमैं कुबेर मैंहूं तथा वसुवोंके मध्यमै अग्नि मैं हूं तथा रत्नोंवालेपर्वतोंकेमध्यमै सुमेरु मैंहूं ॥ २३ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन एकादशरुद्रोंकेमध्याविषे आपणेभक्तजनोंकेतांई निरतिशय मोक्षरूपआनंदकीप्राप्तिकरणेहारा जोशंकरनामारुद्रहै सोशंकर मैंहूं ॥ तथा यक्षोंकेतथाराक्षसोंकेमध्याविषे संपूर्णधनकाअधिपतिजोकुबेरहै सोकुबेरमैंहूं ॥ तथा अष्टवसुवोंकेमध्यविषे अत्यंतश्रेष्ठजोअग्निहै सोअग्निमैंहूं ॥ तथा नानाप्रकारके रत्नरूपशिखरोंवाले जितनैंकीपर्वतहैं तिनसर्वशिखरीयोंकेमध्याविषे सुवर्णमयअत्यंतरमणीयजोसुमेरुहै सोसुमेरु मैंहूंइति ॥ २३ ॥ ❀ किंच ॥

(मू०श्लो०) पुरोधसांचमुख्यंमांविद्धिपार्थबृहस्पतिम् ॥ सेनानीनामहंस्कंदःसरसामस्मिसागरः ॥२४॥ पुरोधसां । च । मुख्यं । मां । विद्धि । पार्थ । बृहस्पतिं । सेनानीनाम् । अहं । स्कंदः । सरसाम् । अस्मि । सागरः ॥२४॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन सर्वपुरोहितोंकेमध्यमै तूं मैंपरमेश्वरकूं सर्वतैंश्रेष्ठ बृहस्पतिरूप जान तथा सेनापतियोंके मध्यमैं स्कंद मैं हूं तथा जलाशयोंके मध्यमै सागर मैं हूं ॥ २४ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ सर्व राजावोंविषे त्रिलोकीकापति देवराज इंद्र श्रेष्ठहै ॥ ऐसे देवराज इंद्रकाभीपुरोहितजो बृहस्पतिहै सोबृहस्पति सर्वराजावोंकेपुरोहितोंतैंश्रेष्ठहैं ॥ यातैं तिनसर्वपुरोहितोंकेमध्याविषे मैंपरमेश्वरकूं तूं बृहस्पति रूपजान ॥ तथा सर्वसेनापतियोंकेमध्यविषे देवतावोंकासेनापतिजो स्कंदहै सोस्कंद मैंहूं ॥ तथा देवतावोंने खोयेहुए जितनैंकी जलकेरहणेकेस्थानहैं तिनजलाशयरूप सरोवरोंकेमध्यविषे सगरकेपुत्रोंनैं खोदाहुआजोसागरहै सोसागरमैंहूं इति॥ २४ ॥ ❀ ॥ किंच ॥

(मू० श्लो०) महर्षीणांभृगुरहंगिरामस्म्येकमक्षरम् ॥ यज्ञानांजपयज्ञोस्मिस्थावराणांहिमालयः॥ २५ ॥ महर्षीणां । भृगुः । अहं । गिराम् । अस्मि । एकम् । अक्षरं । यज्ञानां । जपयज्ञः । अस्मि । स्थावराणाम् । हिमालयः ॥ २५ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन महाऋषियोंके मध्यमें भृगूनामाऋषि मैंहूं तथा सर्वगिरावोंकेमध्यमै ओंकाररूप एक अक्षर मैंहूं तथा सर्वयज्ञोंकेमध्यमै जपरूपय ज्ञ मै हूं तथा सर्वस्थावरोंकेमध्यमै हिमालयपर्वत मैहूं ॥ २५ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन ब्रह्माकेपुत्ररूप जितनैंकीमहाऋषिहै ॥ तिनसर्व महाऋषियोंके मध्यविषे अत्यंततेजस्वी जोभृगुऋषिहै सोभृगुऋषि मैंहूं ॥ तथा अर्थकेवाचक पदरूप जितनीकी गिराहै तिनसर्व गिरावोंकेमध्यविषे ब्रह्मकावाचक जोएक अक्षररूप ओंकारपदहै सोओंकार मैंहुं ॥ तथा अश्वमेध ज्योतिष्टोम इसतैंआदिलेके जितनैंवेदविषेयज्ञकथनकऱ्ये हैं ॥ तिनसर्वयज्ञोंकेमध्यविषे हिंसादिकसर्वदोषोंतैंरहितहोणेतैं अत्यंतशुद्धिकरणेहाराजोजपरूपयज्ञहैं ॥ सोजपरूपयज्ञ मैंहुं ॥ तथा इसलोकविषे चलायमानतातैंरहित जितनैंकीस्थितिवाले स्थावरपदार्थहैं ॥ तिनसर्वस्थावरपदार्थोंकेमध्यविषे हिमालयपर्वत मैंहुं इति ॥ २५ ॥ ❀ ॥ किंच ॥

(मू० श्लो०) अश्वत्थःसर्ववृक्षाणांदेवर्षीणांचनारदः ॥ गंधर्वाणांचित्ररथःसिद्धानांकपिलोमुनिः ॥ २६ ॥ अश्वत्थः । सर्ववृक्षाणां । देवर्षीणां । च । नारदः । गंधर्वाणां । चित्ररथः । सिद्धानां । कपिलः । मुनिः ॥२६ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन सर्ववृक्षोंकेमध्यमै पिप्पलवृक्षमैहूं तथा सर्वदेवऋषियोंकेमध्यमै नारद मैहूं तथा सर्वगंधर्वोंकेमध्यमै चित्ररथ नामागंधर्व मैहुं तथा सर्वसिद्धोंकेमध्यमै कपिल मुंनि मैंहूं ॥ २६ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन वनस्पतिरूप जितनैंकीवृक्षहैं तिनसर्ववृक्षोंकेमध्यविषे पिप्पलनामा वृक्षमैंहूं ॥ तथा जेदेवताहुएहीं वेदमंत्रोंकेदर्शनकरिकैऋषिभावकूंप्राप्तहूएहैं तिनोंकानाम देवऋषिहे ॥ ऐसेदेवऋषियोंकेमध्यविषे नारदनामादेवऋषि मैंहूं ॥ तथा गायनकरणेहारे जितनैंकी गंधर्वहैं तिनसर्वगंधर्वोंकेमध्यविषे चित्ररथ नामा गंधर्व मैंहूं ॥ तथा जेपुरुष विनाहीं प्रयत्नतैं जन्ममात्रकरिकैहीं धर्म ज्ञान वैराग्य ऐश्वर्यता इत्यादिकगुणोंकूंप्राप्तहुएहोवै तथानिश्चयकऱ्याहैपरमार्थ वस्तुजिनोंनैं तिनपुरुषोंकानामसिद्धहै ऐसेसिद्धोंकेमध्यविषे कपिलमुनिनामासिद्ध मैंहूं इति ॥ २६ ॥ ❀ ॥ किंच ॥

(मू० श्लो०) उच्चैःश्रवसमश्वानांविद्धिमाममृतोद्भवम् ॥ ऐरावतंगजेंद्राणांनराणांचनराधिपम् ॥ २७ ॥ उच्चैःश्रवसम् । अश्वानां । विद्धि । माम् । अमृतोद्भवम् । ऐरावतम् । गजेंद्राणाम् । नराणाम् । च । नराधिपम् ॥ २७ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन

सर्वअश्वोंकेमध्यमैं अमृतकेमथनकरणेकालविषेउद्भवहुआ उच्चैःश्रवसनामाअश्व मेरेकूं तूंजान तथासर्वगजोंकेमध्यमै ऐरावतनामा गज मेरेकूंजान तथा सर्वनरोंकेमध्यमें राजारूप मेरेकूंजान ॥ २७ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन सर्वअश्वोंकेमध्यविषे अत्यंतश्रेष्ठ जोउच्चैःश्रवसनामाअश्वहै ॥ जोउच्चैःश्रवसनामाअश्व अमृतकीप्राप्तिवासतै देवतावोंनैं तथादैत्योंनैं मथन कीयेहुएसमुद्रतैं प्रगटहोताभयाहै ऐसाउच्चैःश्रवसनामाअश्व मेरेकूं तूंजान ॥ तथा सर्वगजोंकेमध्यविषे ऐरावतनामागज मेरेकूंतूंजान ॥ जोऐरावतनामागज अमृत कीप्राप्तिवासतै देवतादैत्योंनैं मथनकर्येहुएसमुद्रतैं प्रगटहोताभयाहै ॥ तथा सर्वनरोंकेमध्यविषे सर्वप्रजाकूं धर्मविषेप्रवृत्तकरणेहारा तथाअधर्मतैंनिवृत्तकरणेहारा जोराजाहै सोराजा मेरेकूंतूंजान इति ॥ २७ ॥ ❀ ॥ किंच ॥

(मू० श्लो०) आयुधानामहंवज्रंधेनूनामस्मिकामधुक् ॥ प्रजनश्चास्मिकंदर्पःसर्पाणामस्मिवासुकिः ॥ २८ ॥ आयुधानाम् । अहम् । वज्रम् । धेनूनाम् । अस्मि । कामधुक् । प्रजनः । च । अस्मि । कंदर्पः । सर्पाणाम् । अस्मि । वासुकिः ॥२८॥(इतिपदच्छेदः) ॥

हेअर्जुन सर्वआयुधोंकेमध्यमैं वज्र मैं हूं तथा सर्वधेनुवोंकेमध्यमैं कामधेनु मैंहूं तथा सर्वकामोंकेमध्यमैं पुत्रकीउत्पत्तिअर्थ काम मैं हूं तथा सर्वसर्पोंकेमध्यमै वासुकिनामासर्प मैं हूं ॥ २८ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ अस्त्ररूपजितनैंकीआयुधहैं तिनसर्वआयुधोंकेमध्यविषे दधीचिकेअस्थियोंतैउत्पन्नहुआजोवज्रहैं सोवज्र मैंहूं ॥ तथा दुग्धकीप्राप्तिकरणेहारी जितनी कीधेनुहैं ॥ तिनसर्वधेनुवोंकेमध्यविषे मनवांछितकामोंकीप्राप्तिकरणेहारी तथासमुद्रकेमथनतैंप्रगटहुई जावसिष्ठकीकामधेनुहै साकामधेनू मैंहूं ॥ तथा मैथुनकीअ भिलाषारूप सर्वकामोंकेमध्यविषे पुत्रकीउत्पत्तिवासतै जोकामरूपकंदर्पहै सोकामरूपकंदर्प मैंहूं ॥ ईहां (प्रजनश्च) इसवचनविषेस्थितजोचकारहै ॥ सोचकार पुत्रकीउत्पत्तितैंविना व्यर्थमैथुनकेहेतुरूपकामकीनिवृत्तिकूंबोधनकरेहै ॥ तथा सर्वसर्पोंकेमध्यविषे तिनसर्वसर्पोंकाराजाजोवासुकिहै सोवासुकि मैंहूं ॥ ईहां सर्पजा तितैं नागजातिभिन्नहोवैहै ॥ तहां सर्पतौ विषवालेहोवैहैं ॥ और नाग विषतैंरहितहोवैहैं इतनादोनोंविषेभेदहोवैहै ॥ यातैं (अनंतश्चास्मिनागानाम्) इसवक्ष्य माणवचनविषे पुनरुक्तिदोषकीप्राप्तिहोवैनहीं इति ॥ २८ ॥ ❀ ॥ किंच ॥

(मू० श्लो०) अनंतश्चास्मिनागानांवरुणोयादसामहम् ॥ पितॄणामर्यमाचास्मियमःसंयमतामहम् ॥ २९ ॥ अनंतः । च । अस्मि । नागानाम् । वरुणः । यादसाम् । अहं । पितॄणाम् । अर्यमा । च । अस्मि । यमः । संयमताम् । अहम् ॥२९॥ (इतिपदच्छेदः) ॥

हेअर्जुन नागोंके मध्यमै अनंतनाग मैं हूं तथा जलचरोंकेमध्यमै वरुण मैंहूं तथा पितरोंकेमध्यमै अर्यमा मैंहुं तथा नियमनकरणे हार्‍योंकेमध्यमै यम मैंहुं ॥ २९ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन सर्वनागोंकेमध्यविषे तिनसर्वनागोकाराजारूप जोशेषनामा अनंतनागहै सोअनंतनाग मैंहूं ॥ तथा जलविषेविचरणेहारे सर्वजीवोंकेमध्यविषे तिनसर्वजलचारीजीवोंकाराजारूप जोवरुणहै सोवरुण मैंहूं ॥ तथा सर्वपितरोंकेमध्यविषे तिनसर्वपितरोंकाराजारूप जोअर्यमानामा पितरहै सोअर्यमा मैंहूं ॥ तथा धर्मअधर्मकेसुखदुःखरूपफलकीप्राप्तिकरिकै अनुग्रहनिग्रहरूप संयमकूंकरणेहारे जितनैंकी समर्थपुरुषहैं ॥ तिनसर्वनियमनकर्त्तावोंकेमध्यविषे यम मैंहूं इति ॥ २९ ॥ ❀ ॥ किंच ॥

(मू० श्लो०) प्रह्लादश्चास्मिदैत्यानांकालःकलयतामहम् ॥ मृगाणांचमृगेंद्रोहंवैनतेयश्चपक्षिणाम् ॥ ३० ॥ प्रह्लादः । च । अस्मि । दैत्यानां । कालः । कलयताम् । अहं । मृगाणां । च । मृगेंद्रः । अहं । वैनतेयः । च । पक्षिणाम् ॥ ३० ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन दैत्योंके मध्यमै प्रल्हाद मैं हूं तथा संख्यागणनकरणेहार्‍योंकेमध्यमै काल मैंहूं तथा मृगादिकपशुवोंकेमध्यमै सिंह मैंहूं तथा सर्वपक्षीयोंकेमध्यमै गरुड मैंहूं ॥ ३० ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन दितिकेवंशविषे उत्पन्नभयेजितनैंकीदैत्यहैं ॥ तिनसर्वदैत्योंकेमध्यविषे आपणेसात्विकस्वभावकरिकै सर्वप्राणीयोंकूं अतिशयकरिकै आनंदकीप्राप्तिकरणेहारा जोप्रल्हादहै सोप्रल्हाद मैंहूं ॥ तथा जितनैंकीसंख्याकेगणनकरणेहारेहैं तिनसर्वोंकेमध्यविषे काल मैंहूं ॥ तथा मृगतैंआदिलैकेजितनैंकीपशुहैं ॥ तिनमृगादिकसर्वपशुवोंकेमध्यविषे तिनसर्वपशुवोंकाराजाजोसिंहहै सोसिंह मैंहूं ॥ तथा सर्वपक्षीयोंकेमध्यविषे तिनसर्वपक्षीयोंकाराजारूप तथाविनताकापुत्र जोगरुडहै सोगरुड मैंहूं इति ॥ ३० ॥ ❀ ॥ किंच ॥

(मू० श्लो०) पवनःपवतामास्मिरामःशस्त्रभृतामहम् ॥ झषाणांमकरश्चास्मिस्रोतसामस्मिजाह्नवी ॥ ३१ ॥ पवनः । पवताम् । अस्मि । रामः । शस्त्रभृताम् । अहं । झषाणां । मकरः । च । अस्मि । स्रोतसाम् । अस्मि । जाह्नवी ॥ ३१ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन वेगवाल्योंकेमध्यमै वायु मैं हूं तथा शस्त्रधारीयोंकेमध्यमै राम मैंहूं तथा मत्स्योंकेमध्यमै मकर मैं हूं तथा नदीयोंकेमध्यमैं श्रीगंगाजी मैंहूं ॥ ३१ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जितनैंकीपावनकरणेहारेपदार्थहैं अथवा जितनैंकीवेगवालेपदार्थहैं ॥ तिनसर्वोंकेमध्यविषे पवन मैंहूं ॥ तथा युद्धविषेअत्यंतकुशल जितनैंकी शस्त्रोंकेधारणकरणेहारे योद्धाहैं ॥ तिनसर्वोंकेमध्यविषे सर्वराक्षसोंकेकुलकानाशकरणेहारा परमशूरवीर जोदशरथकापुत्र श्रीरामहै सोराम मैंहूं ॥ तथा सर्वमत्स्यों केमध्यविषे मकरनामामत्स्य मैंहूं ॥ तथा वेगकरिकैंचलायमानहैजलजिनोंविषे ऐसीजे यमुनागोदावरी आदिकसर्वनदीयांहैं ॥ तिनसर्वनदीयोंकेमध्यविषे तिनसर्व नदीयोंतैंअत्यंतश्रेष्ठ श्रीगंगाजी मैंहूं इति ॥ ३१ ॥ ❁ ॥ किंच ॥

(मू० श्लो०) सर्गाणामादिरंतश्चमध्यंचैवाहमर्जुन ॥ अध्यात्मविद्याविद्यानांवादःप्रवदतामहम् ॥ ३२ ॥ सर्गाणाम् । आदिः । अंतः । च । मध्यं । च । एव । अहम् । अर्जुन । अध्यात्मविद्या । विद्यानाम् । वादः । प्रवदताम् । अहम् ॥ ३२ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

हेअर्जुन अचेतनरूपकार्योंका उत्पत्ति तथा स्थिति तथा लय मैंपरमेश्वर हींहूं तथासर्वविद्याओंकेमध्यमै अध्यात्मविद्या मैंहूं तथा विवादकर्त्तापुरुषोंकीकथावोंकेमध्यमै वादनामाकथा मैंहूं ॥ ३२ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन अचेतनरूपकरिकैंप्रसिद्ध जितनैंकीउत्पत्तिमानकार्यहैं तिनसर्वकार्योंका उत्पत्ति तथास्थिति तथालय मैंपरमेश्वरहींहूं ॥ यद्यपि (अहमादिश्च मध्यंचभूतानामंतएवच) इसवचनविषे पूर्वभी श्रीभगवान्नैं आपणेकूं सर्वभूतोंका उत्पत्तिस्थितिलयरूप कथनकऱ्याथा ॥ तथापि पूर्वतौं चेतनरूपकरिकैंप्रसिद्धभू तोंकीहीं उत्पत्तिस्थितिलयरूपता कथनकरीथी ॥ और अबीईहां अचेतनरूपकरिकैंप्रसिद्धभूतोंकी उत्पत्तिस्थिति लयरूपता कथनकरीहै ॥ यातैं ईहां पुनरुक्तिदो षकी प्राप्तिहोंवैनहीं इति ॥ तथा सर्वविद्यावोंकेमध्यविषे मोक्षकेप्राप्तिकाहेतुरूप तथाजीवब्रह्मके अभेदकाप्रतिपादक ऐसीजाउपनिषदरूप अध्यात्मविद्याहै ॥ साअध्यात्मविद्यामैंहूं ॥ तथा परस्परविवादकर्त्ता पुरुषोंकीजा वाद जल्प वितंडा यहतीनप्रकारकीकथाहैं ॥ तिनकथावोंकेमध्यविषे वादनामाकथा मैंहूं ॥ ईहां यद्यपि (प्रवदताम्) यहशब्द विवादकर्त्तापुरुषोंकाहीं वाचकहै ॥ तिनविवादकर्त्तापुरुषोंकीकथावोंकावाचकहैनहीं ॥ तथापि जैसे पूर्व (भूतानामस्मिचे तना) इसवचनविषे भूतानां इसशब्दकी तिनभूतसंबंधीपरिणामोंविषे लक्षणा अंगीकारकरीथी॥ तैसे ईहांभी प्रवदतां इसशब्दकी तिनविवादकर्त्तापुरुषसंबंधीकथावों विषे लक्षणाअंगीकारकरणी उचितहै ॥ तहां परस्पर रागद्वेषतैंरहित तथापरस्पर जयपराजयकीइच्छातैंरहित तथापरस्पर तत्त्वबोधनकरणेकीइच्छावाले ऐसेजे एकगुरुकेपासिअध्ययनकरणेहारेदोशिष्यहैं अथवा गुरुकेशिष्यदोनोंहैं ॥ तिनदोनोंकी जा तत्त्वनिर्णय पर्यंत परस्पर प्रश्नउत्तररूपकथाहै ताकानाम वादकथाहै॥ और वादकथाकाफलरूपजो तत्त्वनिर्णयहै ॥ तिसतत्त्वनिर्णयका प्रतिवादियोंकेखंडनकरिकै संरक्षणकरणेवासतै परस्पर जीतणेकीइच्छावालेदोपुरुषोंकी जो जय

पराजयमात्रपर्यंत परस्पर कथाहै ताकानाम जल्पकथाहै तथावितंडाकथाहै ॥ तहां छल जाति निग्रहस्थान इनतीनोंकारिकै परपक्षकूं दूषितकरणा इतनाअंशतौं जल्पकथाविषे तथावितंडाकथाविषे समानहींहोवैहै ॥ तथापि वितंडाकथाविषेतौं एकपुरुषनैं आपणेपक्षका केवलस्थापनहींकरीताहै ॥ परपक्षविषे दूषणदईता नहीं ॥ और अन्यपुरुषनैंतौं तिसपक्षविषे केवल दूषणहींदयीताहै ॥ आपणेमतकास्थापनकरीतानहीं ॥ और जल्पकथाविषेतौं विवादकर्त्तादोनोंपुरुषोंनैं आपणाआपणापक्ष स्थापनभीकरीताहै ॥ तथा दोनोंनैं परपक्षकूं दूषितभीकरीताहै इतना जल्प वितंडाका परस्परभेदहै ॥ तहां अन्यअर्थकेअभिप्रायकरिकै उच्चारणकऱ्येहुएवचनका अन्यअर्थकल्पनाकरिकै तिसवक्तापुरुषकूं जोदूषणदेणाहै ताकानाम छलहै ॥ और असत्उत्तरकानाम जातिहै ॥ और पराजयकेहेतुकानाम निग्रहस्थानहै ॥ छल जाति निग्रहस्थान इनतीनोंका विभाग तथाउदाहरण न्यायग्रंथोंविषेप्रसिद्धहैं इति ॥ ३२ ॥ ❀ किंच ॥

(मू० श्लो०) अक्षराणामकारोस्मिद्वंद्वःसामासिकस्यच ॥ अहमेवाक्षयःकालोधाताहंविश्वतोमुखः ॥ ३३ ॥ अक्षराणाम् । अकारः । अस्मि । द्वंद्वः । सामासिकस्य । च । अहम् । एव । अक्षयः । कालः । धाता । अहं । विश्वतोमुखः॥३३॥(इतिप०)॥हेअर्जुन अक्षरोंके मध्यमैं अकारअक्षर मैंहूं तथा समाससमूहकेमध्यमैं द्वंद्वसमास मैंहूं तथा मैंपरमेश्वरहीं क्षयतैंरहित कालरूपहुं तथा सर्वफलप्रदातावोंके मध्यमैं सर्वकर्मोंकेफलकाप्रदाता अंतर्यामीईश्वर मैंहुं ॥ ३३ ॥ (इतिपदार्थः)॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन सर्ववर्णरूपअक्षरोंकेमध्यविषे । (अकारोवैसर्वावाक्) इसश्रुतितैं सर्ववाक्रूपकरिकैकथनकऱ्याजोअकारअक्षरहै सोअकारअक्षर मैंहुं ॥ तथा सर्वसमासोंकाजोसमूहहै ताकानाम सामासिकहै ॥ ऐसे समाससमूहकेमध्यविषे उभयपदार्थप्रधानजो रामकृष्णौ यहद्वंद्वसमासहै सोद्वंद्वसमास मैंहुं ॥ तहां उपकुंभं इत्यादिकअव्ययीभाव समासतौं पूर्वपदार्थप्रधानहोवैहै ॥ और राजपुरुषःइत्यादिकतत्पुरुषसमासतौं उत्तरपदार्थप्रधानहोवैहै ॥ और चित्रगु इत्यादिकबहुव्रीहिसमासतौं अन्यपदार्थप्रधानहोवैहै ॥ इसप्रकारतैं द्वंद्वसमासतैंभिन्न कोईभीसमास उभयपदार्थप्रधानहोवैनहीं॥यातैं तिनसर्वसमासोंतैं सोद्वंद्वसमास उत्कृष्टहै ॥ और क्षणघटिकादिकनाशवान्कालकाअभिमानीरूप तथातिससर्वकालकूंजानणेहारा जोपरमेश्वरनामा अक्षयकालहै ॥ जिसपरमेश्वररूपअक्षयकालकूं (कालकालोगुणीसर्वविद्यः) इत्यादिकश्रुतियां कालकाभीकालरूपकरिकैप्रतिपादनकरेहैं ॥ सोअक्षयकालरूपभी मैंपरमेश्वरहींहुं ॥ यद्यपि (कालःकलयतामहम्) इसवचनकरिकै श्रीभगवान्नैं पूर्वहीं आपणेकूं कालरूपताकथनकरीथी ॥ तथापि पूर्व श्रीभगवान्नै आपणेकूं नाशवान्कालरूपता कथनकरीथी ॥ और अबीईहां अक्षयकालरूपता कथनकरीहै ॥ यातैं इसवचनविषे पुनरुक्तिदोषकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ और कऱ्येहूएकर्मकेफलकीप्राप्तिकरणेहारेजितनैंकीराजादिकहैं ॥

तिनसर्वफलप्रदातावोंकेमध्यविषे सर्वकर्मोंकेफलप्रदाताजोईश्वरहै सोअंतर्यामीईश्वरमैंहूं ॥ ईहांकिसीटीकाविषेतौं (द्वंद्वःसामासिकस्यच) इसवचनका यहअर्थ कथनकऱ्याहै ॥ वेदमंत्रोंकेअर्थका कथनकरणेवासतै जो विद्वान्पुरुषोंका अथवा गुरुशिष्यका एकत्र अवस्थानहै ताकानाम समासहै ॥ तासमासविषे तिन सर्वोनें जितनाकीअर्थ निर्णयकऱ्याहै तासर्वअर्थकानाम सामासिकहै ॥ तिससर्वअर्थकेमध्यविषे द्वंद्व कहीये रहस्यअर्थ मैंहूं ॥ तहां (द्वंद्वंरहस्य) इससूत्रविषे शाब्दिकपुरुषोंनें द्वंद्वशब्दकूं रहस्यअर्थकावाचक कह्याहै इति ॥ ३३ ॥ ❀ ॥ किंच ॥

(मू० श्लो०) मृत्युःसर्वहरश्चाहमुद्भवश्चभविष्यताम् ॥ कीर्तिःश्रीर्वाक्चनारीणांस्मृतिर्मेधाधृतिःक्षमा ॥३४॥ मृत्युः । सर्वहरः । च । अहम् । उद्भवः । च । भविष्यतां । कीर्तिः । श्रीः । वाक् । च । नारीणां । स्मृतिः । मेधा । धृतिः । क्षमा ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हे अर्जुन तथा संहारकर्त्तावोंकेमध्यमै सर्वकासंहारकरणेहारा मृत्यु मैंहुं तथा भावीकल्याणोंकेमध्यमै उत्कर्षरूपउद्भव मैंहुं तथा सर्व नारीयोंकेमध्यमैं कीर्ति श्री वाक् स्मृति मेधा धृति क्षमा यहधर्मकीसप्तपत्नियां मैंहुं ॥ ३४ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन इसलोकविषेजितनेंकीसंहारकरणेहारेहैं ॥ तिनसर्वोंकेमध्यविषेसर्वजगत्कासंहारकरणेहारा जो मृत्युहै सोमृत्यु मैंहुं ॥ तथा होणेहारेजित नेंकीकल्याणहैं ॥ तिनसर्वकल्याणोंकेमध्यविषे जोऐश्वर्यकाउत्कर्षरूप उद्भवहै सोउद्भव मैंहुं तथा सर्वनारीयोंकेमध्यविषे धर्मकीपत्नियांरूप जेकीर्ति श्री वाक् स्मृति मेधा धृति क्षमा यहसप्तनारीयांहैं तेमैंहुं ॥ तहां इसपुरुषकाधर्मीपणाहैनिमित्तजिसविषे ऐसीजा प्रसिद्धपणेकरिकें च्यारोंदिशावोंविषेस्थितअनेकदे शोंमेंरहणेहारेलोकोंकेज्ञानकीविषयतारूप प्रख्यातिहै ताकानाम कीर्तिहै ॥ और धर्म अर्थ काम इनतीनोंकानाम श्रीहै ॥ अथवा शरीरकीशोभाकानाम श्रीहै ॥ अथवा उज्ज्वलकांतिकानाम श्रीहै ॥ और सर्वअर्थकूं प्रकाशकरणेहारी जासंस्कृतवाणीरूप सरस्वतीहै ताकानाम वाक्है ॥ और पूर्वअनुभवकऱ्येहुएअर्थकी जाबहुतकालकेपीछेभी स्मरणकरणेकीशक्तिहै ताकानाम स्मृतिहै ॥ और अनेकग्रंथोंकेअर्थधारणकरणेकीजाशक्तिहै ताकानाम मेधाहै ॥ और अनेकप्रकारकी पीडाकेप्राप्तहुएभी शरीरइंद्रियरूपसंघातकेस्थिरताकरणेकीजाशक्तिहै ताकानाम धृतिहै ॥ अथवा यथाइच्छापूर्वक प्रवृत्तिकरावणेहारेकारणकरिकै चपलताकेप्राप्त हुएभी तिसप्रवृत्तितेंनिवृत्तकरणेकी जाशक्तिहै ताकानाम धृतिहै ॥ और हर्षविषाद दोनोंविषे जाचित्तकीअविकारताहै ताकानाम क्षमाहै इति ॥ जिनकीर्तिआदि कसप्तनारीयोंकेआभासमात्रकेसंबंधकरिकैभी यहजन सर्वलोकोंकरिकै आदरकरणेयोग्यहोवेहैं ॥ ऐसीकीर्तिआदिकसप्त नारीयोंकूं सर्वनारीयोंतेंउत्तमपणा अतिप्रसिद्धहीहै ॥ इति ॥ ३४ ॥ ❀ ॥ किंच ॥

(मू० श्लो०) बृहत्सामतथासाम्नांगायत्रीछंदसामहम् ॥ मासानांमार्गशीर्षोहमृतूनांकुसुमाकरः॥३५॥ बृहत्साम । तथा । साम्नां । गाय त्री । छंदसाम् । अहं । मासानां । मार्गशीर्षः । अहम् । ऋतूनाम् । कुसुमाकरः॥३५॥(इतिपदच्छेदः)॥हेअर्जुन गीतिविशेषरूपसामों केमध्यमै बृहत्साम मैंहूं तथा छंदोंकेमध्यमै गायत्रीछंद मैंहूं तथा मासोंकेमध्यमैं मार्गशीर्षमास मैंहूं तथा ऋतुवोंकेमध्यमै वसंतऋतु मैंहूं ॥ ३५ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन ऋगादिकच्यारिवेदोंकेमध्यविषे सामवेद मैंहूं याप्रकारकेवचनकरिकै सामवेदकीउत्कृष्टता पूर्वहमनैं कथनकरीथी ॥ तिससामवेदविषेभी यहअन्यविशेषताहै ॥ ऋचावोंकेअक्षरोंविषेआरूढ जे गीतिविशेषरूपसामहैं ॥ तिनसर्वसामोंकेमध्यविषे (त्वामिद्धिहवामहे) इसऋचाविषेस्थित गीतिविशेषरूप तथा सर्वकाईश्वररूपकरिकेइंद्रकीस्तुतिरूपक जो बृहत्सामहै सोबृहत्साम मैंहूं ॥ और नियमपूर्वकहैंअक्षर तथापाद जिसके ताकानामछंदहै ॥ ऐसेछंदभावकरिकैविशिष्टजेवेदकीऋचाहैं ॥ तिनसर्वछंदोंकेमध्यविषे द्विजपणेकासंपादक जा चतुर्विंशतिअक्षरोंवाली गायत्रीहै जागायत्री (गायत्रीवाइदंसर्वंभूतम्) इत्यादिकश्रुतियोंकरिकै प्रतिपादितहै ऐसागायत्रीनामाछंद मैंहूं ॥ तथा द्वादशमासोंकेमध्यविषे अत्यंतशीतआतपतैंरहितहोणेतैं सुखकाहेतु जोमार्गशीर्षमासहै सोमार्गशीर्षमास मैंहूं ॥ तथा षट्ऋतुवोंकेमध्यविषे सर्वसुगंधिवालेपुष्पोंकाआकारहोणेतैं अत्यंतरमणीक तथा (वसंतेब्राह्मणमुपनयीत वसंतेब्राह्मणोऽग्नीनादधीत वसंतेज्योतिषायजेत) इत्यादिक श्रुतियोंकरिकैप्रसिद्ध जोवसंतऋतुहै सोवसंतऋतु मैंहूं इति ॥ ३५ ॥ ❀ ॥ किंच ॥

(मू० श्लो०) द्यूतंछलयतामस्मितेजस्तेजस्विनामहम् ॥ जयोस्मिव्यवसायोस्मिसत्त्वंसत्ववतामहम् ॥ ३६ ॥ द्यूतं । छलयताम् । अस्मि । तेजः । तेजस्विनाम् । अहं । जयः । अस्मि । व्यवसायः । अस्मि । सत्त्वं । सत्त्ववताम् । अहम् ॥ ३६ ॥(इतिपदच्छेदः) हेअर्जुन छलकरणेहारेपुरुषोंका जूवारूपछल मैंहूं तथा तेजस्वीपुरुषोंका तेज मैंहूं तथाजयकरणेहारेपुरुषोंका जय मैंहूं तथाव्यवसायवालेपुरुषोंका व्यवसाय मैंहूं तथा सत्त्ववालेपुरुषोंका सत्व मैंहूं ॥ ३६ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन परकावंचनरूपछलकेकरणेहारेजेधूर्त्तपुरुषहैं ॥ तिनछलवालेपुरुषोंका जो जूवारूपछलहैं जोजूवारूपछलसर्वस्वहरणकरणेकाकारणहै सोजूवारूपछल मैंहूं ॥ तथा अत्यंतउग्रप्रभाववालेजेतेजस्वीपुरुषहैं ॥ तिनतेजस्वीपुरुषोंका जोअप्रतिहतआज्ञारूपतेजहै सोतेज मैंहूं ॥ तथा जयकरणेहारेपुरुषोंका जो पराजयहुएपुरुषोंकीअपेक्षाकरिकै उत्कृष्टतारूपजयहै सोजय मैंहूं ॥ तथा व्यवसायवालेपुरुषोंका जो नियमतैंफलकीप्राप्तिकरणेहारा उद्यमरूपव्यवसायहै सो

व्यवसाय मैंहूं ॥ तथा सात्विकपुरुषोंका जो धर्मज्ञानवैराग्यऐश्वर्यतारूपसत्वहै ॥ अर्थात् सत्वगुणकाकार्यहै सोसत्व मैंहूं इति ॥ ३६ ॥ ❀ ॥ किंच ॥

(मू० श्लो०) वृष्णीनांवासुदेवोस्मिपांडवानांधनंजयः ॥ मुनीनामप्यहंव्यासःकवीनामुशनाकविः ॥ ३७ ॥ वृष्णीनाम् । वासुदेवः । अस्मि । पांडवानाम् । धनंजयः । मुनीनाम् । अपि । अहम् । व्यासः । कवीनाम् । उशनाकविः ॥ ३७ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥

हेअर्जुन यादवोंकेमध्यमें वसुदेवकापुत्रकृष्ण मैंहूं तथा पांडवोंकेमध्यमें धनंजय मैंहूं तथा मुनियोंकेमध्यमें व्यासमुनि मैंहूं तथा कवियोंकेमध्यमें शुक्रकवि मैंहूं ॥ ३७ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन सर्वयादवोंकेमध्यविषे वसुदेवकापुत्ररूपकरिकैप्रसिद्ध तथातुमारेप्रति ब्रह्मविद्याकाउपदेशकरणेहारा यहकृष्णमैंहूं ॥ तथा सर्वपांडवोंकेमध्यविषे धनंजयनामाजोतूंअर्जुनहै सोमैंहूं ॥ तथा मननशीलमुनियोंकेमध्यविषे श्रीव्यासमुनि मैंहूं ॥ तथा सूक्ष्मअर्थकेविवेककरणेहारेकवियोंकेमध्यविषे शुक्रनामाकवि मैंहूं इति ॥ ३७ ॥ ❀ ॥ किंच ॥

(मू० श्लो०) दंडोदमयतामस्मिनीतिरस्मिजिगीषताम् ॥ मौनंचैवास्मिगुह्यानांज्ञानंज्ञानवतामहम् ॥ ३८ ॥ दंडः । दमयताम् । अस्मि । नीतिः । अस्मि । जिगीषतां । मौनम् । च । एव । अस्मि । गुह्यानां । ज्ञानम् । ज्ञानवताम् । अहम् ॥ ३८ ॥ (इतिप०) ॥

हेअर्जुन शिक्षाकरणेहारेपुरुषोंका दंड मैंहूं तथा जीतणेकीइच्छावालेपुरुषोंका न्यायरूपनीति मैंहूं तथा गुह्यअर्थोंका मौन मैंहूं तथा ज्ञानवालेपुरुषोंका ज्ञान मैं हूं ॥ ३८ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन अशिक्षितदुष्टपुरुषोंकूं कुमार्गतैंनिवृत्तकरिकै सुमार्गविषे प्रवृत्तकरणेहारे जेराजादिकपुरुषहैं ॥ तिनराजादिकोंका जो दुष्टपुरुषोंकूं तिसकुमार्गतैं निवृत्तकरणेकाहेतुरूपदंडहै सोदंड मैंहूं ॥ तथा जीतणेकीइच्छावान्पुरुषोंका जो जयकेउपायकाप्रकाशक न्यायरूपनीतिहै सानीति मैंहूं ॥ तथा गुह्यअर्थोंकेगोप राखणेकाहेतुरूप जो वाक्इंद्रियकानिग्रहरूपमौनहै ॥ सोमौन मैंहूं ॥ तात्पर्ययह ॥ जोपुरुष वाक्इंद्रियकानिग्रहकरिकै तूष्णींस्थितहोवैहै ॥ तिसपुरुषकेअंतरके अभिप्रायकूं कोईभीजानिसकतानहीं ॥ यातैं सोवाणीकानिग्रहरूपमौन अर्थकेगोपराखणेकाहेतुहै इति ॥ अथवा इसका यहअर्थकरणा ॥ गोप्यपदार्थोंकेमध्यविषे संन्याससहित श्रवणमननपूर्वक जो आत्माकानिदिध्यासनरूपमौनहै सोमौन मैंहूं ॥ तथा ज्ञानवाले सर्वज्ञानीपुरुषोंका जो वेदांतशास्त्रकेश्रवणमनननिदिध्यासनेंकरिकै जन्य तथासर्वअज्ञानकाविरोधी मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारका आत्मज्ञानहै सोआत्मज्ञानमैंहूं इति ॥ ३८ ॥ ❀ ॥ किंच ॥

(मू० श्लो०) यच्चापिसर्वभूतानांबीजंतदहमर्जुन ॥ नतदस्तिविनायत्स्यान्मयाभूतंचराचरम् ॥ ३९ ॥ यत् । च । अपि । सर्वभूतानाम् । बीजम् । तत् । अहम् । अर्जुन । न । तत् । अस्ति । विना । यत् । स्यात् । मया । भूतम् । चराचरम् ॥३९॥ (इतिप०)॥ हेअर्जुन तथा जोचेतन इनसर्वभूतोंका कारणहै सोकारण भी मैंहींहूं मैंपरमेश्वरतें विना जो चर अचररूप वस्तु होवै सोवस्तु नहीं है ॥ ३९ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जैसे प्रसिद्धवृक्षोंकेप्ररोहकाकारण बीजहोवैहै॥ तैसे इनसर्वभूतोंकेप्ररोहकाकारणरूप जोमायाउपहितचेतनरूप बीजहैं सोबीजरूपकारणभी मैंहींहूं ॥ हेअर्जुन मैंपरमेश्वरनेंविना जोकोई चरअचररूपवस्तुविद्यमानहोवै सोऐसाकोईवस्तु हैनहीं ॥ किंतु तेसर्वभूत मैंबीजरूपपरमेश्वरकाकार्यहोणेतें मैंसत्तास्फुरणरूपपरमेश्वरकरिकैहीं व्याप्तहैं इति ॥ ३९ ॥ ❀ ॥ अब इसविभूतिप्रकरणकेअर्थका उपसंहारकरताहुआ श्रीभगवान्तिसविभूतिकूं संक्षेपतैं कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) नांतोस्तिममदिव्यानांविभूतीनांपरंतप ॥ एषतूद्देशतःप्रोक्तोविभूतेर्विस्तरोमया ॥ ४० ॥ न । अंतः । अस्ति । मम । दिव्यानाम् । विभूतीनाम् । परंतप । एषः । तु । उद्देशतः । प्रोक्तः । विभूतेः । विस्तरः । मया ॥ ४० ॥ (इतिपदच्छेदः) हेअर्जुन मैंपरमेश्वरके दिव्य विभूतियोंका कोईअंत नहीं है । और यहजो हमनैं तुमारेप्रति विभूतिका विस्तार कथनकर्‍याहै सो एकदेशकरिकै कथनकर्‍याहै ॥ ४० ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेपरंतप अर्थात् हेकामक्रोधादिकशत्रुवोंकूंतापकरणेहारा अर्जुन मैंपरमेश्वरका तिनदिव्यविभूतियोंका कोईअंत नहींहै अर्थात् तेसर्वविभूतियां इतनीयाहैं याप्रकारकीसंख्या तिनविभूतियोंकीनहींहै ॥ यातैं सर्वज्ञपुरुषोंनैंभी साहमारेविभूतियोंकीसंख्या जानणेकूं वाकहणेकूं समर्थनहींहोईता ॥ शंका ॥ हेभगवन् जबी सर्वज्ञपुरुषभी तिनविभूतियोंकेकहणेकूंसमर्थनहींहै ॥ तबी (आदित्यानामहंविष्णुः) इत्यादिकवचनोंकरिकै ते आपणीविभूतियां आप कैसे कहतेभयेहो ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान्कहेहै (एषतुइति) हेअर्जुन यहजोहमनैं तुमारेप्रति आपणीविभूतिकाविस्तार कथनकर्‍याहै ॥ सोभी किसीएकदेशकरिकै कथनकर्‍याहै इति ॥ ४० ॥ ❀ ॥ किंच ॥

(मू० श्लो०) यद्यद्विभूतिमत्सत्वंश्रीमदूर्जितमेववा ॥ तत्तदेवावगच्छत्वंममतेजोंशसंभवम् ॥ ४१ ॥ यत् । यत् । विभूतिमत् । सत्वम् । श्रीमत् । ऊर्जितम् । एव । वा । तत् तत् । एव । अवगच्छ । त्वम् । मम तेजोंऽशसंभवम् ॥ ४१ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥

हेअर्जुन जो जो प्राणी ऐश्वर्यवालाहै तथा लक्ष्मीवालाहै तथा बलवालाहै तिस तिस प्राणीकूं हीं तूं मैंपरमेश्वरके शक्तिकेअंश करिकैउत्पन्नहूआ जान ॥ ४१ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

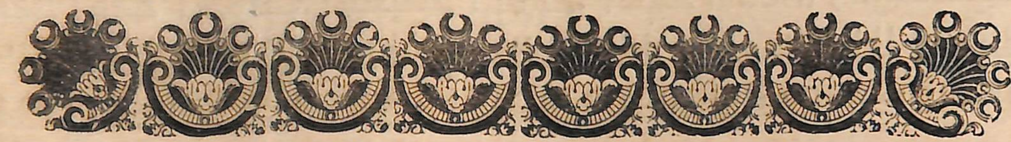
॥ टीका ॥ हेअर्जुन इसलोकविषे जोजोप्राणी ऐश्वर्यरूपविभूतिकरिकै युक्तहै ॥ तथा जोजोप्राणी श्रीमत्‌है ॥ अर्थात् लक्ष्मीकरिकै वासंपदाकरिकै वाशोभाकरिकै वाकांतिकरिकै युक्तहै ॥ तथा जोजोप्राणी अत्यंतबलादिकोंकरिकैयुक्तहै ॥ तिसतिसप्राणीकूंहीं तूं मैंपरमेश्वरकीशक्तिकेअंशकरिकैउत्पन्नहुआ जान इति ॥ यहभगवान्‌कावचन पूर्वनहीं कथनकरीहुईविभूतियोंकेभीसंग्रहकरावणेवास्तैंहै इति ॥ ४१ ॥ ❀ ॥ इसप्रकार एकदेशरूप अवयवकरिकै विभूतिकूंकथनकरिकै अब सकलतारूपकरिकै तिसविभूतिकूं कहेहैं ॥

(मू०श्लो०) अथवाबहुनैतेनकिंज्ञातेनतवार्जुन ॥ विष्टभ्याहमिदंकृत्स्नमेकांशेनस्थितोजगत् ॥ ४२ ॥ इतिश्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सुब्रह्मविद्यायांयोगशास्त्रेश्रीकृष्णार्जुनसंवादेविभूतियोगोनामदशमोऽध्यायःसमाप्तः ॥ १० ॥ अथवा । बहुना । एतेन । किं । ज्ञातेन । तव । अर्जुन । विष्टभ्य । अहम् । इदम् । कृत्स्नम् । एकांशेन । स्थितः । जगत् ॥ ४२ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ अथवा हेअर्जुन इस बहुत ज्ञातकरिकै तुमारा क्याप्रयोजनसिद्धहोवैगा ईस सर्व जगतकूं मैंपरमेश्वर एकदेशकरिकै धारणकरिकै स्थितहूआहूं ॥ ॥ ४२ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ ईहां (अथवा) यहपद पूर्वउक्तविभूतिपक्षतेभिन्नपक्षकावाचकहै ॥ सोपक्षांतर कहेहै ॥ हेअर्जुन (आदित्यानामहंविष्णुः) इत्यादिकवचनोंकरिकै मंदअधिकारीपुरुषोंकेध्यानवासतै कथनकरीजा हमनैं आपणीसावशेष विभूतिहै ॥ इसबहुतप्रकारकीसावशेषविभूतिकेज्ञानकरिकै तैंउत्तमअधिकारीकूं कौनफलहैं ॥ किंतु कोईभीफल तेरेकूंनहीं ॥ जिसकारणतैं पूर्वउक्तयत्किंचित्‌विभूतिकेज्ञानहुएभी हमारीसर्वविभूतियोंकाज्ञान होतानहीं ॥ यातैं तैंउत्तमअधिकारीकूंतौं याप्रकारतैं हमाराध्यानकऱ्याचाहीये ॥ हेअर्जुन मैंपरमात्मादेव इससर्वजगतकूं आपणेएकदेशमात्रकरिकै धारणकरिकै अथवा व्याप्तकरिकै स्थितहूं मैंपरमात्मादेवतैंभिन्न कोईवस्तुहैनहीं ॥ तहांश्रुति ॥ (पादोऽस्यविश्वाभूतानित्रिपादस्यामृतंदिवि) ॥ अर्थयह ॥ इसपरमात्मादेवका यहसर्व विश्व एकपादहै ॥ और तीनपादतो आपणेनिर्गुणस्वयंज्योतिस्वरूपविषेस्थितहैं इति ॥ यातैं हेअर्जुन द्वादशआदित्योंविषे विष्णुनामाआदित्यमैंहूं तथानक्षत्रोंकेमध्यविषेचंद्रमामैंहूं इत्यादिकपरिच्छिन्नदृष्टिकापरित्यागकरिकै तूं सर्वजगत्‌विषे मैंपरमात्मादेवकूंव्यापकदेख इति ॥ यद्यपि निरवयवनिराकारपरमा

त्माका अंश तथापाद संभवतानहीं ॥ तथापि जैसे निरवयवआकाशके घटमठादिकउपाधियोंकरिकै घटाकाश मठाकाश मेघाकाश इत्यादिकअंशोंकीकल्पनाहोवैहैं ॥ तैसे निरवयवनिराकारपरमात्मादेवकेभी अविद्यादिकउपाधियोंकरिकै तेअंश तथापाद कल्पनाकरेजावैहैं ॥ वास्तवतैं तेअंश तथापादहैनहीं इति ॥ ४२ ॥ ❋ ॥ इतिश्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यश्रीस्वामिउद्धवानंदगिरिपूज्यपादशिष्येण स्वामिचिद्घनानंदगिरिणा विरचितायां प्राकृतटीकायां गीतागूढार्थदीपिकाख्यायां दशमोऽध्यायःसमाप्तः ॥ १० ॥

इति दशमोऽध्यायःसमाप्तः ॥ १० ॥



ॐश्रीगणेशायनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः॥ अथएकादशाध्यायप्रारंभः॥ तहां पूर्वदशमअध्यायविषे श्रीभगवान् नानाप्रकारकीविभूतिकूंकथनकरिकै ताकेअंतविषे (विष्टभ्याहमिदंकृत्स्नमेकांशेनस्थितोजगत्) इसवचनकरिकै परमेश्वरके सर्वविश्वात्मकस्वरूपकूं कथनकरताभया ॥ तिसकूंश्रवणकरिकै परमउत्कंठाकूंप्राप्तहुआ सोअर्जुन परमेश्वरके तिस सर्वविश्वात्मकस्वरूपकेसाक्षात्कारकरणेकीइच्छाकरताहुआ तथापूर्वउक्तअर्थकीप्रशंसाकरताहुआ याप्रकारकावचन कहताभया ॥

(मू० श्लो०) अर्जुनउवाच ॥ मदनुग्रहायपरमंगुह्यमध्यात्मसंज्ञितम् ॥ यत्त्वयोक्तंवचस्तेनमोहोयंविगतोमम ॥ १ ॥ मदनुग्रहाय। परमं । गुह्यम् । अध्यात्मसंज्ञितं । यत् । त्वया । उक्तं । वचः । तेन । मोहः । अयं । विगतः । मम॥ १॥(इतिपदच्छेदः) ॥हेभगवन् हमारेअनुग्रहवासतै आपनैं जो परम गुह्य अध्यात्मनामवाला वचन कथन कन्याहै तिसवचनकरिकै मैंअर्जुनका यह मोह नष्टहोताभयाहै ॥ १ ॥ (इतिपदार्थः)॥

॥ टीका ॥ हेभगवन् यह हमारे भ्रातापुत्रादिकसर्वबांधव मरणकूंप्राप्तहोतेहैं और मैंअर्जुन इनोंकाहननकरताहूं इसप्रकारकेशोकमोहरूपसागरविषे डूब्याहुआ जोमैंअर्जुनहूं ॥ तिसहमारेअनुग्रहवासतै अर्थात् तिसशोकमोहकी निवृत्तिरूपउपकारवासतै परमकृपालुसर्वज्ञआपनै (अशोच्यानन्वशोचस्त्वम्) इसवचनतैंआदिलेके षष्ठअध्यायकीसमाप्तिपर्यंत त्वंपदार्थकानिरूपक जोवाक्य कथनकन्याहै ॥ कैसाहैसोवाक्य परमहै ॥ अर्थात् निरतिशयमोक्षरूपपुरुषार्थविषे परिअवसानवालाहै ॥ अथवा परम कहिये शीघ्रहीशोकमोहकानिवर्त्तकहोणेतैं उत्कृष्टहै ॥ पुनःकैसाहैसोवचन गुह्यहै ॥ अर्थात् शास्त्रनिषिद्धकर्मविषेप्रवृत्त तथाश्रद्धातैंरहित तथाविषयोंविषेआसक्त ऐसेअनधिकारीपुरुषोंकूं नहींदेणेयोग्यहै ॥ पुनःकैसाहैसोवचन अध्यात्मसंज्ञितहै ॥ अर्थात् आत्माअनात्माकेविवेककूंविषयकरणेहाराहै॥ तहां आत्माअनात्माकेविवेककरणेवासतैजोशास्त्रहै ताकानाम अध्यात्महै ॥ सोअध्यात्महै संज्ञा क्या नाम जिसका ताकानाम अध्यात्मसंज्ञितहै॥ ऐसे आपकेवचनकरिकै मैंअर्जुनका यह स्वअनुभवसिद्धमोह नष्टहोताभयाहै ॥ अर्थात् मैंअर्जुन इनभीष्मद्रोणादिकोंकाहननकरताहूं तथामैंअर्जुननैं यहभीष्मद्रोणादिक हननकरीतेहैं इत्यादिक नानाप्रकारकाविपर्ययरूपमोह हमारा तिसआपकेवचनकरिकैनष्टहोताभयाहै ॥ जिसकारणतैं तिसपूर्वउक्तवचनविषे (नायंहंतिनहन्यते नजायतेम्रियतेवाकदाचित् वेदाविनाशिनंनित्यम् अच्छेद्योयमदाह्योयम्) इत्यादिकवचनोंकरिकै इसआत्माकूं आपनैं सर्वविकारोंतैंरहितकथनकन्याहै तिसकारणतैं सोहमारामोह अभी नष्टहोताभयाहै ॥ तहां इसश्लोककेप्रथमपादविषे जोएकअक्षरअधिकहैसोआर्षहै अर्थात् ऋषिप्रणीतहोणेतैं दुष्टनहींहै इति ॥ १ ॥ ❀ ॥ तहां

जैसे त्वंपदार्थकानिर्णयहै प्रधानजिसविषे ऐसा षष्ठेअध्यायपर्यन्त आपकावचन हमनैं श्रवणकऱ्याहै॥ तैसे तत्पदार्थकानिर्णयहैप्रधानजिसविषे ऐसा सप्तअध्यायतैंआदि लेके दशमअध्यायपर्यंत आपकावचनभी हमनैं श्रवणकऱ्याहै इसवार्त्ताकूं अर्जुन कथनकरेहै ॥

(मू०श्लो०) भवाप्ययौहिभूतानांश्रुतौविस्तरशोमया ॥ त्वत्तःकमलपत्राक्षमाहात्म्यमपिचाव्ययम् ॥ २ ॥ भवाप्ययौ । हिं । भूतानां । श्रुतौ । विस्तरशः । मया । त्वत्तः । कमलपत्राक्ष । माहात्म्यम् । अपि । च । अव्ययम् ॥ २ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेकमल पत्राक्ष इनभूतोंके उत्पत्तिप्रलय दोनोंतैं भगवान्तैं हीं हमनैं विस्तारतैं श्रवणकऱ्येहै तथा आपकासोपाधिक माहात्म्य तथा नि रुपाधिक अव्ययरूपमाहात्म्य भी हमनैं श्रवणकऱ्याहै ॥ २ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेकमलपत्राक्ष श्रीभगवान् ॥ ईहां कमलकेपत्रकीन्यांई दीर्घ तथाविशाल तथाकिंचित्रक्ततायुक्त तथा अत्यंतमनोरमहैं अक्षि क्या नेत्र जिसके ताकानाम कमलपत्राक्षहै ॥ इससंबोधनकरिकै अर्जुननैं भगवान्की जो अत्यंतसौंदर्यता कथनकरीहै ॥ सो परमेश्वरविषयकप्रेमकीअतिशयतातैं कथनकरीहै ॥ अथवा (हेकमलपत्राक्ष) इससंबोधनका यहअर्थकरणा ॥ (कमलतिप्रकाशयतिइतिकमलमात्मज्ञानम् ॥) अर्थयह ॥ स्वस्वरूपानंदरूपजोब्रह्मसुखहै ताकानाम कंहै ॥ तिसब्रह्मसुखकूं जोप्रकाशकरेहै ताकानाम कमलहै ॥ ऐसा महावाक्यजन्य आत्मज्ञानहै ॥ आत्मज्ञानकरिकैहीं ताब्रह्मसुखका प्रकाशहोवेहै ॥ तथा (पत नात्त्रायतेइतिपत्रम् ॥) अर्थयह ॥ इनअधिकारीपुरुषोंकूं इसजन्ममरणकेप्रवाहरूपसंसारसमुद्रविषेपतनतैं जोरक्षणकरेहै ताकानाम पत्रहै ॥ ऐसापत्ररूपभी सो आत्मज्ञानहींहै ॥ अर्थात् कमलरूपहोवै तथासोईहींपत्ररूपहोवै ताकानाम कमलपत्रहै ॥ (कमलपत्रेणअक्ष्यतेप्राप्यतेइतिकमलपत्राक्षः) ॥ अर्थयह ॥ तिस कमलपत्रनामा आत्मज्ञानकरिकै जोप्राप्तहोवै ताकानाम कमलपत्राक्षहै ॥ अर्थात् हेआत्मज्ञानकरिकैप्राप्तहोणेयोग्य शुद्धपरब्रह्म ॥ तैंपरमेश्वरतैंहीं इनसर्वभूतोंके उत्पत्तिप्रलय हमनैं(अहंकृत्स्नस्यजगतःप्रभवःप्रलयस्तथा॥प्रकृतिंस्वामवष्टभ्य अहंसर्वस्यप्रभवः)इत्यादिकवचनोंकरिकै विस्तारतैं श्रवणकऱ्येहैं॥कोईसंक्षेपतैंएकहींबार श्रवणनहींकऱ्ये ॥ हेभगवन् आपपरमेश्वरतैं इनसर्वभूतोंकेउत्पत्तिप्रलयकूंहीं केवल हमनैं नहींश्रवणकऱ्या ॥ किंतु तुमारा माहात्म्यभी हमनैं बहुतवार श्रवणकऱ्या है ॥ तहां महात्मारूपपरमेश्वरका जोनिरतिशयऐश्वर्यरूपभावहै ताकानाम माहात्म्यहै ॥ सोमाहात्म्य यहहै ॥ इसलोकविषे जोकर्त्ताहोवैहै सोविकारीहीं होवैहै ॥ और यहपरमेश्वरतौं इसजगत्केउत्पत्तिआदिकोंकाकरताहुआभी अविकारीरूपहीहै ॥ और इसलोकविषे जोपुरुष दूसऱ्योंकूंप्रेरणाकरिकै शुभअशुभकर्मकरावैहै ॥ सोपुरुष विषमतादोषवालाहीं होवैहै ॥ और यहपरमेश्वर तौं जीवोंकूंप्रेरणाकरिकै शुभअशुभकर्मकरावताहुआभी विषमतादोषतैंरहितहै ॥ और इसलोक

विषे जोपुरुष विचित्रफलकाप्रदाताहोवैहैं ॥ सोपुरुष असंगउदासीनहोवैनहीं ॥ और यहपरमेश्वरतौं बंधमोक्षादिकविचित्रफलका प्रदाताहुआभी असंग उदासीनहीं है ॥ इसतै आदिलेकेंदूसराभी सर्वात्मत्व आदिक सोपाधिकमाहात्म्य हमनैं बहुतवार श्रवणकऱ्याहै ॥ हेभगवन् आपपरमेश्वरका केवल यहसोपाधिकमाहात्म्यहीं हमनैं श्रवणनहींकऱ्या ॥ किंतुआपपरमेश्वरका निरुपाधिक अव्यय रूपमाहात्म्यभी हमनैं श्रवणकऱ्याहै ईहां व्ययनाम नाशकाहै तानाशतैंजोरहितहोवै ताका नाम अव्ययहै इति ॥ २ ॥ ॥

(मू० श्लो०) एवमेतद्यथात्थत्वमात्मानंपरमेश्वर ॥ द्रष्टुमिच्छामितेरूपमैश्वरंपुरुषोत्तम ॥ ३ ॥ एवम् । एतत् । यथा । आत्थ । त्वम् । आत्मानं । परमेश्वर । द्रष्टुम् । इच्छामि । ते । रूपम् । ऐश्वरं । पुरुषोत्तम ॥३॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेपरमेश्वर जिसप्रकारतैं आपणेआत्माकूं तूंकैथनकरताहैं सोआपकाकहणा यथार्थहींहै तथापि हेपुरुषोत्तम तुमारा ऐश्वर रूप देखणेकूं मैं इच्छाकरता हूं ॥ ३ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेपरमेश्वर जिस सोपाधिक निरतिशय ऐश्वर्यरूपकरिकै तथा जिस निरुपाधिक निरतिशयऐश्वर्यरूपकरिकै आप आपणेस्वरूपकूं कथनकरतेभयेहो ॥ सोआपकाकहणा यथार्थहींहै ॥ किसीकालविषेभी आपकाकहणा अयथार्थनहींहै ॥ अर्थात् तुमारेवचनविषेकहांभी हमारेकूं अविश्वासकीशंकानहींहै ॥ हेपुरुषोत्तम यद्यपि हमारा आपकेवचनोंविषे दृढविश्वासहै ॥ तथापि कृतार्थहोणेकीइच्छाकरिकै मैंअर्जुन तुमारे ऐश्वररूपकेदेखणेकीइच्छाकरताहूं ॥ अर्थात् ज्ञान ऐश्वर्य शक्ति बल वीर्य तेज इत्यादिगुणोंकरिकैसंपन्न जोआपईश्वरका अद्भुतस्वरूपहै ताकानाम ऐश्वररूपहै तारूपकेदेखणेकींमैंइच्छाकरताहूं ॥ तहां सर्व पुरुषोंते सर्वज्ञतादिकगुणोंकरिकै जो उत्तमहोवै ताकानाम पुरुषोत्तमहै ॥ इसपुरुषोत्तमसंबोधनकरिकै अर्जुननैं श्रीभगवान्‌के प्रति यहअर्थसूचनकऱ्या ॥ हेभगवन् तुमारेवचनविषे हमारेकूं अविश्वासनहींहैं ॥ तथा आपके तिसऐश्वररूपकेदेखणेकीइच्छाभी हमारेकूंबहुतहै ॥ इसहमारेहृदयकेवृत्तांतकूं आप सर्वज्ञहोणेतैं तथाअंतर्यामीहोणेतैं जानतेहीहो इति ॥ ३ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेअर्जुन तुमारेकरिकै देखणेकूंअशक्य जोहमारास्वरूपहै ॥ तिसस्वरूपकेदेखणेकीइच्छा तूंकिसवासतैकरता हैं ॥ जोवस्तुदेखणेकूंशक्यहोवैहै ॥ तिसवस्तुकेहीं देखणेकीइच्छाकरणी उचितहोवैहैं ॥ ऐसी श्रीभगवान्‌कीशंकाकेहुए अर्जुन कहैहै ॥

(मू० श्लो०) मन्यसेयदितच्छक्यंमयाद्रष्टुमितिप्रभो ॥ योगेश्वरततोमेत्वंदर्शयात्मानमव्ययम् ॥ ४ ॥ मन्यसे । यदि । तत् । शक्यं । मया । द्रष्टुम् । इति । प्रभो । योगेश्वर । ततः । मे । त्वं । दर्शय । आत्मानम् । अव्ययम् ॥ ४ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेप्रभो

सोतुमारा ऐश्वररूप मैंअर्जुननैं देखणेकूं शक्यहै इसप्रकार जबी आप मानतेहोवो तबी हे योगियोंकेईश्वर हमारेतांई आप नाशतैंरहित तिसऐश्वररूपविशिष्ट आत्माकूं दिखावो ॥ ४ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ तहां सृष्टि स्थिति संहार प्रवेश प्रशासन इनपांचोंककरणेविषे जो समर्थहोवे ताकानाम प्रभुहै ॥ हेप्रभो अर्थात् हेसर्वकेस्वामिन् ॥ सोआपका ऐश्वररूप मैंअर्जुननैं देखणेकूं शक्यहै ॥ ऐसे जबीआप मानतेहोवो ॥ अर्थात् ऐसेजबीआपजानतेहोवो ॥ अथवा यहअर्जुन इसहमारेरूपदेखै ऐसीजबी आप इच्छाकरतेहोवो ॥ तबीहेसर्वयोगियोंकेईश्वर तिसआपकीइच्छाकेवशतैं मैंअत्यंतजिज्ञासुअर्जुनकेतांई परमकारुणिकआप तिसऐश्वररूपविशिष्ट तथानाशतैं रहित आत्माकूं दिखावो ॥ अर्थात् तिसआपकेस्वरूपकूं हमारेचक्षुवोंका विषयकरो ॥ ईहां जेपुरुष अणिमादिकअष्टसिद्धियोंकरिकैयुक्तहैं तिनोंकानाम योगीहै ॥ तिनसर्वयोगियोंकाजोईश्वरहोवे ताकानाम योगेश्वरहै ॥ इसयोगेश्वरसंबोधनकरिकै अर्जुननैं यहअर्थ भगवान्केप्रति सूचनकऱ्या ॥ अणिमादिकसिद्धियोंकरिकैयुक्तजेयोगीपुरुषहैं ॥ तेयोगीपुरुषभी आपणीइच्छाकेवशतैं अशक्यकार्यकूंभी सिद्धकरिसकेहै ॥ और आपतौं तिनयोगियोंकेभी ईश्वरहो ॥ अर्थात् आपपरमेश्वरकेध्यानकरिकैहीं तिनयोगीपुरुषोंकूं ऐसा सामर्थ्य प्राप्तभयाहै ॥ यातैं आप जोकदाचित् तिसस्वरूपकेदिखावणेकी इच्छाकरोगे ॥ तौंमैंअर्जुनतिसआपकेस्वरूपकूं अवश्यकरिकैदेखूंगा इति ॥ अथवा (हेयोगेश्वर) इससंबोधनका यहदूसराअर्थ करणा ॥ मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारका जो जीवब्रह्मकेएकत्वकादर्शनरूपज्ञानयोगहै ताकानाम योगहै ॥ तायोगकाजोईश्वरहोवे ॥ अर्थात् अधिकारीजनोंकेप्रति ताज्ञानयोगकीप्राप्तिकरणेविषे जो समर्थहोवै ताकानाम योगेश्वरहै इति ॥ ४ ॥ ❀ ॥ इसप्रकार अत्यंतभक्तअर्जुनकरिकै प्रार्थनाकऱ्याहुआ श्रीभगवान् ताअर्जुनकेप्रति तिसस्वरूपकेदिखावणेकीइच्छाकरताहुआ कहेहै ॥

(मू॰ श्लो॰) श्रीभगवानुवाच ॥ पश्यमेपार्थरूपाणिशतशोऽथसहस्रशः ॥ नानाविधानि दिव्यानि नानावर्णाकृतीनिच ॥ ५ ॥ पश्य । मे । पार्थ । रूपाणि । शतशः । अथ । सहस्रशः । नानाविधानि । दिव्यानि । नानावर्णाकृतीनि च ॥ ५ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेपार्थ नानाप्रकारकेवर्णतथाआकृतिहैंजिनोंके ऐसे नानाप्रकारके अद्भुत अनेक शत तथा अनेकसहस्र मैं परमेश्वरके रूपोंकूं तूं देख ॥ ५ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ ईहां इसश्लोकतैंआदिलैकेअगलेच्यारिश्लोकोंविषे क्रमतैं (पश्य) इसशब्दकीआवृत्तिकरिकै श्रीभगवान् तेआपणेदिव्यरूप मैं तुमारेकूंदिखा

वताहूं तूं सावधानहोउ इसप्रकार ताअर्जुनकूं अभिमुखकरताभयाहै ॥ और (शतशःअथसहस्रशः) इनसंख्यावाचक दोनोंपदोंकरिके श्रीभगवान्नैं तिनरूपोंविषे अपरिमितरूपता कथनकरीहै ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ हेअर्जुन विलक्षणविलक्षण नीलपीतादिकवर्ण हैं जिनोंके तथाविलक्षणविलक्षण अवयवोंकीरचनाविशेषरूपआकृतिहैजिनोंकी ऐसेजे अनेकप्रकारके तथाअत्यंतअद्भुत तथाअपरिमितसंख्यावाले मैंपरमेश्वरकेरूपहैं तिनरूपोंकूं तूंदेख ॥ अर्थात् तिनरूपोंकेदेखणेकूं तूं योग्यहोउ इति ॥ ५ ॥ ❁ ॥ तहां पूर्वश्लोकविषे श्रीभगवान्नैं अर्जुनकेप्रति आपणे दिव्यरूपोंकेदिखावणेकीप्रतिज्ञा करी ॥ अब तिसप्रतिज्ञाकेपूर्ण करणेवासतै श्रीभगवान् तिसअर्जुनकेप्रति दोश्लोकोंकरिके यत्किंचितमात्र तेआपणेरूप कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) पश्यादित्यान्वसून्रुद्रानश्विनौमरुतस्तथा ॥ बहून्यदृष्टपूर्वाणिपश्याश्चर्याणिभारत ॥ ६ ॥ पश्य । आदित्यान् । वसून् । रुद्रान् । अश्विनौ । मरुतः । तथा । बहूनि । अदृष्टपूर्वाणि । पश्य । आश्चर्याणि । भारत ॥ ६ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥

हेअर्जुन तूं आदित्योंकूं तथावसुवोंकूं तथारुद्रोंकूं तथा अश्विनीकुमारोंकूं तथामरुतोंकूं देख तथा पूर्वनहींदेखेहुए बहुत अद्भुत रूपोंकूं देख ॥ ६ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन तूं द्वादशआदित्योंकूंदेख ॥ तथा अष्टवसुवोंकूंदेख ॥ तथा एकादशरुद्रोंकूंदेख तथा दोनोंअश्विनीकुमारोंकूंदेख ॥ तथा ओगणपंचास मरुतोंकूंदेख ॥ तथा इनोंतैंअन्य दूसरेभीदेवतावोंकूं तूं देख ॥ हेअर्जुन जेरूपतैंअर्जुननै तथा किसीअन्यप्राणीनैं इसमनुष्यलोकविषे कबीभी देखेनहींहैं ॥ ऐसेबहुत अद्भुतरूपोंकूं अबीतूंदेख इति ॥ तहां (बहूनि) यहवचन (शतशोथसहस्रशः) इसपूर्वउक्तवचनका व्याख्यानरूपहै ॥ और (आदित्यान्वसून् रुद्रानश्विनौमरुतस्तथा) ॥ यहवचन (नानाविधानि) इसपूर्वउक्तवचनका व्याख्यानरूपहै ॥ और (अदृष्टपूर्वाणि) यहवचन (दिव्यानि) इसपूर्वउक्त वचनका व्याख्यानरूपहै ॥ और (आश्चर्याणि) यहवचन (नानावर्णाकृतीनिच) इसपूर्वउक्तवचनका व्याख्यानरूपहै इति ॥ ६ ॥ ❁ ॥ हेअर्जुन केवल इतनैंमात्ररूपोंकूंहीं तूं देखणेयोग्यनहींहैं ॥ किंतु यहस्थावरजंगमरूपसर्वजगतहीं हमारेदेहविषेस्थितहुआतूंदेख ॥ इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) इहैकस्थंजगत्कृत्स्नंपश्याद्यसचराचरम् ॥ ममदेहेगुडाकेशयच्चान्यद्द्रष्टुमिच्छसि ॥ ७ ॥ इह । एकस्थम् । जगत् । कृत्स्नम् । पश्य । अद्य । सचराचरम् । मम । देहे । गुडाकेश । यत् । च । अन्यत् । द्रष्टुम् । इच्छसि ॥ ७ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥

हेअर्जुन हमारे इस देहविषे एकअवयवविषेस्थित जंगमस्थावरसहित समस्त जगतकूं तूं आज देख तथा जो कोई अन्यभीजय पराजयादिक देखणेकूं इच्छाकरताहैं सोभीदेख ॥ ७ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेगुडाकेश अर्थात् हेनिद्राकूंजयकरणेहारा अर्जुन ॥ इसहमारेदेहविषे किसीएक नखकेअग्रमात्ररूपअवयवविषेस्थित इसस्थावरजंगमसहित समग्र जगत्कूं तूं अबी देख ॥ जोसर्वजगत् तिसतिसस्थानविषेभ्रमणकरिकै शतकोटीवर्षपर्यंतभी देखणेकूंअशक्यहै ॥ तिससर्वजगत्कूं तूं अबी एकत्रस्थितहुआहीं देख ॥ हेअर्जुन जोकोई अन्यभी जयपराजयादिकोंकेदेखणेकीइच्छाकरताहोवैं ॥ तिनजयपराजयादिकोंकूंभी तूं आपणेसंशयकीनिवृत्तिकरणेवासतै इसहमारे देहविषेदेख इति ॥ ८ ॥ ❋ ॥ तहां (मन्यसेयदितच्छक्यंमयाद्रष्टुमितिप्रभो) ॥ अर्थयह ॥ सोआपकाऐश्वररूप मैंअर्जुननें देखणेकूंशक्यहै इसप्रकार जो आप मानतेहोवे तौं सोरूप हमारेकूंदिखावो ॥ यहजोवचन पूर्व अर्जुननें श्रीभगवान्‌केप्रति कथनकऱ्याथा ॥ तिसरूपकेदेखणेविषे श्रीभगवान् अब किंचित् विशेषता कथनकरेहै ॥

(मू०श्लो०) नतुमांशक्यसेद्रष्टुमनेनैवस्वचक्षुषा ॥ दिव्यंददामितेचक्षुःपश्यमेयोगमैश्वरम् ॥ ८ ॥ न । तु । मां । शक्यसे । द्रष्टुम् । अनेन । एव । स्वचक्षुषा । दिव्यं । ददामि । ते । चक्षुः । पश्य । मे । योगम् । ऐश्वरम् ॥ ८ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन तूं पुनः इस आपणीचक्षुकरिकै दिव्यरूपमैंपरमेश्वरकूं कदाचित्भी देखणेकूं नहीं समर्थहैं इसकारणतैं मैंपरमेश्वर तुमारेतांई दिव्य चक्षु देताहूं तिसदिव्यचक्षुकरिकै मैंपरमेश्वरके ऐश्वर्यरूप योगकूं तूंदेख ॥ ८ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन यहस्वभावतैंसिद्ध जोतुमाराप्राकृतचक्षुहै ॥ इसप्राकृतचक्षुकरिकै दिव्यरूपवालेमैंपरमेश्वरके देखणेकूं तूं कदाचित्भी समर्थनहींहै ॥ शंका ॥ हेभगवान् तबी मैंअर्जुन तिसतुमारेस्वरूपकूं कैसेदेखसकउगा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहेहै (दिव्यमिति) हेअर्जुन मैंपरमेश्वरके तिसदिव्यरूपकेदेखणेविषेसमर्थ ऐसी दिव्य कहिये अप्राकृतचक्षुकूं मैंपरमेश्वर तुमारेतांई देताहूं ॥ तिसदिव्यचक्षुकरिकै तूं अर्जुन मैंपरमेश्वरकेयोगकूं अर्थात् नबनतेहुएअर्थ केबनावनेकीसामर्थ्यतारूपयोगकूं देख ॥ कैसाहैसोयोग ऐश्वरहै ॥ अर्थात् मैंईश्वरकाहीं असाधारणधर्महै ॥ अन्यकिसीविषे सोयोग रहतानहीं ॥ ईहां किसी पुस्तकविषे (नतुमांशक्ष्यसे) इसप्रकारकाभी पाठहोवैहै ॥ तापाठका यहअर्थकरणा ॥ तूं अर्जुन इसचक्षुकरिकै दिव्यरूपवालेमैंपरमेश्वरकेदेखणेकूं समर्थ नहींहोवैगा इति ॥ ८ ॥ ❋ ॥ तहां श्रीभगवान् अर्जुनकेतांई सोआपणादिव्यरूप दिखावताभया ॥ तिसरूपकूंदेखिकै अत्यंतविस्मयकूंप्राप्तहुआ सोअर्जुन श्रीभगवान्‌के प्रति सोदेख्याहुआदिव्यरूप कथनकरताभयाइसवृत्तांतकूं (एवमुक्त्वा) इत्यादिकषट्श्लोकोंकरिकै धृतराष्ट्रकेप्रति संजयकहेहै ॥

(मू०श्लो०) संजयउवाच ॥ एवमुक्त्वाततोराजन्महायोगेश्वरोहरिः ॥ दर्शयामासपार्थायपरमंरूपमैश्वरम् ॥ ९ ॥ एवम् । उक्त्वा ।

ततः । राजन् । महायोगेश्वरः । हरिः । दर्शयामास । पार्थाय । परमं । रूपम् । ऐश्वरम् ॥ ९ ॥ (इतिपदच्छेदः)॥हेधृतराष्ट्र सोम हानेंयोगेश्वर कृष्णभगवान् इसंप्रकारकावचन कहिकै तिसतैंअनंतर अर्जुनकेताईं आपणे दिव्य ऐश्वर रूपकूं दिखावताभया ॥ ॥ ९ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेधृतराष्ट्र सोमहायोगेश्वरहरि अर्थात् सर्वतैं उत्कृष्ट तथासर्वयोगिजनोंकाईश्वर तथाआपणे भक्तजनोंकेसर्वक्लेशोंकूंहरणकरणेहारा कृष्णभगवान् ॥ इसप्राकृत चक्षुकरिके तूं अर्जुन दिव्यरूपमैंपरमेश्वरकूं नहींदेखसकैंगा यातैं मैं तुमारेकूं दिव्यचक्षु देताहूं याप्रकारकावचन तिसअर्जुनकेप्रति कहिके ॥ तिस दिव्यचक्षुकेदेणतैंअनंतर तिसअनन्यभक्तअर्जुनकेताईं देखणेविषेअशक्यभीआपणेदिव्यऐश्वररूपकूं दिखावताभया इति ॥ ९ ॥ ❀ ॥ अब तिसदिव्यरूपकूं अनेकविशेषणोंकरिकैयुक्त कथनकरेहैं ॥

(मू० श्लो०) अनेकवक्त्रनयनमनेकाद्भुतदर्शनम् ॥ अनेकदिव्याभरणंदिव्यानेकोद्यतायुधम् ॥ १० ॥ अनेकवक्त्रनयनम् । अनेका द्भुतदर्शनम् । अनेकदिव्याभरणं । दिव्यानेकोद्यतायुधम् ॥ १० ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेराजन् अनेकहैंमुखतथानेत्रजिसविषे तथा अनेकअद्भुतवस्तुवोंकाहै दर्शनजिसविषे तथा अनेक भूषणहैं जिसविषे तथा दिव्यअनेक उठाएहुएहैंआयुधजिसविषे ऐसेरूपकूं सोभगवान् दिखावताभया ॥ १० ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेराजन् अनेकहैंमुख तथानेत्र जिसरूपविषे ॥ तथा विस्मयकीप्राप्तिकरणेहारे अनेकवस्तुवोंकाहैदर्शन जिसरूपविषे ॥ तथा अनेकदि व्यभूषणहैं जिसरूपविषे ॥ तथा उठाएहुएहैंचक्रगदाआदिकदिव्यआयुधजिसस्वरूपविषे ॥ ऐसेस्वरूपकूं सोकृष्णभगवान् तिसअर्जुनकेताईं दिखावताभया इति ॥ १० ॥ ❀ ॥ किंच ॥

(मू० श्लो०) दिव्यमाल्यांबरधरंदिव्यगंधानुलेपनम् ॥ सर्वाश्चर्यमयंदेवमनंतंविश्वतोमुखम् ॥ ११ ॥ दिव्यमाल्यांबरधरं । दिव्यगं धानुलेपनं । सर्वाश्चर्यमयं । देवम् । अनंतं । विश्वतोमुखम् ॥ ११ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेराजन् दिव्यमालातथावस्त्रधारणकरेहैं जिसनें तथा दिव्यगंधवालेवस्तुवोंकाहैलेपनजिसविषे तथासर्वआश्चर्यमय तथाप्रकाशरूप तथाअपरिच्छिन्न तथा सर्वओरतैंहैंमुख जिसविषे ऐसेरूपकूं दिखावताभया ॥ ११ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेराजन् पुष्पमय तथारत्नमय ऐसीजेदिव्यमालाहैं ॥ तिनदिव्यमालावोंकूं धारणकऱ्याहैजिसनैं ॥ तथा पीतांबरादिकदिव्यवस्त्रोंकूं धारणकऱ्याहै जिसनैं ॥ तथा दिव्यगंधवालेकर्पूरचंदनादिकोंकाहैलेपन जिसविषे ॥ तथा सर्वाश्चर्यमयहै ॥ अर्थात् तेजबल वीर्यशक्ति रूप गुण अवयव अवस्थान इत्यादिक सर्वविशेषोंकरिकै अनेकअद्भुत रूपोंवालाहैं ॥ पुनःकैसाहैसोरूप देवहैं ॥ अर्थात् प्रकाशस्वरूपहै ॥ पुनःकैसाहैसोरूप अनंतहै ॥ अर्थात् देशकालवस्तुपरिच्छेद तैंरहितहै ॥ पुनः कैसाहैसोरूप विश्वतोमुखहै अर्थात् सर्वओरतैंहैंमुखजिसविषे ॥ ऐसेआपणेस्वरूपकूं श्रीभगवान् ताअर्जुनकेप्रति दिखावताभया ॥ इसप्रकारतैं पूर्वअष्टमेश्लोकविषेस्थित (दर्शयामास) इसपदकेसाथि इनदोनोंश्लोकोंका अन्वयकरणा ॥ अथवा अर्जुनोददर्श इसपदकाअध्याहारकरिकै इनदोनोंश्लोकोंका अन्वयकरणा ॥ अर्थात् ऐसेस्वरूपकूं सोअर्जुन देखताभया इति ॥ ११ ॥ ❀ ॥ तहां पूर्वश्लोकविषे तिसविश्वरूपका (देवं) यहविशेषण कथनकऱ्या था ॥ अब तिसिविशेषणका इसश्लोकविषे विस्तारतैंवर्णनकरेहैं ॥

(मू० श्लो०) दिविसूर्यसहस्रस्यभवेद्युगपदुत्थिता ॥ यदिभाःसदृशीसास्याद्भासस्तस्यमहात्मनः ॥ १२ ॥ दिवि । सूर्यसहस्रस्य । भवेत् । युगपत् । उत्थिता । यदि । भाः । सदृशी । सा । स्यात् । भासः । तस्य । महात्मनः॥१२॥ (इतिप०) ॥ हेराजन् आकाशविषे एकहींकालमैं जबी सहस्रसूर्यकी प्रभा उत्थितहुई होवै तबी साप्रभा तिस विश्वरूपकी प्रभाके तुल्य होवै ॥ १२ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेराजन् आकाशविषे सहस्रसूर्यकी अर्थात् एकहींकालविषेउदयहुए अपरिमितसूर्योंकेसमूहकी एकहींकालविषे जोकदाचित् प्रभा उत्थित हुईहोवै है तौं साप्रभा तिसविश्वरूपकीप्रभाकेतुल्यहोवै ॥ अथवानहींभीतुल्यहोवे ॥ और मैंतौं यहमानताहूं ॥ तिनसूर्योंकीप्रभातैंभी ताविश्वरूपकीप्रभा अत्यंतउत्कृष्टहै॥ इसतैंपरेदूसरीकोईउपमाहैनहीं ॥ तहां एकहींकालविषे अपरिमितसूर्योंका उदयहोणाहीं संभवतानहीं ॥ यातैं यहउपमा अभूतउपमाहैं ॥ ताअभूतउपमाकरिकै यहअर्थ सूचनाकऱ्या ॥ सर्वप्रकारतैं ता विश्वरूपके प्रभाकीउपमासंभवतीनहीं इति ॥ १२ ॥ ❀ ॥ तहांपूर्व (इहैकस्थंजगत्कृत्स्नंपश्याद्यसचराचरम्) इसवचनकरिकै श्रीभगवान्नैं अर्जुनकेप्रति आपणे देहकेकिसिअवयवविषे सर्वजगत्केदेखणेकीआज्ञाकरीथी ॥ सोअर्जुन तिसअर्थकूंभी अनुभवकरताभया ॥ यहवार्ताभी संजय धृतराष्ट्रकेप्रति कथनकरेहैं ॥

(मू० श्लो०) तत्रैकस्थंजगत्कृत्स्नंप्रविभक्तमनेकधा ॥ अपश्यद्देवदेवस्यशरीरेपांडवस्तदा ॥ १३ ॥ तत्र । एकस्थं । जगत् ।

कृत्स्नं। प्रविभक्तम्। अनेकधा। अपश्यत्। देवदेवस्य। शरीरे। पांडवः। तदा ॥१३॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेराजन् तिसकाल विषे सोअर्जुन देवतावोंकरिकैपूज्यभगवान्के तिस विश्वरूपशरीरविषे किसीएकदेशविषेस्थित अनेकप्रकारकरिकै भिन्नभिन्न सर्व जगत्कूं देखताभया ॥ १३ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेराजन् जिसकालविषे श्रीभगवान्नैं अर्जुनकेप्रति आश्चर्यमय विश्वरूप दिखाया ॥ तिसकालविषे सोअर्जुन इंद्रादिकसर्वदेवतावोंकरिकै पूज्यभगवान्के तिसविश्वरूपशरीरविषे किसीएकअवयवविषे सर्वजगत्कूं देखताभया ॥ कैसाहैसोजगत् ॥ देव पितर मनुष्य इत्यादिकअनेकप्रकारोंकरिकै भिन्नभिन्नहै इति ॥ १३ ॥ ❀ ॥ हेधृतराष्ट्र इसप्रकार अद्भुतविश्वरूपकेदर्शनहुएभी सोअर्जुन भयकूंनहींप्राप्तहोताभया ॥ तथा तिसरूपकूंदेखिकै सोअर्जुन आपणेनेत्रोंकूंभी नहीं मूंदताभया ॥ तथा संभ्रमकेवशतैं सोअर्जुन तिसकालविषे अवश्यकर्त्तव्यअर्थकूं विस्मरणभीनहींकरताभया ॥ तथा भयभीतहोइकै सोअर्जुन तिसदेशतैं भागताभीनहींभया ॥ किंतु महान्चित्तक्षोभकेप्राप्तहुएभी अत्यंतधैर्यवालाहोणेतैं सो अर्जुन तिसकालविषे उचितव्यवहारकूंहीं करताभया ॥ यहसर्वअर्थ संजय धृतराष्ट्रकेप्रति कथनकरैहै ॥

(मू० श्लो०) ततःसविस्मयाविष्टोहृष्टरोमाधनंजयः ॥ प्रणम्यशिरसादेवंकृतांजलिरभाषत ॥ १४॥ ततः। सः। विस्मयाविष्टः। हृष्टरोमा। धनंजयः। प्रणम्य। शिरसा। देवं। कृतांजलिः। अभाषत॥१४॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेधृतराष्ट्र तिसतैं अनंतर विस्मयकरिकैव्याप्तहुआ तथापुलकितरोमांचवालाहुआ सो धनंजय तिसनारायणदेवकूं आपणेमस्तककरिकै नमस्कारकरिकै आपणे दोनोंहस्तजोडिकै यहवचनकहताभया॥ १४ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेराजन् युधिष्ठिरराजाकेराजसूययज्ञवासतै सर्वराजोंकूंजीतिकै सोअर्जुन धनकूंलेआवताभयाहै ॥ यातैंताअर्जुनकूं धनंजयकहैहै ॥ तथा सोअर्जुन साक्षात् महादेवकेसाथिभी युद्धकरताभयाहै ॥ ऐसा अत्यंतप्रसिद्धपराक्रमवाला तथाअग्निकीन्यांई अत्यंततेजस्वी तथाअत्यंतधैर्यवान् सोअर्जुन तिसविश्वरूपकेदर्शनतैंअनंतर विस्मय करिकैआविष्टहुआ ॥ अर्थात् तिसअद्भुतरूपकेदर्शनतैंउत्पन्नभयाजो चित्तकाकोईअलौकिकचमत्काररूपविस्मयहै ताविस्मयकरिकै व्याप्तहुआ ॥ इसीकारणतेहीं हृष्टरोमाहुआ ॥ अर्थात् ताविस्मयकरिकैं पुलकितहुएहैंसर्वशरीरकेरोमांचजिसके ॥ ऐसासोअर्जुन तिसविश्वरूपकेधारण करणेहारेनारायणदेवकूं भूमिविषेलगायेहुएआपणेमस्तककरिकै अत्यंतश्रद्धाभक्तिपूर्वक नमस्कारकरिकै तथाआपणेदोनोंहस्तोंकूंजोडिकै इसवक्ष्यमाणवचनकूं कह

ताभया इति ॥ १४ ॥ ❀ ॥ तहां श्रीभगवान्नैं हमारेप्रति जोविश्वरूप दिखायाहै ॥ सोविश्वरूप यद्यपि सर्वलोकोंकरिकै देखणेकूंअशक्यहै तथापि श्री भगवान्नैं प्राप्तकऱ्येहुएदिव्यचक्षुकरिकै मैंअर्जुन तिसविश्वरूपकूं प्रत्यक्षदेखताहूं ॥ यातैं हमारेकोई अहोभाग्यहैं ॥ इसप्रकार आपणेअनुभवकूंप्रगटकरताहुआ सोअर्जुन श्रीभगवान्केप्रति कहेहै ॥

(मू० श्लो०) अर्जुनउवाच ॥ पश्यामिदेवांस्तवदेवदेहेसर्वांस्तथाभूतविशेषसंघान् ॥ ब्रह्माणमीशंकमलासनस्थमृषींश्चसर्वानुरगांश्च दिव्यान् ॥ १५ ॥ पश्यामि । देवान् । तव । देव । देहे । सर्वान् । तथा । भूतविशेषसंघान् । ब्रह्माणम् । ईशं । कमलासनस्थम् । ऋषीन् । च । सर्वान् । उरगान् । च । दिव्यान् ॥ १५ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेदेव तुमारे इसविश्वरूपदेहविषे मैंअर्जुन सर्व देवतावोंकूं देखताहूं तथा स्थावरजंगमरूपभूतोंकेसमूहकूं देखताहूं तथा कमलरूपआसनविषेस्थित सर्वकेनियंता चतुर्मुखब्रह्माकूं देखताहूं तथा सर्व ऋषियोंकूं देखताहूं तथा दिव्य सर्पोंकूं देखताहूं ॥ १५ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेविश्वरूपकेधारणकरणेहारे नारायणदेव ॥ तुमारेइसविश्वरूपदेहविषे मैंअर्जुन वसु रुद्र आदित्य इत्यादिकसर्वदेवतावोंकूं देखताहूं ॥ अर्थात् इसदिव्यचक्षुजन्यज्ञानकाविषय करताहूं ॥ याप्रकारका (पश्यामि) इसशब्दकाअर्थ आगेभीसर्वपर्यायोंविषेजानिलेणा ॥ तथा इसतुमारेविश्वरूपदेहविषे मैंअर्जुन स्थावरजंगमरूपसर्वभूतोंकेसमूहकूंभी देखताहूं ॥ और सर्वभूतोंकानियंता जोचतुर्मुखब्रह्माहै ॥ जोब्रह्मा कमलरूपआसनविषेस्थितहै ॥ अर्थात् पृथिवीरूपकमलका कर्णिकारूपजोसुमेरुहै तासुमेरुरूपआसनविषेस्थितहै ॥ अथवा विष्णुभगवान्केनाभिकमलरूपआसनविषेस्थितहै ॥ ऐसेचतुर्मुखब्रह्माकूंभी मैंअर्जुन तुमारेइसविश्वरूपदेहविषेदेखताहूं ॥ तथा वसिष्ठतैंआदिलेके जेब्रह्माकेपुत्ररूप नारदसनकादिकऋषिहैं तिनसर्वऋषियोंकूंभी मैं तुमारेइसविश्वरूपदेहविषेदेखताहूं ॥ तथा इसलोकविषेअप्रसिद्ध जेवासुकीआदिकसर्पहैं तिनसर्पोंकूंभी मैंतुमारेइसविश्वरूपदेहविषेदेखता हूं इति ॥ १५ ❀ ॥ तहां जिस भगवान्केविश्वरूपदेहविषे सोअर्जुन इनपूर्वउक्तसर्वपदार्थोंकूं देखताभयाहै ॥ तिसीविश्वरूपदेहकूं सोअर्जुन अब अनेकअद्भुतविशेषणोंकरिकै वर्णनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) अनेकबाहूदरवक्त्रनेत्रंपश्यामित्वांसर्वतोनंतरूपम् ॥ नांतंनमध्यंनपुनस्तवादिंपश्यामिविश्वेश्वरविश्वरूप ॥ १६ ॥ अनेकबाहूदरवक्त्रनेत्रं । पश्यामि । त्वां । सर्वतः । अनंतरूपं । न । अंतं । न । मध्यं । न । पुनः । तव । आदिं । पश्यामि । विश्वेश्वर । विश्वरूप ॥ १६ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेसर्वविश्वकाईश्वर हेसर्वविश्वरूप अनेकहैंबाहूउदरमुखनेत्रजिसविषे तथासर्व

॥१९४॥

वेत्र अनंतहैंरूपजिसके ऐसेतुमारेकूं मैंअर्जुन देखताहुं पुनः तुमारे अंतकूंभी मैं नहीं देखताहूं तथामध्यकूंभीनहीं देखताहूं तथा आदिकूंभी नहींदेखताहूं ॥ १६ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेसर्वविश्वकाईश्वर तथाहेसर्वविश्वरूप श्रीभगवान् ॥ अनेकहैंबाहुजिसविषे तथाअनेकहैंउदरजिसविषे तथाअनेकहैंमुखजिसविषे तथाअनेकहैंनेत्र जिसविषे ऐसेतुमारेविश्वरूपकूं मैंअर्जुन इसदिव्यचक्षुकरिकैदेखताहूं ॥ तथा सर्वत्रअनंतहैंरूपजिसके ऐसेतुमारेकूं मैं देखताहूं ॥ तथा तुमारे अवसानरूपअंतकूंभी मैं देखतानहीं ॥ तथा तुमारे मध्यकूंभी मैं देखतानहीं ॥ तथा तुमारे आदिकूंभी मैं देखतानहीं ॥ काहेतें जोपदार्थ देशकरिकै अथवा कालकरिकै परिच्छिन्न होवैहै ॥ तिसपदार्थकाहीं आदि मध्य अंतहोवेहै ॥ और आपतौं सर्वदेशविषे तथासर्वकालविषे विद्यमानहो ॥ यातैं आपका सोआदिमध्यअंत संभवतानहीं ॥ ईहां (हेविश्वेश्वर हेविश्वरूप) यहजोदोसंबोधन भगवान्के अर्जुननैं कथनकरेहैं ॥ सो तिसकालविषे अतिसंभ्रमतैं कथनकरेहैं इति ॥ १६ ॥ ❀ ॥ अब अर्जुन तिसीविश्वरूपभगवान्कूं अन्यप्रकारतैं अनेकविशेषणोंकरिकैयुक्तकथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) किरीटिनंगदिनंचक्रिणंचतेजोराशिंसर्वतोदीप्तिमंतम् ॥ पश्यामित्वांदुर्निरीक्षंसमंताद्दीप्तानलार्कद्युतिमप्रमेयम् ॥ १७ ॥

किरीटिनम् । गदिनम् । चक्रिणम् । च । तेजोराशिम् । सर्वतः । दीप्तिमंतम् । पश्यामि । त्वाम् । दुर्निरीक्षम् । समंतात् । दीप्तानलार्कद्युतिम् । अप्रमेयम् ॥ १७ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेभगवन् किरीटकूंधारणकरणेहारे तथागदाकूंधारणकरणेहारे तथाचक्रकूं धारणकरणेहारे तथा तेजकासमूहरूप तथासर्वओरतैं प्रकाशमान तथादेखणेकूंअशक्य तथाप्रकाशमानअग्निसूर्यकेप्रभाकीन्यांई प्रभावाले तथाअप्रमेय ऐसेतुमारेकूं मैंअर्जुन सर्वओरतैं देखताहूं ॥ १७ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेभगवन् कैसाहैसोआपकाविश्वरूप ॥ मस्तकऊपरि मुकुटकूंधारणकरणेहाराहै ॥ तथा हस्तोंविषे गदाकूंधारणकरणेहाराहै ॥ तथा चक्रकूंधारण करणेहाराहै ॥ तथा सर्वओरतैं प्रकाशमानहै ॥ तथा सर्वतेजकासमूहरूपहै ॥ इसकारणतैहीं दुर्निरीक्षहै ॥ अर्थात् इसदिव्यचक्षुतैंविना देखणेकूंअशक्यहै ॥ ईहां (दुर्निरीक्ष्यम्) इसप्रकारकाजो मूलश्लोकविषेपाठहोवै ॥ तौं दुःख यहशब्द निषेधकावाचकजानणा ॥ अर्थात् सोआपकास्वरूप नहींदेख्याजावैहै ॥ पुनःकैसाहै सोविश्वरूप ॥ अत्यंतदीप्तिमान्जोअग्निसूर्यहैं ॥ तिनअग्निसूर्यदोनोंकेप्रभाकीन्यांईहै प्रभाजिसकी ॥ तथा अप्रमेयहै ॥ अर्थात् इसप्रकारका यहस्वरूपहै याप्रका रतैं निश्चयकरणेकूंअशक्यहै ॥ ऐसेस्वरूपकूंधारणकरणेहारेतुमारेकूं सर्वओरतैं मैंअर्जुन इसदिव्यचक्षुकरिकैदेखताहूं ॥ यद्यपि (दुर्निरीक्ष्यम्) इसवचनकरिके

अर्जुननैं ताविश्वरूपकेदर्शनकानिषेध कथनकऱ्याथा ॥ और (पश्यामि) इसवचनकरिकै ताविश्वरूपकादर्शन कथनकऱ्याहे ॥ यातैं पूर्वउत्तरवचनकाविरोध प्राप्तहोवैहे ॥ तथापि अधिकारीकेभेदतैं तेदोनोंवचन संभवैहैं ॥ तहां दिव्यचक्षुतैंरहितपुरुषकूंतौ सोविश्वरूपदेखणेकूं अशक्यहे ॥ और दिव्यचक्षुवालेपुरुषकूं सो विश्वरूप देखणेकूं शक्यहे इति ॥ १७ ॥ ❀ ॥ हेभगवन् बुद्धिमान्पुरुषोंकरिकैभी तर्कनाकरणेकूंअशक्य ऐसाजोतुमारा निरतिशयऐश्वर्यहे ॥ ताऐश्वर्यके दर्शनतैंमैंअर्जुन आपपरमेश्वरकूंइसप्रकारका मानताहूं ॥ इसवार्ताकूं अर्जुन कथनकरेहे ॥

(मू०श्लो०) त्वमक्षरंपरमंवेदितव्यंत्वमस्यविश्वस्यपरंनिधानम् ॥ त्वमव्ययःशाश्वतधर्मगोप्तासनातनस्त्वंपुरुषोमतोमे ॥ १८ ॥ त्वम्। अक्षरं। परमं। वेदितव्यं। त्वम्। अस्य। विश्वस्य। परं। निधानं। त्वम्। अव्ययः। शाश्वतधर्मगोप्ता। सनातनः। त्वं। पुरुषः। मतः। मे ॥ १८ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेभगवन् आपहीं परम अक्षरहो तथाआपहीं जाननेयोग्यहो तथाआपहीं इस जगत्का परम आश्रयहो तथाआपहीं अव्ययहो तथाअनादिधर्मकापालकहो तथाआपहीं सनातन परमात्मापुरुष हमारेकूं संमतहो ॥ १८ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेभगवन् । (एतद्वैतदक्षरंगार्गि ।) इत्यादिकश्रुतिनैं अक्षररूपकरिकैप्रतिपादनकऱ्याहुआ तथा । (अव्यक्तात्पुरुषःपरः) इत्यादिकश्रुतिनैं सर्वतैंपर रूपकरिकैप्रतिपादनकऱ्याहुआ जोनिर्गुणब्रह्महै ॥ सोनिर्गुणब्रह्मरूपभी आपहींहो ॥ जिसकारणतैं आप निर्गुणब्रह्मरूपहो ॥ इसकारणतैं आपहीं मुमुक्षुनेंनजौं वेदांतशास्त्रकेश्रवणादिकोंकरिकै जानणेयोग्यहो ॥ तथा आपहीं इससर्वजगत्का परमआश्रयहो ॥ अर्थात् इससर्वकल्पितप्रपंचका अधिष्ठानरूपहो ॥ इसीकारण तैंहीं आप अव्ययहो ॥ अर्थात् नित्यहो ॥ तथा नित्यवेदकरिकैप्रतिपादितहोणेतैं शाश्वतरूपजोवर्णआश्रमकाधर्महे ताधर्मकेभी आपहीं पालनकरणेहारेहो ॥ अथवा (शाश्वत धर्मगोप्ता) यहदोपदजानणे ॥ तहां शाश्वत यहपदतौं श्रीभगवान्कासंबोधनहै ॥ अर्थात् हेशाश्वत हेनित्यरूप ॥ इसपक्षविषे (अव्ययः) इ सपदक विनाशतैंरहित यहअर्थकरणा ॥ इसीकारणतैंहीं जोसनातन परमात्मादेवरूपपुरुषहे ॥ सोपरमात्मापुरुषभीआपकूंहीं मैंमानताहूं इति ॥ १८ ॥ ❀ ॥ किंच ॥

(मू०श्लो०) अनादिमध्यांतमनंतवीर्यमनंतबाहुंशशिसूर्यनेत्रम् ॥ पश्यामित्वांदीप्तहुताशवक्रंस्वतेजसाविश्वमिदंतपंतम् ॥ १९ ॥ अनादिमध्यांतम्। अनंतवीर्यम्। अनंतबाहुं। शशिसूर्यनेत्रम्। पश्यामि। त्वां। दीप्तहुताशवक्रम्। स्वतेजसा। विश्वम्। इदं। तपंतम् ॥१९॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेभगवन् उत्पत्तिस्थितिनाशतैंरहित तथाअनंतहैप्रभावजिसका तथाअनंतहैंबाहुजिसकी तथाचंद्रमासू

यहहैंनेत्र जिसके तथाप्रज्वलितअग्निहैमुखोंविषेजिसके तथाआपणेतेजकरिकै इस सर्वविश्वकूं तपायमानकरणेहारा ऐसेआपकेस्वरूपकूं मैंअर्जुन देखताहूं ॥ १९ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेभगवन् पुनःसोआपकाविश्वरूपकैसाहै ॥ उत्पत्तितैंभीरहितहै ॥ तथा स्थितितैंभीरहितहै ॥ तथा विनाशतैंभीरहितहै ॥ तथा अपरिमितहै वीर्य क्या प्रभाव जिसका ॥ तथा अनंतहैंबाहुजिसकी ॥ ईहां (अनंतबाहुं) यहशब्द मुखादिकसर्वअवयवोंकीअनंतताका उपलक्षणहै ॥ तथा चंद्रमा सूर्य यहदोनोंहैंनेत्र जिसके ॥ तथा प्रज्वलितअग्निहैमुखजिसका ॥ अथवा प्रज्वलितअग्निहैमुखोंविषेजिसके ॥ तथा आपणेतेजकरिकै इससर्वजगत्कूं तपायमानकरणेहाराहै ॥ ऐसे तुमारेइसविश्वरूपकूं मैंअर्जुन इसदिव्यचक्षुकरिकैदेखताहूं इति ॥ १९ ॥ अब अर्जुन तिस भगवान्केविश्वरूपकी सर्वत्रव्यापकताकूं कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) द्यावापृथिव्योरिदमंतरंहिव्याप्तंत्वयैकेनदिशश्चसर्वाः ॥ दृष्ट्वाद्भुतंरूपमुग्रंतवेदंलोकत्रयंप्रव्यथितंमहात्मन् ॥ २० ॥

द्यावापृथिव्योः । इदम् । अंतरं । हि । व्याप्तं । त्वया । एकेन । दिशः । च । सर्वाः । दृष्ट्वा । अद्भुतं । रूपम् । उग्रं । तव । इदं । लोकत्रयं । प्रव्यथितं । महात्मन् ॥ २० ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेमहात्मन् तैं एकनैं हीं स्वर्गपृथिवीके मध्यमें यहअंतरिक्ष व्याप्तकऱ्याहै तथा सर्व दिशा व्याप्तकरीहैं तुमारे इस अद्भुत उग्र रूपकूं देखिकै तीनंलोक अत्यंतभययुक्तहुएहैं ॥ २० ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेमहात्मन् अर्थात् हेसाधुपुरुषोंकूंअभयकीप्राप्तिकरणेहारा विश्वरूपभगवान् ॥ स्वर्ग पृथिवी इनदोनोंकेमध्यविषेस्थित जोयहअंतरिक्षलोकहै ॥ सोअंतरिक्ष तैंएकपरमेश्वरनैंहीं व्याप्तकऱ्याहै ॥ तथा पूर्वपश्चिमादिक सर्वदिशाभी तैं विश्वरूपनैंहीं व्याप्तकऱ्याहैं ॥ ईहां अंतरिक्षका तथादिशावोंका ग्रहण स्थावरजंगमरूपसर्वविश्वका उपलक्षणहै ॥ अर्थात् यहस्थावरजंगमरूपसर्वविश्व तैंविश्वरूपपरमेश्वरनैंहीं व्याप्तकऱ्याहै ॥ और जोवस्तु जिसनैं व्याप्तकरीताहै ॥ सो वस्तु तिसकास्वरूपहींहोवेहै ॥ जैसे मृत्तिकानैं व्याप्तकऱ्येहुए घटशरावादिककार्य मृत्तिकास्वरूपहींहोवेहैं ॥ तैसे तैंपरमेश्वरनैं व्याप्तकऱ्याहुआ यहसर्वविश्व तुमाराहींस्वरूपहै ॥ अर्थात् सर्वविश्वरूप तूंहींहै ॥ तहांश्रुति (ब्रह्मैवेदंसर्वम्) ॥ अर्थयह ॥ यहसर्वजगत् ब्रह्मरूपहींहै इति ॥ हेभगवन् तुमारे इसविश्वरूपकूंदेखिकै तीनलोक भयकरिकैं अत्यंतव्यथाकूंप्राप्तहोतेभयेहैं ॥ अब ताविश्वरूपकेदर्शनविषे भयकीहेतुतासिद्धकरणेवासतै ताविश्वरूपके हेतुगर्भितदोविशेषणोंकूं अर्जुन कथनकरेहै (अद्भुतम् उग्रम् इति) हेभगवन् कैसाहैसोतुमाराविश्वरूप अद्भुतहै॥अर्थात् आपणेदर्शनतैं अत्यंतविस्मयकीप्राप्तिकरणेहाराहै ॥ पुनःकैसाहै सोरूप

उग्रहै ॥ अर्थात् महान्तेजस्वीहोणेतैं अत्यंतदुःखकरिकेजान्याजावैहै ॥ यातैं हेभगवन् अबी इसआपकेविश्वरूपकूं अंतरधानकरौ इति ॥ २० ॥ ❀ ॥ अब मैंपरमेश्वरहीं सर्वपृथिवीकेभारकासंहारकरणेहाराहूं याप्रकारतैं आपणेविषे सर्व पृथिवीकेभारकासंहारकरतापणेकूंप्रगटकरणेहारेभगवान्कूंदेखिकै सोअर्जुन कहेहै॥

(मू॰ श्लो॰) अमीहित्वासुरसंघाविशंतिकेचिद्भीताःप्रांजलयोगृणंति ॥ स्वस्तीत्युक्त्वामहर्षिसिद्धसंघाःस्तुवंतित्वांस्तुतिभिः पुष्कलाभिः ॥ २१ ॥ अमी । हि । त्वां । सुरसंघाः । विशंति । केचित् । भीताः । प्रांजलयः । गृणंति । स्वस्ति । इति । उक्त्वा । महर्षिसिद्धसंघाः । स्तुवंति । त्वां । स्तुतिभिः । पुष्कलाभिः ॥२१॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेभगवन् यह देवतावोंकेसमूह तुमारेप्रति हि प्रवेशकरेहैं तथाकइकपुरुष भयकूंप्राप्तहुए दोनोंहाथोंकूंजोडिकै स्तुतिकरेहैं तथा महाऋषिसिद्धपुरुष ईसजगत्कास्वस्तिहोवो ईसप्रकारकावचन कहिकै तैंपरमेश्वरकी परिपूर्णअर्थकेबोधक वचनोंकरिकै स्तुतिकरेहैं ॥ २१ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ भगवन् पृथिवीकेभारकेउत्तारणेवासतै मनुष्यरूपकरिकैअवतारकूंप्राप्तहुए तथादुष्टजनोंकेविनाशकरणेवासतै युद्धकूंकरतेहुए जेयह वसु आदित्य इत्यादिकदेवतावोंकेसमूहहैं ॥ तेसर्वदेवगण तुमारेविषेहीं प्रवेशकरतेहुए हमारेकूं देखणेमैंआवैहैं ॥ ईहां (त्वा असुरसंघाः) याप्रकारका पदच्छेदकरिकै इसवचनका यहदूसराभीअर्थकरणा ॥ असुरोंकाअंशरूपहोणेतैं असुररूप जेयह दुर्योधनादिकहैं ॥ जेदुर्योधनादिरूपअसुरगण इसपृथिवीविषेभाररूपहै ॥ ऐसेदुर्योधनादिक असुरगण दुष्टअदृष्टोंकरिकैप्रेरणाकरेहुए आपणेमरणवासतै तुमारेविषे प्रवेशकरेहैं ॥ जैसे पतंग आपणेमरणवासतै अग्निविषे प्रवेशकरेहैं ॥ तथा दोनोंसैनावोंके मध्यविषे केईकपुरुष भीतहुए अर्थात् भागणेविषेभीअसमर्थहुए आपणेदोनोंहाथजोडिकै दूरतैंहीं तुमारीस्तुतिकरेहैं ॥ इसप्रकारतैं महान्युद्धकेप्राप्तहुए उत्पातादिकोंकेनिमित्तोंकूंदेखिकै इससर्वविश्वका स्वस्तिहोवो अर्थात् रक्षणहोवो इसप्रकारकेवचनोंकूंकहिकै नारदादिकसर्वमहाऋषि तथाकपिलादिकसर्वसिद्ध युद्धकेदेखणेवासतै तहांआयेहुए सर्वविश्वकेविनाशकेनिवृत्तकरणेवासतै परिपूर्णअर्थकेबोधक तथागुणोंकीउत्कृष्टताकूंप्रतिपादनकरणेहारे ऐसेवचनोंकरिकै आपपरमेश्वरकी स्तुतिकूंकरेहैं इति ॥ २१ ॥ ❀ ॥ किंच ॥

(मू॰ श्लो॰) रुद्रादित्यावसवोयेचसाध्याविश्वेऽश्विनौमरुतश्चोष्मपाश्च ॥ गंधर्वयक्षासुरसिद्धसंघावीक्षंतेत्वांविस्मिताश्चैवसर्वे ॥ २२ ॥ रुद्रादित्याः । वसवः । ये । च । साध्याः । विश्वे । अश्विनौ । मरुतः । च । ऊष्मपाः । च । गंधर्वयक्षासुरसिद्धसंघाः । वीक्षंते । त्वाम् । विस्मिताः । च । एव । सर्वे ॥ २२ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेभगवन् जे रुद्रआदित्यहैं तथावसुहैं तथा

साध्यहैं तथाविश्वे देवहैं तथाअश्विनीकुमारहैं तथा मरुतहैं तथा ऊष्मपाहैं तथागंधर्वयक्षअसुरसिद्धोंकेसमूहहैं तेसर्वे हीं तुमारेकूं देखतेहैं तथा विस्मयकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ २२ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेभगवन् रुद्रहैनामजिनोंका ऐसाजो देवतावोंकासमूहहै ॥ तथा आदित्यहैनामजिनोंका ऐसाजो देवतावोंकासमूहहै ॥ तथा वसुहैनामजिनोंका ऐसाजो देवतावोंकासमूहहै ॥ तथा साध्यहैनामजिनोंका ऐसाजो देवतावोंकासमूहहै॥ तथा विश्वहैनामजिनोंका ऐसाजो देवतावोंकासमूहहै ॥ तथा दोनों अश्विनीकुमारजोहैं ॥ तथा मरुत्हैनामजिनोंका ऐसेजे ओगणपंचास देवताविशेषहैं ॥ तथा ऊष्मपाहै नामजिनोंका ऐसाजो पितरोंकासमूहहै ॥ जेपितर (ऊष्मभागाहि पितरः) इसश्रुतिविषे ऊष्मपानामकरिकेकथनकरेहैं ॥ तथा गंधर्वोंकेजोसमूहहैं ॥ तथा यक्षोंकेजोसमूहहैं ॥ तथा असुरोंकेजोसमूहहैं॥ तथा सिद्धोंकेजोसमूहहैं ॥ यहपूर्वउक्तसर्वहीं तैंविश्वरूपवालेपरमेश्वरकूं देखतेहैं ॥ तिसअद्भुतरूपकेदर्शनतैंअनंतर तेसर्वहीं विस्मयकूंप्राप्तहोवैहैं इति ॥ २२ ॥ ❀ ॥ तहांपूर्व वीसमेंश्लोकविषे (लोकत्रयं प्रव्यथितंमहात्मन्) इसवचनकरिकै ताविश्वरूपकेदर्शनतैं तीनलोकोंकूं भयकीप्राप्ति कथनकरीथी॥ अब तिसपूर्वउक्तअर्थका उपसंहारकरेहैं ॥

(मू० श्लो०) रूपंमहत्तेबहुवक्त्रनेत्रंमहाबाहोबहुबाहूरुपादम् ॥ बहूदरंबहुदंष्ट्राकरालंदृष्ट्वालोकाःप्रव्यथितास्तथाहम्॥ २३ ॥ रूपं । महत् । ते । बहुवक्त्रनेत्रं । महाबाहो । बहुबाहूरुपादं । बहूदरं । बहुदंष्ट्राकरालं । दृष्ट्वा । लोकाः । प्रव्यथिताः । तथा । अहम् ॥ २३ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेमहाबाहुवालेभगवन् अत्यंतमहान् तथाबहुतहैंमुखनेत्रजिसविषे तथाबहुतहैंबाहूऊरुपाद जिसविषे तथाबहुतहैंउदरजिसविषे तथाबहुतदंष्ट्रावोंकरिकै अतिभयानक ऐसे तुमारे इसविश्वरूपकूं देखकैं सर्वप्राणी तथा मैंअर्जुन व्यथाकूं प्राप्तहोतेभयेहैं ॥ २३ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेमहान्भुजावालेविश्वरूपभगवान् ॥ तुमारे इसअद्भुतविश्वरूपकूंदेखिकै सर्वप्राणीभयकरिकै अतिव्यथाकुंप्राप्तहोतेभयेहैं ॥ तथा मैंअर्जुनभीतारूपकूंदेखिकै भयकरिकै अतिव्यथाकूंप्राप्तहोताभयाहूं ॥ कैसाहैसोतुमारा विश्वरूप महत्है ॥ अर्थात् अत्यंतमहत्परिमाणवालाहै ॥ पुनःकैसाहैसोतुमारारूप ॥ बहुतहैं मुखजिसविषे ॥ तथा बहुतहैंनेत्रजिसविषे ॥ तथाबहुतहैंभुजाजिसविषे ॥ तथा बहुतहैंऊरुजिसविषे ॥ तथा बहुतहैंपादजिसविषे ॥ तथा बहुतहैंउदरजिसविषे ॥ तथा जोरूप बहुतदंष्ट्रावोंकरिकै अत्यंतभयानकहै ॥ ऐसेआपकेरूपकेदेखणेमात्रतैंहीं हमारेसहित सर्वप्राणी भयकरिकैपीडितहोतेभयेहैं इति ॥ २३ ॥
❀ ॥ अब अर्जुन तापरमेश्वरके विश्वरूपविषे शोभायमानपणा स्पष्टकरिकैनिरूपणकरेहैं ॥

(मू० श्लो०) नभःस्पृशंदीप्तमनेकवर्णंव्यात्ताननंदीप्तविशालनेत्रम् ॥ दृष्ट्वाहि त्वांप्रव्यथितांतरात्माधृतिंनविंदामिशमंचविष्णो ॥२४॥ नभःस्पृशं । दीप्तं । अनेकवर्णं । व्यात्ताननं । दीप्तविशालनेत्रं । दृष्ट्वा । हि । त्वां । प्रव्यथितांतरात्मा । धृतिं । न । विंदामि शमं । च । विष्णो ॥२४॥(इतिपदच्छेदः)॥हेविष्णुभगवन् संपूर्णआकाशविषेव्यापक तथाअत्यंतप्रज्वलित तथाअनेकहैंवर्णजिस विषे तथाविस्फारितहैंमुखजिसविषे तथाप्रज्वलितविशालहैंनेत्रजिसविषे ऐसेतुमारेकूं देखके हीं व्यथाकूं प्राप्तहुआहै मनजिसका ऐसामैंअर्जुन धैर्यकूं तथा शमकूं नहीं प्राप्तहोताहूं ॥ २४ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेविष्णु अर्थात् हेसर्वत्रव्यापकभगवन्॥ मैंअर्जुन तुमारेकूंदेखिकै भयकरिकै केवल व्यथामात्रकूंहीं नहींप्राप्तभयाहूं ॥ किंतुभयकरिकैअत्यंतव्यथाकूं प्राप्तहुआहै अंतरात्मा क्या मन जिसका ऐसामैंअर्जुन तुमारेकूंदेखिकरिकैहीं धृतिकूंभी नहींप्राप्तहोताहूं ॥ अर्थात् देहइंद्रियादिकसंघातकेधारणकरणेका सामर्थ्यरूपधैर्यकूंभी नहींप्राप्तहोताहूं ॥ तथा मनकीस्थिरतारूपशमकूंभी नहींप्राप्तहोताहूं ॥ कैसाहैसोआपकास्वरूप ॥ इससंपूर्णआकाशरूपअंतरिक्षलोकविषे व्याप्तहोइरह्याहै अथवा आकाशकीन्यांई सर्वपदार्थोंकूं स्पर्शकरिरह्याहै ॥ पुनःकैसाहैसोआपकास्वरूप दीप्तहै ॥अर्थात् महान् अग्निकीन्यांई अत्यंतप्रज्वलितहै ॥ पुनः कैसाहैसोस्वरूप ॥ अनेकवर्णहै ॥ अर्थात् भयकीप्राप्तिकरणेहारेअनेकरूपोंकरिकैयुक्तहै ॥ पुनःकैसाहैसोस्वरूप ॥ विस्फारितहुएहैंमुखजिसविषे ॥ अर्थात् फाड्येहुएहैंमुखजिसनें ॥ पुनःकैसाहैसोस्वरूप ॥ सूर्यमंडलकीन्यांई प्रज्वलित तथाविशाल हैंनेत्रजिसविषे ॥ ऐसेआपकेस्वरूपकूंदेखिकरिकैहीं भयकरिकै व्यथाकूंप्राप्तहुआहैमनजिसका ऐसामैंअर्जुन धृतिकूं तथाशमकूं प्राप्तहोतानहीं ॥ ईहां (हेविष्णो) इससंबोधनकरिकै अर्जुननैं विश्वरूपभगवान्कीव्यापकता कथनकरी ॥ ताकरिकै यहअर्थबोधनकऱ्या ॥ जिसकारणतैं आपविश्वरूप सर्वत्रव्यापकहो ॥ तिसकारणतैं तुमारेकरिकैयुक्त भयानकदेशकूं परित्यागकरिकै मैंअर्जुन अन्यत्रजाणेविषेसमर्थनहींहूं ॥ यातैं यहभयानकविश्वरूप आपनैं अंतर्धानकऱ्याचाहीये इति ॥ २४ ॥ ❀ ॥ अब इसपूर्वउक्तअर्थकूंहीं पुनःदूसरे प्रकारतैं कथनकरताहुआ अर्जुन श्रीभगवान्केप्रसन्नताकी प्रार्थना करैहै ॥

(मू०श्लो०) दंष्ट्राकरालानिचतेमुखानिदृष्ट्वैवकालानलसन्निभानि ॥ दिशोनजानेनलभेचशर्मप्रसीददेवेशजगन्निवास ॥ २५ ॥ दंष्ट्राकरालानि । च । ते । मुखानि । दृष्ट्वा । एव । कालानलसन्निभानि । दिशः । न । जाने । न । लभे । च । शर्म । प्रसीद । देवेश । जगन्निवास ॥ २५ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेभगवन् दंष्ट्रावोंकरिकैभयंकर तथा प्रलयअग्निकेतुल्य तुमारे मुखोंकूं देखकरिकै हीं मैं

अर्जुन दिशावोंकूंभी नहीं जांनताहूं तैंथा सुखकूंभी नहीं प्राप्तहोताहूं यातैं हेदेवेश हेजगन्निवास हमारे ऊपरि प्रसन्नहोवो ॥ २५ ॥
(इतिपदार्थः) ॥

॥टीका॥हेभगवन् दंष्ट्रावोंकरिकैअत्यंतविकरालहोणेतैं भयकीप्राप्तिकरणेहारे तथाप्रलयकालके अग्निकेतुल्य ऐसेजेआपकेमुखहैं तिन आपकेमुखोंविषे यद्यपि मैंअर्जुन प्राप्तहुआनहीं॥ तथापि तिनआपकेमुखोंकूं केवलदेखिकरिकैंहीं भयकेवशतैं मैंअर्जुन पूर्व अपर इत्यादिकभेदकरिकै दिशावोंकूंभी जानतानहीं॥ इसी कारणतैंहीं मैंअर्जुन तुमारेदर्शनहुएभी सुखकूंप्राप्तहोतानहीं॥ यातैं हेदेवेश हेजगन्निवास आप हमारेऊपरि प्रसन्नहोवो॥ जिसकरिकैभयतैंरहितहोइके मैंअर्जुन तुमारेदर्शनजन्यसुखकूं प्राप्तहोवउ ॥ तहां अन्यकिसीकी नहींअपेक्षाकरिकै जोआपेहींप्रकाशमानहोवै ताकानाम देवेशहै ॥ और आपणीसमीपतामात्रतैं जोसर्वकूं चेष्टाकरावै ताकानाम ईशहै ॥ जोदेवहोवै सोईहीं ईशहोवै ताकानाम देवेशहै ॥ अर्थात् स्वप्रकाशरूप सर्वकेप्रेरककानाम देवेशहै॥ अथवा इंद्रादिकसर्वदेवतावोंकाजोईशहोवै ताकानाम देवेशहै॥ और इससर्वजगतका जोनिवासहोवै अर्थात् अधिष्ठानहोवै ताकानाम जगन्निवासहै इति॥ २५॥ ❀ ॥ तहांपूर्व इसएकादशअध्यायके सप्तमेश्लोकविषे (ममदेहेगुडाकेशयच्चान्यद्द्रष्टुमिच्छसि) इसवचनकरिकै श्रीभगवान्नैं अर्जुनकेप्रति यहवार्ता कथनकरीथी ॥ सर्वदा हमारेजयकूं तथादुर्योधनादिकोंकेपराजयकूं देखणाहीं तुमारेकूंइष्टहै ॥ तिसजयपराजयकूंभी तूं इसहमारेदेहविषेहींदेख इति ॥ अब तिसआपणेजयकूं तथादुर्योधनादिकोंकेपराजयकूंभी मैंदेखताहूं इसअर्थकूं अर्जुन पांचश्लोकोंकरिकै कथनकरेहैं ॥

(मू० श्लो०) अमीचत्वांधृतराष्ट्रस्यपुत्राःसर्वेसहैवावनिपालसंघैः ॥ भीष्मोद्रोणःसूतपुत्रस्तथासौसहास्मदीयैरपियोधमुख्यैः ॥
॥ २६ ॥ वक्राणितेत्वरमाणाविशंतिदंष्ट्राकरालानिभयानकानि ॥ केचिद्विलग्नादशनांतरेषुसंदृश्यंतेचूर्णितैरुत्तमांगैः ॥ २७ ॥
अमी ! च । त्वां । धृतराष्ट्रस्य । पुत्राः । सर्वे । सह । एव । अवनिपालसंघैः । भीष्मः । द्रोणः । सूतपुत्रः । तथा । असौ । सह । अस्मदीयैः । अपि । योधमुख्यैः ॥ वक्त्राणि । ते । त्वरमाणाः । विशंति । दंष्ट्राकरालानि । भयानकानि । केचित् । विलग्नाः । दशनांतरेषु । संदृश्यंते । चूर्णितैः । उत्तमांगैः ॥ २६ ॥ २७ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेभगवन् पुनः यह धृतराष्ट्रके दुर्योधनादिकपुत्र सर्व राजावोंकेसमूह सहित हीं अत्यंतशीघ्रतावालेहुएतैं परमेश्वरविषे प्रवेशकरेहैं तथाभीष्म तथाद्रोण तथा यह कर्ण यहतीनों हमारेसंबंधी रूपभी मुख्ययोधावों सहित तुमारेविषेप्रवेशकरेहैं हेभगवन् दंष्ट्रावोंकरिकैविकराल तथा अतिभयानक ऐसेतुमारे मुखोंविषे यहदु

योधनादिकसर्व शीघ्रहीं प्रवेशकरेहैं तहां केईकयोधा चूर्णहुए शिरोंकरिकैविशिष्टहुए दांतोंकीमध्यसंधियोंविषे लग्येहुए देखणे मैंआवैं ॥ २६ ॥ २७ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेभगवन् यह धृतराष्ट्रकेदुर्योधनादिकसर्वपुत्र शल्यराजातैंआदिलैके सर्वराजावोंसहितहीं अत्यंतशीघ्रतातैं तैंपरमेश्वरविषे प्रवेशकरतेहैं ॥ हेभगवन् केवल यहदुर्योधनादिकहीं तुमारेविषे प्रवेशनहींकरते ॥ किंतु सर्वलोकोंनैं अजेयतारूपकरिकैसंभावनाकऱ्याहुआ जोयह भीष्मपितामहहे तथाद्रोणाचार्यहै तथास र्वकालविषे हमाराद्वेषी जोयह सूतपुत्रकर्णहे ॥ यहतीनोंभी हमारेसंबंधीरूप धृष्टद्युम्नादिकमुख्ययोधावोंसहित तैंपरमेश्वरविषे प्रवेशकरेहैं ॥ अब तिसविश्वरूपभग वान्विषे तिनदुर्योधनादिकोंकेप्रवेशकाद्वार कथनकरेहैं (वक्त्राणिइति) हेभगवन् जेआपकेमुख दंष्ट्रावोंकरिकैअत्यंतविकरालहैं ॥ याकारणतैंहीं तेमुख अत्यंतभ यानकहैं ॥ ऐसेआपकेमुखोंविषेहीं यहदुर्योधनादिकसर्व अत्यंतशीघ्रतातैं प्रवेशकरेहैं ॥ तिनप्रवेशकरणेहाऱ्योंविषेभी केईकयोधातो चूर्णभावकूंप्राप्तहुए मस्तकोंकरिकैयुक्तहुए आपकेदांतोंकेमध्यसंधियोंविषे लग्येहुए हमनै देखीतेहैं इति ॥ और किसीटीकाविषेतौं इनदोनोंश्लोकोंकेपदोंकी (अमीधृतराष्ट्रस्यपुत्राः त्वांविशंति भीष्मद्रोणादयःतेवक्त्राणिविशंति) यासप्रकारतैंयोजनाकरिकै यहअर्थ कथनकऱ्याहै ॥ धृतराष्ट्रके अत्यंतपापिष्ठ जेदुर्योधनादिकपुत्रहैं ॥ तेदुर्योधना दिकपापिष्ठतौं तीनलोकरूपशरीरवालेआपपरमेश्वरविषेहीं प्रवेशकरेहैं ॥ अर्थात् तेदुर्योधनादिकआपणेपापकर्मकेअनुसार तैंविश्वरूपभगवान्केपायुस्थानविषे स्थितनरकोंकूंहीं प्राप्तहोवैहैं ॥ और यहभीष्मद्रोणादिकतौं आपपरमेश्वरकेभक्तहैं ॥ यातैं ॥ यहभीष्मादिकतौं आपपरमेश्वरके जिनमुखोंतैं अग्नि ब्राह्मण देवता उ त्पन्नहुएहैं ॥ तिनमुखोंविषेहीं प्रवेशकरेहैं ॥ इसप्रकार दुर्योधनादिकोंके तथाभीष्मादिकोंके गतिकीविलक्षणताकेबोधनकरणेवासतै इसप्रकारतैंपदोंकाअन्व यकरणा युक्तहे ॥ इति ॥ २६ ॥ २७ ॥ ❀ ॥ तहां पूर्वश्लोकविषे दुर्योधनादिकसर्वराजावोंका भगवान्केमुखोंविषेप्रवेश कथनकऱ्या ॥ सोप्रवेश दोप्रकार काहोवैहै ॥ एकप्रवेशतौं अबुद्धिपूर्वक होवैहे ॥ दूसराप्रवेश बुद्धिपूर्वक होवैहै ॥ तहां नजानिकैजोप्रवेशहे ताकूं अबुद्धिपूर्वकप्रवेशकहेहैं ॥ और जानिकेजोप्रवे शहे ताकूं बुद्धिपूर्वकप्रवेशकहेहैं ॥ तहां भगवान्केमुखोंविषे तिनराजावोंके अबुद्धिपूर्वकप्रवेशविषे अर्जुन दृष्टांतकूंकथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) यथानदीनांबहवोंबुवेगाःसमुद्रमेवाभिमुखाद्रवंति ॥ तथा तवामीनरलोकवीराविशंतिवक्त्राण्यभितोज्वलंति ॥२८॥

यथा । नदीनां । बहवः । अंबुवेगाः । समुद्रम् । एव । अभिमुखाः । द्रवंति । तथा । तव । अमी । नरलोकवीराः । विशंति । वक्त्राणि । अभितः । ज्वलंति ॥ २८ ॥ इतिपदच्छेदः ॥ हेभगवन् जैसे नदीयोंके बहुत जलोंकेवेग समुद्रकेअभिमुखहुए समुद्रकूं हीं प्रवेश करेहैं तैसें यह मनुष्यलोककेवीर तुमारे सर्वओरतें प्रकाशमान मुखोंकूंहीं प्रवेशकरेहै ॥ २८ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेभगवन् जैसे अनेकमार्गोंविषेप्रवृत्तहुई जेश्रीगंगायमुनादिकनदीयां हैं तिननदीयोंके जेबहुतजलोंकेवेगहैं अर्थात् जिनजलोंके जेवेगवालेप्रवाहहैं ॥ तेबहुतजलोंकेप्रवाह समुद्रकेअभिमुखहुए तिससमुद्रविषेहीं अबुद्धिपूर्वक प्रवेशकरेहैं ॥ तैसे इसमनुष्यलोकविषेशूरवीरजेदुर्योधनादिकराजेहैं ॥ तेयहदुर्योधनादिकराजे तैंपरमेश्वरके सर्वओरतैंप्रकाशमानमुखोंविषे अबुद्धिपूर्वक प्रवेशकरेहैं ॥ तहां कितनैंकीपुस्तकोंविषे (अभितोज्वलंति) इसवचनकेस्थानविषे (अभिविज्वलंति) याप्रकारकाभी पाठहोवैहै ॥ इसप्रकारकेपाठहुएभी सोपूर्वउक्तअर्थहींजानणा इति ॥ २८ ॥ ❀ ॥ अबश्रीविश्वरूपभगवान्केमुखोंविषे तिनराजावोंके बुद्धिपूर्वकप्रवेशविषें अर्जुन दृष्टांतकूं कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) यथाप्रदीप्तंज्वलनंपतंगाविशंतिनाशायसमृद्धवेगाः ॥ तथैवनाशायविशंतिलोकास्तवापिवक्त्राणिसमृद्धवेगाः ॥ २९ ॥
यथा । प्रदीप्तं । ज्वलनं । पतंगाः । विशंति । नाशाय । समृद्धवेगाः । तथा । एव । नाशाय । विशंति । लोकाः । तव । अपि । वक्त्राणि । समृद्धवेगाः ॥२९॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेभगवन् जैसे पतंग अत्यंतवेगवालेहुए आपणेनाशवासतै प्रज्वलित अग्निविषे प्रवेशकरेहै तैसें हीं यहदुर्योधनादिक भी अत्यंतवेगवालेहुए आपणेनाशवासतैं तुमारे मुखोंविषे प्रवेशकरेहै ॥२९॥ (इतिपदार्थः)॥

॥ टीका ॥ हेभगवन् जैसे पतंग अत्यंतवेगवालेहुए आपणेमरणवासतै प्रज्वलितअग्निविषे बुद्धिपूर्वक प्रवेशकरेहैं ॥ तैसे यहदुर्योधनादिकसर्वराजेभी अत्यंतवेगवालेहुए आपणेमरणवासतैं तैंपरमेश्वरकेमुखोंविषे बुद्धिपूर्वक प्रवेशकरेहैं इति ॥ २९ ❀ ॥ तहांपूर्व युद्धकीकामनावालेराजावोंका भगवान्केमुखोंविषे प्रवेशकाप्रकार कथनकऱ्या ॥ अबतिसप्रवेशकालविषे श्रीभगवान्केप्रवृत्तिकेप्रकारकूं तथाभगवान्केदीप्तिरूपप्रकाशकेप्रवृत्तिकेप्रकारकूं अर्जुन कहेहै ॥

(मू० श्लो०) लेलिह्यसेग्रसमानःसमंताल्लोकान्समग्रान्वदनैर्ज्वलद्भिः ॥ तेजोभिरापूर्यजगत्समग्रंभासस्तवोग्राःप्रतपंतिविष्णो ॥ ३० ॥
लेलिह्यसे । ग्रसमानः । समंतात् । लोकान् । समग्रान् । वदनैः । ज्वलद्भिः । तेजोभिः । आपूर्य । जगत् । समग्रम् । भासः । तव । उग्राः । प्रतपंति । विष्णो ॥ ३० ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेविष्णुभगवान् संपूर्ण लोकोंकूं ग्रासकरताहुआतूं आपणे प्रज्वलित मुखोंकरिकै सर्वओरतैं आस्वादनकरताहै इससमग्र जगत्कूं आपणीदीप्तियोंकरिकै सर्व ओरतैं पूर्णकरिकै याकारणतैं तुमारी तेउग्र दीप्तियां संतापकूं उत्पन्नकरेहैं ॥ ३० ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेविष्णु अर्थात् हेसर्वत्रव्यापकविश्वरूपभगवान् इसप्रकार अत्यंतवेगकरिकै तुमारेमुखविषेप्रवेशकरतेहुए जेदुर्योधनादिकसर्वराजेहैं ॥ तिनसर्वराजा

वोंकूं तूं ग्रासकरताहुआ अर्थात् तिनआपणेमुखोंद्वारा आपणेउदरविषेप्रवेशकरावताहुआ तिनआपणेप्रज्वलितमुखोंकरिकै सर्वओरतैंआस्वादनकरेहैं ॥ अर्थात् जैसे यहमनुष्य कोईस्वादुवस्तुकूंभक्षणकरिकै आपणीजिव्हाकरिकै तालुओष्ठादिकोंकूंचाटेहैं ॥ तैसे तूंपरमेश्वरभी तिनदुर्योधनादिकराजावोंकूंभक्षणकरिकै आपणी जिव्हाकरिकै तालुओष्ठादिकोंकूंचाटेहैं ॥ क्याकरिकै ॥ आपणेदीप्तिरूपतेजोंकरिकै इससमग्रजगत्कूं सर्वओरतैं परिपूर्णकरिकै ॥ हेभगवन् जिसकारणतैं तूं आपणीदीप्तियोंकरिकै इससर्वजगत्कूं सर्वओरतैं परिपूर्णकरेहैं ॥ तिसकारणतैं तेतुमारी अत्यंततीव्र दीप्तियां प्रज्वलितअग्निकीन्यांई संतापकूंउत्पन्नकरेहैं इति ॥ ॥ ३० ॥ ❀ ॥ इसप्रकार तिनभगवान्कीदीप्तियोंकरिकै व्याकुलहुआअर्जुन यहसाक्षात्परिपूर्णभगवान्है याप्रकारतैं भगवान्केस्वरूपकानहींस्मरणकरिकै भगवान्केप्रति कहेहै ॥

(मू० श्लो०) आख्याहिमेकोभवानुग्ररूपोनमोस्तुतेदेववरप्रसीद ॥ विज्ञातुमिच्छामिभवंतमाद्यंनहिप्रजानामितवप्रवृत्तिम् ॥ ३१ ॥ आख्याहि । मे । कः । भवान् । उग्ररूपः । नमः । अस्तु । ते । देववर । प्रसीद । विज्ञातुम् । इच्छामि । भवंतम् । आद्यम् । न । हि । प्रजानामि । तव । प्रवृत्तिम् ॥ ३१ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेभगवन् ऐसेउग्ररूपवाले आप कौनहो यहवार्त्ता हमारे तांई कथनकरो हेसर्वदेवतावोंविषेश्रेष्ठ तुमारेतांई हमारा नमस्कार होवेउ आप प्रसन्नहोवो मैंअर्जुन सर्वकेकारणरूप तुमारेकूं जानणेकी इच्छाकरताहूं जिसकारणतैं तुमारी चेष्टाकूं मैं नहीं जानताहूं ॥ ३१ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ उग्रहै क्या अत्यंतक्रूरहै रूप क्या आकार जिसका ताकानाम उग्ररूपहै ॥ अथवा प्रलयकालविषे सर्वजगत्कासंहारकरणेहाराजोरुद्रहै ताकानाम उग्रहै ॥ ताउग्रकेरूपकीन्यांईहै रूप क्या आकार जिसका ताकानाम उग्ररूपहै ॥ अथवा उग्रहै क्या सर्वलोकोंकूंभयकीप्राप्तिकरणेहाराहै रूपजिसका ताकानाम उग्ररूपहै ॥ अथवा उग्रहै क्या क्रूरहै रूप क्या कर्म जिसका ताकानाम उग्ररूपहै ॥ ऐसे उग्ररूपवाले आप कौनहो ॥ अर्थात् प्रलयकालकेरुद्रहो ॥ अथवा प्रलयकालकीअग्निहो ॥ अथवा महान्मृत्युहो॥अथवा कालांतकहो॥अथवा परमपुरुषहो ॥ अथवा इनसर्वोंतैंकोईअन्यहो ॥ जोअबी आपकास्वरूप है ॥ सोस्वरूप मैंअर्जुनकेतांई आप कृपाकरिकै कथनकरो ॥ याकारणतैंहीं मैंअर्जुनका आपसर्वजगत्केगुरुरूपपरमेश्वरकेतांई नमस्कारहोवै ॥ हेसर्वदेवतावों विषेश्रेष्ठभगवान् आप हमारेऊपरि प्रसादकरो ॥ अर्थात् क्रूरताकापरित्यागकरिकै प्रसन्नहोवो हेभगवन् सर्वजगत्काकारणरूपजोआपहो ॥ तिसकारणरूपआप परमेश्वरकूं मैंअर्जुन विशेषरूपतैं जानणेकीइच्छाकरताहूं ॥ शंका ॥ हेअर्जुन मैंपरमेश्वरकास्वरूपतौं हमारीचेष्टाकेदर्शनतैंहीं जानणेकूंशक्यहै ॥ यातैं (कोभवा

न्) यहतुमाराप्रश्न संभावतानहीं ॥ ऐसीभगवान्‌कीशंकाकेहुए अर्जुन कहेहै (नहिप्रजानामिइति) हेभगवन् जिसकारणतैं मैंअर्जुन आप परमेश्वरकासखाहुआ भी आपकीचेष्टारूपप्रवृत्तिकूंभी जानतानहीं ॥ इसकारणतैं आपहीं आपकास्वरूप हमारेप्रति कथनकरौ इति ॥ ३१ ॥ ❀ ॥ इसप्रकार अर्जुनकरिकैप्रार्थना कऱ्याहुआ श्रीभगवान् जोआपणास्वरूपहैं तथाजिसकार्यकेकरणेवासतै आपणीप्रवृत्तिहै यहसर्ववार्त्तातीनश्लोकोंकरिकै अर्जुनकेप्रति कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) श्रीभगवानुवाच॥कालोस्मिलोकक्षयकृत्प्रवृद्धोलोकान्समाहर्तुमिहप्रवृत्तः॥ ऋतेपित्वानभविष्यंतिसर्वेयेवस्थिताःप्रत्यनीकेषुयोधाः ॥ ३२॥ कालः । अस्मि । लोकक्षयकृत् । प्रवृद्धः । लोकान् । समाहर्त्तुम् । इह । प्रवृत्तः । ऋते । अपि । त्वा । न । भविष्यंति । सर्वे । ये । अवस्थिताः । प्रत्यनीकेषु । योधाः ॥३२॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन सर्वलोकोंकासंहारकर्त्ता तथा अत्यंत वृद्धिकूंप्राप्तहुआ कालरूपपरमेश्वर मैंहूं तथाइसकालविषेदुर्योधनादिकोंकूं भक्षणकरणेवासतै प्रवृत्तहुआहूं यातैं प्रतिपक्षी योंकी सेनावोंविषे जे योधा स्थितहैं तेसर्वयोधा तुमारे युद्धरूप व्यापारतैं विना भी नहीं विद्यमानहोवेंगे ॥ ३२ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन भूमिविषेभाररूपजेप्राणीहै ॥ तिनदुष्टप्राणीयोंकेनाशकरणेहारा अथवा प्रलयकालविषे सर्वप्राणीयोंकेनाशकरणेहारा तथामहान्‌वृद्धिकूंप्राप्तहुआ क्रियाशक्तिउपहितकालरूपपरमेश्वर मैं हुं ॥ इसप्रकार आपणे स्वरूपकूंकथनकरिकै श्रीभगवान् आपणीप्रवृत्तिकूं कथनकरेहै (लोकान्‌इति) हेअर्जुन जिसकार्यकेकरणेवासतै मैभगवान् अबीप्रवृत्तहुआहुं ॥ तिसकूं तूं श्रवणकर ॥ भूमिविषेभाररूपजेदुर्योधनादिकलोकोंकूं भक्षणकरणेवासतै इसलोकविषे मैं प्रवृत्तहुआहुं ॥ शंका ॥ हेभगवन् मैंअर्जुनकीप्रवृत्तितैंविना आप इनदुर्योधनादिकोंकूं कैसे नाशकरौंगे ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहेहै ॥ (ऋतेपित्वाइति) हेअर्जुन तुमारेतैंविनाभी अर्थात् तुमारेयुद्धरूपव्यापारतैंविनाभी केवलमैपरमेश्वरकेव्यापारमात्रकरिकैहीं यहभीष्मद्रोणकर्णादिकसर्व योधानाशकूंप्राप्तहोवैंगे ॥ तथा इसदुर्योधनकीसेनाविषे इनभीष्मद्रोणादिकोंतैंभिन्न दूसरेभी जितनैंकीयोधास्थितहैं ॥ तेसर्वहींयोधा मैंपरमेश्वरनैंहीं हननकरी राख्येहैं ॥ यातैं तिनोंकेहननकरणेविषे तैंअर्जुनके युद्धरूपव्यापारका कोईअत्यंत जरूरनहींहै ॥ तुमारेव्यापारतैंविनाहीं यहदुर्योधनादिकसर्व नाशहोवैंगे इति ॥ ३२ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् हमारे युद्धरूपव्यापारतैंविनाहीं जोकदाचित् यहदुर्योधनादिक नाशहोतेहोवैं ॥ तौं आप वारंवार हमारेकूं युद्धकरणेविषे किसवासतै प्रवृत्तकरतेहो ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहेहैं ॥

(मू० श्लो०) तस्मात्त्वमुत्तिष्ठयशोलभस्वजित्वाशत्रून्भुंक्ष्वराज्यंसमृद्धम् ॥ मयैवैतेनिहताःपूर्वमेवनिमित्तमात्रंभवसव्यसाचिन् ॥ ॥३३॥तस्मात् । त्वम् । उत्तिष्ठ । यशः । लभस्व । जित्वा । शत्रून् । भुंक्ष्व । राज्यं । समृद्धं । मया । एव । एते । निहताः । पूर्वम् । एव । निमित्तमात्रं । भव । सव्यसाचिन् ॥ ३३ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन तिसकारणतैं तूं युद्धवासतैउद्यमवालाहोउ तथा यशकूं प्राप्तहोउ तथाशत्रुवोंकूं जितके निष्कंटक राज्यकूं भोगि हेसव्यसाचिन् यहतुमारेशत्रु तुमारेयुद्धतैंपूर्व हीं मैंपरमेश्वरनैं हीं हननकरिछोडेहैं तूंकेवल निमित्तमात्र होउ ॥ ३३ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जिसकारणतैं तुमारेयुद्धरूपव्यापारतैंविनाभी यहभीष्मद्रोणादिक अवश्यकरिकै नाशकूंप्राप्तहोवैंगे ॥ तिसकारणतैं तूंअर्जुन अबी युद्धकरणेवासतै उद्यमवालाहोउ ॥ तायुद्धविषे इनभीष्मद्रोणादिकोंकूंहननकरिकै तूं यशकूंप्राप्तहोउ ॥ अर्थात् जेभीष्मद्रोणादिक इंद्रादिकदेवतावोंकरिकैभी दुर्जयथे ॥ तेभीष्मद्रोणादिकअतिरथी इसअर्जुननैं शीघ्रहीं जयकरिलीये ॥ याप्रकारकेयशकूंहीं तूं प्राप्तहोउ ॥ जिसकारणतैं इसप्रकारकायश महान्पुण्यकर्मोंकरिकै प्राप्तहोवैहै ॥ तिसकारणतैं ऐसेयशकीप्राप्तिवासतैं तूं इसयुद्धविषेप्रवृत्तहोउ ॥ अर्थात् तुमारेकूंइसप्रकारकेमहान्यशकीप्राप्तिकरणेवासतैहीं मैंभगवान् तुमारेकूं इसयुद्धविषेप्रवृत्तकरताहूं ॥ कोई तुमारेयुद्धतैंविना यहभीष्मद्रोणादिक नहींनाशहोवैंगे इसवासते मैं तुमारेकूं युद्धविषेप्रवृत्त करतानहीं ॥ हेअर्जुन इनशत्रुवोंकेमारणेकरिकै तुमारेकूं केवल यशकीहींप्राप्तिनहींहोवैंगी ॥ किंतु इनदुर्योधनादिकशत्रुवोंकूं विनाहींप्रयत्नतैं जयकरिकैसर्वऐश्वर्यसंपन्न निष्कंटकराज्यकूंभी तूं भोग ॥ शंका ॥ हेभगवन् इनभीष्मद्रोणादिकअतिरथीयोधावोंकेविद्यमानहुए तिनदुर्योधनादिकशत्रुवोंकाजयकरणा अत्यंतदुर्लभहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाके निवृत्तकरणेवासतै श्रीभगवान् कहेहै (मयैवैतेइति) हेअर्जुन तुमारेयुद्धरूपव्यापारतैंपूर्वहीं यहभीष्मद्रोणादिक कालरूपमैंपरमेश्वरनैंहीं आयुषतैंरहितकरिराख्येहैं केवल तुमारेकूं लोकविषेयशकीप्राप्तिकरणेवासतै यहभीष्मद्रोणादिकसर्वयोधा हमनैं रथतैंनीचैगिडायेनहीं ॥ यातैं हेसव्यसाचिन् तूं केवल निमित्तमात्रहोउ ॥ अर्थात् यहभीष्मद्रोणादिकयोधा अर्जुननैंहीं जयकरेहैं याप्रकारके सर्वलोकोंकेवचनोंका आस्पदहोउ ॥ तहां वामहस्तकरिकैभी शरोंकेचलावणेकास्वभाव जिसकाहोवै ताकानाम सव्यसाचिन्है ॥ तात्पर्ययह ॥ ऐसेमहान्पराक्रमवाले तैंअर्जुनकूं इनभीष्मद्रोणादिकोंकाजयकरणा कोईअसंभावितनहींहै ॥ किंतु संभवताहींहै ॥ यातैं तुमारेयुद्धरूपव्यापारतैंअनंतर मैंपरमेश्वर इनभीष्मद्रोणादिकोंकूं रथतैंनीचेगेडोंगा ॥ तिसकूंदेखिकै सर्वलोक ऐसीकल्पनाकरैंगे ॥ इसअर्जुननैंहीं इनभीष्मद्रोणादिकोंकूंहननकर्याहै इति ॥ ३३ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् इसदुर्योधनकीसेनाविषेस्थित जोद्रोणाचार्यहै ॥ सोद्रोणा

चार्य कैसाहै ॥ सर्वब्राह्मणोंविषे उत्तमब्राह्मणहै ॥ तथा धनुर्वेदकाआचार्यहै ॥ तथा हमसर्वोंकागुरुहै ॥ तथा दिव्यअस्त्रकरिकैसंपन्नहै ॥ और इसदुर्योधनकी सेनाविषेस्थितजोभीष्मपितामहहै ॥ सोभीष्मपितामह कैसाहै ॥ आपणीइच्छातैंमरणेहाराहै ॥ तथा दिव्यअस्त्रकरिकैसंपन्नहै ॥ जिसभीष्मपितामहकूं परशुराम नैंभीपराजयकन्यानहीं ॥ और इसदुर्योधनकीसेनाविषेस्थितजो जयद्रथहै ॥ सोजयद्रथ कैसाहै ॥ जिसजयद्रथका वृद्धक्षत्रनामापिता जो योधा इसहमारेपुत्र काशिर भूमिविषेगेरैगा तिसयोधाकाभीशिर तिसीकालविषे भूमिविषेगिरैगा याप्रकारकासंकल्पकरिकै तपकूंकरताभयाहै ॥ तथा जोजयद्रथ आपभी सर्वदा महादेवकेआराधनपरायणहै ॥ तथा दिव्यअस्त्रकरिकैसंपन्नहै ॥ ऐसा जयद्रथराजाभी जीतणेकूंअशक्यहै ॥ और इसदुर्योधनकीसेनाविषेस्थितजोकर्णहै ॥ सो कर्णकैसाहै ॥ साक्षात्सूर्यकेसमानहै ॥ तथा सूर्यभगवान्केआराधनकरिकै प्राप्तहुआहैदिव्यअस्त्रजिसकूं ॥ तथा इंद्रनैंदईहुई जाएकपुरुषकेनाशकरणेहारी तथा व्यर्थकरणेकूंअशक्य ऐसीशक्तिहै ताशक्तिकरिकैयुक्तहै ॥ इनोंतैंआदिलैके दूसरेभी कृपाचार्य अश्वत्थामा भूरिश्रवा इत्यादिकजेमहान्प्रभाववालेयोधाहैं ॥ तेसर्वयोधा सर्वप्रकारतैं दुर्जयहींहैं ॥ ऐसेभीष्मद्रोणादिकमहान्योधावोंकेविद्यमानहुए मैंअर्जुन इनदुर्योधनादिकशत्रुवोंकूंजीतिकै निष्कंटकराज्यकूं कैसेभोगौंगा ॥ तथा यशकूंकैसेप्राप्तहोवौंगा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेनिवृत्तकरणेवासतै श्रीभगवान् ताशंकाकेविषयभूतयोधावोंकूं स्वस्ववाचकनामोंकरिकैकथनकरताहुआ कहेहै ॥

(मू० श्लो०) द्रोणंचभीष्मंचजयद्रथंचकर्णंतथान्यानपियोधवीरान्॥मयाहतांस्त्वंजहिमाव्यथिष्ठायुध्यस्वजेतासिरणेसपत्नान्॥३४॥

द्रोणम् । च । भीष्मम् । च । जयद्रथम् । च । कर्णम् । तथा । अन्यान् । अपि । योधवीरान् । मया । हतान् । त्वम् । जहि । मा । व्यथिष्ठाः । युध्यस्व । जेतासि । रणे । सपत्नान् ॥ ३४ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन द्रोणाचार्यकूं तथा भीष्मपितामहकूं तथा जयद्रथकूं तथा कर्णकूं तथा इनोंतैंअन्य भी योधावोंकूं जेयोधा मैंपरमेश्वरनैंही हननकरिराख्येहैं तिनसर्वयोधावोंकूं तूं अर्जुन हननकर तूं मत व्यथाकूंप्राप्तहोउ तथायुद्धकूंकर इससंग्रामविषे शत्रुवोंकूं तूं अवश्य जीतैंगा ॥ ३४ ॥(इतिपदार्थः)॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन द्रोणाचार्य तथाभीष्मपितामह तथाजयद्रथ तथाकर्ण तथाइनोंतैंभिन्न दूसरेभी जितनैंकी महान्योधाहैं ॥ जेभीष्मादिकसर्वयोधा यहभीष्मादिक कैसेजयहोवैंगे याप्रकारकी तुमारीशंकाकेविषयभूतहैं ॥ तेभीष्मद्रोणादिकसर्वयोधा कालरूपमैंपरमेश्वरनैं तुमारेयुद्धतैंपूर्वहीं हननकरिराख्येहैं ॥ ऐसेभीष्मद्रोणादिकयोधावोंकूं तूं अर्जुन अबीहननकर ॥ पूर्वहननकीयेहुएयोधावोंकेहननकरणेविषे तुमारेकूं कौनपरिश्रमहोवैगा ॥ किंतु तिनोंकेहननकरणेविषे तुमारेकूं कोईभीपरिश्रमहोवैगानहीं ॥ यातैं तूं व्यथाकूं मतप्राप्तहोउ ॥ अर्थात् यहभीष्मद्रोणादिकमहान्योधा कैसेहननकीयेजावैंगे इसप्रकारकी भयनिमित्तकपीडारूपव्यथाकूं

तूं मतप्राप्तहोउ ॥ हेअर्जुन तिसभयकूंपरित्यागकरिकै तूंयुद्धकूंकर ॥ इसप्रकार भयकापरित्यागकरिकै जबी तूं युद्धकूंकरैंगा ॥ तबी इससंग्रामविषे थोडेहींका लमें इनदुर्योधनादिकसर्वशत्रुवोंकूं जीतैंगा ॥ तात्पर्ययह ॥ इसदुर्योधनकीसेनाविषेस्थित जितनेंकीभीष्मादिकयोधाहैं ॥ तिनयोधावोंविषे किसीयोधातैं आपणे पराजयकीशंकाकूं तूंमतकर ॥ तथा किसीभीयोधाकेहननकरणेजन्य पापकीशंकाकूं तूंमतकर इति ॥३४॥ तहांदुर्योधनकेजयहोणेकीआशाकेविषयभूत जे द्रोणा चार्य तथाभीष्मपितामह तथाजयद्रथ तथाकर्ण यहच्यारियोधाहै ॥ तिनच्यारोंकेहननहुएतैंअनंतर निराश्रयहुएदुर्योधनकाभी हननहींहोवैंगा इसप्रकारकाविचारक रिकै यहधृतराष्ट्र आपणेजयकीआशाकापरित्यागकरिकै जबी इनपांडवोंकेसाथि मित्रभावकरिकै युद्धतैंनिवृत्तिहोवैंगा तबीपांडवोंकी तथाकौरवोंकीदोनोंकीहीं शांतिहोवैंगी ॥ इसप्रकारकेअभिप्रायवालासंजय तिसतैंअनंतर क्यावृत्तांतहोताभया ऐसी धृतराष्ट्रकीजिज्ञासाकेहुए कहेहै ॥

(मू० श्लो०) संजयउवाच ॥ एतच्छ्रुत्वावचनंकेशवस्यकृतांजलिर्वेपमानःकिरीटी ॥ नमस्कृत्वाभूयएवाहकृष्णंसगद्गदंभीतभीतः प्रणम्य ॥ ३५ ॥ एतत् । श्रुत्वा । वचनं । केशवस्य । कृतांजलिः । वेपमानः । किरीटी । नमस्कृत्वा । भूयः । एव । आह । कृष्णं सगद्गदं । भीतभीतः । प्रणम्य । (इतिपदच्छेदः) ॥ हेधृतराष्ट्र श्रीभगवान्के इसपूर्वउक्त वचनकूं श्रवणकरिकै जोडेहैं दोनोंहस्त जिसनें तथाकंपायमानहुआ तथाअत्यंतभययुक्तहुआ सोअर्जुन श्रीकृष्णभगवान्कूं नमस्कारकरिकै तथाअत्यंतनम्रहोइकै सगद्गद जैसेहोवै तैसेपुनः भी कहताभया ॥ ३५ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेधृतराष्ट्र श्रीभगवानके इसपूर्वउक्तवचनकूंश्रवणकरिकै सोकिरीटीअर्जुन अर्थात् इंद्रनैंदीयाहैकिरीटजिसकूं ऐसापरमवीररूपकरिकै प्रसिद्धअर्जुन कंपायमानहुआ अर्थात् परमआश्चर्यकेदर्शनजन्यसंभ्रमकरिकै कंपायमान हुआसोअर्जुन श्रीकृष्णभगवानकूं नमस्कारकरिकै सगद्गदजैसेहोवै तैसे पुनःभी कहता भया ॥ तहां भयकरिकै अथवा हर्षकरिकै निकस्याहूआजोअश्रुजलहै ताअश्रुवोंकरिकैनेत्रोंकेपूर्णहुए तथाकफकरिकै अवरुद्धहुएकंठपणे करिकै जेवाणीके मंदपणा तथासकंपपणा इत्यादिकविकारहैं ताकानाम सगद्गदहै॥ऐसे सगद्गदकरिकैयुक्त जैसेहोवै तैसे सोअर्जुन भीतभीतहुआ अर्थात् अत्यंतभयकरिकैयुक्तहुआ पूर्व श्रीकृष्ण भगवान्कूंनमस्कारकरिकै पुनःभीप्रणामकरिकै अर्थात् अत्यंतनम्रहोइकै पुनःभी यहवक्ष्यमाणवचन कहताभया इति ॥ ईहां किसीटीकाविषे (एवाह) इसवच नविषे (एव अह) याप्रकारकापदच्छेदकरिकै अह इसपदकूं प्रसिद्धिकावाचक अव्ययपदमान्याहै ॥ काहेतैं आह इसप्रकारकापदच्छेदकरिकै आह इसपदकूं जोवचनरूपक्रियाकावाचकमानियै ॥ तौं पुनः अर्जुनउवाचयहवक्ष्यमाणवचन पुनरुक्तहोवैंगा ॥ यातैं (प्रणम्यअर्जुनउवाच) याप्रकारतैंही पदोंकासंबं

धकरणा (प्रणम्यआह) याप्रकारतैंपदोंकासंबंधकरणानहीं इति ॥ ३५ ॥ ❀ ॥ अबएकादशश्लोकोंकरिकैअर्जुन श्रीभगवान्‌केप्रति सोवचनकहेहै ॥

(मू०श्लो०) अर्जुनउवाच ॥ स्थानेहृषीकेशतवप्रकीर्त्याजगत्प्रहृष्यत्यनुरज्यतेच ॥ रक्षांसिभीतानिदिशोद्रवंतिसर्वेनमस्यंतिच सिद्धसंघाः ॥ ३६ ॥ स्थाने । हृषीकेश । तव । प्रकीर्त्या । जगत् । प्रहृष्यति । अनुरज्यते । च । रक्षांसि । भीतानि । दिशः । द्रवंति । सर्वे । नमस्यन्ति । च । सिद्धसंघाः ॥ ३६ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेहृषीकेश तुमारी प्रकीर्तिकरिकै यहसर्वजगत् हर्षकूंप्राप्तहोवैहै तथा अनुरागकूंप्राप्तहोवैहै तथाराक्षस भयकूंप्राप्तहुए सर्वदिशावोंविषे भागेजावैहै तथा सर्व सिद्धोंकेसमूह नमस्कारकरेहैं यहसर्व वार्ता युक्तहींहै ॥ ३६ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेहृषीकेश अर्थात् हेसर्वइंद्रियोंकेप्रवर्त्तक जिसकारणतैं तूंपरमेश्वर अत्यंतअद्भुतप्रभाववालाहैं तथाभक्तवत्सलहैं ॥ तिसकारणतैं तुमारीप्रकीर्तिकरिकै अर्थात् तुमारीनिरतिशयउत्कृष्टताकेकीर्त्तनकरिकै तथाश्रवणकरिकै केवल मैंअर्जुनही अत्यंतहर्षकूंनहींप्राप्तहोता ॥ किंतु राक्षसोंकाविरोधी जितनाकी चेतनमात्ररूपजगत्‌है ॥ सोसर्वजगत्‌भी तिसआपकीप्रकीर्त्तिकरिकै महान्‌हर्षकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यहवार्त्ताभी युक्तहींहैं ॥ तथा तिसतुमारीप्रकीर्त्तिकरिकै यहसर्वजगत् तैंपरमेश्वरविषयक अनुरागकूं जोप्राप्तहोवैहै ॥ सोभी युक्तहींहै ॥ तथा तिसतुमारीप्रकीर्त्तिकरिकै सर्वराक्षस भयकूंप्राप्तहुए जो सर्वदिशावोंविषे भागेभागेजावैहैं ॥ सोभी युक्तहींहै ॥ तथा सर्व कपिलादिक सिद्धोंकेसमूह तैंपरमेश्वरकेतांई जोश्रद्धाभक्तिपूर्वक नमस्कारकरेहैं ॥ सोभी युक्तहीं है इति ॥ और किसी टीकाविषेतौं (स्थानेहृषीकेश) इसश्लोकका यहअर्थ कथनकऱ्याहै ॥ हेहृषीकेश (कालोस्मिलोकक्षयकृत्प्रवृद्धोलोकान्समाहर्तुमिहप्रवृत्तः) अर्थयह ॥ भूमिविषेभाररूपजेदुष्टजनहैं तिनसर्वदुष्टलोकोंकेसंहारकरणेवासतै मैंकालरूपपरमेश्वर प्रवृत्तहुआहूं ॥ यहवचन आपनैं पूर्वकथनकऱ्याथा ॥ तिस आपके प्रकृष्टवचनरूप प्रकीर्तिकूंश्रवणकरिकै यहसाधुलोकरूपजगत् जो परमसंतोषकूं प्राप्तहोवैहै ॥ सोभी युक्तहींहै ॥ अर्थात् साधुलोकोंकेरक्षणकरणेवासतै परमेश्वरनैं सर्वदुष्टजनोंकेसंहारकियाहुए तिनसाधुलोकोंकूं परमसंतोषकीप्राप्तिहोणी युक्तहींहै तथा तैंपरमेश्वरके तिसप्रकृष्टवचनकूंश्रवणकरिकै तेसाधुलोक तैंभक्तवत्सल तथासर्वभूतोंकेसुहृदरूप परमात्मादेवविषे जो अनुरागकूंकरेहैं ॥ सोभीयुक्तहींहै ॥ अर्थात् सर्वलोकोंकेउपद्रवकूंनिवृत्तकरणेवासतैउद्यमवाले तथापरमकृपालुरूप ऐसेतैंपरमेश्वरविषे तिनसाधुलोकोंका अनुरागहोणा युक्तहींहै ॥तथा तैंपरमेश्वरके तिसप्रकृष्टवचनकेश्रवणकरिकै सर्वराक्षस भयकूंप्राप्तहुए जो पूर्वादिकदिशावोंकेकोणोंविषे भागेभागेजावैहैं ॥ सोभीयुक्तहींहै॥ तथा तैंपरमेश्वरके तिसप्रकृष्टवचनकेश्रवणकरिकै सर्वलोकोंकेसुखकीइच्छाकरणेहारे सर्वसिद्धोंकेसमूह तैंपरमेश्वरकेतांई जोनमस्कारकरेहैं

सोभी युक्तहींहैं ॥ ईहां सिद्ध यहशब्द देवजातिमात्रकाउपलक्षणहै ॥ अर्थात् देव ऋषि सिद्ध गंधर्व चारण इत्यादिकसर्वदेवत्वजातिवालेपुरुष हेस्वामिन् जोतु मनैं दुष्टजनोंकेसंहारकरणेकीप्रतिज्ञाकरीहै साप्रतिज्ञा अवश्यकरिकै पूर्णकरणी याप्रकारकीप्रार्थनापूर्वक तैंपरमेश्वरकेतांई जोप्रमाणकरेहैं ॥ सोभी युक्तहींहै इति ॥ तहां (स्थानेहृषीकेश) यहश्लोक रक्षोघ्ननामामंत्ररूपकरिकै मंत्रशास्त्रविषेप्रसिद्धहै ॥ जिसमंत्रकेअनुष्ठानकरिकै दुष्टराक्षसोंकाहननहोवै ता मंत्रकानाम रक्षोघ्नमंत्रहै इति ॥ ३६ ॥ ❋ ॥ तहां पूर्वश्लोकविषे अर्जुननैं श्रीभगवान्‌विषे सर्वलोकोंके हर्षकीविषयता तथाअनुरागकीविषयता तथानम स्कार्यता कथनकरी ॥ अब तिसीअर्थकीसिद्धिकरणेविषे अर्जुन हेतुकहैहै ॥

(मू० श्लो०) कस्माच्चतेननमेरन्महात्मन्गरीयसेब्रह्मणोप्यादिकर्त्रे ॥ अनंतदेवेशजगन्निवासत्वमक्षरंसदसत्तत्परंयत् ॥ ३७ ॥

कस्मात् । च । ते । न । नमेरन् । महात्मन् । गरीयसे । ब्रह्मणः । अपि । आदिकर्त्रे । अनंत । देवेश । जगन्निवास । त्वम् । अक्षरं । सत् । असत् । तत्परं । यत् ॥ ३७ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेमहात्मन् हेअनंत हेदेवेश हेजगन्निवास ब्रह्माके भी गुरुरूप तथाजनक रूप ऐसेआपकेतांई तेसर्वदेवता किंसवासतैं नहीं नमस्कारकरैंगे किंतुकरैंगेहीं हेभगवन् तूं हीं सतरूपहैं तथाअसतरूपहैं तथाति नदोनोंतैंपरे जो अक्षरब्रह्महै सोभीतूंहैं ॥ ३७ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेमहात्मन् अर्थात् हेपरमउदारचित्तवाला ॥ तथा हेअनंत अर्थात् हेदेशकालवस्तुपरिच्छेदतैंरहित ॥ तथा हे देवेश अर्थात् हेहिरण्यगर्भादिकसर्व देवतावोंकेनियंता ॥ तथा हेजगन्निवास अर्थात् हेसर्वजगत्‌काआश्रयरूप ॥ तुमारेतांई तेसर्वसिद्धोंकेसमूह तथासर्वदेवता किसवासतै नहींनमस्कारकरैंगे ॥ किंतु आपकेतांई तिनसर्वोंकानमस्कारकरणा उचितहींहै ॥ कैसेहोआप ॥ सर्वजगत्‌कागुरुरूपजोब्रह्माहै तिसब्रह्माकेभी अत्यंतगुरुरूपहो ॥ तथा इससर्वजगत्‌काजनक जोब्रह्माहै तिसब्रह्माकेभी जनकहो ॥ ऐसेआपकेतांई तिनसर्वसिद्धादिकोंकानमस्कार उचितहींहै ॥ ईहां (कस्माच) इसवचनकेअंतविषेस्थितजोचकारहै ॥ ताचकारकरिकै अर्जुननैं यहअर्थ सूचनकऱ्या ॥ ब्रह्मादिकदेवतावोंकाभी नियंतापणा तथाउपदेष्टापणा इत्यादिकहेतुवोंविषे एकएकभीहेतु आपपरमेश्वरविषे तिन सर्वसिद्धोंकीनमस्कार्यताका प्रयोजकहै ॥ जबी एकएकभीहेतु आपविषे तानमस्कार्यताका प्रयोजकहुआ ॥ तबी महात्मापणा तथाअनंतपणा तथाजगन्निवास पणा इत्यादिकअनेकशुभगुणोंकरिकैयुक्तहुआ सोहेतु आपविषे तानमस्कार्यताकाप्रयोजकहै याकेविषेक्याआश्चर्यहै इति ॥ पुनःकैसेहोआप सत्‌रूपहो तथा असतरूपहो ॥ तहां अस्ति इसप्रकारकीविधिमुखप्रतीतिकरिकै जोवस्तु प्रतीतहोवैहै तावस्तुकानाम सत्‌है ॥ और नास्तिइसप्रकारकीनिषेधमुखप्रतीतिकरिकै

जोवस्तु प्रतीतहोवैहै तावस्तुकानाम असत्है ॥ अथवा व्यक्तकानाम सत्है ॥ और अव्यक्तकानाम असत्है ॥ सोसत्असत्रूपभी आपहींहो ॥ तथा तिसस त्असत्तैंभीसूक्ष्म जोसर्वकामूलकारणरूप अक्षरब्रह्महै सोअक्षरब्रह्मभी आपहींहो ॥ तैंपरमेश्वरतैंभिन्न कोईभीवस्तुनहींहैं ॥ तहांश्रुति ॥ (सर्वंह्येतद्ब्रह्म) ॥ अर्थयह ॥ यहसर्वजगत् ब्रह्मरूपहींहै इति ॥ हेभगवन् इसपूर्वउक्तसर्वहेतुवोंकरिकै तेसिद्धादिकसर्वलोक तैंपरमेश्वरकेताईं नमस्कारकरेहैं तथाअत्यंतहर्षकूं तथा अनुरागकूं करेहै इसविषे कोई आश्चर्यनहींहैं इति ॥ ३७ ॥ ❀ ॥ अब अत्यंतभक्तिकेवेगतैं सोअर्जुन पुनःभी श्रीकृष्णभगवान्कीस्तुतिकरेहै ॥

(मू० श्लो०) त्वमादिदेवःपुरुषःपुराणस्त्वमस्यविश्वस्यपरंनिधानम् ॥ वेत्तासिवेद्यंचपरंचधामत्वयाततंविश्वमनंतरूप ॥ ३८ ॥

त्वम् । आदिदेवः । पुरुषः । पुराणः । त्वम् । अस्य । विश्वस्य । परम् । निधानम् । वेत्ता । असि । वेद्यम् । च । परम् । च । धाम । त्वया । ततम् । विश्वम् । अनंतरूप ॥ ३८ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअनंतरूप तूं परमेश्वरहीं आदिदेवहैं तथापुरुषहैं तथापुराणहैं तथातूंहीं इस विश्वका परम निधानहैं तथासर्वके जानणेहारा हैं तथा सर्वदृश्यरूपहैं तथा परम धामरूपहैं तथा तुमनैंहीं यहसर्वविश्व व्याप्तंकऱ्याहै ॥ ३८ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअनंतरूप अर्थात् हेदेशकालवस्तुपरिच्छेदतैंरहितस्वरूप ॥ इससर्वजगत्केउत्पत्तिकाहेतुहोणेतैं तुमहीं आदिदेवहो ॥ तथा सर्वत्र अस्तिभाति प्रियरूपकरिकैपूर्णहोणेतैं तुमहीं पुरुषहो ॥ अथवा सर्वशरीररूपपुरियोंविषे शयनकर्त्ताहोणेतैं तुमहीं पुरुषहो ॥ तथा तुमहीं पुराणहो ॥ अर्थात् अनादिहो ॥ अथवा इसशरीरकेनाशहुएभी आप नाशहोतेनहीं यातैं पुराणहो ॥ तथा तुमहीं इससर्वविश्वका परमनिदानहो ॥ अर्थात् इससर्वविश्वकेलयका स्थानरूपहो ॥ ईहां (आदिदेवःपरंनिधानम्) इनदोनोंपदोंकरिकै अर्जुननैं श्रीभगवान्विषे सर्वजगत्के उत्पत्तिकाहेतुपणा तथालयकास्थानपणा कथनकऱ्या ॥ ताकरिकैं परमेश्वरविषे सर्वजगत्का उपादानकारणपणा कथनकऱ्या ॥ काहेतैं जिसतैं कार्य उत्पन्नहोवैहै तथा जिसविषे कार्य लयहोवैहैं ॥ सो उपादानकारणहींहोवैहै ॥ जैसे घटरूपकार्य मृत्तिकातैंहीं उत्पन्नहोवैहै ॥ तथामृत्तिकाविषेहीं लयहोवैहै ॥ यातैं सामृत्तिका ताघटका उपादानकारणहींहोवैहै ॥ इसप्रकारतैं परमेश्वरविषे सर्व जगत्काउपादानकारणपणाकहिकै अब सर्वज्ञतारूपहेतुकरिकै सांख्यशास्त्रकल्पितजडप्रधानरूपकारणकीव्यावृत्तिकरताहुआ अर्जुन तिसपरमेश्वरविषे जगत्का निमित्तकारणपणाभी कथनकरेहै (वेत्तासिइति) हेभगवन् सर्वज्ञहोणेतैं आपहीं इससर्वजगत्केजानणेहारेहो ॥ अर्थात् आपहींइससर्वजगत्का कर्त्तारूपनिमित्त कारणहो ॥ तहां इससर्वजगत्कूं जो परमेश्वरतैं भिन्नअंगीकारकरिये तौ द्वैतभावकीप्राप्तिहोवैगी ॥ताद्वैतभावकीनिवृत्तिकरणेवासतै अर्जुन कहेहै (वेद्यमिति)

हेभगवन् जितनाकीयहदृश्यप्रपंचहै सोभीतूंहींहैं ॥ अर्थात् ज्ञानस्वरूप तैंपरमेश्वरविषे इसजडरूपदृश्यप्रपंचका कोईभीवास्तवसंबंधहैनहीं ॥ यातैं यहसर्वदृश्यप्रपंच तैंपरमेश्वरविषे कल्पितहींहै ॥ और कल्पितवस्तु अधिष्ठानतैंपृथक्होवैनहीं ॥ जैसे कल्पितसर्पादिक रज्जुरूपअधिष्ठानतैं पृथक्होवैनहीं ॥ यातैं द्वैतभावकीप्राप्ति होवैनहीं इति ॥ इसीकारणतैंहीं आप परमधामहो ॥ अर्थात् सत्चित्आनंदघन तथाकार्यसहितअविद्यातैंरहित जोव्यापकविष्णुका परमपदहै सोपरमपदभी आपहींहो ॥ हेभगवन् स्वतःसत्तास्फूर्तितैंरहितजोयहसर्वविश्वहै ॥ सोयहसर्वविश्व स्थितिकालविषे मायिकसंबंधकरिकै तैंसत्तास्फुरणरूपकारणनैंहीं व्याप्तकऱ्याहै ॥ जैसे रज्जुरूपअधिष्ठाननैं आपणेइदमूरूपकरिकै कल्पितसर्वदंडादिक व्याप्तकऱ्येहैं ॥ तैसे तैंपरमेश्वरनैंहीं आपणेअस्तिभातिप्रियरूपकरिकै यहसर्वजगत्व्याप्त कऱ्याहै इति ॥ ३८ ॥ ❀ ॥ अब अर्जुन श्रीभगवान्की सर्वदेवतारूपकरिकै स्तुतिकरैहै ॥

(मू० श्लो०)वायुर्यमोग्निर्वरुणःशशांकःप्रजापतिस्त्वंप्रपितामहश्च ॥ नमोनमस्तेस्तुसहस्रकृत्वःपुनश्चभूयोपिनमोनमस्ते ॥ ३९ ॥

वायुः । यमः । अग्निः । वरुणः । शशांकः । प्रजापतिः । त्वं । प्रपितामहः । च । नमः । नमः । ते । अस्तु । सहस्रकृत्वः । पुनः । च । भूयः । अपि । नमः । नमः । ते ॥ ३९ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेभगवन् वायु यम अग्नि वरुण चंद्रमा प्रजापति तथा प्रपितामह इत्यादिकसर्वदेवतारूप तूंपरमेश्वरहींहै यातैं तैंपरमेश्वरकेतांई हमारा अनेकसहस्रवार नमस्कार नमस्कार होवउ तथा तुमारेतांई पुनः भी वारंवार नमस्कार नमस्कार होवउ ॥ ३९ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेभगवन् तूंपरमेश्वरहीं वायुरूपहैं ॥ तथा तूंपरमेश्वरहीं यमरूपहैं ॥ तथा तूंपरमेश्वरहीं अग्निरूपहैं ॥ तथा तूंपरमेश्वरहीं वरुणरूपहैं ॥ तथा तूंपरमेश्वरहीं चंद्रमारूपहैं ॥ ईहां (शशांकः) यहशब्द सूर्यादिकदेवतावोंकाभी उपलक्षकहै ॥ अर्थात् तूंपरमेश्वरहीं सूर्यादिकसर्वदेवतारूपहैं ॥ तथा तूंपरमेश्वरहीं प्रजापतिरूपहैं ॥ ईहां (प्रजापतिः) इसशब्दकरिकै विराट्काग्रहणकरणा अथवा हिरण्यगर्भकाग्रहणकरणा अथवा दक्षादिकोंकाग्रहणकरणा ॥ तथा तूंपरमेश्वरहीं प्रपितामहरूपहैं ॥ अर्थात् तिसहिरण्यगर्भकाभी पितारूपजोकारणब्रह्महै सोभीतूंपरमेश्वरहींहैं ॥ हेभगवन् जिसकारणतैं सर्वदेवतारूपहोणेतैं तूंपरमेश्वर सर्वप्राणीयोंकरिकै नमस्कारकरणेयोग्यहै ॥ तिसकारणतैं मैंअत्यंतअनाथअर्जुनकाभी तुमारेतांई अनेकसहस्रवार नमस्कारहोवउ नमस्कारहोवउ ॥ तथा पुनःभी आपकेतांई वारंवार नमस्कारहोवउ नमस्कारहोवउ ॥ ईहां पुनःपुनः नमस्कारोंकीआवृत्तिकरिकै अर्जुननैं भक्तिश्रद्धापूर्वक भगवत्केनमस्कारोंविषे अलंबुद्धिकाअभाव सूचनकऱ्या ॥ अर्थात् तैंपरमेश्वरकेतांई श्रद्धाभक्तिपूर्वक पुनःपुनःनमस्कारोंकेकरणेतैं मैंअर्जुनकीतृप्तिहोतीनहीं इति ॥ ३९ ॥ ❀ ॥ किंच ॥

(मू० श्लो) नमःपुरस्तादथपृष्ठतस्तेनमोस्तुतेसर्वतएवसर्व ॥ अनंतवीर्यामितविक्रमस्त्वंसर्वंसमाप्नोषिततोसिसर्वः ॥४०॥ नमः । पुरस्तात् । अथ । पृष्ठतः । ते । नमः । अस्तु । ते । सर्वतः । एव । सर्व । अनंतवीर्यामितविक्रमः । त्वं । सर्वम् । समाप्नोषि । ततः । असि । सर्वः ॥ ४० ॥ (इतिपदार्थः) ॥ हेसर्व तुमारेतांई अग्रभागविषे हमारा नमस्कार होवउ तथा पृष्ठविषेभी नमस्कार होवउ तथा तुमारेतांई सर्वदिशावोंविषेहीं नमस्कारहोवउ तूंपरमेश्वर अनंतवीर्यअमितविक्रमवालाहैं तथातूं इससर्वजगतकूं व्याप्तकरेहैं तिसकारणतैं तूंपरमेश्वर सर्व कह्याजावैहैं ॥ ४० ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेसर्व अर्थात् हेसर्वात्मारूपभगवन् मैं अर्जुनका तैंपरमेश्वरकेतांई अग्रभागविषेभी नमस्कारहोवौ ॥ तथा मैंअर्जुनका तैंपरमेश्वरकेतांई पृष्ठभागविषेभीनमस्कारहोवौ ॥ तथा मैंअर्जुनका तैंपरमेश्वरकेतांई सर्वदिशावोंविषे नमस्कारहोवौ ॥ ईहां यद्यपि सर्वात्मारूपव्यापकपरमेश्वरके अग्रभागपृष्ठभागादिक संभवतेनहीं ॥ परिच्छिन्नपदार्थकेहीं तेअग्रभागादिकहोवेहैं ॥ तथापि अर्जुननैं तिससर्वात्मारूप परमेश्वरके तेअग्रभागादिककल्पनाकरिकै कथन करेहैं ॥ वास्तवतैं तासर्वात्मारूपपरमेश्वरके तेअग्रभागादिकहैंनहीं इति ॥ और किसीटीकाविषेतौं (पुरस्तात्) इसपदका कर्मोंकेआदिविषे यहअर्थ कऱ्याहै ॥ और (पृष्ठतः) इसपदका तिनकर्मोंकीसमाप्तिविषे यहअर्थकऱ्याहै ॥ और (सर्वतः) इसपदका तिनकर्मोंकेमध्यविषे यहअर्थकऱ्याहै ॥ अर्थात् कर्मोंकेआदिविषेभीतैं परमेश्वरके तांई हमारानमस्कारहोवौ ॥ तथा तिनकर्मोंकीसमाप्तिविषेभी तैंपरमेश्वरकेतांई हमारा नमस्कारहोवौ ॥ तथा तिनकर्मोंके मध्यविषेभी तैंपरमेश्वरकेतांई हमारा नमस्कारहोवौ ॥ इसव्याख्यानविषे तिस सर्वात्मारूपपरमेश्वरके अग्रभागादिक कल्पनाकऱ्येजावैनहीं इति ॥ हेभगवन् आपकैसेहो ॥ अनंतवीर्यअमितविक्रमहो ॥ तहां अनंतहै वीर्यजिसका तथाअमितहैविक्रमजिसका ताकानाम अनंतवीर्यअमितविक्रमहै ॥ तहांशरीरकेबलका नाम वीर्यहै ॥ और शिक्षाशस्त्रोंके प्रयोगकीजाकुशलताहै ताकानाम विक्रमहै ॥ तहांएकवीर्यकारकैहींअधिकता तथाएकविक्रमकरिकैहींअधिकता तौं भी दुर्योधनादिकोंविषे तथाअन्यराजावोंविषेभी विद्यमानहै ॥ परंतु अनंतवीर्यकरिकैअधिकता तथा अमितविक्रमकरिकैअधिकता आपपरमेश्वरतैंविना दूसरेकिसीविषैहैनहीं ॥ किंतु एकआपविषेहींहै ॥ अथवा (अनंतवीर्य अमितविक्रमः) यहदोपदजानणे तहां अनंतवीर्य यहपदतौं हेअनंतवीर्य याप्रकारतैं श्रीभगवान्का संबोधनहै इति ॥ तहां अर्जुननैं श्रीभगवान्का (हेसर्व) यहसंबोधन कथनकऱ्याथा ॥ तासर्वशब्दकेअर्थकूं अब अर्जुन कथनकरेहै (सर्वंसमाप्नोषिततोसिसर्वः इति) हेभगवन् जिसकारणतैं तूंपरमेश्वर इससर्वजगतकूं आपणे सत्ता स्फुरणरूपकरिकै व्याप्तकरि रह्याहैं ॥ तिसकारणतैं तूंपरमेश्वर सर्व इसनामकरिकै

कह्याजावेहैं ॥ अर्थात् तैंपरमेश्वरतैंअतिरिक्त कोईभीवस्तुनहींहैं इति ॥४०॥ ❀ ॥ हेभगवन् जिस कारणतै मैंअर्जुन तैंपरमेश्वरकेमाहात्म्यकेअज्ञानतैं तुमारे अनेकअपराधोंकूं करताभयाहूं तिसकारणतैं परमकृपालुरूप तैंपरमेश्वरकूं दंडवत्प्रणामकरिकै मैंअर्जुन तिनआपणेअपराधोंकीक्षमा करताहूं ॥ इसअर्थकूं अब अर्जुन दोश्लोकोंकरिकै कहेहै ॥

(मू० श्लो०) सखेतिमत्वाप्रसभंयदुक्तंहेकृष्णहेयादवहेसखेति ॥ अजानतामहिमानंतवेदंमयाप्रमादात्प्रणयेनवापि ॥ ४१ ॥

सखा । इति । मत्वा । प्रसभं । यत् । उक्तं । हेकृष्ण । हेयादव । हेसखा । इति । अजानता । महिमानं । तव । इदं । मया । प्रमादात् । प्रणयेन । वा । अपि ॥ ४१ ॥ (इतिपदच्छेदः) हेभगवन् तुमारे इसविश्वरूपकूं तथाऐश्वर्यरूपकूं नजानणेहारे मैंअर्जुननें यहकृष्णहमारासखाहै इसप्रकार मानिकै चित्तकेविक्षेपतैं अथवा स्नेहकरिकै भी जे हेकृष्ण हेयादव हेसखा इसप्रकारके अभिभवपूर्वकवचन कहेहैं तेसर्व आप क्षमाकरो ॥ ४१ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेभगवन् यहकृष्णभगवान् हमारा सखाहै अर्थात् समानवयवालाहै अथवा हमारेमामेकापुत्रहै ॥ इस प्रकारका तुमारेकूं मानिकै हमनैं आपणेचित्तकेविक्षेपरूपप्रमादतैं अथवा स्नेहकरिकै आपकेप्रति जेप्रसभवचनकथनकऱ्येहैं ॥ अर्थात् आपणी उत्कृष्टताकाख्यापनरूपअभिभवकरिकै जेअनुचित वचन कथनकऱ्येहैं ॥ तेसर्वहमारे अपराध आप क्षमाकरो ॥ शंका ॥ हेअर्जुन ऐसेअनुचितवचन तुमनैं किसहेतुतैं कथनकरेहैं ॥ ऐसीभगवान्कीशंकाकेहुए ॥ अर्जुन तिनअनुचितवचनोंकेकहणेविषे हेतुकूं कथनकरेहै ॥ (अजानतामहिमानंतवेदमिति) हेभगवन् जिसकारणतैं तुमारे इसविश्वरूपकूं तथातुमारेऐश्वर्यरूपमहिमाकूं मैं अर्जुन पूर्व जानतानहींथा ॥ इसकारणतैं मैंअर्जुन आपकेप्रति तेअनुचितवचन कहताभयाहूं ॥ शंका ॥ हेअर्जुन तुमनैं हमारेकूं ऐसेकौंनअनुचितवचनकहेहैं ऐसीश्रीभगवान्कीशंकाकेहुए अर्जुन तिनअनुचितवचनोंकास्वरूप कथनकरेहै (हेकृष्णहेयादवहेसखाइति) हेभगवन् सर्वजगत्कीउत्पत्तिस्थितिलयकरणेहारे तथाब्रह्मादिकसर्वदेवतावोंकेभीगुरुरूप ऐसेआपपरमेश्वरकूं मैं अर्जुन हेकृष्ण हेयादव हेसखा इसप्रकारकेसंबोधनोंकरिकै बुलावताभयाहूं इति ॥ तहां किसी मूलपुस्तकविषे (महिमानंतवेमं) याप्रकारकाभीपाठहोवैहै ॥ इसप्रकारकेपाठविषेतौं (महिमानम् इमम्) इनदोनोंपदोंका सामानाधिकरण्यहीं जानणा ॥ अर्थात् तुमारे इसविश्वरूपमहिमाकूं मैं अर्जुन पूर्वजानतानहींथा इति ॥ ४१ ॥ ❀ ॥ किंच ॥

(मू० श्लो०) यच्चावहासार्थमसत्कृतोसिविहारशय्यासनभोजनेषु ॥ एकोथवाप्यच्युततत्समक्षंतत्क्षामयेत्वामहमप्रमेयम् ॥ ४२ ॥

यत् । च । अवहासार्थम् । असत्कृतः । असि । विहारशय्यासनभोजनेषु । एकः । अथवा । अपि । अच्युत । तत्समक्षं । तत् ।
क्षामये । त्वाम् । अहम् । अप्रमेयम् ॥ ४२ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअच्युत तथा परिहासकेवासते विहारशय्याआसनभोजनविषे
एकलास्थितहुआ अथवा कदाचित् तिनसखावोंकेसन्मुखस्थितहुआ तूं परमेश्वर मैंअर्जुननें जो पराभवकऱ्या हैं सोसर्वअपराध मैंअ
र्जुन तैं अप्रमेयकेप्रति क्षमाकरावताहूं ॥ ४२ ॥ (इतिपदार्थः)॥

॥ टीका ॥ हेअच्युत अर्थात् हेसर्वदानिर्विकार ॥ क्रीडारूपजोविहारहै तिसविहारविषे ॥ तथा वस्त्रतूलिकादिकोंकरिकैरचीहुईजा शयनकरणेकास्थानरूप श
य्याहै तिसशय्याविषें ॥ तथा सिंहासनादिरूप जोआसनहै ताआसनविषे ॥ तथा सजातीयबहुतपुरुषोंकीपंक्तिविषे अन्नकाभक्षणरूपजोभोजनहै ताभोजनविषे ॥
सर्वसखावोंकूं छोडिकैएकलेस्थितहुएआपका अथवा परिहासकरतेहुए तिनसखावोंकेसमीपस्थितहुए आपका मैंअर्जुननैं उपहासकेवासतै जोपराभवकऱ्याहै ॥
तेअनुचितवचनरूप सर्वअपराध अथवा असत्करणरूप सर्वअपराध मैंअर्जुन तुमारेतैं क्षमाकरावताहूं ॥ कैसेहोआप अप्रमेयहो ॥ अर्थात् अचिंत्यप्रभाववालेहो
॥ तात्पर्ययह ॥ अचिंत्यप्रभाववाला तथा सर्वविकारोंतैं रहित तथापरमकृपालुरूप ऐसेआपपरमेश्वरनैं तुमारेप्रभावकूंनजानणेहारेमैंअर्जुनके तेसर्वअपराध क्षमा
करणे इति ॥ ४२ ॥ ❀ ॥ अब अर्जुन श्रीभगवान्केप्रति सापूर्वउक्त अचिंत्यप्रभावता स्पष्टकरिकैवर्णनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) पितासिलोकस्यचराचरस्यत्वमस्यपूज्यश्चगुरुर्गरीयान् ॥ नत्वत्समोस्त्यभ्यधिकःकुतोन्योलोकत्रयेप्यप्रतिमप्रभाव
॥ ४३ ॥ पिता । असि । लोकस्य । चराचरस्य । त्वम् । अस्य । पूज्यः । च । गुरुः । गरीयान् । न । त्वत्समः । अस्ति । अभ्य
धिकः । कुतः । अन्यः । लोकत्रये । अपि । अप्रतिमप्रभाव ॥ ४३ ॥ (इतिपदच्छेदः)॥ हेउपमातैंरहितप्रभाववाला इस चराचर
रूप सर्वलोकका तूं पितारूपहैं तथा पूज्यहैं तथागुरुरूपहैं तथा गुरुतरहै तीनलोकविषे तुमारेसमान भी कोईअन्य नहीं हैं तौं
तुमारेतैं अधिक कहांतैंहोवे ॥ ४३ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेभगवन् इसस्थावरजंगमरूपसर्वजगत्मात्रका तूं पिताहै अर्थात् जनकहैं ॥ तहांश्रुति ॥ (यतोवाइमानिभूतानिजायंते ॥ अर्थयह ॥ जिसपरमात्मादेवतैं
यहसर्वभूतप्राणी उत्पन्नहोवैहैं ॥ इत्यादिकश्रुतियां तैंपरमेश्वरकूं सर्वजगत्काजनककहेहैं ॥ तथा सर्वकाईश्वरहोणेतैं आपही पूज्यहो ॥ तथा आपहीं सर्वशास्त्रकेउपदे
शकरणेहारे गुरुरूपहो ॥ इसी कारणतैंहीं सर्वप्रकारकरिकै आप गुरुतरहो ॥ अर्थात् सर्वतैंउत्कृष्टहो ॥ इसीकारणतैंही हेभगवन् तीनलोकोंविषे तैंपरमेश्वरकेसमानभी

दूसराकोईहैनहीं॥तौं तिनतीनलोकोंविषे तैंपरमेश्वरतैं अधिक दूसरा कोईकहांतैंहोवैंगा ॥ किंतु कोईभीअधिकनहींहे ॥ तात्पर्ययह ॥तैंपरमेश्वरकेसमान दूसराकोईहै नहीं ॥ काहेतैं जोकदाचित् तैंपरमेश्वरकेसमान दूसराकोई अंगीकारकरिये ॥ तौं सोदूसराभी ईश्वरहींसिद्धहोवैंगा ॥ तहां एकईश्वरतौं इसजगत्केउत्पन्नकरणे कीइच्छाकरैंगा ॥ और दूसराईश्वर तिसीकालविषे इसजगत्केसंहारकरणेकीइच्छाकरैंगा ॥ यातैं कोईभीव्यवहार सिद्धनहींहोवेंगा ॥ किंतु सर्वव्यवहारोंकालो पहोवैंगा ॥ यातैं तैंपरमेश्वरकेसमान दूसराकोईहैनही ॥ जबी तीनलोकोंविषे तैंपरमेश्वरकेसमानभीकोईनहीभया ॥ तबी तुमारेतैंअधिक कौंनहोवैंगा ॥ किंतु सर्वप्रकारकरिकै तुमारेतैंअधिक कोईहैंनहा ॥ तहांश्रुति ॥ (नत्वत्समश्चाभ्यधिकश्चदृश्यते) ॥ अर्थयह ॥ तिसपरमेश्वरकेसमानभी कोईदेखणेविषेआवतानही ॥ तथा तिसपरमेश्वरतैं अधिकभी कोईदेखणेविषे आवतानहीं इति ॥ तहां तैंपरमेश्वरकेसमानपुरुषकाही असंभवहै इसपूर्वउक्तअर्थविषे अर्जुन हेतुकहेहै (हेअ प्रतिमप्रभावइति) ईहां सादृश्यकानाम प्रतिमाहै ॥ सासादृश्यरूपप्रतिमानहीहे विद्यमानजिसकूं ताकानाम अप्रतिमहै ॥ ऐसाअप्रतिमहैप्रभावक्या सामर्थ्य जिसका ताकानाम अप्रतिमप्रभावहै इति ॥ ४३ ॥ ❀ ॥ जिसकारणतैं आप ऐसेहो ॥ तिसकारणतैं मैंअर्जुन आपणे अपराधोंकूंक्षमाकरावणेवासतै आपकेआगेदं डवत्प्रणामकरिकै प्रार्थनाकरताहूं ॥ इसअर्थकूं अब अर्जुनकहेहै ॥

(मू० श्लो०) तस्मात्प्रणम्यप्रणिधायकायंप्रसादयेत्वामहमीशमीड्यम् ॥ पितेवपुत्रस्यसखेवसख्युःप्रियःप्रियायार्हसिदेवसोढुम् ॥ ४४ ॥ तस्मात् । प्रणम्य । प्रणिधाय । कायं । प्रसादये । त्वाम् । अहम् । ईशम् । ईड्यम् । पिता । इव । पुत्रस्य । सखा । इव । सख्युः । प्रियः । प्रियायाः । अर्हसि । देव । सोढुम् ॥ ४४ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेभगवन् तिसकारणतैं तैंपरमेश्वरकूं नमस्कारकरिकै तथाआपणेदेहकूं भूमिविषेदंडकीन्यांई धारणकरिकै मैंअर्जुन सर्वोंकरिकैस्तुतिकरणेयोग्य तैं ईश्वरकूं प्रसंन्नहोवो ऐसीप्रार्थनाकरूंहूं इसकारणतैं हेदेव पुत्रकेअपराधकूं पिताकी न्यांई तथासखाकेअपराधकूं सखाकी न्यांई तथाप्रियाकेअपराधकूं पतिकिन्यांई हमारेअपराधकूं आप क्षमाकरणेकूं योग्यहो ॥ ४४ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेभगवन् जिसकारणतैं तूंपरमेश्वर इससर्वलोकका पितारूपहैं ॥ तथा सर्वकागुरुरूपहैं ॥ तिसकारणतैं मैंअर्जुन तैंपरमेश्वरकूं नमस्कारकरिकै तथा आपणीकायाकूं अत्यंतनीचैधारणकरिकै अर्थात् दंडकीन्यांई भूमिविषेपतनहोइकै तैंपरमेश्वरकेप्रसन्नताकीप्रार्थना करताहूं ॥ अर्थात् मैंअपराधीअर्जुन तिन आपणेअपराधोंकीक्षमाकरावणेवासतैं मैंअर्जुनऊपरि आप प्रसन्नहोवौ याप्रकारकीप्रार्थना आपकेआगेकरताहूं ॥ कैसेहोआप ईशहो ॥ अर्थात् इससर्वजगत्के

नियंताहो ॥ पुनःकैसेहोआप ईड्यहो ॥ अर्थात् ब्रह्मादिकदेवतावोंकारिकैभी स्तुतिकरणेयोग्यहो ॥ इसकारणतैं हेदेव अर्थात् हेस्वप्रकाशरूप ॥ जैसे पुत्रके अपराधकूं पिता क्षमाकरेहै ॥ तथा जैसे सखाकेअपराधकूं सखा क्षमाकरेहै ॥ तथा जैसे पतिव्रताप्रियाकेअपराधकूं पति क्षमाकरेहै ॥ तैसे मैंअर्जुनकेअपराध कूंभी आपपरमेश्वर क्षमाकरणेकूंयोग्यहो ॥ जिसकारणतैं मैंअर्जुन केवल तुमारेहीशरणहूं ॥ अन्यकिसीकेशरणहूंनहीं ॥ तिसकारणतैं आप हमारेअपराधकूं क्षमाकरणेयोग्यहो इति ॥ ईहां (प्रियायार्हसि) इसवचनविषे वत् इसशब्दकालोप तथा विसर्गोंकेलोपहुएभीसंधि यहदोनों छांदसहैं इति ॥ ४४ ॥ ❀ ॥ इसप्रकार अर्जुन श्रीभगवान्‌केप्रति आपणेअपराधकेक्षमाकीप्रार्थनाकरिकै पुनः श्रीभगवान्‌केप्रति तिसविश्वरूपकेउपसंहारपूर्वक पूर्वलेरूपकेदर्शनकीप्रार्थना दोश्लोकोंकरिकै करेहै ॥

(मू० श्लो०) अदृष्टपूर्वंहृषितोस्मिदृष्ट्वाभयेनचप्रव्यथितंमनोमे ॥ तदेवमेदर्शयदेवरूपंप्रसीददेवेशजगन्निवास ॥ ४५ ॥ अदृष्टपूर्वम् । हृषितः । अस्मि । दृष्ट्वा । भयेन । च । प्रव्यथितम् । मनः । मे । तत् । एव । मे । दर्शय । देव । रूपम् । प्रसीद । देवेश । जगन्निवास ॥ ४५ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेभगवन् पूर्वकबीभीनहींदेख्येहुएइसविश्वरूपकूं देखके मैंअर्जुन हर्षवान् हूआहूं तथा भयकरिकै मेरा मन व्याकुलहुआहै यातैं मैंअर्जुनकेताईं सोपहला रूप ही दिखावो हेदेव हेदेवेश हेजगन्निवास मेरेऊपरि प्रसादकूंकरो ॥ ४५ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेभगवन् मैंअर्जुननैं पूर्व कदाचितभीनहींदेख्याहुआ ऐसाजो आपकायहविश्वरूपहै ॥ तिसआपकेविश्वरूपकूंदेखिकै मैंअर्जुन हर्षकूंप्राप्तहोताभयाहूं ॥ तथा तिसविकरालरूपकेदर्शनतैं उत्पन्नभयाजोभयहै ॥ तिसभयकरिकै हमारामन व्याकुलहोताभयाहै ॥ यातैं हेभगवन् मैंअर्जुनकेताईं सोप्राणोंतैंभीप्रिय आपणा पूर्वलारूपही दिखावो ॥ हेदेव अर्थात् हेस्वप्रकाशरूप ॥ तथा हेदेवेश अर्थात् हेसर्वदेवतावोंकेनियंता ॥ तथा हेजगन्निवास अर्थात् हेसर्वजगत्‌काआधाररूप ॥ मैंअर्जुनऊपरि तिसपूर्वलेरूपकादर्शनरूपप्रसादकूंकरो इति ॥ ४५ ॥ ❀ ॥ अब जिसपूर्वलेरूपकेदर्शनकी अर्जुननैं प्रार्थनाकरीहै ॥ तिसरूपकूं सोअर्जुन विशेषणोंकरिकैकथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) किरीटिनंगदिनंचक्रहस्तमिच्छामित्वांद्रष्टुमहंतथैव ॥ तेनैवरूपेणचतुर्भुजेनसहस्रबाहोभवविश्वमूर्त्ते ॥ ४६ ॥ किरीटिनं । गदिनं । चक्रहस्तम् । इच्छामि । त्वां । द्रष्टुम् । अहं । तथा । एव । तेन । एव । रूपेण । चतुर्भुजेन । सहस्रबाहो । भव । विश्वमूर्ते

॥ ४६ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेभगवन् मैंअर्जुन किरीटवाले तथागदावाले तथाचक्रहैहस्तविषेजिनके ऐसेंतुमारेकूं पूर्वकीन्यांई हीं देखणेकूं इच्छेताहूं यातैं हेसहस्रबाहुवाला हेविश्वमूर्ति अबीआप तिसपूर्वले चतुर्भुज रूपकरिकै हीं प्रगटहोवो ॥ ४६ ॥ (इतिप०)

॥ टीका ॥ हेभगवन् किरीटकूंधारणकरणेहारे तथागदाकूंधारणकरणेहारे तथाचक्रहैहस्तविषेजिसके ऐसेआपपरमेश्वरकूं मैंअर्जुन इस विश्वरूपतैंपूर्व जैसे देखताभयाहूं ॥ तिसीआपकेसुंदरस्वरूपकूं अबी मैं अर्जुन देखणेकीइच्छाकरताहूं॥ यातैं हेसहस्रबाहो अर्थात् हेअनेकसहस्रभुजावोंवाला॥ तथा हेविश्वमूर्ते अर्थात् हेसर्वविश्वरूपमूर्तिकूंधारणकरणेहारा श्रीभगवान् ॥ अबीइसकालविषे इसआपकेविश्वरूपकाउपसंहारकरिकै तिसपूर्वलेचतुर्भुजस्वरूपकरिकै प्रगटहोवो ॥ इतनैंकहणेकरिकै यह अर्थसूचनकऱ्या ॥ अर्जुननैं सर्वकालविषे श्रीभगवान्का चतुर्भुजादिकस्वरूपहीं देखीताहै इति ॥ ४६ ॥ ❀ ॥ इसप्रकारतैं अर्जुनकरिकैप्रार्थनाकऱ्याहुआ श्रीभगवान् तिसअर्जुनकूं भयकरिकैपीडितहुआदेखिकै तिसविश्वरूपकाउपसंहारकरिकै उचितवचनोंकरिकै तिसअर्जुनकूं आश्वासनकरताहुआकहेहै ॥

(मू० श्लो०) श्रीभगवानुवाच ॥ मयाप्रसन्नेनतवार्जुनेदंरूपंपरंदर्शितमात्मयोगात् ॥ तेजोमयंविश्वमनंतमाद्यंयन्मेत्वदन्येननदृष्टपूर्वम् ॥ ४७ ॥ मया । प्रसन्नेन । तव । अर्जुन । इदं । रूपं । परं । दर्शितम् । आत्मयोगात् । तेजोमयं । विश्वम् । अनंतम् । आद्यं । यत् । मे । त्वदन्येन । न । दृष्टपूर्वम् ॥ ४७ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन प्रसन्नतावाले मैंपरमेश्वरनैं आपणेसामर्थ्यतैं तुमारेतांई यहविश्वात्मक श्रेष्ठ रूप दिखायाहै कैसाहैसोरूप तेजोमयहै तथासर्वविश्वरूपहै तथाअनंतहै तथाअनादिहै जोरूप हमारा तुमारेतैंअन्यकिसीनैंभी नहीं पूर्वदेख्याहै ॥ ४७ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन तूं इसहमारेविश्वरूपकूंदेखिकै भयकूंमतप्राप्तहोउ ॥ कोई तुमारेकूंभयकीप्राप्तिकरणेवासतै मैंनैंयहविश्वरूप दिखायानहीं ॥ किंतु प्रसन्नतावाले मैंपरमेश्वरनैं अर्थात् तैं अर्जुनविषयकअतिशयकृपावाले मैंपरमेश्वरनैं तैंअर्जुनकेतांई यहआपणा विश्वरूपात्मकश्रेष्ठरूप आपणेसामर्थ्यतैं दिखायाहै ॥ सो केवल तुमारेऊपरिकृपादृष्टिकरिकैहीं दिखायाहै ॥ तहां (परम्) इसविशेषणकरिकै ताविश्वरूपविषे कथनकऱ्याजोश्रेष्ठत्वरूपपरत्वहै ॥ तिसीपरत्वकूंहीं अब स्पष्ट करिकैकथनकरेहैं ॥ (तेजोमयमिति) हेअर्जुन कैसाहैसोहमाराविश्वरूप तेजोमयहै ॥ अर्थात् कोटिसूर्यकेप्रकाशसमानहैप्रकाशजिसका ॥ पुनःकैसाहैसोरूप विश्वहै ॥ अर्थात् सर्वविश्वरूपहै ॥ पुनःकैसाहै सोरूप आदिअंततैंरहितहै ॥ ऐसाअपणाविश्वात्मकरूप मैंपरमेश्वरनैं केवल तैंअत्यंतप्रियभक्तअर्जुनकेतांईहीं दिखायाहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् यहविश्वात्मकरूप मैंपरमेश्वरनैं प्रसन्नहोईकै केवल तैंअर्जुनकेतांईहीं दिखायाहै ॥ यहआपकाकहणा संभवतानहीं ॥ काहेतैं

धृतराष्ट्रकेगृहविषे भीष्मादिकोंकूंभी यहविश्वरूप आपनै दिखायाथा ॥ तथा बाल्यअवस्थाविषे यशोदामाताकूंभी यहविश्वरूप आपनैं दिखायाथा ॥ तथा अक्रूरकूंभी यहविश्वरूप आपने दिखायाथा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए ॥ हेअर्जुन तिनभीष्मादिकोंकूं जोहमनै विश्वरूपदिखायाथा सोइसविश्वरूपका एकअवां तररूपहींथा ॥ यातैं सोरूप सर्वतैंउत्तमनहींथा ॥ औरयहजोविश्वात्मकरूप हमनैं तुमारेकूंदिखायाहै ॥ सोसर्वतैं श्रेष्ठहै ॥ दूसरेकिसीनैंभी पूर्व यहरूप देख्यानहीं ॥ इसप्रकारकेउत्तरकूं श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥ (यन्मेइति) हेअर्जुन जोयह हमाराविश्वात्मकरूप तुमारेतैं अन्यकिसीनैंभी पूर्वदेख्यानहीं ॥ सोयहविश्वा त्मकआपणास्वरूप मैंपरमेश्वरनैं कृपाकरिकै तैं अर्जुनकेताईं अबी दिखायाहै इति ॥ ४७ ॥ ❀ ॥ हेअर्जुन इसविश्वरूपकादर्शनरूप जो अत्यंतदुर्लभ हमाराप्रसादहै॥तिसहमारे प्रसादकूंप्राप्तहोइकै तूंअर्जुन अब कृतार्थहीं हुआहैं ॥ इसअभिप्रायकरिकै श्रीभगवान् अब ताविश्वरूपकीदुर्लभताकूं कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) नवेदयज्ञाध्ययनैर्नदानैर्नचक्रियाभिर्नतपोभिरुग्रैः ॥ एवंरूपःशक्यअहंनृलोकेद्रष्टुंत्वदन्येनकुरुप्रवीर ॥ ४८ ॥

न । वेदयज्ञाध्ययनैः । न । दानैः । न । च । क्रियाभिः । न । तपोभिः । उग्रैः । एवं । रूपः । शक्यः । अहं । नृलोके । द्रष्टुं । त्वदन्येन । कुरुप्रवीर ॥ ४८ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेकुरुवंशविषेअतिशूरवीरअर्जुन इसमनुष्यलोकाविषे इसप्रकारके विश्वरूपवाला मैंभगवान् तुमारेतैंअन्यपुरुषनैं वेदोंकेतथायज्ञोंकेअध्ययनकरिकै देखणेकूं नहीं शक्यहूं तथादानोंकरिकै नहीं देखणेकूं शक्यहूं तथा कर्मोंकरिकैभी नहीं देखणेकूंशक्यहूं तथाउग्र तपोंकरिकै नहीं देखणेकूंशक्यहूं ॥ ४८ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन ऋग् यजुष् साम अथर्वण इनच्यारिवेदोंका जो गुरुमुखतैंअक्षरोंकाग्रहणरूप अध्ययनहै ॥ तथा पूर्वमीमांसा कल्पसूत्र इत्यादिकोंकरिकै वेदबोधितकर्मरूपयज्ञोंका जो अर्थविचाररूपअध्ययनहैं ॥ तिनवेदोंकेअध्ययनकरिकै॥तथायज्ञोंकेअध्ययनकरिकै॥तथा तुलापुरुषदान कन्यादान गौसुवर्णअन्नदान इत्यादिकदानोंकरिकै ॥ तथा अग्निहोत्रादिक श्रौतस्मार्त्तकर्मोंकरिकै ॥ तथा कायइंद्रियोंकेशोषककहोणेतैं करणेविषे अत्यंतकठिन ऐसेजे कृच्छ्रचांद्रायणा दिकतपहैं ऐसेतपोंकरिकै ॥ इसमनुष्यलोकविषे इसप्रकारकेविश्वरूपवाला मैंपरमेश्वर तुमारेतैंअन्यपुरुषोंने देखणेकूं अशक्यहूं ॥ अर्थात् मैंपरमेश्वरकेअनुग्रहतैंर हितपुरुष वेदोंकेअध्ययनकरिकै तथावेदप्रतिपादितकर्मोंकेयथार्थज्ञानकरिकै तथादानोंकरिकै तथाउग्रतपोंकरिकै मेरेइसविश्वरूपकूं देखिसकतेनही ॥ ऐ साअत्यंतदुर्लभ यहविश्वरूप हमनैं कृपाकरिकै तुमारेकूंदिखायाहै॥ तिसरूपकेदर्शनतैं अबी तूं कृतार्थहुआहै इति ॥ तहां मूलश्लोकविषे (शक्यः अहम्) इसवचनकेस्थानविषे यद्यपि (शक्योऽहम्) इसप्रकारकावचनही करणेयोग्यथा ॥ तथापि (शक्यअहम्) इसवचनविषेजो शक्य इसपदतेउचर

विसर्गोंकालोपहै सोछांदसहै ॥ और यद्यपि एकनकारकेपठनतैंहीं अध्ययन दान क्रिया तप इनसर्वोंकानिषेध होइसकेहै ॥ तथापि अध्ययन दान क्रिया तप इनच्यारोंकेसाथि जोभिन्नभिन्न नकारकापठनकन्याहे ॥ सो तिसविश्वरूपकेदर्शनविषे तिनअध्ययनादिकोंकेनिषेधकी दृढतावासतै कथनकन्याहे ॥ और (नचक्रियाभिः) इसवचनविषेस्थितजोचकारहै ॥ सोचकार ईहांनहींकह्येहुएदूसरेसाधनोंकाभी समुच्चयकरणेवासतेहै ॥ अर्थात् मैंपरमेश्वरकेअनुग्रहतैंविना दूसरेकिसीभीसाधनकरिकै यहहमाराविश्वरूप देख्या जातानहीं इति ॥ ४८ ॥ ❀ ॥ हेअर्जुन तुमारेअनुग्रहवासतै मैंपरमेश्वरनैं प्रगटकन्याजोयह आपणा विश्वरूपहै ॥ तिसहमारेविश्वरूपकरिकै जोकदाचित् तुमारेकूं उद्वेगप्राप्तहुएआहे ॥ तौं मैंपरमेश्वर इसआपणेविश्वरूपका अबी उपसंहारकरताहूं ॥ तूं व्यथाकूं मतप्राप्तहोउ ॥ इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् अर्जुनकेप्रति कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) मातेव्यथामाचविमूढभावोदृष्ट्वारूपंघोरमीदृङ्ममेदम् ॥ व्यपेतभीःप्रीतमनाःपुनस्त्वंतदेवमेरूपमिदंप्रपश्य ॥ ४९ ॥

मा। ते। व्यथा। मा। च। विमूढभावः। दृष्ट्वा। रूपम्। घोरम्। ईदृक्। मम। इदम्। व्यपेतभीः। प्रीतमनाः। पुनः। त्वम्। तत्। एव। मे। रूपम्। इदम्। प्रपश्य ॥ ४९ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन मैंपरमेश्वरके इसप्रकारके ईस घोरं रूपकूं देखके तैंअर्जुनकूं व्यथा मतहोवौ तथा विमूढभावभी मतहोवौ किंतु भयतैंरहित प्रसन्नमनहुआ तूं अर्जुन पुनः मैंपरमेश्वरके तिसपूर्वले इस रूपकूं हीं देखें ॥ ४९ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन अनेकबाहुमुखादिकोंकरिकैयुक्तहोणेतैं अत्यंतभयानक जोयहहमाराविश्वरूपहै ॥ तिसहमारेविश्वरूपकूंदेखिकैस्थितहुआजोतूंअर्जुनहै ॥ तिसतुमारेकूं व्यथा मतप्राप्तहोवो ॥ अर्थात् भयरूपनिमित्ततैंउत्पन्नभईजा पीडाहै सापीडा मतप्राप्तहोवौ ॥ तथा मेरेइसविश्वरूपकेदर्शनहुएभी जोतुमारेकूं विमूढभाव प्राप्तहुआहै ॥ अर्थात् व्याकुलचित्तपणा तथाअपरितोष प्राप्तभयाहै ॥ सोविमूढभावभी तुमारेकूं मतप्राप्तहोवौ ॥ किंतु भयतैंरहितहोइकै तथाप्रसन्न मनहोइकै तूंअर्जुन पुनःतिसीहमारे चतुर्भुजरूपकूंदेख ॥ अर्थात् इसविश्वरूपतैंपूर्व तूंअर्जुन जिसहमारे चतुर्भुजवासुदेवरूपकूं सर्वदा देखताथा ॥ तिसीहमारेचतुर्भुजरूपकूं तूंअबी भयतैंरहितहोइकै तथासंतोषयुक्तहोइकै देख ॥ ईहां भयतैंरहितपणा तथासंतोष यहदोनों श्रीभगवान्नैं (प्रपश्य) इसवचनविषेस्थित प्र इस शब्दकरिकेकथनकरेहैं इति ॥ ४९ ॥ ❀ ॥ अब संजय धृतराष्ट्रकेप्रति कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) संजयउवाच ॥ इत्यर्जुनंवासुदेवस्तथोक्त्वास्वकंरूपंदर्शयामासभूयः ॥ आश्वासयामासचभीतमेनंभूत्वापुनःसौम्य

वपुर्महात्मा ॥ ५० ॥ इति । अर्जुनम् । वासुदेवः । तथा । उक्त्वा । स्वकम् । रूपम् । दर्शयामास । भूयः । आश्वासयामास ।
च । भीतम् । एनम् । भूत्वा । पुनः । सौम्यवपुः । महात्मा ॥ ५० ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेधृतराष्ट्र सोकृष्णभगवान् अर्जुनके
प्रति इसप्रकारकावचन कहिकै तिसीप्रकारका आपणा चतुर्भुजरूप पुनः दिखावताभया तथा सोपरमकृपालुभगवान् पुनः
तिससौम्यशरीरवाला होइकै भययुक्त इसअर्जुनकूं आश्वासनकरताभया ॥ ५० ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेधृतराष्ट्र सोवासुदेवकृष्णभगवान् ताअर्जुनकेप्रति यहपूर्वउक्तवचनकहिकै ताविश्वरूपधारणतैंपूर्व जिसप्रकारकेरूपवालाथा तिसीप्रकारआपणारूप ताअर्जुनकेप्रति पुनः दिखावताभया ॥ अर्थात् मस्तकऊपरिकिरीटकूंधारणकरणेहारा तथाकानोंविषे मकराकृतिकुंडलोंकूंधारणकरणेहारा तथाच्यारोंभुजावोंविषे शंख चक्र गदा पद्म इनच्यारोंकूंधारणकरणेहारा तथा श्रीवत्स कौस्तुभ वनमाला पीतांबर इत्यादिकोंकरिकैशोभायमान इसप्रकारके आपणेपूर्वलेरूपकूं तिस अर्जुनके प्रति पुनः दिखावताभया ॥ तथा सोमहात्माकृष्णभगवान् अर्थात् परमकारुणिक तथासर्वकाईश्वर तथासर्वज्ञ इत्यादिककल्याणोंकाआकाररूप श्रीकृष्णभगवान् पुनः सौम्यवपुहोइकै अर्थात् परमअनुग्रहरूपशरीरवालाहोइकै पूर्वविश्वरूपकेदर्शनतैंभयकूंप्राप्तहुएअर्जुनकेप्रति धैर्ययुक्तवचनोंकरिकै आश्वासनकरताभया इति ॥ ५० ॥ ❀ ॥ तहां श्रीकृष्णभगवान्के तिस पूर्वले चतुर्भुजस्वरूपकेदर्शनतैंअनंतरसोअर्जुन भयतैंरहितहोइकै श्रीकृष्णभगवान्केप्रति याप्रकारकावचन कहताभया॥

(मू० श्लो०) अर्जुनउवाच ॥ दृष्ट्वेदंमानुषंरूपंतवसौम्यंजनार्दन ॥ इदानीमस्मिसंवृत्तःसचेताःप्रकृतिंगतः ॥ ५१ ॥ दृष्ट्वा । इदं ।
मानुषं । रूपं । तव । सौम्यं । जनार्दन । इदानीम् । अस्मि । संवृत्तः । सचेताः । प्रकृतिं । गतः ॥ ५१ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेज
नार्दन तुमारे इस मानुष सौम्य रूपकूं देखिकै अबी मैंअर्जुन अव्याकुलचित्त हुवा हूं तथा स्वस्थताकूं प्राप्तहुआहूं ॥ ५१ ॥
(इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेजनार्दन तुमारे इससौम्यमानुषरूपकूंदेखिकै मैंअर्जुन अबी सचेता हुआहूं ॥ अर्थात् पूर्वविश्वरूपकेदर्शनजन्यभयकरिकैकन्येहुएव्यामोहकेअभाव करिकै अबीमैं चित्तकीव्याकुलतातैंरहितहुआहूं ॥ तथा मैंअर्जुन अबीप्रकृतिकूंप्राप्तहुआहूं ॥ अर्थात् तिसभयजन्यव्यथातैंरहितहोणेतैं स्वस्थभावकूंप्राप्तहुआहूं इति ॥ ५१ ॥ ❀ ॥ तहां श्रीभगवान्नें अर्जुनऊपरिकन्याजो विश्वरूपकादर्शनरूपअनुग्रहहै ॥ ताअनुग्रहकीदुर्लभताकूं श्रीभगवान् अबच्यारिश्लोकों करिकैकथनकरैहै ॥

(मू० श्लो०) श्रीभगवानुवाच ॥ सुदुर्दर्शमिदंरूपंदृष्टवानसियन्मम॥ देवाअप्यस्यरूपस्यनित्यंदर्शनकांक्षिणः ॥५२॥ सुदुर्दर्शम्। इदं। रूपं। दृष्टवानासि। यत्। मम। देवाः। अपि। अस्य। रूपस्य। नित्यं। दर्शनकांक्षिणः ॥ ५२ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन मैंपरमेश्वरके जिस विश्वरूपकूं तूंअबी देखताभयाहै यहहमाराविश्वरूप अत्यंतदेखणेकूंअशक्यहै जिसकारणतैं देवता भी नित्यहीं इस विश्वरूपके दर्शनकीइच्छाकरेहैं ॥ ५२ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन मैंपरमेश्वरके जिसाविश्वरूपकूं तूं अबी देखताभयाहै ॥ सोयहहमाराविश्वरूप अत्यंतदेखणेकूं अशक्यहै ॥ जिसकारणतैं इंद्रादिकदेवताभी सर्वदा इसहमारे विश्वरूपकेदर्शनकीइच्छाहीं करतेरहतेहैं ॥ परंतु जैसे तूं अर्जुन इसहमारेविश्वरूपकूं देखताभयाहैं ॥ तैसे तेइंद्रादिकदेवता पूर्वभी इसहमारे विश्वरूपकूं नहींदेखतेभयेहैं ॥ और आगेभीनहींदेखैंगे इति ॥ ५२ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् तेइंद्रादिकदेवता इसआपकेविश्वरूपकूं किस कारणतैं पूर्व नहींदेखतेभयेहैं तथाआगेनहीं देखैंगे ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए ॥ मैंपरमेश्वरकीअनन्यभक्तितैंरहितहोणेतैं तेदेवता इसहमारेविश्वरूपकूं पूर्वनहींदेखतेभयेहैं तथा आगेनहीं देखैंगे ॥ इसप्रकारकेउत्तरकूं श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) नाहंवेदैर्नतपसानदानेननचेज्यया ॥ शक्यएवंविधोद्रष्टुंदृष्टवानसिमांयथा ॥५३॥ न। अहं। वेदैः। न। तपसा। न। दानेन। न। च। इज्यया। शक्यः। एवंविधः। द्रष्टुं। दृष्टवानासि। मां। यथा ॥ ५३ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन तूं जिसप्रकारतैं मैंविश्वरूपकूं देखताभयाहै इसप्रकारकेविश्वरूपवाला मैंपरमेश्वर वेदोंकेअध्ययनकरिकैभी देखणेकूं नहीं शक्यहूं तथातपकरिकैभी देखणेकूं नहींशक्यहूं तथादानकरिकैभी देखणेकूं नहींशक्यहूं तथा अग्निहोत्रादिककर्मकरिकैभी देखणेकूं नहींशक्यहूं ॥ ५३ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ मैंविश्वरूपपरमेश्वरकूं जिसप्रकारतैं तूं अर्जुन अबी देखताभयाहैं ॥ इसप्रकारकेविश्वरूपवाला मैंपरमेश्वर ऋगादिकच्यारिवेदोंकेअध्ययनकरिकैभी देखणेकूंशक्यनहींहूं ॥ तथा कृच्छ्रचांद्रायणादिकतपकरिकैभी मैं देखणेकूंशक्यनहींहूं ॥ तथा तुलापुरुष कन्या गौ सुवर्ण अन्न इत्यादिकपदार्थोंकेदानकरिकैभी मैंदेखणेकूंशक्यनहींहूं ॥ तथा अग्निहोत्रादिकश्रौतस्मार्त्तकर्मोंकरिकैभी मैं देखणेकूंशक्यनहींहूं ॥ तहांपूर्व (नवेदयज्ञाध्ययनैः) इसश्लोकविषे जोअर्थ कथनकऱ्याथा ॥ सोईहींअर्थ (नाहंवेदैर्नतपसा) इसश्लोकविषे जोअबी पुनःकथनकऱ्याहै ॥ सो तिसविश्वरूपकेदर्शनकीअत्यंतदुर्लभताकेबोधनकरणेवासतै कथनकऱ्याहै

यातें इसश्लोकविषे पुनरुक्तिदोषकीप्राप्तिहोवैनहीं इति ॥ ५३ ॥ ❁ ॥ शंका ॥ हेभगवन् इसप्रकारकेविश्वरूपवालातूं जबीवेदोंकेअध्ययनकरिकै तथा तपकरिकै तथादानकरिकै तथाअग्निहोत्रादिककर्मोंकरिकै देखणेकूं अशक्यहैं ॥ तबी दूसरेकिसउपायकरिकैतूं देखणेकूंशक्यहैं ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए ॥ श्रीभगवान् ताविश्वरूपकेदर्शनकाउपाय कथनकरेहैं ॥

(मू० श्लो०) भक्त्यात्वनन्ययाशक्यअहमेवंविधोर्जुन ॥ ज्ञातुंद्रष्टुंचतत्त्वेनप्रवेष्टुंचपरंतप ॥ ५४ ॥ भक्त्या । तु । अनन्यया । शक्यः । अहम् । एवंविधः । अर्जुन । ज्ञातुं । द्रष्टुं । च । तत्त्वेन । प्रवेष्टुं । च । परंतप॥५४॥(इतिपदच्छेदः)॥ हेअर्जुन हेपरंतप इसप्रकारकेविश्वरूपवाला मैंपरमेश्वर अनन्य भक्तिकरिकै हीं जानणेकूं शक्यहूं तथा वास्तवरूपकरिकै साक्षात्कारकरणेकूं शक्य हूं तथा अभेदरूपकरिकैप्राप्तहोणेकूं शक्यहूं ॥ ५४ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेपरंतप अर्थात् हे अज्ञानरूपशत्रुकूंनाशकरणेहारा अर्जुन ॥ इसप्रकारकेदिव्य विश्वरूपकूंधारणकरणेहारा मैंपरमेश्वर एकअनन्यभक्तिकरिकैहीं जानणेकूंशक्यहूं ॥ अर्थात् सर्वविषयवासनाकापरित्यागकरिकै एकमैंपरमेश्वरविषयक जानिरतिशयप्रीतिरूप अनन्यभक्तिहै ॥ ताअनन्यभक्तिकरिकैहीं यहअधिकारीजन शास्त्ररूपप्रमाणतैं मैंपरमेश्वरकूंजानिसकैहैं ॥ अन्यकिसीभीउपायकरिकै जानिसकतेनहीं ॥हेअर्जुन तिसअनन्यभक्तिकरिकै शास्त्रप्रमाणतैं मैंपरमेश्वर केवल जानणेकूंहीं शक्यनहींहूं॥ किंतु तिसअनन्यभक्तिकरिकै मैंपरमेश्वर वेदांतवाक्योंके श्रवणमनननिदिध्यासनकीपरिपाकताकरिकै आपणेवास्तवस्वरूपतैं साक्षात्कारकरणेकूंभी शक्यहूं ॥ अर्थात् ता अनन्यभक्तिकरिकै यहअधिकारीपुरुष श्रवणमननादिकसाधनोंकरिकै मैंपरमेश्वरकूं मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारतैं साक्षात्कारभीकरेहैं ॥ और तिससाक्षात्कारकीप्राप्तितैंअनंतर तिससाक्षात्कारकरिकै अविद्याकेनिवृत्तहुए मैंपरमेश्वर तिनतत्त्ववेत्ताभक्तजनोंकूं आपणेवास्तवस्वरूपतैं प्राप्तहोणेकूंभी शक्यहूं ॥ अर्थात् तिनतत्त्ववेत्ताभक्तजनोंकूं मैंपरमेश्वर आपणाआत्मारूपकरिकैंप्राप्तहोवूंहूं ॥ ईहां (हेपरंतप) इससंबोधनकरिकै श्रीभगवान्नैं अर्जुनकूं अज्ञानरूपशत्रुकीनिवृत्तिकरिकै आपणेअद्वितीयनिर्गुणस्वरूपविषे अभेदरूपकरिकै प्रवेशकीयोग्यता सूचनकरी ॥ और (शक्यःअहम्) इसवचनकेस्थान विषे यद्यपि (शक्योऽहं) इसप्रकारकावचन चाहीताथा ॥ तथापि शक्य इसपदतैंउत्तर जो विसर्गकालोपकर्याहै ॥ सो पूर्वकीन्यांई छांदसहै इति ॥ ५४ ॥

❁ ॥ अब श्रीभगवान्नैं समग्रगीताशास्त्रका सारभूतअर्थ मुमुक्षुजनोंकेअनुष्ठानवासतै एकठाकरिकै कथनकरीताहै ॥

(मू० श्लो०) मत्कर्मकृन्मत्परमोमद्भक्तःसंगवर्जितः ॥ निर्वैरःसर्वभूतेषुयःसमामेतिपांडव ॥ ५५ ॥ इतिश्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु

ब्रह्मविद्यायांयोगशास्त्रेश्रीकृष्णार्जुनसंवादेविश्वरूपदर्शननंनाम एकादशोध्यायःसमाप्तः ॥ ११ ॥ मत्कर्मकृत् । मत्परमः । मद्भक्तः । संगवर्जितः । निर्वैरः । सर्वभूतेषु । यः । सः । माम् । एति । पांडव ॥ ५५ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेपांडव जोपुरुष मत्कर्मकृतहै तथामत्परमहै तथामेराभक्तहै तथासंगतैंरहितहै तथासर्वभूतोंविषे निर्वैरहै सोपुरुषहीं मैंपरमेश्वरकूं अभेदरूपकरिकैप्राप्तहोवै है ॥ ५५ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेपांडव अर्थात् हेपांडुराजाकेपुत्रअर्जुन जोअधिकारीपुरुष मत्कर्मकृतहै ॥ अर्थात् जोअधिकारीपुरुष मैंपरमेश्वरकीप्रसन्नतावास्तैहीं वेदविहित अग्निहोत्रादिक श्रौतस्मार्त्तकर्मोंकूंकरैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् स्वर्गादिकफलोंकीकामनावोंकेविद्यमानहुए इसअधिकारीपुरुषविषे सोमत्कर्मकृत्पणा कैसेसंभवैगा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान्कहैहै (मत्परमःइति) हेअर्जुन जोअधिकारीपुरुष मत्परमहै ॥ अर्थात् मैंपरमेश्वरहींहूं प्राप्तरूपकरिकैनिश्चितजिसकूं दूसरे स्वर्गादिकफल जिसकूं प्राप्तव्यरूपकरिकैनिश्चितहैं नहीं तिसपुरुषकानाम मत्परमहै ॥ जिसकारणतैं सोअधिकारीपुरुष मत्कर्मकृतहै तथामत्परमहै ॥ तिसकारणतैं हीं सोअधिकारीपुरुष मद्भक्तहै ॥ अर्थात् मैंपरमेश्वरकेप्राप्तिकीआशाकरिकै जोअधिकारीपुरुष सर्वप्रकारोंकरिकै मैंपरमेश्वरकेभजनपरायणहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् पुत्रादिकपदार्थोंविषेस्नेहकेविद्यमानहुए तिसअधिकारीपुरुषविषे सोतुमाराभक्तपणाभी कैसेसंभवैगा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहैहै ॥ (संगवर्जितः इति) जोअधिकारीपुरुष संगतैंरहितहै ॥ अर्थात् पुत्र स्त्री धन गृह इसतैं आदिलेकेजितनैंकीबाह्यअनात्मपदार्थहैं तिनसर्वपदार्थोंकी इच्छातैंरहितहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् शत्रुवोंविषेद्वेषकेविद्यमानहुए तिसअधिकारीपुरुषविषे सोसंगतैरहितपणाभी कैसेसंभवैगा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान्कहैहै (निर्वैरःसर्वभूतेषु इति) हेअर्जुन जोअधिकारीपुरुष सर्वभूतोंविषेवैरतैंरहितहै ॥ अर्थात् जेप्राणी आपणाअपकारकरैहैं ऐसेअपकारीप्राणीयोंविषेभी जोपुरुष द्वेषतैंरहितहै ॥ हेअर्जुन इसप्रकार जोअधिकारीपुरुष मत्कर्मकृतहै तथामत्परमहै तथामद्भक्तहै तथासंगतैंरहितहै तथासर्वभूतोंविषे निर्वैरहै ॥ सोअधिकारी पुरुषहींमैंपरमेश्वरकूं अभेद रूपकरिकै प्राप्तहोवैहै ॥ हेअर्जुन यहजो सर्वशास्त्रकासारभूतअर्थ हमनैं तुमारेप्रति उपदेशकऱ्याहै ॥ सोयहअर्थहीं तुमारेकूं जानणेयोग्यहै ॥ इस अर्थके जानणेतैंपरे दूसराकोई तुमारेकूंकर्त्तव्यनहींहै इति ॥ और किसीटीकाविषेतौ (मत्परमः) इसपदका यह अर्थ कथनकऱ्याहै ॥ मीयतेपदार्थोऽनयाइति मा ॥ अर्थयह जिसकरिकै पदार्थ निश्चयकऱ्याजावैहै ताकानाम माहै ॥ अर्थात् नेत्रादिकइंद्रियजन्यअंतःकरणकीवृत्तिकरिकैहीं सर्वपदार्थ निश्चयकऱ्येजावैहैं ॥ यातैं ताइंद्रियजन्यवृत्तिकानाम माहै ॥ तहां मत्पराहै क्या सर्वत्रमैंपरमेश्वरकेस्वरूप ग्रहणपराहै साइंद्रियजन्यवृत्तिरूप मा जिसपुरुषकी ताकानाम मत्परमहै इति॥

तहां (मत्कर्मकृत् मत्परमः) इनदोनोंपदोंकरिकैतौं संपूर्णकर्मयोग तथासंपूर्णध्यानयोगकथनकऱ्या ॥ जोकर्मयोग तथाध्यानयोग त्वंपदार्थका शोधकहै ॥ और (मद्भक्तः) इसपदकरिकैतौं समग्रउपासनाकांडकेअर्थकासंग्रहकऱ्या ॥ और (संगवर्जितः) इसपदकरिकैतौं सर्वसंगकापरित्यागकरिकै एकांतदेशविषेस्थितहोइकै यहअधिकारीपुरुष भगवत्ध्याननिष्ठहोवे यह अर्थकथनकऱ्या ॥ और (निर्वैरःसर्वभूतेषु) इसवचनकरिकैतौं यहअर्थ कथनकऱ्या ॥ यहअधिकारीपुरुष इससर्व विश्वकूं भगवत्‌रूपकरिकैदेखै ॥ जोकदाचित् यहअधिकारीपुरुष इससर्वविश्वकूं भगवत्‌रूपकरिकैनहींदेखैंगा ॥ तौंभेदबुद्धिवाले इसअधिकारीपुरुषविषे सानि वैरताहीं संभवैंगीनहीं ॥ इसप्रकारतैं यहश्लोक सर्वगीताशास्त्रकेसारभूत अर्थकूंकथनकरैहै ॥ और (हेपांडव) इससंबोधनकरिकै श्रीभगवान्‌नैं अर्जुनका विशुद्धवंशविषेजन्म कथनकऱ्या ॥ ताकरिकै यहअर्थ सूचनकऱ्या ॥ तूं अर्जुन इससर्वशास्त्रकेसारभूतअर्थकूं जानणेविषेसमर्थहैं इति ॥ ५५ ॥ इतिश्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यश्रीस्वामिउद्धवानंदगिरिपूज्यपादशिष्येणस्वामिचिद्घनानंदगिरिणा विरचितायां प्राकृतटीकायांगीतागूढार्थदीपिकाख्यायामेकादशोऽध्यायःसमाप्तः ॥ ११ ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥

इति एकादशोऽध्यायःसमाप्तः ॥ ११ ॥



ॐश्रीगणेशायनमः ॥ ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥ अथ द्वादशाऽध्यायप्रारंभः ॥ तहांपूर्व एकादशेअध्यायकेअंतविषे (मत्कर्मकृन्मत्परमोमद्भक्तःसंगवर्जितः ॥ निर्वैरःसर्वभूतेषुयःसमामेतिपांडव) इसश्लोकविषे श्रीभगवान्नैं च्यारिवार मत् यहशब्द कथनकऱ्याहे ॥ तिस मत्शब्दकेअर्थविषे यहसंशयहोवैहे ॥ जो श्रीभगवान्नैं तामत्शब्दकरिकै निराकारवस्तुका कथनकऱ्याहे ॥ अथवा साकारवस्तुका कथनकऱ्याहै इति ॥ तहां इसप्रकारकेसंशयकीउत्पत्तिविषे श्रीभगवान्के पूर्वउक्तवचनहींकारणहैं ॥ काहेतैं श्रीभगवान्नैं (मत्कर्मकृत्) इसश्लोकतैंपूर्व निराकारवस्तुकूं तथासाकारवस्तुकूं दोनोंकूं मत् इसशब्दकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ तहां (बहूनांजन्मनामंतेज्ञानवान्मांप्रपद्यते ॥ वासुदेवःसर्वमितिसमहात्मासुदुर्लभः) इत्यादिकवचनोंकरिकैतौं श्रीभगवान्नैं तामत्शब्दकरिकै निराकारवस्तुकाहीं कथनकऱ्याहे ॥ और विश्वरूपकेदर्शनतैंअनंतर (नाहंवेदैर्नतपसानदानेननचेज्यया ॥ शक्यएवंविधोद्रष्टुंदृष्टवानसिमांयथा) इत्यादिकवचनोंकरिकैतौं श्रीभगवान्नैं तामत्शब्दकरिकै साकारवस्तुकाहीं कथनकऱ्याहे ॥ तहां श्रीभगवान्के तिनदोनोंप्रकारकेउपदेशोंकीव्यवस्था अधिकारीपुरुषकेभेदकरिकैहीं करणीहोवैगी ॥ जोकदाचित् अधिकारीपुरुषकेभेदकरिकै तिनदोनोंप्रकारकेउपदेशोंकीव्यवस्थानहींकरीये ॥ तौं तिनदोनोंप्रकारकेउपदेशोंका परस्पर विरोधप्राप्तहोवैगा ॥ इसप्रकारअधिकारिपुरुषकेभेदकरिकै तिनदोनोंप्रकारकेउपदेशोंकीव्यवस्थाकेप्राप्तहुए मैंमुमुक्षुअर्जुननैं क्यानिराकारवस्तु चिंतनकरणेयोग्यहै ॥ अथवा साकारवस्तु चिंतनकरणेयोग्यहै ॥ इसप्रकार आपणेअधिकारकेनिश्चयकरणेवासतै सगुणविद्या तथानिर्गुणविद्या इनदोनोंविद्यावोंके विशेषता जानणेकीइच्छाकरताहुआ अर्जुन श्रीभगवान्केप्रति प्रश्नकरेहै ॥

(मू० श्लो०) अर्जुनउवाच ॥ एवंसततयुक्तायेभक्तास्त्वांपर्युपासते ॥ येचाप्यक्षरमव्यक्तंतेषांकेयोगवित्तमाः ॥ १ ॥ एवम् । सततयुक्ताः । ये । भक्ताः । त्वाम् । पर्युपासते । ये । च । अपि । अक्षरम् । अव्यक्तम् । तेषाम् । के । योगवित्तमाः ॥ १ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेभगवन् ईसप्रकार निरंतरयुक्तहुए तथाएकसाकारवस्तुकेशरणहुए जेअधिकारीपुरुष तैंसाकारपरमेश्वरकूं निरंतरचिंतनकरेहैं तथा जेविरक्तपुरुष अक्षर अव्यक्तरूप तैंनिर्गुणब्रह्मकूंहीं निरंतरचिंतनकरेहैं तिनदोनोंकेमध्यविषे कौनपुरुष अतिशयकरिकैयोगकेजानणेहारेहैं ॥ १ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेभगवन् जेअधिकारीजन (मत्कर्मकृन्मत्परमः) इसपूर्वश्लोकउक्तप्रकारकरिकै सततयुक्तहैं ॥ अर्थात् जेपुरुष निरंतर भगवत्अर्पणकर्मादिकोंविषे सावधानताकरिकै प्रवृत्तहुएहैं ॥ तथा जेअधिकारीपुरुष भक्तहैं अर्थात् जेपुरुष एकसाकारवस्तुकेहीं शरणकूंप्राप्तहुएहैं ॥ इसप्रकारसततयुक्तहुए तथाभक्तहुए

जेअधिकारीपुरुष इसप्रकारकेसाकाररूपवाले तैंपरमेश्वरकूं श्रद्धाभक्तिपूर्वक निरंतरचिंतनकरेहैं ॥ इतनैंकहणेकरिकै सगुणब्रह्मकेचिंतनकरणेहारेभक्तजनोंका कथन कऱ्या ॥ अब निर्गुणब्रह्मकेचिंतनकरणेहारेभक्तजनोंका कथनकरेहैं (येचाप्यक्षरमिति) हेभगवन् जेअधिकारीपुरुष सर्वसंसारतैंविरक्तहुए तथासर्वकर्मोंकेत्याग वालेहुए अक्षररूप तथाअव्यक्तरूप तैंपरमेश्वरकूं निरंतर चिंतनकरेहैं ॥ तहां नक्षरति अश्नुतेवा इत्यक्षरम् ॥ अर्थयह ॥ जोवस्तु कदाचित्भी नाशकूंनहींप्राप्तहोवै ताकानाम अक्षरहै अथवा जोवस्तु आपणेसत्तास्फुरणरूपकरिकै इससर्वजगत्कूं व्याप्तकरेहै ताकानाम अक्षरहै ॥ ऐसाअक्षररूप निर्गुणब्रह्महै ॥ इसीनिर्गुणब्रह्म रूपअक्षरकूं बृहदारण्यकउपनिषदविषे याज्ञवल्क्यमुनिनैं गार्गीकेप्रति स्थूलसूक्ष्मादिकसर्वउपाधियोंतैंरहित कथनकऱ्याहै ॥ तहांश्रुति ॥ (एतद्वैतदक्षरंगार्गिब्राह्मणा अभिवदंत्यस्थूलमनण्वह्रस्वमदीर्घम्) ॥ अर्थयह ॥ हेगार्गी इसीनिर्गुणब्रह्मरूपअक्षरकूं ब्रह्मवेत्ताब्राह्मण स्थूलभावतैंरहितकहेहैं तथाअणुभावतैंरहित कहेहैं तथा ह्रस्वभावतैंरहित कहेहैं तथादीर्घभावतैंरहित कहेहैं इति ॥ जिसकारणतैं सोनिर्गुणब्रह्मरूपअक्षर सर्वउपाधियोंतैंरहितहै ॥ इसकारणतैंहीं सोनिर्गुणब्रह्मरूपअक्षर अव्यक्तहै ॥ अर्थात् नेत्रादिकसर्वकरणोंकाअविषयहै ॥ ऐसेअक्षररूप तथाअव्यक्तरूप तैंनिराकारनिर्गुणपरमेश्वरकूं जेअधिकारीपुरुष श्रद्धाभक्तिपूर्वक निरंतर चिंतनकरेहैं ॥ तिनदोनोंप्रकारकेअधिकारीजनोंकेमध्यविषे कौंनअधिकारीजन योगवित्तमहैं ॥ अर्थात् कौंनअधिकारीजन अतिशयकरिकैयोगकेजाणणेहारेहैं ॥ अथवा कौंनअधिकारीजन अतिशयकरिकै समाधिरूपयोगकूं प्राप्तहुएहैं ॥ तहां समाधिरूपयोगकूं जेपुरुष जानेहैं अथवा प्राप्तहोवैहैं तिनोंकानाम योगवित्हैं ॥ तिनयोगवित्पुरुषोंकेमध्यविषे जेअत्यंतश्रेष्ठहोवैं तिनोंकानाम योगवित्तमहै ॥ अर्थात् इसप्रकारकेयोगवित्तौंतेदोनोंप्रकारकेअधिकारीजनहैं ॥ तिनदोनों प्रकारके अधिकारीजनोंकेमध्यविषे कौंनअधिकारीजन अत्यंतश्रेष्ठयोगवित्हैं ॥ अर्थात् किनअधिकारीपुरुषोंकाज्ञान मैंअर्जुननैं अनुसरणकरणेयोग्यहै ॥ तात्पर्ययह ॥ सगुणब्रह्मके जानणेहारेपुरुषोंकाज्ञान हमारेकूं अनुसरणकरणेयोग्यहै ॥ अथवा निर्गुणब्रह्मकेजानणेहारेपुरुषोंकाज्ञान हमारेकूं अनुसरणकरणे योग्यहै इति ॥ १ ॥ ❀ ॥ तहां सर्वज्ञ श्रीकृष्णभगवान् तिसअर्जुनका सगुणविद्याविषेहीं अधिकारकूंदेखताहुआ तिसअर्जुनकेप्रति सासगुणविद्याहीं विधानकरैंगा ॥ तथा यथाअधिकारकेअनुसार ताविद्याकेन्यूनअधिकतायुक्तसाधनोंकाभी विधानकरैंगा ॥ इसकारणतैं प्रथम साकारब्रह्मविद्याविषे ताअर्जुनकी रुचिकरावणेवासतै तासाकारब्रह्मविद्याकीस्तुतिकरताहुआ साप्रथम साकारब्रह्मविद्याहींश्रेष्ठहै इसप्रकारकेउत्तरकूं कथनकरेहै ॥

(मू॰ श्लो॰) श्रीभगवानुवाच ॥ मय्यावेश्यमनोयेमांनित्ययुक्ताउपासते ॥ श्रद्धयापरयोपेतास्तेमेयुक्ततमामताः ॥ २ ॥ मयि। आवेश्य। मनः। ये। मां। नित्ययुक्ताः। उपासते। श्रद्धया। परया। उपेताः। ते। मे। युक्ततमाः। मताः ॥ २ ॥

(इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन जेअधिकारीपुरुष आपणेमनकूं मैंसगुणब्रह्मविषे एकाग्रकरिकै नित्ययुक्तहुए तथासात्विक श्रद्धाक रिकै युक्तहुए मैंसाकारब्रह्मकूं चिंतनकरेहैं तेअधिकारीजन मैंपरमेश्वरकूं युक्ततम अभिमतहैं ॥ २ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन मैंभगवान्‌वासुदेवपरमेश्वरसगुणब्रह्मविषे आपणेमनकूं आवेशकरिकै अर्थात् अनन्यशरणताकरिकै तथानिरतिशयप्रियताकरिकै आपणेमनकूं मैंसगुणब्रह्मविषे प्रवेशकरिकै ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे हिंगुलकेरंगकेसाथिमिलिकै लाख तन्मयहोइजावैहै तैसे आपणेमनकूं मैंपरमेश्वरमयकरिकै ॥ जेअधिकारी पुरुष नित्ययुक्तहुए ॥ अर्थात् निरंतर मैंपरमेश्वरकेचिंतनाविषयक उद्यमवालेहुए ॥ तथा जेअधिकारीपुरुष परश्रद्धाकरिकैयुक्तहुए ॥ अर्थात् आराधनकऱ्याहुआ यहसगुणपरमेश्वर अवश्यकरिकै हमारा निस्तारकरैगा याप्रकारकी आस्तिक्यबुद्धिरूप सात्विकश्रद्धाकरिकैयुक्तहुए सर्वयोगेश्वरोंकाभीईश्वररूप तथासर्वज्ञ तथासमग्रकल्याणगुणोंकास्थानरूप ऐसेसाकारब्रह्मरूप मैंपरमेश्वरकूं सर्वदा चिंतनकरेहैं ॥ तेअधिकारीजनहीं मैंपरमेश्वरकूं युक्ततमरूपकरिकै अभिमतहैं ॥ अर्थात् तेअधिकारीपुरुष सर्वकालविषे मैंपरमेश्वरविषे आसक्तचित्तवालेहोणेतैं सर्वविषयोंतैंविमुखहोइकै मैंपरमेश्वरकाचिंतनकरतेहुए संपूर्णदिनरात्रियोंकूंवितीतकरेहैं ॥ यातैं तेसगुणब्रह्मकेचिंतनकरणेहारेअधिकारी जनहीं मैंपरमेश्वरकूं युक्ततमरूपकरिकै अभिमतहैं ॥ अर्थात् मैंपरमेश्वर तिनअधिकारीजनोंकूं सर्वयोगीजनोंतैंश्रेष्ठ मानताहूं इति ॥ २ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् निर्गुणब्रह्मकेजानणेहारेपुरुषोंकीअपेक्षाकरिकै तिनसगुणब्रह्मकेजानणेहारेपुरुषोंविषे कौंनअतिशयताहै ॥ जिसअतिशयताकरिकै तेसगुणब्रह्मकेजानणेहारेपुरुषहीं आपकूं युक्ततमरूपकरिकैअभिमतहैं ॥ ऐसीअर्जुनकीजिज्ञासाकेहुए ॥ श्रीभगवान् तिसअतिशयताकूं कथनकरताहुआ प्रथम तिसअतिशयताकेनिरूपक निर्गुणब्रह्मकेवेत्तावोंकीदोश्लोकोंकरिकै स्तुतिकूं कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) येत्वक्षरमनिर्देश्यमव्यक्तंपर्युपासते ॥ सर्वत्रगमचिंत्यंचकूटस्थमचलंध्रुवम् ॥ ३ ॥ संनियम्येंद्रियग्रामंसर्वत्रसमबुद्धयः ॥ तेप्राप्नुवंतिमामेवसर्वभूतहितेरताः ॥४॥ ये । तु । अक्षरम् । अनिर्देश्यम् । अव्यक्तं । पर्युपासते । सर्वत्रगम् । अचिंत्यं । च । कूटस्थम् । अचलं । ध्रुवं । सन्नियम्य । इंद्रियग्रामं । सर्वत्र । समबुद्धयः । ते । प्राप्नुवंति । माम् । एवं । सर्वभूतहितेरताः ॥ ३ ॥ ॥ ४ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन पुनः जेअधिकारीजन इंद्रियोंके समूहकूं निरुद्धकरिकै सर्वत्र समबुद्धिवालेहुए तथासर्वभूतोंकेहितविषेप्रीतिवालेहुए अनिर्देश्य अव्यक्त सर्वव्यापक अचिंत्य तथा कूटस्थ अचल ध्रुव ऐसेनिर्गुणब्रह्मरूप अक्षरकूं निरंतर चिंतनकरेहैं तेअधिकारीपुरुषभी मैंनिर्गुणब्रह्मकूं हीं प्राप्तहोवैहैं ॥ ३ ॥ ४ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जेअधिकारीजन अक्षररूप मैंनिर्गुणब्रह्मकूं निरंतर चिंतनकरेहैं ॥ तेअधिकारीपुरुषभीमैंअक्षररूपनिर्गुणब्रह्मकूंहीं प्राप्तहोवैहैं ॥ जोअक्षर रूपनिर्गुण ब्रह्म बृहदारण्यकउपनिषदविषे याज्ञवल्क्यमुनिनैं गार्गीके प्रति (एतद्वैतदक्षरगार्गिब्राह्मणाअभिवदंत्यस्थूलमनण्वन्हस्वमदीर्घम्) इत्यादिकवचनोंकरिकै कथनकऱ्याहै ॥ ईहां (येतु) इसवचनविषेस्थितजो तु यहशब्दहै॥ सोतुशब्द पूर्वकथनकरेहुए सगुणब्रह्मकेउपासकोंतैं इननिर्गुणब्रह्मके उपासकोंविषे विलक्षणताके बोधनकरणेवासतैहै ॥ अब तिसअक्षरविषे निर्गुणब्रह्मरूपताकेसिद्धकरणेवासतै ताअक्षरके सप्तविशेषणोंकूं श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥ हेअर्जुन सोनिर्विशेषब्रह्मरूप अक्षर कैसाहै अनिर्देश्यहै ॥ अर्थात्सोअक्षरब्रह्म किसीशब्दकरिकैकथनकरणेकूंअशक्यहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् सोअक्षरब्रह्म शब्दकरिकै क्युंनहींकथ नकऱ्याजावैहै ॥ ऐसीअर्जुनकीजिज्ञासाकेहुए ॥ श्रीभगवान् ताअनिर्देश्यपणेविषे हेतुकहेहैं (अव्यक्तमिति) हेअर्जुन जिसकारणतैं सोअक्षर अव्यक्तहै ॥ अर्थात् शब्दकीप्रवृत्तिकेनिमित्तभूतजे जाति गुण क्रियासंबंध यहच्यारि धर्महैं तिनच्यारोंतैं सोअक्षररहित ॥ तिसकारणतैंसोअक्षरब्रह्मकिसीभीशब्दकरिकैकथ नकऱ्याजातानहीं ॥ तात्पर्ययह॥ लोकविषे जिसजिसअर्थविषे जोजोशब्द प्रवृत्तहोवैहै ॥ सोसोशब्द तिसतिसअर्थविषे जातिकूं अथवा गुणकूं अथवा क्रियाकूं अथवासंबंधकूं द्वारभूतकरिकैहीं प्रवृत्तहोवैहै ॥ जैसे ब्राह्मण इत्यादिकशब्द ब्राह्मणत्वादिकजातिकूंलेकेहीं स्वस्वअर्थविषे प्रवृत्तहोवैहैं ॥ और शुक्ल नील इत्यादि कशब्द शुक्लनीलादिकगुणोंकूंलैकेहीं स्वस्वअर्थविषे प्रवृत्तहोवैहैं ॥ और पाचक पाठक इत्यादिकशब्दतैं पाकादिरूपक्रियाकूंलैकेहीं स्वस्वअर्थविषे प्रवृत्तहो वैहैं ॥ और पिता पुत्र इत्यादिकशब्दतैं जन्यजनकभावआदिकसंबंधकूंलैकेहीं स्वस्वअर्थविषे प्रवृत्तहोवैहैं ॥ इस प्रकारतैं सर्वशब्द जातिगुणादिकनिमित्तकूंलैके हीं आपणेआपणेअर्थविषे प्रवृत्तहोवैहैं ॥ और निर्विशेषअक्षरब्रह्मविषे तेजातिगुणादिकविशेषधर्महैंनहीं ॥ यातैं ताअक्षरब्रह्मविषे किसीभीशब्दकीप्रवृत्ति होवैनहीं इति ॥ शंका ॥ हेभगवन् सोअक्षरब्रह्म तिनजातिगुणादिकधर्मोंतैंरहित किसहेतुतैं ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए ॥ श्रीभगवान् तिनजातिआदिकोंतैंरहि तपणेविषे हेतुकहेहै (सर्वत्रगमिति) हेअर्जुन जिसकारणतैं सोअक्षरब्रह्म सर्वत्रगहै ॥ अर्थात् सर्वत्रव्यापकहै तथासर्वकाकारणहै ॥ तिसकारणतैं सोअक्षरब्रह्म तिनजातिगुणादिकोंतैंरहितहै ॥ जोपदार्थ परिच्छिन्नहोवैहै तथाकार्यहोवैहै ॥ सोपदार्थहीं तिनजातिगुणादिकधर्मवालाहोवैहैं ॥ यद्यपिनैयायिक आकाश काल दिशा इनतीनोंविषे अकार्यपणा तथाव्यापकपणा अंगीकारकरिकैभी तिनतीनोंविषे जातिगुणादिक अंगीकारकरेहैं ॥ यातैं परिच्छिन्नकार्यविषेहीं तेजातिगुणा दिकरहेहैं यहनियम संभवतानहीं ॥ तथापि वेदांतसिद्धांतविषे तिनआकाशादिकोंविषेभी कार्यपणा तथापरिच्छन्नपणाहीं अंगीकारहै ॥ तहां (आत्मनआका शःसंभूतः ॥) अर्थयह ॥ आत्मातैं आकाश उत्पन्नहोताभया ॥ इत्यादिकश्रुतियोंनैं तिनआकाशादिकोंकी आत्मातैंउत्पत्ति कथनकरीहै ॥ (और योवैभूमा

तत्सुखंनाल्पेसुखमस्ति ॥) इत्यादिकश्रुतियोंनैं व्यापकआत्मातैंभिन्न आकाशादिकसर्वप्रपंचकूं परिच्छिन्नकयाहै ॥ यातैं आकाशादिकोंविषे तानियमकाभंगहोवै नहीं इति ॥ और जिसकारणतैं सोअक्षरब्रह्म सर्वत्रव्यापकहै ॥ तिसकारणतैंसोअक्षरब्रह्म अचिंत्यहै ॥ अर्थात् सोअक्षरब्रह्म जैसे शब्दकेप्रवृत्तिकाविषयनहींहै तैसे मनकेप्रवृत्तिकाभीविषयनहींहै ॥ शब्दकेप्रवृत्तिकीन्यांई मनकीप्रवृत्तिभी परिच्छिन्नवस्तुकूंहीं विषयकरैहै ॥ ताअक्षरब्रह्मविषे परिच्छिन्नपणाहैनहीं ॥ यातैं ताक्षरब्रह्मविषे मनकेप्रवृत्तिकीभीविषयता संभवैनहीं ॥ तहांश्रुति ॥ (यतोवाचोनिवर्त्तंतेअप्राप्यमनसासहइति) ॥ अर्थयह ॥ मनसहितवाणी जिसअक्षरब्रह्मकूंन प्राप्तहोइके जिसअक्षरब्रह्मतैं निवर्त्तहोइजावैहैं इति ॥ शंका ॥ हेभगवन् सोअक्षरब्रह्म जोकदाचित् वाणीका तथामनका नहींविषयहोवै ॥ तौं श्रुतिवचन तथा व्याससूत्र ताब्रह्मविषे वाणीकीविषयता तथामनकीविषयता किसवास्तै कथनकरतेहै ॥ तहांश्रुति ॥ (तंत्वौपनिषदंपुरुषंपृच्छामिइति दृश्यतेत्वग्र्ययाबुद्ध्यासूक्ष्मयासूक्ष्मदर्शिभिःइति मनसैवानुद्रष्टव्यमिति) ॥ अर्थयह ॥ हेशाकल्यकेवल उपनिषदप्रमाणकरिकैजानणेयोग्यजोपरब्रह्महै ॥ तिसपरब्रह्मकास्वरूप मैंयाज्ञवल्क्य तुमारेसैं पुछताहूं इति॥ और सूक्ष्मदर्शीविद्वान्पुरुषोंनैं विषयवासनातैंरहित एकाग्रसूक्ष्मबुद्धिकरिकैहीं यहआत्मादेव साक्षात्कारकरीताहै इति ॥ और यह आत्मा देव केवलशुद्धमनकरिकैहीं देख्याजावैहै इति॥ तहां व्याससूत्रम्॥(शास्त्रयोनित्वात्)॥ अर्थयह॥ उपनिषदरूपशास्त्रहै योनि क्या प्रमाणजिसविषे ऐसापरब्रह्महै इति ॥ इत्यादिकश्रुतिसूत्रवचन तिसपरब्रह्मविषेभी उपनिषदरूपवाणीकीविषयता तथाशुद्धमनकीविषयता कथनकरैहैं ॥ ब्रह्मकूंअविषयमानणेविषे तेसर्व असंगतहोवैंगे ॥ समाधान ॥ हेअर्जुन महावाक्यरूपशब्दप्रमाणतैं उत्पन्नभईजाबुद्धिकीअंत्यवृत्तिहै ॥ ताबुद्धिकीवृत्तिविषे अविद्याकल्पितसंबंधकरिकै परमानंदबोधरूपशुद्धवस्तुकेप्रतिबिंबितहुएहीं कल्पितरूप अविद्याकी तथाताअविद्याकेकार्यकी निवृत्तिहोवैहै ॥ याकारणतैंहीं उपचारमात्रतैं तिसपरब्रह्मविषे वाणीकीविषयता तथाबुद्धिकीविषयता कथनकरिहैअर्थात् महावाक्यजन्य शुद्धबुद्धिकीवृत्ति चिदाभासकरिकैयुक्तहुई ब्रह्माश्रिततथाब्रह्मविषयक अविद्याकी निवृत्तिमात्रकरे है ॥ जिसकूंशास्त्रविषे वृत्तिव्याप्तिकहेहैं तिसकूंअंगीकारकरिकैहीं श्रुतिसूत्रवचनोंनैं ताब्रह्मविषे वाणीकीविषयता तथामनकीविषयता कथनकरीहै ॥ जैसे देहादिकअनात्मपदार्थोंविषे फलव्याप्तिरूप मुख्यविषयताहै ॥ तैसे ब्रह्मविषे कोईमुख्यविषयता कथनकरीनहीं इससर्वअभिप्रायकरिकै श्रीभगवान् तिसअक्षरविषे कल्पित अविद्याकेसंबंधका उपपादनकरणेवास्तैकहेहै (कूटस्थम्) इति॥ तहां जोवस्तु वास्तवतैंमिथ्याभूतहुआभी सत्यरूपकरिकैप्रतीतहोवैहै तावस्तकूं लोकविषे कूट इसनामकरिकैकथनकरैहैं ॥ जैसे इसलोकविषे जोसाक्षीपुरुष वास्तवतैंमिथ्यावादीहुआभी सत्यवादीपुरुषकीन्यांई प्रतीतहोवैहै तासाक्षीकूं कूटसाक्षी कहेहैं॥ तैसे मायाअविद्यारूपयहअज्ञानभी आपणेकार्यप्रपंचसहित वास्तवतैंमिथ्याभूतहुआभी विचारहीनपुरुषोंकूं सत्यरूपकरिकैप्रतीतहोवैहै ॥ यातैं यहकार्यप्रपंचसहित

अज्ञानभी कूटइसनामकरिकैकह्याजावैहै ॥ ताकार्यप्रपंचसहित अज्ञाननामकूटविषे जोवस्तु अध्यासिकसंबंधकरिकै अधिष्ठानरूपतैं स्थितहोवैहै तावस्तुकानाम कूटस्थहै ॥ अर्थात् कार्यप्रपंचसहितअज्ञानका अधिष्ठानरूपजोपरब्रह्महै ताकानाम कूटस्थहै ॥ इतनैंकहणेकरिकै पूर्वउक्तसर्वअनुपपत्तियोंका परिहारकऱ्या ॥ इसकारणतैंहीं सर्वविकारोंकूं अविद्याकरिकैकल्पितहोणेतैं ताअविद्याकाअधिष्ठानरूपसाक्षीचैतन्य निर्विकारहै ॥ इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरेहै (अचलमिति) तहां विकारकानाम चलनहै ॥ ताचलनरूपविकारतैंजोरहितहोवै ताकानाम अचलहै ॥ अचलहोणेतैंहीं सोअक्षरब्रह्म ध्रुवहै ॥ अर्थात् परिणामीभावतैं रहितनित्यहै ॥ इसप्रकारके अक्षरशुद्धब्रह्मरूप मैंपरमेश्वरकूं जेअधिकारीजन चिंतनकरेहैं ॥ अर्थात् ब्रह्मवेत्तागुरुकेमुखतैं वेदांतशास्त्रकेश्रवणकरिकै प्रमाणगत असंभावनाकीनिवृत्तिकरिकै तथामननकरिकै प्रमेयगतअसंभावनाकीनिवृत्तिकरिकै तिसतैंअनंतर विपरीतभावनाकीनिवृत्तिकरणेवासतै जेअधिकारीपुरुष ध्यानकूं करेहैं ॥ अर्थात् अनात्माकारविजातीयवृत्तियोंका तिरस्कारकरिकै तैलधाराकीन्यांई विच्छेदतैंरहित सजातीयवृत्तियोंकाप्रवाहरूपनिदिध्यासनभूतध्यानकरिकै जेअधिकारीपुरुष मैंनिर्गुणब्रह्मकूंविषयकरेहैं ॥ शंका ॥ हेभगवन् श्रोत्रादिकइंद्रियोंका आपणेआपणेशब्दादिकविषयोंकेसाथि संबंधकेविद्यमानहुए सोविजातीयवृत्तियोंकातिरस्कार कैसेहोवैगा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान्कहेहै (सन्नियम्येंद्रियग्राममिति) हेअर्जुन जेअधिकारीजन आपणेश्रोत्रादिक इंद्रियोंकेसमूहकूं आपणेआपणेशब्दादिकविषयोंतैंनिवृत्तकरिकै मैंनिर्गुणब्रह्मकाध्यानकरेहैं ॥ इतनैं कहणेकरिकै श्रीभगवान्नैं शमदमादिकषट्संपत्ति कथनकरी ॥ ॥ शंका ॥ हेभगवन् विषयभोगकीवासनाकेविद्यमानहुए तिनशब्दादिकविषयोंतैं श्रोत्रादिकइंद्रियोंकीनिवृत्ति कैसेसंभवैगी ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहेहै (सर्वत्रसमबुद्धयः इति) हेअर्जुन सर्वविषयोंविषे समहै कया तुल्यहै अर्थात् हर्षविषाददोनोंतैं तथारागद्वेषदोनोंतैंरहितहैबुद्धिजिनोंकी तिनोंकानाम सर्वत्रसमबुद्धिहै ॥ तात्पर्ययह ॥ सम्यक्ज्ञानकरिकै जिनपुरुषोंका हर्षविषाद आदिकोंकाकारणरूपअज्ञान निवृत्तहोइगयाहै ॥ तथा विषयोंविषेदोषदर्शनकेअभ्यासकरिकै जिनपुरुषोंकीसर्व विषयइच्छा निवृत्तहोइगईहै ॥ ऐसेतत्त्ववेत्तापुरुषोंकानाम सर्वत्रसमबुद्धिहै ॥ ऐसेसर्वत्रसमबुद्धिवालेहुए जेअधिकारीपुरुष मैंनिर्गुणब्रह्मकाचिंतन करेहैं ॥ इतनैंकहणेकरिकै श्रीभगवान्नैं वशीकारनामावैराग्य कथनकऱ्या॥ इसीकारणतैंहीं सर्वत्रआत्मदृष्टिकरिकै हिंसाकेकारणरूपद्वेषतैंरहितहोणेतैं जेअधिकारीपुरुष सर्वभूतोंकेहितविषेप्रीतिवालेहैं ॥ अर्थात् (अभयंसर्वभूतेभ्योमत्तःस्वाहा) इसमंत्रकरिकै सर्वभूतप्राणीयोंकेतांई दईहुईहैअभयरूपदक्षिणा जिनोंनैं ऐसेजपरमहंससंन्यासीहैं ॥ तहां संन्यासीयोंने सर्वभूतप्राणीयोंकेतांई अभयदानदेणा यहवार्त्ता श्रुतिविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ (अभयंसर्वभूतेभ्यो दत्वासंन्यासमाचरेत्) ॥ अर्थयह ॥ यहअधिकारीपुरुष शरीरकरिकै तथामनकरिकै तथावाणीकरिकै सर्वस्थावरजंगमरूपप्राणीयोंकेतांई अभयदान

देकरिकै संन्यासआश्रमकूंग्रहणकरै इति ॥ इसप्रकारकेसर्वसाधनोंकरिकैसंपन्नहुए तेसर्वतैंविरक्तअधिकारीजन आप ब्रह्मरूपहुएभी सर्वसाधनोंकाफलभूत तथासंशयतैंरहित ऐसेआत्मसाक्षात्कारकरिकै मैंअक्षरब्रह्मरूपकूंहीप्राप्तहोवैहैं ॥ अर्थात् तेतत्ववेत्तापुरुष तिसतत्त्वसाक्षात्कारतैंपूर्वभी मैंनिर्गुणब्रह्मरूपहुएही तिसत त्वसाक्षात्कारकरिकै अविद्याकेनिवृत्तहुए मैंनिर्गुणब्रह्मरूपहुएही स्थितहोवैहैं ॥ तहांश्रुति ॥ (ब्रह्मैवसन्ब्रह्माप्येति ब्रह्मविद्ब्रह्मैवभवति ॥) अर्थयह ॥ यहअधिका रीजन ब्रह्मरूपहुआहीं ब्रह्मरूपकूंप्राप्तहोवैहै॥ और मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारतै आपणाआत्मारूपकरिकैब्रह्मकूंजानणेहारापुरुष ब्रह्मरूपही होवैहै इति॥ तहां ज्ञानवान्पुरुष ब्रह्मरूपहीहै यहवार्त्ता (ज्ञानीत्वात्मैवमेमतम्) इसवचनकरिकै श्रीभगवान्नैं आपहीं इसगीताशास्त्रविषे कथनकरीहै इति ॥ ३ ॥ ४ ॥ ❀ ॥ अब इननिर्गुणब्रह्म केचिंतनकरणेहारेअधिकारीजनोंतैं पूर्वकथनकऱ्येहुएसगुणब्रह्मकेचिंतनकरणेहारेअधिकारीजनोंकीअतिशयताकूंदिखावताहुआ श्रीभगवान् अर्जुनकेप्रति कहैहै ॥

(मू० श्लो०) क्लेशोधिकतरस्तेषामव्यक्तासक्तचेतसाम् ॥ अव्यक्ताहिगतिर्दुःखंदेहवद्भिरवाप्यते ॥ ५ ॥ क्लेशः । अधिकतरः । तेषाम् । अव्यक्तासक्तचेतसाम् । अव्यक्ता । हि । गतिः । दुःखम् । देहवद्भिः । अवाप्यते ॥ ५ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन निर्गुणब्रह्म विषेआसक्तहैचित्तजिनोंका तिनपुरुषोंकूं अतिअधिक क्लेशहोवै जिसकारणतैं देहाभिमानीपुरुषोंनैं सोनिर्गुण ब्रह्म बहुतदुःख करिकै पांईताहै ॥ ५ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन सगुणब्रह्मकेचिंतनकरणेहारे जेअधिकारीपुरुष पूर्वकथनकरेथे ॥ तिनअधिकारीजनोंकूंभी सर्वविषयोंतैंआपणेमनकूंनिवृत्तकरिकै सगुणब्रह्म विषे तामनकेजोडनेविषे तथा निरंतर परमेश्वरकीप्रसन्नताअर्थ निष्कामकर्मपरायणहोणेविषे तथापरमसात्विकश्रद्धाकरिकैयुक्तहोणेंविषे अधिकक्लेशतौं प्राप्तहोवैहै॥ परंतु तिन सगुणब्रह्मकेचिंतनकरणेहारेपुरुषोंकूं अधिकतरक्लेशप्राप्तहोवैनही ॥ अर्थात् अत्यंतअधिकक्लेश प्राप्तहोवैनहीं ॥ और निर्गुणब्रह्मकेचिंतनपरायणहैचित्त जिनोंका ऐसेजे पूर्वउक्तश्रवणादिकसाधनोंवाले अधिकारीजनहैं तिन निर्गुणब्रह्मकेचिंतनपरायणअधिकारीजनोंकूंतै आधिकतरक्लेश प्राप्तहोवैहै ॥ अर्थात् अति शयकरिकैअधिक आयासरूपक्लेश प्राप्तहोवैहै ॥ अब इसपूर्वउक्त अर्थविषे श्रीभगवान् हेतुकहैहै (अव्यक्ताहिगतिर्दुःखामिति) जिसकारणतैं देहविषेअहंममअ भिमानवालेपुरुषोंनैं साअव्यक्तरूपगति बहुतदुःखकरिकै पाईतीहै ॥ तहां मुमुक्षजन तत्त्वज्ञानकरिकै प्राप्तहोवैं जिसकूं ऐसेजो गंतव्यफलरूपनिर्गुणब्रह्महै ताकानाम गतिहै ॥ तहांश्रुति ॥ (साकाष्ठासापरागतिः) अर्थयह ॥ सोनिर्गुण ब्रह्महीं सर्वकाअवधिरूपहै तथापरागतिरूपहै इति ॥ सोनिर्गुणब्रह्म नेत्रादिकइंद्रियोंका विषयहैं नहीं ॥ यातैं तानिर्गुणब्रह्मरूपगतिकूं अव्यक्तकह्याहै ॥ अर्थात् देहाभिमानीपुरुषोंनैं साअक्षरब्रह्मरूपगति बहुतदुःखकरिकैहींपाईतीहै ॥ तहां

प्रथमतौं विवेक वैराग्य शमदमादिषट्संपत्ति मुमुक्षता इनचतुष्टयसाधनोंकरिकैसंपन्नहोणा ॥ तिसतैंअनंतर विधिपूर्वकसर्वकर्मोंकासंन्यासकरिकै श्रोत्रियब्रह्म निष्ठगुरुकेसमीपजाणा ॥ तिसतैंअनंतर तिसब्रह्मवेत्तागुरुकेमुखतैं वेदान्तवाक्योंकाश्रवणकरणा ॥ तिसतैंअनंतर तिसतिसवाक्यकेविचारकरिकैं तिस तिसभ्रमकी निवृत्तिकरणी ॥ इत्यादिकसाधनोंकेकरणेविषे तिनदेहाभिमानीपुरुषोंकूं महान्प्रयासकीप्राप्ति प्रत्यक्षहीसिद्धहै ॥ इसीअभिप्रायकरिकै श्रीभगवान्नैं (क्लेशो धिकतरस्तेषाम्) यहवचन कथनकऱ्याहै ॥ यद्यपि सगुणब्रह्मकेजानणेहारेपुरुषोंकूं तथानिर्गुणब्रह्मकेजानणेहारेपुरुषोंकूं एकहींमोक्षरूपफलकीप्राप्तिहोवैहै ॥ यातैं निर्गुणब्रह्मवेत्तापुरुषोंतैं सगुणब्रह्मवेत्तापुरुषविषे श्रेष्ठताकहणीसंभवतीनहीं ॥ तथापि एकहींफलकूं जेपुरुष दुष्करउपायकरिकैप्राप्तहोवैहैं ॥ तिनपुरुषोंकीअपेक्षा करिकै तिसफलकूं जेपुरुष सुगमउपायकरिकैप्राप्तहोवैहैं तेपुरुष श्रेष्ठकहेजावैहैं यहभगवान्काअभिप्रायहै ॥ यद्यपि पूर्वनवमअध्यायकेद्वितीयश्लोकविषे (सुसु खंकर्तुमव्ययम्) इसवचनकरिकै श्रीभगवान्नैं अधिकारीपुरुषोंकूं सुखेनहीं ब्रह्मज्ञानकीप्राप्ति कथनकरीथी ॥ और ईहां (अव्यक्ताहिगतिर्दुःखम्) इसवचनकरिकै बहुतदुःखकरिकै तानिर्गुणब्रह्मकीप्राप्ति कथनकरीहै ॥ यातैं तिसपूर्वउत्तरवचनका परस्परविरोध प्रतीतहोवैहै ॥ तथापि श्रीभगवान्का यहअभिप्रायहै ॥ विवेकादिकसर्वसाधनोंकरिकैसंपन्न जेनिष्कामअधिकारीजनहैं ॥ तिन अधिकारीजनोंकूंतौं सुखेनहीं निर्गुणब्रह्मकीप्राप्तिहोवैहै ॥ और जिनपुरुषोंका देहादिकों विषेअहंममअभिमानहै ऐसे सकामपुरुषोंकूं बहुतदुःखकरिकैहीं तानिर्गुणब्रह्मकीप्राप्तिहोवैहै ॥ इसअभिप्रायकरिकैहीं श्रीभगवान्नैं ईहां (देहवद्भिः) इसवचनक रिकै देहाभिमानीपुरुषहीं कथनकरेहै ॥ ऐसेदेहाभिमानीपुरुषोंकूं सगुणब्रह्मकाचिंतनहींसुगमहै ॥ यातैं पूर्वउत्तरवचनोंका विरोधहोवैनहीं इति ॥ ५ ॥ ❀

॥ शंका ॥ हेभगवन् सगुणब्रह्मवेत्तापुरुषोंकूं तथानिर्गुणब्रह्मवेत्तापुरुषोंकूं जोकदाचित्एकहींफलकीप्राप्तिहोतीहोवै ॥ तौं क्लेशकीअल्पताकरिकै सगुणब्रह्मवेत्ता पुरुषोंविषेतौं उत्कृष्टताहोवै ॥ और क्लेशकीअधिकताकरिकै निर्गुणब्रह्मवेत्तापुरुषोंविषे निकृष्टताहोवैं ॥ परंतु तिन दोनोंकूं एकफलकीप्राप्तिहोतीनहीं ॥ किंतु तिनदोनोंकूं भिन्नभिन्नफलकीहींप्राप्तिहोवैहै ॥ तहांनिर्गुणब्रह्मवेत्तापुरुषोंकूंतौं अविद्याकीतथाताकेकार्यप्रपंचकीनिवृत्तिपूर्वक निर्विशेषपरमानंदब्रह्मरूपताकीप्रा प्तिरूपफल प्राप्तहोवैहै ॥ और सगुणब्रह्मवेत्तापुरुषोंकूंतौं अधिष्ठानरूपनिर्गुणब्रह्मका साक्षात्कारहैनहीं ॥ यातैं तिनोंकेअविद्याकीनिवृत्तिहोवैनहीं ॥ किंतु तेसगुण ब्रह्मवेत्तापुरुष हिरण्यगर्भरूपकार्यब्रह्मकेलोकविषेंजाइकै तहां ऐश्वर्यविशेषरूपफलकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ यातैं तिन निर्गुणब्रह्मवेत्तापुरुषोंकूं मोक्षरूपअधिकफलकीप्राप्ति वासतैजोआयासकीअधिकताहै ॥ सो आयासकीअधिकता तिननिर्गुणब्रह्मवेत्तापुरुषोंविषे न्यूनताकीप्राप्तिकरैनहीं ॥ अल्पफलवासतै आयासकीअधिकता हीं न्यूनताकीप्राप्तिकरेहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान्कहेहै ॥ समाधान ॥ हेअर्जुन सगुणब्रह्मकीउपासनाकरिकै निवृत्तहोइगएहैंसर्वप्रतिबंधजिनोके

ऐसेजे सगुणब्रह्मकेउपासकहैं ॥ तिनउपासकपुरुषोंकूं ताब्रह्मलोकविषे केवल ऐश्वर्यविशेषकी प्राप्तिरूपफलहीं प्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु तिनउपासकपुरुषोंकूं ताब्रह्मलोकविषे गुरुकेउपदेशतैंविनाहीं तथाश्रवणमननिदिध्यासनादिकोंकीआवृत्तिरूपक्लेशतैंविनाहीं ईश्वरकीप्रसन्नताकरिकैसहकृत तथा आपेहींस्फुरणहुए ऐसेवेदांतवाक्यकरिकै तत्त्वज्ञानकीभीउत्पत्तिहोवैहै ॥ तिसतत्त्वज्ञानकरिकै कार्यसहितअविद्याकेनिवृत्तहुये तिसब्रह्मलोकविषेहींऐश्वर्यभोगकेअंतविषे तिनउपासकपुरुषोंकूं निर्गुणब्रह्मविद्याकाफलरूप परमकैवल्यमुक्ति प्राप्तहोवैहै ॥ यहवार्ता श्रुतिविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ (सएतस्माज्जीवघनात्परात्परंपुरिशयंपुरुषमीक्षते) ॥ अर्थयह ॥ प्राप्तहुआहैहिरण्यगर्भकाऐश्वर्यजिसकूं ऐसासोउपासकपुरुष तिसब्रह्मलोककेऐश्वर्यभोगकेअंतविषे इनसर्वजीवोंकासमष्टिरूप तथाश्रेष्ठ ऐसेहिरण्यगर्भतैंभीपर कहीये विलक्षण तथाश्रेष्ठ तथाहृदयरूपगुहाविषेस्थित तथासर्वत्रपरिपूर्ण ऐसाजो प्रत्यक्अभिन्नअद्वितीयपरमात्मादेवहै तिसपरमात्मदेवकूं साक्षात्कारकरेहै ॥ अर्थात् ताब्रह्मलोकविषे गुरुकेउपदेशतैंविना आपेहीं स्फुरणहुआजो वेदांतवाक्यरूपप्रमाणहै ताप्रमाणकरिकै सोउपासकपुरुष तापरब्रह्मकूंसाक्षात्कारकरेहै ॥ तासाक्षात्कारकरिकेहीं सोउपासकपुरुष ताब्रह्मलोकविषे कैवल्यमुक्तिकूंप्राप्तहोवैहै इति ॥ इसप्रकार पूर्वउक्तक्लेशतैंविनाहीं सगुणब्रह्मवेत्तापुरुषोंकूं ईश्वरकेप्रसादतैं निर्गुणब्रह्मविद्याकामोक्षरूपफलप्राप्तहोवैहै ॥ इससर्वअर्थकूं श्रीभगवान् दोश्लोकोंकरिकैकथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) येतुसर्वाणिकर्माणिमयिसंन्यस्यमत्पराः ॥ अनन्येनैवयोगेनमांध्यायंतउपासते ॥ ६ ॥ तेषामहंसमुद्धर्त्तामृत्युसंसारसागरात् ॥ भवामिनचिरात्पार्थमय्यावेशितचेतसाम् ॥ ७ ॥ ये । तु । सर्वाणि । कर्माणि । मयि । संन्यस्य । मत्पराः । अनन्येन । एव । योगेन । माम् । ध्यायंतः । उपासते । तेषाम् । अहम् । समुद्धर्त्ता । मृत्युसंसारसागरात् । भवामि । नचिरात् । पार्थ । मयि । आवेशितचेतसाम् ॥ ६ ॥ ७ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेपार्थ पुनः जेपुरुष सर्व कर्मोंकूं मैंसगुणब्रह्मविषे अर्पणकरिकै मेरेपरायणहुए तथा अनन्य समाधिरूपयोगकरिकै मैंपरमेश्वरकूं हीं चिंतनकरतेहुए मेरीउपासनाकरेहैं तिनें मैंपरमेश्वरविषे आवेशितचित्तवालेपुरुषोंका मैंपरमेश्वर मृत्युयुक्तसंसारसमुद्रतैं शीघ्रहीं उद्धारकरणेहारा होवूंहूं ॥ ६ ॥ ७ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ ईहां (येतु) यावचनविषेस्थितजो तु यहशब्दहै ॥ सोतुशब्द पूर्वउक्त अर्जुनकीशंकाकेनिवृत्तकरणेवास्तैहै ॥ हेअर्जुन जेअधिकारीजन मैंसगुणपरमेश्वरविषे नित्य नैमित्तिक स्वाभाविक इत्यादिकसर्वकर्मोंकूंअर्पणकरिकै मत्परहुएहैं ॥ अर्थात् मैंभगवान्वासुदेवहींहूं पर क्या प्रकृष्टप्रीतिकाविषय जिनोंकूं तिनोंकानाम मत्परहै ॥ अथवा मैंपरमेश्वरहींहूं पर क्या सर्वकर्मोंकरिकैप्राप्य जिनोंकूं तिनोंकानाम मत्परहै ॥ अथवा मैंपरमेश्वरहींहूं पर क्या ध्यानका

विषय जिनोंकूं तिनोंकानाम मत्परहै ॥ अथवा मैंविश्वरूपपरमात्माहींहूं पर क्या आपणेतैंअन्य ज्ञातव्यद्रष्टव्यपदार्थ जिनोंकूं तिनोंकानाम मत्परहै ॥ अर्थात् आपणेतैंअन्यवस्तुविषे सर्वत्र मैंपरमेश्वरकूं देखणेहारेपुरुषोंकानाम मत्परहै ॥ ऐसेमत्परहुए जेअधिकारीपुरुष अनन्ययोगकरिकै मैंपरमेश्वरकूंचिंतनकरेहैं तहां मैंभगवान्‌वासुदेवकूंत्यागकै नहींवियमानहैअन्यआलंबन जिसविषे ताकानाम अनन्यहै ॥ ऐसाअनन्यरूप जोसमाधिरूपयोगहै ॥ जिस अनन्यसमाधिरूपयोगकूं शास्त्रविषे एकांतभक्तियोग इसनामकरिकैकथनकन्याहै ॥ ऐसेअनन्ययोगकरिकै मैंपरमेश्वरकूं चिंतनकरतेहुए ॥ अर्थात् सर्वसौंदर्यकेसारकानिधानरूप तथा आनंदघनरूपविग्रहवाला तथादोभुजावोंकरिकै युक्त अथवा च्यारिभुजावोंकरिकैयुक्त तथासर्वजनोंकेमनकूंमोहनकरणेहारीमुरलीकूं अतिमनोहरसप्तस्वरोंकरिकै बजावणेहारा तथा शंख चक्र गदा पद्म इनच्यारोंकूं हस्तोंविषेधारणकरणेहारा ऐसाजो मैंभगवान्‌वासुदेवहूं ॥ तिस मैंभगवान्‌वासुदेवकूं चिंतनकरतेहुए ॥ अथवा नरसिंह राघव वामन इत्यादिरूप मैंपरमेश्वरकूं चिंतनकरतेहुए ॥ अथवा पूर्वदिखाएहुएविश्वरूप मैंपरमेश्वरकूं चिंतनकरतेहुए ॥ जेअधिकारीजन मैंपरमेश्वरकी उपासनाकरेहैं ॥ अर्थात् ऐसेमैंपरमेश्वरविषयक व्यवधानतैंरहित सजातीयचित्तवृत्तियोंकेप्रवाहकूं जेअधिकारीपुरुष करेहैं ॥ अथवा (उपासते) इसपदका यहदूसराअर्थकरणा ॥ जेअधिकारीजन मैंपरमेश्वरकेसमीपवर्त्तिपणेकरिकै स्थितहोवैहैं ॥ ऐसेजे मैंपरमेश्वरविषेआवेशितचित्तवालेपुरुषहैं ॥ अर्थात् पूर्वउक्त मैंसगुणब्रह्मविषेआवेशितकन्याहै क्या एकाग्रताकरिकैप्रवेशितकन्याहै चित्तजिनोंनैं तिनोंकानाम मय्यावेशितचेतसहै ॥ ऐसे सगुणब्रह्मकेचिंतनपरायणपुरुषोंका मैं भगवान्‌वासुदेव मृत्युसंसारसागरतैं समुद्धर्ता होवूंहूं ॥ तहां मृत्युकरिकैयुक्त जोमिथ्याअज्ञान तथाताअज्ञानकाकार्यभूत यहसंसारहै ॥ सोमृत्युयुक्तसंसारहीं प्रसिद्ध सागरकीन्यांई दुस्तरहोणेतैं सागररूपहै ॥ ऐसेमृत्युसंसारसागरतैं मैंपरमेश्वर तिनउपासकपुरुषोंका समुद्धर्ता होवूंहूं ॥ अर्थात् तिनउपासकपुरुषोंकूं मैंपरमेश्वर ज्ञानरूप आश्रयकी प्राप्तिकरिकै विनाहींआयासतैं तथाथोडेहींकालविषे सर्वप्रपंचकेबाधकाअवधिभूत शुद्धब्रह्मरूप ऊर्ध्वस्थानविषे धारणकरणेहारा होवूंहूं ॥ ईहां (हेपार्थ) यहजोअर्जुनकासंबोधन भगवान्‌नें कह्याहै॥सोतूंअर्जुन हमारेपिताकेभगिनीकापुत्रहैं तथाहमाराअनन्यभक्तहै ॥ यातैं इसमृत्युयुक्तसंसारसागरतैं तैंअर्जुनकाभी मैंपरमेश्वर अवश्यकरिकैउद्धारकरूंगा तूं भयमतकर ॥ याप्रकारकेआश्वासनकरणेवासतै कथनकन्याहै इति ॥ ६ ॥ ७ ॥ ❀ ॥ तहां इतनैंग्रंथकरिकै सगुणब्रह्मकेउपासनाकीस्तुति कथनकरी ॥ अब तिस सगुणब्रह्मकीउपासनाका विधानकरेहैं ॥

(मू० श्लो०) मय्येवमनआधत्स्वमयिबुद्धिंनिवेशय ॥ निवसिष्यसिमय्येवअतऊर्ध्वंनसंशयः ॥८॥ मयि । एव । मनः । आधत्स्व । मयि । बुद्धिं । निवेशय । निवसिष्यसि । मयि । एव । अतः । ऊर्ध्वं । न । संशयः ॥ ८ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन तूं आपणे

मनकूं मैंसगुणब्रह्मविषेहीं स्थितकर तथाआपणेबुद्धिकूंभी मैंसगुणब्रह्मविषेहीं स्थितकर ताकरिकै इसदेहपाततैं अनंतर तूं मैंशुद्ध ब्रह्मविषे हीं अभेदरूपतैं निवासकरैंगा याकेविषे कोईसंशय तुमनैं नहींकरणा ॥ ८ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन तूं आपणे संकल्पविकल्परूपमनकूं मैंसगुणब्रह्मविषेहीं स्थितकर ॥ अर्थात् तामनकेसर्ववृत्तियोंकूं मैंसगुणपरमेश्वरविषयक कर ॥ मैंपरमेश्वरतैंभिन्न दूसरेशब्दादिकाविषयोंकूं तामनकेवृत्तियोंकाविषयकरनहीं ॥ तथा आपणी निश्चयरूपबुद्धिकूंभी मैंसगुणब्रह्मविषेहीं स्थितकर ॥ अर्थात् ताबुद्धिकी सर्ववृत्तियां मैंसगुणब्रह्मविषयकहींकर ॥ तात्पर्ययह ॥ दूसरेसर्वविषयोंकापरित्यागकरिकै तूं सर्वकालविषे मैंसगुणब्रह्मकूंहीं चिंतनकर ॥ शंका ॥ हेभगवन् इस प्रकारतैं आपसगुण ब्रह्मकेचिंतनकरणेतैं हमारेकूं कौंनफल प्राप्तहोवैंगा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए ॥ श्रीभगवान् ताचिंतनकरणेकाफल कथनकरेहै ॥ (निवसिष्यसिइति) हेअर्जुन इसप्रकारतैं जबीतूं निरंतर मैंसगुणब्रह्मकाचिंतनकरैंगा ॥ तबी मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारकेआत्मज्ञानकूंप्राप्तहोइकै तूं इसदेहकेपाततैंअनंतर मैंनिर्गुणशुद्धब्रह्मविषेहीं अभेदरूपकरिकै निवासकरैंगा ॥ इसप्रकारके सगुणब्रह्मकीउपासनाकेमोक्षरूपफलविषे तुमनैं किंचित्मात्रभी संशयनहींकरणा ॥ अर्थात् तासगुणब्रह्मकेउपासककूं तिसमोक्षरूपफलकीप्राप्तिविषेतुमनैंकिंचित्मात्रभी प्रतिबंधककीशंका नहींकरणी ॥ ईहां यद्यपि (एवअतऊर्ध्वम्) इसवचनविषे (एवातऊर्ध्वम्) इसप्रकारकीसंधिकरणीचाहीतीथी ॥ तथापि श्रीभगवान्नैं जोईहां संधिनहींकरी ॥ सो श्लोककेपूर्णवासतैं नहींकरी इति ॥ ८ ॥ ❀ ॥ तहां पूर्वश्लोकविषे सगुणब्रह्मकेध्यानकाप्रकार कथनकऱ्या ॥ अब तिससगुणब्रह्मकेध्यानकरणेविषेभी अशक्त जेअधिकारीजनहैं ॥ तिनअधिकारीजनोंनैं ताअशक्तिकीतारतम्यताकरिकै प्रथमतौं प्रतिमादिकबाह्यवस्तुवोंविषे भगवान्केध्यानकाअभ्यासकरणा ॥ अर्थात् तिनप्रतिमादिकोंविषे भगवत्बुद्धिकरणी ॥ और तिनप्रतिमादिकोंकेध्यानकरणेविषेभी जेपुरुष अशक्तहैं ॥ तिनअधिकारीजनोंनैंतौं श्रवणकीर्त्तनादिरूप भागवतधर्मोंका अनुष्ठानकरणा ॥ और तिनभागवतधर्मोंकेअनुष्ठानकरणेविषेभी जेपुरुष अशक्तहैं ॥ तिनअधिकारी जनोंनैंतौं सर्वकर्मोंकेफलकापरित्यागकरणा ॥ अर्थात् फलकीइच्छातैंरहितहोइकै कर्मोंकूंकरणा ॥ इसप्रकारके तीनसाधनोंकूं तनिश्लोकोंकरिकै श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) अथचित्तंसमाधातुंनशक्नोषिमयिस्थिरम् ॥ अभ्यासयोगेन ततोमामिच्छाप्तुंधनंजय ॥ ९ ॥ अथ । चित्तं । समाधातुं । न । शक्नोषि । मयि । स्थिरम् । अभ्यासयोगेन । ततः । माम् । इच्छ । आप्तुं । धनंजय ॥ ९ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेधनंजय जबीतूं मैंसगुणब्रह्मविषे आपणेचित्तकूं स्थिर स्थापनकरणेकूं नहीं समर्थहोवैं तबी अभ्यासयोगकरिकै मैंपरमेश्वरकूं प्राप्तहोणे अर्थ इच्छाकर ॥ ९ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ ईहां श्लोकके आदिविषे स्थितजो अथ यहशब्दहै ॥ सोअथशब्द पूर्वउक्तपक्षकीअपेक्षाकरिकै दूसरेपक्षकेआरंभकाबोधकहै ॥ हेधनंजय जबीतूं मैंस गुणब्रह्मविषे जैसे चित्त स्थिरहोवै तैसे आपणेचित्तकूं स्थापनकरणेविषे अशक्तहोवैं ॥ तबीतूं अभ्यासयोगकरिकै मैंपरमेश्वरकूं प्राप्तहोंणेवासतै इच्छाकर ॥ अर्थात प्रयत्नकर ॥ तहां सुवर्णादिकधातुमय अथवा पाषाणमय जेविष्णुशिवादिकोंकीप्रतिमाहैं ॥ तिन बाह्य प्रतिमादिकआलंबनविषे सर्वओरतैंनिवृत्तकऱ्येहुएचित्त का जोपुनःपुनःस्थापनहै ताकानाम अभ्यासहै तिसअभ्यासपूर्वक जो समाधिरूपयोगहै ताकानाम अभ्यासयोगहैं ॥ ऐसेअभ्यासयोगकरिकै मैंपरमेश्वरकूं प्राप्तहोणे वासतै तूंप्रयत्नकर ॥ ईहां श्रीभगवान्नैं (हेधनंजय) इससंबोधनकेकहणेकरिकै यहअर्थ सूचनकऱ्या ॥ युधिष्ठिरराजाके राजसूययज्ञवासतैं बहुतशत्रुवोंकूं जीतकरिकै तूं धनकूंलेआवताभयाहैं ॥ यातैं तुमारा धनंजय यहनाम होताभयाहै ॥ ऐसा धनंजयनामवालातूं अर्जुन एकमनरूपशत्रुकूंजीतिकै तत्त्वज्ञानरूपधनकूं हरणकरैंगा यहवार्त्ता तुमारेविषे कोईआश्चर्यरूप नहींहै इति ॥ ९ ॥ ❀ ॥

(मू०श्लो०) अभ्यासेप्यसमर्थोसिमत्कर्मपरमोभव॥मदर्थमपिकर्माणिकुर्वन्सिद्धिमवाप्स्यसि॥१०॥ अभ्यासे । अपि । असमर्थः । असि । मत्कर्मपरमः । भव । मदर्थम् । अपि । कर्माणि । कुर्वन् । सिद्धिम् । अवाप्स्यसि ॥ १० ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन पूर्वउक्तअभ्यासविषे भी जबीतूं असमर्थ होवै तबीतूं भागवतकर्मपरायण होउ मैंपरमेश्वरअर्थ कर्मोंकूं भी करताहुआ तूं ब्रह्मभा वकूं प्राप्तहोवैंगा ॥ १० ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन पूर्वश्लोकविषेकथनकऱ्याजोअभ्यासहै ॥ ताअभ्यासकेकरणेविषेभी जबीतूं असमर्थहोवैं ॥ तबी तूं मत्कर्मपरम होउ ॥ तहां मैंपरमेश्वरकी प्रसन्नताअर्थ जेकर्महैं तिनकर्मोंकानाम मत्कर्महै ॥ तेभगवत्कीप्रसन्नता वासतैं भजनरूपकर्म शास्त्रविषे नवप्रकारकेकहेहैं ॥ तहांश्लोक ॥ (श्रवणंकीर्तनंविष्णोः स्मरणंपादसेवनम् ॥ अर्चनंवंदनंदास्यंसख्यमात्मनिवेदनम्) ॥ अर्थयह ॥ सर्वत्रव्यापकविष्णुभगवान्के रामकृष्णादिकनामोंकूंश्रवणकरणा ॥ १ ॥ तथा ताविष्णु केनामोंकूं आपणेमुखकरिकैकथनकरणा ॥ २ ॥ तथा आपणेमनकरिकै ताविष्णुका सर्वदा स्मरणकरणा ॥ ३ ॥ तथाताविष्णुकेपादोंकासेवनकरणा ॥ ४ ॥ तथा चंदन अक्षत पुष्प धूप दीप इत्यादिकपदार्थोंकरिकै ताविष्णुका अर्चनकरणा ॥ ५ ॥ तथा शरीर मन वाणीकरिकै ताविष्णुकेतांई नमस्काररूपवंदनकरणा ॥६॥ तथा ताविष्णुका दासभावकरणा ॥७॥ तथा ताविष्णुका सखाभावकरणा ॥ ८ ॥ तथा ताविष्णुकेतांई आपणेशरीररूपआत्माका अर्पणकरणा ॥ ९ ॥ ईहां यद्यपि सर्वत्रव्यापकविष्णुके साक्षात् पादोंकासेवन तथाअर्चन संभवतानहीं ॥ तथापि ॥ (द्वेरूपेवासुदेवस्यचलंचाचलमेवच ॥ चलंसंन्यासिनोरूपमचलंप्रति

मादिकम् ॥) इसशास्त्रकेवचनविषे विष्णुकेदोरूपकथनकऱ्येहैं ॥ तहां संन्यासीतौं तिसविष्णुका चलरूपहै और सुवर्णादिकधातुमय तथापाषाणमय प्रतिमादिक ताविष्णुका अचलरूपहै तासंन्यासीके अथवा विष्णुकीप्रतिमाके पादोंकासेवन तथाअर्चन संभवैहैइति ॥ इसीश्रवणादिकनवप्रकारकेभजनकूं शास्त्रविषे भागवत धर्म कहेहैं ॥ ऐसे भागवतधर्मनामा मत्कर्मोंकेकरणेविषे तूं तत्परहोउ ॥ इसप्रकार मैंपरमेश्वरकीप्रसन्नतावासतै तिनश्रवणकीर्त्तनादिक भागवतकर्मोंकूंभीकरताहुआ तूं अंतःकरणकीशुद्धिद्वारा तथाआत्मज्ञानकीप्राप्तिद्वारा निर्गुणब्रह्मभावकीप्राप्तिरूपसिद्धिकूं प्राप्तहोवैंगाइति ॥ १० ॥ ❀ ॥

(मू० श्लो०) अथैतदप्यशक्तोसिकर्त्तुंमद्योगमाश्रितः ॥ सर्वकर्मफलत्यागंततःकुरुयतात्मवान् ॥ ११ ॥ अथ । एतत् । अपि । अशक्तः । असि । कर्त्तुं । मद्योगम् । आश्रितः । सर्वकर्मफलत्यागं । ततः । कुरु । यतात्मवान् ॥ ११ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन जबी तूं इसपूर्वउक्तभागवतकर्मके भी करणेकूं अशक्त होवैं तबी मैंपरमेश्वरकेयोगकूं आश्रयणकरताहुआ तथायतात्मवान् हुआ तूं सर्वकर्मोंकेफलकेत्यागकूं कर ॥ ११ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन बाह्यविषयोंविषेप्रीतिमान् ऐसाजोचित्तहै ॥ ऐसेबहिर्मुखचित्तवालाहोणेतैं जबी तूं पूर्वश्लोकउक्त श्रवणकीर्त्तनादिकभागवतधर्मोंकूंभी संपादनकरणेविषेअसमर्थहोवैं ॥ तबीतूं मद्योगकूंआश्रितहुआ अर्थात् एकमैंपरमेश्वरकेशरणताकूंआश्रयणकरताहुआ ॥ अथवा मैंपरमेश्वरविषे जोसर्वकर्मोंकाअर्पणहै ताकानाम मद्योगहै ऐसेमद्योगकूंआश्रयणकरताहुआ तथा यतात्मवान्हुआ ॥ ईहां शब्दादिकसर्वविषयोंतैंनिवृत्तकरेहैंश्रोत्रादिकसर्वइंद्रियजिसनैं ताकानाम यतहै ॥ औरविवेकीकानाम आत्मवान्है ॥ यतहोवै सोईहीं आत्मवान्होवै ताकानामयतात्मवान्है ॥ अर्थात् श्रोत्रादिकसर्वइंद्रियोंकेनिरोधवाले विवेकीपुरुषकानाम यतात्मवान्है ॥ ऐसायतात्मवान्हुआ तूंअर्जुन उक्तपूर्व श्रौतस्मार्त्तरूपसर्वकर्मोंकेफलकेत्यागकूं कर अर्थात् तिनकर्मोंकेफलकीइच्छाका तूंपरित्यागकर इति ॥ ॥ ११ ॥ ❀ ॥ तहां पूर्व सगुणब्रह्मकीउपासना अभ्यासयोग भागवतधर्म कर्मकेफलकात्याग यहच्यारिसाधन अधिकारीकेभेदतैं विधानकरे ॥ तिनच्यारिसाधनोंके मध्यविषे अंतमेंविधानकऱ्याजो कर्मोंकेफलकात्यागरूपसाधनहै ॥ तिसत्यागरूपसाधनविषेहीं पूर्वउक्तसाधनोंकेविधानका परिअवसानहै ॥ याकारणतैं श्रीभगवान् इससर्वकर्मोंकेफलकात्यागरूपसाधनकीस्तुतिकथनकरेहै ॥ तिसकर्मोंकेफलत्यागरूपसाधनविषे अधिकारीजनोंकीप्रवृत्तिकरणेवासतै ॥

(मू० श्लो०) श्रेयोहिज्ञानमभ्यासाज्ज्ञानाद्ध्यानंविशिष्यते ॥ ध्यानात्कर्मफलत्यागस्त्यागाच्छांतिरनंतरम् ॥ १२ ॥ श्रेयः । हि । ज्ञानम् । अभ्यासात् । ज्ञानात् । ध्यानम् । विशिष्यते । ध्यानात् । कर्मफलत्यागः । त्यागात् । शांतिः । अनंतरम् ॥ १२ ॥

(इतिपदच्छेदः)॥ हेअर्जुन अभ्यासतैं ज्ञान हीं श्रेष्ठहै ताज्ञानतैं ध्यान श्रेष्ठहै ताध्यानतैं कर्मोंकेफलका त्यागश्रेष्ठहै जिसत्यागतैं अनंतर मोक्षरूपशांति होवैहै ॥ १२ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन ज्ञानकीप्राप्तिवासतै कऱ्याजो श्रवणकाअभ्यासहै ॥ तिसअभ्यासतै ज्ञानहीं श्रेष्ठहै ॥ अर्थात् श्रवणकरिकै तथामननकरिकैं उत्पन्नभयाजो आत्मविषयक निश्चयरूपज्ञानहै ॥ जिसज्ञानकूंश्रवणज्ञान तथामननज्ञान कहेहैं ॥ तथा जोज्ञान प्रमाणगतअसंभावनाका तथाप्रमेयगत असंभावनाका निवर्त्तकहै ॥ ऐसाज्ञानतिसअभ्यासतैं श्रेष्ठहै ॥ और तिस श्रवणमननजन्यज्ञानतैं निदिध्यासनरूपध्यान अत्यंतश्रेष्ठहै ॥ काहेतैं सोनिदिध्यासनरूपध्यान व्यवधानतैं रहितहुआहीं आत्मसाक्षात्कारकाहेतुहै ॥ और सोश्रवणज्ञान तथामननज्ञान तानिदिध्यासनद्वारा आत्मसाक्षात्कारकाहेतुहै ॥ व्यवधानतैंरहितहुआ सोज्ञान आत्म साक्षात्कारका हेतुहैनहीं ॥ यातैं तिसज्ञानतै निदिध्यासनरूपध्यानकीश्रेष्ठतायुक्तहै ॥ इसप्रकारतैं सोनिदिध्यासनरूपध्यान यद्यपि सर्वसाधनोंतैं श्रेष्ठहै ॥ तथापि अज्ञानीपुरुषनैं कऱ्याजो सर्वकर्मोंकेफलकात्यागहै सोकर्मोंकेफलकात्याग तिसअज्ञानीपुरुषकूं ताध्यानतैंभीश्रेष्ठहै ॥ इसअभिप्रायकरिकै श्रीभगवान् तिस कर्मफलकेत्यागकी स्तुतिकरेहैं (ध्यानात्कर्मफलत्यागइति) हेअर्जुन अज्ञानीपुरुषनैं कऱ्याजो कर्मोंकेफलकात्यागहै ॥ सोकर्मोंकेफलकात्याग तिसअज्ञानी पुरुषकूं तिसनिदिध्यासनरूपध्यानतैंभी श्रेष्ठहै ॥ काहेतैं निगृहीतचित्तवालेपुरुषनैं कऱ्याजो सर्वकर्मोंकेफलकात्यागहै ॥ तिसत्यागतैं इसअधिकारीपुरुषकूंअज्ञानसहित सर्वसंसारका उपशमरूपशांति व्यवधानतैंविनाहीं प्राप्तहोवैहै ॥ साशांति कालांतरकीअपेक्षाकरैनहीं ॥ यहवार्त्ता श्रुतिविषेभीकथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ (यदासर्वे प्रमुच्यंतेकामायेऽस्यहृदिस्थिताः ॥ अथमर्त्योऽमृतोभवत्यत्रब्रह्मसमश्नुते ॥) अर्थयह ॥ इसजीवकेहृदयविषेस्थित जेकामहैं तेसर्वकाम जिसकालविषेनिवृत्तहोवैहैं॥ तिसीकालविषेहीं यहजीव अमृतहोवैहै तथाइसीदेहविषे ब्रह्मभावकूंप्राप्तहोवैहै इति ॥ इत्यादिकश्रुतिवचनोंतैं सर्वकामोंकेत्यागविषे मोक्षकासाधनपणाजान्याजावैहै॥ और इसगीताशास्त्रविषेभी स्थितप्रज्ञपुरुषके लक्षणोंविषे (प्रजहातियदाकामान्सर्वान्पार्थमनोगतान्) इसवचनकरिकै श्रीभगवाननैं आपही सर्वकामोंकेत्या गविषे मोक्षकासाधनपणा कथनकऱ्याहै ॥ यद्यपि श्रुतिविषे तथास्थितप्रज्ञकेलक्षणोंविषे सर्वकामोंकेत्यागकूंहीं मोक्षकासाधनपणा कथनकऱ्याहै ॥ कर्मों केफलकेत्यागकूं मोक्षकासाधनपणा कह्यानहीं ॥ तथापि तेकर्मकेफलभी कामरूपहीहैं ॥ यातैं तिनकर्मोंकेफलोंकाजेत्यागहै ॥ सोत्यागभी कामकात्यागहीं है ॥ ताकामत्यागस्वरूप सामान्यधर्मकूंलेके श्रीभगवाननैं ताकर्मफलकेत्यागकी कामत्यागके फलकरिकै स्तुतीकरीहै ॥ जैसे पूर्व अगस्त्यब्राह्मण समु द्रकूंपानकरताभयाहै ॥ तथा परशुरामब्राह्मण इसपृथिवीकूं क्षत्रियराजावोंतैंरहितकरताभयाहै ॥ सोब्राह्मणपणाइदानींकालकेब्राह्मणोंविषेभीहै ॥ यातैं ताब्राह्मण

त्वसामान्यधर्मकूंलैके इदानींकालकेब्राह्मणभी अपरिमितपराक्रमवत्ताकरिकै स्तुतिकऱ्येजावैहैं ॥ तैसे सोकर्मकेफलकात्यागभी कामत्यागकेफलकरिकै स्तुतिकऱ्याजावैहै इति ॥ और किसीटीकाविषेतौं (श्रेयोहिज्ञानमभ्यासात्) इसश्लोकका यहअर्थकऱ्याहै ॥ निदिध्यासनरूपअभ्यासतैं श्रवणमननजन्यपरोक्षज्ञान श्रेष्ठहै ॥ और तिसपरोक्षज्ञानतैं विष्णुकेनामोंकाश्रवणकीर्त्तनरूपध्यान श्रेष्ठहै ॥ और तिसध्यानतैं कर्मोंकेफलकात्याग श्रेष्ठहै ॥ कैसाहैसोकर्मोंकेफलकात्याग ॥ जिसत्यागतैंउत्तर व्यवधानतैंविनाहीं चित्तशुद्धिआदिकोंकीउत्पत्तिद्वारा मोक्षरूपशांति प्राप्तहोवैहै ॥ ईहां यद्यपि निदिध्यासनरूपअभ्यासकीअपेक्षाकरिकै सोपरोक्षज्ञान बाह्यसाधनहै ॥ और तापरोक्षज्ञानकीअपेक्षाकरिकै सोश्रवणकीर्त्तनादिरूपध्यान बाह्यसाधनहै ॥ और ताध्यानकीअपेक्षाकरिकै सोकर्मोंकेफलका त्याग बाह्यसाधनहै ॥ यातैं अंतरसाधनकीअपेक्षाकरिकै बाह्यसाधनविषे श्रेष्ठताकहणी असंगतहै ॥ तथापि अंतरसाधनकीअपेक्षाकरिकै बाह्यसाधन करणेकूं सुगमहोवैहै ॥ और सोपानक्रमकरिकै बाह्यसाधनकीप्राप्तिपूर्वकहीं अंतरसाधनकीप्राप्तिहोवैहै ॥ यातैं श्रीभगवान्नैं तिनबाह्यसाधनोंविषे अधिकारीजनोंकीप्रवृत्ति करावणेवासतै पूर्वपूर्वसाधनकीअपेक्षाकरिकै तिसतिसबाह्यसाधनविषे श्रेष्ठताकथनकरीहै इति ॥ १२ ॥ ❀ ॥ तहांपूर्व मंदअधिकारीकेप्रति अतिदुष्कर होणेतैं निर्गुणअक्षरब्रह्मकेउपासनाकीनिंदाकरिकै अतिसुगम सगुणब्रह्मकीउपासना विधानकरी ॥ तासगुणब्रह्मकीउपासनाकेकरणेविषेभी जेपुरुष असमर्थहैं ॥ तिनपुरुषोंके अशक्तिकीतारतम्यताकेअनुसार दूसरेभी अभ्यासादिकतीनसाधन श्रीभगवान्नैं विधानकऱ्ये ॥ तासगुणब्रह्मकीउपासनाकेविधानकरणेविषे तथा अभ्यासादिकतीनसाधनोंकेकहणेविषे श्रीभगवान्का यह अभिप्रायहै ॥ यहअधिकारीजन किसीभीप्रकारकरिकै सर्वप्रतिबंधकोंतैंरहितहोइकै तथाउत्तमअधिकारीहोइकै सर्वसाधनोंकाफलरूप निर्गुणब्रह्मविद्याविषे प्रवेशकरे इति ॥ काहेतैं साधनोंकाजोविधानहोवैहै सोफलकीप्राप्तिवासतैहींहोवैहै ॥ फलतैंविना साधनोंका विधान होवैनहीं ॥ यातैं ईहां श्रीभगवान्नैं जो सगुणब्रह्मकीउपासना तथा अभ्यासादिकतीनसाधन विधानकरेहैं ॥ तेसर्वसाधन निर्गुणब्रह्मविद्यारूपफलकीप्राप्तिवासतैहीं विधानकरेहैं ॥ यहवार्त्ता अन्यशास्त्रविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ (निर्विशेषंपरंब्रह्मसाक्षात्कर्त्तुमनीश्वराः ॥ येमंदास्तेनुकंप्यंतेसविशेषनिरूपणैः ॥ १ ॥ वशीकृतेमनस्येषांसगुणब्रह्मशीलनात् ॥ तदेवाविर्भवेत्साक्षादपेतोपाधिकल्पनम् ॥ २ ॥) ॥ अर्थयह ॥ जेमंदअधिकारीजन निर्विशेषपर ब्रह्मकेसाक्षात्कारकरणेकूं समर्थ नहींहोवैहैं ॥ तेमंदअधिकारीजन सगुणब्रह्मकेनिरूपणकरिकै अनुग्रहकेविषयकरीतेहैं ॥ अर्थात् श्रुतिभगवतीनैं तथाब्रह्मवेत्तापुरुषोंनैं तिनमंदअधिकारीपुरुषोंकेऊपरि अनुग्रहकरिकै सगुणब्रह्मकानिरूपणकरीताहै इति ॥ १ ॥ तिससगुणब्रह्मकेध्यानतैं जबी तिनमंदअधिकारी पुरुषोंकामन वशहोवैहै ॥ तबी तिनअधिकारीजनोंकूं सर्वउपाधियोंकीकल्पनातैंरहित तिसनिर्गुणब्रह्मकासाक्षात्कारहोवैहै इति ॥ २ ॥ यहवार्त्ता पतंजलिभगवान्नैंभी योग

सूत्रोंविषेकथनकरीहै ॥ तहांसूत्रम् ॥ (समाधिसिद्धिरीश्वरप्रणिधानात् ॥ ततःप्रत्यक्चेतनाधिगमोप्यंतरायाभावश्च ॥) अर्थयह ॥ इसअधिकारीजनकूं ईश्वरके चिंतनरूपईश्वरप्रणिधानतैं समाधिकीप्राप्तिहोवैहै ॥ तिसईश्वरकेप्रणिधानतैंहीं इसअधिकारीपुरुषकूं प्रत्यक्चेतनकासाक्षात्कारहोवैहै ॥ तथा विघ्नरूपअंतरायोंका अभावहोवैहै इति ॥ यातैं पूर्व (क्लेशोधिकतरस्तेषाम्) इत्यादिकवचनोंकरिकै जो निर्गुणब्रह्मकेउपासनाकी निंदाकरीथी ॥ सोनिंदा सगुणब्रह्मकीउपासनाकेस्तुतिवासतै करीथी ॥ कोई निर्गुणब्रह्मकीउपासनाकेनिषेधकरणेवासतै सानिंदा नहींकरीथी ॥ जैसे उदितहोमकेविधानविषे जो अनुदितहोमकीनिंदाकरीहै ॥ सानिंदा तिस उदितहोमकीस्तुतिवासतैहीं करीहै ॥ कोई अनुदितहोमकेनिषेधकरणेवासतै सानिंदा नहींकरीहै ॥ तहां सूर्यकेउदयहुए जोहोम कन्याजावैहै ताकूं उदितहोम कहैहैं ॥ और सूर्यकेउदयहुएतैंप्रथमजोहोम कन्याजावैहै ताकूं अनुदितहोमकहैहैं ॥ तैसे सगुणउपासनाकेविधानविषे जोनिर्गुणउपासनाकीनिंदाकरीहै ॥ सानिंदाभी तिससगुणउपासनाकी स्तुतिवासतैहै ॥ कोई निर्गुणउपासनाकेनिषेधवासतै सानिंदानहींहै ॥ काहेतैं शास्त्रकारोंनैं यहन्याय कह्याहै ॥ (नहिनिंदानिंद्यंनिंदितुंप्रवर्त्तते ऽपितुविधेयंस्तोतुम्) ॥ अर्थयह ॥ शास्त्रविषेजोनिंदावचनहोवैहैं ॥ तेनिंदावचन तिसनिंद्यवस्तुकेनिंदनकरणेवासतै प्रवृत्तनहींहोवैहैं ॥ किंतु प्रसंगविषेप्राप्त विधेय अर्थकेस्तुतिकरणेवासतै तेनिंदावचन प्रवृत्तहोवैहैं इति ॥ यातैं निर्गुणअक्षरब्रह्मकेउपासकहीं वास्तवतैं योगवित्तमहैं ॥ ऐसेनिर्गुणब्रह्मवेत्तापुरुषहीं श्रीभगवान्नैं (प्रियोहिज्ञानिनोत्यर्थमहंसचममप्रियः । उदाराःसर्वएवैतेज्ञानीत्वात्मैवमेमतम्) इत्यादिकवचनोंकरिकै पुनःपुनः श्रेष्ठतारूपकरिकै कथनकरेहैं ॥ हेअर्जुन तुमनैंभी अधिकारकूंसंपादनकरिकै तिननिर्गुणब्रह्मवेत्तापुरुषोंकाहीं ज्ञान तथासर्वधर्म अनुसरणकरणेयोग्यहै ॥ इसप्रकारतैं अर्जुनकेप्रति बोधकरणेकीइच्छाकरताहुआ तथाता अर्जुनकेपरम हितकीइच्छा करताहुआ श्रीकृष्णभगवान् सप्तश्लोकोंकरिकै तिन अभेददर्शनवाले तथाकृतकृत्यभावकूंप्राप्तहुए निर्गुणब्रह्मकेउपासकोंकी स्तुतिकरेहै ॥

(मू० श्लो०) अद्वेष्टासर्वभूतानांमैत्रःकरुणएवच ॥ निर्ममोनिरहंकारःसमदुःखसुखःक्षमी ॥ १३ ॥ अद्वेष्टा । सर्वभूतानां । मैत्रः । करुणः । एव । च । निर्ममः । निरहंकारः । समदुःखसुखः । क्षमी ॥ १३ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन जोपुरुष सर्वभूतोंका अद्वेष्टाहै तथामैत्रीवाला हीं है तथा करुणावालाहै तथा निर्ममहै तथा निरहंकारहै तथासमहैदुःखसुखजिसकूं तथाक्षमावालाहै ॥ १३ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन सोनिर्गुणब्रह्मवेत्तापुरुष स्थावरजंगमरूपसर्वभूतोंकूं आपणाआत्मारूपकरिकैदेखैहै ॥ यातैं जेपदार्थ आपणेदुःखकाभीहेतुहै ॥ तिसपदार्थविषेभी तिसतत्त्ववेत्तापुरुषकी प्रतिकूलबुद्धिहोवैनहीं ॥ और जिसवस्तुविषे यहवस्तु हमारेदुःखकासाधनहै याप्रकारकीप्रतिकूलबुद्धिहोवैहै ॥ तिसवस्तुविषेहीं

द्वेषहोवैहै ॥ ताप्रतिकूलबुद्धितैंविना द्वेषहोवैनहीं ॥ ताप्रतिकूलबुद्धिकेअभावहुए सोतत्त्ववेत्तापुरुष तिनसर्वभूतोंका द्वेषकरताहोवैनहीं ॥ किंतु सोतत्त्ववेत्तापुरुष तिनसर्वभूतोंविषे मैत्रीवालाहींहोवैहै ॥ अर्थात् तिनसर्वभूतोंविषे स्नेहवालाहींहोवैहै ॥ अबतामैत्रीभावविषे हेतुकहेहैं (करुणःइति) हेअर्जुन जिसकारणतैं सोत त्ववेत्तापुरुष करुणावालाहै ॥ इसकारणतैंसोतत्त्ववेत्तापुरुष तिनसर्वभूतोंविषे मैत्रीवालाहै ॥ तहां दुःखीप्राणीयोंविषे जोदयाकरणीहै ताकानाम करुणाहै ॥ ऐसी करुणावाले पुरुषका नाम करुणहै ॥ अर्थात् सोतत्त्ववेत्तापुरुष सर्वभूतोंकेतांई अभयदानदेणेहारा परमहंससंन्यासीहै ॥ तथा सोतत्त्ववेत्तापुरुष निर्ममहै ॥ अर्थात् आपणेदेहविषेभी यहदेह हमाराहै याप्रकारकीममताबुद्धितैंरहितहै ॥ तथा सोपुरुष निरहंकारहै ॥ अर्थात् जैसे अज्ञानीपुरुष श्रेष्ठआचारकरिकै तथावेदविद्यादिकों करिकै अहंकारकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे सोतत्त्ववेत्तापुरुष तिन श्रेष्ठआचार विद्यादिकोंकरिकै अहंकारकूंप्राप्तहोतानहीं ॥ तथा द्वेष राग इनदोनोंतैंरहितहोणेतैं समहैं दुःखसुखदोनोंजिसकूं ॥ इसीकारणतैंहीं सोतत्त्ववेत्तापुरुष क्षमावालाहै ॥ अर्थात् ताडनादिकोंकरिकैभी विक्रियाकूंप्राप्तहोतानहीं इति ॥ १३ ॥ ❀ ॥ अब पूर्वश्लोकविषेकथनकऱ्येहुए निर्गुणब्रह्मवेत्तापुरुषके अन्यभीविशेषणोंकूं कथनकरेहैं ॥

(मू० श्लो०) संतुष्टःसततंयोगीयतात्माद्दृढनिश्चयः ॥ मय्यर्पितमनोबुद्धिर्योमद्भक्तःसमेप्रियः ॥ १४ ॥ संतुष्टः । सततम् । योगी । यतात्मा । दृढनिश्चयः । मयि । अर्पितमनोबुद्धिः । यः । मद्भक्तः । सः । मे । प्रियः ॥ १४ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन जो पुरुष सर्वदा संतुष्टहै तथासमाहितचित्तवालाहै तथावशकऱ्याहैसंघातजिसनैं तथादृढहै निश्चयजिसका तथामैंपरमेश्वरविषे अर्पण कऱ्येहैंमनबुद्धिजिसनैं ऐसाजो मेराभक्तहै सोभक्त मैंपरमेश्वरकूं प्रियहै ॥ १४ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जोपुरुष सर्वकालविषे संतुष्टहै ॥ अर्थात् शरीरकीस्थितिकेकारणरूप जेअन्नवस्त्रादिकपदार्थहै तिनअन्नादिकपदार्थोंकी प्राप्तिविषे अथवा अप्राप्तिविषे जोपुरुष संतोषवालाहै ॥ ईहां (सततम्) इसपदका सर्वविशेषणोंकेसाथि संबंधकरणा ॥ तथा जोपुरुष सर्वदा योगीहै अर्थात् सर्वकालविषे जोपुरुष समाहितचित्तवालाहै ॥ तथा जोपुरुष यतात्माहै ॥ अर्थात् आपणेवशकऱ्याहैशरीरइंद्रियादिरूपसंघात जिसनैं ॥ तथा जोपुरुष दृढनिश्चयहै ॥ तहां दृढहै क्या कुतार्किकपुरुषोंनैं अभिभवकरणेकूंअशक्यहोणेतैंस्थिरहै निश्चय क्या अकर्ताअभोक्तासच्चिदानंदअद्वितीयब्रह्ममैंहूं याप्रकारकाज्ञान जिसका ताकानाम दृढनि श्चयहै ॥ अर्थात् स्थितप्रज्ञपुरुषकानाम दृढनिश्चयहै ॥ तथा मैंनिर्गुणशुद्धब्रह्मविषे समर्पणकऱ्याहै संकल्पविकल्पात्मकमन तथा निश्चयात्मकबुद्धि जिसनैं ॥ इसप्रकारका जोहमारा भक्तहै ॥ अर्थात् सर्वउपाधितैंरहित शुद्धअक्षरब्रह्मकूं आपणाआत्मारूपकरिकै जानणेहारा जोतत्त्ववेत्तापुरुषहै ॥ सोब्रह्मवेत्ता

पुरुष मैंपरमेश्वरकूं आपणाआत्मारूपहोणेतैं अत्यंतप्रियहैं ॥ याप्रकारका अर्थ अगलेश्लोकोंविषेभी जानलेणा इति ॥ १४ ॥ ❁ ॥ अब पुनःभी तिसतत्त्व वेत्तापुरुषके विशेषणोंकूं निरूपणकरेहैं ॥

(मू० श्लो०) यस्मान्नोद्विजतेलोकोलोकान्नोद्विजतेचयः ॥ हर्षामर्षभयोद्वेगैर्मुक्तोयःसचमेप्रियः ॥ १५ ॥ यस्मात् । न । उद्विजते । लोकः । लोकात् । न । उद्विजते । च । यः । हर्षामर्षभयोद्वेगैः । मुक्तः । यः । सः । च । मे । प्रियः ॥ १५ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन जिसपुरुषतैं यहलोक नहीं संतापकूंप्राप्तहोवैहै तथा जोपुरुष तिसलोकतैं नहीं संतापकूंप्राप्तहोवैहै तथा जोपुरुष हर्षअमर्ष भयउद्वेगइनच्यारोंनैं परित्यागकऱ्याहै सोतत्त्ववेत्तापुरुष मैंपरमेश्वरकूं अत्यंतप्रियहै ॥ १५ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन सर्वप्राणीयोंकूंअभयकीप्राप्तिकरणेहारे जिसपरमहंससंन्यासीतैं कोईभीप्राणी संतापकूंप्राप्तहोवेनहीं ॥ अर्थात् जोतत्त्ववेत्तापुरुष किसीभी प्राणीकूं शरीरमनवाणीकरिकै पीडाकीप्राप्तिकरतानहीं ॥ तथा विनाहीं अपराधतैं संतापकीप्राप्तिकरणेहारे जे दुष्टप्राणीहैं ॥ ऐसेदुष्टप्राणीरूपलोकतैं जोपुरुष संतापकूंप्राप्तहोतानहीं ॥ जिसकारणतैं सोतत्त्ववेत्तापुरुष सर्वत्र अद्वैतआत्मदर्शीहै तथापरमकारुणिकहोणेतैंक्षमास्वभाववालाहै ॥ तथा जोपुरुष हर्ष अमर्ष भय उद्वेग इनच्यारोंनैं परित्यागकऱ्याहै ॥ तहां इष्टवस्तुकेलाभहुए जो रोमांचअश्रुपातादिकोंकाहेतुरूप तथाआनंदकाअभिव्यंजक चित्तकीवृत्तिविशेषहैं ताकानामहर्षहै ॥ और दूसरेकीउत्कृष्टताकाअसहनरूपजा चित्तकीवृत्तिविशेषहै ॥ ताकानाम अमर्षहै ॥ और व्याघ्र चौर शत्रु इत्यादिकअनिष्टवस्तुवोंकेदर्शन जन्य जा त्रासरूप चित्तकीवृत्तिविशेषहै ताकानाम भयहै ॥ और जनोंतैंरहितएकांतस्थानविषे सर्वपरिग्रहतैंशून्य एकाकीस्थितहुआमैं कैसेजीवोंगा इसप्रकारकी व्याकुलतारूप जा चित्तकीवृत्तिविशेषहै ताकानाम उद्वेगहै ॥ ऐसे हर्ष अमर्ष भय उद्वेग इनच्यारोंनैं जोपुरुष परित्यागकऱ्याहै ॥ अर्थात् सोब्रह्मवेत्तापुरुष अद्वै तदर्शीहोणेतैं तिनहर्षादिकोंकेयोग्यहैनहीं ॥ यातैं तिनहर्षादिकोंनैं आपेहीं सोतत्त्ववेत्तापुरुष परित्यागकरिदियाहै ॥ कोई सोतत्त्ववेत्तापुरुष तिनहर्षादिकोंकेत्याग वास्तै आप व्यापारवालाहुआनहीं ॥ यहवार्त्ता स्मृतिविषेभीकथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ (यथापर्वतमादीप्तंनाश्रयंतिमृगद्विजाः ॥ तद्वद्ब्रह्मविदोदोषानाश्रयंतेक दाचन ॥ १ ॥ मंत्रौषधबलैर्यद्वज्जीर्यतेभक्षितंविषम् ॥ तद्वत्सर्वाणिकर्माणिजीर्यंतेज्ञानिनःक्षणात् ॥ २ ॥)अर्थयह ॥ जैसे अग्निकरिकैदग्धहुएपर्वतकूं मृगादिक पशु तथापक्षी आश्रयणकरतानहीं ॥ तैसे ब्रह्मवेत्तापुरुषकूं रागद्वेषादिकदोष आश्रयणकरतानहीं ॥ १ ॥ और जैसे भक्षणकऱ्याहुआविष मंत्रऔषधिकेबलकरिकै जीर्णभावकूंप्राप्तहोइजावैहै ॥ तैसे ज्ञानवान्पुरुषके पुण्यपापरूपसर्वकर्मएकक्षणमात्रविषे नाशकूंप्राप्तहोवैहैं इति ॥ २ ॥ इसप्रकारकेगुणोंवाला जो मैंपरमेश्वरका भक्तहै ॥ सोब्रह्मवेत्ताभक्त मैंपरमेश्वरकूं आपणाआत्मारूपहोणेतैं अत्यंतप्रियहै ॥ इति ॥ १५ ॥ ❁ ॥ किंच ॥

(मू० श्लो०) अनपेक्षःशुचिर्दक्षउदासीनोगतव्यथः ॥ सर्वारंभपरित्यागीयोमद्भक्तःसमेप्रियः ॥ १६ ॥ अनपेक्षः । शुचिः । दक्षः । उदासीनः । गतव्यथः । सर्वारंभपरित्यागी । यः । मद्भक्तः । सः । मे । प्रियः ॥ १६ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन जो पुरुष निरपेक्षहै तथाशुचिहै तथादक्षहै तथाउदासीनहै तथागतव्यथहै तथासर्वआरंभपरित्यागकऱ्येहैंजिसनैं ऐसाजो मेराभक्तहै सो भक्त मैंपरमेश्वरकूं अत्यंतप्रियहै ॥ १६ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जोपुरुष अनपेक्षहै ॥ अर्थात् विनाहींप्रयत्ननैं यदृच्छामात्रकरिकै प्राप्तहुएभी जेभोगकेसाधनहैं तिनसर्वभोगकेसाधनोंविषे जोपुरुष निस्पृहहै॥ तथा जोपुरुष शुचिहै ॥ अर्थात् बाह्यअंतर दोप्रकारकेशौचकरिकैयुक्तहै ॥ तहां जलमृत्तिकादिकोंकरिकै शरीरकाप्रक्षालनकरणा याकानाम बाह्यशौचहै ॥ और मैत्रीकरुणादिकोंकरिकै अंतःकरणकूंरागद्वेषादिकोंतैंरहितकरणा याकानाम अंतरशौचहै ॥ तथा जोपुरुष दक्षहै ॥ अर्थात् अवश्यकरिकैजानणेयोग्य तथा अवश्यकरिकैकरणेयोग्य ऐसेअर्थोंकेप्राप्तहुए जोपुरुष तिसतिसअर्थके जानणेकूं तथाकरणेकूंसमर्थहै ॥ तथा जोपुरुष उदासीनहै ॥ अर्थात् जोपुरुष किसीभी मित्रादिकोंकेपक्षकूंग्रहणकरतानहीं ॥ तथा जोपुरुष गतव्यथहै ॥ अर्थात् किसीदुष्टपुरुषोंनैं ताडनकीयेहुएभी नहींउत्पन्नहुईहैपीडारूपव्यथा जिसकूं ॥ तथा जोपुरुष सर्वारंभपरित्यागीहै ॥ तहां इसलोकके फलकीप्राप्तिकरणेहारे तथापरलोकके फलकीप्राप्तिकरणेहारे जितनैंकी लौकिकवैदिककर्महैं तिनकर्मोंकानाम सर्वारंभहै ॥ ऐसेसर्वारंभोंकूंपरित्यागकऱ्याहैजिसनैं ऐसाजोपरमहंससंन्यासीहै ताकानाम सर्वारंभपरित्यागीहै ॥ इसप्रकारका जोमैंपरमेश्वरकाभक्तहै ॥ सोब्रह्मवेत्ताभक्त मैंपरमेश्वरकूं आपणाआत्मारूपहोणेतैं अत्यंतप्रियहै इति ॥ १६ ॥ ❀ ॥ किंच ॥

(मू० श्लो०) योनहृष्यतिनद्वेष्टिनशोचतिनकांक्षति ॥ शुभाशुभपरित्यागीभक्तिमान्यःसमेप्रियः ॥ १७ ॥ यः । न । हृष्यति । न । द्वेष्टि । न । शोचति । न । कांक्षति । शुभाशुभपरित्यागी । भक्तिमान् । यः । सः । मे । प्रियः ॥ १७ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन जोपुरुष नहीं हर्षकरेहै नहीं द्वेषकरेहै तथानहीं शोककरेहै तथानहीं इच्छाकरेहै तथा शुभ अशुभकर्मोंकापरित्यागकऱ्या हैजिसनैं ऐसाजो भक्तिमानपुरुषहै सोपुरुष परमेश्वरकूं प्रियहै ॥ १७ ॥ इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ तहां पूर्व त्रयोदशश्लोकविषे (समदुःखसुखः) यहाविशेषणकथनकऱ्याथा ॥ तिसविशेषणकाहीं अब विस्तारतैंवर्णनकरेहैं ॥ हेअर्जुन जोपुरुष प्रियवस्तुकेप्राप्तहुए हर्षकूंप्राप्तहोतानहीं ॥ तथाअप्रियवस्तुकेप्राप्तहुए जोपुरुष द्वेषकूंप्राप्तहोतानहीं तथा प्राप्तप्रियवस्तुकेवियोगहुए जोपुरुष शोककूंकरतानहीं ॥

तथा जोपुरुष इष्टवस्तुकेसंयोगकी तथा अनिष्टवस्तुकेवियोगकी इच्छाकरतानहीं ॥ अब (सर्वारंभपरित्यागी) इसपूर्वउक्तविशेषणकावर्णनकरेहैं (शुभाशुभ परित्यागीइति) हेअर्जुन सुखकीप्राप्तिकरणेहारे जेशुभकर्महैं ॥ तथादुःखकीप्राप्तिकरणेहारे जेअशुभकर्महैं ॥ तिनदोनोंप्रकारकेकर्मोंका परित्यागकर्याहैजिसनें ॥ ऐसा मैंपरमेश्वरकी भक्तिवाला जोब्रह्मवेत्तापुरुषहै ॥ सोब्रह्मवेत्ताभक्त मैंपरमेश्वरकूं आपणाआत्मारूपहोणेतें अत्यंतप्रियहै इति ॥ १७ ॥ ❀ ॥ किंच ॥

(मू० श्लो०) समःशत्रौचमित्रेचतथामानापमानयोः ॥ शीतोष्णसुखदुःखेषुसमःसंगविवर्जितः ॥ १८ ॥ समः । शत्रौ । च । मित्रे । च । तथा । मानापमानयोः । शीतोष्णसुखदुःखेषु । समः । संगविवर्जितः ॥ १८ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन पुनः जोपुरुष शत्रुविषे तथा मित्रविषे समानहै तथा मानअपमानदोनोंविषे समानहै तथा शीतउष्णसुखदुःखइनसर्वोंविषे समानहै तथासंगतेंरहितहै ॥ १८ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन इसलोकविषे जोप्राणी किसीकाअपकारकरेहै ताकूं शत्रुकहेहै ॥ और जोप्राणी किसीकाउपकारकरेहै ताकूं मित्रकहेहैं ॥ ऐसे अपकारकरणेहारेशत्रुविषे तथाउपकारकरणेहारेमित्रविषे जोपुरुष समहै ॥ अर्थात् आपणे पापपुण्यरूपप्रारब्धकर्मकेवशतेंहीं इसदेहका कोईप्राणी अपकारकर्त्ता शत्रुहोवैहै तथाकोईप्राणी उपकारकर्त्ता मित्रहोवैहै याप्रकारका मनविषेविचारकरिकै जोपुरुष तिसशत्रुविषे तथामित्रविषे समदृष्टिहींहोवैहै ॥ तथा जोपुरुष सुहृद्पुरुषोंनेंकर्येहुए पूजनरूपमानविषे तथादुष्टपुरुषोंनेंकर्येहुए तिरस्काररूपअपमानविषे समहै ॥ अर्थात् तामान अपमानकृत हर्षविषादरूपविकारकूंप्राप्तहोतानहीं ॥ तथा प्रारब्धकर्मकेवशतैंप्राप्तहुए जे शीतउष्ण सुखदुःख इत्यादिकद्वंद्वधर्महैं ॥ तिनशीतउष्णादिकद्वंद्वधर्मोंविषेभी जोपुरुष समानहै ॥ तथा जोपुरुष संगतैंरहितहै ॥ अर्थात् इसलोकविषे चेतनरूपकरिकैप्रसिद्ध तथाअचेतनरूपकरिकैप्रसिद्ध जितनेंकीपदार्थहैं तिनसर्वपदार्थोंके यहपदार्थ अत्यंतरमणीकहै याप्रकारकेशोभनअध्यासतें रहितहै इति ॥ १८ ॥ ❀ ॥ किंच ॥

(मू० श्लो०) तुल्यनिंदास्तुतिर्मौनीसंतुष्टोयेनकेनचित् । अनिकेतःस्थिरमतिर्भक्तिमान्मेप्रियोनरः ॥ १९ ॥ तुल्यनिंदास्तुतिः । मौनी । संतुष्टः । येन । केनचित् । अनिकेतः । स्थिरमतिः । भक्तिमान् । मे । प्रियः । नरः ॥ १९ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन तुल्यहैनिंदास्तुतिजिसकूं तथाजोपुरुष मौनवालाहै तथा जिस किसअन्नवस्त्रादिकोंकरिकै संतुष्टहै तथागृहतेंरहितहै तथास्थिरहैमतिजिसकी ऐसा भक्तिमान् पुरुष मैंपरमेश्वरकूं प्रियहै ॥ १९ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन किसीकेदोषोंका कथनकरणा याकानाम निंदाहै ॥ और किसीकेगुणोंकाकथनकरणा याकानाम स्तुतिहै ॥ ऐसी निंदा तथास्तुति दोनों तुल्यहैंजिसकूं ॥ अर्थात् जैसे अज्ञानीपुरुष आपणीस्तुतिकूंश्रवणकरिकैसुखीहोवैहै तथाआपणीनिंदाकूंश्रवणकरिकैदुःखीहोवैहै ॥ तैसे जोपुरुष आपणीस्तुति निंदाकरिकै सुखदुःखकूंप्राप्तहोतानहीं ॥ तथा जोपुरुष मौनीहै ॥ अर्थात् जिसपुरुषनैं आपणेवाक्इंद्रियकानिरोधकऱ्याहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् आपणेशरीर यात्राकेनिर्वाहवास्तै तिसतत्त्ववेत्तापुरुषकूंभी वाक्इंद्रियकाव्यापार अवश्यकरिकैअपेक्षितहोवैगा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान्कहेहै (संतुष्टोयेनकेनचित्इति) हेअर्जुन आपणेप्रयत्नतैंविनाहीं बलवान् प्रारब्धकर्मनैं प्राप्तकऱ्येजे शरीरकीस्थितिकेहेतुरूप अन्नवस्त्रादिकपदार्थहैं ॥ तिनजिसीकिसीप्रकारकेअन्न वस्त्रादिकपदार्थोंकरिकेहीं जोपुरुष संतुष्टहै ॥ अर्थात् तिसतैंअधिकपदार्थोंकीइच्छातैंरहितहै ॥ तथा जोपुरुष अनिकेतहै ॥ अर्थात् नियमपूर्वक एकस्थानविषे निवासतैंरहितहै ॥ तथा जोपुरुष स्थिरमतिहै ॥ तहां स्थिरहै क्या परमार्थसत्यवस्तुविषयकहै मति क्या बुद्धिकीवृत्ति जिसकी ताकानाम स्थिरमतिहै ॥ इस प्रकारकाजोभक्तिमान्पुरुषहै ॥ सोभक्तिमान्पुरुष मैंपरमेश्वरकूं आपणाआत्मारूपहोणेतैं अत्यंतप्रियहै ॥ तहां शास्त्रविषे निर्गुणब्रह्मकेभक्तिका यहलक्षणकथन कऱ्याहै ॥ तहांश्लोक ॥ (एकांतभक्तिर्गोविंदेयत्सर्वत्रतदीक्षणम् ॥ अहेतुक्यव्यवहितायाभक्तिः पुरुषोत्तमे ॥ लक्षणंभक्तियोगस्यनिर्गुणस्यह्युदाहृतम्) ॥ ॥ अर्थयह ॥ सर्वप्रपंचविषे अस्तिभातिप्रियरूपकरिकै जोपरमात्मादेवकादर्शनहै यहहीं तापरमात्मादेवविषे एकांतभक्तिहै ॥ अर्थात् अनन्यभक्तिहै ॥ और विपरीतभावनाकीनिवृत्तिआदिकप्रयोजनतैंरहित तथाविजातीयवृत्तिकेव्यवधानतैंरहित ऐसी जा ब्रह्मवेत्तापुरुषोंकी प्रत्यक्अभिन्नपरमात्मादेवविषे अखंडाकारवृत्ति रूपभक्तिहै ॥ यहहीं विद्वान्पुरुषोंनैं निर्गुणब्रह्मविषयकभक्तिकास्वरूप कथनकऱ्याहै इति ॥ इसप्रकारकीभक्तिवाला ब्रह्मवेत्तापुरुषहीं ईहां श्रीभगवान्नैं भक्तिमान् इसशब्दकरिकै तथा भक्त इसशब्दकरिकै कथनकऱ्याहै ॥ और ईहां श्रीभगवान्नैं जोपुनःपुनः भक्तिकाकथनकऱ्याहै ॥ सोपरमेश्वरकाअनन्यभक्तिहीं मोक्षकी प्राप्तिविषेपुष्कलकारणहै इसअर्थकेदृढकरावणेवास्तैं कथनकऱ्याहै ॥ यहवार्ता श्रुतिविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ (यस्यदेवेपराभक्तिर्यथादेवेतथागुरौ ॥ तस्यैतेकथिताह्यर्थाःप्रकाशंतेमहात्मनः) ॥ अर्थयह ॥ जिसअधिकारीपुरुषकी परमात्मादेवविषे अनन्यभक्तिहै ॥ तथा जैसे परमात्मादेवविषे अनन्यभक्तिहै तैसेहींब्रह्मवेत्तागुरुविषे अनन्यभक्तिहै ॥ तिस महात्मापुरुषकूंहीं यहवेदकरिकैप्रतिपादितअर्थ प्रकाशमानहोवैहै इति ॥ १९ ॥ ❀ ॥ तहां (अद्वेष्टासर्व भूतानाम्) इत्यादिकश्लोकोंकरिकै निर्गुणअक्षरब्रह्मकेचिंतनकरणेहारे जीवन्मुक्तपरमहंससंन्यासीयोंके लक्षणरूप तथास्वभावतैंहींसिद्ध अद्वेष्टृत्वादिकधर्म कथन कऱ्ये ॥ यहवार्ता वार्तिकग्रंथविषे सुरेश्वराचार्यनैंभी कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ (उत्पन्नात्मावबोधस्यह्यद्वेष्टृत्वादयोगुणाः ॥ अयत्नतोभवंत्येवनतुसाधनरूपिणः)

॥ अर्थयह ॥ जिसपुरुषकूं गुरुशास्त्रकेउपदेशतैं मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारकाआत्मसाक्षात्कार उत्पन्नहुआहै ॥ तिसब्रह्मवेत्तापुरुषके तेभगवत्उक्त अद्वेष्टृत्वादिकगुण विनाहींप्रयत्नतैं स्वभावतैंहींसिद्धहोवैहैं ॥ जैसे मुमुक्षुजनविषे तेअद्वेष्टृत्वादिकगुण प्रयत्नकरिकैसाध्यहोवैहैं तथासाधनरूपहोवैहैं ॥ तैसे ब्रह्मवेत्तापुरुषविषे तेअद्वेष्टृत्वादिकगुण प्रयत्नकरिकैसाध्यहोवैनहीं तथासाधनरूपभीहोवैनहीं इति ॥ यहहीं अद्वेष्टृत्वादिकधर्म पूर्वकथनकऱ्येहुए स्थितप्रज्ञपुरुषके लक्षणरूपकरिकैकथन कऱ्येहैं तेहीं यहअद्वेष्टृत्वादिक प्रयत्नकरिकैसंपादनकऱ्येहुए मुमुक्षुजनके मोक्षकासाधनरूपकहोवैहैं ॥ इसअर्थकूं प्रतिपादनकरताहुआ श्रीभगवान् इसद्वादशे अध्यायकीसमाप्ति करेहै ॥

(मू० श्लो०) येतुधर्मामृतमिदंयथोक्तंपर्युपासते ॥ श्रद्दधानामत्परमाभक्तास्तेतीवमेप्रियाः ॥ २० ॥ इतिश्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सुब्रह्मविद्यायांयोगशास्त्रेश्रीकृष्णार्जुनसंवादेभक्तियोगोनामद्वादशोऽध्यायःसमाप्तः॥ १२ ॥ ये । तु । धर्मामृतम् । इदं । यथा । उक्तं । पर्युपासते । श्रद्दधानाः । मत्परमाः । भक्ताः । ते । अतीव । मे । प्रियाः ॥ २० ॥ (इतिपदच्छेदः)॥ हेअर्जुन पुनः जेमुमुक्षुजन श्रद्धावान्हुए तथामैंपरमेश्वरपरायणहुए इस पूर्व उक्त धर्मरूपअमृतकूं संपादनकरेहैं तेमुमुक्षु भक्तजनभी मैंपरमेश्वरकूं अत्यंत प्रियहैं ॥ २० ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हे अर्जुन पूर्वकथनकऱ्येहुएजीवन्मुक्तपुरुषोंतैंविलक्षणजे मोक्षकीइच्छावान्संन्यासी श्रद्धावान्हुए अर्थात् यहअद्वेष्टृत्वादिकधर्महीं मुक्तिकेसाधनहैं याप्रकारकी विश्वासरूपश्रद्धाकरिकै युक्तहुए ॥ तथा जेमुमुक्षुजन मत्परमहुए अर्थात् मैं अक्षरनिर्गुणब्रह्महींहूं परम क्या प्राप्तहोणेयोग्यनिरतिशय गति जिनोंकूं ऐसेत्परमहुए इसपूर्वउक्त धर्मरूपअमृतकूं संपादनकरेहैं ॥ अर्थात् मोक्षरूपअमृतकेसाधनहोणेतैं अमृतरूप अथवा अमृतकीन्यांई आस्वादनकरणे योग्यहोणेतैं अमृतरूप ऐसेजे (अद्वेष्टासर्वभूतानाम्) इत्यादिकवचनोंकरिकैकथनकऱ्येहुए अद्वेष्टृत्वादिकधर्महैं ॥ तिसधर्मरूपअमृतकूं जेमुमुक्षुजन प्रयत्नतैं संपादन करेहैं ॥ तेभक्तजन अर्थात् मैंनिरुपाधिकब्रह्मकूंभजनकरणेहारेपुरुष मैंपरमेश्वरकूं अत्यंतप्रियहैं ॥ यहश्रीभगवान्कावचन (प्रियोहिज्ञानिनोत्यर्थमहंसचममप्रियः) इसपूर्वउक्तवचनकरिकैसूचनकऱ्येहुएअर्थका उपसंहाररूपहै ॥ यातैं इसश्लोकका यहअर्थसिद्धभया ॥ जिसकारणतैं इस अद्वेष्टृत्वादिकधर्मरूपअमृतकूं श्रद्धाकरिकैसंपादनकरताहुआ यह अधिकारीपुरुष परमेश्वरका अत्यंतप्रियहोवैहै ॥ तिसकारणतैं ज्ञानवान्पुरुषके स्वभावसिद्धहोणेतैं लक्षणरूपहुएभी यह अद्वेष्टृत्वादिकधर्म तत्त्वकेजानणेकीइच्छावान् तथाविष्णुकेपरमपदकेप्राप्तिकीइच्छावान् ऐसेमुमुक्षुजननैं आत्मज्ञानकाउपायरूपकरिकैअत्यंतप्रयत्नतैंसंपादनकरणे इति ॥

यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ पूर्वउक्त सोपाधिकसगुणब्रह्मकेध्यानकीपरिपक्ततातैं अनंतर निरुपाधिकनिर्गुणब्रह्मकाचिंतनकरणेहारा तथाअद्वेष्टृत्वादिकधर्मोंकरिके युक्त तथानिरंतर श्रवणमननिदिध्यासनकूंकरताहुआ ऐसाजो उत्तमअधिकारीपुरुषहै ॥ तिसउत्तमआधिकारीपुरुषकूं वेदांतवाक्योंकेअर्थका तत्वसाक्षात्कार अवश्यकरिकैहोवेहै तिसतत्त्वसाक्षात्कारतैं ताअधिकारीपुरुषकूं अवश्यकरिकै मुक्तिकीप्राप्तिहोवैहै ॥ यातैं मुक्तिकाहेतुरूप जो वेदांतमहावाक्योंकाअर्थहै ॥ तिसअर्थकेअन्वययोग्यजो तत्पदार्थरूप परमेश्वरहै ॥ सोतत्पदार्थरूपपरमेश्वर इनअधिकारीजनोंने अवश्यकरिकै चिंतनकरणा ॥ यहअर्थ उपासनाकाण्डरूप इसमध्यकेषट्ककरिकैसिद्धभया इति ॥ २० ॥ ❁ ॥ इतिश्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यश्रीस्वामिउद्धवानंदगिरिपूज्यपादशिष्येण स्वामिचिद्घनानंदगिरिणा विरचितायां प्राकृतटीकायां गीतागूढार्थदीपिकाख्यायां द्वादशोऽध्यायःसमाप्तः ॥ १२ ॥ उपासनाकांडंद्वितीयंतत्पदार्थप्रतिपादनंसमाप्तम् ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकृष्णायनमः ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥

इति द्वादशोऽध्यायःसमाप्तः ॥ १२ ॥



ॐश्रीगणेशायनमः ॥ ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥ अथ त्रयोदशाऽध्यायप्रारंभः ॥ तहांपूर्व प्रथमअध्याय तैंलैके षष्ठअध्यायपर्यंत प्रथमषट्कविषे त्वंपदार्थकानिरूपणकऱ्या ॥ और सप्तमअध्यायतैंलैके द्वादशेअध्यायपर्यंत द्वितीयषट्कविषे तत्पदार्थकानिरूपणकऱ्या ॥ अब तिन शोधित तत्त्वंपदार्थकाअभेदरूप महावाक्यकेअर्थकूं कथनकरणेहारा तथातत्त्वज्ञानहैप्रधानाजिसविषे ऐसाजो त्रयोदशअध्यायतैंआदिलैकेअष्टादशे अध्यायपर्यंत तृतीयषट्कहै तिसतृतीयषट्ककाआरंभकरेहैं ॥ तहांपूर्व द्वादशेअध्यायविषे (तेषामहंसमुद्धर्त्ता मृत्युसंसारसागराद्भवामि) इसवचनकरिके श्रीभगवान्नैं आपणेविषे अधिकारीजनोंका मृत्युसंसारसागरतैंउद्धारकर्त्तापणा कथनकऱ्याथा ॥ सो आत्मविषयकअज्ञानरूपमृत्युतैं इनअधिकारीजनोंकाउद्धरण आत्माकेज्ञानतैंविना संभवतानहीं ॥ किंतु (तरतिशोकमात्मवित् ॥ तरत्यविद्यांविततांहृदियस्मिन्निवेशिते) इत्यादिकश्रुतिस्मृतिवचन आत्माकेज्ञानतैंहीं अविद्यारूपअज्ञानकीनिवृत्ति कथनकरेहैं ॥ यातैं जिसप्रकारकेआत्मज्ञानकरिकै तिसमृत्युसंसारकीनिवृत्ति होवैहै ॥ तथा जिसतत्त्वज्ञानकरिकैयुक्त अद्वेष्टृत्वादिकगुणोंवालेसंन्यासी पूर्वद्वादशेअध्यायविषेवर्णनकरेथे ॥ सो आत्मतत्त्वज्ञान अबी अवश्यकरिकैकहणेयोग्यहै ॥ और सोतत्वज्ञान अद्वितीयपरमात्माकेसाथि जीवात्माकेअभेदकूंहींविषयकरेहै ॥ काहेतैं जन्ममरणतैंआदिलैकेजितनैंकीअनर्थहैं तिनसर्वअनर्थोंका जीवब्रह्मकाभेदभ्रमहीं कारणहै ॥ तहांश्रुति ॥ (मृत्योःसमृत्युमाप्नोतियइहनानेवपश्यति) ॥ अर्थयह ॥ जोपुरुष इसअद्वितीयब्रह्मविषे द्वैतभावकूंदेखेहै ॥ सोपुरुष वारंवार जन्ममरणकूंप्राप्तहोवैहै इति ॥ ऐसेभेदभ्रमकीनिवृत्ति जीवब्रह्मकेअभेदज्ञानतैंविनाहोवैनहीं ॥ किंतु जीवब्रह्मकेअभेदज्ञानतैंहीं ताभेदभ्रमकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ याकेविषेयहशंकाहोवैहै ॥ मैंसुखीहूं मैंदुःखीहूं मैंकर्ताहूं मैंभोक्ताहूं इसप्रकारकाअनुभव सर्वप्राणीयोंविषेहोवैहै ॥ यातैं यहजीवात्मातौं सुखदुःखादिरूपसंसारवालेहैं ॥ तथा शरीरशरीरविषे भिन्नभिन्नहैं ॥ जोकदाचित् सर्वशरीरोंविषे एकहींआत्माहोवै तौं एकशरीरविषेसुखदुःखकेअनुभवहुए सर्वशरीरोंविषे तासुखदुःखकाअनुभव होणाचाहीये सोहोतानहीं ॥ यातैं शरीरशरीरविषे आत्मा भिन्नभिन्नहै ॥ और परमात्मादेवतौं तासुखदुःखादिरूपसंसारतैंरहितहै तथा एकहै ॥ ऐसेअनेकसंसारीजीवोंका एकअसंसारीपरमात्माकेसाथिअभेद संभवतानहीं ॥ ऐसीशंकाकेप्राप्तहुए ॥ सो सुखदुःखादिरूपसंसार तथाभिन्नपणा अविद्याकल्पितअनात्मवस्तुकेहीं धर्महैं ॥ जीवात्माका संसारीपणा तथाभिन्नपणा धर्महैनहीं याप्रकारकाविवेचन अवश्यकऱ्याचाहीये ॥ तिसविवेचनकेअर्थ देह इंद्रिय अंतःकरण प्राण इत्यादिरूपक्षेत्रोंतैं भिन्नकरिकै क्षेत्रज्ञनामाजीवात्मापुरुष तिनसर्वक्षेत्रोंविषेएकहींहै तथानिर्विकारहै इसअर्थकेप्रतिपादनकरणेवासते इसत्रयोदशेअध्यायविषे क्षेत्रक्षेत्रज्ञका विवेचनकरेहैं ॥ तहांपूर्व सप्तमअध्यायविषे श्रीभग

वान्नें जा भूमिआदिकअष्टप्रकारकीअपरानामाप्रकृति क्षेत्ररूपकरिकैसूचनकरीथी ॥ तथा जीवरूप पराप्रकृति क्षेत्रज्ञरूपकरिकैसूचनकरीथी ॥ तिसीक्षेत्रक्षेत्रज्ञरूप दोनोंप्रकृतियोंकेस्वरूपकूं भिन्नभिन्नकरिकैनिरूपणकरताहुआ श्रीभगवान् अर्जुनकेप्रति कहेहै ॥

(मू० श्लो०) श्रीभगवानुवाच ॥ इदंशरीरंकौंतेयक्षेत्रमित्यभिधीयते ॥ एतद्योवेत्तितंप्राहुःक्षेत्रज्ञमितितद्विदः ॥ १ ॥ इदम् । शरीरम् । कौंतेय । क्षेत्रम् । इति । अभिधीयते । एतत् । यः । वेत्ति । तं । प्राहुः । क्षेत्रज्ञम् । इति । तद्विदः ॥ १ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥

हेअर्जुन यह शरीर क्षेत्र इसनामकरिकै कह्याजावैहै और इसक्षेत्रकूं जो जानेहै तिसकूं क्षेत्रकेजानणेहारेपुरुष क्षेत्रज्ञ इसनामकरिकै कथनकरेहैं ॥ १ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेकौंतेय अर्थात् हेकुंतीमाताकेपुत्रअर्जुन ॥ श्रोत्रादिकइंद्रियोंसहित तथाचतुष्टयअंतःकरणसहित तथापंचप्राणोंसहित जोयह सुखदुःखकेभोगकाआयतनरूप शरीरहै ॥ सोशरीर क्षेत्र इसनामकरिकै कह्याजावैहै ॥ अब क्षेत्रशब्दकाअर्थ निरूपणकरेहैं ॥ तहां अविद्याकरिकै जो आत्मक्षयकरेहै तथाविद्याकरिकै आत्माकूं रक्षणकरेहै ताकानाम क्षेत्रहै ॥ अथवा रागद्वेषादिकदोषोंकरिकैयुक्तपुरुष क्षयकूंप्राप्तहोवै जिसकरिकै ताकानाम क्षेत्रहै ॥ अथवा शमदमादिकसाधनयुक्तपुरुषकूं जन्ममरणादिकअर्थरूपक्षयतैं जोरक्षणकरेहै ताकानाम क्षेत्रहै ॥ अथवासर्वकालविषे दीपशिखाकीन्यांई जोआप क्षयकूं प्राप्तहोता जावैहै ताकानाम क्षेत्रहै ॥ अथवा सुखदुःखादिरूपफलकीउत्पत्तिविषे जो लोकप्रसिद्धभूमिरूपक्षेत्रकीन्यांई आचरणकरेहै ताकानाम क्षेत्रहै इति ॥ ऐसे इसशरीररूपक्षेत्रकूं जो जानेहै ॥ अर्थात् इसशरीररूपक्षेत्रविषे जो अहंममअभिमानकरेहै ॥ तिसकूं क्षेत्रज्ञ इसनामकरिकै कथनकरेहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे कर्षाकरणेहारा कृषीवलपुरुष भूमिरूपक्षेत्रकेफलकाभोक्ताहोवैहै ॥ तैसे यहजीवात्माभी इससंघातरूप क्षेत्रकेसुखदुःखरूपफलका भोक्ताहोवैहै ॥ यातें इसजीवात्माकूं क्षेत्रज्ञ इसनामकरिकै कथनकरेहैं ॥ शंका ॥ हेभगवन् इसजीवात्माकूं क्षेत्रज्ञ इसनामकरिकै कौन कथनकरेहै ॥ ऐसीअर्जुनकी शंकाकेहुए श्रीभगवान् कहेहै (तद्विदः इति) हेअर्जुन यहक्षेत्र असत्जडदुःखरूपहै ॥ और यहक्षेत्रज्ञआत्मा सत्चित्आनंदरूपहै ॥ इसप्रकारतैं इस क्षेत्रक्षेत्रज्ञदोनोंकेभेदकूं जानणेहारे जेविवेकीपुरुषहैं ॥ तेविवेकीपुरुषहीं इसजीवात्माकूं क्षेत्रज्ञइसनामकरिकैकथनकरेहैं इति ॥ इहांकिसीकमूलपुस्तकविषे (श्रीभगवानुवाच ॥ इदंशरीरंकौंतेयक्षेत्रमित्यभिधीयते) इसश्लोकतैंपूर्व अर्जुनकाप्रश्नरूप यहश्लोकहै (अर्जुनउवाच ॥ प्रकृतिंपुरुषंचैवक्षेत्रंक्षेत्रज्ञमेवच ॥ एतद्वेदितुमिच्छामिज्ञानंज्ञेयंचकेशव) अर्थयह ॥ हेकेशव प्रकृतिक्याहै तथापुरुषक्याहै तथाक्षेत्रक्याहै तथाक्षेत्रज्ञक्याहै तथाज्ञानक्याहै तथाज्ञेयक्याहै ॥ इससर्वअर्थके

जानणेकी मैंइच्छाकरताहूं ॥ आपकृपाकरिकै सोसर्वअर्थ हमारेप्रति कथनकरो इति ॥ परंतु यहश्लोक श्रीभाष्यकारोंतैआदिलेके किसीभीटीकाकारनैं ग्रहणक र्‍यानहीं ॥ यातैं यह जान्याजावैहै ॥ यहअर्जुनकेप्रश्नकाश्लोक पश्चात् किसीविद्वान्नैं पायाहै इसीकारणतैं इसत्रयोदशेअध्यायकेप्रारंभविषे यहश्लोक हमनैं लिख्यानहीं इति ॥ १ ॥ ❀ ॥ इसप्रकार देहइंद्रियअंतःकरणादिरूपक्षेत्रतैंविलक्षण स्वप्रकाशक्षेत्रज्ञकूंकथनकरिकै अबतिसक्षेत्रज्ञनामाजीवात्माकाजो असंसारीपरमात्माकेसाथि एकतारूप पारमार्थिकस्वरूपहै तिसस्वरूपकूं श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

(मू॰ श्लो॰) क्षेत्रज्ञंचापिमांविद्धिसर्वक्षेत्रेषुभारत ॥ क्षेत्रक्षेत्रज्ञयोर्ज्ञानंयत्तज्ज्ञानंमतंमम ॥ २ ॥ क्षेत्रज्ञं । च । अपि । मां । वि द्धि । सर्वक्षेत्रेषु । भारत । क्षेत्रक्षेत्रज्ञयोः । ज्ञानं । यत् । तत् । ज्ञानं । मतं । मम ॥ २ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेभारत पुनः सर्वक्षेत्रोंविषेस्थित क्षेत्रज्ञकूं तूं मैंअद्वितीयब्रह्मरूप हीं जान ऐसेक्षेत्रक्षेत्रज्ञदोनोंका जो ज्ञानहै सो ज्ञानहीं मैंपरमेश्वरकूं अभिमतहै ॥ २ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेभारत अर्थात् हेभरतराजाकेवंशविषेउत्पन्नहूआअर्जुन ॥ अथवा आत्माकारवृत्तिकानाम भाहै ॥ ताआत्माकारअखंडवृत्तिविषे जोसर्वदा रमण करेहै अथवा ताअखंडवृत्तिविषे जो सर्वदा प्रीतिवालाहै ताकानाम भारतहै ॥ अर्थात् हेआत्मज्ञानविषेप्रीतिवालाअर्जुन ॥ पूर्वउक्त देहइंद्रियादिसंघातरूप सर्व क्षेत्रोंविषे अधिष्ठानरूपकरिकैस्थित जोएकक्षेत्रज्ञहै ॥ जोक्षेत्रज्ञ स्वप्रकाशचैतन्यरूपहै तथानित्यहै तथाविभुहै तथा अविद्याकरिकैआरोपितहैंकर्तृत्वभोक्तृ त्वादिकधर्म जिसविषे ॥ ऐसेतिसक्षेत्रज्ञकूं तूं अर्जुन तिस अविद्याकल्पितरूपका परित्यागकरिकै मैंपरमेश्वररूप जान ॥ अर्थात् अंतःकरणादिकसर्वउपाधियोंतैं रहित तिसप्रत्यक्आत्मारूपक्षेत्रज्ञकूं तूं असंसारीअद्वितीयब्रह्मानंदरूप जान ॥ तहांश्रुति ॥ (अयमात्माब्रह्म अहंब्रह्मास्मि तत्त्वमसि प्रज्ञानमानंदंब्रह्म ॥) अर्थ यह ॥ यहजीवात्माब्रह्मरूपहै॥ तथा मैंब्रह्मरूपहूं ॥ तथा सोसत्ब्रह्म तूंहैं ॥ तथा यहआनंदरूप प्रज्ञाननामाजीवात्मा ब्रह्मरूपहै इति ॥ हेअर्जुन इसपूर्वउक्त क्षेत्रका तथाक्षेत्रज्ञका जोज्ञानहै ॥ अर्थात् मायाकरिकैकल्पितहोणेतैं यहक्षेत्रतौं रज्जुसर्पकीन्यांई मिथ्यारूपहै ॥ और तिसक्षेत्ररूपभ्रमकाअधिष्ठानहोणेतैं यहक्षेत्रज्ञनामा आत्मा परमार्थसत्यहै ॥ याप्रकारतैं जो तिसक्षेत्रका तथाक्षेत्रज्ञका ज्ञानहै ॥ सोईहींज्ञान मोक्षकासाधनहोणेतैं मैंपरमेश्वरकूं ज्ञानतैंभिन्न दूसरेजितनैंकी लौकि कवैदिकज्ञानहैं तेसर्वज्ञान ताअविद्याके विरोधीहैंनहीं ॥ यातैं तेसर्वज्ञान अज्ञानरूपकरिकैसंमतहै ॥ अर्थात् तिसीज्ञानकूं मैंपरमेश्वर अविद्याकाविरोधी प्रकाश रूप मानताहूं॥इसप्रकारकेज्ञानरूपहींहै इति॥ ईहां किसीटीकाविषेतौं (क्षेत्रज्ञंचापि) इसवचनविषे जो चकारहै॥ताचकारकरिकै पूर्वउक्तक्षेत्रकाभी ग्रहणकर्‍याहै॥

अर्थात् क्षेत्रज्ञरूप तथाक्षेत्ररूप मैंपरमेश्वरकूंहीं तूं जान ॥ तहां क्षेत्रज्ञनामाजीवात्माकी ब्रह्मरूपताविषेतैं पूर्वहीं श्रुतिरूपप्रमाण कथनकऱ्याहै ॥ और क्षेत्रकीब्र ह्मरूपताविषेतैं (ब्रह्मैवेदंसर्वं सर्वंखल्विदंब्रह्म) ॥ इत्यादिकअनेकश्रुतिवचन प्रमाणरूपहैं इति ॥ २ ॥ ❀ ॥ तहां पूर्वदोश्लोकोंकरिकै संक्षेपतैंकथनकऱ्ये हुएअर्थकूं अब विस्तारतैंकहणेवास्तै श्रीभगवान् आरंभकरेहै ॥

(मू० श्लो०) तत्क्षेत्रंयच्चयादृक्चयद्विकारियतश्चयत् ॥ सचयोयत्प्रभावश्चतत्समासेनमेशृणु ॥ ३ ॥ तत् । क्षेत्रं । यत् । च । यादृ क् । च । यद्विकारि । यतः । च । यत् । सः । च । यः । यत्प्रभावः । च । तत् । समासेन । मे । शृणु ॥ ३ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन सोशरीररूप क्षेत्र जिसस्वभाववालाहै तथा जिसइच्छादिकधर्मवालाहै तथा जिसइंद्रियादिकविकारोंवालाहै तथा जिसक्षेत्ररूपका रणतैं जोकार्य उत्पन्नहोवैहै तथा सोक्षेत्रज्ञ जिसस्वभाववालाहै तथा जिसप्रभाववालाहै सोक्षेत्रज्ञकास्वरूप मेरेवचनतैं तूं संक्षेपक रिकै श्रवणकर ॥ ३ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन (इदंशरीरंकौंतेयक्षेत्रमित्यभिधीयते) इसपूर्वउक्तवचनकरिकै कथनकऱ्याजो देह इंद्रिय अंतःकरण इत्यादिक जडवर्गरूपक्षेत्रहै ॥ सोक्षेत्र आपणेस्वरूपकरिकै जिस जड दृश्य परिच्छिन्नआदिकस्वभाववालाहै ॥ तथा सोक्षेत्र जिन इच्छाद्वेषादिक धर्मोंवालाहै ॥ तथा सोक्षेत्र जिन इंद्रियादिकवि कारोंकरिकैयुक्तहै ॥ तथा जिसक्षेत्ररूपकारणतैं जोकार्य उत्पन्नहोवैहै ॥ अथवा (यतश्चयत्) इसवचनका यहदूसराअर्थ करणा ॥ सोक्षेत्रजिसप्रकृतिपुरुषकेसं योगतैं उत्पन्नहोवैहै ॥ तथा जिस स्थावरजंगमादिकभेदकरिकै भिन्नभिन्नहै इति ॥ इतनेंकरिकैक्षेत्रकेस्वरूपका विचारकऱ्या ॥ अब क्षेत्रक्षेत्रज्ञकेस्वरूपका विचार करेहैं (सचइति) हेअर्जुन (एतद्योवेत्तितंप्राहुःक्षेत्रज्ञइतितद्विदः) इसवचनकरिकै पूर्व कथनकऱ्याजो क्षेत्रज्ञहै ॥ सोक्षेत्रज्ञभी आपणेस्वरूपतै जिसस्वप्रकाशचैतन्य आनंदस्वभाववालाहै ॥ तथा उपाधिकृत जिनशक्तिरूपप्रभावोंवालाहै इति ॥ तिनसर्वविशेषणोंकरिकैविशिष्टक्षेत्रकेयथार्थस्वरूपकूं तथाक्षेत्रज्ञकेयथार्थस्वरूपकूंतूं अर्जुन मैंपरमेश्वरकेवचनतैं संक्षेपकरिकै श्रवणकर ॥ अर्थात् तिस क्षेत्रक्षेत्रज्ञकेस्वरूपकूं श्रवणकरिकै तूं निश्चयकर इति ॥ ३ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् पूर्वश्लोकविषे आपनैं यहवचन कह्याथा ॥ तिसक्षेत्रक्षेत्रज्ञकेस्वरूपकूं तूं मेरेवचनतैं संक्षेपकरिकै श्रवणकर इति ॥ सोयहआपका कहणा तबी संभवै ॥ जबी सोक्षेत्रक्षेत्रज्ञकास्वरूप पूर्वकिसीनैं विस्तारतैंकथनकऱ्याहोवै ॥ काहेतैं जोअर्थ पूर्वकिसीनैं विस्तारतैंकथनकरीताहै ॥ सोअर्थहीं पश्चात् संक्षेपकरिकैकथन कऱ्याजावैहै ॥ पूर्व विस्तारतैंनहींकथनकऱ्येहुएअर्थका संक्षेपकरिकैकथन संभवतानहीं ॥ सोइसक्षेत्रक्षेत्रज्ञकास्वरूप पूर्वकिनोंनैं विस्तारकरिकैकथनकऱ्याहै ॥

जिस विस्तारकरिकैकथनकऱ्येहुएअर्थका आप अबी संक्षेपकरिकैकथनकरतेहो ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए ॥ श्रीभगवान् श्रोतापुरुषोंकेबुद्धिविषे तिसक्षेत्रक्षेत्रज्ञकेस्वरूपविषयप्रीतिकेउत्पन्नकरणेवास्तै तिसक्षेत्रक्षेत्रज्ञकेस्वरूपकीस्तुतिकरताहुआ कहेहै ॥

(मू०श्लो०) ऋषिभिर्बहुधागीतंछंदोभिर्विविधैःपृथक् ॥ ब्रह्मसूत्रपदैश्चैवहेतुमद्भिर्विनिश्चितैः ॥ ४ ॥ ऋषिभिः । बहुधा । गीतं । छंदोभिः । वि विधैः । पृथक् । ब्रह्मसूत्रपदैः । च । एव । हेतुमद्भिः । विनिश्चितैः ॥ ४ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन सोक्षेत्रक्षेत्रज्ञकास्वरूप वसिष्ठादिकऋषियोंनैं बहुतप्रकारतैं निरूपणकऱ्याहै तथाबहुतप्रकारके ऋगादिकवेदोंनैंभी भिन्नभिन्नकरिकै कथनकऱ्याहै तथा युक्तियोंवाले तथानिश्चितअर्थवाले ऐसेब्रह्मसूत्रपदोंनैं भी सोस्वरूप बहुतप्रकारतैकथनकऱ्याहै ॥४॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन यहक्षेत्रक्षेत्रज्ञकास्वरूप वसिष्ठादिकऋषियोंनैंभी योगशास्त्रविषे धारणाध्यानकाविषयरूपकरिकै बहुतप्रकारतैं निरूपणकऱ्याहै ॥ इतनैंकहणेकरिकै श्रीभगवान्नैं तास्वरूपविषे योगशास्त्रकरिकैप्रतिपाद्यपणा कथनकऱ्या ॥ तथा विविधछंदोंनैंभी सोस्वरूप पृथक्पृथक्करिकै निरूपणकऱ्याहै ॥ अर्थात् नित्यनैमित्तिककाम्यकर्मादिकोंकूंविषयकरणेहारे जेऋगादिकवेदोंके मंत्रहैं तथाब्राह्मणहैं तिनोंनैंभी भिन्नभिन्नकरिकै सोक्षेत्रक्षेत्रज्ञकास्वरूप निरूपणकऱ्याहै ॥ इतनैंकहणेकरिके श्रीभगवान्नैं तास्वरूपविषे कर्मकांडकरिकैप्रतिपाद्यपणा कथनकऱ्या तथाब्रह्मसूत्रपदोंनैंभी सोक्षेत्रक्षेत्रज्ञकास्वरूप बहुतप्रकारतैं निरूपणकऱ्याहै॥ तहां ब्रह्म इसपदका सूत्र इसपदकेसाथि तथा पद इसपदकेसाथि अन्वयकरणेतैं ब्रह्मसूत्र ब्रह्मपद यहदोप्रकारकेवचन सिद्धहोवैहैं ॥ तहां जिनवाक्योंनैं किंचित् मात्रव्यवधानकरिकैब्रह्मकाप्रतिपादनकरीताहै तिनवाक्योंकानाम ब्रह्मसूत्रहै जैसे (यतोवाइमानिभूतानिजायंते येनजातानिजीवंति यत्प्रयंत्यभिसंविशंतितद्ब्रह्म ॥) अर्थयह ॥ जिसतैं यहसर्वभूत उत्पन्नहोवैहैं ॥ तथा उत्पन्नहुएतेसर्वभूत जिसकरिकै जीवतेहैं ॥ तथा विनाशकूंप्राप्तहुएतेसर्वभूतजिसविषेलयभावकूंप्राप्तहोवैहैं सोईहींब्रह्महै इति ॥ इत्यादिक ब्रह्मकेतटस्थलक्षणकूंप्रतिपादनकरणेहारे जेउपनिषदवाक्यहैं तिनवाक्योंकानाम ब्रह्मसूत्रहै ॥ और जिनवाक्योंनैं साक्षातहीं ताब्रह्मकाप्रतिपादनकरीताहै तिनवाक्योंकानाम ब्रह्मपदहै ॥ जैसे ब्रह्मकेस्वरूपलक्षणकूंप्रतिपादनकरणेहारे (सत्यंज्ञानमनंतंब्रह्म) इत्यादिक उपनिषदवाक्यहैं ॥ ऐसे ब्रह्मसूत्ररूपवाक्योंनैं तथाब्रह्मपदरूपवाक्योंनैंभी सोक्षेत्रक्षेत्रज्ञकास्वरूप बहुतप्रकारतैंनिरूपणकऱ्याहै कैसेहैं तेब्रह्मसूत्रपदरूपवाक्य हेतुमतहैं ॥ अर्थात् इष्टअर्थकेसाधकअनेकयुक्तियोंकेप्रतिपादकहैं ॥ तेयुक्तियांयहहैं ॥ छांदोग्यउपनिषदविषे उद्दालकऋषिनैंश्वेतकेतुपुत्रकेप्रति यहवचनकह्याहै ॥ (सदेवसौम्येदमग्र आसीदेकमेवाद्वितीयम्) ॥ अर्थयह ॥ हेप्रियदर्शन श्वेतकेतु यहदृश्यमानजगत् आपणीउत्पत्तितैंपूर्व सत्रूपहोताभया ॥ सोसत् एकअद्वितीयरूपहोताभया

इति ॥ इसप्रकारकाउपक्रमकरिकै पश्चात् यहवचनकह्याहै ॥ (तद्धैकआहुरसदेवेदमग्रआसीदेकमेवाद्वितीयंतस्मादसतःसदजायत) ॥ अर्थयह ॥ केईकवादीतौं ऐसेकेहैं ॥ यहदृश्यमानजगत् आपणीउत्पत्तितैंपूर्व असत्होताभया ॥ सोअसत् एकअद्वितीयरूपहोताभया ॥ तिसअसत्कारणतैं यहसत्कार्य उत्पन्नहोताभया इति ॥ इसवचनकरिके नास्तिकोंकेमतकाकथनकरिकै तिसतैं अनंतर सोउद्दालकऋषि याप्रकारकावचन कहताभया ॥ (कुतस्तुखलुसौम्यैवंस्यादितिहोवाचक थमसतःसज्जायेत) ॥ अर्थयह ॥ हेप्रियदर्शन श्वेतकेतु यहनास्तिकोंकाकहणा कैसेसंभवैंगा ॥ किंतु नहींसंभवैंगा ॥ जिसकारणतैं असत्कारणतैं सत्कार्यकी उत्पत्ति कदाचित्भी होंतीनहीं ॥ जोकदाचित् असत्तैंभी सत्कीउत्पत्तिहोतीहोवै ॥ तौं असत्वंध्यापुत्रतैंभी सत्पुत्रकीउत्पत्तिहोणीचहीये ॥ और होती नहीं ॥ इत्यादिकअनेकप्रकारकीयुक्तियोंकूंप्रतिपादनकरणेहारे तेब्रह्मसूत्रपदरूपवचनहैं ॥ पुनःकैसेहैंतेब्रह्मसूत्रपदरूपवचन ॥ विनिश्चितहैं ॥ अर्थात् उपक्रम उपसंहारवाक्योंकीएकवाक्यताकरिकै संशयतैंरहितअर्थकेप्रतिपादकहैं ॥ इसप्रकारकेब्रह्मसूत्रपदरूपवाक्योंनैंभी सोक्षेत्रक्षेत्रज्ञकास्वरूप बहुतप्रकारतैं निरूपण कऱ्याहै ॥ इतनैंकहणेकरिकै श्रीभगवान्नैं तिसक्षेत्रक्षेत्रज्ञकेस्वरूपाविषे ज्ञानकांडकरिकैप्रतिपाद्यपणा निरूपणकऱ्या॥ इसप्रकार पूर्व वसिष्ठादिकऋषियोंनैं तथाऋगा दिकवेदोंकेमंत्रोंनैं तथाब्रह्मसूत्रपदोंनैं अत्यंतविस्तारतैंकथनकऱ्याजो क्षेत्रक्षेत्रज्ञका यथार्थस्वरूपहै ॥ तिसीस्वरूपकूं मैंकृष्णभगवान् तैंअर्जुनकेतांई संक्षेपकरिकै कथनकरताहूं ॥ तिसकूं तूं श्रवणकर इति ॥ अथवा (ब्रह्मसूत्रपदैः) इसवचनविषे ब्रह्मसूत्रहोवैं तेहींपदहोवैं याप्रकारका कर्मधारयसमास अंगीकारकरणा ॥ तहां (आत्मेत्येवोपासीत) ॥ अर्थयह ॥ यहअधिकारीपुरुष सर्वत्रव्यापकआत्मामैंहूं याप्रकारकाचिंतनकरे ॥ इत्यादिकवाक्यतौं विद्यासूत्र कहेजावैंहैं ॥ और (नसवेदयथापशुः) ॥ अर्थयह ॥ आपणेआत्मातैं देवताकूंभिन्नमानिकै जोपुरुष तादेवताकीउपासनाकरेहै ॥ सोभेददर्शीपुरुष पशुकीन्यांई किंचित्मात्रभी जानतानहीं ॥ इत्यादिकवचनतौं अविद्यासूत्रकहेजावैंहैं इति ॥ और किसीटीकाविषेतौं (ब्रह्मसूत्रपदैः) इसवचनकरिकै (जन्माद्यस्ययतः) इत्या दिकवेदांतसूत्रोंकाग्रहणकऱ्याहैंइति ॥ ४ ॥ ❀ ॥ इसप्रकार क्षेत्रक्षेत्रज्ञकेस्वरूपजानणेविषे अर्जुनकीरुचि उत्पन्नकरिकै अब श्रीभगवान् तिस अर्जुनकेतांई दोश्लोककरिकैं प्रथम क्षेत्रकास्वरूप कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) महाभूतान्यहंकारोबुद्धिरव्यक्तमेवच ॥ इंद्रियाणिदशैकंचपंचचेंद्रियगोचराः ॥ ५ ॥ इच्छाद्वेषःसुखंदुःखंसंघात श्चेतनाधृतिः ॥ एतत्क्षेत्रंसमासेनसविकारमुदाहृतम् ॥ ६ ॥ महाभूतानि । अहंकारः । बुद्धिः । अव्यक्तम् । एव । च । इंद्रियाणि । दश । एकं । च । पंच । च । इंद्रियगोचराः ॥ इच्छा । द्वेषः । सुखं । दुःखं । संघातः । चेतना । धृतिः । एतत् । क्षेत्रं । समासेन ।

सविकारम् । उदाहृतम् ॥ ६ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन पंचमहाभूत अहंकार बुद्धि तथा अव्यक्त तथादश श्रोत्रादिकइंद्रिय तथा एकमन तथा श्रोत्रादिकइंद्रियोंकेविषयशब्दादिकपंच तथा इच्छा द्वेष सुख दुःख संघात चेतना धृति यह सर्व विकारसहित संक्षेपकरिके क्षेत्ररूप कहेहैं ॥ ६ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन पृथिवी जल तेज वायु आकाश यह जे पंचमहाभूतहै ॥ तथा तिनपंचमहाभूतोंकाकारणरूप जोअभिमानलक्षण अहंकारहै ॥ तथा तिसअहंकारका कारणरूप जोअध्यवसायलक्षण महत्तत्त्वनामाबुद्धिहै ॥ तथा तिसमहत्तत्त्वनामाबुद्धिकाकारणरूप तथासत्त्वरजतमगुणात्मक ऐसाजो प्रधानरूप अव्यक्त है ॥ जोअव्यक्त सर्वकाकारणरूपहींहै ॥ किसीकाभी कार्यरूपहैनहीं ॥ यह महाभूतोंतैं आदिलैकेअव्यक्तपर्यंत अष्टप्रकारकीप्रकृति कहीजावैहै ॥ यहअर्थ सांख्यमतकेअनुसार कथनकऱ्या ॥ अब वेदांतमतकेअनुसारअर्थकरेहैं ॥ तहां अव्यक्तशब्दकरिकैतौं अनिर्वचनीय अव्याकृतका ग्रहणकरणा जिसअव्याकृतकूं (ममममायादुरत्यया) इसवचनकरिकै श्रीभगवान्नैं मायानामा परमेश्वरकीशक्तिरूप कथनकऱ्याहै ॥ और बुद्धिशब्दकरिकैतौं सृष्टिकेआदिकालविषे स्रष्टव्यप्रपंचविषयक मायाकावृत्तिरूप ईक्षणका ग्रहणकरणा ॥ और अहंकारशब्दकरिकैतौ तिसईक्षणतैंअनंतरभावी तामायाकावृत्तिरूप बहुतहोणेकेसंकल्पका ग्रहणकरणा ॥ तिससंकल्पतैंअनंतर आकाशादिकक्रमकरिकै पंचमहाभूतोंकी उत्पत्ति ग्रहणकरणी इति ॥ और सांख्यशास्त्रकरिकैसिद्धजे अव्यक्त महत्तत्व अहंकार यहतीन तत्त्वहैं तेतीनों वेदांतसिद्धांतविषे अंगीकारकरेनहीं ॥ उलटा (ईक्षतेर्नाशब्दम्) इत्यादिकसूत्रोंकेव्याख्यानविषे श्रीभाष्यकारोंनैं तेसांख्यशास्त्रकल्पितप्रधानादिकपदार्थ बहुतविस्तारतैंखंडनकरयेहैं तहां (मायांतुप्रकृतिंविद्यान्मायिनंतुमहेश्वरम् ॥ तेध्यानयोगानुगताअपश्यन्देवात्मशक्तिंस्वगुणैर्निगूढाम्) ॥ इसश्रुतिकरिकैप्रतिपादन करीजा मायानामा परमेश्वरकीशक्तिहै ॥ सामायाशक्तिहीं ईहां श्रीभगवान्नैं अव्यक्तशब्दकरिकैकथनकरीहै ॥ और (तदैक्षत) इसश्रुतिनैं कथनकऱ्याजोस्रष्टव्यजगतविषयक मायाकावृत्तिरूपईक्षणहै॥सोईक्षणहीं ईहां श्रीभगवान्नैं बुद्धिशब्दकरिकै कथनकऱ्याहै॥और ॥ (बहुस्यांप्रजायेय) ॥ इसश्रुतिनैं कथनकऱ्याजो तामायाकावृत्तिरूप बहुतहोणेकासंकल्पहै ॥ सोपरमेश्वरकासंकल्पहीं ईहां श्रीभगवान्नैं अहंकारशब्दकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ तिसतैंअनंतर (तस्माद्वाएतस्मादात्मनआकाशःसंभूत आकाशाद्वायुर्वायोरग्निरग्नेरापःअद्भ्यःपृथिवी) इसश्रुतिनैं यथाक्रमतैं आकाशादिकपंचमहाभूतोंकी उत्पत्ति कथनकरीहै॥ इत्यादिकश्रुतिप्रमाणकरिकैसिद्ध यह वेदांतपक्षहीं श्रेष्ठहै इति ॥ और श्रोत्र त्वक् चक्षु रसन घ्राण यहजेपंचज्ञानइंद्रियहैं ॥ तथा वाक् पाणि पाद पायु उपस्थ यहजे पंच कर्मइंद्रियहैं यहदोनोंमिलिके दशइंद्रियहोवैहैं ॥ तथासंकल्पविकल्परूप जोएकमनहैं ॥ तथा तिनश्रोत्रादिकदशइंद्रियोंके जेशब्द स्पर्श रूप रस गंध यह पंचविषयहैं ॥ तहां श्रोत्र

दिकपंचज्ञानइंद्रियोंकेतो यहशब्दादिकपंच ज्ञाप्यत्वरूपकरिकैविषयहैं और वाकादिकपंचकर्मइंद्रियोंकेतौं तेशब्दादिकपंच कार्यत्वरूपकरिकैविषयहैं ॥ तहां पूर्व कथनकरीहुई अष्टप्रकारकी प्रकृति पंचज्ञानइंद्रिय पंचकर्मइंद्रिय पंचविषय एकमन इनसर्वोंकूं सांख्यशास्त्रवाले चौवीसतत्व कहेहैं इति ॥ और सुखविषे तथासुख केसाधनोंविषे यहसुख हमारेंकूंप्राप्तहोवै तथायहसुखकेसाधन हमारेंकूंप्राप्तहोवैं याप्रकारकी स्पृहारूप जा चित्तकीवृत्तिविशेषहै जिसकूं शास्त्रविषे कामभीकहेहैं तथारागभी कहेहैं ताकानाम इच्छाहै॥ और दुःखविषे तथादुःखकेसाधनोंविषे यहदुःख हमारेंकूं मतप्राप्तहोवै तथादुःखकेसाधन हमारेंकूं मतप्राप्तहोवैं याप्रकारकी जा पूर्वउक्त स्पृहाका विरोधी चित्तकीवृत्तिविशेषहै जिसकूंशास्त्रविषे क्रोधभीकहेहैं तथाईर्ष्याभीकहेहै ताकानाम द्वेषहै ॥ और निरुपाधिकइच्छाकाविषयभूत तथाधर्महैअसाधारणकारणजिसका तथापरमात्मसुखकाअभिव्यंजक ऐसीजा चित्तकीवृत्ति विशेषहै ताकानाम सुखहै ॥ और निरुपाधिकद्वेषकाविषयभूत तथा अधर्महैअसाधारणकारण जिसका ऐसीजा चित्तकीवृत्तिविशेषहै ताकानाम दुःखहै॥ औरपंचमहाभूतोंकापरिणामरूप ऐसाजोइंद्रियोंसहितशरीरहै ताकानम संघातहै॥ और स्वरूपज्ञानकाअभिव्यंजक तथाप्रमाणहैअसाधारणकारणजिसका ऐसीजा प्रमाज्ञाननामा चित्तकी वृत्तिविशेषहैताकानाम चेतनाहै ॥ और व्याकुलताकूंप्राप्तहुए देहइंद्रियोंकेस्थितकरणेकाहेतुरूप जोप्रयत्नहै ताकानाम धृतिहै ॥ ईहां इच्छादिकोंकाग्रहण अंतःकरणकेसर्वधर्मोका उपलक्षणहै ॥ तेअंतःकरणकेधर्म श्रुतिविषेयह कहेहैं ॥तहांश्रुति ॥ (कामःसंकल्पोविचिकित्साश्रद्धाऽश्रद्धाधृतिरधृतिर्ह्रीर्धीर्भीरित्येतत्सर्वंमनएव) ॥ अर्थयह ॥ इच्छासंकल्प संशय श्रद्धा अश्रद्धा धृति अधृति लज्जा वृत्तिज्ञान भय यहसर्व मनरूपहींहैं इति॥ यहश्रुतिवचन मृद्घटः इसवचनकीन्यांई मनरूपउपादानकारणकेसाथि कामादिककार्योंका अभेदकथनकरिकै तिनकामा दिककार्योंविषेमनकाधर्मपणा कथनकरेहै ॥ इसप्रकार पंचमहाभूतोंतैं आदिलैके धृतिपर्यंत पूर्वकथनकऱ्येहुए जितनैंकी जडपदार्थ हैं ॥ तेसर्वजडपदार्थ क्षेत्रज्ञना मासाक्षीकरिकैभास्यमानहोणेतैं तिसक्षेत्रज्ञसाक्षीतैंभिन्नहैं ॥ ऐसेयहसर्वजडपदार्थ हमनैं संक्षेपकरिकै क्षेत्र इसनामकरिकैकथनकऱ्येहैं ॥ तथा तेक्षेत्ररूपसर्वपदार्थ भास्यअचेतनरूपहीहैं ॥ शंका ॥ हेभगवन् शरीरइंद्रियोंकासंघातहीं चेतनरूपहोणेतैं क्षेत्रज्ञहै ॥ इसप्रकार लोकायतिक मानेहैं ॥ और चेतन रूपक्षणिक विज्ञान हीं आत्माहै ॥ इसप्रकार सुगत मानेहैं ॥ और इच्छा द्वेष प्रयत्न सुख दुःख ज्ञान यहसर्व आत्माकेलिंगहैं इसप्रकार नैयायिकमानेहैं ॥ यातैं पंचमहाभूतोंतैंआ दिलैकेधृतिपर्यंत यहसर्व क्षेत्ररूपहैं यहआपकाकहणा कैसेसंभवैगा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् ताक्षेत्रकेलक्षणकूं कहेहै (सविकारमिति) तहां जन्मतैंआदिलैकेविनाशपर्यंत जोपरिणाम ताकानाम विकारहै ॥ तिसविकारसहितजोहोवै ताकानाम सविकारहै ॥ अर्थात् उत्पत्तिनाशादिकविकारोंवालेका नाम सविकारहै ॥ तहां पंचमहाभूतोंतैंआदिलैकेधृतिपर्यंत जेपदार्थ पूर्वकथनकऱ्येहै ॥ तेसर्वपदार्थ सविकाररूपहैं ॥ यातैं तेसर्वपदार्थ तिसविकारकेसाक्षी

होइसकैनहीं ॥ काहेतै आपणाउत्पत्तिविनाश आपणेकरिकैदेख्याजातानहीं ॥ और ताउत्पत्तिनाशतैंभिन्न दूसरेभी जितनैंकी आपणेधर्महै ॥ तिनधर्मोंकाभी आपणेदर्शनतैंविना दर्शन संभवतानहीं ॥ जिसकारणतै धर्मीकेदर्शनतैं अनंतरहीं ताकेधर्मोंकादर्शनहोवैहैं ॥ तहांजोकदाचित् आपणेकरिकैहीं आपणादर्शन मानिये ॥ तौं तादर्शनरूपक्रियाका कर्त्तापणा तथाकर्मपणा आपणेविषेप्राप्त होवैंगा ॥ सो एकहींवस्तुविषे एकहींकालविषे एकहींक्रियाका कर्त्तापणा तथाकर्मपणा अत्यंतविरुद्धहै ॥ यातैं सविकारवस्तु ताउत्पत्तिनाशादिकविकारका साक्षीहोइसकैनहीं ॥ किंतु निर्विकारवस्तुहीं तिनसर्वविकारोंकासाक्षी सिद्ध होवैहै ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ विकारीपणाहीं तिसक्षेत्रकाचिन्हहै ॥ अर्थात् जिसजिसपदार्थविषे सोविकारीपणाहै ॥ सोसोपदार्थ क्षेत्ररूपहीं जानणा ॥ कोई नामलैकेपरिगणन ताक्षेत्रकाचिन्हहैनहीं इति ॥ ५ ॥ ६ ॥ ❀ ॥ इसप्रकारक्षेत्रकेस्वरूपकाप्रतिपादनकरिकै तिसक्षेत्रज्ञकूं क्षेत्रतैंभिन्नकरिकै विस्तारतैं प्रतिपादनकरणेवासतै तिसक्षेत्रज्ञकेज्ञानकीयोग्यताअर्थ श्रीभगवान् प्रथम अमानित्वादिकवीससाधनोंकूं पंचश्लोकोंकरिकै कथनकरैहैं ॥

(मू० श्लो०) अमानित्वमदंभित्वमहिंसाक्षांतिरार्जवम् ॥ आचार्योपासनंशौचंस्थैर्यमात्मविनिग्रहः ॥ ७ ॥ अमानित्वम् । अदम्भित्वम् । अहिंसा । क्षांतिः । आर्जवम् । आचार्योपासनम् । शौचम् । स्थैर्यम् । आत्मविनिग्रहः ॥ ७ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन अमानिपणा अदंभिपणा अहिंसा क्षांति आर्जव आचार्यकीउपासना शौच स्थैर्य आत्माकानिग्रह यहसर्व ज्ञानकेसाधन होणेतैं ज्ञानरूपहैं ॥ ७ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ तहां जेगुण आपणेविषेविद्यमानहैं तथाजेगुण आपणेविषेनहींविद्यमानहैं ॥ ऐसे विद्यमानगुणोंकरिकै तथाअविद्यमानगुणोंकरिकै जाआपणीस्तुतिहै ताकानाम मानीपणाहै ॥ तामानीपणेतैं जोरहितहोणाहै ताकानाम अमानित्वहै ॥ १ ॥ और लाभपूजाख्यातिकेवासतै जो लोकोंकेआगे आपणेधर्मोंकाप्रगट करणाहै ताकानाम दंभीपणाहै ॥ तादंभीपणेतैं जो रहितहोणाहै ताकानाम अदंभित्वहै ॥ २ ॥ और शरीरमनवाणीकरिकै जो प्राणीयोंकापीडनहै ताकानाम हिंसाहै ॥ ताहिंसातैं जो रहितहोणाहै ताकानाम अहिंसाहै ॥ ३ ॥ और चित्तकेक्रोधादिकविकारोंका कारणरूप जो दुष्टपुरुषोंकृत अपराधहै ताअपराधकेप्राप्त हुएभी जो निर्विकारचित्तपणेकरिकै तिसअपराधका सहनकरणाहै ताकानाम क्षांति है ॥ ४ ॥ और जैसाआपणेहृदयविषेहोवै तैसाहीबाह्यव्यवहारकरणा याप्रकारकाजो अकुटिलपणाहै ताकानाम आर्जवहै ॥ अर्थात् अन्यप्राणीयोंकीवंचनाकरणेतैंरहितहोणेकानाम आर्जवहै ॥ ५ ॥ और ब्रह्मविद्याकाउपदेश करणेहाराजो आचार्यहै ॥ तिसआचार्यका जोश्रद्धाभक्तिपूर्वक पूजननमस्कारादिकोंकरिकैसेवनहै ताकानाम आचार्योपासनहै ॥ ६ ॥ और शुद्धिकानाम

शौचहै ॥ सोशौच दोप्रकारकाहोवैहै ॥ एकतौंबाह्यशौचहोवैहै ॥ और दूसरा अंतरशौचहोवैहै ॥ तहां जलमृत्तिकाकरिकै शरीरकेमलोंका जोप्रक्षालनहै ताकानाम बाह्यशौचहै ॥ और विषयोंविषेदोषदर्शनरूप विरोधीवासनावोंकरिकै मनके रागद्वेषादिकमलोंकी जोनिवृत्तिकरणीहै ताकानाम अंतरशौचहै ॥ ७ ॥ और मोक्षकेसाधनोंविषे प्रवृत्तहुएपुरुषकूं अनेकप्रकारकेविघ्नोंकेप्राप्तहुएभी तिसउद्यमका नपरित्यागकरिकै जो पुनःपुनः प्रयत्नकीअधिकताहै ताकानाम स्थैर्यहै ॥ ॥ ८ ॥ और देहइंद्रियोंकासंघातरूपआत्माका मोक्षतैंप्रतिकूलविषे स्वभावतैंप्राप्तप्रवृत्तिकूं निरुद्धकरिकै जो मोक्षकेसाधनोंविषेहीं व्यवस्थापनहैं ताकानाम आत्मविनिग्रहहै ॥ ९ ॥ यहअमानित्वादिकसर्व ज्ञानकेसाधनहोणेतैं ज्ञानरूपकहेहैं ॥ इसप्रकारतैं इसश्लोकका तथावक्ष्यमाणश्लोकोंका एकादशेश्लोकके (एतज्ज्ञानमितिप्रोक्तम्) इसवचनकेसाथि अन्वयकरणा इति ॥ ७ ॥ ❁ ॥ किंच ॥

(मू॰श्लोक) इंद्रियार्थेषुवैराग्यमनहंकारएवच ॥ जन्ममृत्युजराव्याधिदुःखदोषानुदर्शनम् ॥८॥ इंद्रियार्थेषु । वैराग्यम् । अनहंकारः । एव । च । जन्ममृत्युजराव्याधिदुःखदोषानुदर्शनम् ॥ ८ ॥ (इतिप॰) ॥ हेअर्जुन श्रोत्रादिकइंद्रियोंकेशब्दादिकविषयोंविषे जोवैराग्यहै तथा अहंकारतैंजोरहितपणाहै तथा जन्म मृत्यु व्याधि दुःख दोष इनसर्वोंकाजोपुनः पुनःदर्शनहै ॥ ८ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन श्रोत्रादिकइंद्रियोंकेशब्दादिकविषयोंविषे अथवा इसलोकके तथापरलोकके विषयभोगोंविषे रागकीविरोधी जा अस्पृहारूप चित्तकीवृत्तिविशेषहै ताकानाम वैराग्यहै ॥ १० ॥ और लोकाविषे आपणीस्तुतिके अभावहुएभी मनविषेप्रगटहुआ जो मैंसर्वतैंउत्कृष्टहूं याप्रकारकागर्वहै ताकानाम अहंकारहै॥ ताअहंकारकाजो अभावहै ताकानाम अनहंकारहै ॥ ११ ॥ और माताकेउदरविषे नवमासपर्यंतनिवासकरिकै योनिद्वारा जोबाह्य निकसणाहै ताकानाम जन्म है ॥ और प्राणोंकेउत्क्रमणकालविषे सर्वमर्मस्थानोंकाजोछेदनहै ताकानाम मृत्युहै ॥ और जिसअवस्थाविषे बुद्धिकीमंदता तथासर्वअंगोंकीशिथिलता तथास्वजनादिकृतपरिभव इत्यादिकदोष प्राप्त होवैहैं ताअवस्थाकानाम जराहै ॥ और ज्वरअतीसारआदिकरोगोंकानाम व्याधिहै ॥ और अध्यात्म अधिभूत अधिदैव यहतीनोंउपद्रवहैंनिमित्त जिसविषे ऐसाजो इष्टवस्तुकेवियोगजन्य तथाअनिष्टवस्तुकेसंयोगजन्य चित्तकापरितापरूप परिणामविशेषहै ताकानाम दुःखहै ॥ और वात पित्त श्लेष्म मल मूत्र इत्यादिकोंकरिकैपरिपूर्ण होणेतैं जो इसशरीरविषेनिंदितपणाहै ताकानाम दोषहै ॥ ऐसे जन्मका तथामृत्युका तथाजराका तथाव्याधियोंका तथादुःखोंका तथादोषका जोअनुदर्शनहै ॥ अर्थात् पुनःपुनः विचारकरिकैदेखणाहै ॥ अथवा जन्म मृत्यु जरा व्याधि दुःख इनपांचोंविषे दोषका पुनः

पुनः दर्शनहै ॥ अथवा जन्म मृत्यु जरा व्याधि इनच्यारोंविषे दुःखरूपदोषका जोपुनःपुनः दर्शनहै ॥ अथवा जन्म मृत्यु जरा व्याधि इनच्यारोंविषे दुःखका तथादोषका जो पुनःपुनः दर्शनहै ॥ तहां जन्मविषेतौं माताकेउदरविषे नवमासपर्यंत अत्यंतसंकुचितहोइकैस्थितहोणा ॥ तथा माताकेमलविषेस्थितकृमियोंकरि केदंशनहोणा ॥ तथा माताकेजठराग्निकरिकेदाहहोणा ॥ तथा जरायुचर्मकरिकेवेष्टितहोणा तथा जन्मकालविषे प्रसववायुकरिकेआकर्षणहोणा ॥ तथा अत्यंत अल्पयोनियंत्रतैंनिकसणा ॥ तथा मलमूत्रविषेस्थितहोणा इसतैंआदिलेके अनेकप्रकारकेदुःख तथादोषताजन्मविषेहैं ॥ और मृत्यूविषेतौं सर्वनाडीयोंका आकर्षण होणा तथा मर्मस्थानोंकाछेदनहोणा ॥ तथा प्राणोंकाआकुंचनहोणा ॥ तथा ऊर्ध्वश्वासहोणे ॥ तथा अत्यंतव्यथाकरिकै मलमूत्रादिकोंकाबाह्य निकसणा ॥ इसतैंआदिलेके अनेकप्रकारकेदुःख तथादोष तामृत्युविषेहै ॥ और जराअवस्थाविषेतौं सर्वअंगोंकीशिथिलताहोणी ॥ तथा श्रोत्रादिकइंद्रियोंकी मंदताहोणी ॥ तथा शरीरविषेकंपादिकहोणे ॥ तथाकासश्वासहोणा ॥ तथा उठतेहुए नीचैपडिजाणा ॥ तथा आपणेस्वजनोंकरिकैनिरादरकूंप्राप्तहोणा ॥ तथा शरीरकेद्वारोंतें मलमूत्रलाला आदिकोंकाप्राप्तहोणा ॥ इसतैंआदिलेके अनेकप्रकारकेदुःख तथादोष ताजराअवस्थाविषेहैं ॥ और ज्वरादिकव्याधियोंविषे तौं शरीरविषेदुर्बलताहोणी ॥ तथा शीतज्वरादिकोंकेवेगकरिकै परितापादिकहोणे ॥ तथा अत्यंतकटुकषायऔषधोंकापानकरणा ॥ तथा देहविषेदुर्गंधहोणा ॥ तथा स्वेदादिकोंकानिकसणा ॥ इसतैंआदिलेके अनेकप्रकारकेदुःख तथादोष तिनव्याधियोंविषेहै ॥ तेजन्ममरणादिकोंकेदुःख तथादोष आत्मपुराणकेप्रथमअध्या यविषे विस्तारतैंकथनकरिआयेहैं ॥ यातैं ईहां संक्षेपतैंकथनकऱ्येहैं ॥ याप्रकारकेदुःखदोषोंकादर्शन विषयोंतैंवैराग्यकाहेतुहोणेतैं आत्मज्ञानविषे उपकारकरेहै ॥ यातैं इनअधिकारीजनोंनैंसोदुःखदोषोंकादर्शन अवश्यकरिकैसंपादनकरणा ॥ १२ ॥ इति ॥ ८ ॥ ❀ ॥ किंच ॥

(मू० श्लो०) असक्तिरनभिष्वंगःपुत्रदारगृहादिषु ॥ नित्यंचसमचित्तत्वमिष्टानिष्टोपपत्तिषु ॥ ९ ॥ असक्तिः । अनभिष्वंगः । पुत्रदारगृहादिषु । नित्यं । च । समचित्तत्वम् । इष्टानिष्टोपपत्तिषु ॥ ९ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन पुत्रस्त्रीगृहादिकपदार्थोंविषे सक्तितैंरहितहोणा तथा अभिष्वंगतैंरहितहोणा तथा इष्टअनिष्टकी प्राप्तिविषे सर्वदा समचित्तरहणा ॥ ९ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन यहपदार्थ हमारेहैं इतनैंअभिमानमात्रकरिकै जो तिनपदार्थोंविषेप्रीतिहै ॥ ताकानाम सक्तिहै ॥ तिससक्तितैंरहितकानाम असक्तिहै ॥ १३ ॥ और यहपदार्थ मैंहींहूं याप्रकारकीअभेदभावनाकरिकै जो तिनपदार्थोंविषेप्रीतिकीअतिशयताहै ॥ अर्थात् तिनपदार्थोंकेसुखीदुःखीहुए मैंहीं सुखीदुःखीहोवूंहूं याप्रकारका जोअत्यंतअभिनिवेशहै ताकानाम अभिष्वंगहै ॥ ताअभिष्वंगतैंरहितहोणेकानाम अनभिष्वंगहै ॥ १४ ॥ शंका ॥ हेभगवन् सक्ति अभिष्वंग यह

दोनों किनपदार्थोंविषे परित्यागकरणेयोग्यहैं ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहेहै (पुत्रदारगृहादिषुइति) हेअर्जुन पुत्रोंविषे तथास्त्रीयोंविषे तथागृहों विषे सा सक्ति तथाअभिष्वंग परित्यागकरणेयोग्यहै ॥ ईहां (पुत्रदारगृहादिषु) इसवचनविषेस्थितजो आदिशब्दहै ॥ ताआदिशब्दकरिकै इनोंतैंभिन्न दूसरेभी जितनैंकीस्नेहकेविषय धन भृत्य आदिकपदार्थहैं तिनसर्वोंकाग्रहणकरणा ॥ अर्थात् स्नेहकेविषयसर्वपदार्थोविषे सक्तितैंरहितहोणा तथाअभिष्वंगतैंरहितहोणा ॥ और इष्टअनिष्टकीप्राप्तिविषे सर्वदा समचित्तहोणा॥ अर्थात् प्रियपदार्थोंकीप्राप्तिविषेतौं हर्षकूं नहींकरणा॥ और अप्रियपदार्थोंकीप्राप्तिविषे विषादकूं नहींकरणा॥ इसीकानाम समचित्तपणाहै ॥ १५ ॥ इति ॥ ९ ॥ ❀ ॥ किंच ॥

(मू० श्लो०) मयिचानन्ययोगेनभक्तिरव्यभिचारिणी ॥ विविक्तदेशसेवित्वमरतिर्जनसंसदि ॥ १० ॥ मयि । च । अनन्ययोगेन । भक्तिः । अव्यभिचारिणी । विविक्तदेशसेवित्वम् । अरतिः । जनसंसदि ॥ १० ॥ (इतिपदच्छेदः)॥ हेअर्जुन अनन्ययोगकरिकै अव्यभिचारिणी ऐसीजा मैंपरमेश्वराविषे भक्तिहै तथा एकांतदेशकासेवनहै तथा विषयीजनोंकीसभाविषे जाअप्रीतिहै ॥ १० ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥हेअर्जुन मैंभगवान्वासुदेवपमेश्वरविषे जाभक्तिहै॥अर्थात् यहपरमेश्वर सर्वतैंउत्कृष्टहै याप्रकारके सर्वतैंउत्कृष्टताज्ञानपूर्वक जा मेरेविषे निरतिशयप्रीतिहै ॥ कैसीहोवैसाभक्ति ॥ अनन्ययोगकरिकैअव्यभिचारिणीहोवै ॥ तहां इसभगवान्वासुदेवतैंपरे दूसराकोईहैनहीं यातैं सोभगवान्वासुदेवहीं हमारीगतिहै याप्रकारका जोनिश्चयहै ताकानाम अनन्ययोगहै ॥ ऐसेअनन्ययोगकरिकै जाभक्ति अव्यभिचारिणीहै ॥ अर्थात् किसीभीप्रतिकूलहेतुनैं निवृत्तकरणेकूंअशक्यहै ॥ ऐसी भक्तिभी ज्ञानकाहीहेतुहै ॥ यहवार्त्ता अन्यशास्त्रविषेभी कथनकरीहै ॥ (प्रीतिर्नयावन्मयिवासुदेवेनमुच्यतेदेहयोगेनतावत्) ॥ अर्थयह ॥ इसअधिकारीपुरुषकी जबपर्यंत मैंभगवान्वासुदेवविषे निरतिशयप्रीतिनहींहै ॥ तबपर्यंत यह अधिकारीपुरुष देहकेसंबंधतैंरहितहोवैनहीं इति ॥ १६ ॥ और विविक्तदेशकासेवित्वजोहै ॥ तहां जोदेश स्वभावतैंहीशुद्धहोवै ॥ अथवा संस्कारोंकरिकैशुद्धकर्‍याहोवै ॥ तथा अशुचिसर्पव्याघ्रादिकोंतैंरहितहोवै ॥ तथा चित्तकीप्रसन्नता करणेहाराहोवै ॥ तादेशकानाम विविक्तदेशहै ॥ ऐसा नदीतीर पर्वतकीगुहा आदिकजोदेशहै ॥ ऐसेविविक्तदेशकेसेवनकरणेकाजोस्वभावहै ताकानाम विविक्त देशसेवित्वहै ॥ १७ ॥ और आत्मज्ञानतैंविमुख तथाविषयभोगलंपटताका उपदेशकरणेहारे ऐसेजे विषयीबहिर्मुखजनहैं ॥ तिनविषयीजनोंकीजासभाहै जासभा तत्त्वज्ञानका अत्यंतप्रतिकूलहै ॥ ताविषयीपुरुषोंकीसभाविषे जो अरतिहै अर्थात् तासभाविषे जो नहींरमणकरणाहै ॥ १८ ॥ और तत्त्वज्ञानकेअनुकूल

ऐसीजा महात्माजनोंकीसभाहै ॥ तिससभाविषेतौं इसअधिकारीजननैं अवश्यकरिकैप्रीतिकरणी ॥ यहवार्त्ता अन्यशास्त्रविषैंभी कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ (संगःसर्वात्मनाहेयःसचेत्त्यक्तुंनशक्यते ॥ ससद्भिःसहकर्त्तव्यःसतांसंगोहिभेषजम्) ॥ अर्थयह ॥ इसअधिकारीजननैं सर्वप्रकारकरिकै संगकापरित्यागकरणा ॥ और जोकदाचित् सर्वप्रकारतैं तासंगकापरित्याग नहींकीयाजावै ॥ तौंभी इसअधिकारीजननैं विषयीबहिर्मुखपुरुषोंकासंग कदाचित्भी नहींकरणा ॥ किंतु महात्माजनोंकेसाथि सोसंगकरणा ॥ जिसकारणतैं सोमहात्माजनोंकासंग इससंसाररूपरोगकेनिवृत्तकरणेका भेषजहै इति ॥ १० ॥ ❀ ॥ किंच ॥

(मू० श्लो०) अध्यात्मज्ञाननित्यत्वंतत्त्वज्ञानार्थदर्शनम् ॥ एतज्ज्ञानमितिप्रोक्तमज्ञानंयदतोऽन्यथा ॥ ११ ॥ अध्यात्मज्ञाननित्यत्वम् । तत्त्वज्ञानार्थदर्शनम् । एतत् । ज्ञानम् । इति । प्रोक्तम् । अज्ञानम् । यत् । अतः । अन्यथा ॥ ११ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥

हेअर्जुन अध्यात्मज्ञानविषेजानिष्ठाहै तथातत्त्वज्ञानकेप्रयोजनकाजोदर्शनहै यहअमानित्वादिकसर्व ज्ञान इसनामकरिकै कथनकरेहैं इनोंतें विपरीत जेमानित्वादिकहैं तेसर्व अज्ञानरूपहींहैं ॥ ११ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन आत्माकूंआश्रयणकरिकै प्रवृत्तहुआजो आत्मअनात्मविवेकज्ञानहै ताकानाम अध्यात्मज्ञानहै ॥ तिसअध्यात्मज्ञानविषेहीं जाअत्यंत निष्ठाहै ताकानाम अध्यात्मज्ञाननित्यत्वहै ॥ जिसकारणतैं तिसविवेकविषेनिष्ठावान्पुरुषहीं महावाक्यार्थज्ञानविषे समर्थहोवैहै ॥ इसकारणतैं इसअधिकारी पुरुषनैं तिसअध्यात्मज्ञानविषेनिष्ठा अवश्यकरिकैकरणी ॥ १९ ॥ और तत्त्वज्ञानकेअर्थका जोदर्शनहै ॥ तहां (अहंब्रह्मास्मि तत्त्वमसि) इत्यादिकवेदांतवाक्यहैं कारणजिसके तथाअमानित्वादिकसर्वसाधनोंकेपरिपाककाफलरूप ऐसाजो मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारकासाक्षात्कारहै ताकानाम तत्त्वज्ञानहै ॥ ऐसेतत्त्वज्ञानकाजो अर्थहै अर्थात् अविद्यादिकसर्वअनर्थोंकीनिवृत्तिरूप तथापरमानंदकीप्राप्तिरूप जोमोक्षरूपप्रयोजनहै ॥ तिसतत्त्वज्ञानकेमोक्षरूपअर्थका जोदर्शनहै ॥ अर्थात् पुनःपुनःविचारकरिकैदेखणाहै ताकानाम तत्त्वज्ञानार्थदर्शनहै ॥ २० ॥ ऐसातत्त्वज्ञानार्थदर्शनभी इसअधिकारीपुरुषकूं अवश्यकरिकैंकर्त्तव्यहै ॥ काहेतै तिसतत्त्वज्ञानके फलकेदर्शनहुएतैंअनंतरहीं तिसकेसाधनोंविषेप्रवृत्तहोवैहै ॥ फलकेज्ञानतैंविना तिसकेसाधनोंविषेप्रवृत्तिहोवैनहीं ॥ इसप्रकार अमानित्वतैंआदिलेके तत्त्वज्ञानार्थदर्शनपर्यंत कथनकऱ्येजेवीस २० साधनहैं ॥ तेवीससाधन आत्मज्ञानकीप्राप्तिकेहेतुरूपहोणेतैं ज्ञान इसनामकरिकैकथनकऱ्येहैं ॥ इनअमानित्वादिकसाधनोतैं विपरीत जेमानित्व दंभित्व हिंसा अक्षांति अनार्जव इत्यादिकहैं ॥ तेमानित्वादिक आत्मज्ञानकेविरोधीहोणेतैं अज्ञान इसनामकरिकैकथनकऱ्येहैं ॥ यातैं इन अधिकारीपुरुषोंनैं तिनअज्ञाननामा मानित्वदंभित्वादिकोंकापरित्यागकरिकै तेज्ञाननामा अमानित्वअदंभित्वादिकवीससाधन अवश्यकरिकैसंपादनकरणे

इति ॥ ११ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् अमानित्वतैंआदिलैकेतत्त्वज्ञानार्थदर्शनपर्यंत पूर्वकथनकन्येजे ज्ञाननामा वीससाधनहैं ॥ तिनसाधनोंकरिकै कौंनवस्तु जानणेयोग्यहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए ॥ श्रीभगवान् षट्श्लोकोंकरिकै तिसज्ञेयवस्तुकानिरूपणकरेंहै ॥

(मू० श्लो०) ज्ञेयंयत्तत्प्रवक्ष्यामियज्ज्ञात्वामृतमश्नुते ॥ अनादिमत्परंब्रह्मनसत्तन्नासदुच्यते॥१२॥ ज्ञेयं। यत्। तत्। प्रवक्ष्यामि। यत्। ज्ञात्वा। अमृतम्। अश्नुते। अनादिमत्। परं। ब्रह्म। न। सत्। तत्। न। असत्। उच्यते॥१२॥ (इतिपदच्छेदः) ॥

हेअर्जुन मुमुक्षुजननैं जोवस्तु जानणेंयोग्यहै सोज्ञेयवस्तु मैं तुमारेतांई कथनकरताहूं जिसज्ञेयवस्तुकूं जानिकै यहमुमुक्षु अमृतभावकूं प्राप्तहोवैहै सोज्ञेयवस्तु अनादिमत् परं ब्रह्म है सोब्रह्म नहींतौं सत् कह्याजावैहै तथा नहीं असत् कह्याजावैहै ॥ १२ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन इसमुमुक्षुजननैं पूर्वउक्त अमानित्वादिकसाधनोंकरिकै जोवस्तु जानणेयोग्यहै॥सोज्ञेयवस्तुमैं भगवान् तैंअर्जुनकेतांई स्पष्टकरिकै कथनकरताहूं ॥ अव श्रीभगवान् ताश्रोताअर्जुनकूं तिसज्ञेयवस्तुकेअभिमुखकरणेवासतै उत्तमफलकरिकै ताज्ञेयवस्तुकीस्तुतिकरेंहै (यज्ज्ञात्वामृतमश्नुतेइति) हेअर्जुन जिसवक्ष्यमाणज्ञेयवस्तुकूं जानिकरिकै यहअधिकारीपुरुष अमृतभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ अर्थात् इसअनर्थरूपसंसारतैं मुक्तहोवै ॥ शंका ॥ हेभगवन् जिसज्ञेयवस्तु कूंजानिकै यहअधिकारीपुरुष मुक्तहोवैहै ॥ सोज्ञेयवस्तु कैसाहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाके हुए श्रीभगवान् ताज्ञेयवस्तुकास्वरूप कथनकरेंहै (परंब्रह्मइति) हेअर्जुन परं कहीये अतिशयतातैंरहित तथा ब्रह्मकहीये देशकालवस्तुपरिच्छेदतैंरहित ऐसाजो परमात्मादेवहै सोपरमात्मादेवहीं ज्ञेयरूपहै ॥ अर्थात् इसमुमुक्षुजननै पूर्वउक्तसाधनोंकरिकैजानणेयोग्यहै ॥ कैसाहैसोपरब्रह्म अनादिमत्है ॥ तहां कारणकानाम आदिहै ॥ अथवा उत्पत्तिकानाम आदिहै ॥ सोआदि जिसवस्तुका होवै ॥ तावस्तुकानाम आदिमत्है ॥ ऐसेआदिमत् देहादिकपदार्थहैं ॥ तिन आदिमत्पदार्थोंतैं जो विलक्षणहोवै ॥ अर्थात् कारणतैं तथाउत्पत्तितैं रहितहोवै ॥ ताकानाम अनादिमत्है ॥ अर्थात् सर्वविकारोंतैंविलक्षणवस्तुकानाम अनादिमत्है ॥ और किसीटीकाविषेतौं (अनादिमत्परम्) यहएकहींपद अंगीकारकरिकै यहअर्थकन्याहै ॥ तहां कार्यकानाम आदिमत्है ॥ और कारणकानाम पर है॥ताकार्यकारणदोनोंतैं जोअन्यहोवै ताकानाम अनादिमत्परहै ॥ और अन्यकिसी टीकाविषेतौं (अनादि मत्परम्) याप्रकारके दोपद अंगीकारकरिकै यहअर्थकन्याहै ॥ तहां सोब्रह्मअनादिहै अर्थात् उत्पत्तितैं रहितहै ॥ तथा सोब्रह्म मत्परहै अर्थात् मैंसगुणब्रह्मतैंपर निर्विशेषरूपहै इति ॥ और अन्यकिसीटीकाविषेतौं (मत्परम्) इसपदका यह अर्थकन्याहै ॥ मैंभगवान्वासुदेवहूं पराशक्ति जिसकी ता

कानाम मत्परहै ॥ सोयहव्याख्यान समीचीननहींहै ॥ काहेतैं जिसज्ञेयवस्तुकूंजानिके यहअधिकारीपुरुष अमृतभावकूंप्राप्तहोवैहै ॥ सोज्ञेयवस्तु मैं तुमारेप्रति कथ नकरताहूं ॥ यापकारकावचन श्रीभगवान्नैं पूर्वकथनकर्याहै ॥ सामोक्षकीप्राप्ति निर्विशेषशुद्धब्रह्मकेज्ञानतैंहींहोवैहै ॥ शक्तिवाले सविशेषब्रह्मकेज्ञानतैं सा मोक्षकीप्राप्ति होवैनहीं ॥ यातैं ईहां श्रीभगवान्नैं निर्विशेषब्रह्महीं कथनकर्याहै ॥ ऐसेनिर्विशेषब्रह्मविषे शक्तिमत्त्वकहणा असंगतहै इति ॥ अब श्रीभगवान् ता ज्ञेयब्रह्मकीनिर्विशेषताकूं कथनकरेहै (नसत्तन्नासदुच्यतेइति) तहां जोवस्तु अस्ति इसप्रकारतैं विधिमुखकरिकैप्रमाणकाविषयहोवैहै ॥ सोवस्तु सत् इसनाम करिकैकह्याजावैहै ॥ और जोवस्तु नास्ति इसप्रकारतैं निषेधमुखकरिकै प्रमाणकाविषयहोवैहै ॥ सोवस्तु असत् इसनामकरिकै कह्याजावैहै ॥ और सोज्ञेयब्रह्म तौ निर्विशेषहै तथास्वप्रकाशचैतन्यस्वरूपहै ॥ यातैं सोब्रह्म सत् असत् दोनोंतैंविलक्षणहोणेतैं सत्भी नहींकह्याजावै तथाअसत्भी नहींकह्याजावैहै ॥ तहांश्रुति (यतोवाचोनिवर्त्ततेअप्राप्यमनसासह) ॥ अर्थयह ॥ मनसहितवाणी जिसनिर्गुणब्रह्मकूंप्राप्तिहोइकै जिसनिर्गुणब्रह्मकूंनप्राप्तहोइकै जिसनिर्गुणब्रह्मतैंनिवृत्तहोईजावैहै इति ॥ हेअर्जुन जिसकारणतैं सोज्ञेयब्रह्म सत्नहींहै अर्थात् भावत्वधर्मकाआश्रयनहींहै ॥ तथा असत्नहींहै अर्थात् अभावत्वधर्मकाआश्रयनहींहै ॥ इसकारणतैंसोज्ञेय ब्रह्म किसीभीशब्दनैं शक्तिरूपमुख्यवृत्तिकरिकै कथननहींकरता ॥ तात्पर्ययह ॥ जाति गुण क्रिया संबंध यहच्यारो शब्दकीप्रवृत्तिकेहेतुहोवैहैं ॥ जैसे गौ अश्व इत्यादिकश ब्दतौं गोत्व अश्वत्व इत्यादिकजातियोंकूंलेके आपणेआपणेअर्थविषेप्रवृत्तहोवैहैं ॥ और शुक्ल कृष्ण इत्यादिकशब्दतौं शुक्लनील इत्यादिकगुणोंकूंलेके आपणेआपणे अर्थविषेप्रवृत्तहोवैहैं ॥ और पाचक पाठक इत्यादिकशब्दतौं पाक पाठ इत्यादिकक्रियावोंकूंलेके आपणेआपणेअर्थविषेप्रवृत्तहोवैहैं ॥ और धनी गोमान् इत्यादि कशब्दतौं स्वस्वामीभावआदिकसंबंधोंकूंलेके आपणेआपणेअर्थविषेप्रवृत्तहोवैहैं ॥ ईहां गुण क्रिया संबंध इनतीनोंतैंभिन्न जितनैंकी जातीरूपधर्महैं तथाउपाधि रूपधर्महैं तेसर्वधर्म जातिशब्दकरिकैग्रहणकरणे ॥ तहां (नसत्तन्नासदुच्यते) इसवचनकरिकै श्रीभगवान्नैं तिसज्ञेयब्रह्मविषे जातिकानिषेध कथनकर्याहै ॥ सोजातिकानिषेध गुण क्रिया संबंध इनतीनोंकेनिषेधकाभी उपलक्षणहै ॥ अर्थात् तिसज्ञेयब्रह्मविषे जाति गुण क्रिया संबंध यहच्यारोनहींहै ॥ तहां ॥ (एकमेवा द्वितीयम्) ॥ यहश्रुति ॥ तिसब्रह्मकूं एकअद्वितीयरूपकहतीहुई ताब्रह्मविषे जातिकानिषेधकरेहै ॥ काहेतैं अनेकव्यक्तियोंविषेरहणेहाराजोएकधर्महै ताकूं जातिकहेहैं ॥ जैसे अनेकगौव्यक्तियोंविषेरहणेहारा जो एकगोत्वधर्महै ताकूं जातिकहेहैं ॥ ऐसीजाति एकअद्वितीयब्रह्मविषे संभवतीनहीं ॥ और (निर्गुणंनिष्क्रियंशांतम्) यह श्रुति यथाक्रमतैं तिसब्रह्मविषे गुण क्रिया संबंध इनतीनोंकानिषेधकरेहै ॥ तहां निर्गुणम् इसपदकरिकैतौं गुणोंकानिषेधकरेहै और निष्क्रियम् इसपदकरिकै क्रियाकानिषेधकरेहै ॥ और शांतम् इसपदकरिकै संबंधकानिषेधकरेहै ॥ और (असंगोह्ययंपुरुषःअथात आदेशोनेतिनेति) ॥ यहदोनोंश्रुतियांतौं तिसज्ञेयब्रह्मविषे

सर्वप्रपंचमात्रकानिषेधकरेहैं ॥ ऐसा जातिआदिकसर्वधर्मोंतैंरहितसोनिर्गुणब्रह्म किसीभीशब्दनैं कथनकरीतानहीं इति ॥ शंका ॥ हेभगवन् सोनिर्गुणब्रह्म जोकदाचित् किसीभीशब्दकरिकै नहींकथनकऱ्याजावैहै ॥ तौं (ज्ञेयंयत्तत्प्रवक्ष्यामि) अर्थयह जोज्ञेयवस्तुहै तिसकूं मैंतुमारेप्रति कथनकरताहूं ॥ यहआपकावचन कैसेसंगतहोवैंगा ॥ तथा ॥ (शास्त्रयोनित्वात्) अर्थयह उपनिषदरूपवेदांतशास्त्रहै योनि क्या प्रमाण जिसविषे ऐसासोब्रह्महै ॥ यहव्यासभगवान्कासूत्रभीकैसे संगतहोवैंगा ॥ समाधान ॥ हेअर्जुन तिसनिर्गुणब्रह्मकूं उपनिषदरूपशास्त्र जो प्रतिपादनकरेहै ॥ सो शक्तिरूपमुख्यवृत्तिकरिकै प्रतिपादनकरतानहीं ॥ किंतु यथाकथंचित् लक्षणावृत्तिकरिकै सोशब्द तिसनिर्गुणब्रह्मकूं प्रतिपादनकरेहै ॥ सोप्रतिपादनकरणेकाप्रकारतौं द्वितीयअध्यायविषे (आश्चर्यवत्पश्यतिकश्चिदेनम्) इसश्लोकविषे विस्तारतैंकथनकरि आयेहैं ॥ यातैं तिसज्ञेयब्रह्मविषे शब्दकीप्रवृत्तिकेनिषेधकरणेहारे (नसत्तन्नासदुच्यते) इसवचनकेसाथि (ज्ञेयंयत्तत्प्रवक्ष्यामि) इसहमारेवचनका तथा (शास्त्रयोनित्वात्) इससूत्रवचनका विरोधहोवैनहीं इति ॥ और किसीटीकाविषेतौं (नसत्तन्नासदुच्यते) इसवचनका यहअर्थकऱ्याहै॥ सोज्ञेयब्रह्म प्रधानपरमाणुआदिकोंकीन्यांई सत् इसनामकरिकै कह्याजावैनहीं ॥ तथा शून्यकीन्यांई असत् इसनामकरिकैभी कह्याजावैनहीं ॥ तहांश्रुति ॥ (नासदासीन्नोसदासीत्तदानींनासीद्रजोनो व्योमापरोयदिति) ॥ अर्थयह ॥ इससृष्टितैंपूर्व शून्यभीनहींहोताभया ॥ तथा त्रिगुणात्मकप्रधानभी नहींहोताभया ॥ तथा परमाणुभी नहींहोतेभये ॥ तथा अव्यक्तभीनहींहोताभया इति ॥ १२ ॥ ❀ ॥ तहां पूर्वश्लोकविषे (नसत्उच्यते) इसवचनकरिकै तिस निरुपाधिकशुद्धब्रह्मविषे सत्शब्दकी तथातासत्शब्दजन्यज्ञानकी अविषयता कथनकरी ॥ ताकहणेकरिकै यहशंकाप्राप्तहुई ॥ तिसज्ञेयब्रह्मकूं जोकदाचित् सत्शब्दका तथातासत्शब्दजन्यज्ञानकाअविषयमानौंगे ॥ तौंसोब्रह्म वंध्यापुत्रशशशृंगकीन्यांई असत्हींहोवैंगा इति ॥ इसप्रकारकीशंकाकूं श्रीभगवान् (नासदुच्यते) इसवचनकरिकै सामान्यतैं निवृत्तकरताभया ॥ अब तिसीअसत्पणेकीशंकाकूं विस्तारतैंनिवृत्तकरणेवासतैं श्रीभगवान्सर्वप्राणीयोंकेश्रोत्रादिककरणरूपउपाधिद्वारा चेतनक्षेत्रज्ञरूपताकरिकै तिसज्ञेयब्रह्मकेअस्तित्वपणेकूं प्रतिपादनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) सर्वतःपाणिपादंतत्सर्वतोऽक्षिशिरोमुखम् ॥ सर्वतःश्रुतिमल्लोकेसर्वमावृत्यतिष्ठति ॥ १३ ॥ सर्वतःपाणिपादं । तत् । सर्वतोऽक्षिशिरोमुखम् । सर्वतःश्रुतिमत् । लोके । सर्वम् । आवृत्य । तिष्ठति ॥ १३ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन सोज्ञेयब्रह्मकैसाहै सर्वदेहोंविषेहैंहस्तपादजिसके तथासर्वदेहोंविषेहैंनेत्राशिरमुखाजिसके तथासर्वदेहोंविषे श्रवणइंद्रियवालाहै तथासर्वप्राणीयोंकेशरीर विषेसर्वअचेतनवर्गकूं व्याप्यकरिकै स्थितहै ॥ १३ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन पूर्वहमनैं कथनकरयाजो ज्ञेयब्रह्महै ॥ सोज्ञेयब्रह्म कैसाहै ॥ सर्वतःपाणिपादहै ॥ तहां सर्वदेहोंविषेस्थित जे अचेतनरूप पाणिहैं तथा पादहैं ॥ तेअचेतनरूप सर्वपाणिपाद आपणेआपणेव्यापारविषे प्रवृत्तकरीतेहैं जिसचेतनरूपक्षेत्रज्ञाननैं ॥ ताचेतनकानाम सर्वतःपाणिपादहै ॥ तहां लोकविषे जितनीकी अचेतनपदार्थोंकी प्रवृत्तियांहैं ॥ तेसर्वप्रवृत्तियां चेतनरूपअधिष्ठानपूर्वकहींहोवैहैं ॥ चेतनरूपअधिष्ठानतैंविना जडपदार्थोंकीप्रवृत्तिकहांभीदेखणेविषे आवतीनहीं ॥ जैसे रथादिकजडपदार्थोंकीप्रवृत्ति चेतनपुरुषपूर्वकहींहोवैहै ॥ तैसे हस्तपादादिकसर्वजडपदार्थोंकीप्रवृत्तियांभी चेतनब्रह्मपूर्वकहींहोवैहैं ॥ ऐसे हस्तपादादिकसर्वजडवर्गकेप्रवर्त्तक चेतनक्षेत्रज्ञरूपब्रह्मविषे नास्तिपणेकीशंका कदाचित्भी संभवतीनहीं इति ॥ याप्रकारकीयुक्ति (सर्वतोऽक्षिशिरोमुखम्) इत्यादिकसर्वपर्यायोंविषे जानिलेणी ॥ ईहां पाणिपाद इनदोइंद्रियोंकाग्रहण वाकादिकसर्वकर्मइंद्रियोंका उपलक्षणहै ॥ पुनः कैसाहैसोज्ञेयब्रह्म सर्वतोक्षिशिरो मुखहै ॥ तहां सर्वदेहोंविषेस्थित जितनैंकी अक्षिहैं तथाशिरहैं तथामुखहैं ॥ तेसर्व अक्षिशिरमुख आपणेआपणेव्यापारविषे प्रवृत्तकरीतेहैं जिसचैतन्यनैं ताकानाम सर्वतोक्षिशिरोमुखहै ॥ पुनः कैसाहैसोपरब्रह्म सर्वतःश्रुतिमत्है ॥ तहां सर्वदेहोंविषेस्थित जितनैंकी श्रवणइंद्रियहैं ॥ तेसर्वश्रवणइंद्रिय आपणे आपणे व्यापारविषे प्रवृत्तकरीतेहैं जिसचैतन्यनैं ताकानाम सर्वतःश्रुतिमत्है ॥ ईहां आक्षि श्रोत्र इनदोनोंइंद्रियोंकाग्रहण सर्वज्ञानइंद्रियोंका तथामनबुद्धिआदिकोंका उपलक्षणहै ॥ पुनःकैसाहै सोपरब्रह्म ॥ सर्वदेहोंविषे सोएकहीं नित्यविभुचेतन सर्वजडवर्गकूं अध्यासिकसंबंधकरिकै आपणेसत्तास्फूर्त्तिरूपतैंव्याप्यकरिकै स्थितहुआहै अर्थात् निर्विकारस्थितिकूंहीं प्राप्तहुआहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे रज्जुरूपअधिष्ठान आपणेविषेकल्पित सर्पादिकोंके गुणकरिकै तथादोषकरिकै लिपायमानहोवैनहीं ॥ तैसे आपणेविषे अध्यस्तजडप्रपंचके दोषकरिकै तथागुणकारिकै सोचेतन देवलेशमात्रतैंभी बंधायमानहोवैनहीं इति ॥ तहां सर्वदेहोंविषे एकहींचेतनहै सोचेतन नित्यहै तथाविभूहै ॥ देहदेहविषे भिन्नभिन्नचेतनहैनहीं ॥ यहसर्ववार्त्ता पूर्वविस्तारतैंप्रतिपादनकरिआयेहैं ॥ तहां इसश्लोककरिकै श्रीभगवान्नैं यहदोअनुमान सूचनकरे ॥ श्रोत्रादिकपंचज्ञानइंद्रिय तथावाकादिकपंचकर्मइंद्रिय तथामनबुद्धिआदिक चतुष्टयअंतःकरण यहसर्व चेतनशक्तिनिमित्त कस्वस्वव्यापारवालेहैं स्वभावतैंजडहोणेतैं चर्ममयअथवाकाष्ठमयप्रतिमादिकोंकीन्यांई इति ॥ तथा देहइंद्रियादिकसर्व स्वभावतैंजडहैं दूसरेचेतनअधिष्ठाताकी बुद्धिपूर्वकप्रवृत्तिवालेहोणेतैं रथादिकोंकीन्यांई इति ॥ इसप्रकारतैं सर्वप्राणीयोंकेदेहइंद्रियादिकउपाधियोंकरिकै तिसज्ञेयब्रह्मका अस्तिपणानिश्चयकन्याजावैहै इति ॥ १३ ॥ ❀ ॥ तहां ॥ (अध्यारोपापवादाभ्यांनिःप्रपंचंप्रपंच्यते ॥) अर्थयह ॥ शुद्धब्रह्मविषे प्रथमइससर्वप्रपंचका अध्यारोपकरिकै तिसतैंअनंतर तिससर्वप्रपंचका निषेधरूपअपवादकरिकै सोशुद्धब्रह्म श्रुति भगवतीनैं तथाब्रह्मवेत्तापुरुषोंनैं अधिकारीशिष्योंकेप्रति आत्मारूपकरिकै प्रतिपादनकरीताहैइति ॥

इसवृद्धपुरुषोंकेन्यायकूंअनुसरणकरिकै तिसज्ञेयब्रह्मविषे सर्वप्रपंचकाअध्यारोपकरिकै (अनादिमत्परंब्रह्म) इसपूर्वउक्तवचनका पूर्वलेश्लोकविषे व्याख्यानकऱ्या॥ अब तिसअध्यारोपितसर्वप्रपंचका अपवादकरिकै (नसत्तन्नासदुच्यते) इसपूर्वउक्तवचनकेव्याख्यानकरणेअर्थ श्रीभगवान् आरंभकरेहै ॥ अधिकारीजनोंकेप्रति निरुपाधिकस्वरूपकेजनावणेवासतै ॥

(मू० श्लो०) सर्वेंद्रियगुणाभासंसर्वेंद्रियविवर्जितम् ॥ असक्तंसर्वभृच्चैवनिर्गुणंगुणभोक्तृच ॥ १४ ॥ सर्वेंद्रियगुणाभासम् । सर्वेंद्रियविवर्जितम् । असक्तम् । सर्वभृत् । च । एव । निर्गुणम् । गुणभोक्तृ । च ॥ १४ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन सोज्ञेयब्रह्म सर्वइंद्रियोंतैंरहितहै तथा सर्वइंद्रियोंकेव्यापारकरिकैभासमानहै तथासर्वसंबंधतैंरहितहै तथा सर्वकेधारणकरणेहारा हीहै तथासत्त्वादिकगुणोंतैंरहितहै तथा तिनसत्त्वादिकगुणोंकाभोक्ताहै ॥ १४ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन सोज्ञेयपरब्रह्म परमार्थतैंतौं श्रोत्रादिकसर्वइंद्रियोंतैंरहितहै ॥ तथा आपणीमायाकरिकै सर्वइंद्रियोंकेगुणोंकरिकैभासमानहै ॥ तहां बाह्यकरणरूप जेश्रोत्रवाकादिकदशइंद्रियहैं ॥ तथा अंतःकरणरूपजोमनबुद्धिहैं ॥ तिनसर्वइंद्रियोंकेजेगुणहैं ॥ अर्थात् श्रवण वचन संकल्प निश्चय इत्यादिकजेव्यापारहैं ॥ तिनसर्वइंद्रियोंकेगुणोंकरिकै सोज्ञेयब्रह्म भासमानहोवैहै ॥ अर्थात् सोपरब्रह्म तिनसर्वइंद्रियोंकेव्यापारकरिकै व्यापारवालेकीन्यांई प्रतीतहोवैहै ॥ ॥ तहांश्रुति ॥ (ध्यायतीवलेलायतीव) ॥ अर्थयह ॥ बुद्धिआदिकउपाधियोंकेसंबंधतैं यहआत्मादेव ध्यानकरताकीन्यांई तथाचलायमानहुएकीन्यांई प्रतीतहोवैहै इति ॥ इसश्रुतिविषे ध्यायति इसशब्दकरिकै कथनकऱ्याजोध्यानहै सोध्यान सर्वज्ञानइंद्रियोंकेव्यापारोंका उपलक्षणहै ॥ और लेलायति इसशब्दकरिकै कथनकऱ्याजो चलनरूपलेलायनहै ॥ सोलेलायन सर्वकर्मइंद्रियोंकेव्यापारोंका उपलक्षणहै ॥ अर्थात् तिनइंद्रियोंकेतादात्म्य अध्यासतैं यहआत्मादेव मैं देखताहूं मैं श्रवणकरताहूं मैंबोलताहूं मैं चलताहूं इसप्रकारतैं तिसतिसइंद्रियकेव्यापारविशिष्टहुआ प्रतीतहोवैहै ॥ और वास्तवतैं तिनसर्वइंद्रियोंतैंरहितहै ॥ तहांश्रुति ॥ (पश्यत्यचक्षुःसशृणोत्यकर्णः । अपाणिपादोजवनोग्रहीता) ॥ अर्थयह ॥ यहआत्मादेव वास्तवतैं चक्षुतैंरहितहुआभी देखैहै ॥ तथा वास्तवतैं श्रोत्रइंद्रियतैंरहितहुआभी शब्दकूंश्रवणकरेहैं ॥ तथा वास्तवतैं हस्तइंद्रियतैंरहितहुआभी वस्तुकूंग्रहणकरेहै ॥ तथा वास्तवतैं पादइंद्रियतैंरहितहुआभी शीघ्रगमनवालाहै ॥ इति ॥ पुनःकैसाहैसोपरब्रह्म ॥ परमार्थतैंतौं सर्वसंबंधोंतैंरहितहै ॥ तहांश्रुति ॥ असंगोह्ययंपुरुषः । असंगोनहिसज्जते) ॥ अर्थयह ॥ यहपरमात्मापुरुष सर्वसंगतैंरहितहोणेतैं असंगहै ॥ तथा यहअसंगआत्मादेव किसीभीपदार्थकेसाथि संबंधकूंप्राप्तहोवैनहीं इति ॥ इसप्रकार परमार्थतैं असंगहुआभी सोपरब्रह्म

आपणीमायाशक्तिकरिकै सर्वभूतहै ॥ तहां लोकविषे अधिष्ठानतैंविना कोईभीभ्रमहोतानहीं ॥ किंतु रज्जुशुक्तिआदिकअधिष्ठानविषेहीं सर्परजतादिकोंकाभ्रम होवैहै ॥ यातैं जोचैतन्य आपणेसत्‌रूपकरिकै सर्वकल्पितप्रपंचकूंधारणकरैहै तथापोषणकरैहै ताकानाम सर्वभूतहै ॥ पुनःकैसाहैसोज्ञेयब्रह्म निर्गुणहै ॥ अर्थात् परमार्थतैंतौं सत्त्व रज तम इनतीनगुणोंतैंरहितहै ॥ तथा गुणोंकाभोक्ताहै ॥ अर्थात् शब्दस्पर्शादिकविषयद्वारा सुख दुःख मोहके आकारकरिकैपरिणामकूं प्राप्तहुएजे सत्त्व रज तम यहतीनगुणहैंतिनगुणोंकाभोक्ताहै तथाउपलब्धाहैं ॥ तहांश्रुति ॥ (साक्षीचेताकेवलोनिर्गुणश्च ॥) अर्थयह ॥ यहपरमात्मादेव सर्वका साक्षीहै तथाचेतनहै तथाअद्वितीयहै तथासत्त्वादिकसर्वगुणोंतैंरहितहै इति ॥ १४ ॥ ❀ ॥ किंच ॥

(मू० श्लोक) बहिरंतश्च भूतानामचरंचरमेवच ॥ सूक्ष्मत्वात्तदविज्ञेयंदूरस्थंचांतिकेचतत् ॥ १५ ॥ बहिः । अंतः । च । भूतानाम् । अचरं । चरम् । एव । च । सूक्ष्मत्वात् । तत् । अविज्ञेयं । दूरस्थं । च । अंतिके । च । तत् ॥ १५ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन सोज्ञेयब्रह्म हीं सर्वभूतोंके बाह्यहै तथा अंतरहै तथा स्थावररूपहै तथाजंगमरूपहै तथासूक्ष्महोणेतैं अविज्ञेयहै तथा सोज्ञेयब्रह्म अत्यंतदूरस्थितहै तथा अत्यंतसमीपहै ॥ १५ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन पुनःकैसाहै सोज्ञेयब्रह्म ॥ उत्पत्तिधर्मवाले जितनैंकी कल्पितकार्यहैं ॥ तिनसर्वकल्पितकार्योंके बाह्य तथाअंतर सोएकहीं अकल्पितअधिष्ठानरूपब्रह्मव्यापकहै ॥ अर्थात् जैसे रज्जुविषेकल्पित जेसर्प दंड माला जलधारा आदिकहैं ॥ तिनकल्पितसर्पादिकोंके बाह्य तथाअंतर सोरज्जुरूपअधिष्ठानहीं व्यापकहोवैहै ॥ तैसे तिनसर्वभूतोंके बाह्य तथाअंतर सोअधिष्ठानरूपब्रह्महीं सर्वप्रकारकरिकै व्यापकहै ॥ तहांश्रुति ॥ (तदंतरस्यसर्वस्यतदुसर्वस्यास्य बाह्यतः ॥) अर्थयह ॥ सोअधिष्ठानरूप परब्रह्महींइससर्वप्रपंचके अंतर तथाबाह्य व्यापकहै इति ॥ सर्वत्रव्यापकहोणेतैं सोपरब्रह्महीं सर्वस्थावरभूतरूपहै तथा सर्वजंगमभूतरूपहै॥ काहेतैं इसलोकविषे जोजोकल्पितपदार्थहोवैहै ॥ सो अधिष्ठानतैंभिन्नसत्तावालाहोवैनहीं ॥ किंतु सोकल्पितपदार्थ अधिष्ठानरूपहींहोवैहै ॥ जैसे रज्जुविषेकल्पितसर्पादिक अधिष्ठानरज्जुरूपहींहै तैसे अधिष्ठानब्रह्मविषेकल्पित यहस्थावरजंगमरूपजगत्‌भी तिसअधिष्ठानब्रह्मतैंभिन्नसत्तावालानहींहै ॥ किंतुताअधिष्ठानब्रह्मरूपहींहै ॥ यातैं इनस्थावरजंगमपदार्थोंकूं अधिष्ठानब्रह्मरूपता युक्तहींहै ॥ तहांश्रुति ॥ (सर्वंह्येतद्ब्रह्म ॥) अर्थयह ॥ यहस्थावरजंगमरूपसर्वजगत् ब्रह्मरूपहींहै इति ॥ शंका ॥ हेभगवन् इसप्रकारतैं सोज्ञेयब्रह्म जो सर्वकाआत्मारूपहै ॥ तौं सर्वप्राणी तिसपरब्रह्मकूं स्पष्टकरिकैक्युं नहींजानते ॥ ऐसीअर्जुनकी शंकाकेहुए श्रीभगवान् ताकेनजानणेविषेहेतुकहैहै (सूक्ष्मत्वात्तदविज्ञेयमिति) हेअर्जुन सोपरब्रह्म सर्वकाआत्मारूपहुआभी अत्यंतसूक्ष्महोणेतैं तथारूपादिकगु

णोंतैंरहितहोणेतैं अविज्ञेयहै ॥ अर्थात् यहब्रह्म इसीप्रकारकाहींहै ॥ याप्रकारतैं स्पष्टज्ञानकेयोग्यहोवैनहीं ॥ तहांश्रुति ॥ (सूक्ष्मात्सूक्ष्मतरंनित्यम् ॥) अर्थयह ॥ सोपरब्रह्म आकाशादिकसूक्ष्मपदार्थोंतैंभी अत्यंतसूक्ष्महै तथानित्यहै इति ॥ इसीकारणतैंहीं सोपरब्रह्म विवेकवैराग्यादिकसाधनोंतैंरहितपुरुषोंकूं सहस्रकोटीवर्षोंकरिकैभी प्राप्तहोतानहीं ॥ यातैं सोपरब्रह्म तिनबहिर्मुखपुरुषोंकूं दूरस्थहै ॥ अर्थात् लक्षकोटीयोजनमार्गकेअंतरायवालेदेशकीन्यांई अत्यंत दूरहै ॥ और जेपुरुष तिनाविवेकवैराग्यादिकसाधनोंकरिकैसंपन्नहैं ॥ तिनपुरुषोंकूं सोपरब्रह्म आपणाआत्मारूपहोणेतैं अत्यंत समीपहै ॥ तहांश्रुति (दूरात्सुदूरे तदिहांतिकेचपश्यत्स्विहैवनिहितंगुहायाम्) अर्थयह ॥ जेपुरुष विवेकवैराग्यादिकसाधननोंतैंरहितहैं ॥ ऐसेबहिर्मुखपुरुषोंकूंतौं यहपरमात्मादेव अत्यंत दूरलोकालोकपर्वततैंभी अत्यंतदूरहै ॥ और जेपुरुष विवेकवैराग्यादिकसाधनसंपन्नहोइकै ब्रह्मवेत्तागुरुकेशरणकूंप्राप्तहुएहैं ॥ ऐसे उत्तमअधिकारीपुरुषोंकूं सोपरब्रह्म अत्यंतसमीप हृदयदेशविषेहीं साक्षात्कारहोवैहै इति ॥ १५ ॥ ❀ ॥ तहांपूर्व त्रयोदशेश्लोकविषे (सर्वमावृत्यतिष्ठति) इसवचनकरिकै एक हींपरमात्मादेव सर्वजडवर्गकूंव्याप्तकरिकैस्थितहुआहै यहअर्थ सामान्यतैं कथनकऱ्याथा ॥ अब तिसअर्थकूं श्रीभगवान् स्पष्टकरिकैवर्णनकरैहै ॥ देहदेहविषे आत्माकेभेदमानणेहारेवादीयोंकेखंडनकरणेवासतै ॥

(मू० श्लो०) अविभक्तंचभूतेषुविभक्तमिवचस्थितम् ॥ भूतभर्तृचतज्ज्ञेयंग्रसिष्णुप्रभविष्णुच ॥ १६ ॥ अविभक्तं । च । भूतेषु । विभक्तम् । इव । च । स्थितं । भूतभर्तृ । च । तत् । ज्ञेयं । ग्रसिष्णु । प्रभविष्णु । च ॥ १६ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन पुनः सोपरब्रह्म सर्वप्राणीयोंविषे एकहींहै तथा भिन्नहुएकी न्यांई स्थिततहै सोपरब्रह्महीं सर्वभूतोंकाधारणकरणेहारा तथा संहारकरणेहारा तथा उत्पन्नकरणेहारातुमनैं जानणा ॥ १६ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन सोपरब्रह्म सर्वप्राणीयोंविषे एकहींव्यापकहै ॥ देहदेहविषे भिन्नभिन्नहैनहीं ॥ जिसकारणतैं सो परब्रह्म आकाशकीन्यांई सर्वत्रव्यापकहै ॥ ॥ तहांश्रुति ॥ (एकोदेवःसर्वभूतेषुगूढः) ॥ अर्थयह ॥ जैसे सर्वकाष्ठोंविषे अग्नि गुह्यहोइकैरह्याहै ॥ तैसे सोएकहींपरमात्मादेव सर्वभूतोंविषे गुह्यहोइकै रह्याहै इति ॥ इसप्रकार वास्तवतैं एकअद्वितीयरूपहुआभी सोपरब्रह्म इनदेहोंकेसाथि तादात्म्यकरिकैप्रतीतहोवैहै ॥ यातैं सोपरब्रह्म देहदेहविषे भिन्नभिन्न हुएकीन्यांई स्थिततहै ॥ अर्थात् जैसे एकहींआकाशविषे घटमठादिकउपाधियोंकरिकै मिथ्याभेद प्रतीतहोवैहै ॥ सोमिथ्याभेद वास्तवतैंआकाशकीएकताकूं निवृत्तकरिसकैनहीं ॥ तैसे एकहींपरमात्मादेवविषे देहादिकउपाधियोंकरिकै मिथ्याभेदप्रतीतहोवैहै ॥ सोमिथ्याभेद तिसपरमात्मादेवकीवास्तवएकताकूं निवृत्त

करिसकैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् इसप्रकारतैं सोक्षेत्रज्ञचेतन सर्वभूतोंविषेव्यापकहोवो ॥ परंतु सर्वजगत्काकारणजोब्रह्महै सोकारणब्रह्मतौं ताक्षेत्रज्ञचेतनतैं भिन्नहींहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहेहै (भूतभर्तृचइति) हेअर्जुन सोब्रह्मभूतभर्तृहै ॥ अर्थात् जोब्रह्म स्थितिकालविषे अधिष्ठानतारूप करिकै सर्वभूतोंका धारणकरेहै तथापोषणकरेहै ॥ तथा जोब्रह्म प्रलयकालविषे तिनसर्वभूतोंकासंहारकरेहै ॥ तथा जोब्रह्म सृष्टिकालविषे तिनसर्वभूतोंकूं उत्पन्न करेहै ॥ जैसे रज्जुआदिकअधिष्ठान मायाकल्पितसर्पादिकोंके उत्पत्तिस्थितिलयकाकारणहोवैहैं ॥ तैसे इससर्वजगत्केउत्पत्तिस्थितिलयकाकारणरूपजोब्रह्महै ॥ सोब्रह्महीं सर्वदेहोंविषेएकक्षेत्रज्ञरूप तुमनैं जानणा ॥ तिसब्रह्मतैं सोक्षेत्रज्ञचेतन भिन्ननहींजानणा इति ॥ १६ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् सर्वत्रविद्यमान हुआभी सोज्ञेयब्रह्म जबीनहींप्रतीतहोवैहै ॥ तबी सोज्ञेयब्रह्म जडहींहोवैगा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए ॥ सोज्ञेयब्रह्म नहींप्रतीतहोणेमात्रकरिकै जडहोवैनहीं ॥ काहेतैं सोपरब्रह्म यद्यपि स्वयंज्योतिरूपहै ॥ तथापि सोपरब्रह्म रूपादिकगुणोंतैंरहितहै ॥ यातैं तिसपरब्रह्मविषे नेत्रादिकइंद्रियजन्यज्ञानकीअविषयता संभवहोइ सकैहै ॥ इसप्रकारकेउत्तरकूं श्रीभगवान् कहेहै (ज्योतिषामपितज्ज्योतिःइति) अथवा पूर्वश्लोककेउत्तरार्द्धकरिकै तिसज्ञेयब्रह्मका जगत्कीउत्पत्तिस्थितिलय कर्तृत्वरूपतटस्थलक्षण कथनकऱ्याथा ॥ अब (ज्योतिषामपितज्ज्योतिः) इसश्लोककरिकै तिसज्ञेयब्रह्मका स्वरूपलक्षण कथनकरेहैं ॥

(मू० श्लो०) ज्योतिषामपितज्ज्योतिस्तमसःपरमुच्यते ॥ ज्ञानंज्ञेयंज्ञानगम्यंहृदिसर्वस्यधिष्ठितम् ॥ १७ ॥ ज्योतिषाम् । अपि । तत् । ज्योतिः । तमसः । परम् । उच्यते । ज्ञानम् । ज्ञेयम् । ज्ञानगम्यम् । हृदि । सर्वस्य । धिष्ठितम् ॥ १७ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन सोज्ञेयब्रह्म सूर्यादिकज्योतियोंका भी ज्योति है तथाजडवर्गरूपतैं पर कह्याहै तथाज्ञानरूपहै तथाज्ञेयरूपहै तथाज्ञान करिकैप्राप्यहै तथासर्वप्राणीयोंके बुद्धिविषे स्थितहै ॥ १७ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन पुनः सोज्ञेयब्रह्मकैसाहै ॥ ज्योतियोंकाभीज्योतिहै ॥ अर्थात् अनात्मपदार्थोंकूंप्रकाशकरणेहारे जो आदित्य चंद्रमा अग्नि विद्युत् इत्यादिक बाह्यज्योतिहैं तथामनबुद्धिआदिक अंतरज्योतिहैं ॥ तिनसर्वज्योतियोंकाभी सोपरब्रह्म प्रकाशकरणेहाराहै ॥ तहां चैतन्यज्योतिविषे सूर्यादिकजडज्योतियोंका प्रकाशकपणा युक्तिकरिकैभी संभवहोइसकैहै ॥ तथाइसअर्थकूं साक्षात्श्रुतिभगवतीभी कथनकरेहै ॥ तहांश्रुति (येनसूर्यस्तपतितेजसेद्धः । तस्यभासासर्वमिदं विभाति) ॥ अर्थयह ॥ जिसस्वयंज्योतिपरमात्मादेवकरिकै यहतेजयुक्तसूर्य तपायमानहोवैहै ॥ तथा जिसपरमात्मादेवकेप्रकाशकरिकै यहसूर्यचंद्रादिकसर्वजगत् प्रकाशमानहोवैहै इति ॥ तथा यहवार्त्ता श्रीभगवान् आपहीं (यदादित्यगतंतेजः)इत्यादिकवचनकरिकैकथनकरैंगा ॥ यातैं चैतन्यब्रह्मरूपज्योतिकरिकै सूर्यादिकजड

ज्योतियोंकाप्रकाश संभवैहै इति ॥शंका॥ हेभगवन् सोचैतन्यस्वरूपब्रह्म स्वभावतैंजडपणेंतैंरहितहुआभी जडपदार्थोंकेसाथि संबंधवालाहोवैगा ॥ ऐसीअर्जुनकीशं
काकेहुए श्रीभगवान् कहेहै (तमसःपरमुच्यतेइति) हेअर्जुन सोपरब्रह्म जडवर्गरूपतमतैं परकह्याहै ॥ अर्थात् अविद्या तथाताअविद्याकाकार्यरूपयहसर्वप्रपंच
यहदोनों अपारमार्थिकहैं ॥ और सोचैतन्यरूपज्ञेयब्रह्म पारमार्थिकहै ॥ ताअसत्जगत्का तथासत्ब्रह्मका कोईभीसंबंध संभवतानहीं ॥ यातैं श्रुतिभगवतीनैं
तथाब्रह्मवेत्तापुरुषोंनैं सोज्ञेयब्रह्म अविद्याके तथाताकेकार्यरूपप्रपंचके संबंधतैंरहित कथनकऱ्याहै ॥ तहांश्रुति ॥ (अक्षरात्परतःपरः । आदित्यवर्णतमसःपरस्ता
त)॥ अर्थयह ॥ आत्मज्ञानतैंविना अन्यउपायकरिकैनहींनाशहोणेहारी तथाआपणेकार्यकीअपेक्षाकरिकैपर ऐसीजा अविद्याहै तिसअविद्यातैंभी सोपरब्रह्मपरहै ॥
तथा सोपरब्रह्म सूर्यकीन्यांई दूसरेप्रकाशककीनहीं अपेक्षाकरताहुआ सर्वप्रपंचका प्रकाशकरेहैं ॥ तथा अविद्यारूपतमतैं परहैं इति ॥ यहवार्त्ता ब्रह्मवेत्तापुरुषोंनैं
भी कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ (निःसंगस्यैवसंगेनकूटस्थस्य विकारिणा ॥ आत्मनोऽनात्मनायोगोवास्तवोनोपपद्यते) ॥ अर्थयह ॥ सर्वसंगतैंरहित कूटस्थ आ
त्माका संगवान् विकारी अनात्मवस्तुकेसाथि वास्तवसंबंध संभवतानहीं इति ॥ अथवा (तमसःपरमुच्यते) इसवचनकरिकै श्रीभगवान्नैं तिसज्ञेयब्रह्मविषे जड
वर्गरूप तमतैंभिन्नपणा कथनकऱ्याहै ॥ ताभिन्नपणेकीसिद्धिकरणेवासतै तिसज्ञेयब्रह्मका (ज्योतिषामपितज्ज्योतिः) इसवचनकरिकै हेतुगर्भितविशेषण कथनक
ऱ्याहै ॥ ताकरिकै यहअनुमान सिद्धहोवैहै ॥ सोज्ञेयब्रह्म तिसजडवर्गरूपतमतैंभिन्नहोणेकूंयोग्यहै ज्योतियोंकाभीज्योतिरूपहोणेतैं जोपदार्थ जडवर्गतैं भिन्ननहींहोवै
है सोपदार्थ ज्योतियोंकाज्योतिरूपभीनहींहोवैहै जैसे घटादिकजडपदार्थहैं इति ॥ जिसकारणतैं सोज्ञेयब्रह्मस्वयंज्योतिरूपहै तथासर्वजडपदार्थोंकेसंबंधतैंरहितहै ॥
तिसकारणतैं सोज्ञेयब्रह्म ज्ञानरूपहै ॥ अथवा ॥ शंका ॥ हेभगवन् जैसे चंद्ररूपज्योतिका प्रकाशकरणेहारा तथाभौतिकत्वरूपकरिकैताचंद्रकेसजातीय सूर्यरूप
ज्योतिहै यहवार्त्ता ज्योतिषशास्त्रविषेप्रसिद्धहै ॥ तैसे तिनसूर्यादिकज्योतियोंकाप्रकाशकरणेहारा तथातिनसूर्यादिकोंकेसजातीय कोईअलौकिकज्योतिहोवैगा ॥
ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुएश्रीभगवान् कहेहै (ज्ञानमिति) हेअर्जुन सो सूर्यादिकज्योतियोंकाप्रकाशकरणेहारा ज्ञेयब्रह्म कैसाहै ज्ञानरूपहै ॥ अर्थात् प्रमाणजन्य
चित्तवृत्तिकरिकैअभिव्यक्त संवित्रूपहै ॥ कोई अलौकिक भौतिकज्योतिनहींहै ॥ ऐसाज्ञानरूपहोणेतैंहीं सोपरब्रह्म ज्ञेयरूपहै ॥ अर्थात् अज्ञातहोणेतैं सोपरब्रह्म
अधिकारीजनोंनैं जानणेकूंयोग्यहै ॥ ताज्ञानरूपब्रह्मतैंभिन्न जडपदार्थोंविषे सोअज्ञातपणा रहैनहीं ॥ यातैं तेजडपदार्थ जानणेयोग्यनहींहैं ॥ शंका ॥ हेभगवन्
ऐसाज्ञेयब्रह्म इनसर्वप्राणीयोंनैं किसवासतैनहींजानीताहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहेहै (ज्ञानगम्यमिति) हेअर्जुन पूर्व अमानित्वतैंआदिलैके तत्त्व
ज्ञानार्थदर्शनपर्यंत कथनकऱ्येजे वीससाधनहैं ॥ जेसाधन ज्ञानकेहेतुहोणेतैं ज्ञानशब्दकरिकैकथनकऱ्येहैं ॥ ऐसेज्ञानरूपसाधनोंकरिकैहीं सोज्ञेयब्रह्म प्राप्त

होवैहै ॥ तिनसाधनोंतैंविना प्राप्तहोवैनहीं ॥ यातैं अमानित्वादिकसाधनसंपन्न पुरुषहीं तिसज्ञेयब्रह्मकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तिनसाधनोंतैंरहित बहिर्मुखपुरुष तिसज्ञेयब्रह्मकूंप्राप्तहोतेनहीं इति ॥ शंका ॥ हेभगवन् यज्ञादिकसाधनोंकरिकैप्राप्तहोणेयोग्य स्वर्गादिक जैसे देशकालकरिकै व्यवहितहोवैहैं ॥ तैसे अमानित्वादिकसाधनोंकरिकैप्राप्तहोणेयोग्य सोज्ञेयब्रह्मभी देशकालकरिकैव्यवहितहींहोवैगा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहेहै (हृदिसर्वस्यधिष्ठितमिति) हेअर्जुन सोज्ञेयब्रह्म स्वर्गादिकोंकीन्यांई कोईव्यवहितनहींहै ॥ किंतु सर्वप्राणीयोंकीबुद्धिविषेहीं स्थितहै ॥ अर्थात् सोज्ञेयब्रह्म सामान्यतैं सर्वप्रपंचविषेस्थितहुआभी विशेषरूपकरिकै तिसबुद्धिविषेहीं जीवरूपकरिकै तथाअंतर्यामीरूपकरिकै अभिव्यक्तिकूंप्राप्तहोवैहै ॥ जैसे सामान्यतैंसर्वपदार्थोंविषेस्थितहुआभी सूर्यकातेज दर्पणसूर्यकांतमणि इत्यादिकस्वच्छपदार्थोंविषे विशेषरूपकरिकै अभिव्यक्तिकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसेस्थावरजंगमरूपसर्वजगत्विषे सामान्यरूपतैंस्थितहुआभी सोपरब्रह्म ताबुद्धिविषे विशेषरूपकरिकै अभिव्यक्तिकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ सोपरब्रह्म सर्वप्राणीयोंका आपणाआत्मारूपहोणेतैं वास्तवतैंअत्यंत अव्यवहितहुआभी भ्रांतिकरिकै व्यवहितकीन्यांई प्रतीतहोवैहै ॥ सोईहींज्ञेयब्रह्म तत्त्वज्ञानकरिकै सर्वभ्रमकेकारणरूपअज्ञानकीनिवृत्तिकरिकै आपणाआत्मारूपकरिकैप्राप्तहोवैहै इति ॥ १७ ॥ ❀ ॥ तहां पूर्वकथनकरेहुएक्षेत्रादिकोंकूं तथाअधिकारीकूं तथाफलकूं कथनकरताहुआ श्रीभगवान् इसपूर्वप्रसंगका उपसंहारकरेहैं ॥

(मू० श्लो०) इतिक्षेत्रंतथाज्ञानंज्ञेयंचोक्तंसमासतः ॥ मद्भक्तएतद्विज्ञायमद्भावायोपपद्यते ॥ १८ ॥ इति । क्षेत्रं । तथा । ज्ञानं । ज्ञेयं । च । उक्तं । समासतः । मद्भक्तः । एतत् । विज्ञाय । मद्भावाय । उपपद्यते ॥ १८ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन मैंपरमेश्वरनैं तुमारेतांई इसपूर्वउक्तप्रकारकरिकै क्षेत्र तथा ज्ञान तथा ज्ञेय संक्षेपकरिकै कथनकरया मेराभक्त इनक्षेत्रादिकतीनोंकूं जानिकरिकै मेरेभावकीप्राप्तिवासतै योग्यहोवैहै ॥ १८ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ इसपूर्वउक्तप्रकारकरिकै मैंपरमेश्वरनैं तुमारेतांई महाभूतोंतैंआदिलेकेधृतिपर्यंत क्षेत्रकास्वरूप संक्षेपतैं कथनकरया ॥ तथा अमानित्वतैंआदिलेके तत्त्वज्ञानार्थदर्शनपर्यंत ज्ञानभी संक्षेपतैंकथनकरया ॥ तथा (अनादिमत्परंब्रह्म) इसवचनतैंआदिलेके (हृदिसर्वस्यधिष्ठितम्) इसवचनपर्यंत ज्ञेयब्रह्मभी संक्षेपतैं कथनकरया ॥ अर्थात् जेक्षेत्र ज्ञान ज्ञेय यहतीनों श्रुतिस्मृतियोंविषे अत्यंतविस्तारतैं कथनकरेहैं ॥ तेतीनों तिनश्रुतिस्मृतिवचनोंतैंआकर्षणकरिकै मंदबुद्धि पुरुषोंकेअनुग्रहवासतैं मैंपरमेश्वरनैं संक्षेपकरिकै तुमारेतांई कथनकरयेहैं ॥ इतनाहीं सर्ववेदोंकाअर्थहै तथाइसगीताशास्त्रकाअर्थहै इति ॥ तहां इसअर्थविषे पूर्व द्वादशेअध्यायविषेकथनकरेहैंलक्षणजिसके ऐसाजो मैंपरमेश्वरकाभक्तहै सोमेराभक्तहीं अधिकारीहै ॥ इसअर्थकूं श्रीभगवान् कथनकरेहै (मद्भक्तःइति) अर्थात्

रूपमगुरुरूप मैंभगवान् वासुदेवविषे समर्पणकऱ्येहैं सर्वकर्मजिसनें तथाएकमैंपरमेश्वरकेहींशरणकूंप्राप्तहुआ जोमैंपरमेश्वरकाभक्तहै ॥ सोमेराभक्तहीं इनपूर्वउक्त क्षेत्र ज्ञान ज्ञेय तीनोंकूं भलीप्रकारतैंजानिकै मेरेभावकीप्राप्तिवासतैयोग्यहोवैहै ॥ अर्थात् सर्वअनर्थोंतैंरहित परमानंदब्रह्मभावरूपमोक्षकीप्राप्तिवासतै योग्यहोवैहै ॥ तहां परमेश्वरकीभक्तिकरिकैहीं इसअधिकारीपुरुषकूं ब्रह्मभावकीप्राप्तिहोवैहै यहवार्ता श्रुतिविषेभी कथनकरीहे ॥ तहांश्रुति ॥ (यस्यदेवेपराभक्तिर्यथा देवेतथागुरौ ॥ तस्यैतेकथिताह्यर्थाःप्रकाशंतेमहात्मनः ॥) अर्थयह ॥ जिसअधिकारीपुरुषकी परमात्मादेवविषे अनन्यभक्तिहै ॥ और जैसीपरमात्मादेवविषे अनन्यभक्तिहै ॥ तैसीहीं ब्रह्मवेत्तागुरुविषेअनन्यभक्तिहै ॥ तिसमहात्मापुरुषकूंहीं यहवेदांतप्रतिपादितअर्थ हृदयविषेप्रकाशमानहोवैहैं इति ॥ और यहअधिकारी पुरुष ज्ञेयब्रह्मकूं आपणाआत्मारूपजानिकै ब्रह्मरूपहोवैहै ॥ यहवार्ताभी श्रुतिविषे कथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ (ब्रह्मवेदब्रह्मैवभवति) ॥ अर्थयह ॥ यहअधिकारीपुरुष मैंब्रह्मरूपहूं ॥ याप्रकारतैं ब्रह्मकूं आपणाआत्मारूपजानिकै ब्रह्मरूपहींहोवैहै इति ॥ यातैंयहअर्थसिद्धभया ॥ परमपुरुषार्थकेप्राप्तिकीइच्छावान् यह अधिकारीपुरुष अत्यंततुच्छविषयभोगोंकीइच्छाकापरित्यागकरिकै सर्वकालविषे एकमैंपरमेश्वरकेशरणहुआ आत्मज्ञानकेअमानित्वादिकसाधनोंकूंहीं प्रयत्नतैं संपादनकरै इति ॥ १८ ॥ ❀ ॥ तहां इसपूर्वउक्तग्रंथकरिकै (तत्क्षेत्रंयच्चयादृक्च) इसवचनका व्याख्यानकऱ्या ॥ अब (यद्विकारियतश्चयत् सचयोय त्प्रभावश्च) इसवचनका व्याख्यानकरणा प्राप्तभया ॥ तहां प्रकृतिपुरुष इनदोनोंकूं संसारकाहेतुपणाकथनकरिकै (यद्विकारियतश्चयत्) इसवचनकाअर्थ (प्रकृतिंपुरुषंचैव) इत्यादिकदोश्लोकोंकरिकै विस्तारतैंकथनकरेहैं ॥ और (सचयोयत्प्रभावश्च) इसवचनकाअर्थतौं (पुरुषःप्रकृतिस्थोहि) इत्यादिकदोश्लोकों करिकै विस्तारतैंकथनकरैंगे ॥ तहां पूर्वसप्तमअध्यायविषे क्षेत्रनामा अपराप्रकृति तथाक्षेत्रज्ञजीवनामा पराप्रकृति इनदोनोंप्रकृतियोंकूंकथनकरिकै (एतद्योनीनिभूतानि) इसवचनकरिकै तिनदोनोंप्रकृतियोंविषे सर्वभूतोंकीकारणता कथनकरीथी ॥ अब तिनदोनोंप्रकृतियोंविषे अनादिपणा कथनकरिकै सर्वभूतोंविषे तिनदोनोंप्रकृतियोंकेकार्यपणेकूं श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) प्रकृतिंपुरुषंचैवविद्ध्यनादीउभावपि ॥ विकारांश्चगुणांश्चैवविद्धिप्रकृतिसंभवान् ॥ १९ ॥ प्रकृतिम् । पुरुषम् । च । एव । विद्धि । अनादी । उभौ । अपि । विकारान् । च । गुणान् । च । एव । विद्धि । प्रकृतिसंभवान् ॥ १९ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन प्रकृतिकूं तथा पुरुषकूं दोनोंकूं भी तूं अनादि हीं जान तथा विकारोंकूं तथा गुणोंकूं तौंप्रकृतितैंउत्पन्नहुआ हीं तूं जान ॥ १९ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन माया अज्ञान अविद्या यहहैंनाम जिसके ऐसीजा त्रिगुणात्मिका परमेश्वरकीशक्तिहै ॥ जामायाशक्ति पूर्वसप्तमअध्यायविषे अष्टप्रकारकी कथनकरीथी ॥ तथा अपराप्रकृति इसनामकरिकैकथनकरीथी ॥ साक्षेत्रनामा अपराप्रकृति ईहां प्रकृतिशब्दकरिकैग्रहणकरणी ॥ और पूर्वसप्तमअध्यायविषे जा क्षेत्रज्ञरूपजीवनामा पराप्रकृति कथनकरीथी ॥ साजीवनामा पराप्रकृतिहीं ईहां पुरुषशब्दकरिकैग्रहणकरणी ॥ ऐसे प्रकृति पुरुष दोनोंकूंभी तूं अनादिहीं जान ॥ तहां नहीं विद्यमानहै आदि क्या कारण जिसका ताकानाम अनादिहै ॥ ऐसाअनादिरूप तिनदोनोंकूं तूं जान ॥ तहां (मायांतुप्रकृतिंविद्यात्) इस श्रुतिनैं तिसमायारूपप्रकृतिकूंहीं सर्वजगत्काकारणकह्याहै ॥ ऐसी सर्वजगत्केकारणरूपप्रकृतिविषे सोअनादिपणा युक्तहै ॥ काहेतैं जोकदाचित् तिसमायानामा प्रकृतिकूंभी अन्यकिसीकारणकीअपेक्षा मानिये ॥ तौं तिसप्रकृतिकेकारणकूंभी किसीअन्यकारणकीअपेक्षाहोवैंगी तिसअन्यकारणकूंभी किसीअन्यकारणकी अपेक्षा होवैंगी इसप्रकारतैं कारणोंकीअनवस्था प्राप्तहोवैंगी ॥ यातैं तामायारूपप्रकृतिविषे सोअनादिपणाहीं मानणेयोग्यहै ॥ किंवा तिसमायारूपप्रकृतिविषे केवलयुक्तिकरिकैहीं सोअनादिपणा नहीं ॥ किंतु (अजामेकांलोहितशुक्लकृष्णां) यहसाक्षात्श्रुतिभी तिसप्रकृतिविषे अनादिपणेकूं कथनकरेहै ॥ किंवा जैसे मायारूप प्रकृतिविषेसो अनादिपणायुक्तिकरिकै तथाश्रुतिकरिकै सिद्धहै ॥ तैसे क्षेत्रज्ञनामा जीवात्मापुरुषविषेभी सोअनादिपणा युक्तिकरिकै तथाश्रुतिकरिकै सिद्धहै ॥ सोदिखावैंहै ॥ इनसर्वप्राणीमात्रकूं जन्मकालविषेहीं हर्ष शोक भय सुख दुःख प्रवृत्ति इत्यादिक प्राप्तहोवैंहैं ॥ तिनहर्षशोकादिकोंविषे इसजन्मकेतौं धर्मअधर्मसंस्कार कारणहैंनहीं ॥ किंतु तिनजीवोंकूं तेहर्षशोकादिक पूर्वजन्मके धर्मअधर्मकरिकै तथासंस्कारोंकरिकैहीं प्राप्तहोवैंहैं ॥ तेधर्मअधर्मादिकधर्म आश्रयतैंविना संभवतेनहीं ॥ यातैं इसजन्मतैंपूर्वजन्मोंविषेभी ताजीवात्माकीविद्यमानता अंगीकारकरणीहोवैंगी ॥ इसप्रकारतैं धर्मअधर्मादिकोंकीआश्रयतारूपकरिकै इसजीवात्माविषे अनादिपणा सिद्धहोवैंहै ॥ किंवा इसजीवात्माकूं जोकदाचित् अनादिनहींमानिये ॥ किंतु उत्पत्तिवाला मानिये ॥ तौं पूर्वकऱ्येहुएपुण्यपापकर्मोंका सुखदुःखरूपफलकेभोगतैंविनाहीं नाशहोवैंगा ॥ तथा पूर्वनहींकऱ्येहुएपुण्यपापरूपकर्मोंके सुखदुःखरूपफलकाभोगहोवैंगा ॥ याप्रकारके कृतनाश तथाअकृताभ्यागम यहदोनोंदोष प्राप्तहोवैंगे ॥ तिनदोनोंदोषोंकी निवृत्तिवासतैभी इसजीवात्माकूं अनादिहीं मान्याचाहिये ॥ और (अजोह्येकोजुषमाणोनुशेते) इत्यादिकश्रुतियांभीतिसजीवात्माकूं अनादिहीं कथनकरेहैं इति ॥ हेअर्जुन जिसकारणतैं सामायानामाप्रकृति अनादिहै ॥ इसकारणतैं तामायानामाप्रकृतिविषे जोपूर्व सर्वभूतोंकाकारणपणा कथनकऱ्याथा सो संभवहोइसकैहै ॥ इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरेहै (विकारांश्चेति) हेअर्जुन आकाश वायु तेज जल पृथिवी यहजेपंचमहाभूतहैं ॥ तथा श्रोत्र त्वक् चक्षु रसन घ्राण वाक् पाणि पाद उपस्थ पायु मन यहजे एकादशइंद्रियहैं ॥ इनषोडशोंकानाम विकारहै ॥ तथा सुख दुःख मोहरूप जे

सत्व रज तम यह तीनगुणहैं ॥ तिनषोडशाविकारोंकूं तथातीनगुणोंकूं तूंतिसमायारूपप्रकृतितैंहीं उत्पन्नहुआजान इति ॥ १९ ॥ ❁ ॥ अबतिनविकारोंविषे प्रकृतिजन्यत्वका विवेचनकरताहुआ श्रीभगवान् तिसक्षेत्रज्ञपुरुषविषे संसारकाहेतुपणा दिखावैंहै ॥

(मू० श्लो०) कार्यकरणकर्तृत्वेहेतुःप्रकृतिरुच्यते ॥ पुरुषःसुखदुःखानांभोक्तृत्वेहेतुरुच्यते ॥ २० ॥ कार्यकरणकर्तृत्वे । हेतुः । प्रकृतिः । उच्यते । पुरुषः । सुखदुःखानां । भोक्तृत्वे । हेतुः । उच्यते ॥२०॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन कार्यकरणोंकेकर्त्तापणे विषे सोप्रकृतिहीं हेतु कहीजावैंहै तथा सुखदुःखोंके भोक्तापणेविषे सोपुरुषहीं हेतु कह्याजावैंहैं ॥ २० ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ ईहां शरीरकानामकार्य है ॥ और ताशरीरविषेस्थित जे पंचज्ञानइंद्रिय पंचकर्मइंद्रिय मन बुद्धि चित्तयहत्रयोदशइंद्रियहैं तिनोंकानाम करणहै ॥ ईहांइसदेहकाआरंभकरणेहारे आकाशादिकपंचभूत तथाशब्दादिकपंचविषय यहसर्व ताशरीररूपकार्यकेग्रहणकरिकैग्रहणकरणे ॥ औरसुखदुःखमोहरूप सत्व रज तम यहतीनगुण तिसकरणकेआश्रितहोणेतैं ताकरणकेग्रहणकरिकै ग्रहणकरणे ॥ ऐसेकार्योंके तथाकरणोंके कर्तृत्वविषे अर्थात् तिसकार्यकरणकेआकारपरिणाम विषे महाऋषियोंनैं सामायारूपप्रकृतिहीं कारणरूपकहीहै ॥ तहां किसीपुस्तकविषे (कार्यकारणकर्तृत्वे) याप्रकारकाभी पाठहोवैंहै ॥ इसप्रकारकेपाठ विषेभी यहपूर्वउक्तअर्थहींजानणा ॥ इसप्रकारमायारूपप्रकृतिविषे संसारकाकारणपणा कथनकरिकै अब तिसक्षेत्रज्ञनामापुरुषविषेभी जिसप्रकारका सोकारणप णाहै ताकूं श्रीभगवान् कथनकरेहै (पुरुषःइति) हेअर्जुन जोक्षेत्रज्ञरूप जीवनामापुरुष पूर्व पराप्रकृति इसनामकरिकैकथनकऱ्याथा ॥ सोक्षेत्रज्ञपुरुष सुखदुःखोंके भोक्तृत्वविषे कारण कह्याजावैंहै ॥ अर्थात् सुखदुःखमोहरूप सर्वभोग्यपदार्थोंके वृत्तियुक्तअनुभवविषे कारण कह्याजावैंहै इति ॥ और किसीटीकाविषेतौं (कार्यकरणकर्तृत्वे) इसश्लोकका यहअर्थ कथनकऱ्याहै ॥ ताक्षेत्रज्ञपुरुषके कार्यपणेविषे तथाकरणपणेविषे तथाकर्त्तापणेविषे सामायारूपप्रकृतिहीं तापुरुषकेसाथि तादात्म्यभावकूंप्राप्तहुई कारणहोवैंहै ॥ जैसे अग्निकेसाथि तादात्म्यभावकूंप्राप्तहुआलोह तिसअग्निकेचतुष्कोणत्वआदिकोंका कारणहोवैंहै ॥ तैसे तापुरुषकेसाथि तादात्म्यभावकूंप्राप्तहुई सामायारूपप्रकृतिहीं तापुरुषके कार्यपणेविषे तथाकरणपणेविषे तथाकर्त्तापणेविषे कारणहोवैंहै ॥ इसप्रकार ताप्रकृतिके सुखदुःखोंकेभोक्तापणेविषे सोक्षेत्रज्ञपुरुषहीं ताप्रकृतिविषेआपणेआभासरूपछायाकीप्राप्तिकरिकै कारणहोवैंहै ॥ जैसे अग्नि लोहविषेआपणीछायाकीप्राप्तिकरिकै तालोहकेदाह कर्त्तापणेविषे कारणहोवैंहै ॥ तैसे सोक्षेत्रज्ञपुरुषभी ताप्रकृतिविषेआपणेछायाकीप्राप्तिकरिकै ताप्रकृतिके सुखदुःखोंकेभोक्तापणेविषे कारणहोवैंहै ॥ सोदिखावैंहैं ॥ कार्यपणा करणपणा कर्त्तापणा यहतीनों वास्तवतैं प्रकृतिकेविकाररूपदेहइंद्रियबुद्धिकेधर्महुएभी चेतनआत्माविषे आरोपणकऱ्येजावैंहैं ॥ जैसे मैंगौरहूं मैंइसमनु

ष्यकापुत्रहूं मैंकाणाहूं मैंखंजहूं मैंकर्त्ताहूं इसप्रकारतैं देहादिकोंके कार्यत्वादिकधर्म चेतनआत्माविषेआरोपितहुए प्रतीतहोवैहैं ॥ और तिसचेतनआत्माकेआभासरूपछायाकूंप्राप्तहुई साबुद्धिभी मैंचेतनतावालीहूं तथासुखदुःखादिकोंकूं मैं जानतीहूं इसप्रकारतैं चेतनआत्माकेधर्मोंकूं आपणेविषेमानेहै ॥ इसप्रकारका जो प्रकृतिपुरुषदोनोंविषे परस्पर धर्मोंकाअध्यासहै ॥ सोअध्यासहीं इससंसारकाकारण सिद्धहोवैहै ॥ इतनैंकहणेकरिकै जोसांख्येयोंनैं केवलपुरुषविषेहींभोक्तापणा मान्याहै सोभी खंडनहुआजानणा ॥ जोकदाचित् ऐसानहींअंगिकारकरिये ॥ किंतु प्रकृतिकूंतौं कर्त्तामानिये और पुरुषकूं भोक्तामानिये ॥ तौं कर्तृत्व भोक्तृत्व इनदोनोंका एकअधिकरण सिद्धनहींहोवैंगा ॥ किंतु भिन्नभिन्न अधिकरणसिद्धहोवैंगा ॥ सोअत्यंतविरुद्धहै ॥ और भोक्तापुरुषाविषे निर्विकारपणाभी सिद्धहोवैंगानहीं इति ॥ २० ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् (पुरुषःसुखदुःखानांभोक्तृत्वेहेतुरुच्यते) इसवचनकरिकै पूर्वआपनैं क्षेत्रज्ञनामापुरुषविषे सुखदुःखकाभोक्तृत्वरूप संसारीपणा कथनकऱ्या ॥ सो तिसपुरुषकेसंसारीपणेविषे कोईनिमित्तहै अथवा नहींहै ॥ तहां किसीनिमित्ततैंविना जो तिसपुरुषविषेसंसारीपणा मानौंगे ॥ तौं मुक्तिकालविषेभी तिसपुरुषविषे सोसंसारीपणा होणाचाहिये ॥ इसदोषकी निवृत्तिकरणेवासतै तापुरुषकेसंसारीपणेविषे कोईनिमित्त अंगीकारकरणाहोवैंगा ॥ सोनिमित्त कौंनहैं ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् तानिमित्तकूं कथनकरेहै ॥

(मू०श्लोक) पुरुषःप्रकृतिस्थोहिभुंक्तेप्रकृतिजान्गुणान् ॥ कारणंगुणसंगोस्यसदसद्योनिजन्मसु ॥ २१ ॥ पुरुषः । प्रकृतिस्थः । हि । भुंक्ते । प्रकृतिजान् । गुणान् । कारणं । गुणसंगः । अस्य । सदसद्योनिजन्मसु ॥ २१ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन यहक्षेत्रज्ञपुरुष मायारूपप्रकृतिविषेस्थितहुआहीं तिसप्रकृतिजन्य सुखदुःखादिकगुणोंकूं भोगेहैं यातै सत्असत्योनिजन्मोंविषे इसपुरुषका त्रिगुणात्मकप्रकृतिकेसाथितादात्म्यहीं कारणहै ॥ २१ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन यहक्षेत्रज्ञनामापुरुष प्रकृतिविषेस्थितहुआहीं अर्थात् मायारूपप्रकृतिकेसाथि मिथ्यातादात्म्यभावकूंप्राप्तहुआहीं तिसप्रकृतिजन्य सुखदुःखादिकगुणोंकूं भोगेहै ॥ अर्थात् अंतःकरणकीवृत्तिकरिकै तिनसुखदुःखादिकोंकूंअनुभवकरेहै ॥ यातैं तिसप्रकृतिजन्यसुखदुःखादिकगुणोंकेभोगकास्थानरूप जो सत्योनिविषेजन्महै तथाअसत्योनिविषेजन्महै तथासत्असत्योनिविषेजन्महै तिनजन्मोंकीप्राप्तिविषे इसक्षेत्रज्ञनामापुरुषका गुणसंगहीं कारणहै ॥ अर्थात् सत्त्व रज तम यहतीनगुणात्मक मायारूपप्रकृतिविषे तिसपुरुषका तादात्म्यअभिमानहीं कारणहै ॥ ताप्रकृतिकेतादात्म्यअभिमानतैंविना तिसअसंगपुरुषकूं स्वभावतैं सोफलभोक्तृत्वरूपसंसार संभवतानहीं ॥ तहां इंद्रादिकदेवताशरीरतौं सत्योनिविषेजन्मवालेहैं ॥ यातैं तिनदेवताशरीरोंविषे सात्त्विकइष्टफलहीं भोग्याजावैहै ॥

और पशुआदिक असत्योनिविषेजन्मवालेहैं ॥ यातैं तिनपशुआदिकशरीरोंविषे तामसअनिष्टफलहीं भोग्याजावैहै ॥ और ब्राह्मणादिकमनुष्यशरीरतौं धर्म अधर्मदोनोंकरिकैमिश्रितहोणेतैं सत्असत्योनिविषेजन्मवालेहैं ॥ यातैं तिनमनुष्यशरीरोंविषे राजस इष्टअनिष्टमिश्रितफल भोग्याजावैहै इति ॥ अथवा (गुण संगः) इसवचनका यहदूसराअर्थकरणा ॥ सुखदुःखमोहरूप जेशब्दादिकविषयरूपगुणहैं ॥ तिनशब्दादिकगुणोंविषे जोइसपुरुषका अभिलाषारूपसंगहै जिसअ भिलाषारूपसंगकूं शास्त्रविषे काम इसनामकरिकेकथनकऱ्याहै ॥ ऐसागुणसंगहीं इसपुरुषकूं सत्असत्योनिजन्मोंविषे कारणहोवैहै ॥ यहवार्त्ता श्रुतिविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ (सयथाकामोभवति तत्क्रतुर्भवति यत्क्रतुर्भवति तत्कर्मकुरुते यत्कर्मकुरुते तदभिसंपद्यते ॥) अर्थयह ॥ सोपुरुष जिसवस्तुविषयक अभिलाषारूपकामवालाहोवैहै ॥ तिसवस्तुविषयकहीं निश्चयवालाहोवैहै ॥ और जिसवस्तुविषयकनिश्चयवालाहोवैहै ॥ तिसवस्तुकीप्राप्तिवासतैहीं कर्मकूंकरैहै ॥ और जिसवस्तुकीप्राप्तिवासतै कर्मकूंकरैहै ॥ तिसीहींवस्तुकूंप्राप्तहोवैहै इति ॥ इसपक्षविषेभी तासंसारकामूलकारणरूपकरिकैतौ सो त्रिगुणात्मकप्रकृतिकाता दात्म्यअभिमानहींअंगीकारकरणा इति ॥ और किसीटीकाविषेतौं (पुरुषःप्रकृतिस्थोहिभुंक्तेप्रकृतिजान्गुणान्)इसवचनका यहअर्थकऱ्याहै देह इंद्रिय मन इत्या दिकसंघातकानाम प्रकृतिहै ॥ ऐसीप्रकृतिविषे तादात्म्यभावकूंप्राप्तहुआहीं यहपुरुष तिसप्रकृतिजन्य सुखदुःखमोहरूपगुणोंकूंभोगैहै ॥ जिसकालविषे सुषुप्तिसमा धिमूर्छादिकोंविषे इसपुरुषका तिसप्रकृतिविषेस्थितपणानहींहै ॥ तिसकालविषे तासुषुप्तिसमाधिमूर्च्छादिकोंविषे यहपुरुष तिनसुखदुःखादिकोंकूं प्राप्तहो वैनहीं ॥ यातैं तेसुखदुःखादिक केवल उपाधिविषेहींस्थितहैं ॥ ताउपाधिकेअभावहुए तेसुखदुःखादिक प्रतीतहोवैनहीं यहअर्थसिद्धभया ॥ यहवार्त्ताश्रु तिविषेभीकथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ (आत्मेंद्रियमनोयुक्तंभोक्तेत्याहुर्मनीषिणः) ॥ अर्थयह ॥ देह श्रोत्रादिक इंद्रियोंकरिकै तथामनकरिकै युक्तहुआहीं यहआत्मा भोक्ताहोवैहै॥इसप्रकार तत्त्ववेत्तापुरुष कथनकरैहैं इति॥यहश्रुति देह इंद्रियमनकेयोगतैंहीं आत्माविषेभोक्तापणेकूंदिखावतीहुई केवलशुद्धआत्माविषे ताभोक्तापणेकानिषेधकरैहै इति ॥ और किसीटीकाविषेतौं (पुरुषःप्रकृतिस्थोहि) इसश्लोकका यहअर्थकऱ्याहै ॥ देह इंद्रिय मन इत्यादिकजडपदार्थोंकासं घातरूप जाप्रकृतिहै ॥ तिसप्रकृतिविषेस्थितहुआ विद्वान् पुरुष अथवाअविद्वान्पुरुष तिसप्रकृतिजन्य सुखदुःखादिकगुणोंकूं समानहीं भोगैहै ॥ यहवार्त्ता ब्रह्म सूत्रोंविषे श्रीभाष्यकार भगवान्नैंभी कथनकरीहै ॥ (पश्वादिभिश्चाविशेषात्) ॥ अर्थयह ॥ व्यवहारकालविषे विद्वान्पुरुषकी पशुआदिकोंकेसाथि तुल्य ताहींहोवैहै ॥ अर्थात् जैसे पशुआदिक इष्टवस्तुकूंदेखिकै प्रवृत्तहोवैहैं ॥ और अनिष्टवस्तुकूंदेखिकै निवृत्तहोवैहैं ॥ तैसे सोविद्वान्पुरुषभी इष्टवस्तुकूंदेखिकैतौं प्रवृत्तहोवैहै॥ और अनिष्टवस्तुकूंदेखिकै निवृत्तहोवैहै इति॥शंका॥हेभगवन् प्रकृतिविषेस्थितहोइकै ताप्रकृतिजन्यसुखदुःखादिकगुणोंकेभोगविषे जो विद्वान्पुरुषकी

तथाअविद्वान्पुरुषकी समानताहीं अंगीकारकरौंगे ॥ तौं जैसे सोविद्वान्पुरुष मुक्तहै तैसे सोअविद्वान्पुरुषभी क्युंनहींमुक्तहोता ॥ तथा जैसे सोअविद्वान्पुरुष बंधायमानहै तैसेसोविद्वान्पुरुषभी क्यूंनहींबंधायमानहोता ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान्कहेहै (कारणंगुणसंगोस्यसदसद्योनिजन्मसुइति) हेअर्जुन देहइंद्रियविषयरूपगुणोविषे जोइसपुरुषका संगहै ॥ अर्थात् यहमैंहूं यहमेरेहैं इसप्रकारकाजो अहंममअभिमानरूप अभिनिवेशहै ॥ सोगुणसंगहीं इसपुरुषके सत्असत् योनिजन्मोंविषे कारणहैं ॥ तहां विद्वान्पुरुषोंविषेतौं सोजन्मकाकारणरूप गुणसंग हैनहीं॥ यातैं तेविद्वान्पुरुष जन्मादिकबंधकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ और अविद्वान्पुरुषोंविषेतौं सोजन्मकाकारणरूप गुणसंग विद्यमानहै ॥ यातैं तेअविद्वान्पुरुष मुक्तिकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ तहांदृष्टांत ॥ जैसे किसीपुरुषकेदेहविषे पिशाच प्रवेशकरेहै ॥ तहां तिसदेहविषे तापिशाचकाभीसंबंधहैं ॥ तथा तिसदेहपतिजीवकाभीसंबंधहै ॥ तिसदेहसंबंधकेसमानहुएभी जिसकालविषे सोपिशाच तिसदेहके अभिमानकूंधारणकरेहै ॥ तिसकालविषेतौं सोपिशाचहीं तिसदेहकीपीडाकरिकै पीडितहोवैहैं ॥ सोदेहपतिजीव तादेहकीपीडाकरिकै पीडितहोवैनहीं ॥ और जिस कालविषे सोदेहपतिजीवहीं तिसदेहकेअभिमानकूंधारणकरेहै ॥ तिसकालविषे सोदेहपति जीवहीं तिसदेहकीपीडाकरिकैपीडितहोवैहै ॥ सोपिशाच तादेहकीपीडा करिकैपीडितहोवैनहीं ॥ इसप्रकारतैं अहं ममअभिमानरूपसंगविषेहीं बंधकपणा प्रसिद्धदेखणेविषेआवैहै ॥ समीपतामात्रविषे सोबंधकपणा देखणेविषेआवतानहीं ॥ यातैं विद्वान्पुरुषविषे तथाअविद्वान्पुरुषविषे देहसंबंधकेसमानहुएभी अहंममअभिमानरूपसंगकृत तथाता संगके अभावकृत तिनदोनोंविषे महान्विशेषताहै इति ॥ २१ ॥ ❀ ॥ तहां पूर्वश्लोकविषे प्रकृतिकेमिथ्यातादात्म्यअध्यासतैंहीं पुरुषकूं संसारकीप्राप्तिहोवैहै ताप्रकृतिकेतादात्म्यतैंविना स्वरूपतैं तापुरुषविषे सोसंसारहै नहीं यहवार्त्ता कथनकरी ॥ अब तिसक्षेत्रज्ञनामापुरुषका किसप्रकारकासोवास्तवस्वरूपहै जिसस्वरूपविषे सोसंसारनहीं संभवैहै ऐसीअर्जुनकीजिज्ञासाकेहुए ॥ श्रीभगवान् तिसक्षेत्रज्ञनामापुरुषकेस्वरूपकूं साक्षात्दिखावताहुआ कहेहै ॥

(मू॰ श्लो॰) उपद्रष्टानुमंताचभर्त्ताभोक्तामहेश्वरः ॥ परमात्मेतिचाप्युक्तोदेहेऽस्मिन्पुरुषःपरः ॥ २२ ॥ उपद्रष्टा । अनुमंता । च । भर्त्ता । भोक्ता । महेश्वरः । परमात्मा । इति । च । अपि । उक्तः । देहे । अस्मिन् । पुरुषः । परः ॥ २२ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन ईस देहविषे वर्त्तमानहुआभी यहपुरुष सर्वतैंभिन्नहै जिसकारणतैं यहपुरुष उपद्रष्टाहै तथा अनुमंताहै तथा भर्त्ताहै तथा भोक्ताहै तथामहेश्वरहै तथा श्रुतिविषे परमात्मा ईसनामकरिकैभी कथनकर्‍याहै ॥ २२ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन तिसमायारूपप्रकृतिकापरिणामरूपजोयहदेहहै ॥ इसदेहविषे जीवरूपकरिकैवर्त्तमानहुआभी यहक्षेत्रज्ञनामापुरुष परहै ॥ अर्थात् तिसप्रकृति

जन्यगुणोंकेसंबंधतैंरहितहै तथाआपणेस्वरूपकरिकै परमार्थतैंअसंसारीहै ॥ अब तिसपुरुषके वास्तवतैंअसंगपणेविषे श्रीभगवान् उपद्रष्टा अनुमंता भर्त्ता भोक्ता महेश्वर परमात्माइनषट् हेतुगर्भितविशेषणोंकूंकथनकरंहै (उपद्रष्टाइति) हेअर्जुन सोक्षेत्रज्ञनामापुरुष कैसाहै उपद्रष्टाहै ॥ अर्थात् जैसे यज्ञरूपकर्मकीसिद्धिकरणे वासतै व्यापारवालेहुए जेऋत्विकहैं तथायजमानहै ॥ तिनऋत्विकयजमानकेसमीपवर्त्ती जोकोईअन्यपुरुषहै ॥ सोअन्यपुरुष आपतिसयज्ञकेअनुकूलव्यापारतैंरहि तहुआभी यज्ञविद्याविषे कुशलहोणेतैं तिनऋत्विक्यजमानकेव्यापारोंविषेस्थितगुणदोषोंकूं देखैहै ॥ तैसे यहक्षेत्रज्ञनामापुरुष देहइंद्रियादिकोंके व्यापारविषे आप नहींव्यापारवालाहुआ तथातिनदेहइंद्रियादिकोंतैंविलक्षणहुआ तिनव्यापारसहितदेहइंद्रियादिकोंकूं समीपस्थितहोइकैदेखैहै ॥ सोक्षेत्रज्ञनामापुरुष तिनदेहइंद्रियादि कोंकी न्यांई आपकर्त्ताहोवैनहीं ॥ यातैं यहआत्मादेव उपद्रष्टा कह्याजावैहै ॥ तहांश्रुति ॥ (सयत्तत्रकिंचित्पश्यत्यनन्वागतस्तेनभवत्यसंगोह्ययंपुरुषः) ॥ अ र्थयह ॥ यहआत्मादेवपुरुष तिनजाग्रत्स्वप्नादिकअवस्थावोंविषे जिसजिसपदार्थकूंदेखैहै ॥ तिसतिसपदार्थकेसाथि संबंधवालाहोवैनहीं ॥ जिसकारणतैं यहआ त्मापुरुष असंगहै इति ॥ अथवा देह चक्षु मन बुद्धि आत्मा इनपांचद्रष्टावोंके मध्यविषे बाह्यदेहादिकच्यारि द्रष्टावोंकी अपेक्षाकरिकै अव्यवहितद्रष्टाजो आत्मा पुरुषहै ॥ सोआत्मापुरुष उपद्रष्टा कह्याजावैहै ॥ तहां उपद्रष्टा इसवचनाविषेस्थितजो उप यहशब्दहै ॥ ताउपशब्दका समीपताअर्थहै ॥ सोअव्यवधानरूप समी पताअर्थ प्रत्यक्आत्माविषेहींघटैहै ॥ अन्यकिसीअनात्मपदार्थविषे घटतानहीं ॥ इतनैंकहणेकरिकै श्रीभगवान्नैं यहअनुमानसूचनकऱ्या ॥ आत्मा देह इंद्रियादिकोंतैंभिन्नहै उपद्रष्टाहोणेतैं ॥ जैसेयज्ञका उपद्रष्टापुरुष तायज्ञकेकर्त्ताऋत्विक्यजमानतैंभिन्नहोवैहै इति ॥ पुनःकैसाहैसोक्षेत्रज्ञआत्मापुरुष अनुमंताहै ॥ अर्थात् देहइंद्रियोंकीप्रवृत्तिविषे आप नहींप्रवृत्तहुएभी प्रवृत्तहुएकीन्यांई समीपतामात्रकरिकै तिनोंकेअनुकूलहोणेतैं साक्षेत्रज्ञपुरुष अनुमंता कह्याजावैहै ॥ अथवा आपणेआपणेव्यापारोविषेप्रवृत्तहुए जेदेहइंद्रियादिकहैं ॥ तिनदेहइंद्रियादिकोंकूं जोकदाचित्भी आपणेव्यापारतैं निवृत्तकरतानहीं ॥ सोतिनदेहइंद्रियादिकोंकासाक्षिरूपपुरुष अनुमंता कह्याजावैहै ॥ तहांश्रुति ॥ (अनुमंतासाक्षीच उपद्रष्टानुद्रष्टानुमंतैषआत्मा ॥) अर्थ यह ॥ यहआत्मादेव अनुद्रष्टाहै तथासाक्षीहै ॥ तथा यहआत्मादेव उपद्रष्टाहै तथा अनुमंताहै इति ॥ इतनैंकहणेकरिकै श्रीभगवाननैं यहअनुमान सूचनकऱ्या ॥ आत्मा देहइंद्रियादिकोंतैंभिन्नहै अनुमंताहोणेतैं ॥ जैसे विवादकर्त्तापुरुषतैं तटस्थपुरुष भिन्नहोवैहै इति ॥ पुनःकैसाहैसोक्षेत्रज्ञपुरुष भर्त्ताहै ॥ अर्थात् चैतन्य केआभासकरिकैयुक्त तथासंघातभावकूंप्राप्तहुए जे देह इंद्रिय मन बुद्धिहैं ॥ तिनदेहइंद्रियादिकोंकूं सोक्षेत्रज्ञ आत्मापुरुष आपणीसत्ताकरिकै तथास्फुरणकरिकै धारणकरणेहाराहै ॥ तथापोषणकरणेहाराहै ॥ इतनैंकहणेकरिकै श्रीभगवान्नैं यहअनुमान सूचनकऱ्या ॥ आत्मा देहइंद्रियादिकोंतैं भिन्नहै भर्त्ताहोणेतैं ॥

जैसे पुत्रादिकोंकाभरणकरणेहारापिता तिनपुत्रादिकोंतैंभिन्नहोवैहै इति ॥ पुनःकैसाहैसोक्षेत्रज्ञआत्मापुरुष भोक्ताहै अर्थात् बुद्धिकीसुखदुःखमोक्षरूप जे वृत्तियां विशेषहैं ॥ तिनवृत्तियोंकूं स्वरूपचैतन्यकरिकैप्रकाशकरताहुआ यहआत्मादेव निर्विकारहुआहीं तिनसुखादिकोंका उपलब्धाहै ॥ इतनैंकहणेकरिकै श्रीभगवान्नैं यहअनुमान सूचनकऱ्या ॥ आत्मा बुद्धिआदिकोंतैंभिन्नहै भोक्ताहोणेतैं जैसे देवदत्तनामाभोक्तापुरुष अन्नादिकभोज्यपदार्थोंतैंभिन्नहोवैहै इति ॥ पुनःकैसाहै सोक्षेत्रज्ञपुरुष महेश्वरहै ॥ तहां महान्होवै सोईहीं ईश्वरहोवै ताकानाम महेश्वरहै ॥ तहांसर्वकाआत्मारूपहोणेतैं सोक्षेत्रज्ञपुरुष महान् कह्याजावैहै ॥ और स्वतंत्र होणेतैं ईश्वर कह्याजावैहै ॥ अथवा जैसे चुंबकपाषाणकीसमीपताकरिकै लोह चेष्टाकरेहै ॥ तैसे जिसकीसमीपतामात्रकरिकै यहबुद्धिआदिकसर्वपदार्थ नानाप्रकारकीचेष्टाकरेहैं ॥ सोक्षेत्रज्ञआत्मा ईश्वर कह्याजावैहै ॥ तहांश्रुति ॥ (महतोमहीयान् ईशानोभूतभव्यस्य) ॥ अर्थयह ॥ यहआत्मादेव आकाशादिक महान्पदार्थोंतैंभी अत्यंतमहान्है ॥ तथा भूत भविष्यत् वर्त्तमान सर्वजगत्का प्रेरणाकरणेहारा ईशानहै इति ॥ इतनैंकहणेकरिकै श्रीभगवान्नैं यहअनुमान सूचनकऱ्या ॥ आत्मा प्रकृतितैं तथाताकेकार्यतैं भिन्नहोणेकूंयोग्यहै महेश्वरहोणैतैं जैसे महाराजा आपणीप्रजातैंभिन्नहोवैहै इति ॥ पुनःकैसाहैसोक्षेत्रज्ञपुरुष ॥ श्रुतिविषेपरमात्मा इसशब्दकरिकै कथनकऱ्याहै ॥ अर्थात् अविद्याकेवशतैं आत्मत्वरूपकरिकैकल्पनाकऱ्येजे देहतैंआदिलेकेबुद्धिपर्यंत जडपदार्थहैं ॥ तिनसर्व जडपदार्थोंतैंजो उत्कृष्टहोवै ताकूं परमकहेहैं ॥ ऐसा परम जो पूर्वउक्तउपद्रष्टृत्वादिकविशेषणविशिष्ट आत्माहै ताकानाम परमात्माहै ॥ यहवार्त्ता ॥ (उत्तमः पुरुषस्त्वन्यःपरमात्मेत्युदाहृतः) इसवचनकरिकै श्रीभगवान् आपहीं आगेकथनकरैंगा ॥ इतनैंकहणेकरिकै श्रीभगवान्नैं यहअनुमान सूच नकऱ्याहै ॥ आत्मा देहइंद्रियादिकोंतैंभिन्नहै परमात्माहोणेतैं जोदेहइंद्रियादिकोंतैंभिन्ननहींहोवैहै सोपरमात्माभीनहींहोवैहै जैसे देहइंद्रियादिकहैं इति ॥ और किसीटीकाविषेतौं (उपद्रष्टानुमंताच) इसश्लोकका यहअर्थकऱ्याहै ॥ तहांपूर्व (सचयोयत्प्रभावश्च) इसवचनकरिकै क्षेत्रज्ञ तथाताक्षेत्रज्ञकाप्रभाव इनदोनोंकेवर्णनकरणेकीप्रतिज्ञाकरीथी ॥ तहां क्षेत्रज्ञकास्वरूपतौं पूर्ववर्णनकऱ्या ॥ अब इसश्लोककरिकै ताक्षेत्रज्ञकेप्रभावकावर्णनकरेहै ॥ (उपद्रष्टाइति) तहांपूर्वश्लोकविषे पुरुषका देहइंद्रियमनआदिकगुणोंकेसाथि जोसंगहै सोगुणसंगहीं इसपुरुषकेजन्मकाकारणहै यहवार्त्ता कथनकरीथी ॥ तहां सोगुणसंग च्यारिप्रकारकाहोवैहै ॥ एकतौं पुरुषकानिषेधकरिकै तिसगुणमात्रकीप्रधानताकरिकै गुणसंगहोवैहै ॥ और दूसरा तिसपुरुषकूंअंतरभूतकरिकै तिसगुणकीप्रधानताकरिकै गुणसंगहोवैहै ॥ और तीसरा पुरुषकी तथातिनगुणोंकी समप्रधानताकरिकै सोगुणसंगहोवैहै ॥ और चौथा तिनगुणोंकीअप्रधानताकरिकै तथातापुरुषकीप्रधानताकरिकै गुणसंगहोवैहैं ॥ तहां प्रथमगुणसंगविषेतौं देहइंद्रियमनआदिरूपगुणोंकेसंघातकूंहीं आत्मारूपकरिकैदेखताहुआ यहपुरुष भोक्ता कह्याजावैहै ॥ जैसे देहादिकोंकूंहीं आत्मामानणेहारे

चार्वाकादिकहैं ॥ और दूसरेगुणसंगविषेतौं तिनदेहइंद्रियादिरूपगुणोंकूंहींप्रधानहोणेतैं आत्माविषेवास्तवकर्तृत्वादिअभिमानकरिकै यहपुरुष कर्मकेफलका भर्त्ता कह्याजावैहै॥ जैसे नैयायिकआदिकहैं॥ और तीसरेगुणसंगविषेतौं आत्माकेसाथि तिनगुणोंकी समप्रधानताकरिकै गुणविषे स्थितभीभोक्तापणेकूं असंगभीआत्माविषे वस्त्रविषेभल्लातककेअंकोंकीन्यांई यहपुरुष मानताहुआ अनुमंता कह्याजावैहै ॥ जैसे सांख्यशास्त्रवालेपुरुषहैं ॥ और चौथेगुणसंगविषेतो सर्वप्रकारतै तिनगुणोंके धर्मोंका आत्माविषेप्रवेश नहींदेखताहुआ उदासीनबोधरूपताकरिकै तिनसर्वगुणोंकेप्रचारोंकूंदेखताहुआ यहपुरुष उपद्रष्टा कह्याजावैहै ॥ जैसे हमवेदांतीयोंका साक्षीआत्माहै ॥ तहां पूर्वकथनकऱ्येजे भोक्ता भर्त्ता अनुमंता उपद्रष्टा यहच्यारि गुणोंकेसंगवालेहैं ॥ तिनच्यारों गुणसंगीयोंविषे उपद्रष्टातौं उत्तमहै ॥ और अनुमंता मध्यमहै ॥ और भर्त्ता अधमहै ॥ और भोक्ता अधमतैअधमहै ॥ और जोचैतन्यदेव ॥ तिनगुणोंकेसंगतैं भोक्तादिभावकूंप्राप्तहुआहै ॥ सोईहींचैतन्यदेव जिसकालविषे तिनसर्वगुणोंकूंआपणेवशकरिकै क्रीडाकरेहै तिसकालविषे महेश्वर इसनामकरिकै कह्याजावैहै ॥ और जोचैतन्यदेव इसजगत्‌के उत्पत्तिस्थितिलयकाकर्त्ता प्रभु अंतर्यामीहै ॥ सोईहींचैतन्यदेव तिनसर्वगुणोंकापरित्यागकरिकैस्थितहुआ परमात्मा इसनामकरिकैभी कह्याजावैहै ॥ यद्यपि उपद्रष्टाभी गुणोंकापरित्यागकरिकै तिनगुणोंकासाक्षीरूपकरिकैस्थितहोवैहै ॥ तथापि संघातउपहित तिसीहींउपद्रष्टाकूं दूसरेसंघातकेप्रचारकाद्रष्टापणा हैनहीं ॥ और परमात्मादेवतौं सर्वसंघातोंकेप्रचारोंकाद्रष्टाहै ॥ यातैं सर्वतैंउत्कृष्टहोणेतैं यह परमआत्माहै ॥ इसीपरमात्माकूं (उत्तमःपुरुषस्त्वन्यःपरमात्मेत्युदाहृतः ॥ योलोकत्रयमाविश्यबिभर्त्यव्ययईश्वरः) इसश्लोककरिकै श्रीभगवान् आगेकथनकरेंगा ॥ तहां महेश्वर परमात्मा यहदोनोंभी गुणसंगीहींहैं ॥ यातैंयहअर्थसिद्धभया ॥ इसदेहविषे विद्यमान तथासर्वगुणोंकूंआपणेविषेलयकरिकैस्थित ऐसाजोसर्वगुणोंतैंरहित अखंड एकरस अद्वितीयआत्माहैं ॥ सोएकआत्मादेवहीं तिसगुणसंगकरिकै उपद्रष्टा अनुमंता भर्त्ता भोक्ता महेश्वर परमात्मा यहषट् प्रकारकाहोवैहै ॥ यहहीं इसक्षेत्रज्ञआत्माका प्रभावहै ॥ तहां अनुमंता भर्त्ता भोक्ता इनतीनरूपोंकरिकैतौं यहआत्मादेव बंधायमानहोवैहै ॥ और उपद्रष्टा महेश्वर परमात्मा इनतीनरूपोंकरिकैतौं यहआत्मादेव नित्यमुक्तएकअद्वितीयरूपहींहोवैहै इति ॥ २२ ॥ ❀ ॥ तहांपूर्व (सचयोयत्प्रभावश्च) इसवचनका व्याख्यानकऱ्या ॥ अर्थात् क्षेत्रज्ञकास्वरूप तथाताकाप्रभाव वर्णनकऱ्या ॥ अब (यज्ज्ञात्वाऽमृतमश्नुते) यहजोवचन पूर्वकथनकऱ्याथा ताका उपसंहारकरेहैं ॥

(मू० श्लो०) यएवंवेत्तिपुरुषंप्रकृतिंचगुणैःसह ॥ सर्वथावर्त्तमानोपिनसभूयोभिजायते ॥ २३ ॥ यः । एवम् । वेत्ति । पुरुषम् । प्रकृतिं । च । गुणैः । सह । सर्वथा । वर्त्तमानः । अपि । न । सः । भूयः । अभिजायते ॥ २३ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन जो

अधिकारीपुरुष इसपूर्वउक्तप्रकारतैं क्षेत्रज्ञपुरुषकूं तथा आपणेविकारों सहित अविद्यारूपप्रकृतिकूं जानेहै सोपुरुष सर्वप्रकारतैं वर्त्तमानहुआ भी पुनः नहीं जन्मकूंप्राप्तहोवैहै ॥ २३ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जोअधिकारीपुरुष इसपूर्वउक्तप्रकारकरिकै क्षेत्रज्ञनामापुरुषकूं जानेहै ॥ अर्थात् यहसर्वत्र व्यापकपरमात्मादेव मैंहूं याप्रकारतैं जोपुरुष इसक्षेत्रज्ञआत्माकूं गुरुशास्त्रकेउपदेशतैं साक्षात्कारकरेहै ॥ तथा जोपुरुष देहादिविकारोंसहित अविद्यारूपप्रकृतिकूंजानेहै ॥ अर्थात् यहदेहादिकविकारों सहित अविद्यारूपप्रकृति आत्मज्ञानकरिकैबाधितहोणेतैं मिथ्याभूतहींहै ॥ ताआत्मज्ञानकरिकै हमारा अज्ञान तथाताअज्ञानकार्यरूप प्रपंचदोनों निवृत्तहोइगएहैं ॥ इसप्रकारतै जोपुरुष तागुणसहितप्रकृतिकूंजानेहैं ॥ सोसत्त्ववेत्तापुरुष सर्वथावर्त्तमानहुआभी अर्थात् अतिप्रबलप्रारब्धकर्मकेवशतैं देवराजइंद्रकीन्यांई शास्त्रविधिकाउल्लंघनकरिकै वर्त्तमानहुआभीपुनःजन्मकूंप्राप्तहोतानहीं ॥ अर्थात् इसविद्वान्पुरुषकूं जिसशरीरविषेआत्मज्ञानकीप्राप्तिहुईहै ॥ तिसशरीरकेपातहुएतैं अनंतर सोतत्त्ववेत्तापुरुष पुनःद्वितियदेहकूंग्रहणकरैनहीं ॥ काहेतैं आविद्याकरिकैहीं इसपुरुषकूं पुनःजन्मकी प्राप्तिहोवैहै ॥ ब्रह्मविद्याकरिकै ताअविद्यारूपकारणका जबी नाशहोवैहै ॥ तबी ताअविद्याकेजन्मादिककार्योंकाभी अभावहोइजावैहै ॥ यहवार्त्ता ॥ पूर्व बहुतवार कथनकरिआयेहैं ॥ किंतु पुण्यपापकर्मोंकरिकैहीं इसपुरुषकूं पुनःजन्मकीप्राप्तिहोवैहै ॥ तेपुण्यपापकर्म इसतत्त्ववेत्तापुरुषके आत्मज्ञानकरिकै नाशहोइजावैहैं ॥ याकारणतैंभी तिसतत्त्ववेत्तापुरुषकूं पुनःजन्मकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ यहवार्त्ता ब्रह्मसूत्रोंविषे श्रीव्यासभगवान्नैंभी कथनकरीहै ॥ तहांसूत्रम् ॥ (तदधिगमउत्तरपूर्वाघयोरश्लेषविनाशौतद्व्यपदेशात्) ॥ अर्थ यह ॥ मैंब्रह्मरूपहूं इसप्रकारके आत्मसाक्षात्कारकेप्राप्तहुए इसतत्त्ववेत्तापुरुषके पूर्वलेपुण्यपापरूप सर्वसंचितकर्म नाशकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और तिसआत्मज्ञानतैंउत्तर कन्येहुएकर्मोंका तिसतत्त्ववेत्तापुरुषकूं स्पर्शहींनहींहोवैहै॥ यहवार्त्ता अनेकश्रुतिस्मृतियोंविषे कथनकरीहै इति ॥ ईहां (सर्वथावर्त्तमानोपि) इसवचनविषेस्थितजो अपि यहशब्दहै ॥ ताअपिशब्दकरिकै श्रीभगवान्नैं यहकैमुतिकन्यायसूचनकऱ्या ॥ अतिप्रबलप्रारब्धकर्मकेवशतैं देवराजइंद्रकीन्यांई शास्त्रविधिकाउल्लंघन करिकै वर्त्तमानहुआभी यहतत्त्ववेत्तापुरुष जबी पुनःजन्मकूंनहींप्राप्तहोवैहै ॥ तबी शास्त्रविधिकानहींउल्लंघनकरिकै आपणेश्रेष्ठआचारविषे वर्त्तमानहुआ सोतत्त्ववेत्तापुरुष पुनःजन्मकूंनहींप्राप्तहोवैहै याकेविषेक्याकहणाहै इति ॥ तहां देवराजइंद्र शास्त्रविधिकाउल्लंघनकरिकै जैसे विश्वरूपनामपुरोहितकूं तथाअनेकसंन्यासीयोंकूं हननकरताभयाहै ॥ सासर्ववार्ताआत्मपुराणकेद्वितीयअध्यायविषे हम विस्तारतैंनिरूपणकरिआयेहैं ॥ इति ॥ २३ ॥ ❀ ॥ तहां पूर्वकथनकऱ्येहुएफलसहितआत्मज्ञानविषे अधिकारीजनोंकेभेदकरिकै साधनोंकेविकल्पोंकूं अब श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) ध्यानेनात्मनिपश्यंतिकेचिदात्मानमात्मना ॥ अन्येसांख्येनयोगेनकर्मयोगेनचापरे ॥ २४ ॥ ध्यानेन । आत्मनि । पश्यंति । केचित् । आत्मानम् । आत्मना । अन्ये । सांख्येन । योगेन । कर्मयोगेन । च । अपरे ॥ २४ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन केईकअधिकारीजनतौं ध्यानकरिकैहीं आपणीबुद्धिविषे प्रत्यक्‌आत्माकूं ध्यानयुक्तअंतःकरण करिकै साक्षात्कारकरेहैं और दूसरेअधिकारीजनतौं सांख्य योगकरिकै आत्माकूं साक्षात्कारकरेहैं तथा अन्यकेईकअधिकारीजनतौं कर्मयोगकरिकै आत्माकूं साक्षात्कारकरेहैं ॥ २४ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ तहां इसलोकविषे च्यारिप्रकारकेअधिकारीजनहोवैहैं ॥ तहां एकअधिकारीजनतौं उत्तम होवैहैं ॥ और दूसरेअधिकारीजन मध्यमहोवैहैं ॥ और तीसरेअधिकारीजन मंद होवैहैं ॥ और चौथेअधिकारीजन मंदतर होवैहैं ॥ तिनच्यारोंविषे प्रथम उत्तमअधिकारीजनोंके आत्मज्ञानकेसाधनकूं श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥ (ध्यानेनइति) तहां देहादिकअनात्मपदार्थाकारविजातीयवृत्तियोंकेव्यवधानतैंरहित आत्माकारसजातीयवृत्तियोंकाप्रवाहरूप जोआत्मचिंतनहै ॥ जिसआत्मचिंतनकूं शास्त्रविषेनिदिध्यासनशब्दकरिकैकथनकऱ्याहै तथा जोआत्मचिंतन श्रवणमननकाफलरूपहैं ॥ तथा जिसआत्मचिंतनकरिकै देहादिकोंविषे आत्मत्वबुद्धिरूपविपरीतभावनाकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ तानिदिध्यासनरूप आत्मचिंतनकानाम ध्यानहै ॥ ऐसेध्यानकरिकैहीं केईकउत्तमअधिकारीजन आपणीबुद्धिविषे प्रत्यक्‌चेतनरूपआत्माकूं ताध्यानयुक्तशुद्धअंतःकरणकरिकै साक्षात्कारकरेहैं इति ॥ अब मध्यमअधिकारीजनोंके आत्मज्ञानकेसाधनकूं श्रीभगवान् कथनकरेहै (अन्येसांख्येनयोगेनइति) तहां पूर्वउक्त निदिध्यासनरूपध्यानतैं पूर्व भावी ऐसाजो श्रवणमननरूप आत्मचिंतनहै ॥ जो आत्मचिंतन नित्यअनित्यवस्तुकाविवेक वैराग्य शमदमादिषट्‌संपत् मुमुक्षुता इनच्यारिसाधनोंतैं उत्तर कऱ्याजावैहै ॥ तथा जो आत्मचिंतन यह त्रिगुणात्मकमायाकेपरिणामरूप सर्वअनात्मपदार्थ मिथ्याभूतहैं और तिनसर्वमिथ्यापदार्थोंकासाक्षीरूप नित्य विभु निर्विकार सत्य समस्तजडपदार्थोंकेसंबंधतैंरहित ऐसाजो प्रत्यक्‌चेतनआत्माहै सोमैंहूं इसप्रकारके वेदांतवाक्योंकेविचारकरिकैजन्यहै ॥ तथा जो आत्मचिंतन प्रमाणगतअसंभावनाका तथाप्रमेयगतअसंभावनाका निवर्त्तकहै ॥ ता श्रवणमननरूप आत्मचिंतनकानाम सांख्ययोगहै ॥ ऐसेसांख्ययोगकरिकै केईकमध्यमअधिकारीजन आपणीबुद्धिविषे तिसप्रत्यक्‌आत्माकूं ताध्यानकीउत्पत्तिद्वारा साक्षात्कारकरेहैं इति ॥ अब तीसरेमंदअधिकारीजनोंके आत्मज्ञानके साधनकूं श्रीभगवान् कहेहै ॥ (कर्मयोगेनचापरेइति) तहां फलकीइच्छातैंरहितहोइकै केवल ईश्वरअर्पणबुद्धिकरिकैकऱ्येहुए ऐसेजे तिसतिसवर्णआश्रमकेउचितअग्निहोत्रादिककर्महैं ॥ तिनकर्मोंकानाम कर्मयोगहै ॥ ऐसेकर्मयोगकरिकै केईकमंदअधिकारीजन आपणीबुद्धिविषे तिसप्रत्यक्‌

आत्माकूं अंतःकरणकीशुद्धि श्रवण मनन ध्यान इनच्यारोंकीउत्पत्तिद्वारा साक्षात्कारकरेहैं इति ॥ २४ ॥ ❀ ॥ अब चौथेमंदतरअधिकारीजनोंके आत्मज्ञानकेसाधनकूं श्रीभगवान् कथनकरेहैं ॥

(मू०श्लो०) अन्येत्वेवमजानंतःश्रुत्वान्येभ्यउपासते ॥ तेपिचातितरंत्येवमृत्युंश्रुतिपरायणाः ॥ २५ ॥ अन्ये । तु । एवम् । अजानंतः । श्रुत्वा । अन्येभ्यः । उपासते । ते । अपि । च । अतितरंति । एव । मृत्युम् । श्रुतिपरायणाः ॥२५॥ (इतिपदच्छेदः)॥

हेअर्जुन पुनः अन्यअधिकारीजनतौं पूर्वउक्तउपाय करिकै आत्माकूंनहींजानतेहुए अन्यगुरुवोंतैं श्रवणकरिकै आत्माकाचिंतनकरेहैं तेंअधिकारीजन भी श्रवणपरायणहुए इसमृत्युयुक्तसंसारकूं अवश्य अतिक्रमणकरेहै ॥ २५ ॥ (इतिपदार्थः)॥

॥ टीका ॥ ईहां (अन्येतु) इसवचनविषेस्थितजो तु यहशब्दहै ॥ सोतुशब्द पूर्वश्लोकविषेकथनकऱ्येहुए तीनप्रकारकेअधिकारीयोंतैं इनमंदतर अधिकारीयोंविषे विलक्षणताकेबोधनकरणेवासतैहै ॥ साविलक्षणतादिखावैहैं ॥ हेअर्जुन पूर्वश्लोकविषेकथनकऱ्येजे ध्यान सांख्ययोग कर्मयोग यह तीन उपायहैं ॥ तिनतीनों उपायोंविषे किसीभी उपायकरिकै आत्माकूंनहींजानतेहुएकेईकमंदतर अधिकारीजनतौं अन्यपरमकारुणिकआचार्योंतैं श्रवणकरिकै उपासनाकरेहैं ॥ अर्थात् तुम इसआत्माकूं इसप्रकारतैंचिंतनकरो इसप्रकारतैं तिनकृपालुआचार्योंकरिकै उपदेशकऱ्येहुए तथातिनगुरुवोंकेवचनोंविषे अत्यंतश्रद्धावालेहुए तिसीप्रकारतैं आत्माकूंचिंतनकरेहैं ॥ तेश्रुतिपरायणपुरुषभी अर्थात् आपणीबुद्धिकरिकै ताविचारविषेअसमर्थहुएभी अत्यंतश्रद्धावान्‌ताकरिकै तागुरुकेउपदेशश्रवणमात्रपरायणहुएभी मृत्युयुक्तइससंसारकूं अवश्यकरिकै अतिक्रमणकरेहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ ध्यानविषेप्रवृत्तिकीअतिशयतातैं तिनपुरुषोंकूं चित्तकीशुद्धिवासतै कर्मोंकीभीअपेक्षाहैनहीं ॥ और वेदउक्ततत्त्वविषेदृढनिश्चयतैं तिनपुरुषोंकूं असंभावनाकीनिवृत्तिवासतै श्रवणमननकीभीअपेक्षाहैनहीं इति ॥ ईहां (तेपि) इसवचनविषेस्थितजो अपि यहशब्दहै ॥ ताअपिशब्दकरिकै श्रीभगवान्‌नैं यहकैमुतिकन्याय सूचनकऱ्या ॥ जेपुरुष आप विचारकरणेविषेसमर्थनहींहैं किंतु अन्यगुरुवोंतैंश्रवणमात्रकरिकै आत्माकाचिंतनकरेहैं ॥ तेपुरुषभी जबी इसमृत्युयुक्तसंसारकूंअतिक्रमणकरेहैं ॥ तबी आप विचारविषेसमर्थपुरुष इसमृत्युयुक्तसंसारकूंअतिक्रमणकरेहैं याकेविषेक्याकहणाहै इति ॥ तहां आत्मज्ञानकरिकै जो कार्यसहितअज्ञानकीनिवृत्तिकरणीहै यहहीं तामृत्युयुक्तसंसारका अतिक्रमणहै इति ॥ ॥ २५ ॥ ❀ ॥ तहां अधिष्ठानब्रह्मकेआश्रितरहणेहारी तथाताब्रह्मकूंहींविषयकरणेहारी ऐसीजा अनिर्वचनीयअविद्याहै ॥ ताअविद्याकरिकैहीं यहसर्वसंसार उत्पन्नहुआहै ॥ यातैं ताअधिष्ठानब्रह्मकूंविषयकरणेहारी जा मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारकाआत्मज्ञानरूपब्रह्मविद्याहै ॥ ताब्रह्मविद्याकरिकै ताअविद्याकेनिवृत्तहुए

इसअधिकारीपुरुषकूं मोक्षकीप्राप्ति बनिसकैहै ॥ इसअर्थकेनिश्चयकरावणेवासतै इसत्रयोदशोअध्यायकीसमाप्तिपर्यंत श्रीभगवान्नैं संसारका तथातासंसार केनिवर्त्तकआत्मज्ञानका दोनोंका विस्तारतैंनिरूपणकरीताहै ॥ तहां (कारणंगुणसंगोऽस्यसदसद्योनिजन्मसु) यहजोवचन पूर्वकथनकऱ्याथा ॥ तिसवचनके अर्थकूंहीं अब श्रीभगवान् स्पष्टकरिकैनिरूपणकरेहै ॥

(मू० श्लो०) यावत्संजायतेकिंचित्सत्त्वंस्थावरजंगमम् ॥ क्षेत्रक्षेत्रज्ञसंयोगात्तद्विद्धिभरतर्षभ ॥ २६ ॥ यावत् । संजायते । किंचित् । सत्त्वम् । स्थावरजंगमम् । क्षेत्रक्षेत्रज्ञसंयोगात् । तत् । विद्धि । भरतर्षभ ॥२६॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेभरतवंश विषेश्रेष्ठअर्जुन जितना कोई स्थावरजंगमरूप वस्तु उत्पन्नहोवैहै तिससर्वकूं तूं क्षेत्रक्षेत्रज्ञदोनोंकेसंयोगतैंउत्पन्नहुआ जान ॥ २६ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन तीनलोकोंविषे कोईवस्तु स्थावररूप अथवा जंगमरूप उत्पन्नहोवैहै ॥ तिनसर्ववस्तुवोंकूं तूं क्षेत्रक्षेत्रज्ञदोनोंकेसंयोगतैंहीं उत्पन्नहुआ जान॥ तहां अविद्या तथाताअविद्याकाकार्यरूप जितनाकी जड अनिर्वचनीय भावअभावरूप दृश्यप्रपंचहै यहसर्व क्षेत्ररूपहै ॥ और ताक्षेत्रतैंविलक्षण तथाताक्षेत्रकाप्रकाशक तथा स्वप्रकाशपरमार्थसत् तथाअसंगउदासीन तथासर्वधर्मोंतैंरहित ऐसाजो अद्वितीयचैतन्यहै ताकानाम क्षेत्रज्ञहै ॥ ऐसे क्षेत्र क्षेत्रज्ञ दोनोंका जो मायाकेवशतैं परस्परअविवेकनिमित्तक सत्यअनृतमिथुनीकरणरूप मिथ्यातादात्म्यअध्यासहै ॥ यहहीं ताक्षेत्रक्षेत्रज्ञकासंयोगहै ॥ ऐसेक्षेत्रक्षेत्रज्ञकेसंयोगतैंहीं यहस्थावरजंगमरूपसर्वकार्य उत्पन्नहोवैहै ॥ इसप्रकारतैं तूं निश्चयकर ॥ याकहणेतैं यहअर्थसिद्धभया ॥ आपणेवास्तवस्वरूपकेअज्ञानतैंहीं यहसंसार प्रतीत होवैहै ॥ तास्वरूपकेज्ञानतैं यहसंसार नाशकूंहींप्राप्तहोवैहै ॥ जैसे स्वप्नादिकमिथ्यापदार्थ अधिष्ठानवस्तुकेयथार्थस्वरूपकेअज्ञानतैंहीं प्रतीतहोवैहै ॥ तास्वरूपकेज्ञानहुएतैं निवृत्तहोइजावैहै इति ॥ २६ ॥ ❀ ॥ इसप्रकार अविद्यारूपसंसारकूंकथनकरिकै अब तिससंसारकीनिवृत्तिकरणेहारीब्रह्मविद्याकेकथनकरणेवासतै (यएवंवेत्तिपुरुषम्) इसपूर्वउक्तवचनकेअर्थकूं श्रीभगवान् स्पष्टकरिकैनिरूपणकरेहै ॥

(मू० श्लो०) समंसर्वेषुभूतेषुतिष्ठंतंपरमेश्वरम् ॥ विनश्यत्स्वविनश्यंतंयःपश्यतिसपश्यति ॥ २७ ॥ समम् । सर्वेषु । भूतेषु । तिष्ठंतम् । परमेश्वरम् । विनश्यत्सु । अविनश्यंतम् । यः । पश्यति । सः । पश्यति ॥ २७ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन नाशवान् सर्वभूतोंविषे सम तथानिर्विकाररूपतैंस्थित तथाविनाशतैंरहित तथा परमेश्वररूप ऐसेआत्माकूं जोपुरुष देखैहै सोपुरुषहीं देखैहै ॥ २७ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन उत्पत्तिधर्मवाले जितनेंकी स्थावरजंगमप्राणीरूपभूतहैं ॥ कैसेंहैंतेसर्वभूत ॥ अनेकप्रकारकेजन्मादिकपरिणामस्वभाववत्ताकरिकै तथागुण
प्रधानभावकीप्राप्तिकरिकै विषमस्वभाववालेहैं ॥ इसकारणतैंहीं तेभूत अत्यंतचंचलहैं ॥ अर्थात् क्षणक्षणविषेपरिणामीहैं ॥ तापरिणामकूंनप्राप्तहोइकै एकक्षण
मात्रभी स्थितहोणेकूंसमर्थहैंनहीं ॥ इसीकारणतैंहीं तेसर्वभूत परस्पर बाध्यबाधकभावकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ इसीकारणतैंहीं तेसर्वभूत विनाशवान्‌हैं ॥ अर्थात् माया
गंधर्वनगरादिकोंकीन्यांई दृष्टनष्टस्वभाववालेहैं ॥ जोपदार्थ देखतेदेखतेहीं नष्टहोइजावैहैं ॥ सो पदार्थ दृष्टनष्टस्वभाववाला कह्याजावैहै ॥ ऐसे सर्वस्थावरजंगमरूप
भूतोंविषे आत्मादेव समहै ॥ अर्थात् सर्वत्र एकरूपहै तथासर्वदेहोंविषेएकहै ॥ तथा जोआत्मादेव तिनसर्वभूतोंविषे जन्मादिकपरिणामोंतैंरहितताकरिकै निर्वि
काररूपतैंस्थितहै ॥ तथा जोआत्मादेव परमेश्वरहै ॥ अर्थात् देहादिकसर्वजडवर्गकेप्रति सत्तास्फूर्तिकाप्रदाताहोणेतैं बाध्यबाधकभावतैंरहितहै ॥ तहां नाशहोणे
योग्यवस्तुकूंबाध्य कहेहैं ॥ और नाशकरणेहारेवस्तुकूं बाधक कहेहैं ॥ ऐसेबाध्यबाधकभावतैंरहितहै ॥ तथा सर्वदोषोंतैंरहितहै ॥ पुनःकैसाहैसोआत्मादेव
अविनाशीहै ॥ अर्थात् मायागंधर्वनगरादिकोंकीन्यांई दृष्टनष्टप्राय इससर्वद्वैतकेबाधहुएभी जोबाधकूंप्राप्तहोतानहीं ॥ तहांश्रुति ॥ (अविनाशीवा अरेऽयमात्मा)
॥ अर्थयह ॥ हेमैत्रेयी यहआत्मादेव नाशतैंरहितहै इति ॥ इसरीतिसैं सर्वप्रकारकरिकै इसजडप्रपंचतैंविलक्षण जोप्रत्यक्‌आत्माहै ॥ तिसप्रत्यक्‌आत्माकूं जो
अधिकारीजन वेदांतशास्त्ररूपचक्षुकरिकै सर्वजडवर्गतैंभिन्नकरिकैदेखेहै ॥ सोईहींअधिकारीजन आत्माकूंदेखेहै ॥ जैसे जाग्रत्‌केबोधकरिकै स्वप्नभ्रमकूंनिवृत्त
करताहुआ पुरुषहीं सम्यक्‌देखेहै ॥ और जोपुरुष इसप्रकारतैं आत्माकूंनहींदेखेहै ॥ सोअज्ञानीपुरुषतौं स्वप्नदर्शीपुरुषकीन्यांई भ्रांतिकरिकैविपरीतदेखताहुआभी
नहींहींदेखेहै ॥ काहेतैं जोजोभ्रमहोवैहै ॥ सोसोभ्रम अदर्शनरूपहींहोवैहै ॥ भ्रमविषे दर्शनरूपता संभवतीनहीं ॥ जैसे रज्जुकूंसर्परूपकरिकै देखताहुआभी भ्रांतपुरुष
यहदेखताहै याप्रकारतैंकह्याजावैनहीं ॥ किंतु यह नहींदेखताहै याप्रकारतैंहीं कह्याजावैहै ॥ काहेतैं ताकल्पितसर्पकाजोदर्शनहै सोदर्शन तारज्जुकाअदर्शनरूप
हींहै ॥ तारज्जुकेअदर्शनतैं सोसर्पकादर्शन भिन्ननहींहै ॥ यातैं तासर्पकूंदेखताहुआभी सोभ्रांतपुरुष नहींहींदेखेहै ॥ यातैंयहअर्थसिद्धभया ॥ इसप्रकारके सर्वउ
पाधियोंतैंरहित शुद्धआत्माकेदर्शनतैं साआत्माकाअदर्शनरूपअविद्या निवृत्तहोइजावैहै ॥ ताअविद्यारूपकारणकीनिवृत्तितैंअनंतर ताकेकार्यरूपसंसारकीभी निवृत्ति
होइजावैहै ॥ ऐसाआत्मज्ञान इसअधिकारीपुरुषनैं अवश्यकरिकैसंपादनकरणा इति ॥ तहां इसश्लोकविषे यद्यपि श्रीभगवान्‌नैं (आत्मानम्) याप्रकारका आत्मा
रूपविशेष्यकावाचकपद कथनकऱ्यानहीं॥तथापि जहां विशेषणवाचकपदहोवैहैं॥तहां विशेष्यवाचकपदकी अर्थतैंहींप्राप्तिहोवैहै॥ यहशास्त्रवेत्तापुरुषोंकानियमहै ॥
तेविशेषणवाचकपद ईहांभी (समं तिष्ठंतं परमेश्वरम् अविनश्यंतम्) यहविद्यमानहैं ॥ यातैंआत्मारूपविशेष्यकालाभ ईहां अर्थतैंहींप्राप्तहोवैहै॥ अथवा (परमेश्वरम्)

यहपदहीं ताआत्मारूपविशेष्यकावाचक जानणा इति ॥ २७ ॥ ❀ ॥ अब इसपूर्वश्लोकउक्तआत्मदर्शनकी श्रीभगवान् फलकरिकैस्तुतिकरेहै ॥ अधिकारीजनोंकी ताआत्मदर्शनविषे रुचिउत्पन्नकरणेवासतै ॥

(मू० श्लो०) समंपश्यन्हिसर्वत्रसमवस्थितमीश्वरम् ॥ नहिनस्त्यात्मनात्मानंततोयातिपरांगतिम् ॥ २८ ॥ समम् । पश्यन् । हि । सर्वत्र । समवस्थितम् । ईश्वरम् । न । हिनस्ति । आत्मना । आत्मानं । ततः । याति । परां । गतिम् ॥२८॥(इतिपदच्छेदः)॥

हेअर्जुन सर्वभूतोंविषे सम तथासमवस्थित तथाईश्वररूप ऐसेआत्माकूं देखताहुआ यहविद्वान्पुरुष जिसकारणतैं आत्माकरिकै आत्माकूं नहीं नहीं हननकरेहै तिसकारणतैं परम गतिकुं प्राप्तहोवैहै ॥ २८ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन स्थावरजंगमरूपसर्वभूतोंविषे जोआत्मा समहै ॥ अर्थात् सर्वत्रएकरूपहै ॥ तथा जोआत्मा समवस्थितहै ॥ अर्थात् जन्मतैं आदिलैके विनाशपर्यंत सर्वभावविकारोंतैंरहितहुआ स्थितहै ॥ तथा जोआत्मा ईश्वरहै ॥ अर्थात् सर्वप्राणीयोंकेप्रवृत्तिकाकारणहै ॥ इसप्रकारके पूर्वउक्तसर्वविशेषणोंकरिकै विशिष्ट जोआत्माहै तिसआत्माकूं देखताहुआ अर्थात् इसप्रकारकाआत्मादेव मैंहूं याप्रकारतैं शास्त्रदृष्टिकरिकै तिसआत्माकूंसाक्षात्कारकरताहुआ यहविद्वान्पुरुष जिसकारणतैं आपणेआत्माकरिकै आपणेआत्माकूं हननकरतानहीं ॥ तिसकारण तैं सोविद्वान्पुरुष परमगतिकूं प्राप्तहोवैहै ॥ और इसलोकविषे जितनेंकी अज्ञानीजनहैं ॥ तेसर्वहीआज्ञानीजन परमार्थतैंसत्रूप तथाएकअद्वितीयरूप तथाअकर्त्ताअभोक्तारूप तथापरमानंदरूप ऐसेआत्माकूं अस्तिभातिरूपवस्तुविषेभी नास्तिनभाति इसप्रकारकीप्रतीतिकरावणेविषेसमर्थ ऐसीअविद्याकरिकै आपहीं तिरस्कारकरतेहुए नहुएजैसाकरेहैं ॥ यातैं तेसर्वअज्ञानीजन ताआत्माकूं हननहींकरेहैं ॥ अथवा अविद्याकरिकै आत्मत्वरूपकरिकैग्रहणकऱ्याजो देहइंद्रियादिकोंकासंघातरूपआत्माहै ॥ तिससंघातरूपपुरातनआत्माकूं हननकरिकैपुण्यपापकर्मके वशतैं पुनः नवीनसंघातरूपआत्माकूं ग्रहणकरेहैं॥याकारणतैंभी तेअज्ञानीजन ताआत्माकूं हननहींकरेहैं ॥ यातैं दोनोंप्रकारतैं तेसर्वअज्ञानीजन आत्महत्यारेहींहै ॥ ऐसेआत्महत्यारेअज्ञानीजनोंकूं लक्ष्यकरिकैहीं यहशकुंतलाकावचनरूपस्मृति प्रवृत्तहुईहै ॥ तहांश्लोक ॥ (किंतेननकृतंपापंचौरेणात्मापहारिणा ॥ योऽन्यथासंतमात्मानमन्यथाप्रतिपद्यते) ॥ अर्थयह ॥ जोपुरुष सत् चित् आनंद विभु आत्माकूं असत् जड दुःख परिच्छिन्नरूपमानेहै ॥ तिसआत्माकेअपहरणकरणेहारे चौरपुरुषनें कौंनपाप नहींकऱ्याहै ॥ किंतु तिसपुरुषनें सर्वपापकरेहैं इति ॥ यहवार्त्ता श्रुतिविषेभीकथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ (असुर्यानामतेलोकाअंधेनतमसावृताः ॥ तांस्तेप्रेत्याभिगच्छंति येकेचात्महनोजनाः ॥) अर्थयह ॥ दंभदर्पादिकआसुरीसंपदावालेपुरुषोंकूंप्राप्तहोणेहारे तथा

अंधतमकरिकैआवृत्त ऐसेजे नरकादिकलोकहैं तिनलोकोंकूं तेपुरुष मरिकैप्राप्तहोवैहैं ॥ जेपुरुष आत्महनहैं ॥ तहां देहादिकअनात्मपदार्थोंविषे जेपुरुषआत्मअभिमानकरेहैं तिनपुरुषोंकानाम आत्महनहै इति ॥यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ जोपुरुष आत्माकूं गुरुशास्त्रकेउपदेशतैंसात्क्षाकारकरेहै ॥ सोपुरुष देहादिकअनात्मपदार्थोंविषे आत्मअभिमानकूं शुद्धआत्माकेदर्शनकरिकै नाशकरेहै ॥ यातैं आपणेवास्तवस्वरूपकेलाभतैं सोतत्त्ववेत्तापुरुष आपणेआपणे आत्माकूं आपणेआत्माकरिकै नाशकरतानहीं ॥ इसीकारणतैंहीं सोतत्त्ववेत्तापुरुष परागतिकूं प्राप्तहोवैहै ॥ अर्थात् कार्यसहितअविद्याकीनिवृत्तिपूर्वकपरमानंदकीप्राप्तिरूपमुक्तिकूं सोतत्ववेत्तापुरुष प्राप्तहोवैहै इति ॥ २८ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् शुभअशुभकर्मोंकूंकरणेहारे देहदेहविषे भिन्नभिन्नहीं आत्माहैं ॥ तथा तिसतिससुखदुःखादिरूप विचित्रफलके भोक्ताहोणेतैं तेआत्मा विषमस्वभाववालेभीहैं ॥ यातैं सर्वभूतोंविषेस्थित एकआत्माकूंसमदेखताहुआ यहपुरुष आपणेआत्माकरिकै आपणेआत्माकूं नहीहननकरेहै यहआपकावचन कैसेसंगतहोवैगा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहेहै ॥

(मू० श्लो०) प्रकृत्यैवचकर्माणिक्रियमाणानिसर्वशः ॥ यःपश्यतितथात्मानमकर्त्तारंसपश्यति ॥ २९ ॥ प्रकृत्या । एव । च । कर्माणि । क्रियमाणानि । सर्वशः । यः । पश्यति । तथा । आत्मानम् । अकर्त्तारं । सः । पश्यति ॥ २९ ॥ इतिपदच्छेदः)॥ हेअर्जुन मायारूपप्रकृतिनैं हीं सर्वप्रकारकरिकै सर्वकर्म करीतेहै इसप्रकार जोविवेकीपुरुष देखताहै तथा क्षेत्रज्ञआत्माकूं जो अकर्त्ता देखेहै सोईहींपुरुष सम्यक्देखताहै ॥ २९ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हे अर्जुन शरीरकरिकै तथामनकरिकै तथावाणीकरिकै आरंभकरणेयोग्य जेलौकिकवैदिककर्महैं ॥ तेसर्वकर्म सर्वप्रकारकरिकै प्रकृतिनैंहीं करीतेहैं ॥ अर्थात् ॥देहइंद्रियादिरूपसंघातकेआकारपरिणामकूंप्राप्तहुई तथासर्वविकारोंकाकारणरूपऐसीजा त्रिगुणात्मक भगवत्कीमायाहै ॥ तिसमायारूपप्रकृतिनैंहीं तेसर्व कर्म करीतेहैं ॥ सर्वविकारोंतैंशून्य क्षेत्रज्ञनामापुरुषनैं तेकर्म करीतेनहीं ॥ इसप्रकारतैं जो विवेकीपुरुष शास्त्ररूपचक्षुकरिकै देखेहै ॥ इसप्रकार तिसप्रकृतिरूपक्षेत्रनैं कऱ्येहुएजेकर्महैं ॥ तिनसर्वकर्मोंविषे जोपुरुष क्षेत्रज्ञआत्माकूं अकर्त्तारूपदेखेहै तथा सर्वउपाधियोंतैंरहितदेखेहै तथाअसंगदेखेहै तथासर्वत्रएकदेखेहै तथासर्वत्रसम देखेहै सोपुरुषहीं परमार्थदर्शीहोणेतैं देखताहै ॥ ऐसेआत्माकेस्वरूपकूंनजानणहारे सर्वअज्ञानीजन अंधहींहैं ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ जन्ममरणादिकविकार वालेक्षेत्रका तिसतिसविचित्रकर्मकाकर्त्तापणेकरिकै देहदेहविषे भेदहुएभी तथाविषमताहुएभी निर्विशेषअकर्त्ताआत्माकेभेदविषे तथाविषमताविषें किंचित्मात्रभी प्रमाणनहींहै ॥ जैसे घटमठादिकसर्वउपाधियोंतैंरहित आकाशकेभेदविषे तथाविषमताविषे किंचित्मात्रभी प्रमाणनहींहै तैसे निर्विशेषअकर्त्ता आत्माके भेद

विषे तथाविषमताविषे किंचित्मात्रभी प्रमाणनहींहै ॥ यहवार्त्ता पूर्व अनेकवार प्रतिपादनकरिआयेहैं ॥ इति ॥ २९ ॥ ❀ ॥ तहांपूर्व आपाततैं क्षेत्रके भेददर्शनका कथनकरिकै क्षेत्रज्ञकेभेददर्शनका निषेधकऱ्या ॥ अब श्रीभगवान् तिसक्षेत्रकेभेददर्शनकूंभी मायिकत्वरूपहेतुकरिकै निषेधकरेहै ॥

(मू० श्लो०) यदाभूतपृग्भावमेकस्थमनुपश्यति॥ततएवचविस्तारंब्रह्मसंपद्यतेतदा॥ ३० ॥ यदा। भूतपृथग्भावम्। एकस्थम्। अनुपश्यति। ततः। एव। च विस्तारं। ब्रह्म। संपद्यते। तदा ॥ ३० ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन यहअधिकारीपुरुष जिसकालविषे भूतोंकेपृथक्भावकूं एकआत्माविषेस्थित देखताहै तथा तिसएकआत्मातैं हीं तिनभूतोंके विस्तारकूं देखताहै तिसकालविषे एकब्रह्महीं होवैहै" ॥ ३० ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन यहअधिकारीपुरुष जिसकालविषे स्थावरजंगमरूप सर्वजडभूतोंके परस्परभिन्नत्वरूप पृथक्भावकूं एकविषेस्थित देखताहै ॥ अर्थात् एकहींसत्रूपअधिष्ठानआत्माविषे तिसभूतोंकेपृथक्भावकूं कल्पितदेखताहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जोजोवस्तु कल्पितहोवैहै सोसोकल्पितवस्तु अधिष्ठानतैंभिन्नहोवै नहीं ॥ जैसे रज्जुविषेकल्पित सर्पदंडादिक तिसरज्जुरूप अधिष्ठानतैंभिन्नहोवैनहीं ॥ तथा जैसे कनकविषेकल्पित कुंडलकंकणादिकभूषणतिसकनकतैंभिन्नहोवै नहीं ॥ तैसे सत्रूपआत्माविषेकल्पित यहसर्वभूतोंकापृथक्भावभी तिसअधिष्ठानआत्मातैं भिन्नहैनहीं ॥ इसप्रकार गुरुशास्त्रकेउपदेशतैंअनंतर जोपुरुष आपणे स्वरूपकाविचारकरेहै ॥ अर्थात् यहसर्वजगत् आत्मारूपहीं है आत्मातैंभिन्नसत्तावाला यहजगत् नहींहै ॥ इसप्रकारतैं जोपुरुष विचारकरिकैदेखेहै ॥ इस प्रकार तिसअधिष्ठानआत्मातैं सर्वभूतोंकेअपृथक्हुएभी जोपुरुष तिसएकआत्मातैंहीं मायाकेवशतैं तिनसर्वभूतोंकेविस्तारकूंतथापृथक्भावकूं स्वप्नमायाकीन्यांई विचारकरिकैदेखेहै॥ तिसकालविषे सजातीयभेददर्शनकेअभावतैं सर्वअनर्थोतैंशून्य एकब्रह्मरूपहींहोवैहै ॥ यहवार्त्ता श्रुतिविषेभीकथनकरीहै ॥ तहांश्रुति॥ (यस्मिन्सर्वाणिभूतान्यात्मैवाभूद्विजानतः ॥ तत्रकोमोहःकःशोकएकत्वमनुपश्यतः ॥) अर्थयह ॥ जिसज्ञानअवस्थाविषे इसविद्वान्पुरुषकूं स्थावरजंगमरूपसर्वभूत आपणाआत्मारूपहींहोतेभयेहैं ॥ तिसज्ञानअवस्थाविषे आत्माकेएकअद्वितीयभावकूंदेखणेहारेतिसतत्त्ववेत्तापुरुषकूं शोक तथामोह कदाचित्भीहोवैनहीं इति॥ तहां (प्रकृत्यैवचकर्माणि) इसपूर्वश्लोकविषेतौं श्रीभगवान्नैं क्षेत्रज्ञआत्माकेभेदका निषेधकऱ्याथा॥ और (यदाभूतपृथग्भावम्) इसश्लोकविषेतौं श्रीभगवान्नैं क्षेत्ररूपआत्मपदार्थोंकेभेदकाभी निषेधकऱ्याहै ॥ इतनीं इनदोनोंश्लोकोंविषे विशेषताहै इति ॥ ३० ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् आत्माकूं स्वभावतैं

अकर्त्तापणा हुएभीशरीरकासंबंधरूपउपाधिकरिकै कर्त्तापणा होवैंगा॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकूंनिवृत्तकरताहुआ श्रीभगवान् (यःपश्यतितथात्मानमकर्त्तारंसपश्यति) इसपूर्वउक्तवचनकेअर्थकूं अब स्पष्टकरिकैवर्णनकरेहै ॥

अनादित्वान्निर्गुणत्वात्परमात्मायमव्ययः ॥ शरीरस्थोपिकौंतेयनकरोतिनलिप्यते ॥ ३१ ॥ अनादित्वात् । निर्गुणत्वात् । परमात्मा । । अयम् । अव्ययः । शरीरस्थः । अपि । कौंतेय । न । करोति । न । लिप्यते ॥३१॥ (इतिपदच्छेदः)॥ हेअर्जुन अनादिहोणेतैं तथा निर्गुणहोणेतैं यह परमात्मा अव्ययहै ऐसाआत्मा इसशरीरविषेस्थित हूआ भी नहीं करेहै नहीं लिपायनमाहोवैहै ॥ ३१ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन परमेश्वरतैंअभिन्नहोणेतैं परमात्मारूप जोयह अपरोक्ष प्रत्यकूआत्माहै ॥ सोयहआत्मा अव्ययहै ॥ तहां जन्ममरणादिकविकारोंकानाम व्ययहै ॥ ताविकाररूपव्ययकूं जोनहींप्राप्तहोवैहै ताकानाम अव्ययहै ॥ अर्थात् जन्ममरणादिकसर्वविकारोंतैंरहितवस्तुकानाम अव्ययहै ॥ सोव्ययदोप्रकारकाहोवैहै ॥ एकतौं धर्मीकेस्वरूपकूंहीं उत्पत्तिवालाहोणेतैं व्ययहोवैहै ॥ औरदूसरा ताधर्मीकेस्वरूपकीअनुत्पत्तिहुएभी ताकेधर्मोंकूं उत्पत्तिवालाहोणेतैं व्यय होवैहै ॥ तहां श्रीभगवान् आत्माविषे प्रथमव्ययका निषेधकरेहै (अनादित्वात्इति) तहां पूर्व असत्त्वअवस्थाकानाम आदिहै ॥ जैसे घटादिकपदार्थोंकी आपणीउत्पत्तितैंपूर्व जा असत्त्वअवस्थाहै ॥ साअसत्त्वअवस्थाहीं तिनघटादिकोंकी आदिहै ॥ साआदि जिसवस्तुकीनहींहोवै तावस्तुकानाम अनादिहै ॥ ऐसाअनादि सर्वकालविषेसत्यआत्माहै ॥ ऐसाअनादिहोणेतैंहीं यहआत्मादेव कारणकेअभाववालाहोणेतैं जन्मकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ काहेतैं जोवस्तु तिसआदिवालाहोवैहै ॥ तिसवस्तुकाहीं जन्महोवैहै ॥ जैसे घटादिकपदार्थ तिसआदिवालेहोणेतैं जन्मकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और आत्माकी साआदिहैनहीं ॥ यातैं आत्माका जन्मभीहोवैनहीं ॥ और ताजन्मतैंपश्चात्हीं मरणपर्यंत सर्वभावविकार प्राप्तहोवैहैं ॥ ताजन्मरूपआदिविकारकेअभावहुए इसआत्मादेवकूं तेमरणपर्यंत सर्वभावविकारभी प्राप्तहोवैनहीं ॥ यातैं यहआत्मादेव आपणेस्वरूपतैं तिसजन्मादिविकाररूपव्ययकूं प्राप्तहोवैनहीं ॥ तहांश्रुति ॥ (नतस्यकश्चिज्जनितानचाधिपः॥) अर्थयह ॥ तिसआत्मादेवका कोईभीउत्पन्नकरणेहाराकारण नहींहै ॥ तथा तिसआत्मादेवका कोईभीअधिष्ठाता नहींहैइति ॥ अब दूसरेव्ययका निषेध करेहैं (निर्गुणत्वात्इति) हेअर्जुन यहआत्मादेव सर्वधर्मोंतैंरहितहोणेतैंभी अव्ययहै ॥ काहेतैं इसलोकविषे जितनेंकी रूपरसादिकधर्महैं ॥ तिनसर्वधर्मोंका आपणेधर्मीकेसाथि तादात्म्यहींहोवैहै यातैं तेरूपादिकधर्म आपणेधर्मीकूं विकारभावकीनहींप्रातिकरिकै उत्पन्न वानाश होवैंनहीं ॥ किंतु आपणेधर्मीकूं

विकारभावकीप्राप्तिकरिकैहीं तेधर्म उत्पन्नहोवैहैं तथानष्टहोवैहैं ॥ और यहआत्मादेवतौं तिनसर्वधर्मौंतैंरहितहै ॥ यातैं यह आत्मादेव तिनधर्मोंकेव्यनकारिकै भी व्ययकूं प्राप्तहोवैनहीं ॥ तहांश्रुति ॥ (अविनाशीवाअरेऽयमात्मानुच्छित्तिधर्मा) अर्थयह ॥ हेमैत्रेयी यहआत्मादेव स्वरूपतैंभी नाशादिकविकारोंतैंरहितहै ॥ तथा धर्मोंकेनाशादिकविकारोंकरिकैभी नाशादिकविकारोंकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ जिसकारणतैं यहआत्मादेव सर्वधर्मौंतैंरहितहै इति ॥ हेअर्जुन जिसकारणतैं यहआत्मादेव जन्म अस्ति वृद्धि विपरिणाम अपक्षय विनाश इनषट्भावविकारोंतैंरहितहै इसकारणतैं यहआत्मादेव आध्यासिकसंबंधकरिकै इसशरीरविषेस्थितहुआभी तिसशरीरके प्रवृत्तहुएभी यहआत्मादेव किंचित्मात्रभी करतानहीं ॥ जैसे आध्यासिकसंबंधकरिकै जलविषेस्थितहुआभी सूर्य ताजलकेचलायमानहुएभी चलायमानहोवैनहीं ॥ तैसे आध्यासिकसंबंधकरिकै इसशरीरविषेस्थितहुआभी यहआत्मादेव ताशरीरकेप्रवृत्तहुएभी किंचित्मात्रभी करतानहीं ॥ हेअर्जुन जिसकारणतैं यहआत्मादेव किसीभी लौकिकवैदिककर्मकूं करतानहीं ॥ तिसकारणतैं यहआत्मादेव किसीभीकर्मकेफलकरिकै लिपायमानहोवैनहीं ॥ काहेतैं इसलोकविषे जोजोपुरुष जिसजिसशुभअशुभकर्मकूंकरेहै ॥ सोसोपुरुषहीं तिसतिसकर्मके सुखदुःखरूपफलकरिकैलिपायमानहोवैहै ॥ तिसतिसकर्मकूंनहींकरताहुआपुरुष तिसतिसकर्मकेफलकारिकैलिपायमानहोवैनहीं ॥ और यहआत्माभीकर्मकूंकरतानहीं ॥ यातैं यहआत्मादेव किसीभीकर्मकेफलकरिकै लिपायमानहोवैनहीं ॥ तहां (इच्छाद्वेषःसुखंदुःखम्) इत्यादिकवचनकारिकै तिनइच्छाद्वेषादिकोंविषे क्षेत्रकाहींधर्मपणा कथनकऱ्याहै ॥ और (प्रकृत्यैवचकर्माणिक्रियमाणानि) इसवचनकरिकै सर्वकर्मोंविषे मायाकाहींकार्यपणा कथनकऱ्याहै ॥ असंगआत्माका कोईधर्मनहींहै तथाकोईकार्यनहींहै॥ याकारणतैंहीं परमार्थदर्शीविद्वान्पुरुषोंकूं सर्वकर्मोंकेअधिकारकाअभाव पूर्वकथनकरिआयेहैं ॥ इतनैंकरिकै आत्माविषे सर्वधर्मौंतैंरहितपणाकथनकरिकै स्वगतभेदभी निवृत्तकऱ्या ॥ और (प्रकृत्यैवचकर्माणि) इसश्लोकविषेतौं पूर्व सजातीयभेद निवृत्तकऱ्याथा ॥ और (यदाभूतपृथग्भावम्) इसश्लोकविषेतौं पूर्व विजातीयभेद निवृत्तकऱ्याथा ॥ और (अनादित्वान्निर्गुणत्वात्) इसश्लोकविषेतौं स्वगतभेद निवृत्तकऱ्याहै ॥ यातैं सजातीयभेद विजातीयभेद स्वगतभेद इनतीनभेदोंतैंरहितहोणेतैं अद्वितीयब्रह्मरूपहीं यहआत्माहै यहअर्थसिद्धभया इति ॥ तहां समानजातिवालेपदार्थोंका जो परस्परभेदहै ताकानाम सजातीयभेदहै ॥ जैसे एकवृक्षविषे दूसरेवृक्षकाभेदहै ॥ और विरुद्धजातिवालेपदार्थोंका जो परस्परभेदहै ताकानाम विजातीयभेदहै ॥ जैसे तिसीवृक्षविषे पाषाणकाभेदहै ॥ और एकहींवस्तुविषे आपणेअवयवोंकरिकैजोभेदहै ताकानाम स्वगतभेदहै ॥ जैसे तिसएकहींवृक्षविषे शाखा पत्र पुष्प फल इत्यादिक अवयवोंकरिकैभेदहै ॥ और (एकोदेवःसर्वभूतेषुगूढः) यहश्रुति सर्वभूतोंविषे एकहींआत्मा कहेहै ॥ ताआत्माकेसमानजातिवाला दूसराकोई आत्माहैनहीं ॥ यातैं आत्माविषे सजा

तीयभेद संभवैनहीं ॥ और (अतोऽन्यदार्तम्) यहश्रुति आत्मातैंभिन्नसर्वजगत्कूंकल्पितकहेहै ॥ और कल्पितवस्तुकी अधिष्ठानतैंभिन्नसत्ताहोवैनहीं ॥ यातैं आत्माविषे विजातीयभेदभी संभवैनहीं ॥ और (निष्कलम् निर्गुणम् निष्क्रियम् शांतम्) यहश्रुति आत्माकूं निरवयव निर्गुण निष्क्रिय कहेहै ॥ यातैं आत्माविषे स्वगतभेदभी संभवैनहीं इति ॥ ३१ ॥ ❋ ॥ तहां शरीरविषेस्थितहुआभी यहआत्मादेव आप असंगहोणेतैं तिसशरीरकेकर्मोंकरिकै लिपायमानहोतानहीं ॥ यहअर्थ पूर्वश्लोकविषे कथनकऱ्या ॥ अब श्रीभगवान् तिसपूर्वउक्तअर्थविषे दृष्टांतकूंकथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) यथासर्वगतंसौक्ष्म्यादाकाशंनोपलिप्यते ॥ सर्वत्रावस्थितोदेहेतथात्मानोपलिप्यते ॥ ३२ ॥ यथा । सर्वगतम् । सौक्ष्म्यात् । आकाशम् । न । उपलिप्यते । सर्वत्र । अवस्थितः । देहे । तथा । आत्मा । न । उपलिप्यते ॥ ३२ ॥ (इतिप०) ॥

हेअर्जुन जैसे सर्वत्रव्यापकभी आकाश असंगस्वभाववालाहोणेतैं नहीं लिपायमानहोवैहै तैसे सर्व देहोंविषे स्थितहुआभी यह आत्मादेव असंगस्वभाववालाहोणेतैं नहीं लिपायमानहोवैहै ॥ ३२ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जैसे घटमठतैंआदिलेके जितनैंकी दुष्ट तथाअदुष्ट मूर्तद्रव्यहैं ॥ तिनसर्वद्रव्योंविषे अंतर तथा बाह्यव्याप्यकरिकैवर्त्तमानहुआभी यह आकाश सूक्ष्महोणेतैं अर्थात् असंगस्वभाववालाहोणेतैं तिनमूर्तद्रव्योंके सुगंध दुर्गंध वर्षा आतप अग्नि धूम रज पंक इत्यादिकगुणदोषोंकरिकै लिपायमान होतानहीं ॥ तैसे देव मनुष्य पशु इत्यादिकऊचनीचसर्वदेहोंविषे अंतर बाह्य सर्वत्रव्याप्यकरिकैस्थितहुआभी यहआत्मादेव असंगस्वभाववालाहोणेतैं तिनदेहादिकत शुभअशुभकर्मोंकरिकै लिपायमानहोतानहीं ॥ तहांश्रुति ॥ (असंगोनहिसज्जते) ॥ अर्थयह ॥ यह आत्मादेव असंगहोणेतैं किसीभीवस्तुकेसाथि संबंधकूंप्राप्तहोवैनहीं इति ॥ ३२ ॥ ❋ ॥ किंवाइसआत्मादेवविषे केवल असंगतारूपहेतुतैंहीं अलेपतानहींहै ॥ किंतु प्रकाशकत्वरूपहेतुतैंभी इसआत्मादेवविषे सआलेपताहै ॥ इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् दृष्टांतकरिकैकथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) यथाप्रकाशयत्येकःकृत्स्नंलोकमिमंरविः ॥ क्षेत्रंक्षेत्रीतथाकृत्स्नंप्रकाशयतिभारत ॥ ३३ ॥ यथा । प्रकाशयाति । एकः । कृत्स्नम् । लोकम् । इमम् । रविः । क्षेत्रम् । क्षेत्री । तथा । कृत्स्नम् । प्रकाशयाति । भारत ॥ ३३ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥

हेअर्जुन जैसे एकहीं सूर्य इस सर्व लोककूं प्रकाशकरेहै तैसे क्षेत्रज्ञनामाआत्मा इससर्व क्षेत्रकूं प्रकाशकरेहैं ॥ ३३ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जैसे एकहींसूर्य इसरूपवान्देहादिकसर्ववस्तुवोंकूं प्रकाशकरेहै ॥ परंतु तिनप्रकाश्यरूपदेहादिकवस्तुवोंके धर्मोंकरिकै सोसूर्य लिपायमानहो

तानहीं ॥ तथा तिनप्रकाश्यरूपदेहादिकवस्तुवोंकेभेदकरिकै सोसूर्यभेदकूंभी प्राप्तहोतानहीं ॥ तैसे सोएकहीक्षेत्रज्ञआत्मा पूर्वउक्तसर्वक्षेत्रकूं प्रकाशकरैहै ॥ इस कारणतैंहीं सोक्षेत्रज्ञआत्मा तिसप्रकाश्यरूपक्षेत्रकेधर्मोंकरिकै लिपायमानहोवैनहीं ॥ तथा तिसप्रकाश्यरूपक्षेत्रकेभेदकरिकै सोक्षेत्रज्ञआत्मा भेदकूंप्राप्तहोवैनहीं ॥ इतनैंकहणेकरिकै श्रीभगवान्नैं यहअनुमानसूचनकऱ्या ॥ क्षेत्रज्ञआत्मा क्षेत्रकेधर्मोंकरिकैलिपायमानहोवैनहीं तथाताक्षेत्रज्ञकेभेदकरिकैभेदकूंप्राप्तहोवैनहीं तिसक्षे त्रकाप्रकाश होणेतैं ॥ जो जिसवस्तुकाप्रकाशकहोवैहै ॥ सो तिसप्रकाश्यवस्तुकेधर्मोंकरिकैलिपायमानहोवैनहीं तथातिसप्रकाश्यवस्तुभेदकरिकैभीभेदकूंप्राप्तहोवै नहीं ॥ जैसेसूर्यहै इति ॥ किंवा क्षेत्रज्ञआत्मा क्षेत्रकेधर्मोंकरिकैलिपायमाननहींहोवैहै यहवार्त्ताकेवलअनुमानप्रमाणकरिकैहीं सिद्धनहींहै ॥ किंतु ॥ साक्षात्श्रु तिभगवतीभी इसअर्थकूं कथनकरैहै ॥ तहांश्रुति ॥ (सूर्योयथासर्वलोकस्यचक्षुर्नलिप्यतेचाक्षुषैर्बाह्यदोषैः ॥ एकस्तथासर्वभूतांतरात्मानलिप्यतेलोकदुःखेन बाह्यः ॥) अर्थयह ॥ जैसे सर्वलोककाचक्षुरूपसूर्य चक्षुके विषयरूप बाह्यपदार्थोंकेदोषोंकरिकै लिपायमानहोवैनहीं ॥ तैसे सर्वपदार्थोंकाप्रकाशकरणेहारा तथादेहा दिकसंघाततैं भिन्न ऐसाजो सर्वभूतोंकाअंतरआत्माहै ॥ सोएकअद्वितीयआत्माभीप्रकाश्यरूपदेहादिकोंकेदुःखोंकरिकै लिपायमानहोवैनहींइति ॥ ३३ ॥ ❀ ॥

अबश्रीभगवान् इसत्रयोदशेअध्यायकेअर्थका फलसहित उपसंहारकरैहै ॥

(मू० श्लो) क्षेत्रक्षेत्रज्ञयोरेवमंतरंज्ञानचक्षुषा ॥ भूतप्रकृतिमोक्षंचयेविदुर्यांतितेपरम् ॥ ३४ ॥ इतिश्रीमद्भग०सूपनि०ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रेश्रीकृष्णार्जुनसंवादेक्षेत्रक्षेत्रज्ञनिर्देशयोगोनामत्रयोदशोध्यायःस० ॥१३॥ क्षेत्रक्षेत्रज्ञयोः । एवम् । अंतरम् । ज्ञानचक्षुषा । भूतप्रकृतिमोक्षं । चँ । ये । विदुः । यांति । ते । परम् ॥ ३४ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन जेपुरुष क्षेत्रक्षेत्रज्ञदोनोंके विल क्षणताकूं पूर्वउक्तप्रकारतैं ज्ञानरूपचक्षुकरिकै जानतेहैं तथा भूतोंके कारणरूपमायाकेअत्यंताभावकूं जानतेहैं तेअधिकारीपुरुष कैवल्यमुक्तिकुं प्राप्तहोवैहैं ॥ ३४ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन पूर्वकथनकऱ्याजोक्षेत्रहै तथाक्षेत्रज्ञहै ॥ तिनदोनोंके विलक्षणताकूं जेपुरुष ज्ञानरूपचक्षुकरिकै जानतेहैं अर्थात् यहक्षेत्रतौ जडहै तथाकर्त्ताहै तथाविकारीहै तथापरिच्छिन्नहै॥और यहक्षेत्रज्ञआत्मातौ चेतनहै तथाअकर्त्ताहै तथाअविकारीहै तथाअपरिच्छिन्नहै ॥इसप्रकारकी दोनोंकीविलक्षणताकूं जेअधि कारीपुरुष गुरुशास्त्रके उपदेशजन्यआत्मज्ञानरूपचक्षुकरिकै जानतेहैं ॥ तथाजेअधिकारीपुरुष भूतप्रकृतिकेमोक्षकूं जानतेहैं ॥ तहां आकाशादिकसर्वभूतों काकारणरूप जा माया अविद्या अज्ञान इत्यादिकनामोंवाली परमेश्वरकीशक्तिहै ॥ जिसमायाशक्तिकूं (मायांतुप्रकृतिंविद्यात्) इत्यादिकश्रुतियां कथनकरैहैं ॥

तामायाशक्तिकानाम भूतप्रकृतिहै ॥ ताभूतप्रकृतिकी जा मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारकी परमार्थभूतआत्मविद्याकरिकै आत्यंतिकनिवृत्तिहै ताकानाम भूतप्रकृतिमोक्षहै ॥ ऐसेभूतप्रकृतिमोक्षकूंभी जेअधिकारीपुरुष तिसज्ञानरूपचक्षुकरिकै जानतेहैं ॥ तेअधिकारीजनहीं परमार्थआत्मवस्तुस्वरूप कैवल्यमुक्तिकूंप्राप्तहोवैहै ॥ ऐसी कैवल्यमुक्तिकूंप्राप्तहोइके तेअधिकारीजन पुनःदेहकूंग्रहणकरैंनहीं ॥ यातैंयहअर्थसिद्धभया ॥ जोपुरुष पूर्वउक्तअमानित्वादिकसाधनोंकरिकैसंपन्नहै ॥ तथा पूर्वउक्त क्षेत्रक्षेत्रज्ञदोनोंके विलक्षणताज्ञानवालाहै ॥ तिसअधिकारीपुरुषकूंहीं सर्वअनर्थोंकीनिवृत्तिकरिकै परमपुरुषार्थकीप्राप्तिहोवैहै ॥ यातैं परमपुरुषार्थकीइच्छावान् पुरुषनैं तेअमानित्वादिकसाधन अवश्यकरिकैसंपादनकरणे ॥ तथा सोक्षेत्रक्षेत्रज्ञदोनोंकाविवेकज्ञान अवश्यकरिकैसंपादनकरणा इति ॥ ३४ ॥ ❀ ॥ इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यश्रीस्वामिउद्धवानंदगिरिपूज्यपादशिष्येण स्वामिचिद्घनानंदगिरिणा विरचितायां प्राकृतटीकायां गीतागूढार्थदीपिकाख्यायांत्रयोदशोऽध्यायःसमाप्तः ॥ १३ ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥

इति त्रयोदशोऽध्यायःसमाप्तः ॥ १३ ॥



ॐश्रीगणेशायनमः ॥ ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥ अथ चतुर्दशाऽध्यायप्रारंभः ॥ तहां पूर्वत्रयोदशेअध्याय विषे (यावत्संजायतेकिंचित्सत्त्वंस्थावरजंगमम् ॥ क्षेत्रक्षेत्रज्ञसंयोगात्तद्विद्धिभरतर्षभ) इसश्लोककरिकै श्रीभगवान्नैं क्षेत्रक्षेत्रज्ञदोनोंकेसंयोगतैं सर्वस्थावरजंगम भूतोंकीउत्पत्ति कथनकरीथी॥ तहां ईश्वरकूंनहींअंगीकारकरणेहारे निरीश्वरसांख्यमतकाखंडनकरिकै ताक्षेत्रक्षेत्रज्ञकेसंयोगकूंईश्वरकेआधीनपणा अवश्यकरिकैकह्या चाहिये ॥ तथा तिसत्रयोदशेअध्यायविषे (कारणंगुणसंगोऽस्यसदसद्योनिजन्मसु) इसवचनकरिकै श्रीभगवान्नैं गुणोंकेसंगकूंहीं जन्मकाकारण कह्याथा ॥ तहां किसगुणविषे किसप्रकारकरिकै संगहोवैहै ॥ तथा तेगुण कौंनहैं ॥ तथा तेगुण किसप्रकारकरिकै इसजीवकूंबंधायमानकरेहैं ॥ यहअर्थभी अवश्यकरिकैकह्या चाहिये ॥ तथा (भूतप्रकृतिमोक्षंचयेविदुर्यांतितेपरम्) इसवचनकरिकै श्रीभगवान्नैं भूतप्रकृतिकेमोक्षका कथनकऱ्याथा ॥ तहां भूतप्रकृतिनामवालेसत्त्वादिकगुणोंतैं इसअधिकारीपुरुषका किसप्रकारकरिकैमोक्षहोवैहै ॥ तथातिसमुक्तहुएपुरुषकेकौंनलक्षणहैं ॥ यहअर्थभी अवश्यकरिकैकह्याचाहिये ॥ इससर्वअर्थकूं विस्तारतैं कहणेवासतैं श्रीभगवान्नैं यहचतुर्दशअध्याय प्रारंभकरीताहै ॥ तहां श्रोतापुरुषोंकीरुचिउत्पन्नकरणेवासते श्रीभगवान् आगेवक्ष्यमाणअर्थकी दोश्लोकोंकरिकै स्तुतिकरताहुआ कहैहै ॥

(मू० श्लो०) श्रीभगवानुवाच ॥ परंभूयःप्रवक्ष्यामिज्ञानानांज्ञानमुत्तमम् ॥ यज्ज्ञात्वामुनयःसर्वेपरांसिद्धिमितोगताः ॥ १ ॥

परं। भूयः। प्रवक्ष्यामि। ज्ञानानां। ज्ञानम्। उत्तमं। यत्। ज्ञात्वा। मुनयः। सर्वे। परां। सिद्धिम्। इतः। गताः ॥ १ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन ज्ञानसाधनोंकेमध्यमैं उत्तम तथाश्रेष्ठ ऐसेज्ञानसाधनकूं मैंभगवान् पुनःभी तुमारेप्रति कथनकरताहूं जिंससाधनकूं अनुष्ठानकरिकै सर्व मुनि इसदेहबंधनतैं परम कैवल्यमुक्तिकूं प्राप्तहोतेभयेहैं ॥ १ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ तहां (ज्ञायतेऽनेनेतिज्ञानम्) अर्थयह ॥ जिससाधनकरिकै आत्मवस्तु जान्याजावैहै ताकानाम ज्ञानहै ॥ याप्रकारकीव्युत्पत्तिकरिकै ईहां ज्ञानशब्द परमात्मविषयकज्ञानकेसाधनका वाचकहै ॥ कैसाहैसोज्ञान परहै ॥ अर्थात् परमात्मरूपपरवस्तुविषयकहोणेतैं श्रेष्ठहै ॥ पुनःकैसाहै सोज्ञान ज्ञानोंकेमध्यविषे उत्तम है ॥ अर्थात् (तमेतंवेदानुवचनेनब्राह्मणाविविदिषंतियज्ञेनदानेनतपसाऽनाशकेन) इसश्रुतिनैं विधानकऱ्येजे यज्ञदानादिक ज्ञानकेबहिरंगसाधनहैं ॥ तिनसर्वबहिरंगसाधनोंकेमध्यविषे उत्तमफलकाहेतुहोणेतैं उत्तमहै॥ कोईपूर्वउक्तअमानित्वादिकसाधनोंकेमध्यविषे सोज्ञान उत्तमनहींहै ॥ काहेतैं तेअमानित्वादिकसाधनभी अंतरंगसाधनहोणेतैं उत्तमफलकेहींहेतुहैं॥ तहां (परम्) इसविशेषणकरिकैतौं तिसज्ञानविषे उत्कृष्टवस्तुविषयकत्व कथनकऱ्या ॥ और (उत्तमम्) इसविशेषणकरिकैतौं

तिसज्ञानविषे उत्कृष्टफलवत्त्व कथनकऱ्या ॥ यातैं तिनदोनोंपदोंविषे पुनरुक्तिदोषकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ ऐसेउत्कृष्टवस्तुकूंविषयकरणेहारे तथाउत्कृष्टफलकीप्राप्ति करणेहारे आत्मज्ञानकेसाधनरूपज्ञानकूं मैंश्रीभगवान् तैंअर्जुनकेप्रति पुनःभी कथनकरताहूं ॥ अर्थात् इसतैंपूर्वअध्यायोंविषे जोज्ञान अनेकवार हमनैं तुमारे प्रति कथनकऱ्याहै ॥ सोईहींज्ञान अबी पुनःभी पूर्वउक्तप्रकारतैं किंचित्‌विलक्षणप्रकारकरिकै मैं तुमारेप्रति कथनकरताहूं ॥ जिससाधनरूपज्ञानकूं श्रद्धाभक्ति पूर्वक अनुष्ठानकरिकै सर्वहीं मननशीलसंन्यासी कैवल्यमोक्षरूपपरमसिद्धिकूं इसदेहसंबंधतैंप्राप्तहोतेभयेहैं इति ॥ १ ॥ ❀ ॥ तहां तिससाधनरूपज्ञानकेप्राप्तहुए इसपुरुषकूं सामोक्षरूपपरमसिद्धिअवश्यकरिकैप्राप्तहोवैहै ॥ याप्रकारकेनियमकूं अब श्रीभगवान् कथनकरेंहै ॥

(मू० श्लो०) इदंज्ञानमुपाश्रित्यममसाधर्म्यमागताः ॥ सर्गेपिनोपजायंतेप्रलयेनव्यथंतिच ॥ २ ॥ इदं । ज्ञानम् । उपाश्रित्य । मम । साधर्म्यम् । आगताः । सर्गे । अपि । न । उपजायंते । प्रलये । न । व्यथंति । च ॥ २ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन इस साधनरूपज्ञानकूं अनुष्ठान करिकै मैंपरमेश्वरके अद्वितीयनिर्गुणस्वरूपकूं अत्यंतअभेदकरिकैप्राप्तहुए विद्वान्‌पुरुष सृष्टिकालविषे भी नहीं उत्पन्नहोवैहैं तथा प्रलयकालविषे नहीं लयहोवैहैं ॥ २ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन इस साधनरूपज्ञानकूं श्रद्धाभक्तिपूर्वक अनुष्ठानकरिकै मैंपरमेश्वरके अद्वितीयनिर्गुणरूपकूं अत्यंतअभेदरूपकरिकै प्राप्तहुए अर्थात् हमहीं अद्वितीयनिर्गुणब्रह्मरूपहैं याप्रकारतैं आपणेआत्माकूं अद्वितीयनिर्गुणब्रह्मरूपजानतेहुए विद्वान्‌पुरुषसर्गविषेभी नहींउत्पन्नहोवैहैं तथाप्रलयविषेभी नहींलयहोवैहैं ॥ अर्थात् हिरण्यगर्भादिकोंकेउत्पन्नहुएभी तेतत्त्ववेत्तापुरुष उत्पन्नहोवैंनहीं ॥ तथा ताहिरण्यगर्भकेविनाशकालरूपप्रलयविषेभी तेतत्त्ववेत्तापुरुष लयभावकूंप्राप्तहो वैंनहीं इति ॥ २ ॥ ❀ ॥ इसप्रकार दोश्लोकोंकरिकै तिसज्ञानकीप्रशंसाकरिकैश्रोतापुरुषोंकूं श्रीभगवान् तिसज्ञानकेअभिमुखकरताभया ॥ अब परमेश्वरकेआधीनवर्तनेहारे जेप्रकृतिपुरुषहै ॥ तिसप्रकृतिपुरुषदोनोंकूंहीं सर्वभूतोंकेउत्पत्तिकाकारणपणाहै ॥ सांख्यशास्त्रकीन्यांई स्वतंत्र तिसप्रकृतिपुरुषदोनों विषे सर्वभूतोंकाकारणपणाहैनहीं ॥ इसविवक्षितअर्थकूं श्रीभगवान् दोश्लोकोंकरिकैकथनकरेंहै ॥

(मू० श्लो०) ममयोनिर्महद्ब्रह्मतस्मिन्गर्भंदधाम्यहम् ॥ संभवः सर्वभूतानांततोभवति भारत ॥ ३ ॥ मम । योनिः । महद्ब्रह्म । तस्मिन् । गर्भम् । दधामि । अहम् । संभवः । सर्वभूतानाम् । ततः । भवति । भारत ॥ ३ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेभारत त्रिगु

णात्मकमाया मैंईश्वरके गर्भाधानकास्थानहैं तिसमायाविषे मैंईश्वर संकल्परूपगर्भकूं धारणकरूंहूं तिसगर्भाधानतैंहीं सर्वभूतोंकी उत्पत्ति होवैहै ॥ ३ ॥ (इतिपदार्थः)

॥ टीका ॥ हेअर्जुन मैंपरमेश्वरका महद्ब्रह्म योनिहै ॥ ईहां महद्ब्रह्मशब्दकरिकै अव्याकृतका ग्रहणकरणा ॥ जिसअव्याकृतकूं शास्त्रविषे अविद्या अज्ञान प्रकृति त्रिगुणात्मिकामाया इत्यादिकनामोंकरिकैकथनकरेहैं ॥ सोअव्याकृत आपणेआकाशादिकसर्वकार्योंकीअपेक्षाकरिकैअधिकहोणेतैं महत् कह्याजावैहै ॥ तथा आपणेसर्वकार्योंकेवृद्धिकाहेतुहोणेतैं ब्रह्म कह्याजावैहै ॥ अथवा ब्रह्मका उपाधिरूपहोणेतैं सोअव्याकृत ब्रह्मकह्याजावैहै ॥ अथवा महत्तत्वनामा प्रथम कार्यकेवृद्धिकाहेतुहोणेतैं सोअव्याकृत महद्ब्रह्म कह्याजावैहै ॥ ऐसेमहद्ब्रह्मनामवाली त्रिगुणात्मकमाया मैंपरमेश्वरकी योनिहै ॥ अर्थात् गर्भाधानकरणेका स्थानरूपहै ॥ ऐसीमायारूपयोनिविषे मैंपरमेश्वर गर्भकूंधारणकरूंहूं ॥ अर्थात् सर्वभूतोंकेजन्मकाकारणरूप जो (एकोऽहंवहुस्यांप्रजायेय) इसप्रकारका ईक्षण रूपसंकल्पहै ॥ तिससंकल्परूपगर्भकूं तिसमायारूपयोनिविषे धारणकरूंहूं अर्थात् तिससंकल्पकाविषयकरूंहूं ॥ जैसे इसलोकविषे कोईकपिता पुण्यपापकरिकै युक्तहुए तथाव्रीहियवादिकआहाररूपकरिकैआपणेविषेलीनहुये ऐसेपुत्रकूं स्थूलशरीरकेसाथिसंबंधकरणेंवासतै आपणीस्त्रीकीयोनिविषे वीर्यकेसिंचनपूर्वक गर्भकूंधारणकरेहै ॥ तिसगर्भाधानतैं सोपुत्र स्थूलशरीरकेसाथि संबंधवालाहोवैहै ॥ तिसशरीरकेसंबंधवासतै मध्यविषे कलिल बुद्बुद आदिकअनेकअवस्था होवैहैं ॥ तैसे प्रलयकालविषे मैंपरमेश्वरविषेलीनहुए जे अविद्या काम कर्मवाले क्षेत्रज्ञनामाजीवहैं ॥ तिनजीवोंकूं सृष्टिकालविषे कार्यकारणसंघातरूप भोग्य क्षेत्रकेसाथि संबंधकरणेवासतैहीं मैंपरमेश्वर चिदाभासरूपवीर्यकेसिंचनपूर्वक तिस मायाकीवृत्तिरूपगर्भकूं धारणकरूंहूं ॥ तिसशरीरकेसंबंधवासतैही मध्यविषे आकाश वायु तेज जल पृथिवी इत्यादिकोंकीउत्पत्तिरूपअवस्था होवैहैं ॥ तिसमायारूपयोनिविषे मैंपरमेश्वरकृत गर्भाधानतैंही हिरण्यगर्भादिकसर्वभूतोंकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ मैंपरमेश्वरकृत गर्भाधानतैंविना तिनसर्वभूतोंकीउत्पत्तिहोवैनहीं इति ॥ ३ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् मायारूपयोनिविषे मैंपरमेश्वरकृत गर्भाधानतैं सर्व भूतोंकीउत्पत्ति कैसेसंभवैंगी ॥ जिसकारणतैं देवतादिकदेहविशेषोंके दूसरेकारणभी संभवहोइसकेहैं ॥ ऐसीअर्जुनकी शंकाकेहुए श्रीभगवान् कहेहै ॥

(मू० श्लो०) सर्वयोनिषुकौंतेयमूर्त्तयःसंभवंतियाः ॥ तासांब्रह्ममहद्योनिरहंवीजप्रदः पिता ॥ ४ ॥ सर्वयोनिषु । कौंतेय । मूर्त्तयः । संभवंति । याः । तासाम् । ब्रह्ममहत् । योनिः । अहम् । बीजप्रदः । पिता ॥४॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेकौंतेय देवादिक सर्वयोनियों विषे जे शरीर उत्पन्नहोवैहैं तिनशरीरोंका सोमायाही मातारूपहै मैंपरमेश्वरतौ गर्भाधानकाकर्त्ता पितारूपहूं ॥ ४ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन देव पितर मनुष्य पशु मृग इत्यादिकसर्वयोनियोंविषे जेजेमूर्तियां उत्पन्नहोवेहैं ॥ अर्थात् जरायुज अंडज स्वेदज उद्भिज्ज इसभेदकरिकै विलक्षण तथानानाप्रकारकेआकारवाले जेजेशरीर उत्पन्नहोवैहैं ॥ तिनशरीररूपसर्वमूर्तियोंका तिसतिसमूर्तिकेकारणभावकूंप्राप्तहुई साअव्याकृतनामामायाहीं मातारूपहै ॥ और मैंपरमेश्वरतौं तिसमायारूपयोनिविषे गर्भाधानकरणेहारा तिनसर्व शरीरोंका पितारूपहूं ॥ यातैंयहअर्थसिद्धभया ॥ तिनदेवादिकशरीरोंके लोकप्रसिद्ध जेजेकारण प्रतीतहोवैहैं ॥ तेसर्वकारण तिसअव्याकृतनामा मायारूपब्रह्मकेहीं अवस्थाविशेषरूपहै ॥ यातैं (संभवःसर्वभूतानांततोभवतिभारत) यह भगवान्‌कावचन युक्तहींहै इति ॥ ४ ॥ ❀ ॥ तहांपूर्व ईश्वरकूंनहींअंगीकारकरणेहारे निरीश्वरवादीसांख्यशास्त्रकाखंडनकरिकै क्षेत्रक्षेत्रज्ञकेसंयोगकूं ईश्वरके अधीनपणा कथनकरया ॥ अब किसगुणविषे किसप्रकारकरिकै संगहोवैहै ॥ तथा तेगुणकौंनहैं ॥ तथा तेगुण किसप्रकारकरिकै इसपुरुषकूं बंधायमानकरेहैं ॥ इससर्वअर्थकूं श्रीभगवान् (सत्त्वंरजस्तमः) इसश्लोकतैं आदिलैके (नान्यंगुणेभ्यःकर्त्तारम्) इसश्लोकतैंपूर्व चतुर्दशश्लोकोंकरिकै कथनकरेहै

(मू०श्लो०) सत्वंरजस्तमइतिगुणाःप्रकृतिसंभवाः ॥ निबध्नंतिमहाबाहोदेहेदेहिनमव्ययम् ॥ ५ ॥ सत्त्वं । रजः । तमः । इति । गुणाः । प्रकृतिसंभवाः । निबध्नंति । महाबाहो । देहे । देहिनम् । अव्ययम् ॥ ५ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेमहान्‌बाहुवालाअर्जुन सत्त्व रज तम यह मायातैंउत्पन्नहुए तीनगुण इसदेहविषे अव्यय जीवात्माकूं बंधायमानकरेहैं ॥ ५ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन सत्त्व रज तम इसनामवाले जेतीनगुणहैं तेसत्त्वादिकतीनोंगुण चैतन्यपुरुषकेप्रति नित्यहीं परतंत्रहैं ॥ कदाचित्‌भी तेगुण स्वतंत्रहोवैनहीं ॥ काहेतैं इसश्लोकविषे जेजेपदार्थ अचेतनरूपहैं ॥ तेसर्वअचेतनपदार्थ चैतन्यपुरुषकेअर्थहींहोवैहैं ॥ जैसे गृहादिकअचेतनपदार्थ चेतनगृहीपुरुषकेअर्थहीं होवैहैं ॥ तैसे तेसत्वादिकतीनगुणभी अचेतनहोणेतैं चेतनपुरुषकेअर्थहींहैं ॥ जैसे नैयायिक रूपादिकगुणोंकूं पृथिवीआदिकद्रव्यकेआश्रितमानेहैं ॥ तैसे यहसत्त्वादिकतीनगुण किसीद्रव्यकेआश्रितहैंनहीं ॥ तथा जैसे नैयायिक पृथिवीआदिकगुणीद्रव्यतैं रूपादिकगुणोंकूं भिन्नमानेहैं ॥ तैसे ईहांसिद्धांतविषे तिनसत्त्वादिकगुणोंका मायारूपप्रकृतितैं भिन्नपणा विवक्षितहैनहीं ॥ जिसकारणतैं सिद्धांतविषे सामायारूपप्रकृति सत्त्वादिकतीनगुणरूपहींहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् तेसत्त्वादिकतीनगुण जोकदाचित् प्रकृतिरूपहींहोवैं ॥ तौं (प्रकृतिसंभवाः) इसवचनकरिकैतिनगुणोंकी प्रकृतितैंउत्पत्तिकिसवास्तैकथनकरीहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहेहै ॥ (प्रकृतिसंभवाः) हेअर्जुन सत्त्व रज तम इनतीनगुणोंकी जा साम्यअवस्थाहै ताकानाम प्रकृतिहै ॥ जिसप्रकृतिकूंशास्त्रविषे भगवत्‌कीमाया कहेहैं ॥ ऐसीमायारूपप्रकृतितैं तेसत्वादिकतीनगुणपरस्पर अंगअंगीभावकरिकै विषमताकरिकै परिणामकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ याकारणतैं तेसत्वादिकगुण

(प्रकृतिसंभवा) इसनामकरिकैकहेजावैहैं ॥ तेसत्वादिकतीनगुण इसदेहविषे अर्थात् तिसप्रकृतिकेकार्यरूपशरीरइंद्रियसंघातविषे अव्ययरूपदेहीकूं अर्थात् वास्तवतैं जन्ममरणादिकसर्वविकारोंतैंरहितहोणेतैं अव्ययरूप तथाअविद्याकरिकै देहकेसाथि तादात्म्यभावकूंप्राप्तहुएजीवकूं बंधायमानकरेहैं ॥ अर्थात् वास्तवतैं निर्विकाररूपभी तिसजीवात्माकूं तेसत्वादिकगुण आपणेविकारोंकरिकैयुक्तहुएकीन्यांई दिखावैहैं ॥ यहहीं तिनसत्वादिकगुणोंकृत तिसजीवात्माविषेबंधहै ॥ याप्रकारका (निबध्नंति) इसशब्दकाअर्थ अगलेश्लोकोंविषेभीजानलेणा ॥ तहां दृष्टांत ॥ जैसे जलकरिकै भरयेहुएपात्र आकाशविषेस्थितसूर्यकूं प्रतिबिंबा ध्यासकरिकै आपणेविषेस्थितकंपादिक विकारोंकरिकैयुक्तहुएकीन्यांई दिखावैहैं ॥ तैसे तेसत्वादिकतीनगुणभी वास्तवतैंनिर्विकारआत्माकूंभी आपणेविषे स्थित विकारोंकरिकैयुक्तहुएकीन्यांई दिखावैहैं ॥ आत्माविषे जैसे वास्तवतैं बंधनहींसंभवैहैं ॥ तैसे (शरीरस्थोपिकौंतेयनकरोतिनलिप्यते) इसवचनविषे पूर्वविस्तारतैं कथनकरिआयेहैं इति ॥ ५ ॥ ❀ ॥ तहां पूर्वश्लोकविषे सत्व रज तम इनतीनगुणोंविषे इसजीवात्माका बंधकपणा कथनकऱ्या ॥ अब कौंनगुण किसके संगकरिकै इसजीवात्माकूंबंधायमानकरेहै ॥ इसअर्थकूं श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) तत्रसत्त्वंनिर्मलत्वात्प्रकाशकमनामयम् ॥ सुखसंगेनबध्नातिज्ञानसंगेनचानघ ॥ ६ ॥ तत्र । सत्वम् । निर्मलत्वात् । प्रकाशकम् । अनामयम् । सुखसंगेन । बध्नाति । ज्ञानसंगेन । च । अनघ ॥ ६ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेसर्वव्यसनोंतैंरहितअर्जुन तिनतीनगुणोंकेमध्यविषे स्वच्छहोणेतैं प्रकाशक तथादुःखतैंरहित ऐसा सत्वगुण इसजीवात्माकूं सुखसंगकरिकै तथा ज्ञानसंग करिकै बंधायमानकरेहै ॥ ६ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन सत्व रज तम यहपूर्वकथनकऱ्येजे तीनगुणहैं ॥ तिनतीनगुणोंकेमध्यविषे प्रथम जोसत्त्वगुणहै ॥ सोसत्त्वगुणकैसाहै प्रकाशकहै ॥ अर्थात् चैतन्यका तमोगुणकृतजोआवरणहै ताआवरणका नाशकरणेहाराहै ॥ ताप्रकाशकताविषेहेतुकहेहै ॥ (निर्मलत्वात् इति) अर्थात् आपणेस्वच्छस्वभावताकरिकै चेतनकेप्रतिबिंबकेग्रहणकरणे योग्यहोणेतैं सोसत्त्वगुण प्रकाशकहै ॥ किंवा सोसत्त्वगुण केवल चैतन्यकाहींअभिव्यंजकनहींहै ॥ किंतु अनामयभीहै ॥ अर्थात् दुःखरूपआमयकाविरोधीजोसुखहै तिससुखकाभी सोसत्त्वगुण अभिव्यंजकहै ॥ इसप्रकार चैतन्यका तथा सुखका अभिव्यंजक जोसत्त्वगुणहै ॥ सोसत्त्वगुण इस जीवात्माकूं सुखसंगकरिकै तथाज्ञानसंगकरिकै बंधायमानकरेहै ॥ ईहां सुखशब्दकरिकै तथाज्ञानशब्दकरिकै अंतःकरणकापरिणामरूप सुखका तथाज्ञानका ग्रहणकरणा ॥ कोई आत्मस्वरूप सुखका तथाज्ञानका तासुखज्ञानशब्दकरिकैग्रहणकरणानहीं ॥ काहेतैं (इच्छाद्वेषःसुखंदुःखंसंघातश्चेतनाधृतिः) इसपूर्वउक्त

श्लोकविषे सुखकूं तथाचेतनारूपज्ञानकूंभी इच्छाद्वेषादिकोंकीन्यांई क्षेत्रकाहीं धर्मरूपकरिकैकथनकर्‍याहै ॥ तहां अंतःकरणकाधर्मरूप जोसुखहै तथाज्ञानहै ॥ तासुखज्ञानदोनोंका जोआत्माविषेअध्यासहै जोअध्यास मैंसुखीहूं मैंजानताहूं इसप्रकारकीप्रतीतिकरिकैसिद्धहै ॥ ताकानाम सुखसंगहै तथाज्ञानसंगहै ॥ ऐसे सुखसंगकरिकै तथाज्ञानसंगकरिकै सोसत्त्वगुण इसजीवात्माकूं बंधायमानकरैहै ॥ तहां विषयकेधर्म प्रकाशकरूपविषयीकेहोवैंनहीं ॥ जैसे घटादिकविषयोंकेधर्म प्रकाशकसूर्यकेहोवैंनहीं ॥ यातैं यहसर्वबंध अविद्यामात्रहींहै ॥ यहवार्त्ता पूर्वअनेकवार कथनकरिआयेहैं इति ॥ ६ ॥ ❀ ॥

(मू० श्लो०) रजोरागात्मकंविद्धितृष्णासंगसमुद्भवम् ॥ तन्निबध्नातिकौंतेयकर्मसंगेनदेहिनम् ॥ ७ ॥ रजः । रागात्मकम् । विद्धि । तृष्णासंगसमुद्भवम् । तत् । निबध्नाति । कौंतेय । कर्मसंगेन । देहिनम् ॥ ७ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेकौंतेय तृष्णासंगदोनोंकी उत्पत्तिहैजिसतैं ऐसेरजोगुणकूं तूं रागरूप जान सोरजोगुण इसदेहाभिमानीजीवकूं कर्मसंगकरिकै बंधायमानकरैहै ॥ ७ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ तहां यहपुरुष शब्दादिकविषयोंविषे रंजनकूंप्राप्तहोवै जिसकरिकै ताकानाम रागहै ॥ सोरागहींहै आत्मा क्या स्वरूप जिसका ताकानाम रागात्मकहै ॥ ऐसा रागात्मक रजोगुणकूं तूं जान ॥ यद्यपि सोराग तिसरजोगुणका धर्महै ॥ तथापि धर्म धर्मी दोनोंका तादात्म्यहींहोवैहै ॥ यातैं तारजोगुणकूं रागरूपकह्याहै ॥ इसीकारणतैंहीं सोरजोगुण तृष्णासंगसमुद्भवहै ॥ तहां अप्राप्तवस्तुकेप्राप्तिकीजाअभिलाषाहै ॥ ताकानाम तृष्णाहै ॥ और प्राप्तवस्तुके विनाश केप्राप्तहुएभी जो तिसवस्तुकेरक्षणकरणेकीअभिलाषाहै ताकानाम आसंगहै ॥ तिस तृष्णा आसंग दोनोंकी उत्पत्तिहैजिसतैं ताकानाम तृष्णासंगसमुद्भवहै ॥ ऐसा रजोगुण वास्तवतैं अकर्त्तारूपहुएभी कर्तृत्वअभिमानवालेजीवात्माकूं कर्मसंगकरिकै बंधायमानकरैहै ॥ तहां इसलोककेफलकाहेतुरूप तथापरलोककेफलकाहेतुरूप जे लौकिकवैदिककर्महैं ॥ तिनकर्मोंविषे मैंइसकर्मकूंकरूंहूं मैं इसकर्मकूंभोगौंगा इसप्रकारका जो अभिनिवेशविशेषहै ताकानाम कर्मसंगहै ॥ ऐसे कर्मसंग करिकै सोरजोगुण इसजीवात्माकूं बंधायमानकरैहै ॥ जिसकारणतैं सोरजोगुण केवल प्रवृत्तिकाहींहेतुहै इति ॥ ७ ॥ ❀ ॥

(मू० श्लो०) तमस्त्वज्ञानजंविद्धिमोहनंसर्वदेहिनाम् ॥ प्रमादालस्यनिद्राभिस्तन्निबध्नातिभारत ॥ ८ ॥ तमः । तु । अज्ञानजम् । विद्धि । मोहनम् । सर्वदेहिनाम् । प्रमादालस्यनिद्राभिः । तत् । निबध्नाति । भारत ॥ ८ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेभारत पुनः तमोगुणकूं तूं अज्ञानजन्य जान जोतमोगुण सर्वजीवोंकूं भ्रांतिकाजनकहैसोतमोगुण प्रमादआलस्यनिद्राकरिकै इसजीवकूं बंधायमान करैहै ॥ ८ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ तहां (तमस्तु) इसवचनविषेस्थितजो तु यहशब्दहै ॥ सोतुशब्द पूर्वउक्त सत्त्व रज दोनोंकीअपेक्षाकरिकै इसतमोगुणविषे विलक्षणताकेबोधन करणेवासतैंहै ॥ हेअर्जुन तमोगुणकूं तूं आवरणशक्तिरूपअज्ञानतैं उत्पन्नहुआ जान ॥ इसकारणतैंहीं सोतमोगुण सर्वदेहाभिमानीजीवोंका मोहनहै ॥ अर्थात् अविवेकरूपताकरिकै भ्रांतिकाजनकहै ॥ ऐसातमोगुण इसदेहाभिमानीजीवकूं प्रमादकरिकै तथाआलस्यकरिकै तथानिद्राकरिकै बंधायमानकरैहै ॥ तहां वस्तुके विवेककरणेकाजोअसामर्थ्यहै ताकानाम प्रमादहै ॥ सोप्रमादतैं सत्त्वगुणके प्रकाशरूपकार्यका विरोधीहोवैहै ॥ और प्रवृत्तिकरणेका जोअसामर्थ्यहै ताकानाम आलस्यहै॥ सोआलस्यतैं रजोगुणके प्रवृत्तिरूपकार्यका विरोधीहोवैहै ॥ और तमोगुणकूंआलंबनकरणेहारीजा लयरूपवृत्तिविशेषहै ताकानाम निद्राहै ॥ सानिद्रा तैं सत्वगुणकेकार्यका तथारजोगुणकेकार्यकादोनोंकाहीं विरोधीहोवै इति ॥ ८ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन्पूर्वउक्तकार्योंकेमध्यविषे किसकार्यविषे किसगुणकी उत्कर्षताहै ॥ ऐसीअर्जुनकीजिज्ञासाकेहुए श्रीभगवान् कहेहैं ॥

(मू० श्लो०) सत्त्वंसुखंसंजयतिरजःकर्मणिभारत ॥ ज्ञानमावृत्यतुतमःप्रमादेसंजयत्युत ॥ ९ ॥ सत्वं । सुखे । संजयति । रजः । कर्मणि । भारत । ज्ञानम् । आवृत्य । तु । तमः । प्रमादे । संजयति । उत ॥ ९ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेभारत सत्वगुण इसपुरुषकूं सुखविषे युक्तकरैहै तथारजोगुण कर्मविषे युक्तकरेऔर तमोगुणतौं ज्ञानकूं आच्छादनकरिकै प्रमादविषे भी युक्तकरैहै ॥ ९ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन सोपूर्वउक्त सत्वगुण उत्कर्षताकूंप्राप्तहुआ इसदेहाभिमानीजीवकूं सुखविषे युक्तकरैहै ॥ अर्थात् दुःखकेकारणका अभिभवकरिकै इसपुरुषकूं सुखविषेजोडैहै ॥ इसप्रकार सोरजोगुणभी उत्कर्षताकूंप्राप्तहुआ सुखकेकारणोंका अभिभवकरिकै इसजीवात्माकूं लौकिकवैदिककर्मोंविषे युक्तकरैहै ॥ और तमोगुणतौं प्रयाणकेबलकरिकैउत्पन्नहुएभी सत्त्वगुणकेकार्यरूपज्ञानकूं आवृतकरिकै इसपुरुषकूं प्रमादविषे युक्तकरैहैं ॥ तहांजिसवस्तुकाजानणा अवश्यकरिकै प्राप्तहोवै तावस्तुकाभी जोनहींजानणाहै ताकानाम प्रमादहै ॥ ऐसेप्रमादविषे सोतमोगुण इसपुरुषकूं जोडैहै ॥ ईहां (संजयत्युत) इसवचनविषेस्थितजो उत यह शब्दहै ॥ सोउतशब्द अपिइसशब्दकेअर्थकावाचकहै ॥ ताकरिकै आलस्य निद्राइनदोनोकाभीग्रहणकरणा ॥ अर्थात् सोतमोगुण इसजीवात्माकूं आलस्यविषे तथानिद्राविषेभी जोडैहैं ॥ तहां जोकार्य अवश्यकरिकैकरणेयोग्यहै ताकार्यकाभी जोनहींकरणाहै ताकानाम आलस्यहै ॥ और लयनामा तामसीवृत्तिविशेषकानाम निद्राहै इति ॥ ९ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् इसपूर्वश्लोक विषेकथनकऱ्याजो सत्त्वादिकतीनगुणोंका कार्यहै ॥ तिसआपणेआपणेकार्यकूं तेसत्वादिकतीन गुण किसकालविषे करैहैं ॥ ऐसीअर्जुनकीजिज्ञासाकेहुए श्रीभगवान्कहे हैं ॥

(मू० श्लो०) रजस्तमश्चाभिभूयसत्त्वंभवतिभारत ॥ रजःसत्वंतमश्चैवतमःसत्त्वंरजस्तथा ॥ १० ॥ रजः । तमः । च । अभिभूय । सत्वं । भवति । भारत । रजः । सत्वं । तमः । च । एव । तमः । सत्वं । रजः । तथा ॥ १० ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेभारत रजोगुणकूं तथा तमोगुणकूं अभिभवकरिकै जबीसत्वगुण वृद्धिकूंप्राप्तहोवै तथा रजोगुणकूं तथा सत्वगुणकूं अभिभवकरिकै जबी तमोगुण वृद्धिकूंप्राप्तहोवैहै तथा तमोगुणकूं तथासत्वगुणकूंअभिभवकरिकै जबी रजोगुण वृद्धिकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तबी तेसत्त्वादिकगुण आपणेआपणेकार्यकूंकरेहैं ॥ १० ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जिसकालविषे रज तम इनदोनोंहींगुणोंकूं एकहींकालविषेअभिभवकरिकै अर्थात् तिरस्कारकरिकै सोसत्त्वगुण वृद्धिकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तिसकालविषे सो सत्त्वगुण पूर्वउक्तआपणेकार्यकूं असाधारणतारूपकरिकै उत्पन्नकरेहै ॥ इसप्रकार सोरजोगुणभीजिसकालविषे सत्त्वगुणकूं तथातमोगुणकूं दोनोंकूं एकहींकालविषे अभिभवकरिकै वृद्धिकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तिसकालविषेहीं सोरजोगुण पूर्वउक्तआपणेकार्यकूं असाधारणतारूपकरिकै उत्पन्नकरेहै ॥ इसप्रकार तमोगुणभी जिसकालविषे सत्त्वगुणकूं तथारजोगुणकूंदोनोंकूं एकहींकालविषेअभिभवकरिकै वृद्धिकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तिसकालविषेहीं सोतमोगुण पूर्वउक्तआपणे कार्यकूं असाधारणतारूपकरिकै उत्पन्नकरेहै इति ॥ १० ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् तिनसत्वादिकतीनगुणोंकीवृद्धि किसलिंगकरिकैजानीजावैहै ॥ तावृद्धिकेज्ञानहुएहीं यहपुरुष ताकेनिवृत्तकरणेविषेसमर्थहोवैगा ऐसीअर्जुनकीजिज्ञासाकेहुए ॥ श्रीभगवान् वृद्धिकूंप्राप्तहुए तिनसत्त्वादिकतीन गुणोंके लिंगोंकूं तीनश्लोकोंकरिकैकथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) सर्वद्वारेषुदेहेस्मिन्प्रकाशउपजायते ॥ ज्ञानंयदातदाविद्याद्विवृद्धंसत्वमित्युत ॥ ११ ॥ सर्वद्वारेषु । देहे । अस्मिन् । प्रकाशः । उपजायते । ज्ञानम् । यदा । तदा । विद्यात् । विवृद्धम् । सत्वम् । इति । उत ॥ ११ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन इस देहविषे श्रोत्रादिकसर्वइंद्रियोंविषे जिसकालमैं ज्ञानरूप प्रकाश उत्पन्नहोवैहै तिसकालविषे सत्वगुण वृद्धिकूं प्राप्तहूआहै इसप्रकार जानणा ॥ ११ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन इसजीवात्माका सुखदुःखकेभोगकास्थानरूपजो यहदेहहै ॥ इसदेहविषेस्थित जे शब्दादिकविषयोंकेउपलब्धिकासाधनरूप श्रोत्रादिकइंद्रियरूप सर्वद्वारहैं ॥ तिनइंद्रियरूपसर्वद्वारोंविषे जिसकालमैं ज्ञानरूपप्रकाश उत्पन्नहोवैहै ॥ अर्थात् जैसे दीपक आपणेविषयरूपघटादिकपदार्थोंकेअंधकाररू

पआवरणका विरोधीहोवैहै ॥ तैसे आपणेशब्दादिकविषयोंकेआवरणकाविरोधी ऐसाजो तिनशब्दादिकविषयाकार बुद्धिकावृत्तिरूपपरिणामविशेषहै ताका नाम प्रकाशहै ॥ ऐसाज्ञानरूपप्रकाश जिसकालविषेउत्पन्नहोवैहै ॥ तिसकालविषे तिसज्ञानप्रकाशरूपलिंगकरिकै यहपुरुष अबी प्रकाशरूपसत्त्वगुण वृद्धिकूंप्रा तहुआहै इसप्रकार जानैं ॥ ईहां (विवृद्धंसत्त्वमित्युत) इसवचनकेअंतविषेस्थितजो उत यहशब्दहै ॥ सोउतशब्द अपि इसशब्दकेअर्थका वाचकहै ॥ ता करिकैयहअर्थबोधनकऱ्या ॥ जैसे ज्ञानरूपप्रकाशकरिकै सत्त्वगुणकीवृद्धि जानीजावैहै ॥ तैसेसुखादिकलिंगोंकरिकैभी यहपुरुषतासत्वगणकीवृद्धिकूं जानैं इति ॥ और किसीटीकाविषेतौं उत इसशब्दकायहअर्थकऱ्याहै ॥ सत्त्वगुणकीवृद्धिकीन्यांई यहपुरुष तिसज्ञानरूपप्रकाशकरिकै रज तम इनदोनोंगुणोंके क्षीणताकूंभी जानैं इति ॥ ११ ॥ ❀ ॥

(मू० श्लो०) लोभःप्रवृत्तिरारंभःकर्मणामशमःस्पृहा ॥ रजस्येतानिजायंतेविवृद्धेभरतर्षभ ॥ १२ ॥ लोभः । प्रवृत्तिः । आरंभः । कर्मणाम् । अशमः । स्पृहा । रजसि । एतानि । जायंते । विवृद्धे । भरतर्षभ ॥१२ ॥ (इतिपदच्छेदः)॥ हेभरतर्षभ रजोगुणके व र्द्धमानहुए लोभ प्रवृत्ति कर्मोंका आरंभ अशम स्पृहा यहसर्व उत्पन्नहोवैहै ॥ १२ ॥ (इतिपदार्थः)॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन रागात्मक रजोगुणकेवर्द्धमानहुए इसपुरुषविषे लोभप्रवृत्ति कर्मोंकाआरंभ अशम स्पृहा इतनैंरागात्मकलिंग उत्पन्नहोवैहै ॥ अर्थात् इनलोभा दिकलिंगोंकरिकै यहपुरुष रजोगुणकेवृद्धिकूंजानैं ॥ तहां महान्धनादिकपदार्थोंकेप्राप्तिहुएभी दिनदिनविषे वृद्धिकूंप्राप्तहुईजा तिनधनादिकप्राप्तिकीअभिलाषाहै ताकानामलोभहै ॥ अर्थात् आपणेविषयकीप्राप्तिकरिकैभी नहीं निवृत्तहुई जाइच्छाविशेषहै ताकानाम लोभहै ॥ और निरंतरहीं प्रयत्नवाला होणा याकानाम प्रवृत्तिहै ॥ और बहुतधनकेखरचकरणेतैंसिद्धहोणेहारे तथा शरीरकूंआयासकीप्राप्तिकरणेहारे ऐसेजेकाम्य निषिद्ध लौकिक महागृहादिविषयक व्यापारहैं तिनोंकानाम कर्महै ॥ ऐसेकर्मोंकाजो उद्यमहै ताकानाम कर्मोंका आरंभहै ॥ और इसकार्यकूंकरिकै पुनःमैं इसदूसरेकार्यकूंकरौंगा इसदूसरेकार्यकूं करिकै पुनःमैं इसतीसरेकार्यकूंकरौंगा याप्रकारकेसंकल्पोंकेप्रवाहकीजो नहींउपरामताहोणीहै ताकानाम अशमहै ॥ और परधनादिकोंकेदेखणेमात्रकरिकै जो जिसीकिसीउपायकरिकै तिनपरधनादिकोंकेग्रहणकरणेकीइच्छाहै ताकानाम स्पृहाहै ॥ इसप्रकार लोभतैंआदिलैकेस्पृहापर्यंत कथनकऱ्येजेलिंगहैं ॥ तिनलिंगों करिकै यहपुरुष वृद्धिकूंप्राप्तहुएरजोगुणकूंजानैं इति ॥ १२ ॥ ❀ ॥

(मू० श्लो०) अप्रकाशोऽप्रवृत्तिश्चप्रमादोमोहएवच ॥ तमस्येतानिजायंतेविवृद्धेकुरुनंदन ॥ १३ ॥ अप्रकाशः । अप्रवृत्तिः । च ।

प्रमादः । मोहः । एव । च । तमसि । एतानि । जायंते । विवृद्धे । कुरुनंदन ॥ १३ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन तमोगुणके वर्द्ध मानहुए हीं अप्रकाश तथा अप्रवृत्ति तथाप्रमाद तथा मोह इतनेलिंग उत्पन्नहोवैहैं ॥ १३ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जिसकालविषे तमोगुणकीवृद्धिहोवैहै ॥ तिसकालविषे अप्रकाश अप्रवृत्ति प्रमाद मोह इतनेलिंग उत्पन्नहोवैहैं ॥ अर्थात् यहपुरुष इतने अव्यभिचारीलिंगोंकरिकैहीं तमोगुणकेवृद्धिकूंजानैं ॥ तहां गुरुशास्त्रादिक बोधकेकारणोंकेवियमानहुएभी जो सर्वप्रकारतें ताबोधकीअयोग्यताहै ताकानाम अप्रकाशहै ॥ और उत्पन्नकन्याहै आपणेअर्थकाबोधनजिसनें ऐसाजो प्रवृत्तिकाकारणरूप (अग्निहोत्रंजुहुयात्) इत्यादिकशास्त्रहै ताशास्त्रकेवियमानहुएभी जो सर्वप्रकारतें तिनअग्निहोत्रादिककर्मोंविषे प्रवृत्तिकीअयोग्यताहै ताकानाम अप्रवृत्तिहै ॥ और तिसकालविषे कर्त्तव्यतारूपकरिकैप्राप्तहुए अर्थकाभीजो तिसकालविषेस्मरणनहींहोणा ताकानाम प्रमादहै ॥ और निद्राका तथाविपर्ययका नाम मोहहै इति ॥ १३ ॥ ❀ ॥ अब मरणकालविषेवृद्धिकूंप्राप्तहुए तिनसत्त्वादिकतीन गुणोंकेफलविशेषकूं श्रीभगवान् दोश्लोकोंकरिकै कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) यदासत्त्वेप्रवृद्धेतुप्रलयंयातिदेहभृत् ॥ तदोत्तमविदांलोकानमलान्प्रतिपद्यते ॥ १४ ॥ यदा । सत्त्वे । प्रवृद्धे । तु । प्रलयम् । याति । देहभृत् । तदा । उत्तमविदाम् । लोकान् । अमलान् । प्रतिपद्यते ॥ १४ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन पुनः यहदेहाभिमानीजीव जबी सत्त्वगुणके वर्द्धमानहुए मृत्युकूं प्राप्तहोवैहै तबी उपासक पुरुषोंके मलरहित लोकोंकूं प्राप्तहोवैहै ॥ ॥ १४ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन यहदेहाभिमानीजीव जबी सत्त्वगुणकेवृद्धिहुए मृत्युकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तबी यहजीव उत्तमवित् पुरुषोंकेलोकोंकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तहां हिरण्य गर्भादिकदेवतावोंकानाम उत्तमहै ॥ तिनउत्तमोंकूं जेपुरुष जानैहैं अर्थात् तिनाहिरण्यगर्भादिकदेवतावोंकी जेपुरुष उपासनाकरेहैं तिनपुरुषोंकानाम उत्तमवित्है ॥ तिनउत्तमवित्पुरुषोंके जेलोकहैं ॥ अर्थात् दिव्यसुखोंकेभोगके जेस्थानविशेषहैं ॥ जेलोक अमलहैं ॥ अर्थात् रजतमरूपमलतैंरहितहैं ॥ ऐसेलोकोंकूं सो पुरुष प्राप्तहोवैहै इति ॥ १४ ॥

(मू० श्लो०) रजसिप्रलयंगत्वाकर्मसंगिषुजायते ॥ तथाप्रलीनस्तमसिमूढयोनिषुजायते ॥ १५ ॥ रजसि । प्रलयम् । गत्वा । कर्मसं गिषु । जायते । तथा । प्रलीनः । तमसि । मूढयोनिषु । जायते ॥ १५ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन यहदेहाभिमानीजीव

रजोगुणकीवृद्धिहुए मृत्युकूं प्राप्तहोइकै कर्मकेअधिकारीमनुष्योंविषे उत्पन्नहोवैहै तथा तमोगुणकीवृद्धिहुए मरणकूंप्राप्तहुआ यहजीव पश्वादिकयोनियोंविषे उत्पन्नहोवैहै ॥ १५ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन यहदेहाभिमानीजीव जबी रजोगुणकीवृद्धिहुए मृत्युकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तबी कर्मसंगीयोंविषे उत्पन्नहोवैहै ॥ अर्थात् श्रुतिस्मृतिकरिकैविधानकन्येजे अग्निहोत्रादिककर्महैं तथाश्रुतिस्मृति करिकैनिषिद्धकन्येजे हिंसादिककर्महैं ॥ तिनकर्मोंविषे तथातिनकर्मोंकेफलोंविषे अधिकारीजेमनुष्यहैं तिनोंकानाम कर्मसंगीहै ॥ ऐसेकर्मसंगीमनुष्योंविषे सोजीव जन्मकूंप्राप्तहोवैहै ॥ इसप्रकार तमोगुणकीवृद्धिहुए यहजीव जबी मृत्युकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तबी यहजीव कार्यअकार्यकेविचारतैंरहित पश्वादिकमूढयोनियोंविषे जन्मकूंप्राप्तहोवैहै ॥ १५ ॥ ❀ ॥ अब सत्वादिकतीनगुणोंविषे आपणेअनुसारकर्मद्वारा विचित्रफलकीहेतुताकूं श्रीभगवान् संक्षेपकरिकैकथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) कर्मणःसुकृतस्याहुःसात्त्विकंनिर्मलंफलम् ॥ रजसस्तुफलंदुःखमज्ञानंतमसःफलम् ॥ १६ ॥ कर्मणः । सुकृतस्य । आहुः । सात्विकम् । निर्मलम् । फलम् । रजसः । तु । फलम् । दुःखम् । अज्ञानम् । तमसः । फलम् ॥ १६ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन महऋषिजन सात्विक धर्मका सात्विक निर्मल फल कथनकरेहैं पुनः राजसधर्मका दुःखरूप फल कहेहैं तथा तामसधर्मका अज्ञानरूप फल कहेहैं ॥ १६ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन महऋषिजन उत्तमसात्विकधर्मका सात्विक तथानिर्मल फल कहेहैं ॥ अर्थात् सत्वगुणकरिकैप्राप्तहुआ तथारजतमरूपमलकरिकैनहींमिल्याहुआ ऐसाजोसुखरूपफलहै सोसुखरूपफल तासात्विकधर्मका कहेहैं ॥ और पापमिश्रितपुण्यरूप जोराजसधर्महै ॥ तिसराजसधर्मकातौं तेमहऋषि राजसदुःखरूपफल कहेहैं ॥ अर्थात् रजोगुणतैंउत्पन्नहुआ जो बहुतदुःखकरिकैमिश्रित अल्पसुखहै सो तिसराजसधर्मकाफल कह्याजावैहै ॥ काहेतैं जोजोकार्यहोवैहै सोसोकार्य आपणेकारणकेसदृशहींहोवैहै ॥ यातै पापमिश्रितपुण्यरूपराजसकर्मका बहुतदुःखकरिकैमिश्रित अल्पसुखरूपफल युक्तहींहै ॥ और तेमहऋषिजन तामसधर्मकातौं अज्ञानरूपफलहीं कहेहैं ॥ अर्थात् तमोगुणकरिकैजन्यहोणेतैं तामसरूप ऐसाजो अविवेकप्रयुक्तदुःखहै सोदुःख तिसतामसधर्मकाहींफलकह्याजावैहै ॥ तहां सात्विकादिककर्मोंकालक्षणतौं (नियतंसंगरहितम्) इत्यादिकवचनोंकरिकै अष्टादशेअध्यायविषे श्रीभगवान् आपहींकथनकरैंगा ॥ ईहां इसश्लोकविषे श्रीभगवान्नैं रज

तम इनदोनोंशब्दोंका जो रजोगुणकेकार्यरूपकर्मविषे तथातमोगुणकेकार्यरूपकर्मविषे प्रयोगकऱ्याहै ॥ सो कार्य कारण दोनोंकेअभेदकूंअंगीकारकरिकै कऱ्याहै इति ॥ १६ ॥ ❀ ॥ अब श्रीभगवान् इसप्रकारकेफलकीविचित्रताविषे पूर्वउक्तहेतुकूंहीं कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) सत्त्वात्संजायतेज्ञानंरजसोलोभएवच ॥ प्रमादमोहौतमसोभवतोऽज्ञानमेवच ॥ १७ ॥ सत्त्वात् । संजायते । ज्ञानम् । रजसः । लोभः । एव । च । प्रमादमोहौ । तमसः । भवतः । अज्ञानम् । एव । च ॥ १७ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन सत्त्वगुणतैं ज्ञान उत्पन्नहोवैहै तथा रजोगुणतैं लोभ हीं उत्पन्नहोवैहै तथा तमोगुणतैं प्रमादमोहदोनों उत्पन्नहोवैहैं तथाअज्ञान भी होवैहैं ॥ १७ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन श्रोत्रादिकइंद्रियहैंद्वाराजिसके ऐसाजो शब्दादिविषयकज्ञानहै ॥ सोप्रकाशरूपज्ञानतौं केवल सत्वगुणतैहीं उत्पन्नहोवै ॥ इसकारणतैं तिस प्रकाशरूपज्ञानकेअनुसारी सात्विककर्मका प्रकाशकीबाहुल्यतावाला सुखरूपफलहींहोवैहैं ॥ और कोटीविषयोंकीप्राप्तिकरिकैंभी निवृत्तकरणेकूंअशक्य जा अभिलाषाविशेषहै ताकानामलोभहै ॥ ऐसालोभ रजोगुणतैंहीं उत्पन्नहोवैहै ॥ तहां निरंतरवृद्धिकूंप्राप्तहुआ तथापूरणकरणेकूंअशक्य ऐसे लोभकूं दुःखकाहेतुपणा प्रसिद्धहींहै ॥ यातैं तिसलोभपूर्वककऱ्याजो राजसकर्महैं तिसराजसकर्मकाभी दुःखहींफल होवैहै ॥ और तमोगुणतैं प्रमाद मोह यहदोनों उत्पन्नहोवैहैं ॥ तथा अज्ञानभी उत्पन्नहोवैहै ॥ ईहां अज्ञानशब्दकरिकै अप्रकाशका ग्रहणकरणा ॥ और प्रमादमोह इनदोनोंशब्दोंकाअर्थतौं (अप्रकाशोप्रवृत्तिश्च) इसपूर्वउक्त श्लोकविषे कथनकरिआयेहैं इति ॥ १७ ॥ अब सत्वादिकतीनगुणोंकेवृत्तविषेस्थितपुरुषोंका (यदासत्वेप्रवृद्धेतु) इसपूर्वउक्तश्लोकविषेकथनकऱ्याजोफलहै तिसीहीं फलकूं ऊर्ध्वभावकरिकै तथा अधोभावकरिकै कथनकरेहैं ॥

(मू० श्लो०) ऊर्ध्वंगच्छंतिसत्त्वस्थामध्येतिष्ठंतिराजसाः ॥ जघन्यगुणवृत्तस्थाअधोगच्छंतितामसाः ॥ १८ ॥ ऊर्ध्वं । गच्छंति । सत्वस्थाः । मध्ये । तिष्ठंति । राजसाः । जघन्यगुणवृत्तस्थाः । अधः । गच्छंति । तामसाः ॥ १८ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन सत्ववृत्ताविषेस्थितपुरुष ऊपरिलेलोकोंकूं जावैहैं और रजोवृत्तविषेस्थितपुरुष मनुष्यलोकविषे स्थितहोवैहैं और निकृष्टतमोगुण केवृत्तविषेस्थित तामसपुरुष अधः गमनकरेहैं ॥ १८ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ तहां तिसरेतमोगुणकेअंतविषे वृत्त यहशब्द श्रीभगवान्नैं कथनकऱ्याहै ॥ याते सत्वरज इनआदिके दोगुणोंकेअंतविषेभी सोवृत्तशब्द श्रीभगवान्कूं

विवक्षितहै ॥ यातैं यहअर्थसिद्धहोवैहै ॥ सत्वगुणका जो शास्त्रजन्य ज्ञानरूप तथाशुभकर्मरूप वृत्तहै ॥ तिससत्वगुणकेवृत्तविषेस्थितहुए अर्थात् श्रद्धापूर्वक तिसवृत्तकूंधारणकरतेहुए यहपुरुष ब्रह्मलोकपर्यंत ऊपरिलेदेवलोकोंकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ अर्थात् तिसज्ञानकर्मकीन्यूनअधिकताकरिकै तेपुरुष न्यूनअधिकतावालेतिनदेवतावोंविषेहीं उत्पन्नहोवैहैं ॥ मनुष्यशरीरकूं तथापश्वादिशरीरकूं तेसात्विकपुरुष प्राप्तहोवैनहीं ॥ और जेपुरुष रजोगुणके लोभादिपूर्वकराजस कर्मरूपवृत्तविषे स्थितहैं अर्थात् जेपुरुष तिसराजसकर्मरूपवृत्तकूं अत्यंतप्रीतिपूर्वककरैहैं ॥ तेराजसपुरुषतौं पुण्यपापमिश्रित इसमनुष्यलोकविषेहीं स्थितहोवैहैं ॥ तेराजसपुरुष देवशरीरकूं तथापशुआदिकशरीरकूंप्राप्तहोवैंनहीं ॥ किंतु इनमनुष्योंविषेहीं तेराजसपुरुष उत्पन्नहोवैहैं ॥ और सत्त्व रज इनदोनोंगुणोंकीअपेक्षाकरिकै पश्चात् भावीहोणेतैं तिनदोनोंतैं निकृष्ट ऐसाजो तमोगुणहै ॥ तिसतमोगुणके निद्राआलस्यादिरूपवृत्तविषे प्रीतिवाले जेतामसपुरुषहै ॥ तेतामसपुरुषतौं अधोगमनकरैहैं ॥ अर्थात् पशुआदिकयोनियोंविषेहीं उत्पन्नहोवैहै ॥ तेतामसपुरुष मनुष्यशरीरकूं तथादेवताशरीरकूं प्राप्तहोवैंनहीं ॥ तहां सात्विकपुरुष तथाराजसपुरुषभी कदाचित् तिसतमोगुणके निद्राआलस्यादिकवृत्तविषे स्थितहोवैहैं ॥ यातैं तिनोंकूंभी पश्वादिकशरीरोंकीप्राप्तिहोणीचाहिये ॥ ऐसीशंकाकेनिवृत्तकरणेवास्ते श्रीभगवान् तिनतमोगुणकेवृत्तविषे स्थितपुरुषोंका विशेषण कथनकरैहै (तामसाःइति) तहां जिनपुरुषोंविषे सर्वकालमें तमोगुणहीं प्रधानहै ॥ तिनपुरुषोंका नाम तामसहै ॥ ऐसेतामसपुरुषहीं पशुआदिकयोनियोंविषे जन्मैहैं ॥ और सात्विकपुरुष तथाराजसपुरुष कदाचित् तिसतमोगुणके निद्राआलस्यादिकवृत्तविषे स्थितभीहोवैहैं ॥ तौंभी तिनोंविषे सोतमोगुण प्रधानहोवैनहीं ॥ किंतु अत्यंतगौणहोवैहै ॥ यातैं तेसात्विकपुरुष तथाराजसपुरुष पशुआदिकयोनियोंविषे उत्पन्न होवैंनहीं इहां किसीमूलपुस्तकविषे (जघन्यगुणवृत्तिस्थाः) इसप्रकारकाभी पाठहोवैहै ॥ इसपाठविषेभी सोपूर्वउक्तअर्थहीं जानणा इति ॥ १८ ॥ ❀ ॥ तहां इसचतुर्दशेअध्यायविषे श्रीभगवान्नैं तीनअर्थोंकेकथनकरणेकी प्रतिज्ञाकरीथी ॥ तहां एकतौं क्षेत्रक्षेत्रज्ञदोनोंकेसंयोगकूं ईश्वरकेआधीनपणा ॥ १ ॥ और दूसरा तेगुण कौनहैं तथा तेगुण किसप्रकार इसजीवात्माकूंबंधायमानकरैहैं ॥ २ ॥ और तीसरा तिनगुणोंतैं इसपुरुषका किसप्रकारकरिकै मोक्षहोवैहै ॥ तथा तिसगुणातीतमुक्तपुरुषका कौनलक्षणहै ॥ ३ ॥ इनतीनोंअर्थोंविषे आदिकेदोअर्थतौं पूर्वविस्तारतैंकथनकऱ्ये ॥ अब तीसरेअर्थकाकथनकरणा परिशेषतैं रह्या ॥ ताकेविषेभी सत्व रज तम इनतीनगुणोंकूं मिथ्याज्ञानरूपहोणेतैं इसपुरुषका सम्यक्ज्ञानतैं तिनगुणोंतैं मोक्षहोवैहै इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरैहैं॥

(मू०श्लो०) नान्यंगुणेभ्यःकर्त्तारंयदाद्रष्टानुपश्यति॥ गुणेभ्यश्चपरंवेत्तिमद्भावंसोधिगच्छति॥१९॥ नँ । अँन्यं । गुणेभ्यः । कर्त्तारम् । यदा । द्रष्टा । अनुपश्यँति । गुणेभ्यः । चँ । परम् । वेत्ति । मँद्भावम् । सँः । अँधिगच्छति ॥ १९ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन

जिसकालविषे यहद्रष्टापुरुष सत्त्वादिकगुणोंतें अन्य कर्त्ताकूं नहीं देखताहै तथा तिनगुणोंतें आत्माकूं पर जानताहै तिसकालवि षे सोद्रष्टापुरुष ब्रह्मभावकूं प्राप्तहोवैहै ॥ १९ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन कार्यकारण विषय इनतीनआकारोंकरिकै परिणामकूंप्राप्तहुए जे सत्त्वादिकतीनगुणहैं ॥ तिनगुणोंतें अन्यकिसीकर्त्ताकूं जिसकालविषे यह द्रष्टापुरुष विचारविषेकुशलहुआ नहींदेखेहै ॥ अर्थात् विचारतैंपूर्व तिनगुणोंतैंअन्य आत्माकूं कर्त्तारूपदेखताहुआभी जोपुरुष विचारतैंपश्चात् तिनसत्त्वादिकगुणों तैंअन्यकर्त्ताकूंनहींदेखेहै ॥ किंतु तेसत्त्वादिकगुणहीं अंतःकरण बहिःकरण शरीर विषय इत्यादिकभावकूंप्राप्तहुए सर्वलौकिकवैदिककर्मोंकेकर्त्ताहोवैहैं ॥ इसप्र कार जोपुरुष तिनसत्त्वादिकगुणोंकूंहींकर्त्तादेखेहै ॥ तथा तिसतिसअवस्थाविशेषरूपकरिकै परिणामकूंप्राप्तहुए जे तेसत्वादिकगुणहैं ॥ तिनगुणोंतैं जोपुरुष आत्मा कूं परजानेहै ॥ अर्थात् जैसे आकाशविषे स्थितसूर्य भूमिविषेस्थितजलकेसाथि तथाताजलकेकंपादिकविकारोंकेसाथि संबंधवालाहोवैनहीं ॥ तैसे जो आत्मादे व सत्त्वादिकतीनगुणोंकेसाथि तथातिनगुणोंकेकार्योंकेसाथि संबंधवालाहैनहीं ॥ तथा तिनकार्यसहितगुणोंका प्रकाशकहै ॥ तथा जन्ममरणादिकसर्वविकारोंतैंरहित है ॥ तथा सर्वप्रपंचकासाक्षीहै तथा सर्वत्रसमहै ॥ ऐसे एकअद्वितीयरूपक्षेत्रज्ञआत्माकूं जोद्रष्टापुरुष गुरुशास्त्रकेउपदेशतैंजानेहै तिसकालविषे सोद्रष्टापुरुष मेंपरमेश्वरकेभावकूं प्राप्तहोवैहै ॥ अर्थात् सोपुरुष मैंहींब्रह्मरूपहूं याप्रकारतैंअभेदरूपकरिकै मैंनिर्गुणब्रह्मकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तहांश्रुति ॥ (ब्रह्मवेदब्रह्मै वभवति ॥) अर्थयह ॥ मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारतैं ब्रह्मकूंआपणाआत्मारूपजानताहुआ यहपुरुष ब्रह्मरूपहींहोवैहै इति ॥ १९ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् इसप्रकार सत्त्वादिकतीनगुणोंकूंहीं कर्त्तापणा देखणेहारा तथातिनगुणोंतैं आत्माकूं परदेखणेहारा पुरुष तिसनिर्गुणब्रह्मभावकूं किसप्रकारकरिकैप्राप्तहोवैहै ॥ ऐसीअर्जुनकीजिज्ञासाकेहुए श्रीभगवान् तिसप्रकारकूं कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) गुणानेतानतीत्यत्रीन्देहीदेहसमुद्भवान् ॥ जन्ममृत्युजरादुःखैर्विमुक्तोऽमृतमश्नुते ॥ २० ॥ गुणान् । एतान् । अ तीत्य । त्रीन् । देही । देहसमुद्भवान् । जन्ममृत्युजरादुःखैः । विमुक्तः । अमृतम् । अश्नुते ॥ २० ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हे अर्जुन देहकेउत्पत्तिकाबीजरूप इन सत्त्वादिकतीन गुणोंकूं परित्यागकरिकै जन्ममृत्युजरादुःखइनोंकरिकै विमुक्तहुआ यहवि द्वान्पुरुष मोक्षकूं प्राप्तहोवैहै ॥ २० ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन देहकीउत्पत्तिकेबीजरूप ऐसेजे मायारूप सत्व रज तम यहतीनगुणहैं ॥ इनतीनगुणोंकूंअतिक्रमणकरिकै अर्थात् जीवत्कालविषेहीं तत्व

ज्ञानकरिकै तिनगुणोंकाबाधकरिकै जन्मकरिकै तथामृत्युकरिकै तथा जराकरिकै तथाआध्यात्मिकादिकदुःखोंकरिकै विमुक्तहुआ अर्थात् जीवत्कालविषेहीं तिनमायामय जन्ममृत्युआदिकोंकेसंबंधतैंरहितहुआ यहविद्वान्पुरुष अमृतकूंप्राप्तहोवैहै ॥ अर्थात् सर्वअनर्थोंकीनिवृत्तिपूर्वक ब्रह्मभावकीप्राप्तिरूपमोक्षकूं प्राप्त होवैहै इति ॥ २० ❀ ॥ तहां इनसत्वादिकतीनगुणोंकाअतिक्रमणकरिकै यहविद्वान्पुरुष जीवत्कालविषेहीं मोक्षरूपअमृतकूंप्राप्तहोवैहै ॥ इसपूर्वउक्तअर्थ कूंश्रवणकरिकै अर्जुन तिसगुणातीतपुरुषकेलक्षजानणेकी तथा आचारजानणेकी तथागुणातीतपणेकेउपायजानणेकीइच्छाकरताहुआ श्रीभगवान्केप्रति प्रश्नकरेहै ॥

(मू० श्लो०) अर्जुनउवाच ॥ कैर्लिंगैस्त्रीन्गुणानेतानतीतोभवतिप्रभो ॥ किमाचारःकथंचैतांस्त्रीन्गुणानतिवर्त्तते ॥ २१ ॥ कैः । लिंगैः । त्रीन् । गुणान् । एतान् । अतीतः । भवति । प्रभो । किमाचारः । कथम् । च । एतान् । त्रीन् । गुणान् । अतिवर्त्तते ॥ ॥ २१ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेप्रभो इन सत्त्वादिकतीन गुणोंकूं अतिक्रमणकरणेहारापुरुष किन लिंगोंकरिकैविशिष्ट होवैहै तथा किसआचारवालाहोवैहै तथा इन तीन गुणोंकूं किसप्रकारकरिकै अतिक्रमणकरेहै ॥ २१ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेप्रभो सत्व रज तम इनतीनगुणोंकूं अतिक्रमणकरणेहारा जोतत्ववेत्तापुरुषहै ॥ सोगुणातीत तत्ववेत्तापुरुष किनलिंगोंकरिकै विशिष्टहोवैहै ॥ अर्थात् जिनलक्षणरूपलिंगोंकरिकै सोतत्ववेत्तापुरुष जान्याजावैहै तेलक्षणरूपलिंग आप हमारेप्रति कथनकरो ॥ इतिप्रथमप्रश्नः ॥ १ ॥ तथा तिसगुणातीत तत्ववेत्तापुरुष कौंनआचारहोवैहै ॥ अर्थात् सोतत्ववेत्तापुरुष यथेष्टचेष्टावालाहोवैहै ॥ अथवा नियमपूर्वकचेष्टावालाहोवैहै ॥ सोतत्ववेत्तापुरुषकाआचारभी आपहमारेप्रति कथनकरो ॥ इतिद्वितीयप्रश्नः ॥ २ ॥ तथा सोतत्ववेत्तापुरुष किसप्रकारकरिकै इनतीनगुणोंकूं अतिक्रमणकरेहै ॥ अर्थात् तिसगुणातीतपणेका उपायकौंनहै ॥ सोउपायभी आप हमारेप्रति कथनकरो ॥ इतितृतीयप्रश्नः ॥ ३ ॥ ईहां (हेप्रभो) इससंबोधनकेकहणेकरिकै अर्जुननैं श्रीभगवान्केप्रति यहअर्थ सूचनकऱ्या ॥ दुःखादिकोंकोनिवृत्तकरणेविषे जोसमर्थ होवै ताकानाम प्रभुहै ॥ जैसे राजादिकसमर्थपुरुष आपणेभृत्योंकेदुःखकूं निवृत्तकरेहै ॥ तैसे समर्थहोणे तें आपभगवान्नैंहीं मैंभृत्यकादुःख निवृत्तकरणेयोग्यहै ॥ इति ॥ २१ ॥ ❀ ॥ तहां यद्यपि इसगीताशास्त्रकेद्वितीयअध्यायविषे (स्थितप्रज्ञस्यकाभाषा) इत्यादिकवचनोंकरिकै यहसर्वअर्थ पूर्वहीं अर्जुननैं पूछाथा ॥ तथा (प्रजहाति यदाकामान्) इत्यादिकवचनोंकरिकै मैंभगवान्नैं तिसकाउत्तरभागपूर्वहीं कथन कऱ्याथा ॥ तथापि यहअर्जुन तिस पूर्वउक्तअर्थकूं पुनः प्रकारांतरकरिकै जानणेकीइच्छाकरताहुआ अबी पूछैहै ॥ इसप्रकारके ताअर्जुनकेअभिप्रायकूं निश्च

यकरिके श्रीभगवान् तिसपूर्वउक्तप्रकारतेंविलक्षणप्रकारकरिकै तिसतत्त्ववेत्तापुरुषकेलक्षणादिकोंकूं पांचश्लोकोंकरिकैकथनकरेहै ॥ तहां सोगुणातीतपुरुष किन लक्षणरूपलिंगोंकरिकैविशिष्टहोवैहै ॥ इसप्रथमप्रश्नकेउत्तरकूं एकश्लोककरिकै कथनकरेहैं ॥

(मू० श्लो०) श्रीभगवानुवाच ॥ प्रकाशंचप्रवृत्तिंचमोहमेवचपांडव ॥ नद्वेष्टिसंप्रवृत्तानिननिवृत्तानिकांक्षति ॥ २२ ॥ प्रकाशम् । च । प्रवृत्तिम् । च । मोहम् । एव । च । पांडव । न । द्वेष्टि । संप्रवृत्तानि । न । निवृत्तानि । कांक्षति ॥२२॥ (इतिपदच्छेदः)॥ हेअर्जुन प्रवृत्तहुए प्रकाशकूं तथा प्रवृत्तिकूं तथा मोहकूं जोपुरुष कदाचित्भी नहीं द्वेषकरेहै तथा निवृत्तहुएतिनोंकूं नहीं इच्छा करेहै सोपुरुष गुणातीतकह्याजावैहै ॥ २२ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन सत्वगुणकाकार्यरूप जोप्रकाशहै ॥ तथा रजोगुणकाकार्यरूप जा प्रवृत्तिहै ॥ तथा तमोगुणकाकार्यरूपजो मोहहै ॥ ईहां प्रकाश प्रवृत्ति मोह यहतीनोंकार्य सत्वादिकतीनगुणोंके दूसरेभीसर्वकार्योंकेउपलक्षणहैं ॥ तेसत्वादिकतीनगुणोंके प्रकाशादिकसर्वकार्य आपणीआपणीकारणसामग्रीकेवशतें उत्पन्नहुए यद्यपि दुःखरूपहींहोवैहैं ॥ तथापि जोविद्वान्पुरुष दुःखबुद्धिकरिकै तिनकार्योंविषे द्वेषकूंनहींकरेहै ॥ अर्थात् यहदुःखरूपगुणोंकेकार्य काहेकूंउत्पन्नहुए हैं यापकारतें जोविद्वान्पुरुष तिनोंविषे द्वेषकूंकरतानहीं ॥ और तेसत्वादिकगुणोंकेप्रकाशादिककार्य आपणेआपणेविनाशकीसामग्रीकेवशतें निवृत्तहुए यद्यपि सुखरूपहींहोवैहैं ॥ तथापि जो विद्वान्पुरुष सुखबुद्धिकरिकै तिनोंकीइच्छानहींकरेहै ॥ अर्थात् सुखरूप यहगुणोंकेकार्योंकीनिवृत्ति हमारेकूं सर्वदा प्राप्तहोवै याप्रकारकी जोपुरुष इच्छाकरतानहीं ॥ काहेतें सोविद्वान्पुरुष तिससत्वादिकगुणोंकूं तथातिनसत्वादिकगुणोंकेकार्योंकूं स्वप्नकीन्यांई मिथ्यारूपहीं जानेहैं ॥ और मिथ्यारूपकरिकैजान्याहुआपदार्थ इसपुरुषके रागका वाद्वेषका विषयहोवैनहीं ॥ जैसे मिथ्यारूपकरिकै जान्याहुआ शुक्तिरजत इसपुरुषके रागकाविषयनहीं होवैहै ॥ और मिथ्यारूपकरिकैजान्याहुआ रज्जुसर्प इसपुरुषके द्वेषकाविषय नहींहोवैहै ॥ इसप्रकार सत्वादिकतीनगुणोंके प्रकाशादिककार्योंकीप्रवृत्तिविषे जोपुरुष द्वेषतेंरहितहै॥तथा तिनकार्योंकीनिवृत्तिविषे जोपुरुष रागतेंरहितहै॥ सोविद्वान्पुरुष गुणातीत कह्याजावैहै ॥ इसप्रकार इसश्लोकका चतुर्थश्लोकविषेस्थित (गुणातीतःसउच्यते) इसवचनकेसाथि अन्वयकरणा ॥ तहां श्रीभगवान्नैं यहजोगुणातीतपुरुषकालक्षण कथनकऱ्याहै ॥ सोयहलक्षण तिसगुणातीतपुरुषकूं हींप्रत्यक्षहै ॥ दूसरेकिसीकूं प्रत्यक्षहैनहीं ॥ काहेतें एकपुरुषकेअंतःकरणविषेरह्याजो द्वेषहै तथाताद्वेषकाअभावहै तथारागहै तथातारागकाअभावहै ॥ तिनद्वेषादिकोंकूं दूसरापुरुष जानिसकतानहीं ॥ यातें यहगुणातीतपुरुषकालक्षण स्वार्थलक्षणहींहै ॥ परार्थलक्षण हैनहीं ॥ तहां जोलक्षण केवल आपणेकूंहीं ज्ञात

होवैहै सोलक्षण स्वार्थलक्षण कह्याजावैहै ॥ और जोलक्षणदूसरेकूंभी ज्ञातहोवैहै सोलक्षण परार्थलक्षण कह्याजावैहै ॥ इसीस्वार्थलक्षणकूं शास्त्रविषे स्वसंवेद्य कहेहैं ॥ और इसी परार्थलक्षणकूं शास्त्रविषे परसंवेद्य कहेहैं इति ॥ २२ ॥ ❀ ॥ अब सोगुणातीतपुरुष किस आचारवालाहोवै इसद्वितीयप्रश्नके उत्तरकूं श्रीभगवान् तीनश्लोकोंकरिकैवर्णनकरैहै ॥

(मू० श्लो०) उदासीनवदासीनोगुणैर्योनविचाल्यते ॥ गुणावर्त्ततइत्येवयोवतिष्ठतिनेंगते ॥ २३ ॥ उदासीनवत् । आसीनः । गुणैः । यः । न । विचाल्यते । गुणाः । वर्त्तंते । इति । एवं । यः । अवतिष्ठति । न । इंगते ॥ २३ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥

हेअर्जुन जोपुरुष उदासीनपुरुषकीन्यांई स्थितहै तथासत्त्वादिकगुणोंनैं नहीं चलायमानकरीता तथा तेगुण हीं परस्पर वर्त्ततेहैं ईसप्रकारकानिश्चयकरिकै जोपुरुष स्थितहोवैहै तथा नहीं किंचित्मात्रभी व्यापारकरैहै सोपुरुष गुणातीतकह्याजावैहै॥२३॥(इतिपदार्थः)॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन परस्पर विवादकरणेहारे जेदोपुरुषहैं ॥ तिनदोनोंकेमध्यविषे किसीकेभीपक्षकूं जोपुरुष अंगीकारकरतानहीं तापुरुषकानाम उदासीनहै ॥ सोउदासीनपुरुष जैसे किसीपुरुषविषे रागकूंभी करतानहीं ॥ तथा किसीपुरुषविषे द्वेषकूंभी करतानहीं ॥ किंतु सोउदासीनपुरुष रागद्वेषतैंरहितहुआस्थित होवैहै ॥ तिसउदासीनपुरुषकीन्यांई जोपुरुष रागद्वेषतैंरहितहोइके आपणेसत्आनंदस्वरूपविषेहीं स्थितहोवैहै ॥ तथा सुखदुःखादिरूपआकारकरिकैपरिणामकूं प्राप्तहुए जेसत्वादिकतीनगुणहैं ॥ ऐसेतीनगुणोंनैंभी जोपुरुष आपणेस्वरूपकीस्थितितैंचलायमानकरीतानहीं ॥ किंतु देह इंद्रिय विषय इत्यादिरूपआकारकरिकै परिणामकूंप्राप्तहुए तेसत्त्वादिकगुणहीं आपसमैं साधकबाधक भावकरिकै तथाग्राह्यग्राहकभावकरिकै तथाउपकार्यउपकारकभावकरिकै वर्त्ततेहैं ॥ इनसर्वगुणों काप्रकाशकजो मैंआत्माहूं ॥ तिसमैंआत्माका किसीभीप्रकाश्यवस्तुकेधर्मसाथि संबंधहैनहीं ॥ जैसे घटादिकसर्वपदार्थोंकूंप्रकाश करणेहारेसूर्यका किसीभी प्रकाश्यरूपघटादिकपदार्थोंकेधर्मोंसाथि संबंधहैनहीं ॥ और यहसर्वप्रपंच दृश्यरूपहै तथाजडरूपहै तथास्वप्नकीन्यांई मिथ्याहींहै ॥ और मैंआत्मातौं द्रष्टाहूं तथास्वयंज्योतिस्वरूपहूं तथापरमार्थसत्यहूं तथासर्वविकारोंतैंरहितहूं तथाद्वैतभावतैंरहितहूं ॥ इसप्रकारकानिश्चयकरिकै जोपुरुष आपणेस्वरूपविषेहींस्थित होवैहै ॥ किसीभीकार्यकीसिद्धिवासतै व्यापारवालाहोतानहीं ॥ ऐसातत्त्ववेत्तापुरुष गुणातीत कह्याजावैहै ॥ इसप्रकार इसश्लोकका तीसरेश्लोकविषेस्थित (गुणातीतःसउच्यते) इसवचनकेसाथि अन्वयकरणा ॥ ईहां (योवतिष्ठति) इसवचनकेस्थानविषे (योनुतिष्ठति) इसप्रकारकाभी किसीपुस्तकविषेपाठहोवैहै सोइसप्रकारकेपाठविषेभी सोपूर्वउक्तअर्थहींजानणा इति ॥ २३ ॥ ❀ ॥ किंच ॥

(मू०श्लो०) समदुःखसुखःस्वस्थःसमलोष्टाश्मकांचनः ॥ तुल्यप्रियाप्रियोधीरस्तुल्यनिंदात्मसंस्तुतिः ॥ २४ ॥ समदुःखसुखः । स्वस्थः । समलोष्टाश्मकांचनः । तुल्यप्रियाप्रियः । धीरः । तुल्यनिंदात्मसंस्तुतिः ॥ २४ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन समहैदुःखसुखदोनोंजिसकूं तथास्वरूपविषैहीस्थितिजिसकी तथासमहैलोष्टअश्मकांचनजिसकूं तथातुल्यहै प्रियअप्रियदोनोंजिसकूं तथातुल्यहै आपणीनिंदास्तुतिदोनों जिसकूं ऐसाधीरपुरुष गुणातीतकह्याजावैहै ॥ २४ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन तिसतत्ववेत्तापुरुषका दुःखविषेतौं द्वेषनहींहै ॥ तथा सुखविषे रागनहींहै ॥ और तेदुःखसुखदोनोहीं अनात्मारूपअंतकरणकेहींधर्महै ॥ तथा स्वमकीन्यांई मिथ्यारूपहैं ॥ यातैं रागद्वेषतैंरहितपणेकरिकै तथाअनात्मधर्मपणेकरिकै तथामिथ्यापणेकरिकै समहैं तेदुःखसुखदोनों जिसपुरुषकूं ताकानाम समदुःखसुखहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् तिसतत्ववेत्तापुरुषकूं तेदुःखसुखदोनों किसहेतुतैं समहैं ॥ ऐसीअर्जुनकीजिज्ञासाकेहुए श्रीभगवान् ताके विषेहेतुकहेहैं (स्वस्थःइति) हेअर्जुन जिसकारणतैं सोतत्ववेत्तापुरुष स्वस्थहै ॥ अर्थात् द्वैतदर्शनतैंरहितहोणेतैं जो तत्ववेत्तापुरुष आपणेआनंदस्वरूपआत्माविषेहीं स्थितहै ॥ इसकारणतैंहीं तिसतत्ववेत्तापुरुषकूं तेदुःखसुखदोनोंसमहैं ॥ आत्मा विषेस्थितितैंरहित बहिर्मुखपुरुषकूंहीं तिनदुःखसुखदोनोंविषे विषमताहोवैहै ॥ हेअर्जुन जिसकारणतैंसोतत्ववेत्तापुरुष आनंदस्वरूपआत्माविषेहींस्थितहै ॥ तिसकारणतैंहींसोतत्ववेत्तापुरुष समलोष्टाश्मकांचनहै ॥ तहां समहैं क्या ग्रहणत्यागभावतैं रहितहैं लोष्ट अश्मकांचन यहतीनों जिसकूं ताकानाम समलोष्टाश्मकांचनहै ॥ तहां मृत्तिकाकेपिंडकानाम लोष्टहै ॥ औरपाषाणकानाम अश्महै ॥ औरसुवर्णकानाम कांचनहै ॥ अर्थात् जोतत्ववेत्तापुरुष लोष्टादिकतुच्छवस्तुवोंविषेतौं त्यागबुद्धितैंरहितहै ॥ तथा सुवर्णादिकमहान्पदार्थोंविषे ग्रहणबुद्धितैंरहितहै ॥ हेअर्जुन जिसकारणतैं सोतत्ववेत्तापुरुष समलोष्टाश्मकांचनहै ॥ इसकारणतैंहीं सोतत्ववेत्तापुरुष तुल्यप्रियाप्रियहै ॥ तहां तुल्यहैं सुखकासाधनरूपप्रिय तथादुःखकासाधनरूपअप्रिय दोनों जिसपुरुषकूं ताकानाम तुल्यप्रियाप्रियहै ॥ अर्थात् जिसतत्ववेत्तापुरुषकूं सोप्रियपदार्थतौं यहप्रियपदार्थ हमारेहितकासाधनहै याप्रकारकी हितसाधनताबुद्धिकाविषयनहींहै ॥ और सोअप्रियपदार्थतौं यहअप्रियपदार्थ हमारेअहितकासाधनहै याप्रकारकी अहितसाधनताबुद्धिका विषय नहींहै ॥ किंतु तेप्रियअप्रियदोनोंतिसतत्ववेत्तापुरुषकी उपेक्षाबुद्धिकेहींविषयहोवैहै ॥ तथा जोपुरुष धीरहै ॥ अर्थात् बुद्धिमान्है अथवाधृतिमान्है ॥ हेअर्जुन जिसकारणतैं सोतत्ववेत्तापुरुष धीरहै ॥ इसकारणतैंहीं सोतत्ववेत्तापुरुष तुल्यनिंदात्मसंस्तुतिहै ॥ तहां आपणेदोषोंकेकथनकानाम निंदाहै और आपणे गुणोंकेकथनकानाम स्तुतिहै ॥ तुल्यहै आपणेनिंदा तथास्तुति दोनों जिसपुरुषकूं ताकानाम तुल्यनिंदात्मसंस्तुतिहै ॥ ऐसातत्ववेत्तापुरुष गुणातीत कह्याजावैहै ॥ इसप्रकारतैं इसश्लोकका द्वितीयश्लोकविषेस्थित (गुणातीतःसउच्यते) इसवचनकेसाथि अन्वयकरणा इति ॥ २४ ॥ ❀ ॥ किंच ॥

(मू० श्लो०) मानापमानयोस्तुल्यस्तुल्योमित्रारिपक्षयोः ॥ सर्वारंभपरित्यागीगुणातीतःसउच्यते ॥ २५ ॥ मानापमानयोः । तुल्यः । तुल्यः । मित्रारिपक्षयोः । सर्वारंभपरित्यागी । गुणातीतः । सः । उच्यते ॥ २५ ॥ (इतिपद०) ॥ हेअर्जुन जोपुरुष मानअपमानदोनोंविषे तुल्यहै तथामित्रपक्षशत्रुपक्षदोनोंविषे तुल्यहै तथासर्व आरंभपरित्यागकऱ्येहैंजिसनैं सोपुरुष गुणातीत कह्याजावैहै ॥ २५ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जोतत्ववेत्तापुरुष मान अपमान दोनोंविषे तुल्यहै ॥ तहां सत्कारकानाम मानहै ॥ जिससत्कारकूं लोकविषे आदर कहेहैं ॥ और तिरस्कारकानाम अपमानहै ॥ जिसतिरस्कारकूं लोकविषे अनादर कहेहैं ॥ तिस मानअपमानदोनोंविषे जोपुरुष तुल्यहै ॥ अर्थात् मानकीप्राप्तिविषे जिसपुरुषकूं हर्षनहींहोवैहै ॥ तथा अपमानकीप्राप्तिविषे जिसपुरुषकूं विषादनहींहोवैहै ॥ तहां पूर्वश्लोकविषे (तुल्यनिंदात्मसंस्तुतिः) इसवचनकरिकैकथनकरीजा निंदास्तुतिहै ॥ तथा इसश्लोकविषेकथनकऱ्याजो मानअपमानहै ॥ तिनदोनोंविषे इतनाभेदहै ॥ निंदास्तुति यहदोनोंतौंशब्दरूपहींहोवैहैं ॥ काहेतैं दोषोंकेकथनकानाम निंदाहै ॥ और गुणोंकेकथनकानाम स्तुतिहै ॥ सोकथन शब्दरूपहींहै ॥ और मानअपमानतौं शब्दतैंविनाभी शरीरमनकाव्यापारविशेषरूपहोवैहैं ॥ इतना तिनदोनोंविषेभेदहै इति ॥ और किसीमूलपुस्तकविषेतौं (मानापमानयोस्तुल्यः) इसप्रकारकाभीपाठहोवैहै इसप्रकारकेपाठविषे सोपूर्वउक्तअर्थहींजानणा ॥ तथा जोतत्ववेत्तापुरुष मित्रपक्ष शत्रुपक्ष दोनोंविषे तुल्यहै ॥ अर्थात् सोतत्ववेत्तापुरुष जैसे मित्रपक्षकेद्वेषका अविषयहोवैहै तैसे शत्रुपक्षकेभी द्वेषका अविषयहोवैहै ॥ अथवा जोतत्ववेत्तापुरुष मित्रपक्षविषेतौं अनुग्रहनहींकरैहै ॥ और शत्रुपक्षविषे निग्रहनहींकरैहै ॥ तथा जोतत्ववेत्तापुरुष सर्वारंभपरित्यागीहै ॥ ईहां शरीरमनवाणीकरिकै जिनोंका आरंभकऱ्याजावैहै तिनोंकानाम आरंभहै ॥ ऐसेलौकिकवैदिककर्महैं ॥ तिन कर्मरूपसर्वआरंभोंका परित्यागकऱ्याहैजिसनैं ताकानाम सर्वारंभपरित्यागीहै ॥ अर्थात् इसदेहकीयात्रामात्रविषेउपयोगी जेभिक्षाअटनादिककर्महैं ॥ तिनकर्मोंतैंभिन्न दूसरेसर्वकर्मोंकापरित्यागकऱ्याहै जिसनैं ताकानाम सर्वारंभपरित्यागीहै ॥ इसप्रकार (उदासीनवदासीनः) इत्यादिकतीनश्लोकोंकरिकै कथनकऱ्येहुए जेआचारहैं ॥ ऐसेआचारोंकरिकैयुक्त जोतत्ववेत्तापुरुषहीं गुणातीत कह्याजावैहै ॥ तात्पर्ययह (उदासीनवदासीनः) इत्यादिकतीनश्लोकोंकरिकैं कथनकऱ्येजे उपेक्षकत्वादिकधर्म हैं ॥ तेउपेक्षकत्वादिकधर्म आत्मज्ञानकीउत्पत्तितैंपूर्वतौं प्रयत्नसाध्यहोवैहैं ॥ अर्थात् आत्मज्ञानकीइच्छावान्अधिकारीपुरुषनैं तिसआत्मज्ञानकेसाधनरूप करिकै तेउपेक्षकत्वादिकसर्वधर्म अनुष्ठानकरणे ॥ और तिसआत्मज्ञानकीउत्पत्तितैंअनंतर तिस गुणातीतजीवन्मुक्तपुरुषकेतौं तेउपेक्षकत्वादिकसर्वधर्म विनाहीं

प्रयत्नतैंसिद्ध लक्षणरूपकरिकैस्थितहोवैहैं ॥ इति ॥२५॥ ❁ ॥ अब यहअधिकारीपुरुष किसउपायकरिकै तिनगुणोंकूं अतिक्रमणकरेहै ॥ इसतृतीयप्रश्नके उत्तरकूं श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

(मू०श्लोक) मांचयोऽव्यभिचारेणभक्तियोगेनसेवते ॥ सगुणान्समतीत्यैतान्ब्रह्मभूयायकल्पते ॥२६॥ माम् । च । यः । अव्यभिचारेण । भक्तियोगेन । सेवते । सः । गुणान् । समतीत्य । एतान् । ब्रह्मभूयाय । कल्पते ॥ २६ ॥ (इतिपदच्छेदः)॥ हेअर्जुन पुनः जोपुरुष मैंपरमेश्वरकूं अनन्य भक्तियोगकरिकै चिंतनकरेहै सोमेराभक्त इनपूर्वउक्त सत्त्वादिकगुणोंकूं अतिक्रमणकरिकै ब्रह्महोणेवासतै समर्थहोवैहै ॥२६ ॥ (इतिपदार्थः)॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन सर्वभूतोंकाअंतर्यामी तथाआपणीमायाशक्तिकरिकैक्षेत्रज्ञभावकूंप्राप्तहुआ ऐसाजो मैं परमानंदघन भगवान्वासुदेवहूं ॥ तिसमैंपरमेश्वरकूंहीं जोअधिकारीपुरुष अव्यभिचारी भक्तियोगकरिकै सेवनकरेहै ॥ तहां विजातीयवृत्तियोंकेव्यवधानतैंरहित जो तैलधाराकीन्यांई मैंपरमात्मादेवविषयक सजातीय वृत्तियोंकाप्रवाहहै ताकानाम अव्यभिचारीभक्तियोगहै ॥ जोभक्तियोग पूर्वद्वादशेअध्यायविषे विस्तारतैंनिरूपणकर्याहै ॥ ऐसेपरमप्रेमरूपअनन्यभक्तियोगकरिकै जोपुरुष मैंनारायणकूं सर्वदा चिंतनकरेहै ॥ सोमैंपरमेश्वरकाअनन्यभक्त इनपूर्वउक्त सत्वादिकतीनगुणोंकूं अतिक्रमणकरिकै अर्थात् अद्वैतदर्शनकरिकै तिनसत्वादिकतीनगुणोंकूंबाधकरिकै निर्गुणब्रह्मभावकीप्राप्तिरूपमोक्षवासतै समर्थहोवैहै ॥ यातैं सर्वकालविषे मैंपरमेश्वरकाचिंतनहीं तिसगुणातीतपणेका उपायहै इति ॥ २६ ॥ ❁ ॥ तहां मैंपरमात्मादेवकेचिंतनकरणेहारापुरुष मोक्षकूंहींप्राप्तहोवैहै इसपूर्वउक्तअर्थविषे श्रीभगवान् आपणीमहान्तारूपहेतुकूं कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) ब्रह्मणोहिप्रतिष्ठाहममृतस्याव्ययस्यच ॥ शाश्वतस्यचधर्मस्यसुखस्यैकांतिकस्यच ॥ २७ ॥ इतिश्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सुब्रह्मविद्यायांयोगशास्त्रेश्रीकृष्णार्जुनसंवादेगुणत्रयविभागयोगोनामचतुर्दशोऽध्यायः॥१४॥ ब्रह्मणः । हि । प्रतिष्ठा । अहम् । अमृतस्य । अव्ययस्य । च । शाश्वतस्य । च । धर्मस्य । सुखस्य । ऐकांतिकस्य । च ॥ २७ ॥(इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन जिस कारणतैं अमृतरूप तथा अव्ययरूप तथा शाश्वतरूप तथाधर्मरूप तथा अव्यभिचारी सुखरूप ऐसेसोपाधिककारणब्रह्मका मैंनिरुपाधिकवासुदेव वास्तवस्वरूपहूं तिसकारणतैं मैंपरमेश्वरकीभक्तितैं मोक्षकीप्राप्ति युक्तहींहै ॥ २७॥ (इतिपदार्थः)॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन तत्त्वमसि इसवाक्यविषेस्थितजो तत्पदहै ॥ तिसतत्पदकावाच्यअर्थरूप तथासर्वजगत्केउत्पत्तिस्थितिलयकाकारणरूप ऐसाजो मायाविशिष्ट सोपाधिकब्रह्म ॥ ऐसेसोपाधिकब्रह्मका मैंनिर्विकल्पकवासुदेवहीं प्रतिष्ठाहूं ॥ अर्थात् पारमार्थिकरूप तथानिर्विकल्पकरूप तथासत्चित्आनंदरूप ऐसाजो सर्वउपाधियोंतैंरहिततत्पदकालक्ष्यअर्थहै सोलक्ष्यअर्थरूप मैंहींहूं ॥ तहां (प्रतिष्ठत्यत्रेतिप्रतिष्ठा) इसप्रकारकीव्युत्पत्तिकरिकै कल्पितरूपतैंरहित अकल्पितरूपहीं प्रतिष्ठाशब्दकाअर्थ सिद्धहोवैहै ॥ हेअर्जुन जिसकारणतैं मैंनिरुपाधिकशुद्धब्रह्महीं तिससोपाधिकब्रह्मका वास्तवस्वरूपहूं ॥ तिसकारणतैं अधिकारीपुरुष मैंनिरुपाधिकशुद्धब्रह्मका निरंतर चिंतनकरेहै ॥ सोअधिकारीपुरुष मैंनिर्गुणब्रह्मभावकीप्राप्तिरूपमोक्षवासतै समर्थहोवैहै यहपूर्वउक्तअर्थ युक्तहींहै इति ॥ शंका ॥ हेभगवन् किसप्रकारकेब्रह्मकी आप प्रतिष्ठाहो ॥ ऐसीअर्जुनकीजिज्ञासाकेहुए श्रीभगवान् तिसब्रह्मकेविशेषणोंकूं कथनकरेहै (अमृतस्यइति) हेअर्जुन जिसब्रह्मका मैंपरमेश्वर प्रतिष्ठारूपहूं ॥ सोब्रह्म कैसाहै अमृतहै ॥ अर्थात् विनाशतैंरहितहै ॥ तहांश्रुति ॥ (एतदमृतमभयमेतद्ब्रह्म) ॥ अर्थयह ॥ यहब्रह्महींअमृतरूपहै तथाअभयरूपहै इति ॥ पुनःकैसाहैसोब्रह्म अव्ययहै अर्थात् विपरिणामतैंरहितहै ॥ पुनः कैसाहै सोब्रह्मशाश्वतहै ॥ अर्थात् अपक्षयतैंरहितहै ॥ ईहांविनाश विपरिणाम अपक्षय इनतीनविकारोंकानिषेध जन्म अस्ति वृद्धि इनतीनविकारोंकेनिषेधकाभी उपलक्षणहै ॥ अर्थात् सोब्रह्म षट्भावविकारोंतैंरहितहै ॥ पुनः कैसाहैसोब्रह्म धर्मरूपहै ॥ अर्थात् ज्ञाननिष्ठारूप धर्मकरिकैप्राप्तहोणेयोग्यहै ॥ पुनःकैसाहैसोब्रह्म सुखरूपहै ॥ अर्थात् परमानंदरूपहै ॥ अब तिससुखविषे विषय इंद्रियकेसंयोगकरिकै जन्यत्वकूंनिवृत्तकरणेवासतै तासुखकाविशेषण कथनकरेहैं (ऐकांतिकस्यइति) कैसाहैसोसुख ऐकांतिकहै ॥ अर्थात् जोसुख विषयजन्य सुखकीन्यांई व्यभिचारीनहींहै ॥ किंतु सर्वदेशविषे तथासर्वकालविषे जोसुख विद्यमानहै ॥ इसीहीं व्यापकसुखकूं (योवैभूमातत्सुखम्) यहश्रुतिभी कथनकरेहै॥ ऐसेअमृतादिकसर्वविशेषणोंकरिकैविशिष्टब्रह्मका मैंपरमेश्वर जिसकारणतैं वास्तवस्वरूपहूं॥तिसकारणतैंहीं मैंपरमेश्वरकाअनन्यभक्त इससंसारबंधतैंमुक्तहोवैहैइति॥ तहां इसप्रकारका श्रीकृष्णभगवान्कास्वरूप ब्रह्मानैंभी श्रीकृष्णभगवान्केप्रतिकथनकऱ्याहै॥तहांश्लोक॥ (एकस्त्वमात्मापुरुषःपुराणःसत्यःस्वयंज्योतिरनंतआद्यः॥ नित्योऽक्षरोजस्रसुखोनिरंजनः पूर्णोऽद्वयोमुक्तउपाधितोऽमृतः) ॥ अर्थयह॥ हेश्रीकृष्णभगवन् आपकैसेहो एकहो ॥अर्थात् सर्वत्रएकरूपहो तथा सर्वप्राणीयोंका आत्मारूपहो ॥ तथा पुरुषहो ॥ अर्थात् सर्वशरीररूपपुरीयोंविषे अस्तिभातिप्रियरूपकरिकै स्थितहो ॥ तथा पुराणहो ॥ अर्थात् इसतैंपूर्वभी विद्यमानहो॥तथा सत्यहो अर्थात् तीनकालोंविषेबाधतैंरहितहो ॥ तथा स्वयंज्योतिहो ॥ अर्थात् आपणेप्रकाशवासतै इतरप्रकाशकीअपेक्षातैंरहितहो ॥ तथा अनंतहो अर्थात् देशकालवस्तुपरिच्छेदतैंरहितहो ॥ तथा आद्यहो अर्थात् सर्वकाआदिकारणहो ॥ तथा नित्यहो अर्थात् उत्पत्तिविनाशतैं रहितहो ॥ तथा अक्षरहो॥

तथा व्यापकसुखस्वरूपहो ॥ तथा निरंजनहो अर्थात् अज्ञानरूपअंजनतैंरहितहो ॥ तथा सर्वत्रपरिपूर्णहो ॥ तथा द्वैतभावतैंरहितहो ॥ तथा सर्वउपाधियोंतैंरहितहो ॥ तथा अमृतरूपहो ॥ अर्थात् मोक्षस्वरूपहो इति ॥ इसश्लोकविषे श्रीब्रह्मानैं श्रीकृष्णभगवान्कूंसर्वउपाधियोंतैंरहित आत्मारूप तथाब्रह्मरूप कह्याहै॥और इसीप्रकारका श्रीकृष्णभगवान्कास्वरूप श्रीशुकदेवनैंभी स्तुतिप्रसंगतैंविनाहीं कथनकऱ्याहै ॥ तहांश्लोक ॥ (सर्वेषामेववस्तूनांभावार्थोभवतिस्थितः॥तस्यापि भगवान्कृष्णःकिमतद्वस्तुरूप्यताम् ॥) अर्थयह ॥ जितनैंकीकार्यरूपवस्तुहैं ॥ तिनसर्वकार्यरूपवस्तुवोंका जोभावार्थहै ॥ क्या सत्तारूपपरमार्थस्वरूपहै सो भावार्थ कार्यरूपकरिकैजायमानसोपाधिकब्रह्मविषेहीं स्थितहै ॥ काहेतैं सिद्धांतविषे कारणकीसत्तातैंपृथक् कार्यकीसत्ता अंगीकारहैनहीं ॥ जैसे कुंडलकंकणादिकभूषणरूपकार्योंकी सुवर्णरूपकारणकीसत्तातैं पृथक्सत्ता हैनहीं॥तथा जैसे घटशरावादिककार्योंकी मृत्तिकारूपकारणकीसत्तातैं पृथक्सत्ता हैनहीं ॥तैसे इसप्रपंचरूपकार्यकीभी तिससोपाधिकब्रह्मरूपकारणकीसत्तातैं पृथक्सत्ता हैनहीं ॥ यहवार्त्ता (तदनन्यत्वमारंभणशब्दादिभ्यः) इससूत्रकेव्याख्यानविषे श्रीभाष्यकारोंने विस्तारतैं कनथकरीहै ॥ और तिसकारणरूपसोपाधिकब्रह्मकाभी सोसत्तारूपभावार्थ श्रीकृष्णभगवान्है ॥ काहेतैं सो सोपाधिककारणब्रह्म निरुपाधिकब्रह्मविषेहीं कल्पितहै ॥ और जोजोकल्पितवस्तुहोवैहै सोसोअधिष्ठानतैंपृथक्होवैनहीं ॥ जैसे रज्जुविषेकल्पितसर्प रज्जुरूपअधिष्ठानतैं पृथक्नहींहै ॥ और श्रीकृष्णभगवान्हीं सर्वकल्पनावोंकाअधिष्ठानरूपहोणेतैं परमार्थसत्यनिरुपाधिकब्रह्मरूपहै ॥ यातैं यहनिरुपाधिकब्रह्मरूप श्रीकृष्णभगवान्हीं तिसकारणरूपसोपाधिकब्रह्मका परमार्थसत्तारूप भावार्थहै ॥ ऐसेअधिष्ठानब्रह्मरूप श्रीकृष्णभगवान्तैंअन्य कोईभीवस्तु पारमार्थकहैनहीं ॥ किंतु सोपरब्रह्मरूपश्रीकृष्णभगवान्हीं एक पारमार्थिकहै इति ॥ इसीहींअर्थकूं श्रीभगवान्नैं ईहां (ब्रह्मणोहिप्रतिष्ठाहम्) इसवचनकरिकैकथनकऱ्याहै इति ॥ अथवा (ब्रह्मणोहिप्रतिष्ठाहम्) इसश्लोकका यहदूसराअर्थकरणा ॥ शंका ॥ हेभगवन् जोपुरुष जिसदेवताकाध्यानकरैहै ॥ सोपुरुष तिसीहींदेवताभावकूं प्राप्तहोवैहै ॥ यातैं तुमाराभक्त तुमारेभावकूंतौं प्राप्तहोवैगा ॥ परंतु सोतुमाराभक्त ब्रह्मभावकूं कैसेप्राप्तहोवैगा ॥ किंतु ब्रह्मभावकूं नहींप्राप्तहोवैगा ॥ जिसकारणतैं आप तिसब्रह्मतैंजुदाहीं हो ॥ ऐसीअर्जुनकी शंकाकेहुए ॥ श्रीभगवान् आपकूं ब्रह्मरूपताकथनकरैहै (ब्रह्मणोहिप्रतिष्ठाहामिति) हेअर्जुन सर्वउपाधियोंतैंरहित परमात्मादेवरूप शुद्धब्रह्मका परिअवसानरूप प्रतिष्ठा मैंहींहूं ॥ अर्थात् मेरेतैं सोपरब्रह्म भिन्ननहींहै ॥ किंतु मैंहीं परब्रह्मरूपहूं ॥ तथा अव्ययरूपअमृतकीभी मैंहीं प्रतिष्ठाहूं ॥ तहां सर्वअनर्थकीनिवृत्तिपूर्वक परमानंदकीप्राप्तिरूप जोमोक्षहै ताकानाम अमृतहै ॥ सोमोक्षरूपअमृत किसीप्रकारकरिकैभी नाशहोत नहीं ॥ यातैं सोमोक्षरूपअमृतअव्यय कह्याजावैहै ॥ ऐसेविनाशतैंरहितमोक्षरूपअमृतकाभी मैंपरमात्मादेवविषेहीं परिअवसानहै ॥ अर्थात् मैंपरमात्मादेवकी अभेदरूपकरिकैप्राप्तिहीं मोक्षहै ॥ तथा

शाश्वतधर्मकाभी मैंहीं प्रतिष्ठाहूं ॥ तहां नित्यमोक्षहैफलजिसका ऐसाजो ज्ञाननिष्ठारूपधर्महै ताकानाम शाश्वतधर्महै ॥ ऐसामोक्षरूपफलकीप्राप्तिकरणेद्वारा ज्ञान निष्ठारूपधर्मभी मैंपरमेश्वरविषेहीं परिअवसानवालाहै ॥ अर्थात् तिसज्ञाननिष्ठारूपधर्मकरिके मैंपरमात्मादेवतैंभिन्न दूसराकोईवस्तु प्राप्तहोतानहीं ॥ किंतु मैंपरमा त्मादेवहीं तिसज्ञाननिष्ठारूपधर्मकरिकै प्राप्तहोताहूं ॥ तथा ऐकांतिकसुखकीभी मैंहीं परिअवसानरूपप्रतिष्ठाहूं ॥ अर्थात् परमानंदस्वरूपहोणेतैं मैंपरमात्मादेवहीं सर्वमुमुक्षुजनोंकूं अभेदरूपकरिकैप्राप्तहोणेयोग्यहूं ॥ मैंपरमात्मादेवतैंभिन्न दूसराकिंचित्‌मात्रभीसुख प्राप्तहोणेयोग्यनहींहै ॥ तहांश्रुति ॥ (योवैभूमातत्सुखंनाल्पे सुखमस्ति) ॥ अर्थयह ॥ देशकालवस्तुपरिच्छेदतैंरहित सर्वत्रव्यापक परमात्मादेवहीं सुखरूपहै परिच्छिन्नपदार्थोंविषे किंचित्‌मात्रभी सुखनहींहै इति ॥ हेअर्जुन जिसकारणतैं मैंपरमात्मादेव इसप्रकारकाहूं ॥ तिसकारणतैं मैंपरमात्मादेवका अनन्यभक्त ब्रह्मभावकूंहींप्राप्तहोवैहै यहपूर्वउक्तअर्थ युक्तहींहै इति ॥ और किसी टीकाविषेतौं (ब्रह्मणोहिप्रतिष्ठाहम्) इसश्लोकका यहअर्थकर्‍याहै ॥ इसगीताकेचतुर्थअध्यायविषे (एवंबहुविधायज्ञाविततात्रह्मणोमुखे) इसवचनविषेस्थित ब्रह्म शब्दकरिके वेदकाहीं ग्रहणकर्‍याहै ॥ यातैं ईहांभी ब्रह्मशब्दकरिके वेदकाहीं ग्रहणकरणा ॥ ऐसेब्रह्मनामावेदका मैंपरमात्माहीं प्रतिष्ठाहूं ॥ अर्थात् सर्ववेदोंका तात्पर्यकरिके परिअवसानकास्थान मैंपरब्रह्महींहूं ॥ तहांश्रुति ॥ (सर्वेवेदायत्पदमामनंति) ॥ अर्थयह ॥ कर्म उपासना ज्ञान यहतीनकांडरूप ऋगादिकसर्ववेद साक्षात् वापरंपराकरिके जिसपरब्रह्मरूपपदकूंहीं कथनकरेहैं इति ॥ कैसाहैसोवेद अमृतहै ॥ अर्थात् कर्म ब्रह्म इनदोनोंकेप्रतिपादनद्वारा मोक्षरूपअमृतका साधनहै ॥ पुनःकैसाहैसोवेद अव्ययहै ॥ अर्थात् उत्पत्तिविनाशतैंरहितहोणेतैं सोवेदअपौरुषेयहै ॥ अपौरुषेयहोणेतैंहींसोवेदअप्रामाण्यशंकारूपकलंकतैंरहितस्वतः प्रमाणरूपहै ॥ और शाश्वतधर्मकाभी मैंहीं प्रतिष्ठाहूं ॥ अर्थात् जैसे काम्यधर्म स्वर्गादिकफलकीप्राप्तिकरिकै नाशहोइजावैहै ॥ तैसे भगवत्‌विषेअर्पणकर्‍याहुआ यह नित्यधर्म नाशहोवैनहीं ॥ तथा विविदिषादिकोंकीउत्पत्तिद्वारा मोक्षरूपशाश्वतफलकाहेतुहोवैहै ॥ यातैंभगवत्‌विषेअर्पणकर्‍याहुआ सोनित्यधर्म शाश्वतधर्म कह्याजावैहै ॥ ऐसेशाश्वतधर्मकारिकै प्राप्तहोणेयोग्य परमफलरूपभी मैंपरमात्मादेवहींहूं ॥ और विषयसंबंधजन्यसुखतैंरहित ऐसाजो स्वरूपभूतमोक्षसुखहै ताका नाम ऐकांतिक सुखहै ॥ ऐसेऐकांतिकसुखकाभी मैंपरमात्मादेवहीं प्रतिष्ठाहूं अर्थात् पराकाष्ठारूपहूं ॥ हेअर्जुन जिसकारणतैं मैंपरमात्मादेव इसप्रकारकाहूं ॥ तिसकारणतैं ऐसेमैंपरमात्मादेवकूंचिंतनकरणेद्वारा अधिकारीजन ब्रह्मभावकूंहीं प्राप्तहोवैहै यहपूर्वउक्तअर्थ युक्तहींहै इति ॥ २७ ॥ ❀ ॥ इतिश्रीमत्परम हंसपरिव्राजकाचार्यश्रीस्वामिउद्धवानंदगिरिपूज्यपादशिष्येण स्वामिचिद्घनानंदगिरिणा विरचितायां प्राकृतटीकायां गीतागूढार्थदीपिकाख्यायां चतुर्दशोऽध्यायः समाप्तः ॥ १४ ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥

ॐश्रीगणेशायनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥ अथपंचदशाध्यायप्रारंभः ॥ तहां पूर्वचतुर्दशेअध्यायविषे संसारबंधनकेहेतुभूत सत्त्वादिकतीनगुणोंको कथनकरिकै इसअधिकारीपुरुषकूं मैंपरमेश्वरकेअनन्यभक्तियोगकरिकै तिनसत्त्वादिकतीनगुणोंकेअतिक्रमणपूर्वक ब्रह्मभावरूपमोक्ष प्राप्तहोवैंहै यहअर्थ श्रीभगवान्नैं (मांचयोऽव्यभिचारेणभक्तियोगेनसेवते ॥ सगुणान्समतीत्यैतान् ब्रह्मभूयायकल्पते) ॥ इसवचनकरिकैकथनक र्या ॥ तहां तैंमनुष्यकेभक्तियोगकरिकै इसअधिकारीपुरुषकूं ब्रह्मभावकीप्राप्ति कैसेहोवैंगी किंतुनहींहोवैंगी ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान् आपणेविषे ब्रह्मरूपताकेबोधनकरणेवासतै (ब्रह्मणोहिप्रतिष्ठाहममृतस्याव्ययस्यच ॥ शाश्वतस्यचधर्मस्यसुखस्यैकांतिकस्यच) ॥ यहसूत्ररूपश्लोक कथनकरताभया ॥ इसी सूत्रभूतश्लोककेअर्थकूं विस्तारतैंवर्णनकरणेहारा यहवृत्तिरूप पंचदशाअध्याय श्रीभगवान्नैं प्रारंभकरीताहै ॥ जिसकारणतैं श्रीकृष्णभगवान्केवास्तवस्वरूप कूंजानिकै तिसके निरतिशयप्रेमरूपभजनकै गुणातीतहुए यहअधिकारीलोक किसीभीप्रकारकरिकै ब्रह्मभावरूपमोक्षकूं प्राप्तहोवैं इति ॥ तहां (ब्रह्मणोहिप्रतिष्ठा हम्) इत्यादिक भगवान्केवचनकूंश्रवणकरिकै मैंअर्जुनकेतुल्य मनुष्यरूप यहकृष्ण ब्रह्मकाभीमैंप्रतिष्ठाहूं इसप्रकारकावचन कैसेकहताहै इसप्रकारकेविस्मयकरि कैयुक्तहुए तथापूछणेयोग्यअर्थकीअस्फूर्तिरूपअप्रतिभाकरिकैतथालज्जाकरिकै किंचित्मात्रभी पूछणेकूंअसमर्थहुए ऐसेअर्जुनकूं जानिकरिकै कृपाकरिकै ता अर्जुनकेप्रति आपणेस्वरूपकेकहणेकी इच्छाकरताहुआ श्रीभगवान् कहेहै ॥ तहां संसारतैंविरक्तपुरुषकूंहीं परमेश्वरकेवास्तवस्वरूपकेज्ञानविषे अधिकारहै ॥ वैराग्यतैंरहितपुरुषकूं ताज्ञानविषेअधिकारहैनहीं ॥ यातैं प्रथम वैराग्य संपादनकर्याचाहिये ॥ तहां पूर्वअध्यायविषे कथनकर्या जो परमेश्वरकेअधीनवर्त्तणे हारेप्रकृतिपुरुषकेसंयोगकाकार्यरूप संसारहै ॥ तिससंसारकूं वृक्षरूपकल्पनाकरिकै वर्णनकरेहैं ॥ तिससंसारतैंवैराग्यकीप्राप्तिवासतै ॥ जिसकारणतैं सोवैराग्य भी तिसपूर्वउक्तगुणातीतपणेका उपायरूपहींहै ॥

(मू० श्लो०) श्रीभगवानुवाच ॥ ऊर्ध्वमूलमधःशाखमश्वत्थंप्राहुरव्ययम् ॥ छंदांसियस्यपर्णानियस्तंवेदसवेदवित् ॥ १ ॥ ऊर्ध्व मूलम् । अधःशाखम् । अश्वत्थम् । प्राहुः । अव्ययम् । छंदांसि । यस्य । पर्णानि । यः । तम् । वेद । सः । वेदवित् ॥ १ ॥ (इतिप दच्छेदः) ॥ हेअर्जुन श्रुतिस्मृतियां इससंसारवृक्षकूं ऊर्ध्वमूलवाला तथाअधःशाखावाला तथाअश्वत्थ तथाअव्यय कहेहै जिस संसारवृक्षके कर्मकांडरूपवेद पर्णहैं तिससंसाररूपवृक्षकूं जोपुरुष जानताहै सोपुरुषहीं वेदवेत्ताहै ॥ १ ॥ (इतिपदार्थः) ॥ ॥ टीका ॥ हेअर्जुन यहसंसाररूपवृक्ष कैसाहै ऊर्ध्वमूलहै ॥ तहां स्वप्रकाशपरमानंदरूपहोणेतैं तथानित्यहोणेतैं सर्वतैंउत्कृष्ट कारणरूप जोब्रह्महै ताकानाम

ऊर्ध्वहै ॥ सोऊर्ध्वमूल क्या कारण जिसका ताकानाम ऊर्ध्वहैमूलहै ॥ अथवा सर्वसंसारकेबाधहुएभी बाधतैंरहित तथासर्वसंसारभ्रमकाअधिष्ठान
ऐसाजोब्रह्महै ताकानाम ऊर्ध्वहै ॥ सोऊर्ध्वहै आपणीमायाशक्तिकरिकै मूल क्या कारण जिसका ताकानाम ऊर्ध्वमूलहै ॥ पुनःकैसाहै यहसंसाररूपवृक्ष
अधःशाखहै ॥ ईहां (अधः) इसशब्दकरिकै पश्चात्उत्पन्नहुए कार्यरूपउपाधिवाले हिरण्यगर्भादिकोंका ग्रहणकरणा ॥ और जैसेलोकप्रसिद्धवृक्षकीशाखा
पूर्वपश्चिमादिकदिशावोंविषे प्रसृतहोवैहैं ॥ तैसे तेहिरण्यगर्भादिकभी नानादिशावोंविषे प्रसृतहुएहैं ॥ यातैं तेहिरण्यगर्भादिकहैं प्रसिद्धशाखावोंकीन्याईं
शाखा जिसकी ताकनाम अधःशाखहै ॥ पुनःकैसाहैयहसंसाररूपवृक्ष अश्वत्थहै ॥ तहां जोवस्तु यहवस्तु अगलेदिनाविषेरहैगा याप्रकारके विश्वासके
योग्यनहींहोवै ताकानाम अश्वत्थहै ॥ इसप्रकारकेविश्वासकेअयोग्यहोणेतैं यहसंसारवृक्ष अश्वत्थहै ॥ पुनःकैसाहैयहसंसाररूपवृक्ष अव्ययहै ॥ अर्थात्
अनादिअनंतरूप जो यहदेहादिकोंकाप्रवाहहै तिसका यहसंसाररूपवृक्ष आश्रयहै ॥ तथा आत्मज्ञानतैंविना अन्यकिसीउपायकरिकै इससंसारवृक्षका
उच्छेदहोतानहीं ॥ यातैं यहसंसारवृक्ष अव्ययहै ॥ इसप्रकारतैं श्रुतिस्मृतियां इसमायामयसंसारवृक्षकूं ऊर्ध्वमूलवाला तथाअधःशाखावाला तथाअश्वत्थरूप तथा
अव्ययरूप कथनकरेहैं ॥ तहांश्रुति ॥ (ऊर्ध्वमूलोऽर्वाक्शाखएषोऽश्वत्थःसनातनः ॥) अर्थयह ॥ सर्वतैंउत्कृष्टजोब्रह्महै ताकानाम ऊर्ध्वहै ॥ सोऊर्ध्वहै मूल
क्या कारण जिसका ताकानाम ऊर्ध्वमूलहै ॥ और अर्वाक् नाम निकृष्टकाहै ऐसेनिकृष्ट कार्यरूपउपाधिवाले हिरण्यगर्भादिकहैं ॥ अथवा महत्तत्त्व अहंकार
पंचतन्मात्रा इत्यादिकहैं ॥ तेहिरण्यगर्भादिक अथवा महत्तत्त्वअहंकारादिक प्रसिद्धशाखाकीन्याईं शाखाहैं जिसकी ताकानाम अर्वाक्शाखहै ॥ ऐसाऊर्ध्वमूल
तथाअर्वाक्शाख यहसंसाररूप अश्वत्थवृक्ष सनातनहै इति ॥ इत्यादिक श्रुतियां कठवल्लीउपनिषदविषे पठनकरीहैं ॥ तहां इसश्रुतिविषेस्थितजो
अर्वाक्शाखः यहपदहै ॥ सोपद मूलश्लोकविषेस्थित अधःशाखं इसपदकेसमानअर्थवालाहै ॥ और श्रुतिविषेस्थितजो सनातनः यहपदहै ॥ सोपदमूलश्लो
कविषेस्थित अव्ययं इसपदकेसमानअर्थवालाहै ॥ इसीप्रकारके इससंसाररूपवृक्षकूं स्मृतिवचनभी कथनकरेहैं ॥ तहांस्मृति ॥ (अव्यक्तमूलप्रभवस्तस्यैवानुग्रहो
त्थितः ॥ बुद्धिस्कंदमयश्चैवइंद्रियान्तरकोटरः ॥ १ ॥ महाभूतविशाखश्चविषयैःपत्रवांस्तथा ॥ धर्माधर्मसुपुष्पश्चसुखदुःखफलोदयः ॥ २ ॥ आजीव्यःसर्व
भूतानांब्रह्मवृक्षःसनातनः ॥ एतद्ब्रह्मवनंचैवब्रह्माचरतिसाक्षिवत् ॥ ३ ॥ एतच्छित्त्वाचभित्त्वाचज्ञानेनपरमासिना ॥ ततश्चात्मगतिंप्राप्यतस्मान्नावर्त्ततेपुनः ॥४ ॥)
अर्थयह ॥ अव्याकृतहैनामजिसका ऐसाजो मायाविशिष्टब्रह्महै ताकानाम अव्यक्तहै ॥ सोअव्यक्तहीं मूल कहीये कारणरूपहै ॥ ऐसे अव्यक्तरूप मूलतैंहै प्रभव
क्या उत्पत्ति जिसकी ताकानाम अव्यक्तमूल प्रभवहै ॥ ऐसा यहसंसाररूपवृक्षहै ॥ तथा तिसअव्यक्तरूपमूलकेअनुग्रहतैंहींयहसंसारवृक्ष उत्थितहुआहै ॥ अ

र्थात् तिसअव्यक्तरूपमूलकेदृढपणेकरिकैहीं यहसंसाररूपवृक्ष महान्वृद्धिकूंप्राप्तहुआहै ॥ और जैसे लोकप्रसिद्धवृक्षकीशाखा स्कंधतैं उत्पन्नहोवैहैं ॥ तैसे बुद्धितैंहीं इससंसारके नानाप्रकारकेपरिणाम उत्पन्नहोवैहैं ॥ इसप्रकारके समानधर्मपणेकरिकै यहबुद्धिहीं स्कंधरूपहै ॥ ऐसेबुद्धिरूपस्कंधवालाहोणेतैं यहसंसारवृक्ष बुद्धिस्कंधमय कह्याजावैहै ॥ और जैसे प्रसिद्धवृक्षकेभीतर छिद्ररूपकोटरहोवैहैं ॥ तैसे इससंसारवृक्षविषे श्रोत्रादिकइंद्रियोंकेछिद्रहीं कोटररूपहैं इति ॥ १ ॥ और जैसे यहप्रसिद्धवृक्ष अनेकशाखावोंवालाहोवैहै ॥ तैसे यहसंसाररूपवृक्षभी आकाशादिकपंचमहाभूतरूप विविधप्रकारकीशाखावोंवालाहै ॥ अथवा विशाखा यहशब्द स्तंभकावाचकहै ॥ यातैं महाभूतहैं विशाख क्या स्तंभ जिसके ताकानाम महाभूतविशाखहै ॥ और जैसे लोकप्रसिद्धवृक्ष पत्रोंवालाहोवैहै ॥ तैसे यह संसाररूपवृक्षभी शब्दस्पर्शादिकविषयरूपपत्रोंवालाहै ॥ और जैसे लोकप्रसिद्धवृक्षविषे पुष्पहोवैहैं ॥ तथा तिनपुष्पोंतैं फल उत्पन्नहोवैहैं ॥ तैसे यहसंसारवृक्षभी धर्मअधर्मरूपपुष्पोंवालाहै ॥ तथा तिनधर्मअधर्मरूपपुष्पोंतैंउत्पन्नहुए सुखदुःखरूपफलोंवालाहै इति ॥ २ ॥ और जैसे लोकप्रसिद्धवृक्ष पक्षीआदिकोंका उपजीव्यहोवैहै ॥ तैसे यहसंसाररूपवृक्षभी सर्वभूतप्राणीयोंका उपजीव्यहै ॥ जिसतैंउपजीवनहोवै ताकानाम उपजीव्यहै ॥ और इससंसारवृक्षकूं परमात्मादेव ब्रह्मनें आश्रितकऱ्याहै ॥ यातैं इससंसारवृक्षकूं ब्रह्मवृक्ष कहेहैं ॥ और यहसंसारवृक्ष आत्मज्ञानतैंविना दूसरेकिसीभीउपायकरिकै छेदनकऱ्याजातानहीं ॥ यातै यहसंसारवृक्ष सनातन कह्याजावैहै ॥ और यह संसारवृक्ष जीवात्मारूपब्रह्मका भोग्यहै ॥ यातैं इससंसारवृक्षकूं ब्रह्मवन कहेहैं ॥ ऐसेसंसाररूपवृक्षविषे शुद्धब्रह्मतौं साक्षीकीन्यांई विराजमानहै ॥ अर्थात् इससंसारकेगुणदोषोंकरिकै सोब्रह्म लिपायमानहोवैनहीं इति ॥ ३ ॥ ऐसेसंसारवृक्षकूं अहंब्रह्मास्मि इसप्रकार केदृढआत्मज्ञानरूपखड्गकरिकै छेदनकरिकै तथाभेदनकरिकै अर्थात् मूलसहितनाशकरिकै यहअधिकारीपुरुष आत्मारूपगतिकूंप्राप्तहोइकै तिसआत्मरूपमोक्षतैं पुनःआवृत्तिकूं प्राप्तहोतानहीं इति ॥ ४ ॥ इत्यादिकअनेकस्मृतियां इससंसारकूं वृक्षरूपकरिकै वर्णनकरेहैं ॥ यद्यपि लोकविषे ऐसाकोईवृक्ष प्रसिद्धहैनहीं ॥ जिसकामूलतौं ऊपरिहोवै और शाखा नीचेहोवैं ॥ तथापि श्रीगंगाजीकेतरंगोंकरिकैहन्यमानहुआ जोगंगाकाऊंचातीरहै ॥ तिसतीरतैंवायुने नीचैपतनकऱ्याजो महान्अश्वत्थकावृक्षहै तिसवृक्षका मूलतौं ऊपरिहोवैहै ॥ और शाखा नीचेहोवैहैं ॥ तिसीअश्वत्थवृक्षकूं उपमानकरिकै श्रीभगवान्नें इससंसाररूपवृक्षकूं ऊर्ध्वमूलवाला तथाअधःशाखावाला कह्याहै ॥ यातैं इसभगवान्केवचनविषे किंचित्मात्रभी विरोधकीप्राप्तिहोवैनहीं इति ॥ पुनःकैसाहै यहमायामय संसाररूपअश्वत्थवृक्ष ॥ वेदरूपछंद जिसके पर्णहैं ॥ अर्थात् तत्त्ववस्तुका आवरकहोणेतैं अथवा संसाररूपवृक्षका रक्षकहोणेतैं यहकर्मकांडरूप ऋग् यजुष् साम अथर्वण च्यारिवेद प्रसिद्धपर्णोंकीन्यांई जिससंसाररूपवृक्षके पर्णरूपहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे प्रसिद्धपर्ण वृक्षकेपरिरक्षणवास्तेहींहोवैहैं ॥ तैसे यहकर्मकां

डरूपवेदभी इससंसाररूपवृक्षकेपरिरक्षणवास्तैहींहैं ॥ काहेतैं तेकर्मकांडरूपवेद धर्म अधर्म तथातिनोंकाकारण तथातिनोंकाफल इनच्यारोंकूंहीं प्रकाशकरेंहैं ॥ ताकरिकै तेकर्मकांडरूपवेद इससंसाररूपवृक्षका परिरक्षणकरेहैं ॥ यातैं तिनकर्मकांडरूपवेदोंविषे संसाररूपवृक्षकीपर्णरूपता युक्तहींहैइति ॥ हेअर्जुन जोआधिकारीपुरुष इसप्रकारके मूलसहित मायामय अश्वत्थरूप संसारवृक्षकूं जानताहै ॥ सोईहींअधिकारीपुरुष वेदवित्हे ॥ अर्थात् कर्मकांडरूपवेदका जोकर्मरूपअर्थहै ॥ तथा ज्ञानकांडरूपवेदका जोब्रह्मरूपअर्थहै ॥ तिस कर्मरूपअर्थकूं तथाब्रह्मरूपअर्थकूं सोईहींअधिकारीपुरुष जानताहै इति ॥ तहां इससंसारवृक्षका मूलतौं ब्रह्महै ॥ और हिरण्यगर्भादिकजीव इससंसारवृक्षकी शाखारूपहैं ॥ ऐसायहसंसारवृक्ष आपणेस्वरूपकरिकैतौं विनाशवान्हींहै ॥ और प्रवाहरूपकरिकैतौं यहसंसारवृक्ष अनंतहै ॥ ऐसायहसंसारवृक्ष वेदउक्तकर्मरूपजलकरिकैतौं सिंचनकऱ्याजावैहै और ब्रह्मज्ञानरूपखड्गकरिकै छेदनकऱ्याजावैहै ॥ इतनाहीं सर्ववेदोंकार्थहै ॥ इसप्रकारकेवेदकेअर्थकूं जोआधिकारीपुरुष जानताहै ॥ सोअधिकारीपुरुषहीं सर्वअर्थोंकूंजानताहै ॥ इसप्रकारतैं तिस मूलसहित संसारवृक्षकेज्ञानकी श्रीभगवान् स्तुतिकरेहै (यस्तंवेद स वेदवित्इति) ॥ १ ॥ ❀ ॥ अब श्रीभगवान् तिसपूर्वउक्तसंसारवृक्षके अवयवोंकी दूसरीभीकल्पना कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०)अधश्चोर्ध्वंप्रसृतास्तस्यशाखागुणप्रवृद्धाविषयप्रवालाः ॥ अधश्चमूलान्यनुसंततानिकर्मानुबंधीनिमनुष्यलोके ॥२॥ अधः । च । ऊर्ध्वं । प्रसृताः । तस्य । शाखाः । गुणप्रवृद्धाः । विषयप्रवालाः । अधः । च । मूलानि । अनुसंततानि । कर्मानुबंधीनि । मनुष्यलोके ॥ २ ॥ (इतिपदच्छेदः)॥ हेअर्जुन तिससंसारवृक्षकी शाखा नीचै तथा ऊपरि पसरीहुईहैं जेशाखा सत्वादिकगुणोंकरिकेबंधीहुईहैं तथाशब्दादिकविषयरूपपल्लवोंवालीहैं तथातिससंसारवृक्षके वासनारूपमूल नीचै तथाऊपरि अनुस्यूतहैं जेमूल अधिकारीमनुष्यदेहविषे पुण्यपापरूपकर्मकेजनकहै ॥ २ ॥ इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ तहां पूर्वश्लोकविषे कार्यरूपउपाधिवाले हिरण्यगर्भादिकजीव इससंसारवृक्षकी शाखारूपकरिकेकथनकऱ्येथे ॥ अब तिनशाखावोंविषेभी जाविशेषता स्थितहै ॥ तिसविशेषताकूं श्रीभगवान् कथनकरेहै (अधश्चोर्ध्वंइति) हेअर्जुन तिनशाखारूपजीवोंविषेभी जेनिषिद्धआचरणवाले दुष्कृती जीव हैं ॥ तेदुष्कृतीजीवतौं इससंसारवृक्षकी नीचैपसरीहुईशाखाहै ॥ अर्थात् तेपापीजीव पश्वादिकनीचयोनियोंविषेविस्तारकूंप्राप्तहुई शाखाहैं ॥ और शास्त्रविहित आचरणवालेजेसुकृतीजीवहैं ॥ तेधर्मात्माजीवतौं इससंसारवृक्षकी ऊपरिपसरीहुई शाखाहैं ॥ अर्थात् तेधर्मात्मापुरुष देवादिकयोनियोंविषेविस्तारकूंप्राप्तहुई

शाखाहैं ॥ इसप्रकार मनुष्यलोकतैंआदिलैके पशु पक्षी वृक्ष नारकीयशरीरपर्यंत नीचैस्थानोंविषे तथातिसीमनुष्यलोकतैंलैके ब्रह्मलोकपर्यंत ऊपरिलेस्थानोंविषे तिससंसाररूपवृक्षकी जीवरूपशाखा विस्तारकूंप्राप्तहुईहैं ॥ कैसीहैंतेशाखा गुणोंकरिकैप्रवृद्धहुईहैं ॥ अर्थात् जैसे प्रसिद्धवृक्षकीशाखा जलकेसिंचनकरिकै स्थूल भावकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तैसे देह इंद्रिय विषय इत्यादिकआकारोंकरिकै परिणामकूंप्राप्तहुए जे सत्व रज तम यहतीनगुणहैं ॥ तिसतीनगुणरूपजलकरिकै तेजीवरूप शाखा स्थूलभावकूंप्राप्तहुईहैं ॥ पुनःकैसीहैंतेशाखा विषयरूपपल्लवोंवालीहैं ॥ अर्थात् जैसे लोकप्रसिद्धवृक्षकीशाखावोंकेअग्रभागकेसाथि कोमलअंकुररूप पल्लवोंका संबंधहोवैहै ॥ तैसे पूर्वउक्तजीवरूपशाखावोंके अग्रभागस्थानीय जेइंद्रियजन्यवृत्तियांहैं तिनवृत्तियोंकेसाथि तिनशब्दादिकविषयोंकासंबंधहै ॥ याकारणतैं तेशब्दादिकविषय तिनशाखावोंके कोमलपल्लवरूपहैं ॥ पुनःकैसाहैयहसंसाररूपवृक्ष ॥ जिससंसारवृक्षके अवांतरमूल नीचैतथाऊपरि अनुस्यूत होइकैरह्येहैं तहां तिसतिसपदार्थकेभोगकरिकैजन्य जे रागद्वेषादिकवासनाहैं ॥ जेवासना इसपुरुषकी धर्मअधर्मविषेप्रवृत्तिकरावैहैं ॥ तेरागद्वेषादिकवासनाहीं इससंसारवृक्षके अवांतरमूलहैं ॥ और पूर्वश्लोकविषे इससंसारवृक्षका जो मायाविशिष्टब्रह्मरूपमूल कथनकऱ्याथा ॥ सोमुख्यमूल कथनकऱ्याथा ॥ और अबी वासनारूपअवांतरमूलकथनकऱ्येहैं ॥ यातैं ईहां पुनरुक्तिदोषकीप्राप्तिहोवैनहीं इति ॥ कैसेहैंतेवासनारूपअवांतरमूल कर्मानुबंधीहैं ॥ तहां धर्मअधर्मरूपकर्महैं पश्चात्भावी जिनोंके तिनोंकानाम कर्मानुबंधीहै ॥ अर्थात् तेरागद्वेषादिकवासनारूपअवांतरमूल प्रथमं आपउत्पन्नहोइकै पश्चात् ताधर्मअधर्मरूपकर्मकूं उत्पन्न करेहैं ॥ तहां तेवासनारूपमूल किसस्थानविषे तिसधर्मअधर्मरूपकर्मकूं उत्पन्नकरेहैं ॥ ऐसीअर्जुनकीजिज्ञासाकेहुए श्रीभगवान् तास्थानका कथनकरेहै (मनुष्य लोकेइति) तहां मनुष्यहोवै सोईहीं लोकहोवै ताकानाम मनुष्यलोकहै ॥ अर्थात् अधिकारीब्राह्मणादिकदेहोंकानाम मनुष्यलोकहै ॥ ऐसे अधिकारीब्राह्मणा दिकशरीरोंविषेहीं तेवासनारूपमूल बाहुल्यताकरिकै तिसधर्मअधर्मरूपकर्मकूं उत्पन्नकरेहैं ॥ जिसकारणतैं शास्त्रविषे मनुष्यकूंहीं कर्मकाअधिकार कथनकऱ्याहै इति ॥ २ ॥ ❀ ॥ अब श्रीभगवान् इसपूर्वउक्तसंसारविषे अनिर्वचनीयता कथनकरिकै ताकेछेदनकेउपायकूं कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) नरूपमस्येहतथोपलभ्यतेनांतोनचादिर्नचसंप्रतिष्ठा ॥ अश्वत्थमेनंसुविरूढमूलमसंगशस्त्रेणदृढेनछित्त्वा ॥ ३ ॥ नं[१]। रूपम्[२] । अस्य[३] । इह[४] । तथा[५] । उपलभ्यते[६] । न[७] । अंतः[८] । न[९] । च[१०] । आदिः[११] । न[१२] । च[१३] । संप्रतिष्ठा[१४] । अश्वत्थम्[१५] । एनम्[१६] । सुविरूढ[१७] मूलम् । असंगशस्त्रेण[१८] । दृढेन[१९] । छित्त्वा[२०] ॥ ३ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन इससंसारविषेस्थितप्राणीयोंनैं इससंसारवृक्षका तिसै प्रकारका रूप नहीं जानीताहै तथाअंतभी नहीं जानीताहै तथा आदिभी नहीं जानीताहै तथा मध्यभी नहीं जानीताहै ऐसेदृढमू

लवाले ईस अश्वत्थरूपसंसारवृक्षकूं अत्यंतदृढ वैराग्यरूपशस्त्रकरिकै छेदनकरिकै ब्रह्म जानणेयोग्यहै ॥ ३ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन पूर्ववर्णनकऱ्याजो यहसंसाररूपवृक्षहै सोकैसाहै ॥ इससंसारविषे स्थितप्राणीयोंनैं इससंसारवृक्षका जिसप्रकारका ऊर्ध्वमूल अधःशाखा इत्यादिकरूप पूर्ववर्णनकऱ्याहै तिसप्रकारकारूप नहींजानीताहै ॥ काहेतैं जैसे स्वप्नकेपदार्थ तथामृगतृष्णाकाजल तथामायारचितपदार्थ तथागंधर्वनगर यहसर्व मिथ्याहोणेतैं दृष्टनष्टस्वरूपवालेहींहैं॥ तैसे यहसंसारवृक्षभी मिथ्याहोणेतैं दृष्टनष्टस्वरूपवालाहींहै ॥ तहां जोपदार्थ देखतेदेखते नष्टहोइजावैहै ताकानाम दृष्टनष्टहै॥ ऐसेदृष्टनष्टस्वभाववाले इससंसारवृक्षका सोपूर्वउक्त ऊर्ध्वमूल अधःशाखा इत्यादिकरूप इनजीवोंकूं देखणेविषेआवतानहीं ॥ इसीकारणतैंहीं इससंसार वृक्षका अवसानरूपअंतभी नहींप्रतीतहोवैहै ॥ अर्थात् इतनैंकालकेवितीतहुएतैंपश्चात् यहसंसारवृक्ष समाप्तिकूंप्राप्तहोवैगा इसप्रकारतैं इससंसारवृक्षका अंतभी जान्याजातानहीं ॥ जिसकारणतैं यहसंसारवृक्ष परिअवसानरूपअंततैंरहितहै ॥ तथा इससंसारवृक्षका आदिभी नहींप्रतीतहोवैहै ॥ अर्थात् इसकाल तैंलेकै यहसंसारवृक्ष प्रवृत्तहुआहै याप्रकारतैं इससंसारवृक्षकाआदिभी जान्याजातानहीं ॥ जिसकारणतैं यहसंसारवृक्ष अनादिहै ॥ तथा इससंसारवृक्षकी स्थिति रूपप्रतिष्ठाभी प्रतीतहोतीनहीं ॥ अर्थात् मध्यभी प्रतीतहोतानहीं ॥ काहेतैं आदि अंत दोनोंकीअपेक्षाकरिकैहीं मध्य कह्याजावैहै ॥ ताआदिअंतकेअसिद्धहुए सोमध्यभी सिद्धहोवैनहीं ॥ इसप्रकारका यहसंसारवृक्ष जिसकारणतैं दुश्छेद्यहै तथासर्वअनर्थोंकेकरणेहाराहै ॥ तिसकारणतैं अनादिअज्ञानकरिकै अत्यंतदृढ बांध्याहैमूलजिसका ऐसे इसपूर्वउक्त अश्वत्थरूपसंसारवृक्षकूं दृढअसंगशस्त्रकरिकै यहअधिकारीपुरुष छेदनकरै ॥ ईहां विषयसुखकीस्पृहाकानाम संगहै ॥ तासंग काविरोधीजोवैराग्यहै ताकानाम असंगहै ॥ अर्थात् पुत्रएषणा वित्तएषणा लोकएषणा इनतीनएषणावोंका त्यागरूपजोवैराग्यहै ताकानाम असंगहै ॥ और जैसे लोकप्रसिद्ध कुठारादिकशस्त्र लोकप्रसिद्ध वृक्षकेविरोधीहोवैहैं ॥ तैसे यहवैराग्यभी इस रागद्वेषादिरूपसंसारवृक्षका विरोधीहै ॥ यातैं यहवैराग्यभी शस्त्ररूपहै ॥ कैसाहैयह वैराग्यरूप असंगशस्त्र दृढहै ॥ अर्थात् मैंब्रह्मरूपहूं इसप्रकारकेब्रह्मज्ञानकीउत्कटइच्छाकरिकै दृढकऱ्याहै ॥ और जैसे लोकप्रसिद्धशस्त्र पाषाण विशेषकेघर्षणतैं तीक्ष्णहोवैहै ॥ तैसे जोवैराग्यरूपअसंगशस्त्र पुनःपुनः विवेकअभ्यासकरिकै तीक्ष्णहुआहै ॥ ऐसे दृढअसंगशस्त्रकरिकै यहअधिकारीपुरुष तिनपूर्वउक्तसंसारवृक्ष मूलसहितउच्छेदनकरै ॥ अर्थात् वैराग्य शम दम इत्यादिकसाधनसंपत्तिकरिकै सर्वकर्मोंकेसंन्यासकूंकरै ॥ यहहीं तिससंसारवृक्ष काछेदनहै इति ॥ ३ ॥ ❋ ॥ शंका ॥ हेभगवन् ऐसेसंसाररूपअश्वत्थवृक्षकूं असंगशस्त्रसैं छेदनकरिकै इसअधिकारीपुरुषकूं तिसतैंअनंतरभी कछुक र्तव्यहै अथवा इतनैंमात्रकरिकैहीं कृतकृत्यताहै ॥ ऐसीअर्जुनकीजिज्ञासाकेहुए श्रीभगवान् तिसतैंअनंतर कर्त्तव्यताकूंकथनकरैहै ॥

(मू०श्लो०) ततःपदंतत्परिमार्गितव्यंयस्मिन्गतानानिवर्ततिभूयः ॥ तमेवचाद्यंपुरुषंप्रपद्येयतःप्रवृत्तिःप्रसृतापुराणी ॥ ४ ॥
ततः । पदम् । तत् । परिमार्गितव्यम् । यस्मिन् । गताः । न । निवर्त्तंति । भूयः । तम् । एव । च । आद्यम् । पुरुषम् । प्रपद्ये । यतः । प्रवृत्तिः । प्रसृता पुराणी ॥ ४ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन तिसतैंअनंतर सोब्रह्मरूप पदहीं जानणेयोग्य है जिसपदविषे स्थितहुए विद्वान्पुरुष पुनः नहीं जन्मकूंप्राप्तहोवैहैं तथा जिसपुरुषतैं इससंसारवृक्षकीप्रवृत्ति अनादि पसरीहुईहै तिसी आद्य पुरुषकेहीं मैंशरणकूंप्राप्तहुआहूं ॥ ४ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन यहअधिकारीपुरुष तिसवैराग्यरूपअसंगशस्त्रकरिकै पूर्वउक्तसंसाररूपवृक्षकूं मूलसहित उच्छेदनकरिकै तिसतैंअनंतर श्रोत्रियब्रह्मनिष्ठगुरुके समीपजाइकै तिससंसाररूपअश्वत्थवृक्षतैंऊर्ध्वस्थितजोशुद्धब्रह्मरूपवैष्णवपदहै जोपद (तद्विष्णोःपरमंपदम्) इत्यादिकश्रुतियोंनैं प्रतिपादनकऱ्याहै सोशुद्धब्रह्मरूप पदहीं इसअधिकारीपुरुषनैं श्रवणमननरूप वेदांतवाक्योंकेविचारकरिकै जानणेकूंयोग्यहै ॥ तहांश्रुति (सोऽन्वेष्टव्यःसविजिज्ञासितव्यः) अर्थयह ॥ सोपरब्र ह्महीं इसअधिकारीपुरुषकूं अन्वेषणकरणेकूंयोग्यहै ॥ तथा सोब्रह्महीं इसअधिकारीपुरुषकूं जानणेकीइच्छाकरणेयोग्यहै ॥ इति ॥ तहां मार्गकरिकै जो वस्तुका खोजणाहैं ताकानाम अन्वेषणहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ सर्व कर्मोंकेसंन्यासपूर्वक श्रवणादिकसाधनोंकरिकै इसअधिकारीपुरुषनैं जोपद जानणेयोग्यहै सोपद कौंनहै ॥ ऐसीअर्जुनकीजिज्ञासाकेहूए श्रीभगवान् कहेहै (यस्मिन्गतानानिवर्त्ततिभूयःइति) हेअर्जुन जिसपदविषे अहंब्रह्मास्मि याप्रकारकेज्ञानकरिकै प्राप्तहुए तत्ववेत्तापुरुष पुनः संसारकीप्राप्तिवास्तै नहींआवैहैं ॥ अर्थात् पुनःजन्मकूंनहींप्राप्तहोवैहैं ॥ सोअद्वितीयब्रह्मरूपपदहीं इसअधिकारीपुरुषनैं श्रवणादिकसाध नोंकरिकै जानणेयोग्यहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् सोनिर्गुणब्रह्मरूपपद किसउपायकरिकै जान्याजावैहै ॥ ऐसीअर्जुनकीजिज्ञासाकेहुए श्रीभगवान् तापदकेजानणे काउपाय कथनकरेहै (तमेवचाद्यंपुरुषंप्रपद्येइति) हेअर्जुन पूर्व जोअद्वितीयनिर्गुणब्रह्म पदशब्दकरिकैकथनकऱ्याहै तिसीहीं परब्रह्मरूपआद्यपुरुषके मैंअधिकारी जन शरणकूंप्राप्तहुआहूं इसप्रकारतैं जो तिसएकपरब्रह्मकीशरणताहै ताशरणताताकरिकैहीं सोपरब्रह्मरूपपद जान्याजावैहै ॥ तहां सर्वजगत्केआदिविषे जोविद्यमा नहोवै ताकानाम आद्यहै ॥ और यहसर्वजगत् जिसनैं आपणे अस्तिभातिप्रियरूपकरिकै पूर्णकऱ्याहै ताकानाम पुरुषहै ॥ अथवा इनशरीररूपसर्वपुरियोंविषे जो अधिष्ठानरूपकरिकैशयनकरेहै ताकानाम पुरुषहै ॥ ऐसेआद्यपुरुषरूपपरब्रह्मका जोनिरंतरचिंतनरूप अनन्यभक्तिहै साअनन्यभक्तिहींतिसपरब्रह्मरूपपदकेसाक्षा त्कारकाउपायहै इति ॥ शंका ॥ हेभगवन् सोकौंनपुरुषहै जिसकेशरणकूंप्राप्तहुआ यहअधिकारीपुरुष तिसवैष्णवपदकूं जानताहै ऐसीअर्जुनकीजिज्ञासाके

हुए श्रीभगवान् कहेहै (यतःप्रवृत्तिःप्रसृतापुराणीइति) हेअर्जुन जिसआद्यपुरुषतैं मायाकेयोगकरिकै इसमायामयसंसारवृक्षकी यहअनादिप्रवृत्ति चलीहुई है ॥ जैसे ऐंद्रजालिकपुरुषतैं मायामय हस्तिआदिकोंकीप्रवृत्ति होवैहै ॥ तैसे जिसआद्यपुरुषतैं इसमायामयसंसारवृक्षकी प्रवृत्तिहुईहै ॥ ऐसेआद्यपुरुषकेशरण कीप्राप्तिहीं तिसपदकेजाणणेकाउपायहै इति ॥ ४ ॥ ❀ ॥ अब तिसवैष्णवपदकेज्ञानपूर्वक तिसवैष्णपदकूंप्राप्तहोणेहारे अधिकारीपुरुषोंके तिसपदकीप्राप्ति वासतै दूसरेसाधनोंकूंभी श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) निर्मानमोहाजितसंगदोषाअध्यात्मनित्याविनिवृत्तकामाः ॥ द्वंद्वैर्विमुक्ताःसुखदुःखसंज्ञैर्गच्छंत्यमूढाःपदमव्ययंतत् ॥ ५ ॥ निर्मानमोहाः ॥ जितसंगदोषाः । अध्यात्मनित्याः । विनिर्वृत्तकामाः । द्वंद्वैः । विमुक्ताः । सुखदुःखसंज्ञैः । गच्छंति अमूढाः । पदं । अव्ययं । तत् ॥ ५ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन मानमोहदोनोंनिवृत्तहुएहैंजिनोंतैं तथाजीत्याहैसंगदोषजिनोंनैं तथापरमात्मस्वरूपकेविचारविषेतत्पर तथानिर्वृत्तहुएहैंकामाजिनोंके तथासुखदुःखनामवाले शीतउष्णादिकद्वंद्वोंनैं परित्यागकऱ्ये हुए ऐसेविद्वान्पुरुष तिसै अव्यय पदकूं प्राप्तहोवेहैं ॥ ५ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन गर्वहैनामजिसका ऐसाजो अहंकारहै ताअहंकारकानाम मानहै ॥ और अविवेककानाम मोहहै ॥ अथवा विपर्ययकानाम मोहहै ॥ तिस मान मोहदोनोंतैं जेपुरुष निकस्येहुएहैं तिनपुरुषोंकानाम निर्मानमोहाहै ॥ अथवा तेमानमोहदोनों निवृत्तहुएहैं जिनोंतैं तिनोंकानाम निर्मानमोहाहै अर्थात् अहंकार अ विवेक दोनोंतैंरहित पुरुषोंकानाम निर्मानमोहाहै ॥ तथा जेपुरुष जितसंगदोषाहै अर्थात् प्रियअप्रियपदार्थोंकीसमीपताकेप्राप्तहुए भी जेपुरुष रागद्वेषतैं रहितहैं ॥ अथवा जीत्याहुआहै संग तथादोष जिनोंनैं तिनोंकानाम जितसंगदोषाहै ॥ ईहां संगशब्दकरिकैतौं मैंकर्त्ताहूं याप्रकारकेकर्तृत्वअभिमानकाग्रहण करणा ॥ और दोषशब्दकरिकै रागद्वेषादिकदोषोंकाग्रहणकरणा ॥ तथा जेपुरुष अध्यात्मनित्याहैं ॥ अर्थात् जेपुरुष परमात्मादेवकेवास्तवस्वरूपकेंविचारविषे नि रंतर तत्परहैं ॥ तथा जेपुरुष विनिवृत्तकामाहैं ॥ तहां विशेषकरिकैनिवृत्तहुएहैंविषयभोगरूपकाम जिनोंके तिनोंकानाम विनिवृत्तकामाहै ॥ अर्थात् जिनपुरुषोंनैं विवेकवैराग्यद्वारा सर्वकर्म त्यागकऱ्येहैं तिनोंकानाम विनिवृत्तकामाहै ॥ और सुखदुःखकाहेतुहोणेतैं सुखदुःखनामवाले ऐसेजे शीतउष्ण क्षुधापिपासा इत्यादिक द्वंद्वहैं ॥ ऐसे द्वंद्वोंनैं जेपुरुष परित्यागकऱ्येहैं ॥ और किसीमूलपुस्तकविषेतौं (सुखदुःखसंगैः) इसप्रकारकाभीपाठहोवैहै ॥ ताका यहअर्थकरणा ॥ सुखदुःखदोनोंकेसाथिहै संग क्या संबंध जिनोंका ऐसेजे शीतउष्णादिकद्वंद्वहैं तिनद्वंद्वोंनैं जेपुरुषपरित्यागकरेहैं ॥ इसप्रकारके अमूढपुरुष अर्थात्

वेदांतप्रमाणतैं उत्पन्नहुए सम्यक्आत्मज्ञानकरिकै निवृत्तकऱ्याहैआत्माकाअज्ञान जिनोंनैं ऐसेतत्ववेत्तापुरुषहीं तिसपूर्वउक्त अविनाशी परब्रह्मरूपपदकूं प्राप्तहोवैहैं इति ॥ ५ ॥ ❀ ॥ तहां इनपूर्वउक्तसाधनोंकरिकै प्राप्तहोणेयोग्य जो अद्वितीयनिर्गुणब्रह्मरूप वैष्णवपदहै ॥ तिसीहींगंतव्यपदकूं अब श्रीभगवान् विशेषणोंकरिकैकथनकरेहै ॥

(मू॰ श्लो॰) नतद्भासयतेसूर्योनशशांकोनपावकः ॥ यद्गत्वाननिवर्त्ततेतद्धामपरमंमम ॥ ६ ॥ नं । तत् । भासयते । सूर्यः । नं । शशांकः । नं । पावकः । यत् । गत्वा । न । निवर्त्तते तत् । धाम । परमं । मम ॥ ६ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन जिसपदकूं प्राप्तहोइकै तत्ववेत्तापुरुष नहीं आवृत्तिकूंप्राप्तहोवैहैं तिसपदकूं सूर्यभी नहीं प्रकाशकरिसकेहै तथा चंद्रमाभी नहीं प्रकाशकरि सकेहै तथाअग्निभी नहीं प्रकाशकरिसकेहै जिसकारणतैं मैंविष्णुका स्वरूपभूत सोपदसर्वतैंउत्कृष्टस्वयंप्रकाशस्वरूपहै ॥ ६ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन पूर्वउक्तसाधनोंकरिकै जिस निर्गुणअद्वितीयब्रह्मरूप वैष्णवपदकूं प्राप्तहोइकै तत्ववेत्तापुरुष पुनः आवृत्तिकूंनहींप्राप्तहोवैहैं ॥ अर्थात् पुनः जन्मकूंनहींप्राप्तहोवैहैं ॥ तिसपरब्रह्मरूपपदकूं सर्वजगत्केप्रकाशकरणेकीशक्तिवाला सूर्यभी प्रकाशकरिसकतानहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् सूर्यकेअस्तहुएभी चंद्रमाकृतप्रकाश देखणेविषेआवैहै ॥ यातैं सोचंद्रमाहीं तिसपदकूं प्रकाशकरैगा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहेहै (नशशांकइति) हेअर्जुन सोचंद्रमाभी तिसपदकूं प्रकाशकरिसकतानहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् सूर्य चंद्रमा दोनोंकेअस्तहुएभी अग्निकृतप्रकाश देखणेमैंआवैहै ॥ यातैं सोअग्निहीं तिस पदकूं प्रकाशकरैगा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहेहै (नपावकःइति) हेअर्जुन सोअग्निभी तिसपदकूं प्रकाशकरिसकतानहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् सूर्य चंद्रमा अग्नि यहतीनों तिसपदकूं प्रकाशनहींकरिसकते इसप्रकारकीप्रतिज्ञामात्रतैं तिस अर्थकीसिद्धिहोइसकतीनहीं ॥ जोकदाचित् प्रतिज्ञामात्रतैंहीं अर्थ कीसिद्धिहोतीहोवै ॥ तौं वंध्यापुत्रोअस्ति इसप्रतिज्ञामात्रकरिकै वंध्यापुत्रकीभी सिद्धिहोणीचाहिये ॥ और होतीनहीं ॥ यातैं तिसप्रतिज्ञाकऱ्येहुएअर्थकी सिद्धिविषे कोईहेतुकह्याचाहिये ॥ सोहेतुकौंनहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् ताकेविषे तिसपरब्रह्मकीस्वयंप्रकाशतारूपहेतुकूं कथनकरेहै (तद्धा मपरमंममइति) हेअर्जुन जिसकारणतैं मैंव्यापकविष्णुका स्वरूपभूत सोपद धामरूपहै ॥ अर्थात् स्वप्रकाशरूपहै ॥ तथा सूर्य चंद्रमा अग्नि इत्यादिकसर्व जडज्योतियोंकूं प्रकाशकरणेहाराहै ॥ तथा परमहै ॥ अर्थात् सर्वतैं उत्कृष्टहै ॥ तिसकारणतैं तेसूर्यचंद्रादिक तिसपदकूं प्रकाशकरिसकतेनहीं ॥ लोकविषेभी

जोवस्तु तिसज्योतिकरिकै भास्यमानहोवैहै ॥ सोभास्यवस्तु तिसस्वभासकज्योतिकूं प्रकाशकरिसकतानहीं ॥ जैसे सूर्यरूपज्योतिकरिकै भास्यमान घटादिकपदार्थ स्वभासकसूर्यरूपज्योतिकूं प्रकाशकरिसकतेनहीं ॥ तैसे यहसूर्यचंद्रमादिकजडज्योतिभी स्वभासकचैतन्यपरब्रह्मरूपज्योतिकूं प्रकाशकरिसकतेनहीं ॥ इतनैंकहणे करिकै श्रीभगवान्नैं यहअनुमान सूचनकऱ्या ॥ सूर्य चंद्रमादिक परब्रह्मकेप्रकाशनहींहै तिसपरब्रह्मकरिकैभास्यमानहोणेतैं जोवस्तु जिसज्योतिकरिकैभास्यमान होवैहै ॥ सोभास्यवस्तु तिसस्वभासकज्योतिकूंप्रकाशकरतानहींहै ॥ जैसे घटादिकपदार्थ सूर्यकूं प्रकाशकरतेनहीं इति ॥ यहवार्त्ता श्रुतिविषेभीकथनकरीहै ॥ ॥ तहांश्रुति ॥ (नतत्रसूर्योभातिनचंद्रतारकंनेमाविद्युतोभांतिकुतोयमग्निः । तमेवभांतमनुभातिसर्वंतस्यभासासर्वमिदंविभाति) ॥ अर्थयह ॥ तिसपरब्रह्मरूपपदकूं सूर्यभी नहींप्रकाशकरिसकता तथा चंद्रमा तारागणभी नहींप्रकाशकरिसकते तथा यहविद्युत्भी नहींप्रकाशकरिसकते॥ तौं यहअल्पप्रकाशवालाअग्नि तिसपरब्रह्मकूं केसेप्रकाशकरिसकैंगा ॥ किंतु नहींप्रकाशकरिसकैंगा ॥ और तिसपरब्रह्मकेप्रकाशमानहुएतैंपश्चात्हीं यहसर्वजगत् प्रकाशमानहोवैहै ॥ तथा तिसपरब्रह्मकी प्रका शरूपदीप्तिकरिकैहीं यहसर्वजगत् प्रतीतहोवैहै इति ॥ तहां तिसपरब्रह्मरूपपदकूं स्वप्रकाशरूपताकहणेकरिकै श्रीभगवान्नैं इसशंकाकीनिवृत्तिकरी ॥ सोपरब्रह्मरूप वैष्णवपद वेद्यहै अथवानहीं॥अर्थात् किसीकेज्ञानकाविषयहै अथवा नहीं॥ जोकहो सोपद वेद्यहै॥ तौं जोवस्तु वेद्यहोवैहै॥ सोवस्तु आपणेतैंभिन्नवेदितृपुरुषकीअपेक्षा अवश्यकरेहै ॥ जैसे घटादिकवेद्यवस्तु आपणेतैंभिन्नवेदितृपुरुषकीअपेक्षा अवश्यकरेहैं ॥ तैसे सोवेद्यपदभी आपणेभिन्न किसीवेदितृपुरुषकीअपेक्षा अवश्य करैंगा ॥ यातैं तुमारेमतविषे द्वैतभावकीप्राप्तिहोवैगी ॥ और सोपद अवेद्यहै यहदूसरापक्ष जोअंगीकारकरो ॥ तौं तिसपदविषे अपुरुषार्थरूपता प्राप्तहोवैंगी ॥ जिससकारणतैं अवेद्यपदविषे पुरुषार्थरूपतासंभवतीनहीं इति ॥ इसशंकाकीनिवृत्तिकरी ॥ काहेतैं सोपदब्रह्मरूपपद अवेद्यहुआभी आपपरोक्षरूपहींहै ॥ तहां श्रुति ॥ (यत्साक्षादपरोक्षाद्ब्रह्म ॥) अर्थयह ॥ जोब्रह्म साक्षात्अपरोक्षरूपहै इति ॥ यातैं द्वैतभावकीप्राप्ति तथापुरुषार्थरूपताकीहानिहोवैनहीं ॥ तहां तिसपरब्रह्मरूपपदविषे अवेद्यरूपतातौं श्रीभगवान्नैं (नतद्भासयतेसूर्यो इसश्लोकविषे सूर्यादिकोंकरिकैअभास्यमानत्वरूपहेतुकरिकै कथनकरीहै ॥ और सर्व कीप्रकाशकताकरिकै स्वयंअपरोक्षपणातौं (यदादित्यगतंतेजः) इसवक्ष्यमाणश्लोकविषे श्रीभगवान् कथनकरैंगा ॥ इसप्रकार दोनोंश्लोकोंकरिकै श्रीभगवा न्नैं (नतत्रसूर्योभाति) इसपूर्वउक्तश्रुतिके दोनोंविभागोंकाअर्थ कथनकऱ्या इति ॥ और किसीटीकाविषेतौं (नतद्भासयतेसूर्यो) इसश्लोकका यहअर्थ कथनकऱ्याहै ॥ तिसपरब्रह्मपदकूं सूर्यभीनहीं प्रकाशकरेहै ॥ काहेतैं सोपद रूपादिकगुणोंतैंरहितहोणेतैं चक्षुइंद्रियकाविषयहैनहीं ॥ जोरूपवान्वस्तु चक्षु इंद्रियकाहोवैहै ॥ सोरूपवान्वस्तुहीं तिसचक्षुऊपरिअनुग्रहकरणेहारेसूर्यनैं प्रकाशकरीताहै ॥ जैसे रूपवान्घटादिकपदार्थ चक्षुइंद्रियकाविषयहोणेतैं सूर्य

नैं प्रकाशकरीतेहैं ॥ और यहपरब्रह्मरूपपदतौं रूपवान् हुआ चक्षुइंद्रियकाविषयहैनहीं ॥ यातैं इसपदकूं सोसूर्यप्रकाशकरिसकतानहीं ॥ तहां (नतत्रचक्षुर्गच्छति नचक्षुषागृह्यते) इत्यादिकश्रुतियां तिसपरब्रह्मविषे चक्षुइंद्रियकीअविषयताकूं कथनकरेहैं ॥ इतनैंकहणेकरिकै श्रीभगवान्नैं तिसपदविषे सर्वबाह्यइंद्रियोंकीनिवृत्ति कथनकरी ॥ अब तिसपदविषे मनकीव्यावृत्ति कथनकरेहैं (नशशांकःइति) हेअर्जुन तिसपदकूं चंद्रमाभी नहींप्रकाशकरिसकेहैं ॥ काहेतैं जोवस्तु मनकरिकैग्रहणकऱ्याजावैहै ॥ तिसवस्तुकूंहीं सोमनऊपरिअनुग्रहकरणेहाराचंद्रमा प्रकाशकरेहै ॥ और यहपरब्रह्मरूपपदतौं तिसमनकरिकैग्रहण होतानहीं ॥ यातैं इसपरब्रह्मकूं सोचंद्रमाभी प्रकाशकरिसकतानहीं ॥ तहां (यन्मनसानमनुते) इत्यादिक श्रुतियां तिसब्रह्मरूपपदविषे मनकीविषयताका निषेधकरेहैं ॥ और तिसपरब्रह्मरूपपदकूं अग्निभी प्रकाशकरिसकतानहीं ॥ काहेतैं जोवस्तु वाक्इंद्रियकाविषयहोवैहै ॥ तिसवस्तुकूंहीं सोवाक्इंद्रियऊपरिअनुग्रहकरणेहारा अग्नि प्रकाशकरेहै ॥ तावाक्इंद्रियकेअविषयवस्तुकूं सोअग्नि प्रकाशकरिसकतानहीं ॥ और (यद्वाचानभ्युदितम् । नचक्षुषागृह्यतेनापिवाचा) इत्यादिकश्रुतियोंनैं तिसपरब्रह्मविषे वाक्इंद्रियकीविषयताका निषेधकऱ्याहै ॥ यातैं तिसपरब्रह्मकूं सोअग्नि प्रकाशकरिसकतानहीं ॥ हेअर्जुन जिसकारणतैं सोपरब्रह्मरूपपद चक्षु मन वाक् इनतीनोंका अविषयहै तिसकारणतैं सोपरब्रह्मरूपपद स्थूलसूक्ष्मकारणरूपसर्वप्रपंचतैंरहित प्रत्यक् अद्वितीयरूपहै ॥ इसप्रकार (नांतःप्रज्ञंनबहिःप्रज्ञंअस्थूलमनण्वह्रस्वमदीर्घम्) इत्यादिकश्रुतियोंनैं सर्वधर्मोंतैंरहितकरिकै जो प्रत्यक्अभिन्नअद्वितीयब्रह्म प्रतिपादनकऱ्याहै ॥ सोअद्वितीयब्रह्म मैंपरमेश्वरका परमधामहै ॥ अर्थात् परमभावतैंरहित जोअंतःकरणकीवृत्तिरूपज्ञानहै तिसवृत्तिरूपज्ञानतैंअन्य चिन्मात्रज्योतिरूपहै ॥ ईहां राहोःशिरः इसवाक्यविषे राहुपदतैं उत्तरसंबंधकावाचकषष्ठीविभक्तीके विद्यमानहुएभी जैसे राहुकाशिरहै इसप्रकारकाबोधहोतानहीं ॥ किंतु राहुतैंअभिन्नशिरहै इसप्रकारका अभेदबोधहींहोवैहै ॥ तैसे (तद्धामपरमंमम) इसवचनविषेमम इसपदतैं उत्तरसंबंधकावाचक षष्ठीविभक्तिकेविद्यमानहुएभी मेरापरमधामहै याप्रकारकाबोधहोवैनहीं ॥ किंतु मैंपरमेश्वरतैंअभिन्न सोस्वप्रकाशब्रह्मरूपधामहै याप्रकारका अभेद बोधहींहोवैहै इति ॥ हेअर्जुन जिसकारणतैं सोअद्वितीयस्वयंज्योतिब्रह्मरूपपद मैंपरमेश्वरका स्वरूपहींहै ॥ इसकारणतैंहीं जिसपदकूं अहंब्रह्मास्मि इसज्ञानपूर्वक प्राप्तहोइकै विद्वान्पुरुष पुनः आवृत्तिकूंप्राप्तहोतेनहीं ॥ अर्थात् पुनः जन्मकूंप्राप्तहोतेनहीं ॥ काहेतैं पुनः आवृत्तिकाकारणरूप जोमूलअज्ञानहै ॥ सोमूलअज्ञान तिनपुरुषोंका मैंपरब्रह्मकेअभेदज्ञानतैं निवृत्तहोइगयाहै ॥ याकारणतैं तेतत्त्ववेत्तापुरुष पुनः आवृत्तिकूंप्राप्तहोतेनहीं इति ॥ इसकारणतैं इसश्लोककेव्याख्यानकीये हुएहीं (यदाह्येवैषएतस्मिन्नदृश्येऽनात्म्येऽनिरुक्तेऽनिलयनेऽभयंप्रतिष्ठांविंदते अथसोऽभयं गतोभवति ॥) इसश्रुतिकेअर्थकी तिसश्लोकविषे अनुकूलताहोवैहै ॥ इस

श्रुतिकायहअर्थहै ॥ जिसकालविषे यहअधिकारीपुरुष इसअदृश्य अनात्म्य अनिरुक्त अनिलयन ब्रह्मविषे भयतैंरहित स्थितिकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तिसकालविषे यह अधिकारीपुरुष पुनरावृत्तिकेभयतैंरहित ब्रह्मभावकूं प्राप्तहोवैहै इति ॥ इसश्रुतिविषे अदृश्य अनात्म्य अनिरुक्त अनिलयन यहच्यारिविशेषण ब्रह्मकेकथनकऱ्येहैं॥ तहां चक्षुकीदृष्टिका जो अविषयहोवै ताकानाम अदृश्यहै ॥ इसअदृश्यविशेषणकरिकै तिसब्रह्मविषे सूर्यकृतभास्यत्वका निषेधकऱ्या ॥ और मनरूप आत्माका जो विषयहोवैहै ताकानाम आत्म्यहै ॥ तिसतैंजोभिन्नहोवै ताकानाम अनात्म्यहै ॥ इसअनात्म्यविशेषणकरिकै तिसब्रह्मविषे मनकी अविषयता कथनकरिकै चंद्रमाकृतभास्यत्वका निषेधकऱ्या ॥ और स्थूलसूक्ष्मरूपसर्वजगत् लयकूंप्राप्तहोवैजिसविषे ताकानाम निलयनहै ॥ ऐसाअव्याकृत रूपकारणहै ॥ तिसकारणरूपानिलयनतैंजोभिन्नहोवै ताकानाम अनिलयनहै ॥ इसीकारणतैंहीं सोब्रह्म अनिरुक्तहै अर्थात् कथनकरणेकूंअयोग्यहै ॥ इसअनिरुक्तविशेषणकरिकै तिसपरब्रह्मविषे वाक्इंद्रियकीअविषयताकथनकरिकै अग्निकृतप्रकाशका निषेधकऱ्या इति ॥ और केईकभेदवादीतो (नतद्भासयतेसूर्यो) इसश्लोकका यहअर्थ करेहैं ॥ सूर्य चंद्रमा अग्नि इनतीनोंकरिकैअप्रकाश्य तथाअर्चिरादिमार्गकरिकैप्राप्तहोणेयोग्य तथाब्रह्मलोकतैंभीऊपरिस्थित तथाअप्राकृत तथानित्य ऐसा वैष्णवपद देशांतरविषेस्थितहै ॥ तिसवैष्णवपदकूं अर्चिरादिमार्गद्वारा प्राप्तहोइकै यहअधिकारीजन पुनः आवृत्तिकूंनहींप्राप्तहोवैहै इति ॥ सोयह तिनभेदवादियोंका अर्थ अत्यंतविरुद्धहै ॥ काहेतैं (नरूपमस्येहतथोपलभ्यते) इसश्लोकविषे सर्वदृश्यपदार्थोंकूं मिथ्यारूपहीं कथनकऱ्याहै ॥ और (अतोऽन्यदार्तम्) अर्थयह॥इसपरमात्मादेवतैंभिन्न सर्वअनात्मपदार्थ मिथ्याहैं ॥ इसश्रुतिनैंभी परमात्मादेवतैंभिन्न सर्वदृश्यपदार्थोंकूं मिथ्याकह्याहै ॥ सोदृश्यपणा जैसे इनलोकोंविषेहै ॥ तैसे तिसवैष्णवलोकविषेभी सोदृश्यपणा तुल्यहींहै ॥ यातैं देशांतरविषेस्थित तिसवैष्णवलोकविषेभी सोमिथ्यापणा अवश्यकरिकैहोवैंगा ॥ ऐसेमिथ्यालोकविषेप्राप्तहुएपुरुषोंकी पुनरावृत्तिभी अवश्यकरिकैहोवैंगी ॥ यातैं यहभेदवादीयोंकाव्याख्यान समीचीननहींहै ॥ किंतु पूर्वउक्तव्याख्यानहीं समीचीनहै इति ॥ ६ ॥ ❋ ॥ शंका ॥ हेभगवन् (यद्गत्वाननिवर्तंते) यहआपकावचन असंगतहै ॥ काहेतैं यहअधिकारीपुरुष जोकदाचित् तिसपदविषे जावैंगे ॥ तौं तिसपदतैं अवश्यकरिकै निवृत्तभीहोवैंगे ॥ जैसे स्वर्गविषेगएहुएकर्मीपुरुष तास्वर्गतैं अवश्यकरिकै पीछेआवैहै ॥ और यहअधिकारीपुरुष जोकदाचित् तिसपदतैं पीछेनहींआवैंगे ॥ तौं तिसपदविषे जावैंगेभीनहीं ॥ यातैं यहअधिकारीपुरुष तिसपदविषे जातेहैं ॥ और तिसपदतैं पुनः आवतेनहीं यहदोनोंवचन परस्पर विरुद्धहैं ॥ और जो जहांजाताहै सो तहांतैं अवश्य फिरआवताहै यहवार्त्ता शास्त्रविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ (सर्वेक्षयांतानिचयाःपतनांताःसमुच्छ्रयाः ॥ संयोगाविप्रयोगांतामरणांतंहिजीवितम् ॥) अर्थयह॥ जेपदार्थवृद्धिवालेहैं ॥ तेपदार्थ अंतविषे अवश्य क्षयवालेहोवैहैं ॥ और जेपदार्थ उच्चैस्थानविषे

प्राप्तहुएहैं ॥ तेपदार्थ अंतविषे अवश्य नीचैपतनहोवैहैं ॥ और जेपदार्थसंयोगवालेहुएहैं ॥ तेपदार्थ अंतविषे अवश्य वियोगवालेहोवैहैं ॥ और जिसपदार्थका जन्म हुआहै ॥ सोपदार्थ अंतविषे अवश्य मरणकूंप्राप्तहोवैहै इति ॥ और जोआप यहवचनकहो ॥ अनात्मवस्तुकीप्राप्तिहीं अंतविषे पुनरावृत्तिवालीहोवैहै ॥ आत्माकी प्राप्ति अंतविषे पुनरावृत्तिवालीहोवैनहीं ॥ सोयहआपकाकहणाभी संभवतानहीं ॥ काहेतैं (सतासोम्यतदासंपन्नोभवति) इसश्रुतिनैं सुषुप्तिअवस्थाविषे सर्वप्राणी मात्रकूं आत्मभावकीप्राप्ति कथनकरीहै ॥ परंतुसाआत्मभावकीप्राप्ति अंतविषे पुनरावृत्तिवालीहींहै ॥ जोकदाचित् सुषुप्तिविषे आत्मभावकूंप्राप्तहुएप्राणीयोंकी जाग्रतविषे पुनरावृत्ति नहीं अंगीकारकरीये ॥ तौं तिससुषुप्तिमात्रकरिकैहीं सर्वप्राणी मुक्तहोवैंगे ॥यातैं मुक्तहुएतिनसुषुप्तपुरुषोंका पुनःउत्थान नहींहोणाचाहिये ॥ और तिनसुषुप्तपुरुषोंकी पुनरावृत्तितौं देखणेविषे आवैहै ॥ यातैं तिसपरब्रह्मरूपपदकीप्राप्तिविषे (यद्गत्वा) यहवचनकहणा संभवतानहीं ॥ और तिसगमनकूं जोगौणमानिये ॥ तौंभी तिसपदतैं आनिवृत्ति नहींसंभवैहै ॥ इसप्रकारकी अर्जुनकीशंकाकेहुए ॥ श्रीभगवान् उत्तरकहेहै ॥ हेअर्जुन तिसब्रह्मरूपपदकूं प्राप्तहोणे हारा जोजीवात्माहै ॥ सोजीवात्मा तिसगंतव्यब्रह्मतैं कोईभिन्ननहींहैं ॥किंतुयहजीवात्मा तिसगंतव्यब्रह्मतैंअभिन्नहींहै ॥ और यहजीवात्मा ब्रह्मरूपहींहै इसअर्थकूं (तत्त्वमसि अहंब्रह्मास्मि प्रज्ञानमानंदंब्रह्म अयमात्माब्रह्म) इत्यादिकअनेकश्रुतियां कथनकरेहैं ॥ यातैं (यद्गत्वाननिवर्त्तंते) इसवचनकरिकै कथनकरीजा जीवा त्माकूं ब्रह्मकीप्राप्तिहै ॥ साप्राप्ति स्वर्गादिकोंकेप्राप्तिकिन्यांई मुख्यनहींहैं ॥ किंतु साप्राप्तिगौणहै ॥ अर्थात् अज्ञानमात्रकरिकैव्यवहितजोब्रह्महै ॥ तिसब्रह्मकी अहंब्रह्मास्मि इसप्रकारकाज्ञानमात्रहीं प्राप्तिकहीजावैहै ॥ तहां जिसपक्षमैं अंतःकरणविषे अथवा अविद्याविषे जो ब्रह्मकाप्रतिबिंबहै सोप्रतिबिंबहीं जीवहै ॥ तिसपक्षविषेतौं जैसे जलविषेप्रतिबिंबितसूर्यका ताजलकेअभावहुए बिंबभूतसूर्यकेप्रति गमनहोवैहै ॥ तथा तिसबिंबभूतसूर्यतैं तिसप्रतिबिंबकी पुनःआवृत्तिहोतीनहीं ॥ तैसे अंतःकरणादिकउपाधियोंकेअभावहुए इसप्रतिबिंबरूपजीवकाभी तिसनिरुपाधिकबिंबरूपब्रह्मकेप्रति गमनहोवैहै ॥ तथा तिस ब्रह्मतैं इसजीवात्माकी पुनःआवृत्तिहोतीनहीं ॥ और जिसपक्षमें बुद्धिअवच्छिन्नजोब्रह्मकाभागहै ताकानाम जीवहै ॥ तिसपक्षविषेतौं जैसे घटाकाशका घटरूपउपाधिके निवृत्तहुए महाकाशकेप्रति गमनहोवैहै ॥ तथा तिसमहाकाशतैं ताघटाकाशकी पुनः आवृत्तिहोतीनहीं ॥ तैसे इसजीवात्मा काभी तिसबुद्धिरूपउपाधिकेनिवृत्तहुए तिसब्रह्मकेप्रति गमनहोवैहै॥ तथा तिसब्रह्मतैं इसजीवात्माकी पुनःआवृत्तिहोतीनहीं॥ईहां जैसे वास्तवतैं बिंबरूपसूर्यतैंअभिन्न प्रतिबिंबरूपसूर्यका तिसबिंबरूपसूर्यकेप्रतिगमन तथातिसतैं अनावृत्ति यहदोनों गौणहैं मुख्यनहींहैं ॥ और जैसे वास्तवतैं महाकाशतैं अभिन्नघटाकाश का तिसमहाकाशकेप्रति गमन तथातिसतैंअनावृत्ति यहदोनों गौणहैं मुख्यनहीं हैं तैसे वास्तवतैंब्रह्मतैंअभिन्नइसजीवात्माका जो तिसब्रह्मकेप्रति गमनहैं

तथातिसब्रह्मतैंअनावृत्तिहै यहदोनोंभी गौणहैं मुख्यनहींहैं ॥ आपणेतैं भिन्नवस्तुकेप्रति जोगमनहै तथातिसतैंआवृत्तिहै सोगमन तथाअनावृत्ति दोनोंहीं मुख्य कहेजावैहैं ॥ इसप्रकारवास्तवतैं जीवब्रह्मकेअभेदहुएभी जो तिनोंकाभेदभ्रमहोवैहै ॥ सोभेदभ्रम केवल अंतःकरणादिकउपाधिकेवशतैंहींहोवैहै ॥ जैसे घटरूपउपाधिकेवशतैं घटाकाशका महाकाशतैंभेदभ्रमहोवैहै ॥ ताअंतःकरणादिकउपाधिकेनिवृत्तहुए सोभेदभ्रमभी निवृत्तहोइजावैहै इति ॥ और सुषुप्तिअवस्थाविषेतौं जीवकाउपाधिभूत सो संस्कारकर्मादिविशिष्ट अंतःकरण आपणेकारणरूपअज्ञानविषे सूक्ष्मरूपकरिकैस्थितहोवैहै ॥ यातैं तिसअज्ञानरूपकारणतैंहीं तिसअंतःकरणका पुनरुद्भवहोवैहै ॥ और आत्मज्ञानकरिकै जबी अज्ञानकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ तबी अज्ञानरूपकारणकेअभावहुए अंतःकरणादिककार्योंकीउत्पत्ति कहांतैं होवैंगी किंतु नहींउत्पत्तिहोवैंगी ॥ यातैं यह अर्थसिद्धभया ॥ इसजीवके अहंब्रह्मास्मि इसप्रकारके वेदांतवाक्यजन्यसाक्षात्कारतैं मैंब्रह्मनहींहूं इसप्रकारके अज्ञानकीजानिवृत्तिहै ॥ साअज्ञानकीनिवृत्तिहीं ॥ श्रीभगवान्नैं (यद्गत्वा) इसवचनकरिकै कथनकरीहै ॥ और आत्मसाक्षात्कारकरिकै निवृत्तहुआजो अनादिअज्ञानहै ॥ तिसअज्ञानके पुनःउत्थानकेअभावतैं जो तिसअज्ञानकेकार्यरूपसंसारकाअभावहै ॥ सोसंसारकाअभावहीं श्रीभगवान्नैं (ननिवर्त्तते) इसवचनकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ यातैं श्रीभगवान्केवचनोंविषे किंचित्मात्रभी विरोधकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ और इसजीवका पारमार्थिकस्वरूप ब्रह्महींहै यहवार्ता पूर्वअनेकवार कथनकरिआयेहैं ॥ यहपूर्वउक्तसर्वअर्थ श्रीभगवान्नैं इसतैंउत्तरग्रंथकरिकै प्रतिपादनकरियेंगा ॥ तहां यहजीवात्मा वास्तवतैंब्रह्मरूपहींहै ॥ यातैं ब्रह्मसाक्षात्कारकरिकै अज्ञानकेनिवृत्तहुए तिसब्रह्मरूपताकूंप्राप्तहुएजीवकी तिसब्रह्मरूपतातैं पुनःआवृत्तिहोतीनहीं ॥ इस अर्थकूं श्रीभगवान् (ममैवांशोजीवलोके जीवभूतःसनातनः ॥) इसअर्द्धश्लोकरिकै कथनकरैगा ॥ और सुषुप्तिअवस्थाविषेतौं सर्वकार्योंकेसंस्कारसहितअज्ञान विद्यमानहै ॥ याकारणतैंहीं इसजीवात्माकूं तिससुषुप्तितैं पुनः संसारकीप्राप्तिहोवैहै ॥ इसअर्थकूं श्रीभगवान् (मनःषष्ठानींद्रियाणीप्रकृतिस्थानिकर्षति ॥) इसअर्द्धश्लोककरिकै कथनकरैंगा ॥ तिसतैंअनंतर वास्तवतैंअसंसारीरूपहुआभी मायाकरिकैसंसारीभावकूंप्राप्तहुआ तथामंदमतिपुरुषोंनैं देहकेसाथि तादात्म्यभावकूंप्राप्तकऱ्याहुआ ऐसाजो यहजीवात्माहै ॥ तिसजीवात्माका तिसदेहतैंव्यतिरेकपणेकूं श्रीभगवान् (शरीरंयदवाप्नोति) इसश्लोककरिकैकथनकरैंगा ॥ और शब्दादिकविषयोंविषे श्रोत्रादिकइंद्रियोंकूं प्रवृत्तकरणेहारा जोयहजीवात्माहै ॥ तिसजीवात्माका तिनश्रोत्रादिकइंद्रियोंतैंव्यतिरेकपणेकूं श्रीभगवान् (श्रोत्रंचक्षुःस्पर्शनंच) इसश्लोककरिकैकथनकरैंगा ॥ तहां इसप्रकार देहइंद्रियादिकोंतैंविलक्षणआत्माकूं उत्क्रांतिआदिकअवस्थावोंविषे सर्वप्राणी किसवास्तैनहींदेखतेहैं ऐसीशंकाकेप्राप्तहुए ॥ विषयवासनाकरिकैविक्षिप्तचित्तवालेपुरुष दर्शनयोग्यभी तिसआत्मादेवकूं नहींदेखिसकेहैं ॥ इसप्रकारके उत्तरकूं श्रीभगवान् (उत्क्रामंतंस्थितंवापि) इसश्लोककरिकै कथनकरैंगा ॥

तहां (उत्क्रामंतम्) इसश्लोकविषे स्थितजो (पश्यंतिज्ञानचक्षुषः) यहवचनहै ॥ इसवचनकेअर्थकूं श्रीभगवान् (यतंतोयोगिनश्चैनपश्यंत्यात्मन्यवस्थितम्) इसअर्द्धश्लोककरिकै वर्णनकरैंगा ॥ और (विमूढानानुपश्यंति) इसवचनकेअर्थकूंतौं (यतंतोप्यकृतात्मानोनैनंपश्यंत्यचेतसः) इसअर्धश्लोककरिकै वर्णनकरैंगा ॥ इसप्रकारतैं इनवक्ष्यमाणपंचश्लोकोंकी परस्परसंबंधरूपसंगति सिद्धहोवैहै ॥ अबीआगे इनपंचश्लोकोंके केवल अक्षरोंकेअर्थकूं वर्णनकरैंगे इति ॥

(मू० श्लो०) ममैवांशोजीवलोकेजीवभूतःसनातनः ॥ मनःषष्ठानींद्रियाणिप्रकृतिस्थानिकर्षति ॥ ७ ॥ मम । एव । अंशः । जीवलोके । जीवभूतः । सनातनः । मनःषष्ठानि । इंद्रियाणि । प्रकृतिस्थानि । कर्षति ॥ ७ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन इससंसारविषे मैंपरमात्माका हीं अंश सनातन जीवरूपहै सोजीव मनहैषष्ठा जिनोंविषे ऐसेप्रकृतिविषेस्थित श्रोत्रादिकइंद्रियोंकूं आकर्षणकरेहै ॥ ७ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन वास्तवतैं अंशअंशीभावतैंरहित जो मैंपरमात्मादेवहूं ॥ तिसमैंपरमात्मादेवकाहीं मायाकरिकैकल्पित अंशकीन्यांईअंशरूप इससंसारविषे विद्यमानहै ॥ अर्थात् जैसे वास्तवतैं अंशअंशीभावतैंरहितसूर्यका जलविषेस्थित मिथ्याभेदवाला अंशकीन्यांईअंशरूप प्रतिबिंब होवैहै ॥ तथा जैसे वास्तवतैं अंशअंशीभावतैंरहितमहाकाशका घटविषेस्थित मिथ्याभेदवाला अंशकीन्यांईअंशरूप घटाकाश होवैहै ॥ तैसे वास्तवतैंअंशअंशीभावतैंरहित मैंपरमात्मादेवकाभी इससंसारविषे मिथ्याभेदवालाअंशकीन्यांईअंश विद्यमानहै ॥ सो मैंपरमात्मादेवकाअंश प्राणोंकाधारणरूपउपाधिकरिकै जीवभूतहुआहै ॥ अर्थात् कर्त्ता भोक्ता संसारी इसप्रकारकी मिथ्याहीं प्रसिद्धिकूं प्राप्तहुआहै ॥ कैसाहैसोजीवरूपअंश सनातनहै क्या नित्यहै ॥ अर्थात् अंतःकरणादिकउपाधिकृतपरिच्छिन्नताकेहुएभी वास्तवतैं सोजीवात्मा परमात्मास्वरूपहींहै ॥ काहेतैं श्रुतिविषे तिसपरमात्मादेवकाहीं इसशरीरविषे जीवरूपकरिकै प्रवेश कथनकऱ्याहै ॥ तहांश्रुति ॥ (सएषइहप्रविष्टआनखाग्रेभ्यः । तत्सृष्ट्वातदेवानुप्राविशत् ॥) अर्थयह ॥ सोपरमात्मादेवहीं इससंघातविषे नखकेअग्रभागतैंलेके प्रवेशकरताभया ॥ और सोपरमात्मादेव इससंघातकूंउत्पन्नकरिकै आपहीं जीवरूपहोइकै इससंघातविषेप्रवेशकरताभया इति ॥ यातैं आत्मज्ञानतैं अज्ञानकेनिवृत्तिहुए यह जीवात्मा आपणेस्वरूपभूतब्रह्मकूंप्राप्तहोइकै तिसब्रह्मतैं पुनःआवृत्तिकूंनहींप्राप्तहोवैहै यहअर्थ जोपूर्व कथनकऱ्याथा सोयुक्तहींहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् स्वस्वरूपकूंप्राप्तहुआभी यहजीवात्मा सुषुप्तिअवस्थातैं पुनः किसप्रकार आवैहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहेहै ॥ (मनःषष्ठानिइति) हेअर्जुन मनहै षष्ठाजिनोंविषे ऐसेजो श्रोत्र त्वक् चक्षु रसन घ्राण यहपंचज्ञानइंद्रियहैं ॥ अर्थात् इंद्रियगोलकोंके शब्दादिविषयोंकेज्ञानकेअधिकारणरूपकरिकै लिंगरूप जेश्रोत्रादिकइंद्रियहैं ॥

जेश्रोत्रादिकइंद्रिय जाग्रत्स्वप्नकेभोगजनककर्मोंकेक्षयहुए प्रकृतिविषेस्थितहैं ॥ अर्थात् अज्ञानरूपप्रकृतिविषे सूक्ष्मरूपकरिकैस्थितहैं ॥ ऐसेमनसहितइंद्रियोंकूं सोजीवात्मा पुनः जाग्रत्भोगोंकेजनककर्मोंकेउदयहुए तिनभोगोंकेवास्तै आकर्षणकरैहै ॥ अर्थात् जैसे कूर्मनामाजंतु आपणेशरीरविषेलीन कऱ्येहुए शिरपादादिकअंगोंकूं पुनः तिसआपणेशरीरतैं बाह्यप्रगटकरैहै ॥ तैसे सोजीवात्माभी तिसअज्ञानरूपप्रकृतितैं मनसहितइंद्रियोंकूं शब्दादिकविषयोंकेग्रहणकी योग्यतारूपकारकै पुनःप्रगटकरैहै ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ आत्मज्ञानतैं अनावृत्तिहुएभी अज्ञानतैं पुनःआवृत्ति कोईअनुपपन्ननहींहै किंतु अज्ञानतैं इस जीवात्माकी पुनःआवृत्ति युक्तहींहै ॥ ७ ॥ ॥ शंका ॥ हेभगवन् यहजीवात्मा जिसकालविषे तिनमनसहितइंद्रियोंकूं आकर्षणकरैहै ॥ ऐसीअर्जुनकी जिज्ञासाकेहुए श्रीभगवान् कहैहै ॥

(मू० श्लो०) शरीरंयदवाप्नोतियच्चाप्युत्क्रामतीश्वरः ॥ गृहीत्वैतानिसंयातिवायुर्गंधानिवाशयात् ॥ ८ ॥ शरीरम् । यत् । अवाप्नोति । यत् । च । अपि । उत्क्रामति । ईश्वरः । गृहीत्वा । एतानि । संयाति वायुः । गंधान् । इव । आशयात् ॥ ८ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन जिसकालविषे यहजीवात्मा उत्क्रमणकरैहै तिसकालविषे तिनइंद्रियोंकूं आकर्षणकरैहै तथा जिसकालविषे दूसरे शरीरकूं प्राप्तहोवैहै तिसकालविषे इनमनसहितइंद्रियोंकूं ग्रहणकरिकै भी जावैहै जैसे पुष्पादिकस्थानतैं वायु गंधकूं ग्रहण करिकैजावैहै ॥ ८ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन देहइंद्रियरूपसंघातकास्वामीहोणेतैं ईश्वररूप जोयहजीवात्माहै ॥ सो यहजीवात्मा जिसकालविषे उत्क्रमणकरैहै ॥ अर्थात् इसदेहतैंबाह्यनिर्गमनकरैहै ॥ तिसकालविषे यहजीवात्मा जिसदेहतैंबाह्य निर्गमनकरैहै तिसदेहतैं मनसहितश्रोत्रादिकइंद्रियोंकूं आकर्षणकरैहै ॥ हेअर्जुन यहजीवात्मा तिनमनसहितइंद्रियोंकूं केवल आकर्षणहींनहींकरैहै ॥ किंतु यहजीवात्मा जिसकालविषे इसपूर्वशरीरतैं दूसरेशरीरकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तिसकालविषे तिनमनसहित श्रोत्रादिकइंद्रियोंकूं ग्रहणकरिकैभी जावैहै ॥ तिनइंद्रियोंकूंछोडिकै जातानहीं ॥ अर्थात् जैसे तिसपरित्यागकऱ्येहुएपूर्वलेशरीरविषे पुनःआवैनहीं ॥ तैसे तिन इंद्रियोंकूंग्रहणकरिकै जावैहै ॥ यहअर्थ (संयाति) इसवचनविषे सं इसशब्दकरिकै श्रीभगवान्नैं सूचनकऱ्या ॥ अब इसस्थूलशरीरकेविद्यमानहुएहीं तिसशरीरतैं इंद्रियोंकेग्रहणकरणेविषे श्रीगवान् दृष्टांतकूं कथनकरैहै (वायुर्गंधानिवाशयादइति) हेअर्जुन जैसे पुष्पादिकस्थानतैं गंधरूपसूक्ष्मअंशोंकूंग्रहणकरिकै वायु पूर्वादिकदिशावोंविषे गमनकरैहै ॥ तैसे यहजीवात्माभी इसस्थूलदेहतैं मनसहितइंद्रियोंकूंग्रहणकरिकै परलोकविषेगमनकरैहै ॥ इति ॥ ८ ॥ ❀

॥ अब श्रीभगवान् तिनइंद्रियोंका कथनकरताहुआ जिसप्रयोजनवासतै यहजीवात्मा तिनइंद्रियोंकूंग्रहणकरिकैनिर्गमनकरेहै तिसप्रयोजनकूं कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) श्रोत्रंचक्षुःस्पर्शनंचरसनंघ्राणमेवच ॥ अधिष्ठायमनश्चायंविषयानुपसेवते ॥ ९ ॥ श्रोत्रम् । चक्षुः । स्पर्शनम् । च । रसनम् । घ्राणम् । एव । च । अधिष्ठाय । मनः । च । अयम् । विषयान् । उपसेवते ॥ ९ ॥ इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन यह जीवात्मा श्रोत्रइंद्रियकूं तथा चक्षुइंद्रियकूं तथा त्वक्इंद्रियकूं तथारसनइंद्रियकूं तथा घ्राणइंद्रियकूं तथा मनकूं आश्रयणकरिकै हीं शब्दादिकविषयोंकूं भोगताहै ॥ ९ ॥ (इतिपदार्थः)॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन यहजीवात्मा श्रोत्रइंद्रियकूं तथाचक्षुइंद्रियकूं तथात्वक्इंद्रियकूं तथारसनइंद्रियकूं तथाघ्राणइंद्रियकूं तथामनकूं आश्रयणकरिकैहीं शब्दस्पर्शादिकविषयोंकूंभोगेहै ॥ ईहां (घ्राणमेवच) इसवचनविषेस्थितजोचकारहै ॥ तिसचकारकरिकै वाकादिकपंचकर्मइंद्रियोंका तथाप्राणकाभी ग्रहणकरणा ॥ और (मनश्च) इसवचनविषे स्थितजो चकारहै ॥ तिसचकारकरिकै बुद्धि चित्त अहंकार इनतीनोंकाभी ग्रहणकरणा ॥ अर्थात् पंचज्ञानइंद्रिय पंचकर्मइंद्रिय पंचप्राण चतुष्टयअंतःकरण इनसर्वोंकूं आश्रयणकरिकैहीं यहजीवात्मा शब्दादिकविषयोंकूंभोगेहै ॥ तिनइंद्रियादिकोंकेआश्रयणकीयेतैंविना केवलशुद्धआत्मा तिनशब्दादिकविषयोंकूंभोगतानहीं ॥ यहवार्ता श्रुतिविषेभी कथनकरीहै तहांश्रुति ॥ (आत्मेंद्रियमनोयुक्तंभोक्तेत्याहुर्मनीषिणः) ॥ अर्थयह ॥ देहश्रोत्रादिकइंद्रियोंकरिकै तथामनकरिकै युक्तहुआहीं आत्मा भोक्ताहोवैहै ॥ इसप्रकार वेदवेत्ताबुद्धिमान्पुरुष कथनकरेहैं इति ॥ ९ ॥ ❀ ॥ ऐसेदर्शनयोग्यभीआत्माकूं मूढपुरुषदेखतेनहीं ॥ किंतु विवेकीपुरुषहीं देखेहैं ॥ इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) उत्क्रामंतंस्थितंवापिभुंजानंवागुणान्वितम् ॥ विमूढानानुपश्यंतिपश्यंतिज्ञानचक्षुषः ॥ १० ॥ उत्क्रामंतं । स्थितम् । वा । अपि । भुंजानम् । वा । गुणान्वितम् । विमूढाः । न । अनुपश्यंति । पश्यंति । ज्ञानचक्षुषः ॥ १० ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन उत्क्रमणकरतेहुए अथवा तिसीहींदेहविषेस्थितहुए अथवा विषयोंकूंभोगतेहुए तथागुणोंकरिकैयुक्तहुए ऐसेआत्माकूं भी विमूढपुरुष नहीं देखसकतेहैं किंतु ज्ञानरूपचक्षुवालेपुरुषहीं तिसआत्माकूं देखतेहैं ॥ १० ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन वास्तवतैंगमनादिकसर्वविकारोंतैंरहितहुआभी अंतःकरणादिकउपाधिकेतादात्म्यअध्यासतैं पूर्वशरीरकापरित्यागकरिकै दूसरेशरीरकेप्रतिगमनकरताहुआ जोयहआत्माहै ॥ अथवा तिसपूर्वलेशरीरविषेहीं स्थितहुआ जोयहआत्माहै ॥ अथवा तिसदूसरेशरीरविषे शब्दादिकविषयोंकूंभोगताहुआ

जोयहआत्माहै ॥ तथा सुखदुःख मोह रूप सत्त्व रज तम इनगुणोंकरिकैयुक्त जोयहआत्माहै इसप्रकारकी सर्वअवस्थावोंविषे दर्शनकेयोग्यभी इसआत्माकूं विमूढपुरुष नहींदेखिसकेहैं ॥ तहांइसश्लोकके विषयभोगोंकी तथास्वर्गादिकलोकोंकेविषयभोगोंकी वासनावोंकरिकै आकर्षणहुआहैचित्तजिनोंका ऐसेजे आत्मा अनात्माकेविवेककरणेविषेअयोग्यपुरुषहैं तिनोंकानाम विमूढहै ॥ ऐसेविमूढपुरुष तिनउत्क्रमणादिकअवस्थावोंविषे इसआत्मादेवकूं देहादिकोंतैंभिन्नकरिकै जानि सकतेनहीं ॥ यहबडाकष्टहै ॥ और जेपुरुष श्रुतिप्रमाणजन्यज्ञानरूपचक्षुवालेहैं ॥ तेविवेकीपुरुष तौं तिनउत्क्रमणादिक सर्वअवस्थावोंविषे इसआत्मादेव कूंदेहादिकोंतैंभिन्नकरिकेदेखेहैं इति ॥ १० ॥ ❀ ॥ अब (पश्यंतिज्ञानचक्षुषः) इसवचनकेअर्थकूं तथा (विमूढानानुपश्यंति) इसवचनकेअर्थकूं यथा क्रमतैं स्पष्टकरिकैवर्णनकरेहैं ॥

(मू० श्लो०) यतंतोयोगिनश्चैनंपश्यंत्यात्मन्यवस्थितम् ॥ यतंतोप्यकृतात्मानोनैनंपश्यंत्यचेतसः ॥ ११ ॥ यतंतः । योगिनः । च । एनं । पश्यंति । आत्मनि । अवस्थितं । यतंतः । अपि । अकृतात्मानः । न । एनं । पश्यति । अचेतसः ॥ ११ ॥ (इतिपदच्छेदः)॥

हेअर्जुन प्रयत्नकरतेहुए योगीपुरुष हीं आपणीबुद्धिविषे स्थित इसआत्माकूं देखतेहैं और प्रयत्नकरतेहुए भी अशुद्धअंतःकरण वाले अविवेकीपुरुष इसआत्माकूं नहीं देखतेहैं ॥ ११ ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन ध्यानादिकउपायोंकरिकै यत्नकरतेहुए जेशुद्धअंतःकरणवाले योगीपुरुषहैं ॥ तेयोगीपुरुषहीं आपणीबुद्धिविषेस्थित इसआनंदस्वरूपआत्मा कूं साक्षात्कारकरेहैं ॥ और जिनपुरुषोंनैं यज्ञादिकनिष्कामकर्मोंकरिकै आपणेअंतःकरणकूंशुद्धनहींकन्याहै ॥ तथाअशुद्धअंतःकरणवालेहोणेतैंहीं जेपुरुष आत्माअनात्माकेविवेकतैंरहितहैं ॥ तेअशुद्धअंतःकरणवालेअविवेकीपुरुषतौं प्रयत्नकरतेहुएभी इसआत्मादेवकूं साक्षात्कारकरिसकतेनहीं इति ॥ ११ ॥ ❀

॥ तहांसर्वजगत्केप्रकाशकरणेविषेसमर्थभी सूर्यचंद्रमादिक जिसपरब्रह्मरूपपदकूं प्रकाशकरणेविषेसमर्थहोतेनहीं ॥ तथा जिसपदकूंप्राप्तहुए मुमुक्षुजन पुनःसंसारकी प्राप्तिवासतै आवतेनहीं ॥ और जैसेमहाकाशतैं घटादिकउपाधिकृतभेदवालेहुए घटाकाशादिक तिसमहाकाशके कल्पितअंशभावकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तैसे जिसपरब्रह्मरूपप दके उपाधिकृतभेदकूंप्राप्तहोइकै कल्पितअंशादिक तिसमहाकाशकेसाथि अभेदभावकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तैसेमहावाक्यजन्यसाक्षात्कारकरिकै अविद्यादिकउपाधियोंकें निवृत्तहुए यहजीव जिसपरब्रह्मरूप पदकेसाथि अभेदभावकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तिसपरब्रह्मरूपपदके सर्वात्मपणेकूं तथासर्वव्यवहारोंके साधकपणेकूं दिखाइकरिकै (ब्रह्मणोहिप्रतिष्ठाहं) इसपूर्व अध्याय उक्तवचनके अर्थका वर्णनकरणे वासतै अबच्यारि श्लोकों करिकै श्रीभगवान् आपणे विभूतियोंके संक्षेपकूं कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) यदादित्यगतंतेजोजगद्भासयतेखिलम् ॥ यच्चंद्रमसियच्चाग्नौतत्तेजोविद्धिमामकम् ॥ १२ ॥ यत् आदित्यगतं । तेजः । जगत् । भासयते । अखिलम् । यत । चंद्रमसि । यत् । च । अग्नौ । तत् । तेजः । विद्धि । मामकम्॥१२॥(इतिपदच्छेदः)॥ हेअर्जुन आदित्यविषेस्थित जो तेजहै तथा चंद्रमाविषेस्थित जोतेजहै तथा अग्निविषेस्थित जोतेजहै जोतेजइससर्व जगत्कूं प्रकाशकरताहै तिसै तेजकूं तूंमेरास्वरूपहीं जान ॥ १२ ॥ ((इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ तहां (नतत्रसूर्योभातिनचंद्रतारकंनेमाविद्युतोभांतिकुतोयमग्निः) यहश्रुतिकाअर्द्धभाग(नतद्भासयतेसूर्यः)इत्यादिकश्लोककरिकै पूर्व व्याख्यानकऱ्याथा॥ अव (तमेवभांतमनुभातिसर्वंतस्यभासासर्वमिदंविभाति) यहश्रुतिकाअर्द्धभाग (यदादित्यगतंतेजो) इसश्लोककरिकै श्रीभगवान्नैं व्याख्यानकरीताहै ॥ हेअर्जुन आदित्यविषे स्थितजो चैतन्यात्मकज्योतिरूप तेजहै ॥ तथा चंद्रमाविषेस्थित जोचैतन्यात्मकज्योतिरूप तेजहै ॥ तथा अग्निविषेस्थित जोचैतन्यात्मक ज्योतिरूप तेजहै ॥ जोचैतन्यज्योतिरूपतेज इससर्वजगत्कूं प्रकाशकरैहै ॥ तिसचैतन्यात्मकज्योतिरूपतेजकूं तूंअर्जुन मैंपरमात्माकास्वरूपभूतही जान ॥ यद्यपि स्थावरजंगमरूपसर्वपदार्थोंविषे सोचैतन्यात्मक ज्योति समानहींहैं ॥ तथापि सत्वगुणकीउत्कर्षताकरिकै तेआदित्यादिक सर्वतैंउत्कृष्टहैं॥याकारणतैं तिनआदित्यादिकोंविषेहीं सोचैतन्यरूपज्योति अतिसैंकरिकैअभिव्यक्तिकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तमोगुणप्रधान तथारजोगुणप्रधान अन्यपदार्थोंविषे स्वरूपतैं विद्यमान हुआभी सोचैतन्यरूपज्योति स्पष्टकरिकै अभिव्यक्तिकूंप्राप्तहोतानहीं ॥ यातैं तिनपदार्थोंकीअपेक्षाकरिकै आदित्यादिकोंविषे विशेष्यताबोधनकरणेवासतै श्रीभगवान्नैं ईहां आदित्यचंद्रमादिकोंका ग्रहणकऱ्याहै ॥ जैसे मुखकीसमीपताकेतुल्यहुएभी काष्ठभित्तिआदिकअस्वच्छपदार्थोंविषे सोमुख प्रतिबिंबरूपकरिकै अभिव्यक्तहोवैनहीं ॥ और स्वच्छतथाअतिस्वच्छ ऐसे जे दर्पणादिकपदार्थहै ॥ तिनदर्पणादिकपदार्थोंविषेतौं तास्वच्छताकीन्यूनअधिकताकरिकै सोमुखभी न्यूनअधिकभावतैं प्रतिबिंबरूपकरिकै अभिव्यक्त होवैहै ॥ तैसे सोचैतन्यरूपज्योतिभी स्वरूपतैंसर्वपदार्थोंविषेविद्यमानहुआभी सत्वगुणप्रधानआदित्यादिकोंविषेहीं स्पष्टरूपकरिकै अभिव्यक्तिकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तमोगुणप्रधानघटादिकपदार्थोंविषे स्पष्टरूपकरिकै अभिव्यक्तिकूंप्राप्तहोतानहीं इति ॥ अथवा (यदादित्यगतंतेजो) इसवचनविषे तेजशब्दका कथनकरिकै (तत्तेजोविद्धिमामकम्) इसवचनविषे जोपुनःतेजशब्दका कथनकऱ्याहै ॥ तिसतैं इसश्लोकका यहदूसराअर्थभी प्रतीत होवैहै ॥ आदित्यविषे तथाचंद्रमाविषे तथाअग्निविषे स्थित जो परकेप्रकाशकरणेविषेसमर्थ श्वेतभास्वररूप तेजहै ॥ जोतेज रूपवान्सर्ववस्तुरूपजगत्कूं प्रकाश करैहै ॥ सोतेज मैंपरमेश्वरकाहीं तूंजान ॥ अर्थात् मैंपरमेश्वरकेविभूतिरूप तिसतेजविषे तूं मैंपरमेश्वरकीबुद्धिकर इति ॥ इसप्रकारतैं परमेश्वरकीविभूतिकथन

करणेवासतै यहदूसराअर्थभी संभवहोइसकेहै ॥ जोकदाचित् इसश्लोककूं परमेश्वरकीविभूतिकथनकरिकै नहींअंगीकारकरिये ॥ तौं पुनःतेजशब्दकेग्रहणतैं विनाहीं (तन्मामकंविद्धि) इतनैंमात्रवचनकूंहीं श्रीभगवान् कथनकरता इति ॥ और किसीटीकाविषेतौं (यदादित्यगतंतेजो) इसश्लोकका यहअर्थकऱ्याहै ॥ आदित्य चंद्रमा अग्नि इनशब्दोंकरिकै चक्षुआदिककरणोंकेअधिष्ठानतारूप सूर्यादिकदेवतावोंका तथासूर्यादिकदेवतावोंकरिकैअनुगृहीत चक्षुआदिककरणोंका ग्रहणकरणा ॥ यातैं यहअर्थसिद्धहोवैहै ॥ चक्षुआदिकबाह्यकरणोंकेअधिष्ठातारूप जेसूर्यादिकदेवताहैं ॥ तथा तिनसूर्यादिकदेवतावोंकरिकैअनुगृहीत जेचक्षुआदिकबाह्यकरणहैं तिनदोनोंविषेविद्यमानजो रूपादिकविषयोंकेप्रकाशकरणेकासामर्थ्यरूपतेजहै ॥ सोतेज मैंपरमेश्वरकाहीं तूंजान ॥ तहांश्रुति ॥ (येनसूर्यस्तपतितेजसेद्धःयेनचक्षूंषिपश्यंति) ॥ अर्थयह ॥ जिसचैतन्यरूपतेजकरिकै यहसूर्य तप्तकरेहै ॥ तथा जिसचैतन्यरूपतेजकरिकै यहचक्षु रूपादिकपदार्थोंकूंदेखेहैं इति ॥ इसप्रकारमनविषे तथातामनकेअभिमानीचंद्रमादेवताविषे जो अंतरप्रपंचकेप्रकाशकरणेकासामर्थ्यरूपतेजहै ॥ तिसतेजकूंभी तूं मैंपरमेश्वरकाहींजान ॥ इसप्रकार वाक्इंद्रियविषे तथातावाक्इंद्रियकेअभिमानीअग्निदेवताविषे जो अव्याकृतआदिकविषयोंकेप्रकाशकरणेकासामर्थ्यरूपतेजकूंभी तूं मैंपरमेश्वरकाहीं जान इति ॥ १२ ॥ ❀ ॥ किंच ॥

(मू० श्लो०) गामाविश्यचभूतानिधारयाम्यहमोजसा ॥ पुष्णामिचौषधीःसर्वाःसोमोभूत्वारसात्मकः ॥ १३ ॥ गाम् । आविश्य । च । भूतानि । धारयामि । अहम् । ओजसा । पुष्णामि । च । ओषधीः । सर्वाः । सोमः । भूत्वा । रसात्मकः ॥ १३ ॥ (इतिप०) हेअर्जुन पुनः आपणेबलकरिकै इसपृथिवीकूं अत्यंतदृढकरिकै सर्वभूतोंकूं मैंपरमेश्वरहीं धारणकरूंहूं तथा सर्वरसस्वभाववाला सोमरूप होइकै सर्व ओषधियोंकूं मैंपरमेश्वरहीं पुष्टिवालीकरूंहूं ॥ १३ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन मैंपरमेश्वरहीं पृथिवीदेवतारूपकरिकै इसपृथिवीकूं सर्वओरतैंव्याप्तकरिकै तथा धूलीमुष्टिकेतुल्य इसपृथिवीकूं आपणेबलकरिकै अत्यंतदृढकरिकै इसपृथिवीऊपरिरहणेहारे स्थावरजंगमरूपसर्वभूतोंकूं धारणकरताहूं ॥ जैसे वायु आपणीशक्तिकरिकै मेघमंडलविषेप्रवेशकरिकै तामेघमंडलविषेस्थित जलोंकूं धारणकरेहै ॥ तैसे मैंपरमेश्वरभी पृथिवीदेवतारूपकरिकै इसपृथिवीविषेप्रवेशकरिकै आपणीशक्तिकरिकै इसपृथिवीकूं अत्यंतदृढकरिकै तिनस्थावरजंगमरूपसर्वभूतोंकूं धारणकरूंहूं ॥ जोकदाचित् मैंपरमेश्वर आपणेबलकरिकै इसपृथिवीकूंअत्यंतदृढकरिकै इनसर्वभूतोंकूं धारणकरताहोवूं ॥ तौं सिकताकेमुष्टितुल्य यहपृथिवी शिघ्रहीं विशीर्णभावकूंप्राप्तहोवैंगी ॥ अथवा यहपृथिवी अधोदेशचलीजावैंगी ॥ यहवार्त्ता श्रुतिविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ (येनद्यौ

रुयापृथिवीचदृढा । सदाधारपृथिवीं ॥) अर्थयह जिसपरमात्मादेवनैं स्वर्गलोक तथामहान्पृथिवी अत्यंतदृढकऱ्येहैं ॥ जिसकारिकै गुरुत्वधर्मवालेहुएभी यहस्वर्ग तथापृथिवी नीचैपतनहोतेनहीं तथा यहपृथिवी सत्यपरमात्मादेवकेहींआधारहै इति ॥ किंवा सर्वरसस्वभाववाला जोसोमहै ॥ तिससोमरूपहोइकै मैंप रमेश्वरहीं पृथिवीतैंउत्पन्नहुई व्रीहियवादिकसर्वओषधियोंकूं पुष्टिमान्करूंहूं तथास्वादुरसवालाकरूंहूं इति ॥ १३ ॥ ❀ ॥ किंच ॥

(मू॰ श्लो॰) अहंवैश्वानरोभूत्वाप्राणिनांदेहमाश्रितः ॥ प्राणापानसमायुक्तःपचाम्यन्नंचतुर्विधम् ॥ १४ ॥ अहम् । वैश्वानरः । भूत्वा । प्राणिनाम् । देहम् । आश्रितः । प्राणापानसमायुक्तः । पचामि । अन्नम् । चतुर्विधम् ॥ १४ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥

हेअर्जुन मैंपरमेश्वरहीं जठराग्निरूपहोइकै सर्वप्राणीयोंकेदेहकूं आश्रयणकरताहूआ तथाप्राण अपानकरिकैप्रज्वलितहुआ च्यारि प्रकारके अन्नकूं पाचनकरूंहूं ॥ १४ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन (अयमग्निर्वैश्वानरोयोयमंतःपुरुषेयेनेदमन्नंपच्यते) ॥ अर्थयह ॥ जोअग्नि इसपुरुषकेअंतरस्थितहै ॥ तथा जिसअग्निनैं यहच्यारिप्रकारकाअन्न पाचनकरीताहै ॥ सोयहअग्नि वैश्वानरहै इति ॥ इसश्रुतिनैं वैश्वानरनामकरिकैकथनकऱ्याजो जठराअग्निहै ॥ सोजठराअग्निरूपहोइकै मैंपरमेश्वरहीं सर्वप्राणीयोंके देहोंकेअंतरप्रविष्टहुआ तथातिसजठराअग्निकूंप्रज्वालनकरणेहारे प्राणअपानकरिकैयुक्तहुआ प्राणीयोंनैंभोजनकऱ्येहुए भक्ष्य भोज्य लेह्य चोष्य इसच्यारिप्रकारके अन्नकूं पाचनकरूंहूं ॥ तहां जोवस्तु दांतोंसैंखंडनकरिकै भक्षणकऱ्याजावैहै तावस्तुकूं भक्ष्य कहेहैं ॥ जैसे पुडीअपूपादिकहैं ॥ तिसभक्ष्यवस्तुकूं चर्व्यभी कहेहैं ॥ और जोवस्तु दांतोंकेव्यापारतैंविनाहीं केवल जिव्हांसैंहलाइकै भीतर निगल्याजावैहै तावस्तुकूं भोज्य कहेहैं ॥ जैसे पायससूपादिकहैं ॥ और जोवस्तु जिव्हाविषेप्राप्तहुआहीं रसकेस्वादमात्रकरिकै भीतर निगल्याजावैहै ॥ तथा किंचित्द्रवीभूतहोवैहैं ॥ तावस्तुकूं लेह्य कहेहैं ॥ जैसे गुड आम्ररस शिखरिण्य आदिकहैं ॥ और जोवस्तु दांतोंसैंनिष्पीडनकरिकै ताकेरस अंशकूं भीतरनिगलिकै परिशेषतैंरह्येहुएअसारअंशकूं बाह्यपरित्यागकरीताहै तावस्तुकूं चोष्य कहेहैं ॥ जैसे इक्षुदंडादिकहैं इति ॥ और किसीटीकाविषेतौं (पचाम्यन्नंचतुर्विधम्) ॥ इसवचनका यहअर्थकऱ्याहै ॥ मैंपरमेश्वरहीं जठराग्निरूप होइकै मनुष्यादिकसर्वप्राणीयोंकेअंतरस्थितहुआ पार्थिव आप्य तैजस वायव्य इसच्यारिप्रकारकेअन्नकूं पाचनकरूंहूं ॥ तहां मनुष्यादिकप्राणीयोंकातौं व्रीहियवादिक पार्थिव अन्नहै ॥ और चातकादिकप्राणीयोंकातौं जलरूप आप्य अन्नहै ॥ और वालखिल्यादिकप्राणीयोंकातौं अग्निरूप तैजस अन्नहै ॥ और सर्पादिकप्राणीयोंकातौं वायुरूप वायव्य अन्नहै इति ॥ तहां जोभोक्ताहै सो अग्निवैश्वानररूपहै ॥ और जोभोज्यअन्नहै सो सोमरूपहै ॥ इसप्रकार यहअग्नी

षोमदोनोंहीं सर्वरूपहैं ॥ इसप्रकारकेध्यानकरणेहारेपुरुषकूं अन्नकेदोषकालेपहोवैनहीं ॥ इसप्रकारका जोशास्त्रविषे फलसहितध्यान कथनकऱ्याहै सोभी ईहां जानिलेणा इति ॥ १४ ॥ ❀ ॥ किंच ॥

(मू० श्लो०)सर्वस्यचाहंहृदिसन्निविष्टोमत्तःस्मृतिर्ज्ञानमपोहनंच ॥ वेदैश्चसर्वैरहमेववेद्योवेदांतकृद्वेदविदेवचाहम् ॥१५॥ सर्वस्य । च । अहं । हृदि । सन्निविष्टः । मत्तः । स्मृतिः । ज्ञानम् । अपोहनं । च । वेदैः । च । स वैः । अहम् । एवं । वेद्यः । वेदांतकृत् । वेदवित् । एव । च । अहम् ॥ १५॥ (इतिपदच्छेदः)॥हेअर्जुन पुनःमैंपरमात्मादेवहीं सर्वप्राणीयोंके बुद्धिविषे जीवात्मारूपहोइकै प्रविष्टहुआहूं इसकारणतैं मैंआत्मादेवतैंहीं तिनसर्वप्राणोयोंकूं स्मृति तथाज्ञान तथा तिसस्मृतिज्ञानदोनोंकाअभाव होवैहै तथा सर्व वेदोंकरिकै मैंपरमेश्वर हीं जाननेयोग्यहूं तथावेदांतअर्थकीसंप्रदायकाप्रवर्त्तकहूं तथा मैंपरमेश्वर हीं सर्ववेदोंकेअर्थका वेत्ताहूं ॥ १५ ॥(इतिपदार्थः)॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन ब्रह्मातैंआदिलेके स्थावरपर्यंत जितनैंकीऊचनीचप्राणीहैं ॥ तिनसर्वप्राणीयोंकीबुद्धिविषे मैंपरमात्मादेवहीं जीवात्मारूपहोइकै प्रविष्टहुआहूं ॥ तहांश्रुति॥ (सएवइहप्रविष्टः । अनेनजीवेनात्मानुप्रविश्यनामरूपेव्याकरवाणि॥) अर्थयह॥ सोपरमात्मादेव जीवात्मारूपहोइकै इससंघातविषे प्रवेशकरताभया ॥ और इसजीवात्मारूपकरिकै इससंघातविषेप्रवेशकरिकै मैंपरमात्मादेव नामरूपकूंस्पष्टकरूं इति ॥ इत्यादिकअनेकश्रुतियां इनसर्वसंघातोंविषे परमात्मादेवकाहीं जीवात्मारूपकरिकैप्रवेशकूं कथनकरेहैं ॥ इतनैंकहणेकरिकै श्रीभगवानूनैं जीवब्रह्मकाअभेदकथनकऱ्या ॥ इसीहींजीवब्रह्मकेअभेदकूं (तत्त्वमसि अहंब्रह्मास्मि) इत्यादिकश्रुतियांभी कथनकरेहैं ॥ हेअर्जुनजिसकारणतैं मैंपरमात्मादेवहीं इनसर्वप्राणीयोंकीबुद्धिविषे जीवात्मारूपहोइकै प्रविष्टहुआहूं ॥ इसकारणतैं इनसर्वप्राणीयोंकूं जाजास्मृति होवैहै तथा जोजोज्ञानहोवैहै ॥ सास्मृति तथासोज्ञान मैंआत्मादेवतैंहीं होवैहै ॥ तहां पूर्वअनुभवकऱ्येहुएअर्थकूंविषयकरणेहारी जा संस्काररजन्य अंतःकरणकीवृत्तिविशेषहै ताकानाम स्मृतिहै ॥ सास्मृति अयोगीपुरुषोंकूंतौं इसजन्मविषे पूर्वअनुभवकऱ्येहुएअर्थविषयकहीं होवैहै ॥ और योगीपुरुषोंकूंतौं जन्मांतरोंविषेअनुभवकऱ्येहुएअर्थविषयकभी होवैहै ॥ इसप्रकार सोप्रत्यक्षज्ञानभी अयोगीपुरुषोंकूंतौं विषयइंद्रियकेसंयोगजन्यहीं होवैहै ॥ और योगीपुरुषोंकूंतौं देशकालकरिकैव्यवहितवस्तुकाभी सोप्रत्यक्षज्ञानहोवैहै ॥ सोदोनोंप्रकारकाज्ञान तथासादोनोंप्रकारकीस्मृति मैंआत्मादेवतैंहीं होवैहै ॥ और काम क्रोध शोक मोह इत्यादिकोंकरिकै व्याकुलहैचित्तजिनोंका ऐसेपुरुषोंकूं जो तिस स्मृतिका तथाज्ञानका अभावहोवैहै ॥ सोअभावरूपअपो

हनभी मैंआत्मादेवतैंहींहोवैहै इति ॥ इसप्रकार श्रीभगवान् आपणी जीवरूपताकूंकथनकरिकै अब ब्रह्मरूपताकूंकथनकरेहै॥ (वेदैश्वसर्वैःइति) हेअर्जुन ऋग् यजुष् साम अथर्वण इनच्यारिवेदोंकरिकै मैंपरमात्मादेवहीं जानणेयोग्यहूं ॥ तहांश्रुति ॥ (सर्वेवेदायत्पदमामनंति) ॥ अर्थयह ॥ कर्मकांड उपासनाकांड ज्ञानकांड यहतीनकांडरूप जितनैंकी ऋगादिकवेदहैं ॥ तेसर्ववेद जिसपरमात्मादेवरूपपदकूंकथनकरेहैं इति ॥ यद्यपि ऋगादिकवेदोंकेकर्मकांड तथाउपासनाकांड इंद्रादिकदेवतावोंकूंहीं कथनकरेहैं ॥ तथापि मैंपरमात्मादेवहीं तिनइंद्रादिकसर्वदेवतावोंका आत्मारूपहूं ॥ यातैं तिनइंद्रादिकदेवतावोंकूंकथनकरतेहुएभी तेकर्मउपासनाकांड मैंपरमात्मादेवकूंहीं कथनकरेहैं ॥ तहां परमात्मादेवहीं इंद्रादिकसर्वदेवतारूपहैं इसअर्थकूं (इंद्रंमित्रंवरुणमग्निमाहुरथोदिव्यःससुपर्णोगरुत्मान् ॥ एकंसद्विप्रा बहुधावदंत्यग्नियमंमातरिश्वानमाहुः ॥ एषउह्येवसर्वेदेवाः) ॥ इत्यादिकअनेकश्रुतियां कथनकरेहैं ॥ पुनः कैसाहूं मैंपरमात्मादेव वेदांतकृत्हूं ॥ अर्थात् वेदव्यासादिकरूपकरिकै मैंपरमात्मादेवहीं उपनिषद्रूपवेदांतकेअर्थकीसंप्रदायका प्रवर्त्तकहूं ॥ हेअर्जुन केवल वेदांतअर्थकेसंप्रदायमात्रकाहीं मैं प्रवर्त्तकनहींहूं ॥ किंतु वेदवित्भी मैंहींहूं ॥ अर्थात् कर्मकांड उपासनाकांड ज्ञानकांड यहतीनकांडरूप जितनैंकीमंत्रब्राह्मणरूप सर्ववेदहैं तिनसर्ववेदोंकेअर्थकूंजानणेहाराभी मैंपरमात्मादेवहींहूं ॥ यातैं (ब्रह्मणोहिप्रतिष्ठाहम्) यहजो पूर्वअध्यायविषेवचनकह्याथा सोयथार्थहींहै इति ॥ और किसीटीकाविषेतौं (सर्वस्यचाहम्) इसश्लोकका यहअर्थकऱ्याहे ॥ सर्वप्राणीयोंकीबुद्धिरूपगुहाविषे मैंपरमात्मादेव क्षेत्रज्ञनामाजीवरूपकरिकै अत्यंतसमीपहुआ स्थितहूं ॥ इसकारणतैं सर्वप्राणीरूप मैंपरमेश्वरहींहूं ॥ इतनैंकहणेकरिकै श्रीभगवाननैं जीवब्रह्मविषे भेददृष्टि कदाचित्भीनहींकरणी यहअर्थ सूचनकऱ्या ॥ तहां यहसर्वजगत् परमेश्वररूपहींहै इसप्रकार सर्वत्र परमेश्वरबुद्धिकरिकै जेपुरुष परमेश्वरकीउपासनाकरेहैं ॥ तथा जेपुरुष तिसउपासनाकूंनहींकरेहैं ॥ तिनदोनोंप्रकारकेपुरुषोंकूं जोफल प्राप्तहोवैहै ॥ तिसफलकूं श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥ (मत्तःस्मृतिर्ज्ञानमपोहनंचइति) हेअर्जुन मैंपरमेश्वरकीउपासनाकरिकै शुद्धहुआहैअंतःकरण जिनोंका ऐसेअधिकारीपुरुषोंकूंतौं मैंपरमेश्वरतैंहीं गुरुशास्त्रकेअनुग्रहकरिकै स्मृतिहोवैहै ॥ अर्थात् (सआत्मा तत्त्वमसि) इसवचनकरिकै श्रीगुरुवोंनैं जो त्रिविधपरिच्छेदतैंरहित निर्विशेषआत्मा तूंहैं इसप्रकारतैं बोधनकऱ्याहै ॥ सोनिर्विशेषशुद्धआत्मा मैंहूं इसप्रकारकी जो तिसीहींआत्माविषे स्वात्मपणेकीस्मृतिहै ॥ सास्मृतिभी तिनअधिकारीपुरुषोंकूं मैंपरमेश्वरतैंहींहोवैहै ॥ तथा यहसर्वजगत् तथामैं ब्रह्मरूपहींहैं इसप्रकार सर्वजगत्विषे तथाआपणेविषे जो ब्रह्ममात्रपणेका ज्ञानहै ॥ सोज्ञानभी तिनउपासकपुरुषोंकूं मैंपरमेश्वरतैंहीं होवैहै ॥ और जेपुरुष मैंपरमेश्वरकीउपासनातैंरहितहैं ॥ तथा मलिनबुद्धिवालेहैं ॥ तथा रागद्वेषादिकदोषोंकरिकै दुष्टहैं ॥ ऐसेबहिर्मुखपुरुषोंकूंतिसस्मृतिका तथातिसज्ञानका जो अपोहनहै अर्थात् [illegible] ॥ सोअप्राप्तिभी मैंपरमेश्वरतैंहींहोवैहै ॥ हेअर्जुन पुनःमैंपरमेश्वर कैसाहूं वेदांतकृत्हूं ॥

अर्थात् हिरण्यगर्भरूपब्रह्माकेतांई वेदांतकीप्राप्तिरूपअनुग्रहकर्त्ता मैंपरमेश्वरहींहूं ॥ तहांश्रुति ॥ (योब्रह्माणंविदधातिपूर्वंयोवैवेदांश्चप्रहिणोतितस्मै) ॥ अर्थयह ॥ जोपरमेश्वर पूर्व हिरण्यगर्भरूपब्रह्माकूं उत्पन्नकरताभया ॥ तथा जोपरमेश्वर तिसब्रह्माकेतांई सर्ववेदोंकूंदेताभया इति ॥ अथवा (वेदांतकृत्) इसवचनका यहअर्थ करणा ॥ इसलोकविषे अधिकारीशिष्योंकेतांई आचार्यरूपकरिकै वेदांतकेअर्थकाप्रकाशकरणेहारा मैंपरमेश्वरहींहूं ॥ पुनःकैसाहूंमैं वेदवित्हूं ॥ तहां वेदकाअर्थरूप जोनिर्विशेषअद्वितीयब्रह्महै तिसब्रह्मकूं जोपुरुष मैंपरमेश्वरकेअनुग्रहतैं तथा ब्रह्मवेत्तागुरुकेअनुग्रहतैं आपणाआत्मारूपकरिकै जानैहै ताकानाम वेदवित्है ॥ ऐसा ब्रह्मवेत्तापुरुषहै ॥ सोब्रह्मवेत्तापुरुषभी मैंपरमेश्वरहींहूं ॥ यहवार्त्ता (ज्ञानीत्वात्मैवमेमतम्) इसवचनकरिकै पूर्वभीकथनकरिआयेहैं ॥ तहां (सर्वस्यचाहंहृदिसंनिविष्टः) इसवचनकरिकै सर्वप्राणीमात्रकूंआपणाआत्मारूपकरिकै श्रीभगवान्‌नैं जोपुनःवेदांतकृत्मैंहूं तथावेदवित्मैंहूं यहवचन कथनकऱ्या है ॥ सो इसअर्थकेबोधनकरणेवासतै कथनकऱ्याहै ॥ मूढपुरुषोंनैं तथाबुद्धिमान्पुरुषोंनैं वेदांतशास्त्रकेउपदेशकर्त्तागुरुविषे तथाअन्यभी ब्रह्मवेत्तापुरुषोंविषे परमेश्वरबुद्धि अवश्यकरिकैकरणी इति ॥ तहां (यदादित्यगतंतेजो) इत्यादिकवचनोंकरिकै मुमुक्षुजनकृतउपासनावासतैं श्रीभगवान्‌नैं आपणीविभूति कथन करी ॥ साविभूतिहीं परमेश्वरका पारमार्थिकरूपहोवैगा ॥ ऐसीशंकाकेप्राप्तहुए श्रीभगवान् आपणेयथार्थस्वरूपकेबोधनकरणेवासतै कहैहै (वेदैश्चसर्वैरहमेववेद्यःइति) हेअर्जुन ऋग् यजुष् साम अथर्वण इनच्यारिवेदोंविषेस्थित जितनाकी उपनिषद्रूपवेदांतहैं ॥ तिनवेदांतोंकरिकै मैंपरमात्मादेवहीं जानणेयोग्यहूं ॥ अर्थात् (सत्यंज्ञानमनंतंब्रह्म विज्ञानमानंदंब्रह्म आनंदोब्रह्म तदेतद्ब्रह्मापूर्वमनपरम् अस्थूलमनण्वह्रस्वमदीर्घम् अप्राणममुखमश्रोत्रमवागमनोऽतेजस्कमचक्षुष्कमनाम गोत्रमशब्दमस्पर्शमरूपमव्ययम् निष्कलंनिष्क्रियंशांतंनित्यंशुद्धंबुद्धंमुक्तंसत्यंसूक्ष्मंपरिपूर्णमद्वयंसदानंदचिन्मात्रंशांतंचतुर्थमन्यंते सआत्मासविज्ञेयः तत्त्वमसि ॥) इत्यादिकवचनोंकरिकै मुमुक्षुजनोंनैं जानणेयोग्य जो निर्विशेष नित्य शुद्ध बुद्धमुक्तस्वभाव सच्चिदानंद एकरसअद्वितीय परमात्मादेवहै ॥ सोपरमात्मादेवरूपहीं मैंपरमार्थतैंहूं ॥ पूर्वउक्तमायोपाधिकस्वरूप मैंपरमार्थतैंनहीं इति ॥ १५ ॥ ❀ ॥ इसप्रकार आपणे सोपाधिकस्वरूपकूंकथनकरिकै श्रीभगवान् कृपाकरिकै अर्जुनकेतांईक्षरअक्षरनामा कार्यकारणरूपदोउपाधियोंतैं रहित निरुपाधिशुद्धआपणेस्वरूपकूं तीनश्लोकोंकरिकैप्रतिपादनकरैहै ॥

(मू० श्लो०) द्वाविमौपुरुषौलोकेक्षरश्चाक्षरएवच ॥ क्षरःसर्वाणिभूतानिकूटस्थोऽक्षरउच्यते ॥ १६ ॥ द्वौ। इमौ । पुरुषौ । लोके । क्षरः । च । अक्षरः । एव । च । क्षरः । सर्वाणि । भूतानि । कूटस्थः । अक्षरः । उच्यते ॥ १६ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥

हेअर्जुन संसारविषे यह दो हीं पुरुषहैं एकतौ क्षरपुरुषहै तथा दूसरा अक्षरपुरुषहै तहां कार्यरूपसर्व भूततौ क्षरपुरुष कह्या जावैहै और कारणरूपमाया अक्षरपुरुष कह्याजावैहै ॥ १६ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन चैतन्यपुरुषका उपाधिरूपहोणेतैं पुरुषशब्दकरिकैकथनकऱ्येहुए दोपुरुषहीं इससंसारविषेहैं ॥ कौंनहैं तेदोपुरुष ऐसीअर्जुनकीजिज्ञासाकेहुए श्रीभगवान् कहैहै (क्षरश्चाक्षरएवचइति) हेअर्जुन एकतौं क्षरनामापुरुषहै ॥ और दूसरा अक्षरनामापुरुषहै ॥ अर्थात् उत्पत्तिविनाशवाला जितनाकी कार्यसमूहहै ॥ सोकार्यसमूहतौं क्षरनामापुरुषहै ॥ और आत्मज्ञानतैंविना विनाशतैंरहित तथाक्षरनामापुरुषकेउत्पत्तिकावीजरूप ऐसी जा भगवत्कीमायाशक्ति है ॥ साकारणउपाधिरूप मायाशक्ति दूसरा अक्षरनामापुरुषहै ॥ इसीप्रकारके तिनदोनोंपुरुषोंकेस्वरूपकूं श्रीभगवान् आपहीं स्पष्टकरिकैकथनकरैहै (क्षरः सर्वाणिभूतानि इति ॥ हेअर्जुन उत्पत्तिविनाशकवाले जितनैंकी कार्यहैं ॥ तेसर्वकार्यतौं क्षरः इसनामकरिकैकह्येजावैहैं ॥ और कूटस्थ अक्षर इसनामकरिकैक ह्याजावैहै ॥ तहां यथार्थवस्तुका आच्छादनकरिकै अयथार्थवस्तुकाजोप्रकाशनहै जिसकूं वंचनभीकेहैहैं तथामायाभीकहैहै ताकानाम कूटहै ॥ तिसकूटरूपकरि कैंजोस्थितहोवै ताकानाम कूटस्थहै ॥ अर्थात् आवरणशक्ति विक्षेपशक्ति इनदोनोंरूपोंकरिकै जो स्थितहोवै ताकानाम कूटस्थहै ॥ ऐसेकूटस्थनामवाली भगव त्कीमायाशक्तिरूप कारणउपाधिहै ॥ सामायाशक्तिरूप कारणउपाधि इससर्वसंसारकाबीजरूपहोणेतैं तथा आत्मज्ञानतैंविना अन्यउपायकरिकै नहींनाशहोणेतैं अनंतहै ॥ यातैं सामायाशक्तिरूप कारणउपाधि अक्षर इसनामकरिकैकहीजावैहै इति ॥ और किसीटीकाविषेतौं क्षरशब्दकरिकै सर्वअचेतनवर्गकाग्रहणकरिकै (कूटस्थोऽक्षरउच्यते) इसवचनकरिकै क्षेत्रज्ञनामा जीवात्माका ग्रहणकऱ्याहै ॥ सोयहव्याख्यान समीचीननहींहै ॥ काहेतैं (उत्तमः पुरुषस्त्वन्यः) इसवक्ष्यमाण वचनकरिकै तिसक्षेत्रज्ञआत्माकूंहीं पुरुषोत्तमरूपकरिकैप्रतिपादनकऱ्याहै ॥ यातैं ईहां क्षर अक्षर इनदोशब्दोंकरिकै कार्यउपाधिकारणउपाधि यहदोनोंजडउपाधि हीं ग्रहणकरणेयोग्यहैं इति ॥ १६ ॥ ❋ ॥ तहां पूर्वश्लोकविषे क्षरशब्दकरिकै सर्वकार्यरूपउपाधिका कथनकऱ्या ॥ और अक्षरशब्दकरिकै भगवत्की मायाशक्तिरूप कारणउपाधिका कथनकऱ्या ॥ अब इसश्लोकविषे तिनक्षरअक्षररूपदोनोंउपाधियोंतैंविलक्षण तथातिनदोनोंउपाधियोंकेदोषोंकरिकैअलिपायमान ऐसाजो नित्य शुद्धबुद्ध मुक्तस्वभाव उत्तमपुरुषहै तिसउत्तमपुरुषका श्रीभगवान् कथनकरैहै ॥

(मू० श्लो०) उत्तमःपुरुषस्त्वन्यःपरमात्मेत्युदाहृतः ॥ योलोकत्रयमाविश्यबिभर्त्यव्ययईश्वरः ॥ १७ ॥ उत्तमः । पुरुषः । तु । अन्यः । परमात्मा । इति । उदाहृतः । यः । लोकत्रयम् । आविश्य । बिभर्ति । अव्ययः । ईश्वरः ॥ १७ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हे अर्जुन पुनः अत्यंतउत्कृष्ट चेतनपुरुषतौं तिसअक्षरदोनोंतैं भिन्नहींहै तथा परमात्मा इसनामकरिकै कथनकऱ्याहै जोचेतनपुरुष तीनलोकोंकूं स्वांश्रितकरिकै धारणकरैहै तथाअव्ययरूपहै तथाईश्वररूपहै ॥ १७ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन अत्यंतउत्कृष्ट प्रत्यक्चेतनआत्मारूपपुरुषतैं अन्यहींहै ॥ अर्थात् क्षरशब्दकरिकैकथनकन्याजो कार्यसमूहहै ॥ तथाअक्षरशब्दकरिकैकथनकन्याजो मायारूपकारणउपाधिहै ॥ तिनदोनोंजडउपाधियोंतैं अत्यंतविलक्षण तथा तिनदोनों उपाधियोंकाप्रकाशकरणेहारा प्रत्यक्चेतनस्वरूप उत्तमपुरुष तीसराहींहै ॥ जोचेतनपुरुष वेदांतशास्त्रोंविषे परमात्माइसनामकरिकै कथनकन्याहै ॥ अर्थात् अन्नमय प्राणमय मनोमय विज्ञानमय आनंदमय यहजेपंचकोशहैं ॥ जेपंचकोश अज्ञानकरिकै तिनतिनवादियोंनैं आत्मारूपकरिकै कल्पनाकरेहैं ॥ ऐसेपंचकोशोंतैंजो परमहोवै तथाआत्माहोवे ताकानाम परमात्माहै ॥ तहां सोचेतनरूप उत्तमपुरुष अकल्पितहोणेतैं तिनकल्पितपंचकोशोंतैं अत्यंतउत्कृष्टहोणेतैं परमहै ॥ तथा (ब्रह्मपुच्छंप्रतिष्ठा) इसश्रुतिनैं सर्वकाअधिष्ठानरूपकरिकै कथनकन्याहै तथा सर्वभूतोंका प्रत्यक्चेतनरूपहै ॥ इसकारणतैं वेदांतशास्त्रोंविषे सोचेतनरूपउत्तमपुरुष परमात्माइसनामकरिकै कथनकन्याहै इति ॥ हेअर्जुन जोपरमात्मादेव भूर्लोक भुवर्लोक स्वर्लोक इनतीनलोकरूपसर्वजगत्कूं आपणीमायाशक्तितैं स्वाश्रितकरिकै आपणीसत्तास्फूर्तिदेकरिकै धारणकरेहै तथापोषणकरेहै ॥ तहांश्रुति ॥ (व्यक्ताव्यक्तंभरतेविश्वमीशः)॥अर्थयह ॥ कार्यकारणरूपसर्वजगत्कूं परमेश्वर धारणकरेहै तथाभरणकरेहै इति ॥पुनः कैसाहै अव्ययहै॥अर्थात् जन्ममरणादिकसर्वविकारोंतैंशून्यहै ॥ तथा ईश्वरहै ॥ अर्थात् सूर्यचंद्रादिकसर्वजगत्कानियंता नारायणरूपहै ॥ ऐसाउत्तमपुरुष वेदांतोंविषे परमात्मा इसनामकरिकैकथनकन्याहै ॥ तहांश्रुति ॥ (सउत्तमः पुरुषः ॥) अर्थयह ॥ सोपरमात्मादेवहीं उत्तमपुरुषहै इति ॥ ईहां प्रत्यक्चेतनरूपआत्माके जे (अव्ययःईश्वरः) यहदो विशेषण कथनकन्येहैं ॥ तेदोनोंविशेषण हेतुगर्भितविशेषणहैं ॥ ताकरिकै यहदोअनुमान सिद्धहोवैहैं ॥ चेतन आत्मा तिसपूर्वउक्तअक्षरनामादोपुरुषोंतैं भिन्नहोणेकूंयोग्यहैं अव्ययहोणेतैं ॥ जोवस्तु तिनक्षरअक्षरदोनोंतैंभिन्ननहींहोवैहै सोवस्तु अव्ययभीनहींहोवैहै जैसे बुद्धिआदिकहै इति ॥ तथा चेतन आत्मा तिनक्षरअक्षरदोनोंतैं भिन्नहोणेकूंयोग्यहै ईश्वरहोणेतैं ॥ जैसे प्रजाकानियंता महाराजा तिसप्रजातैंभिन्नहींहोवैहै इति ॥ १७॥ ❀ ॥ अब पूर्वकथनकन्याजो क्षरअक्षरदोनोंतैंविनाविलक्षण परमात्मादेवहै ॥ तिसपरमात्मादेवका पुरुषोत्तम यहप्रसिद्धनाम कथनकरिकै ऐसापरमात्मादेव मैंहींहूं इसप्रकारतै श्रीभगवान् आपणेस्वरूपकूं दिखावैहै (ब्रह्मणोहि प्रतिष्ठाहं तद्धामपरमंमम) इत्यादिकवचनों करिकै पूर्वकथनकन्येहुए आपणे महिमाके निश्चयकरावणेवासतै ॥

(मू०श्लो०) यस्मात्क्षरमतीतोहमक्षरादपिचोत्तमः॥अतोऽस्मिलोकेवेदेचप्रथितःपुरुषोत्तमः॥१८॥यस्मात् । क्षरम् ।अतीतः अहम् । अक्षरात् । अपि । च । उत्तमः । अतः । अस्मि । लोके । वेदे । च । प्रथितः । पुरुषोत्तमः ॥ १८॥ (इतिपदच्छेदः)॥ हेअर्जुन

जिसकारणतैं मैंपरमेश्वर क्षरकूं अतिक्रमणकरताभयाहूं तथा अक्षरतैं भी अत्यंतउत्कृष्टहूं इस कारणतैं लोकोंविषे तथा वेदोंविषे पुरुषोत्तम इसनामकरिकै प्रसिद्ध हुआहूं ॥ १८ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन कार्यरूपहोणेतैं विनाशवान् तथास्वप्नादिकोंकीन्यांई मायामय ऐसाजो अश्वत्थनामा यहसंसारवृक्षहै ॥ तिस संसारवृक्षरूप क्षरकूं मैंपरमेश्वर जिसकारणतैं अतिक्रमणकरताभयाहूं ॥ तथा माया अविद्या अज्ञान भगवत्शक्ति इत्यादिकनामोंकरिकैप्रसिद्ध जो अव्याकृतरूपकारणहै ॥ जिसअव्याकृत रूपकारणकूं । (अक्षरात्परतःपरः ।) इसश्रुतिविषे अक्षर इसनामकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ तथा जोमायारूपअक्षर इससंसारवृक्षकाबीजरूपहै ॥ ऐसे सर्वजगत्केका रणरूप मायानामाअक्षरतैंभी मैंपरमेश्वर उत्तमहूं ॥ अर्थात् चैतन्यरूपहोणेतैं मैंपरमेश्वरतिसजडरूपअक्षरतैं अत्यंतउत्कृष्टहूं ॥ इसकारणतैं अर्थात् चेतनपुरुषका उपाधिरूप जे क्षरअक्षरदोनोंहैं जेक्षरअक्षरदोनों चेतनपुरुषकेतादात्म्यअध्यासतैं पुरुष इसनामकरिकैकह्येजावैहैं ऐसेक्षरअक्षररूपदोनोंउपाधियोंतैं अत्यंतउत्कृष्टहोणे तैं मैंपरमेश्वर इसलोकविषे तथा वेदविषे पुरुषोत्तम इसनामकरिकै प्रसिद्धहुआहूं ॥ तहां कविपुरुषोंकरिकैरचितकाव्यादिरूपलोकविषेतौं । (हरिर्यथैकःपुरुषोत्त मः ।) इत्यादिकवचनोंकरिकै मैंपरमेश्वर पुरुषोत्तम इसनामकरिकैप्रसिद्धहूं ॥ और वेदविषेतौं । (सउत्तमःपुरुषः इत्यादिकवचनोंकरिकै मैंपरमेश्वर पुरुषोत्तम इसनामकरिकै प्रसिद्धहूं इति ॥ १८ ॥ ❀ ॥ अब श्रीभगवान् पूर्वउक्तअर्थसहित तिसपुरुषोत्तमनामकेज्ञानकाफल वर्णनकरेहै ॥

(मू०श्लो०) योमामेवमसंमूढोजानातिपुरुषोत्तमम् ॥ ससर्वविद्भजतिमांसर्वभावेनभारत ॥ १९ ॥ यः । मां । एवम् । असंमूढः । जानाति । पुरुषोत्तमम् । सः । सर्ववित् । भजति । माम् । सर्वभावेन । भारत ॥ १९ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन जोपुरुष संमोहतैंरहितहुआ मैंपरमेश्वरकूं इसप्रकार पुरुषोत्तमरूप जानताहै सोपुरुषहीं सर्वज्ञहोवैहै तथाभक्तियोगकरिकै मैंपरमेश्वरकूं सेवनकरेहै ॥ १९ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जोअधिकारीपुरुष असंमूढहुआ अर्थात् यहकृष्णभी कोईमनुष्यविशेषहींहैं याप्रकारकेसंमोहतैं रहितहुआ मैंपरमेश्वरकूं पुरुषोत्तमनामकेअर्थ ज्ञानपूर्वक पुरुषोत्तमरूपहीं जानेहै मनुष्यरूपजानतानहीं ॥ सोअधिकारीपुरुषहीं मैंपरमेश्वरकूं निरतिशयप्रेमलक्षणभक्तियोगकरिकै सेवनकरेहै ॥ तथा सोअधिकारी पुरुषहीं सर्ववितहै ॥ अर्थात् मैंपरमेश्वरकूं सर्वकाआत्मारूपकरिकैजानणेहारा सोपुरुषहीं सर्वज्ञहै ॥ यातैं (मांचयोऽव्यभिचारेणभक्तियोगेनसेवते ॥ सगुणान्सम तीत्यैतान्ब्रह्मभूयायकल्पते) यहजोपूर्ववचनकह्याथा सोवचन युक्तहींहै ॥ तथा (ब्रह्मणोहिप्रतिष्ठाहम्) यहजोवचन पूर्व कथनकऱ्याथा सोवचनभी युक्तहींहै इति ॥ १९ ॥ ❀ ॥ अब श्रीभगवान् इसपंचदशअध्यायकेअर्थकीस्तुतिकरताहुआ इसअध्यायकाउपसंहारकरेहै ॥

(मू० श्लो०) इतिगुह्यतमंशास्त्रमिदमुक्तंमयानघ ॥ एतद्बुद्ध्वाबुद्धिमान्स्यात्कृतकृत्यश्चभारत ॥ २० ॥ इतिश्रीमद्भग०सूपनि० ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे पुरुषोत्तमयोगो नामपंचदशोऽध्यायः समाप्तः ॥ १५ ॥ इति । गुह्यतमम् । शास्त्रम् । इदम् । उक्तम् । मया । अनघ । एतत् । बुद्ध्वा । बुद्धिमान् । स्यात् । कृतकृत्यः । च । भारत ॥ २० ॥ (इतिपदच्छेदः)॥ हेसर्वव्यसनोंतैंरहित भारत मैंभगवान्नैं तुमारेप्रति इसेपूर्वउक्तप्रकारकरिकै अत्यंतरहस्यरूप तथासंपूर्णशास्त्ररूप यहँ पंचदशा अध्याय कथनकऱ्याहै इसकूं जानिकै यहपुरुष आत्मज्ञानवाला हो वेहै तथा कृतकृत्य होवैहै ॥ २० ॥ (इतिपदार्थः)॥

॥ टीका ॥ हेअनघ अर्थात् हेसर्वव्यसनोंतैंरहित ॥ तथा हेभारत अर्थात् हेभरतवंशविषेउत्पन्नहुएअर्जुन ॥ मैंभगवान्नैं तैंअर्जुनकेप्रति इसपंचदशेअध्यायविषे पूर्वउक्तप्रकारकरिकै अत्यंतरहस्यरूप संपूर्णशास्त्रहीं संक्षेपकरिकै कथनकऱ्याहै ॥ अर्थात् अष्टादशअध्यायरूपसर्वगीताशास्त्रका जितनाकीअर्थहै ॥ सोसंपूर्णअर्थ हमनैं संक्षेपकरिकै इसपंचदशेअध्यायविषे तुमारेप्रति कथनकऱ्याहै ॥ यातैं इसपंचदशेअध्यायकेअर्थकूं ब्रह्मवेत्तागुरुकेमुखतैं निश्चयकरिकै यहअधिकारीपुरुष बुद्धिमान्होवैहै ॥ अर्थात् मैंब्रह्मरूपहूं इसप्रकारकेआत्मज्ञानवालाहोवैहै ॥ तथा सोअधिकारीपुरुष कृतकृत्यभीहोवैहै ॥ तहां इसअधिकारीपुरुषकूं तिसतिसवर्ण आश्रमविषे करणेयोग्य जिननैंकी शुभकर्महैं तेसर्वशुभकर्म कऱ्येहुएहैं जिसपुरुषनैं अर्थात् जिसपुरुषकूं पुनःकोईकर्म करणेयोग्यरह्यानहीं तापुरुषकानाम कृत कृत्यहै ॥ तात्पर्ययह ॥ श्रेष्ठकुलविषेजन्मकूंप्राप्तहुए ब्राह्मणनैं जोजोशास्त्रविहितकर्म करणेयोग्यहै सोसर्वकर्म परमात्मादेवकेसाक्षात्कारहुए कऱ्याजावैहै ॥ तिस परमात्मादेवकेसाक्षात्कारतैंविना किसीभीपुरुषके तिनकर्त्तव्यकर्मोंकीसमाप्ति होतीनहीं ॥ ईहां (हेअनघ हेभारत) इनदोसंबोधनोंकरिकै श्रीभगवान् अर्जुनकेप्रति यहअर्थ सूचनकरताभया ॥ इसपंचदशेअध्यायकेअर्थकूंजानिकै जबी साधारणपुरुषभी आत्मज्ञानवालाहोइकै कृतकृत्यहोवैहै ॥ तबी तूंअर्जुनतौं महाकुलविषे जन्मकूंप्राप्तहुआहैं तथाआप सर्वव्यसनोंतैंरहितहैं ॥ यातैं कुलकेगुणोंकरिकै तथाआपणेगुणोंकरिकै युक्तहुआ तूंअर्जुन इसपंचदशेअध्यायकेअर्थकूंजानिकै आत्म ज्ञानवालाहोइकै कृतकृत्यहोवैंगा याकेविषे क्याकहणाहै इति ॥ और (हेअनघ) इससंबोधनकरिकै श्रीभगवान्नैं यहभीअर्थ सूचनकऱ्या ॥ सर्वव्यसनोंतैंरहित अधिकारीपुरुषकेप्रतिहीं ब्रह्मवेत्तागुरुनैं यहअत्यंतगुह्यब्रह्मविद्या उपदेशकरणी ॥ व्यसनोंवाले पुरुषकूं यहब्रह्मविद्या उपदेशकरणीनहीं इति ॥ २० ॥ ❀ ॥

इतिश्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यश्रीस्वाम्युद्धवानंदगिरिपूज्यपादशिष्येण स्वामिचिद्घनानंदगिरिणा विरचितायां प्राकृतटीकायां गीतागूढार्थदीपिकाख्यायां पंचदशोऽध्यायःसमाप्तः ॥ १५ ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥

ॐश्रीगणेशाय नमः ॥ ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥ अथ षोडशाऽध्यायप्रारंभः ॥ तहां पूर्वलेअध्यायविषे (अधश्चमूलान्यनुसंततानिकर्मानुबंधीनिमनुष्यलोके) इसवचनकरकै श्रीभगवान्नैं मनुष्यदेहविषे पूर्वलेपुण्यपापकर्मोंकेअनुसार अभिव्यक्तिकूंप्राप्तहुईशुभवासनावोंकूं संसारवृक्षकाअवांतरमूलरूपकरिकै कथनकऱ्याथा ॥ तेवासनाहीं पूर्वनवमेअध्यायविषे प्राणीयोंकीप्रकृतिरूपकरिकै दैवी आसुरी राक्षसी यहतीनप्रकारकीयां सूचन करीयांथ्यां ॥ तहां वेदनैं बोधनकऱ्येजे नित्यनैमित्तिककर्महैं तथा आत्मज्ञानकेशमदमादिकउपायहैं ॥ तिनदोनोंकेअनुष्ठानकरणेविषे प्रवृत्तिकरावणेहारी जा सात्त्विकीशुभवासनाहै ॥ सासात्त्विकीशुभवासना दैवीप्रकृति कहीजावैहै ॥ और वेदउक्तनिषेधका उल्लंघनकरिकै स्वभावतैंसिद्धरागद्वेषकेअनुसारी तथासर्वअनर्थोंका कारणरूप जा प्रवृत्तिहै ॥ ताप्रवृत्तिकाहेतुभूत जा राजसीतामसीरूप अशुभवासनाहै ॥ साअशुभवासना आसुरीप्रकृति तथाराक्षसीप्रकृति कहीजावैहै ॥ तहां विषयभोगोंकीप्रधानताकरीकै रागकीप्रबलतातैं ताअशुभवासनाविषे आसुरीप्रकृतिपणाहै ॥ और हिंसाकीप्रधानताकरिकै द्वेषकीप्रबलतातैं ताअशुभवासनाविषे राक्षसीप्रकृतिपणाहै ॥ इतनादोनोंका अवांतरभेदहै इति ॥ अब इसअध्यायविषे यहवार्त्ताकहेहैं ॥ शास्त्रकेअनुसारिपणेकरिकै तिसशास्त्रविहितअर्थविषे प्रवृत्तिकरावणेहारी जा सात्त्विकीशुभवासनाहै ॥ सासात्त्विकीशुभवासनातौं दैवीसंपद कहीजावैहै ॥ और शास्त्रकाउल्लंघनकरिकै तिसशास्त्रनिषिद्ध विषयोंविषे प्रवृत्तिकरावणेहारी जा राजसी तामसीरूप अशुभवासनाहै ॥ साअशुभवासना राक्षसी आसुरी इनदोनोंकीएकताकरिकैआसुरीसंपद कही जावैहै ॥ इसरीतिसैं शुभरूपताकरिकै तथाअशुभरूपकरिकै दोप्रकारकाहीं वासनावोंकाभेदहै ॥ यहहींदोप्रकारकाभेद (द्वयाहप्राजापत्यादेवाश्चासुराश्च) इत्यादिकश्रुतियोंविषे कथनकऱ्याहै ॥ तहांदैवीसंपदरूपशुभवासनातौं इसअधिकारीपुरुषके मोक्षकाहेतुहै ॥ और आसुरीसंपदरूपअशुभवासना इसपुरुषके बंधकाहेतुहै ॥ यातैं दैवीसंपदरूपशुभवासनातौं इसअधिकारीपुरुषनैं अवश्यकरिकै ग्रहणकरणेयोग्यहैं ॥ और आसुरीसंपदरूपअशुभवासना अवश्यकरिकै परित्यागकरणेयोग्यहै ॥ सो शुभवासनावोंकाग्रहण तथाअशुभवासनावोंकापरित्याग तिनशुभवासनावोंकेस्वरूपजानेंतैंविनाहोवैनहीं ॥ यातैं श्रीभगवान्नैं तिनशुभवासनावोंकेग्रहणकरावणेवासतै तथा तिनअशुभवासनावोंकेपरित्यागकरावणेवासतै तिनशुभवासनावोंकेस्वरूपकूंकथनकरणेहारायहषोडशाअध्याय प्रारंभकरीताहै ॥ तहां प्रथम तीनश्लोकोंकरिकै श्रीभगवान् ग्रहणकरणेयोग्यदैवीसंपदकेस्वरूपकूं कथनकरेहैं ॥

(मू० श्लो०) श्रीभगवानुवाच ॥ अभयंसत्त्वसंशुद्धिर्ज्ञानयोगव्यवस्थितिः ॥ दानंदमश्चयज्ञश्चस्वाध्यायस्तपआर्जवम् ॥ १ ॥

अभयम् । सत्त्वसंशुद्धिः । ज्ञानयोगव्यवस्थितिः । दानम् । दमः । च । यज्ञः । च । स्वाध्यायः । तपः । आर्जवम् ॥ १ ॥

॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन अभय अंतःकरणकीशुद्धि ज्ञानयोगदोनोंविषेस्थिति दान तथा दम तथा यज्ञ स्वाध्याय तप आर्जव यहसर्वदैवीसंपदरूपहै ॥ १ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन शास्त्रनैं उपदेशकऱ्याजोअर्थहै ॥ ताअर्थविषे संशयतैंरहितहोइकै जो तिसअर्थकेअनुष्ठानकरणेविषे तत्परताहै ताकानाम अभयहै ॥ अथवा सर्वपरिग्रहतैंरहित एकाकीस्थितहुआमैं कैसेजीवौंगा इसप्रकारकेभयतैं जोरहितपणाहै ताकानाम अभयहै ॥ और अंतःकरणकी जा सम्यक्निर्मलताहै ताकानाम सत्वसंशुद्धिहै ॥ तहां ताअंतःकरणकीशुद्धिविषे जा परमेश्वरकेस्वरूपजानणेकीयोग्यताहै यहहीं ताअंतःकरणकीशुद्धिविषे सम्यक्रूपणाहै ॥ अथवा परवंचन माया अनृत इत्यादिकोंकाजोपरित्यागहै ताकानाम सत्वसंशुद्धिहै ॥ तहां आपणे अर्थकीसिद्धिकरणेवासतै जिसीकिसीमिसकरिकै जो परका वशकरणाहै ताकानाम परवंचनहै ॥ और हृदयविषे अन्यप्रकारकाअभिप्रायराखिकै बाह्यतैं अन्यप्रकारकाव्यवहारकरणा याकानाम मायाहै ॥ और जैसा वृत्तांतदेख्याहोवै तैसावृत्तांत मुखतैंनहींकथनकरणा किंतु तिसतैंअन्यथाहींकथनकरणा याकानाम अनृतहै ॥ इत्यादिकोंतैंजोरहितपणाहै ताकानाम सत्त्वसंशुद्धिहै ॥ और अध्यात्मशास्त्रतैं जोआत्माकेस्वरूपकानिश्चयहै ताकानाम ज्ञानहै ॥ और चित्तकीएकाग्रताकरिकै तिसस्वरूपका जोआपणेअनुभवविषे आरूढपणा है ताकानाम योगहै ॥ तिसज्ञानयोग दोनोंविषे जा व्यवस्थितिहै अर्थात् सर्वकालविषे तत्परताहै ताकानाम ज्ञानयोगव्यवस्थितिहै ॥ अथवा (अभयंसत्वसंशुद्धिर्ज्ञानयोगव्यवस्थितिः) इसवचनका यहदूसरा अर्थकरणा ॥ (अभयंसर्वभूतेभ्योमत्तःस्वाहा) ॥ अर्थयह ॥ हमारेतैं सर्वभूतप्राणीयोंकेतांई अभयप्राप्तहोवै ॥ इसप्रकारका अभयदानदेणेकासंकल्प संन्यासकेग्रहणकालविषेहोवैहै ॥ तासंकल्पकाजो परिपालनहै अर्थात् शरीरमनवाणीकरिकै जो किसीभीप्राणीकूं भयकीप्राप्ति नहींकरणीहै ताकानाम अभयहै ॥ यहअभयरूपधर्म दूसरेभी परमहंसकेसर्वधर्मोंका उपलक्षणहै ॥ और श्रवण मनननिदिध्यासन इनतीनोंकीपरिपक्वताकरिकै अंतःकरणका असंभावनाविपरीतभावनादिकमलोंतैं जो रहितपणाहै ताकानाम सत्वसंशुद्धिहै ॥ और अहंब्रह्मास्मि इसप्रकारका जेआत्मसाक्षात्कारहै ताकानाम ज्ञानहै ॥ और मनोनाश वासनाक्षय इनदोनोंकेअनुकूल जो पुरुषप्रयत्नहै ताकानाम योगहै ॥ तिसज्ञानयोगदोनोंकरिकै जासंसारीजनोंतैंविलक्षण जीवन्मुक्तिरूपअवस्थितिहै ताकानाम ज्ञानयोगव्यवस्थितिहै ॥ इसप्रकारकेव्याख्यानकीयेहुए यहअभयादिकदैवीसंपद फलरूपहींजानणी ॥ तहां भगवद्भक्तितैंविना साअंतःकरणकीशुद्धि होतीनहीं यातैं ताअंतःकरणकीशुद्धिकेकथनकरिकै साभगवद्भक्तिभी कथनहुईजानणी ॥ काहेतैं (महात्मानस्तुमांपार्थदैवींप्रकृतिमाश्रिताः ॥ भजंत्यनन्यमनसोज्ञात्वाभूतादिमव्ययम्) इस नवमेअध्यायकेश्लोकविषे दैवीसंपदविषे भगवद्भक्तिकाभी कथनकऱ्याथा ॥ और साभगवद्भक्ति अत्यंतश्रेष्ठहै ॥ यातैं श्रीभ

गवान्नैं ईहां अभयादिकोंकेसाथि तिसभगवद्भक्तिका पठनकऱ्यानहीं इति ॥ इसप्रकार महान्भाग्यवालेपरमहंससंन्यासीयोंके फलभूतदैवीसंपदकूंकथनकरिकै श्रीभगवान् अब तिनसंन्यासीयोंतैंअन्य गृहस्थादिकोंके साधनभूतदैवीसंपदकूं कथनकरेहैं (दानंदमश्चइति) तहांआपणेममत्वअभिमानकेविषय जेअन्न सुवर्ण गौ भूमि गृह इत्यादिकपदार्थहैं ॥ तिनअन्नादिकपदार्थोंका यथाशक्तिपरिमाण तथाश्रद्धाभक्तिपूर्वक जो अतिथिब्राह्मणादिकोंकेतांई देणाहै ताकानाम दानहै ॥ और श्रोत्रादिकबाह्यइंद्रियोंका जो स्वस्वविषयतैंनिवृत्तिरूपसंयमहै ताकानाम दमहै ॥ यद्यपि गृहस्थपुरुषोंविषे सर्वप्रकारतैं इंद्रियोंकासंयम संभवता नहीं ॥ तथापि ऋतुकालादिकोंतैं अतिरिक्तकालविषे जो मैथुनादिकोंकानहींकरणाहै यहहीं तिनगृहस्थोंके इंद्रियोंकासंयमहै ॥ ईहां (दमश्च) इसवचन विषेस्थित जो चकारहै सोचकार ईहांनहींकथनकरेहुए दूसरेभीनिवृत्तिरूपधर्मोंके समुच्चयकरावणेवासतैहैं ॥ और शास्त्रविहितकर्मविशेषकानाम यज्ञहै सोयज्ञ दोप्रकारकाहोवैहै ॥ एकतौ श्रौतयज्ञहोवैहै ॥ और दूसरा स्मार्त्तयज्ञहोवैहै ॥ तहां अग्निहोत्र दर्शपूर्णमास सोमयाग इत्यादिक श्रौतयज्ञकह्येजावैहैं ॥ और देवयज्ञ पितृयज्ञ भूतयज्ञ मनुष्ययज्ञ यहच्यारों स्मार्त्तयज्ञ कहेजावैहैं ॥ यद्यपि ब्रह्मयज्ञभी स्मार्त्तयज्ञहीं कह्याजावैहै । तथापि ईहां तिसब्रह्मयज्ञकास्वाध्यायपद करिकै पृथक्हीं कथनकऱ्याहै ॥ यातैं ईहां यज्ञशब्दकरिकै च्यारिहींस्मार्त्तयज्ञ ग्रहणकऱ्येहैं ॥ ईहां (यज्ञश्च) इसवचनविषेस्थितजोचकारहै ॥ सोच कार ईहां नहींकथनकऱ्येहुए दूसरेभी प्रवृत्तिरूपधर्मोंके समुच्चयकरावणेवासतैहै ॥ यह दान दम यज्ञ तीनों गृहस्थपुरुषकेहीं दैवीसंपदरूपहै ॥ और पुण्यविशेषकी उत्पत्तिवासतै जो ऋगादिकवेदोंकाअध्ययनहै ताकानाम स्वाध्यायहै ॥इसस्वाध्यायकूंहीं ब्रह्मयज्ञ कहेहैं ॥ यद्यपि पूर्वउक्तयज्ञशब्दकरिकै पंचप्रकारके स्मार्त्तयज्ञोंका कथन संभवहोइसकैहै ॥ तथापि तिसस्वाध्यायविषे ब्रह्मचारीकाअसाधारणधर्मपणा कथनकरणेवासतै श्रीभगवान्नैं ईहां स्वाध्यायका पृथक्कथनकऱ्याहै ॥ और आगेसत्तदशअध्यायविषे कथनकऱ्याजो शारीर वाचिक मानसिक यहतीनप्रकारकातपहै ॥ सोतीनप्रकारकातपहीं ईहां तपशब्दकरिकैग्रहणकरणा ॥ सोतप वानप्रस्थका असाधारणधर्महै ॥ इसप्रकारसंन्यास गृहस्थ ब्रह्मचर्य वानप्रस्थ इनच्यारिआश्रमोंके असाधारणधर्मोंकूंकथनकरिकै अब ब्राह्मण क्षत्रियवैश्य शूद्र इनच्यारिवर्णोंके असाधारणधर्मोंका कथनकरेहैं (आर्जवंइति) तहां वक्रभावका जोपरित्यागहै ताकानाम आर्जवहै ॥ अर्थात् श्रद्धावान्श्रोतावोंकेसमीप निश्चय कऱ्येहुएअर्थका जो नहींगुह्यरखणाहै ताकानामआर्जवहै इति ॥ १ ॥ ❀ किंच ॥

(मू० श्लो०) अहिंसासत्यमक्रोधस्त्यागःशांतिरपैशुनम् ॥ दयाभूतेष्वलोलुप्त्वंमार्दवंह्रीरचापलम् ॥ २ ॥ अहिंसा । सत्यं । अक्रोधः । त्यागः । शांतिः । अपैशुनं । दया । भूतेषु । अलोलुप्त्वं । मार्दवं । ह्रीः । अचापलम् ॥ २ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन

अहिंसा सत्य अक्रोध त्याग शांति अपैशुन सर्वभूतोविषे दया अलोलुप्त्व मार्दव ह्री अचापल यहसर्व दैवीसंपद रूपहैं ॥ २ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन प्राणीयोंके जीवकारूपवृत्तिकाजोछेदनहै ताकानाम हिंसाहै ताहिंसातैंजोरहितपणाहै ताकानाम अहिंसाहे ॥ अर्थात् जिसजिसप्राणीका जिसजिसवृत्तितैं जीवनहोताहोवै ॥ तिसतिस प्राणिके तिसातिसवृत्तिका कदाचित्भी छेदननहींकरणा याकानाम अहिंसाहे ॥ और अनर्थकाअजनक ऐसाजो यथार्थअर्थका बोधकवचनहै तिसवचनका सर्वदा उच्चारणकरणा याकानाम सत्यहै ॥ तहां जिसयथार्थअर्थकेबोधकवचनकेउच्चारणतैं ब्राह्मणादिकोंकीहिंसाहो तीहोवै तिसविषे सत्यताकेनिवृत्तकरणेवास्तै अनर्थकाअजनक यहविशेषणकथनकऱ्याहै ॥ और अन्यप्राणियोंनैं वाणीकरिकैनिरादरकीयेहुए तथाताडनकीयेहुए उत्पन्नभयाजो क्रोधहै॥ताक्रोधका तिसीकालविषे जोउपशमनहैं ताकानाम अक्रोधहै॥और शास्त्रकीविधिपूर्वक सर्वकर्मोंकाजोसंन्यासहै ताकानामत्यागहै ॥यद्यपि कहां दानकूंभी त्यागकहेहैं ॥ तथापि सोदान पूर्वश्लोकविषे कथनकरिआयेहैं ॥ यातैं ईहां त्यागशब्दकरिकै सर्वकर्मोंकासंन्यासहीं ग्रहणकरणा ॥ और अंतःकरणका जोउपशमहै ताकानाम शांतिहै ॥ और परोक्षकालविषे अन्यपुरुषकेदोषोंकूं अन्यपुरुषकेआगे जोप्रगटकरणाहै ताकानाम पैशुनहैं ॥ तिसपैशुनके अभावकानाम अपैशुनहे ॥और दुःखीप्राणीयोंऊपरि जाकृपाहै ताकानाम दयाहै ॥ और विषयोंकेसमीपप्राप्तहुएभी तथाभोगकीसामर्थ्यताकेविद्यमानहुएभी जो इंद्रियोंकाअविक्रियपणाहै ताकानाम अलोलुप्त्वहै ॥ और क्रूरस्वभावतैंरहितपणेकानाम मार्दवहै ॥ अर्थात् व्यर्थपूर्वपक्षादिकोंकूंकरणेहारे शिष्यादिकोंकेप्रतिभी अप्रियवाणीतैंरहितहोइके जोप्रियवाणीकरिकै बोधनकरणाहै ताकानाम मार्दवहै ॥ और नहींकरणेयोग्यकार्यविषयकप्रवृत्तिकेआरंभविषे तिसप्रवृत्तिका प्रतिबंधक जालोकलज्जाहै ताकानाम ह्रीहै ॥ और प्रयोजनतैंविनाभी जोवाक् पाणि पाद इत्यादिकइंद्रियोंके व्यापारका करणाहै ताकानाम चापलहै ॥ ताचापलकाजो अभावहै ताकानाम अचापलहै ॥ तहां आर्जवतैंलेके अचापलपर्यंत यह पूर्वउक्त ब्राह्मणके दैवीसंपदरूप असाधारणधर्महैं ॥ इति ॥ २ ॥ ❀ ॥ किंच ॥

(मू० श्लो०) तेजःक्षमाधृतिःशौचमद्रोहोनातिमानिता ॥ भवंतिसंपदंदैवीमभिजातस्यभारत ॥ ३ ॥ तेजः । क्षमा । धृतिः । शौचम् । अद्रोहः । नातिमानिता । भवंति । संपदम् । दैवीम् अभिजातस्य । भारत ॥३॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेभारत तेज क्षमा धृति शौच अद्रोह नातिमानिता यहसर्व सत्त्वगुणमयी वासनाकूं संपादनकरिकैजन्म्येहुएपुरुषकूं प्राप्तहोवैहैं ॥३॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन प्रगल्भताकानाम तेजहै ॥ अर्थात् स्त्रीबालकादिकमूढजनोंकरिकै जो अभिभवकूंनहींप्राप्तहोणाहै ॥ ताकानाम तेजहै ॥ और सामर्थ्यके विद्यमानहुएभी जो परिभवकरणेहारेपुरुषोंऊपरि क्रोधनहींकरणाहै ताकानाम क्षमाहै ॥ और व्याकुलताकूंप्राप्तहुएभीदेहइंद्रियोंके स्थिरताकरणेका जो प्रयत्न विशेषहै ॥ जिसप्रयत्नविशेषकरिकै स्थिरकऱ्येहुए शरीरइंद्रिय व्याकुलताकूंप्राप्तहोतेनहीं ॥ ताप्रयत्नविशेषकानाम धृतिहै ॥ यह तेज क्षमा धृति तीनों क्षत्रियके दैवीसंपदरूप असाधारणधर्महैं ॥ और धनादिकअर्थोंकेसंपादनादिकोंविषे जो माया अनृतआदिकोंतैंरहितपणाहै ताकानाम शौचहै ॥ यहशौच अंतरकाशौचहीं जानणा ॥ मृत्तिकाजलादिकोंकरिकैजन्य शरीरकीशुद्धिरूप बाह्यशौचका ईहां शौचशब्दकरिकै ग्रहणकरानहीं ॥ काहेतैं तिसशौचकूं शरीरकीशुद्धिरूपताकरिकै बाह्यपणाहोणेतैं अंतःकरणकीवासनारूपताहैनहीं ॥ और ईहांप्रसंगविषेतौं सात्विकादिकभेदकरिकैभिन्न अंतःकरणकीवासनावोंकाहीं दैवीआसुरीसंपदरूपकरिकै प्रतिपादन विवक्षितहै ॥ यातैं ताशौचपदकरिकै तिसबाह्यशौचकाग्रहणकरणानहीं ॥ और स्वाध्यायकीन्यांई जिसीकिसीरूपकरिकै तिसबाह्यशौचकूंभी जो वास नारूपअंगीकारकरिये ॥ तौं शौचशब्दकरिकै तिसबाह्यशौचकाभी ग्रहणकरणा इति ॥ और किसीप्राणीकेहननकरणेकीइच्छाकरिकै जो शस्त्रादिकोंकाग्रहणहै ताकानाम द्रोहहै ॥ ताद्रोहतै जोनिवृत्तिहै ताकानाम अद्रोहहै ॥ यह शौच अद्रोह दोनों वैश्यके दैवीसंपदरूप असाधारणधर्महैं ॥ और अत्यंतमानीपणेका नाम अतिमानिताहै ॥ अर्थात् आपणेविषे पूज्यत्वअतिशयकीजाभावनाहै ताकानाम अतिमानिताहै ॥ ताअतिमानिताका जोअभावहै ताकानाम नाति मानिताहै ॥ अर्थात् आपणेकरिकैपूज्य जे ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य यहतीनवर्णहैं तिनोंकेआगे जोनम्रभावहै ताकानाम नातिमानिताहै ॥ यहनातिमानिता शूद्रका दैवीसंपदरूप असाधारणधर्महै इति ॥ ईहां (तमेतंवेदानुवचनेनब्राह्मणाविविदिषंतियज्ञेनदानेनतपसाऽनाशकेन) इत्यादिकश्रुतियोंनैं आत्मज्ञानके इच्छाकेउपायरूपरिकैकथनकऱ्येअसाधारणरूप तथासाधारणरूप वर्णआश्रमकेधर्महै ॥ तेसर्वधर्मभी ईहां दैवीसंपदरूपकरिकैग्रहणकरणे ॥ इसप्रकार अभयधर्मतैं आदिलैकेनातिमानिताधर्मपर्यंत तीनश्लोकोंकरिकै कथनकऱ्येजे भिन्नभिन्न वर्णआश्रमकेधर्महैं ॥ तेधर्म इसपुरुषविषे उत्पन्नहोवैंहै तहां किसीप्रकारकेपुरुषविषे तेधर्म उत्पन्नहोवैंहैं ॥ ऐसीअर्जुनकीजिज्ञासाकेहुए श्रीभगवान्कहेहै (संपदंदैवींअभिजातस्यइति) हेअर्जुन इसशरीरकेआरंभकालविषे पूर्वलेपुण्यकर्मोंकरिकैअ भिव्यक्तिकूंप्राप्तहुआ जो शुद्धसत्त्वगुणमय वासनावोंकासमूहहै ॥ तिसशुभवासनावोंकासमूहकूं आपणेअंतःकरणविषेप्रादुर्भावहुआदेखिकै जन्मकूंप्राप्तहु आजोपुरुषहै ॥ जिसपुरुषकूं आगेश्रेयकीप्राप्तिहोणीहैं ॥ तिसपुरुषकूंहीं यहअभयादिकधर्म प्राप्तहोवैंहैं ॥ यहवार्त्ता श्रुतिविषेभीकथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ (पुण्यःपुण्येनकर्मणाभवति पापःपापेन ॥) अर्थयह ॥ पूर्वपूर्वजन्मकेपुण्यकर्मकीवासनाकरिकै यहपुरुष उत्तरउत्तरजन्मविषे पुण्यवान्होंहै

वेंहै ॥ और पूर्वपूर्वजन्मकेपापकर्मकीवासनाकरिकै यहपुरुष उत्तरउत्तरजन्मविषे पापवान्होवैहै इति ॥ ईहां (हेभारत) इससंबोधनकेकहणेकरिकै श्रीभगवानूनें यहअर्थ सूचनकऱ्या ॥ शुद्धवंशविषेउत्पन्नहोणेतें तूं अर्जुन अत्यंतपवित्रहैं ॥ यातैं तूंअर्जुन इनपूर्वउक्त दैवीसंपदरूपधर्मोंकेसंपादनकरणेकूंयोग्यहैं इति ॥ ३ ॥ ❁ ॥ तहां पूर्वतीनश्लोकोंकरिकै ग्राह्यतारूपकरिकै दैवीसंपदकूं कथनकऱ्या ॥ अब श्रीभगवान् परित्यागरूपकरिकै आसुरीसंपदकूं एकश्लोककरिकै संक्षेपतैं कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) दंभोदर्पोऽतिमानश्चक्रोधःपारुष्यमेवच ॥ अज्ञानंचाभिजातस्यपार्थसंपदमासुरीम् ॥४॥ दंभः । दर्पः । अतिमानः च । क्रोधः । पारुष्यम् । एव । च । अज्ञानं । च । अभिजातस्य । पार्थ । संपदम् । आसुरीम्॥४॥(इतिपदच्छेदः)॥ हेपार्थ रजोतमोगुणमय अशुभवासनाकूं संपादनकरिकैंजन्म्येहुएपुरुषकूं दंभ दर्प तथा अतिमान क्रोध तथा पारुष्य तथा अज्ञान यहदोषहीं प्राप्तहोवैहै ॥ ४ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन आपणेमहानूपणेकीसिद्धिवासतै लोकोंकेसमीप आपणेकूं अत्यंतधर्मात्मापणेकरिकै जो प्रसिद्ध करणाहै ताकानाम दंभहै ॥ और धन विद्या कुल स्वजन रूप कर्म इत्यादिकहैंनिमित्तजिसविषे ऐसाजो श्रेष्ठपुरुषोंकेअपमानकरणेकाहेतुभूत गर्वविशेषहै ताकानाम दर्पहै ॥ और आपणेविषे जो अत्यंतपूज्यत्वरूप अतिशयताका आरोपहै ताकानाम अतिमानहै ॥ जिसअतिमानकरिकै असुर पराभवकूं प्राप्तहोतेभयेहैं ॥ यहवार्त्ता (देवाश्चासुराश्चोभये प्राजापत्याः पस्पृधिरेततोऽसुराअतिमानेनैवकस्मिन्वयंजुहुयामेतिस्वेष्वेवास्येषुजुह्वतश्चेरुस्तेऽतिमानेनैव पराबभूवुस्तस्मान्नातिमन्येत पराभवस्यह्येतन्मुखंयदतिमानः इति ॥) इसशतपथब्राह्मणविषे कथनकरीहै ॥ और आपणे अनिष्टकरणेविषे तथापरकेअनिष्टकरणेविषे प्रवृत्तिकरावणेहारा जोअभिज्वलनरूप अंतःकरणकीवृत्तिविशेषहै जिसकूं क्षोभभीकहेहैं ताकानाम क्रोधहै ॥ और प्रत्यक्ष अत्यंतरूक्षवचनकाजोउच्चारणहै ताकानाम पारुष्यहै ॥ ईहां (पारुष्यमेवच) इसवचनविषे स्थित जो चकारहै ॥ सोचकार ईहां नहींकथनकऱ्येहुएजे भावरूप चपलतादिकदोषहैं तिनसर्वदोषोंकेसमुच्चयकरावणेवासतैंहै ॥ और यहकार्य हमारेकूं करणेयोग्यहै यहकार्य हमारेकूं नहींकरणेयोग्यहै याप्रकारकाजो कर्त्तव्यविषयकहै ताविवेककेअभावकानाम अज्ञानहै ॥ ईहां (अज्ञानंच) इसवचनविषेस्थितजोचकारहै ॥ सोचकार ईहांनहींकथनकऱ्येहुए जेअभावरूप अधृतिआदिकदोष हैं तिन दोषोंकेभी समुच्चयकरावणे वासतैंहै ॥ तहां ऐसे दंभादिकदोष किसपुरुषकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ ऐसीअर्जुनकीजिज्ञासाकेहुए श्रीभगवान् कहेहै (आसुरींसंपदंअभिजातस्यइति) हेअर्जुन इसशरीरकेआ

रंभकालविषे पूर्वलेपापकर्मोंकरिकै अभिव्यक्तिकूंप्राप्तहुआ तथा असुरपुरुषोंकेप्रीतिकाविषय ऐसाजो रजोतमोगुणमय अशुभवासनावोंका समूह है ॥ तिसअशुभवासनावोंकेसमूहकूं आपणेअंतःकरणाविषेप्रादुर्भावहुआदेखिकैं जन्मकूंप्राप्तहुआजोपुरुषहै जिसपुरुषका आगेअश्रेयहोणाहै ॥ ऐसेनिंदित पुरुषकूं तेदंभतेंलेकेअज्ञानपर्यंत सर्वदोषहीं प्राप्तहोवैहैं ॥ पूर्वउक्त अभयादिकगुण तिसपुरुषकूं कदाचित्‌भी प्राप्तहोवैंनहीं ॥ ईहां (हेपार्थ) इससंबोधनकेकहणे करिकै श्रीभगवान्‌नैं अर्जुनकेप्रति यहअर्थ सूचनकऱ्या ॥ विशुद्धकुलविषेउत्पन्नहुई पृथामाताका तूंपुत्रहैं ॥ यातैं इसदंभदर्पादिक असुरसंपदके तूं योग्यन हींहै इति ॥ ईहां मूलश्लोकाविषे (अतिमानश्च) इसपदकेस्थानाविषे (अभिमानश्च) इसप्रकारकापाठ यद्यपि बहुतपुस्तकोंविषेहै ॥ तथापि श्रीभाष्यकारोंनैं तथाभाष्यकेव्याख्यानकर्ता श्रीस्वामीआनंदगिरिनैं तथाश्रीस्वामिमधुसूदननैं (अतिमानश्च) इसप्रकारकेपाठकूंअंगीकारकरिकैहीं व्याख्यानकऱ्याहै ॥ यातैं ईहां (अतिमानश्च) इसप्रकारकाहींपाठलिख्याहै इति ॥ ४ ॥ ❁ ॥ तहांपूर्व च्यारिश्लोकोंकरिकै दैवीसंपद तथाआसुरीसंपद यहदोप्रकारकासंपद कथनकऱ्या ॥ अब श्रीभगवान् इनदोनोंसंपदोंके भिन्नभिन्न फलकूं कथनकरेहै ॥ अधिकारीजनोंकूं तिसदैवीसंपदविषेप्रवृत्तकरणेवासतै तथातिसआसुरी संपदतैंनिवृत्तकरणेवासतै ॥

(मू० श्लो०) दैवीसंपद्विमोक्षायनिबंधायासुरीमता ॥ माशुचःसंपदंदैवीमभिजातोसिपांडव ॥ ५ ॥ दैवीसंपत् । विमोक्षाय । निबंधाय । आसुरी । मता । मा । शुचः । संपदम् । दैवीं । अभिजातः । असि । पांडव ॥ ५ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन दैवीसंपत् मोक्षवासतै होवैहै और आसुरीसंपत् बंधकेवासतै मानीहै ॥ हेपांडव तूं दैवी संपदकूं संपादनकरिकैजन्म्या हैं यातैं तूं मत शोककर ॥ ५ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र इनच्यारिवर्णोंकेमध्यविषे ॥ तथा ब्रह्मचर्य गृहस्थ वानप्रस्थ संन्यास इनच्यारिआश्रमोंकेमध्यविषे जिसजिस वर्णकेप्रति तथाजिसजिसआश्रमकेप्रति वेदभगवान्‌नैं जाजा फलकी इच्छातैंरहित सात्त्विकीक्रिया विधानकरीहै ॥ सासाक्रिया तिसीतिसीवर्णकी तथातिसी तिसीआश्रमकी दैवीसंपत्‌कहीजावैहै ॥ सादैवीसंपत् सत्त्वशुद्धि भगवद्भक्ति ज्ञानयोगव्यवस्थिति इतनैंपर्यंत सिद्धहुई इसअधिकारीपुरुषकूं संसारबंधनतैं विमोक्ष वासतैहींहोवैहै ॥ अर्थात् सादैवीसंपत् इसअधिकारीपुरुषकूं कैवल्यमोक्षकीहीं प्राप्तिकरेहै ॥ यातैं आपणेश्रेयकीइच्छाकरणेहारेपुरुषोंनैं सादैवीसंपत्‌हीं ग्रहण करणेयोग्यहै इति ॥ और तिनच्यारिवर्णोंकेमध्यविषे ॥ तथा तिनच्यारिआश्रमोंकेमध्यविषे ॥ जिसजिसवर्णकेप्रति तथाजिसजिसआश्रमकेप्रति वेदभगवा

नूनें जाजा फलकीइच्छापूर्वक तथाअहंकारपूर्वक राजसीतामसीक्रिया निषेधकरीहै ॥ सासानिषिद्धक्रिया तिसतिसवर्णकी तथातिसतिसआश्रमकी आसुरीसंपत् कहीजावैहै ॥ इसीआसुरीसंपत्‌विषेहीं राक्षसीप्रकृतिका अंतर्भावहै ॥ साआसुरीसंपत्‌तौं नियमतैं संसाररूपबंधकेवासतैहीं शास्त्रोंकूं तथाशास्त्रवेत्तापुरुषोंकूं संमतहै ॥ अर्थात् सर्वशास्त्र सर्वशास्त्रवेत्तापुरुष तिसआसुरसिंपत्‌कूं वारंवार जन्ममरणरूपसंसारबंधकाही कारण कहैहैं ॥ यातैं श्रेयकेप्राप्तिकीइच्छावान् अधिकारीपुरुषौंनें साआसुरीसंपत् अवश्यकरिकैपरित्यागकरणेयोग्यहै ॥ तहां मैंअर्जुन दैवीसंपद्‌करिकैयुक्तहूं अथवा आसुरीसंपद्‌करिकैयुक्तहूं इसप्रकारके संशययुक्तअर्जुनकेप्रति श्रीभगवान् धैर्यदेवैहै (माशुचःइति) हेअर्जुन मैंअर्जुन आसुरीसंपदकरिकैयुक्तहूं इसप्रकारकीशंकाकरिकै तूं शोककूं मतप्राप्तहोउ॥जिसकारणतैं तूंअर्जुनभी इसशरीरकेआरंभकालविषे पूर्वलेपुण्यकर्मोंकरिकै अभिव्यक्तिकूंप्राप्तहुई सात्त्विकीशुभवासनावोंकूं आपणेअंतःकरणविषे प्रादुर्भावहुआदेखिकैहीं इसजन्मकूंप्राप्तहुआहैं ॥ अर्थात् इसजन्मतैंपूर्वभी तुमनें कल्याणकाहींसंपादनकऱ्याहै और आगेभी तुमाराकल्याणहींहोणाहै॥इसकारणतैं आपणेविषेआसुरीसंपदकीशंकाकरिकै तुमारेंकूंशोककरणाउचितनहींहै इति॥ईहां (हेपांडव)इससंबोधनकेकहणेकरिकै श्रीभगवान्नूनें यहअर्थ सूचनकऱ्या॥जबी पांडुराजाकेदूसरेपुत्रोंविषेभी सादैवीसंपत्‌प्रसिद्धहीं देखणेविषेआवैहै ॥ तबी मैंपरमेश्वरकेअनन्यभक्ततैंअर्जुनविषे सादैवीसंपत्‌है याकेविषेक्याकहणाहै इति ॥ ५ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ ॥ हेभगवन् राक्षसीप्रकृतिकातौं आसुरीसंपत्‌विषे अंतर्भावहोवो ॥ काहेतैं शास्त्रनिषिद्धक्रियाकीअभिमुखता आसुरीसंपदविषे तथाराक्षसीप्रकृतिविषे तुल्यहींहै ॥ और किसीस्थलविषे आसुरी संपत् राक्षसीप्रकृति इनदोनोंका जो भिन्नभिन्नकथनकऱ्याहै ॥ सोभी विषयभोगकीप्रधानताकरिकै तथाजीवहिंसाकीप्रधानताकरिकै संभवहोइसकेहै ॥ परंतु दैवीसंपत् आसुरीसंपत् इनदोनोंतैंभिन्न तीसरीमानुषीप्रकृतितौं जुदाहींहै ॥ काहेतैं श्रुतिविषे सामानुषीप्रकृति जुदाहींकथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ (त्रयाःप्राजापत्याःप्रजापतौपितरि ब्रह्मचर्यमूषुर्देवामनुष्याअसुराइति) ॥ अर्थयह ॥ प्रजापतितैंउत्पन्नहुए देवता मनुष्य असुर यहतीनों तिसप्रजापतिपिताकेसमीप ब्रह्मचर्य कूंकरतेभये इति ॥ यातैं सातीसरी मानुषीप्रकृतिभी आसुरीसंपत्‌कीन्यांई हेयकोटिविषे कहीचहिये अथवा दैवीसंपत्‌कीन्यांई उपादेयकोटिविषे कहीचहिये ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहैहै ॥

(मू० श्लो०) द्वौभूतसर्गौलोकेऽस्मिन्दैवआसुरएवच ॥ दैवोविस्तरशःप्रोक्तःआसुरंपार्थमेशृणु ॥ ६ ॥ द्वौ[४] । भूतसर्गौ[१] । लोके[३] । अस्मिन्[२] । दैवः । आसुरः । एव । च । दैवः । विस्तरशः । प्रोक्तः । आसुरम् । पार्थ । मे[१४] । शृणु ॥ ६ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥

हेपार्थ इस लोकविषे दोप्रकारके हीं भूतसर्गहैं एकतौं दैवसर्गहै और दूसरा आसुरसर्गहै तहां दैवसर्गतौं हमनैं तुमारेप्रति पूर्व विस्तारतैं कथनकऱ्याहै अव दूसरे आसुरसर्गकूं तूं हमारेतैं श्रवणकर ॥ ६ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन इससंसारविषे दोप्रकारकेहीं भूतसर्गहैं ॥ अर्थात् दोप्रकारकीहीं मनुष्योंकीसृष्टिहै ॥ तहां तेदोप्रकारकेसर्ग कौंनहैं ॥ ऐसीअर्जुनकीजिज्ञासाकेहुए श्रीभगवान् कहेहैं ॥ (दैवआसुरएवच) हेअर्जुन एकतौं दैवसर्गहै ॥ और दूसरा आसुरसर्गहै ॥ इनदोनोंसर्गोंतैंभिन्न तीसराकोई राक्षससर्ग अथवा मानुष्यसर्ग हैनहीं ॥ तहां जोमनुष्य जिसकालविषे शास्त्रजन्यसंस्कारोंकीप्रवलताकरिकै स्वभावसिद्धरागद्वेषकूं अभिभवकरिकै केवल धर्मपरायणहींहोवैहै ॥ सोमनुष्य तिसकालविषे देवकह्याजावैहै ॥ और जोमनुष्य जिसकालविषे स्वभावसिद्धरागद्वेषकी प्रवलताकरिकै शास्त्रजन्यसंस्कारोंकूं अभिभवकरिकै केवल अधर्मपरायणहीं होवैहै ॥ सोमनुष्य तिसकालविषे असुर कह्याजावैहै ॥ इसरीतिसैं दोप्रकारकाहीं मनुष्यसर्गसिद्धहोवैहै ॥ जिसकारणतैं धर्म अधर्म इनदोनोंतैं भिन्न तीसरीकोईकोटिहैनहीं ॥ किंतु लोकविषे तथावेदविषे धर्म अधर्म यहदोकोटिहीं प्रसिद्धहै ॥ तहां दोप्रकारकाहीं भूतसर्गहै यहवार्त्ता श्रुतिविषेभी कथन करीहै ॥ तहांश्रुति ॥ (द्वयाहप्राजापत्या देवाश्चासुराश्च ततःकनीयसाएवदेवाज्यायसाअसुराः) ॥ अर्थयह ॥ प्रजापतितैंउत्पन्नहुए दोप्रकारकेहीं भूतसर्गहैं ॥ एकतौं देवहैं दूसरेअसुरहैं ॥ तहां असुरोंतैं देवताछोटेहैं ॥ और देवतावोंतैं असुरवडेहैं इति ॥ और दम दान दया इनतीनोंका विरोधकरणेहाराजो (त्रयाःप्राजापत्याः) इत्यादिकवाक्यहै ॥ तिसवाक्यविषेतौं दम दान दया इनतीनोंतैंरहित मनुष्यहीं असुरभाववालेहुए किसीसमानधर्मकरिकै देवकह्येजावैहैं तथा मनुष्यकह्येजावैहैं तथा असुरकह्येजावैहैं ॥ यातैं तिसवाक्यतैं तीसरेभूतसर्गकीसिद्धिहोवैनहीं ॥ तहां तिसप्रसंगविषे प्रजापतिनैं एकहीं दम इसअक्षरकरिकै दमतैंरहितमनुष्योंके प्रतितौं इंद्रियोंकानिग्रहरूपदमका उपदेशकऱ्याहै॥और दानतैंरहितमनुष्योंकेप्रतितौं दानकाउपदेशकऱ्याहै॥और दयातैंरहितमनुष्योंकेप्रतितौं दयाकाउपदेशकऱ्याहै इसप्रकार एकमनुष्यत्वजातिवालेमनुष्योंकेप्रतिहीं प्रजापतिनैं अधिकारभेदतैं दम दान दया इनतीनोंकाउपदेशकऱ्याहै ॥ कोईतिसवचनविषे परस्परविजातीय देव असुर मनुष्य यहतीनों विवक्षितनहींहैं ॥ जिसकारणतैं शास्त्रकेउपदेशका एकमनुष्यहीं अधिकारीहोवैहै ॥ देवता तथाअसुर शास्त्रउपदेशकेअधिकारीहोवैंनहीं ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ राक्षसीप्रकृति तथामानुषीप्रकृति यहदोनोंप्रकृतियां आसुरीसंपत्‌विषेहीं अंतर्भूतहैं ॥ ताआसुरीसंपत्‌तैं तेदोनों भिन्ननहींहैं ॥ यातैं दैवसर्ग आसुरसर्ग यहदोप्रकारकेहीं भूतसर्गहैं यहजो पूर्ववचनकह्याथा सोयुक्तहींहै इति ॥ हेअर्जुन तिनदोप्रकारकेभूतसर्गोंविषे प्रथमजो दैवभूतसर्गहै ॥ सोदैवभूतसर्गतौं हमनैंतुमारेप्रति पूर्व विस्तारतैंकथनकऱ्याहै ॥ तहां द्वितीयअध्यायविषेतौं [illegible] दैवभूतसर्ग कथनकऱ्याहै और द्वादशेअध्यायविषेतौं

भगवद्भक्तकेलक्षणविषे सोदैवभूतसर्ग कथनकऱ्याहै ॥ और त्रयोदशेअध्यायविषेतौं ज्ञानकेलक्षणविषे सोदैवसर्ग कथनकऱ्याहै ॥ और चतुर्दशेअध्यायविषेतौं गुणातीतपुरुषकेलक्षणविषे सोदैवसर्ग कथनकऱ्याहै ॥ और इसषोडशेअध्यायविषेतौं (अभयंसत्त्वसंशुद्धिः) इत्यादिकवचनोंकरिकै सोदैवसर्ग कथनकऱ्याहै ॥ अब दूसरे असुरभूतसर्गकूं मैंविस्तारतैं प्रतिपादनकरताहूं ॥ तिसकूं तूं श्रवणकर ॥ अर्थात् तिसअसुरभूतसर्गकेपरित्यागकरणेवासतै प्रथम तिसआसुरभूतसर्गकूं तूं निश्चयकर ॥ काहेतें जिसअनिष्टपदार्थका भलीप्रकारतैंज्ञानहोवैहै ॥ सोअनिष्टपदार्थहीं परित्याग कऱ्याजावैहै ॥ तिसपदार्थकेस्वरूपजानेतैंविना तिसपदार्थका परित्यागकऱ्याजावैनहीं इति ॥ तहां (हेपार्थ) इससंबोधनकरिकै श्रीभगवान्नें अर्जुनविषे आपणासंबंधीपणा कथनकऱ्या । ताकरिकै अर्जुनविषयक उपेक्षाकाअभाव सूचनकऱ्या ॥ अर्थात् मैंपरमेश्वर कदाचित्भी तुमारीउपेक्षानहींकरोंगा इति ॥ ६ ॥ ❀ ॥ अब श्रीभगवान् परित्यागकरणेयोग्यआसुरीसंपद्कूं प्राणीयोंकाविशेषणरूपकरिकै कथनकरेहै (तानहंद्विषतःक्रूरान्) इसश्लोकतैंपूर्वस्थित द्वादशश्लोकोंकरिकै ॥

(मू० श्लो०) प्रवृत्तिंचनिवृत्तिंचजनानविदुरासुराः ॥ नशौचंनापिचाचारोनसत्यंतेषुविद्यते ॥ ७ ॥ प्रवृत्तिं । च । निवृत्तिं । च । जनाः । न । विदुः । आसुराः । न । शौचं । न । अपि । च । आचारः । न । सत्यं । तेषु । विद्यते ॥ ७ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥

हेअर्जुन असुरस्वभाववाले मनुष्य धर्मकूं तथा अधर्मकूं नहीं जानतेहैं इसकारणतैंहीं तिनआसुरमनुष्योंविषे शौच नहीं रहेहै तथा आचार भी नहीं रहेहै तथासत्यभी नहीं रहेहै ॥ ७ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन दंभदर्पादिरूपअसुरस्वभाववाले मनुष्य प्रवृत्तिकूंभी जानतेनहीं ॥ अर्थात् प्रवृत्तिकाविषयभूत जोधर्महै तिसधर्मकूंभी तेआसुरमनुष्य जानतेनहीं ॥ ईहां (प्रवृत्तिंच) इसवचनविषेस्थितजो चकारहै ॥ ताचकारकरिकै तिसधर्मकेप्रतिपादकविधिवाक्यका ग्रहणकरणा ॥ अर्थात् ताधर्मकेप्रतिपादकविधिवाक्यकूंभी तेआसुरमनुष्य जानतेनहीं ॥ तथा तेआसुरमनुष्य निवृत्तिकूंभी जानतेनहीं ॥ अर्थात् निवृत्तिकाविषयभूतजोअधर्महै ॥ तिसअधर्मकूंभी तेआसुरमनुष्य जानतेनहीं ॥ ईहां (निवृत्तिंच) इसवचनविषेस्थित जोचकारहै॥ ताचकारकरिकै तिसअधर्मकेप्रतिपादकनिषेधवाक्यका ग्रहणकरणा ॥ अर्थात् ताअधर्मकेप्रतिपादक निषेधवाक्यकूंभी तेआसुरमनुष्य जानतेनहीं ॥ इसीकारणतैंहीं तिनआसुरमनुष्योंविषे बाह्यशौच तथाअंतरशौच यहदोप्रकारकाशौचभी नहींरहेहै ॥ तहां जलमृत्तिकादिकोंकरिकै जाशरीरकीशुद्धिहै ताकानाम बाह्यशौचहै ॥ और मैत्रीकरुणादिकोंकरिकै जोरागद्वेषादिकोंतैंरहितपणाहै ताकानाम अंतरशौचहै ॥ और मनुआदिकश्रेष्ठपुरुषोंनें धर्मशास्त्रविषे कथनकऱ्याजोआचारहै ॥ सोआचारभी तिनआसुरमनुष्योंविषे रहतानहीं ॥ तथा प्रिय हित यथार्थ

भाषणरूप जोसत्यहै ॥ सोसत्यभी तिनआसुरपुरुषोंविषे रहतानहीं ॥ ऐसे शौचतैंरहित तथाआचारतैंरहित तथामिथ्यावादी मायावीअसुरमनुष्य इसलोकविषेभी प्रसिद्धहींहै इति ॥ ७ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् प्रवृत्तिकाविषयभूत जोधर्महै ॥ तथा निवृत्तिकाविषयभूतजोअधर्महै ॥ तिनधर्मअधर्मदोनोंकाप्रतिपादक वेदरूपप्रमाण विद्यमानहींहै ॥ कैसाहेसोवेदरूपप्रमाण ॥ भ्रमप्रमादआदिकसर्वदोषोंतैंरहितहै॥ तथा साक्षात् परमेश्वरकीआज्ञारूपहै॥ तथा सर्वलोकोंविषेप्रसिद्धहै ॥ और तिसवेदकेअनुसारी स्मृति पुराण इतिहास आदिकभी तिसधर्मअधर्मकेप्रतिपादक विद्यमानहींहै ॥ ऐसे प्रमाणभूत वेदोंके तथास्मृतिपुराणइतिहासआदिकोंके विद्यमानहुएभी तिनआसुरपुरुषोंकूं तिसधर्मअधर्मकाअज्ञान तथाताकेप्रमाणकाअज्ञान किसकारणतैंहोवै ॥ और तिनपुरुषोंकूं ताधर्मअधर्मके तथाताकेबोधकप्रमाणके ज्ञानहुए वेदरूपआज्ञाकेउल्लंघनकरणेहारेपुरुषोंकूंशासनाकरणेहारे परमेश्वरकेविद्यमानहुए तिनपुरुषोंकूं वेदउक्तअर्थकानअनुष्ठानकरिकै शौचआचारादिकोंतैंरहितपणाभी किसकारणतैंहोवैहै ॥ जिसकारणतैं दुष्टजनोंकूंशासनाकरणेहारा परमेश्वरभी लोकविषे तथावेदविषे प्रसिद्धहींहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाके हुए श्रीभगवान् कहेहै ॥

(मू॰ श्लो॰) असत्यमप्रतिष्ठंतेजगदाहुरनीश्वरम् ॥ अपरस्परसंभूतंकिमन्यत्कामहैतुकम् ॥८॥ असत्यं । अप्रतिष्ठं । ते । जगत् । आहुः । अनीश्वरम् । अपरस्परसंभूतं । किं । अन्यत् । कामहैतुकम् ॥८॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन तेआसुरपुरुष इसजगत्कूं असत्य अप्रतिष्ठ अनीश्वरम् अपरस्परसंभूत कामहैतुक कहेहैं इसजगत्का दूसराकोईकारण नहींहै ॥ ८ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन तेआसुरपुरुष इसजगत्कूं असत्यकहेहैं ॥ तहां प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकरिकै नहींबाधकूंप्राप्तहुआहैंतात्पर्यका विषय जिसका ऐसाजो तत्त्ववस्तुका बोधक वेदरूपप्रमाणहै तथा तिसवेदरूपप्रमाणकेअनुसारी जेस्मृति पुराण इतिहास आदिकहैं तिनोंकानाम सत्यहै ॥ ऐसासत्य नहींहैंविद्यमान जिसविषे ताकानाम असत्यहै ॥ ऐसाअसत्यरूप इसजगत्कूं कहेहैं ॥ यद्यपि ॥ ऋगादिकच्यारिवेद तथामनुस्मृतिआदिकस्मृतियां तथाभागवतादिकअष्टादशपुराण तथामहाभारतादिकइतिहास प्रत्यक्षप्रमाणकरिकैसिद्धहैं ॥ तिनप्रत्यक्षसिद्धवेदादिकोंकानिषेधकरणा संभवतानहीं ॥ तथापि तेआसुरपुरुष तिनवेदोंकी तथास्मृति पुराणइतिहासआदिकोंकी प्रमाणताकूंअंगीकारकरतेनहीं ॥ यातैं प्रमाणतारूपविशेषणकेअभावतैं तिसप्रमाणताविशिष्टवेदादिकोंकाअभाव कथनकऱ्याहै ॥ और असत्यहोणेतैंहीं इसजगत्कूं तेआसुरपुरुष अप्रतिष्ठ कहेहैं ॥ तहां नहींहै धर्मअधर्मरूपप्रतिष्ठा व्यवस्थाकाहेतु जिसका ताकानाम अप्रतिष्ठहै ॥ अर्थात् तेआसुरपुरुष धर्मअधर्मकूं इसजगत्केव्यवस्थाकाहेतु माननेनहीं ॥ तथा ते आसुरपुरुष इसजगत्कूं अनीश्वर कहेहैं ॥ तहां शुभअशुभकर्मके सुखदुःखरूपफलके

देणेविषे नहींहै ईश्वर नियंता जिसका ताकानाम अनीश्वरहै ॥ ऐसाअनीश्वर इसजगत्कूं कहेहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ बलवान्पापरूपप्रतिबंधकेवशतैं ते आसुरपुरुष वेदोंकूं तथास्मृतिपुराणइतिहासादिकोंकूं प्रमाणरूपमानतेनहीं ॥ इसीकारणतैंहीं तेआसुरपुरुष तिनवेदस्मृतिआदिकोंकारिकेबोधित धर्म अधर्मकूं तथाईश्वरकूं अंगीकारकरतेनहीं ॥ इसीकारणतैंहीं तेआसुरपुरुष निर्भयहोइके निषिद्धआचरणकूंहींकरेहैं ॥ तानिषिद्धआचरणकरिके तेआसुरपुरुष धर्मरूपपुरुषार्थतैं तथामोक्षरूप पुरुषार्थतैं भ्रष्टहींहोवैहैं इति ॥ शंका ॥ हेभगवन् केवलशास्त्रप्रमाणकरिकैजानणेयोग्य जोधर्मअधर्महै ॥ ताधर्मअधर्मकीसहायताकरिके इससर्वजगत्काकारणरूप जोप्रकृतिकाअधिष्ठातापरमेश्वरहै ॥ ताकारणरूपपरमेश्वरतैंरहित इसजगत्कूं तेआसुरपुरुष जो अंगीकारकरैंगे ॥ तौंकारणकेअभावहुए तिसजगत्रूपकार्यकी उत्पत्ति तिनोंकेमतविषे कैसेहोवैंगी ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहेहै (अपरस्परसंभूतंइति) हेअर्जुन तेआसुरपुरुष इसजगत्कूं ईश्वरतैंउत्पन्नहुआ मानतेनहीं ॥ किंतु इसजगत्कूं अपरस्परसंभूत मानेहैं ॥ अर्थात् विषयसुखकी अभिलाषारूपकामनैं प्रेरणाकऱ्याहै पुरुषहै तथास्त्रीहै तिसपुरुषस्त्रीदोनोंकेसंयोगतैंहीं यहजगत् उत्पन्नहुआहै ॥ यातैंयहजगत् कामहेतुकहै ॥ अर्थात् इसजगत्का सोकामहीं कारणहै ॥ ताकामतैंभिन्न दूसराकोई इसजगत्काकारणहैनहीं ॥ ॥ शंका ॥ हेभगवन् इसजगत्कीउत्पत्तिविषे धर्मअधर्मकूंभी कारणमान्याचाहिये ॥ काहेतैं जो कदाचित् धर्मअधर्मकूं इसजगत्काकारण नहींमानिये ॥ तौं इसजगत्विषे कोईप्राणी दुःखीहै कोईप्राणी सुखीहै कोईप्राणी मूर्खहै कोईप्राणी पंडितहै इसप्रकारकीव्यवस्था नहींहोवैंगी ॥ और धर्मअधर्मकूं इसजगत्काकारण मानणेविषे साव्यवस्था सिद्धहोइसकेहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहेहै (किमन्यत्इति) हेअर्जुन तेआसुरपुरुष धर्मअधर्मरूपअदृष्टकूं इसजगत्का कारणमानतेनहीं ॥ काहेतैं धर्मअधर्मरूपअदृष्टकेअंगीकारकीयेहुएभी अंतविषे स्वभावविषेहीं परिअवसानहोवैंगा ॥ तास्वभावकरिकेहीं इसजगत्विषे सुखदुःखादि कोंकीविचित्रता संभवहोइसकेहै ॥ ताविचित्रताकेवासतैं धर्मअधर्मरूपअदृष्टकीकल्पना काहेवासतैंकरणी ॥ और शास्त्रविषेभी यहनियमकह्याहै ॥ (दृष्टेसंभवति अदृष्टकल्पनायाअन्यायत्वात्) ॥ अर्थयह ॥ कार्यकीउत्पत्तिविषे दृष्टकारणकेसंभवहुए अदृष्टकारणकीकल्पनाकरणी अयुक्तहै इति ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ कामहीं सर्वप्राणीयोंकाकारणहै ॥ तिसकामतैंभिन्न दूसराकोई धर्मअधर्मरूपअदृष्ट तथाईश्वरादिक इसजगत्काकारणहैनहीं ॥ इसप्रकार तेआसुरपुरुष इसजगत्कूं केवल कामहेतुकहींकहेहैं ॥ यहपूर्वउक्तदृष्टि देहात्मवादीलोकायतिकपुरुषोंकीकथनकरीहै इति ॥ ८ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् यहपूर्वउक्त लोकायतिक पुरुषोंकीदृष्टिभी शास्त्रीयदृष्टिकीन्यांई इष्टरूपहीहोवैंगी ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् तादृष्टिविषे अनिष्टरूपताकूं कथनकरेहै ॥ मुमुक्षुजनोंकूं तिसदृष्टितैं निवृत्त करणेवासतै ॥

(मू० श्लो०) एतांदृष्टिमवष्टभ्यनष्टात्मानोऽल्पबुद्धयः ॥ प्रभवंत्युग्रकर्माणःक्षयायजगतोऽहिताः ॥ ९ ॥ एतां । दृष्टिं । अवष्टभ्य । नष्टात्मानः । अल्पबुद्धयः । प्रभवंति । उग्रकर्माणः । क्षयाय । जगतः । अहिताः ॥ ९ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन ईसपूर्वउक्त दृष्टिकूं आश्रयणकरिकै ते नष्टात्मा अल्पबुद्धि उग्रकर्मवाले शत्रुपुरुष सर्वप्राणीयोंके नाशकरणेवासतै व्याघ्रसर्पादिरूपकरिकै उत्पन्नहोवैहैं ॥ ९ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन इसपूर्वश्लोकविषेकथनकरीजा लोकायतिकपुरुषोंकीदृष्टिहै ॥ तिसदृष्टिकूंआश्रयकरिकै तेआसुरपुरुष नष्टात्माहोवैहैं ॥ तहां काम क्रोध लोभ मोह इत्यादिरूप रजतमदोषकरिकै नष्टहुआहै क्या आवृतहुआहै आत्मा क्या विवेकबुद्धि जिनोंकी तिनोंकानाम नष्टात्माहै अर्थात् तेआसुरपुरुष परलोकके साधनोंतैं भ्रष्टहुएहैं ॥ पुनः कैसेहैंतेआसुरपुरुष अल्पबुद्धिहैं ॥ तहां अत्यंततुच्छ जे स्रक् चंदन वनिता इत्यादिकविषयोंकेभोगहैं तिनोंकानाम अल्पहैं ॥ ऐसेविषयभोगरूप अल्पविषेहैबुद्धिजिनोंकी तिनोंकानाम अल्पबुद्धिहै ॥ अथवा मल मांस रुधिर अस्थि मज्जा इत्यादिकनिंदितपदार्थोंकासमूहरूप जोयहदेहहै ताकानाम अल्पहै ॥ ऐसेअल्पदेहविषेहै अहंबुद्धि जिनोंकी तिनोंकानाम अल्पबुद्धिहै ॥ अर्थात् दृष्टविषयसुखमात्रकाउद्देशकरिकैप्रवृत्तहुईहैबुद्धि जिनोंकी तिनोंकानाम अल्पबुद्धिहै ॥ पुनःकैसेहैंतेआसुरपुरुष उग्रकर्माहैं ॥ तहां उग्रहैं क्या अत्यंतक्रूरहैं कर्म जिनोंके तिनोंकानाम उग्रकर्माहै ॥ अर्थात् देहमात्रकापोषणहै प्रयोजन जिनोंका तथाजीवोंकीहिंसाहैप्रधान जिनोंविषे ऐसेजे शास्त्रनिषिद्धकर्महैं ॥ तिननिषिद्धकर्मोंकूंहीं तेआसुरपुरुष सर्वदाकरेहैं ॥ पुनःकैसेहैंतेआसुरपुरुष अहिताहैं ॥ अर्थात् अपकारकीयेतैंविनाहीं सर्वप्राणीमात्रकेशत्रुहैं ॥ इसप्रकार पूर्वउक्त लोकायतिकपुरुषोंकीदृष्टिकूं आश्रयणकरिकै नष्टात्माहुए तथाअल्पबुद्धिहुए तथाउग्रकर्माहुए तथाशत्रुहुए तेआसुरपुरुष सर्वप्राणीमात्रकेनाशकरणेवासतै व्याघ्रसर्पादिरूपकरिकै उत्पन्नहोवैहैं ॥ यातैं यहपूर्वश्लोकउक्त लोकायतिकपुरुषोंकीदृष्टिहीं अत्यंतअधोगतिकाहेतुहै ॥ इसकारणतैं श्रेयकीइच्छावान्पुरुषोंनैं सर्वप्रकारकरिकै सादृष्टि परित्यागकरणेयोग्यहै इति ॥ ९ ॥ ❀ ॥ इसप्रकार व्याघ्रसर्पादिकतामसीयोनियोंविषे बहुतकालपर्यंत भ्रमणकरतेहुए तेआसुरपुरुष जबी किसीकर्मकेवशतैं पुनः मनुष्ययोनिकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तबीभी तेआसुरपुरुष आपणेश्रेयकेउपायविषे प्रवृत्तहोवैनहीं ॥ किंतु अश्रेयकेउपायविषेहीं प्रवृत्तहोवैहैं ॥ इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) काममाश्रित्यदुष्पूरंदंभमानमदान्विताः ॥ मोहाद्गृहीत्वासद्ग्राहान्प्रवर्त्ततेऽशुचिव्रताः ॥ १० ॥ कामं । आश्रित्य । दुष्पूरं । दंभमानमदान्विताः । मोहात् । गृहीत्वा । असद्ग्राहान् । प्रवर्त्तंते । अशुचिव्रताः ॥ १० ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन

दुष्पूर कामकूं आश्रयणकरिकै दंभमानमदकरिकैयुक्तहुए तथाअशुचिव्रतवालेहुए तेआसुरपुरुष अविवेकतैं अशुभनिश्चयोंकूं ग्रहणकरिकै वेदविरुद्धकर्मोंविषेहीं प्रवृत्तहोवैहैं ॥ १० ॥ ॥इतिपदार्थः)॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन शतकोटीवर्षपर्यंतभी विषयोंकेभोगकरिकै नहींपूर्णहोणेहारा ऐसाजो तिसतिसदृष्टविषयोंकी अभिलाषारूपकामहै ॥ ऐसेदुष्पूरकामकूं आश्रयणकरिकै तेआसुरपुरुष दंभ मान मद इनतीनोंकरिकैयुक्तहोवैहैं ॥ तहां अंतरतैंधर्मनिष्ठातैंरहितहोइकैभी जोबाह्यतैं लोकोंकेआगे आपणाधर्मात्मापणा प्रगटकरणाहै ताकानाम दंभहै ॥ और वास्तवतैं पूज्यभावकेअयोग्यहुएभी जा लोकोंकेआगे आपणापूज्यपणा प्रगटकरणाहै ताकानाम मानहै ॥ और वास्तवतैं अधिकताकाआरोपणहै जो आपणेविषे अधिकताकाआरोपणहै ताकानाम मदहै ॥ जोमद श्रेष्ठपुरुषोंकेअपमानकरणेका हेतुरूपहै ॥ ऐसे दंभ मान मद तीनोंकरिकैयुक्तहुए तेआसुरपुरुष केवलअविवेकतैं असत्‌ग्राहोंकूंग्रहणकरिकै अर्थात् इसमंत्रकरिकै इसदेवताकूंआराधनकरिकै हम इनस्त्रीयोंका आकर्षणकरैंगे ॥ तथा इसमंत्रकरिकै इसदेवताकूंआराधनकरिकै हम महान्‌निधियोंकूंसंपादनकरैंगे ॥ तथा इसमंत्रकरिकै इसदेवताकूंआराधनकरिकै हम इसशत्रुकूंमारैंगे ॥ इत्यादिक दुराग्रहरूप अशुभनिश्चयोंकूं केवल अविवेकरूपमोहतैं ग्रहणकरिकै तेआसुरपुरुष अशुचिव्रताहोवैहैं ॥ तहां श्मशानादिकदेश तथाउच्छिष्टत्वादिकअवस्था तथामद्यमांसादिकोंकाभक्षण इत्यादिकअशौचकीअपेक्षाकरिकै सिद्धहोणेहारे जेवाममंत्रउक्तव्रतहैं ॥ तेअशुचिव्रतहैंजिनोंके तिनोंकानाम अशुचिव्रताहै ॥ ऐसेअशुचिव्रतहुए तेआसुरपुरुष केवल दृष्टफलकीप्राप्तिकरणेहारे क्षुद्रदेवतावोंकाआराधनरूप जिसीकिसी वेदविरुद्धकर्मविषेहीं प्रवृत्तहोवैहैं॥ ऐसेआसुरपुरुष मरिकै अशुचिनरकविषे पतनहोवैहैं ॥ इसप्रकारतैं इसश्लोकका (पतंतिनरकेऽशुचौ) इसवक्ष्यमाणवचनकेसाथि अन्वयकरणा इति ॥१०॥

॥ ❀ ॥ अब श्रीभगवान् इनपूर्वउक्तआसुरपुरुषोंकूंहीं पुनः आसुरीसंपद्‌रूप अनेकविशेषणोंकरिकै कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) चिंतामपरिमेयांचप्रलयांतामुपाश्रिताः ॥ कामोपभोगपरमाएतावदितिनिश्चिताः ॥ ११ ॥ चिंताम् । अपरिमेयाम् । च । प्रलयांताम् । उपाश्रिताः । कामोपभोगपरमाः । एतावत् । इति । निश्चिताः ॥ ११ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन तथा मरणपर्यंतास्थित अपरिमित चिंताकूं जिनोंनैंआश्रयणकऱ्याहै तथा शब्दादिकविषयोंकाभोगहींहैपरमपुरुषार्थजिनोंकूं तथा यहविषयजन्यदृष्टहींसुखहै तिसंप्रकारहै निश्चयजिनोंका ॥ ११ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन अप्राप्तवस्तुकीप्राप्तिरूप जोयोगहै ॥ तथा प्राप्तवस्तुकापरिरक्षणरूपजोक्षेमहै ॥ तिसआपणेयोगक्षेमकेउपायकाचिंतनरूप जाचिंताहै ॥

कैसीहैसाचिंता अपरिमेयहै ॥ अर्थात् असंख्यातपदार्थविषयकहोणेतैंसाचिंताभी असंख्याताहै ॥ साचिंता इतनीसंख्यावालीहै इसप्रकारतैं निश्चयकरणेकूंअशक्य है ॥ पुनः कैसीहैसाचिंता प्रलयांताहै ॥ ईहां मरणकानाम प्रलयहै ॥ सोमरणरूपप्रलयहैअंतजिसका ताकानाम प्रलयांताहै ॥ अर्थात् जीवत्कालपर्यंत वर्त्तमानहै ॥ ऐसीअपरिमेय तथाप्रलयांत चिंताकूं तेआसुरपुरुष आश्रयणकरेहैं ॥ ईहां (चिंतामपरिमेयांच) इसवचनविषेस्थित जोचकारहै ॥ सोचकार पूर्वउक्तअशुचिव्रतकेसमुच्चयकरावणेवासतैंहै ॥ अर्थात् तेअसुरपुरुष केवल अशुचिव्रतवालेहूए तिनवेदविरुद्धकर्मोंविषे प्रवृत्तहोतेनहीं ॥ किंतु इसप्रकारकीचिंताकूं आश्रयणकरतेहुएभी तेआसुरपुरुष तिनवेदविरुद्धकर्मोंविषेप्रवृत्तहोवैहैं इति ॥ हेअर्जुन तेआसुरपुरुष सर्वकालविषे अनंतचिंतावोंकरिकैयुक्तहुएभी कदाचित्भी परलोककीचिंताकरिकैयुक्तहोतेनहीं ॥ किंतु तेआसुरपुरुष कामोपभोगपरमाहींहोवैहैं ॥ तहां कृपणपुरुषोंकेकामनाकाविषयभूत जेशब्दस्पर्शादिकदृष्टविषयहैं तिनोंकानाम कामहै ॥ तिनशब्दादिकविषयरूपकामोंकाउपभोगहै परम क्या पुरुषार्थ जिनोंकूं धर्मादिक जिनोंकूं पुरुषार्थरूपहै नहीं तिनोंकानाम कामोपभोगपरमाहै ॥ अर्थात् तेअसुरपुरुष इसलोकके स्रक् चंदन वनिता आदिकविषयोंकेभोगकूंहीं परमपुरुषार्थरूपकरिकैमानेहैं ॥ धर्मकूं तथामोक्षकूं पुरुषार्थरूप मानतेनहीं ॥ शंका हेभगवन् तेआसुरपुरुष जैसे इसलोककेविषयजन्यसुखकीकामनाकरेहैं ॥ तैसे परलोककेउत्तमसुखकीकामना किसवासतैनहींकरतेहैं ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहेहै (एतावदितिनिश्चिताः) तहां इसलोकविषे शब्दस्पर्शादिकविषयोंकेभोगतैंजन्य जो दृष्टसुखहै सोईहींसुखहै ॥ इसदृष्टसुखतैंभिन्न इसशरीरके वियोगहुएतैंअनंतर भोगणेयोग्यदूसराकोईसुखहैनहीं ॥ काहेतैं इसस्थूलशरीरतैंभिन्नदूसराकोईभोक्ताहैनहीं ॥ जोभोक्ता परलोकविषे जाइकै तिससुखकूंभोगै ॥ किंतु यहस्थूलशरीरहीं भोक्ताआत्माहै ॥ इसप्रकारकेनिश्चयवालेहुए तेआसुरपुरुष परलोककेसुखकीकामनाकरतेनहीं ॥ यहआसुरपुरुषों कामत बृहस्पतिनैंभी कथनकऱ्याहै ॥ तहांसूत्रम् ॥ (चैतन्यविशिष्टःकायःपुरुषः ॥ कामएवैकःपुरुषार्थः ॥) अर्थयह ॥ चैतन्यरूपधर्मकरिकैविशिष्ट जोयह स्थूलशरीरहै ॥ सोस्थूलशरीरहीं आत्माहै ॥ और इसलोकके स्रक्चंदनवनितादिकविषयोंकाभोगहीं परमपुरुषार्थहै इति ॥ यद्यपि बृहस्पति वैदिकपुरुषहै ॥ तथापि असुरोंकेमोहकरणे वासतै तिसबृहस्पतिनैं इसप्रकारकेसूत्ररचेहैं ॥ याकारणतैंहीं वैदिकपुरुष तिनसूत्रोंकूंप्रमाणरूप मानतेनहीं इति ॥ ११ ॥ ❀ ॥ किंच ॥

(मू० श्लो०) आशापाशशतैर्बद्धाःकामक्रोधपरायणाः ॥ ईहंतेकामभोगार्थमन्यायेनार्थसंचयान् ॥ १२ ॥ आशापाशशतैः । बद्धाः । कामक्रोधपरायणाः । ईहंते । कामभोगार्थं । अन्यायेन । अर्थसंचयान् ॥ १२ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन आशारूपपाशोंकेसमूहकरिकै बांध्येहुए तथाकामक्रोधदोनोंहैंआश्रयजिनोंके ऐसेतेआसुरपुरुषविषयभोगवासतैहीं अन्यायकरिकै धनादिकपदार्थोंकूं इच्छतेहैं ॥ १२ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जिसवस्तुकेप्राप्तिकाउपाय करणेकूंअशक्यहै तिसवस्तुकेप्राप्तिकी जाप्रार्थनाहै ताकानाम आशाहै ॥ अथवा जिसवस्तुकेप्राप्तिकाउपाय आपणेकूं ज्ञातनहींहै तिसवस्तुकेप्राप्तिकी जाप्रार्थनाहै ताकानाम आशाहै ॥ तेआशाहीं लोकप्रसिद्धपाशकीन्यांई इसपुरुषकेबंधनकाहेतुहोणेतैं पाशरूपहैं ॥ ऐसे आशारूपपाशोंके अनेकशतोंकरिकै अर्थात् अनेकसमूहोंकरिकै तेआसुरपुरुष बांध्येहुएहैं ॥ अर्थात् जैसे लोकप्रसिद्धरज्जुआदिकपाशोंकरिकैबांध्येहुए चौरादिकदुष्टपुरुष तिनरज्जुआदिकपाशोंनैं आपणेगृहादिकस्थानोंतैंनिकासिकै जहांतहां भ्रमणकराईतेहैं ॥ तैसे आशारूपपाशोंकरिकैबांध्येहुए ययआसुरपुरुषभी तिन आशारूपपाशोंनैं श्रेयरूपस्वस्थानतैंनिकासिकैजहांतहां भ्रमणकराईतेहैं ॥ पुनःकैसेहैंतेआसुरपुरुष कामक्रोधपरायणहैं ॥ तहां कामक्रोध यहदोनोंहै परअयन क्या आश्रय जिनोंका तिनोंकानाम कामक्रोधपरायणहै ॥ अर्थात् परस्त्रीयोंकेसंभोगकीअभिलाषाकरिकै तथापरकेअनिष्टकरणेकीअभिलाषाकरिकै तेआसुरपुरुष सर्वदा युक्तहैं ॥ ऐसे आसुरपुरुष केवल स्रक् चंदन वनिता आदिकविषयोंकेभोगवासतैंहीं धनादिकपार्थोंकेएकठेकरणेकीइच्छाकरेहैं ॥ कोईधर्मकेवासतै तेआसुरपुरुष धनादिकपदार्थोंकेएकठेकरणेकीइच्छाकरतेनहीं ॥ और तेआसुरपुरुष विषयभोगवासतै जोधनकेएकठेकरणेकीइच्छाकरेहैं ॥ सोभीशास्त्रउक्तमार्गकरिकै ताधनकेएकठेकरणेकीइच्छाकरतेनहीं ॥ किंतु केवल अन्यायकरिकैहीं ताधनकेएकठेकरणेकीइच्छाकरेहैं ॥ तहां छलकपटकरिकै अथवा बलात्कारसैं जो परकेधनकाहरणकरणाहै ताकानाम अन्यायहै ॥ अर्थात् शास्त्रतैंविरुद्धमार्गकरिकै जोधनकासंपादनकरणाहै ताकानाम अन्यायहै ॥ ईहां (अर्थसंचयान्) इसबहुवचन करिकै श्रीभगवान्नैं तिनआसुरपुरुषोंविषे लोभ दिखाया ॥ काहेतैं तिनआसुरपुरुषोंकूं धनकीप्राप्तिहुएभी तिसधनकीतृष्णा निवृत्तहोतीनहीं॥ किंतु साधनकीतृष्णा दिनदिनविषे वृद्धिकूंप्राप्तहोतीजावैहै ॥ और धनादिकविषयोंकेप्राप्तहुएभी जो दिनदिनविषे तिनाविषयोंके तृष्णाकीवृद्धिहै तिसकूंहीं शास्त्रविषे तथालोकविषे लोभकहेहैं इति ॥ १२ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् तिनआसुरपुरुषोंकेचित्तविषे इसप्रकारकीधनकीतृष्णाहै यहवार्त्ताकैसे जानीजावैहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए ॥ श्रीभगवान् तिनआसुरपुरुषोंके इसप्रकारकीधनकीतृष्णाकूं तिनआसुरपुरुषोंके मनोराज्योंके कथनकरिकै वर्णनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) इदमद्यमयालब्धमिमंप्राप्स्येमनोरथम् ॥ इदमस्तीदमपिमेभविष्यतिपुनर्धनम् ॥१३॥ इदम् । अद्य । मया । लब्धम् । इमं । प्राप्स्ये । मनोरथम् । इदम् । अस्ति । इदम् । अपि । मे । भविष्यति । पुनः । धनम् ॥ १३ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ यहधन इसकालविषे हमनैं पायाहै इस मनोरथकूं मैंशीघ्रहीं प्राप्तहोऊंगा तथा यहधन हमारेगृहविषे पूर्वहीं विद्यमानहै तथा यह धन भी अगलेवर्षविषे पुनः बहुतहोवैगा ॥ १३ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन तेआसुरपुरुष निरंतर धनकीतृष्णाकरिकैयुक्तहैं ॥ इसकारणतैंहीं तेआसुरपुरुष इसप्रकारके मनोराज्योंकूंकरेहैं ॥ यहधन हमनैं अबी इस उपायकरिकै पायाहै ॥ और इसधनतैंअन्य दूसरेभी मनकीतुष्टिकरणेहारेधनकूं मैं अबी शीघ्रहींप्राप्तहोवैंगा ॥ और यहधन हमारेगृहविषे पूर्वहीं एकठाकऱ्याहु आहे ॥ सोयहधनभी इसउपायकरिकै अगलेवर्षविषे पुनःबहुतहोवैंगा ॥ इसप्रकार धनकीतृष्णाकरिकैयुक्तहुए तेआसुरपुरुष अशुचिनरकविषे पतनहोवैंहैं ॥ इसप्रकारतैं इसश्लोकका (पतंतिनरकेऽशुचौ) इसवक्ष्यमाणवचनकेसाथि अन्वयकरणा इति ॥ १३ ॥ इसप्रकारतिनआसुरपुरुषोंकेतृष्णारूपलोभकावर्णनक रिकै अब तिनआसुरपुरुषोंकेअभिप्रायकेकथनकरिकै तिनआसुरपुरुषोंके क्रोधकाभी वर्णनकरेहैं ॥

(मू० श्लो०) असौमयाहतःशत्रुर्हनिष्येचापरानपि ॥ ईश्वरोहमहंभोगीसिद्धोहंबलवान्सुखी ॥ १४ ॥ असौ । मया । हतः । शत्रुः । हनिष्ये । च । अपरान् । अपि । ईश्वरः । अहं । अहं । भोगी । सिद्धः । अहं । बलवान् । सुखी ॥ १४ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हमनैं यह शत्रु हननकऱ्याहै तथा दूसरेशत्रुवोंकूं भी मैं हननकरूंगा मैं ईश्वरहूं तथामैं भोगीहूं तथामैं सिद्धहूं तथाबलवान्हूं त थासुखीहूं ॥ १४ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ अत्यंतदुर्जय जोयह देवदत्तनामा हमाराशत्रुथा ॥ सोयहशत्रु हमनैं हननकऱ्याहै ॥ यातैं अबी मैं विनाहींआयासतैं दूसरेभीसर्वशत्रुवोंकूं हननकरूंगा हमारेतैं कोईभीशत्रु जीवनकूंप्राप्तहोवैंगानहीं ॥ ईहां (हनिष्येच) इसवचनविषेस्थितजो चकारहै ॥ ताचकारकरिकै यहअभिप्राय सूचनकऱ्या ॥ तिनशत्रुवोंकूं मैं केवल हननहींनहींकरूंगा ॥ किंतु तिनशत्रुवोंके धनदारादिकपदार्थोंकूंभी मैंहरणकरूंगा इति ॥ शंका ॥ तुमारेतुल्य अथवा ॥ तुमारेतैंभीअधिक दूसरेशत्रु वियमानहैं ॥ यातैं सर्वशत्रुवोंकेनाशकरणेकासामर्थ्य तुमारेविषे किसहेतुतैंहै ॥ ऐसीशंकाकेहुए तेआसुरपुरुष कहेहैं ॥ (ईश्वरोहंइति) मैंईश्वरहूं केवल मनुष्यनहींहूं ॥ जिसमनुष्यपणेकरिकै हमारेतुल्य अथवा हमारेतैंअधिककोईपुरुषहोवै ॥ यहअत्यंततुच्छबलवालेदीनजन हमारी क्याहानिकरैंगे ॥ सर्वप्रकारतैं हमारेतुल्य कोईभीप्राणीनहींहै इसअभिप्रायकरिकै तेआसुरपुरुष आपणेईश्वरपणेकूं वर्णनकरेहैं (अहंभोगीइति) जिसकारणतैं मैंहीं भोगीहूं ॥ अर्थात् विषय भोगोंकेसर्वसाधनोंकरिकै मैंहीं युक्तहूं ॥ तथा मैंहीं सिद्धहूं ॥ अर्थात् भ्राता पुत्र भृत्य इत्यादिकसहायकरिकै मैंहीं संपन्नहूं ॥ तथा स्वतःभी मैंबलवान्हूं ॥ अर्थात् अत्यंतओजसवालाहूं ॥ तथा मैंहीं सुखीहूं ॥ अर्थात् सर्वप्रकारतैं नीरोगहूं ॥ इसकारणतैं मैं ईश्वरहींहूं इति ॥ १४ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ धनकरि कै अथवा कुलकरिकै कोइपुरुष तुमारेतुल्यहोवैंगा ॥ ऐसीशंकाकेहुए तेआसुरपुरुषकहेहै ॥

(मू० श्लो०) आढ्योभिजनवानस्मिकोन्योस्तिसदृशोमया ॥ यक्ष्येदास्यामिमोदिष्यइत्यज्ञानविमोहिताः ॥ १५ ॥ आढ्यः । अभिजनवान् । अस्मि । कः । अन्यः । अस्ति । सदृशः । मया । यक्ष्ये । दास्यामि । मोदिष्ये । इति । अज्ञानविमोहिताः ॥ १५ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ धनवान् तथाकुलवान् मैंहींहूं यातैं हमारे सदृश दूसरा कौंनहै मैं यागकूंकरूंगा तथादानकूंकरूंगा तिसतैं हर्षकूंप्राप्तहोवूंगा इसप्रकार तेआसुरपुरुष अविवेककरिकैमोहितहोवैहैं ॥ १५ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ इसलोकविषे मैंहीं धनवान्हूं ॥ तथा कुलीनभीमैंहींहूं ॥ इसकारणतैं इसलोकविषे धनकरिकै तथा कुलकरिकै हमारेसमान दूसराकौंनहै ॥ किंतु हमारेसमानदूसराकोईभीपुरुष धनवान् तथाकुलवान् नहींहै ॥ शंका ॥ धनकरिकै तथाकुलकरिकै तुमारेतुल्य कोईमतहोवौ ॥ तौंभी यागकरिकै तथादानकरिकै तुमारेतुल्य कोईहोवैगा ॥ ऐसीशंकाकेहुए तेआसुरपुरुष कहेहैं ॥ (यक्ष्येदास्यामिइति) मैंआपणीप्रतिष्ठाकेवास्तैं इसप्रकारकेमहान्यागकूंकरौंगा ॥ तिसयागकरिकैभी मैं दूसरेसर्वयागकरणेहारेपुरुषोंकूं अभिभवकरौंगा ॥ यातैं यागकरिकैभी हमारेतुल्य कोईहैनहीं ॥ और हमारीस्तुतिकरणेहारेजे नट भाट नर्त्तकी आदिकहैं ॥ तिननटादिकोंकेतांई मैं बहुत धन देवूंगा ॥ तिसधनकेदेणेतैं मैं नर्त्तकीआदिकोंकेसाथि बहुतहर्षकूंप्राप्तहोवूंगा ॥ यातैं दानकरिकैभी हमारेतुल्य कोईहैनहीं ॥ इसप्रकारतैं तेआसुरपुरुष अविवेकरूपअज्ञानकरिकै मोहितहोवैहैं ॥ अर्थात् तिसअविवेकरूपअज्ञाननैं तेआसुरपुरुष भ्रमकीपरंपरारूप विविधप्रकारकेमोहकूं प्राप्तकरीतेहैंइति ॥ १५ ॥

(मू० श्लो०) अनेकचित्तविभ्रांतामोहजालसमावृताः ॥ प्रसक्ताःकामभोगेषुपतंतिनरकेऽशुचौ ॥ १६ ॥ अनेकचित्तविभ्रांताः । मोहजालसमावृताः । प्रसक्ताः । कामभोगेषु । पतंति । नरके । अशुचौ ॥ १६ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन अनेकदुष्टसंकल्पोंकरिकै विभ्रांतहुए तथामोहरूपजालकरिकैआवृतहुए तथाविषयभोगोंविषे अत्यंतआसक्तहूए तेआसुरपुरुष अशुचि नरकविषे पतन होवैहैं ॥ १६ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन पूर्वकथनकरेजे अनेकप्रकारकेचित्तकेदुष्टसंकल्पहैं ॥ तिन अनेकचित्तकेदुष्टसंकल्पोंकरिकै विविधप्रकारकीभ्रांतिहुईहै जिनोंकूं तिनोंका नाम अनेकचित्तविभ्रांताहै ॥ अथवा नहींहैएकवस्तुचिंतनकाविषय जिसका ताकानाम अनेकहै ॥ अनेकहै क्या पूर्वउक्तबहुतविषयोंविषेसंलग्नहै चित्त जिनोंका तिनोंकानाम अनेकचित्तहै ॥ और यहकार्य आदिविषेकरणेयोग्यहै अथवा यहकार्य आदिविषेकरणेअयोग्यहै इसप्रकार विशेषकरिकै जेपुरुष भ्रांतिक

रिकैयुक्तहैं ॥ तिनोंकानाम विभ्रांतहै ॥ अनेकचित्तहोवैं तेहीं विभ्रांतहोवैं तिनोंकानाम अनेकचित्तविभ्रांतहै ॥ अब ताभ्रांतिकीप्राप्तिविषेहेतुकहेहैं (मोहजाल समावृताःइति) हेअर्जुन जिसकारणतैं तेआसुरपुरुष मोहरूपजालकरिकै आवृतहुएहैं ॥ तिसकारणतैं तेआसुरपुरुष पूर्वउक्तअनेकदुष्टसंकल्पोंकरिकै विविध प्रकारकीभ्रांतिकूंप्राप्तहोवैंहैं ॥ तहां यहवस्तु हमारेहितकासाधनहै ॥ और यहवस्तु हमारेअहितकासाधनहै इसप्रकारके हितअहितविवेकका जोअसामर्थ्यहै ताकानाम मोहहै ॥ सोमोहहीं आवरणरूपताकरिकै बंधनकाहेतुहोणेतैं लोकप्रसिद्धजालकीन्यांई जालरूपहै ॥ ऐसेमोहरूपजालकरिकै तेआसुरपुरुष सम्य कूआवृतहुएहैं ॥ अर्थात् तिसमोहरूपजालनैं तेआसुरपुरुष सर्व औरतैंवेष्टनकऱ्येहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे लोकप्रसिद्ध सूत्रमयजालनैं मत्स्यादिकजंतु परवशक रीतेहैं तैसेतिसमोहरूपजालनैं तेआसुरपुरुष परवशकऱ्येहै ॥ इसीकारणतैंहीं तेआसुरपुरुष आपणेअनिष्टकेसाधनरूपभी विषयभोगोंविषे प्रसक्तहुएहैं ॥ अर्थात् सर्वप्रकारकरिकै तिनविषयभोगोंविषेहीं अत्यंतआसक्तहुएहैं तिसविषयभोगोंकीआसक्तिकरिकै क्षणक्षणविषे पापोंकूंसंचयकरतेहुए तेआसुरपुरुष अशुचिनरक विषे पतनहोवैंहैं ॥ अर्थात् विष्ठा श्लेष्म रुधिर इत्यादिकमलिनपदार्थोंकरिकैपूर्ण जे वैतरणीआदिकनरकहैं ॥ तिननरकोंविषेहींतेआसुरपुरुष पतनहोवैंहैं इति ॥ ॥ १६ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् तिसआसुरपुरुषोंकेमध्यविषेभी कितनैंकी आसुरपुरुषोंकी यागादिककर्मोंविषे प्रवृत्ति देखणेमेंआवैहै ॥ यातैं तिनआ सुरपुरुषोंका नरकविषेपतनकहणा अयुक्तहै ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहेहैं ॥

(मू० श्लो०) आत्मसंभाविताःस्तब्धा धनमानमदान्विताः ॥ यजंतेनामयज्ञैस्तेदंभेनाविधिपूर्वकम् ॥ १७ ॥ आत्मसंभाविताः । स्तब्धाः । धनमानमदान्विताः । यजंते । नामयज्ञैः । ते । दंभेन । अविधिपूर्वकम् ॥ १७ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन आ त्मसंभावित तथास्तब्ध तथाधनमानमदकरिकैयुक्त तेआसुरपुरुष नाममात्रयज्ञोंकरिकै अविधिपूर्वक दंभकरिकै यजनकरेहैं । ॥ १७ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन पुनःकैसेहैंतेआसुरपुरुष आत्मसंभावितहैं ॥ अर्थात् हम सर्वगुणोंकरिकैयुक्तहोणेतैं अत्यंतश्रेष्ठहैं ॥ इसप्रकार आपणेआपकरिकैहीं पूज्य ताकूंप्राप्तहुएहैं ॥ किसीश्रेष्ठपुरुषोंकरिकै पूज्यताकूंप्राप्तहुएनहीं ॥ अथवा आपणेस्त्रीपुत्रादिकोंकरिकैहीं तेआसुरपुरुष पूज्यताकूंप्राप्तहुएहैं ॥ किसीश्रेष्ठपुरुषक रिकै पूज्यताकूंप्राप्तहुएनहीं ॥ पुनःकैसेहैंते आसुरपुरुष स्तब्धहैं ॥ अर्थात् नम्रभावतैंरहितहैं तानम्रताकेअभावविषेहेतुकहेहैं (धनमानमदान्विताःइति) तहां सुवर्ण पशु अन्न गृह भूमि इत्यादिकोंकानाम धनहै ॥ सोधनहैंनिमित्तजिसविषे ऐसाजो आपणेविषे पूज्यत्वरूपअतिशयताकाअध्यासहै ताकानाम मानहै ॥

सोमानहैनिमित्तजिसविषे ऐसाजो आपणेतैंभिन्न आपणेगुरुआदिकोंविषेभी अपूज्यत्वकाअभिमानहे ॥ ताकानाम मदहै ॥ ऐसे धननिमित्तकमानकरिकै तथामान निमित्तकमदकरिकै युक्तहुए तेआसुरपुरुष नामयज्ञोंकरिकै यजनकरेहैं तहां जेयज्ञ केवल नाममात्रकरिकैहीं यज्ञरूपहोवैं वास्तवतैं यज्ञरूपहोवैंनहीं तिनयज्ञोंकाना म नामयज्ञहै अथवा जेयज्ञ कर्त्तापुरुषविषे दीक्षित सोमयाजी इत्यादिकनाममात्रकेहीं संपादकहोवैंहैं ॥ किसीधर्मकेसंपादकहोतेनहीं ॥ तिनयज्ञोंकानाम नामयज्ञ है ॥ ऐसे नाममात्रयज्ञोंकूंभी तेआसुरपुरुष विधिपूर्वककरतेनहीं ॥ किंतु अविधिपूर्वकहींकरेहैं ॥ अर्थात् वेदनैं विधानकऱ्ये जे द्रव्य देवता मंत्र दक्षिणा इत्यादिक यज्ञकेअंगहैं ॥ तिनअंगोंकीसंपूर्णतापूर्वक तेआसुरपुरुष तिनयज्ञोंकूंकरतेनहीं ॥ ऐसेयज्ञोंकूंभी तेआसुरपुरुष कोईश्रद्धापूर्वक करतेनहीं ॥ किंतु दंभ करिकैकरतेहैं ॥ तहां अंतरतैंधर्मनिष्ठातैंरहितहोइकैभी बाह्यतैंलोकोंकेआगे आपणा धर्मात्मापणा प्रगटकरणा याकानाम दंभहै ॥ ऐसेदंभकरिकै तेआसुरपुरुष यज्ञोंकूंकरेहैं ॥ इसकारणतैं तेआसुरपुरुष तिनयज्ञोंकेफलोंकूंप्राप्तहोतेनहीं इति ॥ १७ ॥ ❀ ॥ तहां (यक्ष्येदास्यामि) इसवचनकरिकैकथनकऱ्याजो दंभअहंकारादिकहैंप्रधानजिसविषे ऐसासंकल्पहै ॥ तिससंकल्पकरिकैप्रवृत्तहुए तिनआसुरपुरुषोंके बहिरंगसाधनरूप यागदानादिककर्मभी सिद्धहोतेनहीं॥तौं विचार वैराग्य भगवद्भक्ति इत्यादिकअंतरंगसाधन तिनआसुरपुरुषोंके कैसेसिद्धहोवैंगे ॥ किंतु ते अंतरंगसाधन तिनोंके कदाचित्भी सिद्धनहींहोवैंगे ॥ इस अर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरेहैं ॥

(मू० श्लो०) अहंकारंबलंदर्पकामंक्रोधंचसंश्रिताः॥मामात्मपरदेहेषुप्रद्विषंतोऽभ्यसूयकाः॥१८॥ अहंकारं। बलं। दर्पं। कामं। क्रोधं।च। संश्रिताः। माम्। आत्मपरदेहेषु। प्रद्विषंतः। अभ्यसूयकाः ॥ १८ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन अहंकारकूं तथाबलकूं तथादर्पकूं तथाकामकूं तथाक्रोधकूं आश्रयणकरणेहारे तथा आपणेदेहपरदेहोंविषेस्थित मैंपरमेश्वरका द्वेषकरणेहारे तथाअसूया दोषवाले तेआसुरपुरुष नरकविषेहींपडेहैं ॥ १८ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन अहंअभिमानरूपजोअहंकारहै ॥ सोअहंकारतौं सर्वप्राणीयोंविषेसाधारणहै ॥ यातैं सोसाधारणअहंकार ईहां अहंकारशब्दकरिकैग्रहणकर णानहीं ॥ किंतु जेगुण आपणेविषेहैंनहीं तिनगुणोंकाआपणेविषे आरोपणकरिकै तिनआरोपितगुणोंकरिकै जो आपणेमहान्पणेकाअभिमानहै ताकानाम अहं कारहै ॥ इसप्रकार शरीरविषे कार्यकरणेकासामर्थ्यरूपजोबलहै ॥ सोबलतौं सर्वप्राणीयोंविषेसाधारणहै ॥ यातैं सोसाधारणबल ईहां बलशब्दकरिकै ग्रहणकर णानहीं ॥ किंतु अन्यप्राणीयोंकेपराभवकरणेवास्तै जो शरीरविषेस्थित सामर्थ्यविशेषहै ताकानाम बलहै ॥ और अन्यप्राणीयोंकीअवज्ञारूप तथागुरुराजादिक

महान्पुरुषोंकेउल्लंघनकरणेकाकारणरूप ऐसाजो चित्तकादोषविशेषहै ताकानाम दर्पहै ॥ और इष्टवस्तुविषयक जाअभिलाषाहै ताकानाम कामहै ॥ और अनिष्टवस्तुविषयक जोद्वेषहै ताकानाम क्रोधहै॥ ईहां(क्रोधंच)इसवचनविषेस्थित जोचकारहै ॥तिसचकारकरिकै परगुणोंकेनहींसहनकरणेकास्वभावरूप मात्सर्यका तथाअन्यभीमहान्दोषोंका ग्रहणकरणा ॥ ऐसे अहंकार बल दर्प काम क्रोध मात्सर्य इत्यादिकमहान्दोषोंकूं तेआसुरपुरुष सर्वदा आश्रयणकरेहैं ॥ इसकारणतैं तेआसुरपुरुष नरकविषेहींपडेहैं ॥ शंका ॥ हेभगवन् इसप्रकारकेपतितभी तेआसुरपुरुष आपपरमेश्वरकीभक्तिकरिकै पावनहुए नरकविषेनहींपडेंगे ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए ॥ श्रीभगवान् तिनआसुरपुरुषोंविषे भगवद्भक्तिकाअसंभव कथनकरेहै (मामात्मपरदेहेषुप्रद्विषंतःइति) ईहां देहशब्दका आत्मशब्दके अंतविषे तथापरशब्दकेअंतविषे संबंधकरणेतैं (मांआत्मदेहेषुपरदेहेषुप्रद्विषंतः) इसप्रकारकावाक्य सिद्धहोवैहै ॥ तहां (आत्मदेहेषु) इसपदकरिकै तिनआसुरपुरुषोंकेदेहोंका ग्रहणकरणा ॥ और (परदेहेषु) इसपदकरिकै तिनआसुरपुरुषोंके पुत्रभार्यादिकोंकेदेहोंका ग्रहणकरणा ॥ यातैं (मामात्मपरदेहेषुप्रद्विषंतः) इसवचनका यहअर्थ सिद्धहोवैहै ॥ तिनआसुरपुरुषोंकेप्रेमकाविषयभूत जे आपणेदेहहैं तथापुत्रभार्यादिकोंकेदेहहैं ॥ तिनसर्वदेहोंविषे तिनोंकेबुद्धिकर्मादिकोंका साक्षीरूपकरिकैविद्यमान तथानिरतिशयप्रीतिकाविषय ऐसाजोमैंपरमेश्वरहूं ॥ तिसमैंपरमेश्वरविषयकद्वेषकूंहीं तेआसुरपुरुष करेहैं ॥ तहां मैंपरमेश्वरकीआज्ञारूप जो श्रुतिस्मृतिरूपशास्त्रहै ॥ तिसशास्त्रउक्तअर्थकेअनुष्ठानतैंरहितपणेकरिकै जो तिसशास्त्ररूपआज्ञाकाउल्लंघनहै ॥ यहहीं मैंपरमेश्वरविषयकद्वेषहै ॥ और इस लोकविषेभी राजादिकमहान्पुरुषोंकेआज्ञाकूं जोपुरुष उल्लंघनकरेहै ॥ तिसपुरुषकूं तिनराजादिकोंकाद्वेषीकहेहैं ॥ ऐसेमैंपरमेश्वरकेद्वेषकूंकरणेहारे तिनआसुरपुरुषोंविषे मैंपरमेश्वरकीभक्तिहोणी अत्यंतदुर्घटहै इति ॥ शंका ॥ हेभगवन् ऐसेआसुरपुरुषोंकूं आपणेगुरुआदिकमहान्पुरुष क्युंनहींशिक्षाकरते ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहेहै (अभ्यसूयकाः इति) हेअर्जुन वेदप्रतिपादितमार्गविषेस्थित जे गुरुआदिकवृद्धपुरुषहैं ॥ तिनगुरुआदिकोंविषेस्थित करुणादिक गुणोंविषे तेआसुरपुरुष वंचनाआदिकदोषोंकाहींआरोपणकरेहैं ॥ ऐसेअसूयादोषवाले आसुरपुरुषोंकूं तिनगुरुवोंकेवचनोंविषे श्रद्धाहींहोतीनहीं ॥ यातैं तेगुरुभी तिनआसुरपुरुषोंकूं शिक्षाकरतेनहीं ॥ इसप्रकार बहिरंगरूप तथाअंतरंगरूप सर्वसाधनोंतैंशून्यहुए ते आसुरपुरुष केवल नरकविषेहींपडेहैं इति ॥ अथवा (मामात्मपरदेहेषुप्रद्विषंतः) इसवचनका यहदूसराअर्थकरणा ॥ तहां (आत्मदेहेषु) इसपदकरिकै तिनआसुरपुरुषोंकेदेहोंका ग्रहणकरणा ॥ और (परदेहेषु) इसपदकरिकै पशुआदिकोंकेदेहोंका ग्रहणकरणा ॥ ताकरिकैयहअर्थ सिद्धहोवैहै ॥ तिन आसुरपुरुषोंकेदेहोंविषे तथापशुआदिकोंकेदेहोंविषे चैतन्यअंशकरिकैस्थित जोमैंपरमेश्वरहूं तिसमैंपरमेश्वरविषयकद्वेषकूंकरतेहुए तेआसुरपुरुष यजनकरेहैं ॥ तहां दंभपूर्वककरेहुए

तिनयज्ञोंविषे तिनआसुरपुरुषोंकीश्रद्धाहै नहीं ॥ यातैं तिनश्रद्धाहीनयज्ञोंका दूसरातौंकोईफलहोवैनहीं ॥ किंतु दीक्षादिकनियमोंकरिकै तिनआसुरपुरुषोंके आत्माकूं केवल व्यर्थहीं पीडाकीप्राप्तिहोवैहै ॥ इसप्रकार पशुआदिकोंकीभी आविधिपूर्वकहिंसाकरिकै दूसराकोईफल होवैनहीं ॥ किंतु ताहिंसाकरिकै केवल चैतन्यकाद्रोहमात्रहीं सिद्धहोवैहै ॥ इसरीतिसैं आपणेदेहोंविषेस्थित तथापशुआदिकोंकेदेहोंविषेस्थित चैतन्यरूपमैंपरमेश्वरकाद्वेषकरतेहुए तेआसुरपुरुष यजनकरेहैं इति ॥ अथवा (मामात्मपरदेहेषुप्रद्विषंतः) इसवचनका यहतीसराअर्थकरणा ॥ ईहां (आत्मदेहेषु) इसपदकरिकै परमेश्वरके लीलाविग्रहरूप रामकृष्णादिकनामवाले देहोंका ग्रहणकरणा ॥ और (परदेहेषु) इसपदकरिकै प्रह्लाद विभीषण इत्यादिकनामवाले भक्तजनोंकेदेहोंका ग्रहणकरणा ॥ ताकरिकै यहअर्थ सिद्धहोवैहै ॥ मैंपरमेश्वरके लीलाविग्रहरूप वासुदेवादिकनामवालेदेहोंविषे मनुष्यत्वबुद्धिरूपभ्रमकरिकै तेआसुरपुरुष मैंपरमेश्वरविषयकद्वेषकूं करेहैं ॥ तथाप्रह्लाद विभीषण इत्यादिकनामोंवाले भक्तजनोंकेदेहोंविषे सर्वदा आविर्भावकूंप्राप्तहुआ जोमैंपरमेश्वरहूं ॥ तिसमैंपरमेश्वरविषयकद्वेषकूं तेआसुरपुरुष करेहैं ॥ यहवार्त्ता पूर्वनवमेअध्यायविषे (अवजानंतिमांमूढामानुषींतनुमाश्रितम् ॥ परंभावमजानंतोममभूतमहेश्वरम् ॥ मोघाशामोघकर्माणोमोघज्ञानाविचेतसः ॥ राक्षसीमासुरींचैवप्रकृतिंमोहिनींश्रिताः) इनदोश्लोकोंकरिकै कथनकरीथी॥ तथा (अव्यक्तंव्यक्तिमापन्नंमन्यंतेमामबुद्धयः) इसवचनकरिकैभीपूर्वकथनकरीथी इति ॥ यातैं यह अर्थसिद्धभया ॥ ॥ जिसमैंपरमेश्वरकीभक्तिकरिकै अधिकारीजन पावनहोवैहैं ॥ तिसमैंपरमेश्वरविषेहीं तिनआसुरपुरुषोंकाद्वेषहै ॥ ऐसेद्वेषीपुरुषोंविषे मैंपरमेश्वरकीभक्तिहोणी अत्यंतदुर्घटहै ॥ यातैं तेआसुरपुरुष किसीप्रकारकरिकैभी पावनहोतेनहीं इति ॥ १८ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् आपपरमेश्वरकी कृपाकरिकै तिनआसुरपुरुषोंकाभी कदाचित् निस्तारहोवैगा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए ॥ तिनआसुरपुरुषोंका कदाचित्भी निस्तारहोणेहारानहींहैं ॥ इसप्रकारकेउत्तरकूं श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) तानहंद्विषतःक्रूरान्संसारेषुनराधमान् ॥ क्षिपाम्यजस्रमशुभानासुरीष्वेवयोनिषु ॥ १९ ॥ तान् । अहं । द्विषतः । क्रूरान् । संसारेषु । नराधमान् । क्षिपामि । अजस्रम् । अशुभान् । आसुरीषु । एव । योनिषु ॥१९॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन द्वेषकरणेहारे तथाक्रूर तथानरोंविषेअधम तथा निरंतर अशुभकर्मोंकूंकरणेहारे ऐसेतिनआसुरपुरुषोंकूं मैंपरमेश्वर नरकंजाणेकेमार्गोंविषेहीं गेडताहूं तिसतैंअनंतर अत्यंतक्रूर व्याघ्रसर्पादिकयोनियोंविषेहीं गेडताहूं ॥ १९ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन शास्त्रप्रतिपादितसन्मार्गकेविरोधी जे आसुरपुरुषहैं ॥ कैसेहैं तेआसुरपुरुष ॥ मैंपरमेश्वरका तथासाधुजनोंका सर्वदा द्वेषकरणेहारेहैं ॥ पुनः

केसेहैंतेआसुरपुरुष क्रूरहैं ॥ अर्थात् सर्वदा जीवोंकीहिंसाविषेहींप्रीतिवालेहैं ॥ इसीकारणतैंहीं तेआसुरपुरुष सर्वनरोंविषेअधमहैं ॥ अर्थात् अत्यंतनिंदितहैं ॥ पुनः केसेहैंतेआसुरपुरुष अशुभहैं॥अर्थात् निरंतर शास्त्रनिषिद्धअशुभकर्मोंकूहींकरणेहारेहैं ॥ ऐसेतिन आसुरपुरुषोंकूं कर्मकेफलकाप्रदाता मैंपरमेश्वर नरकजाणेकेमार्गोंविषेहींगेडताहूं ॥ और तेआसुरपुरुष आपणेपापकर्मोंकेवशतैं तिननरकोंविषे बहुतकालपर्यंत अनेकप्रकारकेदुःखोंकूंअनुभवकारिकै जवी तिसनरकतैंआवैहैं ॥ तवी मैंपरमेश्वर तिनआसुरपुरुषोंकूंपूर्वलेकर्मवासनावोंकेअनुसार व्याघ्रसर्पादिक अत्यंतक्रूरयोनियोंविषेहीं गेडाताहूं ॥ ऐसेमैंपरमेश्वरकेद्रोही तथासाधुपुरुषोंकेद्रोही आसुरपुरुषोंऊपरि मैंपरमेश्वरकी कदाचित्भी कृपाहोतीनहीं ॥ तहां इसप्रकारकेपापात्माआसुरपुरुषनीचयोनियोंकूंहीं प्राप्तहोवैहैं ॥ यहवार्ता श्रुतिविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ (अथकपूयचरणाअभ्यासोहयत्तेकपूयांयोनिमापद्येरन् श्वयोनिंवा शूकरयोनिंवा चांडालयोनिंवाइति ॥) अर्थयह ॥ शास्त्रनिषिद्धपापकर्मोंकूकरणेहारेपुरुषशीघ्रहीं नीचयोनियोंकूंप्राप्तहोवैहैं॥ कवीश्वानयोनिकूंप्राप्तहोवैहैं॥ कवी शूकरयोनिकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ कवी चांडालयोनिकूंप्राप्तहोवैहैं॥ इसतैं आदिलेके दूसरीभीअनेकनीचयोनियोंकूंप्राप्तहोवैहैं इति ॥ इसप्रकार जीवोंकेपूर्वपूर्वकर्मोंकेअनुसार फलकीप्राप्तिकरणेहारेईश्वरविषे विषमतादोषकी तथानिर्दयतादोषकी प्राप्तिहोवैनहीं ॥ यहवार्ता ब्रह्मसूत्रोंविषे श्रीव्यासभगवान्नैंभी कथनकरीहै ॥ तहांसूत्रम् ॥ (वैषम्यनैर्घृण्येनसापेक्षत्वात्तथाहिदर्शयति ॥) अर्थयह॥ इसलोकविषे कोईप्राणीसुखीहै कोइप्राणी दुःखीहै कोईप्राणी धनीहै कोईप्राणी दरिद्रीहै कोईप्राणी पंडितहै कोईप्राणी मूर्खहै ॥ इसप्रकारकेविषमजगत्कीउत्पत्तिकरणेहारे ईश्वरविषे विषमतादोषकी तथा निर्दयतादोषकी अवश्यकारिकै प्राप्तिहोवैगी ॥ ऐसीशंकाकेप्राप्तहुए श्रीव्यासभगवान् कहेहैं ॥ परमेश्वर जीवोंकेपुण्यपापकर्मकी अपेक्षाकारिकै इसाविषमजगत्कूं उत्पन्नकरेहै ॥ तिसपुण्यपापकर्मकेअनुसारहीं कोईप्राणी सुखीहोवैहै कोईप्राणी दुःखीहोवैहै ॥ यातैं परमेश्वरविषे विषमतादोषकी तथानिर्दयतादोषकी प्राप्तिहोवैनहीं इसीप्रकारकेअर्थकूं । (अथकपूयचरणाः ।) इत्यादिकश्रुतियां कथनकरेहैं इति ॥ ऐसा सर्वजगत्काकारणरूप सोअंतर्यामीपरमेश्वर तिनआसुरपुरुषोंकूं केवल पापकर्महीं करावैहै ॥ पुण्यकर्मकरावतानहीं ॥ काहेतैं तिनआसुरपुरुषोंविषे केवल पापकर्मोंकाहींबीजाविद्यमानहै ॥ पुण्यकर्मोंकाबीज तिनोंविषेहैनहीं ॥ और बीजकेअनुसारहीं अंकुरकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ अन्यबीजतैं अन्यअंकुरकीउत्पत्तिहोवैनहीं ॥ जैसे निंबकेबीजतैं निंबके अंकुरकीहीं उत्पत्तिहोवैहैं ॥ तिसनिंबकेबीजतैं आम्रकेअंकुरकीउत्पत्तिहोवैनहीं ॥ यद्यपि सोपरमेश्वर परमकृपालुहै ॥ तथापि सोपरमेश्वर तिनआसुरपुरुषोंकेपापोंकूंनाशकरतानहीं ॥ काहेतैं तिनपापोंकेनाशकरणेहारे जेपुण्यकर्महैं ॥ तेपुण्यकर्म तिनआसुरपुरुषोंविषेहैंनहीं ॥ यातैं सोपरमेश्वर तिनआसुरपुरुषोंकेपापोंकूंनाशकरतानहीं ॥ और तिनआसुरपुरुषोंविषे पुण्यकर्मोंकेकरणेकीयोग्यताहैनहीं ॥ यातैं सोपरमेश्वर तिनआसुरपुरुषोंकूं पुण्यकर्मभी करावतानहीं ॥ जिनपुण्यकर्मोंक

रिके तिनोंकेपापोंकानाशहोवैहै ॥ काहेतैं कार्यकीउत्पत्तिकरणेविषेसमर्थहुआभी सोपरमेश्वरविषे जिसवस्तुविषे जिसकार्यकेउत्पत्तिकीयोग्यताहोवैहै तिसवस्तुतैंहीं तिसकार्यकीउत्पत्तिकरेहै ॥ अयोग्यवस्तुतैं तिसकार्यकीउत्पत्तिकरतानहीं ॥ जैसे पाषाणोंविषे यवअंकुरकेउत्पत्तिकीयोग्यताहैनहीं यातैं परमेश्वर तिनपाषाणोंविषे यवअंकुरकीउत्पत्तिकरतानहीं ॥ किंतुयवबीजोंविषेहीं तिसयवअंकुरकीउत्पत्तिकरेहै ॥ तैसे पुण्यकर्मकीउत्पत्तिकेअयोग्य तिनआसुरपुरुषोंविषे सोईश्वरभी पुण्यकर्मोंकूंउत्पन्नकरतानहीं और जोकोईवादी यहवचनकहै ॥ कार्यके करणेकूं तथानकरणेकूं तथाअन्यथाकरणेकूं जोसमर्थहोवै ताकानाम ईश्वर है ॥ ऐसाईश्वरहोणेतैं सोपरमेश्वर पुण्यकर्मोंकेअयोग्यभी तिनआसुरपुरुषोंविषे पुण्यकर्मकीयोग्यताकेसंपादनकरणेमेंसमर्थहींहै इति ॥ सोयहकहणा यद्यपि सत्यहै ॥ काहेतैं सोपरमेश्वर सत्यसंकल्पहै ॥ यातैं सोपरमेश्वर जोकदाचित् इनआसुरपुरुषोंविषेपुण्यकर्मकीयोग्यताहोवै इसप्रकारकासंकल्पकरे ॥ तौं तिनआसुरपुरुषोंविषे पुण्यकर्मकीयोग्यताहोइजावै ॥ परंतु सोपरमेश्वर इसप्रकारकासंकल्पहीं करतानहीं ॥ काहेतैं परमेश्वरकीआज्ञारूप जोश्रुतिस्मृतिरूपशास्त्रहै ॥ तिसशास्त्रकाउल्लंघनकरणेहारे ॥ तथापरमेश्वरकेभक्तोंकेद्रोहीं ऐसेजे तेदुरात्माआसुरपुरुषहैं ॥ तिनआसुरपुरुषोंऊपरि तिसपरमेश्वरकीप्रसन्नता हैनहीं ॥ ताप्रसन्नतातैंविना सोपरमेश्वर तिससंकल्पकूंकैसेकरैगा किंतु कदाचित्भी नहींकरैगा यहवार्त्ता श्रुतिविषेभीकिनथकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ (एषह्येवसाधुकर्मकारयतितंयमुन्निनीषते एषएवसाधुकर्मकारयतितंयमधोनिनीषते ॥) अर्थयह ॥ यहपरमेश्वर प्रसन्नहोइकै जिसपुरुषकूं ऊपरिलेस्वर्गादिकलोकोंविषे लेजाणेकीइच्छाकरेहै ॥ तिसपुरुषकूंतौं पुण्यकर्मकरावैहै ॥ और यहपरमेश्वर अप्रसन्नहोइकै जिसपुरुषकूं नरकादिकअधोलोकोंविषे लेजाणेकीइच्छाकरेहै ॥ तिसपुरुषकूंतौं पापकर्महीं करावैहै इति ॥ यातैंयहअर्थसिद्धभया ॥ परमेश्वरकीप्रसन्नताकाकारणरूप जो परमेश्वरकीवेदरूपआज्ञाकापालनहै ॥ सोआज्ञाकापालन जिनपुरुषोंविषे विद्यमानहै ॥ तिनपुरुषों ऊपरितौ परमेश्वरकी प्रसन्नताहोवैहैं ॥ और जिनपुरुषों विषे सोपरमेश्वरकीआज्ञाकापालन नहींहै ॥ तिनपुरुषोंऊपरि परमेश्वरकी प्रसन्नताहोतीनहीं ॥ और कारणके विद्यमानहुएहीं कार्यकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ कारणकेअभावहुए कार्यकी उत्पत्तिहोवैनहीं ॥ यहवार्त्ता लोकविषेभी प्रसिद्धहींहै ॥ इसविषे परमेश्वरकूं विषमता तथानिर्दयता कैसेप्राप्तहोवैंगी किंतु नहींप्राप्तहोवैंगी इति ॥ १९ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् ऐसे आसुरपुरुषोंकाभी क्रमकरिकै बहुतजन्मोंकेअंतविषे श्रेयहोवैगा ॥ ऐसी अर्जुनकी शंकाके हुए ॥ ऐसे आसुर पुरुषोंका कदाचित्भी श्रेयहोणेहारानहींहै ॥ इसप्रकारकेउत्तरकूं श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) आसुरींयोनिमापन्नामूढाजन्मनिजन्मनि ॥ मामप्राप्यैवकौंतेयततोयांत्यधमांगतिम् ॥ २० ॥ आसुरीं । योनिम् ।

आपन्नाः । मूढाः । जन्मनि । जन्मनि । मां । अप्राप्य । एव । कौंतेय । ततः । यांति । अधमां । गतिम् ॥२०॥ (इतिपदच्छेदः) ॥
हेकौंतेय जेपुरुष कदाचित्भी आसुरीयोनिकूं प्राप्तहुएहैं तेपुरुष जन्म जन्मविषे अविवेकीहुए वेदमार्गकूं नप्राप्तहोइके हीं तिसतैंभी अधम गतिकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ २० ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जेपुरुष कदाचित्भी आसुरियोनिकूंप्राप्तहुएहैं ॥ तेपुरुष जन्मजन्मविषे मूढहुए अर्थात् तमोगुणकी बाहुल्यताकरिकै विवेकतैं शून्यहुए ॥ मेरेकूंप्राप्तहोईके अर्थात् मैंपरमेश्वरउपदिष्टवेदमार्गकूं नप्राप्तहोइके तिसतैंभीअत्यंतनिकृष्टगतिकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ ईहां (मामप्राप्यैव) इसवचनकेअंतविषेस्थितजो एव यहशब्दहै ॥ सोएवशब्द तिर्यक्स्थावरादिकयोनियोंविषे वेदमार्गकेप्राप्तिकीअयोग्यताकूं बोधनकरेहै॥ अर्थात् तिनतिर्यक्स्थावरादिकयोनियोंविषे वेदमार्गके प्राप्तिकी योग्यताहींनहींहै ॥ यातैंयहअर्थसिद्धभया ॥ अत्यंततमोगुणकीबाहुल्यताकरिकै तेआसुरपुरुष वेदमार्गकीप्राप्तिकेअयोग्यहोइके पूर्वपूर्वनिकृष्टयोनियोंतैं उत्तरउत्तर अत्यंतनिकृष्ट अधमयोनियोंकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ जैसे व्याघ्रयोनितैं सर्पयोनि निकृष्टहै ॥ तिससर्पयोनितैंभी कीटपतंगादिकयोनि निकृष्टहै ॥ तिसकीटपतंगादिकयोनितैंभी वृक्षादिकयोनि निकृष्टहै इति ॥ ईहांयद्यपि (मामप्राप्य) इसवचनविषेस्थित मां इसपदकरिकै परमेश्वररूपअर्थकीहींप्रतीतिहोवैहै ॥ तथापि मां इसपदकरिकै परमेश्वरकाग्रहणकरणानहीं ॥ किं तुमां इसपदकरिकै परमेश्वरउपदिष्टवेदमार्गकाहीं ग्रहणकरणा ॥ काहेतैं जिसवस्तुविषे जोअर्थ किसीभीप्रकारकरिकै प्राप्तहोवैहै ॥ तिसवस्तुविषेहीं तिसअर्थकानिषेधहोवैहै ॥ सर्वप्रकारतैंअप्राप्तअर्थका निषेधहोतानहीं ॥ और तिनआसुरपुरुषोंविषे परमेश्वरकेप्राप्तिकीकोईशंकामात्रभीहोतीनहीं ॥ जिसपरमेश्वरकीप्राप्तिका (अप्राप्य) इसशब्दकरिकै निषेधहोवै ॥ यद्यपि तिनआसुरपुरुषोंविषे वेदमार्गकी भीप्राप्ति संभवतीनहीं ॥ तथापि तिनआसुरपुरुषोंविषे वेदमार्गकेप्राप्तिकीशंकामात्र कदाचित् होइसकेहै ॥ तिसवेदमार्गकेप्राप्तिकाहीं (अप्राप्य) यहशब्द निषेधकरेहै ॥ यातैं मां इसपदकीलक्षणवृत्तितैं परमेश्वरउपदिष्टवेदमार्गकाग्रहणकरणा उचितहै इति ॥ और किसीटीकाविषेतौ मां इसपदकीलक्षणावृत्तिकरिकै परमेश्वरकेप्राप्तिकासाधनरूप अविकारीमनुष्यदेहका ग्रहणकऱ्याहै इति ॥ यातैं इसश्लोकका यहसमुदायअर्थ सिद्धहोवैहै ॥ जिसकारणतैं एकवारभी आसुरीयोनिकूंप्राप्तहुएपुरुषोंकूं तिसतैंउत्तरउत्तर निकृष्टतर तथानिकृष्टतम योनियोंकीहींप्राप्तिहोवैहै ॥ और अत्यंततमोगुणकीबाहुल्यताकरिकै तिनआसुरपुरुषोंकूं तिननिकृष्टयोनियोंकेनिवृत्तकरणेका सामर्थ्यहोवैनहीं ॥ तिसकारणतैं जितनैंकालपर्यंत अधिकारीमनुष्यदेहकीप्राप्तिहै ॥ तितनैंकालपर्यंत महान्प्रयत्नकरिकै परमनिकृष्टआसुरीसंपदावोंकेनिवृत्तकरणेवासतैं शीघ्रहीं इनश्रेयकीइच्छावान्पुरुषोंनैं यथाशक्तिपरिमाण दैवीसंपदावोंका संपादनकरणा ॥ जोकदाचित् तिनआसु

रीसंपदावोंकेनिवृत्तकरणेवासतै यहपुरुष दैवीसंपदावोंका संपादननहींकरैंगा ॥ तौं तिनआसुरीसंपदावोंकेवशतैं व्याघ्रसर्पादिकनीचदेहोंकेप्राप्तहुएतैंअनंतर श्रेयसाधनोंकेअनुष्ठानकरणेविषेअयोग्यहोणेतैं इसपुरुषका कदाचित्भीनिस्तारनहींहोवैंगा ॥ इसप्रकार सोपुरुष महान्संकटोंकूंप्राप्तहोवैंगा ॥ यहवार्त्ता अन्यशास्त्रविषेभीकथनकरीहै ॥ तहां श्लोक ॥ (इहैवनरकव्याधेश्चिकित्सांनकरोतियः ॥ गत्वानिरौषधंस्थानंसरुजःकिंकरिष्यति) ॥ अर्थयह ॥ आसुरीसंपत्रूपनिमित्तकरिकै उत्पन्नहोणेहारी जानरकरूपव्याधिहै ॥ तिसनरकरूपव्याधिकीनिवृत्तिकरणेहारी दैवीसंपद्रूपचिकित्साकूं जोपुरुष इस अधिकारीमनुष्यशरीर विषे नहींकरेहै ॥ सोरोगीपुरुष दैवीसंपद्रूपऔषधतैं रहितस्थानविषे जाइकै तिननरकरूपव्याधिकेनिवृत्तकरणेवासतै क्याउपायकरैंगा ॥ किंतु तहांकोईभीउपाय नहींकरैंगाइति ॥ २० ॥ ❋ ॥ शंका ॥ हेभगवन् (दंभोदर्पोऽतिमानश्च) इत्यादिकवचनोंकरिकै पूर्वआपनैं कथनकरीजा आसुरसंपत्है ॥ साआसुरसंपत् अनेकप्रकारकीहै ॥ यातैं सासर्वआसुरसंपत् इसपुरुषनैं आपणेआयुष्कीसमाप्तिपर्यंत प्रयत्नकरिकैभी निवृत्तकरणेकूंअशक्यहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए ॥ श्रीभगवान् तिसआसुरीसंपत्कूं संक्षेपकरिकैकथनकरेहै ॥

(मू॰ श्लो॰) त्रिविधंनरकस्येदंद्वारंनाशनमात्मनः ॥ कामःक्रोधस्तथालोभस्तस्मादेतत्त्रयंत्यजेत् ॥ २१ ॥ त्रिविधं । नरकस्य । इदं । द्वारं । नाशनम् । आत्मनः । कामः । क्रोधः । तथा । लोभः । तस्मात् । एतत् । त्रयं । त्यजेत् ॥२१॥ (इतिपदच्छेदः)॥
हेअर्जुन इसपुरुषकूं अधमयोनियोंकीप्राप्तिकरणेहारा यह तीनप्रकारका नरकका द्वारहै काम क्रोध तथा लोभ तिसकारणतैं इन तीनोंकूं परित्यागकरै ॥ २१ ॥ (इतिपदार्थः)॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन नरककेप्राप्तिका यहतीनप्रकारकाहीं द्वार कहीये साधनहै ॥ सोयहतीनप्रकारकाद्वारहीं पूर्वउक्त सर्वआसुरसंपत्कामूलभूतहै ॥ तथा आत्माकेनाशकरणेहाराहै ॥ अर्थात् धर्ममोक्षादिकसर्वपुरुषार्थोंकीअयोग्यताकूंसंपादनकरिकै इनपुरुषोंकूं अत्यंतअधमयोनियोंकीप्राप्तिकरणेहाराहै ॥ तहां सोतीनप्रकारका नरककाद्वार कौनहै ॥ ऐसीअर्जुनकीजिज्ञासाकेहुए श्रीभगवान्कहेहै (कामःक्रोधस्तथालोभःइति) हेअर्जुन काम क्रोध लोभ यहतीनोंहीं इसपुरुषकूं नरककीप्राप्ति करणेहारेहैं ॥ तथा व्याघ्र सर्प कीट पतंग वृक्ष इत्यादिक अत्यंतअधम्योनियोंकीप्राप्तिकरणेहारेहैं ॥ और इनतीनोंकेप्राप्तहुएतैंअनंतरहीं इसपुरुषकूं तेसर्वआसुरसंपत् प्राप्तहोवैंहै ॥ हेअर्जुन जिसकारणतैं काम क्रोध लोभ यहतीनोंहीं इसपुरुषकूं सर्वअनर्थोंकेमूलभूतहैं ॥ तिसकारणतैं यहअधिकारी पुरुष इनतीनोंका अवश्यकरिकैपरित्यागकरै ॥ इनतीनोंकेपरित्यागकरिकैहीं पूर्वउक्तसर्वहींआसुरसंपत् परित्यागकरीजावैंहै ॥ तहां चित्तविषेउत्पन्नहुए कामक्रोध

लोभका जो अनर्थविषेप्रवृत्तिरूपकार्यहै ॥ ताकार्यका विवेककरिकैजोप्रतिबंधहै ॥ तथा तिसतैंअनंतर तिनकामादिकोंकीजोनहींउत्पत्तिहै ॥ यहहीं तिनकामादिकतीनोंका परित्यागहै ॥ तहां काम क्रोध लोभ इनतीनोंकास्वरूप इसीअध्यायविषे पूर्वकथनकरिआयेहैं इति ॥ २१ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् काम क्रोध लोभ इनतीनोंकेत्यागकरणेहारेपुरुषकूं कौंनफल प्राप्तहोवैहै ॥ ऐसीअर्जुनकीजिज्ञासाकेहुए श्रीभगवान् कहेहै ॥

(मू० श्लो०) एतैर्विमुक्तःकौंतेयतमोद्वारैस्त्रिभिर्नरः ॥ आचरत्यात्मनःश्रेयस्ततोयातिपरांगतिम् ॥२२॥ एतैः । विमुक्तः । कौंतेय । तमोद्वारैः । त्रिभिः । नरः । आचरति । आत्मनः । श्रेयः । ततः । याति । पराम् । गतिम् ॥ २२ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥

हेकौंतेय नरककेद्वारभूत इन काम क्रोध लोभ तीनोंनैं परित्यागकऱ्याहुआ यहपुरुष आपणे श्रेयकूंहीं सिद्धकरेहै तिसतैं परम गतिकूं प्राप्तहोवैहै ॥ २२ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन नरककेप्राप्तिकासाधनभूत तथाअत्यंतअधमयोनियोंकेप्राप्तिकासाधनभूत जे काम क्रोध लोभ यहतीनहैं ॥ इनतीनोंतैंरहितहुआ यहपुरुष आपणेश्रेयकूंहीं सिद्धकरेहै ॥ अर्थात् इसअधिकारीपुरुषकेप्रति वेदभगवान्नैं हितरूपकारिकैविधानकऱ्येजे भगवत्भजनादिकअर्थहैं तिनअर्थोंकूंहीं सोपुरुष अनुष्ठानकरेहै ॥ हेअर्जुन इन काम क्रोध लोभ तीनोंकेपरित्यागतैंपूर्व तिनकामादिकोंकरिकैप्रतिबद्धहुआ यहपुरुष आपणेश्रेयकूं सिद्धकरता नहीं ॥ जिसकरिकै इस पुरुषकूं मोक्षरूपपुरुषार्थकीप्राप्तिहोवै ॥ उलटा यहपुरुष आपणेअश्रेयकूंहीं संपादनकरेहै ॥ जिसकरिकै इसपुरुषका नरकविषेहींपतनहोवैहै ॥ और अबी तिसकामक्रोधादिरूपप्रतिबंधतैंरहितहुआ यहपुरुष आपणेअश्रेयकूं संपादनकरतानहीं ॥ किंतु अबी आपणेश्रेयकूंहीं संपादनकरेहै ॥ तिसश्रेयकेसंपादनतैं इसलोकके सुखकूंअनुभवकारिकै अंतःकरणकीशुद्धिद्वारा तथाआत्मज्ञानकीप्राप्तिद्वारा मोक्षरूपपरमगतिकूंहीं प्राप्तहोवैहै ॥ यातैं मोक्षकीइच्छावान्अधिकारीपुरुषोंनैं यहकामादिकतीनों अवश्यकरिकै परित्यागकरणे इति ॥ २२ ॥ ❀ ॥ जिसकारणतैं अश्रेयकेनहींआचरणकरणेका तथाश्रेयकेआचरणकरणेका केवल शास्त्रहीं निमित्तहै ॥ काहेतैं अश्रेयकानहींआचरण तथाश्रेयका आचरण यहदोनों केवल शास्त्रप्रमाणकारिकैहीं जान्येजावैहैं ॥ अन्यकिसीप्रमाणकारिकै जान्येजातेनहीं ॥ तिसकारणतैं तिसशास्त्रकापरित्यागकरिकै आपणीइच्छापूर्वकवर्त्तणेहारापुरुष किसीभीपुरुषार्थकूं प्राप्तहोतानहीं ॥ इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) यःशास्त्रविधिमुत्सृज्यवर्त्ततेकामकारतः ॥ नससिद्धिमवाप्नोतिनसुखंनपरांगतिम् ॥ २३ ॥ यः । शास्त्रविधिम् । उत्सृज्य । वर्त्तते । कामकारतः । न । सः । सिद्धिम् । अवाप्नोति । न । सुखम् । न । पराम् । गतिम् ॥ २३ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥

हेअर्जुन जोपुरुष शास्त्रविधिकूं परित्यागकरिके आपणीइच्छामात्रतैं वर्त्तताहै सोपुरुष अंतःकरणके शुद्धिकूंभी नहीं प्राप्तहोवैहै तथा इस लोककेसुखकूंभी नहीं प्राप्तहोवैहै तथास्वर्गमोक्षरूप उत्कृष्ट गतिकूंभी नहीं प्राप्तहोवैहै ॥ २३ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

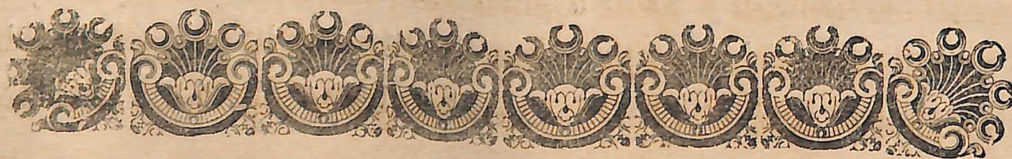
॥ टीका ॥ हेअर्जुन अधिकारीजनोंकेप्रति अपूर्वअर्थकाबोधनकरीताहै जिसनैं ताकानाम शास्त्रहै ॥ ऐसेशास्त्ररूपऋगादिकच्यारिवेदहैं ॥ तथा तिसवेदकेअनुसारी स्मृति पुराण इतिहास सूत्र इत्यादिकभी शास्त्ररूपहींहैं ॥ तिसशास्त्रकीजाविधिहै ॥ अर्थात् इसअधिकारीपुरुषनैं यहकार्य करणा यहकार्य नहींकरणा इस प्रकारकें कर्त्तव्यअकर्तव्यज्ञानकेहेतुभूत जेप्रवर्तकनिवर्तक विधिनिषेधवचनहैं ॥ तहां (अहरहःसंध्यामुपासीत) अर्थयह यहत्रैवर्णिकपुरुषदिनादिनविषे संध्याकूं करै ॥ इत्यादिकवचनतौं विधिवचन कहेजावैहैं ॥ और (परदारान्नगच्छेत्) अर्थयह यहपुरुष परस्त्रीकेसाथि मैथुननहींकरै ॥ इत्यादिकवचन निषेधवचन कहेजावैहैं ॥ ऐसेशास्त्रविधिकूं जोपुरुष अश्रद्धातैं परित्यागकरिकै आपणीइच्छामात्रतैं वर्त्तताहै ॥ अर्थात् जोपुरुष शास्त्रविहितभीकर्मकूं करतानहीं ॥ तथा शास्त्रनिषिद्धभीकर्मकूं करताहै ॥ सोशास्त्रविधिकेपरित्यागकरणेहारापुरुष पुरुषार्थकेप्राप्तिकीयोग्यतारूप अंतःकरणकीशुद्धिकूंकर्मोंकूं करताहुआभी प्राप्तहोता नहीं ॥ तथा सोपुरुष इसलोककेसुखकूंभी प्राप्तहोतानहीं ॥ तथा सोपुरुष स्वर्गरूपउत्कृष्टगतिकूं अथवा मोक्षरूपउत्कृष्टगतिकूंभी प्राप्तहोतानहीं ॥ किंतु सो शास्त्रकेविधिकाउल्लंघनकरणेहारापुरुष सर्वपुरुषार्थोंतैंभ्रष्टहींहोवैहै इति ॥ ईहां (शास्त्रविधिं) इसवचनविषे जोभगवान्नैंविधि यहशब्दकथनकऱ्याहै ॥ सोतिन विधिनिषेधवचनोंतैंअतिरिक्त प्रत्यक्अभिन्नब्रह्मकेप्रतिपादक जेतत्त्वमसि अहंब्रह्मास्मि इत्यादिकवेदांतवचनहैं ॥ तेवचनभी शास्त्ररूपहींहैं इसअर्थकेसूचनकरणे वास्तै कथनकऱ्याहै इति ॥ २३ ॥ ❋ ॥ जिसकारणतैं शास्त्रतैंविमुखहोइकै आपणीइच्छापूर्वक प्रवर्त्तहोणेहारेपुरुष सर्वपुरुषार्थोंतैं भ्रष्टहोवैहैं ॥ तिसका रणतैं इनअधिकारिपुरुषोंनैं शास्त्रकीविधिकरिकैहीं कर्मोंकूंकरणा ॥ इसअर्थकूंकथनकरताहुआ श्रीभगवान् इसषोडशेअध्यायका उपसंहारकरेहै ॥

(मू० श्लो०) तस्माच्छास्त्रंप्रमाणंतेकार्याकार्यव्यवस्थितौ ॥ ज्ञात्वाशास्त्रविधानोक्तंकर्मकर्त्तुमिहार्हसि ॥ २४ ॥ इतिश्रीमद्भ० सूप०ब्रह्मविद्यायांयोगशास्त्रेश्रीकृष्णार्जुनसंवादेदैवासुरसंपद्विभागयोगोनामषोडशोऽध्यायः ॥ १६ ॥ तस्मात् । शास्त्रम् । प्रमा णम् । ते । कार्याकार्यव्यवस्थितौ । ज्ञात्वा । शास्त्रविधानोक्तम् । कर्म । कर्त्तुम् । इह । अर्हसि ॥ २४ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥

हेअर्जुन तिसकारणतैं तैंअर्जुनकूं कार्यअकार्यकीव्यवस्थाविषेहीं शास्त्रहीं प्रमाणहै यातैं इसकर्मके अधिकारभूमिविषे शास्त्रवि धानकरिकेकथनकऱ्येहूए कर्मकूं जानिकरिकै तूं युद्धादिककर्मोंके करणेकूं योग्यहैं ॥ २४ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जिसकारणतैं शास्त्रविधिकापरित्यागकरिकै आपणीइच्छापूर्वकवर्त्तणेहारा पुरुष इसलोकके तथापरलोकके सर्वपुरुषार्थोंकेअयोग्यहोवैहै ॥ जिसकारणतैं श्रेयंकीइच्छावान् तैंअर्जुनकूं कार्यअकार्यकीव्यवस्थाविषे केवलशास्त्रहीं प्रमाणरूपहै ॥ अर्थात् हमारेकूं क्याकरणेयोग्यहै क्यानहींकरणे योग्यहै इसप्रकारकी जा कर्त्तव्यअकर्त्तव्यअर्थकीव्यवस्थाहै तिसव्यवस्थाविषे श्रुतिस्मृतिपुराणइतिहासादिरूपशास्त्रप्रमाणहीं बोधकहै ॥ आपणीबुद्धितथावृद्धादिकोंकेवाक्य तिसव्यवस्थाविषेप्रमाणरूपनहींहैं॥यातैं इसकर्मकेअधिकारभूमिविषे इसपुरुषनैं यहकर्म करणा यहकर्म नहींकरणा इसप्रकारके प्रवर्तकनिवर्तकरूप शास्त्रकेविधाननैं कथन कऱ्याजोविहितप्रतिषिद्धकर्महै ॥ तिसकर्मकूं भलीप्रकारजानिकै शास्त्रनिषिद्धकर्मकापरित्यागकरिकै आपणेअंतःकरणकीशुद्धिपर्यंत शास्त्रविहितआपणेयुद्धादिककर्मोंकेहींकरणेकूं तूं योग्यहै इति ॥ तहां इसषोडशेअध्यायविषे श्रीभगवान्नैं यहअर्थकथनकऱ्या॥पूर्वउक्तदंभदर्पादिकसर्व आसुरसंपत्का मूलभूत तथासर्वअश्रेयकीप्राप्तिकरणेहारे तथासर्वश्रेयकेप्रतिबंधक ऐसेजेकाम क्रोध लोभ यहतीन महान्दोषहैं ॥ तिनकामादिकमहान्दोषोंकापरित्यागकरिकै श्रेयकेप्राप्तिकीइच्छावान् इसअधिकारीपुरुषनैं अत्यंतश्रद्धापूर्वक शास्त्रकेश्रवणपरायणहोणा तथा तिसशास्त्रउपदिष्टअर्थके अनुष्ठानपरायणहोणा ॥ यह अर्थ श्रीभगवान्नै दैवीसंपत् आसुरीसंपत् इनदोनोंसंपदावोंके भिन्नभिन्नकथनकरिकै निर्णयकऱ्या इति ॥ २४ ॥ ❀ ॥ ॥ इतिश्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य श्रीस्वाम्युद्धवानंदगिरिपूज्यपादशिष्येण स्वामिचिद्घनानंदगिरिणा विरचितायां प्राकृतटीकायां गीतागूढार्थदीपिकाख्यायां षोडशोऽध्यायःसमाप्तः ॥ १६ ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥

इति षोडशोऽध्यायः समाप्तः ॥ १६ ॥



ॐश्रीगणेशायनमः ॥ ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥ अथ सप्तदशाऽध्यायप्रारंभः ॥ तहां कर्मकेअनुष्ठानकरणेहारेपुरुष तीनप्रकारकेहोवैहैं ॥ केईकपुरुषतौं शास्त्रकेविधिकूंजानिकरिकैभी अश्रद्धारूपदोषतैं तिसशास्त्रविधिकापरित्यागकरिकैं आपणीइच्छामात्रतैं यत्किंचित्कर्मोंका अनुष्ठानकरेहैं ॥ऐसे पुरुषतौं सर्वपुरुषार्थोंकेअयोग्यहोणेतैं आसुर कह्येजावैहैं ॥ और केईकपुरुषतौं शास्त्रकोविधिकूंजानिकरिकें अत्यंतश्रद्धावान्होइके तिसशास्त्रविधिकेअनुसारहीं निषिद्धकर्मोंकापरित्यागकरिकें शास्त्रविहितकर्मोंका अनुष्ठानकरेहैं ॥ ऐसेपुरुषतौं सर्वपुरुषार्थोंकेयोग्यहोणेतैं देव कह्येजावैहैं॥ यहअर्थ पूर्वषोडशेअध्यायकेअंतविषे निर्णयकऱ्या ॥ और जेपुरुषशास्त्रकेविधिकूं आलस्यादिकदोषकेवशतैं परित्यागकरिकें आपणेपितापितामहादिकवृद्धपुरुषोंकेव्यवहारमात्र करिकें श्रद्धापूर्वक निषिद्धकर्मोंकापरित्यागकरिकैं विहितकर्मोंकाअनुष्ठानकरेहैं ॥ तिनपुरुषोंविषे असुरोंकाधर्म घटताहै ॥ तथा देवतावोंकाधर्मभी घटताहै ॥ तहां शास्त्रकेविधिकापरित्यागकरणा यहतौंअसुरोंकाधर्म तिनोंविषेघटेहै ॥ और श्रद्धापूर्वक विहितकर्मोंकाअनुष्ठानकरणा यहदेवतावोंकाधर्म तिनोंविषे घटेहै ॥ इसप्रकार असुरोंकेधर्मकरिकै तथादेवतावोंकेधर्मकरिकै युक्तहूए तेपुरुष क्याअसुरोंविषेअंतर्भूतहैं ॥ अथवा देवतावोंविषेअंतर्भूतहैं ॥ इसप्रकार दोनोंकर्मोंकेदर्शनतैं तथाएककोटिकनिश्चयकरावणेहारेअर्थकेदर्शनतैं संशयकूंप्राप्तहुआ सोअर्जुन श्रीभगवान्केप्रति प्रश्नकरेहै ॥

(मू॰ श्लो॰) अर्जुनउवाच ॥ येशास्त्रविधिमुत्सृज्ययजंतेश्रद्धयान्विताः ॥ तेषांनिष्ठातुकाकृष्णसत्त्वमाहोरजस्तमः ॥ १ ॥ ये । शास्त्रविधिम् । उत्सृज्य । यजंते । श्रद्धया । अन्विताः । तेषाम् । निष्ठा । तु । का । कृष्ण । सत्त्वम् । आहो । रजः । तमः ॥ १ ॥
(इतिपदच्छेदः) ॥ हेकृष्ण जेपुरुष शास्त्रविधिकूं परित्यागकरिकें श्रद्धाकरिकै युक्तहुए देवपूजनादिकोंकूं करेहैं तिनपुरुषोंका पुनः किसप्रकारकी निष्ठाहै सात्त्विकीहै अथवा राजसी तामसीहै ॥ १ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेकृष्ण अर्थात् हेसत्यआनंदरूप ॥ जैसे देवतापुरुष श्रुतिस्मृतिरूपशास्त्रकेअनुसारीहोवैहैं ॥ तैसे जे पुरुष शास्त्रकेअनुसारीहैं नहीं ॥ किंतु जेपुरुष श्रुतिस्मृतिरूपशास्त्रकेविधिकूं आलस्यादिकदोषकेवशतैंपरित्यागकरिकैवर्त्तेहैं ॥ और जैसे असुरपुरुष श्रद्धातैंरहितहोवैहैं तैसे जेपुरुष श्रद्धातैंरहितहैंनहीं ॥ किंतु जेपुरुष आपणे पितापितामहादिकवृद्धपुरुषोंकेव्यवहारकेअनुसरणमात्रतैं श्रद्धाकरिकैयुक्तहुएहैं ॥ इसप्रकार आलस्यादिकदोषकेवशतैं शास्त्रविधिकापरित्यागकरिकें तथाआपणेवृद्धपुरुषोंकेव्यवहारकेअनुसरणमात्रतैं श्रद्धाकरिकैयुक्तहुए जेपुरुष देवपूजनादिककर्मोंकूं करेहैं ॥ तिनपुरुषोंकी किसप्रकारकीनिष्ठाहै ॥ अर्थात् शास्त्रविधिकीउपेक्षा तथावृद्धव्यवहारामात्रतैंश्रद्धा इनदोनोंकरिकै जेपुरुष पूर्वअध्यायउक्त देवअक्षरपुरुषोंतैं विलक्षणहैं ॥ तिनपुरुषोंकी साशास्त्रविधिकीअ

पेक्षातैंरहित श्रद्धापूर्वक देवपूजनादिरूपक्रियाकीव्यवास्थिति किसप्रकारकीहै ॥ क्यासात्त्विकीहै अथवा राजसीतामसीहै ॥ तहां तिनपुरुषोंकी सानिष्ठा जोकदाचित् सात्त्विकीहोवैंगी ॥ तौ सात्त्विकस्वभाववालेहोणेतैं तेपुरुष देवताहींहोवैंगे ॥ और तिनपुरुषोंकी सानिष्ठा जोकदाचित् राजसीतामसीहोवैंगी ॥ तौं राजसतामसस्वभाववालेहोणेतैं तेपुरुष असुरहींहोवैंगे इति ॥ ईहां (सत्त्वं) इसपदकरिकै अर्जुननैं संशयकी एककोटि कथनकरीहै ॥ और (रजस्तमः) इसवचनकरिकै तासंशयकी दूसरीकोटि कथनकरीहै ॥ ईसीविभागकेजनावणेवासतैं तिनदोनोंकेमध्यविषे (आहो) इसशब्दकाकथनकऱ्याहै ॥ यातैं सात्त्विकी राजसी तामसी यहतीनकोटी ईहां ग्रहणकरणीनहीं इति ॥ १ ॥ ❁ ॥ तहां जेपुरुष शास्त्रविधिकापरित्यागकरिकै श्रद्धापूर्वक देवपूजनादिककर्मोंकूंकरेहैं ॥ तेपुरुष तिसश्रद्धाकेभेदकरिकै भेदवालेहींहोवैहैं ॥ तहांजेपुरुष सात्त्विकीश्रद्धाकरिकैयुक्तहोवैहैं ॥ तेपुरुषतौं देव कह्येजावैहैं ॥ ऐसेसात्त्विकश्रद्धावालेदेवपुरुषतौं श्रुतिस्मृतिरूपशास्त्रउक्तसाधनोंविषे अधिकारीभावकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तथा तिनसाधनोंजन्यफलकूंभी प्राप्तहोवैहैं ॥ और जेपुरुष राजसीश्रद्धाकरिकै तथातामसीश्रद्धाकरिकै युक्तहैं तेपुरुष असुर कह्येजावैहैं ॥ ऐसेअसुर पुरुषतौं शास्त्रउक्तसाधनोंविषे अधिकारीभावकूं प्राप्तहोवैनहीं ॥ तथातिनसाधनोंजन्यफलकूंभी प्राप्तहोतेनहीं ॥ इसप्रकारकेविवेककरिकै अर्जुनकेसंशयकेनिवृत्तकरणेकीइच्छाकरताहुआ श्रीभगवान् तिनश्रद्धाकेभेदकूंकथनकरेहैं ॥

(मू० श्लो०) श्रीभगवानुवाच ॥ त्रिविधाभवतिश्रद्धादेहिनांसास्वभावजा ॥ सात्त्विकीराजसीचैवतामसीचेतितांशृणु ॥ २ ॥

त्रिविधा । भवति । श्रद्धा । देहिनां । सा । स्वभावजा । सात्त्विकी । राजसी । च । एव । तामसी । च । इति । तां । शृणु ॥ २ ॥

(इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन देहाभिमानवालेपुरुषोंकी सा स्वभावजन्य श्रद्धा सात्त्विकी तथा राजसी तथा तामसी यह तीन प्रकारकी हीं होवैहै तिसश्रद्धाकूं तूं श्रवणकर ॥ २ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जिसश्रद्धाकरिकैयुक्तहुए यहप्राणी शास्त्रविधिकापरित्यागकरिकै देवपूजनादिककर्मोंकूंकरेहैं ॥ सा देहाभिमानीपुरुषोंकी स्वभावजन्यश्रद्धा तीनप्रकारकीहोवैहै ॥ तहां जन्मांतरोंविषेसंपादनकऱ्येजे धर्मअधर्मआदिकोंकेसंस्कारहैं जिनसंस्कारोंनैं इसजन्मकाआरंभकऱ्याहै तिनसंस्कारोंकानाम स्वभावहै ॥ सोजीवोंकास्वभाव सात्त्विक राजस तामस इसभेदकरिकै तीनप्रकारकाहोवैहै ॥ तिसतीनप्रकारकेस्वभावकरिकैजन्य जाश्रद्धाहै ॥ साश्रद्धाभी सात्त्विकी राजसी तामसी इसभेदकरिकै तीनप्रकारकीहोवैहै ॥ काहेतैं लोकविषे जोजोकार्यहोवैहै ॥ सोसोकार्य आपणेकारणकेसदृशहीहोवैहै ॥ कारणतैंविलक्षण कार्यहोवैनहीं ॥ तहां सात्त्विकस्वभावजन्यश्रद्धा सात्त्विकीश्रद्धा कहीजावैहै ॥ और राजसस्वभावजन्यश्रद्धा राजसीश्रद्धा कहीजावैहै ॥ और तामसस्वभावजन्यश्रद्धा तामसी

श्रद्धा कहीजावैहै ॥ इसप्रकार संस्काररूपस्वभावकेत्रिविधपणेकरिकै साश्रद्धाभी तीनप्रकारकीहीहोवैहै इति ॥ ईहां (राजसीचैव) इसवचनविषेस्थितजो (चएव) यहदोशब्दहैं ॥ तिनदोनोंशब्दोंविषे प्रथम च इसशब्दकरिकै श्रीभगवान्नैं यहअर्थ बोधनकऱ्या ॥ जोश्रद्धा आरंभहुएजन्मविषे केवल शास्त्रकेसंस्कारमात्र करिकैभी जन्यहोवैहै ॥ सा विद्वान्पुरुषोंकीश्रद्धा कारणकीएकरूपताकरिकै एकसात्त्विकीरूपहींहोवैहै ॥ राजसीरूप तथातामसीरूप होवैनहीं इति ॥ और दूसरे एव इसशब्दकरिकै श्रीभगवान्नैं यहअर्थबोधनकऱ्या ॥ जाश्रद्धा शास्त्रकीअपेक्षातैंरहितहै तथाप्राणीमात्रविषेसाधारणहै तथापूर्वउक्तस्वभावकरिकैजन्यहैं॥ साश्रद्धाहीं तिसस्वभावकेत्रिविधपणेकरिकैतीनप्रकारकीहोवैहै इति ॥ और (तामसीच) इसवचनविषेस्थितजो चकारहै ॥ सोचकार तिनतीनप्रकारोंकेसमुच्चय करावणेवासतैंहै इति ॥ हेअर्जुन जिसकारणतैं पूर्वजन्मकेवासनारूपस्वभावकाअभिभवकरणेहारा शास्त्रजन्यविवेकविज्ञानतिनशास्त्रविधिकेउल्लंघनकरणेहारेपुरुषोंकूं हैनहीं ॥ तिसकारणतैं तिनपुरुषोंके पूर्ववासनारूपस्वभावकेवशतैं साश्रद्धातीनप्रकारकीहींहोवैहै ॥ तिसतीनप्रकारकीश्रद्धाकूं तूं श्रवणकर ॥ तिसश्रद्धाकूंश्रवण करिकै तिनपुरुषोंविषे देवभावकूं अथवा आसुरभावकूं तूं आपेहीं निश्चयकरैंगा इति ॥ २ ॥ ❀ ॥ तहां पूर्वश्लोकविषे अंतःकरणविषेस्थित पूर्वजन्मकी वासनारूपनिमित्तकारणकीविचित्रताकरिकै तिस श्रद्धाकीविचित्रता कथनकरी ॥ अब श्रीभगवान् तिसश्रद्धाकेउपादानकारणरूपअंतःकरणकीविचित्रताकरिकैभी तिसश्रद्धाकीविचित्रताकूं कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) सत्त्वानुरूपासर्वस्यश्रद्धाभवतिभारत ॥ श्रद्धामयोयंपुरुषोयोयच्छ्रद्धःसएवसः ॥३॥ सत्त्वानुरूपा। सर्वस्य। श्रद्धा। भवति। भारत। श्रद्धामयः। अयं। पुरुषः। यः। यच्छ्रद्धः। सः। एव। सः ॥ ३॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेभारत सर्वप्राणीमात्रकी आपणेअंतःकरणकेअनुसारहीं श्रद्धा होवैहै यह पुरुष श्रद्धामयहोवैहै यातैं जो पुरुष जिसश्रद्धावालाहोवैहै सोपुरुष तत्सदृश हीं होवैहै ॥ ३ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन सत्त्वगुणहैप्रधानजिनोंविषे ऐसेजे त्रिगुणात्मक अपंचीकृतपंचमहाभूतहैं ॥ तिनपंचमहाभूतोंतैंउत्पन्नहुआ यहअंतःकरणप्रकाशस्वभाववालाहोणेतैं सत्त्व इसनामकरिकैकह्याजावैहै ॥ सोअंतःकरण किसीकशरीरविषेतौं उद्भूतसत्त्वगुणवालाहींहोवैहै ॥ जैसे देवतावोंकाअंतःकरणहै ॥ और किसी शरीरविषेतौं सोअंतःकरण रजोगुणकरिकैअभिभूतसत्त्वगुणवालाहोवैहै ॥ जैसे यक्षादिकोंकाअंतःकरणहै ॥ और किसीकशरीरविषेतौं सोअंतःकरण तमोगुण करिकैअभिभूतसत्त्वगुणवालाहोवैहै ॥ जैसे भूतप्रेतादिकोंकाअंतःकरणहै ॥ और मनुष्योंकातौं सोअंतःकरण बाहुल्यताकरिकै व्यामिश्रितहींहोवैहै ॥ सोमनु

प्योंकाअंतःकरण शास्त्रजन्यविवेकज्ञानकरिकै रजोतमोगुणकाअभिभवकरिकै उद्भूतसत्त्वगुणवाला कऱ्याजावैहै ॥ और जेपुरुष शास्त्रजन्यविवेकज्ञानतैं शून्यहैं ॥ तिनसर्वप्राणीमात्रकी तिसआपणेआपणेअंतःकरणकेअनुसारहीं श्रद्धाहोवैहै ॥ अर्थात् तिसअंतःकरणकीविचित्रतातैं तिनप्राणीयोंकी साश्रद्धाभी विचित्रहींहोवैहै ॥ तहां सत्त्वगुणहैप्रधानजिसविषे ऐसेअंतःकरणविषेतैं सात्त्विकीश्रद्धाहोवैहै ॥ और रजोगुणहै प्रधानजिसविषे ऐसेअंतःकरणविषेतैं राजसी श्रद्धाहोवैहै ॥ और तमोगुणहैप्रधानजिसविषे ऐसेअंतःकरणविषेतैं तामसीश्रद्धाहोवैहै इति ॥ हेअर्जुन तिनपुरुषोंकी किसप्रकारकीसानिष्ठाहोवैहै यहजोपूर्व तुमनैंप्रश्नकऱ्याथा ॥ तिसप्रश्नकेउत्तरकूं तूंअब श्रवणकर ॥ यह शास्त्रजन्यज्ञानतैंरहित तथाकर्मकाअधिकारी त्रिगुणात्मकअंतःकरणविशिष्टपुरुष श्रद्धामय होवैहै ॥ तहां जिसविषेश्रद्धाकीबाहुल्यताहोवैहै ताकानाम श्रद्धामयहै ॥ जैसे अन्नकीबाहुल्यतावालेयज्ञकूं अन्नमययज्ञकहेहैं ॥ श्रद्धामयहोणेतैंहीं जोपुरुष जिसश्रद्धावालाहै ॥ अर्थात् जोपुरुष जिससात्त्विकीश्रद्धावालाहै अथवा राजसीश्रद्धावालाहै अथवा तामसीश्रद्धावालाहै ॥ सोपुरुष तिसआपणीश्रद्धाकेअनु सारहीं सात्विक कह्याजावैहै अथवा राजस कह्याजावैहै अथवा तामस कह्याजावैहै ॥ यातैं इसपुरुषकी श्रद्धाकरिकैहीं सानिष्ठा जानीजावैहै इति ॥ तहां महान्भरतकुलविषेजोउत्पन्नहुआहोवै ताकानाम भारतहै ॥ अथवा शास्त्रजन्यज्ञानकानाम भाहै ॥ ताकेविषे जोप्रीतिवालाहोवै ताकानाम भारतहै ॥ इसभा रतसंबोधनकरिकै श्रीभगवान्नैं अर्जुनविषे शुद्धसात्त्विकपणा सूचनकऱ्या इति ॥ ३ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् इसपुरुषकीश्रद्धाहीं इसपुरुषकेनिष्ठाकूं जनावैहै यहवचन पूर्वआपनैं कथनकऱ्या सोसत्यहै ॥ परंतु साश्रद्धा आपअज्ञातहुई तिसनिष्ठाकूं जनावैंगीनहीं ॥ किंतु आपज्ञातहुई साश्रद्धा तिसनिष्ठाकूं जनावैंगी ॥ यातैं इसपुरुषकी साश्रद्धाहीं किसउपायकरिकैजानीजावैहै ॥ ऐसीअर्जुनकीजिज्ञासाकेहुए देवपूजनादिककार्यरूपलिंगकरिकै साश्रद्धा अनुमानकरी जावैहै ॥ इसप्रकारकेउत्तरकूं श्रीभगवान् कथनकरैहै ॥

(मू० श्लो०) यजंतेसात्त्विकादेवान्यक्षरक्षांसिराजसाः ॥ प्रेतान्भूतगणांश्चान्येयजंतेतामसाजनाः ॥ ४ ॥ यंजंते । सात्विकाः । देवान् । यक्षरक्षांसि । राजसाः । प्रेतान् । भूतगणान् । च । अन्ये । यंजंते । तामसाः । जनाः ॥ ४ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन जेपुरुष देवतावोंकूं पूंजनकरेहैं तेपुरुष सात्विक जानणे और जेपुरुष यक्षराक्षसोंकूं पूजनकरेहैं तेपुरुष राजस जानणे और जेपुरुष प्रेतोंकूं तथा भूतगणोंकूं पूंजनकरेहैं तेअन्यपुरुष तामस जानणे ॥ ४ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन शास्त्रजन्यविवेकज्ञानतैंरहित जेपुरुष तास्वभावजन्यश्रद्धाकरिकै वसुरुद्रादिक सात्त्विकदेवतावोंकूं पूजनकरेहैं ॥ तेअन्यपुरुष सात्त्विक जानणे ॥

और शास्त्रजन्यविवेकज्ञानतैंरहित जेपुरुष तिस स्वभावजन्य श्रद्धाकरिकै रजोगुणवाले कुबेरादिकयक्षोंकूं तथानैर्ऋतआदिकराक्षसोंकूं पूजनकरेहैं ॥ तेअन्यपुरुष और शास्त्रजन्यविवेकज्ञानतैंरहित जेपुरुष तास्वभावजन्यश्रद्धाकरिकै तमोगुणवाले प्रेतोंकूं तथाभूतगणोंकूं पूजनकरेहैं ॥ तेअन्यपुरुष तामस जानणे ॥ तहां जेब्राह्मणादिक आपणेधर्मतैंभ्रष्टहोवैहैं ॥ तेब्राह्मणादिक तिसशरीरकेपातहुएतैंअनंतर वायुमयदेहकूंप्राप्तहोइकै उल्कामुखकटपूतनादिकनामवाले प्रेतहोवैहैं ॥ अथवा पिशाचविशेषकानाम प्रेतहै ॥ और सप्तमातृकआदिकोंकानाम भूतगणहै ॥ ईहां (भूतगणांश्चान्ये) इसवचनकेअंतविषेस्थितजोअन्ये यहपदहै ॥ तापदका (सात्त्विकाः राजसाः तामसाः) इनतीनोंपदोंविषे संबंधकरणा ॥ ताकरिकै सात्त्विक राजस तामस इनतीनप्रकारकेपुरुषोंविषे परस्परविलक्षणतासिद्धहोवैहै इति ॥ ४ ॥ ❋ ॥ ॥ इसप्रकार श्रुतिस्मृतिरूपशास्त्रकेपरित्यागकरणेहारेपुरुषोंकी सात्त्विकादिरूपनिष्ठा देवपूजनादिककार्यतैं निर्णयकरी ॥ तहां केईकराजसतामसपुरुषभी पूर्वलेकिसीपुण्यकर्मकेपरिपाकतैं सात्त्विकहोइकै शास्त्रउक्तसाधनोंविषे अधिकारीपणेकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और जेपुरुष आपणेदुराग्रहकरिकै तथापूर्वलेकिसीपापकर्मकेपरिपाकतैंप्राप्तहुएदुर्जनसंगादिकदोषकरिकै तिस राजसतामसभावकूं नहींपरित्यागकरेहैं ॥ तेपुरुष शास्त्रप्रतिपादितसन्मार्गतैंभ्रष्टहुए शास्त्रनिषिद्धअसन्मार्गकेअनुसरणकारिकै इसलोकविषे तथापरलोकविषे केवल दुःखकेहींभागीहोवैहैं ॥ इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् दोश्लोकोंकरिकै प्रतिपादनकरेहै ॥

(मू॰ श्लो॰) अशास्त्रविहितंघोरंतप्यंतेयेतपोजनाः ॥ दंभाहंकारसंयुक्ताःकामरागबलान्विताः ॥ ५ ॥ कर्षयंतःशरीरस्थंभूतग्राममचेतसः ॥ मांचैवांतःशरीरस्थंतान्विद्ध्यासुरनिश्चयान् ॥ ६ ॥ अशास्त्रविहितम् । घोरम् । तप्यंते । ये । तपः । जनाः । दंभाहंकारसंयुक्ताः । कामरागबलान्विताः । कर्षयंतः । शरीरस्थम् । भूतग्रामम् । अचेतसः । माम् । च । एव अंतः । शरीरस्थम् । तान् । वि द्धि । आसुरनिश्चयान् ॥ ५ ॥ ६ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन जे पुरुष अशास्त्रविहित घोर तपकूं करेहैं तथा दंभअहंकारकरिकैसंयुक्तहैं तथाकामरागबलकरिकैयुक्तहैं तथाशरीरविषेस्थित भूतोंकेसमूहकूं कृशकरेहैं तथा अंतर शरीरविषेस्थित मैंपरमेश्वरकूं भी कृश करेहैं तथाविवेकतैंरहित हैं तिनपुरुषोंकूं आसुरनिश्चयवालाहीं जानं ॥ ५ ॥ ६ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जेपुरुष अशास्त्रविहितघोरतपकूं करेहैं ॥ ईहांऋगादिकवेदोंकानाम शास्त्रहै ॥ सोवेदरूपशास्त्र जितनाकी इदानींकालविषे पठनपाठनकरणेविषेप्रसिद्धहै ॥ सोतौं प्रत्यक्षहै ॥ और जोवेदकाभाग इदानींकालविषे कहांभी पठनपाठनकरणेविषे प्रसिद्धनहींहै ॥ सोवेदकाभाग स्मृतिआदिकोंविषेकथनकऱ्येहुएअर्थका मूलरूपकारिकै अनुमानकऱ्याजावैहै ॥ ऐसेप्रत्यक्षरूपशास्त्रनैं तथाअनुमेयरूपशास्त्रनैं जोतप नहींविधानकऱ्याहै तातपकानाम अशास्त्रविहिततपहै ॥

अथवा वेदकेविरोधीबौद्धादिकोंनं रच्याजोआगमहै ताकानाम अशास्त्रहै ॥ तिसअशास्त्रनैं विधानकऱ्याजो तप्तशिलाआरोहणादिकतपहै ताकानाम अशास्त्र विहिततपहै ॥ कैसाहैसोतप घोरहै ॥ अर्थात् कर्त्तापुरुषकूं तथाअन्यप्राणीयोंकूं केवल पीडाकीहींप्राप्तिकरणेहाराहै ॥ ऐसे अशास्त्रविहितघोरतपकूंहीं जेपुरुष सर्वदाकरेहैं ॥ तथा जेपुरुष दंभ अहंकार इनदोनोंकरिकै संयुक्तहैं ॥ तहां सर्वलोक हमारेकूंधर्मात्माकहैं याप्रकारकी इच्छाराखिकै तिनलोकोंविषे जो आपणा धार्मिकपणा प्रगटकरणाहै ताकानाम दंभहै और सर्वगुणोंकरिकै मैंहीं सर्वतैंश्रेष्ठहूं याप्रकारका जोदुष्टअभिमानहै ताकानाम अहंकारहै ॥ ऐसे दंभ अहंकार दोनों करिकै जेपुरुष सम्यक्युक्तहैं ॥ तहां दंभअहंकारकेयोगविषे जो आयासतैंविनाहीं वियोगकेउत्पत्तिकरणेका असामर्थ्यहै यहहीं सम्यक्पणाहै ॥ तथा जेपुरुष कामरागबलकरिकैयुक्तहैं ॥ तहां कामनाकेविषयभूत जे शब्दस्पर्शादिकविषयहैं ॥ तिनविषयोंकानाम कामहै ॥ तिनविषयरूपकामोंविषे जोअत्यंतआसक्तिहै ताकानाम रागहै ॥ और सोरागहैनिमित्तजिसविषे ऐसाजो अतिउग्रदुःखोंकेसहनकरणेका सामर्थ्यहै ताकानाम बलहै ॥ ऐसेकामरागबलकरिकै जेपुरुष सर्वदायुक्तहैं ॥ अथवा शब्दस्पर्शादिकविषयोंविषे जाअभिलाषाहै ताकानाम कामहै ॥ और सर्वदा तिनविषयोंविषे अभिनिविष्टत्वरूप जो अभिष्वंगहै ताकानाम रागहै ॥ और इसविषयकूं मैं अवश्यकरिकैसंपादनकरूंगा याप्रकारकाजोआग्रहहै ताकानाम बलहै ॥ ऐसे काम राग बल इनतीनोंकरिकै जेपुरुष सर्वदायुक्तहैं ॥ इसीकारणतैंहीं बलवान्दुःखकूंदेखिकैभी नहींनिवर्त्तमानहुए जेपुरुष शरीरविषेस्थितभूतोंकेसमूहकूं कृशकरेहैं ॥ अर्थात् देहइंद्रियादिरूपसंघातकेआकारकरिकै परिणामकूंप्राप्तहुए जेपृथिवीआदिकपंचभूतहैं ॥ तिनभूतोंकेसमूहकूं जेपुरुष व्यर्थउपवासादिकोंकरिकै कृशकरेहैं ॥ तथा इसशरीरकेअंतर भोक्तारूपकरिकैस्थित जोमैंपरमेश्वरहूं ॥ तिसमैंपरमेश्वरकूंभी जेपुरुष इसभोग्यशरीरकेकृशकरणेकरिकै कृशकरेहैं ॥ अथवा अंतर्यामीरूपकरिकै इसशरीरविषेस्थित जो बुद्धिका तथाताबुद्धिकेवृत्तियोंका साक्षीरूप मैंपरमेश्वरहूं ॥ तिसमैंपरमेश्वरकूं जेपुरुष हमारीशास्त्ररूपआज्ञाकाउल्लंघनकरिकैकृशकरेहैं ॥ इसीकारणतैंहीं जेपुरुष अचेतसहैं ॥ अर्थात् विवेकतैंशून्यहैं ॥ ऐसे इसलोककेसर्वभोगोंतैं विमुख तथापरलोकविषेअधमगतिकूंप्राप्तहोणेहारे सर्वपुरुषार्थोंतैंभ्रष्ट तिनपुरुषोंकूं तूंअर्जुन आसुरनिश्चयजान ॥ तहां आसुरहै क्या विपरीतभावनायुक्तहै वेदअर्थकाविरोधीनिश्चय जिनोंका तिनोंकानाम आसुरनिश्चयहै ॥ अर्थात् तेपुरुष यद्यपि मनुष्यरूपकरिकेप्रतीतहोवैहैं ॥ तथापि तेपुरुष असुरोंकेहीं कर्मोंकूंकरेहैं ॥ यातैं तिनपुरुषोंकूं तूंअर्जुन असुररूपहीं जान ॥ अर्थात् तिनपुरुषोंकूं असुररूपजानिकै तिनोंकीउपेक्षाकर इति ॥ ईहां (आसुरनिश्चयान्) इसवचनविषे तिनपुरुषोंकेनिश्चयविषे आसुरपणा कथनकऱ्या ॥ यातैं तिसनिश्चयपूर्वक जितनीकी तिनपुरुषोंकेअंतःकरणकीवृत्तियांहैं ॥ तिनसर्ववृत्तियोंविषेभी सोआसुरपणाहीं जानणा ॥ और असुरत्वजातितैंरहितमनुष्योंविषे साक्षात्असुरपणा रहतानहीं ॥ किंतु

दुष्टकर्मोंकेकरणेकरिकैहीं मनुष्योंविषे असुरपणा प्राप्तहोवैहै ॥ इसकारणतैंहीं श्रीभगवान्नैं (तान्असुरान्विद्धि) इसप्रकार तिनपुरुषोंविषे साक्षात्असुरपणा कथनकऱ्यानहीं ॥ किंतु आसुरनिश्चयकरिकैहीं तिनोंविषेअसुरपणाकथनकऱ्याहै इति ॥ ५ ॥ ६ ॥ ❀ ॥ तहां जे सात्त्विकहैं तेतौं देवहैं ॥ और जे राजसहैं तथातामसहैं ते विपरीतबुद्धिवालेहोणेतैं असुरहैं ॥ यहअर्थ पूर्व निर्णयकऱ्या ॥ अबश्रीभगवान् सात्त्विककोंकेग्रहणकरावणेवास्तैं तथाराजसतामसोंके परित्यागकरावणेवास्तै आहार यज्ञ तप दान इनच्यारोंके त्रिविधपणेकूंकथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) आहारस्त्वपिसर्वस्यत्रिविधोभवतिप्रियः ॥ यज्ञस्तपस्तथादानंतेषांभेदमिमंशृणु ॥ ७ ॥ आहारः । तु । अपि । सर्वस्य । त्रिविधः । भवति । प्रियः । यज्ञः । तपः । तथा । दानं । तेषां । भेदम् । इमं । शृणु ॥ ७ ॥ (इतिप०) ॥ हेअर्जुन पुनः सर्वप्राणीयोंका प्रिय आहार भी तीनप्रकारकाहीं होवैहै तथा यज्ञ तप दान यहभी तीनप्रकारकेहींहोवेहैं तिनआहारादिकोंके इस सात्विकादिकभेदकूं तूं श्रवणकर ॥ ७ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन पूर्वकथनकरीहुई श्रद्धाहीं केवल तीनप्रकारकीनहींहोवैहै ॥ किंतु सर्वप्राणीयोंका प्रियआहारभी सात्त्विक राजस तामस इसभेदकरिकै तीन प्रकारकाहीं होवैहै ॥ च्यारिप्रकारकाहोवैनहीं ॥ काहेतैं सर्वपदार्थोंकूं त्रिगुणात्मकहोणेतैं तिसतैंभिन्न चौथाकोईप्रकार संभवतानहीं ॥ तहांभक्ष्य भोज्य लेह्य चोष्य यहजोच्यारिप्रकारका अन्नहै ताकानाम आहारहै ॥ हेअर्जुन क्षुधाकीनिवृत्तिरूपदृष्टअर्थकीसिद्धिकरणेहारा सोआहार जैसे सात्त्विकादिकभेदकरिकै तीन प्रकारकाहै ॥ तैसे धर्मकीउत्पत्तिद्वारा स्वर्गादिरूपअदृष्टअर्थकीसिद्धिकरणेहारे जे यज्ञ तप दान यहतीनोंहैं ॥ ते यज्ञ तप दान तनिोंभी सात्त्विक राजस तामस इसभेदकरिकै तीनप्रकाकेहींहोवैहैं ॥ तहां अग्निआदिकदेवतावोंकाउद्देशकरिकै जोघृतादिकद्रव्यकापरित्यागहै ताकानाम यज्ञहैं ॥ और शरीरइंद्रियोंकूंशोषणकरणेहारेजे कृच्छ्रचांद्रायणादिकहैं तिनोंकानाम तपहै ॥ और आपणेममत्वकेविषयभूत जे सुवर्ण गौ अन्न गृह इत्यादिकपदार्थहैं ॥ तिनसुवर्णादिकपदार्थोंविषे आपणेममत्वकापरित्यागकरिकै जो ब्राह्मणादिकोंकाममत्वसंपादनकरणाहै ताकानाम दानहै ॥ ऐसे आहारयज्ञ तप दान च्यारोंका जो सात्त्विक राजस तामस यह तीनप्रकारकाभेदहै सो यह भेद मैं तुमारेप्रति स्पष्टकरिकै कथनकरताहूं ॥ तिसभेदकूं तू सावधानहोइकैश्रवणकरइति ॥ ७ ॥ ❀ ॥ अब आहार यज्ञ तप दान इनच्यारोंके सात्त्विक राजस तामस इसतीन प्रकारकेभेदकूं श्रीभगवान् पंचदशश्लोकोंकरिकै कथनकरेहै ॥ तिसविषेभी प्रथम आहारकेसात्त्विकादिकभेदकूं तीन श्लोकोंकरिकै कथनकरेहै ॥

(मू॰ श्लो॰) आयुःसत्वबलारोग्यसुखप्रीतिविवर्धनाः ॥ रस्याःस्निग्धाःस्थिराहृद्याआहाराःसात्विकप्रियाः ॥ ८ ॥ आयुःसत्वबलारोग्यसुखप्रीतिविवर्धनाः । रस्याः । स्निग्धाः । स्थिराः । हृद्याः । आहाराः । सात्विकप्रियाः ॥ ८ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन आयुष सत्व बल आरोग्यसुख प्रीति इनसवोंकूं वधावणेहारे तथा रस्य स्निग्ध स्थिर हृद्य ऐसे आहार सात्विकपुरुषोंकूं प्रियहोवैहैं ॥ ८ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ तहां चिरकालपर्यंतजीवनकानाम आयुषहै ॥ और बलवान्दुःखकेप्राप्तहुएभी निर्विकारपणेकासंपादक जोचित्तकाधैर्यहै ताकानाम सत्वहै ॥ अथवा उत्साहकानाम सत्वहै ॥ और आपणेकूंकरणेविषेउचितजोकार्यहै ताकार्यविषे परिश्रमकेअभावकाप्रयोजक जोशरीरकासामर्थ्यहै ताकानाम बलहै॥और ज्वरशूलादिकव्याधियोंका जोअभावहै ताकानाम आरोग्यहै ॥ और भोजनतैंअनंतर जोअंतर आह्लादतृप्तिहै ताकानाम सुखहै॥औरभोजनकालविषे जो अरुचितैंरहितपणाहै अर्थात् तिसभोजनविषयकइच्छाकीउत्कटताहै ताकानाम प्रीतिहै ॥ ऐसेआयुष सत्वबल आरोग्य सुखप्रीति इनसवोंकूं जेआहार वधावणेहारेहैं ॥ तथा जे आहार रस्यहैं॥अर्थात् मधुररसकी प्रधानताकरिकै जेआहार अत्यंतस्वादुहैं ॥ तथा जेआहार स्निग्धहैं ॥ अर्थात् स्वभावसिद्धस्नेहकरिकै तथाआगंतुक घृतादिरूपस्नेहकरिकै जेआहार युक्तहैं ॥ तथा जेआहार स्थिरहैं ॥ अर्थात् जेआहार रसादिकअंशकरिकै शरीरविषे चिरकालपर्यंत स्थायीहैं ॥ तथा जेआहार हृद्यहैं ॥ अर्थात् दुर्गंधअशुचित्वादिक दृष्टअदृष्टदोषोंतैंरहितहोणेतैं जेआहार आपणेदर्शनमात्रकरिकैहीं हृदयकीप्रसन्नताकरणेहारेहैं ॥ इसप्रकारकेगुणोंकरिकै युक्तजे भक्ष्य भोज्य लेह्य चोष्य यहच्यारिप्रकारकेआहारहैं ॥ तेआहार सात्विकपुरुषोंकूंहीं प्रियहोवैहैं ॥ अर्थात् इनपूर्वउक्तलक्षणोंकरिकैतेआहारसात्त्विकजानणे ॥ तथा सात्विकपणेकीइच्छाकरणेहारेपुरुषोंनैं यहपूर्वउक्तआहारहीं ग्रहणकरणेयोग्यहैं इति ॥ ८ ॥ ❀ ॥

(मू॰ श्लो॰) कट्वम्ललवणात्युष्णतीक्ष्णरूक्षविदाहिनः । आहाराराजसस्येष्टादुःखशोकामयप्रदाः ॥ ९ ॥ कट्वम्ललवणात्युष्णतीक्ष्णरूक्षविदाहिनः । आहाराः । राजसस्य । इष्टाः । दुःखशोकामयप्रदाः ॥ ९ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन कटु अम्ल लवण अतिउष्ण तीक्ष्ण रूक्ष दाहकरणेहारे तथा दुःखशोकरोगइनतीनोंकीप्राप्तिकरणेहारे ऐसेआहार राजसपुरुषोंकूंहीं प्रियहोवैहैं ॥ ९ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ ईहां (अतिउष्ण) इस वचनविषेजो अति यहशब्दहै॥तिसअतिशब्दका कटुआदिकसप्तशब्दोंकेसाथि अन्वयकरणा ॥ ताकरिकैयहअर्थसिद्धहोवैहै ॥

जेआहार अतिकटुहैं तथाअतिअम्लहैं तथाअतिलवणहैं ॥ तथाअतिउष्णहैं तथाअतितीक्ष्णहैं तथाअतिरूक्षहैं तथाअतिदाहकरणेहारेहैं इति ॥ तहां निंबादिक आहार अतिकटु कह्येजावैहैं ॥ और निंबुजंबीरादिकआहार अतिअम्ल कह्येजावैहैं ॥ और सैंधवादिकआहार अतिलवण कह्येजावैहैं ॥ और जिसआहारकेभक्षणकरतेहुए मुख तथाहस्त दाहहोवैहै सोआहार अतिउष्ण कह्याजावैहै ॥ और मरीचादिकआहार अतितीक्ष्ण कह्येजावैहैं ॥ और स्नेहतैंरहित जे कंगुकोद्रवादिकआहारहैं तेआहार अतिरूक्ष कह्येजावैहैं ॥ और अत्यंतसंतापकीप्राप्तिकरणेहारेजे राजिकादिकआहारहैं तेआहार अति विदाहीकह्येजावैहैं इति ॥ तथा जेआहार दुःख शोक आमय इनतीनोंकीप्रातिकरणेहारेहैं ॥ तहां तात्कालिकजापीडाहै ताकानाम दुःखहै ॥ और पश्चात्भाविजोदौर्मनस्यहै ताकानाम शोकहै ॥ और ज्वरादिकरोगोंकानाम आमयहै ॥ ऐसे दुःखशोकआमयकूं जेआहार वातपित्तादिकधातुवोंकीविषमताद्वारा प्राप्तकरेहैं तिनआहारोंकानाम दुःखशोकामयप्रदाहै ॥ ऐसेआहार राजसपुरुषोंकूंहीं प्रियहोवैहैं ॥ अर्थात् इनपूर्वउक्तलक्षणोंकरिकै तेआहार राजस जानणे ॥ ऐसे राजसआहार सात्विकपुरुषोंनें अवश्यकरिकै परित्यागकऱ्येचाहिये ॥ इति ॥ ९ ॥ ❁ ॥

(मू० श्लो०) यातयामंगतरसंपूतिपर्युषितंचयत् ॥ उच्छिष्टमपिचामेध्यंभोजनंतामसप्रियम् ॥ १० ॥ यातयामं । गतरसं । पूति । पर्युषितं । च । यत् । उच्छिष्टम् । अपि । च । अमेध्यं । भोजनं । तामसप्रियम् ॥ १० ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन जोआहार यातयामहै तथागतरसहै तथापूतिहै तथा पर्युषितहै तथाउच्छिष्टहै तथा अमेध्यहै सोआहार तामसपुरुषोंकूंहींप्रियहोवैहै ॥ १० ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जोआहार यातयामहै अर्थात् अर्धपक्कहुआहै ॥ तथा जोआहार गतरसहै अर्थात् अत्यंतपकणेकरिकैशुष्कहुआ जोआहार विरसताकूं प्राप्तहुआहै ॥ अथवा अग्निकरिकै पक्कहुआ जोओदनादिकआहार प्रहरादिककालकेव्यवधानकरिकै शीतलताकूंप्राप्तहोवैहै तिसआहारकानाम यातयामहै ॥ और जिसआहारका सारअंश निकासिलीयाहै ताआहारकानाम गतरसहै ॥ जैसे मथनकऱ्येहुएदुग्धादिकहैं ॥ तथा जो आहार पूतिहै ॥ अर्थात् जोआहार दुर्गंध वालाहै ॥ तथा जोआहार पर्युषितहै ॥ अर्थात् अग्निकरिकैपक्कहुआ जोआहार एकरात्रिके व्यवधानकरिकै भोजनकर्त्तापुरुषकूं तात्कालिकउन्मादकीप्राप्ति करणेहाराहै ॥ ईहां (पर्युषितंचयत्) इसवचनविषेस्थितजो च यहशब्दहै ॥ सोचशब्द इसप्रकारकेअत्यंतदुष्टपणेकरिकैप्रसिद्ध अन्यआहारोंकेभी समुच्चयकरावणे वास्तैहै ॥ तथा जोआहार उच्छिष्टहै ॥ अर्थात् भोजनकरिकैपीछेरह्याजोअन्नहै ॥ तथा जोआहार अमेध्यहै ॥ अर्थात् यज्ञकेअयोग्य जेअशुचि मांसमत्स्या

दिकहैं ॥ ईहां (उच्छिष्टमपिचामेध्यम्) इसवचनविषेस्थितजो (अपिच) यहशब्दहै ॥ सोशब्द वैद्यकशास्त्रविषेकथनकऱ्येहुए अपथ्यआहारोंकेसमुच्चय करावणेवासतैंहै ॥ इसप्रकारकेलक्षणोंकरिकैयुक्तजोआहारहै ॥ सोआहार तामसपुरुषोंकूंहीं प्रियहोवैहै ॥ अर्थात् इनपूर्वउक्तलक्षणोंकरिके तिसआहारकूं तामस जानणा ॥ ऐसातामसआहार सात्विकपुरुषोंनैं अत्यंतदूरतैंहीं परित्यागकरणा इति ॥ ऐसेतामसआहारविषे दुःखशोकादिकोंकीकारणता अत्यंत प्रसिद्धहींहै ॥ यातैं श्रीभगवानूनैं साक्षात्मुखतैंकथनकरीनहीं ॥ ईहां श्रीभगवानूनैं यथाक्रमकरिकै तीनप्रकारके आहारवर्ग कथनकऱ्येहैं ॥ तहां (रस्याः) इत्यादिकतौं सात्विकआहारवर्ग कथनकऱ्याहै ॥ और (कट्वम्ल) इत्यादिक राजसआहारवर्ग कथनकऱ्याहै ॥ और (यातयामम्) इत्यादिक तामसआहारवर्ग कथनकऱ्याहै ॥ इसप्रकार तीनप्रकारकेआहारवर्ग कथनकऱ्येहैं ॥ तहां राजसआहारवर्ग तथातामसआहारवर्ग इनदोनों वर्गोंविषे सात्विकआहारवर्गका विरोधीपणाहीं जानणा ॥ सोप्रकार दिखावैहैं ॥ तहां अतिकटुत्वादिक रस्यत्वकेविरोधीहींहोवैहैं ॥ जिसकारणतैं अतिकटुत्वादिकआहार अत्यंतस्वादुहोवैनहीं ॥ यहवार्त्ता सर्वलोकोंविषेप्रसिद्धहींहै ॥ और रूक्षपणा स्निग्धपणेकाविरोधीहोवैहै ॥ और अतितीक्ष्णपणा तथाअतिविदाहकपणा यहदोनों धातुवोंकेपोषणकाविरोधीहोणेतैं स्थिरताकेविरोधीहींहोवैहैं ॥ और अतिउष्णत्वादिक हृद्यत्वकेविरोधीहोवैहैं ॥ और आमयप्रदत्व आयुः सत्व बल आरोग्य इनच्यारोंका विरोधीहोवैहै ॥ और दुःखशोकप्रदत्व सुखप्रीति इनदोनोंका विरोधीहोवैहै ॥ इसरीतिसैं राजस आहारवर्गविषे सात्विकआहारवर्गकाविरोधीपणा स्पष्टहींहै ॥ इसप्रकार तामसआहारवर्गविषेभी गतरसत्व यातयामत्व पर्युषितत्व यहतीनों यथायोग्य रस्यत्व स्निग्धत्व स्थिरत्व इनतीनोंके विरोधीहींहै ॥ और पूतित्व उच्छिष्टत्व अमेध्यत्व यहतीनों हृद्यत्वकेविरोधीहैं ॥ और तामस आहारवर्गविषे आयुःसत्वादिकोंकाविरोधीपणातौं स्पष्टहींहै ॥ तहां राजसआहारवर्गविषेतौं केवल दृष्टविरोधमात्रहींहोवैहै ॥ और तामसआहारवर्गविषेतौं दृष्टविरोध तथा अदृष्टविरोध दोनोंहींहोवैहैं ॥ इतनीदोनोंविषे परस्पर विशेषताहै इति ॥ १० ॥ ❀ ॥ तहां पूर्व (आयुःसत्व) इत्यादिकतीनश्लोकोंकरिकै श्रीभगवानूनैं यथाक्रमतैं सात्विक राजस तामस यहतीनप्रकारकाआहार कथनकऱ्या ॥ अब (अफलाकांक्षिभिः) इत्यादिकतीनश्लोकोंकरिकै श्रीभगवान् यथाक्रमतैं सात्विक राजस तामस इनतीनप्रकारकेयज्ञोंकूं कथनकरैहै ॥

(मू० श्लो०) अफलाकांक्षिभिर्यज्ञोविधिदृष्टोयइज्यते ॥ यष्टव्यमेवेतिमनःसमाधायससात्विकः ॥ ११ ॥ अफलाकांक्षिभिः । यज्ञः । विधिदृष्टः । यः । इज्यते । यष्टव्यम् । एव । इति । मनः । समाधाय । सः । सात्विकः ॥ ११ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन

फलकीइच्छातैंरहितपुरुषोंनैं यहअवश्यकर्त्तव्य हीं हैं इसप्रकार मनकूं निश्चितकरिकै जो शास्त्रविहित यज्ञ अनुष्ठानकरीताहै सोयज्ञ सात्विक कह्याजावैहै ॥ ११ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन अग्निहोत्र दर्शपूर्णमास चातुर्मास्य ज्योतिष्टोम इत्यादिकोंकानाम यज्ञहै ॥ सोयज्ञ दोप्रकारकाहोवैहै ॥ एककाम्ययज्ञहोवैहै ॥ दूसरानित्य यज्ञहोवैहै ॥ तहां (दर्शपूर्णमासाभ्यांस्वर्गकामोयजेत) इत्यादिकवचनोंनैं स्वर्गादिकफलकेसंयोगकरिकै विधानकऱ्याजो यज्ञहै ॥ सोयज्ञ काम्ययज्ञ कह्याजा वैहै ॥ सोकाम्ययज्ञतौं सर्वअंगोंकीसंपूर्णतापूर्वक इसपुरुषनैं आपहीं अनुष्ठानकरीताहै ॥ ब्राह्मणादिकप्रतिनिधिद्वारा अनुष्ठानकरीतानहीं ॥ और (यावज्जीवमग्नि होत्रंजुहोति) इत्यादिकवचनोंनैं फलकेसंयोगतैंविनाहीं केवलजीवनादिकनिमित्तकेसंयोगकरिकै विधानकऱ्याजोयज्ञहै ॥ जोयज्ञ सर्वअंगोंकीपूर्णताकेअभावहुए ब्राह्मणादिकप्रतिनिधिकरिकैभी अनुष्ठानकऱ्याजावैहै ॥ सोयज्ञ नित्ययज्ञ कह्याजावैहै ॥ तहां सर्वअंगोंकीसंपूर्णताकेअभावहुएभी प्रतिनिधिकूंग्रहणकरिकै हमारेकूं अवश्यकरिकै सोनित्यकर्म करणेयोग्यहै ॥ जिसकारणतैं प्रत्यवायकीनिवृत्तिकरणेवासतै वेदभगवान्नैं आवश्यक जीवनादिकनिमित्तकरिकै सोनित्यकर्म विधान कऱ्याहै ॥ इसप्रकारतैं आपणेमनकूंनिश्चितकरिकै अंतःकरणकेशुद्धिकीइच्छावान्होणेतैं काम्यकर्मोंकेअनुष्ठानतैंविमुखपुरुषोंनैं शास्त्रप्रमाणतैंनिश्चयकऱ्याहुआ जोयज्ञ अनुष्ठानकरीताहै ॥ सोशास्त्रप्रमाणतैं अंतःकरणकीशुद्धिवासतै अनुष्ठानकऱ्या नित्ययज्ञ सात्विक कह्याजावैहै इति ॥ ११ ॥ ॥

(मू॰ श्लो॰) अभिसंधायतुफलंदंभार्थमपिचैवयत् ॥ इज्यतेभरतश्रेष्ठतंयज्ञंविद्धिराजसम् ॥ १२ ॥ अभिसंधाय । तु । फलं । दंभार्थम् । अपि । च । एव । यत् । इज्यते । भरतश्रेष्ठ । तं । यज्ञं । विद्धि । राजसम् ॥ १२ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेभरतवंशविषे श्रेष्ठअर्जुन पुनः स्वर्गादिकफलकूं उद्देशकरिकै तथा दंभकेवासतै भी जोयज्ञ अनुष्ठानकऱ्याजावैहै तिस यज्ञकूं तूं राजस जान ॥ १२ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेभरतकुलविषेश्रेष्ठअर्जुन पुरुषोंकीकामनाकेविषयभूत जेस्वर्गादिकफलहैं ॥ तिसस्वर्गादिकफलका उद्देशकरिकै जोयज्ञ अनुष्ठानकऱ्याजावैहै ॥ अंतःकरणकेशुद्धिकाउद्देशकारिकै जोयज्ञ अनुष्ठानकऱ्याजातानहीं ॥ और यहसर्वलोक हमारेकूं धर्मात्माकहैं याप्रकारकीइच्छाकरिकै जोलोकोंविषे आपणा धर्मात्मापणा प्रगटकरणाहै ताकानाम दंभहै ॥ ऐसेदंभवासतैभी जोयज्ञ अनुष्ठानकऱ्याजावैहै ॥ ईहां (अपिचैव) यहवचन विकल्पसमुच्चय इनदोनोंकेकथनकरिकै तीनपक्षोंकेसूचनकरणेवासतैहै ॥ तहां कोईकयज्ञतौं दंभकेवासतैनहींकऱ्याहुआभी पारलौकिकस्वर्गादिकफलकाउद्देशकरिकैहीं कऱ्याजावैहै ॥ तथा कोईकयज्ञतौं

पारलौकिक स्वर्गादिकफलका नहीं उद्देशकरिकैभी केवल दंभकेवासतैहीं कऱ्याजावैहै ॥ इसप्रकारकेविकल्पकरिकै दोपक्ष सिद्धहोवैहैं ॥ और कोईकयज्ञतौं पारलौकिकस्वर्गादिकफलवासतैभी तथाइसलोककेदंभवासतैभी कऱ्याजावैहै ॥ इसप्रकार दोनोंकासमुचयकरिकै एकपक्ष सिद्धहोवैहै ॥ इसप्रकारतैं दृष्टफलका उद्देशकरिकै अथवा अदृष्टफलका उद्देशकरिकै अथवा दृष्टअदृष्टदोनोंफलोंका उद्देशकरिकै शास्त्रकेअनुसार जोयज्ञ अनुष्ठानकऱ्याजावैहै ॥ तिसयज्ञकूं तूं राजसयज्ञ जान ॥ अर्थात् तिस यज्ञकूं तूं राजसजानिकै परित्यागकर ॥ ईहां (हेभरतश्रेष्ठ) इससंबोधनकरिकै श्रीभगवान्नैं अर्जुनविषे तिसराजसकर्मकेपरित्यागकरणेकीयोग्यता सूचनकरी ॥ और (अभिसंधायतु) इसवचनकेअंतविषेस्थितजो तु यहशब्दहै ॥ सोतुशब्द पूर्वश्लोकउक्त नित्यकर्मरूपसात्विकयज्ञतैं इसकाम्यकर्मरूपराजसयज्ञविषे विलक्षणताकेसूचनकरणेवासतैहै इति ॥ १२ ॥

(मू० श्लो०) विधिहीनमसृष्टान्नंमंत्रहीनमदक्षिणम् ॥ श्रद्धाविरहितंयज्ञंतामसंपरिचक्षते ॥ १३ ॥ विधिहीनम् । असृष्टान्नम् । मंत्रहीनम् । अदक्षिणम् । श्रद्धाविरहितम् । यज्ञम् । तामसम् । परिचक्षते ॥ १३ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन जोयज्ञ शास्त्रविधितैंरहितहै तथा अन्नदानतैंरहितहै तथामंत्रतैंरहितहै तथादक्षिणातैंरहितहै तथाश्रद्धातैंरहितहै ऐसेयज्ञकूं वेदवेत्ताशिष्टपुरुष तामसयज्ञ कहेहैं ॥ १३ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जोयज्ञ विधिहीनहै ॥ अर्थात् जिसप्रकारतैं शास्त्रनैं तिसयज्ञकरणेकाविधानकऱ्याहै तिसशास्त्र उक्तरीतितैं जोयज्ञ विपरीतहै ॥ तथा जोयज्ञ असृष्टान्नहै ॥ अर्थात् जिसयज्ञविषे ब्राह्मणादिकोंकेतांई अन्नदान नहींकऱ्याजावैहै ॥ तथा जोयज्ञ मंत्रहीनहै ॥ अर्थात् उदात्तादिकस्वरोंकरिकै तथा ककारादिकवर्णोंकरिकै मंत्रोंतैंरहितहै ॥ तथा जोयज्ञ दक्षिणातैंरहितहै ॥ तथा ऋत्विजब्राह्मणविषयकद्वेषादिकोंकरिकै जोयज्ञ श्रद्धातैंरहितहै ॥ ऐसेयज्ञकूं वेदवेत्ताशिष्टपुरुष तामसयज्ञ कहेहैं इति ॥ तहां विधिहीनत्व असृष्टान्नत्व मंत्रहीनत्व अदक्षिणत्व श्रद्धाविरहितत्व यहजे पंचविशेषण कथनकऱ्येहैं ॥ तिन पंचविशेषणोंकेमध्यविषे एकएकविशेषणकरिकैयुक्तहुआ सोतामसयज्ञ पंचप्रकारका सिद्धहोवैहै ॥ और तिनपांचोंविशेषणोंकरिकैयुक्तहूआ सोतामसयज्ञ एकप्रकारका सिद्धहोवैहै ॥ इसप्रकारतैं षट्तामसयज्ञ सिद्धहोवैहैं ॥ और तिनपांचविशेषणोंकेमध्यविषे दोविशेषणोंकरिकैयुक्तहुआ सोतामसयज्ञ भिन्नहींसिद्धहोवैहै ॥ और तीनविशेषणोंकरिकैयुक्तहुआ सोतामसयज्ञ भिन्नहींसिद्धहोवैहै ॥ और च्यारिविशेषणोंकरिकैयुक्तहुआ सोतामसयज्ञ भिन्नहींसिद्धहोवैहै ॥ इसप्रकारतैं तिसतामसयज्ञके बहुतप्रकारकेभेद सिद्धहोवैहैं ॥ तहां पूर्वउक्तराजसयज्ञविषे अंतःकरणकीशुद्धिकेअभावहुएभी स्वर्गादिकफलोंकीप्राप्तिकरणेहारा

धर्मरूप अपूर्व अवश्यकरिकैउत्पन्नहोवैहै ॥ काहेतैं सोराजसयज्ञ शास्त्रकीविधिपरिमाणहीं अनुष्ठानकऱ्याजावैहै ॥ और यहतामसयज्ञतौंशास्त्रकीविधिपरिमाण अनु ष्ठानकऱ्याजातानहीं ॥ यातैं तिसतामसयज्ञतैं कोईभी धर्मरूपअपूर्व उत्पन्नहोतानहीं ॥ इतनादोनोंविषे परस्परभेदहै इति ॥ १३ ॥ ❀ ॥ तहां (अफलाकांक्षिभिः) इत्यादिकतीनश्लोकोंकरिकै श्रीभगवानूनैं यथाक्रमतैं सात्त्विक राजस तामस यहतीनप्रकारकेयज्ञ कथनकऱ्ये ॥ अब सात्त्विक राजस तामस इसतीनप्रकारकेतपकेकथनकरणेवासतै श्रीभगवान् प्रथम तीनश्लोकोंकरिकै यथाक्रमतैं शारीर वाचिक मानस इसभेदकरिकै तिसतपकी तीनप्रकारताकूं कथनकरैहै ॥

(मू० श्लो०) देवद्विजगुरुप्राज्ञपूजनंशौचमार्जवम् ॥ ब्रह्मचर्यमहिंसाचशारीरंतपउच्यते॥१४॥ देवद्विजगुरुप्राज्ञपूजनं । शौचम् । आर्जवं । ब्रह्मचर्यं । अहिंसा । च । शारीरं । तपः । उच्यते ॥ १४ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन देवद्विजगुरुप्राज्ञइनसर्वो कापूजन तथा शरीरकीशुद्धि तथाआर्जव तथा ब्रह्मचर्य तथा अहिंसा यह सर्व शारीर तप कह्यांजावैहै ॥ १४ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन ब्रह्मा विष्णु शिव सूर्यअग्नि दुर्गा इत्यादिकोंकानाम देवहै ॥ ऐसेब्रह्मादिकदेवोंकाजोपूजनहै ॥ और सदाचारकरिकै युक्तजेउत्तमब्राह्मणहैं तिनोंकानाम द्विजहै ॥ ऐसेद्विजोंकाजोपूजनहै ॥ और पिता माता आचार्य इत्यादिकवृद्धपुरुषोंकानाम गुरुहै ॥ ऐसेगुरुवोंकाजो पूजनहै ॥ वेदोंकेपाठकूं तथावेदोंकेअर्थकूं जानणेहारे जेपंडितहैं तिनोंकानाम प्राज्ञहै ॥ ऐसेप्राज्ञोंकाजोपूजनहै ॥ ईहां शास्त्रकीविधिपरिमाण श्रद्धाभक्तिपूर्वक यथायोग्य जो तिनदे वादिकोंकेतांई प्रमाण शुश्रूषा प्रदक्षिणा अन्नदान इत्यादिकोंकाकरणाहै ॥ यहहीं तिनदेवादिकोंका पूजनहै इति ॥ और मृत्तिकाजलकरिकै जोशरीरकीशुद्धिरूप शौचहै ॥ और आर्जवजोहै ॥ तहां अंतःकरणकीअकुटिलतारूपजोआर्जवहै ॥ सोआर्जवतौं (भावसंशुद्धिः) इसशब्दकरिकै श्रीभगवान् आगे मानसतपविषे कथनकरैगा ॥ यातैं ईहां आर्जवशब्दकरिकै ताअकुटिलताका ग्रहणकरणानहीं ॥ किंतु शास्त्रविहितकर्मविषेजाप्रवृत्तिहै तथाशास्त्रनि षिद्धकर्मतैं जानिवृत्तिहै साएकरूपप्रवृत्तिहै साएकरूपप्रवृत्तिहीं ईहां आर्जवशब्दकरिकैग्रहणकरणी और शास्त्र निषिद्धमैथुनतैंनिवृत्तिरूप जो ब्रह्मचर्यहै ॥ तथा शास्त्रनिषिद्ध प्राणीयोंकेपीडनकाअभावरूप जाअहिंसाहै ॥ ईहां (अहिंसाच) इसवचनविषेस्थितजोचकारहै ॥ ताचकारकरिकै अस्तेय अपरिग्रह इनदो नोंकाभी ग्रहणकरणा ॥ इसप्रकार देवपूजनतै आदिलैके अहिंसापर्यंत सर्वहींशारीरतप कह्याजावैहै ॥ तहां शरीरहैप्रधानजिनोंविषे ऐसेजे कर्त्तादिकहैं तिनोंकरिकै

जोतपसिद्धहोवैहै ताकानाम शारीरतपहै ॥ केवल शरीरमात्रकरिकै जोतप सिद्धहोवैहै ताकानाम शारीरतप नहींहै ॥ काहेतैं (अधिष्ठानंतथाकर्त्ताकरणंचपृथग्विधम् ॥ विविधाश्चपृथक्चेष्टादैवंचैवात्रपंचमम् ॥ शरीरवाङ्मनोभिर्यत्कर्मप्रारभतेनरः ॥ न्याय्यंवाविपरीतंवापंचैतेतस्यहेतवः) इनदोनोंश्लोकोंकरिकै श्रीभगवान् आगेअष्टादशेअध्यायविषे अधिष्ठान कर्त्ता करण चेष्टा दैव इनपांचोंविषेहीं सर्वकर्मोंकीकारणता कथनकरैंगा ॥ इसीप्रकारकीरीति आगे वाचिकतपविषे तथामानसतपविषेभी जानिलेणी इति ॥ और किसीटीकाविषेतौं प्राज्ञ इसशब्दकरिकै ब्रह्मवेत्तापुरुषोंका ग्रहणकऱ्याहै ॥ तहां मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारकीप्रज्ञा जिस पुरुषकूंप्राप्तहुईहै ताकानाम प्राज्ञहै ॥ ईहां द्विज इसशब्दकरिकै कथनकऱ्येजे द्विजातिपुरुषहैं ॥ तिनद्विजातिपुरुषोंतैं श्रीभगवान्नैं जो प्राज्ञपुरुषोंका पृथक्कथन कऱ्याहै ॥ सो इसअर्थकेसूचनकरणेवासतैकथनकऱ्याहै ॥ पूर्वलेअनेकजन्मोंकेपुण्यकर्मोंकरिकै प्राप्तभईजा ईश्वरकीप्रसन्नताहै ॥ तिसईश्वरकीप्रसन्नताकरिकै सोब्रह्मनिष्ठत्वरूपप्राज्ञत्व तिनद्विजातिपुरुषोंतैंभिन्न शूद्रादिकोंविषेभी संभवहोइसकेहै ॥ जैसे विदुर धर्मव्याध इत्यादिकोंविषे सोब्रह्मनिष्ठत्वरूपप्राज्ञत्व शास्त्रोंमेंप्रसिद्धहीहै ॥ तथा (स्त्रियोवैश्यास्तथाशूद्रास्तेपियांतिपरांगतिम्) इसवचनकरिकै श्रीभगवान्नै आपहीं पूर्वकथनकऱ्याहै ॥ ऐसे ब्रह्मनिष्ठत्वरूप प्राज्ञपणेकरिकैयुक्त तेशूद्रादिकभी पूजनहींकरणेयोग्यहैं इसअर्थकेबोधनकरणेवासतै श्रीभगवान्नैं द्विजातिपुरुषोंतैं तिनप्राज्ञपुरुषोंका पृथक् कथनकऱ्याहै इति ॥ १४ ॥ ❀ ॥

(मू० श्लो०) अनुद्वेगकरंवाक्यंसत्यंप्रियहितंचयत् ॥ स्वाध्यायाभ्यसनंचैववाङ्मयंतपउच्यते ॥ १५ ॥ अनुद्वेगकरम् । वाक्यम् । सत्यम् । प्रियहितम् । च । यत् । स्वाध्यायाभ्यसनम् । च । एव । वाङ्मयम् । तपः । उच्यते ॥ १५ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥

हेअर्जुन दुःखकीनहींप्राप्तिकरणेहारा तथासत्य तथा प्रियहित ऐसाजो वाक्यहै तथा वेदोंकाजोअभ्यासहै यहसर्व वाङ्मय तप कह्याजावैहै ॥ १५ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जोवाक्य अनुद्वेगकरहै ॥ अर्थात् जोवाक्य किसीभीश्रोताप्राणीकूं दुःखकीप्राप्तिकरतानहीं ॥ तथा जोवाक्यसत्यहै ॥ अर्थात् जोवाक्य किसीप्रमाणमूलकहै तथाजिसवाक्यकाअर्थ किसीअन्यप्रमाणकरिकैबाधितनहींहै ॥ तथा जोवाक्य प्रियहै ॥ अर्थात् जोवाक्य आपणेउच्चारणकालविषेहीं श्रोता पुरुषकेश्रोत्रइंद्रियकूं सुखकीप्राप्तिकरणेहाराहै ॥ तथा जोवाक्य हितहै ॥ अर्थात् जोवाक्य आगेपरिणामविषेभी तिसश्रोतापुरुषकूं सुखकीहींप्राप्तिकरणेहाराहै ॥ ईहां (प्रियहितंचयत्) इसवचनविषेस्थितजो च यहशब्दहै ॥ सोचशब्द अनुद्वेगकरत्व सत्यत्व प्रियत्व हितत्व इनच्यारोंविशेषणोंकेसमुच्चयकरावणेवासतैहै ॥ अर्थात् जोवाक्य अनुद्वेगकरत्व आदिकच्यारोंविशेषणोंकरिकैविशिष्टहै ॥ किसीएकविशेषणकरिकैभीन्यूननहींहै ॥ जैसे (शांतोभववत्स स्वाध्यायंयोगंचानु

तिष्ठ तथातेश्रेयोभविष्यति ॥) इत्यादिकवाक्यहैं ॥ अर्थयह हेपुत्र तूंशांतहोउ तथा वेदाभ्यासकूं तथाचित्तकेनिरोधरूपयोगकूं तूंकर तिसकरिकै तुमारा श्रेयहो वैगा इति ॥ इसवचनविषे अनुद्वेगकरत्व सत्यत्व प्रियत्व हितत्व यहच्यारोंहींविशेषण विद्यमानहैं ॥ ऐसेवचनकाउच्चारण वाङ्मयतप कह्याजावैहै ॥ अर्थात् वाचिकतप कह्याजावैहै ॥ और शास्त्रनैं वेदोंकेअध्ययनकालविषे जोजोनियम कथनकऱ्येहैं ॥ तिसशास्त्रउक्तनियमपूर्वक जोऋगादिकवेदोंकाअभ्यासहै ॥ सोवे दोंकाअभ्यासभी वाचिकतप कह्याजावैहै इति ॥ १५ ॥ ❀ ॥

(मू० श्लो०) मनःप्रसादःसौम्यत्वंमौनमात्मविनिग्रहः ॥ भावसंशुद्धिरित्येतत्तपोमानसमुच्यते ॥ १६ ॥ मनःप्रसादः । सौम्यत्वं । मौनम् । आत्मविनिग्रहः । भावसंशुद्धिः । इति । एतत् । तपः । मानसम् । उच्यते ॥ १६ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन मनकाप्रसाद तथासौम्यत्व तथामौन तथामनकाविनिग्रह तथाहृदयकीशुद्धि इसप्रकारका यहसर्व तप मानसतप कह्याजा वैहै ॥ १६ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन विषयोंकीचिंताकृतव्याकुलतातैंरहिततारूप जा मनकीस्वस्थताहै ताकानाम मनःप्रसादहै ॥ और सर्वलोकोंकेहितकीइच्छाकरणी तथाशास्त्र निषिद्धपदार्थोंकानहींचिंतनकरणा इसप्रकारकाजो सौमनस्यहै ताकानाम सौम्यत्वहै ॥ और एकाग्रताकरिकै आत्माकाचिंतनरूप जोनिदिध्यासनहै ताकूं मुनि भावकेहैं ॥ तामुनिभावकानाम मौनहै ॥ अथवा वाक्इंद्रियकेसंयमकाहेतुभूत जोमनकासंयमहै ताकानाम मौनहै ॥ इसप्रकारका भाष्यकारोंनैं मौनशब्दकाअर्थ कऱ्याहै ॥ और मनकेसर्ववृत्तियोंका जोविशेषकरिकैनिग्रहहै जिसकूं असंप्रज्ञातनामा निरोधसमाधि कहेहैं ताकानाम आत्मविनिग्रहहै ॥ और हृदयरूपभावकी जा कामक्रोधलोभादिरूपमलकी निवृत्तिरूप सम्यक्शुद्धिहै ताकानाम भावसंशुद्धिहै ॥ तहां तिसहृदयविषे कामक्रोधादिरूपअशुद्धिकी जोपुनः नहींउत्पत्ति होणीहै यहहीं तिसशुद्धिविषे सम्यक्पणाहै ॥ अथवा अन्यपुरुषोंकेसाथि व्यवहारकालविषे जो छलकपटरूपमायातैंरहितपणाहै ताकानाम भावसंशुद्धिहै ॥ इसप्रकारकाअर्थ भाष्यकारोंनैं कऱ्याहै ॥ इसप्रकारका मनःप्रसादतैं आदिलेके भावसंशुद्धिपर्यंत यहसर्वतप मानसतप कह्याजावैहै इति ॥ १६ ॥ ❀ ॥ तहां (देवद्विजगुरुप्राज्ञ) इत्यादिकतीनश्लोकोंकरिकै शारीर वाचिक मानस इसभेदकरिकै तीनप्रकारकातप कथनकऱ्या अब तिसतीनप्रकारकेतपके सात्त्विक राजस तामस इसतीनप्रकारकेभेदकूं श्रीभगवान् तीनश्लोकोंकरिकै कथनकरैहै ॥

(मू० श्लो०) श्रद्धयापरयातप्तंतपस्तत्त्रिविधंनरैः ॥ अफलाकांक्षिभिर्युक्तैः सात्त्विकंपरिचक्षते ॥ १७ ॥ श्रद्धया । परया । तप्तं ।

तपः। तत्। त्रिविधं। नरैः। अफलाकांक्षिभिः। युक्तैः। सात्त्विकं। परिचक्षते ॥ १७ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन फलकी इच्छातैंरहित एकाग्रचित्तवाले पुरुषोंनैं परम श्रद्धाकरिकै कन्याहुआजो सोपूर्वउक्त तीनप्रकारका तपहै तिसतपकूं शिष्टपुरुष सात्त्विकतप कहेहैं ॥ १७ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन फलकीअभिलाषातैंरहित ऐसेजे युक्तपुरुषहैं ॥ अर्थात् कार्यकी सिद्धिअसिद्धिदोनोंविषे हर्षविषादरूपविकारभावतैंरहित जेसमाहितचित्तवाले अधिकारीपुरुषहैं ॥ ऐसेनिष्कामअधिकारीपुरुषोंनैं अप्रामाण्यशंकारूपकलंकतैंशून्यआस्तिक्यबुद्धिरूप श्रद्धाकरिकै अनुष्ठानकन्याजो सोपूर्वउक्त शारीर वाचिक मानस यहतीनप्रकारकातपहै ॥ तिसतपकूं वेदवेत्ताशिष्टपुरुष सात्त्विकतपकथनकरेहैं इति ॥ १७ ॥ ❀ ॥

(मू० श्लो०) सत्कारमानपूजार्थंतपोदंभेनचैवयत् ॥ क्रियतेतदिहप्रोक्तंराजसंचलमध्रुवम् ॥ १८ ॥ सत्कारमानपूजार्थं। तपः। दंभेन। च एव यत्। क्रियते। तत्। इह। प्रोक्तं। राजसं। चलम्। अध्रुवम् ॥ १८ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन पुनः जो तप सत्कारमानपूजाकेवासतै दंभकरिकै हीं कन्याजावैहै सोतप शिष्टपुरुषोंनै राजस कह्याहै सोतप ईसलोकविषेहींफलदेवैहै तथाच लहै तथाअध्रुवहै ॥ १८ ॥ (इतिपदार्थः)

॥ टीका ॥ हेअर्जुन यहतपस्वीब्राह्मण बहुतश्रेष्ठहैं इसप्रकारतैं अविवेकीपुरुषोंनैं करीजास्तुतिहै तास्तुतिकानाम सत्कारहै ॥ और अविवेकीपुरुषोंनैं कन्येजे अभ्युत्थानादिकहैं ताकानाम मानहै ॥ और अविवेकीपुरुषोंनैं कन्याजो पादोंकाप्रक्षालनहैं तथाअर्चनहैं तथाधनादिकपदार्थोंकादानहै ताकानाम पूजाहै ॥ ऐसे सत्कारवासतै तथामानवासतै तथापूजावासतै केवल दंभकरिकै जोतप कन्याजावैहै ॥ आस्तिक्यबुद्धिरूपश्रद्धाकरिकै जोतप कन्याजातानहीं ॥ सोतप शास्त्रवेत्ताशिष्टपुरुषोंनैं राजसतप कह्याहै ॥ सोराजसतप केवल इसलोककेफलकीहींप्राप्तिकरेहै ॥ पारलौकिकफलकीप्राप्तिकरतानहीं ॥ कैसाहैसोराजसतप चलहै ॥ अर्थात् अत्यंतअल्पकालविषेस्थायीफलकाहेतुहै ॥ पुनःकैसाहैसोराजस तप अध्रुवहै ॥ अर्थात् तिसफलकीजनकताकेनियमतैंरहितहै ॥ काहेतैं तिसराजसतपकूं करणेहारे जितनैंकीपुरुषहैं ॥ तिनसर्वोंकूं नियमकरिकै तेसत्कारमानपूजादिक प्राप्तहोतेनहीं ॥ किंतु किसीकिसीपुरुषकूंहीं तेसत्कारमानपूजादिक प्राप्तहोवैहैं ॥ यातैं इसलोककेफलविषेभी सोराजसतप नियमकरिकेहेतुनहींहै ॥ १८ ॥ ❀ ॥

(मू० श्लो०) मूढग्राहेणात्मनोयत्पीडयाक्रियतेतपः ॥ परस्योत्सादनार्थंवातत्तामसमुदाहृतम् ॥ १९ ॥ मूढग्राहेण। आत्मनः।

यत् । पीडया । क्रियते । तपः । परस्य । उत्सादनार्थं । वा । तत् । तामसम् । उदाहृतम् ॥ १९ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन जो तप दुराग्रहकरिकै ईससंघातके पीडाकरिकै कन्याजावैहे अथवा अन्यप्राणीके विनाशकरणेवासतै कन्याजावैहे सोतप शिष्ट पुरुषोंनैं तामस कह्याहै ॥ १९ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन अविवेककीअतिशयताकरिकै कन्याहुआजो दुराग्रहहै ॥ तिसदुराग्रहकरिकै देहइंद्रियरूप संघातकी पीडाकरिकै जोतप कन्याजावैहे ॥ अथवा अन्यकिसीप्राणीकेविनाशकरणेवासतै जोतप कन्याजावैहे ॥ सोतप शास्त्रवेत्ताशिष्टपुरुषोंनैं तामस कह्याहै इति ॥ १९ ॥ ❀ ॥ तहां पूर्व (श्रद्धयापरयातप्तम्) इत्यादिकतीनश्लोकोंकरिकै यथाक्रमतैं सात्त्विक राजस तामस यहतीनप्रकारकातप कथनकन्या ॥ अव (दातव्यमितियद्दानम्) इत्यादिक तीनश्लोकोंकरिकै यथाक्रमतैं दानके सात्त्विक राजस तामस इसतीनप्रकारकेभेदकूं श्रीभगवान् कथनकरैहे ॥

(मू० श्लो०) दातव्यमितियद्दानंदीयतेनुपकारिणे ॥ देशेकालेचपात्रेचतद्दानंसात्त्विकंस्मृतम् ॥ २० ॥ दातव्यम् । इति । यत् । दानम् । दीयते । अनुपकारिणे । देशे । काले । च । पात्रे । च । तत् । दानम् । सात्त्विकम् । स्मृतम् ॥ २० ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन यहदानअवश्यकर्तव्यहै इसप्रकारकानिश्चयकरिकै जो दान उत्तमदेशविषे तथा उत्तमकालविषे तथा अनुपकारी पात्रके तांई दीयाजावैहे सो दान सात्त्विक कह्याहै ॥ २० ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन श्रुतिस्मृतिरूपशास्त्रनैं यहदान हमारेप्रति विधानकन्याहै ॥ यातैं तिसशास्त्रकी आज्ञाकेवशतैं यहदान हमारेकूंअवश्यकरणेयोग्यहै ॥ इस प्रकारकानिश्चयकरिकै तथातिसदानकेफलकीइच्छातैंरहितहोइकै जो सुवर्ण अन्न भूमि गौ इत्यादिकपदार्थोंकादान उत्तमदेशविषे तथाउत्तमकालविषे अनुपकारी पात्रकेतांई दीयाजावैहे ॥ सोदान शास्त्रवेत्ता शिष्टपुरुषोंनैं सात्त्विक कह्याहै ॥ तहां कुरुक्षेत्रादिकतीर्थभूमिका नाम उत्तमदेशहै ॥ और सूर्यग्रहणादिककालोंकानाम उत्तमकालहै ॥ और जोपुरुष आपणेऊपरि कदाचित्भी कोईउपकार नहींकरताहोवै ताकानाम अनुपकारीहै ॥ और विद्या तप दोनोंकरिकै जो पुरुष युक्तहोवै ताकानाम पात्रहै ॥ अथवा आपणा तथा दातापुरुषका जोरक्षणकरणेहाराहै ताकानाम पात्रहै ॥ तहांशास्त्रवचनम् ॥ (विद्यातपोभ्यामात्मनोदातुश्चपालनक्षमएवप्रतिगृह्णीयात्) ॥ अर्थयह ॥ जोब्राह्मण विद्याकरिकै तथातपकरिकै आपणेरक्षणकरणेविषे तथादातापुरुषकेरक्षणकरणेविषे समर्थ होवै ॥ सोब्राह्मणहीं तिसदातापुरुषतैं धनादिकप्रतिग्रहकूं ग्रहणकरै ॥ जोब्राह्मण विद्यातैंरहितहै तथातपतैंभीरहितहै ॥ सोब्राह्मण कदाचित्भी प्रतिग्रहकूं

लेवैनहीं इति ॥ ऐसे अनुपकारीपात्रकेतांई उत्तमदेशकालविषे निष्कामहोइके शास्त्रकोविधिपूर्वक दीयाजो सुवर्णादिकपदार्थोंकादानहै ॥ सोदान सात्विक कह्याजावैहै इति ॥ २० ॥ ❀ ॥

(मू० श्लो०) यत्तुप्रत्युपकारार्थंफलमुद्दिश्यवापुनः ॥ दीयतेचपरिक्लिष्टंतद्दानंराजसंस्मृतम् ॥ २१ ॥ यत् । तु । प्रत्युपकारार्थम् । फलम् । उद्दिश्य । वा । पुनः । दीयते । च । परिक्लिष्टम् । तत् । दानम् । राजसम् । स्मृतम् ॥ २१ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन पुनः जोदान प्रतिउपकारवासतै अथवा स्वर्गादिकफलकूं उद्देशकरिकै तथा पश्चात्तापयुक्त दीयां जावैहै सो दान राजस कह्याहै ॥ २१ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जोदान प्रतिउपकारवासतै दीयाजावैहै ॥ अर्थात् इसब्राह्मणकेतांई जोमैं यहदानदेवौंगा ॥ तौंयहब्राह्मण किसीकालविषे हमारेउपरि कोई उपकारकरैगा ॥ इसप्रकारकीबुद्धिकरिकै केवल दृष्टप्रयोजनकीसिद्धिवासतैंहीं जोदान दीयाजावैहै ॥ अथवा इसदानकरिकै हमारेकूं यहस्वर्गादिकफल प्राप्तहोवै ॥ इसप्रकारतैंस्वर्गादिकफलकाउद्देशकरिकै जोदान दीयाजावैहै ॥ तथा इतनाधन हमनैं काहेवासतै खरचकऱ्या ॥ इसप्रकारकेपश्चात्तापवालाहोइके जोदान दीयाजावैहै ॥ सोदान शास्त्रवेत्ताशिष्टपुरुषोंनैं राजसदान कह्याहै ॥ ईहां (यत्तु) इसवचनविषेस्थितजो तु यहशब्दहै ॥ सोतुशब्द पूर्वउक्तसात्त्विकदानतैं इसराजसदानविषे विलक्षणताकेबोधनकरणेवासतैहै इति ॥ २१ ॥ ❀ ॥

(मू० श्लो०) अदेशकालेयद्दानमपात्रेभ्यश्चदीयते ॥ असत्कृतमवज्ञातंतत्तामसमुदाहृतम् ॥ २२ ॥ अदेशकाले । यत् । दानम् । अपात्रेभ्यः । च । दीयते । असत्कृतम् । अवज्ञातं । तत् । तामसम् । उदाहृतम् ॥ २२ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन पुनः जो दान अदेशकालविषे अपात्रोंकेतांई सत्कारतैंरहित तथाअवज्ञापूर्वक दीयाजावैहै सोदान शिष्टपुरुषोंनैं तामस कह्याहै ॥ २२ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन स्वभावतैं अथवा दुर्जनपुरुषोंकेसंबंधतैं पापकाहेतुरूप जोअशुचिस्थानहैं ताकानाम अदेशहै ॥ और पुण्यकाहेतुरूपकरिकैअप्रसिद्ध जोकोईक कालहै ताकानाम अकालहै ॥ अथवा अशौचकालकानाम अकालहै ॥ ऐसे अदेशविषे तथाअकालविषे विघातपतैंरहित नटविटादिकअपात्रोंकेतांई जो

सुवर्णादिकपदार्थोंकादान दीयाजावैहै ॥ सोदान शास्त्रवेत्ताशिष्टपुरुषोंनें तामस कह्याहै ॥ और उत्तमदेश उत्तमकाल उत्तमपात्र इनतीनोंकेप्राप्तहुएभी जोदान असत्कृत दीयाजावैहै ॥ अर्थात् प्रियभाषण पादोंकाप्रक्षालन चंदनपुष्पअक्षतादिकोंकारिकैपूजन इत्यादिरूप सत्कारतैंरहित जोदान दीयाजावैहै ॥ तथा जोदान अवज्ञात दीयाजावैहै ॥ अर्थात् दानकेपात्ररूपब्राह्मणादिकोंका निरादरकरिकै जोदान दीयाजावैहै ॥ सोदानभी शास्त्रवेत्ताशिष्टपुरुषोंनें तामसहीं कह्याहै इति ॥ २२ ॥ ❀ ॥ तहां पूर्वप्रसंगविषे आहार यज्ञ तप दान इनच्यारोंका सात्विक राजस तामस यहतीनप्रकारकाभेद कथनकरिकै तेसात्त्विकआहारादिक अवश्यकरिकैग्रहणकरणेयोग्यहैं और तेराजसतामसआहारादिक अवश्यकरिकैपरित्यागकरणेयोग्यहैं यहअर्थ कथनकऱ्या ॥ तहांआहारतौं केवल क्षुधाकी निवृत्तिरूप दृष्टअर्थकीहीं सिद्धिकरैहै ॥ धर्मकीउत्पत्तिद्वारा स्वर्गादिरूपअदृष्टअर्थकीसिद्धि करतानहीं ॥ यातैं किसीअंगकीविगुणताकरिकै तिसअहारकेफलके अभावकीशंकाहोतीनहीं ॥ और धर्मकीउत्पत्तिद्वारा अंतःकरणकीशुद्धिरूप अथवा स्वर्गादिरूप अदृष्टअर्थकीप्राप्ति करणेहारे जे यज्ञ तप दान यहतीनोंहैं ॥ तिन यज्ञ तप दान तीनोंकेतौं किसीमंत्रादिरूप अंगकीविगुणतातैं धर्मरूप अपूर्वकेनहींउत्पन्नहुए तिसफलकाअभावहींहोवैहै ॥ इसकारणतैं सात्विकभीतिसयज्ञतपदानविषे निष्फलताहीं प्राप्तहोवैहै ॥ काहेतैं तिस यज्ञतपदानकेअनुष्ठानकरणेहारेजेमनुष्यहैं ॥ तिनमनुष्योंविषे प्रमादकीबाहुल्यताहोणेतैं तिनयज्ञादिकोंकेकरतेहुए किसी नकिसीअंगकीविगुणता अवश्यकरिकैहोवैहै ॥ इसकारणतैं तिसविगुणताकेनिवृत्तकरणेवास्तै ओंतत्सत् इसभगवत्केनामकाउच्चारणरूप सामान्यप्रायश्चित्तकूं परमकृपालुश्रीभगवान् अधिकारीजनोंकेप्रति उपदेशकरैहै ॥

(मू० श्लो०) ओंतत्सदिदिनिर्देशोब्रह्मणस्त्रिविधःस्मृतः ॥ ब्राह्मणास्तेनवेदाश्चयज्ञाश्चविहिताःपुरा ॥२३॥ ओंतत्सत् । इति । निर्देशः । ब्रह्मणः । त्रिविधः । स्मृतः । ब्राह्मणाः । तेन । वेदाः । च । यज्ञाः । च । विहिताः । पुरा ॥२३॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन ओंतत्सत् इसप्रकारका तीनअवयवोंवाला परब्रह्मका नाम स्मरणकऱ्याहै तिंसनामकरिकैहीं सृष्टिकेआदिकालविषे प्रजापतिनें ब्राह्मणादिककर्त्ता तथा कारणरूप वेद तथा कर्मरूपयज्ञ उत्पन्नकऱ्येहैं ॥ २३ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जैसे अकार उकार मकार इनतीनअवयवोंवाला एकहींप्रणवनाम परब्रह्मकाहोवैहै ॥ तैसे ओंतत् सत् यहतीनहैंअवयवजिसके ऐसा ओंतत्सत् यहएकहींनाम परब्रह्मका वेदांतवेत्तापुरुषोंनें स्मरणकऱ्याहै ॥ हेअर्जुन जिसकारणतैं पूर्व वेदांतवेत्तामहर्षियोंनेंभी ओंतत्सत् यहपरब्रह्मकानाम स्मरणकऱ्याहै ॥ तिसकारणतैं इदानींकालके वेदांतवेत्तापुरुषोंनेंभी ओंतत्सत् यहपरब्रह्मकानाम अवश्यकरिकै स्मरणकरणा ॥ ऐसेनामकेस्मरणकरणेतैं ॥ इसअधि

कारीपुरुषकूं तिनयज्ञतपदानादिककर्मोंविषे विगुणतादोषकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ यहवार्त्ता स्मृतिविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांस्मृति ॥ (प्रमादात्कुर्वतांकर्मप्रच्यवेताध्वरेषुयत् ॥ स्मरणादेवतद्विष्णोःसंपूर्णस्यादितिश्रुतिः) ॥ अर्थयह ॥ यज्ञादिककर्मकूंकरणेहारेपुरुषका किसीप्रमादकेवशतैं तिनयज्ञादिककर्मोंविषे जोकोईमंत्रादिरूपअंगभंगहोइजावैहै ॥ सोमंत्रादिरूपअंग विष्णुभगवान्केस्मरणतैंहीं परिपूर्णहोवैहै ॥ इसप्रकार श्रुतिभगवती कथनकरैहै इति ॥ और वेदवेत्ताशिष्टपुरुषभी जिसजिस वैदिककर्मकाआरंभकरेहैं ॥ तिसतिसकर्मकेआरंभविषे ओंतत्सत् इसनामकूंस्मरणकरिकैहीं तिसतिसकर्मकूंकरेहैं ॥ यातैं शिष्टाचाररूपप्रमाणतैंभी तिसनामकेस्मरणका विगुणतादोषकीनिवृत्तिरूपफल सिद्धहोवैहै इति ॥ अब ओंतत्सत् इसनामकेस्मरणविषे यज्ञादिककर्मोंकेविगुणतादोषकीनिवृत्तिकरणेकासामर्थ्य कथनकरणेवासतै श्रीभगवान् तिसब्रह्मकेनामकीस्तुति करेहै (ब्राह्मणास्तेनइति) ईहां ब्राह्मणशब्द ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य इनतीनवर्णोंका उपलक्षणहै ॥ यातैंयह अर्थसिद्धभया ॥ पूर्वसृष्टिकेआदिकालविषे प्रजापति ब्रह्मानैं जो ब्राह्मणादिककर्मोंकेकर्त्ता तथाकारणरूपवेद तथाकर्मरूपयज्ञ उत्पन्नकरेहैं ॥ सो ओंतत्सत् इसब्रह्मकेनामकरिकैहीं उत्पन्नकरेहैं ॥ यातैं यज्ञादिकसृष्टिकाहेतुहोणेतैं यहमहान्प्रभाववाला ब्रह्मकानाम तिसविगुणतादोषकेनिवृत्तकरणेविषे समर्थहींहै इति ॥ ॥ २३ ॥ ❀ ॥ तहां अकार उकार मकार इनतीनअवयवोंकेव्याख्यानकरिकै जैसे तिन अकारादिकतीनअवयवोंकेसमुदायरूप ओंकारका व्याख्यानहोवैहै ॥ तैसे ओं तत् सत् इनतीनअवयवोंकेव्याख्यानकरिकै तिनओंकारादिकतीनअवयवोंकेसमुदायरूप ओंतत्सत् इसब्रह्मकेनामकूं श्रीभगवान् च्यारिश्लोकोंकरिकै व्याख्यानकरेहै ॥ तिसब्रह्मकेनामकीस्तुतिकेअतिशयतावासतै ॥ तहां प्रथम ओंकारशब्दकाव्याख्यानकरेहैं ॥

(मू० श्लो०) तस्मादोमित्युदाहृत्ययज्ञदानतपःक्रियाः ॥ प्रवर्ततेविधानोक्ताःसततंब्रह्मवादिनाम् ॥२४॥ तस्मात् । ओम् । इति । उदाहृत्य । यज्ञदानतपःक्रियाः । प्रवर्त्तते । विधानोक्ताः । सततं । ब्रह्मवादिनाम् ॥ २४ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन तिसकारणतैं ओं इसप्रकारकेशब्दकूं उच्चारणकरिकैहीं वेदवेत्तापुरुषोंकी विधिशास्त्रउक्त यज्ञदानतपरूपक्रिया निरंतर प्रवृत्तहोवैहैं ॥ २४ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जिसकारणतैं (ओमितिब्रह्म) इत्यादिकश्रुतियोंविषे ओंयहशब्द ब्रह्मकानाम प्रसिद्धहै ॥ तिसकारणतैं ओं इसशब्दकाउच्चारणकरिकैहीं वेदवेत्तापुरुषोंकी विधिशास्त्रबोधित यज्ञदानतपरूपसर्वक्रियानिरंतर प्रवर्त्तहोवैहैं ॥ अर्थात् वेदवेत्तापुरुष जिसजिस शास्त्रविहित यज्ञतपदानादिरूपक्रियाकूंकरेहैं ॥ तिसतिसक्रियातैंपूर्व ओं इसशब्दकाउच्चारणकरिकैहीं पश्चात् तिसतिसक्रियाकूंकरेहैं ॥ तिस ओंकारकेउच्चारणके प्रभावतैं तिनवेदवेत्तापुरुषोंकी तेयज्ञ

दानादिरूपक्रिया विगुणतादोषतैंरहितहोइकै समाप्तहोवैहैं ॥ यातैंयहअर्थसिद्धभया ॥ जिस ओंतत्सत् इसनामके ओं इसएकअवयवकेउच्चारणतैंभी सर्व विगुणतादोषकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ तिस संपूर्णनामकेउच्चारणतैंतिसविगुणतादोषकीनिवृत्तिहोवैहै याकेविषे पुनःक्याकहणाहै इति ॥ २४ ॥ ❁ ॥ तहांपूर्वश्लोकविषे काम्ययज्ञादिककर्मोंविषे तथानिष्कामयज्ञादिककर्मोंविषे साधारणतारूपकरिकै ओं इसशब्दकाउपयोग कथनकऱ्या ॥ अब मुमुक्षुजनकृतकेवल निष्कामकर्मविषे तत् इसशब्दकेउपयोगकूंकथनकरताहुआ श्रीभगवान् तत्इसशब्दकाव्याख्यानकरेहै ॥

(मू० श्लो०) तदित्यनभिसंधायफलंयज्ञतपःक्रियाः ॥ दानक्रियाश्चविविधाःक्रियंतेमोक्षकांक्षिभिः ॥ २५ ॥ तत् । इति । अनभिसंधाय । फलम् । यज्ञतपःक्रियाः । दानक्रियाः । च । विविधाः । क्रियंते । मोक्षकांक्षिभिः ॥ २५ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन मोक्षकीइच्छावान्पुरुषोंनैं तत् इसशब्दका उच्चारणकरिकै फलकूं नंइच्छाकरिकै नानाप्रकारकी यज्ञतपरूप क्रिया तथा दानरूपक्रिया करीतीयांहै ॥ २५ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन तत्त्वमसि इत्यादिकश्रुतियोंविषेप्रसिद्ध जो तत् यहब्रह्मकानामहै ॥ इस तत् नामकूंउच्चारणकरिकैहीं फलकीइच्छातैंरहितहोइकैं मुमुक्षुजनोंनैं आपणेअंतःकरणकीशुद्धिवासतै नानाप्रकारकी यज्ञरूपक्रिया करीतीयांहैं ॥ तथा नानाप्रकारकी तपरूपक्रिया करीतीयांहैं ॥ तथा नानाप्रकारकी दानरूपक्रिया करीतीयांहैं ॥ तिस तत्शब्दकेउच्चारणकेप्रभावतैं तिनमुमुक्षुजनोंकी तेयज्ञतपदानादिरूपसर्वक्रिया निर्विघ्नसमाप्तहोवैहैं ॥ यातैं यह तत्शब्दभीअत्यंतश्रेष्ठहै ॥ २५ ॥ ❁ ॥ अब श्रीभगवान् तीसरे सत् इसशब्दकादोश्लोकोंकरिकैव्याख्यानकरेहै ॥

(मू० श्लो०) सद्भावेसाधुभावेचसदित्येतत्प्रयुज्यते ॥ प्रशस्तेकर्मणितथासच्छब्दःपार्थयुज्यते ॥ २६ ॥ सद्भावे । साधुभावे । च । सत् । इति । एतत् । प्रयुज्यते । प्रशस्ते । कर्मणि । तथा । सच्छब्दः । पार्थ । युज्यते ॥ २६ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेपार्थ सद्भावविषे तथा । साधुभावविषे शिष्टपुरुषोंनैं सत् इसप्रकारका शब्द उच्चारणकरीताहै तथा प्रशस्तकर्मविषेभी सत्शब्द उच्चारणकरीताहै ॥ २६ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन (सदेवसोम्येदमग्रआसीत्) इत्यादिकश्रुतियोंविषेप्रसिद्ध जो सत् यहब्रह्मकानामहै ॥ सोसत्शब्द शास्त्रवेत्ताशिष्टपुरुषोंनैं सद्भावविषे उच्चारणकरीताहै ॥ अर्थात् जिसवस्तुकेअविद्यमानपणेकीशंकाहोवैहै ॥ तिसवस्तुकेविद्यमानपणेविषे सोसत्शब्द उच्चारणकरीताहै ॥ तथा शिष्टपुरुषोंनैं साधु

भावविषेभी सोसत्शब्द उच्चारणकरीताहै ॥ अर्थात् जिसवस्तुकेअसाधुपणेकीशंकाहोवैहै तिसवस्तुकेसाधुपणेविषेभी सोसत्शब्द उच्चारणकरीताहै ॥ यातैंयहसत्शब्द विगुणतादोषकीनिवृत्तिकरिकै तिनयज्ञादिककर्मोंके साधुत्वकरणेकूं तथातिनयज्ञादिककर्मोंके फलकीविद्यमानताकरणेकूं समर्थहै ॥ हेअर्जुन जैसे सद्भावविषे तथासाधुभावविषे यहसत्शब्द उच्चारणकरीताहै ॥ तैसे प्रतिबंधतैंरहितहोइके शीघ्रहीं सुखकेजनक जे विवाहादिक मांगलिककर्महैं ॥ तिनकर्मों विषेभी शिष्टपुरुषोंनैं सोसत् शब्द उच्चारणकरीताहै ॥ यातैं यहसत्शब्द विगुणतादोषकीनिवृत्तिकरिकै तिनयज्ञादिककर्मोंविषे प्रतिबंधतैंरहित शीघ्रहीं फलकी जनकता संपादनकरणेविषे समर्थहै ॥ इसकारणतैं यहसत्शब्द अत्यंतश्रेष्ठहै इति ॥ २६ ॥ ❀ ॥ किंच ॥

(मू० श्लो०) यज्ञेतपसिदानेचस्थितिःसदितिचोच्यते ॥ कर्मचैवतदर्थीयंसदित्येवाभिधीयते ॥ २७ ॥ यज्ञे । तपसि । दाने । च । स्थितिः । सत् । इति । च । उच्यते । कर्म । च । एव । तदर्थीयम् । सत् । इति । एव । अभिधीयते ॥ २७ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥

हेअर्जुन पुनः यज्ञविषे तथातपविषे तथा दानविषे स्थितिभी सत् ईसप्रकार कथनकरीतीहै तथा तदर्थीय कर्म भी सत् ईस प्रकार हीं कथनकरीताहै ॥ २७ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन यज्ञविषे तथातपविषे तथादानविषे जास्थितिहै ॥ अर्थात् तत्परताकरिकै जाअवस्थितिरूपनिष्ठाहै ॥ सानिष्ठारूपस्थितिभी विद्वान्पुरुषोंनैं सत् इसनामकरिकै कथनकरीतीहै ॥ तथा तदर्थीय जोकर्महै सोकर्मभी सत् इसनामकरिकैहीं कथनकरीताहै ॥ तहां तिन यज्ञतपदानरूपअर्थोंविषेउत्पन्नहुआ जो तिनयज्ञादिकोंकेअनुकूल कर्मविशेषहै ताकानाम तदर्थीयकर्महै ॥ अथवा जिसब्रह्मका यहसत्नाम कथनकऱ्याहै ॥ सोब्रह्महै अर्थ क्या विषय जिसका ताकानाम तदर्थहै ॥ ऐसा शुद्धब्रह्मविषयकज्ञानहै ॥ तिसब्रह्मज्ञानकेअनुकूल जेकर्महैं तिनकर्मोंकानाम तदर्थीयकर्महै ॥ अथवा भगवत्अर्पणबुद्धिकरिकैकऱ्या जोकर्महै ताकानाम तदर्थीयकर्महै ॥ अथवा परमेश्वरकीप्रीतिवास्तै कऱ्याजोकर्महै ताकानाम तदर्थीयकर्महै ॥ ऐसा तदर्थीयकर्मभी विद्वान्पुरुषोंनैं सत् इसना मकरिकै कथनकऱ्याहै ॥ यातैं सत् यहनाम यज्ञादिककर्मोंकेविगुणतादोषकीनिवृत्तिकरणेविषेसमर्थहोणेतैं अत्यंतश्रेष्ठहै ॥ यातैं यहभावार्थसिद्धभया ॥ जिस ओंतत्सत् इसब्रह्मकेनामका एकएक ओंकारादिरूपअवयवकाभी इसप्रकारकामाहात्म्यहै ॥ तिस ओंकारादिकतीनअवयवोंकासमुदायरूप ओंतत्सत्इसनामका अत्यंतअद्भुत माहात्म्यहैयाकेविषेक्याकहणाहै इति ॥ २७ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् आलस्यादिकदोषकरिकै शास्त्रीयविधिकापरित्यागकरिकै श्रद्धावान् होइकै केवल वृद्धपुरुषोंकेव्यवहारमात्रकरिकै यज्ञतपदानादिककर्मोंकूंकरणेहारे जेपुरुषहैं ॥ तिनपुरुषोंकूंकिसी प्रमादकेवशतैं तिनकर्मोंविषेविगुणतादोषकेप्राप्तहुए

ओंतत्सत् इसब्रह्मकेनामकरिकै जबीतिसविगुणतादोषकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ तबी श्रद्धातैंरहितपणेकरिकै शास्त्रीयविधिकापरित्यागकरिकै आपणीइच्छामात्रकरिकै यत्किंचित्यज्ञादिककर्मोंकूंकरणेहारे आसुरपुरुषोंकूंभी ओंतत्सत्इसनामकरिकैहीं विगुणतादोषकीनिवृत्तिहोवैगी ॥ यातैं यज्ञादिककर्मोंकेसात्विकपणेकाहेतुभूत श्रद्धाका कोईभीप्रयोजननहींहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए ॥ श्रीभगवान् श्रद्धातैंविनाकऱ्येहुएसर्वकर्मोंकेनिष्फलताकूंकथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) अश्रद्धयाहुतंदत्तंतपस्तप्तंकृतंचयत् ॥ असदित्युच्यतेपार्थनचतत्प्रेत्यनोइह ॥ २८ ॥ इतिश्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सुब्रह्मविद्यायांयोगशास्त्रेश्रीकृष्णार्जुनसंवादेश्रद्धात्रयविभागयोगोनाम सप्तदशोऽध्यायः॥ १७॥ अश्रद्धया। हुतम्। दत्तम्। तपः। तप्तम्। कृतम्। च। यत्। असत्। इति। उच्यते। पार्थ। न। च। तत्। प्रेत्य। नो इह ॥ २८ ॥ (इतिपदच्छेदः)॥ हेपार्थ अश्रद्धाकरिकै जोहवनकरीताहै तथाजोदानकरीताहै तथाजोतप करीताहै तथा जोकोईअन्यभीकर्मकरीताहै सोसर्व असत् इसनामकरिकै कह्याजावैहै जिसकारणतैं सोश्रद्धारहितकर्म परलोकविषेभी नहींफलदेवैहै तथाइसलोकविषेभी नहींफलदेवैहै ॥ २८ ॥ (इतिपदार्थः)॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन इसपुरुषनैं अश्रद्धाकरिकै अग्निविषे जोहवनकरीताहै ॥ तथा ब्राह्मणोंकेतांई जोसुवर्णादिकपदार्थोंकादान दयीताहै॥तथा शारीरतप वाचिकतप मानसतप यहतीनप्रकारकाजोतप करीताहै ॥ तथा इसतैं अन्यभी जेस्तुतिनमस्कारादिककर्म करीतेहैं ॥ तेअश्रद्धाकरिकैकऱ्येहुए हवनादिकसर्वहींकर्म असत् इसप्रकारकेनामकरिकै कह्येजावैहैं ॥ अर्थात् तेसर्वकर्मआसाधुहीं कह्येजावैहै ॥ यातैं श्रद्धातैंविनाकऱ्येहुएतिनकर्मोंका ओंतत्सत् इसनामकरिकै सोसाधुभावकऱ्याजातानहीं ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसेपाषाणकीशिलाविषे अंकुरकेउत्पत्तिकी योग्यताहींहोतीनहीं ॥ तैसे तिनश्रद्धातैंरहितकर्मोंविषे सर्वप्रकारकरिकै तिससाधुभावकी योग्यताहींहोतीनहीं ॥ ऐसेसाधुभावकेयोग्य तिनकर्मोंविषे ओंतत्सत् इसनामकरिकै सोसाधुभाव कदाचित्भीसंभवतानहीं इति ॥ शंका ॥ हेभगवन् तेश्रद्धातैंरहितकर्म किसहेतुतैं असत् कह्येजावैंहैं ॥ ऐसीअर्जुनकीजिज्ञासाकेहुए ॥ श्रीभगवान् ताकेविषेहेतु कहैहै (नचतत्प्रेत्यनोइहइति) हेअर्जुन जिसकारणतैं अश्रद्धाकरिकैकऱ्याहुआ सोकर्म परलोकविषेभी फलकी प्राप्तिकरतानहीं ॥ काहेतैं तेश्रद्धारहितकर्म विगुणतादोषवालेहोणेतैं धर्मरूपअपूर्वकेउत्पादकहोतेनहीं ॥ ताधर्मरूप अपूर्वतैंविना सोस्वर्गादिरूप पारलौकिकफल प्राप्तहोतानहीं ॥ तथा सोश्रद्धातैंविनाकऱ्याहुआकर्म इसलोकविषेभी यशरूपफलकीप्राप्तिकरतानहीं ॥ जिसकारणतैंश्रद्धाहीनपुरुषकी शिष्टपुरुष स्तुतिकरतेनहीं ॥ किंतु निंदाहींकरतेहैं ॥ यातैं श्रद्धातैंरहितहोइकै कऱ्याजो यज्ञादिरूपकर्महै ॥ सोकर्म इस

लोककेफलकी तथापारलौकिकफलकी प्राप्तिकरतानहीं ॥ यातैं अंतःकरणकीशुद्धिवास्तैं यह अधिकारीपुरुष सात्त्विकीश्रद्धाकरिकैहींसात्त्विकयज्ञादिक कर्मकूं करै ॥ ऐसेश्रद्धापूर्वककऱ्येहुए सात्त्विकयज्ञादिकोंविषे जोकदाचित् विगुणतादोषकीशंका प्राप्तहोवै ॥ तौं यहअधिकारीपुरुष ओंतत्सत् इसप्रकारकेब्रह्मकेनामकूं उच्चारणकरिकै तिनयज्ञादिककर्मोंकूं विगुणतादोषतैंरहितकरै इति ॥ तहां इससप्तदशेअध्यायविषे यहअर्थ निर्णयकऱ्या ॥ आलस्यादिकदोषकरिकै शास्त्र विधिकापरित्यागकऱ्याहैजिनोंनैं ॥ तथा श्रद्धापूर्वकपितापितामहादिकवृद्धपुरुषोंकेव्यवहारमात्रकरिकै यज्ञादिककर्मोंविषेप्रवृत्तिहै जिनोंकी ॥ तथा शास्त्रकेविधि कापरित्यागरूप जोअसुरपुरुषोंकाधर्महै तथाश्रद्धापूर्वककर्मोंकाअनुष्ठानरूप जो देवोंकाधर्महै तिनदोनोंधर्मोंकरिकैयुक्तहोणेतैं तेपुरुष क्याअसुरहैं अथवादेवहैं इसप्र कारके अर्जुनकेसंशयके विषयभूत जेपुरुषहैं ॥ तिनपुरुषोंकेमध्यविषे जेपुरुष राजसतामसश्रद्धापूर्वक राजसतामसरूप यज्ञादिककर्मोंकूंहींकरेहैं ॥ ते पुरुषतौं असुर कहेजावैहैं ॥ ऐसेअसुरपुरुषतौ शास्त्रप्रतिपादितज्ञानसाधनोंके अधिकारीहींहैं ॥ और जेपुरुष सात्त्विकश्रद्धापूर्वक सात्त्विकयज्ञादिकोंकूंकरेहैं तेपुरुषतौं देवकहेजावैहैं ॥ तेदेवपुरुषतौं शास्त्रप्रतिपादितज्ञानसाधनोंकेअधिकारीहोवैहैं ॥ इसप्रकारकानिर्णय श्रीभगवान्नैं इसअध्यायविषे सात्त्विक राजस तामस इसतीनप्रकारकी श्रद्धाकेप्रतिपादनद्वारा आहारादिकोंकेसात्त्विकादिकत्रिविधपणेकरिकै सिद्धकऱ्या इति ॥ २८ ॥ ❀ ॥ इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यश्रीस्वाम्युद्धवानंदगिरिपूज्यपादशिष्येणस्वामिचिद्घनानंदगिरिणाविरचितायांप्राकृतटीकायां गीतागूढार्थदीपिकाख्यायां सप्तदशोध्यायःसमाप्तः ॥ १७ ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥

इति सप्तदशोऽध्यायः समाप्तः ॥ १७ ॥



ॐश्रीगणेशायनमः ॥ ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥ ॥ अथ अष्टादशाध्यायप्रारंभः ॥ तहां पूर्व सप्तदशेअध्यायविषे श्रद्धाका सात्त्विक राजस तामस यहतीनप्रकारकाभेदकथनकरिकै तथा आहार यज्ञ तप दान इनच्यारोंका सात्त्विक राजस तामस यहतीनप्रकारकाभेद कथनकारिकै कर्मीपुरुषोंका सात्त्विक राजस तामस यहतीनप्रकारभेद कथनकऱ्या ॥ सात्त्विकोंकेग्रहणकरावणेवासतै तथाराजस तामसोंकेपरित्यागकरावणेवासतै ॥ अब संन्यासके सात्त्विक राजस तामस इसप्रकारकेत्रिविधपणेकूंकथनकरिकै संन्यासीयोंकेभी सात्त्विक राजस तामस इसप्रकारकेत्रिविधपणेकूं अवश्यकरिकैकह्याचहिये ॥ तहां आत्मसाक्षात्कारतैंअनंतर करणेयोग्य जोफलभूत सर्वकर्मोंकासंन्यासहै जिससंन्यासकूं शास्त्रविषे विद्वत्संन्यास कहेहैं ॥ सोफलभूतसंन्यासतौं पूर्वचतुर्दशे अध्यायविषे गुणातीतरूपकरिकै व्याख्यानकऱ्याथा ॥ यातैं सोफलभूतविद्वत्संन्यासतौं सात्त्विक राजस तामस इसप्रकारकेत्रिविधभेदकेयोग्यहोवैनहीं और आत्मसाक्षात्कारतैंपूर्व तिसआत्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिअर्थ जो सर्वकर्मोंकासंन्यासहै ॥ जोसंन्यास आत्मसाक्षात्कारकीइच्छावान्पुरुषनैं वेदांतवाक्योंकेविचारवासतै कऱ्याजावैहै ॥ जिससंन्यासकूं शास्त्रविषे विविदिषासंन्यासकहेहैं ॥ सोविविदिषासंन्यासभी (त्रैगुण्यविषयावेदानिस्त्रैगुण्योभवार्जुन) इत्यादिकवचनोंकरिकै पूर्व निर्गुणरूपकरिकै व्याख्यानकऱ्याथा ॥ यातैं सोविविदिषासंन्यासभी सात्त्विक राजस तामस इसप्रकारकेत्रिविधपणेकेयोग्यहैनहीं ॥ किंतु फलभूतविद्वत्संन्यास तथाविविदिषासंन्यास यहदोनोंसंन्यास गुणातीतसंन्यास कह्येजावैहैं ॥ और जिनपुरुषोंकूं आत्मसाक्षात्कारकीउत्पत्तिहुईनहीं ॥ तथा आत्मसाक्षात्कारकीइच्छारूपविविदिषाकीभी उत्पत्तिहुईनहीं ॥ ऐसे तत्त्ववेत्तापणेतैंरहित तथाजिज्ञासुपणेतैंरहितपुरुषोंका जो कर्मोंकासंन्यासहै ॥ जोसंन्यास (ससंन्यासीचयोगीच) इत्यादिकवचनोंकरिकै पूर्व गौणसंन्यासरूपकरिकैव्याख्यानकऱ्याथा ॥ तिससंन्यासका सात्विक राजस तामस यहत्रिविधपणा संभवहोइसकेहै ॥ तिसीहींसंन्यासकेविशेषताजानणेकीइच्छाकरताहुआ अर्जुन श्रीभगवान्केप्रति प्रश्नकरेहै ॥

(मू० श्लो०) अर्जुनउवाच ॥ संन्यासस्यमहाबाहोतत्त्वमिच्छामिवेदितुम् ॥ त्यागस्यचहृषीकेशपृथक्केशिनिषूदन ॥ १ ॥ संन्यासस्य । महाबाहो । तत्त्वम् । इच्छामि । वेदितुं । त्यागस्य । च । हृषीकेश । पृथक् । केशिनिषूदन ॥१॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेमहाबाहु हेहृषिकेश हेकेशिनिषूदन संन्यासके तथा त्यागके स्वरूपकूं मैंअर्जुन पृथक् जानणेकूं चाहताहूं सोकृपाकरिकै कहो ॥ १ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेमहाबाहु हेहृषिकेश हेकेशिनीषूदन श्रीभगवान् ॥ जिनपुरुषोंकूं आत्मज्ञानकीप्राप्तिहुईनहीं ॥ तथा जिनपुरुषोंकूं आत्मज्ञानकीइच्छारूपविविदि

षभी उत्पन्नहुईनहीं ॥ ऐसेजेकर्मोंकेअधिकारीपुरुषहैं ॥ ऐसेकर्मोंकेअधिकारीपुरुषोंनैंकऱ्याजो किंचित्कर्मोंकाग्रहणकरिकै किंचित्कर्मोंकापरित्यागहै ॥ सोकर्मों
कापरित्याग त्यागअंशरूप गुणकेयोगतैं गौणीवृत्तितैं संन्यासशब्दकरिकै कह्याजावैहै ॥ इसप्रकारका अंतःकरणकीशुद्धिवासतै अविद्वान्कर्मके अधिकारीपुरुषनैं
कऱ्याजो संन्यासहै ॥ जोसंन्यास सर्वप्रकारतैं कर्मोंकात्यागरूपहैनहीं ॥ किंतु किसीकरूपकरिकै कर्मोंकात्यागरूपहै ॥ इसप्रकारके संन्यासकेस्वरूपकूं मैंअर्जुन
सात्विक राजस तामस इसप्रकारकेभेदकरिकै जानणेकीइच्छाकरताहूं ॥ तथा त्यागकेस्वरूपकूंभी मैं सात्विकादिकभेदकरिकै जानणेकीइच्छाकरताहूं ॥ तहां
संन्यासत्यागयहदोनोंशब्द घट पट इनदोनोंशब्दोंकीन्यांई भिन्नभिन्नजातिवाले अर्थकेवाचकहैं ॥ अथवा घट कलश इनदोनोंशब्दोंकीन्यांई एकहीं जातिवाले
अर्थकेवाचकहैं ॥ तहां इनदोनोंपक्षोंविषे जबी आदिपक्ष अंगीकारहोवै ॥ तबी त्यागकेस्वरूपकूं संन्यासतैंपृथक्करिकै मैं जानणेकीइच्छाकरताहूं ॥ और
जबी द्वितीयपक्ष अंगीकारहोवै ॥ तबी संन्यास त्याग इनदोनोंशब्दोंकेप्रवृत्तिकानिमित्तभूत अवांतरउपाधिकाभेदमात्र कह्याचाहिये ॥ संन्यास त्याग इनदोनोंविषे एकके
व्याख्यानकरिकैहीं दोनोंकाव्याख्यान सिद्धहोवैगा इति ॥ तहां महान्हैंदोनोंबाहुजिसकी ताकानाम महाबाहुहै ॥ और केशिनामादैत्यकूं जो नाशकरताभयाहै
ताकानाम केशिनिषूदनहै ॥ इनदोनोंसंबोधनोंकरिकै अर्जुननैं श्रीभगवान्विषे बाह्यउपद्रवोंकेनिवृत्तकरणेकासामर्थ्य सूचनकऱ्या ॥ और हृषीकनाम इंद्रियोंका
है ॥ तिनइंद्रियोंकाजोईशहोवै अर्थात् प्रवर्त्तकहोवै ताकानाम हृषीकेशहै ॥ इससंबोधनकरिकै अर्जुननैं श्रीभगवान्विषे अंतरकामक्रोधादिकउपद्रवोंकेनि
वृत्तकरणेकासामर्थ्य सूचनकऱ्या ॥ ईहां भगवत्विषयकअत्यंतअनुरागतैं अर्जुननैं भगवान्केतीनसंबोधनकथनकऱ्येहैं इति ॥ तहां इसश्लोकविषे अर्जुनकेदोप्रश्न
सिद्धहुए ॥ तहां कर्मकेअधिकारीअविद्वान्पुरुषोंनैं कऱ्याजो संन्यासहै ॥ तिससंन्यासविषे पूर्वउक्तयज्ञादिककर्मोंका साधर्म्यभी रहैहै ॥ तथा पूर्वउक्तगुणातीतरूपदोप्रका
रकेसंन्यासका साधर्म्यभी रहैहै ॥ तहां जैसे पूर्वउक्तयज्ञादिककर्म कर्मकेअधिकारीपुरुषनैंहीं करीतेहैं ॥ तैसे यहसंन्यासभी कर्मकेअधिकारीपुरुषनैंहीं कऱ्याहै ॥
यहहीं इससंन्यासविषे पूर्वउक्तयज्ञादिककर्मोंका समानधर्महै ॥ और जैसे पूर्वउक्त गुणातीतनामा दोप्रकारकासंन्यास संन्यासशब्दकरिकै प्रतिपादनकऱ्याजावैहै ॥
तैसे यहसंन्यासभी संन्यासशब्दकरिकै ॥ प्रतिपादनकऱ्याजावैहै ॥ यहहीं इससंन्यासविषे पूर्वउक्त गुणातीतनामा दोप्रकारकेसंन्यासका समानधर्महै ॥ इसप्रकार
यज्ञादिकोंकेसमानधर्मकरिकै तथागुणातीतनामादोनोंसंन्यासोंकेसमानधर्मकरिकै जो इससंन्यासविषे त्रिगुणताकेसंभवअसंभवदोनोंकरिकै संशयहोवैहै ॥ सोसंशयतौं
प्रथमप्रश्नकाबीजरूपहै ॥ और संन्यास त्याग इनदोनोंशब्दोंकूं घट कलश इनदोशब्दोंकीन्यांई पर्यायरूपताहोणेतैं कर्मोंकेत्यागरूपकरिकै तथाकर्मफलकेत्यागरूप
करिकै तिनदोनोंकेविलक्षणताकेकथनतैं उत्पन्नहुआजोसंशयहै ॥ सोसंशयतौं द्वितीयप्रश्नकाबीजरूपहै इति ॥ १ ॥ ❁ ॥ तहां सूचीकटाहन्यायकरिकै

अंत्यप्रश्नकेनिवृत्तकरणेवासतै श्रीभगवान् उत्तरकूं कथनकरेहै ॥ तहां जैसे लुहारपुरुष बहुतप्रयत्नसाध्यकटाहकूं छोडिकै प्रथम अल्पप्रयत्नसाध्य सूचीकूंब नाइदेवैहै ॥ तैसे बहुतविस्तारतैंप्रतिपादनकरणेयोग्यअर्थकूं छोडिकै प्रथम थोडेमैंप्रतिपादनकरणेयोग्यअर्थकाकथनकरणा याकूं सूचीकटाहन्यायकहेहैं ॥

(मू० श्लो०) श्रीभगवानुवाच ॥ काम्यानांकर्मणांन्यासंसंन्यासंकवयोविदुः ॥ सर्वकर्मफलत्यागंप्राहुस्त्यागंविचक्षणाः ॥ २ ॥

काम्यानां । कर्मणां । न्यासं । संन्यासं । कवयः । विदुः । सर्वकर्मफलत्यागं । प्राहुः । त्यागं । विचक्षणाः ॥२॥(इतिपदच्छेदः) ॥

हेअर्जुन काम्यकर्मोंके त्यागकूं सूक्ष्मदर्शीपुरुष संन्यास जानेहैं तथाविचारविषे कुशलपुरुष सर्वकर्मोंकेफलकेत्यागकूं त्यागं कहेहैं ॥ २ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन(स्वर्गकामोयजेत पुत्रकामोयजेत पशुकामोयजेत)इत्यादिकविधिवचनोंनैं स्वर्गादिफलकीकामनावालेपुरुषकेप्रति विधानकऱ्येजे ज्योतिष्टोमादिक काम्यकर्महैं ॥ जेकाम्यकर्म अंतःकरणकीशुद्धिविषे किंचित्मात्रभी उपयोगकरतेनहीं ॥ ऐसेकाम्यकर्मोंका जोत्याग ॥ तिसत्याकूं केईकसूक्ष्मदर्शीपुरुष संन्यासरूपजानेहैं ॥ काहेतैं ॥ (तमेतंवेदानुवचनेनब्राह्मणाविविदिषंतियज्ञेनदानेनतपसानाशकेन) इसश्रुतिनैं नित्यकर्मोंकाहीं प्रतिबंधकपापोंकीनिवृत्तिद्वारा आत्मज्ञानविषेउपयोग कथनकऱ्याहै॥ तहां इसश्रुतिविषे वेदानुवचनशब्द ब्रह्मचारीके सर्वधर्मोंकाउपलक्षणहै ॥ और यज्ञ दान यहदोनोंशब्द गृहस्थके सर्वधर्मोंकेउपलक्षणहै॥ और तप अनाशकयहदोनोंशब्द वानप्रस्थकेसर्वधर्मोंकेउपलक्षणहैं इति ॥ और (ज्ञानमुत्पद्यतेपुंसांक्षयात्पापस्यकर्मणः) इत्यादिकवचनोंनैंभी प्रतिबंधकपापकीनिवृत्तिद्वारा नित्यकर्मोंकाहीं आत्मज्ञानकीउत्पत्तिविषे उपयोग कथनकऱ्याहै ॥ यातैं नित्यकर्मोंकाहीं आत्मविषे अथवा आत्मज्ञानकीइच्छारूपविविदिषाविषे उपयोगहै ॥ काम्यकर्मोंका आत्मज्ञानविषेषे तथाविविदिषाविषे किंचित्मात्रभी उपयोगनहींहै ॥ यातैं अंतःकरणकीशुद्धिपूर्वक तथा विविदिषाकीउत्पत्तिपूर्वक आत्मज्ञानकेप्रातिकीइच्छावान्पुरुषनैं भगवत्अर्पणबुद्धिकरिकै नित्यकर्मोंकाहींअनुष्ठानकरणा ॥ और काम्यकर्मतौं तिसतिसफलसहित सर्वहीं परित्यागकरणे ॥ यहएकमत कथनकऱ्या ॥ अब द्वितीयमतका कथनकरेहैं (सर्वकर्मफलत्यागंप्राहुस्त्यागंविचक्षणाःइति) हेअर्जुन सर्वकाम्यकर्मोंके तथासर्वनित्यकर्मोंके जोफलकात्यागहै ॥ अर्थात् अंतःकरणकेशुद्धिकीइच्छाकरिकै विविदिषाकीप्राप्तिवासतै जो तिन काम्यरूपनित्य सर्वकर्मोंकाअनुष्ठानहै ॥ तिस सर्व कर्मकेफलकेत्यागकूं विचारविषेकुशलपुरुष त्यागरूप कहेहैं ॥ यद्यपि (स्वर्गकामोयजेत पुत्रकामोयजेत पशुकामोयजेत) इत्यादिकवचनोंनैं ज्योतिष्टोमादिककाम्यकर्मोंके स्वर्ग पुत्र पशु इत्यादिक भिन्नभिन्नफलहीं कथनकऱ्येहैं ॥ तथापि इसअधिकारीपुरुषनैं तिसतिसस्वर्गादिकफलकीनहींइच्छाक

रिकै तेकाम्यकर्मभी अंतःकरणकीशुद्धिवासतैंहींकरणे ॥ काहेतैं अग्निहोत्रादिककर्मोंविषे स्वभावतैंतौं नित्यपणा अथवा काम्यपणा होतानहीं ॥ किंतु कर्त्तापुरुषकेअभिप्रायविशेषकरिकैहीं तिनअग्निहोत्रादिककर्मोंविषे नित्यपणा अथवा काम्यपणा सिद्धहोवैहै ॥ तहां जोअग्निहोत्र स्वर्गादिकफलकीइच्छापूर्वक कऱ्याजावैहै ॥ तिसअग्निहोत्रविषेतैं काम्यपणा होवैहै ॥ और जोअग्निहोत्र स्वर्गादिफलकीइच्छातैंरहितहोइकै केवलभगवत्अर्पणबुद्धिकरिकै कऱ्याजावैहै ॥ तिसअग्निहोत्रविषे नित्यपणाहोवैहैं ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ आत्मज्ञानकीइच्छारूपविविदिषाविषे केवल नित्यकर्मोंकाहीं उपयोगहोवैहै ॥ तिसविविदिषाविषे काम्यकर्मोंका किंचित्मात्रभी उपयोगहोवैनहीं ॥ यातैं इसमुमुक्षुजनोंनैं तिनकाम्य कर्मोंका तिसतिसफलसहित स्वरूपतैंहींपरित्यागकरणा ॥ यहतौं इसश्लोकके पूर्वार्धकाअर्थ सिद्धहोवैहै ॥ और तिसविविदिषाविषे जैसे नित्यकर्मोंकाउपयोगहोवैहै ॥ तैसे तिसतिसफलकीइच्छातैंरहित काम्यकर्मोंकाभी उपयोगहोवैहै ॥ यातैं तिसविविदिषाकीप्राप्तिवासतै तिनकाम्यकर्मोंका तथानित्यकर्मोंका स्वरूपतैंअनुष्ठानकीयेहुएभी इसअधिकारीपुरुषनैं तिसतिसकर्मके तिसतिसफलकीइच्छा मात्रका परित्यागकरणा ॥ यह श्लोककेउत्तरार्धकाअर्थ सिद्ध होवैहै ॥ इसकहणेकरिकै यहअर्थसिद्धभया ॥ फलसहित काम्यकर्ममात्रकाजोत्यागहै ॥ सोत्यागतौं संन्यासशब्दका अर्थहै ॥ और नित्यकाम्यरूपसर्वकर्मोंकेफलकीइच्छामात्रकाजोपरित्यागहै ॥ सोत्याग त्यागशब्दकाअर्थहै ॥ यातैं जैसे घट पट इनदोनोंशब्दोंका भिन्नभिन्नजातिवालाअर्थहोवैहै ॥ तैसे संन्यास त्याग इनदोनोंशब्दोंका भिन्नभिन्नजातिवालाअर्थनहींहै ॥ किंतु अंतःकरणकीशुद्धिवासतै स्वरूपतैंकर्मोंकेअनुष्ठानहुएभी तिसतिसकर्मके तिसतिसफलकीइच्छाकोपरित्यागरूप एकहींअर्थ तिनदोनोंशब्दोंकासिद्धहोवैहै इसप्रकारतै इसश्लोककरिकै एकप्रश्नकानिर्णय सिद्धभया इति ॥ २ ॥ ❀ ॥ अब द्वितीयप्रश्नकेउत्तरकहणेवासतै संन्यासशब्दकेअर्थविषे तथात्यागशब्दकेअर्थविषे त्रिविधपणेकेनिरूपणकरणेवासतै प्रथम तिसअर्थविषे वादीयोंकेविप्रतिपत्तिकूं कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) त्याज्यंदोषवदित्येकेकर्मप्राहुर्मनीषिणः ॥ यज्ञदानतपःकर्मनत्याज्यमितिचापरे ॥ ३ ॥ त्याज्यम् । दोषवत् । इति । एके । कर्म । प्राहुः । मनीषिणः । यज्ञदानतपःकर्म । न । त्याज्यम् । इति । च । अपरे ॥ ३ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन रागद्वेषादिकदोषकीन्यांई कर्मभी परित्यागकरणेयोग्यहैं इसप्रकार केईक बुद्धिमान्पुरुष कहतेहैं तथा यज्ञदानतपरूपकर्म नहीं त्यागकरणेयोग्यहैं इसप्रकार दूसरेबुद्धिमान्पुरुषकहतेहैं ॥ ३ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन नित्य नैमित्तिक काम्य प्रायश्चित्त इत्यादिकसर्वहींकर्म इसपुरुषके बंधकेहेतुहोणेतैं दोषवत्हैं ॥ अर्थात् तेसर्वकर्म दोषवालेहैं ॥ यातैं

अंतःकरणकीशुद्धितैंरहित कर्मकेअधिकारीपुरुषोंनैंभी तेसर्वहींकर्म परित्यागहींकरणेयोग्यहैं ॥ इसप्रकार केईक बुद्धिमान्पुरुष कहेहैं ॥ अथवा इसवचनका यहदूसराअर्थ करणा ॥ जैसे रागद्वेषादिकदोष इसअधिकारीपुरुषनैं परित्यागकरणेयोग्यहैं ॥ तैसे नहींउत्पन्नहुआ है आत्मज्ञानजिनोंकूं तथानहींउत्पन्नहुईहै विविदिषाजिनोंकूं ऐसेकर्मोंकेअधिकारीपुरुषोंनैंभी आपणेबंधकाहेतुजानिके तेसर्वकर्म परित्यागहींकरणेयोग्यहैं ॥ यह श्लोककेपूर्वार्धकरिकै एकपक्षसिद्धभया ॥ अब श्लोककेउत्तरार्धकरिकै द्वितीयपक्ष कथनकरेहैं (यज्ञदानतपःकर्मइति) हेअर्जुन अंतःकरणकी शुद्धितैंराहित कर्मोंकेअधिकारीपुरुषोंनैं अंतःकरणकीशुद्धिद्वारा विविदिषाकीउत्पत्तिवास्तै यज्ञदानतपरूपकर्म कदाचित्भीनहींपरित्यागकरणे ॥ इसप्रकार केईक दूसरेबुद्धिमान्पुरुष कहेहैं इति ॥ ३ ॥ ❀ ॥ इसप्रकार कर्मोंकेपरित्यागविषे वादीयोंकीविप्रतिपत्तिकूं कथनकरिकै अब श्रीभगवान् आपणेनिश्चयकूं कथनकरेहैं ॥

(मू० श्लो०) निश्चयंशृणुमेतत्रत्यागेभरतसत्तम ॥ त्यागोहिपुरुषव्याघ्रत्रिविधःसंप्रकीर्त्तितः ॥ ४ ॥ निश्चयं । शृणु । मे । तत्र । त्यागे । भरतसत्तम । त्यागः । हि । पुरुषव्याघ्र । त्रिविधः । संप्रकीर्तितः ॥ ४ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेभरतकुलविषेश्रेष्ठअर्जुन तिस कर्मत्यागविषे हमारे निश्चयकूं तूं श्रवणकर हेसर्वपुरुषोंविषे श्रेष्ठ अर्जुन जिसकारणतैं सोत्याग तीनप्रकारका कथनकन्याहै ॥ ४ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन अंतःकरणकीशुद्धितैंरहित जोकर्मोंकाअधिकारीपुरुषहै ॥ सोकर्मोंकाअधिकारीपुरुषहैकर्त्ताजिसका तथासंन्यासत्यागइनदोनोंशब्दोंकरिकै प्रतिपादनकन्याहुआ ऐसाजो फलकीइच्छापूर्वककर्मोंकापरित्यागहै ॥ जिसत्यागकास्वरूप पूर्वतुमनैं हमारेसैं पूछाहै ॥ तिसत्यागविषे पूर्वआचार्योंनैं कन्याजो निश्चयहै ॥ तिसनिश्चयकूं तूंअर्जुन मैंपरमेश्वरकेवचनतैं श्रवणकर ॥ शंका ॥ हेभगवन् तिसत्यागविषे ऐसीक्यादुर्विज्ञेयताहै ॥ जिसकूं मैंआपकेवचनतैं श्रवण करूं ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् तिसत्यागकीदुर्विज्ञेयताकूंकथनकरेहै (त्यागोहिइति) हेअर्जुन कर्मोंकाअधिकारीपुरुषहैकर्त्ताजिसका ऐसाजो फलकी इच्छापूर्वककर्मोंकात्यागहै ॥ सोत्याग जिसकारणतैंवेदवेत्तापुरुषोंनैं तीनप्रकारका कथनकन्याहै॥ अर्थात् तामस राजस सात्विक इसभेदकरिकैसोत्यागतीनप्रकार का कथनकन्याहै ॥ अथवा (त्रिविधःसंप्रकीर्तितः) इसवचनका यहअर्थकरणा॥ फलकीइच्छारूपविशेषणकरिकै विशिष्ट जोकर्महै ॥ तिसइच्छाविशिष्टकर्मका जोत्यागहै॥सोविशिष्टाभावरूप त्यागविशेषणकेअभावतैं अथवा विशेष्यकेअभावतैं अथवा विशेषणविशेष्यदोनोंकेअभावतैं तीनप्रकारका कथकन्याहै ॥ सोप्रकार दिखावैंहैं ॥ और कहांतौं विशेषणकेअभावतैं विशिष्टकाअभावहोवैहै ॥ और कहांतौं विशेष्यकेअभावतैं विशिष्टकाअभावहोवैहै॥ और कहां तौंविशेषण विशेष्य

दोनोंकेअभावतैं विशिष्टकाअभावहोवैहै ॥ जैसे दंडरूपविशेषणकरिकैविशिष्टदंडीपुरुषका जोअभावहै ॥ सोविशिष्टाभाव कह्याजावैहै ॥ सोशिविष्टाभाव विशेषणकेअभावतैं अथवा विशेष्यकेअभावतैं अथवा विशेषणविशेष्यदोनोंकेअभावतैं होवैहै ॥ तहां जहां पुरुषरूपविशेष्यकेविद्यमानहुएभी दंडरूपविशेषणका अभाव होवैहै ॥ तहांभी दंडीपुरुष नहींहै याप्रकारकी विशिष्टाभावविषयक प्रतीतिहोवैहै ॥ ईहां दंडरूपविशेषणकेअभावतैं दंडविशिष्टपुरुषका अभावहोवैहै ॥ और जहांदंडरूपविशेषणकेविद्यमानहुएभी पुरुषरूपविशेष्यका अभावहोवैहै ॥ तहांभी दंडीपुरुष नहींहै याप्रकारकी विशिष्टाभावविषयक प्रतीतिहोवैहै ॥ ईहां पुरुषरूपविशेष्यकेअभावतैं दंडविशिष्टपुरुषकाअभावहोवैहै ॥ और जहां दंडरूपविशेषणकाभीअभावहोवैहै तथापुरुषरूपविशेष्यकाभीअभावहोवैहै ॥ तहांभी दंडीपुरुषनहींहै याप्रकारकी विशिष्टाभावविषयक प्रतीतिहोवैहै ॥ ईहां दंडरूपविशेषणके तथापुरुषरूपविशेष्यके दोनोंकेअभावतैं दंडविशिष्टपुरुषकाअभाव होवैहै ॥ तैसे ईहांप्रसंगविषे फलकीइच्छारूपविशेषणकरिकै विशिष्टजोकर्महै तिसविशिष्टकर्मकात्यागरूप विशिष्टाभावभी इच्छारूपविशेषणकेअभावतैं अथवा कर्मरूपविशेष्यकेअभावतैं अथवा इच्छारूपविशेषणके तथाकर्मरूपविशेष्यके दोनोंकेअभावतैं तीनप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां कर्मरूपविशेष्यकेविद्यमानहुएभी फलकीइच्छारूपविशेषणकेपरित्यागतैं जो इच्छाविशिष्टकर्मकात्यागहै ॥ सोइच्छारूपविशेषणकेअभावतैं इच्छाविशिष्टकर्मकाअभावरूप त्यागहै ॥ यहप्रथमत्यागहै ॥ और फलकीइच्छारूपविशेषणकेविद्यमानहुएभी कर्मरूपविशेष्यकाजोपरित्यागहै ॥ सो कर्मरूपविशेष्यकेअभावतैं इच्छाविशिष्टकर्मकाअभावरूप त्यागहै ॥ यहदूसरा त्यागहै ॥ और फलकीइच्छारूपविशेषणके तथाकर्मरूपविशेष्यके दोनोंकेपरित्यागतैं जो इच्छाविशिष्टकर्मकापरित्यागहै ॥ सो विशेषण विशेष्य दोनोंकेअभावतैं इच्छाविशिष्टकर्मकाअभावरूप त्यागहै ॥ यहतीसरात्यागहै ॥ तहां प्रथम कर्मकात्यागतौं सात्त्विककहोणेतैं ग्रहणकरणेयोग्यहै ॥ और दूसरा त्यागतौं राजस तामस इसभेदकरिकै दोप्रकारकाहोवैहै ॥ सोदोनोंप्रकारकाहीं दूसरात्याग परित्यागकरणेयोग्यहै ॥ तहां दुःखबुद्धिकरिकै कऱ्याहुआ सोकर्मोंकात्याग राजस कह्याजावैहै ॥ और भ्रांतिरूपविपर्यासकरिकै कऱ्याहुआ सोकर्मोंकात्याग तामस कह्याजावैहै ॥ इसप्रकारका कर्मकेअधिकारीपुरुषनैं कऱ्या जो कर्मोंकात्यागहै ॥ सोत्यागहीं ईहां अर्जुनकेप्रश्नका विषयहै ॥ और शुद्धअंतःकरणवालाहोणेतैं कर्मोंकाअनधिकारीजोपुरुषहै ॥ सोकर्मोंकाअनधिकारीपुरुषहैकर्त्ताजिसका ऐसाजो तीसरा गुणातीतनामा त्यागहै ॥ सोत्याग ईहां अर्जुनकेप्रश्नकाविषयहैनहीं सोगुणातीतनामा कर्मोंकात्यागभी दोप्रकारकाहोवैहै ॥ एकतौं साधनरूपहोवैहै ॥ और दूसरा फलरूपहोवैहै तहां फलकीइच्छाकेत्यागपूर्वक कर्मोंकाअनुष्ठानरूप जोसात्विकत्यागहै ॥ तिससात्त्विकत्यागकरिकै शुद्धहुआहैअंतःकरणजिसका तथा उत्पन्नहुईहैआत्मज्ञानकीइच्छारूपाविविदिषाजिसकूं तथाआत्मज्ञानकेसाधनभूत श्रवणमननरूपवेदांतविचारकेवासतै स्वर्गादिकसर्वफलोंकीइच्छातैंरहित ऐसाजो

अधिकारीपुरुषहै ॥ ऐसेअधिकारीपुरुषनैं अंतःकरणकीशुद्धितैंअनंतर कऱ्याजो तिनशुद्धिकेसाधनभूतसर्वकर्मोंका परित्यागहै ॥ सोकर्मोंकापरित्यागतौं प्रथम साधनरूपत्याग कह्याजावैहै ॥ इसीसाधनरूपत्यागकूं शास्त्रवेत्तापुरुष विविदिषासंन्यास कहेहैं ॥ इसीसाधनरूपविविदिषासंन्यासकूं श्रीभगवान् आगे (नैष्कर्म्य सिद्धिंपरमाम्) इसवचनकरिकै कथनकरैंगा ॥ और जन्मांतरोंविषेकऱ्याजो श्रवणादिकसाधनोंकाअभ्यासहै ॥ तिसअभ्यासकेपरिपाकतैं इसजन्मविषे प्रथमहीं उत्पन्नहुआहैआत्मसाक्षात्कारजिसकूं ऐसाजो कृतकृत्य विद्वान् पुरुषहै ॥ ऐसेविद्वान्पुरुषनैं स्वतःहीं कऱ्याजो फलकीइच्छाका तथाकर्मोंका परित्यागहै ॥ सोकर्मोंकापरित्याग दूसरा फलरूपत्याग कह्याजावैहै ॥ इसीफलरूपत्यागकूं शास्त्रवेत्तापुरुष विद्वत्संन्यास कहेहैं ॥ सोफलभूतविद्वत्संन्यास श्रीभगवान्नैं (यस्त्वात्मरतिरेवस्यात्) इत्यादिकदोश्लोकोंकरिकै पूर्व व्याख्यानकऱ्या ॥ तथा स्थितप्रज्ञपुरुषकेलक्षणादिकोंकरिकैभी पूर्व बहुतविस्तारतैंकथनकऱ्याहै इति ॥ हेअर्जुन जिसकारणतैं इसपूर्वउक्तरीतितैं त्यागकास्वरूप अत्यंत दुर्विज्ञेयहै ॥ और तुमनैं (त्यागस्यतत्त्वंवेदितुमिच्छामि) इसवचनकरिकै पूर्व त्यागकेस्वरूपजानणेकी प्रार्थनाकरीहै ॥ तिसकारणतैं मैंसर्वज्ञपरमेश्वरकेवचनतैंहीं तिसत्यागकेयथार्थस्वरूपकूं तूंअर्जुन निश्चयकर इति ॥ ईहां (हेभरतसत्तम हेपुरुषव्याघ्र) इनदोसंबोधनोंकरिकै श्रीभगवान्नैंअर्जुनविषे यथाक्रमतैं कुलनिमित्तकउत्कर्ष तथास्वपौरुषनिमित्तकउत्कर्ष कथनकऱ्या ताकरिकै तिसअर्जुनविषेतिसत्यागकेस्वरूपनिश्चयकरणेकीयोग्यता सूचनकरी इति ॥ ४ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् (त्याज्यंदोषवदित्येके) इसश्लोकविषेकथनकरीजा वादियोंकीविप्रतिपत्तिहै ॥ तिसविप्रतिपत्तिके कोटिभूतदोनोंपक्षोंविषे कौंनआपकानिश्चयहै ॥ क्याप्रथमपक्ष आपकानिश्चयहै ॥ अथवा द्वितीयपक्ष आपकानिश्चयहै ॥ अथवा इनदोनोंपक्षोंतैंभिन्न कोईतीसराहींपक्ष आपकानिश्चयहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए (यज्ञदानतपःकर्मनत्याज्यमितिचापरे) इसवचनकरिकै कथनकऱ्याजोद्वितीयपक्षहै ॥ सोद्वितीयपक्षहीं हमारानिश्चयहै ॥ इसप्रकारकेउत्तरकूं श्रीभगवान् दोश्लोकोंकरिकै कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) यज्ञदानतपःकर्मनत्याज्यंकार्यमेवतत् ॥ यज्ञोदानंतपश्चैवपावनानिमनीषिणाम् ॥ ५ ॥ यज्ञदानतपःकर्म । न । त्याज्यं । कार्यम् । एव । तत् । यज्ञः । दानं । तपः । च । एव । पावनानि । मनीषिणाम् ॥ ५ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन यज्ञदानतपरूपकर्म नहीं त्यागकरणेयोग्यहै किंतु सोकर्म करणेयोग्य हींहै जिसकारणतैं यज्ञ दान तप यहतीनों फलकीइच्छातैंरहितपुरुषोंकूं पावनकरणेहारे हीं हैं ॥ ५ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन श्रौतस्मार्त्तरूप जो अग्निहोत्रादिरूपयज्ञहै ॥ तथा उत्तमदेशकालविषे सुपात्रकेतांई शास्त्रकेविधिपरिमाण जो गौसुवर्णअन्नादिकपदार्थोंकादान

है ॥ तथा कृच्छ्रचांद्रायणादिरूपजोतपहै ॥ ईहां यज्ञ दान तप यहतीनोंकर्म ब्रह्मचारी गृहस्थ वानप्रस्थ इनतीनोंआश्रमोंके शास्त्रविहितसर्वकर्मोंकेउपलक्षणहैं ॥ ऐसे यज्ञदानतपरूपकर्म तिनयज्ञादिककर्मोंकेस्वर्गादिकफलकीइच्छातैंरहितपुरुषोंकूं पावनकरणेहारेहैं ॥ अर्थात् तेयज्ञदानतपरूपकर्म ज्ञानकेप्रतिबंधकपापरूपमलकी निवृत्तिकरिकै तथाज्ञानकेउत्पत्तिकीयोग्यतारूप पुण्यगुणकाआधानकरिकैफलकीइच्छातैंरहितपुरुषोंके शोधकहींहोवैहैं ॥ ईहां अंतःकरणरूपउपाधिकीशुद्धिकरिकेहीं तिसअंतःकरणउपहितपुरुषोंकीशुद्धि भगवान्कूं अभिप्रेतहै ॥ हेअर्जुन जिसकारणतैं तेयज्ञदानतपरूपकर्म फलकीइच्छातैंरहितपुरुषके अंतःकरणकीशुद्धिकरणकेहारेहैं ॥ तिसकारणतैं अंतःकरणकेशुद्धिकीइच्छावान् कर्मकेअधिकारीपुरुषनैं फलकीइच्छातैंरहित यज्ञदानतपरूपकर्म कदाचित्भी परित्याग करणेनहीं ॥ किंतु तेयज्ञदानतपरूपकर्म अवश्यकरिकैकरणे ॥ यद्यपि (नत्याज्यं) इसवचनकरिकै श्रीभगवान्नैं यज्ञदानतपरूपकर्मका अत्यागपणा कथन कऱ्या ॥ ताअत्यागपणेकरिकैहीं अर्थतैं तिनयज्ञदानादिककर्मोंकीकर्त्तव्यता प्राप्तहोवैहै ॥ यातैं पुनः (कार्यमेवतत्) इसवचनकरिकैतिनयज्ञदानादि ककर्मोंकीकर्त्तव्यता कथनकरणी संभवतीनहीं ॥ तथापि तिस यज्ञदानादिरूपकर्मोंकीकर्त्तव्यताके अत्यंतआदरवासतै श्रीभगवान्नैं पुनः (कार्यमेवतत्) यह वचन कथनकऱ्याहै ॥ अथवा ॥ (यज्ञदानतपःकर्मनत्याज्यंकार्यमेवतत्) इसवचनका याप्रकारतैं अर्थकरणा ॥ जिसकारणतैं यज्ञदानतपरूपकर्म कार्यहै ॥ अर्थात् कर्त्तव्यतारूपकरिकै वेदनैंविधानकऱ्याहै ॥ तिसकारणतैं सोयज्ञदानतपरूपकर्म इसअधिकारीपुरुषनैं कदाचित्भी नहींत्यागकरणा इति ॥ ५ ॥ ❁
॥ शंका ॥ हेभगवन् यज्ञदानतपरूपकर्मोंका जोकदाचित् अंतःकरणकीशुद्धिकरणेविषे सामर्थ्यहोवै ॥ तौं स्वर्गादिकफलकीइच्छाकरिकैकऱ्येहुएभी तेयज्ञदानतपरूपकर्म तिसअंतःकरणकेशोधकहोवैंगे ॥ यातैं फलकीइच्छाकापरित्यागकरणा व्यर्थहीहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहेहै ॥

(मू० श्लो०) एतान्यपितुकर्माणिसंगंत्यक्त्वाफलानिच ॥ कर्तव्यानीतिमेपार्थनिश्चितंमतमुत्तमम् ॥ ६ ॥ एतानि । अपि । तु । कर्माणि । संगं । त्यक्त्वा । फलानि । च । कर्तव्यानि । इति । मे । पार्थ । निश्चितं । मतम् । उत्तमम् ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हे पार्थ पुनः यहपूर्वउक्त यज्ञदानादिककर्म भी कर्तृत्वअभिमानकूं तथा स्वर्गादिकफलोंकूं परित्यागकरिकै करणेयोग्यहैं इसप्रकारका मैंपरमेश्वरका निश्चित श्रेष्ठ मतहै ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ ईहां (एतान्यपितु) इसवचनविषेस्थितजो तु यहशब्दहै ॥ सोतुशब्द पूर्वउक्तशंकाकेनिवृत्तकरणेवासतैहै ॥ हेअर्जुन यद्यपि काम्यकर्मभी आपणे धर्मस्वभावतैं इसपुरुषके अंतःकरणकीशुद्धिकरेहैं ॥ तथापि साकाम्यकर्मजन्यअंतःकरणकीशुद्धि तिनकाम्यकर्मोंकेसुखरूपफलकेभोगमात्रविषेहीं उपयोगीहोवैहै ॥

साअंतःकरणकीशुद्धि आत्मज्ञानविषे किंचित्मात्रभीउपयोगीहोवैनहीं ॥ यहवार्त्ता वार्तिकग्रंथकेकर्त्ता श्रीसुरेश्वराचार्यनैंभी कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ (काम्येपिशुद्धिरस्त्येवभोगसिद्ध्यर्थमेवसा ॥ विड्वराहादिदेहेननह्यैंद्रंभुज्यतेफलम्) ॥ अर्थयह ॥ काम्यकर्मौंकेकीयेहुएभी अंतःकरणकीशुद्धितौं होवैहै ॥ परंतु साकाम्यकर्मजन्यअंतःकरणकीशुद्धिकेवल भोगकीसिद्धिवासतेहीहोवैहै ॥ ज्ञानकीउत्पत्तिवासतेहोवैनहीं ॥ जिसकारणतैं इंद्रसंबंधीसुखरूपफल मलिनअंतःकरणवाले विड्वराहादिकदेहकरिकै भोग्याजातानहीं ॥ किंतु शुद्धअंतःकरणवाले देवदेहकरिकैहीं सोफल भोग्याजावैहै इति ॥ और जेयज्ञदानतपादिककर्म ज्ञानविषेउपयोगी अंतःकरणकीशुद्धिकूंकरेहैं ॥ तेयज्ञदानादिकर्म स्वर्गादिकफलकीइच्छापूर्वककऱ्येहुए बंधकेहेतुरूपहुएभी फलकीइच्छातैंविना कऱ्येहुए तेयज्ञदानादिककर्म बंधकेहेतुरूपहोवैंनहीं ॥ यातैं मुमुक्षुजनोंनैं फलकीइच्छापूर्वक तेयज्ञदानादिककर्म करणेनहीं ॥ किंतु मुमुक्षुजनोंनैं संगकूं तथा फलोंकूं परित्यागकरिकैहीं तेकर्म करणेयोग्यहै ॥ तहां यौवनादिकअवस्था तथाब्राह्मणादिकवर्ण तथागृहस्थादिकआश्रम इत्यादिकहैंनिमित्तजिसविषे ऐसाजो मैं इनकर्मौंकाकर्त्ताहूं मैंनैं यहकर्म अवश्यकरणेयोग्यहै याप्रकारका कर्तृत्वअभिमानहै ताकानाम संगहै॥और कामनाकेविषयभूत जे तिसतिसकर्मकरिकैप्राप्तहोणेहारे स्वर्गादिकपदार्थहैं तिनोंकानामफल है॥ऐसे संगकूं तथाफलोंकूं परित्यागकरिकै इसअधिकारीपुरुषनैं अंतःकरणकीशुद्धिवासतैहीं तेयज्ञदानादिककर्म करणेयोग्यहैं॥इसप्रकारका मैंभगवान्‌कानिश्चिततम है॥इसीकारणतैंहीं हेपार्थ कर्मकेअधिकारीपुरुषोंनैं तेयज्ञदानादिककर्म त्यागकरणेयोग्यहैं अथवा नहींत्यागकरणेयोग्यहैं इनदोनोंमतोंविषे तेकर्म नहींत्यागकरणेयोग्यहैं इसप्रकारका मैंभगवान्‌का मत अत्यंतश्रेष्ठहै ॥ तहां श्रीभगवान्‌नैं पूर्व (निश्चयंशृणुमेतत्र) इसवचनकरिकै जो आपणानिश्चय कथनकऱ्याथा ॥ सोआपणानिश्चय इसश्लोकविषे उपसंहारकऱ्या इति ॥ ६ ॥ ❀ ॥ तहां (यज्ञदानतपःकर्मनत्याज्यमितिचापरे) इसवचनकरिकै श्रीभगवान्‌नैं पूर्वकथनकऱ्याजो आपणापक्षथा ॥ सोआपणापक्ष इतनैंपर्यंत स्थापनकऱ्या ॥ अब (त्याज्यंदोषवदित्येकेकर्मप्राहुर्मनीषिणः) इसवचनकरिकै पूर्व कथनकऱ्याजो परपक्षथा ॥ तिसपरपक्षके पूर्वउक्तत्यागकेत्रिविधपणेकेव्याख्यानकरिकै निषेधकरणेका आरंभकरेहैं ॥

(मू० श्लो०) नियतस्यतुसंन्यासःकर्मणोनोपपद्यते ॥ मोहात्तस्यपरित्यागस्तामसःपरिकीर्त्तितः ॥ ७ ॥ नियतस्य । तु । संन्यासः । कर्मणः । न । उपपद्यते । मोहात् । तस्य । परित्यागः । तामसः । परिकीर्त्तितः ॥ ७ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन पुनः कर्मका त्याग नहीं संभवैहै तिसनित्यकर्मका मोहतैं परित्याग तामसत्याग कथनकऱ्याहै ॥ ७ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन स्वर्गादिकफलकीइच्छापूर्वक कऱ्येजे काम्यकर्महैं ॥ तेकाम्यकर्म अंतःकरणकीशुद्धिकेहेतुहोवैंनहीं ॥ उलटा तेकाम्यकर्म इसपुरुषकेबंध

केहींहेतुहोवैहैं ॥ यातैं तेकाम्यकर्म दोषवालेहींहैं ॥ इसीकारणतैंहीं बंधकीनिवृत्तिकाकारणरूपजोआत्मज्ञानहै तिसआत्मज्ञानकीइच्छावान्‌पुरुषनैं कन्याहुआ जो तिनकाम्यकर्मोंकात्यागहै ॥ सोत्यागतौं शास्त्रकरिकै तथायुक्तिकरिकै संभवताहींहै ॥ परंतु अंतःकरणकीशुद्धिकेहेतुहोणेतैं दोषतैंरहित ऐसेजेश्रुतिस्मृतिरूपशास्त्रविहित अग्निहोत्रसंध्योपासनादिकनित्यकर्महैं ॥ ऐसेनित्यकर्मोंकात्यागकरणा अंतःकरणकेशुद्धिकी इच्छावान्‌मुमुक्षुजनोंकूं शास्त्रकरिकै तथायुक्तिकरिकै संभवतानहीं ॥ किंतु अंतःकरणकीशुद्धिवासतै मुमुक्षुजनोंनैं तिननित्यकर्मोंका अवश्यकरिकैअनुष्ठानकरणा ॥ यहअर्थ (आरुरुक्षोर्मुनेर्योगंकर्मकारणमुच्यते) इसवचनकरिकै पूर्वभी प्रतिपादनकरिआयेहैं ॥ हेअर्जुन ऐसे अंतःकरणकीशुद्धिकरणेहारेनित्यकर्मोंका जो मोहकेवशतैंपरित्यागहै ॥ सोपरित्यागतामसत्याग कह्याजावैहै ॥ तहां वेदविहित तिननित्यकर्मविषे जोनिषिद्धपणेकाज्ञानहै ॥ तथा अनर्थकेअहेतुरूप तिनकर्मोंविषे जो अनर्थकेहेतुपणेकाज्ञानहै ॥ तथा धर्मरूपतिनकर्मोंविषे जो अधर्मपणेकाज्ञानहै ॥ तथा अनुष्ठानकरणेयोग्य तिनकर्मोंविषे जोनहींअनुष्ठानपणेकाज्ञानहै ॥ इसप्रकारका भ्रांतिज्ञानरूप जो विपर्यासहै ताकानाम मोहहै ॥ ऐसेमोहकेवशतैं जो तिननित्यकर्मोंकापरित्यागहै ॥ सोपरित्यागहै तामसत्याग कह्याजावैहै इति ॥ सोइसप्रकारका विपर्यासरूप मोह सांख्यशास्त्रवालेपुरुषोंकूंहोवैहै ॥ तहां तिनसांख्यीयोंका यह अभिप्रायहै ॥ जैसे काम्यकर्म दोषवालेहोवैहैं ॥ तैसे अग्निहोत्र दर्शपूर्णमास चातुर्मास्य ज्योतिष्टोम इत्यादिक नित्यकर्मभी दोषवालेहींहोवैहैं ॥ काहेतैं तिननित्यकर्मोंविषेभी व्रीहिआदिकोंकेकूटणेकरिकै तथायज्ञशालाकेमार्जनकरिकै तथाअग्निविषे होमकरणेकरिकै जीवोंकीहिंसाहोवैहै ॥ तथा पशुवोंकीहिंसाहोवैहै ॥ यातैं तेनित्यकर्मभी हिंसारूपदोषवालेहोणेतैं काम्यकर्मोंकीन्यांई दुष्टहींहै ॥ और (नहिंस्यात्सर्वाभूतानि) इसश्रुतिनैं सर्वभूतोंकेहिंसाका निषेधकर्‍याहै ॥ ॥ यातैं यज्ञविषे जोपशुकीहिंसाहै ॥ साहिंसाभी निषिद्धहींहै ॥ और अंतःकरणकीशुद्धितौं तिनहिंसाप्रधाननित्यकर्मोंतैंविना गायत्रीआदिकमंत्रोंकेजपकरिकैहीं होइसकेहै ॥ यहवार्त्ता महाभारतविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ (जपस्तुसर्वधर्मेभ्यःपरमोधर्मउच्यते ॥ अहिंसयाहिभूतानांजपयज्ञःप्रवर्त्तते ॥) अर्थयह ॥ गायत्रीमंत्रादिकोंकाजोजपहै ॥ सोजपतौं सर्वधर्मोंतैंपरमधर्म कह्याजावैहै ॥ काहेतैं जपयज्ञतैंभिन्न जितनैंकी ज्योतिष्टोमादिकयज्ञहैं ॥ तेसर्वयज्ञ भूतोंकीहींसाकरिकैहीं प्रवृत्तहोवैहैं ॥ और यहजपयज्ञतौं भूतोंकीअहिंसाकरिकैहींप्रवृत्तहोवैहै ॥ इसकारणतैं यहजपयज्ञ सर्वधर्मोंतैंपरमधर्म कह्याजावैहै इति ॥ यहवार्त्ता मनुनैंभीकथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ (जाप्येनैवतुसंसिद्ध्येद्ब्राह्मणोनात्रसंशयः ॥ कुर्यादन्यन्नवाकुर्यान्मैत्रोब्राह्मणउच्यते ॥) ॥ अर्थयह ॥ गायत्रीमंत्रादिकोंके जपकरिकैंहीं ब्राह्मण अंतःकरणकेशुद्धिकूंप्रातहोवैहै ॥ इसअर्थविषे किंचित्‌मात्रभी संशयनहींहै ॥ तिसअंतःकरणशुद्धिवासतै यहअधिकारीपुरुष दूसरेकिसीकर्मकूंकरै अथवा नहींकरै ॥ और अहिंसारूपमैत्रीवालापुरुषहीं ब्राह्मण कह्याजावैहै

इति ॥ इत्यादिकशास्त्रकेवचनोंनैं हिंसादोषवालेनित्यकर्मोंका निषेधकरिकै अंतःकरणकीशुद्धिवासतै गायत्रीमंत्रादिकोंकेजपकाहीं विधानकऱ्याहै ॥ यातैं अंतःकरणकीशुद्धितैंरहित कर्मकेअधिकारीपुरुषोंनैंभी तेयज्ञादिकनित्यकर्म परित्यागहींकरणे इति ॥ सोयह सांख्यीयोंकाकहणा अत्यंतविरुद्धहै ॥ काहेतैं यज्ञविषे जो पशुआदिकोंकीहिंसाहै ॥ साहिंसा इसपुरुषके अनर्थकाहेतुनहींहै ॥ किंतु यज्ञतैंविना जोपशुआदिकोंकीहिंसाहै ॥ साहिंसाहीं इसपुरुषकेअनर्थकाहेतुहोवैहै ॥ और (नहिंस्यात्सर्वाभूतानि) यहश्रुतिवचन जो भूतोंकीहिंसाकानिषेधकरेहै ॥ सोभीयज्ञयुद्धादिकोंतैंविनाजीवोंकेहिंसाकानिषेधकरेहै ॥ जोकदाचित् (नहिंस्यात्सर्वाभूतानि) यहवचन सर्वहिंसामात्रकानिषेधकरताहोवै ॥ तौं (अग्नीषोमीयंपशुमालभेत) इत्यादिक वेदकेंवचन जे यज्ञविषे पशुहिंसाका विधानकरेहैं ॥ तेसर्ववचन व्यर्थहोवैंगे ॥ सोवेदकेवचनोंकूं व्यर्थकहणा अत्यंतविरुद्धहै ॥ यातैं तिनदोनोंप्रकारकेवचनका परस्परउत्सर्गअपवादभावमानिके व्यवस्थाकरणीहीं उचितहै ॥ (नहिंस्यात्सर्वाभूतानि) यहवचनतौं उत्सर्गहै ॥ और (अग्नीषोमीयंपशुमालभेत) यहवचनताउत्सर्गका अपवाद है ॥ ताअपवादस्थलकूंछोडिकैहीं अन्यत्र ताउत्सर्गवचनकीप्रवृत्तिहोवैहै ॥ अर्थात् यज्ञयुद्धादिकोंतैंविना इसपुरुषनैं किसीजीवकीहिंसानहींकरणी इसप्रकारका तिसउत्सर्गवचनकाअर्थ सिद्धहोवैहै ॥ यातैं शास्त्रविहित यज्ञसंबंधीहिंसा दोषरूपनहींहै ॥ और पूर्वउक्त महाभारतकावचन तथामनुकावचनतौं केवलजपयज्ञकी स्तुतिपरहै ॥ कोई सोवचन यज्ञसंबंधीहिंसाविषे अधर्मपणेकूंबोधनकरतानहीं ॥ काहेतैं यहयज्ञसंबंधीहिंसा अधर्मरूपहै इसअर्थविषे तिसवचनका तात्पर्यहैनहीं ॥ किंतु केवल जपकीस्तुतिविषेहीं तिसवचनका तात्पर्यहै ॥ और जिसवचनका जिसअर्थविषे तात्पर्यहोवैहै ॥ तिसवचनका सोईहींअर्थहोवैहै ॥ यातैं सांख्यीयोंकूं वेदविहित अग्निहोत्र दर्शपूर्णमास चातुर्मास्य इत्यादिकनित्यकर्मोंविषे जोनिषिद्धपणेकाज्ञानहै ॥ तथा अनर्थकेअहेतुरूप तिनकर्मोंविषे जो अनर्थकेहेतुपणेकाज्ञानहै ॥ तथा धर्मरूप तिनकर्मोंविषे जोअधर्मपणेकाज्ञानहै ॥ तथा अनुष्ठानकरणेयोग्य तिनकर्मोंविषे जो नहींअनुष्ठानकरणेकाज्ञानहै ॥ सोयह सर्वविपर्यासरूपज्ञानमोहरूपहींहै ॥ ऐसेमोहकेवशतैं जो नित्यकर्मोंकापरित्यागहै ॥ सोपरित्याग तामसत्यागकह्याजावैहै ॥ जिसकारणतैं मोह तमरूपहींहै इति ॥ ७ ॥ ❀ ॥ इसप्रकार तामसत्यागकेस्वरूपकूंकथनकरिकै अब श्रीभगवान् राजसत्यागके स्वरूपकूं कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) दुःखमित्येवयत्कर्मकायक्लेशभयात्त्यजेत् ॥ सकृत्वाराजसंत्यागंनैवत्यागफलंलभेत् ॥ ८ ॥ दुःखम् । इति । एव । यत् । कर्म । कायक्लेशभयात् । त्यजेत् । सः । कृत्वा । राजसम् । त्यागम् । न । एव । त्यागफलम् । लभेत् ॥ ८ ॥ (इतिप०) ॥

हेअर्जुन यहकर्म दुःखरूप हीहै इसप्रकारमानिकै शरीरकेक्लेशकेभयतैं नित्यकर्मकूं त्यागकरणा ऐसाजोत्यागहै सोत्याग राजसहै ऐसेराजस त्यागकूं करिकै सोपुरुष त्यागकेफलकूं कदाचितभी नहीं प्राप्तहोता ॥ ८ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन पूर्वउक्तमोहकेअभावहुएभी जिसपुरुषकाअंतःकरण शुद्धनहींहुआ ऐसाजो कर्मोंकाअधिकारी पुरुषहै॥सोकर्मोंकाअधिकारीपुरुष यहअग्निहोत्र संध्याउपासनादिकसर्वनित्यकर्म दुःखरूपहींहैं ॥ याप्रकारतैं तिननित्यकर्मोंकूं दुःखरूपमानिकै ॥ तथा तिननित्यकर्मोंकेकरणेकरिकै जोशरीरविषेक्लेशहोवैहै ॥ तिसक्लेशकेभयतैं तिननित्यकर्मोंकाजोपरित्यागकरेहै ॥ सोकर्मोंकात्याग राजसत्याग कह्याजावैहै ॥ जिसकारणतैं सोदुःख रजोगुणरूपहींहोवैहै ॥ इसकारणतैं पूर्वउक्तमोहतैंरहितहुआभी सोराजसपुरुष तिसराजसत्यागकूंकरिकै त्यागकेफलकूंप्राप्तहोतानहीं ॥ अर्थात् वक्ष्यमाणसात्त्विकत्यागका जोज्ञाननिष्ठारूपफलहै ॥ तिसफलकूं सोराजसत्यागवालापुरुष प्राप्तहोतानहीं इति ॥ ८ ॥ ❀ ॥ तहां पूर्वदोश्लोकोंकरिकै नित्यकर्मोंका तामसत्याग तथाराजसत्याग परित्याज्यता रूपकरिकैदिखाया ॥ यातैं तिसतामसराजसत्यागकापरित्यागकरिकै इसअधिकारीपुरुषनैं कौनकर्मोंकात्याग अंगीकारकरणेयोग्यहै ॥ ऐसीअर्जुनकीजिज्ञासाकेहुए इसअधिकारीपुरुषनैं सात्त्विकत्यागहीं ग्रहणकरणे योग्यहै ॥ इसअर्थकूंकथनकरताहुआ श्रीभगवान् तासात्त्विकत्यागकेस्वरूपकूंकथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) कार्यमित्येवयत्कर्मनियतंक्रियतेऽर्जुन ॥ संगंत्यक्त्वाफलंचैवसत्यागःसात्त्विकोमतः ॥ ९ ॥ कार्यम् । इति । एव । यत् । कर्म । नियतम् । क्रियते । अर्जुन । संगम् । त्यक्त्वा । फलम् । च । एव । सः । त्यागः । सात्त्विकः । मतः ॥ ९ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन यहकर्म करणेयोग्य हीहै इसप्रकारमानिकै जो नित्य कर्म संगकूं तथा फलकूं त्यागकरिकै ही करीताहै सो त्याग शिष्टपुरुषोंनैं सात्त्विक मान्याहै ॥ ९ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन अग्निहोत्र संध्याउपासना इत्यादिकनित्यकर्मोंका विधानकरणेहारे जे (अग्निहोत्रंजुहोति अहरहःसंध्यामुपासीत) इत्यादिकवचनहैं तिनवचनोंविषे यद्यपि तिननित्यकर्मोंकाफल कथनकऱ्यानहीं ॥ तथापि वेदविहितहोणेतैं यहनित्यकर्म हमारेकूं अवश्यकरिकै करणेयोग्यहैं ॥ इसप्रकारका निश्चयकरिकै तिननित्यकर्मोंके कर्तृत्वअभिनिवेशरूपसंगकूं तथास्वर्गादिकफलकूं परित्यागकरिकै इसअधिकारीपुरुषनैं आपणेअंतःकरणकीशुद्धिपर्यंत जो अग्निहोत्रसंध्याउपासनादिकनित्यकर्म करीताहै ॥ सोत्याग शिष्टपुरुषोंनैं सात्विकहीं मान्याहै ॥ अर्थात् फलकीइच्छाकेत्यागपूर्वक तथाकर्तृत्वअभिमानकेत्यागपूर्वक सो नित्यकर्मोंकाअनुष्ठानरूप सात्विकत्याग शिष्टपुरुषोंकूं अंतःकरणकीशुद्धिवासतै ग्राह्यतारूपकरिकैअभिमतहै ॥ पूर्वउक्त राजसतामसत्यागकीन्यांई परित्याज्यतारूपकरिकै

अभिमततनहींहै ॥ शंका ॥ (स्वर्गकामोयजेत पुत्रकामोयजेत पशुकामोयजते) इत्यादिकवचनोंनैं जैसे स्वर्गपुत्रपशुआदिकफलोंकाउद्देशकरिकै काम्यकर्मोंका विधानकऱ्याहै ॥ तैसे नित्यकर्मोंकेविधानकरणेहारेवचनोंनैं स्वर्गादिकफलोंकाउद्देशकरिकै तिननित्यकर्मोंकाविधानकऱ्यानहीं ॥ यातैं यहजान्याजावैहै ॥ तिननित्यकर्मोंका कोईफलहीहैंनहीं ॥ यातैं (फलंत्यक्त्वा) याप्रकारकावचन भगवान्नैं कैसेकह्याहै ॥ समाधान ॥ यद्यपि नित्यकर्मोंकेविधानकरणेहारेव चनोंनैं स्वर्गादिकफलोंकाउद्देशकरिकै तिननित्यकर्मोंकाविधानकऱ्यानहीं ॥ तथापि तिननित्यकर्मोंकाकोईफल अवश्य अंगीकारकऱ्याचाहिये ॥ जोनित्यक र्मोंकाफल नहींअंगीकारकरिये ॥ तौं (फलंत्यक्त्वा) यहभगवान्‌काबचनहीं असंगतहोवैगा ॥ काहेतैं प्राप्तवस्तुकाहीं निषेधहोवैहै ॥ अप्राप्तवस्तुका निषेधहो तानहीं ॥ जोकदाचित् नित्यकर्मोंकाकोईफलनहींहोता तौं (फलंत्यक्त्वा) इसवचनकरिकै श्रीभगवान् तिननित्यकर्मोंकेफलका निषेधनहींकरता ॥ यातैं तिन नित्यकर्मोंकाभी कोईफलहै यहअर्थ (फलंत्यक्त्वा) इसभगवान्‌केवचनतैंहींजान्याजावैहै ॥ किंवा शास्त्रकारोंनैं याप्रकारकान्याय कथनकऱ्याहै ॥ (प्रयोज नमनुद्दिश्यमंदोपिनप्रवर्त्तते) ॥ अर्थयह ॥ फलरूपप्रयोजनका नहींउद्देशकरिकै मूढपुरुषभी किसीकार्यविषेप्रवृत्तहोतानहीं तौंबुद्धिमान्‌पुरुष तिसप्रयोजनकेउद्देश तैंविना कार्यविषे कैसेप्रवृत्तहोवैगा ॥ किंतु नहींप्रवृत्तहोवैगा इति ॥ यातैं तिननित्यकर्मोंका जोकोईभीफल नहींअंगीकारकरिये ॥ तौं तिननिष्फलनित्यकर्मों विषे कोईभीपुरुष प्रवृत्तहोवैगानहीं ॥ याकारणतैंभी तिननित्यकर्मोंका कोईफल अंगीकारकऱ्याचहिये ॥ किंवा आपस्तंबऋषिनैंभी तिननित्यकर्मोंकाफल क थनकऱ्याहै ॥ तहांऋषिवचनम् ॥ (तद्यथाम्रेफलार्थेनिर्मितेच्छायागंधइत्यनूत्पद्येते एवंधर्मंचर्यमाणमर्थाअनूत्पद्यंते) ॥ अर्थयह ॥ जैसेजिसपुरुषनैं आम्रफलों कीप्राप्तिवास्तै आम्रकावृक्ष लगायाहै ॥ तिसपुरुषकूं तिसआम्रवृक्षके छायासुगंधरूपआनुषंगिकफल अवश्यकरिकै प्राप्तहोवैहैं ॥ तैसे जिसपुरुषनैं स्वधर्मजा निकै नित्यकर्मोंकाअनुष्ठानकऱ्याहै ॥ तिसपुरुषकूं तिननित्यकर्मोंकेस्वर्गादिरूपआनुषंगिकफल अवश्यकरिकै प्राप्तहोवैहैं ॥ तहां महान्‌फलकीप्राप्तितैंपूर्व इ च्छातैंविनाहीं जोफल प्राप्तहोवैहै ताकूं आनुषंगिकफलकहेहैं ॥ तहांअंतःकरणकीशुद्धिद्वारा आत्मज्ञानकीप्राप्तिकरिकै जोमोक्षकीप्राप्तिहै ॥ यहहीं तिननित्यक र्मोंका महान्‌फलहै ॥ सोमहान्‌फल जबपर्यंत इसपुरुषकूं नहींप्राप्तहोवैहै ॥ तबपर्यंत इसपुरुषकूं तिननित्यकर्मोंकेवशतैं स्वर्गादिकआनुषंगिकफल अवश्यकरिकै प्राप्तहोवैहैं इति ॥ इसआपस्तंबऋषिकेवचनतैंभी तिननित्यकर्मोंकाफलसिद्धहोवैहै ॥ किंवा जिन अग्निहोत्र संध्याउपासनाआदिक नित्यकर्मोंकेनहींकरणेकरिकै जेप्रत्यय उत्पन्नहोवैहैं ॥ तिननित्यकर्मोंकेकरणेकरिकै तेप्रत्यवाय उत्पन्नहोवैंनहीं ॥ यातैं प्रत्यवायकीनिवृत्तिभी तिननित्यकर्मोंकाहींफलहै ॥ तहां नित्यकर्मोंकेनहींकरणेकारिकै इसअधिकारीपुरुषकूं प्रत्यवायकीप्राप्ति श्रुतिविषे तथास्मृतिविषे कथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ (अकृत्वावैदिकं नित्यंप्रत्यवायीभवे

नरः) ॥ अर्थयह ॥ वेदप्रतिपादितअग्निहोत्र संध्याउपासनाआदिक नित्यकर्मोंकूंनकरिकै यहअधिकारीपुरुष पापरूपप्रत्यवायकूं प्राप्तहोवैहै इति ॥ तहांस्मृतिवच नम्॥ (श्रौतंचापितथास्मार्तंकर्मालंब्यवसेद्द्विजः॥तद्विहीनःपतत्येवह्यालंबरहितांधवत्) ॥ अर्थयह ॥श्रौतनित्यकर्मोंकूं तथास्मार्त्तनित्यकर्मोंकूं आश्रयणकरिकैहीं यहद्विज स्थितहोवै॥तिनश्रौतस्मार्त्तकर्मोंतैंरहितहुआ यहद्विज अवश्यकरिकै अधोपतनहोवै ॥ जैसे यष्टिकादिकआलंबनतैंरहित अंधपुरुष गर्त्तविषे पतन होवैहै इति ॥ अन्यस्मृति (एकाहंजपहीनस्तुसंध्याहीनोदिनत्रयम् ॥ द्वादशाहमनग्निश्चशूद्रएवनसंशयः) ॥ अर्थयह ॥ जोअधिकारीब्राह्मण एकदिनपर्यंत जपतैंरहितहै॥ तथा तीनदिनपर्यंत संध्यातैंरहितहै ॥ तथा द्वादशदिनपर्यंत अग्निहोत्रतैंरहितहै ॥ सोब्राह्मण शूद्रहींजानणा ॥ इसअर्थविषे किंचित्‌मात्रभी संशयनहींहै इति ॥ अन्यस्मृति ॥ (त्र्यहंसंध्याविरहितोद्वादशाहंनिरग्निकः ॥ चतुर्वेदधरोविप्रःशूद्रएवनसंशयः) ॥ अर्थयह ॥ जोब्राह्मण तीनदिनपर्यंत संध्योपासनतैंरहितहै ॥ तथा द्वादशदिनपर्यंत अग्निहोत्रतैंरहितहै ॥ सोब्राह्मण च्यारिवेदोंकापाठकहुआभी शूद्रहींजानणा ॥ इसअर्थविषे किंचित्‌मात्रभी संशयनहींहै इति ॥अन्यस्मृति॥ (तस्मान्नलंघयेत्संध्यांसायंप्रातःसमाहितः ॥ उल्लंघयतियोमोहात्सयातिनरकंध्रुवम्) ॥ अर्थयह॥ जिसकारणतैं संध्याकेउल्लंघनकरणेतैं इसब्राह्मणविषे शूद्रभावकी प्राप्तिहोवैहै ॥ तिसकारणतैं यहअधिकारीब्राह्मण तिससंध्याकूं कदाचित्‌भी उल्लंघन नहींकरैं ॥ किंतु सायंकालविषे तथाप्रातःकालविषे यहब्राह्मण सावधानहोइ के तिनसंध्याकूंकरैं ॥ जोब्राह्मण प्रमादकेवशतैं तिससंध्याकापरित्यागकरैहै ॥ सोब्राह्मण निश्चयकरिकै नरककूंप्राप्तहोवैहै इति ॥ इत्यादिकश्रुतिस्मृतिवचनोंनैं अग्निहोत्रसंध्योपासनादिकनित्यकर्मोंकेनहींकरणेतैं इसअधिकारीपुरुषकूं प्रत्यवायकीप्राप्ति कथनकरीहै ॥ और (धर्मेणपापमपनुदतितस्माद्धर्मंपरमंवदंति) ॥ अर्थयह ॥ यहअधिकारीपुरुष अग्निहोत्रादिकनित्यधर्मकरिकै प्रतिबंधकपापोंकूंनिवृत्तकरैहै ॥ तिसकारणतैं वेदवेत्तापुरुष इसनित्यधर्मकूं परमधर्म कहेहैं इति ॥ इत्यादिकश्रुतिवचनोंनैं ज्ञानकेप्रतिबंधकपापोंकी निवृत्तिरूप तथाज्ञानकेउत्पत्तिकीयोग्यतारूपपुण्यकीउत्पत्तिरूप आत्मसंस्कारहीं तिननित्यकर्मोंकाफल कथ नकऱ्याहै ॥ और किसीशास्त्रविषेतौं संध्योपासनरूपनित्यकर्मका ब्रह्मलोककीप्राप्तिरूपफल कथनकऱ्याहै ॥ तहां श्लोक ॥ (संध्यामुपासतेयेतुसततंसंशितव्रताः ॥ विधूतपापास्तेयांतिब्रह्मलोकमनामयम्)॥ अर्थयह ॥ जेअधिकारीपुरुष दृढव्रतवालेहुए संध्याकूं उपासनाकरैहैं ॥ तेपुरुष सर्वपापोंतैंरहितहोइकै ब्रह्मलोककूंप्राप्तहो वैहैं इति ॥ इसप्रकारतैं श्रुतिस्मृतिआदिकशास्त्रोंविषे तिननित्यकर्मोंकाभीफल कथनकऱ्याहै ॥ तिसफलकी इच्छाकापरित्यागकरिकैहीं इसअधिकारीपुरुषनैं तेनित्यकर्मकरणे ॥ इसीअभिप्रायकरिकै श्रीभगवान्‌नैं ईहां (फलंत्यक्त्वा) इसवचनकरिकै तिननित्यकर्मोंकेफलकापरित्याग कथनकऱ्याहै ॥ यातैं श्रीभगवान् केवचनविषे किंचित्‌मात्रभी विरोधकीशंका संभवतीनहीं इति॥ किंवा त्याग संन्यास यहदोनोंशब्द घट पट इनदोनोंशब्दोंकीन्यांई भिन्नभिन्नजातिवालेअर्थकेवाच

कनहींहैं ॥ किंतु फलकीइच्छापूर्वक जेकर्महैं तिनकर्मोंकात्यागहीं तिनदोनोंशब्दोंकाअर्थहै ॥ यहजोअर्थ पूर्वकथनकन्याथा ॥ तिसअर्थकाभी ईहां विस्मरण करणानहीं ॥ तहां फलकीइच्छाकेविद्यमानहुएभी पूर्वउक्तमोहकेवशतैं अथवा शरीरकेक्लेशकेभयतैं जो नित्यकर्मोंकापरित्यागहै॥सोत्यागतौं कर्मरूपविशेष्यकेअभाव कृत विशिष्टाभावरूपहै ॥ सो विशेष्याभावप्रयुक्तविशिष्टाभावरूपत्याग तामसपणेकरिकै तथाराजसपणेकरिकै पूर्व निंदनकन्याथा ॥और नित्यकर्मोंकेविद्यमानहुएभी तिनकर्मोंकेफलकीइच्छाकाजोपरित्यागहै ॥ सोत्याग फलकीइच्छारूपविशेषणकेअभावकृत विशिष्टाभावरूपहै ॥ सो विशेषणाभावप्रयुक्तविशिष्टाभावरूपत्याग सात्त्विकपणेकरिकै स्तुतिकन्याजावैहै ॥ इसप्रकार विशेष्यकेअभावकृतविशिष्टाभावविषे तथाविशेषणकेअभावकृतविशिष्टाभावविषे विशिष्टाभावपणा तुल्यहीहै यातैं श्रीभगवान्‌केपूर्वअपरवचनोंका विरोधहोवैनहीं ॥ और फलकीइच्छारूपविशेषणके तथाकर्मरूपविशेष्यकेदोनोंकेअभावकृत जो विशिष्टाभावरूप कर्मोंकात्या गहै ॥ सोत्यागतौं सत्त्वादिकतीनगुणोंतैंरहितहोणेतैं निर्गुणरूपहीहै ॥ यातैं सोनिर्गुणत्याग सात्त्विक राजस तामस इसतीनप्रकारकेत्यागविषे गण्याजावैनहीं इति ॥ इतनैंकहणेकरिकै इसप्रकारकेदोषकीभी निवृत्तिकरी ॥ सोदोषयहहै ॥ तहां (त्यागोहिपुरुषव्याघ्रत्रिविधःसंप्रकीर्त्तितः) इसवचनकरिकै प्रथम तीनप्रकारकेत्याग कीप्रतिज्ञाकरिकै तिसतैंअनंतर दोप्रकारकेकर्मत्यागकूंकथनकरिकै पश्चात्‌तिसप्रतिज्ञाकेप्रतिकूल कर्मकेअनुष्ठानरूप तीसरेप्रकारकूं श्रीभगवान् कथनकरताभयाहै ॥ यातैं श्रीभगवान्‌कूं प्रगटहीं अकुशलतारूपदोष प्राप्तहोवैहै॥जैसे कोईपुरुष तीनब्राह्मणोंकोभोजनकरावणा ॥ याप्रकारकावचन प्रथमकहै ॥ तिसतैंअनंतर यहवचन कहै ॥ दोतौं कठकौंडिन्यनामाब्राह्मण तीसराक्षत्रिय ॥ इसप्रकारकेवचनकहणेहारेपुरुषकूं प्रगटहीं अकुशलतादोषकीप्राप्तिहोवैहै ॥ काहेतैं प्रथम तीनब्राह्मणोंकेभो जनकरावणेकीप्रतिज्ञाकरिकै पश्चात् दोतौं ब्राह्मणकहणे तीसराक्षत्रियकहणा ॥ यहवार्त्ता पूर्वप्रतिज्ञाकीविस्मृतिरूप अकुशलतादोषतैंहोवैहै ॥ तैसे प्रथम तीनप्रका रकेत्यागकीप्रतिज्ञाकरिकै पश्चात् दोप्रकारकातौं कर्मोंकात्यागकहणा ॥ और तीसरा कर्मोंकाअनुष्ठानकहणा ॥ यहवार्त्ता अकुशलतादोषतैं होवैहै इति ॥ सोयह दोष संभवतानहीं ॥ काहेतैं तिनतीनोंप्रकारोंविषे विशिष्टाभावरूपत्यागसामान्यपणेकरिकै एकजातीयपणा पूर्वविस्तारतैंप्रतिपादनकरिआयेहै ॥ यातैं श्रीभगवान्‌विषे अकुशलताकाकथनकरणा यहहीं तिनपुरुषोंविषे महान्‌अकुशलताहै इति ॥ ९ ॥ ❀ ॥ अब पूर्वउक्त सात्त्विकत्यागकेग्रहणकरावणेवासते श्रीभगवान् तिससात्त्विकत्यागके अंतःकरणकीशुद्धिद्वारा ज्ञाननिष्ठारूपफलकूं कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) नद्वेष्ट्यकुशलंकर्मकुशलेनानुषज्जते ॥ त्यागीसत्त्वसमाविष्टोमेधावीछिन्नसंशयः ॥ १० ॥ नँ । द्वेष्टिं । अंकुशलम्। कर्मं । कुंशले । नँ । अंनुषज्जते । त्यांगी । सत्त्वसमाविष्टः । मेधावी । छिन्नसंशयः ॥१०॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन सोपूर्वउक्त

सात्विकत्यागवालापुरुष जबी सत्त्वकरिकैंव्याप्तहोवैहै तबी तत्त्वज्ञानवालाहोवैहै तथासर्वसंशयोंतैंरहितहोवैहै तबी अशोभन कर्मकूं नहीं प्रतिकूलमानैहै तथा शोभनकर्मविषे नहीं प्रीतिकरेहै ॥ १० ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जोत्यागीपुरुष सात्विकत्यागकरिकैयुक्तहै ॥ अर्थात् पूर्वश्लोकउक्तप्रकारकरिकै कर्तृत्वअभिनिवेशकूं तथास्वर्गादिकफलकीइच्छाकूं परित्यागकारिकै अंतःकरणकीशुद्धिवास्तै वेदविहित नित्यकर्मोंकाअनुष्ठानकरेहै ॥ सोत्यागीपुरुष जिसकालविषे सत्त्वकरिकै सम्यक् आविष्टहोवैहै ॥ तहां आत्म अनात्मविवेकज्ञानकाहेतुभूतजो चित्तविषेस्थित सम्यक्ज्ञानकाप्रतिबंधकरजतमरूपमलकाराहित्यरूप अतिशयताहै ताकानाम सत्त्वहै ॥ तासत्त्वकरिकैसम्यक् व्याप्तहोवैहै ॥ ईहां उक्तसत्त्वकीव्याप्तिविषे जोनियमकरिकै आत्मज्ञानरूपफलकाजनकपणाहै यहहीं सम्यक्पणाहै ॥ अर्थात् भगवत्अर्पितनित्यकर्मोंकेअनुष्ठानतैं पापरूपमलकाअपकर्षरूपसंस्कारकरिकै तथाज्ञानकेउत्पत्तिकीयोग्यतारूपपुण्यगुणकाआधानरूपसंस्कारकरिकै संस्कृत जबी अंतःकरणहोवैहैं ॥ तबी सोत्यागी पुरुष मेधावीहोवैहै ॥ तहां विवेक वैराग्य शमदमादिषट्संपत् मुमुक्षुता तथासर्वकर्मोंकाविधिवत्परित्याग तथाब्रह्मवेत्तागुरुकेसमीपगमन इत्यादिकसाधनोंकरिकै तथातिसब्रह्मवेत्तागुरुकेमुखतैं वेदांतशास्त्रके श्रवण मनन निदिध्यासन इनतीनसाधनोंकरिकै उत्पन्नहुआ तथातत्त्वमसिआदिकवेदांतमहावाक्यहैकरणजिसका तथा निवृत्तहुईहैसर्वअप्रामाण्यशंकाजिसतैं तथाअखंडअद्वितीयचैतन्यवस्तुकूंनहींविषयकरणेहारा ऐसाजो अहंब्रह्मास्मि याप्रकारका ब्रह्मात्मऐक्यज्ञानहै ताकानाम मेधाहै ॥ ऐसीमेधाकरिकै जोपुरुष नित्यहींयुक्तहोवै ताकानाम मेधावीहै ॥ ऐसामेधावी सोपुरुष होवैहै ॥ अर्थात् स्थितप्रज्ञहोवैहै ॥ और तिस स्थितप्रज्ञताकाल विषे सोपुरुष छिन्नसंशयहोवैहै ॥ तहां आत्मसाक्षात्कारकरिकै छिन्नहुएहैं क्या निवृत्तहुएहैं सर्वसंशय जिसके ताकानाम छिन्नसंशयहै ॥ तात्पर्ययह ॥ अहं ब्रह्मास्मि इसप्रकारकीब्रह्मविद्यारूपमेधाकरिकै तिसपुरुषकीअविद्या निवृत्तहोइजावैहै ॥ और साअविद्याहीं सर्वसंशयोंकीउत्पत्तिविषेकारणहै ॥ यातैं ताकारणरूप अविद्याकेनिवृत्तहुएतैंअनंतर ताअविद्याकेकार्यरूप सर्वसंशयोंतैं तथाविपर्ययोंतैं सोतत्त्ववेत्तापुरुष रहितहोवैहै इति ॥ तहां आत्मसाक्षात्कारकरिकै अविद्याकी निवृत्तिद्वारा जिनसंशयोंकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ तेसंशय यहहैं ॥ सांचित आगामि वर्त्तमान इनतीनप्रकारकेकर्मोंकरिकै हमारेकूं कोईलेपहै अथवा नहींहै ॥ और कर्तृत्व भोक्तृत्व आदिकसंसार आत्माकूंहोवैहै अथवा अंतःकरणादिकअनात्माकूंहोवैहै ॥ और मोक्षकाहेतु योगहै अथवा उपासनाहै अथवा कर्महै अथवा आत्मसाक्षात्कारहै ॥ और सालोक्य सामीप्य सायुज्य यहहींमोक्षहै अथवा इसीजन्मविषे ब्रह्मात्मरूपकरिकैस्थिति मोक्षहै इति ॥ इनसर्वसंशयोंविषे अंत्य कीकोटि सिद्धांतरूपजानणी ॥ और आदिकीकोटि पूर्वपक्षरूपजानणी ॥ इत्यादिकसर्वसंशयोंतैं तथादेहादिकोंविषेआत्मत्वबुद्धिरूपसर्वविपर्ययोंतैं सोतत्त्ववे

नापुरुष रहितहोवैहे ॥ तिसकालविषे सर्वकर्मोंतैंरहितहोणेतैं सोतत्त्ववेत्तापुरुष अकुशलकर्मोंविषे द्वेषनहींकरैहै ॥ अर्थात् अज्ञानीपुरुषोंकेबंधनकाहेतुहोणेतैं अशोभनरूप जे काम्य कर्महैं अथवा निषिद्ध कर्महैं तिन काम्यकर्मोंकूं सो तत्त्ववेत्ता पुरुष प्रतिकूलतारूपकरिकै मानता नहीं ॥ और अंतःकरणकीशुद्धिद्वारा आत्मज्ञानकाहेतुहोणेतैं शोभनरूप जे नित्यकर्महैं ॥ तिननित्यकर्मोंविषेभी सोतत्त्ववेत्तापुरुष प्रीतिकरतानहीं ॥ जिसकारणतैं कर्तृत्व भोक्तृत्वअभिमानतैंरहितहोणेतैं सोतत्त्ववेत्तापुरुष कृतकृत्यहींहे ॥ ऐसे कृतकृत्यतत्त्ववेत्तापुरुषका किसीकर्मविषेद्वेष तथाकिसीकर्मविषेप्रीति संभवैनहीं ॥ यह सर्वअर्थ श्रुतिविषेभी कथनकऱ्याहै ॥ तहांश्रुति ॥ (भिद्यतेहृदयग्रंथिश्छिद्यंतेसर्वसंशयाः ॥ क्षीयंतेचास्यकर्माणितस्मिन्दृष्टेपरावरे) ॥ अर्थयह ॥ मैंब्रह्मरूपहूं ॥ इसप्रकारके ब्रह्मसाक्षात्कारकेप्राप्तहुए इसतत्त्ववेत्तापुरुषकी चित्जडग्रंथि भेदनहोवैहे ॥ तथा पूर्वउक्तसर्वसंशयभी छेदनहोवैहैं ॥ तथा पुण्यपापसर्वकर्मभी क्षय होवैहैं इति ॥ हेअर्जुन जिसकारणतैं तिससात्त्विकत्यागका इसप्रकारका महान्फलहै तिसकारणतैं इसअधिकारीपुरुषनैं महान्प्रयत्नकरिकैभी सोसात्त्विक त्यागहीं संपादनकरणा इति ॥ १० ॥ ❀ ॥ तहां कर्मविषेप्रवृत्तिकाहेतुभूत जेरागद्वेषादिकहैं ॥ तेरागद्वेषादिक ज्ञानवान्पुरुषविषेहैंनहीं ॥ यातैं तिस ज्ञानवान्पुरुषविषेतौं सोसर्वकर्मोंकापरित्याग संभवहोइसकैहै ॥ यहअर्थ पूर्वश्लोकविषे कथनकऱ्या अब अज्ञानीपुरुषविषे सोसर्वकर्मोंकापरित्याग संभवता नहीं ॥ इसअर्थविषे श्रीभगवान् हेतुकहेहै ॥

(मू० श्लो०) नहिदेहभृताशक्यंत्यक्तुंकर्माण्यशेषतः ॥ यस्तुकर्मफलत्यागीसत्यागीत्यभिधीयते ॥ ११ ॥ न । हि । देहभृता । शक्यम् । त्यक्तुम् । कर्माणि । अशेषतः । यः । तु । कर्मफलत्यागी । सः । त्यागी । इति । अभिधीयते ॥ ११ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥

हेअर्जुन जिसकारणतैं देहाभिमानीपुरुषनैं निःशेषपतैं कर्म त्यागणेकूं नहीं शक्यहैं तिसकारणतैं जोअज्ञानीपुरुष कर्मोंकेफलका त्यागीहै सोअज्ञानीपुरुषभी त्यागी इसनामकरिकै कह्याजावैहै ॥ ११ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ मैंमनुष्यहूं मैंब्राह्मणहूं मैंगृहस्थहूं इसप्रकारके अबाधितअभिमानकरिकै जोपुरुष देहकूंधारणकरैहै अथवा पोषणकरैहै ताकानाम देहभृत्है ॥ अर्थात् कर्मकेअधिकारकाहेतुभूत जे ब्राह्मणादिकवर्णहैं तथागृहस्थादिकआश्रमहैं ॥ तिनवर्णआश्रमोंकाआश्रयरूप तथाकर्तृत्वभोक्तृत्वआदिकोंकाआश्रयरूप ऐसाजो स्थूलसूक्ष्मशरीरइंद्रियादिकोंकासंघातरूपदेहहै ॥ जोदेह अनादिअविद्यावासनावोंकेवशतैं व्यवहारकेयोग्यतारूपकरिकैकल्पितहोणेतैं असत्यहै ॥ ऐसेअसत्यदेहकूं सत्यरूपकरिकैदेखताहुआ तथाआपणेतैंभिन्नभी तिसदेहकूं आपणेतैंअभिन्नकरिकै देखताहुआ जोपुरुष पूर्वउक्तअभिमानकरिकै तिसदेहकूं धारणकरैहै अथवा

पोषणकरैहै ताकानाम देहभृत्है ॥ तात्पर्ययह ॥ नहींनिवृत्तहुआहैकर्मकेअधिकारकाहेतुभूतदेहाभिमान जिसका ताकानाम देहभृत्है ॥ कैसाहैसोदेहभृत्पुरुष ॥ कर्मोंविषेप्रवृत्तिकाहेतुभूत जेरागद्वेषादिकहैं ॥ तिनरागद्वेषादिकोंकीबाहुल्यताकरिकै निरंतर तिनकर्मोंविषेप्रवर्त्तमानहै ॥ ऐसे विवेकज्ञानतैंशून्यदेहाभिमानीपुरुषनैं तत्त्ववेत्तापुरुषकीन्यांई तेकर्म निःशेषतैं परित्याग नहींकरिसकीते ॥ काहेतैं जबपर्यंत कारणसामग्री विद्यमानहोवैहै ॥ तबपर्यंत निःशेषतैं कार्यकापरित्याग कन्याजातानहीं ॥ सारागद्वेषादिरूपकारणसामग्री तिसअज्ञानीपुरुषविषे विद्यमानहै ॥ यातैं जोअज्ञानीअधिकारी अंतःकरणकीशुद्धिवासतै तिनकर्मोंकूंकरता हुआभी परमेश्वरकीकृपाकेवशतैं तिनकर्मोंकेफलका परित्यागकरैहै ॥ सोअधिकारीपुरुषभी त्यागी इसनामकरिकैकह्याजावैहै ॥ अर्थात् सोकर्मकर्त्ताअज्ञानीपुरुष वास्तवतैंअत्यागीहुआभी स्तुतिकेवासतै त्यागशब्दकीगौणीवृत्तिकरिकै त्यागी इसनामकरिकै कह्याजावैहै ॥ और सो निःशेषतैंसर्वकर्मोंकापरित्यागतौं देहाभिमानतैंरहित परमार्थदर्शीपुरुषनैंहीं करिसकीताहै ॥ यातैं सोपरमार्थदर्शी तत्त्ववेत्तापुरुषहीं त्यागशब्दकीमुख्यवृत्तिकरिकै त्यागी इसनामकरिकैकह्याजावैहै ॥ ईहां (यस्तु) इसवचनविषेस्थितजो तु यहशब्दहै ॥ सोतुशब्द तिसकर्मफलत्यागीपुरुषके दुर्लभताकाबोधनकरणेवासतैंहै ॥ अर्थात् फलकीइच्छाकापरित्यागकरिकै अंतःकरणकीशुद्धिवासतै तिननित्यकर्मोंकूंकरणेहारा पुरुषभी दुर्लभहींहै इति ॥ ११ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् देहाभिमानवाला तथापरमात्मज्ञानतैंरहित ऐसाजोकर्मीपुरुषहै ॥ सोकर्मीपुरुषभी फलकीइच्छाकेपरित्यागमात्रतैं गौणसंन्यासी कह्याजावैहै ॥ और देहाभिमानतैंरहित तथापरमात्मज्ञानवाला ऐसाजो फलसहितसर्वकर्मोंके त्यागवाला सोतत्त्ववेत्तापुरुषहै ॥ सोतत्त्ववेत्तापुरुषतौं मुख्यसंन्यासी कह्याजावैहै ॥ यहअर्थ पूर्वश्लोकविषे आपनैं कथनकन्या ॥ तहां गौणसंन्यासीकेफलविषे तथामुख्यसंन्यासीकेफलविषे क्याविशेषहै॥जिसविशेषकेअलाभकरिकै एकसंन्यासीविषेतौं गौणपणाहोवैहै॥और जिसविशेषकेलाभकरिकै दूसरेसंन्यासीविषे मुख्यपणाहोवैहै ॥ और कर्मकेफलकात्यागीपणातौं तिनदोनोंविषे तुल्यहींहै ॥ यातैं ताकरिकैभी विशेषतासंभवैनहीं ॥ किंतु इसतैं कोईअन्य हींविशेष कह्याचहिये ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहेहै ॥

(मू॰ श्लो॰) अनिष्टमिष्टंमिश्रंचत्रिविधंकर्मणःफलम् ॥ भवत्यत्यागिनांप्रेत्यनतुसंन्यासिनांक्वचित् ॥ १२ ॥ अनिष्टम् । इष्टं । मिश्रं । च । त्रिविधं । कर्मणः । फलं । भवति । अत्यागिनां । प्रेत्य । न । तु । संन्यासिनां । क्वचित् ॥ १२ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन तिन गौणसंन्यासीयोंकूंतौं मरणतैंअनंतर कर्मोंका अनिष्ट इष्ट तथा मिश्र यहतीनप्रकारका फल प्राप्तहोवैहै और मुख्यसंन्यासीयोंकूंतौं कभीभी सोत्रिविधफल नहीं प्राप्तहोवैहै ॥ १२ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन कर्मोंकेस्वर्गादिकफलोंकेत्यागवालेहुएभी कर्मोंकाअनुष्ठानकरणेहारे जे आत्मज्ञानकरणेहारे जे आत्मज्ञानतैंरहित गौणसंन्यासीहैं तिनोंकानाम
अत्यागीहै ॥ जेअत्यागीपुरुष आत्मज्ञानकीइच्छारूपविविदिषाकीउत्पत्तिपर्यंत अंतःकरणकीशुद्धिकूंनहींसंपादनकरिकै तिसतैंपूर्वहींमरणकूंप्राप्तहुएहैं ॥ ऐसेअत्यागी
पुरुषोंकूं मरणतैंअनंतर पूर्वकऱ्येहुएकर्मोंका शरीरकाग्रहणरूपफल अवश्यकरिकैप्राप्तहोवैहै ॥ ईहां (कर्मणः) इसपदकरिकै यद्यपि एकहीं कर्म कथनकऱ्याहै ॥
तथापि ॥ एककर्मविषे तीनप्रकारकेफलकीजनकतासंभवतीनहीं ॥ यातैं (कर्मणः) यहपद कर्मत्वजातिविशिष्ट पुण्य पाप मिश्रित इनतीनप्रकारकेहींकर्मोंका
वाचकहै ॥ सोशरीरकाग्रहणरूपकर्मकाफल कारणरूपकर्मोंकेत्रिविधपणेकरिकै अनिष्ट इष्ट मिश्र यहतीनप्रकारकाहींहोवैहै ॥ तहां पापकर्मकातौं अनिष्टफलहो
वैहै ॥ और पुण्यकर्मका इष्टफलहोवैहै ॥ और पुण्यपापदोनोंकर्मोंका मिश्रफलहोवैहै ॥ तहां यहशरीर हमारेकूं मतप्राप्तहोवै याप्रकारके प्रतिकूलताज्ञानकेविषय
जेनारकीयतिर्यक्शरीरहैं ॥ तिनशरीरोंकीप्राप्ति अनिष्टफल कह्याजावैहै ॥ और यहशरीर हमारेकूं प्राप्तहोवैं याप्रकारके अनुकूलताज्ञानकेविषय जेदेवादिक
शरीरहैं ॥ तिनशरीरोंकीप्राप्ति इष्ट फल कह्याजावैहै ॥ और पापकर्मकेफलयुक्त तथापुण्यकर्मकेफलयुक्त जेमनुष्यशरीरहैं ॥ तिनशरीरोंकीप्राप्ति मिश्रफल कह्या
जावैहै ॥ यद्यपि (अनिष्टमिष्टंमिश्रंच) इसवचनकरिकैहीं तिसकर्मकेफलविषे त्रिविधपणा सिद्धहोइसकैहै ॥ यातैं पुनः (त्रिविधं) यहवचनकहणा असंगतहै ॥
तथापि (त्रिविधम्) इसवचनकरिकै जो पुनःतिसफलकेत्रिविधपणेकाअनुवादकऱ्याहै ॥ सो तिसत्रिविधफलकेपरित्यागकरावणेवासतै कऱ्याहै ॥ अर्थात् मुमुक्षु
जननैं इनतीनोंप्रकारकेफलकापरित्यागकरणा इति ॥ इतनैंकरिकै तिनगौणसंन्यासीयोंकूं मरणतैंअनंतर कर्मकेवशतैं शरीरकीप्राप्ति अवश्यकरिकैहोवैहै यहअर्थ
कथनकऱ्या ॥ अब तिनमुख्यसंन्यासीयोंकूंतौं ब्रह्मसाक्षात्कारकरिकै कार्यसहितअविद्याकेनिवृत्तहुए विदेहकैवल्यरूपमोक्षहीं प्राप्तहोवैहै इसअर्थ श्रीभगवान् कथन
करैहै (नतुसंन्यासिनां क्वचित्इति) हेअर्जुन विधिवत् सर्वकर्मोंकापरित्यागकऱ्याहैजिनोंनैं तथामैंब्रह्मरूपहूं इसप्रकारके परमात्मसाक्षात्कारकरिकैयुक्त ऐसेजे
परमहंसपरिव्राजक मुख्यसंन्यासीहैं ॥ तिनमुख्यसंन्यासीयोंकूंतौं मरणतैंअनंतर तिनकर्मोंका शरीरकाग्रहणरूप अनिष्टफल अथवा इष्टफल अथवा मिश्रफल
किसीभीदेशविषे तथाकिसीभीकालविषे प्राप्तहोतानहीं ॥ काहेतैं तिनब्रह्मवेत्तामुख्यसंन्यासीयोंका आत्मसाक्षात्कारकरिकै अज्ञान निवृत्तहोइगयाहै ॥ ता
अज्ञानरूपकारणकेनिवृत्तहुए ताअज्ञानकेकार्यरूपसर्वकर्मभी तिनोंके निवृत्तहोइगयेहैं ॥ और जन्मकाप्राप्तिविषे अज्ञान तथा अज्ञानजन्यकर्महीं कारणहै ॥ तिनों
केनिवृत्तहुए तिनतत्त्ववेत्तामुख्यसंन्यासीयोंकूं पुनः जन्मकीप्राप्तिहोतीनहीं ॥ यहवार्त्ता श्रुतिविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ (भिद्यतेहृदयग्रंथिश्छिद्यंतेसर्वसं
शयाः ॥ क्षीयंतेचास्यकर्माणितस्मिन्दृष्टेपरावरे ॥) अर्थयह ॥ मैंब्रह्मरूपहूं इसप्रकारतैं परमात्मा देवकेसाक्षात्कारहुए इसतत्त्ववेत्तापुरुषकी चित्जडग्रंथि भेदन

होवैहै ॥ तथा सर्वसंशय छेदनहोवैहैं ॥ तथा सर्वकर्म क्षयहोवैहैं इति ॥ यहवार्त्ता ब्रह्मसूत्रोंविषे श्रीव्यासभगवान्नैंभी कथनकरीहै ॥ तहांसूत्रम् ॥ (तदधिगम उत्तरपूर्वाघयोरश्लेषविनाशौतद्व्यपदेशात्) ॥ अर्थयह ॥ प्रत्यक्अभिन्नब्रह्मकेसाक्षात्कारहुए इसतत्त्ववेत्तापुरुषके पूर्वलेसंचितकर्मतौं विनाशहोइजावैहैं ॥ और तत्त्वसाक्षात्कारतैं उत्तरकऱ्येहुएकर्मोंका तिसतत्त्ववेत्तापुरुषकूं स्पर्शहींनहींहोवैहै ॥ इसप्रकारकाअर्थ श्रुतिस्मृतिविषेकथनकऱ्याहै इति ॥ इत्यादिकश्रुति सूत्रवचन परमात्माकेज्ञानतैंहीं सर्वकर्मोंकेनाशकूं कथनकरेहैं ॥ यातैंयहअर्थसिद्धभया ॥ पूर्वउक्त गौणसंन्यासीयोंकूंतौं पूर्वलेपुण्यपापकर्मकेवशतैं पुनःशरीर कायहणरूपसंसार अवश्यकरिकैप्राप्तहोवैहै ॥ और तत्त्ववेत्तामुख्यसंन्यासीयोंकूंतौं अविद्याकर्मादिकोंकेअभावतैं पुनः सोसंसार प्राप्तहोवैनहीं ॥ किंतु मोक्षहीं प्राप्तहोवैहै ॥ इसप्रकारका तिनदोनोंकेफलविषे विशेषहैं इति ॥ ईहां केईकवादी इसप्रकार कहेहैं (अनाश्रितःकर्मफलंकार्यकर्मकरोतियः । ससंन्यासी) इत्यादिकवचनोंविषे कर्मोंकेफलकात्यागकरिकै कर्मोंकूंकरणेहारे कर्मीपुरुषोंविषेभी संन्यासी इसशब्दका प्रयोगकऱ्याहै ॥ यातैं (नतुसंन्यासिनांक्वचित्) इस वचनविषेभी संन्यासीशब्दकरिकै कर्मफलकेत्यागकरणेहारे कर्मीपुरुषहीं ग्रहणकरणे ॥ और (नतुसंन्यासिनांक्वचित्) इसवचनविषे जो पूर्वउक्त अनिष्ट इष्ट मिश्र इसतीनप्रकारकेफलका संन्यासीयोंविषे निषेधकऱ्याहै ॥ सोभी तिनसात्विककर्मीपुरुषोंविषे संभवहोइसकेहै ॥ काहेतैं जिननित्यनैमित्तिककर्मोंके नहींकरणेकरिकै तथानिषिद्धकर्मोंकेकरणेकरिकै इनपुरुषोंविषे जापापकीउत्पत्तिहोवैहै ॥ सापापकीउत्पत्ति तिनसात्त्विककर्मीपुरुषोंविषे तिननित्यनैमित्तिककर्मों केकरणेकरिकै तथानिषिद्धकर्मोंकेपरित्यागकरिकै होवैनहीं ॥ यातै तिनकर्मीपुरुषोंकूं अनिष्टफलकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ और तेकर्मीपुरुष काम्यकर्मोंकूंकर तेनहीं ॥ तथा ईश्वरअर्पणबुद्धिकरिकै तिनकर्मीपुरुषोंनैं स्वर्गादिकफलोंका परित्यागकऱ्याहै ॥ यातैं तिनकर्मीपुरुषोंकूं इष्टफलकीप्राप्तिभीहोवैनहीं ॥ इसीकारणतैंहीं तिनकर्मीपुरुषोंकूं मिश्रफलकीप्राप्तिभी होवैनहीं ॥ इसरीतिसैं तिनसात्त्विककर्मीपुरुषोंविषे अनिष्ट इष्ट मिश्र यहतीनप्रकारकाहीफल संभवतानहीं ॥ इसीकारणतैंही शास्त्रविषे यहवचनकह्याहै ॥ तहां श्लोक ॥ (मोक्षार्थीनप्रवर्त्तेततत्रकाम्यनिषिद्धयोः ॥ नित्यनैमित्तिकेकुर्या त्प्रत्यवायजिहासया) ॥ अर्थयह ॥ मोक्षकी इच्छावान् अधिकारी पुरुष तिन काम्य कर्मोंविषे तथा निषिद्धकर्मोंविषे नहीं प्रवृत्तहोवै ॥ किंतु जिन नित्य नैमित्तिक कर्मोंके नहीं करणेतैं जो प्रत्यवाय प्राप्तहोवैहै ॥ तिसप्रत्यवायकेपरित्यागकी इच्छाकरिकै यह मोक्षार्थी पुरुष तिननित्यनैमित्ति ककर्मोंकूंहीं करै ॥ इतनैंमात्रकरिकैहीं इसअधिकारीपुरुषकूं संसारकाअभावहोवैहै इति ॥ इसप्रकार एकभविकवादकीरीतिसैं भगवान्केवचनका व्याख्या नकरणेहारे वादीयोंकेप्रति यहवचन कह्याचाहिये ॥ शब्दकीमर्यादा तथाअर्थकीमर्यादा तुमोंनैं निर्णयकरीनहीं ॥ इसकारणतैहीं श्रीभगवान्केवचनका तुम इस

प्रकारकाव्याख्यानकरतेहो ॥ तहां गौणअर्थ तथामुख्यअर्थ इनदोनोंअर्थोंकेमध्यविषे किसीबाधकके अविद्यमानहुए मुख्यअर्थविषेहीं शब्द बोधकूंउत्पन्नकरे है ॥ यहतौं शब्दकीमर्यादाहै ॥ सोईहांप्रसंगविषे फलसहित सर्वकर्मोंकात्यागीपुरुषतौं तासंन्यासीशब्दका मुख्यअर्थहै ॥ और जैसे मुख्यसंन्यासीविषे कर्मोंके फलकात्यागीपणा रहेहै ॥ तैसे निष्कामकर्मीपुरुषविषेभी सोफलकात्यागीपणा रहैहै ॥ यातैं फलत्यागित्वरूपसमानगुणकूंलेके सोसंन्यासीशब्द तिसकर्मीपुरुष विषेभी प्रवृत्तहोवैहै ॥ यातैं सोकर्मीपुरुष तिससंन्यासीशब्दका गौणअर्थहै ॥ और (नतुसंन्यासिनांक्वचित्) इसवचनविषेस्थित संन्यासी इसशब्दके मुख्य अर्थकेग्रहणकरणेविषे कोईबाधकहैनहीं ॥ यातैं तिसमुख्यअर्थकाहीं ईहां संन्यासीइसशब्दकरिकैग्रहणकरणा उचितहै ॥ यहअर्थ शब्दकीमर्यादातैंसिद्धहोवैहै इति ॥ और कारणसामग्रीकेविद्यमानहुए कार्यकीउत्पत्ति अवश्यकरिकैहोवैहै ॥ यह अर्थमर्यादा कहीजावैहै ॥ तिसअर्थमर्यादाकरिकैभी सोपूर्वउक्तअर्थहीं सिद्धहोवै ॥ सोप्रकार दिखावैहैं ॥ जिसपुरुषनैं ईश्वरअर्पणबुद्धिकरिकै कर्मोंकेफलकापरित्यागकऱ्याहै ॥ तथा जोपुरुष अंतःकरणकीशुद्धिवासते नित्यक र्मोंकाअनुष्ठानकरेहै ॥ सोपुरुष अंतःकरणकीशुद्धिद्वारा ज्ञाननिष्ठाकूंनहींप्राप्तहोइकै जबी मध्यविषेहीं मरणकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तिसपुरुषकूं पूर्वलेपुण्यपापकर्मोंके वशतैं तीनप्रकारकेशरीरकाग्रहणरूपसंसारकीप्राप्ति किसपुरुषनैं निवृत्तकरिसकीतीहै ॥ किंतु कोईभीपुरुष तिसकेनिवृत्तिकरणेविषेसमर्थनहींहै ॥ तिसपुण्यपापरूप कारणकेविद्यमानहुए शरीरकाग्रहणरूपकार्य अवश्यकरिकैउत्पन्नहोवैगा ॥ तहां आत्मज्ञानतैंरहितपुरुष पुण्यपापकर्मकेवशतैं अवश्यकरिकै जन्मकूंप्राप्तहोवैहै ॥ यहवार्त्ता श्रुतिविषे कथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ (योवाएतदक्षरंगार्ग्यविदित्वास्माल्लोकात्प्रैतिसकृपणः) ॥ अर्थयह ॥ हेगार्गी जोपुरुष इसअक्षरब्रह्मकूंनजानिकै इसमनुष्यलोकतैं गमनकरेहै ॥ सोपुरुष कृपणहीं जानणा इति ॥ यातैं अंतःकरणकीशुद्धिकाफलभूत जोआत्मज्ञानहै ॥ ताज्ञानकीउत्पत्तिवासतै तिसनिष्काम कर्मीपुरुषकूं अधिकारीशरीरकीप्राप्ति अवश्यकरिकैअंगीकारकरणीहोवैगी ॥ इसीकारणतैंहीं पूर्व षष्ठेअध्यायविषे (शुचीनांश्रीमतांगेहेयोगभ्रष्टोऽभिजायते) इत्यादिकवचनोंकरिकै यहअर्थ निर्णयकऱ्याथा ॥ अंतःकरणकीशुद्धितैंअनंतर शास्त्रकीविधिपूर्वक फलसहितसर्वकर्मोंकापरित्यागकऱ्याहै जिसनैं ॥ तथा ब्रह्मवेत्तागुरुकेसमीपजाइकै तिसब्रह्मवेत्तागुरुकेमुखतैं वेदांतशास्त्रके श्रवणादिकोंकूंकरताहुआ जोपुरुष आत्मज्ञानकूंनप्राप्तहोइकै मध्यविषेहीं मरणकूंप्राप्तहुआहै ॥ ऐसा योगभ्रष्ट विविदिषासंन्यासी भोगइच्छाकेविद्यमानहुए तिसमरणतैंअनंतर पवित्रश्रीमान्पुरुषोंकेगृहविषे जाइकै जन्मकूंप्राप्तहोवैहै ॥ और भोगइच्छाकेअवि द्यमानहुए सोयोगभ्रष्टपुरुष ब्रह्मवेत्तायोगीपुरुषोंकेगृहविषे जाइकै जन्मकूंप्राप्तहोवैहै इति ॥ यहसर्वअर्थपूर्वषष्ठेअध्यायविषेकथनकऱ्याथा ॥ इसकहणेकरिकै यह कैमु तिकन्याय सिद्धहोवैहै॥ जबी आत्मज्ञानतैंरहित सर्वकर्मोंकेत्यागी विविदिषासंन्यासीकूंभी शरीरकाग्रहण अवश्यकरिकैहोवैहै ॥ तबी आत्मज्ञानतैंरहितकर्मीपुरुषकूं

सोशरीरकाग्रहण अवश्यकरिकैहोवैहै याकेविषेक्याकहणाहै इति॥ यातैं अज्ञानीपुरुषकूं पूर्वलेकर्मकेवशतैं शरीरकाग्रहण अवश्यकरिकैहोवैहै ॥ यहअर्थ अर्थकीमर्यादाकरिकैसिद्धभया॥ यातैं (नतुसंन्यासिनांक्वचित्) इसवचनविषेस्थित संन्यासीशब्दकरिकै निष्कामकर्मीपुरुषोंकाहींग्रहणकरणा ॥ यहएकभविकवादीयोंकाव्याख्यान अत्यंतअसंगतहै ॥ किंतु पूर्वउक्तभाष्यकारोंकाव्याख्यानहीं समीचीनहै इति ॥ तहां इसश्लोकविषे श्रीभगवान्‌का यहअभिप्रायहै ॥ अकर्त्ता अभोक्ता परमानंद अद्वितीय सत्य स्वप्रकाश ऐसाजोब्रह्महै ॥ सोब्रह्म मैंहूं इसप्रकारकाजोब्रह्मात्मसाक्षात्कारहै ॥ जोसाक्षात्कार निर्विकल्पहै ॥ तथा वेदांतमहावाक्यकरिकैजन्यहै ॥ तथा विचारकरिकैनिश्चितकऱ्याहैप्रामाण्यजिसका ॥ तथा सर्वप्रकारतैं अप्रामाण्यशंकातैंरहितहै ॥ ऐसेब्रह्मात्मसाक्षात्कारकरिकै तिसब्रह्मात्माके अज्ञानकीनिवृत्तिहुएतैं अनंतर तिसअविद्याकेकार्यरूप कर्तृत्वभोक्तृत्वादिकअभिमानतैंरहित ऐसाजो वास्तवमुख्यसंन्यासीहै ॥ सोमुख्यसंन्यासीतौं अविद्यासहित सर्वकर्मोंकेनाशतैं केवलशुद्धस्वरूपहुआ अविद्याकर्मादिनिमित्तक पुनः शरीरकेग्रहणकूं कदाचित्‌भी अनुभवकरतानहीं ॥ जिसकारणतैं तिसतत्त्ववेत्तापुरुषके सर्वभ्रमोंका अविद्यारूपकारणकेनाशकरिकै नाशहोइगयाहै॥ और जोपुरुष अविद्यावालाहै ॥ तथा कर्तृत्वभोक्तृत्वअभिमानवालाहै॥तथा देहभृत्‌है॥ सोअविद्यावान् देहभृत्‌पुरुषतौं तीनप्रकारकाहोवैहै ॥ तहां रागद्वेषादिकदोषोंकीप्रबलतातैं आपणीइच्छामात्रतैं काम्यकर्मोंकूं तथानिषिद्धकर्मोंकूं करणेहारा ऐसाजो मोक्षशास्त्रका अनधिकारीपुरुषहै ॥ सोतौं प्रथमहै ॥ और पूर्वकऱ्येहुएपुण्यकर्मकेवशतैं किंचित्‌मात्र नष्टहुएहैंरागादिकदोष जिसके ॥ तथा विधिपूर्वक सर्वकर्मोंकेपरित्याग करणेविषे असमर्थहुआभी जोपुरुष निषिद्धकर्मोंका तथाकाम्यकर्मोंका परित्यागकरिकै अंतःकरणकीशुद्धिवासतै फलकीइच्छाकापरित्यागकरिकै नित्यकर्मोंकूं तथानैमित्तिककर्मोंकूंहीं करैहै ॥ ऐसाजो मोक्षशास्त्रकाअधिकारी गौणसंन्यासीहै ॥ सोगौणसंन्यासी दूसराहै ॥ और नित्यनैमित्तिककर्मोंकेअनुष्ठानकरिकै अंतःकरणकीशुद्धिहुएतैंअनंतर उत्पन्नहुईहै आत्मज्ञानकीइच्छारूपविविदिषा जिसकूं तथा श्रवणादिकसाधनोंकरिकै मोक्षकेसाधनरूपआत्मज्ञानकेसंपादनकरणेकी इच्छावान् ॥ तथा शास्त्रकीविधिपूर्वक सर्वकर्मोंकापरित्यागकरिकै वेदांतशास्त्रकेविचारवासतै श्रोत्रियब्रह्मनिष्ठगुरुकेशरणकूंप्राप्तहुआ ॥ ऐसाजो विविदिषासंन्यासीहै ॥ सोविविदिषासंन्यासी तीसराहै ॥ तहां प्रथमपुरुषकूंतौं सोशरीरकाग्रहणरूप संसारीपणा सर्वकूंप्रसिद्धहींहै ॥ और दूसरेपुरुषकूंतौं सोसंसारीपणा (अनिष्टमिष्टंमिश्रंच) इसवचनकरिकै कथनकऱ्याहै ॥ और तीसरेपुरुषकूंतौं सोसंसारीपणा षष्ठेअध्यायविषे (अयतिःश्रद्धयोपेतः) इत्यादिकवचननैं प्रश्नका उत्थापनकरिकै निर्णयकऱ्याहै ॥ यातैं अविद्याकर्मादिककारणसामग्रीकेविद्यमानहुए अज्ञानीपुरुषकूं सोसंसारीपणा अवश्यकरिकैप्राप्तहोवैहै ॥ तहां किसीअज्ञानीपुरुषकूंतौं ज्ञानकेप्रतिकूलशरीरकीप्राप्तिहोवैहै ॥ और किसीअज्ञानीपुरुषकूं ज्ञानकेअनुकूलशरीरकीप्राप्तिहोवैहै ॥ इतनी तिनोंविषेविशेषताहै ॥ और तत्त्ववेत्ता

पुरुषकूंतैं अविद्याकर्मादिकसंसारकेकारणकाअभावहोणेतैं स्वतःहीं कैवल्यमोक्षकीप्राप्तिहोवैहै ॥ इसप्रकारतैं श्रीभगवान्नैं इसश्लोकविषे दोपदार्थ सूचनकर्येहैं इति ॥ १२ ॥ ❀ ॥ तहां आत्मज्ञानतैंरहित अज्ञानीपुरुषके संसारिपणेविषे कर्मोंकेपरित्यागकाअसंभवरूपहेतु (नहिदेहभृताशक्यंत्यक्तुंकर्माण्यशेषतः) इसवचनकरिकै पूर्व कथनकर्या ॥ तहांतिसअज्ञानीपुरुषकूं कर्मोंकेत्यागकेअसंभवविषे कौनहेतुहै ॥ अर्थात् किसहेतुतैं सोअज्ञानीपुरुष कर्मोंकूंनहींत्यागसकेहै ॥ ऐसीअर्जुनकीजिज्ञासाकेहुए ॥ कर्मकेहेतुरूप जेअधिष्ठानादिकपंचहैं ॥ तिनपांचोंविषे जोअज्ञानीपुरुषोंका तादात्म्यअभिमानहै ॥ सोतादात्म्यअभिमानहीं तिसकर्मत्यागकेअसंभवविषेहेतुहै॥इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् च्यारिश्लोकोंकरिकै वर्णन करेहै ॥ तहांतेअधिष्ठानादिकपांचों वेदांतशास्त्ररूपप्रमाणमूलकहैं ॥ ऐसेअधिष्ठानादिकपांचों परित्यागकरणेवासतै इसअधिकारीपुरुषनैं अवश्यकरिकैजानणेयोग्यहैं ॥ इसअर्थकूं श्रीभगवान् प्रथमश्लोककरिकै कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) पंचेमानिमहाबाहोकारणानिनिबोधमे ॥ सांख्येकृतांतेप्रोक्तानिसिद्धयेसर्वकर्मणाम् ॥ १३ ॥ पंच । इमानि । महाबाहो । कारणानि । निबोध । मे । सांख्ये । कृतांते । प्रोक्तानि । सिद्धये । सर्वकर्मणाम् ॥ १३ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेमहान्बाहुवालाअर्जुन सर्वकर्मोंकी सिद्धिवासतै इनवक्ष्यमाण अधिष्ठानादिकपंच कारणोंकूं तूं हमारे वचनतैं निश्चयकर जेपंचकारण सर्वकर्मोंकी समाप्तिवाले वेदांतशास्त्रविषे कथनकर्येहैं ॥ १३ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेमहान्बाहुवालाअर्जुन लौकिक वैदिक जितनेंकीकर्महैं ॥ तिनसर्वकर्मोंकीसिद्धिवासतै इनवक्ष्यमाण अधिष्ठानादिकपंचकारणोंकूं मैंसर्वज्ञ परमआत्मपरमेश्वरकेवचननैं तूं निश्चयकर ॥ अर्थात् तिनअधिष्ठानादिकपांचोंकेस्वरूपजानणेवासतै तूं सावधानहोउ ॥ तहां यहअधिष्ठानादिकपंचकारण कोईअत्यंत दुर्विज्ञेयनहींहैं ॥ किंतुसावधानचित्तवाले पुरुषनैं यहअधिष्ठानादिकपंचकारण जानिसकीतेहैं ॥ इसप्रकार तिनपांचोंकारणोंकेज्ञानवासतैचित्तकेसमाधानकेविधानकरिकै श्रीभगवान् तिनअधिष्ठानादिकपंचकारणोंकी स्तुतिकरताभयाहै ॥ और (हेमहाबाहो) इससंबोधनकरिकै श्रीभगवान्नैं तिनपांचकारणोंकीस्तुतिवासतैं यहअर्थ सूचनकर्या ॥ इनअधिष्ठानादिकपांचकारणोंकेजानणेविषे महान्पराक्रमवालेश्रेष्ठपुरुषहीं समर्थहोवैहै ॥ अश्रेष्ठपुरुष समर्थहोवैंनहीं ॥ ऐसा महान्पराक्रमवालाश्रेष्ठपुरुष तूं अर्जुनभीहै ॥ तूं अर्जुनभीइनपांचोंकारणोंकेजानणेविषेसमर्थहै इति ॥ शंका ॥ हेभगवन् जेअधिष्ठानादिकपंचकारण आपकेवचननैं जानणेयोग्यहैं ॥ तेअधिष्ठानादिकपंचकारण किसीअन्यप्रमाण करिकैभीसिद्धहैं ॥ अथवा केवल आपकेवचनमात्रतैंहींसिद्धहैं ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेप्राप्तहुए ॥ श्रीभगवान् तिसआपणेवचनविषे अर्जुनकेविश्वासकरावणेवासतै तिनपंचकारणोंकीसिद्धिविषे वेदांतशास्त्ररूपप्रमाणकूं कथन करेहै (सांख्येकृतांतेप्रोक्तानिइति)

हेअर्जुन तेअधिष्ठानादिकपंचकारण कृतांतरूपसांख्यशास्त्रविषे कथनकऱ्येहैं ॥ तहां ब्रह्मानंदरूपनिरतिशयपुरुषार्थकीप्राप्तिवासतै तथाजन्ममरणादिकसर्वअनर्थोंकी निवृत्तिवासतै इसअधिकारीपुरुषनैं जानणेयोग्यजे जीव ब्रह्म तिनदोनोंकीएकता ताएकताबोधकेउपयोगी श्रवणमननादिकसाधन इत्यादिकपदार्थहैं ॥ तेसर्वपदार्थ प्रतिपादनकरेहैंजिसशास्त्रविषे ताशास्त्रकानाम सांख्यहै ॥ ऐसासांख्यनामवाला उपनिषदरूपवेदांतशास्त्रहै ॥ ऐसे सांख्यनामावेदांतशास्त्रविषे तेअधिष्ठानादिकपंच कारण प्रतिपादनकऱ्येहैं ॥ शंका ॥ हेभगवन् केवल आत्मवस्तुमात्रकाप्रतिपादक जोवेदांतशास्त्रहै ॥ तिसवेदांतशास्त्रविषे यहलोकप्रसिद्ध अनात्मरूप तथा अवस्तुरूप पंचकर्मकेकारण किसवासतै प्रतिपादनकऱ्येहैं ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए ॥ श्रीभगवान् तिसवेदांतशास्त्रकेविशेषणकूंकथनकरेहै ॥ (कृतांतेइति) तहां क्रियतेइतिकृतम् अर्थयह इसपुरुषनैं प्रयत्नकरिकै जो करीताहै ताकानाम कृतहैं ॥ इसप्रकारकीव्युत्पत्तिकरिकै कृत यहशब्द सर्वकर्मोंकावाचकहै ॥ तिनसर्वकर्मोंका अंतहै क्या परिसमाप्तिहैं आत्मज्ञानकीउत्पत्तिकरिकै जिसशास्त्रविषे ताशास्त्रकानाम कृतांतहै ॥ अथवा (निष्कलंनिष्क्रियंशांतम्) इत्यादिकवचनोंकरिकै कृत कहीये स्पष्टकऱ्याहै अंत क्या आत्मअनात्मदोनोंकातत्त्वनिश्चय जिसशास्त्रविषे ताशास्त्रकानाम कृतांतहै ॥ अथवा वेदप्रतिपादित नित्यनैमित्तिककर्मोंकानाम कृतहै ॥ तिनकर्मोंका अंतहै क्या परित्यागहै जिसशास्त्रकेश्रवणवासतै ताशास्त्रकानाम कृतांतहै ॥ तहां (संन्यस्यश्रवणंकुर्यात्) इसश्रुतिनैं वेदांतशास्त्रकेश्रवणकरणेवासतै सर्वनित्यनैमित्तिककर्मोंकासंन्यास कथनकऱ्याहै ॥ ऐसे कृतांतरूपवेदांतशास्त्रविषे तेअधिष्ठानादिकपंचकारण कथनक ऱ्येहैं ॥ अर्थात् लोकविषेप्रसिद्ध तथाअनात्मरूप ऐसेजे तेअधिष्ठानादिकपंचकारणहैं ॥ तेपांचोंहींकारणमिथ्याज्ञानकृतअध्यारोपकरिकै लोकोंनैं आत्मारूप करिकैग्रहणकऱ्येहैं ॥ ऐसेपंचकारणोंकूं आत्मतत्त्वज्ञानकरिकैबाधकरणेवासतै परित्याज्यरूपकरिकै वेदांतशास्त्रविषे कथनकऱ्याहै ॥ कोई तिनकारणोंकेकथन करणेविषे तिसवेदांतशास्त्रका तात्पर्यहैनहीं ॥ किंतु अद्वितीयआत्माकेप्रतिपादनविषेहीं तावेदांतशास्त्रका तात्पर्यहै ॥ ईहांयहअभिप्रायहै ॥ देहादिकअनात्मपदा र्थोंकाधर्मरूपजोकर्महै ॥ सोकर्महीं असंग आत्माविषे अविद्याकरिकै अध्यारोपितहुआहै ॥ वास्तवतैं आत्माविषे सोकर्म हैनहीं ॥ इसप्रकारतैं जबी वेदांत शास्त्रनैं आत्माकावास्तवस्वरूप प्रतिपादनकरीताहै ॥ तबी शुद्धआत्माकेज्ञानकरिकै तिसअध्यारोपितकर्मकाबाधहोणेतैं तिनसर्वकर्मोंकाअंत कऱ्याजावैहै ॥ तिस अधिष्ठानआत्माकेज्ञानतैंविना दूसरेकिसीभीउपायकरिकै तिनकर्मोंकाअंत कऱ्याजातानहीं ॥ इसकारणतैं असंगआत्माविषे तिनकर्मोंकेअसंबंधकेप्रतिपादनकरणे वासतै तेमायाकल्पित अनात्मभूत पंचकर्मोंकेकारण वेदांतशास्त्रविषे अनुवादकरयेहैं ॥ कोई तिनपंचकारणोंकेप्रतिपादनकरणेविषे वेदांतशास्त्रका तात्पर्यहैनहीं ॥ यातैं अद्वैतआत्ममात्रविषे जो वेदांतशास्त्रका तात्पर्यहै ॥ तिसतात्पर्यकी ईहां हानिहोवैनहीं इति ॥ यातैं (कृतांते) इसविशेषणकरिकै श्रीभगवान्नैं वेदांतशा

स्रविषे जो सर्वकर्मोंकाअंतपणा कथनकऱ्याहै सोयुक्तहै ॥ इसीअर्थकूं श्रीभगवान् (सर्वंकर्माखिलंपार्थज्ञानेपरिसमाप्यते) इसवचनकरिकैभी कथनकरताभयाहै इति ॥ ईहां कितनैंकीमूलपुस्तकोंविषे (पंचेमानि) इसप्रकारकापाठहै ॥ और कितनैंकीमूलपुस्तकोंविषे (पंचैतानि) इसप्रकारकापाठहै ॥ परंतु श्रीभाष्यकारोंनैं तथाश्रीमधुसूदननें तथानीलकंठपंडितनैं (पंचेमानि) इसप्रकारकापाठअंगीकारकरिकैव्याख्यानकऱ्याहै ॥ यातैं इसपुस्तकविषेभी (पंचेमानि) इसप्रकारकाहीं पाठरख्याहै ॥ इति ॥ १३ ॥ ❀ ॥ तहां वेदांतशास्त्रहैप्रमाणाजेनोंविषे ऐसेजे कर्मकेपंचकारणहैं ॥ तेपंचकारण आत्माकेअकर्त्तापणेकीसिद्धिवासतै परित्याज्यरूपकरिकै जाणणेयोग्यहैं ॥ यहअर्थ पूर्वकथनकऱ्या ॥ तहां तेपंचकारण कौनहै ॥ ऐसीअर्जुनकीजिज्ञासाकेहुए ॥ श्रीभगवान् द्वितीयश्लोककरिकै तिनपांचोंकेस्वरूपकूं कथनकरेहै ॥

(मू॰ श्लो॰) अधिष्ठानंतथाकर्त्ताकरणंचपृथग्विधम् ॥ विविधाश्चपृथक्चेष्टादैवंचैवात्रपंचमम् ॥ १४ ॥ अधिष्ठानं । तथा । कर्त्ता । करणं । च । पृथग्विधं । विविधाः । च । पृथक् । चेष्टाः । दैवम् । च । एव । अत्र । पंचमम् ॥ १४ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन अधिष्ठान तथा कर्त्ता तथा नानाप्रकारका करण तथा नानाप्रकारकी भिन्नभिन्न चेष्टा तथा इनकारणोंविषे पंचमा दैव यहपांचो कर्मकेकारणहैं ॥ १४ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन इच्छा द्वेष सुख दुःख चेतना इत्यादिकधर्मोंकेअभिव्यक्तिकाआश्रयरूप जोयह पंचीकृतपंचभूतोंकाकार्यरूप स्थूलशरीरहै ॥ ताशरीरकानाम अधिष्ठानहै ॥ और मैंकर्त्ताहूं इसप्रकारकेअभिमानवाला तथाज्ञानशक्तिप्रधानअपंचीकृतपंचमहाभूतोंकाकार्यरूप ऐसाजो अहंकारहै ॥ जोअहंकार अंतःकरण बुद्धि विज्ञान इत्यादिकनामोंकरिकै कथनकऱ्याजावैहै ॥ तथा जोअहंकार आत्माकेसाथि तादात्म्यअध्यासकरिकै स्वनिष्ठकर्तृत्वादिकधर्मोंकूं आत्माविषेआरोपणकरणेहाराहै ॥ ताअहंकारकानाम कर्त्ताहै ॥ ईहां (तथाकर्त्ता) इसवचनविषेस्थित जो तथा यहशब्दहै ॥ तिसतथाशब्दकरिकै श्रीभगवान्नैं तिसअहंकाररूपकर्त्ताविषे पूर्वउक्तशरीररूपअधिष्ठानकीसदृशता कथनकरीहै ॥ अर्थात् जैसे सोशरीररूपअधिष्ठान अनात्मारूपहै तथाआकाशादिकपंचभूतोंकाकार्यरूपहै तथास्वप्नकेपदार्थोंकीन्यांई मायाकरिकैकल्पितहै ॥ तैसे यहअहंकाररूपकर्त्ताभी अनात्मारूपहै तथाभूतोंकाकार्यरूपहै तथास्वप्नपदार्थोंकीन्यांई कल्पितहै ॥ ईहांयहतात्पर्यहै ॥ इसस्थूलशरीरकूं यद्यपि लोकायतिकपुरुषोंनैं आत्मारूपकरिकैग्रहणकऱ्याहै ॥ तथापि अन्यशास्त्रवेत्तापुरुषोंनैं तिसस्थूलशरीरकूं अनात्मारूप करिकैहीं निश्चयकऱ्याहै ॥ ऐसेस्थूलशरीरकूं जबी कर्त्ताविषे दृष्टांतरूपकरिकैकथनकऱ्या ॥ तबी तार्किकपुरुषोंनैं आत्मारूपकरिकैग्रहणकऱ्या जोकर्त्ताहै ॥

तिसकर्त्ताविषे अनात्मरूपताकानिश्चय अत्यंतसुगमहोवैहै इति ॥ और अपंचीकृतपंचमहाभूतोंतैंउत्पन्नहुए तथाशब्दादिकविषयोंकेउपलब्धिकासाधनरूप ऐसेजे श्रोत्रादिकइंद्रियहैं ॥ तिनइंद्रियोंकानाम करणहै ॥ कैसाहैसोकरण पृथग्विधहै ॥ अर्थात् श्रोत्रादिकपंचज्ञानइंद्रिय तथावागादिकपंचकर्मइंद्रिय तथा मन बुद्धि इस द्वादशभेदकरिकै नानाप्रकारकाहै ॥ यद्यपि शास्त्रविषे मन बुद्धि चित्त अहंकार यहच्यारोंहीं अंतःकरणकेभेद कथनकरेहैं ॥ तथापि ईहांकरणवर्गविषेस्थित मन बुद्धि यहदोनों तिसअंतःकरणरूपअहंकारके वृत्तिविशेषलैणे ॥ और तिनवृत्तियोंवाला जो अहंकारहै ॥ सोअहंकारतौं केवल कर्त्तारूपहींहै ॥ करणरूप हैनहीं ॥ और चेतनकाआभासतौं सर्वत्रतुल्यहींहै ॥ तहां अंतःकरणरूपअहंकारविषे कर्त्तापणा (विज्ञानंयज्ञंतनुते) इत्यादिकश्रुतियोंविषे प्रसिद्धहींहै ॥ ईहां (करणंच) इसवचनविषेस्थित जोचकारहै ॥ सोचकार पूर्ववचनविषेस्थित तथा इसशब्दकीअनुवृत्तिकरणेवासतैंहै ॥ अर्थात् जैसे पूर्वउक्त शरीररूपअधिष्ठान तथाअहंकाररूपअधिष्ठान तथाअहंकाररूपकर्त्ता अनात्मारूपहै तथाभौतिकहै तथाकल्पितहै॥ तैसे यहद्वादशप्रकारका करणभी अनात्मारूपहै तथाभौतिकरूपहै तथा कल्पितहै ॥ इति ॥ और क्रियाशक्तिहैप्रधानजिनोंविषे ऐसेजे अपंचीकृतपंचमहाभूतहै तिनपंचमहाभूतोंकाकार्यरूप तथाक्रियाप्रधानत्वरूपकरिकै तथावायवी यत्वरूपकरिकै कथनकऱ्येहुए ऐसेजे क्रियारूपप्राणादिकहैं ॥ तिनक्रियारूपप्राणादिकोंकानाम चेष्टाहै ॥ कैसीहैचेष्टा विविधाहै ॥ अर्थात् प्राण अपान व्यान उदान समान इसभेदकरिकैतौं पंचप्रकारकीहै॥अथवा नाग कूर्म कृकल देवदत्त धनंजय इनपांचोंकूंमिलाइकै दशप्रकारकीहैं ॥ तहां यहनागादिकपंच प्राणादिकपां चोंकेअंतर्भूतहींहै ॥ यातैं बहुतस्थलोंविषे पंचहींप्राण कथनकऱ्येहैं ॥ पुनःकैसीहैतेप्राणरूपचेष्टा पृथक्है ॥ अर्थात् स्थानकेभेदतैं तथाकार्यकेभेदतैं भिन्नभिन्नहैं ॥ ईहां (विविधाश्च) इसवचनविषेस्थितजो चकारहै सोचकार पूर्ववचनविषेस्थित तथा इसशब्दकीअनुवृत्तिकरणेवासतैंहै ॥ अर्थात् जैसे पूर्वउक्त अधिष्ठान कर्त्ता करण यहतीनों अनात्मारूपहैं तथाभौतिकरूपहैं तथामायाकरिकैकल्पितहैं ॥ तैसे यहप्राणरूपचेष्टाभी अनात्मारूपहैं तथाभौतिकरूपहैं तथामायाकरिकैकल्पितहैं इति ॥ ईहां केईकविद्वान्पुरुषतौं यहकहेहैं ॥ सुषुप्तिअवस्थाविषे कर्त्तारूपअंतःकरणकेलयहुएभी प्राणकाव्यापार देखणेविषेआवैहै ॥ और जहांतहां प्राणकूं अंतःकरणतैंभिन्नकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ यातैं सोप्राण अंतःकरणतैं अत्यंतभिन्नकीन्यांईहै इति ॥ और केईकसूक्ष्मदर्शीविद्वान्पुरुषतौं यहकहेहैं ॥ क्रियाश क्तिवाला तथाज्ञानशक्तिवाला एकहीं अपंचीकृतपंचमहाभूतोंकाकार्य चेतनके जीवपणेकाउपाधिहै ॥ सोजीवपणेकाउपाधिरूप एकहींकार्य क्रियाशक्तिकीप्रधानता करिकैतौं प्राण इसनामकरिकै कह्याजावैहै ॥ और ज्ञानशक्तिकीप्रधानताकरिकै अंतःकरण इसनामकरिकै कह्याजावैहै ॥ काहेतैं (सईक्षांचक्रे कस्मिन्वाहमुत्क्रांते उत्क्रांतोभविष्यामि कस्मिन्वाप्रतिष्ठितेप्रतिष्ठांयास्यामीति सप्राणमसृजत) इसश्रुतिविषे उत्क्रांति स्थिति आदिकोंकाउपाधिपणा प्राणविषे कथनकऱ्याहै ॥

और (सधीःस्वमोभूत्वेमंलोकमतिक्रामतिमृत्योरूपाणि ध्यायतीवलेलायतीव) इत्यादिक श्रुतियोंविषे तिनउत्क्रांतिआदिकोंकाउपाधिपणा अंतःकरणरूपबुद्धिविषे कथनकऱ्याहै ॥ ईहां जोकदाचित् प्राण अंतःकरण इनदोनोंउपाधियोंका स्वतंत्रहींभेद अंगीकारकरिये ॥ तौं जीवात्माकेभी भेदकीप्राप्तिहोवैगी ॥ सोजीव काभेद सिद्धांतविषे अंगीकृतनहींहै ॥ यातैं अंतःकरणप्राण इनदोनोंकूं एकरूपकरिकैहीं उत्क्रांतिआदिकोंकाउपाधिपणा युक्तहै ॥ और प्राण अंतःकरण इन दोनोंका जोभेद कथनकऱ्याहै ॥ सोभेदतौं तिनोंकेएकभावविषेभी क्रियाशक्ति ज्ञानशक्तियोंकेभेदकरिकै संभवहोइसकेहै ॥ और सुषुप्तिअवस्थाविषे ज्ञान शक्तिभागकेलयहुएभी क्रियाशक्तिभागकाजोदर्शनहै ॥ सोदर्शनतौं प्राणअंतःकरणकेएकभावविषेभी विरुद्धनहींहै ॥ और दृष्टिसृष्टि लयविषे सर्वकेलयहुएभी सो प्राणव्यापारवाला सुषुप्तपुरुषकाशरीर अन्यपुरुषोंनैं यहसोयाहुआहै इसप्रकारतैं कल्पनाकरीताहै॥ यातैं दोनोंप्रकारतैंभी प्राण अंतःकरण इनदोनोंकाभेदकाकथन संभवहोइसकेहै इति ॥ और पूर्व उक्त शरीररूपअधिष्ठान तथाअहंकार रूपकर्त्ता तथाद्वादशप्रकारकाकरण तथाप्राणादिरूपचेष्टा इनसर्वोंकेऊपरि यथाक्रमतैं अनुग्रहकरणेहारे जेदेवताहैं ॥ तिनदेवतावोंकानाम दैवहै ॥ सोदैव ईहां कारणवर्गविषे पंचमहै ॥ अर्थात् पंचत्वसंख्याकेपूर्णकरणेहाराहै ॥ ईहां (दैवंच) इसवचनविषेस्थितजोचकारहै ॥ सोचकार पूर्ववचनविषेस्थित तथा इसशब्दकीअनुवृत्तिकरावणेवासतैहै ॥ अर्थात् पूर्वउक्त अधिष्ठानादिकोंकीन्यांई यहदैवभी अनात्मारूपहै तथा भौतिकहै तथामायाकरिकैकल्पितहै इति ॥ तहां कर्त्ता करण चेष्टा इनतीनोंकाअधिष्ठान जोशरीरहै॥ तिसशरीररूपअधिष्ठानकातौं पृथिवीदेवताहै ॥ काहेतैं (यत्रास्यपुरुषस्यमृतस्याग्निंवागप्येतिवातंप्राणश्चक्षुरादित्यंमनश्चंद्रंदिशःश्रोत्रंपृथवींशरीरम्) इसश्रुतिविषे वाकादिकोंकेअधिष्ठाताअग्नि आदिकोंकेसाथि शरीरकाअधिष्ठातारूपकरिकै पृथिवीका पठनकऱ्याहै ॥ यातैं इसश्रुतिप्रमाणतैं शरीररूपअधिष्ठानका पृथिवीहीं देवतासिद्धहोवैहै ॥ और कर्त्ता रूपअहंकारका रुद्रदेवताहै ॥ सो पुराणादिकोंविषेप्रसिद्धहै ॥ इसप्रकार श्रोत्रादिककरणोंके अधिष्ठातादेवताभी प्रसिद्धहींहै ॥ तहां श्रोत्र त्वक् चक्षु रसन घ्राण इनपंचज्ञानइंद्रियोंके यथाक्रमतैं दिक् वात अर्क प्रचेता अश्विनी यहपंच देवताहैं ॥ और वाक् पाणि पाद पायु उपस्थ इनपंचकर्मइंद्रियोंके यथाक्रमतैं वन्हि इंद्र उपेंद्र मित्र प्रजापति यहपंच देवताहैं ॥ और मन बुद्धि इनदोनोंके यथाक्रमतैं चंद्र बृहस्पति यहदोनों देवताहैं ॥ और प्राण अपान व्यान उदान समान इनचेष्टा रूपपंचप्राणोंकेतौं यथाक्रमतैं सद्योजात वामदेव अघोर तत्पुरुष ईशान यहपंच देवताहैं ॥ ते पुराणादिकोंविषे प्रसिद्धहींहै ॥ और किसीटीकाविषेतौं दैवशब्द करिकै धर्मअधर्मकाग्रहणकऱ्याहै इति ॥ १४ ॥ ॥ तहां पूर्वश्लोकविषे तिनअधिष्ठानादिकपंचकारणोंका स्वरूपकथनकऱ्या ॥ अब इसतृतीयश्लोककरिकै श्रीभगवान् तिनपांचोंविषे सर्वकर्मोंकेकारणपणेकूं कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) शरीरवाङ्मनोभिर्यत्कर्मप्रारभतेनरः ॥ न्याय्यंवाविपरीतंवापंचैतेतस्यहेतवः ॥ १५ ॥ शरीरवाङ्मनोभिः । यत् । कर्म । प्रारभते । नरः । न्याय्यं । वा । विपरीतं । वा । पंच । एते । तस्य । हेतवः ॥ १५ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन यह पुरुष शरीरवाक्मनइनतीनोंकरिकै जिस धर्मरूप अथवा अधर्मरूप कर्मकूं प्रारंभकरैहै तिंनसर्वकर्मके यह अधिष्ठानादिकपंचहीं कारणरूपहैं ॥ १५ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ तहां शारीर वाचिक मानसिक यहविधिनिषेधरूप तीनप्रकारकाहींकर्म धर्मशास्त्रविषेप्रसिद्धहै ॥ तथा (प्रवृत्तिर्वाग्बुद्धिशरीरारंभः) इसवचनकरिकै अक्षपादनैंभी सोतीनप्रकारकाहींकर्म कथनकऱ्याहै ॥ यातैं प्रधानताकेअभिप्रायकरिकै श्रीभगवान् कहैहै ॥ हेअर्जुन यहअधिकारीपुरुष शरीरकरिकै अथवा वाक्करिकै अथवामनकरिकै जिस न्याय्यरूपकर्मकूं अथवा विपरीतरूपकर्मकूं प्रारंभकरैहै ॥तिससर्वहींकर्मके यहपूर्वउक्तअधिष्ठानादिकपंचहींकारणरूपहैं ॥ तहां श्रुतिस्मृतिरूपशास्त्रकरिकैविहित जेअग्निहोत्रादिकधर्महैं ताकूं न्याय्यकहैहैं॥ और तिसश्रुतिस्मृतिरूपशास्त्रकरिकैनिषिद्ध जेहिंसादिकअधर्महैं ताकूं विपरीतकहैहैं ॥ तहां जीवनकेहेतुभूत जे उच्छ्वास निःश्वास निमेष उन्मेष क्षुत जृंभण इत्यादिक स्वाभाविककर्महै ॥ तथा अन्यभीजेकेई विहितप्रतिषिद्धकेसमान कर्महैं ॥ तेसर्वकर्म पूर्वकऱ्येहुएधर्मअधर्मदोनोंकाहीं कार्यरूपहै ॥ यातैं तेसर्वकर्म न्याय्य विपरीत इनदोनोंकर्मोंविषेहीं अंतर्भूतहैं ॥ यातैं श्रीभगवान्‌केवचनविषेन्यूनताकीप्राप्ति संभवैनहीं ॥ और शास्त्रकातथा शास्त्रउक्तकर्मका मनुष्यहीं अधिकारीहोवैहै ॥ इसअर्थकेबोधनकरणेवासतै श्रीभगवान्‌नैं मनुष्यकावाचक (नरः) यहशब्द कथनकऱ्याहै इति ॥ और किसीटीकाविषेतौं इसश्लोकका यहअर्थकऱ्याहै ॥ शंका ॥ शरीर वाक् मन इनोंकरिकै जोकर्म प्रारंभ कऱ्याजावैहै इसप्रकारकावचनकरिकै पश्चात् तिससर्वकर्मके अधिष्ठानादिकपंच कारणहैं यहवचनकहणा अत्यंतविरुद्धहै ॥ समाधान ॥ ईहां (शरीर) इसपदकरिकै अधिष्ठानका ग्रहणकरणा ॥ और (नरः) इसपदकरिकै कर्त्ताका ग्रहणकरणा ॥ और (वाङ्मनः) इसपदकरिकै करणका ग्रहणकरणा ॥ और (प्रारभते) इसपदकरिकै चेष्टाका ग्रहणकरणा ॥ और (न्याय्यंवाविपरीतंवा) इसवचनकरिकै धर्मअधर्मरूपदैवका ग्रहणकरणा ॥ यद्यपि सर्वकर्मोंविषे अधिष्ठानादिक पांचोंकारणोंकाउपयोग समानहै ॥ तिनपांचोंतैंविना कोईभीकर्म सिद्धहोतानहीं ॥ तथापि श्रुतिस्मृतिरूपशास्त्रविषे विधिप्रतिषेधरूप शारीर वाचिक मानसिक यहतीनप्रकारकाहींकर्म प्रसिद्धहै ॥ यातैं यहकर्म शारीरहै वाचिकहै यहकर्म मानसहै इसप्रकारकाजो कथनहै ॥ सोकथन तिसतिसकर्मविषे तिसतिसशरीरादिकोंकीप्रधानताकीअपेक्षाकरिकैहै ॥ कोईसोकथन तिनशारीरादिककर्मोंविषे अधिष्ठानादिकपांचोंकीहेतुताकूं निवृत्तकरतानहीं यातैं किंचित्मात्रभी ईहांविरोध

होवैनहीं इति ॥ १५ ॥ ❀ ॥ तहां इनपूर्वउक्तअधिष्ठानादिकपांचोंकूंहीं सर्वकर्मोंकाकर्त्तापणाहोणेतैं असंगआत्माकूं तिनकर्मोंकाकर्त्तापणा हैनहीं ॥ इसप्रकारकाजो आत्माविषे अकर्त्तापणेकाज्ञानहै तथा तिनअधिष्ठानादिकपांचोंविषे कर्त्तापणेकाज्ञानहै ॥ सोज्ञानहीं तिनअधिष्ठानादिकपांचोंकेनिरूपणकाफलहै ॥ ऐसेफलकूं अब श्रीभगवान् आत्माकूंकर्त्तामानणेहारेमूढपुरुषोंकीनिंदापूर्वकइसचतुर्थश्लोककरिकेकथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) तत्रैवंसतिकर्त्तारमात्मानंकेवलंतुयः ॥ पश्यत्यकृतबुद्धित्वान्नसपश्यतिदुर्मतिः ॥ १६ ॥ तत्र । एवंसति । कर्त्तारम् । आत्मानम् । केवलम् । तु । यः । पश्यति । अकृतबुद्धित्वात् । न । सः । पश्यति । दुर्मतिः ॥ १६ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन तिनसर्वकर्मोंविषे अधिष्ठानादिकपांचोंकरिकैजन्यताकेहुएभी जोमूढपुरुष असंग उदासीनरूपहीं आत्माकूं कर्त्तारूप देखताहै सो दुर्मति पुरुष शास्त्रजन्यविवेकबुद्धितैंरहितहोणेतैं नहीं देखताहै ॥ १६ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन पूर्वकथनकरेजे धर्मअधर्मरूप सर्वकर्महैं तिनसर्वकर्मोंविषे पूर्वउक्तअधिष्ठानादिकपंचकारणोंकरिकै जन्यताकेसिद्धहुएभी ॥ वास्तवतैं असंगउदासीनरूपहींआत्माकूंजोमूढपुरुष कर्त्तारूप देखताहै ॥ अर्थात् जोआत्मादेव सर्वजडप्रपंचकाप्रकाशकहै तथा सत्तास्फूर्त्तिरूपहै ॥ तथा स्वप्रकाशपरमानंदघनहै ॥ तथा बाधतैंरहितहै ॥ तथा असंगउदासीनहै ॥ तथा अकर्त्ताहै ॥ तथा अविक्रियहै ॥ तथा अद्वितीयहै ॥ वास्तवतैं इसप्रकारका असंगउदासीनअकर्त्तारूपहुआभी जोआत्मादेव अविद्याकरिकै पूर्वउक्तअधिष्ठानादिकपांचोंकारणोंविषे प्रतिबिंबितहोवैहै ॥ जैसे सूर्य जलविषे प्रतिबिंबितहोवैहै ॥ तहां जलादिकोंकूंप्रकाशकरणेहारा सोसूर्य यद्यपि तिनजलादिकोंतैंभिन्नहै ॥ तथापि तिसजलकेसाथि तिससूर्यकातादात्म्यभावकल्पनाकरिकै मूढपुरुष जैसे तिस जलकेचलनकरिकै तिससूर्यकूं चलायमानहुआ मानताहै ॥ तैसे तिनअधिष्ठानादिकोंकूं प्रकाशकरणेहारे असंगअद्वितीय आत्माका तिनअधिष्ठानादिकोंकेसाथि तादात्म्यभावकूंकल्पनाकरिकै तिनअधिष्ठानादिकोंकेकर्मोंका असंगआत्माविषे आरोपणकरिकै जोपुरुष मैंहींकर्मोंकाकर्त्ताहूं इसप्रकारतैं सर्वकेसाक्षीरूपभीआत्माकूं क्रियाकाआश्रयरूप देखताहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे रज्जुकेवास्तवस्वरूपकूं नहींजानणेहारापुरुष तिसरज्जुकूं भुजंगरूपकरिकैकल्पनाकरेहै ॥ तैसे आत्माके असंगअकर्त्तारूपवास्तवस्वरूपकूं नहींजानताहुआ जोपुरुष अविद्याकरिकै तिसअसंगआत्माकूं तिन देहादिकोंकेकर्मका आश्रयरूपकरिकैमानेहै ॥ सोभ्रांत पुरुष इसप्रकारतैंआत्माकूंदेखताहुआभी नहींदेखताहै ॥ जैसे रज्जुकूं सर्परूपकरिकैदेखताहुआभी भ्रांतपुरुष तिसरज्जुकूं नहींदेखेहै तैसे वास्तवतैं असंगउदासीन अकर्त्ता आत्माकूं कर्त्तारूपकरिकैदेखताहुआभी सोभ्रांतपुरुष तिसआत्माकूं नहींदेखेहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् सोमूढपुरुष भ्रांतिकरिकै आत्माकूं विपरीतहींदेखेहै ॥

आत्माकेवास्तवस्वरूपकूंदेखतानहीं ॥ इसविषे कौंनहेतुहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् तिसविपरीतदर्शनविषे हेतुकहेहैं (अकृतबुद्धित्वात्इति) तहां गुरुशास्त्रकेउपदेशकरिकैनहींउत्पन्नकरीहैविवेकबुद्धि जिसनैं ताकानाम अकृतबुद्धिहै ॥ ऐसाअकृतबुद्धिहोणेतैं सोपुरुष आत्माकूं विपरीतहींदेखैहै ॥ अर्थात् वास्तवतैं असंग उदासीन अकर्त्तारूपभी आत्माकूं सोभ्रांतपुरुष कर्त्तारूपहींदेखैहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे इसपुरुषकूं जबपर्यंत रज्जुकेवास्तवस्वरूपकासाक्षात्कार नहींहुआ ॥ तबपर्यंत यहपुरुष सर्पभ्रमकूं किसीभीउपायकरिकै निवृत्तकरिसकतानहीं ॥ तैसे इसपुरुषकूं जबपर्यंत सत्य ज्ञान अनंत अकर्त्ता अभोक्ता परमानंद तीनअवस्थावोंतैंरहित असंग उदासीन ऐसाब्रह्म मैंहूं इसप्रकारका ब्रह्मात्मसाक्षात्कार गुरुशास्त्रकेउपदेशकरिकै नहींउत्पन्नहुआहै ॥ तबपर्यंत यहपुरुष तिसकर्तृत्वभ्रमकूं किसीभीउपायकरिकैनिवृत्तकरिसकतानहीं इति ॥ शंका ॥ हेभगवन् सोपुरुष ब्रह्मवेत्तागुरुकेसमीपजाइकै वेदांतवाक्योंकेविचारकरिकै इसप्रकारके ब्रह्मात्मसाक्षात्कारकूं किसवास्तै नहींउत्पन्नकरता ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए ॥ श्रीभगवान् ताकेविषेहेतुकहेहैं (दुर्मतिःइति) तहां विवेककेप्रतिबंधकपापकर्मोंकरिकै मलिनहुईमतिजिसकी ताकानाम दुर्मतिहै ॥ ऐसादुर्मतिहोणेतैंहीं सोभ्रांतपुरुषब्रह्मवेत्तागुरुकेसमीपजाइकै वेदांतवाक्योंकाविचार करतानहीं ॥ तात्पर्ययह॥ पापकर्मोंकरिकैअशुद्धबुद्धिवालाहोणेतैं नित्यअनित्यवस्तुविवेकादिकोंतैंरहितपणेकरिकै ब्रह्मात्मज्ञानकेअयोग्यहोणेतैं सोभ्रांतपुरुष अविद्याकरिकै अकर्त्तारूपभीआत्माकूं कर्त्तारूपकल्पनाकरताहुआ तथाकेवलरूपभीआत्माकूं अकेवलरूपकल्पनाकरताहुआ तथाकर्मकेकर्त्तारूपअधिष्ठानादिकपांचोंविषे तादात्म्यअभिमानतैं कर्मोंकेत्यागकरणेविषेअसमर्थहुआ इसीकारणतैंहीं संसारी कर्मकाअधिकारी देहभृत् अकृतबुद्धि इत्यादिकसंज्ञाकूंप्राप्तहुआ सर्वप्रकारतैं जन्ममरणकीप्राप्तिकरिकै अनिष्ट इष्ट मिश्र इसतीनप्रकारके कर्मकेफलकूंहीं अनुभवकरैहै ॥ इसतैंकरिकै जोतार्किक देहादिकोंतैंव्यतिरिक्त आत्माकूंहीं केवल कर्त्तादेखैहै सोतार्किकभी अकृतबुद्धिहींजानणा यहअर्थ बोधनकऱ्या इति ॥ और केईकवादीतौं (तत्रैवंसतिकर्त्तारमात्मानंकेवलंतुयः) इसश्लोकका यहअर्थ करैहैं ॥ आत्मा केवल कर्त्तानहींहै ॥ किंतु पूर्वउक्तअधिष्ठानादिकोंकेसाथि मिल्याहुआ आत्मा कर्त्ताहोवैहै ॥ इसप्रकारवास्तवतैं तिनअधिष्ठानादिकोंकेसाथि मिलिकैकर्त्ता भावकूंप्राप्तहुएआत्माकूं जोपुरुष केवल कर्त्तादेखैहै ॥ अर्थात् तिनअधिष्ठानादिकोंकेसंबंधतैंविना केवल एकआत्माकूंहीं कर्त्तादेखताहै ॥ सोपुरुष दुर्मतिहै ॥ इसप्रकारकाअर्थ (केवलम्) इसशब्दकेप्रयोगतैंसिद्धहोवैहै इति ॥ सोयहवादियोंकाअर्थ समीचीननहीं ॥काहेतैं सर्वक्रियावोंतैंरहित असंगआत्माका तिनअधिष्ठानादिकोंकेसाथि मिलनाहींसंभवतानहीं ॥ और जलसूर्यकीन्यांई तिनअधिष्ठानादिकोंकेसाथि असंगआत्माका जोआविद्यक मिलना अंगीकारकरिये ॥ तौं तिसआविद्यक मिलनैंकरिकै आत्माविषे सोकर्तृत्वभी आविद्यकहींहोवैगा ॥ और तेअधिष्ठानादिकभीसर्व आविद्यकहींहैं ॥ ऐसेकल्पितअधिष्ठानादिकोंकेसाथि आत्माका वास्त

वसंबद्धपणा संभवतानहीं ॥ और (केवलं) यहशब्दतैं स्वभावतैंसिद्धहीं आत्माकेअसंगअद्वितीयरूपकूं अनुवादकरेहै ॥ आत्माकूंकर्त्तामानणेहारेपुरुषोंविषे दुर्मतिपणा बोधनकरणेवासतै ॥ यातैं (केवलम्) इसशब्दतैं सोवादीकाअर्थ सिद्धहोइसकैनहीं इति ॥ १६ ॥ ❀ ॥ तहां (पंचेमानिमहाबाहो) इत्यादिक च्यारिश्लोकोंकरिकै (अनिष्टमिष्टंमिश्रंचत्रिविधंकर्मणःफलम् ॥ भवत्यत्यागिनांप्रेत्य) इन पूर्वउक्तश्लोककेतीनचरणोंका व्याख्यानकऱ्या ॥ अब (नतुसंन्यासिनां कचित्) इसचतुर्थचरणका श्रीभगवान् एकश्लोककरिकै व्याख्यानकरेहै ॥

(मू० श्लो०) यस्यनाहंकृतोभावोबुद्धिर्यस्यनलिप्यते ॥ हत्वापिसइमाँल्लोकान्नहंतिननिबध्यते ॥ १७ ॥ यस्य । न । अहंकृतः । भावः । बुद्धिः । यस्य । न । लिप्यते । हत्वा । अपि । सः । इमान् । लोकान् । न । हंति । न । निबध्यते ॥ १७ ॥ (इतिप०) ॥ हेअर्जुन जिसविद्वान्पुरुषकी मैंकर्त्ताहूंइसप्रकारकी वृत्ति नहींहोवैहै तथा जिसविद्वान्पुरुषकी बुद्धि नहीं लिप्पायमानहोवैहै सोवि द्वान्पुरुष ईन लोकों कूं हनन करिकै भी नहीं हननकरेहै तथानहीं बंधायमानहोवैहै ॥ १७ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन पूर्वश्लोकविषे कथनकऱ्याजो दुर्मतिपुरुषहै ॥ तिसदुर्मतिपुरुषतैंअत्यंतविलक्षण जोअधिकारीपुरुषहै ॥ जोअधिकारीपुरुष पूर्वलेपुण्यकर्मों करिकै विवेककेविरोधीपापकर्मोंकेक्षयहुए विवेक वैराग्य शमादिषट् संपत् मुमुक्षुता इनच्यारिसाधनोंकूंप्राप्तहुआहै ॥ तथा गुरुशास्त्रकेउपदेशतैं उत्पन्नहुआहै अकर्त्ता अभोक्ता स्वप्रकाश परमानंद अद्वितीय ब्रह्ममैंहूं याप्रकारका ब्रह्मात्मसाक्षात्कार जिसकूं ॥ ऐसे जिसविद्वान्पुरुषका अहंकृतभाव नष्टहोइगयाहै ॥ अर्थात् तत्त्वसाक्षात्कारकरिकै कार्यसहितअज्ञानकेबाधितहुए जिसतत्त्ववेत्तापुरुषकी मैंकर्ताहूं इसप्रकारकीवृत्ति कदाचित्भीनहींहोवैहै ॥ अथवा (यस्यनाहं कृतोभावः) इसवचनका यहदूसराअर्थकरणा ॥ जिसतत्त्ववेत्तापुरुषका भाव कहीये सद्भाव अहंकृतोन कहीये अहंइसप्रकारकेकथनयोग्यनहींहै ॥ काहेतैं तत्त्वसाक्षात्कारकरिकै अहंकारकेबाधहुए तिसतत्त्ववेत्तापुरुषका शुद्धस्वरूपमात्रहीं परिशेषतैंरहेहै ॥ तिसशुद्धस्वरूपविषे मनवाणीकी विषयताहैनहीं ॥ अथवा (यस्यनाहंकृतोभावः) इसवचनका यहतीसराअर्थ करणा ॥ जिसतत्त्ववेत्तापुरुषकूं अहंकृतः कहीये अहंकारका भाव कहीये तादात्म्यअध्यास नहींहै ॥ काहेतैं तिसतत्त्ववेत्तापुरुषका सोतादात्म्यअध्यास विवेककरिकै निवृत्तहोइगयाहै ॥ यद्यपि व्यवहारकालविषे तिसतत्त्ववेत्तापुरुषविषेभी बाधितानुवृत्तिकरिकै सो कर्त्तापणा प्रतीतहोवैहै ॥ तथापि सोतत्त्ववेत्तापुरुष इसप्रकारकाविचारकरिकै आपणेआत्माविषे सोकर्त्तापणा मानतानहीं ॥ किंतु पूर्वउक्त अधिष्ठानादिकपांचों विषेहीं सोकर्त्तापणा मानताहै ॥ सोविचार दिखावैहैं ॥ सर्वात्मारूपमेरेविषे मायाकरिकैकल्पित जोपूर्वउक्तअधिष्ठानादिकपंचहैं ॥ जेअधिष्ठानादिकपंच कल्पित

संबंधकरिके मैंस्वप्रकाशअसंगचैतन्यनैं प्रकाशकरीतेहैं ॥ तेअधिष्ठानादिकपंचहीं सर्वकर्मोंकेकर्त्ताहैं ॥ मैंअसंगआत्मा कदाचित्भी तिनकर्मोंका कर्त्तानहींहूं ॥ किंतु मैंआत्मादिवतीं तिनअधिष्ठानादिकपंचकर्त्तावोंका तथातिनोंकेव्यापारोंका साक्षीभूतहूं ॥ तथा क्रियाशक्तिवालेप्राणरूपउपाधितैं तथाज्ञानशक्तिवालेअंतःकरण रूपउपाधितैं मैं रहितहूं॥तथा मैं शुद्धहूं ॥ तथासर्वकार्यकारणोंकेसंबंधतैं मैं रहितहूं ॥ तथा मैं कूटस्थनित्यहूं॥तथा मैं सर्वद्वैततैंरहितहूं॥तथा जन्ममरणादिकसर्व विकारोंतैं मैं रहितहूं ॥ इसीप्रकारके हमारेस्वरूपकूं ॥ (असंगोह्ययंपुरुषःसाक्षीचेताकेवलोनिर्गुणश्च अप्राणोह्यमनाःशुभ्रोअक्षरात्परतःपरः॥अज आत्मामहान्ध्रुवः सलिलएकोद्रष्टाद्वैतः अजोनित्यःशाश्वतोयंपुराणः निष्कलंनिष्क्रियंशांतंनिरवद्यंनिरंजनम्) ॥ इत्यादिकश्रुतियांभी प्रतिपादनकरेहैं॥तथा इसीप्रकारकेहमारेस्वरूपकूं (अविकार्योयमुच्यते॥ प्रकृतेःक्रियमाणानिगुणैःकर्माणिसर्वशः॥अहंकारविमूढात्माकर्ताहमितिमन्यते॥तत्त्ववित्तुनसज्जते॥शरीरस्थोपिकौंतेयनकरोतिनलिप्यते॥) इत्यादिकस्मृतियांभीप्रतिपादनकरेहैं ॥ यातैं मैंअसंगआत्मा तिनकर्मोंकाकर्त्तानहींहूं ॥ इसप्रकारकाविचारकरिके जोतत्ववेत्तापुरुष असंगआत्माकूं कर्त्तामान तानहीं ॥ किंतु पूर्वउक्तअधिष्ठानादिकपांचोकूंहीं सर्वकर्मोंकाकर्त्तामानैहै इति ॥ इसीकारणतैंहीं जिसतत्त्ववेत्तापुरुषकी अंतःकरणरूपबुद्धि नहींलिपायमानहोवै है ॥ अर्थात् जिसतत्ववेत्तापुरुषकीबुद्धि अनुशयवालीहोतीनहीं ॥ तहां इसकर्मकूं मैं करूंगा तथा इसकर्मके फलकूं मैं भोगौंगा इसप्रकारकाजो अनुसंधानहै ॥ जो अनुसंधान कर्त्ताभोक्तापणेकीवासनारूपनिमित्तकरिकेजन्यहै ॥ तिसअनुसंधानरूपलेपकानाम अनुशयहै ॥ सोलेपरूपअनुशय पुण्यकर्मविषेतौं हर्षरूपहोवै है ॥ और पापकर्मविषे पश्चात्तापरूपहोवैहै ॥ इसप्रकारके दोनोंप्रकारकेलेपकरिके जिसतत्त्ववेत्तापुरुषकीबुद्धि युक्तनहींहोवैहै ॥ काहेतैं अकर्त्ताअभोक्ताआत्माके साक्षात्कारकरिके तिसतत्त्ववेत्तापुरुषका कर्तृत्वभोक्तृत्वअभिमान निवृत्तहोइगयाहै ॥ याकारणतैं तिसतत्त्ववेत्तापुरुषकीबुद्धि तिसअनुशयरूपलेपयुक्तहोतीनहीं ॥ यहवार्त्ताश्रुतिविषेभीकथनकरीहै ॥ तहां श्रुति ॥ (नैनंकृताकृतेतपतः । एषनित्योमहिमाब्राह्मणस्यनवर्द्धतेकर्मणानोकनीयान् । तंविदित्वानलिप्यते कर्मणा पापकेन । यथापुष्करपलाशआपोनश्लिष्यंतएवमेवंविदिपापकर्मनश्लिष्यते) ॥ अर्थयह ॥ जैसे अज्ञानीपुरुषकूं कन्याहुआपापकर्म तथानहींकन्याहुआपुण्यकर्म तपायमानकरेहै ॥ तैसे इसब्रह्मवेत्ताविद्वान्पुरुषकूं कन्याहुआपापकर्म तथानहींकन्याहुआपुण्यकर्म तपायमानकरतानहीं ॥ और इसब्रह्मवेत्ताविद्वान्पुरुषका यह महानप्रभावहै ॥ जो पुण्यकर्मकरिकैतौं हर्षकूंनहींप्राप्तहोता ॥ तथा पापकर्मकरिकै परितापकूंनहींप्राप्तहोता ॥ और मैं ब्रह्मरूपहूं इसप्रकारतैं प्रत्यक्अभिन्न ब्रह्मकूं साक्षात्कारकरिकैं यहतत्त्ववेत्तापुरुष पुण्यपापकर्मोंकरिकैलिपायमानहोतानहीं ॥ और जैसे जलविषेस्थितकमलकेपत्रकूं जलस्पर्शकरतेनहीं ॥ तैसे इसत त्ववेत्तापुरुषकूं पुण्यपापकर्म स्पर्शकरतानहीं इति ॥ इतनेंकहणेकरिकै यहअर्थ सिद्धभया ॥ जिसतत्त्ववेत्तापुरुषकूं अहंकृतभावनहींहै ॥ तथा जिसतत्त्ववे

त्तापुरुषकीबुद्धि लिपायमाननहींहोवैहै ॥ सो पूर्वउक्तदुर्मतिपुरुषतैंविलक्षण सुमति परमार्थदर्शी तत्त्ववेत्तापुरुष आत्माकूं केवल अकर्त्ताहींदेखेहै ॥ कदाचित् भी आत्माकूं कर्तामानतानहीं ॥ ऐसातत्त्ववेत्तापुरुष कर्तृत्वभोक्तृत्वअभिमानकेअभावतैं अनिष्ट इष्ट मिश्र इसतीनप्रकारकेकर्मकेफलकूं कदाचित्भी प्राप्त होतानहीं ॥ इतनाहीं इसगीताशास्त्रकाअर्थहै इति ॥ अब श्रीभगवान् तिसतत्त्ववेत्तापुरुषकीस्तुतिकरणेवासतै तिसपूर्वउक्त अहंकारकेअभावकूं तथाबुद्धि लेपकेअभावकूं कथनकरेहै (हत्वापिसइमाँल्लोकान्नहंतिननिबध्यते इति) हेअर्जुन ऐसातत्त्ववेत्तापुरुष इनसर्वप्राणीयोंकूं हननकरिकैभी नहींहननकरेहै ॥ अर्थात् मैंअसंग आत्मा सर्वदा अकर्ताहूं इसप्रकारके अकर्तास्वरूपके साक्षात्कारतैं सो तत्त्ववेत्तापुरुष तिसहननरूप क्रियाकाकर्ताहोवैनहीं ॥ इसी कारणतैंहीं सोतत्त्ववेत्तापुरुष बंधायमानभीहोतानहीं ॥ अर्थात् तिसहननरूपक्रियाकेकार्यरूप अधर्मफलकेसाथिभी सोतत्त्ववेत्तापुरुष संबंधकूंप्राप्तहोतानहीं ॥ ईहां (यस्य नाहंकृतोभावः) इसवचनकेअर्थकातौं (नहंति) इसवचनकाअर्थ फलरूपहै ॥ और (बुद्धिर्यस्यनलिप्यते) इसवचनकेअर्थकातौं (ननिबध्यते) इसवचनकाअर्थ फलरूपहै ॥ ईहां (हत्वापिसइमाँल्लोकान्नहंतिननिबध्यते) इसवचनकरिकै श्रीभगवान्नैं तत्त्वसाक्षात्कारकामहत्त्व कथनकऱ्याहै ॥ कोई तत्त्ववेत्तापुरुष सर्वप्राणीयोंकाहननकरै इसअर्थविषे भगवान्का तात्पर्यहैनहीं ॥ और सर्वात्मदर्शीतत्त्ववेत्तापुरुषविषे सर्वप्राणीयोंकाहननकरणा संभवतानहीं ॥ और (हत्वापिसइमाँल्लोकान्) इसवचनकरिकै तिसतत्त्ववेत्तापुरुषविषे जो हननक्रियाकाकर्त्तापणा कथनकऱ्याहै॥सो लौकिकबाधितकर्तृत्वदृष्टिकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ और (नहंति) इसवचनकरिकै तिसतत्ववेत्तापुरुषविषे जो कर्तृत्वकानिषेधकऱ्याहै ॥ सोशास्त्रीयपारमार्थिकदृष्टिकरिकै निषेध कऱ्याहै ॥ यातैं (हत्वा नहंति) इनदोनोंवचनोंका परस्परविरोधहोवैनहीं इति ॥ तहां इसगीताशास्त्रकेआदिविषे (नायंहंतिनहन्यते) इसवचनकरिकै आत्माविषे सर्वकर्मोंकाअस्पर्शीपणा प्रतिज्ञाकरिकै (नजायतेम्रियते) इत्यादिकहेतुरूपवचनोंकरिकै तिसप्रतिज्ञातअर्थकीसिद्धिकरिकै (वेदाविनाशिनंनित्यम्) इत्यादिकवचनोंकरिकै विद्वान्पुरुषकूं सर्वकर्मोंकेअधिकारकीनिवृत्ति संक्षेपकरिकैकथनकरीथी ॥ और साईहीं सर्वकर्मोंकेअधिकारकी निवृत्ति मध्यविषे तिस तिसप्रसंगकरिकै विस्तारतैंप्रतिपादनकरीथी ॥ और ईहां इतनाहीं इसगीताशास्त्रकाअर्थहै इसप्रकारतैं शास्त्रअर्थकेएकतावस्त्वदिखावणेवासतै (नहंतिननिबध्यते) इसवचनकरिकै सासर्वकर्मोंकेअधिकारकीनिवृत्ति उपसंहारकरीहै ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ अविद्याकरिकैकल्पित तथाअधिष्ठानादिकपंचअनात्मपदार्थोंकरिकैकऱ्येहुए ऐसेजे विहितनिषिद्धकर्महैं ॥ तिनसर्वकर्मोंका अहंब्रह्मास्मि इसप्रकारकीआत्मविद्याकरिकै मूलसहित उच्छेदहोइजावैहै ॥ याकारणतैं परमार्थसंन्यासीपुरुषोंकूं अनिष्ट इष्ट मिश्र यहतीनप्रकारकाकर्मकाफल नहींप्राप्तहोवैहै ॥ यहजोअर्थ पूर्वकथनकऱ्याथा सोयुक्तहींहै ॥ तहां मैंआत्मा अकर्त्ताहूं

जाहिरात.

वेदान्तग्रन्थाः ।

	की. रु. आ.
शारीरक (शांकरभाष्य) रत्नप्रभाटीका व्यासाधिकरणमाला और भक्तिसूत्र सभाष्य अक्षर बड़ा	१०–०
ब्रह्मसूत्र (शारीरक) भाषाटीका	१–८
वेदांतसारसंस्कृतमूलऔरसंस्कृतटीका तथा भाषाटीकासहित	०–१२
गीता आनन्दगिरिकृत भाषाटीका	३–०
श्रीमद्भगवद्गीता सान्वयब्रजभाषा दोहासहित	१–४
गीतामृततरंगिणीभाषाटीका (रघुनाथप्रसादकृत) अक्षरबड़ा	१–४
गीतामृततरंगिणी भाषाटीका पाकिटबुक्	०–१२
पंचदशीसटीक	२–८
पंचदशी पं० मिहिरचंद्रकृत अत्युत्तम भाषाटीका सहित ...	४–०

	की. रु. आ.
शिवसंहिता भाषाटीकासह (योगशास्त्र)	१
रामचन्द्रिका सटीक कवि केशवदासप्रणीत	२
द्वादशमहावाक्यविवरण	०–४
वासिष्ठसार भाषा वेदांत ६ प्रकरण	२–८
अपरोक्षानुभूति संस्कृत टीका भाषाटीकासहित... ...	०–१०
पातंजलि (योगदर्शन) अत्युत्तम भाषानुवाद सहित ...	१–०
सांख्यदर्शन अत्युत्तम भाषानुवाद सहित	१–४
हठयोगप्रदीपिका उत्तम भाषाटीका सहित	१–८
शिवस्वरोदय भाषाटीका	०–१०

पुस्तक मिलनेका ठिकाना–

खेमराज श्रीकृष्णदास " श्रीवेंकटेश्वर " छापाखाना, खेतवाडी–मुम्बई.

इति स्वामिचिद्घनानंदगिरिकृतभाषाटीकासहितभगवद्गीता समाप्ता